उत्तर तैमूरकालीन भारत

भाग २

उत्तरी भारत के स्वतंत्र प्रांतीय राज्य

(१३९९-१५२६ ई०)

(HISTORY OF THE INDEPENDENT PROVINCIAL DYNASTIES OF NORTHERN INDIA, PART II)
(1399–1526)

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकारों द्वारा

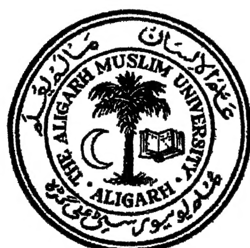
(निज़ामुद्दीन अहमद, फ़िरिश्ता, मुहम्मद बिहामद ख़ानी, शेख़ रिज़्क़ुल्लाह मुश्ताक़ी, अल हाजुद्दबीर, सिकन्दर बिन मंझू, मीर मुहम्मद मासूम तथा ग़ुलाम हुसेन सलीम)

अनुवादक

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी-एच० डी०

यू० पी० एजूकेशनल सर्विस



प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी

अलीगढ़

१९५९

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No. 18

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol VI

History of the Independent Provincial Dynasties of Northern India

Part II

(1399-1526)

By Saiyid Athar Abbas Rizvi, M A , Ph D

FIRST EDITION

1959

PRINTED AT THE SAMMELAN MUDRANALAYA, PRAYAG
FOR THE DEPTT OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन ख़ां

राज्यपाल बिहार

के

चरणों मे

सादर सर्मपित

भूमिका

तुगलुक वश के अन्त तथा बाबर के सिहासनारोहण के मध्य की महत्वपूर्ण घटना तैमूर का आक्रमण थी जिसने भारतवर्ष के केन्द्रीय शासन को छिन्न-भिन्न कर दिया और देहली के सुल्तानो से कही अधिक महत्व प्रान्तीय राज्यो को प्राप्त हो गया, अत १३९९ से १५२६ ई० तक के इतिहास को दो भागो मे विभाजित करके प्रकाशित किया गया है। पहला भाग तो देहली के सुल्तानो के राज्य से सम्बन्धित था और प्रस्तुत दूसरा भाग उन प्रान्तीय राज्यो से सम्बन्धित है जिनका अभ्युदय फीरोज तुगलुक के समय से ही धीरे-धीरे होने लगा था और जो तैमूर के आक्रमण के उपरान्त पूर्णत स्वतत्र हो गये। इनमे कालपी, शर्की सुल्तानो तथा जौनपुर, लोदी सुल्तानो द्वारा विजय कर लिये गये किन्तु मालवा, गुजरात, सिन्ध, मुल्तान, कश्मीर तथा बगाल अकबर के शासन-काल तक स्वतत्र रहे।

प्रस्तुत पुस्तक मे जौनपुर के सुल्तानो से सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी' तथा 'गुलशने इबराहीमी' अथवा 'तारीखे फिरिश्ता', कालपी से सम्बन्धित 'तारीखे मुहम्मदी', मालवा से सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी', 'वाकेआते मुश्ताकी' एव 'जफरुल वालेह', गुजरात से सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी', 'मिरआते सिकन्दरी' तथा जफरुल वालेह', सिन्ध से सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी' तथा तारीखे सिन्ध', मुल्तान तथा कश्मीर से सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी', और बगाल मे सम्बन्धित 'तबकाते अकबरी', 'तारीखे फिरिश्ता' एव 'रियाजुस् सलातीन' के सम्पूर्ण अगो का अनुवाद किया गया है। इतिहासकारो तथा उनकी कृतियो का परिचय अनुवाद के प्रारम्भ मे प्रस्तुत किया गया है। मूल ग्रथों की पृष्ठ सख्या पक्ति के आरम्भ मे ही कोष्ठ मे लिख दी गई है।

अनुवाद करते समय फारसी से अग्रेजी अनुवाद के सभी प्रचलित नियमो को, जिनका पालन इतिहासकार करते रहे है, ध्यान मे रखा गया है। भावार्थ के साथ-साथ शब्दार्थ को विशेष महत्व दिया गया है। फारसी भाषा का हिन्दी भाषा मे वास्तविक अनुवाद देने के प्रयास के कारण कही-कही पर शब्दो की पुनरावृत्ति हो गई है। इसका कारण यह है कि इन शब्दो मे से किसी को भी छोड देने से मूल-जैसा वातावरण न रह पाता।

अग्रेजी अनुवाद के ग्रन्थो मे पारिभाषिक शब्दो के अग्रेजी अनुवादो मे दोष रह गये है। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास मे अनेक भ्रमपूर्ण रूढियो को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियो से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दो को मूल रूप मे ही ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दो की व्याख्या पाद-टिप्पणियो मे कर दी गई है। मिथ्या प्रवादो का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासों के आधार पर पाद-टिप्पणियो मे ही किया गया है। नगरो के नाम प्राय. मध्यकालीन फारसी रूप मे ही रहने दिये गये है। मुझे खेद है कि कुछ आकर ग्रन्थो के न मिलने के कारण कही-कही आवश्यक व्याख्याये इस पुस्तक मे प्रस्तुत न की जा सकी। यदि सभव हुआ तो बाद के सस्करण मे इस न्यूनता को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा।

'खलजीकालीन भारत', 'आदि-तुर्ककालीन भारत', 'तुगलुककालीन भारत भाग १, २' तथा 'उत्तर तैमूरकालीन भारत भाग १' के पश्चात् मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधारभूत, फारसी एव

अरबी के इतिहासो के हिन्दी अनुवाद की यह छठी पुस्तक प्रकाशित हो रही है। पिछले पाच ग्रन्थो का प्रकाशन डा० जाकिर हुसेन खा, भूतपूर्व उपकुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सतत प्रयत्नो के फलस्वरूप हुआ और इस ग्रन्थ का भी प्रकाशन डाक्टर साहब ही की महती कृपा से सम्भव हुआ। उनकी इस सुलभ कृपा के लिये मै जितनी कृतज्ञता प्रकट करू, कम है। डाक्टर साहब को राष्ट्र तथा राष्ट्र-भाषा से विशेष प्रेम है। उनकी यह हार्दिक इच्छा रही है कि इस ग्रन्थमाला की समस्त पुस्तके अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास-विभाग द्वारा ही प्रकाशित हो और वे इसके लिये बराबर प्रयत्नशील है।

इस ग्रन्थमाला की तैयारी मे अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर नूरुलहसन, एम० ए०, डी० फिल० (ऑक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिली है। उन्होने मेरी कठिनाइयो को दूर किया और अपने सत्परामर्श एव अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की। बहुमूल्य सुझावो तथा सामयिक प्रोत्साहन के लिए मै उनका विशेष आभारी हू। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइया विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही, या यह कहिये कि उनकी कृपा से मुझे पुस्तको के मिलने मे कठिनाई का अनुभव ही नही हुआ। उनको धन्यवाद देना मेरा परम कर्तव्य है। राजनीति-विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिए मै उनका आभारी हू। सम्मेलन मुद्रणालय प्रयाग के मैनेजर श्री सीताराम गुण्ठे ने अपने प्रेस कर्मचारियो के सहयोग से इस पुस्तक की छपाई मे जिस परिश्रम और उत्साह को प्रदर्शित किया है उसके लिये मै उनका आभारी हू। प्रूफ की देख-भाल का कार्य श्री श्रवणकुमार श्रीवास्तव द्वारा बडी ही सलग्नता से होता रहा। इसके लिये मै उन्हे विशेष धन्यवाद देता हू।

अपने इस कार्य मे मुझे अपने सभी मित्रो से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थानाभाव के कारण मै उनके नाम नही लिख सका हू, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावो से परिचित है।

सचिव
स्वतत्रता-सग्राम इतिहास
परामर्श समिति, नजरबाग
लखनऊ
मार्च १९५९

सैयिद अतहर अब्बास रिजवी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा

मुहम्मद बिहामद ख़ानी

तारीख़े मुहम्मदी

मुहम्मद बिहामद खानी, मलिकुश्शर्क मलिक बिहामद खा, का जिसे कालपी के सुल्तानो द्वारा झासी के उत्तर-पूर्व ४२ मील पर स्थित एरिच नामक स्थान की अक्ता प्राप्त थी, पुत्र था। मलिकुश्शर्क बिहामद खा का पालन-पोषण मलिकजादा फीरोज खा बिन ताजुद्दीन तुर्क द्वारा हुआ था। मलिकजादा फीरोज खा की मृत्यु के उपरान्त बिहामद खा जुनैद खा की सेवा मे सम्मिलित हो गया। वह कालपी के महमूद शाह बिन फीरोज खा के साथ आस-पास के हिन्दू राजाओ के विरुद्ध युद्धो मे जाया करता था जिसके फलस्वरूप उसे एरिच की अक्ता प्राप्त हो गई। मुहम्मद बिहामद खानी तथा उसके पिता दोनो ही जौनपुर के सुल्तान इबराहीम शाह शर्की के विरुद्ध युद्ध मे आहत हुए। तत्कालीन कालपी के सुल्तान कादिर शाह एव उसके वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा ने इबराहीम शाह की अधीनता स्वीकार कर ली। मुहम्मद बिहामद खानी ने अपने पिता के साथ कई युद्धो मे भाग लिया जिसका उल्लेख उसने 'तारीखे मुहम्मदी' मे किया है। बाद मे वह एक सूफी शेख यूसुफ बिन मुहम्मद बुद्ध का शिष्य हो गया और धार्मिक कार्यों मे तल्लीन रहने लगा।

'तारीखे मुहम्मदी' मे मुहम्मद बिहामद खानी ने मुहम्मद साहब के काल से लेकर ८४२ हि० (१४३८-३९ ई०) तक का इतिहास लिखा है। उसे इस इतिहास की रचना मे कई वर्ष लगे होगे कारण कि बीच बीच मे उसने विभिन्न तिथियों का उल्लेख किया है। ८३९ हि० का उल्लेख करते हुए उसने कई स्थानो पर लिखा है कि वह इस वर्ष मे अपने इतिहास की रचना कर रहा था। उसने अपने इतिहास को चार भागो मे विभाजित किया है। प्रथम भाग में मुहम्मद साहब के जीवन-काल का इतिहास दिया है। दूसरे भाग मे मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी चारो ख़लीफाओ, बनी उमैय्या तथा बनी अब्बास का इतिहास दिया है। इसके अतिरिक्त उसने तत्कालीन अनेक सूफी सन्तो का भी उल्लेख किया है जिनमे कुछ हिन्दुस्तान के भी सूफी थे। तीसरे भाग मे उसने अन्य मुसलमान राज्यो उदाहरणार्थ ताहरी वश, सामानी, देलमी, गजनवी, सलजूक, अताबेग, ख्वारज्मशाह, गोरियो तथा चगेज खा के वशों से लेकर तैमूर तथा उसके उत्तराधिकारियो का इतिहास लिखा है। चौथे भाग मे उसने हिन्दुस्तान के मुसलमान सुल्तानो, विशेष रूप से देहली के सुल्तानो का इतिहास लिखा है।

फीरोज शाह तुगलुक के उत्तराधिकारियो एव कालपी के सुल्तानों तथा वज़ीरो का इतिहास बडे विस्तार से लिखा है। इस प्रकार इस इतिहास का अन्तिम भाग ऐसे युग से सम्बन्धित है जिसके विषय में हमारी जानकारी के साधन बहुत ही कम है और इस ग्रथ के अभाव मे हम एक प्रातीय राज्य के इतिहास के ज्ञान से, जो यद्यपि बहुत ही थोडे समय तक जीवित रहा, वचित रह जाते।

शेख़ रिज़्क़ुल्लाह मुश्ताक़ी

वाक़ेआते मुश्ताकी

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी बिन सादुल्लाह देहलवी का जन्म ८९७ हि० (१४९१-९२ ई०) मे हुआ। उसका पिता सादुल्लाह खाने जहा के पुत्र अहमद खा का आश्रित था[1]। शेख़ रिज़्क़ुल्लाह भी बहुत से अफगान अमीरो का विश्वासपात्र था और उनकी गोष्ठियो मे उपस्थित रहा करता था। वह दरवेशो के समान जीवन व्यतीत करता था और अपने समकालीन दरवेशो की गोष्ठियो मे हाजिर रहा करता था। उसकी मृत्यु २० रबी-उल-अव्वल ९८९ हि० (२४ अप्रैल, १५८१ ई०) को हुई। वह हिन्दी तथा फारसी दोनो भाषाओ मे कविताए लिखता था। हिन्दी कविताओ मे उसने अपना उपनाम "राजन" रक्खा था।

उसने अपने इतिहास की भूमिका मे लिखा है कि वह अपने समकालीन योग्य व्यक्तियो की सेवा मे उपस्थित रहा करता और उनकी बातो से लाभान्वित हुआ करता था। उसने उनसे कुछ विचित्र कहानिया तथा आश्चर्यजनक घटनाए सुनी और उनमे से कुछ स्वय अपनी आखो से देखी। उन विद्वानो एव महानुभावो के निधन के उपरान्त वह उन कहानियो का उल्लेख अन्य लोगो से किया करता था। बाद मे अपने किसी मित्र के आग्रह पर उसने इन कहानियो को एक पुस्तक के रूप मे सकलित किया और उसका नाम 'वाकेआते मुश्ताकी' रखा। इसमे सुल्तान बहलोल के राज्यकाल से लेकर सुल्तान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के राज्यकाल तक की विभिन्न घटनाओ का उल्लेख है और लोदी वश के सुल्तानो, बाबर, हुमायूँ, अकबर तथा सूर वश के सुल्तानो से सम्बन्धित विभिन्न कहानियो की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त मालवा के गयासुद्दीन खलजी तथा नासिरुद्दीन खलजी एव गुजरात के मुज़फ़्फ़र शाह से सम्बन्धित भी कुछ कहानियो का उल्लेख किया गया है। रिज्कुल्लाह मुश्ताकी ने किसी स्थान पर भी इस बात का दावा नही किया है कि उसने किसी इतिहास की रचना की है।

'वाकेआते मुश्ताकी' की किसी भी प्रतिलिपि का भारतवर्ष मे अभी तक पता नही चल सका। इसकी केवल दो प्रतिया ब्रिटिश म्युजियम मे प्राप्य है। ब्रिटिश म्युजियम के रियू के कैटालाग के दूसरे भाग के पृष्ठ ८०२ ब पर जो हस्तलिखित ग्रन्थ है उसके रोटोग्राफ के आधार पर अनुवाद किया गया है किन्तु ब्रिटिश म्युजियम मे एक अन्य प्रतिलिपि भी 'वाकेआते मुश्ताकी' की है जिसके कुछ अश उपर्युक्त प्रतिलिपि से भिन्न हैं और कही कही वे उपर्युक्त प्रतिलिपि से अधिक स्पष्ट भी है अत उन अशो का अनुवाद भी पाद-टिप्पणियो मे कर दिया गया है और उस प्रतिलिपि का नाम 'ब' रखा गया है।

यद्यपि 'वाकेआते मुश्ताकी' मुख्य रूप से देहली के सुल्तानो के इतिहास से सम्बन्धित है किन्तु इसमे मालवा के सुल्तानो के सम्बन्ध मे भी कुछ कहानियो का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक मे केवल उन्ही कहानियो का अनुवाद किया गया है।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

तबक़ाते अकबरी

ख़्वाजा निजामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख़्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी था। वह बाबर का

१ वाकेआते मुश्ताकी पृ० ५८।

बडा विश्वासपात्र तथा दीवाने बयूतात था। बाबर की मृत्यु के समय हुमायूँ को सिंहासन से वंचित रखने के लिये अमीर निजामुद्दीन अली खलीफा ने जो षड्यन्त्र रचा था उसका ख्वाजा मुकीम हरवी ने कडा विरोध किया और हुमायूँ के सिंहासनारोहण मे उसका बडा हाथ ज्ञात होता है।[1] बाबर की मृत्यु के उपरान्त जब हुमायूँ ने गुजरात विजय कर लिया और १५३५ ई० मे मिर्ज़ा अस्करी को अहमदाबाद प्रदान कर दिया तो ख्वाजा मुकीम को उसका वजीर नियुक्त किया। १५३९ ई० मे जब हुमायूँ, शेरशाह से चौसा के युद्ध मे पराजित होकर आगरा पहुचा तो ख्वाजा मुहम्मद मुकीम उसके साथ था। ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद के अनुसार ख्वाजा मुकीम अकबर के राज्यकाल के १२वे वर्ष मे आगरा मे राज्य-सेवा कर रहा था।[2]

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ने अपने जन्म के विषय मे किसी स्थान पर कोई प्रकाश नही डाला है किन्तु बदायूनी के अनुसार निजामुद्दीन अहमद की मृत्यु ४५ वर्ष की अवस्था मे अकबर के शासनकाल के ३८वे वर्ष मे अर्थात् २३ सफर १००३ हि० (७ नवम्बर १५९४ ई०) को हुई।[3] इस प्रकार उसकी जन्म-तिथि ९५८ हि० अथवा १५५१ ई० होती है। हमे ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की बाल्यावस्था तथा बाद की शिक्षा के विषय मे भी कोई प्रामाणिक ज्ञान नही किन्तु तबकाते अकबरी' के अध्ययन से पता चलता है कि ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद को अवश्य ही अपने समय के बडे-बडे विद्वानो द्वारा शिक्षा प्राप्त हुई होगी। जिस समय वह गुजरात मे था तो बदायूनी के अनुसार अमानी[4], बकाई[5], हयाती[6] तथा सरफी[7] सरीखे कवि उसके द्वारा आश्रय प्राप्त करते रहते थे। अकबर ने उसे 'तारीखे अल्फी' के सकलनकर्ताओ के बोर्ड मे भी सम्मिलित किया था।[8]

वह एक उच्च कोटि का सैनिक था और उसने अकबर के विभिन्न अभियानो मे भाग लिया। अकबर के राज्यकाल के २९वे वर्ष मे वह गुजरात का बख्शी नियुक्त किया गया। ९९६ हि० (१५८७-८८ ई०) मे अकबर ने उसे दरबार मे बुलवा लिया और वह उसकी सेवा मे लाहौर मे, जहा वह उस समय था, उपस्थित हुआ। उसे नित्यप्रति उन्नति प्राप्त होती रही और सम्भवत अजमेर, गुजरात तथा मालवा की खालसा की भूमि की देखरेख भी उसके सिपुर्द कर दी गई। ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) मे उसे शम्साबाद परगना जागीर के रूप मे प्रदान हुआ। १५९१-९२ मे जब राज्य के बख्शी आसफ खा को काबुल के अभियान हेतु नियुक्त किया गया तो निजामुद्दीन अहमद को उसके स्थान पर बख्शी नियुक्त कर दिया गया। निजामुद्दीन अहमद अकबर के साथ कश्मीर तथा लाहौर मे कुछ समय तक रहा किन्तु ४५ वर्ष की अवस्था मे १४ सफर १००३ हि० (२९ अक्तूबर १५९४ ई०) को लाहौर के समीप ज्वर मे पीड़ित होकर वह २३ सफर (७ नवम्बर १५९४ ई०) को रावी नदी के तट पर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

निजामुद्दीन अहमद ने 'तबकाते अकबरी' के प्राक्कथन मे लिखा है कि उसने इस ग्रन्थ मे उन

१ 'तबकाते अकबरी भाग २' (कलकत्ता) पृ० २८, 'अकबर नामा भाग १' (कलकत्ता) पृ० ११७।
२ 'तबकाते अकबरी भाग २' पृ० २११।
३ 'मुन्तखबुत्तवारीख़ भाग २' (कलकत्ता) पृ० ३९५-९६।
४ 'मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३' (कलकत्ता) पृ० १८८।
५ वही पृ० १९६-१९७।
६ वही पृ० २११।
७ वही पृ० २६०।
८ 'मुन्तखबुत्तवारीख़ भाग २' पृ० ३१८।

घटनाओ का विवरण दिया है जो हिन्दुस्तान मे इस्लाम के अभ्युदय अर्थात् ३६७ हि० (९७७-७८ ई०) से १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) तक घटी, किन्तु वास्तव में इसमे ३७७ हि० (९८७-८८ ई०) से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का भारतवर्ष का इतिहास उपलब्ध है। सम्भवत लेखक ने १००१ हि० मे इसकी रचना समाप्त कर ली थी और १००२ हि० की घटनाए बाद मे जोड दी। इस इतिहास को उसने ९ खडो मे विभाजित किया —

प्रस्तावना—गजनवियो का इतिहास

१ देहली का इतिहास १००२ हि० (१५९३ ई०) तक।
२. दक्षिण का इतिहास ७४८ हि० (१३४७ ई०) से १००२ हि० (१५९३ ई०) तक।
३ गुजरात के सुल्तानो का इतिहास ७९३ हि० (१३९० ई०) से ९८० हि० (१५७३ ई०) तक
४ मालवा के सुल्तानो का इतिहास ८०९ हि० (१४०६ ई०) से ९७७ हि० (१५६९ ई०) तक
५ बगाल के सुल्तानो का इतिहास ७४१ हि० (१३४० ई०) से ९८४ हि० (१५७६ ई०) तक
६ जौनपुर के सुल्तानो का इतिहास ७८४ हि० (१३८२ ई०) से ८८१ हि० (१४७६ ई०) तक
७ कश्मीर के सुल्तानो का इतिहास ७४७ हि० (१३४६ ई०) से ९९५ हि० (१५८६ ई०) तक
८ सिन्ध के सुल्तानों का इतिहास ८६ हि० (७०५ ई०) से १००१ हि० (१५९२ ई०) तक
९ मुल्तान के सुल्तानो का इतिहास ८४७ हि० (१४४३ ई०) से ९२३ हि० (१५१७ ई०) तक

अन्त मे वह भौगोलिक विवरण भी लिखना चाहता था किन्तु सम्भवत उस भाग की वह रचना न कर सका कारण कि किसी प्राप्य हस्तलिखित पोथी मे यह विवरण नही मिलता।

'अकबरनामा' के अतिरिक्त उसने निम्नाकित २८ इतिहासो पर 'तबकाते अकबरी' को आधारित किया है —

१ तारीखे यमीनी
२ तारीखे जैनुल अखबार
३ रौजतुस्सफ़ा
४ ताजुल-मआसिर
५ तबकाते नासिरी
६ खजाएनुल फुतूह
७ तुगलुकनामा
८. तारीखे फीरोजशाही (जिया बरनी)
९ फुतूहाते फीरोजशाही
१०. तारीखे मुबारकशाही
११. फ़ुतूहुस्सलातीन
१२ तारीखे महमूदशाही हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१३ तारीखे महमूदशाही खुर्द हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१४ तारीखे महमूदशाही गुजराती
१५ मआसिरे महमूदशाही गुजराती
१६ तारीखे मुहम्मदी
१७ तारीखे बहादुरशाही

१८ तारीखे बहमनी
१९ तारीखे नासिरी
२० तारीखे मुजफ्फरशाही
२१ तारीखे मिर्जा हैदर
२२ तारीखे कश्मीर
२३ तारीखे सिन्ध
२४ तारीखे बाबरी
२५ वाकेआते बाबरी
२६ तारीखे इबराहीमशाही
२७ वाकेआते मुश्ताकी
२८ वाकेआते हजरत जन्नत आशियानी हुमायूँ बादशाह।

इन ग्रन्थो मे से 'तारीखे महमूदशाही मन्डवी', 'तारीखे महमूदशाही खुर्द मन्डवी', 'तबकाते महमूदशाही गुजराती', 'मआसिरे महमूदशाही गुजराती' 'तारीखे बहादुरशाही', तथा 'तारीखे बहमनी' का अभी तक कोई पता नही चल सका है और कुछ ग्रन्थ ऐसे है जिनका नाम अभी कुछ वर्षो से ही लिया जाने लगा है और केवल १ या २ प्रतिया कही कही उपलब्ध हो रही है। इस प्रकार 'तबकाते अकबरी' मे जो सामग्री सकलित है वह उन इतिहासो के अभाव के कारण जो अब उपलब्ध नही है, अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद मे कट्टरपन तथा पक्षपात एव इसी प्रकार के अन्य दोष जो उसके बहुत से समकालीन एव पूर्व के इतिहासकारो मे पाये जाते थे, बहुत कम पाये जाते है। मालवा के सुल्तान महमूद को पराजित करने के उपरान्त राणा सागा ने उसे केवल मुक्त ही नही कर दिया अपितु उसका राज्य भी उसे वापस कर दिया। इससे पूर्व गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर ने भी सुल्तान महमूद को सहायता प्रदान की थी। सुल्तान मुजफ्फर तथा राणा सागा दोनो के पौरुष एव उदारता की तुलना करते हुए निजामुद्दीन अहमद ने राणा सागा की उदारता एव पौरुष को सुल्तान मुजफ्फर की उदारता से कही अधिक महत्वपूर्ण बताया है और राणा सागा की भूरि भूरि प्रशसा की है। यद्यपि उसके एक अन्य समकालीन 'मिरआते सिकन्दरी' के लेखक सिकन्दर बिन मझू ने इसी घटना का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि राणा सागा ने सुल्तान महमूद को इस कारण मुक्त कर दिया कि उसे गुजरात एव देहली के सुल्तानो का भय था। निजामुद्दीन अहमद ने समस्त घटनाए ऐतिहासिक क्रम को दृष्टि मे रखते हुए अत्यधिक छान-बीन के उपरान्त लिपिबद्ध की है। गुजरात मे बहुत समय तक निवास करने के कारण उसे गुजरात एव मालवा के विषय मे विशेष जानकारी थी। कश्मीर तथा पजाब मे भी वह कुछ समय तक रहा। इस प्रकार उसने विभिन्न प्रान्तों का जो इतिहास लिखा है उसमे से बहुत कुछ अपनी विशेष जानकारी के आधार पर लिखा है। उसकी भाषा सरल है और उसने यथासम्भव पक्षपात से बचने का प्रयत्न किया है। 'तारीखे फ़िरिश्ता' तथा अन्य बाद के बहुत से इतिहासकारो ने उसी के इतिहास के आधार पर अपने इतिहासो की रचना की।

मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह

गुलशने इबराहीमी अथवा तारीखे फिरिश्ता

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी जो फिरिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है, गुलाम अली हिन्दू शाह का पुत्र था। वह अपनी युवावस्था मे अहमदनगर के सुल्तान मुर्तजा निज़ाम शाह की सेवा मे,

जिसने १५६५ से १५८८ ई० तक राज्य किया, प्रविष्ट हो गया। अहमदनगर ही मे उसने हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहो तथा सूफी सन्तो का इतिहास लिखना निश्चय कर लिया था किन्तु अहमदनगर मे उसे आवश्यक ग्रन्थ न मिल सके। २८ दिसम्बर १५८९ ई० को वह बीजापुर के सुल्तान के दरबार मे पहुच गया। जुलाई १६०४ ई० मे फिरिश्ता, इबराहीम आदिल शाह की पुत्री बेगम सुल्तान की पालकी के साथ साथ बीजापुर से गोदावरी पर स्थित पैठान नामक स्थान पर, जहा बेगम सुल्तान का विवाह अकबर के पुत्र दानियाल से कर दिया गया, पहुचा। तदुपरान्त वह बुरहानपुर लौट आया। जहागीर के राज्यकाल के प्रारम्भ मे इबराहीम आदिल शाह ने फिरिश्ता को किसी कार्य से लाहौर भेजा। १६१४ ई० मे वह असीरगढ के किले मे पहुचा और सम्भवत वह १६२३-२४ ई० तक जीवित रहा। फिरिश्ता को इबराहीम आदिल शाह द्वारा भी इतिहास की रचना की प्रेरणा प्राप्त हुई।

फिरिश्ता ने 'गुलशने इबराहीमी' जिसे 'तारीखे फिरिश्ता' भी कहते है, इबराहीम आदिल शाह को १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) मे समर्पित की। १०१८ हि० (१६०९-१० ई०) मे इसी इतिहास को उसने 'तारीखे नौरस' के नाम से इबराहीम आदिल शाह को समर्पित किया। यह इतिहास एक प्रस्तावना तथा १२ खडो मे विभाजित है —

प्रस्तावना—मुसलमानों के राज्य के पूर्व के हिन्दू राजाओं का इतिहास।

खण्ड १ लाहौर के गजनवियो का इतिहास
- २ देहली के सुल्तानो का इतिहास
- ३ दक्षिण के सुल्तानो का इतिहास छ भागो मे
  (१) बहमनी, (२) आदिलशाही, (३) निजामशाही, (४) कुतुबशाही, (५) एमादशाही, (६) बरीदशाही।
- ४ गुजरात
- ५ मालवा
- ६ बुरहानपुर
- ७ बगाल तथा जौनपुर के शर्की सुल्तान
- ८ सिन्ध, थट्टा तथा मुल्तान
- ९ सिन्ध के जमीदार
- १० कश्मीर
- ११ मलाबार
- १२ हिन्दुस्तान के सूफी सन्त तथा हिन्दुस्तान का सक्षिप्त विवरण।

'तबकाते अकबरी' की भाति फिरिश्ता ने भी अपनी इस महत्वपूर्ण रचना के लिये बहुत से ग्रथ एकत्र किये। उसने लगभग ३५ एतिहासिक ग्रथो का अध्ययन किया और कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी उपयोग किया जो सम्भवत निजामुद्दीन को उपलब्ध न थे। उनमे से '११ मुख्य ग्रन्थ निम्नाकित है —

१ मुल्हिकते शेख ऐनुद्दीन बीजापुरी
२ बहमन नामा लेखक शेख आजरी
३ तारीखे बिनाकिती
४ तुहफतुस्सलातीन बहमनी लेखक मुल्ला दाऊद बीदरी
५ तारीखे अलफ़ी
६ हबीबुस्सियर

७ तारीखे बगाला

८ फवाएदुल फवाद

९ खैरुल मजालिस

१० नमखे कुतुबी

११ सियरुल आरेफीन ।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास मे जो प्रसिद्धि 'तारीखे फिरिश्ता' को प्राप्त हुई है वह किसी अन्य इतिहास को नही और बहुत समय तक शोध सम्बन्धी कार्यों मे केवल इसी ग्रथ का प्रयोग होता रहा। इसमे सन्देह नही कि फिरिश्ता ने अपने इतिहास की रचना के लिये जितनी सामग्री एकत्र की उतनी किसी अन्य इतिहासकार ने नही की। दक्षिण के सुल्तानो के इतिहास के सम्बन्ध मे उसकी रचना को विशेष महत्व प्राप्त है।

मीर मुहम्मद मासूम नामी

तारीखे सिन्ध

मीर मुहम्मद मासूम नामी बिन सैयिद सफाई अल हुसैनी अल तिरमिज़ी अल भक्करी, भक्कर के एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। ९९१ हि० (१५८३ ई०) मे वह अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त गुजरात पहुचा और 'तबकाते अकबरी' के लेखक निजामुद्दीन अहमद का मित्र हो गया। वह १५९५-९६ ई० मे अकबर की सेवा मे सम्मिलित हो गया और २५० का मसब प्राप्त किया। १०१२ हि० (१६०३-४ ई०) मे उसे शाह अब्बास सफवी के पास राजदूत बनाकर ईरान भेजा गया। जब वह वहा से वापस आया तो जहागीर ने उसे अमीरुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। वह १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) में भक्कर लौट गया और सम्भवत उसी के कुछ बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

'तारीखे सिन्ध' मे, जिसे 'तारीखे मासूमी' भी कहा जाता है, उसने सिन्ध के सुल्तानो का इतिहास, जो मुसलमानो की विजय से लेकर अकबर के शासनकाल तक राज्य करते रहे, दिया है और इसे चार खडो मे विभाजित किया है—

१ सिन्ध की विजय

२ हिन्दुस्तान के बादशाहो द्वारा नियुक्त गवर्नरो का इतिहास ८०१ हि० (१३९९ ई०) तक तथा सूमरा एव सुम्मा वशो का इतिहास ९१६ हि० (१५१० ई०) तक।

३ अरगून वश का इतिहास, सुल्तान महमूद खा ९८२ हि० (१५७४ ई०) तक तथा थट्टा के कुछ सुल्तानो का इतिहास ९९३ हि० (१५८५ ई०) तक ।

४ सिन्ध का इतिहास, ९८२ हि० (१५७४ ई०) से अकबर की विजय १००८ हि० (१५९९-१६०० ई०) तक।

मीर मुहम्मद मासूम को सिन्ध के इतिहास का विशेष ज्ञान था और उसने अपनी जानकारी के आधार पर सिन्ध की प्राचीन ऐतिहासिक छोटी छोटी घटनाओ को सकलित करके अपना इतिहास तैयार किया है। सम्भवत- ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की मित्रता से भी उसे बडा लाभ हुआ होगा और उसने अपने इतिहास को यथासम्भव बिना किसी पक्षपात के प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

सिकन्दर बिन मुहम्मद मंझू

मिरआते सिकन्दरी

सिकन्दर बिन मुहम्मद मझू बिन अकबर, गुजरात के सूबेदार खाने आजम अजीज कोका की सेवा मे कुछ समय तक रहा और उसने गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर शाह तृतीय के विरुद्ध मिर्जा अजीज कोका के साथ युद्ध किया। मुजफ्फर शाह तृतीय १००० हि० (१५९१ ई०) मे राजसिहासन से पृथक् कर दिया गया। १०२६ हि० (१६१७ ई०) मे वह जहागीर की सेवा मे अहमदाबाद मे उपस्थित हुआ। जहागीर ने उसके विषय मे 'तुजुक' मे लिखा है कि, "उसे गुजरात के इतिहास का बडा अच्छा ज्ञान है।" सिकन्दर बिन मुहम्मद मझू ने 'मिरआते सिकन्दरी' १०२० हि० (१६११ ई०) अथवा १०२२ हि० (१६१३ ई०) मे समाप्त की।

इसमे जफर खा (मुजफ्फर शाह प्रथम) से लेकर सुल्तान मुजफ्फर शाह तृतीय की मृत्यु १००० हि० (१५९१ ई०) तक के गुजरात के सुल्तानो का इतिहास दिया गया है। राजनैतिक घटनाओ के साथ साथ सिकन्दर ने विभिन्न नगरों के निर्माण तथा अन्य सामाजिक एव सास्कृतिक विषयो पर भी कही कही प्रकाश डाला है। उसने बहुत सी घटनाए अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर भी लिखी है। 'जफरुल वालेह' का लेखक हाजी उद्दबीर भी 'मिरआते सिकन्दरी' से लाभान्वित हुआ है। गुजरात के कुछ अन्य इतिहास, जो इस समय अप्राप्य है, सिकन्दर को प्राप्त थे अत उसका इतिहास बडा ही महत्वपूर्ण है।

अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की

जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह

अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की, अल आसफी उलुग खानी का जन्म सम्भवत १५४० ई० मे हुआ था। वह १५५५ ई० मे भारतवर्ष पहुचा और अपने पिता के साथ अहमदाबाद मे निवास करने लगा। १५५९ ई० मे वह गुजरात के एक प्रमुख अमीर मुहम्मद उलुग खा की सेवा मे प्रविष्ट हो गया। १५६० ई० मे उसने बरौदा के निकट एक युद्ध मे बडा महत्वपूर्ण भाग लिया जिसके फलस्वरूप उसे दो गाव प्रदान किये गये। १५७३ ई० मे जब अकबर ने गुजरात के बहुत बडे भाग को अपने अधिकार मे कर लिया तो उसके पिता को बहुत से वक्फों का प्रबन्ध सौप दिया। इन वक्फो की आय मक्का मदीना भेजी जाती थी और यह कार्य लेखक के सिपुर्द था। इस प्रकार उसके इतिहास से पता चलता है कि वह १५७४ ई० मे मक्का मे था। १५७६ ई० मे उसके पिता की मृत्यु हो गई और सम्भवत वक्फ का प्रबन्ध उसके हाथ से निकल गया। तदुपरान्त वह गुजरात के एक अन्य अमीर सैफुलमुल्क की सेवा मे प्रविष्ट हो गया। १५९५ ई० मे उसकी माता की मृत्यु हो गयी। तत्पश्चात् वह खानदेश के एक प्रमुख अमीर फौलाद खा की सेवा मे पहुच गया। १६०५ ई० मे फौलाद खा की मृत्यु हो गई।

सम्भवत हाजी उद्दबीर ने अपना इतिहास १६०५ ई० मे समाप्त कर लिया था किन्तु वह उसमे बाद मे भी सशोधन करता रहा और कई स्थानो पर उसने मिरआते सिकन्दरी' का उल्लेख किया है जिसकी रचना १६११ अथवा १६१३ ई० मे समाप्त हुई। इससे पता चलता है कि लेखक उस

समय भी अपनी पाडुलिपि को सकलित करने मे व्यस्त था। उसने मुख्य रूप से अपने ग्रन्थ मे निम्न-लिखित इतिहासो के हवाले दिये है —

१ तबकाते हुसाम खानी अथवा तारीखे बहादुरशाही,

२ तुहफतुस्सादात, लेखक आराम कश्मीरी,

३. तारीखे आजमी।

'तारीखे बहादुरशाही' की चर्चा 'मिरआते सिकन्दरी' मे भी कई स्थानो पर हुई है किन्तु 'तुहफतुस्सादात' का उल्लेख केवल एक ही बार 'मिरआते सिकन्दरी' मे किया गया है। दुर्भाग्यवश इसमे से तीनो ग्रन्थो का इस समय तक कोई पता नही चल सका है।

'जफरुल वालेह' मे हाजी उद्बीर ने गुजरात के सुल्तानो के इतिहास के साथ साथ बीच बीच मे अन्य ऐतिहासिक घटनाओ, जीवनियो तथा वशो का विवरण दिया है। मुख्य रूप से जौनपुर, मालवा, खानदेश तथा देहली के सुल्तानो का इतिहास भी आ गया है।

प्रस्तुत पुस्तक मे मालवा तथा गुजरात दोनो ही स्थानों के सुल्तानो के इतिहास से सम्बन्धित भागो का अनुवाद किया गया है। गुजरात मे बहुत समय तक सेवा करने तथा उन इतिहासो को अपनी रचना मे उद्धृत करने के कारण जो अब अप्राप्य है, 'जफरुल वालेह' को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। मालवा तथा गुजरात के सुल्तानो के विषय मे उसने जिन घटनाओ का उल्लेख किया है उनमे से बहुत सी घटनाए किसी अन्य ग्रन्थ मे नही मिलती। इस प्रकार बहुत से ऐतिहासिक विवरणो का एकमात्र साधन केवल हाजी उद्बीर ही है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है।

गुलाम हुसेन सलीम ज़ैदपुरी

रियाजुस्सलातीन

गुलाम हुसेन सलीम अवध मे स्थित बाराबकी ज़िले के ज़ैदपुर नामक स्थान का निवासी था और वहा से बगाल मे मालदा जाकर डाक मुशी नियुक्त हो गया। उसने 'रियाजुस्सलातीन' की रचना जार्ज उडनी की प्रार्थना पर की। उसकी मृत्यु १२३३ हि० (१८१७-१८ ई०) मे हो गई।

'रियाजुस्सलातीन' की रचना उसने १२०२ हि० (१७८७-८८ ई०) मे की। बगाल का यह इतिहास एक प्रस्तावना तथा चार खडो मे विभाजित है। प्रस्तावना मे उसने भौगोलिक विवरण के साथ साथ बगाल के प्राचीन राजाओ का हाल लिखा है। पहले खड में उसने उन लोगों का इतिहास लिखा है जो देहली के सुल्तानो द्वारा बगाल के शासन हेतु नियुक्त हुए थे। दूसरे खड मे बगाल के स्वतत्र बादशाहों का इतिहास, तीसरे खड मे तैमूर के अधीनस्थ नाजिमो का इतिहास और चौथे खड मे बर्तानिया सरकार के समय के बगाल के इतिहास का विवरण दिया है। देहली के सुल्तानो के इतिहास के सम्बन्ध मे उसने 'तबकाते अकबरी' एव 'तारीखे फिरिश्ता' का अधिक प्रयोग किया है और कही कही पूरे के पूरे वाक्य बिना किसी परिवर्तन के ग्रहण कर लिये है। कुछ अन्य इतिहास एव स्थानीय जानकारी को भी उसने अपने इतिहास मे सकलित किया है।

विषय-सूची

जौनपुर	पृ०
१ तबकाते अकबरी	३–१२
२ गुलशने इबराहीमी अथवा तारीखे फिरिश्ता	१३–२४
कालपी	
१ तारीखे मुहम्मदी	२७–४७
मालवा	
१ तबकाते अकबरी	५१–१३१
२ वाकेआते मुश्ताकी	१३७–१४८
३ जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह	१४९–१७२
गुजरात	
१ तबकाते अकबरी	१७५–२४९
२ मिरआते सिकन्दरी	२५०–३९४
३ जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह	३९५–४६१
सिन्ध	
१ तबकाते अकबरी	४६५–४६७
२ तारीखे सिन्ध	४६८–४९२
मुल्तान	
१ तबकाते अकबरी	४९५–५०७
कश्मीर	
१ तबकाते अकबरी	५११–५३०
बंगाल	
१ तबकाते अकबरी	५३३–५३९
२ गुलशने इबराहीमी अथवा तारीखे फिरिश्ता	५४०–५५०
३ रियाजुस्सलातीन	५५१–५६२
परिशिष्ट	
१ वाकेआते मुश्ताकी	५६३–५६७

जौनपुर

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

(क) तबकाते अकबरी

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी "फिरिश्ता"

(ख) गुलशने इबराहीमी अथवा

तारीखे फिरिश्ता

तबक़ाते अकबरी

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन—कलकत्ता १९३५ ई०)

सुल्तानुश्शर्क़

(२७३) कहा जाता है कि जब सुल्तान महमूद बिन सुल्तान मुहम्मद बिन फीरोज शाह का राज्यकाल प्रारम्भ हुआ तो उसने मलिक सरवर ख्वाजासरा को, जिसे सुल्तान महमूद शाह ने ख्वाजये जहा की उपाधि प्रदान की थी, सुल्तानुश्शर्क की उपाधि प्रदान करके जौनपुर की विलायत[1] को भेजा और वहा का राज्य उसे प्रदान कर दिया। सुल्तान महमूद के गौरवहीन हो जाने के कारण सुल्तानुश्शर्क को प्रभुत्व प्राप्त हो गया। उसने कोल, इटावा, कम्पिला तथा बहराइच के विद्रोहियो को दड देकर, देहली की ओर से कोल एव रापरी[2] के परगने तक तथा उस ओर[3] से बिहार एव तिरहुट को अधिकार मे कर लिया और प्रदेशो मे पुन रौनक पैदा हो गई। हाथी तथा उपहार, जो प्रत्येक वर्ष लखनौती और जाजनगर के प्रान्तो से देहली मे प्राप्त हुआ करते थे और कई वर्षो से पदाधिकारियो की दुर्दशा के कारण न प्राप्त हो सके थे, पुन प्राप्त होने लगे। जमीदारो के हृदय मे इतना आतक आरूढ हो गया कि प्रत्येक वर्ष वे निश्चित खराज जौनपुर भेजने लगे।

(२७४) सुल्तानुश्शर्क की ८०२ हि० (१३९९-१४०० ई०) मे मृत्यु हो गई। उसने १६ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान मुबारक शाह शर्क़ी

जब सुल्तानुश्शर्क की मृत्यु हो गई और देहली के शासन प्रबन्ध मे नित्यप्रति विघ्न पडने लगा तथा राज्य के कार्य अव्यवस्थित हो गये तो मलिक मुबारक करनफुल, जिसे सुल्तानुश्शर्क पुत्र कहा करता था, अमीरो तथा सरदारो की सहमति से मुबारक शाह की उपाधि से सुशोभित होकर सिंहासनारूढ हुआ। जौनपुर तथा अन्य प्रदेशो मे, जो सुल्तानुश्शर्क के अधीन थे, उसके नाम का खुत्बा[4] पढा जाने लगा।

जब मल्लू इकबाल खा को सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तानुश्शर्क की मृत्यु हो गई और मलिक मुबारक करनफुल ने मुबारक शाह की उपाधि धारण कर ली है तो उसने ८०३ हि० (१४००-१४०१ ई०) मे

१ प्रान्त, राज्य।

२ उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में, यमुना नदी के बाये तट पर, मैनपुरी से दक्षिण-पश्चिम मे ४४ मील पर।

३ पूर्व की ओर से।

४ स्वतन्त्र रूप से सुल्तान हो गया।

एक भारी सेना एकत्र करके जौनपुर पर आक्रमण किया। मार्ग मे इटावा के विद्रोहियो को दड देकर कन्नौज पहुचा। मुबारक शाह भी सेना एकत्र करके युद्ध करने के लिए पहुचा। क्योकि गगा नदी दोनो सेनाओ के मध्य मे स्थित थी अत दो मास तक दोनो सेनाये एक दूसरे के आमने-सामने डटी रही। कोई भी वीरता प्रदर्शित करके गगा नदी पार करने का साहस न कर सका और वे युद्ध किये बिना ही अपने अपने राज्य को लौट गये।

जौनपुर पहुच जाने के उपरान्त मुबारक शाह को समाचार प्राप्त हुए कि "सुल्तान महमूद गुजरात से देहली पहुच गया है और मल्लू इकबाल खा उसे लेकर पुन कन्नौज की ओर आ रहा है।" यह समाचार पाते ही उसने सेना की तैयारी प्रारम्भ कर दी किन्तु मौत के कारण उसे अवसर न मिल सका और ८०४ हि० (१४०१-२ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने एक वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान इबराहीम शर्क़ी

(२७५) मुबारक शाह की मृत्यु के उपरान्त शर्की राज्य के अमीरो ने उसके अनुज को सुल्तान इबराहीम शर्की की उपाधि देकर सिंहासनारूढ किया और सर्वसाधारण को उसके राज्य मे शान्ति प्राप्त हो गई। आलिम[1] तथा सम्मानित व्यक्ति, जो ससार की अव्यवस्था के कारण कष्ट मे थे, जौनपुर जोकि दारुल अमान[2] था, पहुच गये और वह राजधानी आलिमो के चरणो के आशीर्वाद से दारुल उलूम[3] बन गई। अनेक पुस्तको तथा पत्रिकाओ की उसके नाम पर रचना की गई, उदाहरणार्थ 'हाशियये हिन्दी', 'बहरुल मव्वाज', 'फतावाये इबराहीम शाही', 'इरशाद' इत्यादि। क्योकि इस ससार को आश्रय प्रदान करने वाले बादशाह को ईश्वर की सहायता प्राप्त थी, अत नि सन्देह वह युवावस्था मे अनुभव तथा कार्यकुशलता मे हिन्दुस्तान के समस्त सुल्तानो से बढकर था।

सुल्तान महमूद के विरुद्ध प्रस्थान

अपने राज्यकाल के प्रारम्भ मे उसने सेना एकत्र करके सुल्तान महमूद तथा इकबाल खा, जो जौनपुर को विजय करने के आकाक्षी थे, को पराजित करने के लिये प्रस्थान किया। जब वह गगा-तट पर पहुचा तो दोनो सेनाये एक दूसरे के समक्ष उतर पडी। सुल्तान महमूद, इस कारण कि मल्लू इकबाल खा उसे राज्य मे कोई अधिकार प्राप्त करने न देता था, और राज्य व्यवस्था के सचालन मे नाम मात्र को भी उससे परामर्श न करता था, शिकार के बहाने से अपने शिविर से निकला और सुल्तान इबराहीम से (२७६) मिल गया। सुल्तान इबराहीम ने अभिमानवश नमक का हक अदा न किया और उसका आदर-सत्कार करने तथा प्रोत्साहन प्रदान करने की ओर से उपेक्षा की। सुल्तान महमूद खिन्न होकर कन्नौज पहुचा और कन्नौज के थानेदार को, जो मुबारक शाह के पहले ही से वहा रहता था और जो अमीरज़ादा हरेकी कहलाता था, निकाल कर कन्नौज पर अधिकार जमा लिया। इस समाचार को पाकर कन्नौज को उसी के पास छोड कर, सुल्तान इबराहीम जौनपुर और मल्लू इकबाल खा देहली

१ मुसलमान विद्वान्।
२ शान्ति का घर।
३ विद्या का घर अथवा केन्द्र।

पहुच गये। कुछ इतिहासो मे लिखा है[1] कि सुल्तान महमूद, मुबारक शाह शर्की के पास पहुचा था और सुल्तान इबराहीम को उसी समय राज्य प्राप्त हुआ था तथा मुबारक शाह की मृत्यु हुई थी।

सुल्तान इबराहीम का कन्नौज पर आक्रमण

८०७ हि० (१४०४-५ ई०) मे मल्लू इक़बाल खा ने पुन कन्नौज पहुच कर उसे घेर लिया। सुल्तान महमूद अपने थोडे से विश्वासपात्रो सहित किले मे बन्द होकर वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित करता रहा। मल्लू इकबाल खा असफल तथा निराश होकर देहली वापस चला गया। ८०८ हि० (१४०५-६ ई०) मे मल्लू खा की ख़िज्र खा ने अजोधन के समीप हत्या कर दी। इसका उल्लेख हो चुका है। सुल्तान महमूद, मलिक महमूद को कन्नौज मे छोड कर देहली पहुचा और अपने पूर्वजो के राजसिहासन पर आरूढ हो गया। सुल्तान इबराहीम ने अवसर पाकर ८०९ हि० (१४०६-७ ई०) मे कन्नोज की विजय हेतु प्रस्थान किया। सुल्तान महमूद देहली की सेना लेकर (२७७) सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। दोनो सेनाये गगा-तट पर एक दूसरे के समक्ष उतरी। कुछ दिन उपरान्त युद्ध किये बिना दोनो अपनी अपनी विलायत को लौट गईं।

कन्नौज की विजय

सुल्तान इबराहीम ने देहली पहुच कर अमीरो को अपनी अपनी जागीरो को जाने की अनुमति दे दी। सुल्तान इबराहीम ने पुन कन्नौज पहुच कर उसे घेर लिया। घेरे की अवधि चार मास से अधिक हो जाने तथा सहायता एव कुमक देहली से न प्राप्त होने के कारण, मलिक महमूद ने क्षमा-याचना करके कन्नौज उसे सौप दिया।

देहली की ओर प्रस्थान

सुल्तान ने कन्नौज इख्तियार खा को प्रदान कर दिया और देहली की विजय हेतु प्रस्थान किया। मार्ग मे तातार खा बिन (सुपुत्र) सारग ख़ा, मलिक मरजान[2] मल्लू इकबाल खा का दास, देहली से आकर उससे मिल गये। सुल्तान इबराहीम की शक्ति बढ गई और उसने सम्बल[3] की ओर प्रस्थान किया। जब वह सम्बल पहुचा तो असद ख़ा लोदी सम्बल को छोड कर भाग गया। सुल्तान इबराहीम सम्बल को तातार खा को सौप कर देहली की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे बरन कस्बे को विजय करके मलिक मरजान को प्रदान कर दिया।

१ एक पोथी मे इस प्रकार है 'कुछ इतिहासो में लिखा है कि सुल्तान महमूद मुबारक शाह के पास गया था। ८०३ हि० (१४००--१४०१ ई०) मे इक़बाल ख़ा ने पुनः कन्नौज को घेरा। दोनो सेनाये एक दूसरे के आमने सामने डट गई। कुछ दिन उपरान्त युद्ध किये बिना लौट गई। सुल्तान महमूद जब देहली पहुँचा तो उसने अमीरो को विदा कर दिया। सुल्तान इबराहीम ने कन्नौज को पुन घेर लिया। अवरोध चार मास से अधिक हो जाने तथा सहायता एव कुमक न पहुँचने के कारण मलिक महमूद ने क्षमा-याचना करके कन्नौज समर्पित कर दिया'।

२ एक पोथी मे 'महमूद मरजान'।

३ सम्भल।

सुल्तान इबराहीम की देहली से वापसी

जब वह यमुना तट पर पहुचा तो गुप्तचरों ने यह समाचार पहुचाये कि सुल्तान मुजफ्फर गुजराती मालवा पहुच गया है और सुल्तान महमूद की सहायता तथा कुमक को आ रहा है। सुल्तान इबराहीम वीरता की लगाम छोड कर जौनपुर की ओर रवाना हो गया। सुल्तान महमूद ने सम्बल का राज्य पूर्व की भाति असद खा लोदी को प्रदान कर दिया और देहली लौट गया।

सुल्तान इबराहीम का ब्याना पर आक्रमण

८३१ हि० (१४२७-२८ ई०) मे सुल्तान इबराहीम ब्याना के किले पर पहुचा। खिज्र खा को उस समय देहली मे पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त था। उसने उसे पराजित करने के लिये देहली से प्रस्थान किया। जब दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई तो प्रात काल से सायकाल तक युद्ध होता रहा। दूसरे दिन एक ऐसी (२७८) सधि करके जिसमे लेशमात्र को भी निष्ठा न थी, सुल्तान इबराहीम जौनपुर तथा खिज्र खा देहली चले गये।

कालपी पर आक्रमण

८३७ हि०[1] (१४३३-३४ ई०) मे सुल्तान इबराहीम ने अपनी हानि की पूर्ति के उपरान्त एव आसपास के विद्रोहियो से निश्चिन्त होकर कालपी की विजय का सकल्प करके पूर्ण तैयारी सहित उस ओर प्रस्थान किया। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान होशग गोरी ने भी कालपी को विजय करने का सकल्प कर लिया है। जब दोनो बादशाह एक दूसरे के निकट पहुचे और आजकल मे युद्ध छिडने वाला ही था कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि मुबारक शाह बिन (पुत्र) खिज्र खा ने देहली से बहुत बडी सेना एकत्र करके जौनपुर की विजय हेतु प्रस्थान कर दिया है। सुल्तान इबराहीम विवश होकर जौनपुर की ओर चल दिया। सुल्तान होशग ने बिना किसी कठिनाई के कालपी को अपने अधिकार मे कर लिया और अपने नाम का खुत्बा पढवा कर[2] मन्दू[3] लौट गया।

८४० हि० (१४३६-३७ ई०) मे सुल्तान इबराहीम रुग्ण हो गया। चिकित्सको ने यद्यपि अत्यधिक उपचार किया किन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। अन्त मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने ४० वर्ष तथा कुछ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद बिन इबराहीम शर्क़ी

सुल्तान इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान महमूद जौनपुर के सिहासन (२७९) पर आरूढ हुआ, तथा अपने पिता का स्थान ग्रहण किया। उसके उपकार द्वारा लोग सुखी हो गये और राज्य मे पुन रौनक़ आ गई। लोग प्रसन्न हो गये।

मालवा के सुल्तान के पास राजदूत भेजना

सेना तथा राज्य के प्रबन्ध, विद्रोहियो तथा उपद्रवियो को दड देने, के उपरान्त उसने ८४७ हि०

१ एक पोथी के अनुसार ८३८ हि० (१४३५-३६ ई०)।
२ सुल्तान घोषित करके।
३ 'मांडू' तथा 'मादू' भी प्रयुक्त हुआ है।

(१४४३-४४ ई०) मे एक वाकपटु राजदूत को उपहार देकर सुल्तान महमूद खलजी के पास भेजा और यह कहलाया कि "नसीर खा पुत्र कादिर खा[1], कालपी का अधिकारी, मुहम्मद साहब की शरीअत[2] के बाहर हो गया है और मुरतद[3] बन गया है। शाहपुर नामक कस्बे को, जो कालपी से अधिक आबाद था, नष्ट-भ्रष्ट करके मुसलमानो को निर्वासित कर दिया है। मुसलमानो की स्त्रियो को काफिरो को सौप दिया है। क्योकि होशग शाह के राज्यकाल से हम लोग प्रेम तथा निष्ठा के बधन मे बधे हुए है अत बुद्धिमत्ता के अनुसार हमारे लिये यह आवश्यक है कि आपको इसकी सूचना दे दे और यदि आपकी अनुमति हो तो उसे दड देकर इस्लामी प्रथाये वहा लागू कर दी जाय।"

सुल्तान महमूद का उत्तर

सुल्तान महमूद खलजी ने उत्तर मे कहलवाया कि, "इससे पूर्व हमे भी इस प्रकार की सूचना मिली थी किन्तु आपके सूचना देने से अब विश्वास हो गया। उस दुष्ट का विनाश समस्त बादशाहो के लिये आवश्यक है। यदि मेरी सेनाये मेवात के विद्रोहियो को दड देने के लिये प्रस्थान न कर रही होती तो मै स्वय उनके विनाश हेतु प्रस्थान करता। इस समय जब आपने यह सकल्प कर लिया है तो आपके लिए वह शुभ हो।"

शर्की द्वारा कालपी पर आक्रमण

जौनपुर मे राजदूत ने पहुच कर इस बात की सूचना दी।[4] सुल्तान महमूद शर्की प्रसन्न (२८०) हो गया। उसने २९ हाथी पेशकश के रूप मे महमूद खलजी के पास भेजे और सेना की तैयारी करके कालपी की ओर प्रस्थान किया। नसीर खा ने यह समाचार पाकर सुल्तान महमूद खलजी को लिखा कि, "यह प्रदेश सुल्तान होशग शाह ने हमे प्रदान कर दिया था। अब सुल्तान महमूद शाह शर्की उसका अपहरण करना चाहता है। फकीर की सहायता आपके लिये आवश्यक है।"

सुल्तान महमूद का कालपी के विषय मे सुल्तान महमूद शर्की को पत्र

सुल्तान महमूद खलजी ने इस प्रार्थना-पत्र की सूचना पाकर प्रेम तथा निष्ठा से परिपूर्ण एक पत्र लिखा और उचित पेशकश सहित अली खा के हाथ सुल्तान महमूद शर्की के पास भेजा और लिखा कि "कालपी का हाकिम नसीर खा ईश्वर के भय तथा आपके डर से तोबा[5] करता है और जो अपराध उसने किये है तथा जो हानि उसके द्वारा हुई है उसे पूरा करने पर उद्यत है और अब वह शरीअत के मार्ग से विचलित न होगा। क्योकि स्वर्गीय सुल्तान होशग शाह ने यह प्रदेश कादिर खा को प्रदान कर दिया था और ये लोग हमारे आज्ञाकारी है अत उसके अपराध को आप क्षमा कर दे और उसके राज्य को कोई हानि न पहुचाये।"

१ एक पोथी के अनुसार 'नसीर खाने जहाँ वल्द कादिर खां'।
२ इस्लाम के नियम।
३ वह मुसलमान जो इस्लाम त्याग कर किसी अन्य धर्म को स्वीकार कर ले।
४ एक पोथी के अनुसार 'राजदूत ने जौनपुर मे इस विषय से सम्बन्धित पत्र लिखा'।
५ घृणित अथवा निंद्य कर्म पुन॰ न करने का पश्चात्ताप अथवा शपथपूर्वक की गई दृढ प्रतिज्ञा।

सुल्तान महमूद शर्की का कालपी पर आक्रमण तथा मालवा के सुल्तान का कालपी की सहायतार्थ प्रस्थान

अभी अली खा ने पत्र न पहुचाया था कि नसीर खा का प्रार्थना-पत्र पुन प्राप्त हुआ कि, "यह फकीर होशग शाह के राज्यकाल से निष्ठावान् है और इस समय सुल्तान महमूद शर्की ने प्राचीन ईर्ष्या तथा शत्रुता के कारण कालपी पहुच कर इस प्रदेश का गौरव नष्ट कर दिया है और फकीर को निर्वासित कर दिया है। मुसलमान स्त्रियो को बन्दी बना रहा है।" यद्यपि सुल्तान महमूद शर्की ने नसीर खा को (२८१) दड देने की अनुमति प्राप्त कर ली थी, किन्तु नसीर खा के अत्यधिक आग्रह के कारण २ शाबान ८४८ हि० (१४ नवम्बर १४४४ ई०) को सुल्तान महमूद ने उज्जैन से चन्देरी तथा कालपी की ओर प्रस्थान किया। चन्देरी मे नसीर खा भेट करने पहुचा। चन्देरी से उसने एरचा[1] की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान महमूद शर्की यह समाचार सुनकर विलम्ब किये बिना कालपी से अग्रसर हुआ।

जौनपुर तथा मालवा के सुल्तान मे युद्ध

सुल्तान महमूद खलजी ने एक सेना जौनपुर की सेना से युद्ध करने के लिये भेजी। दूसरी सेना इस आशय से भेजी कि जौनपुर की सेना का पिछला भाग नष्ट कर दे। इस सेना ने पहुच कर शिविर के बचे-खुचे लोगो की हत्या कर दी और जो कुछ उन्हे मिला उसे नष्ट कर दिया। जो सेना सामने से युद्ध करने के लिये नियुक्त हुई थी, उसने युद्ध तथा रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। दोनो ओर से योग्य आदमी मारे गये। अन्त मे दोनो दलो ने अपने अपने क्षेत्र मे पडाव किया। दूसरे दिन प्रात काल सुल्तान महमूद खलजी ने एमादुलमुल्क को शत्रु का मार्ग रोक देने के उद्देश्य से भेजा। शत्रु को जब इसका पता चला तो वे उसी स्थान पर जो दृढ था ठहर गये।

मालवा के सुल्तान से युद्ध

सुल्तान महमूद खलजी ने उस पडाव की दृढता से अवगत होकर एक सेना कालपी के आस-पास के स्थानो तक आक्रमण करने के लिये भेजी और अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति प्राप्त की। जब वर्षा ऋतु आ गई तो वह एक प्रकार से सधि करके वहा से लौट आया। सुल्तान महमूद खलजी चन्देरी पहुचा। सुल्तान महमूद शर्की ने अवसर पाकर सेना बरहार[2] की विलायत[3] को, जहा के निवासी सुल्तान महमूद खलजी के आज्ञाकारी थे, विजय करने के लिये भेजी। सुल्तान महमूद खलजी ने बरहार की विलायत के मुकद्दम[4] की सहायता तथा कुमक के लिये एक सेना भेजी। सुल्तान महमूद शर्की अपनी सेना मे युद्ध की शक्ति न देख कर स्वय पहुच कर सेना से मिल गया।

सुल्तान महमूद शर्की द्वारा शेख जायल्दा को मध्यस्थ बनाना

(२८२) कुछ दिन उपरान्त सुल्तान महमूद शर्की ने एक पत्र शेखुल इस्लाम शेख जायल्दा की सेवा मे, जो अपने समय के एक पूज्य व्यक्ति थे और सुल्तान महमूद खलजी जिनका मुरीद[5] तथा

१ एक पोथी के अनुसार 'ईरज'।
२ एक पोथी के अनुसार 'बरहारा'।
३ राज्य।
४ अधिकारी।
५ भक्त, चेला।

भक्त था और जो इस समय मन्दू के सुल्तानो के गुम्बद[1] मे दफन है, भेजा और उसमे यह लिखा कि, "दोनो ओर से मुसलमानो की हत्या हो रही है। यदि आप सधि का प्रयत्न करे तो उचित होगा।" सुल्तान महमूद शर्की के दूत ने शेख जायल्दा से निवेदन किया कि, "इस समय राठ का कस्बा नसीर खा को सौप दिया जायगा और सुल्तान महमूद खलजी के लौट जाने के पश्चात् चार मास मे एरचा कस्बे तथा समस्त कालपी, जो शर्कियो के अधीन हो गया है, को नसीर खा के लिए छोड दिया जायगा।"

सधि

जब सुल्तान महमूद शर्की के दूत ने शेख़ जायल्दा की सेवा मे यह निवेदन किया, तो शेख ने शर्की के वकील को अपने सेवक के साथ सुल्तान की सेवा मे भेजा और एक उपदेश भरा पत्र लिख कर उसकी सेवा मे प्रेषित किया। सुल्तान महमूद खलजी ने कहा कि, "जब तक वह कालपी न देगा सधि की कोई आशा नही" किन्तु नसीर खा ने जो निर्वासित था राठ को पर्याप्त समझ कर निवेदन किया कि, "जब वह (सुल्तान महमूद शर्की) शेख जायल्दा की सेवा मे प्रतिज्ञा करता है तो अवश्य ही वह उसके विरुद्ध कार्य न करेगा।" सुल्तान महमूद खलजी ने जब यह देखा कि सम्बन्धित व्यक्ति सधि से सन्तुष्ट है तो उसने सुल्तान महमूद शर्की के दूत को अपनी सेवा मे बुलवा कर इस शर्त पर सधि कर ली कि, "अब वह (सुल्तान महमूद शर्की) कादिर खा की सन्तान विशेष रूप से नसीर ख़ाने जहा के प्रति किसी प्रकार की शत्रुता प्रदर्शित न करे और फिर कभी इस प्रदेश पर आक्रमण न करे। चार मास उपरान्त कालपी तथा अन्य कस्बे नसीर ख़ा को सौप दे।" शेख़ जायल्दा के प्रयत्न के फलस्वरूप सधि हो जाने के उपरान्त, सुल्तान महमूद ख़लजी ने सुल्तान महमूद शर्की के दूत को इनाम प्रदान करके विदा कर दिया और स्वय (२८३) अपनी राजधानी मन्दू की ओर लौट गया।

सुल्तान महमूद शर्की की जौनपुर को वापसी

सुल्तान महमूद शर्की ने भी जौनपुर की ओर प्रस्थान किया। जौनपुर पहुच कर उसने दान पुण्य (के कार्य) प्रारम्भ कर दिये और सभी को उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम देने लगा।

चम्पारन पर आक्रमण

कुछ समय तक जौनपुर मे ठहरने और सेना को जो कुछ हानि हो चुकी थी, उसकी पूर्ति करने के उपरान्त उसने चम्पारन[2] की ओर प्रस्थान किया। उस प्रदेश को विध्वस करके उस ओर के विद्रोहियो को तलवार का भोजन बना डाला। कुछ परगनो तथा कस्बो पर अधिकार करके अपने थानेदार वहा नियुक्त कर दिये। वहा की व्यवस्था ठीक करके जौनपुर की ओर लौट आया।

उडीसा पर आक्रमण

कुछ दिन उपरान्त उसने उडीसा पर जिहाद के विचार से प्रस्थान किया और उस प्रदेश के आस-पास के स्थानो पर आक्रमण करके उन्हे विध्वस कर डाला और मन्दिरो का खडन करके उन्हे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट आया।

१ मकबरे।
२ एक पोथी मे 'उडीसा की ओर प्रस्थान किया और उस विलायत को विजय किया'।

मृत्यु

८६२ हि० (१४५७-५८ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।
उसने २१ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद शाह बिन महमूद शाह

सुल्तान महमूद शर्की की मृत्यु हो जाने के उपरान्त, अमीरो तथा राज्य के स्तम्भो ने शाहज़ादा भीकन खा, जो उसका ज्येष्ठ पुत्र था, को सिहासनारूढ किया और उसकी उपाधि महमूद शाह निश्चित (२८४) की। क्योकि वह राज्य का कार्य करने के योग्य न था और अनुचित कार्य करने लगा था अत अमीरो एव राज्य के स्तम्भो ने उसे राज्य से क्षमा करके[1] उसके अनुज हुसेन को राज्य प्रदान किया। उसने लगभग ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान हुसेन बिन महमूद शाह

जब उसके भाई महमूद शाह को राज्य के कार्य से क्षमा कर दिया गया तो उसे (हुसेन को) राज्य प्रदान करके न्याय तथा इन्साफ की घोषणा की गई। समस्त अमीर तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति उसके आज्ञाकारी हो गये। क्योकि वह प्रदेशो की विजय का अत्यधिक आकाक्षी था, अत उसने ३,००,००० अश्वारोही तथा १४०० हाथी एकत्र करके उडीसा पर चढाई की। इस चढाई के समय उसने तिरहुट प्रदेश को पद-दलित करके वहा के विद्रोहियो से ख़राज प्राप्त किया। जब वह उडीसा की विलायत मे पहुचा तो उसने उस प्रदेश के चारो ओर के क्षेत्रो के ध्वस हेतु सेनाये भेजी। उडीसा के राय ने दीनता प्रदर्शित करके सुल्तान की सेवा मे एक दूत भेज कर अपने अपराधो की क्षमा-याचना की। ३० हाथी, १०० घोडे, अत्यधिक वस्त्र तथा सम्पत्ति भेट की। सुल्तान हुसेन वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके जौनपुर पहुचा।

बनारस के किले की मरम्मत

८७० हि० (१४६५-६६ ई०) मे उसने बनारस के किले की, जो कालचक्र के कारण नष्ट हो गया था, मरम्मत कराई। ८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे उसने अपने अमीरो को ग्वालियर के किले को विजय करने के लिये भेजा। जब किले को घेरे हुए बहुत समय व्यतीत हो गया तो ग्वालियर के राय ने पेशकश प्रस्तुत करके आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली।

देहली पर आक्रमण

८७८ हि० (१४७३-७४ ई०) मे सुल्तान हुसेन ने मलकये जहा के आग्रह पर, जो उसकी पत्नी तथा सुल्तान अलाउद्दीन बिन मुहम्मद शाह बिन फरीद शाह बिन मुबारक शाह बिन ख़िज्र खा की पुत्री (२८५) थी, एक लाख चालीस हजार अश्वारोही तथा १४०० हाथियो को लेकर देहली को विजय करने की अभिलाषा से सुल्तान बहलोल लोदी से युद्ध करने का सकल्प किया। सुल्तान बहलोल ने सुल्तान

१ पदच्युत करके।
२ 'भीकन खां' तथा 'भीखन खां' दोनों ही प्रयुक्त हुये हैं।

महमूद ख़लजी के पास दूत भेज कर यह सन्देश कहलवाया कि यदि वह सहायतार्थ पधारेंगे तो ब्याना के किले तक (के स्थान) उनके अधिकार मे दे दिये जायेंगे।

सुल्तान बहलोल द्वारा सधि का प्रयत्न

अभी मन्दू से उत्तर भी न प्राप्त हुआ था कि सुल्तान हुसेन ने देहली की अधिकाश विलायत[1] अपने अधिकार मे कर ली। सुल्तान बहलोल ने दीनता को अपनी मुक्ति का साधन समझ कर सन्देश भेजा कि, "देहली प्रदेश भी सुल्तान (हुसेन) के दासो के अधीन है। यदि देहली को १८ कोस तक के स्थानो सहित मुझे प्रदान कर दिया जाय तो मै आपके सेवको के समूह मे सम्मिलित रहूगा और सुल्तान की ओर से देहली के दारोगा का कार्य करता रहूगा।" सुल्तान हुसेन ने अभिमानवश उसके निवेदन को स्वीकार न किया। अन्त मे सुल्तान बहलोल ईश्वर पर आश्रित होकर १८,००० अश्वारोहियो सहित देहली से निकला और सुल्तान हुसेन के समक्ष पडाव डाल दिये। यमुना नदी के दोनो के मध्य मे होने के कारण कोई भी युद्ध प्रारम्भ न करता था।

सुल्तान हुसेन की पराजय

सयोगवश एक दिन सुल्तान हुसेन के सैनिक इधर उधर आक्रमण करने गये हुए थे। सुल्तान बहलोल लोदी के सैनिको ने अवसर पाकर मध्याह्न के समय घोडे यमुना नदी मे डाल दिये। सुल्तान को अनेको बार यह सूचना दी गई किन्तु अभिमानवश उसने विश्वास न किया। सुल्तान बहलोल के सैनिको ने सुल्तान हुसेन के शिविर को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया और युद्ध के बिना ही सुल्तान हुसेन पराजित हो गया। मलकये जहा तथा समस्त अन्त पुर की स्त्रिया बन्दी बना ली गई। सुल्तान बहलोल ने नमक (२८६) पर ध्यान देते हुए मलकये जहा का बडा आदर सम्मान किया और उसे सुल्तान हुसेन की सेवा मे भिजवा दिया।

सुल्तान हुसेन द्वारा पुन आक्रमण

मलकये जहा सुल्तान के पास पहुच कर उसे पुन भडकाने लगी और सुल्तान हुसेन ने सेना तैयार करके दूसरे वर्ष सुल्तान बहलोल लोदी पर आक्रमण किया। जब बहुत थोडी सी दूरी रह गई तो सुल्तान बहलोल लोदी ने दूत भेज कर यह सन्देश भिजवाया कि, "सुल्तान मेरे अपराध को क्षमा कर दे और मुझे अपना कार्य करने के लिये छोड दे कारण कि कभी मै सुल्तान के काम आ जाऊगा।" क्योकि भाग्य मे शर्की सुल्तानो के हाथ से राज्य निकलना निश्चित हो चुका था अत उसने इस ओर ध्यान न दिया। सेना की पक्तियो के ठीक हो जाने के उपरान्त जौनपुर की सेना पुन पराजित हुई। इसी प्रकार एक अन्य बार[2] वह तैयारी करके पहुचा किन्तु उसे पलायन करना पडा। चौथी बार सुल्तान हुसेन इतना विवश हो गया कि वह घोडे पर से कूद कर भागा। इस घटना का सविस्तार उल्लेख देहली के सुल्तानो के राज्यकाल मे किया जा चुका है।

१ राज्य के भाग।
२ तीसरी बार।

बारबक शाह का जौनपुर प्राप्त करना

चौथी बार सुल्तान बहलोल ने जौनपुर अपने अधिकार मे करके अपने पुत्र बारबक शाह को वहा नियुक्त कर दिया। सुल्तान हुसेन अपनी विलायत के एक भाग पर, जिसका कर ५ करोड था, सतुष्ट होकर समय व्यतीत करने लगा। सुल्तान बहलोल मुरव्वत के कारण उससे कुछ न कहता था।

बहलोल बारबक शाह का सुल्तान सिकन्दर से युद्ध

सुल्तान बहलोल की मृत्यु के उपरान्त जब राज्य सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल को प्राप्त हुआ तो सुल्तान हुसेन ने बारबक शाह को इस बात पर तैयार किया कि वह देहली पर आक्रमण करके अपने पिता के राज्य पर अधिकार जमा ले। इस विचार से बारबक शाह ने जौनपुर से देहली पर चढाई की। (२८७) युद्ध मे बारबक शाह पराजित होकर जौनपुर लौट गया। दूसरी बार तैयारी करके उसने देहली पर पुन आक्रमण किया। जब दूसरी बार भी उसने पलायन किया तो सुल्तान सिकन्दर ने उसका पीछा करके जौनपुर उससे छीन लिया। क्योकि विद्रोह तथा उपद्रव की जड सुल्तान हुसेन था, अत सुल्तान सिकन्दर ने उस पर चढाई की। युद्ध के उपरान्त वे स्थान, जो सुल्तान हुसेन के अधिकार मे थे, भी उसने अपने अधिकार मे कर लिये। सुल्तान हुसेन भाग कर बगाले के सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ। उसने १९ वर्ष तक राज्य किया। पराजय के उपरान्त भी वह जीवित रहा। तत्पश्चात् शर्की सल्तनत का अन्त हो गया।

छ व्यक्तियो ने ९७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

गुलशने इबराहीमी
या
तारीखे फ़िरिश्ता (सातवां मक़ाला)

(लेखक—मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी फिरिश्ता)

(प्रकाशन—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ)

सुल्तानुश्शर्क़ ख्वाजये जहां

(३०४) तारीखे मुबारक शाही से ज्ञात होता है कि मुहम्मद शाह, शाह फीरोज शाह के लघु पुत्र, ने मलिक सरवर ख्वाजासरा को विजारत[1] का पद प्रदान किया और ख्वाजये जहा की उपाधि से सुशोभित किया। जब फीरोज शाह का पौत्र नासिरुद्दीन महमूद शाह बादशाह हुआ तो उसने मलिक सरवर ख्वाजये जहा को जमादि-उल-अव्वल ७७६ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १३७४ ई०) मे मलिकुश्शर्क की उपाधि देकर जौनपुर, बिहार तथा तिरहुट प्रदान किये। उसने उन प्रान्तो को उचित रूप से सुव्यवस्थित किया और उस क्षेत्र के रायो को अपना आज्ञाकारी बनाया। जिन किलो को काफिरो ने मुसलमानो के अधिकार से छीन कर नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था और उजाड दिया था, उन्हे उसने मुक्त कराकर पुन निर्मित कराया और योग्य लोगो को सौप कर अपने राज्य को आबाद कर लिया। जब बादशाह नासिरुद्दीन महमूद के पास किसी प्रकार की शक्ति न रही तो उसने सुल्तानुश्शर्क की उपाधि धारण कर ली और परगना कोली[2], इटावा, बहराइच तथा कम्पिला के विद्रोहियो को दड देकर देहली की ओर से कोल तथा दाबरी[3] तक और दूसरी ओर से बिहार तथा तिरहुट तक के विद्रोहियो को दड दिया। पूर्व के बादशाह अर्थात् लखनौती एव बगाले के हाकिम जिस प्रकार देहली के बादशाहों के पास उपहार भेजा करते थे, उसके पास भी भेजने लगे। ८०२ हि० (१३९९-१४०० ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने छ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान मुबारक शाह शर्क़ी

सुल्तानुश्शर्क ख्वाजये जहा ने कुछ वर्ष तक राज्य किया। उसका विचार था कि अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चला कर पूर्व के बादशाहो के समान चत्र धारण कर ले किन्तु मृत्यु ने उसे अवसर न मिलने दिया। मलिक करनफुल, जिसे वह अपना पुत्र कहा करता था, उसके स्थान पर सिहासनारूढ हुआ

१ प्रधान मन्त्री।
२ कोल अर्थात् अलीगढ।
३ रापरी।

और जौनपुर प्रदेश तथा अन्य प्रदेश अपने अधिकार मे कर लिये। इसी बीच मे (देहली के राज्य) मे नित्य प्रति विघ्न पडता गया। वह अपने राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियो तथा सरदारो की सहमति से मुबारक शाह की उपाधि धारण करके सिहासनारूढ हो गया। देहली के हाकिम सुल्तान महमूद का शक्तिशाली वकील[1] इकबाल खा, शाह मुबारक शाह शर्की के प्रभुत्व का समाचार पाकर बडा क्रोधित हुआ। ८०३ हि० (१४००-१४०१ ई०) मे उसने मुबारक शाह के विनाश हेतु उस पर चढाई की। जब वह कन्नौज पहुचा तो शाह मुबारक शाह शर्की, अफगानो, मुगुलो, ताजीको तथा राजपूतो की एक बहुत बडी सेना लेकर उसका मुकाबला करने के लिए बढा और गगा नदी के दोनो ओर एक दूसरे के समक्ष दोनो सेनाओ ने अपने अपने पडाव डाल दिये। दो मास तक दोनो सेनाये एक दूसरे के समक्ष पडाव डाले रही और (३०५) किसी ने कोई भी वीरता प्रदर्शित न की। अन्त मे दोनो पक्ष व्याकुल होकर अपने अपने स्थान को लौट गये।

शाह मुबारक शाह शर्की के जौनपुर पहुचने पर उसे ज्ञात हुआ कि, "सुल्तान महमूद मालवा से देहली पहुचा और इकबाल खा उसे लेकर पुन जौनपुर पर आक्रमण करने आ रहा है।" शाह मुबारक शाह शर्की सेना तथा शिविर की तैयारी कर रहा था कि उसकी मृत्यु ८०४ हि० (१४०१-२ ई०) मे हो गई। उसने एक वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

शाह इबराहीम शर्की

शाह मुबारक शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका अनुज शाह इबराहीम शाह शर्की की उपाधि धारण करके सिहासनारूढ हुआ। उसकी बुद्धिमत्ता तथा योग्यता के कारण हिन्दुस्तान के प्रदेशो के विद्वान् तथा ईरान और तूरान के बुद्धिमान् जो ससार की अव्यवस्था के कारण बडे कष्ट मे थे जौनपुर के दारुल अमान[2] मे पहुचे और उन्हे सुख-शान्ति प्राप्त हो गई। उसके उपकार से लाभ उठा कर उन्होने उसके नाम पर बहुत से ग्रन्थो एव पुस्तकों की रचना की। बुद्धिमान्, योग्य तथा वीर अमीर एव वजीर उसके दौलतखाने[3] मे एकत्र हुए और उसके दरबार को ईरानी सुल्तानो के दरबार के समान शोभा प्राप्त हो गई।

इकबाल खा का आक्रमण

उसके राज्यकाल के प्रारम्भ में इकबाल खा देहली के बादशाह महमूद को लेकर जौनपुर की विजय के उद्देश्य से कन्नोज पहुचा। सुल्तान इबराहीम शर्की सेना तैयार करके युद्ध करने के लिये गगा नदी पर पहुचा। कुछ समय तक वह उसके मुकाबले मे डटा रहा।

सुल्तान महमूद का सुल्तान इबराहीम के पास पहुचना

क्योकि इकबाल खा राज्य तथा धन की व्यवस्था मे सुल्तान महमूद से परामर्श न करता था, अत सुल्तान महमूद शिकार के बहाने से अपने शिविर से निकल कर, बादशाह इबराहीम शर्की से पहले से कुछ निश्चय किये बिना उसके पास इस आशय से पहुंच गया कि वह अपने स्वामी के नमक के हक पर ध्यान

१ प्रधान मन्त्री।
२ शान्ति का घर, शान्ति का केन्द्र।
३ राज-प्रासाद।

दे कर उसे बादशाही प्रदान कर देगा अथवा उसे सहायता देकर इकबाल खा को हटा देगा। सुल्तान इबराहीम शर्की को राज्य का स्वाद मिल गया था, और उसकी बादशाही अभी तक दृढ न हुई थी, अत उसके उपर्युक्त दोनो विचारो मे से कोई भी पूरा न हो सका। उसने सुल्तान महमूद के आदर-सत्कार की ओर इतनी उपेक्षा प्रदर्शित की, कि वह वहा जाने पर लज्जित होकर सूचना दिये विना ही कन्नौज की ओर चला गया और कन्नौज के हाकिम को, जो सुल्तान इबराहीम शर्की की ओर से नियुक्त था, और जिसे अमीरजादा हरेवी कहते थे, जबरदस्ती निकाल कर उसने उस प्रदेश पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। सुल्तान इबराहीम शर्की तथा इकवाल खा ने जब यह देखा कि बादशाह महमूद शाह उस राज्य से सतुष्ट हो गया है तो वे लोग भी कन्नौज उसे सौप कर अपने अपने केन्द्रीय स्थान को चले गये।

कुछ इतिहासो मे लिखा है कि सुल्तान महमूद, शाह मुबारक शाह शर्की की सेवा मे उपस्थित हुआ था। उमी बीच मे शाह मुबारक शाह शर्की की मृत्यु हो गई और शाह इबराहीम शर्की बादशाह हो गया।

इबराहीम शर्की की कन्नौज पर चढाई

८०८ हि० (१४०५-६ ई०) मे, जैसा कि देहली के बादशाहो के राज्यकाल के सम्बन्ध मे उल्लेख हो चुका है, जब इकबाल खा की हत्या हो गई और बादशाह महमूद देहली पहुचा, शाह इबराहीम शाह शर्की ने अवसर पाकर ८०९ हि० (१४०६-७ ई०) मे कन्नौज पर चढाई की। बादशाह महमूद शाह देहली की सेना लेकर शाह इबराहीम शाह शर्की से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ और दोनो सेनाओ ने पूर्व की भाति गगा-तट पर एक दूसरे के समक्ष पडाव किया। कुछ दिन उपरान्त युद्ध किये बिना एक देहली और एक जौनपुर चला गया। जब सुल्तान महमूद शाह देहली पहुच गया तो उसने अमीरो को अपनी अपनी जागीरो पर चले जाने की अनुमति दे दी। शाह इबराहीम शर्की ने कन्नौज पहुच कर उसे घेर लिया। चार मास उपरान्त जब देहली से सहायता न पहुची तो कन्नौज के हाकिम मलिक महमूद तुरमती ने क्षमा-याचना करके किला शाह इबराहीम को समर्पित कर दिया।

इबराहीम शाह शर्की का देहली पर आक्रमण

उसने वर्षा ऋतु वहा व्यतीत करके जमादि-उल-अव्वल ८१० हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४०७ ई०) मे देहली को विजय करने के विचार से प्रस्थान किया। शाह (इबराहीम शर्की) के बुद्धिमान्, साहसी तथा दानी होने के कारण देहली के बहुत से बडे बडे अमीरो, उदाहरणार्थ तातार खा वल्द सारग खा तथा इकबाल खा, के दास मलिक खा इत्यादि उनसे मिल गये। सुल्तान इबराहीम शर्की अत्यधिक शक्ति प्राप्त करके सम्बल[1] की ओर रवाना हुआ। असद खा लोदी सम्बल नगर को छोड कर भाग गया। शाह इबराहीम शर्की जब सम्बल को तातार खा को सौप कर नदी के किनारे पहुचा तो वह नदी पार करना चाहता ही था कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि, "मुजफ्फर शाह गुजराती सुल्तान होशग को बन्दी बनाकर मालवा को विजय करके महमूद शाह की सहायतार्थ आ रहा है और कहा जाता है कि वह जौनपुर पर अधिकार जमाना चाहता है।" सुल्तान इबराहीम शर्की यह समाचार सुनकर अपने विचार

१ सम्भल (मुरादाबाद जिले में)।

त्याग कर जौनपुर चला गया। महमूद शाह ने देहली से निकल कर सम्बल को मुक्त करा लिया। तातार खा भाग कर शाह इबराहीम शर्की के पास पहुचा।

शाह (इबराहीम) ने सेना तथा परिजन तैयार करके ८१६ हि० (१४१३-१४ ई०) मे पुन (३०६) देहली को विजय करने के उद्देश्य से अपनी राजधानी से प्रस्थान किया किन्तु थोडी दूर जाने के पश्चात् पुन जौनपुर के दारुल इल्म[1] मे पहुच गया और आलिमो तथा मशायख की गोष्ठी, विलायत के निर्माण तथा कृषि को उन्नति देने मे समय व्यतीत करने लगा। कई वर्षो तक उसने किसी स्थान पर चढाई न की और हिन्दुस्तान के चारो ओर से लोग अव्यवस्था के कारण जौनपुर पहुचने लगे और उनकी श्रेणी के अनुसार उन्हे सम्मानित किया जाने लगा। मशायख, आलिम, सैयिद[2] तथा प्रत्येक श्रेणी के नवीसिन्दे इतनी अधिक सख्या मे यहा एकत्र हो गये कि जौनपुर को द्वितीय देहली कहा जाने लगा। वहा के छोटे बडे, इबराहीम शाह शर्की के अस्तित्व को बहुमूल्य समझ कर अपना जीवन सुख शान्ति से व्यतीत करने लगे। बादशाह से लेकर भिखारी तक सुखी थे और उस प्रदेश मे किसी प्रकार का दु ख तथा सकट न था।

मेवात पर आक्रमण

८३१ हि० (१४२७-२८ ई०) मे मेवात का हाकिम मुहम्मद खा, सुल्तान इबराहीम के पास पहुचा और उसे तैयार करके ब्याना को विजय करने के उद्देश्य से उस ओर ले गया। देहली के बादशाह मुबारक शाह ने उसे रोकने के लिये प्रस्थान किया। दोनों ब्याना के समीप पहुच गये और दो चार कोस पर दोनो ने खाइया खोद कर अपने अपने स्थान दृढ कर लिये। २२ दिन तक दोनो सेनाओ के तलीये[3] के भाग, निकल निकल कर युद्ध करते थे। बादशाहो मे से किसी को भी साहस न होता था। अन्त मे सुल्तान इबराहीम शर्की ने खाईं से निकल कर युद्ध की पक्ति ठीक की। मुबारक शाह भी विवश होकर रणक्षेत्र की ओर बढा। प्रात काल से सायकाल तक युद्ध होता रहा और सायकाल पृथक् होकर दूसरे दिन "मजबूरी की सन्धि"[4] करके सुल्तान इबराहीम जौनपुर तथा मुबारक शाह देहली लौट गये।

कालपी पर आक्रमण

८३७ हि० (१४३३-३४ ई०) मे सुल्तान इबराहीम शर्की ने युद्ध की पूर्ण तैयारी करके कालपी को विजय करने के विचार से प्रस्थान किया। मार्ग मे उसे ज्ञात हुआ कि सुल्तान होशग गोरी ने भी कालपी को विजय करने का सकल्प कर लिया है। जब दोनो बादशाह एक दूसरे के निकट पहुचे और आजकल मे युद्ध होने ही वाला था कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि, "बादशाह मुबारक शाह बिन खिज्र खा देहली से सेना एकत्र करके जौनपुर की विजय हेतु प्रस्थान कर रहा है।" सुल्तान इबराहीम शर्की ने विवश होकर जौनपुर की ओर कूच किया। सुल्तान होशग ने बिना किसी विरोध के कालपी को, जो अब्दुल कादिर के पुत्र कादिर शाह, बादशाह मुबारक शाह के अधीन थी, अपने अधिकार मे कर लिया।

१ विद्या का केन्द्र।
२ मुन्शी।
३ सेना का अग्रिम भाग जो रात्रि को शिविर का पहरा देता तथा शत्रुओं के विषय मे विभिन्न सूचनायें एकत्र करता था।
४ गुर्ग आश्ती —विवश हो जाने पर कोई उपाय न देखकर सधि कर लेना।

८४४ हि० (१४४०-४१ ई०) मे इबराहीम शाह शर्की रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। जौनपुर वालो को अत्यधिक शोक हुआ और नगर के स्त्री-पुरुष सभी उसके जनाजे मे सम्मिलित हुए।

उसने ४० वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया। हाजी मुहम्मद कन्धारी के अनुसार ८४० हि० (१४३६-३७ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार उसने ३८ वर्ष तक राज्य किया होगा। उसके राज्यकाल के विद्वानो मे एक काज़ी शिहाबुद्दीन जौनपुरी थे। उनके पूर्वज गजनी के निवासी थे। उनका पालन-पोषण दौलताबाद (दक्षिण) मे हुआ। सुल्तान इबराहीम उनका अत्यधिक आदर सम्मान करता था। वे पवित्र दिनो मे सुल्तान की सभाओ मे चाँदी की कुर्सी पर बैठा करते थे। कहा जाता है कि एक बार मौलाना रुग्ण हो गये। सुल्तान इबराहीम उन्हे देखने तथा उनके रोग के विषय मे पूछ-ताछ करने के लिये पहुचा और जल का एक प्याला मौलाना के सिर के चारो ओर घुमा कर स्वय पी लिया और कहा, "हे ईश्वर इनके मार्ग मे जो कष्ट हों, वह मुझे प्रदान कर दे और इन्हे स्वस्थ कर दे।" इससे इस बात का अनुमान कर लेना चाहिये कि वह बादशाह आलिमो का कितना भक्त था। काजी शिहाबुद्दीन की बहुत सी रचनायें बडी प्रसिद्ध है, उदाहरणार्थ 'हाशियये काफिया' जो 'हाशियये हिन्दी' के नाम से प्रसिद्ध है, नहव[1] के ज्ञान की 'इरशाद' नामक ग्रन्थ की मूल पुस्तक तथा टीका, जो 'सुल्हुल मिसाल' के नाम से प्रसिद्ध है, 'बदी-उल-ब्यान', 'फतावाये इबराहीमशाही', फारसी तफसीर 'बहरुल मव्वाज', 'रिसालये मनाकिबे सादात', 'रिसालये अकीदये शिहाबिया'। काजी शिहाबुद्दीन भी अपने समकालीन सुल्तान इबराहीम शाह शर्की की मृत्यु के उपरान्त इतना दुखी हुए कि उसी वर्ष अर्थात् ८४० हि० (१४३६-३७ ई०) मे उनकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगो का कथन है कि सुल्तान की मृत्यु के दो वर्ष उपरान्त ८४२ हि० (१४३८-३९ ई०) मे उनकी मत्यु हुई।

सुल्तान महमूद इब्ने सुल्तान इबराहीम शर्क़ी

सुल्तान इबराहीम की मृत्यु के उपरान्त उसका योग्य ज्येष्ठ पुत्र सिहासनारूढ हुआ। अपनी (३०७) बुद्धि तथा प्रभुत्व द्वारा वह राज्य तथा धन से सम्बन्धित शासन प्रबन्ध सम्पादित करने लगा और उचित रूप से बादशाही के कार्य करने लगा। प्रजा को उसके उपकार द्वारा विशेष लाभ पहुचा। राज्य की व्यवस्था तथा रौनक के लिये उसने अपने पिता के समान इस प्रकार प्रबन्ध किया कि प्रजा तथा सेना को प्रसन्नता एव सुख प्राप्त हो गया।

सुल्तान महमूद खलजी के पास दूत भेजना

८४७ हि० मे उसने एक वाक्पटु दूत अत्यधिक उपहार सहित सुल्तान महमूद खलजी की सेवा मे भेजकर यह सदेश कहलाया कि, "कालपी का अधिकारी नसीर खा वल्द कादिर खा ने मुहम्मद साहब की शरीअत के मार्ग से अपने पग बाहर निकाल कर इरतेदाद[2] का मार्ग ग्रहण कर लिया है। शाहपुर के कस्बे को जो कालपी से भी अधिक आबाद था, नष्ट करके मुसलमानो को निर्वासित कर दिया है। मुसलमान स्त्रियो को काफिरों को प्रदान कर दिया है और ईश्वर तथा रसूल[3] से उसे कोई भय नही। क्योकि सुल्तान होशग शाह के राज्यकाल से इस समय तक हममे परस्पर निष्ठा तथा प्रेम है, अत बुद्धिमत्ता के अनुसार

१ अरबी व्याकरण की एक शाखा।
२ इस्लाम त्याग कर अन्य धर्म स्वीकार कर लेना।
३ मुहम्मद साहब।

यह आवश्यक है कि उसे इस बात की सूचना दे दी जाय और यदि उसकी अनुमति हो तो उसे दड देकर मुहम्मद साहब के धर्म की प्रथाये उस प्रदेश मे प्रचलित की जाय।" सुल्तान महमूद खलजी ने उत्तर भेजा कि, "मुझे इसके पूर्व इस बात की सूचना मिलती रहती थी, अब आपने इसके विषय मे सूचना भेजी तो विश्वास हो गया। उस दुष्ट का विनाश समस्त सुल्तानो के लिये आवश्यक है। यदि मेरी सेनाये मेवात के उपद्रवियो को दड देने के लिए प्रस्थान न कर रही होती तो मै उनको दड देने के लिये प्रस्थान करता। अब आपने ऐसा सकल्प कर लिया है तो यह आपके लिये शुभ हो।" दूत ने जौनपुर पहुच कर यह सूचना सुल्तान को पहुचा दी।

नसीर खा का महमूद खलजी को पत्र

सुल्तान महमूद शाह शर्की ने प्रसन्न होकर २९ हाथी पेशकश के रूप मे सुल्तान महमूद खलजी के पास प्रेषित किये और सेना तैयार करके कालपी पर चढाई की। नसीर खा ने यह सूचना पाकर सुल्तान महमूद खलजी की सेवा मे इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "यह प्रदेश सुल्तान होशग शाह ने हमे प्रदान कर दिया है। सुल्तान महमूद शर्की की यह इच्छा है कि वह इसका अपहरण कर ले। मेरी सहायता करना सुल्तान के लिये आवश्यक है।" सुल्तान महमूद खलजी ने यह पत्र पाकर उचित पेशकश सहित अपने एक विश्वासपात्र अली खा द्वारा सुल्तान महमूद शर्की के पास यह पत्र भेजा कि, "कालपी के हाकिम ने ईश्वर के तथा आपके भय के कारण तोबा[1] कर ली है और अब पश्चात्ताप करते हुए उसने सकल्प कर लिया है कि उसके द्वारा जो हानि हुई है उसकी वह पूर्ति करेगा और शरीअत के मार्ग से विचलित न होगा, दैवी आदेशो को लागू करने मे किसी प्रकार की उपेक्षा न करेगा। क्योकि सुल्तान होशग शाह ने यह प्रदेश अब्दुल कादिर "कादिर शाह" को प्रदान कर दिया था और ये लोग हमारे आज्ञाकारी है अत हमने इनके अपराध को क्षमा कर दिया है और उसे कोई हानि न पहुचायी जाय।"

महमूद खलजी तथा सुल्तान महमूद शर्की का युद्ध

अभी पत्र का उत्तर तथा अली खा का पत्र पहुचा भी न था कि नसीर खां का पत्र पुन: प्राप्त हुआ कि, "मै सुल्तान होशग शाह के राज्यकाल से आज्ञाकारी तथा दास हू। सुल्तान महमूद शर्की ने प्राचीन ईर्ष्या तथा पुरानी शत्रुता के कारण कालपी पर आक्रमण कर दिया है और इस विलायत[2] को विजय कर के मुसलमान स्त्रियो को बन्दी बना कर तथा निर्वासित करके चन्देरी पहुच गया है।" सुल्तान महमूद खलजी ने यद्यपि सुल्तान महमूद शर्की को नसीर शाह को दड देने की अनुमति प्रदान कर दी थी, किन्तु उसके अत्यधिक दीनता तथा विवशता प्रकट करने के कारण, उसने २ शाबान ८४८ हि० (१४ नवम्बर १४४५ ई०) को उज्जैन से चन्देरी तथा कालपी की ओर प्रस्थान किया। चन्देरी मे नसीर खा ने उससे भेट की और उसने वहा से एरचा की ओर प्रस्थान किया। शाह महमूद शाह शर्की इस समाचार को सुनने के उपरान्त अविलम्ब युद्ध के लिये अग्रसर हुआ। सुल्तान महमूद खलजी ने जौनपुर की सेना के विरुद्ध एक सेना नियुक्त करके दूसरी सेना को आदेश दिया कि, "जौनपुर की सेना का पीछे का भाग नष्ट कर दो।" उस सेना ने जौनपुर की सेना के बचे-खुचे लोगो की हत्या कर दी और शिविर को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। जो सेनायें सामने से युद्ध करने के लिये नियुक्त हुई थी, उन्होंने युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

१ घृणित अथवा निंद्य कर्म पुन न करने का पश्चात्ताप अथवा शपथपूर्वक की गई दृढ प्रतिज्ञा।
२ राज्य।

दोनो पक्षो की ओर से योग्य व्यक्ति मारे गये। अन्त मे दोनो पक्ष वाले अपने अपने क्षेत्र मे चले गये। दूसरे दिन प्रात काल सुल्तान महमूद खलजी ने एमादुलमुल्क को शत्रु का मार्ग रोक देने के लिये नियुक्त किया। शाह महमूद शाह शर्की यह सूचना पाकर जिस पडाव पर वह था, उसी पडाव पर उसके दृढ होने के कारण ठहर गया। सुल्तान महमूद खलजी ने उस स्थान की दृढता के विषय मे सूचना पाकर एक सेना आसपास के स्थानो पर आक्रमण करने के लिये भेजी। इस सेना ने आक्रमण करके अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति एकत्र की। वर्षा ऋतु के आ जाने के उपरान्त एक प्रकार से सधि करके वे लौट गये।

शेख जायल्दा के प्रयत्न के फलस्वरूप सधि

सुल्तान महमूद खलजी चन्देरी पहुचा। शाह महमूद शाह शर्की ने अवसर पाकर बरहार पर आक्रमण करने के लिये सेना भेजी। वहा के लोग सुल्तान महमूद खलजी के अधीन थे। सुल्तान महमूद खलजी ने सूचना पाकर एक सेना उस विलायत[1] के मुकद्दम[2] की सहायतार्थ भेजी। शर्की सेना युद्ध न कर सकी। शाह महमूद शाह शर्की शीघ्रातिशीघ्र अपनी सेना से मिल गया। कुछ दिन उपरान्त उसने शेखुल इस्लाम जायल्दा को, जो अपने समय के बहुत बडे बुजुर्ग थे और सुल्तान महमूद खलजी जिनका (३०८) भक्त था, और जो शादियाबाद मन्दू मे दफन हैं, एक पत्र इस आशय का भेजा कि, "दोनो ओर से लोगो की हत्या हो रही है। यदि आप सधि कराने का प्रयत्न करे तो अच्छा होगा।" सुल्तान महमूद शाह शर्की के दूत ने शेख की सेवा मे उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "एरचा तथा कालपी, जो सुल्तान शर्की के अधिकार मे आ गये हैं, को नसीर खा को प्रदान कर दिया जायगा।" जब सुल्तान शर्की के दूत ने शेख की सेवा मे यह प्रार्थना की तो शेख ने सुल्तान महमूद शाह शर्की के दूत के साथ अपना एक सेवक सुल्तान महमूद खलजी की सेवा मे भेजा और परामर्शयुक्त पत्र लिखा। सुल्तान महमूद ने कहा, "जब तक (सुल्तान महमूद शर्की) कालपी न छोडेगा, सधि होना सम्भव नही।" किन्तु नसीर खा पूर्णत अपने स्थान से उखड चुका था, अत राठ परगने को पर्याप्त समझ कर उसने निवेदन किया कि, "क्योकि शाह महमूद शाह शर्की ने शेख जायल्दा की सेवा मे वचन दिया है कि मैं इसके उपरान्त अब्दुल कादिर की सन्तान का जो कादिर शाह के नाम से प्रसिद्ध है विशेष रूप से नसीर खा का विरोध न करूगा और तदुपरान्त उसकी सेना इस दिशा मे आक्रमण न करेगी और चार मास उपरान्त कालपी तथा एरचा प्रदान कर दूगा अत इसें स्वीकार कर लेना चाहिये।" शेख की आध्यात्मिक दया के फलस्वरूप सधि के सम्पन्न हो जाने के पश्चात् शर्की सुल्तान का दूत शाही कृपा द्वारा सम्मानित होकर लौट गया। सुल्तान महमूद खलजी शादियाबाद मन्डू[3] चला गया और सुल्तान महमूद शर्की जौनपुर पहुचा और अपने पिता की प्रथानुसार दान-पुण्य द्वारा आलिमो, विद्वानो तथा पवित्र लोगो को अपितु सभी श्रेणियो के लोगो को उनकी श्रेणी के अनुसार प्रसन्न तथा लाभान्वित करने लगा।

चम्पारन तथा उडीसा पर आक्रमण

कुछ समय उपरान्त जब सेना विश्राम कर चुकी और यात्रा के कष्टो से मुक्त हो चुकी तो उसने जसारन[4] पर आक्रमण किया और उस प्रदेश पर आक्रमण करके वहा के निवासियो को तलवार के घाट

१ राज्य।
२ अधिकारी।
३ यह शब्द विभिन्न स्थानो पर विभिन्न प्रकार से लिखा गया है मन्दू, मन्डू, माँडू, माँदू।
४ चम्पारन।

उतार दिया और कुछ कस्बो तथा परगनो मे थाने स्थापित करके जौनपुर लौट गया। कुछ दिन उपरान्त उसने उडीसा पर आक्रमण किया और उस क्षेत्र को विध्वस कर दिया। मन्दिरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति लेकर प्रसन्नता-पूर्वक लौट आया।

देहली पर आक्रमण

८५६ हि० (१४५२-५३ ई०) मे उसने देहली पर चढाई की और कुछ समय तक उसे घेर कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान बहलोल अत्यधिक सेना लेकर दीबालपुर[1] से पहुचा। जब सुल्तान महमूद ने देखा कि दरिया खा अफगान, जो देहली के बादशाह का विरोधी हो जाने के कारण उसका सेवक हो गया था, युद्ध के मध्य मे रणक्षेत्र से पृथक् हो गया तो उस स्थान पर ठहरने मे कोई लाभ न देखकर वह लौट गया। देहली वालो ने सुल्तान का पीछा करके फतह खा हरेवी की, जो उसका एक प्रतिष्ठित अमीर था, हत्या कर दी और सात युद्ध के हाथी बन्दी बना लिये।

सुल्तान बहलोल द्वारा इटावा पर आक्रमण

८६१ हि० (१४५६-५७ ई०) मे बादशाह बहलोल लोदी ने इटावा के मुकद्दम पर आक्रमण किया और शाह महमूद शाह शर्की पुन उसके विरुद्ध रवाना हुआ। शम्साबाद के निकट दोनो सेनाये एक दूसरे के समक्ष पहुच गई। कुछ समय तक वे एक दूसरे के समक्ष रहे। कुतुब खा लोदी, सुल्तान बहलोल लोदी के चाचा के पुत्र ने उसके शिविर पर रात्रि मे छापा मारा किन्तु बन्दी बना लिया गया। अभी बादशाहो के मध्य मे युद्ध प्रारम्भ भी न हुआ था, कि शाह महमूद शाह शर्की रुग्ण हो गया और ८६२ हि० (१४५७-५८ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने बीस वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन महमूद शाह शर्की

महमूद शाह शर्की की मृत्यु के उपरान्त जौनपुर के अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियो ने उसकी माता बीबी राजी के परामर्श से शाहजादा भीकन को सुल्तान मुहम्मद शाह की उपाधि देकर सिहासनारूढ किया और बादशाह बहलोल लोदी से सधि करके प्रतिज्ञा करा ली कि, "शाह महमूद शाह शर्की की विलायत[2] मुहम्मद शाह के अधिकार मे रहे और जो भाग बादशाह बहलोल लोदी के अधिकार मे है, वे उसी के अधिकार मे रहे।" इस प्रकार मुहम्मद शाह शर्की जौनपुर पहुचा किन्तु बादशाह मे योग्यता की कमी के कारण अमीर लोग दुखी रहने लगे। मलकये जहा बीबी राजी भी अपने पुत्र के अत्याचार तथा निष्ठुरता के कारण दुखी रहने लगी।

सुल्तान बहलोल द्वारा आक्रमण

इसी बीच मे सुल्तान बहलोल कुतुब खा को मुक्त कराने के लिये देहली के हवाली[3] से वापिस हुआ और सुल्तान महमूद शाह भी जोनपुर से चला। उस क्षेत्र का जमीदार प्रताप, जो इससे पूर्व सुल्तान

१ 'दीबालपुर' तथा 'दीपालपुर' दोनो ही प्रयुक्त हुये हैं।
२ राज्य।
३ समीप के स्थानों।

बहलोल का सहायक था, मुहम्मद शाह के प्रभुत्व को देख कर उससे मिल गया और मुहम्मद शाह सरसुती पहुचा। बहलोल शाह लोदी ने राबरी[1] मे, जो सरसुती के निकट था, पडाव किया और कुछ दिन तक युद्ध करता रहा। शाह मुहम्मद शाह शर्की ने सरसुती से जौनपुर के कोतवाल को आदेश भेजा कि, "मेरे भाई हसन खा तथा इस्लाम खा लोदी के पुत्र कुतुब खा की हत्या कर दी जाय।" कोतवाल ने लिखा कि, (३०९) "बीबी राजी दोनो की इस प्रकार रक्षा कर रही है कि मेरा उनकी हत्या करना सम्भव नही।" जब मुहम्मद शाह का यह पत्र पहुचा तो उसने अपनी माता को जौनपुर से इस बहाने से बुलवा लिया कि वह उसके भाई हसन खा से सधि करा दे और थोडी सी विलायत हसन खा को दिलवा दे। बीबी राजी ने धोखा खाकर जौनपुर से प्रस्थान किया। कोतवाल ने मुहम्मद शाह शर्की के आदेशानुसार हसन खा की हत्या कर दी। बीबी राजी ने हसन खा की शोक सम्बन्धी प्रथाओ को कन्नौज मे पूर्ण किया और वही ठहर गई और मुहम्मद शाह शर्की के पास न गई। मुहम्मद शाह ने अपनी माता को लिखा कि, "अन्य शाहजादो का भी यही परिणाम होगा अत उचित होगा कि आप सभी की शोक सम्बन्धी प्रथाओं को सम्पन्न कर ले।" क्योकि मुहम्मद शाह निरकुश बादशाह था अत अमीर उसके रक्तपात से आतकित तथा भयभीत हो गये।

एक दिन शाहजादा जलाल खा तथा हुसेन खा ने, जो मुहम्मद शाह के भाई थे, सुल्तान शाह तथा जलाल खा अजोधी[2] से मिल कर मुहम्मद शाह की सेवा मे निवेदन किया कि, "बादशाह बहलोल लोदी की सेना का विचार रात्रि मे छापा मारने का है।" अत शाही आदेशानुसार शाहजादा हुसेन खा तथा सुल्तान शाह अजोधी ३०,००० अश्वारोही तथा १००० हाथी लेकर शत्रुओ का मार्ग रोकने के बहाने से शाह मुहम्मद शाह शर्की से पृथक् हो गये और झरने के किनारे पर खडे हो गये। बादशाह बहलोल लोदी ने यह समाचार पाकर उनके विरुद्ध एक सेना नियुक्त की। शाहजादा हुसेन खा ने चाहा कि शाहजादा जलाल खा को जो शिविर मे रह गया था, अपने साथ ले ले। उसने किसी को उसे बुलाने भेजा। इसी बीच मे सुल्तान शाह ने कहा कि, "ठहरना उचित नही। शाहजादा जलाल खा पीछे से आ जायगा" और वे बाग मोड कर कन्नौज की ओर चल खडे हुए। सुल्तान बहलोल की सेना, जो उनसे युद्ध करने के लिये नियुक्त हुई थी, पहुच कर उनके स्थान पर खडी हो गई। शाहजादा जलाल खा शाहजादा हुसेन खा के बुलवाने पर मुहम्मद शाह की सेना से निकल कर झरने की ओर रवाना हुआ। वह सुल्तान बहलोल की सेना को हुसेन खा की सेना समझ कर उसके निकट पहुचा। बहलोल खा की सेना जलाल खा को वन्दी बना कर सुल्तान (बहलोल) की सेवा मे ले गई। उसने कुतुब खा के बदले मे उसे वन्दी बना दिया। मुहम्मद शाह युद्ध करने की शक्ति न देखकर कन्नौज की ओर रवाना हुआ। सुल्तान बहलोल ने गगा तट तक उसका पीछा किया और उसकी थोडी सी सम्पत्ति एव असबाब को अपने अधिकार मे कर लिया और वहा से लौट गया।

सुल्तान हुसेन का सिहासनारोहण

जब हुसेन खा, बीबी राजी के पास पहुचा तो अपनी माता एव शर्की राज्य के उच्च पदाधिकारियो के प्रयत्न के फलस्वरूप सिहासनारूढ हो गया। उसकी उपाधि सुल्तान हुसेन हुई। उसने मलिक मुबारक

१ 'रापरी' एव 'राबरी', दोनों ही शब्दो का प्रयोग हुआ है।
२ सम्भवत . अजोधनी।

गुग, मलिक अली गुजराती तथा समस्त अमीरो को शाह मुहम्मद शाह शर्की के विरुद्ध, जो गगा तट पर अजगर नामक घाट पर ठहरा हुआ था, भेजा। जब सुल्तान हुसेन शाह की सेना निकट पहुची तो कुछ अमीर, जो शाह मुहम्मद शाह शर्की के साथ थे, उससे पृथक् होकर उनसे मिल गये। वह (सुल्तान मुहम्मद शाह) कुछ अश्वारोहियो सहित उस उद्यान मे, जो वहा से निकट था, चला गया। उसे वहा भी घेर लिया गया। मुहम्मद शाह शर्की ने, जो बडा ही कुशल धनुर्धर था, धनुष-बाण हाथ मे ले लिया। मलकये जहा बीबी राजी ने इससे पूर्व उसके सिलाहदार[1] से मिल कर उसके निषग के बाणो की नोके निकलवा ली थी अत मुहम्मद शाह निषग से जो बाण निकालता उसमे नोक न मिलती। विवश होकर उसने तलवार हाथ मे ले ली और कुछ लोगो को घायल कर दिया। अचानक मुबारक गुग का एक बाण शाह मुहम्मद की ग्रीवा पर लगा और उसी घाव से उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान बहलोल से सधि

तत्पश्चात् सुल्तान हुसेन ने बादशाह बहलोल से सन्धि कर ली और यह प्रतिज्ञा की कि चार वर्ष तक प्रत्येक अपनी विलायत से सन्तुष्ट होकर उसी स्थान पर रहे। राय प्रताप, जो इससे पूर्व शाह मुहम्मद शाह शर्की से मिल गया था, कुतुब खा अफगान के प्रोत्साहन पर सुल्तान बहलोल से मिल गया। सुल्तान हुसेन कन्नौज से प्रस्थान करके एक हौज के तट पर जिसे हरहा कहते है उतरा। कुतुब खा लोदी को जौनपुर से बुलवा कर घोडे, खिलअत तथा अन्य कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और उसे पूर्ण आदर-सम्मान सहित बादशाह बहलोल लोदी के पास भेज दिया। बादशाह बहलोल लोदी ने भी शाहजादा जलाल खा को आदर तथा सम्मान एव इनाम द्वारा प्रसन्न करके शाह हुसेन शाह शर्की के पास भेज दिया। उस समय सभी अपनी अपनी राजधानी मे पहुच कर राज्य करने लगे।

शाह मुहम्मद शाह शर्की ने ५ मास तक राज्य किया।

हुसेन शाह बिन महमूद शाह शर्की

उड़ीसा पर आक्रमण

शाह हुसेन शाह शर्की जैसा कि उल्लेख हो चुका है ईश्वर के हुक्म से सिहासनारूढ हुआ। (३१०) बादशाह बहलोल लोदी से सधि करके जब वह जौनपुर पहुचा तो उस घटना से जो उसके भाई पर घटी थी सचेत होकर, अल्प समय ही मे बडे बडे सरदारो को अपनी कुशल नीति के कारण उसने अपनी ओर आकर्षित कर लिया। अन्य प्रदेशो को विजय करना निश्चय करके उसने सर्वप्रथम तीन लाख अश्वारोही और १४०० हाथी एकत्र किये तथा उडीसा पर चढाई की। इस अभियान मे उसने तिरहुट प्रदेश उजाड डाला और वहा आबादी का कोई चिह्न न छोडा। जब वह उडीसा की विलायत मे पहुचा तो उसने चारों ओर सेनाये नियुक्त करके उस प्रदेश के नष्ट-भ्रष्ट करने तथा वहा के लोगो की हत्या कराने और उन्हे बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। उडीसा का राय आश्चर्यचकित हो गया। जब दीनता तथा विवशता प्रकट करने से उसे कोई लाभ न हुआ तो उसने सुल्तान की सेवा मे अपना वकील[2] भेज कर

१ सुल्तान के अग-रक्षक, जो अधिकारी शाही अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध करते थे वे भी सिलाहदार कहलाते थे।

२ प्रतिनिधि।

अधीनता एव कर अदा करना स्वीकार कर लिया। जब सुल्तान ने उस प्रदेश को विजय करने का विचार त्याग दिया तो उसने कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ३० हाथी, १०० घोडे, अत्यधिक कपडे तथा धन-सम्पत्ति भेजी। सुल्तान लूट की धन-सम्पत्ति लेकर सुरक्षित जौनपुर पहुचा।

बनारस के किले की मरम्मत तथा ग्वालियर पर आक्रमण

८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे उसने बनारस के किले की, जो समय के व्यतीत हो जाने के कारण नष्ट हो गया था, मरम्मत कराई और उसी वर्ष मे बडे बडे सरदारो को ग्वालियर को विजय करने के लिये भेजा। उन्होने वहा पहुच कर उसे घेर लिया। ग्वालियर के राय ने बहुत समय तक घिरे रहने के कारण विवश होकर शाह हुसेन शाह शर्की की अधीनता स्वीकार कर ली।

देहली पर आक्रमण

जब उसकी शक्ति तथा वैभव मे अत्यधिक वृद्धि हो गई तो अपनी पत्नी—सुल्तान अलाउद्दीन बिन मुहम्मद शाह बिन फरीद शाह बिन मुबारक शाह की पुत्री—के बहकाने से ८७८ हि० (१४७३-७४ ई०) मे देहली को विजय करने का सकल्प किया। एक लाख चालीस हजार अश्वारोही तथा १,४०० हाथी लेकर उस ओर प्रस्थान किया। बादशाह बहलोल लोदी ने सुल्तान महमूद खलजी के पास एक दूत भेज कर यह निवेदन कराया कि, "यदि आप इस समय हमारी सहायतार्थ पधारेगे तो ब्याना का किला आपको सोप दिया जायगा।" अभी शादियाबाद मन्दू से उत्तर प्राप्त भी न हुआ था कि शाह हुसेन शाह शर्की ने देहली के आसपास के स्थानो पर अधिकार जमा लिया। बादशाह बहलोल लोदी ने दीनता एव विवशता प्रदर्शित करते हुए सन्देश भेजा कि, "देहली प्रदेश आपके ही अधीन है। यदि देहली से १८ कोस तक के क्षेत्र के स्थान मुझे प्रदान कर दिये जाय तो मै आपके सेवको मे सम्मिलित होकर इस प्रदेश के दारोगा का कार्य करता रहूगा।" जब बादशाह ने अभिमानवश उसका निवेदन स्वीकार न किया तो बादशाह बहलोल लोदी ने विवश होकर ईश्वर पर आश्रित होकर १८००० अफगान अश्वारोहियो सहित देहली से निकल कर (यमुना) नदी के समक्ष सुल्तान हुसेन शाह शर्की की सेना के मुकाबले मे पडाव किया। नदी के मध्य मे होने के कारण कुछ समय तक युद्ध न हुआ। इसी बीच मे शाह हुसेनशाह शर्की के प्रतिष्ठित सरदार विलायतो पर आक्रमण करने के उद्देश्य से गये हुए थे। देहली के बादशाह ने अवसर पाकर ग्रीष्म ऋतु मे, जिस स्थान से नदी छिछली थी, घोडो को नदी मे डाल दिया। गुप्तचरो ने शाह हुसेन के पास अनेको बार यह समाचार पहुचाये किन्तु उसने अभिमानवश इसे स्वीकार न किया। यहा तक कि देहली वाले नदी पार करके उसके शिविर मे लूट-मार करने लगे। बादशाह की अयोग्यता के कारण अमीर तथा सैनिक, जो असावधान थे, व्याकुल होकर भागने के विषय मे सोचने लगे। सुल्तान हुसेन विवश होकर भाग खडा हुआ। मलकये जहा तथा समस्त अन्त पुर की स्त्रिया बन्दी बना ली गई। देहली के सुल्तान ने नमक का ध्यान रखते हुए उन्हे पूर्ण आदर-सम्मान सहित शाह हुसेन शाह शर्की के पास भेज दिया किन्तु जब मलकये जहा शाहहुसेन के पास पहुची तो उसने उसे पुन इस प्रकार उकसाया कि सुल्तान हुसेन शाह शर्की ने तैयारी करके दूसरे वर्ष पुन देहली पर आक्रमण किया।

जब वे निकट पहुच गये तो बादशाह बहलोल लोदी ने सन्देश भेजा कि, "यदि बादशाह मेरे अपराध क्षमा करके मै जिस दशा मे हू उसी मे रहने दे तो मै एक दिन उनके काम आऊगा।" क्योकि भाग्य मे शर्की राज्य का अन्त लिखा हुआ था अत उसने देहली के बादशाह के दीनता-प्रदर्शन को कोई महत्व न दिया और उस देन को घृणा की दृष्टि से देखते हुए उसे अनुचित उत्तर भेजा और आगे बढता

ही गया। जब सुल्तान बहलोल मुकाबले के लिये बढा तो युद्ध के उपरान्त जौनपुर की सेना की पुन पराजय हुई।

इसी प्रकार वह तीसरी बार तैयारी करके आया और पराजित हुआ। चौथी बार यह दशा हो गई कि सुल्तान घोडे से कूद कर भागा। जौनपुर सुल्तान बहलोल के अधीन हो गया। सुल्तान हुसेन अपने राज्य के क्षेत्र से भाग कर थोडी सी विलायत पर, जिसका कर पाच करोड था, सन्तुष्ट हो गया। सुल्तान बहलोल ने मुरव्वत के कारण उसका विरोध न किया और जौनपुर का राज्य अपने पुत्र बारबक शाह को प्रदान करके उस राज्य को अपने अधिकार मे कर लिया। बादशाह बहलोल लोदी की मृत्यु के उपरान्त शाह हुसेन शाह शर्की ने पुन षड्यन्त्र प्रारम्भ कर दिया। बारबक शाह को इस बात पर तैयार किया कि वह देहली पर आक्रमण करके देहली अपने भाई सुल्तान सिकन्दर से छीन ले किन्तु जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो बारबक शाह भाग कर जोनपुर चला गया। इस बार सुल्तान बादशाह सिकन्दर लोदी ने जौनपुर अपने भाई से ले लिया। सुल्तान हुसेन शाह शर्की का, जो षड्यत्र की जड था, पीछा किया और युद्ध के उपरान्त उसे उस कोने से, जहा उसने शरण ले रक्खी थी, निकाल दिया। उसने व्याकुल तथा दुर्दशा को प्राप्त होकर बगाल के शासक शाह अलाउद्दीन के पास शरण ली। शाह अलाउद्दीन ने उसके आराम की सामग्री एकत्र करके उसको प्रोत्साहन देने मे कोई कमी न की। शाह हुसेन शाह शर्की ने पुन किसी प्रकार का प्रयत्न न किया।

इस वश का राज्य ८८१ हि० (१४७६-७७ ई०) मे समाप्त हो गया। सुल्तान हुसेन शाह शर्की ने १९ वर्ष तक राज्य किया। पराजय के उपरान्त कुछ वर्ष तक वह बगाले मे निवास करता रहा। तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

कालपी

मुहम्मद बिहामद ख़ानी

तारीख़े मुहम्मदी

तारीखे मुहम्मदी

(लेखक—मुहम्मद बिहामद खानी)

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रिप्ट, रियू, भाग १, पृ० ८४ अ)

सुल्तान नसीरुद्दुनियां वद्दीन महमूद शाह बिन फ़ीरोज खां बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क

मुहमदाबाद नगर का बसाया जाना

(४३७ अ) इतिहासकारो ने लिखा है कि सुल्तान नसीरुद्दीन ने कालपी नामक स्थान पर जोकि दुष्टो तथा काफिरो का निवास-स्थान था शुभ मुहूर्त मे ७९२ हि० (१३८९-९० ई०) मे मुहमदाबाद नामक नगर मुहम्मद साहब के शुभ नाम पर बसवाया और वहा मदिरो के स्थान पर खुदा की इबादत के लिए मस्जिदो का निर्माण कराया। उसने महलो, मकबरो तथा भवनो का निर्माण कराया और काफिरो की कुत्सित प्रथाओ का अत करा दिया तथा मुहम्मद साहब की शरा[1] को उन्नति प्रदान की। कुछ समय उपरान्त वह प्रतिष्ठित अमीरो तथा धर्मनिष्ठ आलिमो की सहमति से शुभ मुहूर्त मे सिहासनारूढ हुआ। लेखक ने इस अवसर पर एक बडे ही उत्तम कसीदे[2] की रचना की जिसके कुछ छन्द इस इतिहास के पाठको की जानकारी के लिये लिखे जा रहे हैं।[3]

नये अधिकारियो की नियुक्ति

(४३७ ब) उसने सिहासनारूढ होने के उपरान्त राज्य के मुख्य वजीर का पद अपने छोटे भाई आजम हुमायू जुनैद खा बिन (पुत्र) फीरोज खा को जो उसके राज्य का बहुत बडा सहायक था प्रदान किया और राज्य के (कार्यो मे) परामर्श (देना) तथा समस्त समस्याओ का समाधान करना उसी को सौप दिया। उसने अन्य पद बडे बडे मलिको तथा अमीरो को प्रदान किये और अपने सिहासनारोहण के प्रारम्भ ही मे न्याय तथा परोपकार के द्वार युवको एव वृद्धो पर खोल दिये और विद्रोहियों से युद्ध करने (४३८ अ) के लिए कटिबद्ध तथा काफिरो के विनाश हेतु व्यस्त हो गया। अल्प समय मे उसने बहुत से कार्य कर लिये और अत्यधिक विद्रोहियो को नष्ट किया।

महमूदाबाद का बसाया जाना

खदौत को जोकि दुष्ट काफिरों का अड्डा था नष्ट-भ्रष्ट कर डाला और उसे इस्लाम का कस्बा

१ इस्लाम के धार्मिक नियम।

२ वह कविता जो किसी विशेष अवसर की स्मृति अथवा किसी की प्रशंसा मे लिखी जाती है।

३ इन छन्दों मे अतिशयोक्ति सहित प्रशसा की गई है अत. इनका अनुवाद नही किया गया।

बनाकर अपने शुभ नाम पर महमूदाबाद बसाया। वहा उसने एक भव्य किले तथा महल का निर्माण कराया और इस्लाम की समस्त प्रथाये उस नगर तथा स्थान पर प्रचलित करा दी।

हमीरपुर का विध्वस किया जाना

हमीरपुर को, जोकि हिन्दुओ के कस्बो मे सर्वश्रेष्ठ है, विध्वस करा दिया। हमीरपुर के मुकद्दम[1] बहराज ने दीनता प्रकट करते हुए क्षमा-याचना की और आज्ञाकारिता स्वीकार करते हुए सुल्तान के परिजनो मे सम्मिलित हो गया।

खोरा पर आक्रमण

तदुपरान्त ससार के सुल्तान ने एक भारी सेना लेकर खोरा की ओर जो वीर बघेला के अधिकार मे था चढाई की। मार्ग मे उसने समूनी तथा मथुरा को जो पिशाच हिन्दुओ के भव्य कस्बे है विध्वस कर दिया। विजयी सेनाओ को लेकर निरन्तर यात्रा करता हुआ खोरा के क्षेत्र मे पडाव किया। बीरम ने अज्ञानियो तथा दुष्टो का एक बहुत बडा समूह एकत्र किया और युद्ध तथा रक्तपात के लिए अग्रसर हुआ। क्योकि वह आदिकाल ही से रद्द हो चुका था अत प्रथम आक्रमण ही मे भाग खडा हुआ और शीघ्रातिशीघ्र भाग कर[2] उसने सुदृढ स्थानो मे शरण ग्रहण कर ली। कुछ बडे बडे राय तथा प्रतिष्ठित मुकद्दम जो दुष्ट (४३८ ब) बीरम की सहायतार्थ आये थे इस्लामी सेना द्वारा बन्दी बना लिये गये और उन्हे सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इस्लाम के पक्षपात[3] की दृष्टि से उनकी हत्या करा दी गई।

राजधानी मे वापसी

सुल्तान वहा से अत्यधिक धन सपत्ति लूट कर विजय तथा सफलता प्राप्त किये हुए प्रसन्नतापूर्वक राजधानी मुहमदाबाद मे लौट आया। सुल्तान के पहुचने के कारण नगर तथा उसके आसपास प्रसन्नता तथा खुशिया मनाई गई। आलिमो, सैयिदो, पवित्र तथा धर्मनिष्ठ व्यक्तियो एव काजियो को इनाम तथा खिलअतो द्वारा लाभान्वित कराया गया। इस विजय के उपरान्त दुष्टो तथा काफिरो के हृदय मे आतक आरूढ हो गया।

भीलम का विद्रोह

कुछ समय उपरान्त सिहिन्दाल के मुकद्दम भीलम ने धन की अधिकता के कारण उपद्रव की अग्नि प्रज्वलित की और खोरा के मुक़द्दम बीरम को मिला लिया। काफिरो के इन दोनो नेताओ ने अत्यधिक सेना लेकर महोबा के किले के समीप पडाव किया और नगर के समीप के स्थान नष्ट भ्रष्ट कर दिये। जब गुप्तचरो ने सुल्तान को यह समाचार पहुचाया तो उसने इस्लाम की रक्षा हेतु शत्रुओ से जिहाद के लिये (४३९ अ) प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ महोबा के क्षेत्र मे पहुच गया। काफिरो का दुष्ट समूह यह समाचार पाते ही सिहिन्दाल की ओर भाग गया और उस सुदृढ स्थान मे शरण ग्रहण कर ली। सुल्तान ने महोबा से सिहिन्दाल की ओर प्रस्थान किया और काफिरो तथा दुष्टो से युद्ध किया। घमासान

१ यहां राजा से तात्पर्य है।
२ मूल ग्रन्थ मे 'दो अस्पा ताख़्ता'।
३ मूल ग्रथ मे 'तअस्सुब'।

युद्ध हुआ। अन्त मे समस्त काफिर पराजित तथा छिन्न-भिन्न हो गये, और उनके लगभग १ हजार पदाती तथा अश्वारोही मार डाले गये। सुल्तान विजय तथा सफलता प्राप्त करके लूट की धन सम्पत्ति लिये हुए महोबा के क्षेत्र मे पहुचा और उस स्थान के निवासियो की रक्षा हेतु एक बहुत भव्य तथा दृढ किले का उसने निर्माण कराया। अल्प समय मे उसे सुव्यवस्थित एव दृढ कर लिया और मुजफ्फर खा बिन मुकर्रम खा को अत्यधिक सेना सहित उस किले मे नियुक्त किया और स्वय राजधानी मुहमदाबाद की ओर लौट आया।

अन्य स्थानो की विजय

सिहिन्दाल के मुकद्दम ने इस्लामी सेनाओ की शक्ति को देखकर विवश होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और सुल्तान को खराज देना तथा उसकी सेवा करना स्वीकार कर लिया। समूनी के मुकद्दम कल्याण साह के लिए खराज निश्चित कर दिया गया। कुदली, मथुरा रजानस जो खिज्राबाद के नाम से प्रसिद्ध है, कालिजर तथा जितौर[1] विजयी सेनाओ के आधीन हो गये।

खोरा पर आक्रमण

(४३९ ब) कुछ समय उपरान्त बादशाह को यह ज्ञात हुआ कि खोरा के मुकद्दम विद्रोही बीरम ने पदातियो तथा अश्वारोहियो की असख्य सेना लेकर कडा के निवासियो पर आक्रमण कर दिया है। सुल्तान ने यह समाचार पाते ही शीघ्रातिशीघ्र खोरा की ओर चढाई की और मुख्य वजीर आजम हुमायू जुनैद खा को सेना के अग्रिम दल का सेनापति बनाकर भेजा। शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करते हुए खोरा के स्थान को उसने विध्वस कर दिया और दुष्ट बीरम के उच्च भवनो का खडन करा दिया। इस्लामी सेना को अत्यधिक लूट की धन-सपत्ति प्राप्त हुई। बीरम, जिसके युद्ध की शक्ति तथा पौरुष की प्रसिद्धि निकट तथा दूर के स्थानो तक पहुच चुकी थी, अपने अश्वारोहियो तथा पदातियो को नष्ट करवाने के पश्चात् विजयी सेना के सामने से भाग खडा हुआ।

प्रयाग तथा अरैल पर आक्रमण

बादशाह ने इस्लामी सेनाओ को लेकर पयाग[2] तथा अरैल के काफिरो को नष्ट करने के लिए (४४०अ) प्रस्थान किया ओर उन दोनो स्थानो को विध्वस कर दिया। अत्यधिक जनसमूह जो विभिन्न झूठे खुदाओ की उपासना हेतु पयाग मे एकत्र हुआ था बन्दी बना लिया गया। कडा के निवासी इस बादशाह की सहायता के कारण विद्रोहियो के उत्पात से मुक्त हो गये और इस्लाम के इस बादशाह का नाम इसी कारण प्रसिद्ध हो गया।

सुलेमान बिन दाऊद का विद्रोह

इसी बीच मे सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये कि, "सुलेमान बिन दाऊद जिब[3] वासनाओ तथा शैतान के मार्ग भ्रष्ट करने के कारण विद्रोही बन गया है और चत्र तथा चुडवल का जोकि बादशाही

१ सम्भवत चित्तौड।
२ प्रयाग।
३ हाजिब —बारबक के अधीन हाजिब होते थे। वे दरबार मे सुल्तान तथा दरबारियो के मध्य मे खडे होते थे, और उनकी आज्ञा बिना कोई सुल्तान तक न पहुँच सकता था। उनका सरदार अमीर हाजिब

के चिह्न हैं बादशाह की आज्ञा बिना प्रयोग करने लगा है। उसने बन्दिगी मजलिसे आली निजाम खा की सेना पर जो कुन्दाल नामक स्थान पर पडाव किये हुए थी रात्रि मे छापा मारा और उसे हानि पहुँचाई।" यह समाचार पाते ही सुल्तान के क्रोध की अग्नि भडक उठी और उसने उस स्थान से प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ एरिज के किले के क्षेत्र को घेर लिया। मलिक उम्मीद शाह उर्फ दिलावर खा, धार के क्षेत्र का अधिकारी, पिछली मित्रता के कारण अत्यधिक सेना लेकर इस बादशाह की सहायतार्थ पहुचा।

राय सबीर का सुलेमान की सहायतार्थ प्रस्थान

(४४० ब) सुलेमान बिन दाऊद जिब ने इस्लामी सेना की शक्ति को देखकर आसपास के दुष्ट काफिरो को पत्र भेजकर सहायता करने के लिए तैयार किया। सबलीर[1] जोकि काफिरो तथा दुष्टो का नेता था समस्त बडे बडे रायो एव प्रसिद्ध मुकद्दमो को लेकर सुलेमान बिन दाऊद जिब की सहायतार्थ एरिज के क्षेत्र मे पहुचा और बेतवा नदी के तट पर पडाव किया। अत्यधिक धन-सपत्ति तथा सामग्री के भरोसे पर उसने वहा से इस्लाम के बचे खुचे चिह्नो का भी विनाश करा देना चाहा किन्तु इस्लाम की रक्षा हेतु सुल्तान ने यह सोचा कि "यदि मै सेना के वीरो तथा सिहो को युद्ध की अनुमति दे दूगा तो उस प्रदेश मे काफिरो का चिह्न भी शेष न रह जायेगा किन्तु यदि मै विलम्ब करते हुये अग्रसर हूगा तो सभवत वे लोग इस्लाम स्वीकार कर लेगे।" किन्तु काफिर लोग अपनी सेना की अधिकता के कारण यह सोचते (४४१ अ) थे कि मुसलमानो मे युद्ध की शक्ति नही। इस कुत्सित विचार से दुष्ट हिन्दू युद्ध के लिए अग्रसर हुए। अभी युद्ध प्रारम्भ न हुआ था कि उनके (हिन्दुओ के) पदाती पीठ दिखा गये। वीरो की सेना ने उनमे से कुछ लोगो को तलवार के घाट उतार दिया और कुछ को बाणो तथा बर्छो का निशाना बना दिया। सुल्तान ने दुष्टो के सिरो का ईर्छा के क्षेत्र मे एक भव्य चबूतरा बनवाया ताकि साधारण काफिर एव उस क्षेत्र के दुष्ट लोग इससे शिक्षा ग्रहण करे। इस्लामी सेना को अत्यधिक घोडे एव लूट की धन-सपत्ति प्राप्त हुई।

सुलेमान का सधि कर लेना

(४४१ ब) सुलेमान बिन दाऊद ने जोकि इस उपद्रव की जड था अपना अपराध स्वीकार कर लिया और सूफियो, आलिमो, सैयिदो तथा पवित्र लोगो को क्षमा-याचना हेतु भेजा। सुल्तान ने अपनी स्वाभाविक कृपा तथा दया के कारण उसे क्षमा कर दिया। सुलेमान बिन दाऊद की मृत्यु के उपरान्त सुलेमान का पुत्र चत्र सहित सुल्तान के समक्ष धरती चुम्बन करने के लिये उपस्थित हुआ और सुल्तान ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और सुलेमान की सतान को सम्मानित करते हुए इनाम तथा खिलअते प्रदान की और ईर्छा का भूभाग उसे प्रदान कर दिया किन्तु उसका व्यक्तित्व सुल्तान की सेवा के योग्य न था अत उसने आज्ञाकारिता त्याग दी और मुहमदाबाद से कुछ सवारो के साथ भाग खडा हुआ। (४४२ अ) इस कारण उसे ईर्छा के किले की अक़्तादारी से पृथक् कर दिया गया और उपर्युक्त अक़्ता शाही प्रयोग की अक़्ताओ मे सम्मिलित हो गई। कुछ समय उपरान्त वह आजम हुमायू जुनैद खा बिन

कहलाता था। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबो द्वारा ही सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत हो सकते थे। वे बडे योग्य सैनिक होते थे और युद्ध-सचालन भी कभी कभी इनके द्वारा होता था।

१ सबीर।

फीरोज खा को प्रदान कर दी गई। इस प्रकार उस समय से अब तक, जोकि इस इतिहास के रचना की तिथि है, वह उसी के परिवार मे है।

सुल्तान द्वारा ईर्छा पर अधिकार तथा अक़्ताओ का वितरण

जब सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद शाह बिन फीरोज खा बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क ने ईर्छा के किले को, जो हिन्दुस्तान के सुदृढ किलो मे है, अपने अधिकार मे कर लिया और अपने छोटे भाई, मुख्य वजीर को प्रदान कर दिया तो राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध को दृढता प्राप्त हो गई और अधिकाश विरोधी आज्ञाकारी बन गये। इस सुल्तान ने बडी बडी अक़्ताये तथा विलायते अपने भाइयो, सहायको एव सबधियो को प्रदान की। जथरा के भूभाग तथा अक़्ता को खाने आजम निजाम खा बिन फीरोज खा को प्रदान किया। भान्दीर को मुकर्रम खा बिन मलिक दौलत नाग को प्रदान किया। उसके उपरान्त वह उसके पुत्र (४४२ ब) मुजफ्फर खा बिन मुकर्रम खा को प्रदान हुआ। महोबा की अक़्ता जैन खा बिन मलिक निजामुद्दीन नहन को प्रदान हुई। शाहपुर की अक़्ता यद्यपि इसके पूर्व ही हसन खा बिन मकन के अधीन थी किन्तु वह उसे नये सिरे से प्रदान की गई। राठ नामक कस्बा मलिक इबराहीम रजी को प्रदान किय। गया और महमूदाबाद उर्फ खदवत मलिक फख्र खुर्रम को प्रदान हुआ। इसी प्रकार समस्त भूभाग तथा कस्बे समस्त प्रतिष्ठित अमीरो को प्रदान किये गये।

मुहमदाबाद मे आलिमो का पहुचना

उस सम्मानित सुल्तान द्वारा राज्य के आस पास के स्थान अपने अधिकार मे कर लेने तथा प्रसिद्ध अमीरों एव मलिको को प्रदान कर देने के कारण प्रजा तथा सर्वसाधारण को सुख एव शाति प्राप्त हो गई। राजधानी मुहम्मदाबाद उर्फ कालपी देहली के प्रसिद्ध लोगो के पहुचने के कारण बडे बडे आलिमो तथा प्रसिद्ध अमीरो का केन्द्र बन गयी। मौलाना हुसाम ताजुल मिल्लत वद्दीन अहमद थानेसुरी, जोकि बहुत बडे विद्वान् तथा लेखक थे और जिन्होने स्वर्गीय सुल्तान फीरोज शाह की ओर से ईरान के शासक अमीर तिमुर[1] के नाम पत्र लिखे थे, मुगुलो के उत्पात के उपरान्त देहली से यहाँ पहुच कर (४४३ अ) निवास करने लगे और बहुत समय तक प्रसन्नतापूर्वक यहा पर जीवन व्यतीत करते रहे। अन्त मे उनकी यही मृत्यु हुई•और यही दफन हुए। सुल्तान के छोटे भाई अहमद बिन फीरोज खा ने जो उनका बहुत बडा भक्त था उनकी कब्र पर एक बडे दृढ गुम्बद का निर्माण कराया।

इसी प्रकार मौलाना शम्सुद्दीन ख्वाजगी नहवी[2] थे जोकि ज्ञान तथा सहनशीलता मे अद्वितीय थे। उन्होने इस नगर मे पहुच कर स्थान ग्रहण कर लिया और कुछ समय उपरान्त उनकी मृत्यु हो गई। उनकी कब्र कोट के बाहर है। इन दोनो बुजुर्गो के मजार के कारण इस नगर की शोभा हजारगुनी बढ गई है। शेखज़ादा अली तथा मौलाना आलिम मुहम्मद थानेसुरी जो अतिम काल मे देहली मे मलिकुल उलमा की उपाधि से सुशोभित हुए और मौलाना अशरफ जो अपने काल के बहुत बडे आलिम थे, सुल्तान के दरबार मे उपस्थित हुए और उन्हे उचित इनाम द्वारा सम्मानित किया गया किन्तु इन तीनो बुजुर्गों ने इस प्रदेश मे स्थान ग्रहण न किया।

१ तैमूर। तुर्की मे इस शब्द का उच्चारण तिमुर है।
२ नहव के ज्ञाता। नहव अरबी व्याकरण की एक शाखा है।

चौहानो के विनाश हेतु प्रस्थान

सक्षेप मे, जब मुहमदाबाद आलिमो तथा दानी अमीरो द्वारा सुशोभित हो गया और सुल्तान के (४४३ ब) पास अत्यधिक लाव लश्कर एकत्र हो गया तो वह अपनी शुभ पताकाओ को चौहानो के विनाश हेतु इटावा के किले की ओर ले गया और सर्वप्रथम कनार नामक स्थान को जोकि दुष्ट काफिरो का केन्द्र था विध्वस कर दिया। तदुपरान्त उसने फफूद तथा अन्दावा को जोकि इटावा के किले के निकट ह पूर्णत नष्ट कर दिया और चौहानो के समस्त निवास-स्थान उदाहरणार्थ करहल तथा जाघन इत्यादि इस प्रकार विध्वस कर दिये कि समस्त दुष्ट काफिर भाग कर शरण हेतु इटावा के किले मे प्रविष्ट हो गये। इस बादशाह ने सेना सहित खुदा पर भरोसा करके किले को घेर लिया और युद्ध प्रारम्भ कर दिया किन्तु उस स्थान के अत्यन्त दृढ होने के कारण इस्लामी सेनाये असफल होकर कामीत तथा हथीकान्त की ओर लौट गई और उपर्युक्त स्थानो को जो शत्रुओ के बहुत बडे बडे नगर हैं, नष्ट भ्रष्ट कर दिया और उदयराज के भव्य भवन को नष्ट भ्रष्ट कर डाला।

ग्वालियर पर आक्रमण

वहा से वह विजयी सेना को ग्वालियूर[१] के किले के द्वार पर ले गया और किले से कुछ कोस पीछे हट कर पडाव किया तथा आसपास की समस्त विलायतो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। दुष्ट राय ने इस्लामी (४४४ अ) सेना की शक्ति को देखकर विवश होकर अधीनता स्वीकार कर ली और अत्यधिक पेशकश इस बादशाह की सेवा मे भेजे और दीनता प्रदर्शित करते हुये शरण की याचना की। बादशाह ने कृपा दृष्टि प्रदर्शित करते हुए उस मार्ग-भ्रष्ट समूह को क्षमा कर दिया और विजय तथा सफलता प्राप्त करके अपनी राजधानी की ओर चला आया। समस्त आलिमो, सैयिदो, पवित्र लोगो तथा काज़ियो को इनाम एव खिलअते प्रदान की।

शाहपुर का अधिकार मे आना

कुछ समय उपरान्त जब हसन खा बिन मकन की जो दरबार का एक निष्ठावान् व्यक्ति था मृत्यु हो गई तो उसकी सतान ने सन्मार्ग को छोडकर, विद्रोह प्रारम्भ कर दिया और शाहपुर के किले को (४४४ ब) अपने अधिकार मे कर लिया। किन्तु महमूद शाह के भाग्य के उन्नति के शिखर पर होने के कारण वह अज्ञानी समूह बिना युद्ध किये ही शाहपुर के प्रदेश को छोडकर पराजित होकर दुष्ट काफिरों के पास चला गया और शाहपुर का किला मलिक दुर्राज को जोकि सुल्तान का एक प्रतिष्ठित दास था प्रदान कर दिया गया।

इटावा पर आक्रमण

इस बादशाह ने अत्यधिक सेना लेकर एक शुभ नक्षत्र मे अतानवा[२] के काफिरो के विनाश तथा हसन खा बिन मकन की सतान को नष्ट करने के लिए, जिसने उन लोगो के पास शरण ग्रहण कर ली थी, सकल्प किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ यमुना नदी के तट पर उस स्थान पर जिसे पजाब कहते हैं पडाव किया। सबीर जोकि काफिरो का नेता था असख्य सेना लेकर युद्ध के लिए निकला। दोनो

१ ग्वालियर।
२ इटावा।

सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। अत मे ईश्वर ने मुसलमानो को विजय प्रदान की और दुष्ट काफिरो को पराजित कर दिया। अत्यधिक रक्तपात हुआ। सबीर शेष दुष्ट काफिरो सहित पलायन करके इटावा (४४५ अ) के किले मे प्रविष्ट हो गया और यह सुल्तान विजयी सेनाओ को उपर्युक्त किले के द्वार पर ले गया और उसे घेर लिया।

बहुत समय तक उसने किले वालो को बन्द रक्खा और विजय प्राप्त होने ही वाली थी कि दुर्भाग्य से वर्षा की अधिकता के कारण समस्त प्रदेश समुद्र के समान हो गया और यह धर्मनिष्ठ बादशाह किले से वापस हो गया और कनार नामक स्थान पर अपनी अत्यधिक सेना को लेकर उसने पडाव किया, वह इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि "वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् दुष्ट सबीर के विनाश हेतु इटावा के किले के द्वार पर पहुचे और पतित काफिरो को नष्ट भ्रष्ट करके उस दृढ किले को धराशायी कर दे" किन्तु इसी बीच मे ८१३ हि० (१४१०–११ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। समस्त मलिको तथा अमीरो (४४५ ब) को बडा दु ख हुआ और सुल्तान के भाई वज़ीर जुनैद खा बिन फीरोज खा तथा समस्त भाइयो एव पुत्रो ने उसकी लाश को मुहमदाबाद उर्फ कालपी मे भेज दिया और उसे उसकी माता की कब्र के पायँती दफन कर दिया गया। जुनैद खा बिन फीरोज खा ने सुल्तान के ज्येष्ठ पुत्र को, जो इसके पूर्व आरिजे ममालिक[1] था और जिसकी उपाधि कादिर खा थी, इख्तियारुद्दुनिया वद्दीन कादिर शाह की उपाधि देकर सिहासनारूढ कर दिया।

(४४६ अ) सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद शाह बिन फीरोज़ खा बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क की राजधानी मुहमदाबाद उर्फ कालपी।

उसकी सतान कादिर खा अर्थात् कादिर शाह, आरिजे ममालिक।
मुहम्मद खा सर जामदार[2]
वजीर खा, सर सिलाहदार[3]
हामिद खा, आखुरबेग[4]
मुक़्तदिर खा, बारबक[5]
फतह खा जिसे कादिरशाह के राज्यकाल मे नियाबत[6] प्राप्त थी।
नेमतुल्लाह खा

१ दीवाने अर्ज़ का सबसे बड़ा अधिकारी, सेना की भरती, निरीक्षण तथा सेना के समस्त प्रबन्ध उसी के विभाग द्वारा सम्पन्न होते थे।

२ इसे सरजानदार होना चाहिये। सुल्तान के अगरक्षक जानदार कहलाते थे। उनका सरदार सरजानदार कहलाता था। कभी कभी दो सरजानदार नियुक्त होते थे। एक दाहिनी ओर और दूसरा बाई ओर का।

३ सर सिलाहदार—मुख्य सिलाहदार।

४ आख़ुर बेग अथवा आख़ुरबक—शाही घोड़ो की देख-भाल करने वाला अधिकारी। सेना की दाहिनी और बाई ओर के घोड़ो की देख-भाल के लिये अलग अलग अधिकारी होते थे। दाहिनी ओर वाला आख़ुरबके मैमना और बाई ओर वाला आख़ुरबके मैसरा कहलाता था।

५ बारबक—दरबार के समस्त कार्यों का प्रबन्ध करने वाले अधिकारियो का अफ्सर। अमीरो तथा अधिकारियों के खड़े होने और दरबार की शान स्थापित रखने का कार्य उसी का कर्तव्य होता था। उसे अमीरे हाजिब भी कहते थे।

६ नियाबत :—नायब होना।

शादी खा
हबीबुल्लाह खा
अजीजुल्लाह खा
तुर्कुल्लाह खा
सादुल्लाह खा
मुबारक खा
जलाल खा
नुसरत खा, इत्यादि
उसका भाई तथा समस्त बडे बडे अमीर
वजीरे ममालिक[१], दस्तूरे[२] सुल्तान निशान जुनैद खा बिन फीरोज खा।
(अमीर) मजलिसे आली निजाम खा बिन फीरोज खा
अहमद खा बिन फीरोज खा, नायबे गैबत[३]
मुजफ्फर खा बिन फीरोज खा, सुल्तान का छोटा भाई
खिताब खा, सुल्तान का ससुर
मुजफ्फर खा बिन मुकर्रम खा
जैन खा बिन मलिक निजामुद्दीन तेहीन
हसन खा बिन मलिक मकन
नुसरतुलमुल्क मलिक लुत्फुल्लाह मजदुलमुल्क
मलिक महमूद बिन मलिक उमर, शहनये दीवान[४]
वली खा बिन मलिक मुहम्मद शह अफगान
मुनव्वर खा, फीरोजपुर की शिक का नायब
इस्माईल खा
(४४६ ब) ख्वाजा मुजाहिद खा तदुपरान्त मुगीस खा मुतसर्रिफे ममालिक[५]
जलाल खा, नायबे अर्जे ममालिक।

सुल्तान इख्तियारुद्दुनियां वद्दीन अबुल मुजाहिद क़ादिर शाह बिन महमूद शाह बिन फ़ीरोज़ खां बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क

इतिहासकारो ने लिखा है कि सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र कादिर खा, सुल्तान के मुख्य वजीर तथा समस्त अमीरो और मलिको की सहमति से अपने पिता

१ वजीरे ममालिक—मुख्य वजीर।
२ दस्तूर :—मुख्य वज़ीर।
३ नायबे ग़ैबत—वह अधिकारी जो बादशाह की अनुपस्थिति में राजधानी के शासन-प्रबन्ध की देख-रेख करता था।
४ शहनये दीवान :—दीवान (वित्त विभाग) का प्रबन्धक।
५ मुतसर्रिफे ममालिक :—मुख्य मुतसर्रिफ़। मुतसर्रिफ़ ग्रामों में किसानों से भूमि कर वसूल करने वाला अधिकारी होता था। आमिल। शाही कारखानो का हिसाब-किताब रखने के लिये भी मुतसर्रिफ़ रखे जाते थे।

के स्थान पर मुहमदावाद मे सिहासनारूढ हुआ ओर काजियो ने बधाई देते हुए कसीदो की रचनाये की। इस इतिहास के लेखक ने भी सुल्तान को बधाई देते हुए कसीदो की रचना की।

(४४७ अ) उसके सिहासनारूढ हो जाने के उपरान्त उसके मँझले भाई मुहम्मद खा ने कुछ अमीरो के बहकाने से विद्रोह तथा विरोध प्रारम्भ कर दिया किन्तु मुख्य वजीर आजम हुमायू जुनैद खा (४४७ ब) बिन फीरोज खा के आतक के कारण बादशाह को कोई हानि न पहुची ओर वजीर के सकेत पर भान्दीर की अक्ता मुहम्मद खा को प्रदान कर दी गई और वह भी आज्ञाकारिता हेतु कटिबद्ध हो गया।

तदुपरान्त उस सुल्तान ने दस्तूरे ममालिक जुनैद खा बिन फीरोज खा के सकेत पर एक भारी सेना लेकर काफिरो के विनाश का सकल्प करके यमुना नदी पार की और उसके दूसरे तट पर पडाव किया। वहाँ से निरन्तर यात्रा करता हुआ वह विद्रोहियो के विरुद्ध रवाना हुआ। जब विजयी सेना जगदह नामक स्थान पर पहुची तो दुष्ट काफिरो की सेनाओ ने इस्लामी सेना से युद्ध किया और बहुत समय तक घोर युद्ध होता रहा। अन्त मे इस्लामी सेना काफिरो द्वारा पराजित हुई और कुछ बडे-बडे अमीर मार डाले गये। बादशाह अपनी राजधानी की ओर लौट आया। पतित काफिरो की सेना ने (४४८ अ) जिनका राजा दुष्ट सबीर था मुहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। दुष्ट काफिरो के नेता सबीर ने समस्त बडे-बडे रायो तथा प्रसिद्ध मुकद्दमो सहित इस बादशाह के निवास स्थान के निकट पडाव किया और उसने मुसलमानो को नष्ट-भ्रष्ट कर देने का सकल्प कर लिया। उसे इस बात का विश्वास था कि उसे विजय प्राप्त हो जायेगी किन्तु बादशाह ने जुनैद खा के सकेत पर शीघ्रातिशीघ्र उन पर आक्रमण किया और प्रथम आक्रमण ही मे उनके अभिमान का अत हो गया। बहुत बडी सख्या मे काफिर मारे गये और अत्यधिक दास तथा घोडे इस्लामी सेना को प्राप्त हुए।

(४४८ ब) सबीर जोकि युद्ध तथा पौरुष की डीग मारा करता था समस्त राजसी ठाठ-बाट को छोडकर तथा अत्यधिक अश्वारोहियो एव पदातियो को नष्ट करा के भाग खडा हुआ। ईश्वर ने इस्लामी सेना को विजय प्रदान की और दुष्ट काफिरो को पराजित कर दिया। बादशाह अत्यधिक धन-सपत्ति लेकर अपनी राजधानी को लौट आया और आलिमो, सैयिदो तथा पवित्र लोगो को उस धन सपत्ति द्वारा लाभान्वित कराया। इस विजय के कारण इस्लामी राज्य को अत्यधिक उन्नति प्राप्त हो (४४९ अ) गई तथा आस-पास के अत्यधिक काफिर एव विद्रोही आज्ञाकारी बन गये।

इसी बीच मे दुर्भाग्यवश जुनैद खा बिन फीरोज खा की, जो इस राज्य का स्तम्भ था, मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के उपरान्त विजारत का पद उसके ज्येष्ठ पुत्र दौलत खा बिन जुनैद खा को प्रदान हो गया। बादशाह उसका अत्यधिक आदर-सम्मान करता था। इस कारण प्रजा तथा सर्वसाधारण को भी अत्यधिक निश्चितता प्राप्त थी। सबीर ने, जो काफिरो के समूह मे सर्वश्रेष्ठ था, और समस्त बडे-बडे रायो तथा मुकद्दमो ने उस बादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और खराज अदा करना प्रारम्भ कर (४४९ब) दिया। बादशाह ने सबीर को, जो उस काल मे बडा प्रसिद्ध था, अत्यधिक इनाम तथा बहुमूल्य खिलअत द्वारा सम्मानित किया।

कुछ समय उपरान्त बादशाह ने सबीर की प्रार्थना पर भिनुगाव नामक स्थान पर चढाई की और आस-पास की समस्त विलायतो को विध्वस कर दिया। वह भिनुगाव का विनाश कर देने वाला ही था कि फतह खा बिन सुल्तान महमूद का, जो मुहमदाबाद का, नायब था, पत्र प्राप्त हुआ कि, "जौनापुर[1] के राज-

१ जौनपुर।

सिंहासन का अधिकारी शम्सुद्दीन इबराहीम शाह असख्य सेना लेकर मुहमदाबाद पर चढाई करने के लिए आ रहा है। यद्यपि शत्रु के आगमन से बादशाह के सौभाग्य के कारण कोई भय नही है किन्तु बादशाह की छाया द्वारा शहर वालो को अत्यधिक शाति तथा सतोष प्राप्त हो जायेगा।" इस पत्र के प्राप्त होते ही शाही आदेश हुआ कि विजयी सेना शीघ्रातिशीघ्र राजधानी की ओर लौट जाय। सबीर ने, जोकि (४५० अ) पौरुष तथा वीरता मे अद्वितीय था, बादशाह के साथ अत्यधिक सेना लेकर प्रस्थान किया। जब विजयी सेना निरन्तर यात्रा करती हुई राजधानी के निकट पहुची तो नगर की समस्त प्रजा बादशाह के स्वागतार्थ उपस्थित हुई और प्रत्येक की शक्ति तथा प्रसन्नता मे हजारो गुना वृद्धि हो गई।

दूसरे दिन जौनापुर का बादशाह अत्यधिक सेना तथा हाथियो को लेकर उस नगर के क्षेत्र मे पहुच गया और युद्ध प्रारम्भ कर दिया किन्तु उस स्थान की दृढता के कारण उसने युद्ध करना त्याग दिया और उस नगर के कोट के समीप पडाव किया। कुछ समय तक वह वहा पडाव किये रहा। इसी बीच मे ईश्वर की कृपा से उसके कुछ अच्छे हाथी नष्ट हो गये और इस कारण वह दुखी होकर वापस लौट गया और भेसरूर मे पहुच कर पडाव किया।

वर्षा ऋतु के उपरान्त उसने पुन अत्यधिक सेना तथा हाथियो सहित इस प्रदेश की ओर प्रस्थान किया और सर्वप्रथम महोबा के क्षेत्र को अपने अधिकार मे कर लिया। उसने जलाल खा बिन दाऊद (४५० ब) तथा उसके भाई बिन मलिक जहीरुद्दीन व दोहनी को उस नगर मे नियुक्त करके वाली बना दिया और स्वय बढ कर राठ कस्बे पर भी अधिकार जमा लिया। उसने इस कस्बे को भी जलाल खा को प्रदान कर दिया और स्वय मुहमदाबाद से कुछ कोस पर पडाव किया। हसन खा बिन मकन के पुत्रो को समस्त सेना सहित शाहपुर के कस्बे मे नियुक्त कर दिया और मलिकुश्शर्क मकबूल को, जो उसके राज्य का मुख्य वजीर था, अत्यधिक सेना सहित एरिज के किले की ओर भेजा। उस समय इस लेखक का पिता मलिकुश्शर्क मलिक बिहामद जो अपने समय का बहुत बडा वीर तथा योद्धा था एरिज का शासक तथा मुक्ता था। वह मलिकुश्शर्क मकबूल से युद्ध करने के लिए कटिबद्ध हो गया और घमा- (४५१ अ) सान युद्ध तथा घोर रक्तपात हुआ। सक्षेप मे, जब मलिकुश्शर्क मकबूल ने एरिज के किले को वहा के निवासियो के छल तथा धूर्तता के कारण अपने अधिकार मे कर लिया तो उसने भान्दीर तथा जथरा के कस्बो को भी, जो एरिज के किले के समीप हैं, अपने अधिकार मे कर लिया और जाफर बिन दाऊद जिब को एरिज के किले का वाली बना दिया। खिज्र अर्यूब को भान्दीर के कस्बे मे नियुक्त करके वह स्वय कनार नामक स्थान से होता हुआ यमुना नदी के तट से मुहमदाबाद की ओर रवाना हुआ और सुल्तान शम्सुद्दीन इबराहीम शाह की सेना मे जो मुहम्मदाबाद के समीप ३-४ कोस पर पडाव किये हुए थी पहुच गया।

मलिकुश्शर्क मकबूल के पहुच जाने के उपरान्त जौनापुर के शासक को अत्यधिक शक्ति प्राप्त हो गई। वह वहा से प्रस्थान करके शेखपुर नामक स्थान पर पहुचा और युद्ध की तैयारी करने लगा तथा मन्जनीक एव अरादे तैयार कराये। सुल्तान कादिर शाह बिन महमूद शाह भी जो युद्ध मे अपने समय का रुस्तम[1] तथा इस्फन्दयार[2] था युद्ध के लिये तैयार हुआ। उसने सद्रो तथा प्रतिष्ठित मलिको एव अमीरो

१ ईरान का एक पौराणिक वीर जिसे कुछ ईरानी इतिहासकार 'रुस्तमें दास्तान' तथा 'रुस्तम ज़ाबुली' भी कहते है। वह जाल का पुत्र तथा साम बिन नरीमान का पौत्र था।

२ इस्फ़न्दयार:—किश्तास्प अथवा गश्तास्प का पुत्र था जो ईरान के कयानी वश का बादशाह था। वह भी अपनी वीरता के लिये बड़ा प्रसिद्ध था, कहा जाता है कि रुस्तम ने उसकी हत्या की थी।

से इस आशय से पुन बैअत कराई कि वे पूर्ण निष्ठा से शपथ लेकर सगठिन हो जाय। जब जौनापुर (४५१ ब) के बादशाह को इस वश की शक्ति तथा सगठन के विषय मे पूर्ण ज्ञान हो गया तो उसने ईश्वर के भय तथा इस्लाम की आवश्यकताओ पर दृष्टि रखते हुए युद्ध न करना निश्चय कर लिया और शत्रुता के स्थान पर मित्रता करने का सकल्प कर लिया। वजीरे मुमलेकत मलिकुश्शर्क मकबूल, सुल्तान कादिर शाह तथा उसके वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा एव सुल्तान के समस्त प्रतष्ठित सबधियो तथा अमीरो और निजाम खा के लिए खिलअत तथा इनाम लाया। जब दोनो पक्षो के मध्य मे मित्रता पूर्णत स्थापित हो गई तो निजाम खा को सुल्तान के समस्त प्रतिष्ठित सबधियो के साथ सुल्तान शम्सुद्दीन इबराहीम शाह के पास भेजा गया और इस बादशाह के नाम का खुत्बा तथा सिक्का मुहमदाबाद एव समस्त खित्तो तथा कस्बो मे प्रसारित हो गया। अपने उद्देश्य की पूर्ति के उपरान्त इस बादशाह ने अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया और निजाम खा को अत्यधिक सम्मानित करके अपने साथ ले गया। उसके लौट जाने के उपरान्त मुहमदाबाद तथा उसके आसपास के स्थान के निवासियो को अत्यन्त सुख शाति प्राप्त हो गई।

(४५२ अ) सुल्तान कादिर शाह ने सेना एकत्र करने के उपरान्त शुभ मुहूर्त मे महोबा तथा राठ कस्बो को मुक्त कराने का सकल्प किया और सर्वप्रथम राठ कस्बे को अपने अधिकार मे कर लिया। वहा से उसने महोबा पर भी चढाई की और उसे भी अपने अधिकार मे कर लिया। जलाल खा जो सुल्तान इबराहीम की ओर से वाली था क्षमा-याचना करके किले से बाहर निकला और अपने प्रदेश को चला गया। उस स्थान से सुल्तान ने अपने मुख्य वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा के परामर्श से एरिज के किले की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ विजयी सेनाओ सहित उस किले के क्षेत्र मे पहुच गया ओर उस किले को घेर लिया तथा युद्ध एव रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। जाफर दाऊद उस स्थान की दृढता के कारण अत्यधिक वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित करता रहा और दो वर्ष तथा कुछ मास तक उसने किले की उचित रक्षा की किन्तु अन्त मे वह सुल्तान के दासो द्वारा मार डाला गया और एरिज का किला पुन राज्य के वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा को प्राप्त हो गया। बादशाह ने तदुपरान्त अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया। इन विजयो के उपरान्त इस बादशाह के राज्य के कार्य उन्नति के शिखर पर पहुच गये।

(४५२ ब) इसी बीच मे सुल्तान मुहम्मद खा का मँझला भाई जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है मुहमदाबाद से विद्रोह करके भान्दीर कस्बे के किले मे पहुचा और वहा विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित कर दी तथा युद्ध एव रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। सर्वप्रथम राज्य के वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा को राजधानी से अत्यधिक सेना देकर उचित परामर्श देने के लिए भान्दीर के किले की ओर नियुक्त किया गया। वह शुद्ध विचारो वाला वजीर निरन्तर यात्रा करता हुआ ईर्छा के भूभाग मे पहुचा। कुछ दिन तक उसने बीवी नदी के किनारे पडाव किया और मुहम्मद खा के पास दूत भेज कर उसे नाना प्रकार के परामर्श दिये किन्तु मुहम्मद खा के मस्तिष्क मे नेतृत्व तथा प्रभुत्व प्राप्त करने का भूत सवार था अत उसने इन परामर्शो तथा शिक्षाओ की ओर कोई ध्यान न दिया और राज्य के वजीर का दूत असफल लौट आया।

जब मुहम्मद खा के प्रभुत्व के समाचार सुल्तान को प्राप्त हुये तो विजयी पताकाओ ने भान्दीर के किले की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करती हुई वे ईर्छा के "भू-भाग मे पहुच गई। वहा से शाही आदेशानुसार राज्य के वजीर ने आगे बढ कर भान्दीर के किले के समीप पडाव करके युद्ध प्रारम्भ (४५३ अ) कर दिया। मुहम्मद खा समस्त पदातियों तथा अश्वारोहियो को लेकर किले के बाहर निकला और युद्ध प्रारम्भ हो गया। घमासान युद्ध हुआ। मुहम्मद खा विजयी सेनाओ की शक्ति को देखकर पुनः

किले के भीतर चला गया और किले को बन्द कर लिया। कई मास तक वह किले मे बन्द रहा किन्तु अन्त मे वचनो तथा प्रतिज्ञाओ के उपरान्त उसने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और क्षमा-याचना करके सुल्तान की सेवा मे पहुचा। उसे कुछ समय तक विद्रोह की अग्नि शात करने के लिए बन्दीगृह मे रखा गया और बन्दीगृह मे ही उसकी मृत्यु हो गई। भान्दीर का किला नुसरतुलमुल्क मलिक लुत्फुल्लाह को प्रदान कर दिया गया और विजयी सेनाये सफलता प्राप्त करके अपने स्थान को लौट आई।

मुहम्मद खा बिन सुल्तान महमूद की दुर्घटना को एक वर्ष ही व्यतीत हो पाया था कि सुल्तान का मुख्य वजीर दौलत खा बिन जुनैद खा भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसकी मृत्यु के उपरान्त मुख्य वजीर (४५३ ब) का पद मुबारक खा बिन जुनैद खा को प्राप्त हुआ। कुछ समय उपरान्त सुल्तान कादिर शाह ने इस हितैषी वजीर के परामर्श से समूनी तथा सहिन्दना के विध्वस हेतु प्रस्थान किया और शीघ्राति-शीघ्र वहा पहुच कर उस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। विजयी सेनाओ के इन दोनो स्थानो पर आक्रमण के समाचार पाकर दुष्ट राय तास, कुफ्र की सहायतार्थ समूनी तथा सहिन्दना के मुकद्दम की मदद के लिए पहुचा और इस्लामी सेना से युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। जब यह कलकित हिन्दू युद्ध करने के लिये अग्रसर हुआ तो यह बादशाह भी युद्ध के लिए तैयार हुआ और अपने मुख्य वजीर मुबारक खा बिन जुनैद खा को सेना के अग्रिम भाग मे नियुक्त किया और विजयी सेना को काफिरो के विरुद्ध बढाया। घोर युद्ध हुआ। कलकित हिन्दुओ के प्रभुत्व के कारण समस्त विजयी सेना को पीठ दिखानी पडी, केवल आज़म हुमायू मुबारक खा बिन जुनैद खा ने खास सेनाओ सहित काफिरो से युद्ध किया और इस अज्ञानी तथा पिशाच समूह से पौरुष प्रदर्शित करते हुए युद्ध करता रहा। वजीर की दृढता को देखकर बादशाह ने भी अत्यधिक अश्वारोहियो सहित पतित काफिरो पर आक्रमण किया।

(४५४ अ) इसी बीच मे राय सबीर तथा बीरम जो सुल्तान के हितैषी तथा सहायक थे अपनी सेना सहित उसकी सेवा मे पहुच गये और युद्ध मे सम्मिलित हो गये। पिशाच राय तास, जिसे अपनी असख्य सेना का अभिमान था, इस्लाम की सेना के प्रभुत्व तथा शक्ति को देखकर भाग खडा हुआ। उसके अत्यधिक अश्वारोही तथा पदाती नष्ट हो गये और महामा तथा फलवात के मध्य में उसने शरण ग्रहण कर ली और अपने पुत्र सातन को अत्यधिक उपहार देकर सुल्तान की सेवा मे भेजा और विनय तथा नम्रता प्रदर्शित करते हुये क्षमा-याचना की। सुल्तान ने अपनी अत्यधिक कृपा तथा दया के कारण राय तास को क्षमा कर दिया और उसके पुत्र सातन को खिलअत देकर सम्मानित किया तथा विजय और सफलता प्राप्त करके अपनी राजधानी मुहमदाबाद को लौट आया। ईश्वर की इस कृपा के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिए उसने आलिमो एव सैयिदो के वेतन तथा इनाम और पवित्र लोगो तथा काजियो के अदरार एव वृत्ति में वृद्धि कर दी। कुछ समय उपरान्त उसने बितूर के किले पर चढाई की और उस दृढ किले को घेर लिया। अन्त मे किले के अत्यन्त दृढ होने के कारण इस्लामी सेना सधि करके लौट आई और अन्य कार्यो मे व्यस्त हो गई।

(४५४ ब) इसके उपरान्त कई वर्ष तक लगातार यह गुणवान् बादशाह दुष्ट काफिरो को नष्ट-भ्रष्ट करने मे व्यस्त रहा। अपने सहायकों को सम्मानित तथा शत्रुओ को तिरस्कृत करता रहा। इसी बीच मे उसे एक ऐसा रोग हो गया कि वह घोडे तक पर सवार न हो पाता था और पालकी पर सवार होता था। इसी अवस्था मे उसने सहिन्दना नामक स्थान के विध्वस हेतु प्रस्थान किया और उसे नष्ट-भ्रष्ट करके अत्यधिक लूट की धन-सपत्ति लेकर वापस हो गया। जब वह अपनी राजधानी को वापस हुआ तो उसका रोग और बढ गया और ८३५ हि० (१४३१-३२ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। यदि

इस बादशाह के गुणो का सविस्तार उल्लेख किया जाय तो वह इस पुस्तक मे सभव न हो सकेगा अत इस कविता मे जो कुछ मैने उसके विषय मे उल्लेख किया है उसी को पर्याप्त समझता हूँ।

(४५६ अ) इस बादशाह की मृत्यु के उपरान्त निजाम खा बिन फीरोज खा तथा सुल्तान के वजीर मुबारक खा बिन जुनैद खा ने सुल्तान कादिर शाह के मँझले पुत्र को, जिसकी उपाधि जलाल खा थी और जो सुल्तान होशग की बहिन के गर्भ से था, सिंहासनारूढ किया। इसी कारण सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र अर्थात् जगीर खा[1] बिन कादिर शाह थोडे से सहायको को लेकर सुल्तान इबराहीम शाह की सेवा मे पहुच गया और वहा उसे अत्यधिक सम्मानित किया गया और खाने जहा की उपाधि प्रदान की गई।

कुछ समय उपरान्त जलाल खा बिन कादिर शाह कुकर्म के कारण सम्मान की गद्दी से अपमान के गर्त मे गिर पडा। उसे चन्देरी के क्षेत्र मे जिसे सुल्तान होशग ने बसाया था भेज दिया गया और कादिर शाह के लघु पुत्र को जिसकी उपाधि फीरोज खा थी राज्य-व्यवस्था हेतु मुहमदाबाद मे सिहासनारूढ किया गया। राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध निज़ाम खा बिन फीरोज खा तथा मुबारक खा बिन जुनैद खा द्वारा सम्पन्न होता था। इसी बीच मे सुल्तान शम्सुद्दीन इबराहीम शाह ने सेना सहित (४५६ ब) खाने जहा की सहायतार्थ इस प्रदेश की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ मुहमदाबाद के भव्य नगर के समीप पहुच गया और इस बडे नगर को घेर लिया तथा युद्ध प्रारम्भ कर दिया। निजाम खा बिन फीरोज खा तथा मुख्य वजीर मुबारक खा बिन जुनैद खा ने किले की रक्षा का अत्यधिक प्रयत्न किया और उसकी दृढता तथा शक्ति के कारण शत्रु की ओर कोई ध्यान न दिया। जब २-३ मास इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो सुल्तान हुसामुद्दीन वद्दुनिया होशग शाह के, इस वश से मित्रता के सबध के कारण, आगमन के समाचार प्रसारित हुये। जब उसकी पताकाओ ने एरिज के भूभाग पर छाया डाली तो सुल्तान इबराहीम शाह मुहमदाबाद के किले के समीप से यमुना नदी को पार करके शहर के समक्ष उतरा। होशग शाह ने मुहमदाबाद से १० कोस पर पडाव किया। निजाम खा तथा मुबारक खा बिन जुनैद खा एव समस्त बडे बडे अमीर सुल्तान होशग से मिल गये और उन्हे अत्यधिक सम्मानित किया गया। उन (४५७ अ) लोगो ने पुन जलाल खा बिन सुल्तान कादिर शाह को सुल्तान होशग शाह के समक्ष अपना बादशाह मान लिया और उसे नगर मे लाकर अमीरी की गद्दी पर आरूढ किया। सुल्तान होशग शाह लौट कर सुल्तानपुर उर्फ खजुआ मे पहुचा और वही पडाव किया। सुल्तान इबराहीम शाह भी वापस हो गया और नईर खा बिन कादिर शाह को शाहपुर कस्बे मे आरूढ कर दिया। वह स्वय भेसरूर चला गया और वही पडाव किया। जब यह दोनो बडे बडे बादशाह इस प्रदेश के क्षेत्र से निकल कर अपने अपने राज्य की सीमा मे पहुच गये तो जलाल खा बिन कादिर शाह ने पुन शत्रुता प्रारम्भ कर दी। और बहादुरुलमुल्क के राजसिहासन पर अधिकार जमा लिया और उसे बन्दी बना लिया। इस कुकर्म के कारण मुबारक खा बिन जुनैद खा समस्त कार्यों से पृथक् होकर अपने स्थान एरिज के भूभाग मे पहुच गया और वही निवास करने लगा। जलाल खा बिन कादिर शाह ने मैदान को खाली देखकर निज़ाम खा तथा उसके दो पुत्रो याकूब खा तथा उमर खा को बन्दी बना लिया। मूर्खता तथा दुष्टो के बहकाने से उसने निजाम खा तथा उसके एक पुत्र उमर खा की हत्या करा दी।

(४५७ ब) निजाम खा की मृत्यु के उपरान्त इस वश के अधिकाश बडे बडे अमीर सुल्तान इबराहीम शाह की सेवा मे पहुच गये और सुल्तान ने उन्हे सम्मानित किया। वर्षा ऋतु के उपरान्त सुल्तान

[1] पृ० ४५७ अ पर 'नईर खाँ' है।

होशग शाह ने पुन सेना सहित सुल्तानपुर उर्फ खजुआ से मुहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ शहर के निकट पहुच गया। कुछ दिन तक वह यमुना नदी के तट पर ठहरा रहा और वहा से तैयारी करके अत्यधिक अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित इबराहीम शाह के ऊपर चढाई के उद्देश्य से निरन्तर यात्रा करता हुआ मरदानपुर पहुचा। वहा यमुना नदी के तट पर दोनो ओर की सेनाओ ने एक दूसरे के समक्ष पडाव किया। जलाल खा बिन कादिर शाह इस शिक की सेना सहित सुल्तान होशग के साथ था। नित्यप्रति सुल्तान होशग शाह की सेना के अश्वारोही उस स्थान से जहा नदी को पार किया जा सकता था नदी पार करके चारा एकत्र करने वालो को कष्ट पहुचाते थे। एक दिन मालवा की सेना ने अग्रसर होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया और सुल्तान इबराहीम शाह की सेना ने भी तैयार होकर हाथियो सहित रणक्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। दोनो सेनाओ मे घमासान युद्ध हुआ।

(४५८ अ) अत्यधिक रक्तपात के उपरान्त सुल्तान होशग शाह सफलता प्राप्त किये बिना ही लौट आया और अपने राज्य की ओर चल दिया। वह जलाल खा बिन कादिर शाह को मुहमदाबाद मे छोड गया। जब सुल्तान होशग शाह ने पूर्णत इस प्रदेश के कार्यो को त्याग दिया तो इस वश के अधिकाश बडे बडे अमीर जो सुल्तान इबराहीम शाह की सेवा मे थे राजधानी मुहमदाबाद को मुक्त कराने का दृढ सकल्प करके रवाना हुये और निरन्तर यात्रा करते हुए नगर के निकट पहुच कर उन्होने पडाव किया। क्योकि मुबारक बिन जुनैद खा तथा अधिकाश बडे बडे मलिक तथा अमीर सुल्तान इबराहीम शाह का साथ दे रहे थे अत समस्त नगर के निवासी भी जलाल खा बिन कादिर शाह का विरोध करके उनकी सेवा मे उपस्थित हो गये। जलाल खा किले से निकल कर कुछ अश्वारोहियो सहित भान्दीर के कस्बे की ओर चला गया और मुहमदाबाद का भव्य नगर सुल्तान इबराहीम शाह के अधिकार मे आ गया। इस धर्मनिष्ठ बादशाह ने इस्लाम के सम्मान तथा ईश्वर के भय को ध्यान मे रखते हुए उस अपराधी तथा अत्याचारी के अपराध को क्षमा कर दिया। इसी बीच मे खाने जहा बिन कादिर शाह अपने कुछ सहायको सहित मुहमदाबाद के बाहर निकला और दृढ स्थानों की ओर शरण हेतु चल दिया।

(४५८ ब) जब सुल्तान शम्सुद्दीन इबराहीम शाह को खाने जहा के विरोध के समाचार प्राप्त हुए तो वह बडा ही खिन्न हुआ और उसने मुबारक खा बिन जुनैद खा के प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुये उसे आदेश दिया कि वह जलाल खा बिन कादिर शाह को भान्दीर के कस्बे से ले आये और राजसिहासन के समक्ष उपस्थित करे ताकि उसे मुहमदाबाद का वाली नियुक्त किया जाय। जब जलाल खा बिन कादिर शाह भान्दीर क़स्बे से सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और मुहमदाबाद की अमीरी उसे प्रदान हुई तो यह बात वज़ीर मुबारक खा के स्वभाव के अनुकूल सिद्ध न हुई। इस कारण उसने सुल्तान इबराहीम शाह से खानेजहा बिन कादिर शाह को लाने के बहाने से खदवत कस्बे की ओर प्रस्थान किया और वहा से खाने जहा तथा वज़ीर मुबारक खा बिन जुनैद खा ने एरिज के भूभाग की ओर प्रस्थान किया और एक शुभ मुहूर्त मे नगर मे प्रविष्ट होकर उसे अपने अधिकार मे कर लिया। तदुपरान्त खाने जहा ने वजीर के सकेत पर राठ के क़स्बे तथा महोबा के भूभाग की ओर प्रस्थान किया (४५९ अ) और मुबारक खा बिन जुनैद खा ने ईर्छा मे जोकि उसका अधिकार क्षेत्र था पडाव किया। इस अशाति के समय भी वजीर का यह स्थान भूमि पर के निवासियो की शरण का केन्द्र बन गया है और बहुत से बड़े बडे अमीर तथा मलिक समय के प्रतिकूल होने के कारण उसकी कृपा की छाया में जीवन व्यतीत कर रहे ह।

मुबारक ख़ां बिन जुनैद ख़ां बिन फ़ीरोज़ ख़ां बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क

(४५९ ब) मुबारक खा बिन जुनैद खा के ललाट पर युवावस्था ही से नेतृत्व, न्याय, दिग्विजय, दुर्ग विजय तथा सेना को सुव्यवस्थित करने के चिह्न दृष्टिगत थे और उसमे नाना प्रकार के गुण विद्यमान थे। इस प्रकार वह समस्त अमीरो तथा वजीरो की अपेक्षा अद्वितीय था। अमीरो, मलिको, सद्रो, सैयिदो, आलिमो तथा काजियो को प्रोत्साहन देने तथा दान-पुण्य मे भी कोई उसके समान न था।

(४६० अ) कादिर शाह बिन सुल्तान महमूद की मृत्यु के उपरान्त इस उत्कृष्ट वश की स्थिति मे ऐसा परिवर्तन आ गया कि वह इस प्रकार अव्यवस्थित हो गया कि आजम हुमायूँ मुबारक खा अपनी समस्त सतान तथा सबधियो, सहायको एव परिजनो को लेकर बडे सम्मानपूर्वक ईर्छा के भूभाग मे, जो बडे-बडे आलिमो तथा पवित्र व्यक्तियो का केन्द्र था, पहुच गया और हर प्रकार के भय से मुक्त हो गया। वह (४६० ब) ८२९ हि० (१४३५-३६ ई०) को इस स्थान पर पहुचा और सेना एकत्र करने तथा अपने परिजनों की सख्या बढाने मे व्यस्त हो गया। सर्वप्रथम उसने किले के कोट का कुछ दुष्टो के अस्तित्व से मुक्त कर दिया और समय के व्यतीत होने के कारण इस किले के कोट मे जो कुछ टूट-फूट हो गयी थी उसकी मरम्मत कराई और उसे दृढ बनाया। किले के कोट को बडे बडे अमीरो तथा अपने हितैषियो द्वारा परिपूर्ण कराया। जो कुत्सित प्रथाये भूतकाल से इस स्थान पर प्रचलित हो गई थी उनका समूल उच्छेदन कर दिया और समस्त राज्य मे न्याय की प्रथाये प्रचलित करा दी। उसने इस दृढ किले का (४६१ अ) नाम मुहम्मद साहब के शुभ नाम पर रखा। सैयिदो, आलिमो, काजियो, तथा पवित्र व्यक्तियो के सम्मान का वह अत्यधिक ध्यान रखता था। उन बडे बडे अमीरो तथा मलिको, जोकि दुर्घट-नाओ के कारण मन्दू के किले तथा मुहमदाबाद नगर के आसपास से उसकी सेवा मे उपस्थित होते थे, को वह उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम तथा खिलअते प्रदान करके सम्मानित करता था और अपना विश्वासपात्र बना लेता था। कुछ समय उपरान्त सैयिदुस्सादात सैयिद अब्दुल्लाह सुल्तान इबराहीम शाह के पास से बहुमूल्य खिलअते लेकर उसके दरबार मे आया और आजम हुमायू मुबारक खा खास खिलअत द्वारा सम्मानित हुआ तथा उस बादशाह की आज्ञाकारिता हेतु कटिबद्ध हो गया। उसने उस बादशाह के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चालू करा दिया। सैयिदुस्सादात सैयिद अब्दुल्लाह को अत्यधिक पेशकश देकर सुल्तान इबराहीम शाह की सेवा मे भेजा और स्वय उस क्षेत्र के काफिरो के विनाश मे तल्लीन हो गया। अल्प समय मे उसने अत्यधिक सेना तथा परिजन एकत्र कर लिये।

(४६१ ब) सर्वप्रथम उसने अटौरा तथा कुन्दाल के विद्रोहियो के विनाश हेतु, जिन्होने विद्रोही कबीर के पुत्रो की सहायता के कारण विद्रोह प्रारम्भ कर दिया था, प्रस्थान किया और शीघ्रातिशीघ्र अटौरा पहुच कर वहा के काफिरो तथा दुष्टो को नष्ट कर दिया और उनके भवनो को धराशायी करा दिया। परहार के मुकद्दम खान के इस प्रयत्न के कारण कुन्दाल तथा अटौरा के विद्रोहियो से मुक्ति प्राप्त हो गई और वह अत्यधिक पेशकश लेकर उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसके दासो के समूह मे सम्मिलित हो गया। उस मुकद्दम की प्रार्थनानुसार आजम हुमायू (मुबारक खा) ने विजयी सेनाओ सहित कुन्दाल के स्थान तथा किले की ओर प्रस्थान किया। कुन्दाल के मुकद्दम ने इस्लामी सेना की शक्ति तथा दृढता को देखकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और धन सपत्ति तथा घोडे भेजकर मुक्ति प्राप्त कर ली। आजम हुमायू (मुबारक खा) ने उसके प्रति कृपा तथा दया प्रदर्शित करते हुए क्षमा कर दिया और कुन्दाल के किले से विजय तथा सफलता प्राप्त करके प्रसन्नतापूर्वक अपनी राजधानी ईर्छा को लौट गया और अपने सहायको तथा सबन्धियो को अत्यधिक इनाम तथा खिलअत देकर सम्मानित किया।

इस इतिहास के लेखक ने इस विजय के विषय मे एक उच्च कोटि के कसीदे की रचना की और विशेष ख़िलअत द्वारा सम्मानित हुआ एव उसका विश्वासपात्र बन गया।...[1]

(४६३ ब) जब आजम हुमायू (मुबारक खा) ने वृद्धो तथा युवको के प्रति न्याय तथा उपकार प्रारम्भ कर दिया तथा शत्रुओ एव दुष्टो के विरुद्ध युद्ध के लिए कटिबद्ध हो गया तो उस ओर के अधिकाश विरोधी तथा विद्रोही आज्ञाकारी बन गये और उन्होने खराज अदा करना स्वीकार कर लिया। जब ग्वालियूर (ग्वालियर) के मुकद्दम ने जोकि समस्त रायो तथा मुकद्दमो मे सर्वश्रेष्ठ था अत्यधिक सेना लेकर भान्दीर के किले पर चढाई की और किले के आसपास के स्थानो को हानि पहुचाना प्रारम्भ कर दिया तो गुप्तचरो ने यह समाचार सुल्तान को पहुचाये। वह इस्लाम की रक्षा हेतु समस्त विशेष तथा सर्वसाधारण व्यक्तियो को लेकर युद्ध तथा जिहाद के उद्देश्य से नगर के वाहर निकला और शीघ्रातिशीघ्र उनकी ओर रवाना हुआ। उन लोगो ने शक्तिशाली सेना को देखकर विरोध तथा विद्रोह त्याग दिया (४६४ अ) और पेशकश सहित "बसीठ" तथा दूत आजम हुमायू की सेवा मे भेजे। आजम हुमायू ने अत्यधिक सहनशीलता तथा कृपा के कारण ग्वालियूर (ग्वालियर) के किले के मुकद्दम राय दुनगर के लिए इस इतिहास के लेखक मलिकुश्शर्क वलगर्ब मलिक बिहामद के हाथ जडाऊ खिलअत तथा टोपी भेजी और भान्दीर के किले को हानि से सुरक्षित कर लिया। वह मुकद्दम विशेष खिलअत द्वारा सम्मानित होकर शीघ्रातिशीघ्र अपनी विलायत को लौट गया और इस लेखक का पिता प्रसन्नतापूर्वक अपने स्थान को लौट आया तथा सम्मानित चौखट का चुम्बन किया। उसके पद मे वृद्धि हो गई।

जब कुछ समय उपरान्त कुन्दाल के किले के मुकद्दम ने पुन विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित की और आज्ञाकारिता के सन्मार्ग से मुख मोड कर दुष्टता के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गया तो आजम हुमायू (मुबारक खा) ने इस लेखक को कुन्दाल के किले को नष्ट करने के लिए नियुक्त किया। जब लेखक वीर सवारो सहित किले के समीप पहुचा तो कुन्दाल का मुकद्दम जिसे अपनी धन सम्पत्ति का अभिमान था युद्ध के लिए (४६४ ब) अग्रसर हुआ किन्तु वह दुष्ट हिन्दू तथा काफिर इस्लामी वीरों तथा सिंहो के आक्रमण को सहन न कर सका और रणक्षेत्र से भाग खडा हुआ। अपने अत्यधिक अश्वारोहियो तथा पदातियों को नष्ट करा-कर उसने किले मे शरण ग्रहण कर ली। लेखक ने विजय-पत्र दुष्टो के सिरो के साथ आजम हुमायू (मुबारक खा) की सेवा मे भेज दिये और विशेष खिलअत द्वारा सम्मानित हुआ। ईश्वर आजम हुमायू (मुबारक खां) को सर्वदा नेतृत्व तथा सरदारी की गद्दी पर आसीन रखे।

कुछ समय उपरान्त इस इतिहास के लेखक का पिता सेना सहित राजधानी से कुन्दाल के किले के विनाश हेतु नियुक्त हुआ। उस गुणवान् मलिक ने, जोकि युद्ध मे अपने समय का रुस्तम तथा इस्फन्दयार था, ईश्वर की सहायता से कुन्दाल के किले पर पहुच कर उसे विध्वस तथा वहा के पतित काफिरो (४६५ अ) को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उसने किले को भूमि मे मिला दिया और वहा के भवनो की नीव तक खुदवा डाली। वहा से लौट कर वह आजम हुमायू (मुबारक खा) की सेवा मे उपस्थित हो गया और खिलअत द्वारा सम्मानित हुआ। कुन्दाल के किले की विजय जो उस समय के मलिको को बडी ही कठिन दृष्टिगत होती थी आजम हुमायू (मुबारक खा) के सौभाग्य द्वारा शीघ्र ही प्राप्त हो गई और आजम हुमायू का आतंक सभी काफिरो तथा दुष्टो के हृदय पर आरूढ हो गया। लेखक ने इस विषय मे इन छन्दो की रचना की है।

१ कसीदे का अनुवाद नहीं किया गया।

(४६५ ब) जब आजम हुमायू के कार्य ईश्वर की कृपा से सुव्यवस्थित हो गये तो उसने अपने पुत्र उस्मान खा का विवाह करना निश्चय किया और इस कार्य के लिए जथरा कस्बे की ओर प्रस्थान किया। ईर्छा के क्षेत्र की नियावते गैबत इस लेखक के पिता मलिकुश्शर्क मलिक बिहामद को प्रदान कर दी। लेखक आजम हुमायू (मुबारक खा) की सवारी के साथ रवाना हुआ। जब वह जथरा कस्बे के समीप पहुचा तो इस्माइल खा बिन निजाम खा ने अत्यधिक सेना सहित उसका स्वागत किया ओर उसे नगर के समीप के उद्यानो मे ठहराया। नित्यप्रति नाना प्रकार के जश्न तथा दान-पुण्य के कार्य होते थे। शुभ मुहूर्त मे (४६६ अ) निकाह की प्रथा सम्पन्न हुई और आजम हुमायू (मुबारक खा) ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी राजधानी ईर्छा की ओर प्रस्थान किया। जब वह उस क्षेत्र मे पहुचा तो लेखक के पिता ने फतह खा सहित उसका स्वागत किया और आजम हुमायू (मुबारक खा) शुभ मुहूर्त मे उस भव्य नगर मे प्रविष्ट हो गया। प्रत्येक मलिक, अमीर तथा सद्र को अत्यधिक खिलअत एव इनाम द्वारा सम्मानित किया और आलिमो, सैयिदो, पवित्र व्यक्तियो तथा काजियो के वर्जीफो तथा अदरारो मे वृद्धि कर दी और निश्चिन्त होकर राज्य को सुव्यवस्थित करने तथा उसको उन्नति प्रदान करने मे व्यस्त हो गया। ईश्वर उसे तथा उसकी (४६६ ब) समस्त सतान को नेतृत्व तथा नेकनामी की गद्दी पर आरूढ रक्खे। लेखक ने आजम हुमायू (मुबारक खा) की विजयो को अपनी आखो से देखा और उनके विषय मे उसे सविस्तार ज्ञान प्राप्त है, अत वह केवल निम्नाकित पद को ही लिख रहा है।

मलिकुश्शर्क मलिक बिहामद, लेखक का पिता

(४६७ अ) लेखक के पिता मलिक बिहामद ने अपनी युवावस्था ही से सुल्तान के वजीर फीरोज खा बिन मलिक ताजुद्दीन तुर्क द्वारा आश्रय प्राप्त किया। जब तुगलुक शाह बिन फतह खा की दुर्घटना मे उस वजीर की मृत्यु हो गई तो इस लेखक का पिता जुनैद खा बिन फीरोज खा की सेवा मे सम्मिलित हो गया और उसके दासो के समूह मे आ गया। उसने जुनैद खा की बडी योग्यता से सेवा की और उसका (४६७ ब) विश्वासपात्र बन गया। जुनैद खा ने उसे चौरासी नामक परगना प्रदान कर दिया। उस परगने मे उसने बडी योग्यता तथा वीरता के कार्य प्रदर्शित किये। उस परगने का खराज १ लाख तन्का निश्चित कराया। कन्नौज के किले के समीप के कुछ गाव भी उसने अपने अधिकार मे कर लिये। नसीरुद्दीन महमूद शाह बिन फीरोज खा प्रत्येक वर्ष अपनी राजधानी से पतित काफिरों के दृढ किलो के विध्वस हेतु प्रस्थान किया करता था। इस इतिहास के लेखक का पिता मलिकुश्शर्क उपर्युक्त परगनो से विजयी सेनाओ मे सम्मिलित हुआ करता था और युद्ध के समय समस्त मलिको तथा अमीरों की अपेक्षा अधिक बीरता प्रदर्शित करता था।

जब जाफर बिन दाऊद मुहमदाबाद की राजधानी से विद्रोह करके ईर्छा के भूभाग मे पहुचा (४६८ अ) और कुछ विद्रोहियो की सहायता से उपर्युक्त क्षेत्र के मुक्ता की जो जुनैद खा बिन फीरोज खा का दास था हत्या कर दी और उस स्थान को अपने अधिकार मे कर लिया तो कुछ अमीराने सदा तथा अन्य अमीरो के कारण वह वहा न ठहर सका और अपने अधिकाश परिवार को नष्ट कराकर दुष्ट काफिरो के पास पहुच गया। वहा के समस्त प्रतिष्ठित लोग जुनैद खा से मिल गये और जब उन्होने उस क्षेत्र के दुष्टो के विनाश की प्रार्थना की तो वज़ीर ने सुल्तान के सकेत पर ईर्छा के क्षेत्र की अक्ता जो कि एक बहुत बडी अक्ता है इस इतिहास के लेखक को प्रदान कर दी और बडे सम्मान से उसे उस स्थान को भेज दिया।

इस इतिहास के लेखक का पिता शुभ नक्षत्र तथा मुहूर्त मे ईर्छा के भूभाग मे पहुचा और उसने वहा के सैयिदो, आलिमो, काजियो तथा पवित्र लोगो के सम्मान का अत्यधिक प्रयत्न किया। उस क्षेत्र के अधिकाश भाग की व्यवस्था तथा जन-साधारण के कार्य मे जो विघ्न पड गया था उसे पूर्व की भाति पुन सुव्यवस्थित कर दिया। उस स्थान के अधिकाश काफिर, जिन्होने विद्रोह कर दिया था, पुन आज्ञाकारी बन गये।

(४६८ ब) जब सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद शाह बिन फीरोज खा की मृत्यु हो गई तो जाफर बिन दाऊद ने जोकि बहुत बडा उपद्रवी था पुन उपद्रव की अग्नि प्रज्वलित कर दी और कुछ विद्रोहियो की सहायता से वह ईर्छा के भूभाग मे पहुचा जिसे हानि पहुचाने का उसने प्रयत्न किया किन्तु इस इतिहास के लेखक का पिता जोकि बडा ही शूरवीर था दैवी प्रेरणा से युद्ध के लिए अग्रसर हुआ और शीघ्रातिशीघ्र शत्रुओ के समीप पहुच कर उन्हे प्रथम आक्रमण ही मे उसने नष्ट-भ्रष्ट तथा छिन्न-भिन्न कर दिया। अत्यधिक पतित काफिर तथा दुष्ट मारे गये। जाफर बिन दाऊद, जिसके रण-कौशल की प्रसिद्धि निकट तथा दूर के स्थानो मे प्रसारित हो चुकी थी, भाग खडा हुआ। लेखक के पिता ने विजय तथा सफलता (४६९ अ) प्राप्त करके ईर्छा लौट कर विजय के पत्र सुल्तान के वजीर की सेवा मे प्रेषित कर दिये।

जब दुष्ट सबीर जो पतित काफिरो का नेता था अत्यधिक सेना लेकर मुहमदाबाद के भव्य नगर के निकट पहुचा और ग्वालियूर (ग्वालियर) के किले का मुकद्दम बीरम भी अत्यधिक सेना सहित सबीर की सहायतार्थ रवाना हुआ तो मार्ग मे लेखक के पिता ने उनकी सेना पर आक्रमण किया और उनके अत्यधिक पदातियो तथा अश्वारोहियो को बन्दी बना लिया। बीरम पराजित होकर ग्वालियूर (ग्वालियर) के किले की ओर लौट गया।

(४६९ ब) जब चन्देरी के भूभाग के अधिकारी कदर खा का नायब तथा सेनापति काजी जुनैद अत्यधिक सेना लेकर जथरा कस्बे के क्षेत्र मे पहुचा तो उसने पनियारगढ के किले को जोकि जथरा कस्बे के समीप है जबरदस्ती अपने अधिकार मे कर लिया। सुल्तान कादिर शाह बिन महमूद शाह ने वजीर जुनैद खा के सकेत पर राजधानी से जथरा कस्बे की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ ईर्छा के भूभाग की विलायत मे पहुच गया। उसने लेखक के पिता को बुलवाया और लेखक का पिता शुभ मुहूर्त मे समस्त अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित ईर्छा के क्षेत्र से निकल कर शीघ्रातिशीघ्र विजयी सेना से मिल गया और उसे समस्त मलिको तथा अमीरो की अपेक्षा अधिक सम्मानित किया गया। मुहम्मद खा बिन सुल्तान मुहम्मद को भान्दीर कस्बे की सेना तथा लेखक के पिता सहित ईर्छा के भूभाग की ओर काज़ी जुनैद को जथरा कस्बे की विलायत से निकालने तथा पनियारगढ के किले को मुक्त कराने के लिए नियुक्त किया गया।

(४७० अ) जब वे जथरा कस्बे मे पहुचे तो लेखक का पिता उपर्युक्त कस्बे से विजयी सेनाओ सहित अग्रसर हुआ और शीघ्रातिशीघ्र पनियारगढ के किले की ओर रवाना हुआ। जब काज़ी जुनैद को विजयी सेनाओ के पहुचने का समाचार प्राप्त हुआ तो वह बिना युद्ध किये हुए ही पनियारगढ के किले के बाडे को छोड कर अपनी विलायत तथा प्रदेश की ओर चल दिया। लेखक के पिता तथा निजाम खा को उस किले मे नियुक्त कर दिया गया और वह विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट गया। जथरा क़स्बा मुहम्मद ख़ा को प्राप्त हो गया। मुहम्मद खा तथा इस लेखक का पिता प्रसन्नतापूर्वक शाही सेना में उपस्थित हुए और उन्हे अत्यधिक इनाम तथा खिलअतो द्वारा सम्मानित किया गया। इस्लामी सेनाये सफलता प्राप्त करके राजधानी मुहमदाबाद की ओर लौट गई। लेखक का पिता, जुनैद ख़ा बिन फ़ीरोज़ खा की अनुमति से बडे सम्मान के साथ एरिज के भूभाग मे लौट आया और इस सफलता के प्रति कृतज्ञता

प्रकट करने के लिय आलिमो, सैयिदो, पवित्र व्यक्तियो तथा काजियो को अत्यधिक इनाम एव खिलअत द्वारा सम्मानित किया।

(४७० ब) जब जुनैद खा बिन फीरोज खा की मृत्यु हो गई और उसका ज्येष्ठ पुत्र दौलत खा बिन जुनैद खा विज़ारत की गद्दी पर आरूढ हुआ तो उसने कुछ समय उपरान्त एरिज के भूभाग की ओर प्रस्थान किया। जब वह इस भूभाग मे पहुचा तो लेखक के पिता ने समस्त मलिको, अमीरो, सद्रो तथा प्रतिष्ठित लोगो सहित उसका स्वागत किया और उसके प्रति अत्यधिक सम्मान प्रदर्शित किया। वह खाने आजम उस स्थान पर पहुचा और उसने लेखक के पिता, समस्त सद्रो एव प्रतिष्ठित लोगो को उत्तम खिलअतो द्वारा सम्मानित किया और आलिमो, सैयिदो, पवित्र व्यक्तियो तथा काजियो की वृत्ति एव अदरार मे वृद्धि कर दी। कुछ समय उपरान्त वह प्रसन्नतापूर्वक राजधानी मुहमदाबाद को लौट गया और ईर्छा के भूभाग की अक्ता प्रथानुसार इस लेखक के पिता के पास रहने दी गई।

(४७१ अ) कुछ समय उपरान्त जब दौलत नाग बिन मुजफ्फर खा मुहमदाबाद से विद्रोह कर के भान्दीर कस्बे की ओर पहुचा और उस कस्बे की समस्त प्रजा उसके साथ हो गई तो जाफर बिन दाऊद भी उससे मिल गया। मुहम्मद खा बिन सुल्तान मुहम्मद के पदाधिकारी भाग कर ईर्छा के भूभाग मे लेखक के पिता की सेवा मे उपस्थित हुए। उसने उन लोगो को अपने पास रख लिया और युद्ध की तैयारी करने लगा। अल्प समय मे उसने अत्यधिक पदातियो तथा अश्वारोहियो सहित भान्दीर के किले पर चढाई की और शीघ्रातिशीघ्र उस किले के समीप पहुच गया। विजयी सेनाओ के पहुचने के समाचार पाकर दौलत नाग बिन मुजफ्फर खा तथा जाफर बिन दाऊद युद्ध किये बिना ही किले से भाग गये और अज्ञानी काफिरो के पास पहुच गये। समस्त प्रजा ने विवश होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। लेखक का पिता किले के भीतर मुहम्मद खा के घर मे उतरा और भान्दीर के समस्त मलिको, अमीरो, सद्रो तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो को अत्यधिक खिलअत तथा अदरार प्रदान किये। मुहम्मद खा बिन सुल्तान मुहम्मद के (४७१ ब) पदाधिकारियो को पुन किले मे नियुक्त कर दिया, और स्वय प्रसन्नतापूर्वक ईर्छा के भूभाग मे लौट आया।

जब कुछ समय उपरान्त सुल्तान इबराहीम शाह अत्यधिक सेना लेकर मुहमदाबाद पहुचा और उसने राज्य के वजीर मलिकुश्शर्क मकबूल को जैसा कि इसके पूर्व उल्लेख हो चुका है अत्यधिक सेना देकर ईर्छा के किले की ओर नियुक्त किया। जब मलिकुश्शर्क मकबूल उपर्युक्त भूभाग मे पहुचा तो लेखक का पिता जोकि अपने समय का रुस्तम था युद्ध के लिए कटिबद्ध हो गया। मलिकुश्शर्क मकबूल ने यद्यपि सधि के लिये अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु लेखक का पिता सधि के लिये तैयार न हुआ। अन्त मे उस (४७२ अ) भूभाग के समस्त छोटे-बडे विरोध करने लगे और उन्होने युद्ध तथा रक्तपात प्रारम्भ करने दिया तथा मूर्खता और शैतान के मार्ग-भ्रष्ट कर देने के कारण वर्षो तक साथ रहने तथा आश्रय प्राप्त करने के उपरान्त भी कृतघ्नता प्रदर्शित करते हुए शत्रु के मित्र हो गये। वे जाफर बिन दाऊद को मलिकुश्शर्क मकबूल की ओर से अत्यधिक सेना सहित प्रथम हिसार[1] मे ले आये। लेखक का पिता विशेष सेना सहित दूसरे हिसार मे बन्द हो गया। लेखक के पिता ने शत्रु पर रात्रि मे छापा मारना निश्चय किया किन्तु सेना ने उसका साथ न दिया और उसे विवश होकर रुक जाना पडा। दूसरे दिन प्रातःकाल मलिकुश्शर्क मकबूल समस्त सेना सहित सवार हुआ और दूसरे हिसार के द्वार पर पहुचा तथा युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

१ किले की चहार दीवारी, शहर पनाह।

बाजार के सामने के द्वार की ओर मलिकुश्शर्क ने मलिक खालिस को, जो उस दरबार का एमादुलमुल्क था, अत्यधिक सेना सहित नियुक्त किया और तातार खा बिन सारग खा तथा खोरा के मुकद्दम बीरम को नदी के तट के द्वार की ओर नियुक्त किया, घोर युद्ध होने लगा। लेखक का पिता युद्ध मे बडी वीरता से प्रयत्न (४७३ अ) करता रहा। . . . शत्रु की सेना ने लेखक के पिता को घेर लिया किन्तु ईश्वर ने उसे कोई हानि न पहुचने दी। लेखक की माता की इस दुर्घटना मे हत्या हो गई और लेखक का बाजू युवावस्था के बावजूद भी घायल हो गया। लेखक के पिता ने इस युद्ध मे ऐसी वीरता प्रदर्शित की कि वह इतिहास मे स्मरणीय रहेगी।

जब इस दुर्घटना के कुछ समय उपरान्त दौलत खा बिन जुनैद खा की मृत्यु हो गई और मुबारक खा बिन जुनैद खा वजीर नियुक्त हुआ तो उस समय नये सिरे से ईर्छा के भूभाग की अक्ता सुल्तान के (४७३ ब) वजीर की ओर से लेखक के पिता को प्रदान हुई।

जब सुल्तान कादिरशाह बिन महमूद शाह प्रत्येक वर्ष अपनी राजधानी से दुष्ट काफिरो के विनाश हेतु प्रस्थान करता था तो लेखक का पिता मलिक बिहामद सर्वदा आजम हुमायू मुबारक खा की सेवा मे उपस्थित होता था और समस्त मलिको की अपेक्षा युद्ध मे अधिक वीरता प्रदर्शित करता था। उसके सम्मान तथा पद मे वृद्धि होती रहती थी। उसने विद्रोही राय तास के युद्ध मे, जोकि असख्य सेना लेकर आया था, समस्त बडे बडे मलिको तथा प्रतिष्ठित अमीरो की अपेक्षा अधिक वीरता प्रदर्शित की। जब अधिकाश इस्लामी सेना पतित काफिरो के प्रभुत्व के कारण रणक्षेत्र से पीछे हटने लगी तो लेखक का पिता अपने स्थान पर दृढ रहा। यहा तक कि ईश्वर ने इस्लामी सेना को विजय प्रदान की और काफिर पराजित हुए। लेखक के पिता की वीरता की प्रसिद्धि समस्त ससार मे प्रसारित हो गई। आजम हुमायू (४७४ अ) (मुबारक खा) ने लेखक के पिता को खिलअत, तबल तथा पताका प्रदान करके बडे सम्मान से ईर्छा के भूभाग की ओर वापस किया। जब वह उपर्युक्त भूभाग मे पहुचा तो लेखक ने उस भूभाग के समस्त बडे बडे सद्रो तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो सहित उसका स्वागत किया और उसके चरण का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। लेखक के पिता ने इस विजय के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आलिमो तथा सैयिदो को इनाम द्वारा सम्मानित किया।

तदुपरान्त मलिकुश्शर्क (बिहामद खा) अधिकाश लेखक को अत्यधिक सेना देकर युद्ध के लिए भेजा करता था और स्वय अपने स्थान पर शरा द्वारा स्वीकृत बातो को चलाने तथा अस्वीकृत बातो को रोकने का[1] प्रयत्न किया करता था। जिस वर्ष सुल्तान कादिरशाह बिन महमूद शाह की मृत्यु हुई उस वर्ष लेखक के पिता ने मुबारक खा बिन जुनैद खा के सकेत पर कोवैथ नामक स्थान पर एक भव्य किले का निर्माण कराया और लेखक को थोडी सी सेना सहित वहा नियुक्त कर दिया। यद्यपि कुछ थानेदार उस (४७४ ब) किले की रक्षा से परेशान होकर भाग खडे हुए किन्तु लेखक ईश्वर की कृपा से किले के बाडे की दुष्ट काफिरो से रक्षा करता रहा और दुष्ट हिन्दुओ तथा काफिरो को, जिनका नेता नर सिह भानू (ज्येष्ठ) था, पराजित कर दिया। ईश्वर लेखक के पिता को सरदारी की गद्दी पर सर्वदा आरूढ रक्खे। लेखक ने उस किले के निर्माण की तिथि के विषय मे इस कविता की रचना की है जो इस स्थान पर लिखी जाती है—

८३४ हि० मे (१४३१ ई०) मे ऐसा किला शाबान मास (अप्रैल-मई) मे तैयार हुआ।

१ 'तनफ़ीजे अवामिर व नवाही'।

(४७५ अ) लेखक के पिता की प्रशसा का उचित उल्लेख सभव नही। उसकी प्रशसा इससे अधिक क्या हो सकती है कि वह अपने स्वामियो का हितैषी था और इस समय तक सुल्तान के वजीर मुबारक खा बिन जुनैद खा की सेवा मे ईर्छा के भूभाग मे उसे नित्य-प्रति सम्मान प्राप्त होता रहता है।

(४७८ ब) इस 'तारीखे मुहम्मदी' मे लेखक ईश्वर का दास मुहम्मद बिहामद खानी निवेदन करता है कि वह युवावस्था से ही विद्याध्ययन तथा आलिमो और विद्वानो के सत्सग की ओर प्रेरित था और सर्वदा इतिहास के ग्रन्थो का अध्ययन किया करता था। वह सौभाग्य से कुतुबुल अक्ताब शेख यूसुफ बिन महमूद की सेवा मे पहुचा और उनका मुरीद हो गया। उन्होने इस लेखक को बडा ही सम्मानित किया। (४७९ अ) लेखक को उनके सत्सग से कविता करने का बडा अच्छा ढग प्राप्त हो गया।

(४८१ अ) लेखक ने ८४२ हि० (१४३८–९ ई०) मे मुहम्मद साहब के समय से इतिहास से सबधित जो बाते देखी थी उसे इस 'तारीखे मुहम्मदी' मे नकल कर दिया है और इसके सकलन मे 'तबकाते नासिरी', 'ताजुल मआसिर', 'तज्किरतुल औलिया', 'मतालेउल अनवार', 'खजानतुल जलाली' तथा 'तारीखे फीरोजशाही' से लाभान्वित हुआ है।

मालवा

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

शेख़ रिज़्कुल्लाह मुश्ताकी

वाकेआते मुश्ताकी

मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल आसफी, उलुग ख़ानी अलहाजुद्दबीर

ज़फरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह

तबक़ाते अकबरी

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अह्मद)

(प्रकाशन—कलकत्ता १९३५ ई०)

मालवा के सुल्तानों का इतिहास

मालवा के सुल्तानो मे से ११ व्यक्तियो ने ८०९ हि० (१४०६–७ ई०) से ९१७ हि० (१५११–१२ ई०) तक राज्य किया। इनमे से कुछ ने स्वय तथा कुछ ने अपने प्रतिनिधियो द्वारा राज्य किया।

दिलावर खा गोरी २० साल।

सुल्तान होशग बिन दिलावर खा ३० साल।

सुल्तान महमूद बिन होशंग १ साल और कुछ महीने।

सुल्तान महमूद खलजी ३४ साल।

सुल्तान गयासुद्दीन बिन सुल्तान महमूद २० साल।

सुल्तान नासिरुद्दीन बिन गयासुद्दीन ११ साल ४ महीने।

सुल्तान महमूद बिन नासिरुद्दीन २० साल ६ महीने ११ दिन।

सुल्तान बहादुर गुजराती १६ साल।

मल्लू कादिर शाह ६ साल।

(२८८) शुजा खा ने शेर खा अफगान के प्रतिनिधि के रूप मे १२ साल।

बाज बहादुर अफगान १६ साल।

मालवा के सुल्तान

यह बात समझ लेनी चाहिये कि मालवा प्रदेश बडा ही विस्तृत राज्य है और वहा बडे गौरव-शाली हाकिम होते चले आये हैं। बडे-बडे राजे तथा राय उदाहरणार्थ राजा बिकरमाजीत (विक्रमादित्य) जिससे हिन्दुओ का इतिहास प्रारम्भ होता है, यही का था, राजा भोज इत्यादि हिन्दुस्तान के राजे, मालवा के शासक रहे हैं। सुल्तान महमूद गजनवी के राज्यकाल से उस प्रदेश मे इस्लाम प्रारम्भ हुआ। देहली के सुल्तानो मे सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन ने इस राज्य पर अधिकार प्राप्त किया और सुल्तान मुहम्मद फीरोज शाह के राज्यकाल तक यह देहली के सुल्तानो के अधिकार मे रहा।

दिलावर खा गोरी ने सुल्तान मुहम्मद बिन फीरोज की ओर से उस राज्य मे पहुच कर स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। उस समय से मालवा के हाकिम देहली के सुल्तानो की अधीनता से निकल गये और अकबर के राज्यकाल तक निरन्तर ११ व्यक्ति राज्य करते रहे। मालवा के सुल्तानो का राज्य दिलावर खा के समय से प्रारम्भ हुआ। कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद बिन फ़ीरोज़ शाह का उसके अभियानो मे कुछ लोगो ने निष्ठापूर्वक साथ दिया था। जब वह बादशाह हुआ तो उसने प्रत्येक के प्रति रियायत करके ४ व्यक्तियो को ४ राज्य प्रदान कर दिये। ज़फर खा बिन वजीहुलमुल्क को गुजरात,

ख़िज्र ख़ा को मुल्तान तथा दीपालपुर, ख़्वाजा सरवर ख़्वाजये जहा को सुल्तानुश्शर्क की उपाधि देकर जौनपुर तथा दिलावर ख़ा ग़ोरी को मालवा भेज दिया।

दिलावर ख़ां ग़ोरी

(२८९) जब ८०९ हि० (१४०६–७ ई०) मे दिलावर ख़ा गोरी मालवा पहुचा तो उसने अपनी योग्यता तथा वीरता से मालवा के राज्य को अपने अधिकार मे कर लिया और अत्यधिक सेना एकत्र की। इधर उधर के अपहरणकर्ताओं की शक्ति समाप्त कर दी। हिन्दुस्तान मे अव्यवस्था फैल चुकी थी। उसने भी देहली के सुल्तान की आज्ञाकारिता त्यागकर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली और बादशाहो के समान राज्य-व्यवस्था करने लगा। वर्षो तक अपनी इच्छानुसार राज्य करके ८२९ हि० (१४२५–२६ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। कुछ पुस्तको मे लिखा है कि उसके पुत्र अलप ख़ा के प्रयत्न से विष दे दिया गया। उसने २० वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान होशंग बिन दिलावर ख़ां

अलप ख़ा, जो दिलावर ख़ा का पुत्र था, अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और उसने अपने नाम का ख़ुत्बा तथा सिक्का चालू करा दिया। उसने चत्र ग्रहण करके अपनी उपाधि सुल्तान होशग रक्खी। उस क्षेत्र के अमीरो तथा सम्मानित व्यक्तियो ने उसकी बैअत[1] कर ली।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र द्वारा आक्रमण

अभी उसके राज्य को दृढता प्राप्त भी न हुई थी कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि, "सुल्तान मुजफ्फर गुजराती को ज्ञात हुआ है कि अलप ख़ा ने दिलावर ख़ा को थोडे से लौकिक लाभ के (२९०) लिए विष देकर होशग शाह की उपाधि धारण कर ली है ; क्योकि दिलावर ख़ा तथा सुल्तान मुजफ्फर मे भ्रातृभाव था अत वह सेना एकत्र करके इस ओर आक्रमण कर रहा है।" ८१० हि० (१४०७-८ ई०) के प्रारम्भ मे सुल्तान मुजफ्फर ने धार के निकट पडाव किया। सुल्तान होशग युद्ध के विचार से धार के किले के बाहर निकला और दोनो मे युद्ध हो गया। अत मे होशग ने भागकर किले मे शरण ली। अपने मे युद्ध की शक्ति न देख कर वह क्षमा-याचना करके सुल्तान मुज़फ़्फ़र की सेवा मे उपस्थित हो गया। सुल्तान ने उसी सभा में उसे बन्दी बनाकर अपने अधिकारियो को सौंप दिया। अपने भाई नसीर ख़ा को सेना सहित धार के किले मे नियुक्त करके वह गुजरात चला गया।

नसीर ख़ां को धार से भगाना

प्रथम वर्ष मे नसीर ख़ा ने अनुचित कार्य किये और प्रजा की शक्ति से अधिक कर वसूल किया और उसके साथ दुर्व्यवहार किया। सुल्तान मुजफ्फर के गुजरात चले जाने के उपरान्त मालवा की सेना ने अवसर पाकर नसीर ख़ा को धार से निकाल दिया और उससे सबधित जो लोग शेष रह गये थे उन्हे कष्ट पहुचाया।

मन्दू के किले का निर्माण तथा मूसा ख़ा का बादशाह बनाया जाना

सुल्तान मुज़फ्फर के भय से उन लोगो ने धार को छोड कर मन्दू के किले का, जो एक बड़ा भव्य

[1] अधीनता की शपथ ले ली।

किला है, निर्माण प्रारम्भ करवाया। उन लोगो ने सुल्तान होशग के चाचा के पुत्र मूसा खा को अपना सरदार बना लिया। जब यह समाचार गुजरात मे पहुचा तो होशग शाह ने मुजफ्फर की सेवा मे यह प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "आप फकीर के पिता तथा चाचा के स्थान पर हैं। कुछ स्वार्थियो ने जो बाते आप तक पहुचाई हैं उनके विषय मे ईश्वर ही को ज्ञात है कि वे पूर्णत असत्य हैं। आजकल सुना जाता है कि मालवा के अमीरो ने खाने आजम नसीर खा के प्रति धृष्टता करके मूसा खा को बादशाह बना दिया (२९१) है और मालवा की विलायत पर अधिकार जमा लिया है। यदि आप फकीर को धूल से उठाकर उसका उपकार करे तो सभव है कि राज्य पर अधिकार प्राप्त हो जाय।"

सुल्तान मुज़फ़्फर की सहायता से होशग का बादशाह होना

सुल्तान मुजफ्फर ने यह राय पसन्द करके उसे एक वर्ष उपरान्त बन्दीगृह से निकाल कर सम्मानित किया और उससे प्रतिज्ञा करा ली कि वह उसके कार्यो को सपन्न कराने के प्रयत्न करेगा। ८११ हि० (१४०८-९ ई०) मे शाहज़ादा अहमद शाह सुल्तान होशग की सहायतार्थ इस आशय से भेजा गया कि धार तथा उसके आसपास के स्थान विद्रोही अमीरो से लेकर उसे (सुल्तान होशग को) प्रदान कर दे। अहमद शाह ने धार तथा उसके आसपास के स्थान अमीरो के हाथ से लेकर उसे सौप दिये और स्वय राजधानी पटन की ओर वापस लौट गया।

मन्दू पर अधिकार जमाने का प्रयत्न

सुल्तान होशग कुछ दिनो तक धार मे ठहरा रहा। उसके विश्वासपात्र उसके पास एकत्र हो गये। उसने एक व्यक्ति को मन्दू के किले मे भेजा और अमीरो को प्रोत्साहित करके अपनी ओर मिला लिया। क्योकि अमीर तथा सैनिक उसे पसन्द करते थे वे प्रसन्न हो गये, किन्तु इस कारण से कि वे लोग अपने परिवार को अपने साथ मन्दू के किले मे ले जा चुके थे वे उसकी सेवा मे न उपस्थित हो सके। होशग कुछ लोगो के साथ धार से महेसुर के कस्बे की ओर पहुचा। वे नित्य युद्ध करते थे और घायल होकर लौट जाते थे। मन्दू के किले के अत्यधिक दृढ होने के कारण होशग ने यह उचित समझा कि वह वहा से प्रस्थान करके विलायत[1] के मध्य मे स्थान ग्रहण करे और अपने आदमियो को परगनो तथा कस्बो मे अधिकार जमाने के लिए भेज दे।

मलिक मुग़ीस का सुल्तान होशंग से मिल जाना

इसी बीच मे सुल्तान होशंग की फुफी के पुत्र मलिक मुगीस ने मलिक खिज्र से, जो मिया आखा के नाम से प्रसिद्ध था, परामर्श किया और कहा कि, "यद्यपि मूसा खा बडा योग्य व्यक्ति है और मेरे चाचा (२९२) का पुत्र होता है किन्तु होशग शाह पौरुष, बुद्धिमत्ता तथा सहनशीलता मे अपने समकालीनो मे सभी से श्रेष्ठ है। यह राज्य तर्के मे उसी को पहुचता है। बाल्यावस्था मे उसका मेरी माता की गोद मे पालन-पोषण हुआ है। उचित यही है कि राज्य की बागडोर उसी के अधिकार में रहने दी जाय।" मिया आखा ने मलिक मुगीस के परामर्श की प्रशसा की और वे लोग मिल कर रात्रि मे मन्दू के किले से निकले और होशग शाह की सेवा मे उपस्थित हुए। होशग ने मलिक मुगीस को अपना नायब बनाने का वचन देकर प्रसन्न कर दिया।

1 राज्य।

मूसा खा द्वारा मन्दू को समर्पित करना

मूसा खा यह समाचार पाकर राज्य प्राप्त करने की ओर से निराश हो गया और अपने विषय मे चिंता करने लगा। अत मे उसने मलिक मुगीस के पास आदमी भेजकर कहलाया कि, "मेरे निवास के लिए कोई स्थान निश्चित कर दिया जाय ताकि मै मन्दू के किले को समर्पित कर दू।" अत्यधिक वाद-विवाद के उपरान्त उसके लिए स्थान निश्चित कर दिया गया। मूसा खा किले को रिक्त करके बाहर चला गया। सुल्तान होशग मन्दू के किले मे पहुच कर राजधानी मे ठहरा। मलिक मुगीस को उसने मलिकुश्शर्क की उपाधि देकर विजारत के कार्य सौप दिये और समस्त कार्यो मे उसे अपना नायब तथा उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया।

होशंग का गुजरात पर आक्रमण

८१३ हि० (१४१०–११ ई०) मे जब सुल्तान मुजफ्फर गुजराती की मृत्यु हो गई और सुल्तान अहमद बिन मुहम्मद बिन मुजफ्फर सुल्तान हुआ तो सुल्तान मुजफ्फर के पुत्र फीरोज खा तथा हैबत खा ने विद्रोह तथा शत्रुता की पताका भरौच के क्षेत्र मे बलन्द कर दी और होशग से सहायता मॉगी। होशग मुजफ्फर शाह के आश्रयदाता तथा अहमद शाह की सहायता पर ध्यान न देते हुए गुजरात की ओर (२९३) रवाना हुआ। प्राचीन ईर्ष्या के कारण उसने यह निश्चय किया कि उस प्रदेश मे पहुच कर राज्य के अधिनियमो मे विघ्न डाल दे। सुल्तान अहमद यह समाचार पाते ही भारी सेना लेकर भरौच पहुचा और उसे घेर लिया। फीरोज खा तथा हैबत खा ने अहमद शाह के प्रभुत्व तथा उसकी सेना की अधिकता से भयभीत होकर क्षमा-याचना कर ली और उससे मिल गये। होशग मार्ग से लौट कर धार पहुचा। यह विवरण विस्तार से गुजरात के सुल्तानो के इतिहास मे लिखा गया है।

गुजरात पर पुन आक्रमण

सक्षेप मे अभी होशग के माथे से लज्जा का पसीना सूखा भी न था कि उसने पुन इस प्रकार का दुष्कर्म किया। जब ८१६ हि० (१४१३–१४ ई०) मे होशंग को यह समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान अहमद गुजराती ने झालावार के राज्य पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया है और वहा बन्दी है तो सेना तैयार करके वह पुन गुजरात की ओर रवाना हुआ। सुल्तान अहमद ने यह समाचार पाते ही उसके विरुद्ध प्रस्थान किया और जब दोनो एक दूसरे के निकट पहुचे तो होशग झालावार के राजा से सहायता न पाकर विवश होकर लौट गया।

जमींदारो की प्रार्थना पर होशंग द्वारा गुजरात पर पुन आक्रमण

उसके लौट जाने के उपरान्त गुजरात के जमीदारो के, विशेष रूप से चम्पानीर, नादौत तथा ईदर के राजा के, इस आशय के प्रार्थना-पत्र सुल्तान होशग के पास निरन्तर पहुचने लगे कि, "यद्यपि प्रथम बार सेवा की ओर से हमने उपेक्षा की किन्तु इस बार प्राण समर्पित करने मे कोई कसर उठा न रक्खी जायेगी। यदि आप गुजरात की ओर प्रस्थान करे तो हम लोग कुछ मार्गदर्शक भेज दे जो सेना को ऐसे मार्ग से लाये कि गुजरात पहुचने तक सुल्तान अहमद को सूचना भी न हो।" पिछली लज्जा तथा शत्रुता ने सुल्तान होशग को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। इस विचार से ८२१ हि० (१४१८–१९ ई०) मे वह अत्यधिक सेना लेकर महरासा के मार्ग से गुजरात की ओर बढा। सयोगवश उन्ही दिनो मे राज्य के कुछ कार्य सम्पन्न करने के लिए सुल्तान अहमद सुल्तानपुर तथा नन्द्रबार के क्षेत्र

(२९४) मे था। जब उसे यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने होशग के उपद्रव की अग्नि को शान्त करना समस्त कार्यो से श्रेष्ठ समझ कर शीघ्रातिशीघ्र महरासा की ओर प्रस्थान किया। वर्षा की अधिकता के बावजूद अल्प समय मे ही वह महरासा पहुच गया। होशग के गुप्तचरो ने जब सुल्तान अहमद के पहुचने के समाचार उसे पहुचाये तो परीशान होकर उन जमीदारो को, जिन्होने विद्रोह तथा उपद्रव के लिए उसे आमत्रित किया था, अपने पास बुलवाया और उनको बुरा-भला कहा तथा अपशब्द जिह्वा पर लाया। अन्त मे वह जिस मार्ग से आया था, गुद्दी खुजलाता हुआ, उसी मार्ग से लौट गया।

सुल्तान अहमद द्वारा मालवा पर आक्रमण

सुल्तान अहमद ने कुछ दिन तक महरासा कस्बे मे इस आशय से पडाव किया कि सेना उसके पास पहुच जाय। सेना एकत्र करने के उपरान्त उसने सफर मास मे मालवा की विलायत पर आक्रमण किया और निरन्तर कूच करते हुये कालियादा के निकट पडाव किया। सुल्तान होशग भी युद्ध का सकल्प करके अग्रसर हुआ किन्तु युद्ध के उपरान्त भाग कर मन्दू के किले मे पहुच गया। सुल्तान अहमद के आदमियो ने मन्दू के द्वार तक उसका पीछा करके उसके कुछ हाथियो तथा सैनिको पर अधिकार जमा लिया। वह स्वय नालचा तक गया और कुछ दिन वहा ठहर कर उसने अपनी सेनाओ को विलायत[1] के चारो ओर भेज दिया। मन्दू के किले के अत्यन्त दृढ होने के कारण उसने धार की ओर प्रस्थान किया और वहा से उज्जैन पर चढाई करने का सकल्प किया। वर्षा ऋतु के आ जाने के उपरान्त अमीरो तथा वजीरो ने निवेदन किया कि, "राज्य के लिए उचित यही है कि इस वर्ष गुजरात वापस होकर उन उपद्रवियो को जो उपद्रव तथा विद्रोह का कारण है दण्ड दिया जाय और दूसरे वर्ष निश्चिन्त होकर मालवा की विजय हेतु पहुचा जाय।" सुल्तान अहमद यह निश्चय करके धार से लौट गया और गुजरात पहुच गया।

महमूद ख़ां को राज्य में अधिकार प्रदान करना

(२९५) ८२२ हि० (१४१९ ई०) मे मलिक मुगीस के पुत्र मलिक महमूद की योग्यता का जब उसे पता चला तो सुल्तान होशग ने उसे महमूद खा की उपाधि देकर उसके पिता के साथ राज्य के कार्यो मे सहयोगी बना दिया। जहाँ कहीं भी वह आक्रमण करने जाता वह मन्दू के किले मे मलिक मुगीस को छोडकर महमूद खा को अपने साथ इस आशय से ले जाता कि राज्य के कार्य उसके द्वारा सम्पन्न हो सकें।

सुल्तान होशंग का जाजनगर की ओर प्रस्थान

८२५ हि० (१४२१-२२ ई०) मे सुल्तान होशग ने अपने साथ चुने हुए एक हजार अश्वारोही लेकर व्यापारियो के वस्त्र मे जाजनगर की विलायत[1] की ओर प्रस्थान किया। नुकरा तथा सरखग[2] घोडे जो जाजनगर के राय को प्रिय थे तथा अन्य थोडी सी वस्तुये जो वहा के लोगो को पसन्द थी, अपने साथ ले ली। सुल्तान का इस यात्रा से यह उद्देश्य था कि उन घोडो तथा उस धन सपत्ति के बदले मे चुने हुए हाथी प्राप्त करे और उनके द्वारा सुल्तान अहमद शाह से बदला ले। जब वह जाजनगर के निकट पहुचा तो उसने एक व्यक्ति को जाजनगर के राय के पास भेजकर उसे सूचना भिजवाई कि, "एक बहुत बडा

१ राज्य।
२ उत्तम प्रकार के घोड़ो की नसल।

को मोर्चो से बुलवाया और उन्हे एकत्र करके युद्ध हेतु तैयार हुआ। सुल्तान होशग तारापुर द्वार से किले मे प्रविष्ट हुआ और उसने युद्ध न किया। सुल्तान अहमद ने जब देखा कि किले की विजय कठिन ही नही अपितु असम्भव है तो उसने किले को छोडकर उस विलायत को विध्वस करना प्रारम्भ कर दिया। उज्जैन होता हुआ सारगपुर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान होशग इस सकल्प की सूचना पाकर अन्य मार्ग से सारगपुर के किले मे पहुचा और सुल्तान अहमद के पास सदेश भेजा कि, "हम दोनो मुसलमान है और स्वय अवगत है कि मुसलमानो का अकारण रक्तपात बडा ही पाप है। दोनो ओर से सेनाओ की हत्या हो रही है। अब यह उचित होगा कि आप अपनी राजधानी को चले जाय और आपके पीछे-पीछे ही पेशकश पहुचेगी।"

सुल्तान अहमद ने संधि के विषय मे निश्चित होकर रात्रि मे सेना की रक्षा मे शिथिलता तथा असावधानी करनी प्रारम्भ कर दी। सुल्तान होशग ने अवसर पाकर १२ मुहर्रम ८२६ हि० (२६ दिसम्बर १४२२ ई०) को रात्रि मे छापा मारा और बहुत से लोग उस रात्रि मे मारे गये। उनमे दन्दाह, जो आजकल करी के नाम से प्रसिद्ध है, की विलायत का राय सामत ५०० राजपूतो सहित मारा गया। सुल्तान अहमद एक व्यक्ति सहित सेना के शिविर से निकला और मैदान मे खडा हो गया। प्रात काल के निकट लोग उसके पास एकत्र हो गये। सुल्तान अहमद ने सुल्तान होशग की सेना पर आक्रमण किया (२९८) और ऐसा युद्ध हुआ कि दोनो बादशाह आहत हो गये। अन्त में सुल्तान होशग ने भाग कर सारगपुर के किले मे शरण ग्रहण की। जाजनगर के हाथियो मे ७ हाथी सुल्तान अहमद को प्राप्त हो गये। ४ रबी-उल-अव्वल ८२६ हि० (१५ फरवरी १४२३ ई०) को सुल्तान अहमद विजय तथा सफलता प्राप्त करके गुजरात की ओर लौट गया।

होशग द्वारा सुल्तान अहमद पर आक्रमण

जब होशग को यह सूचना मिली तो उसने अभिमान तथा धृष्टता के कारण सारगपुर के किले से निकल कर उसका पीछा किया। सुल्तान अहमद भी लौट कर खडा हो गया। दोनो सेनाओ मे युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो गई। पहले ही आक्रमण मे सुल्तान होशग ने शत्रु की सेना को पराजित कर दिया। सुल्तान अहमद यह देखकर स्वय रणक्षेत्र में पहुचा और उसने इस वीरता से युद्ध किया कि उसे विजय प्राप्त हो गई। होशग भागकर पुन सारगपुर के किले मे प्रविष्ट हो गया। सुल्तान अहमद गुजरात चला गया। यद्यपि सुल्तान होशग वीरता तथा पौरुष मे अद्वितीय था किन्तु युद्ध मे उसे विजय न होती थी। अधिकाश युद्धो मे अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त उसे भागना पडता था।

काकरून पर सुल्तान होशंग की विजय

जब इस बात का प्रमाण मिल गया कि सुल्तान अहमद गुजरात की सीमा मे पहुच गया है तो होशग सारगपुर से मन्दू के किले मे पहुचा। उसी वर्ष उसने अपनी सेना की समस्त हानियो को ठीक किया और काकरून के किले की ओर प्रस्थान किया और अल्प समय मे उसे अपने अधिकार मे ले लिया।

ग्वालियर पर आक्रमण

उसी वर्ष उसने ग्वालियर को विजय करने के उद्देश्य से प्रस्थान किया और निरन्तर कूच

करके किले को घेर लिया। एक मास तथा कुछ दिन उपरान्त खिज्र खा के पुत्र सुल्तान मुबारक शाह ने ब्याना के मार्ग से ग्वालियर के राय की सहायतार्थ उस (होशग) पर चढाई की। जब सुल्तान होशग को यह समाचार प्राप्त हुये तो वह किले का आक्रमण त्याग कर उसके स्वागतार्थ धौलपुर की नदी के तट पर पहुचा। कुछ दिन उपरान्त दोनो मे सधि हो गई। उन्होने निश्चय किया कि सुल्तान (२९९) होशग ग्वालियर की विजय का विचार अपने मस्तिष्क से निकाल दे, और दोनो एक दूसरे के पास पेशकश भेज कर अपनी-अपनी राजधानी को लौट गये।

सुल्तान अहमद शाह बहमनी द्वारा खरला पर आक्रमण

८३२ हि० (१४२८–२९ ई०) मे समाचारवाहको तथा गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि दकिन (दक्षिण) के वाली[1] सुल्तान अहमद शाह बहमनी ने अपनी सेना सहित पहुच कर खरला के किले को घेर लिया है। जब यह समाचार होशग शाह को प्राप्त हुये तो उसने एक बहुत बडी सेना एकत्र करके खरला के राय की सहायतार्थ प्रस्थान किया। सुल्तान अहमद यह समाचार पाकर खरला की विजय के विचार त्याग कर अपने राज्य की ओर रवाना हो गया। होशग ने खरला के राय के बहकाने से तीन मजिलो तक उसका पीछा किया। सुल्तान अहमद ने अपने सम्मान तथा मर्यादा की रक्षा हेतु युद्ध किया। यद्यपि प्रथम आक्रमण मे ही सुल्तान अहमद की सेना पराजित हो गई किन्तु सुल्तान अहमद ने एक स्थान से, जहा वह घात लगाये बैठा था, निकल कर होशग की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया और उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। सुल्तान होशग मन्दू की ओर भाग खडा हुआ। सुल्तान होशग के अत पुर की स्त्रिया सुल्तान अहमद को प्राप्त हो गई। सुल्तान अहमद ने उनको सम्मानपूर्वक मन्दू भेज दिया और ५०० अश्वारोही उनके साथ कर दिये। यह विवरण दक्षिण के सुल्तानो के इतिहास मे विस्तार से दिया गया है।

कालपी की विजय

८३५ हि० (१४३१–३२ ई०) मे सुल्तान होशग ने मन्दू से कालपी को विजय करने के लिए प्रस्थान किया। जब वह कालपी के निकट पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ कि सुल्तान इबराहीम शर्की बहुत बडी सेना लिये हुए जौनपुर से कालपी को विजय करने के उद्देश्य से आ रहा है। सुल्तान होशग ने सुल्तान इबराहीम को हटाना कालपी की विजय से सर्वोपरि समझा और उससे युद्ध करने लगा। जब दोनो सेनाये एक दूसरे के निकट पहुची और युद्ध का कार्य आज कल पर टलने लगा तो इसी बीच मे सुल्तान इबराहीम को समाचार प्राप्त हुये कि, "सुल्तान मुबारक शाह, देहली का सुल्तान, अवसर पाकर जौनपुर की ओर प्रस्थान कर रहा है।" सुल्तान इबराहीम विवश होकर जौनपुर की ओर रवाना हुआ और होशग ने बिना किसी युद्ध के कालपी पर अधिकार जमा लिया और अपने (३००) नाम का खुत्बा[2] पढवा दिया। वहा कुछ दिन ठहर कर कालपी के पिछले शासक कादिर खा को अपना अनुगृहीत बनाकर मालवा की ओर प्रस्थान किया।

१ शासक, प्रान्त का हाकिम।

२ एक राज्य मे दो बादशाहो का खुत्बा नही पढा जा सकता। स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की घोषणा खुत्बे द्वारा होती थी।

शाहजादा उस्मान खा की उद्दडता

मार्ग मे उसे थानेदारो के प्रार्थना-पत्र इस आशय के प्राप्त हुये कि "विद्रोही, जालना[1] पर्वत की ओर से इस विलायत मे प्रविष्ट हो गये हैं और कुछ स्थानो तथा ग्रामो को लूट कर भीम नामक हौज मे शरण ले रखी है।" भीम हौज का विवरण इस प्रकार है. "प्राचीन काल मे भीम ने पर्वतो के मध्य मे जो मार्ग स्थित था उसके पत्थरो को कटवा कर एक बन्द बँधवाया। उसकी लम्बाई और चौडाई इतनी अधिक है कि दूसरी ओर दृष्टि नही जा सकती। उसकी गहराई का पता नही चलता।" कुछ दिन उपरान्त, मार्ग मे, शाहजादा उस्मान खा ने अपने बडे भाई शाहजादा गजनी खा के शिविर के निकट एक सवार भेजा। वह उसी प्रकार घोडे पर सवार अपशब्द तथा कठोर बाते बकता जाता था। पर्दादारो तथा ख्वाजासराओ ने उसे बहुत रोका किन्तु वह न रुका। अंत मे ख्वाजासराओ ने पत्थर मारकर उसे सरापर्दे के निकट से भगा दिया। शाहजादा उस्मान खा ने अपने आदमियो की सहायतार्थ पहुच कर ख्वाजासराओ को मारा पीटा और शिविर से पृथक् हो गया। अल्पदर्शी अमीरो को झूठे वचन देकर अपनी ओर मिला लिया और षड्यन्त्र रचने लगा, जब सुल्तान होशग को यह समाचार प्राप्त हुये तो वह बडा क्रोधित हुआ और उसने मलिक मुगीस खाने जहा से परामर्श किया। मलिक मुगीस ने निवेदन किया कि, "शाहज़ादे ने यह हरकत पुन की है और उसे इससे पूर्व क्षमा किया जा चुका है। इस बार भी उसे क्षमा कर दिया जाय ताकि शाहजादा उपस्थित होकर आपसे मिले।" सुल्तान होशग इस आशय से उपेक्षा करने लगा कि शाहज़ादा उस्मान खा आकर शिविर में प्रविष्ट हो जाय।

शाहजादा उस्मान खा तथा उसके भाइयो का बन्दी बनाया जाना

(३०१) जब सुल्तान होशग ने उज्जैन कस्बे के निवासियो के ऊपर अपनी कृपादृष्टि की छाया डाली[2] तो उसने एक दिन दरबारे आम किया और उस्मान खा शाहज़ादे को उसके दोनो भाइयो फतह खा तथा हैबत खा सहित उपस्थित करके दण्ड देने के स्थान पर रखा और उन्हे मौखिक चेतावनी देकर तीनो को वकीलो को सौप दिया। कुछ दिन उपरान्त उसने मलिक मुगीस को आदेश दिया कि तीनो को बन्दी बनाकर अपने साथ मन्दू के किले मे ले जाय और उन्हे बन्दीगृह मे डाल दे। उसने स्वय जातिया पर्वत के विद्रोहियो को दण्ड देने के लिये प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करके वहाँ पहुचा तथा हौज़े भीम के बन्द को तोड डाला। वहा से वह शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करके उस स्थान पर पहुचा और विद्रोहियो से बदला ले लिया। जातिया के पर्वत का राजा पैदल भाग कर जगल मे छिप गया। उसके परिवार वाले बन्दी बना लिये गये तथा नगर को नष्ट कर दिया गया। उन्हे असख्य बन्दी प्राप्त हुए। वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके वे होशगाबाद के किले मे पहुचे और वर्षा ऋतु वही व्यतीत की।

मुकुट के मणि की घटना

एक दिन वह शिकार के लिए निकला हुआ था। मार्ग मे उसके मुकुट का बदख़शा का

१ प्रकाशित ग्रन्थ मे 'जातिया' है।
२ जब वह उज्जैन पहुचा।

एक मणि गिर पडा। तीसरे दिन एक प्यादे ने उसे प्रस्तुत किया और उसे सोने के ५०० तन्के इनाम मे प्रदान किये गये। उसने इस अवसर पर एक कहानी बताई कि एक दिन सुल्तान फीरोज के मुकुट का मणि पृथक् होकर गिर गया। एक प्यादे ने आकर उसे प्रस्तुत किया। सुल्तान फीरोज शाह ने ५०० तन्के प्रदान किये और कहा कि, "यह मेरे भाग्य के सूर्य अस्त होने का चिह्न है।" कुछ दिन उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। मै भी समझता हू कि मेरा अतिम काल आ गया है। उपस्थितगण ने उसके लिए शुभ कामना करते हुए कहा कि, "जिस दिन सुल्तान ने यह बात कही थी उसकी अवस्था ९० वर्ष की हो चुकी थी। अभी सुल्तान युवावस्था मे है।" होशग ने कहा कि, "मनुष्य की निश्चित अवस्था (३०२) मे कोई वृद्धि अथवा कमी नही हो सकती।" कुछ दिन उपरान्त होशग को मूत्र का एक रोग[1] हो गया।

सुल्तान का गजनी खा को उत्तराधिकारी बनाना

सुल्तान होशग ने अपना मृत्यु-काल निकट देखकर होशगाबाद से मन्दू की ओर प्रस्थान किया। एक दिन उसने दरबारे आम करके अमीरो, विश्वासपात्रो तथा सेनानायको की उपस्थिति मे राज्य की अँगूठी अपने पुत्र गजनी खा को देकर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। उसका हाथ पकड कर महमूद खा के हाथ मे दिया। महमूद खा ने अभिवादन करके कहा कि, "जब तक मै जीवित हू उस समय तक सेवा तथा प्राण न्योछावर करने मे कोई कमी न करूगा।" उसने अपने अमीरो को परामर्श दिया कि राज्य को पारस्परिक विरोध से हानि न पहुचाये।

जब उसने यह समझ लिया कि महमूद खा का यह विचार है कि राज्य उसे प्राप्त हो तो उसने उसे अत्यधिक परामर्श तथा शिक्षा दी और उसे अपनी कृपाओ तथा आश्रय की स्मृति दिलाई और कहा कि, "सुल्तान अहमद गुजराती बडा ही शक्तिशाली बादशाह है। वह सर्वदा मालवा को विजय करने का सकल्प किया करता है और समय की प्रतीक्षा करता रहता है। यदि राज्यव्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध एव सैनिको की देखभाल मे शाहजादे की ओर से किसी प्रकार की असावधानी प्रदर्शित की जायगी तो वह इस विलायत (राज्य) को विजय करने का सकल्प कर लेगा और तुम लोगो की सेना छिन्न-भिन्न हो जायेगी।"

शाहजादे का महमूद खां से शपथ लेना

दूसरे पडाव पर शाहजादा गजनी खा ने मलिक महमूद को, जिसकी उपाधि उम्दतुलमुल्क थी, महमूद खा की सेवा मे भेजा और यह सदेश प्रेषित किया कि, "यदि वजीर बैअत[2] के बन्धन शपथ द्वारा दृढ बना दे तो मै निश्चिन्त हो जाऊगा।" महमूद खा ने शाहजादे की प्रार्थना स्वीकर कर ली और शपथ द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को दृढ बना दिया।

अमीरो द्वारा शाहजादा उस्मान खां को जागीर दिलाने का प्रयत्न

(३०३) कुछ अमीरो ने जो शाहजादा उस्मान को पसन्द करते थे सुल्तान की सेवा मे ख्वाजा नसरुल्लाह दबीर[3] द्वारा प्रार्थना कराई कि, "शाहजादा उस्मान खा भी युवक तथा योग्य पुत्र

१ सलसल बोल।
२ अधीनता स्वीकार करने की शपथ।
३ दबीर, दीवाने इन्शा से सम्बन्धित होते थे। वे शाही पत्र, विजय-पत्र आदि लिखा करते थे।

है। यदि उसे बन्दीगृह से मुक्त करके मालवा प्रदेश का थोडा-सा भाग जागीर मे प्रदान कर दिया जाय तो यह उचित होगा।" सुल्तान होशग ने कहा कि, "यह बात मेरे हृदय मे भी थी किन्तु यदि हम उस्मान खा को मुक्त कर देगे तो राज्य-व्यवस्था मे विघ्न पड जायगा और राज्य मे उपद्रव तथा अशाति उत्पन्न हो जायेगी।" गजनी खा ने जब यह बात सुनी कि कुछ अमीर उस्मान खा को मुक्त कराने का प्रयत्न कर रहे हैं तो उसने मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क को पुन महमूद खा की सेवा मे भेजकर यह सदेश प्रेषित किया कि, "दोनो एक दूसरे के समक्ष भव्य राज्य-भवन के सामने अपनी प्रतिज्ञा को शपथ द्वारा दृढ बनाये।" महमूद खा मार्ग मे शाहजादे से मिला और उसने पुन शपथ ली कि "जब तक मेरे प्राण शेष हैं, मै शाहजादे से पृथक् न होऊगा।"

उस्मान खा द्वारा महमूद खां को मिलाने का प्रयत्न

जब अमीरो को यह ज्ञात हुआ तो उन्होने मलिक उस्मान जलाल को, जोकि बडा प्रतिष्ठित अमीर था, तथा दो विश्वस्त सरदार, मलिक मुबारक गाजी सहित, महमूद खा की सेवा मे भेजे। सयोग से मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क, महमूद खा की सेवा मे उपस्थित था कि मलिक मुबारक गाजी तथा उन दो अमीरो की शुभ कामनाये प्राप्त हुई[1]। महमूद खा, मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क को शिविर मे छोड कर स्वय बाहर निकला और शिविर के द्वार पर बैठ गया ताकि जो वार्तालाप हो उसे मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क सुन ले[2]। जब मलिक मुबारक गाजी अपने दोनो मित्रो सहित उपस्थित हुआ और उसने मलिक उस्मान जलाल तथा शाहजादा उस्मान खा की शुभकामनाये उस तक पहुचा कर कहा कि, "मलिक उस्मान ने यह निवेदन कराया है कि जब से राज्य तथा विजारत का कार्य प्रारम्भ हुआ उस समय से अब तक आपके समान कोई वजीर नही हुआ है, किन्तु आश्चर्य है कि उसके होते हुए, जो दान-पुण्य, वीरता, न्याय तथा प्रजा को आश्रय प्रदान करने के गुणो से सुशोभित है, आपने किस प्रकार यह प्रस्ताव (३०४) रखा है कि गजनी खा उत्तराधिकारी नियुक्त हो। इसके अतिरिक्त उस्मान खा मलिकुश्शर्क का जामाता है। उसके पुत्र मलिकुश्शर्क के पुत्र होते है। यदि सुल्तान निर्बल न हो गया होता और उसकी शक्ति मे विघ्न न पड गया होता तो वह कदापि ऐसे कार्य को अनुमति न देता। समस्त खान तथा अमीर इस बात की प्रार्थना करते है कि उस्मान खा के प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते हुए आप उसको आश्रय प्रदान करना न त्यागे। यदि राज्य के कार्य उस्मान खा को प्रदान हो जायेगे तो राज्य मे पुन रौनक उत्पन्न हो जायेगी।" महमूद खा ने उत्तर दिया कि, "दास का कर्त्तव्य दासता प्रदर्शित करना है। स्वामित्व का कार्य सुल्तान का है। मैने अपनी सेवा के समय कभी कोई व्यर्थ का कार्य नही किया है।"

मलिक मुबारक गाज़ी जब बिदा हुआ तो उसने मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क को बुलवा कर उससे कहा कि, "जाकर शाहजादे से जो बाते हुई है उससे कह दे।" मलिक महमूद ने गज़नी खा के पास पहुच कर जो बात हुई थी सुना दी। शाहजादा महमूद खा की ओर से निश्चिन्त तथा प्रसन्न हो गया।

१ 'आगमन के समाचार पहुँचे'।
२ मूल पोथी के अनुसार 'न सुन पाये' किन्तु एक पोथी में 'सुन ले' है।

उस्मान खा को बादशाह बनाने का प्रयत्न

जब अमीर लोग सुल्तान होशग के जीवन से निराश हो गये तो जफर, जो मलिक उस्मान जलाल के आगे-आगे चलता था, इस उद्देश्य से सुल्तान होशग के शिविर से भाग गया कि वह शाहजादा उस्मान खा के रक्षको को अपनी ओर मिला कर शाहजादे को भगा दे। जब महमूद खा को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने तत्काल शाहजादा गजनी खा को इसकी सूचना दे दी ताकि वह इसकी रोक-थाम कर सके। शाहजादे ने मलिक बरखुरदार, मलिक हसन तथा शेख मलिक को जफर को बन्दी बनाने के लिए नियुक्त किया। मलिक बरखुरदार तथा मलिक हसन ने उत्तम प्रकार के घोडो की प्रार्थना की। उसने शाही अश्वशाला से ५० घोडे प्रदान करने का आदेश दे दिया। मीर आखुर[1] ने जो शाहजादा उस्मान खा का हितैषी था कहा कि, "जब तक सुल्तान जीवित है उसके आदेश के बिना एक घोडा भी (३०५) न दूगा" और उसने जाकर सुल्तान के एक विश्वासपात्र ख्वाजासरा से, जो उस्मान खा का हितैषी था, यह बात कह दी। अभागे ख्वाजा ने इस बात के विषय मे यह समझ कर कि इससे सुल्तान अत्यन्त रुष्ट तथा क्रोधित होगा, मीर आखुर को सिखा दिया कि, "सुल्तान जिस स्थान पर विश्राम कर रहा है वहा तू (जाकर) यह बात इस आशय से उच्च स्वर मे सुना दे कि सुल्तान के कानो तक पहुच जाय और उसकी समझ मे आ जाय कि, मै अभी जीवित हू और गजनी खा मेरी धन-सपत्ति मे हस्तक्षेप कर रहा है।" जब मीर आखुर ने (सुल्तान के समीप) पहुच कर यह बात उच्च स्वर मे कही, तब सुल्तान ने असावधानी की अवस्था मे कुछ सावधान होकर कहा कि, "मेरा निषग कहा है", और अमीरो को बुलवाया।

गजनी खा की शकायें तथा शाही शिविर से चला जाना

अमीर लोग, इस भय से कि सभव है कि सुल्तान की मृत्यु हो गई हो और गजनी खा इस बहाने से हमे बन्दी बनाकर नष्ट करना चाहता हो, सुल्तान की सेवा मे न गये, केवल महमूद खा पहुचा। जब यह समाचार गजनी खा को प्राप्त हुये तो वह आतकित होकर सेना से ३ पडाव की दूरी पर काकरून को भाग गया। मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क को महमूद खा की सेवा मे भेज कर सदेश प्रेषित किया कि, "समस्त अमीर सगठित होकर उस्मान खा को राज्य प्रदान करना चाहते है। मेरा आपके अतिरिक्त कोई हितैषी नही है। सुल्तान के निषग मँगवाने से मुझे यह भय होता है कि सभव है कि मन्दू पहुचने के उपरान्त मुझे भी वह बन्दी बनाकर मेरे भाइयो के साथ सम्मिलित कर दे।" महमूद खा ने उत्तर भेजा कि, "सुल्तान की इच्छा के विरुद्ध आपने कदापि कोई कार्य नही किया है। घोडे दिलवाने के विषय मे मै उचित अवसर पर निवेदन कर दूगा।" गजनी खा ने मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क को पुन भेजा और कहलाया कि, "यद्यपि वजीर मेरा हाथ पकड चुका है किन्तु मै समझता हू कि ख्वाजासराओं ने मेरे विषय मे कुछ अनुचित बाते सुल्तान तक पहुचाई है। इस कारण मै आतकित हू।" महमूद खा ने उत्तर भेजा कि, "कोई बात नही है। आप शीघ्र शाही शिविर मे पहुच जाय, कारण कि समय बहुत कम है और सूर्य अस्त होने वाला है।" मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क के समक्ष उसने एक पत्र लिख कर (३०६) मलिक मुगीस के पास भेजा, जिसमे यह लिखा कि, "सुल्तान ने गजनी खा को अपना उत्तरा-

१ घोडो एव अश्वशाला की देख-रेख करने वाला अधिकारी। वह आख़ुरबक अथवा आख़ुर बेग भी कहलाता था।

धिकारी बनाया है। सुल्तान की इस समय बडी शोचनीय दशा है और उनके निकटवर्तियो को उनके जीवन की कोई आशा नही है। ऐसी अवस्था मे शाहजादा उस्मान खा की रक्षा का प्रयत्न किया जाय।"

गजनी खा का शाही शिविर मे पहुचना

जब मलिक महमूद ने गजनी खा की सेवा मे पहुच कर सदेश प्रस्तुत किया और जो कुछ पत्र मे लिखा गया था उसकी उससे चर्चा की तो गजनी खा प्रसन्न होकर शाही शिविर मे पहुचा। मलिक आछा आरिजे ममालिक तथा उस्मान खा के हितैषी ख्वाजासराओ ने जब यह देखा कि सुल्तान की कुछ ही साँसे शेष है तो उन्होने यह निश्चय किया कि प्रात काल अमीरो तथा महमूद खा को सूचना दिये बिना सुल्तान को पालकी मे रखकर शीघ्रातिशीघ्र मन्डू पहुच जाय और शाहजादा उस्मान खा को बन्दीगृह से मुक्त करके सिहासनारूढ कर दे। महमूद खा ने उनकी योजना की सूचना पाने के उपरान्त होशग की मृत्यु से अवगत होकर उसी स्थान पर पालकी को रोक देने का आदेश दिया। गजनी खा, महमूद खा के कहने से, शाही बारगाह[1] लगवा कर सुल्तान के कफन-दफन की व्यवस्था करने लगा। अमीर लोग छिन्न-भिन्न होकर छिप गये।

सुल्तान को पहना लेने के उपरान्त महमूद खा ने बाहर निकल कर उच्च स्वर मे कहा कि, "सुल्तान होशग शाह की मृत्यु हो गई और उसने अपने योग्य पुत्र गजनी खा को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है। जो कोई हमारा साथ देना चाहता हो वह बैअत[2] कर ले और जो कोई विरोधी हो वह सेना से पृथक् होकर अपना प्रबन्ध करे।" महमूद खा ने गजनी खा के हाथो का चुम्बन करके बैअत की और बहुत रोया। उस अवसर पर प्रत्येक अमीर गजनी खा के चरणो का चुम्बन करता था और जोर-जोर से रोता जाता था। जब अमीरो तथा समकालीन सम्मानित व्यक्तियो की बैअत द्वारा गजनी खा के राज्य को पुष्टि प्राप्त हो गई तो सुल्तान होशग की लाश को लेकर वे लोग मदरसे की ओर रवाना हुए और ९ ज़िलहिज्जा को मिट्टी के सिपुर्द कर दिया।

(३०७) होशग शाह के राजभवन मे बहुत बडा दरबार हुआ और मलिक मुगीस खाने जहा तथा समस्त अमीरो ने बैअत करके न्योछावर प्रस्तुत किये।

सुल्तान होशग ने ३० वर्ष तक राज्य किया। "आह शाह होशग नमाद" वाक्य से उसकी मृत्यु की तिथि का पता चलता है।

मुहम्मद शाह बिन होशंग शाह ग़ोरी

होशग शाह की मृत्यु के उपरान्त ११ जिलहिज्जा ८३८ हि० (८ जुलाई १४३५ ई०) को मलिक मुगीस तथा महमूद खा के प्रयत्न से अमीरो ने विवश होकर गजनी खा से, जो सुल्तान होशग का उत्तराधिकारी घोषित हुआ था, पुन बैअत की, प्रत्येक अमीर को उपाधि तथा खिलअत देकर सम्मानित किया गया और उन्हे प्रोत्साहन प्रदान किया गया। मालवा के प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्तियों को इनाम तथा वृत्ति देकर सम्मानित किया गया।

१ बादशाही शिविर जिसमे दरबार तथा अन्य बडे-बड़े समारोहो का आयोजन होता था।
२ अधीनता की शपथ ले ले।

राज्य की सुव्यवस्था

मन्दू का नाम शादियाबाद रखा गया और गजनी खा के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलाया गया। उसकी उपाधि सुल्तान मुहम्मद शाह निश्चित हुई। जिस किसी को जिस स्थान पर जागीर तथा वृत्ति प्राप्त थी उसकी पुष्टि की गई। यद्यपि अमीर उसके राज्य से सहमत न थे किन्तु मलिक मुगीस तथा महमूद खा की योग्यता तथा सुव्यवस्था के कारण राज्य के कार्यों को शोभा प्राप्त हो गई और सर्वसाधारण उसको चाहने लगे। उसका प्रेम लोगो के हृदय पर आरूढ हो गया। मलिक मुगीस को मसनदे आली खाने जहा की उपाधि देकर पूर्व की भाति विज़ारत का कार्य उसी के अधिकार मे रहने दिया गया।

सुल्तान के अत्याचार तथा विद्रोह

जब कुछ दिन उपरान्त उसने अपने भाइयो की अकारण हत्या करा दी और अपने भतीजे तथा जामाता निजाम खा और उसके तीनो पुत्रो की आखो मे सलाई फिरवा दी[1] तो लोगो के हृदय मे (३०८) उसके प्रति प्रेम के स्थान पर शत्रुता उत्पन्न हो गयी। भाइयो की हत्या उसके लिए शुभ न हुई। अल्प समय ही मे राज्य उसके वश से निकल गया और राज्य मे अव्यवस्था उत्पन्न हो गई। लोगो ने उपद्रव तथा अशाति की पताका बलन्द कर दी।

हाडूती मे विद्रोह

हाडूती नामक राज्य के समस्त राजपूतो ने आज्ञाकारिता त्याग कर उसके राज्य के थोडे से भाग को नष्ट कर डाला। जब यह सूचना सुल्तान मुहम्मद शाह को प्राप्त हुई तो उसने खाने जहा को १५ रबी-उल-अव्वल ८३९ हि० (८ अक्तूबर १४३५ ई०) को उन लोगो को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया और दो हाथी तथा विशेष खिलअत प्रदान करके उसे बिदा किया।

सुल्तान की विलासिता तथा महमूद खां की हत्या का प्रयत्न

राज्य तथा सेना की व्यवस्था को त्याग कर वह सर्वदा मदिरापान मे ग्रस्त रहने लगा। एक दिन प्राचीन अभागे लोगो के समूह ने उसकी स्त्रियो मे से एक के द्वारा यह सदेश भेजा कि, "महमूद खा के हृदय मे राज्य का लोभ उत्पन्न हो गया है और वह इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि सुल्तान को बीच से हटा कर स्वय सिहासनारूढ हो जाये।" सुल्तान मुहम्मद ने उन लोगो से मिलकर यह निश्चय किया कि महमूद खा के इस कुविचार को कार्यान्वित होने के पूर्व उसे बीच से हटा देना चाहिये। जब महमूद खा को यह सूचना प्राप्त हुई तो उसने कहा कि, "ईश्वर को धन्य है कि हमारी ओर से वचन का खण्डन न हुआ", और वह अपने कार्य की व्यवस्था करने लगा और सर्वदा सेना की तैयारी करने लगा। सावधानी की दृष्टि से वह सुल्तान मुहम्मद की सेवा मे आता-जाता रहता था। जब सुल्तान, महमूद खा की सावधानी को देखता तो उससे वह और अधिक आतकित होता।

महमूद खा द्वारा अपनी सफाई

(३०९) एक दिन वह महमूद खा का हाथ पकड कर अपने अन्त पुर मे ले गया और अपनी पत्नी

[1] अंधा बनवा दिया।

की जो महमूद खा की बहिन थी उपस्थित करके कहा कि, "मुझे आशा है कि तू मेरे प्राणो को कोई हानि न पहुचायेगा। राज्य बिना किसी विरोध के तुझे प्रदान किया जाता है।" महमूद ख़ा ने कहा कि, "क्या आपके हृदय से प्रतिज्ञा तथा शपथ निकल गई है जो इस प्रकार की बाते कर रहे है ? यदि किसी विरोधी ने कोई अनुचित बात कही होगी तो वह अन्त मे लज्जित होगा। यदि सुल्तान के हृदय मे मेरी ओर से कोई भय है तो मै इस समय अकेला हू और सुल्तान को कोई बात रोक नही सकती[1]।" सुल्तान मुहम्मद ने क्षमा-याचना की और दोनो नम्रतापूर्वक चाटुकारी की बाते करने लगे, किन्तु सुल्तान शकित हो चुका था अत वह प्रत्येक समय ऐसी बाते करता था जिससे अविश्वास दृष्टिगत होता था।

सुल्तान मुहम्मद की हत्या

महमूद खा ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु अत्यधिक प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया और सुल्तान मुहम्मद के मदिरा पिलाने वाले को अपार धन-सम्पत्ति देकर उसकी मदिरा मे विष मिलवा दिया और उसकी हत्या करा दी।

अमीरो द्वारा शाहज़ादा मसऊद ख़ा को सिहासनारूढ करना तथा महमूद खा का विरोध

(३१०) जब अमीरो को यह पता चला तो ख्वाजा नसरुल्लाह दैरम्बानी, मलिक मुशीरुलमुल्क, लतीफ जकरिया तथा कुछ सरदारो ने मिलकर शाहज़ादा मसऊद ख़ा को जिसकी अवस्था १३ वर्ष की थी अन्त पुर से बाहर निकाल कर सिहासनारूढ कर दिया और निश्चय किया कि जिस प्रकार सभव हो महमूद खा को पृथक् कर दिया जाय। उन्होने मलिक बायज़ीद शेख़ा को महमूद खा के पास भेजकर यह सदेश प्रेषित किया कि, "सुल्तान मुहम्मद शाह ने तुम्हे शीघ्रातिशीघ्र उपस्थित होने का आदेश दिया है। वह गुजरात दूत भेजना चाहता है।" महमूद ख़ा सुल्तान की मृत्यु से अवगत था। उसने उत्तर भेजा कि, "मैने स्वय विजारत का कार्य त्याग दिया और मेरी इच्छा है कि मै अपना शेष जीवन-काल सुल्तान होशग शाह के मजार पर झाडू लगाकर व्यतीत करू, किन्तु इस कारण कि मेरा पालन-पोषण सुल्तान होशग शाह द्वारा हुआ है अत यदि अमीर लोग मेरे निवास स्थान पर पधार कर परामर्श गोष्ठी मे समस्त बाते जिन पर मतभेद है प्रस्तुत करे तो जो कुछ भी निश्चय होगा उसी के अनुसार कार्य किया जायेगा।"

मलिक बायजीद शेखा ने अमीरो को सूचना दी कि, "महमूद खा को अभी सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के विषय मे पता नही। यदि सब लोग उसके निवास-स्थान पर चले चलेगे तो वह सब के साथ राज-भवन मे चला आयेगा। उस समय उसकी व्यवस्था कर ली जायेगी।" अमीर लोग बायज़ीद शेख़ा के कहने से महमूद खा की सेवा मे पहुचे। वह अपने आदमियो को एक गुप्त स्थान पर छिपाये हुए था। जब अमीर लोग उपस्थित हुए तो उसने पूछा कि, "सुल्तान सावधान हो गया है अथवा अभी मस्त है ?" अमीर लोग समझ गये कि उसका क्या उद्देश्य है। क्षण भर बाद उसके आदमी कोठरियो से निकल कर अमीरो पर टूट पडे और सभी को बन्दी बना कर सेवको के सिपुर्द कर दिया। जब यह समाचार राजभवन मे पहुचा तो शेष अमीरो ने, जो मसऊद खा के पास थे, अपनी सेना एकत्र की और शाही सेना को तैयार करके सुल्तान होशग की कब्र से चत्र लाकर मसऊद ख़ा के सिर पर लगा दिया।

१ 'सुल्तान मेरी हत्या कर सकता है'।

महमूद खा का दौलतखाने मे पहुचना तथा अमीरो का पलायन

(३११) महमूद खा यह समाचार पाकर सवार हुआ और दौलतखाने[1] की ओर रवाना हुआ ताकि दोनो शाहजादो को बन्दी बनाकर अपना कार्य पूरा करे। जब वह दौलतखाने के निकट पहुचा तो दोनो पक्षो ने बाण तथा भाले अपने हाथ मे ले लिये। रात भर युद्ध होता रहा। प्रात काल उमर खा शाहजादा किले के नीचे उतरा और भाग खडा हुआ। मसऊद खा ने शेख़ जायल्दा के पास, जो अपने समय के बहुत बडे सूफी थे, शरण ली। शेष अमीर भाग कर अपनी रक्षा हेतु छिप गये। महमूद ख़ा प्रात काल तक सशस्त्र दौलतखाने के समक्ष खडा रहा। प्रात काल महमूद खा को समाचार प्राप्त हुए कि दौलतखाना खाली है और विरोधी इधर-उधर छिप गये है।

ख़ाने जहाँ से महमूद खा का राज्य के विषय मे परामर्श करना

महमूद ख़ा दौलतख़ाने मे प्रविष्ट हुआ और एक तेज दूत अपने पिता ख़ाने जहाँ को बुलवाने के लिए भेजा। खाने जहा शीघ्रातिशीघ्र पहुचा। महमूद ख़ा ने अमीरो तथा मलिको को उपस्थित किया और ख़ाने जहा के पास सदेश भेजा कि, "राज्य मे बादशाह का होना परमावश्यक है। यदि राजसिहासन बादशाह के अस्तित्व से रिक्त हो तो ऐसे उपद्रव उठ खडे होने का भय है जिनका उपचार न हो सकेगा। मालवा का राज्य विस्तृत हो चुका है। विद्रोही तथा विरोधी अभी असावधान है और आस-पास के सुल्तानो को यह समाचार प्राप्त नही हुए है अन्यथा वे इस राज्य पर आक्रमण कर देते।" खाने जहा ने उत्तर भेजा कि, "बादशाही के लिए, जो नबियो[2] के पद के समान है, उच्च वश से सम्बन्धित होना, अत्यधिक दान-पुण्य, वीरता, न्याय तथा बुद्धिमत्ता परमावश्यक है ताकि राज्य को उन्नति प्राप्त हो। ईश्वर को (३१२) धन्य है कि जो गुण सुल्तान मे होने चाहिये वह हे पुत्र तुझमे विद्यमान है। तू शुभ मुहूर्त मे सिहासनारूढ हो जा।" जब दूत यह उत्तर लाया तो समस्त अमीरो तथा प्रतिष्ठित लोगो ने इस परामर्श की बडी प्रशसा की। ज्योतिषियो को शुभ मुहूर्त के विषय मे निर्णय करने का आदेश हुआ और समस्त अमीरो, राज्य के गण्यमान व्यक्तियो तथा नगर के प्रतिष्ठित लोगो ने उसके हाथो का चुम्बन करके उसे राज्य की बधाई दी।

सुल्तान मुहम्मद ने एक वर्ष तथा कुछ महीनो तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद ख़लजी

नई नियुक्तियाँ

सोमवार २९ शव्वाल ८३९ हि० (१६ मई १४३६ ई०) को सुल्तान महमूद ख़लजी सिहासनारूढ हुआ। उस समय उसकी अवस्था ३४ वर्ष की थी। समस्त मालवा प्रदेश मे उसके नाम का खुत्बा तथा सिक्का चालू हो गया। उसने समस्त अमीरो को नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा प्रसन्न कर लिया और प्रत्येक की आय तथा श्रेणी मे वृद्धि कर दी। कुछ लोगो को चुन कर उन्हे उपाधिया प्रदान की। मुशीरुलमुल्क को निजामुलमुल्क की उपाधि प्रदान की और उसे वजीर नियुक्त कर दिया। मलिक बरखुरदार को ताज खा की उपाधि दी और आरिजे ममालिक का पद उसे सौप दिया। खाने जहा को

१ राज-प्रासाद।
२ ईश्वर के दूत, पैग़म्बर।

आजम हुमायूँ की उपाधि देकर चत्र[1] तथा सफेद निषग जो विशेष रूप से सुल्तानो को प्राप्त होता था प्रदान कर दिया और यह निश्चय किया कि आजम हुमायूँ के नकीव[2] तथा यसावल[3] सोने और चादी के डण्डे अपने हाथो मे रक्खे। आजम हुमायूँ के सवार होने तथा उतरने के समय उच्च स्वर मे "बिस्मिल्लाहिर्रह-मानिर्रहीम"[4] कहे जो उस काल मे विशेष रूप से सुल्तानो के लिए कहा जाता था।

विद्या को आश्रय प्रदान होना

(३१३) जब राज्य उसे प्राप्त हो गया तो उसने विद्वानो तथा आलिमो को आश्रय देना प्रारम्भ कर दिया। जिस किसी स्थान पर भी वह किसी योग्य व्यक्ति के विषय मे सुन पाता तो वह उसे धन देकर अपने पास बुला लेता था। उसने अपनी विलायत मे कई स्थानो पर मदरसो का निर्माण करवाया और आलिमो तथा विद्यार्थियो के लिए वृत्ति निश्चित की और लोगो को विद्याध्ययन के योग्य बनाया। उसके राज्यकाल मे शीराज तथा समरकन्द को भी मालवा प्रदेश पर ईर्ष्या होती थी।

सुल्तान के विरुद्ध षड्यत्र

जब राज्य के कार्य तथा शासन-प्रबन्ध सुव्यवस्थित हो गये तो होशग शाह के अमीरो मे से मलिक कुतुबुद्दीन शैबानी, मलिक नसीरुद्दीन दबीर तथा कुछ अन्य लोगो ने ईर्ष्यावश मलिक यूसुफ किवाम से मिलकर षड्यत्र रचना प्रारम्भ कर दिया। वे एक रात्रि मे मस्जिद के कोठे पर जोकि महमूद शाह के राजप्रासाद से मिली हुई थी सीढी लगा कर चढ गये और वहा से राजभवन के प्रागण मे उतर पडे। वे असमजस मे थे कि अब क्या करना चाहिये। उसी समय महमूद शाह उपस्थित हो गया और वीरता-पूर्वक निषग लगा कर घर के बाहर निकला और उसने बाण द्वारा कुछ लोगो को आहत कर दिया। इसी बीच मे निज़ामुलमुल्क, मलिक महमूद ख़िज्र कुछ सिलाहदारो[5] को लेकर सशस्त्र हो कर सुल्तान के पास पहुच गये। वे लोग जिस मार्ग से आये थे, उसी से भाग कर बाहर चले गये। उनमे से एक व्यक्ति बाण द्वारा आहत हो चुका था अत वह सीढी से न उतर सका और मस्जिद के कोठे से भूमि पर कूद पडा। उसका पाव टूट गया। उसे बन्दी बनाकर उपस्थित किया गया। उसने उन लोगो के नाम जो इस षड्यत्र मे सम्मिलित थे लिखवा दिये और प्रात काल सभी को उपस्थित करके उनकी हत्या कर दी गई।

कुछ षड्यत्रकारियो को उच्च पद

शाहज़ादा अहमद खा बिन होशग शाह, मलिक यूसुफ किवाम, मलिक आछा तथा मलिक नसी-रुद्दीन दबीर का यद्यपि षड्यत्र मे पूरा हाथ था किन्तु आज़म हुमायूँ ने उन लोगो के अपराध क्षमा करा दिये और शाहजादे को इस्लामाबाद का किला प्रदान करा दिया। मलिक यूसुफ किवाम को किवाम खा

१ छत्र —यह एक राजचिह्न होता था। इसके भिन्न-भिन्न रग होते थे। इसका प्रयोग सुल्तान के अति-रिक्त कोई अन्य न कर सकता था। कभी-कभी सुल्तान अपने पुत्रो तथा बड़े-बड़े खानो एव मलिको को भी चत्र प्रदान कर देता था।
२ नकीब आज्ञाओ को उच्च स्वर मे सुनाते थे।
३ यसावल —बादशाहों के सामने सोने चादी के डडे लेकर चलते थे।
४ "अल्लाह के नाम से जोकि बडा दयालु तथा कृपालु है मैं प्रारम्भ करता हूँ"।
५ देखिये पृ० २२ नोट नं० १।

(३१४) की उपाधि तथा भिल्सा की अक्ता, मलिक आछा को होशगाबाद की अक्ता, मलिक नसीरुद्दीन को नुसरत खा की उपाधि तथा चन्देरी की अक्ता की नियाबत[1] प्रदान की गई और उन्हे अपनी-अपनी जागीरो पर जाने की अनुमति दे दी गई।

शाहजादा अहमद खा द्वारा विद्रोह

शाहजादा अहमद खा जब इस्लामाबाद पहुचा तो उसने उपद्रव तथा षड्यत्र रचना प्रारम्भ कर दिया। नित्यप्रति उसकी सेना मे वृद्धि होने लगी। ताज खा जो उसको पराजित करने के लिए नियुक्त हुआ था, यद्यपि इस्लामाबाद के किले के नीचे डटा रहा किन्तु उससे कोई लाभ प्राप्त न हुआ। अहमद खा किले के भीतर से प्रतिदिन एक सेना भेज कर युद्ध कराता रहता था। ताज खा ने सुल्तान महमूद के पास प्रार्थना-पत्र भेजकर सहायतार्थ सेना प्रेषित करने की याचना की।

अन्य मुक्तो द्वारा विद्रोह

उसी समय गुप्तचरो ने सुल्तान महमूद के पास यह समाचार पहुचाये कि होशगाबाद के मुक्ता[2] मलिक आछा तथा चन्देरी के मुक्ता नुसरत खा ने विरोध तथा विद्रोह की पताका बलन्द कर रखी है। सुल्तान महमूद ने आजम हुमायूँ खाने जहा को विद्रोहियो के दमन तथा शासन-प्रबन्ध को सुव्यवस्थित करने के लिए भेजा। जब वह इस्लामाबाद से २ कोस पर उतरा तो ताज खा एव अन्य सरदारों ने उससे भेट की और वास्तविक स्थिति से अवगत कराया।

आजम हुमायूँ का इस्लामाबाद को घेरना तथा उसकी विजय

दूसरे दिन उसने प्रस्थान करके इस्लामाबाद के किले को घेर लिया और मोर्चे बाट दिये। दूसरे दिन उसने कुछ विद्वानो तथा सूफियो को अहमद खा के पास इस आशय से भेजा कि वह उसे परामर्श करे तथा विश्वासघात त्याग देने की ओर प्रेरित करे। आलिमो तथा सूफियो ने यद्यपि उसे बहुत कुछ शिक्षा दी और आतकित किया किन्तु उसका पाषाण हृदय नर्म न हुआ और नसीहत करने वालो को वह निरन्तर उत्तर देता रहा और शिक्षा देने वालो को विदा करके किले के बाहर कर दिया। किवाम खा ने भी विरोध करते हुए अपने मोर्चे से कुछ सामग्री तथा अस्त्र-शस्त्र अहमद खां के पास भेजे और उसके प्रति अपनी (३१५) निष्ठा को प्रतिज्ञा द्वारा दृढ बनाया। जब किले को घेरे हुए बहुत समय हो गया तो एक दिन अहमद खा को एक नर्तकी ने मदिरा में विष पिला दिया और स्वयं किले के बाहर भाग कर आजम हुमायूँ के शिविर मे पहुच गई। किले पर विजय प्राप्त हो गई। आजम हुमायूँ ने वहा की व्यवस्था ठीक करके अपने एक विश्वासपात्र को वहा नियुक्त कर दिया और होशगाबाद की ओर प्रस्थान किया।

होशंगाबाद के किले की विजय

मार्ग मे किवाम खा, आजम हुमायूँ के शिविर से भाग कर भिल्सा की ओर चला गया। आजम हुमायूँ ने मलिक आछा को पराजित करने का कार्य सर्वोपरि समझ कर होशगाबाद की ओर प्रस्थान किया। मलिक आछा युद्ध न कर सका और अपनी समस्त धन-सपत्ति को फेक कर गोडवाना की पहाडियो

१ देखिये पृ० ३३ नोट न० ६।
२ मुक्ताः—अक्ता का स्वामी।

की ओर चल दिया। गोड लोगो को जब यह ज्ञात हुआ कि उसने अपने बादशाह के प्रति विद्रोह कर दिया है तो उन्होने एकत्र होकर उसका मार्ग रोक लिया और सब लोगो की पत्थर तथा वाण द्वारा हत्या कर दी और उनकी धन-सपत्ति लूट ली। आजम हुमायूँ यह समाचार पाकर वडा प्रसन्न हुआ और होशगाबाद के किले मे प्रविष्ट हो गया और उस प्रदेश की व्यवस्था भली-भाति करके अपना एक विश्वासपात्र वहा नियुक्त कर दिया और नुसरत खा को दण्ड देने के लिए चदेरी की ओर चल दिया।

चन्देरी की ओर प्रस्थान

जव वह चदेरी से दो मजिल पर पहुचा तो नुसरत खा अपने आप को विवश पाकर उसके स्वागतार्थ निकला और चाटुकारी करने लगा, ताकि उसके अपराध क्षमा कर दिये जाय। आजम हुमायूँ ने सैयिदो, आलिमो तथा नगर के प्रसिद्ध व्यक्तियो को बुलवा कर उनकी एक सभा करवाई और प्रत्येक व्यक्ति से नुसरत खा के विषय मे पूछ-ताछ की। प्रत्येक ने अपनी अपनी वात कही। उनमे से जो बात सभी लोगो के वर्णन मे पाई जाती थी वह इस प्रकार थी कि नुसरत खा ने अभिमानी होकर विद्रोह तथा विरोध प्रारम्भ कर दिया था। आजम हुमायूँ ने चन्देरी के राज्य को उससे लेकर मलिकुल उमरा हाजी कमाल को प्रदान कर दिया और भिल्सा की ओर चल खडा हुआ।

भिल्सा को सुव्यवस्थित करना

(३१६) उसने किवाम खा के पास उसे सन्मार्ग पर लाने के लिए अपने विश्वासपात्र भेजे किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ और वह भिल्सा से निकल कर भाग गया। आजम हुमायूँ ने कुछ दिन तक वहा ठहर कर वहा का शासन-प्रबन्ध ठीक किया और राजधानी शादियाबाद की ओर वापस हो गया।

सुल्तान अहमद गुजराती द्वारा आक्रमण

मार्ग मे यह समाचार प्राप्त हुये कि, "सुल्तान अहमद गुजराती ने मालवा को विजय करने के लिए प्रस्थान कर दिया है और शाहजादा मसऊद खा को बहुत बडी सेना तथा २० हाथी देकर (सुल्तान महमूद खलजी) के विरुद्ध नियुक्त किया है।" आजम हुमायूँ शीघ्रातिशीघ्र वहा से रवाना हुआ और सुल्तान अहमद के शिविर से ६ कोस आगे बढ कर तारापुर द्वार से मन्दू के किले मे पहुच गया। महमूद शाह अपने पिता के पहुचने से बडा प्रसन्न हुआ और उसने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। वह नित्य-प्रति मन्दू के किले के बाहर सेना भेजा करता था और युद्ध होता रहता था। वह अपनी वीरता तथा पौरुष के कारण किले के बाहर निकल कर युद्ध करना चाहता था किन्तु होशग शाह के अमीरो की पारस्परिक शत्रुता के कारण वह ऐसा न कर पाता था। वह इतना भयभीत था कि अपने सम्बन्धियों को भी जिन्हे उसने आश्रय प्रदान किया था अपना शत्रु समझने लगा था। शत्रुता तथा विरोध के बावजूद वह दान-पुण्य द्वारा उस समय जब कि वह किले मे घिरा हुआ था लोगो को समृद्ध एव धन-धान्य सम्पन्न रखता था। अपने भण्डार से फकीरो तथा दरिद्रियो को अनाज प्रदान करता था। उसकी उदारता के कारण किले मे सुल्तान अहमद के शिविर की अपेक्षा अनाज सस्ता था।

उसने फकीरो तथा दरिद्रियो के लिए लगर खोल रखे थे और उन्हे कच्चा तथा पक्का भोजन दिया जाता था। कुछ अमीरो को, उदाहरणार्थ सैयिद अहमद, सूफी खा पुत्र अलाउलमुल्क, मलिकुश्शर्क, मलिक मुहम्मद बिन अहमद सलाह, मलिक कासिम, तथा हुसामुलमुल्क हान्देरी जो सुल्तान अहमद (३१७) के विरोधी थे, धन तथा जागीर प्रदान करने का वचन देकर अपनी ओर मिला लिया।

इसी कारण सुल्तान अहमद के कार्य मे विघ्न पड गया। सुल्तान अहमद के शिविर से जो लोग आकर उससे (सुल्तान महमूद से) मिल गये थे उनके परामर्श से उसने रात्रि मे छापा मारना निश्चय किया। सयोग से सुल्तान होशग के दवातदार[1], कैसर खा ने सुल्तान अहमद को इस योजना की सूचना पहुचा दी। जब सुल्तान महमूद की सेना किले से नीचे उतरी तो उसने शिविर के लोगो को उपस्थित पाया और मार्ग बन्द देखे। विवश होकर उन्होने युद्ध प्रारम्भ कर दिया और प्रात काल तक युद्ध होता रहा। बहुत से लोग घायल हुए और प्रात काल के निकट महमूद शाह लौट कर मन्दू के किले मे चला गया।

षड्यत्रकारियो की रोक थाम के लिये सुल्तान महमूद का किले से प्रस्थान

कुछ दिन उपरान्त गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि चदेरी के निवासियो तथा उस क्षेत्र की सेना ने मलिकुल उमरा हाजी कमाल के प्रति विश्वासघात करके उमर खा पुत्र सुल्तान होशग को सरदारी के लिए नियुक्त कर दिया है। शाहजादा मुहम्मद खा वल्द सुल्तान अहमद ५ हजार सवारो तथा ३० हाथियो सहित सारगपुर की ओर रवाना हो गया है। यह समाचार पाकर सुल्तान महमूद ने परामर्श करके निश्चय किया कि, "आजम हुमायूँ किले की रक्षा करे और सुल्तान महमूद किले से निकल कर अपने राज्य के मध्य मे पहुच जाय और राज्य की हिफाजत करे।"

इस योजनानुसार उसने सारगपुर की ओर प्रस्थान किया। ताज खा तथा मसूर खा को अपने पूर्व ही आगे भेज दिया। क्योकि सुल्तान अहमद ने मलिक हाजी अली को मार्ग की रक्षा हेतु कम्पिल (३१८) के घाट पर नियुक्त कर दिया था, अत ताज खा तथा मसूर खा ने सुल्तान महमूद के पूर्व वहा पहुच कर युद्ध किया। मलिक हाजी ने भाग कर सुल्तान अहमद को सूचना दे दी कि, "सुल्तान महमूद किले से निकल कर सारगपुर की ओर प्रस्थान कर रहा है।" सुल्तान अहमद ने एक दूत को सारगपुर इस आशय से भेज दिया कि दूत के पहुचने के उपरान्त शाहजादा मुहम्मद खा पूर्ण सावधानी से सारगपुर से प्रस्थान करके उज्जैन मे सुल्तान अहमद की सेवा मे उपस्थित हो।

सारंगपुर की सुव्यवस्था

सारगपुर का मुक्ता मलिक इसहाक बिन कुतुबुलमुल्क ने सुल्तान की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेज कर अपने अपराध की क्षमा-याचना की और लिखा कि, "आपके पहुचने के समाचार पाकर मुहम्मद खा सारगपुर को छोड कर उज्जैन की ओर चला गया है किन्तु शाहजादा उमर खा ने सारगपुर की विजय हेतु एक सेना अपने पूर्व भेज दी है तथा वह स्वय पीछे आ रहा है।" यह पत्र पाकर सुल्तान महमूद प्रसन्न हो गया और उसने मलिक इसहाक को क्षमा कर दिया। ताज खा को अपने पूर्व सारगपुर भेज दिया और स्वय उस ओर रवाना हुआ। जब ताज खा सारगपुर पहुचा तो उसने मलिक इसहाक तथा सारगपुर के समस्त निवासियो एव खेलदारो[2] को प्रोत्साहित करके शाही इनाम की आशा दिलाई। मलिक इसहाक तथा वहा के विश्वासपात्रो को अपने साथ लेकर सुल्तान के स्वागतार्थ पहुच गया।

१ बादशाहो की लेखन सामग्री का प्रबन्ध करने वाला।
२ खेलदार —अश्वारोही

मलिक इसहाक को दौलत खा की उपाधि प्रदान की गई और पताका, तास[1], जरदोजी का कबा तथा १० हजार तन्के नकद प्रदान किये गये। उन लोगो की जीविकावृत्ति को १० से २० कर दिया गया[2]। सरदारो तथा नगर के निवासियो को कुछ घोडे और ५० हज़ार तन्के इनाम मे दिये गये ताकि वे आपस मे बाट ले।

शाहजादा उमर खा तथा सुल्तान अहमद द्वारा सारगपुर की ओर प्रस्थान

जब सुल्तान सारगपुर पहुचा तो गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि "उमर खा शाहजादा भिल्सा के कस्बे को जलाकर सारगपुर की सीमा पर पहुच गया है। सुल्तान अहमद गुजराती भी ३० (३१९) हजार अश्वारोही तथा ३०० हाथी लेकर उज्जैन से निकल कर सारगपुर की ओर रवाना हो गया है।" सुल्तान महमूद ने उमर खा को हटाने का कार्य सर्वोपरि समझ कर रात्रि के अन्त मे वहा से प्रस्थान किया।

सुल्तान महमूद खा द्वारा शाहजादा उमर खा पर आक्रमण

जब दोनो सेनाओ मे ६ कोस का अन्तर रह गया तो एक सेना को उसने अग्रिम दल के रूप मे शत्रु का पता लगाने तथा उमर खा की सेना के विषय मे पूछताछ कराने के लिए भेजा। निजामुल-मुल्क, मलिक अहमद सलाह तथा अन्य सैनिको को जगलो तथा मार्ग की रक्षा के लिए रवाना किया। प्रात काल उसने ४ सेनाये तैयार की और उमर खा के विरुद्ध प्रस्थान किया। वह भी सुल्तान महमूद के प्रस्थान से अवगत होकर युद्ध करने के लिए बढा और सेनाओ की पक्तियो को ठीक करके उसने भेज दिया। वह स्वय एक सेना के साथ पर्वत पर घात लगा कर बैठ गया और समय की प्रतीक्षा करता रहा। सयोगवश एक व्यक्ति ने सुल्तान महमूद को सूचना पहुचा दी कि उमर खा एक सेना सहित पर्वत पर घात लगाये हुए छिपा है। सुल्तान महमूद एक सेना तैयार करके उमर खा के विरुद्ध रवाना हुआ। उमर खा ने उन सैनिको से जो उसके साथ थे कहा कि, "अपने सेवक के पुत्र के सामने से भागना मेरे लिए बडी लज्जा का विषय है और जीवित रहने से मर जाना अच्छा है।" जिन लोगो ने उसका साथ दिया, उन्हे लेकर उसने सुल्तान महमूद की सेना पर आक्रमण किया परन्तु बन्दी बना लिया गया।

चन्देरी मे शिहाबुद्दीन शाहजादा उमर खा के नायब का सिहासनारोहण

सुल्तान महमूद के आदेशानुसार उसकी हत्या करा दी गई और उसका सिर भाले की नोक पर चढाकर चन्देरी की सेना मे घुमाया गया। चन्देरी की सेना के सरदारो ने चकित तथा विस्मित होकर सदेश भेज दिया कि, "आज के दिन युद्ध स्थगित रखा जाय ताकि प्रात काल उपस्थित होकर पुन. बैअत करे।" यह निश्चय करके दोनो सेनाये उतर पडी और रात्रि मे चन्देरी की सेना अपनी विला-(३२०)यत की ओर चल दी। जब वे चदेरी पहुचे तो अमीरो ने परामर्श करके मलिक सुलेमान बिन मलिक शेर मलिक गोरी को जो शाहजादा उमर खा का नायब था सुल्तान शिहाबुद्दीन की उपाधि देकर सिहासनारूढ कर दिया।

१ तास —एक विशेष चिह्न जिसका प्रयोग केवल बादशाह कर सकते थे। सम्भवत यहा तास घड़ियाला से तात्पर्य है। तास घड़ियाला के सविस्तार उल्लेख के लिये देखिये 'तुगलुक कालीन भारत' भाग २।

२ 'उलूफ़ा देह बिस्त मुकर्रर साख्त'।

सुल्तान अहमद की सेना मे ताऊन तथा सुल्तान का वापस होना

सुल्तान महमूद ने उससे युद्ध करने के लिये एक सेना भेज कर स्वय सुल्तान अहमद से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। अभी दोनो ओर की सेनाओ मे युद्ध प्रारम्भ भी न हुआ था कि सुल्तान अहमद की सेना के कुछ पवित्र लोगो ने स्वप्न मे मुहम्मद साहब को देखा जो यह कह रहे थे कि, "आकाश से विपत्ति आने वाली है। सुल्तान अहमद से कह दो कि अपनी सुरक्षा के लिए इस प्रदेश के बाहर चला जाय।" जब यह स्वप्न सुल्तान अहमद को पहुचाया गया तो उसने उस ओर अधिक ध्यान न दिया। उन दो दिनो मे सुल्तान अहमद की सेना मे ताऊन इतने भयकर रूप से व्यापक हो गया कि सेना वालो को कब्र खोदने का भी अवकाश न मिलता था। सुल्तान अहमद विवश होकर गुजरात की ओर चला गया और शाहजादा मसऊद खा को वचन दे गया कि, "दूसरे वर्ष इस प्रदेश पर अधिकार करके तुझे प्रदान कर दिया जायेगा।"

सुल्तान महमूद द्वारा चन्देरी पर पुन आक्रमण और मलिक सुलेमान की मृत्यु

सुल्तान महमूद मन्दू के किले मे पहुचा। सात-दस दिन मे सेना को तैयार करके चदेरी पर आक्रमण करने के लिए बढा। जब वह चदेरी पहुचा तो मलिक सुलेमान अमीरो सहित किले से निकला और उसने घोर प्रयत्न किया। जब उसमे युद्ध की शक्ति न रही तो भाग कर उसने किले मे शरण ली और किले मे बन्द हो गया। उसकी अचानक मृत्यु भी हो गई।

सुल्तान महमूद द्वारा चन्देरी की विजय

चदेरी के अमीर अन्य व्यक्ति को अपना सरदार नियुक्त करके पुन युद्ध की तैयारी करके किले के बाहर निकले। युद्ध करके वे किले मे पुन प्रविष्ट हो गये। जब किले के अवरोध को ८ मास व्यतीत हो गये, तो सुल्तान महमूद एक रात्रि मे अवसर पाकर स्वय किले की दीवार पर चढ (३२१) गया। उसके पीछे पीछे अन्य वीर भी पहुचे और किले को विजय कर लिया। बहुत से लोगो की हत्या कर दी गई और एक समूह भाग कर उस किले मे जो पर्वत के ऊपर है बन्द हो गया।

कुछ दिन उपरान्त कालपी का इस्माईल खा उन लोगो को क्षमा दिलवा कर किले के नीचे उतरा। सुल्तान महमूद ने उस क्षेत्र को सुव्यवस्थित करके चदेरी को मलिक मुजफ्फर इबराहीम की जागीर मे दे दिया।

सुल्तान महमूद द्वारा दूँगर सेन पर आक्रमण

वह वापस होने का विचार कर ही रहा था कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाया कि "ग्वालियर के किले से दूँगर सेन ने निकल कर शहरे नव[1] को घेर लिया है।" यद्यपि सेना वर्षा ऋतु तथा बहुत समय तक अवरोध के कारण व्याकुल हो चुकी थी, तथापि उसने निरन्तर यात्रा करके ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। जब वह (सेना) उस विलायत[2] मे पहुची तो उसने विनाश तथा ध्वस प्रारम्भ कर दिया। बहुत से राजपूतो ने किले से निकल कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। महमूद शाह की सेना से मुकाबला करने की शक्ति न होने के कारण वे भाग कर किले मे

१ एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार 'नरवर'।
२ प्रान्त, राज्य।

प्रविष्ट हो गये। डूंगर सेन यह समाचार पाकर भाग खडा हुआ और शहर से निकल कर ग्वालियर की ओर चल दिया। क्योकि सुल्तान महमूद का उद्देश्य शहरे नव को मुक्त कराना था अत उसने ग्वालियर के किले की विजय का प्रयत्न न किया और शादियाबाद की ओर लौट गया।

होशग शाह के रौजे तथा मस्जिद का निर्माण

८४३ हि० (१४३९–४० ई०) मे उसने सुल्तान होशग के रौज़े तथा होशगशाही जामा मस्जिद का, जो रामसराय द्वार[1] के निकट स्थित है और जिसमे २३० गुम्बद तथा ३८० स्तम्भ है, निर्माण प्रारम्भ कराया और अल्प समय मे उसे पूरा करा दिया।

देहली पर आक्रमण

(३२२) ८४५ हि० (१४४१–४२ ई०) मे मेवात के अमीरो तथा देहली के प्रतिष्ठित एव सम्मानित लोगो के प्रार्थना-पत्र निरन्तर प्राप्त होने लगे कि, "सुल्तान मुबारक शाह राज्य का कार्य भली भाति नही सम्पन्न कर सकता और अपहरणकर्ताओ तथा अत्याचारियो ने अत्याचार तथा शोषण प्रारम्भ कर रखा है"। शाति का शब्द कहानी बन चुका है। क्योकि आप बादशाही के योग्य है अत इस प्रदेश के सर्वसाधारण यह इच्छा करते है कि आपकी बैअत करके आपके आज्ञाकारी बन जाय।" सुल्तान महमूद ने ८४५ हि० के अन्त मे एक सेना तैयार करके देहली की ओर प्रस्थान किया। हिन्दौन कस्बे के निकट यूसुफ खा हिन्दौनी उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ। जब उसने तबता[2] ग्राम मे पडाव किया तो सुल्तान मुहम्मद तुगलुकाबाद को अपने पीछे करके युद्ध के लिए डट गया। दूसरे दिन सुल्तान महमूद ने अपनी समस्त सेना को ३ भागो मे विभाजित किया। एक सेना सुल्तान गयासुद्दीन के अधीन तथा एक सेना गजनी खा[3] के, जिसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन थी, अधीन नियुक्त की ओर उन्हे युद्ध के लिए भेजा। एक चुनी हुई सेना अपने साथ रख ली। सुल्तान मुहम्मद[4], मलिक बहलोल लोदी, सैयिद खा[5], दरिया खा, कुतुब खा, तथा अन्य सरदारो को युद्ध के लिए भेजा। युद्ध प्रारम्भ हो गया। रात्रि तक दोनो ओर की सेनाये युद्ध करती रही तथा वीरता और पौरुष प्रदर्शित करती रही। अन्त मे दोनो ओर की सेनाये लौट गई और उन्होने अपने-अपने स्थान पर पडाव किया।

सयोग से सुल्तान महमूद ने उस रात्रि मे स्वप्न देखा कि एक धृष्ट तथा दुष्ट व्यक्ति ने मन्दू के किले पर आक्रमण करके होशग शाह की कब्र से चत्र निकाल कर एक ऐसे व्यक्ति के सिर पर जिसके (३२३) वश का कोई पता न था लगा दिया है। प्रात काल दु ख तथा चिन्ता के चिह्न उस पर दृष्टिगत होने लगे। उस समय सुल्तान मुहम्मद ने सधि के लिए अपने दूत भेजे। सुल्तान महमूद ने सधि करना स्वीकार कर लिया और वह मालवा की ओर चल खडा हुआ। उसे मार्ग मे यह सूचना मिली कि सयोगवश उसी रात्रि मे कुछ गुण्डो ने शादियाबाद मे उपद्रव तथा अशाति फैला दी थी किन्तु आजम हुमायूँ के प्रयत्न से उसका अन्त हो गया। कुछ इतिहासो मे यह लिखा है कि सुल्तान महमूद

१ एक पोथी के अनुसार 'हारा सुई द्वार'।
२ एक पोथी मे 'तबना' और एक मे 'बेशा'।
३ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदी खां'।
४ एक पोथी के अनुसार 'महमूद'।
५ एक पोथी के अनुसार 'रशीद खां'।

को सूचना मिली कि सुल्तान अहमद गुजराती मालवा पर चढाई करने के लिए आ रहा है और इसी कारण वह वापस चला गया। यह बात ठीक ज्ञात होती है।

नालचा मे उद्यान तथा भवनो का निर्माण

सक्षेप मे सुल्तान महमूद १ मुहर्रम ८४६ हि० (१२ मई १४४२ ई०) को शादियाबाद पहुचा। जो लोग इनाम के पात्र थे उन्हे इनाम तथा उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। उस वर्ष उसने नालचा कस्बे के समीप एक उद्यान लगवाया और उस उद्यान मे एक भव्य गुम्बद और कुछ स्थानो पर महलो का निर्माण करवाया। वह बहुत समय तक शादियाबाद मे ठहरा रहा।

चित्तौड पर आक्रमण करने का सकल्प

कुछ समय उपरान्त उसने अपनी सेना की हानियो तथा क्षतियो की पूर्ति करके राजपूतो को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया और चित्तौड की ओर रवाना हुआ।

कालपी की ओर प्रस्थान

उसी समय सुल्तान महमूद को यह सूचना पहुचाई गई कि कालपी के हाकिम नसीर अब्दुल कादिर ने नसीर शाह की उपाधि धारण करके स्वतन्त्र शासन प्रारम्भ कर दिया है। उस विलायत के प्रतिष्ठित व्यक्तियो के इस आशय के पत्र प्राप्त हुये कि, "नसीर शाह शरीअत के सन्मार्ग से विचलित होकर जिन्दिका[1] तथा इल्हाद[1] के मार्ग पर अग्रसर है।" उन लोगो ने उसके अत्याचारो के प्रति न्याय की याचना की थी। सुल्तान महमूद ने नसीर शाह को दण्ड देना निश्चय करके कालपी की ओर प्रस्थान (३२४) किया। नसीर अब्दुल कादिर ने सुल्तान महमूद के आक्रमण के समाचार पाकर अपने चाचा अली खा को नाना प्रकार के पेशकश सहित सुल्तान महमूद की सेवा मे भेजा और यह प्रार्थना की कि, "मेरे विषय मे जो समाचार पहुचाये गये है वे पूर्णत असत्य है। इस बात की जाच के लिए सच्चे लोगो को भेजकर पता लगा लिया जाय और यदि उसमे लेश मात्र भी कुछ सच निकले तो मुझे जो कुछ भी दण्ड उचित समझा जाय दिया जाय।" कई दिन तक सुल्तान महमूद ने नसीर खां के दूत को अपने दरबार मे उपस्थित न होने दिया और निरन्तर यात्रा करता हुआ बढता चला गया। जब वह सारगपुर के निकट पहुचा तो आजम हुमायूँ तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो के निवेदन पर (सुल्तान ने) नसीर के अपराधो को क्षमा करके उसके दूत को अभिवादन की अनुमति दी और उसके पेशकश स्वीकार किये। शिक्षा तथा परामर्शयुक्त पत्र लिखकर अली खा को बिदा किया और चित्तौड की विलायत की ओर प्रस्थान किया।

चित्तौड़ की ओर प्रस्थान

जब उसने भीम नदी पार कर ली तो वह नित्यप्रति चित्तौड की ओर सेनायें भेज कर उसे नष्ट-भ्रष्ट करने लगा और वहा के लोगो को बन्दी बनाने लगा। मदिरो का खण्डन करके मस्जिदो का निर्माण करने लगा। वह प्रत्येक पडाव पर ३–४ दिन ठहरता था।

१ इस्लाम की शरीअत के विरुद्ध आचरण 'जिन्दिका' तथा 'इल्हाद' कहलाता है।

कुम्भलमीर के मन्दिर पर आक्रमण

जब उसने कुम्भलमीर के निकट, जो उस प्रदेश का बहुत बडा किला है और हिन्दुस्तान मे अपनी दृढता के लिए प्रसिद्ध है, पडाव किया तो उस स्थान पर कुम्भा के राय के वकील देवा ने किले मे बन्द होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। सयोग से किले के समक्ष एक भव्य मदिर का निर्माण कराया गया था और उसके चारो ओर चहारदीवारी बनवा दी गई थी। वह (मन्दिर) युद्ध के अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य भण्डारो से परिपूर्ण किया गया था। सुल्तान महमूद ने मदिर के कोट को विजय करने का निश्चय किया और १ सप्ताह मे उसे विजय कर लिया। अत्यधिक राजपूतो की हत्या करके उन्हे बन्दी बना लिया और नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। मदिरो के भवन के विषय मे उसने आदेश दिया कि उसमे लकडी भरकर आग लगा दी जाय और उनकी दीवारो पर जल तथा सिरका फेक दिया गया। क्षण (३२५) भर मे वह भव्य भवन जो कई वर्षों मे तैयार हुआ होगा नष्ट हो गया। मूर्त्तियो को तुडवा कर उसने कसाइयो को दे दिया ताकि वे उनसे मास बेचने के तराजू के बाट तैयार करे। सबसे बडी मूर्ति को जो भेड की आकृति की थी चूर्ण करके पान के पत्ते के साथ राजपूतो को इस आशय से दे दिया गया कि वे अपने देवता को खाते रहे।

चित्तौड़ पर्वत के आचल के किले की विजय

इस कार्य के सपन्न हो जाने के उपरान्त उसने चित्तौड की ओर प्रस्थान किया। उस स्थान के निकट पहुच कर उसने किले को जो चित्तौड पर्वत के आचल मे स्थित है युद्ध करके छीन लिया। बहुत बडी सख्या मे राजपूत मारे गये। वह चित्तौड को घेरने की तैयारी कर ही रहा था कि गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाया कि, "कुम्भा स्वय किले मे नही है और आज किले से निकल कर उस पर्वत की ओर जो उस क्षेत्र मे है पहुच गया है।" सुल्तान ने उसका पीछा किया। कुछ सेनाओ को विभिन्न दलो मे विभाजित करके प्रत्येक दिशा मे कुम्भा का पीछा करने के लिए भेजा। सयोग से एक सेना की कुम्भा से मुठभेड हो गई। घोर युद्ध हुआ। वह पराजित होकर चित्तौड के किले मे पहुच गया। सुल्तान महमूद ने किले को घेरने के लिए एक सेना नियुक्त कर दी और स्वय विलायत[1] के मध्य मे पडाव किया। (वहा से) नित्यप्रति विलायत के विध्वस हेतु सेनाये भेजा करता था।

आजम हुमायूँ खाने जहाँ की मृत्यु

उसने आजम हुमायूँ खाने जहा को इस आशय से बुलवाया कि वह राजपूतो की उस विलायत[2] पर जो शादियाबाद की ओर है अधिकार जमा ले। जब आजम हुमायूँ मदसौर पहुचा, तो रुग्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। सुल्तान महमूद यह समाचार पाकर बडा दुखी हुआ और उसने अत्यधिक विलाप किया और दुःख की अवस्था मे अपने मुख को आहत कर डाला। मदसौर के किले मे पहुच कर पिता का शव शादियाबाद भेज दिया। ताज खा को, जो आरिजे लश्कर[3] अर्थात् बख्शी था, उस सेना का सेनापति नियुक्त करके अपने शिविर को लौट आया।

१ चित्तौड़ के राज्य के मध्य में।
२ राज्य।
३ वह व्यक्ति जो सेना की भरती एव निरीक्षण इत्यादि करता था।

रात्रि मे छापे तथा सुल्तान महमूद की वापसी

वर्षा ऋतु के आ जाने पर सुल्तान ने यह निश्चय किया कि किसी टीले पर पहुच कर वहा पडाव किया जाय और वर्षा ऋतु के उपरान्त चित्तौड के किले का घेरा डाला जाय। कुम्भा ने २५ (३२६) जिलहिज्जा ८४६ हि० (२६ जून १४४३ ई०) को शुक्रवार की रात्रि में १० हजार अश्वारोहियो तथा ६ हजार पदातियो को लेकर छापा मारा। सुल्तान महमूद ने सावधानी के कारण इस प्रकार सेना की रक्षा की व्यवस्था की थी कि कुम्भा से कुछ न हो सका और राजपूत बहुत बडी सख्या मे मारे गये। दूसरी रात्रि मे सुल्तान महमूद ने सेना तैयार करके कुम्भा के दायरे[1] पर छापा मारा। कुम्भा आहत होकर चित्तौड की ओर भाग गया और बहुत से राजपूत तलवार के घाट उतार दिये गये। सुल्तान महमूद के सहायको को लूट मे अत्यधिक सपत्ति प्राप्त हुई। सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और चित्तौड के किले की विजय को दूसरे वर्ष के लिए स्थगित करके बिना किसी हानि के अपनी राजधानी शादियाबाद की ओर लौट गया।

मदरसे तथा मीनारे का निर्माण

जिलहिज्जा ८४६ हि० (जून १४४३ ई०) के अन्त मे उसने होशगशाही जामा मस्जिद के समीप एक मदरसे तथा हफ्त मन्जर मीनारे का निर्माण प्रारम्भ कराया।

सुल्तान महमूद शर्की के दूत सुल्तान महमूद की सेवा मे

८४९ हि० (१४४५–४६ ई०) मे जौनपुर के हाकिम सुल्तान इबराहीम शर्की के पुत्र सुल्तान महमूद का दूत नाना प्रकार की पेशकश लेकर उपस्थित हुआ। पेशकश पहुचाने के उपरान्त उसने यह मौखिक सदेश कालपी के शासक नसीर बिन अब्दुल कादिर के विषय मे प्रस्तुत किया कि, "वह शरीअत के सन्मार्ग से विचलित हो गया है और इल्हाद तथा ज़िन्दिक़े के मार्ग पर अग्रसर है। उसने रोजा नमाज त्याग कर मुसलमान स्त्रियो को नृत्य की शिक्षा हेतु हिन्दू नायको को दे दिया है। क्योकि सुल्तान होशग के राज्यकाल से कालपी के अधिकारी मालवा के सुल्तान के अधीन होते चले आये है अत मैने यह परमावश्यक समझा कि उसके विषय मे सर्वप्रथम आपको सूचना भेजी जाय। यदि आपके पास उसको दण्ड देने का समय न हो तो मुझे आदेश दे तो मैं उसे ऐसा दण्ड दूँ जिससे अन्य लोग भी शिक्षा ग्रहण कर सके।"

राजदूत को सुल्तान का उत्तर

सुल्तान महमूद ने उत्तर भेजा कि, "मेरी अधिकाश सेना इधर-उधर[2] के विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए गई हुई है। क्योकि आपने धर्म की रक्षा करना निश्चय किया है अत आपके लिए यह (३२७) बात शुभ हो।" उसी सभा मे उसने राजदूत को खिलअत तथा वह निश्चित धन, जिसके देने की प्रथा उस काल मे थी, प्रदान करके उसे विदा कर दिया।

सुल्तान महमूद शर्की द्वारा कालपी पर आक्रमण

जब राजदूत जौनपुर पहुंचा तो उसने प्रार्थना-पत्र का उत्तर प्रस्तुत किया। सुल्तान महमूद

१ क्षेत्र।
२ एक पोथी के अनुसार 'मेवात के विद्रोहियो'।

शर्की ने अत्यधिक प्रसन्न होकर सुल्तान की सेवा मे २० हाथी भेजे और एक सेना तैयार करके कालपी की ओर प्रस्थान किया। नसीर अब्बुल कादिर को वहा से निर्वासित कर दिया।

सुल्तान महमूद का सुल्तान महमूद शर्की को आक्रमण से रोकना

नसीर अब्बुल कादिर ने महमूद शाह को प्रार्थना-पत्र भेजा जिसमे यह लिखा कि, "सुल्तान होशग के राज्यकाल से हम लोग इस समय तक आपके प्रति निष्ठावान् रहे। इस समय सुल्तान महमूद शर्की ने फक़ीर के राज्य का अपहरण कर लिया है। क्योकि मै सर्वदा आप ही से सहायता की याचना किया करता था अत आप ही से सहायता लेने के लिए चन्देरी की ओर रवाना हो रहा हू।" सुल्तान महमूद ने अली खा को सुल्तान महमूद शर्की की सेवा मे पेशकश इत्यादि सहित भेज कर प्रार्थना कराई कि, "क्योकि नसीर खा बिन अब्बुल कादिर आपके प्रयत्नो के फलस्वरूप अनाचरण को त्याग कर तोबा[1] कर रहा है और शरीअत के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए तैयार है और इस कारण कि सुल्तान होशग शाह के समय से वह हमसे सहायता लिया करता था, अत आशा की जाती है कि उसकी तोबा पर ध्यान देते हुए आप उसे क्षमा कर देगे और उसका राज्य उसे वापस कर देगे।" अली खा के पहुचने के उपरान्त सुल्तान महमूद शर्की ने सतोषजनक उत्तर न दिया और टालमटोल करने लगा।

सुल्तान महमूद का महमूद शर्की पर आक्रमण

महमूद शाह खलजी ने अपनी मर्यादा तथा पौरुष को ध्यान मे रखते हुए नसीर अब्बुल कादिर की सहायता करना निश्चय कर लिया। २ शव्वाल ८४८ हि० (१२ जनवरी १४४५ ई०) को वह (३२८) चदेरी की ओर रवाना हुआ। चदेरी के क्षेत्र मे नसीर शाह सेवा मे उपस्थित हुआ और विलम्ब किये बिना सुल्तान एरिज[2] तथा भान्दीर की ओर रवाना हो गया। जब सुल्तान महमूद शर्की को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने शहर से निकल कर एरिज के उपान्त मे पडाव किया। जुनैद खा के पुत्र मुबारक खा को जो अपने पूर्वजो के समय से उस स्थान का हाकिम था बन्दी बना लिया और उसे अपने साथ ले लिया। वहा से प्रस्थान करके यमुना नदी के खादर मे, जहा मार्ग सकरा था और शत्रु को पार करने की शक्ति न थी, पडाव किया। अपनी सेना को चारो ओर से दृढ कर लिया। महमूद शाह खलजी ने उसे छोड कर कालपी की ओर प्रस्थान किया। वह (शर्की) भी सतोष को त्याग कर कालपी की ओर रवाना हुआ। इसी बीच मे खलजी सेना के वीरो ने उसके शिविर पर आक्रमण करके अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त कर ली। वह भी अपने आदमियो की सहायतार्थ पलट कर युद्ध करने लगा। सायकाल तक युद्ध होता रहा। तदुपरान्त दोनो सेनाओ ने अपने-अपने पडाव पर विश्राम किया। वर्षा ऋतु के निकट आ जाने के कारण सुल्तान खलजी कालपी से सबधित कुछ स्थानो को नष्ट करके फतहाबाद लौट आया और वहा 'कसरे हफ्त तबका' का निर्माण प्रारम्भ कराया।

एरिज कस्बे की प्रजा तथा निवासियो ने मुबारक खा बिन (पुत्र) जुनैद खा के अत्याचार तथा शोषण के प्रति न्याय की याचना की। सुल्तान महमूद खलजी ने मलिकुश्शर्क, मुजफ्फर इबराहीम, चदेरी के हाकिम को अत्यधिक सेना सहित एरिज पर चढाई करने के लिए भेजा। जब वह एरिज के उपान्त मे पहुचा तो समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान महमूद शर्की ने मलिक कालू को उससे युद्ध करने

१ घृणित अथवा निंद्य कर्म पुन न करने का पश्चात्ताप या शपथपूर्वक की गई दृढ प्रतिज्ञा।
२ एक पोथी के अनुसार 'एरजा'।

के लिए भेजा है। वह राठ कस्बे मे उतर पडा। मलिक मुजफ्फर इबराहीम ने भी राठ कस्बे की ओर (३२९) प्रस्थान किया। जब दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई तो मलिक कालू भाग गया और राठ निवासियो ने उपस्थित होकर मलिक मुजफ्फर इबराहीम से भेट की। उसने सबको बन्दी बना कर चदेरी भेज दिया और पुन एरिज की ओर चल पडा। मार्ग मे उसने सुना कि सुल्तान महमूद शर्की ने अपनी अधिकाश सेना परहारा की विलायत पर आक्रमण करने के लिए, जहा का राय महमूद शाह खलजी के अधीन था, भेजी है। मलिक मुजफ्फर ने अपने राज्य की रक्षा एरिज की विजय से सर्वोपरि समझ कर उस क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। शर्की की सेना यह समाचार पाकर राठ कस्बे की ओर रवाना हुई। जब कई दिनो तक युद्ध होता रहा और दोनो ओर से मुसलमानो की हत्या होने लगी तो शेख जायल्दा ने जो अपने काल के बडे ही सम्मानित व्यक्ति थे और जिनके अनेको चमत्कार बडे प्रसिद्ध थे, सुल्तान महमूद शर्की के परामर्श से महमूद शाह खलजी को सधि के विषय मे पत्र लिखा और शेख के प्रयत्नो के फलस्वरूप इस शर्त पर सधि हो गई कि, "इस समय सुल्तान शर्की राठ तथा महोबा कस्बे को नसीर शाह को प्रदान कर दे। महमूद शाह खलजी के वापस चले जाने के चार मास उपरान्त वह कालपी को भी छोड देगा।" ४ मास की अवधि इसलिये निश्चित की गई कि उसके धर्म के विषय मे ज्ञान प्राप्त हो सके। इस सधि के अनुसार महमूद शाह खलजी शादियाबाद लौट गया।

दारुश्शफा का निर्माण

८४८ हि० (१४४४–४५ ई०) मे उसने एक दारुश्शफा[1] का निर्माण कराया और कुछ ग्राम औषधि पर व्यय तथा रोगियो की आवश्यकता के लिए वक्फ कर दिये। मौलाना फजलुल्लाह हकीम को जिसकी उपाधि मलिकुल हुकमा थी रोगियों तथा पागलो के उपचार के लिये नियुक्त कर दिया।

मन्दलगढ पर चढाई

२० रजब ८५० हि० (११ अक्तूबर १४४६ ई०) को उसने एक सेना लेकर मदलगढ के किले (३३०) की विजय हेतु प्रस्थान किया। जब वह रणथम्भोर के किले के क्षेत्र मे पहुचा तो उसने वहा का राज्य बिहार खा[2] से लेकर मलिक सैफुद्दीन को प्रदान कर दिया और निरन्तर यात्रा करता हुआ बनारस नदी के तट पर पडाव किया। राय कुम्भा युद्ध करने की शक्ति न देखकर मदलगढ के किले मे बन्द हो गया। दूसरे तथा तीसरे दिन राजपूतो ने किले से निकल कर वीरता तथा पौरुष का प्रदर्शन किया किन्तु अन्त मे विवश होकर पेशकश प्रस्तुत करना स्वीकार कर लिया। सुल्तान खलजी ने कुछ कारणवश सधि करना स्वीकार कर लिया और लौट गया।

ब्याना का सुल्तान महमूद के अधिकार मे आना

अल्प समय ही मे उसने सेना तैयार करके ब्याना के किले को विजय करने के लिये प्रस्थान किया। जब वह ब्याना से २ फरसग पर पहुचा तो उस स्थान के अधिकारी महमूद खा ने अपने पुत्र औहद खा को सुल्तान की सेवा मे भेजा और १०० घोडे तथा १ लाख तन्के नकद पेशकश के रूप मे भेट किये। महमूद शाह ने उसे विशेष खिलअत द्वारा सम्मानित करके बिदा कर दिया। महमूद खा के लिए

१ चिकित्सालय।
२ एक पोथी के अनुसार 'बहादुर खा'।

जरदोजी[1] की कबा, रत्न-जटित मुकुट, सुनहरी पेटी तथा सुनहरी जीन एव लगाम सहित अरबी घोडे भेजे। महमूद खा ने खिलअत पहन कर महमूद शाह के प्रति ईश्वर से शुभकामनाये की, और सुल्तान महमूद के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चला दिया। सुल्तान यह समाचार पाकर ब्याना से २ फरसग से लौट आया।

अन्य स्थानो की विजय

मार्ग मे उसने अल्हनपुर के कस्बे को, जो रणथम्भोर के निकट है, विजय किया और ८ हजार अश्वारोही तथा २५ हाथी चित्तौड की विजय हेतु भेजे। कोटा के राजा से १ लाख २५ हजार तन्के पेशकश के रूप मे लेकर उसने शादियाबाद की ओर प्रस्थान किया।

गगदास की सहायतार्थ सेना भेजना

८५४ हि० (१४५०–५१ ई०) मे चम्पानीर के किले के राजा गगदास ने पेशकश भेज कर (३३१) निवेदन कराया कि, "सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) सुल्तान अहमद ने चम्पानीर के पर्वत को घेर लिया है। क्योकि यह दास सर्वदा आपसे सहायता की याचना करता रहा है अत उसे आपसे सहायता की आशा है।" सुल्तान महमूद ने गगदास की सहायतार्थ प्रस्थान किया। मार्ग मे उसे यह समाचार प्राप्त हुआ कि सुल्तान कुतुबुद्दीन बिन सुल्तान मुहम्मद गुजराती पेशकश प्राप्त करने के लिए ईदर की ओर आया हुआ है। सुल्तान महमूद ने इस समाचार पर विश्वास न करके बारासम्बूर[2] की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान मुहम्मद ने यह समाचार पाकर लादने वाले पशुओ के नष्ट हो जाने के कारण अपने शिविरो तथा कारखानो को जलाकर अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान कुतुबुद्दीन भी अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। जब सुल्तान महमूद को इसकी सूचना मिली तो उसने मार्ग से लौट कर महेन्द्री नदी के तट पर पडाव किया। गगदास ने १३ लाख तन्के नकद और कुछ घोडे पेशकश के रूप मे भेट किये और उस मजिल पर सुल्तान की सेवा मे पहुचा। सुल्तान महमूद ने उसी दरबार मे उसे जरदोजी की कबा देकर बिदा कर दिया और स्वय शादियाबाद की ओर रवाना हुआ।

मार्ग मे उसने ईदर के राजा राय बीर[3] को ५ हाथी २१ घोडे, ३ लाख तन्के नकद इनाम देकर बिदा कर दिया और बहुत समय तक शादियाबाद मे ठहर कर राज्य तथा सेना का प्रबन्ध करता रहा।

गुजरात पर आक्रमण हेतु प्रस्थान

८५५ हि० (१४५१ ई०) मे उसने १ लाख से अधिक अश्वारोहियो को लेकर गुजरात की विजय हेतु प्रस्थान किया और बवाली[4] की घाटी को पार करके सुल्तानपुर के कस्बे को घेर लिया। मलिक अलाउद्दीन सुहराब जो सुल्तान कुतुबुद्दीन का गुमाश्ता[5] था कई दिन तक किले के बाहर निकल

१ सोने के तार के काम की।
२ एक पोथी के अनुसार 'बारा सुन्दर' और एक पोथी के अनुसार 'बारसीनूर'।
३ एक पोथी के अनुसार 'राय शेर'।
४ एक पोथी के अनुसार 'तवाली'।
५ एजेट।

(३३२) कर युद्ध करता रहा। जब वह सहायता प्राप्त करने की ओर से निराश हो गया तो क्षमा याचना करके सुल्तान महमूद की सेवा मे उपस्थित हो गया। सुल्तान महमूद ने उसके परिवार को मन्दू के किले मे भेज दिया और उसे शपथ दी कि वह अपने स्वामी का कदापि साथ न छोडेगा। उसने उसे मुबारिज खा की उपाधि प्रदान की और उसे अपनी सेना के अग्रिम दल मे नियुक्त किया। तत्पश्चात् वह अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ।

गुजरात के सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु

मार्ग मे उसे समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) सुल्तान अहमद की मृत्यु हो गई है और उसका पुत्र सुल्तान कुतुबुद्दीन उसका उत्तराधिकारी बना है। सुल्तान महमूद ने यद्यपि सुल्तान मुहम्मद के राज्य को नष्ट करना निश्चय कर लिया था किन्तु उदारतापूर्वक उसने सवेदना की प्रथाओ को सम्पन्न कराया और सेना के प्रतिष्ठित लोगो तथा अमीरो मे उस समय की प्रथानुसार पान तथा शर्बत बटवाया। उसने सुल्तान कुतुबुद्दीन को एक पत्र भेज कर सवेदना प्रकट करते हुये उसे राज्य की बधाई दी।

बरौदरा पर आक्रमण

इस पर भी उसने बरौदरा के कस्बे को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और लोगो को बन्दी बनाने तथा नष्ट-भ्रष्ट करने मे कोई कमी न की। कई हजार धर्मनिष्ठ मुसलमान तथा काफिर बन्दी बना लिये। वह कई दिन तक उस कस्बे मे ठहरा रहा। तदुपरान्त अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ।

इसी समय मलिक अलाउद्दीन सुहराब, जो समय की प्रतीक्षा कर रहा था, भाग कर सुल्तान कुतुबुद्दीन के पास पहुचा। उसने बाह्य रूप से शपथ के समय प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने स्वामी की नमकहरामी न करेगा। किन्तु उसके हृदय मे अपने प्राचीन स्वामी का ध्यान था। उसने उसके प्रति निष्ठा के कारण अपने परिवार को त्याग दिया। सुल्तान महमूद ने निरन्तर यात्रा करते हुये सरकिज[1] मे जो अहमदाबाद से २५ कोस पर है पडाव किया। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने खानपुर नामक स्थान पर, जो उपर्युक्त कस्बे से ३ कोस पर है, पडाव किया। कई दिन तक दोनो बादशाह एक दूसरे के समक्ष पडाव किये रहे। सफर मास की अतिम रात्रि मे सुल्तान महमूद छापा मारने के उद्देश्य से सवार हुआ और (३३३) अपने शिविर से निकला। मार्गदर्शक की भूल के कारण समस्त रात खुले मैदान मे खडा रहा। प्रात काल उसने अपनी सेना के दाये भाग को सारगपुर की सेना से सुसज्जित करके उस सेना का नेतृत्व अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन को प्रदान कर दिया। चदेरी के अमीरो को बाये भाग की सेना के साथ नियुक्त किया और उसे गजनी खा[2] के नेतृत्व मे जो उसका छोटा पुत्र था कर दिया। वह स्वय सेना के मध्य भाग मे ठहरा और युद्ध के लिए तैयार हुआ। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने भी गुजरात की सेना सहित पक्तिया ठीक की और रणक्षेत्र की ओर रवाना हुआ। सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के अग्रिम दल के सामने से भाग कर सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेवा मे उपस्थित हुआ। मुजफ्फर खा, जो चदेरी का एक प्रतिष्ठित अमीर था, सुल्तान महमूद की सेना के बाये भाग से पृथक् हुआ और उसने सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के दाये भाग पर आक्रमण किया। वह सेना युद्ध की शक्ति न देखकर भाग खड़ी

१ एक पोथी के अनुसार 'सरकज', दूसरी मे 'कमरबज'।
२ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदी खा'।

हुई। मुजफ्फर खा ने सुल्तान कुतुबुद्दीन के शिविर तक पीछा करके लूट मार प्रारम्भ कर दी। सुल्तान कुतुबुद्दीन के खजाने मे प्रविष्ट होकर उसने अपने समस्त हाथियो को लदवा कर अपने शिविर मे भेज दिया।

सुल्तान महमूद की पराजय

जब उसके हाथी लौट कर आये और वह उन्हे दूसरी बार लदवाना चाहता था तो उसने सुना कि सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के एक दल ने शाहजादा फिदी खा[1] की सेना की दुर्दशा देखकर उस पर आक्रमण किया और वह मुकाबला न कर सका। जानी बेग बाहर निकल गया। मुजफ्फर खा ने लूट से हाथ खीच लिया और स्वय एक कोने मे पहुच गया। सुल्तान महमूद सेना के छिन्न-भिन्न होने तथा बाये भाग की सेना के विनाश से आश्चर्यचकित होकर २०० अश्वारोहियो को लेकर रणक्षेत्र मे वीरता प्रदर्शित करता रहा। जब तक उसके निषग मे बाण रहे तब तक वह वाण चलाता रहा और वीरता प्रदर्शित करता रहा। उस समय सुल्तान कुतुबुद्दीन एक सेना लेकर एक कोने से जहा वह छिपा हुआ (३३४) था निकला और उसने सुल्तान महमूद पर आक्रमण किया। सुल्तान महमूद बडी वीरता से युद्ध करता हुआ १३ व्यक्तियो सहित अपने शिविर मे पहुच गया। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने इस विजय को ईश्वर की बहुत बडी देन समझ कर उसका पीछा न किया। ८१ हाथी तथा अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति उसे प्राप्त हो गई।

सुल्तान महमूद रात भर अपने दायरे[2] मे सवार होकर खडा रहा। जब पाच-छ हजार सवार एकत्र हो गये तो आधी रात्रि मे वह मन्दू[3] की ओर चल दिया। मार्ग मे कोल तथा भील लोगो ने उसकी सेना को बडी हानि पहुचाई। सुल्तान महमूद को अपने पूरे राज्यकाल मे इस पराजय के समान अन्य कोई पराजय न प्राप्त हुई थी।

सूरत पर आक्रमण

जब वह मन्दू पहुचा तो उसने अपनी सेना की टूट-फूट को ठीक किया और अपने पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन को सूरत कस्बे पर आक्रमण करने के लिए, जो ताप्ती[4] नदी के तट पर बसा है और गुजरात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है, नियुक्त किया। सुल्तान गयासुद्दीन सूरत के थोडे से स्थानो को विध्वस करके लौट आया। सयोग से निजामुलमुल्क तथा उसके पुत्रो की धूर्तता, उनके विश्वासघात तथा विरोध के समाचार सुल्तान महमूद को प्राप्त हुये। महमूद शाह के आदेशानुसार उनकी हत्या करा दी गई।

मारवाड पर आक्रमण करने का सकल्प तथा गुजरात के सुल्तान से सधि

८५७ हि० (१४५३-५४ ई०) मे सुल्तान महमूद ने मारवाड की विजय हेतु चढाई की, किन्तु वह सुल्तान कुतुबुद्दीन की ओर से सतुष्ट न था अत उसने यही उचित समझा कि सर्वप्रथम सुल्तान कुतुबुद्दीन से सधि कर ली जाय तत्पश्चात् कुम्भा के राज्य को विजय किया जाय। यह बात उसने अपने

१ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदन अथवा फ़द्दन खां'।
२ क्षेत्र।
३ एक पोथी के अनुसार 'मैदान'।
४ एक पोथी के अनुसार 'नबती'।

(३३५) हृदय मे गुप्त रखी और सैनिको को तैयार होने का आदेश दिया। शादियाबाद से वह धार कस्बे मे पहुचा। वहा से ताज खा को एक सुसज्जित सेना देकर गुजरात की सीमा पर इस आशय से भेजा कि वह सधि की वार्ता प्रारम्भ करे। ताज खा ने सुल्तान कुतुबुद्दीन के वजीरो को पत्र लिखे और वाक्पटु दूतो के हाथ उनको भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि, "दोनो ओर की शत्रुता प्रजा की परेशानी का कारण है और सधि तथा सगठन, दोनो की शाति तथा प्रफुल्लता का कारण होगा।" वाद-विवाद के उपरान्त सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सधि करना स्वीकार कर लिया और दोनो ओर से सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने मध्यस्थ बनकर शपथ द्वारा सधि को दृढ बना लिया। यह निश्चय हुआ कि कुम्भा की विलायत[1] से जो स्थान गुजरात से मिले हुए है उन्हे कुतुब शाह की सेना विध्वस करे और मेवाड[2] तथा अजमेर एव उस क्षेत्र के प्रदेशो पर महमूद शाह अधिकार जमाये और जहा तक आवश्यकता हो एक दूसरे को सहायता देने मे कमी न करे।

हादूती के राजपूतो को दड

सुल्तान महमूद ८५८ हि० (१४५४ ई०) मे विद्रोही राजपूतो, जिन्होने हादूती[3] के उपान्त मे विद्रोह कर रक्खा था, को दण्ड देने के लिए पहुचा। महौली[4] कस्बे मे उसने अत्यधिक राजपूतो की हत्या करा दी और उन लोगो के परिवार को बन्दी बनाकर मन्दू भेज दिया।

ब्याना की ओर प्रस्थान

वहा से उसने ब्याना की ओर प्रस्थान किया। जब वह ब्याना के निकट पहुचा तो वहा के हाकिम दाऊद खा ने अत्यधिक पेशकश प्रेषित किये और निष्ठापूर्वक व्यवहार किया। उस क्षेत्र को उसी के पास रहने दिया गया। यूसुफ ख़ा हिंदौनी तथा ब्याना के हाकिम के मध्य मे जो शत्रुता थी उसे उसने अपने प्रयत्न तथा स्नेह से निष्ठा मे परिवर्तित करा दिया। लौटते समय उसने रणथम्भोर तथा (३३६) हादूती[5] के किले का राज्य गज़नी खा[6] को, जिसकी उपाधि सुल्तान गयासुद्दीन थी, प्रदान कर दिया और शादियाबाद पहुच गया।

माहौर की विजय हेतु प्रस्थान

उसी वर्ष सुल्तान सिकन्दर ख़ा तथा जलाल खा बुख़ारी ने, जो सुल्तान अलाउद्दीन बहमनी दक्खिनी के प्रतिष्ठित अमीर थे, सुल्तान महमूद की सेवा मे प्रार्थना-पत्र प्रेषित किये और माहौर के किले की विजय की ओर जो बरार का बहुत बडा किला है प्रेरित किया। सुल्तान महमूद एक सेना तैयार करके होशगाबाद के मार्ग से माहौर की ओर रवाना हुआ। महमूदाबाद के निकट सिकन्दर खा बुख़ारी उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ। जब उसने माहौर के किले को घेर लिया तो सुल्तान अलाउद्दीन एक शक्तिशाली असख्य सेना लेकर किले वालो की सहायतार्थ पहुचा। सुल्तान महमूद

१ राज्य।
२ एक पोथी के अनुसार 'मेवात'।
३ एक पोथी के अनुसार 'हादोली'।
४ एक पोथी के अनुसार 'मरहौली'।
५ एक पोथी के अनुसार 'हादोली' और एक के अनुसार 'हारोती'।
६ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदी ख़ा' और एक के अनुसार 'कदी खा'।

अपने आप मे युद्ध की शक्ति न देख कर लौट गया। इस घटना का सविस्तार उल्लेख बहमनी सुल्तानो के इतिहास मे किया गया है।

बकलाना की सहायतार्थ प्रस्थान

लौटते समय यह समाचार प्राप्त हुये कि आसीर के अधिकारी मुबारक खा ने गुजरात तथा दकिन के मध्य की बकलाना नामक विलायत[1] पर चढाई कर दी है। वहा का हाकिम महमूद शाह के अधीन था। सुल्तान महमूद ने उसकी सहायता तथा प्रोत्साहन अपने लिए आवश्यक समझ कर बकलाना की विलायत की ओर प्रस्थान किया। उसने अपने पूर्व इकबाल खा तथा यूसुफ खा को भेजा । मुबारक खा एक भारी सेना लेकर मुकाबले के लिए पहुचा किन्तु युद्ध के उपरान्त भाग खडा हुआ । सुल्तान महमूद आसीर प्रदेश के कुछ ग्रामो तथा स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट करके शादियाबाद लौट आया।

बकलाना के राज्य के पुत्र का सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होना

(३३७) ८५८ हि० (१४५४ ई०) मे सुल्तान महमूद को समाचार प्राप्त हुये कि "बकलाना की विलायत के राजा राय बाबू का पुत्र मेरी सेवा मे उपस्थित होने का इच्छुक है। आसीर की विलायत का हाकिम मुबारक खा बीच मे पड कर खराबी पैदा कर रहा है और आने से रोक रहा है।" सुल्तान महमूद ने सुल्तान गयासुद्दीन को शीघ्रातिशीघ्र उसे पराजित करने के लिए भेजा। जब मुबारक खा को यह समाचार प्राप्त हुये तो वह अपने प्रदेश की ओर वापस चला गया और राय बाबू का पुत्र अत्यधिक पेशकश सहित उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसे सम्मानित किया गया। विदा होकर वह अपनी विलायत को चला गया और सुल्तान गयासुद्दीन ने रणथम्भोर प्रान्त की ओर प्रस्थान किया।

कुम्भा के राज्य पर आक्रमण

उन्ही दिनो मे सुल्तान महमूद ने चित्तौड के राज्य पर चढाई की। कुम्भा ने उसका आदर-सम्मान किया और सोने और चादी की थोडी सी मुद्राये भेट की। सुल्तान महमूद कुम्भा के नाम की मुद्राओ को देखकर बडा क्रोधित हुआ और उसने पेशकश लौटा दी। सेना वालो ने विनाश तथा विध्वस प्रारम्भ कर दिया और आबादी का कोई चिह्न न रहने दिया।

सुलतान ने मन्सूरुलमुल्क को मन्दसौर के राज्य पर आक्रमण करने के लिए भेजा। उसने उस राज्य मे थानेदारो को नियुक्त करने के लिए उस विलायत के मध्य मे खलजपुर नामक कस्बा बसाने का सकल्प किया। कुम्भा ने यह बात सुनकर दीनता प्रदर्शित की और सुल्तान महमूद की सेवा मे सदेश प्रेषित किया कि "जितनी भी पेशकश निश्चित की जाय मुझे स्वीकार है। मै इसके उपरान्त निष्ठा के मार्ग से विचलित न हूगा किन्तु इसकी शर्त यह है कि सुल्तान खलजपुर को बसाने का विचार त्याग दे।" वर्षा ऋतु के निकट आ जाने के कारण सुल्तान महमूद इच्छानुसार पेशकश लेकर शादियाबाद लौट गया और कुछ समय तक वहा ठहरा रहा।

मदसौर की विजय हेतु प्रस्थान

८५९ हि० (१४५४–५५ ई०) में उसने पुन मदसौर के राज्य को विजय करने का सकल्प किया

1 राज्य

और उस प्रदेश के निकट पहुच जाने के उपरान्त इधर-उधर सेनाये भेजी और स्वय विलायत[1] के मध्य मे ठहरा। उसे प्रतिदिन एक नई विजय का समाचार प्राप्त होता था और वह ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता था।

अजमेर की विजय

(३३८) सयोग से एक दिन उस सेना के पास से, जो हादूती की ओर नियुक्त थी, एक प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि, "हिन्दुस्तान मे इस्लाम के सूर्य का उदय अजमेर के आकाश से हुआ और यहा शेख मुईनुद्दीन हसन सिजजी का मजार है। क्योकि यह स्थान काफिरो के अधीन हो गया है अत यहा इस्लाम तथा मुसलमानो का कोई चिह्न शेष नही।" जब उसे यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने उसी दिन अजमेर की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ शेख के मजार के निकट पहुच गया। शेख की आत्मा से सहायता की याचना करके सेना के बख़्शी को आदेश दिया कि वह अमीरो की सहायता से किले का निरीक्षण करे और मोर्चे बाट दे। इसी बीच मे किले का सरदार गजाधर प्रसिद्ध राजपूतो की सेना लेकर युद्ध के लिए निकला किन्तु सुल्तान महमूद की सेना का मुकाबला न कर सकने के कारण किले मे प्रविष्ट हो गया। ४ दिन तक युद्ध होता रहा, ५वे दिन गजाधर अपनी सेना सहित युद्ध के लिए निकला और युद्ध मे मारा गया। महमूद शाह के कुछ सिपाही भागने वालो के साथ मिलकर द्वार तक पहुचे और किले पर विजय प्राप्त हो गई। प्रत्येक गली मे राजपूतो की लाशो के ढेर लग गये। सुल्तान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके शेख के मजार के तवाफ[2] का सौभाग्य प्राप्त किया और एक भव्य मस्जिद का वहा निर्माण कराया।

ख्वाजा नेमतुल्लाह को सैफ खा की उपाधि देकर (सुल्तान ने) वहा का राज्य उसे प्रदान कर दिया और उस मजार के मुजाविरो[3] को इनाम तथा वृत्ति द्वारा प्रसन्न किया और मन्दलगढ के किले की ओर चला गया।

कुम्भा से युद्ध

वह निरन्तर यात्रा करता हुआ बनारस नदी के निकट उतरा और उसने अमीरो को किले के चारो ओर नियुक्त कर दिया। कुम्भा ने भी अपनी सेना को ३ भागो मे विभाजित करके किले के बाहर भेज (३३९) दिया। जो सेना सुल्तान ने ताज खा के साथ और जो सेना अली खा के साथ भेजी थी उन्होने भी प्रस्तुत होकर बाणो तथा भालो से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। बडा भीषण युद्ध हुआ। महमूद शाह की सेना के बहुत से लोग मारे गये और असख्य राजपूत तलवार के घाट उतार दिये गये। सायकाल दोनो ओर की सेनाओ ने अपने-अपने स्थान पर विश्राम किया। दूसरे दिन प्रात काल अमीरो तथा वजीरो ने राजप्रासाद मे उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "इस वर्ष दुबारा सेना को आक्रमण करना पडा है और वर्षा ऋतु निकट आ गई है, अत यदि कुछ दिन राजधानी शादियाबाद मे पहुच कर सेना की टूट-फूट को ठीक करके विश्राम करे और वर्षा ऋतु के उपरान्त पूर्ण तैयारी करके किले को विजय करने का प्रयत्न करे तो उचित होगा।" सुल्तान महमूद वापस हुआ और उसने कुछ दिन तक विश्राम किया।

१ राज्य।
२ मजार के चारों ओर श्रद्धापूर्वक चक्कर लगाना।
३ मुजाविर --रक्षक अथवा प्रबन्धक।

मन्दलगढ की विजय

२६ मुहर्रम ८६१ हि० (२४ दिसम्बर १४५६ ई०) को उसने पूरी तैयारी करके मन्दलगढ के किले की विजय हेतु प्रस्थान किया। मेवाड के निकट नागौर, अजमेर तथा हाडूती की सेनाये भी सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुई। वहा से सब ने मिलकर मन्दलगढ की ओर प्रस्थान किया और किले को घेर लिया। मार्ग मे जहा कही भी कोई मदिर दृष्टिगत हुआ उसे धराशायी कर दिया। वहा पहुचने के उपरान्त सुल्तान ने आदेश दिया कि, "वृक्षो को जड से काट डाला जाय, भवनो का खण्डन करा दिया जाय और आबादी का कोई चिह्न शेष न रहने दिया जाय।" किले को घेर कर मोर्चे को खाई के पार उतार कर किले की दीवार के निकट लगवा दिया। अल्प समय मे ईश्वर की सहायता से किले पर विजय प्राप्त हो गई और अत्यधिक लोग मारे गये तथा बन्दी बना लिए गये। राजपूतो ने अन्य किले मे जोकि पहाड की चोटी पर था शरण ली और उसकी दृढता पर अभिमान करने लगे। क्योकि किले के ऊपर के हौज का जल तोप[1] के कारण नष्ट हो गया था और प्रथम किले का जल महमूद शाह की सेना के हाथ लग गया था अत किले वाले जल के अभाव के कारण विलाप करने लगे। प्यास प्यास कह कर उन्होने क्षमा (३४०) याचना की और १० लाख तन्के पेशकश के रूप मे भेट करना निश्चय करके किले के नीचे उतर आये और किला सौप दिया। यह महान् विजय १ जिलहिज्जा ८६१ हि० (२० अक्तूबर १४५७ ई०) को प्राप्त हुई। सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति दीनता प्रकट करते हुए आभार प्रदर्शित किया। दूसरे दिन वह किले मे प्रविष्ट हुआ, उसने मदिरो का खण्डन कराया और वहा का मसाला जामा मस्जिद के निर्माण मे लगवा दिया। वहा काजी, मुफ्ती, मुहतसिब[2], खतीब[3] तथा मोअज्जिन[4] नियुक्त किये और उस क्षेत्र की व्यवस्था भली भाति करा दी। १५ मुहर्रम ८६२ हि० (३ दिसम्बर १४५७ ई०) मे उसने चित्तौड की ओर प्रस्थान किया।

कीलवारा तथा बीलवारा की विजय

उस क्षेत्र के निकट पहुच कर शाहजादा सुल्तान गयासुद्दीन को कीलवारा तथा दीलवारा[5] के राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए भेजा। शाहजादे ने उस राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और अत्यधिक बन्दी प्राप्त किये और कुशलतापूर्वक लौट आया।

बूदी की विजय

कुछ दिन उपरान्त सुल्तान ने शाहजादा फिदन खा[6] तथा ताज खा को बूदी के किले को विजय करने के लिए नियुक्त किया। जब शाहजादा बूदी के किले के निकट पहुचा तो राजपूतो ने किले से निकल कर घोर युद्ध किया। अत मे वे पराजित हुए और बहुत से लोग तलवार के घाट उतार दिये गये। कुछ

१ एक पोथी के अनुसार 'जर्ब जन' जो एक प्रकार की तोप होती थी।
२ समस्त गैर इस्लामी बातो को रोकने वाला अधिकारी। शरा के नियमों के पालन के विषय में देख-रेख उसी के द्वारा होती थी। वह स्वय दड देकर शरा के विरुद्ध बाते रोक सकता था।
३ खुत्बा पढने वाले।
४ अज़ान देने वाले।
५ एक पोथी के अनुसार 'भिलवारा'।
६ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदी खा'।

लोग खाई मे कूद पडे और बन्दी बना लिये गये। पहले दिन वीरता तथा पौरुष से किले को विजय कर लिया। शाहजादे ने इस सफलता के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। एक विश्वस्त सरदार को वहा नियुक्त करके विजय तथा सफलता प्राप्त करके अपने स्वामी की सेवा मे राजधानी शादियाबाद मे पहुच गया।

कीलवारा तथा बीलवारा पर आक्रमण

(३४१) सुल्तान महमूद ने ८६३ हि० (१४५८-५९ ई०) मे पुन राजपूतो को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया।[१] जब उसने आहार नामक स्थान पर पडाव किया, तो सुल्तान गयासुद्दीन तथा फिदन खा को कीलवारा एव दीलवारा नामक राज्यो को नष्ट करने के लिए भेजा। सुल्तान गयासुद्दीन तथा फिदन खा ने उस राज्य को नष्ट करके कुम्भलमीर[२] के आसपास के स्थानो पर भी आक्रमण किया।

सुल्तान का कुम्भलमीर पर आक्रमण तथा वहा से वापसी

जब वे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुए और सुल्तान गयासुद्दीन ने कुम्भलमीर के किले की प्रशसा की तो सुल्तान ने दूसरे दिन कुम्भलमीर के किले की ओर प्रस्थान किया और मार्ग मे मदिरो को नष्ट करता हुआ बढता चला गया। जब उसने किले के निकट पडाव किया तो एक दिन वह सवार होकर उस पर्वत पर जो किले के पूर्व की ओर था पहुचा और शहर का निरीक्षण किया। उसने कहा कि, "इस किले को कई वर्षो तक घेरे रहने के बिना विजय करना सभव नही।"

दूगरपुर की विजय

दूसरे दिन वह वहा से प्रस्थान करके दूगरपुर की ओर रवाना हुआ। जब उसने दूगरपुर के हौज पर पडाव किया तो वहा का राजा सरसिआमदास[३] भाग कर शरण हेतु पर्वत मे चला गया। वहा से उसने दीनता तथा विलाप करते हुए २ लाख तन्के और २१ घोडे पेशकश के रूप मे भेजे। सुल्तान महमूद शादियाबाद की राजधानी मे लौट आया।

आसीर पर चढाई

मुहर्रम ८६६ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४६१ ई०) मे मलिक निजामुलमुल्क गोरी के मार्ग भ्रष्ट करने के कारण उसने दकिन[४] प्रदेश पर विजय हेतु चढाई की। जब उसने नर्बदा (नर्मदा) नदी पार की तो गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि "आसीर के अधिकारी मुबारक खा की मृत्यु हो गई है और उसका पुत्र गाजी खा, आदिल खा की उपाधि धारण करके सिंहासनारूढ हुआ है। उसने अत्याचार प्रारम्भ कर (३४२) रखा है और सैयिद कमालुद्दीन तथा सैयिद सुल्तान की अकारण हत्या कर दी है और पीडितो के घरो को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है।" कुछ दिन उपरान्त उनका (सैयिदो का) भाई सैयिद जलालुद्दीन

१ एक पोथी मे इस प्रकार है :—'सुल्तान महमूद ने ८६३ हि० मे पुन कीलवारा तथा दीलवारा को दण्ड देने के लिये प्रस्थान किया। सुल्तान गयासुद्दीन तथा फ़िदी खां ने उस विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करके कुम्भलीज के आसपास के क्षेत्रों मे भी लूट मार की। जब वे पिता की सेवा मे पहुँचे'।

२ एक पोथी के अनुसार 'कुम्भलीज'।

३ एक पोथी के अनुसार 'सायदास' और एक पोथी के अनुसार 'सामीदास'।

४ दक्षिण।

न्याय की याचना करने के लिये पहुचा। सुल्तान महमूद ने मर्यादा की रक्षा की दृष्टि से आदिल खा को दण्ड देने का सकल्प किया और इस विचार से आसीर की ओर रवाना हुआ। आदिल खा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए शेख फरीदुद्दीन गजशकर[1] के एक पौत्र को सुल्तान की सेवा मे भेजा और थोडी सी पेशकश प्रस्तुत की और क्षमा याचना की।

बरार तथा एलिचपुर की ओर प्रस्थान

सुल्तान महमूद जानता था कि "आसीर का किला कोई भी व्यक्ति विजय नही कर सका है और इस अभियान से मेरा वास्तविक उद्देश्य दक्षिण की विजय है", अत उसके अपराधो को क्षमा करके उसे उसने परामर्श दिया और स्वय बरार तथा एलिचपुर की ओर रवाना हुआ।

सुल्तान महमूद तथा निजाम शाह का युद्ध एव निजाम शाह की पराजय

बालापुर नामक कस्बे मे पहुचने के उपरान्त गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि "निजाम शाह के वज़ीरो ने सीमान्तो से सेनाये मगवा कर एकत्र कर ली है और खजाने से दो करोड तन्के अमीरो तथा सैनिको के व्यय हेतु प्रदान कर दिये है। वह बहुत भारी सेना लेकर १५० पर्वत रूपी हाथियो सहित नगर के बाहर निकला है और ईश्वर की लीला की प्रतीक्षा कर रहा है।" सुल्तान महमूद यह सुनकर सेना सुसज्जित करके निज़ाम शाह से ३ फरसग के ऊपर पहुच गया। उसके वजीरो ने ८ वर्षीय निजाम शाह को घोडे पर सवार करके उसके सिर पर चत्र लगाया और उसके घोडे की लगाम ख्वाजये जहा मलिक शह तुर्क को सौप दी। बाये भाग की सेना की व्यवस्था मलिक निजामुलमुल्क तुर्क को, दाये भाग की ख्वाजा महमूद गीलानी को, जिसकी उपाधि मलिकुत्तुज्जार थी, प्रदान की गई। जब दोनो बादशाह एक दूसरे के आमने-सामने पहुच गये तो मलिकुत्तुज्जार ने आगे बढकर सुल्तान महमूद की सेना के बाये भाग पर आक्रमण कर दिया। चदेरी का हाकिम महाबत खा तथा ज़हीरुलमुल्क वजीर, जो बाये भाग (३४३) की सेना के सरदार थे, मार डाले गये और मन्दू की सेना बुरी तरह पराजित हो गई। उनका २ कोस तक पीछा किया गया ओर सुल्तान महमूद की सेना के शिविर नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये।

निज़ाम शाह की पराजय

इसी बीच मे जब सुल्तान महमूद ने, जो एक कोने मे छिपा हुआ समय की प्रतीक्षा कर रहा था, देखा कि अधिकाश लोग लूट मार मे व्यस्त हो गये है और निजाम शाह थोडे से सहायको सहित खडा रह गया है तो वह १२ हजार अश्वारोहियो सहित निजाम शाह की सेना के पीछे से प्रकट हुआ और ख्वाजये जहा तुर्क, जो मध्य भाग की सेना का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति था, बडी युक्ति से निज़ाम शाह के घोडे की लगाम पकड कर बिदर नगर की ओर रवाना हो गया और मामला उल्टा पड गया। जो लोग ध्वस करने हेतु गये थे उन्होने अपना जीवन नष्ट करा लिया।

१ फ़रीदुद्दीन गजशकर अथवा बाबा फ़रीद एक बहुत बड़े सूफ़ी हुये हैं। इनका कार्य-क्षेत्र मुल्तान था। इनकी मृत्यु १२६५ ई० मे मुल्तान मे हुई।

सुल्तान महमूद गुजराती का निजाम शाह की सहायतार्थ प्रस्थान तथा मालबा के सुल्तान महमूद की वापसी

निजाम शाह की माता मलकये जहा विश्वासघात तथा छल के भय से बिदर नगर की रक्षा हेतु मल्लू खा को छोड कर स्वय निजाम शाह को लेकर फीरोजाबाद चली गई। वहा से उसने सुल्तान महमूद गुजराती के नाम एक पत्र लिखा और उससे सहायता की याचना की। सुल्तान महमूद ने बिदर नगर को घेर लिया। जब लोग भाग कर फीरोजाबाद मे एकत्र हुए और सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तान महमूद गुजराती बहुत बडी सेना लेकर निजाम शाह की सहायतार्थ आ रहा है और शीघ्र ही पहुच जायगा तो सुल्तान महमूद ने परामर्श करना प्रारम्भ किया और अन्त मे उसने यह निश्चय किया कि "वायु के उष्ण हो जाने तथा रमजान मास के पहुच जाने के कारण सब से अधिक उत्तम तो यह है कि इस राज्य की विजय दूसरे वर्ष पर स्थगित करके लौट जाया जाय।" इस बहाने से वह वहा से प्रस्थान करके अपनी विलायत की ओर रवाना हुआ।

खरला पर निजाम शाह की सेना का आक्रमण तथा सुल्तान का सहायतार्थ प्रस्थान

८६७ हि० (१४६२-६३ ई०) मे दकिन[1] प्रदेश की विजय के विचार से उसने पुन सेना तैयार की और नुसरताबाद नालचा मे पडाव किया। वह अभी नालचा ही मे था कि खरला के किले के थानेदार (३४४) सिराजुलमुल्क का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि "निजाम शाह दकिनी ने निज़ामुलमुल्क को बहुत बडी सेना देकर खरला[2] के थाने के विरुद्ध नियुक्त कर दिया है और कुछ ही दिनों मे पहुच जायगा।" यह समाचार पाते ही वह शीघ्रातिशीघ्र खरला के थानेदार की सहायतार्थ रवाना हुआ। मार्ग मे यह समाचार प्राप्त हुये कि निजामुलमुल्क तुर्क ने पहुच कर खरला के किले पर आक्रमण कर दिया। जिस समय निजामुलमुल्क किले के समीप पहुचा उस समय सिराजुलमुल्क मदिरापान मे व्यस्त था और उसे अपनी सुधबुध न थी। सिराजुलमुल्क के पुत्र ने किले से निकल कर युद्ध किया और भाग खडा हुआ।

सुल्तान महमूद का दौलताबाद की ओर प्रस्थान

निजामुलमुल्क ने अभिमान-वश उस स्थान को अपने अधिकार मे करने का प्रयत्न न किया। सुल्तान महमूद ने यह समाचार पाकर मकबूल खा को ४ हज़ार अश्वारोहियो सहित खरला के किले की ओर भेजा और स्वयं प्रतिकार हेतु दौलताबाद की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे सरकिजा के राय के सम्बन्धियो तथा जाजनगर के राय के वकीलो ने ५३० हाथी पेशकश के रूप मे भेजे और वकीलो को खिलअत तथा इनाम प्रदान करके बिदा कर दिया।

अब्बासी खलीफ़ा द्वारा मन्शूर तथा खिलअत

जब उसने खलीफाबाद नामक स्थान पर पडाव किया तो अमीरुल मोमिनीन मुस्तन्जिद बिल्लाह यूसुफ बिन मुहम्मद अब्बासी का एक सेवक राज्य का मन्शूर तथा उसके वली होने का खिलअत मिस्र से

१ दक्षिण।
२ एक पोथी के अनुसार 'खदला'।

उसके लिये लाया। उसने अत्यधिक प्रसन्न होकर उसका स्वागत किया और ख़लीफा के सेवको को सम्मानित किया, तथा उन्हे जडाऊ जीन एव लगाम सहित घोडे और ज़रदोजी की खिलअते इनाम मे प्रदान की।

सुल्तान महमूद की दौलताबाद से वापसी

जब वह दौलताबाद की विलायत की सीमा पर पहुचा तो उसे समाचार प्राप्त हुआ कि "सुल्तान महमूद गुजराती अपनी राजधानी से निकल कर इस क्षेत्र की ओर आ रहा है।" सुल्तान महमूद मालकन्दा[1] के किले की ओर रवाना हुआ और कुछ स्थानो तथा ग्रामो को विध्वस करके गोदवारा के मार्ग से राजधानी शादियाबाद को लौट गया।

मकबूल खा को एलिचपुर के विध्वस हेतु भेजना

(३४५) उसने कुछ दिन ठहर कर रबी-उल-अव्वल ८७१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४६६ ई०) मे एक सेना मकबूल खा के साथ एलिचपुर के कस्बे को विध्वस करने के लिए भेजी। उस सेना ने एलिचपुर के समीप के स्थानो को अधिकार मे करके नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। एक पहर रात व्यतीत हो जाने के उपरान्त उस स्थान के हाकिम ने अपने समीप के लोगो को उदाहरणार्थ काजी खा तथा पीर खा को एकत्र किया और १५०० अश्वारोहियो तथा असख्य पदातियो सहित युद्ध के विचार से तैयार हुआ। जब यह समाचार मकबूल खा को प्राप्त हुये तो उसने लूट की धन-सपत्ति तथा शिविर का भारी सामान एक सेना के साथ भेज दिया और योग्य व्यक्तियो को चुन कर अपने साथ रख लिया।

उसने एक सेना को चदावल के राय के विरुद्ध नियुक्त किया और स्वय एक स्थान पर घात लगा कर बैठ गया। जब दोनो सेनाओ मे युद्ध होने लगा तो काज़ी खा उस स्थान से जहा वह घात लगाये हुए बैठा था, निकल खडा हुआ। काज़ी खा एलिचपुर की ओर भाग गया और मकबूल खा ने एलिचपुर द्वार तक उसका पीछा किया। मार्ग मे २० सरदारो की हत्या हो गई और ३० अन्य व्यक्ति बन्दी बना लिये गये। मकबूल खा वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त करके महमूदाबाद वापस चला गया।

दक्षिण से सधि

जमादि-उल-अव्वल ८७१ हि० (दिसम्बर १४६६-जनवरी १४६७ ई०) मे दकिन के वली ने काज़ी शेख़न नामक एक व्यक्ति को सधि हेतु शादियाबाद की राजधानी मे भेजा। अत्यधिक वाद-विवाद के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि, "दकिन का वाली बरार की विलायत को एलिचपुर तक सुल्तान महमूद के लिए छोड दे, सुल्तान महमूद तदुपरान्त दकिन के राज्य को हानि न पहुचायगा।" इस प्रस्ताव के अनुसार सधि-पत्र लिखा गया और दोनो राज्यो के प्रतिष्ठित अमीरो एव सम्मानित व्यक्तियो ने अपनी-अपनी मुहरे लगाई। जमादि-उल-आखिर (जनवरी-फरवरी १४६७ ई०) मे काज़ी शेख़न राजदूत को प्रथानुसार धन तथा खिलअत देकर शेरुलमुल्क को इस आशय से उसके साथ कर दिया गया कि वे एक दूसरे की उपस्थिति मे प्रतिज्ञा की पुष्टि करे।

1 एक पोथी के अनुसार 'बालकन्दा'।

चन्द्रमा की तिथि

(३४६) कुछ दिन उपरान्त उसने आदेश दिया कि दफतरो के हिसाब किताब मे चन्द्रमा की तिथियो के अनुसार कार्य किया जाय और सूर्य की तिथि के स्थान पर चन्द्रमा की तिथि लिखी जाय। ८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) से चन्द्रमा की तिथि कार्यालय मे चालू हो गई।

शेख नूरुद्दीन का मन्दू पहुँचना

उपर्युक्त वर्ष के रबी-उल-अव्वल मास (अक्तूबर-नवम्बर १४६६ ई०) मे शेख नूरुद्दीन जो अपने समय के बडे ही प्रतिष्ठित आलिम थे मन्दू के समीप पहुचे। सुल्तान महमूद ने हौजे रानी पर उनका स्वागत किया और घोडे पर बैठे-बैठे एक दूसरे से गले मिले और सुल्तान ने अत्यधिक आदर तथा सम्मान प्रदर्शित किया।

सैयिद मुहम्मद नूर बख्श का खिर्का पहुँचना

उपर्युक्त वर्ष के जिलहिज्जा मास (जुलाई १४६७ ई०) मे सैयिद मुहम्मद नूर बख्श का दूत, मौलाना एमाद महमूद की सेवा मे पहुचा और शेख का ख़िर्का आशीर्वाद के रूप मे लाया। सुल्तान ने ख़िर्के की प्राप्ति को बहुत बडी देन समझ कर मौलाना एमादुद्दीन के चरणो को अपने लिए उन्नति तथा उपकार का विषय समझा और अत्यधिक प्रसन्न हो कर ख़िर्के को पहन लिया तथा अत्यधिक दान-पुण्य प्रारम्भ कर दिया। उस प्रदेश के समस्त आलिम, सूफी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो उसके दरबार मे उपस्थित थे, प्रसन्न तथा लाभान्वित हुए।

महमूदाबाद (खरला) के विद्रोह का दमन

मुहर्रम ८७२ हि० (अगस्त १४६७ ई०) मे द्रुतगामी दूतो ने निवेदन किया कि "मकबूल ख़ा ने विद्रोह कर दिया है और महमूदाबाद के कस्बे को जो अब भी खरला के नाम से प्रसिद्ध है नष्ट-भ्रष्ट कर के दक्षिण के वाली से सहायता की याचना की है। कुछ हाथी जो राज्य के हित के लिये उसके साथ रहते थे, उन्हे उसने खरला के रायजादे को सौप दिया और खरला के रायजादे ने महमूदाबाद के कस्बे को अपने अधिकार मे कर लिया। जो मुसलमान किले मे निवास कर रहे थे उन सब की हत्या कर दी और गोंड लोगो को अपना सहायक बना कर मार्ग रोक दिया।" यह समाचार पाते ही उसने ताज ख़ा तथा अहमद ख़ा को इस विद्रोह को शात करने के लिए नियुक्त किया और स्वय २० रबी-उल-आखिर[1] ८७२ (३४७) हि० (१९ अक्तूबर १४६७ ई०) को नालचा मे पडाव किया। कुछ दिन उपरान्त वह महमूदाबाद की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे यह समाचार उसे प्राप्त हुआ कि "ताज ख़ा तथा अहमद ख़ा दशहरे के दिन, जो ब्राह्मणो का बहुत बडा दिन होता है, ७० कोस तक धावा करके स्वय उस स्थान तक पहुच गये है।" जब यह समाचार प्राप्त हुआ कि रायज़ादा भोजन कर रहा है तो ताज ख़ा ने कहा, "असावधान शत्रु पर आक्रमण करना पौरुष नही है।" वही पर उसने अपने घोडे को रोक लिया और एक व्यक्ति को उसके पास भेज कर उसे सावधान किया। रायजादे ने भोजन से हाथ खीच कर अपने सैनिको सहित अस्त्र-शस्त्र धारण किया और युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। दोनो ओर की सेनाओ ने ऐसा परिश्रम किया कि

उससे अधिक की कल्पना नही हो सकती। अत मे उसके (रायजादे के) अधिकाश आदमी मारे गये और वह नगे सिर तथा नगे पाव भाग कर गोड लोगो के पास (सहायता) की प्रार्थना करने पहुचा। मकबूल खा के हाथी तथा अन्य लूट की धन सपत्ति एव महमूदाबाद कस्बे पर अधिकार जमा लिया। जब ताज खा का प्रार्थना-पत्र सुल्तान महमूद को प्राप्त हुआ तो वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ और मलिकुलउमरा मलिक दाऊद को उस समूह (के लोगो) को, जिन्होने रायजादे को शरण दी थी, दड देने के लिये नियुक्त किया। जब यह समाचार उन लोगो को प्राप्त हुये तो उन लोगो ने रायजादे को बन्दी बना कर ताज खा के पास भेज दिया।

सुल्तान अबू सईद के दूत का पहुचना

सुल्तान महमूद ने विजय के उपरान्त महमूदाबाद की ओर प्रस्थान किया। उसने ६ रजब (८७२ हि० ३१ जनवरी १४६८ ई०) को सारगपूर कस्बे मे पडाव किया। उस स्थान पर कुछ दिन उपरान्त मीरजा सुल्तान अबू सईद के पास से ख्वाजा जमालुद्दीन अस्तराबादी उपहार सहित राजदूत बन कर आया। सुल्तान महमूद, ख्वाजा जमालुद्दीन के पहुचने पर अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसने उसे शाही कृपाओ द्वारा प्रसन्न करके बिदा किया और हिन्दुस्तान के उपहारो मे से कपडे, अन्य सामान, कुछ (३४८) कनीज नर्तकिया[1], सगीतज्ञ, हाथी, ख्वाजासरा, बोलने वाला तोता तथा मैना और अरबी घोडे, शेखजादा अलाउद्दीन के हाथ ख्वाजा जमालुद्दीन के साथ भेजे और स्वय अपनी राजधानी शादियाबाद मे पडाव किया।

जलालपुर का बसाया जाना

८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) मे सुल्तान को ग़ाज़ी खा का इस आशय का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि कछवारा के जमीदारो ने विद्रोह कर दिया है। यह समाचार पाते ही सुल्तान महमूद ने आय तथा व्यय का निरीक्षण करके अपने राज्य के मध्य मे एक किले का निर्माण कराया जो ६ दिन मे पूरा हो गया। उसके पूरा हो जाने के उपरान्त उसने उसका नाम जलालपुर रखा और मुनीर खा[2] को उस स्थान पर नियुक्त किया।

बहलोल लोदी के दूत का आगमन

८ शाबान ८७३ हि० (२१ फरवरी १४६९ ई०) को शेख मुहम्मद फर्मुली तथा ग्वालियर के राजा का पुत्र कपूरचन्द, हाजिब के रूप मे देहली के बादशाह सुल्तान बहलोल लोदी की ओर से फतहाबाद के समीप पहुचे और जो उपहार वे लाये थे उन्हे प्रस्तुत किया और निवेदन किया कि, "सुल्तान हुसेन शर्की हमे परीशान करने से बाज़ नही आता। यदि आप देहली पधारे और उपद्रव तथा उत्पात का अन्त करा दे तो लौटते समय ब्याना का किला उसके अधीनस्थ स्थानो सहित पेशकश के रूप मे भेट कर दिया जायगा। जब भी सुल्तान प्रस्थान करे तो ६ हजार अश्वारोही सामान सहित सेवा मे भेज दिये जायेगे।" सुल्तान महमूद ने कहा, "जैसे ही सुल्तान हुसेन देहली पर आक्रमण करेगा मै शीघ्रातिशीघ्र सहायतार्थ पहुंच जाऊगा।"

१ एक पोथी के अनुसार 'कनीज़े ख़ास'।
२ एक पोथी के अनुसार 'मीर्ज़ा ख़ान'।

(३४९) यह निश्चय करके उसने राजदूतो के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए बहुमूल्य ख़िलअते देकर उन्हे बिदा कर दिया।

सुल्तान महमूद की मृत्यु

दूसरे दिन वह प्रस्थान करके अपनी राजधानी शादियाबाद की ओर रवाना हुआ। वायु के अत्यधिक उष्ण होने के कारण मार्ग मे उसे ज्वर चढ आया और नित्यप्रति उसके रोग मे वृद्धि होती गई। १९ जीकाद ८७३ हि० (३१ मई १४६९ ई०) को कछवारा की विलायत मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने ३४ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद की अवस्था तथा राज्यकाल की अवधि मे बडी विचित्र बाते पाई जाती है। साहेब किरान अमीर तैमूर भी ३६ वर्ष की अवस्था मे सिंहासनारूढ हुआ और ३६ वर्ष तक राज्य किया। उसकी[1] मृत्यु के उपरान्त उसके पोतो तथा पौत्रो मे ३६ व्यक्ति जीवित रहे।

सुल्तान ग़यासुद्दीन वल्द सुल्तान महमूद ख़लजी

सुल्तान महमूद ख़लजी की मृत्यु के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन सिहासनारूढ हुआ और उसने दानपुण्य प्रारम्भ कर दिया। सर्वसाधारण को उसने अपनी ओर से सतुष्ट कर लिया। जो धन छत्र पर से न्योछावर किया जाता था उसे विद्वानो तथा सहायता के पात्रो को प्रदान किया जाता था।

फिदन खां (अलाउद्दीन) को रणथम्भोर तथा कुछ अन्य परगने प्रदान करना

उसने अपने छोटे भाई, जिसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन थी और जो फिदन खा[2] के नाम से (३५०) प्रसिद्ध था, के पास पूर्व की भाति रणथम्भोर की विलायत रहने दी। कुछ अन्य परगने जो सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे उसके अधिकार मे न थे उसे सतुष्ट करने के लिए प्रदान कर दिये।

शाहजादा अब्दुल कादिर को वलीअहद बनाना

उसने शाहजादा अब्दुल कादिर को नासिर शाह की उपाधि प्रदान की और उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तथा विजारत का पद प्रदान किया। चत्र, पालकी, कौकबा[3] तथा १२ हज़ार अश्वारोहियो की जागीर प्रदान की। ख़ानो तथा अमीरो को आदेश दिया कि वे रोजाना शाहज़ादे के अभिवादन हेतु जाया करे और उसके साथ-साथ दौलतख़ाने मे उपस्थित हो।

राज्य विजय न करने का संकल्प

उसने अपने राज्य के प्रारम्भ मे अपने अमीरो को बुलवा कर उनसे कहा कि, "मै अपने पिता के साथ-साथ ३४ वर्ष तक परिश्रम करता रहा। अब मेरे हृदय मे यह बात आती है कि जो कुछ मेरे पिता की ओर से मुझे प्राप्त हुआ है उसी की रक्षा का मैं प्रयत्न करू और अधिक आकाक्षा न करू। अपने लिए

१ अमीर तैमूर।
२ एक पोथी के अनुसार 'फ़िदी खां'।
३ राजसी ठाठ बाट, परिजन इत्यादि।

तथा अपने सहायको के लिये शाति एव भोग-विलास के द्वार खोल दू। अपने राज्य मे शाति रखना अन्य राज्यो की विजय से अच्छा है।"

स्त्रियो को एकत्र करना

उसने सगीतज्ञो को एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया और प्रत्येक दिशा से सगीतज्ञ उसके दरबार मे उपस्थित होने लगे। उसने अपने अत पुर को सुन्दर कनीज़ो, राजाओ तथा जमीदारो की पुत्रियो से परिपूर्ण कर लिया और इस विषय मे अत्यधिक प्रयत्न करने लगा। इन रूपवतियो मे से प्रत्येक को किसी न किसी कला की शिक्षा दी जाती थी। किसी को नृत्य तथा पातुरबाजी[१], किसी को गाना और किसी को वादन सिखाया जाता था। कुछ को मल्लयुद्ध सिखाया जाता था। ५०० हब्शी कनीजो को पुरुषो के वस्त्र पहना कर तलवार तथा ढाल देकर उनका नाम "गरोहे जयूश" रखा। ५०० तुर्क कनीजो को तुर्को का वस्त्र पहना कर "गरोहे मगूला" नाम रखा। ५०० कनीजो को जो बडी ही समझदार तथा बुद्धिमान् (३५१) थी नाना प्रकार की विद्याये सिखाई। वह नित्य एक को अपने साथ भोजन कराता था। एक समूह को चुन कर उसने राज्य के पद, उदाहरणार्थ इस्तीफा[२], विलायत की जमा[३], तथा खर्च की रक्षा[४] और कारखानो की मुशरिफी[५], प्रदान किये।

अन्त पुर मे बाजार तथा अन्य प्रबन्ध

उसने अपने अन्त पुर मे एक बाज़ार का निर्माण कराया था। जो कुछ अन्य बाज़ारो मे बिकता था वह यहा भी बेचा जाता था। १६ हजार कनीज़े उसके अत पुर मे एकत्र हो गई थी। प्रत्येक को प्रतिदिन २ चादी के तन्के तथा २ मन अनाज दिया जाता था। वह उनके प्रति समान व्यवहार करने का अत्यधिक प्रयत्न करता था। उसे रानी ख़ुर्शीद से, जो उसकी पत्नियो मे सर्वश्रेष्ठ थी, अत्यधिक प्रेम था। उसके समस्त कार्यो मे उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उसे भी २ मन अनाज तथा २ तन्के दिये जाते थे।[६] उसने अपने एक सेवक को आदेश दे रक्खा था कि प्रतिदिन पक्का भोजन चूहो के बिल मे डाला जाया करे। उसने अपने पदाधिकारियो को आदेश दे दिया था कि "जब कभी मै ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करू या तुम यह देखो कि ईश्वर ने मुझे कोई देन प्रदान की है तो उस समय शुकराने के रूप मे ५० तन्के सहायता के पात्रो को दे दिये जाय और उत्तर की प्रतीक्षा न की जाय। जिस छोटे या बडे से मै बाहर वार्तालाप करू उसे इनाम मे एक हजार तन्के दे दिये जाया करे।" वह अपना अधिकाश समय भोग-विलास मे व्यतीत किया करता था। एक पहर रात्रि के व्यतीत हो जाने के उपरान्त ईश्वर की प्रार्थना के लिए कटिबद्ध हो जाता था और अपना माथा भूमि पर रगडता था तथा ईश्वर से अपने लिए प्रार्थना किया करता था।

१ नृत्य-कला, पतुरियों की कला।
२ राज्य के मुस्तौफ़िये ममालिक, (आडीटर जेनरल) का काय।
३ आय।
४ व्यय।
५ आय पर नियन्त्रण रखने वाले अधिकारी।
६ दो पोथियो मे यह वाक्य भी है . 'कहा जाता है कि उसके अन्त पुर मे जो भी जानवर था, उसे दो मन अनाज तथा चादी के दो तन्के प्रदान किये जाते थे। उसने अपने एक सेवक को आदेश दे दिया था'।

करके एबादत मे व्यस्त हो जाता था। उसने अपने अन्त पुर वालो को भी आदेश दे दिया था कि "जब तहज्जुद की नमाज़ के लिए मुझे जगाया जाय तो मेरे मुह पर जल के छीटे मारे जाय। यदि मै गहरी नीद मे सो रहा हूँ तो मुझे जबरदस्ती खीच कर जगा दिया जाय।" यदि वह किसी समारोह मे होता और एक दो सकेत पर न उठता तो उसके आदेशानुसार हाथ पकड कर उसे उठा दिया जाता था। उसके दरबार मे शरा के विरुद्ध कोई बात न कही जाती थी और न कोई ऐसी बात कही जाती थी जिससे दु ख प्रकट हो। वह किसी नशे की वस्तु की ओर कदापि दृष्टिपात न करता था। एक दिन सुल्तान के लिए एक माजून तैयार की गई और उस पर १ लाख तन्के व्यय हुए। जब उसे सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उसने आदेश दिया कि "सर्वप्रथम जो चीजे इसमे पडी हो उनके नाम पढे जाय।" ३ सौ तथा इससे कुछ अधिक औषधियो मे केवल एक दिरहम बराबर अफीम थी। सुल्तान ने कहा कि "यह माजून मेरे काम की नही" और आदेश दिया कि, "इसे जला डाला जाय।" एक आदमी ने कहा कि, "इसे किसी अन्य व्यक्ति को दे दिया जाय।" उसने उत्तर दिया कि, "जो वस्तु मै अपने लिए उचित नही समझता, उसके विषय मे आदेश किसी अन्य व्यक्ति को कदापि नही दे सकता।"

दान-पुण्य की एक कहानी

एक बार शेख़ मुहम्मद नोमान का, जो सुल्तान का मुसाहिब था, एक पडोसी देहली से उसकी (३५४) सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, "मै सुल्तान के दानपुण्य की ख्याति सुनकर आया हू ताकि आपके द्वारा अपनी पुत्री का विवाह कर सकू।" शेख़ ने कहा कि, "उसमे जो कुछ व्यय होगा उसे मै प्रदान कर दूगा।" उसने कहा, "मै आपसे न लूगा। मेरी इच्छा है कि मै सुल्तान के दान से लाभान्वित हू ताकि मेरे सम्मान मे वृद्धि हो।" शेख ने यद्यपि (उससे इस विषय मे) बडा आग्रह किया किन्तु उसने स्वीकार न किया। शेख़ ने कहा कि, "अन्य आनेवालो की सिफारिश उनके पूर्वजो की श्रेष्ठता अथवा उनके व्यक्तिगत गुणो के अनुसार करता हू। तुझमे यह दोनो बाते नही। मै तेरी किस बात की प्रशसा करू?" उसने कहा कि, "मै आपके पास पहुच गया हू। आप अपनी बुद्धि से कार्य करे।" शेख़ उस व्यक्ति को अपने साथ लेकर सुल्तान के दरबार मे पहुचा। वहा फकीरो के लिए जो गेहू तौला जा रहा था उसमे से एक मुट्ठी गेहू उससे उठा लेने के लिए (शेख ने) कहा। जब शेख़ सुल्तान के पास पहुचा तो वह व्यक्ति उसी प्रकार उसके पीछे था। सुल्तान ने पूछा, "यह कौन है?" उसने उत्तर दिया कि, "कुरान का हाफिज[1] है और एक मुट्ठी गेहू उपहार स्वरूप भेट करने के लिए लाया है जिसके प्रत्येक दाने पर उसने पूरा कुरान पढा है।" सुल्तान ने पूछा कि, 'इसे क्यो इस स्थान पर लाये? हमे इसके पास जाना चाहिये था।" शेख़ ने कहा कि, "इसमे इतनी योग्यता न थी कि सुल्तान इसके पास जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि यह योग्य न था तो इसका उपहार बडा ही उत्कृष्ट था।" सुल्तान के आग्रह करने पर शेख़ ने यह निश्चय किया कि जुमे के दिन जामा मस्जिद मे वह अपना उपहार भेट करे। जब लोग नमाज़ पढ चुके तो सुल्तान ने आदेश दिया कि "तू मिम्बर[2] पर पहुच कर उस गेहू को मेरे पल्ले मे डाल दे।" सुल्तान ने उसे नाना प्रकार से सम्मानित किया।

१ जिसे कुरान कंठस्थ हो।
२ मस्जिद का मच जहा से ख़तीब, ख़ुत्बा पढते हैं।

सर्वोत्कृष्ट रूपवती की खोज

कहा जाता है कि एक दिन सुल्तान ने अपने विश्वासपात्रो से कहा कि, "मैने कई हजार सुन्दर स्त्रिया अपने अन्त पुर मे रख ली है किन्तु जैसी रूपवती मै चाहता हू वह मुझे नही मिलती।" उनमे से एक ने कहा कि, "जो लोग इस कार्य के लिए नियुक्त है, सभवत वे रूपवतियो को पहचान नही सकते। यदि दास को इस कार्य हेतु नियुक्त कर दिया जाय तो बडा अच्छा है, ताकि सुल्तान की इच्छानुसार (दास) किसी रूपवती को ला सके।" सुल्तान ने कहा कि, "तू रूपवतियो के विषय मे क्या जानता है?" उसने उत्तर दिया कि, "उसके जिस अग पर भी दृष्टि पड जाय तो फिर दर्शक को दूसरे अग को देखने की (३५५) इच्छा न हो। उदाहरणार्थ यदि उसका डीलडौल देखा जाय तो उस पर इस प्रकार आसक्त हो जाया जाय कि उसके मुख को देखने की आवश्यकता न पडे।" सुल्तान ने उसकी इस पहचान को पसन्द कर लिया और उसे बिदा कर दिया। उसने समस्त प्रदेशो मे घूम-घूम कर बडी खोज की किन्तु उसकी इच्छानुसार कोई रूपवती न मिली। सयोग से वह एक ऐसे स्थान पर पहुच गया जहा उसने एक युवती देखी जो धीरे-धीरे चली जा रही थी। उसकी चाल-ढाल तथा उसके डीलडौल ने उसे अपनी ओर आर्कषित कर लिया। तत्पश्चात् उसने उसकी सुन्दरता की ओर दृष्टि डाली तो जैसी वह चाहता था उससे अधिक सुन्दर उसे पाया। तत्पश्चात् उसने कुछ दिन उस स्थान पर व्यतीत किये और जिस प्रकार सभव हो सका रूपवती को लेकर सुल्तान की सेवा मे पहुचा और सुल्तान को प्रसन्न कर दिया। उसने कहा कि, "मैने इसे इतने हज़ार दिरहम मे क्रय किया है।"

कुछ दिन उपरान्त उस युवती के माता-पिता को इस बात का पता चल गया कि जो व्यक्ति इस स्थान पर कई दिन तक ठहरा था वही उनकी पुत्री को ले गया है। उसके नाम तथा उसके निवास-स्थान का पता लगाते हुए वे न्याय हेतु सुल्तान की सेवा मे पहुचे। एक मार्ग पर उन्होने सुल्तान को रोक कर उससे न्याय की याचना की। सुल्तान समझ गया कि वे उसी युवती के लिए न्याय की याचना कर रहे है। सुल्तान वहा से आगे न बढा और वही बैठ गया। उसने आदेश दिया कि आलिमो को उपस्थित किया जाय और उनसे कहा जाय कि जो कुछ भी शरा का आदेश हो वह बताया जाय। न्याय की याचना करने वाले जब वास्तविक बात से अवगत हुए तो उन्होने निवेदन किया कि, "हम लोग उस व्यक्ति के विषय मे न्याय की याचना कर रहे थे जो हमारी पुत्री को लाया था। यदि वह सुल्तान के अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गई है तो यह हमारे लिए बडे ही सम्मान का विषय है। विशेषकर, उसके मुसलमान हो जाने के कारण वह हमारे धर्म से बाहर हो चुकी। अब हम इस बात से सतुष्ट है।"

तत्पश्चात् सुल्तान ने आलिमो से कहा कि, "इस समय यह स्त्री मेरे लिए मुबाह[1] है किन्तु पिछले दिनो के लिए शरा का जो आदेश हो वह दिया जाय ताकि मै उसे पूरा करू। यदि मै मृत्यु दण्ड (३५६) के भी योग्य हू तो मै अपना खून करता हू।" आलिमो ने कहा कि, "जो कुछ अज्ञानता के कारण सपन्न हो जाय वह शरा के अनुसार क्षम्य है और उसका समाधान कफ्फारे[2] द्वारा हो सकता है।" सुल्तान इसके बावजूद भी इस बात से लज्जित रहा और तदुपरान्त उसने अपने आदमियो को स्त्रियो को ढूढने के लिये मना कर दिया।

१ शरा के अनुसार हलाल (स्वीकृत)।

२ एक प्रकार का प्रायश्चित्त जो धन के दान द्वारा सम्भव है।

८८८ हि० (१४८३–४ ई०) मे ज्योतिष के अनुसार "महा मिलन" हुआ अर्थात् शनिग्रह तथा वृहस्पति नक्षत्र वृश्चिक राशि मे एक दूसरे के अत्यधिक निकट आकर मिल गये। इसके अतिरिक्त पाचो नक्षत्र, एक ही राशि मे एकत्र हो गये। उसके अमगल होने का प्रभाव अधिकाश राज्यो पर प्रकट हुआ। विशेष रूप से खलजियो के राज्य मे बडी उथल पुथल हुई। इसका पता नासिर शाह के इतिहास से चल जायेगा।

चाम्पानीर के राय की सहायतार्थ प्रस्थान तथा वापसी

८८९ हि० (१४८४ ई०) मे चाम्पानीर के राय का एक दूत उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि, "क्योकि इससे पूर्व सुल्तान महमूद बिन सुल्तान अहमद द्वारा चाम्पानीर की घेराबन्दी पर सुल्तान महमूद शाह ने उसकी सहायतार्थ पहुच कर उसे मुक्ति दिला दी थी और अब सुल्तान महमूद गुजराती ने चाम्पानीर को पुन घेर लिया है अत यदि सुल्तान हमारी प्राचीन दासता पर दृष्टिपात करते हुए हमे मुक्ति दिला सकें तो इससे सुल्तान के सम्मान तथा पौरुष को प्रसिद्धि प्राप्त होगी। व्यय मे सहायता हेतु १ लाख तन्का प्रतिदिन सुल्तान के पदाधिकारियो को पहुचा दिया जाया करेगा।" जब यह बात सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत की गई तो उसने सेना तैयार करके नालचा के कूश्क मे पडाव किया। दूसरे दिन उसने आलिमो तथा काजियो को अपने दरबार मे बुलवा कर उनसे प्रश्न किया कि, "एक मुसलमान बादशाह ने काफिरो के पर्वत को घेर लिया है। (क्या) शरा के अनुसार हमारे लिए यह स्वीकृत है कि हम काफिर की सहायतार्थ प्रस्थान करे?" आलिमो ने सर्व-सम्मति से कहा कि, "यह उचित नही।" सुल्तान गयासुद्दीन ने नालचा से चाम्पानीर के दूत को विदा कर दिया और अपनी राजधानी को लौट आया।

राज्य के लिये गृह-युद्ध

(३५७) जब वह वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ तो सुल्तान नासिरुद्दीन तथा शुजाअत खा, जिसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन थी, मे राज्य के लिये सघर्ष होने लगा। यद्यपि दोनो सगे भाई थे किन्तु शत्रुता इस सीमा तक बढ गई कि वे एक दूसरे की हत्या का सकल्प करने लगे। बकलाना के राय की पुत्री रानी खुर्शीद, जो सुल्तान गयासुद्दीन की सर्वश्रेष्ठ पत्नी थी, शुजाअत खा का पक्ष लेने लगी, और इस बात का प्रयत्न करने लगी कि सुल्तान गयासुद्दीन को सुल्तान नासिरुद्दीन का विरोधी बना दे। इस घटना का सविस्तार उल्लेख सुल्तान नासिरुद्दीन के इतिहास मे किया जायगा। सक्षेप मे, सुल्तान नासिरुद्दीन विवश होकर मन्दू से भाग गया और राज्य के मध्य मे पडाव करके अमीरो को उसने अपनी ओर मिला लिया। वहा से उसने मन्दू के किले पर चढाई करके उसे घेर लिया। सुल्तान अलाउद्दीन शुजाअत खा ने ५००० गुजरातियो को प्रोत्साहन देकर अपनी ओर मिला लिया और प्रयत्न करने लगा। अत मे सुल्तान गयासुद्दीन के अमीरो ने द्वार को खुलवा कर उसे किले में बुलवाया। शुजाअत खा ने जब देखा कि नासिरुद्दीन द्वार से प्रविष्ट हो गया है तो उसने सुल्तान गयासुद्दीन की सेवा मे पहुच कर शरण ली। कुछ दिन उपरान्त जब सुल्तान नासिरुद्दीन शाह के राज्य के महल की नीव दृढ हो गई तो उसने शुजाअत खा को उसके पुत्रो सहित अपने पिता के पास से बुलवाया और उसकी हत्या करा दी।

९ रमजान ९०६ हि० (२९ मार्च १५०१ ई०) को सुल्तान गयासुद्दीन पेचिश के रोग मे ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। कुछ लोगो का कथन है कि, "सुल्तान नासिरुद्दीन ने अपने पिता को

विष देकर मार डाला"। सुल्तान नासिरुद्दीन ने रानी खुर्शीद को सदेश भेजा कि "सुल्तान का जितना खजाना तुम्हारे अधिकार मे हो उसे तुम खजाचियो को सौप दो अन्यथा तुम्हे हानि उठानी पडेगी।" रानी खुर्शीद ने उसके कठोर व्यवहार को देखते हुए समस्त खजाना तथा धन-सपत्ति जो अन्त पुर मे छिपी हुई थी निकलवा कर सुल्तान नासिरुद्दीन के गुमाश्तो[1] को दे दी। सुल्तान गयासुद्दीन ने ३२ वर्ष तथा १७ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान नासिरुद्दीन

(३५८) इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि सुल्तान नासिरुद्दीन का जन्म सुल्तान महमूद खलजी के राज्यकाल मे हुआ था। महमूद शाह तथा गयास शाह ने अत्यधिक प्रसन्नता प्रदर्शित करते हुए जशनो का आयोजन कराया और १ मास तक भोग-विलास (का कार्यक्रम) चलता रहा। इस महान् देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए सर्वसाधारण तथा विद्वानो एव सहायता के पात्रो को परोपकार द्वारा लाभान्वित किया गया। ज्योतिषियो ने निवेदन किया कि, "शाहजादे का जन्म शुभ मुहूर्त मे हुआ है। ससार के प्रसिद्ध विद्वानो द्वारा उसका पालन-पोषण होगा तथा उसको शिक्षा प्राप्त होगी। वह समस्त कलाओ मे दक्ष और अपने युग का अद्वितीय व्यक्ति होगा।" उसके जन्म के सातवे दिन उसे पूज्य व्यक्तियो के समक्ष प्रस्तुत करके उसका नाम अब्दुल कादिर रखा गया। बाल्यावस्था ही मे राज्य तथा शासन के चिह्न उसके ललाट से प्रकट होते थे। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ तो नेतृत्व तथा राज्य-व्यवस्था के विषय मे अपने समकालीनो से बढ गया। सुल्तान गयासुद्दीन ने उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके विजारत का पद प्रदान कर दिया।

शुजाअत खा द्वारा विरोध

उसका छोटा भाई शुजाअत खा, यद्यपि बाह्य रूप से उसका साथ देने मे कोई कसर न उठा रखता था किन्तु हृदय से उसका विरोधी था। उसने एक समूह को मिला लिया। उन्होने एक दिन एकान्त मे सुल्तान गयासुद्दीन से निवेदन किया कि, "कुछ धृष्ट गुण्डो का एक समूह सुल्तान नासिरुद्दीन की सेवा मे एकत्र हो गया है। राज्य प्राप्त करने हेतु वे लोग उसे लालायित कर रहे हैं। घटना के पूर्व ही उसका उपचार उचित होगा।" उन लोगों ने सुल्तान को शाहजादे के प्रति इतना शकित कर दिया कि सुल्तान ने उसे बन्दी बनाने का सकल्प कर लिया किन्तु सौजन्य तथा बादशाही के चिह्न उसके ललाट पर (३५९) देखकर उसके पैतृक स्नेह ने उसे इस बात की ओर प्रेरित किया कि उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करके उसकी शक्ति मे वृद्धि कराई जाय। उसने आदेश दिया कि आरिजे ममालिक अमीरो एव सरदारो को आदेश भेज दे, कि वे नित्य प्रात काल सुल्तान नासिरुद्दीन के पास अभिवादन हेतु उपस्थित हुआ करे और शाहजादे के साथ उसकी सेवा मे आया करे।

सुल्तान नासिरुद्दीन ने भी दृढतापूर्वक शासन प्रबन्ध पर अधिकार जमा कर प्रत्येक स्थान पर अपनी ओर से गुमाश्ते नियुक्त कर दिये। जब खालसे के परगनो का प्रबन्ध शेख हबीब तथा ख्वाजा सुहेल ख्वाजासरा को प्रदान हुआ तो यगा खा, अम्मन तथा मूजा[2] बक्काल, जो इससे पूर्व खालसे के आमिल थे, कुस्वभाव वाली रानी खुर्शीद के पास सहायता की प्रार्थना लेकर पहुचे। रानी खुर्शीद

१ एजेंटों।
२ एक पोथी के अनुसार 'पूजा'।

क्योकि शुजाअत खा का पक्ष करती थी और सुल्तान नासिरुद्दीन के प्रति उसका हृदय साफ न था, अत उसने शुजाअत खा द्वारा निवेदन किया कि, "मलिक महमूद कोतवाल तथा शिवदास बक्काल जो विश्वासघातियो तथा विद्रोहियो के नेता है, सुल्तान नासिरुद्दीन के विश्वासपात्र हो गये है और उसकी जागीर के कुछ स्थानो के इजारे के बहाने से उसके पास आते जाते रहते है।" सुल्तान गयासुद्दीन ने मलिक महमूद तथा शिवदास[1] बक्काल को बुलवा कर, पूछताछ कराये बिना ही उनकी हत्या करा दी और लोगो ने उनके घरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

सुल्तान नासिरुद्दीन ने तदुपरान्त शासन-प्रबन्ध[2] से अपना हाथ खीच लिया और कुछ दिन तक अभिवादन हेतु उपस्थित न हुआ। रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा अवसर पाकर यगा खा तथा मूजा बक्काल के प्रयत्न से स्वार्थपूर्ण बाते, अपने आपको नि स्वार्थी प्रदर्शित करते हुए, करने लगे और उन्होने खजाने पर अधिकार जमा लिया। वे निश्चिन्त होकर राज्य-व्यवस्था करने लगे। सुल्तान गया-(३६०) सुद्दीन ने वृद्धावस्था के कारण इसे स्वीकार कर लिया किन्तु उसने नि स्वार्थी लोगो से सुना था कि, "रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा सुल्तान नासिरुद्दीन पर दोष लगाने के लिए कटिबद्ध है", अत वह उसके कार्य के सम्बन्ध मे कुछ न कहता था। शेख हबीबुल्लाह तथा ख्वाजा सुहेल को जब यह ज्ञात हुआ कि इस उपद्रव की जड मूजा बक्काल है तो उन्होने अवसर पाकर उसकी हत्या कर दी और भाग कर सुल्तान नासिरुद्दीन के अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गये। रानी खुर्शीद ने इस घटना का विवरण सुल्तान गयासुद्दीन को बहुत बढा-चढा कर दिया। सुल्तान गयासुद्दीन के क्रोध की अग्नि इस घटना को सुनकर भडक उठी और उसने कुछ लोगो को यगा खा के साथ सुल्तान नासिरुद्दीन के घर इस आशय से भेजा कि वे हत्यारो को बन्दी बना लाये। विदा होते समय उसने उन्हे आदेश दिया था कि नासिर शाह के सम्मान मे कोई भी कमी न होने पाये।

इसी बीच मे शेख हबीबुल्लाह तथा ख्वाजा सुहेल, नासिर शाह के महल से सवार होकर जगल की ओर चल दिये। मार्ग में वह कहते जाते थे कि "हम काजी के घर जा रहे है। जो कोई मूजा के रक्त का दावा करता हो वह काजी के घर उपस्थित हो।" यगा खा तथा अन्य अमीर जब नासिर शाह के दरबार मे पहुचे और सदेश भेजा तो उत्तर मिला कि, "शेख हबीबुल्लाह तथा ख्वाजा सुहेल ने मूजा बक्काल की मेरे आदेशानुसार हत्या नही की है और मै नही जानता कि वे कहा गये है।" यगा खा ने उत्तर की ओर ध्यान न दिया और ३ दिन तक नासिरुद्दीन शाह के अत पुर को घेरे रहा। सुल्तान को जब यह ज्ञात हुआ कि हत्यारे भाग चुके है और पुत्र को कष्ट देना व्यर्थ है तो उसने मुर्शीदुलमुल्क एव मुनही खा को उसके पास भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि, "यदि पुत्र खिन्न तथा रुष्ट न हो तो वह पूर्व की भाति उपस्थित होता रहे, कारण कि मुझ मे इससे अधिक उसके वियोग की शक्ति नही।"

सुल्तान नासिरुद्दीन ने सैकडो बातो के होते हुए अपने आश्रयदाता के चरणो का चुम्बन करने (३६१) का सम्मान प्राप्त किया और पुत्र तथा पिता ने उपद्रव की धूल अपनी आख के जल से धो डाली। सुल्तान नासिरुद्दीन पुन सेवा करने लगा और नित्य-प्रति अपनी ओर नई कृपा देखने लगा। उसने गयासुद्दीन शाह के महलो के निकट अपने निवास हेतु एक भवन का निर्माण करवाया ताकि जब वह चाहे उसकी सेवा मे उपस्थित हो सके। रानी खुर्शीद ने एक दिन अवसर पाकर कहा कि "सुल्तान

१ एक पोथी के अनुसार 'सिवीदास' और एक पोथी के अनुसार 'सवीदास'।
२ एक पोथी के अनुसार 'विज़ारत के कार्य से'।

नासिरुद्दीन ने अपने घर का कोठा कूश्के जहानुमा[1] के कोठे के बराबर बनवाया है और उसका विचार विद्रोह करने का है।" सुल्तान ने बिना सोचे-समझे ९०५ हि० (१४९९–१५०० ई०) मे आली खा[2] कोतवाल को आदेश दिया कि नासिर शाह के भवन को विध्वस कर दिया जाय। उसी रात्रि मे सुल्तान नासिरुद्दीन शाह दुखी होकर एक सेना सहित धार की ओर, जो घने जगल मे है, पहुच गया। शेख हबीबुल्लाह तथा ख्वाजा सुहेल वहा सेवा मे पहुचे। रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा ने सुल्तान गयासुद्दीन को अवगत कराये बिना एक सेना उनके पीछे भेजी। सुल्तान गयासुद्दीन ने तातार खा को इस आशय से भेजा कि वह नासिर शाह को प्रोत्साहन देकर शहर मे ले आये। तातार खा अपनी सेना को बकन गाव[3] नामक स्थान पर छोड कर, मलिक फज़लुल्लाह बुद्ध मीर शिकार के साथ, सुल्तान की सेवा मे पहुचा और सदेश भेजा। उसने एक प्रार्थना-पत्र लिख कर दिया कि तातार खा स्वय जाकर उसे पढे और उसका उत्तर लाये। सदाचारी तातार खा शीघ्रातिशीघ्र शादियाबाद की ओर रवाना हुआ और प्रार्थना-पत्र मे जो कुछ लिखा था उसके विषय मे निवेदन किया। अभी उसे उत्तर मिला भी न था कि रानी खुर्शीद ने सुल्तान गयासुद्दीन पर पूर्ण अधिकार रखने के कारण एक परवाना आरिजे ममालिक[4] के पास इस आशय का प्रेषित किया कि वह तातार खा को नासिरुद्दीन को पराजित करने के लिये नियुक्त करे। तातार खा को जब इस विषय मे ज्ञान प्राप्त हुआ तो वह किले से उतर कर बारा[5] की ओर चला गया

(३६२) जो सेना नासिर शाह से युद्ध करने के लिए भेजी गई थी वह गनगाव नामक स्थान पर पहुच कर अपने परिणाम के विषय मे असमजस मे पड गई, कारण कि उन्हे यह भय था कि यदि वे युद्ध करेगे और सुल्तान नासिर शाह बादशाह हो जायगा तो वह प्रत्येक को दण्ड देगा। यदि वे मन्दू की ओर लौट जाते है तो उन्हे रानी खुर्शीद के द्वारा कठोर दण्ड का भय था। वे अभी जगल मे इसी असमजस मे थे कि सुल्तान नासिरुद्दीन ने उस मज़िल से प्रस्थान करके हस्ता[6] कस्बे मे पडाव किया। इस पडाव पर मलिक महता[7] तथा मलिक हैबत खा, जो सुल्तान गयासुद्दीन के प्रतिष्ठित अमीर थे, उसकी सेवा मे उपस्थित हुये। नासिर शाह की शक्ति मे वृद्धि हो गई। उसने उस मज़िल से अजाया[8] कस्बे की ओर पडाव किया और मौलाना एमादुद्दीन अफजल खा तथा उस क्षेत्र के जमीदारो का एक समूह उस पडाव पर उससे मिला। वायु की रमणीयता एव जगल की ताजगी के कारण उन्होने कुछ दिन तक वहा पडाव किया। ईदे फित्र[9] के दिन अमीरो के परामर्श से उसने अपने सिर पर चत्र लगवाया और अमीरो, प्रतिष्ठित व्यक्तियो तथा सरदारो को उत्तम प्रकार की खिलअते प्रदान की।

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि शुजाअत खा[10] की सेना युद्ध के विचार से गनगाव नामक

१ जहांनुमा महल।
२ एक पोथी के अनुसार 'ग़ालिब खां'।
३ एक पोथी के अनुसार 'बकका'।
४ देखिये पृ० ३३ नोट न० १।
५ एक पोथी के अनुसार 'बारा सुन्दर'।
६ एक पोथी के अनुसार 'बनता' और एक पोथी के अनुसार 'हतना'।
७ एक पोथी के अनुसार 'मता'।
८ एक पोथी के अनुसार 'राजावया'।
९ वह ईद जो एक मास के रोजो के उपरान्त पड़ती है।
१० एक पोथी के अनुसार 'शुजा खां'।

स्थान को प्रस्थान करके कन्दविया[1] कस्बे मे पहुच गई है। नासिर शाह ने मलिक मल्हू को उस सेना को दण्ड देने के लिए भेजा। जब दोनो सेनाओ मे युद्ध हुआ तो मलिक मल्हू को विजय प्राप्त हुई और (३६३) वह समूह पलायन करके मन्दू को चला गया। मलिक मल्हू लूट की अत्यधिक धन-सपत्ति लेकर अजाया कस्बे मे नासिर शाह के शिविर मे उपस्थित हुआ।

१६ शव्वाल ९०५ हि० (१५ मई १५०० ई०) को उस मजिल से वह अजोद[2] कस्बे की ओर रवाना हुआ। मुबारक खा तथा हिम्मत खा[3] आकर उससे मिल गये। जब वह सदर्सी[4] कस्बे मे पहुचा तो सारगपुर का हाकिम रुस्तम खा उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और कुछ हाथी तथा अत्यधिक धन-सपत्ति पेशकश के रूप मे भेट की। उज्जैन पहुचने के उपरान्त, अमीरो तथा थानेदारो के अनेको दल, उसके दरबार की ओर रवाना हुए। रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा ने प्राण के भय से, सुल्तान गयासुद्दीन से निवेदन किया कि, "नासिर शाह उज्जैन तक पहुच गया है और समस्त अमीर तथा थानेदार उसकी ओर आकर्षित हैं। शीघ्र ही शादियाबाद के किले को घेर लिया जायगा।"

सुल्तान गयासुद्दीन ने शेख औलिया तथा शेख बुरहानुद्दीन को दूत बनाकर भेजा और यह सदेश प्रेषित किया कि, "दीर्घ काल से मैंने राज्य की बागडोर उस पुत्र के हाथ मे दे दी है। यदि वह निष्ठा तथा मित्रता के अनुसार उन गुण्डो को जो उसके चारो ओर एकत्र हो गये हैं, विदा करके, सेवा मे उपस्थित हो, तो शासन-प्रबन्ध पुन उसे प्रदान कर दिया जायेगा। उस समय यदि वह उचित समझे तो रणथम्भोर की विलायत को शुजाअत खा[5] को, जो उसके पुत्र के समान है, प्रदान कर दे और उपद्रव तथा अशाति की अग्नि को सधि के जल से बुझा दे।" नासिर शाह ने उत्तर न दिया और जीकाद ९०५ हि० (२७ जून १५०० ई०) के अन्त मे उसने उज्जैन कस्बे से धार कस्बे की ओर पडाव किया और कुछ दिन तक वहा ठहरा।

इसी बीच मे सूचना प्राप्त हुई कि यगा खा ३ हजार अश्वारोहियो सहित युद्ध के उद्देश्य से शादियाबाद से आया है। इस समाचार के पाते ही उसने (नासिर शाह ने) मलिक अतन को ५०० अश्वारोहियो सहित, हासपुर[6] नामक स्थान को भेजा। यगा खा सूचना पाकर हासपुर की ओर रवाना (३६४) हुआ। युद्ध के उपरान्त मलिक अतन को विजय प्राप्त हुई। यगा खा की सेना मे से १०० व्यक्ति मारे गये। मलिक अतन ८० घोडे तथा अत्यधिक लूट की धन-सपत्ति लेकर धार कस्बे की ओर चला गया। यगा खा बचे खुचे लोगों को लेकर किले[7] मे प्रविष्ट हो गया।

कुछ दिन उपरान्त यगा खा रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा के कहने से अपने साथ एक सेना लेकर युद्ध के लिए मन्दू के किले के नीचे उतरा। यह समाचार पाते ही नासिर शाह ने ख्वाजा सुहेल, मलिक महता, मलिक हैबत तथा मिया जियू को यगा खा को पराजित करने के लिए भेजा। यगा खा

१ इसे 'कन्दोया' भी पढा जा सकता है। एक पोथी मे इसे 'केदूहा' अथवा 'केदोहा' और एक पोथी में 'कन्दूहा' लिखा गया है।
२ एक पोथी के अनुसार 'ऊजूद' और एक के अनुसार 'बतन'।
३ एक पोथी के अनुसार 'यमीन खां' तथा एक पोथी के अनुसार 'हुमायू खां'।
४ एक पोथी के अनुसार 'सेद्री'।
५ एक पोथी के अनुसार 'शुजा खां'।
६ एक पोथी के अनुसार 'हासलपुर'।
७ एक पोथी के अनुसार 'मन्दू के किले'।

नासिर खा की सेना को देखते ही बिना युद्ध किये भाग खडा हुआ और नासिर शाह को विजय प्राप्त हुई।

२२ जिलहिज्जा ९०५ हि० (१९ जुलाई १५०० ई०) को उसने नालचा के कूशके जहानुमा मे पडाव किया। इस पडाव पर गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि "सुल्तान गयासुद्दीन स्वय अपने पुत्र के प्रोत्साहन हेतु आने का विचार रखता है और इस विचार से अपनी राजधानी से प्रस्थान कर चुका है। आरिजे ममालिक को आदेश हो चुका है और जब ज्योतिषी लोग शुभ मुहूर्त बतायेगे तो वह वहा से प्रस्थान करेगा और अपने पुत्र को प्रोत्साहन प्रदान करके शादियाबाद लौट जायगा।" नासिर शाह इस समाचार से प्रसन्न होकर अपने पिता के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा, यहा तक कि शुजाअत खा रानी खुर्शीद के परामर्श से सुल्तान गयासुद्दीन की पालकी को उठाकर नालचा की ओर रवाना हुआ। जब वे देहली द्वार पर पहुचे तो सुल्तान ने वृद्धावस्था के कारण अपने निकटवर्तियो से पूछा कि, "मुझे कहा ले जा रहे हो ?" कुछ लोगो ने उस घटना के सम्बन्ध मे निवेदन किया। सुल्तान ने कहा, "मै दूसरे (३६५) दिन जाऊगा आज लौट चलो।" सेवक लोग विवश होकर लौट गये। जब रानी खुर्शीद ने सुना कि सुल्तान गयासुद्दीन मार्ग से लौट आया है तो वह समझी कि यह बात नासिर शाह के हितैषियो के कारण हुई होगी। उसने उन लोगो को अपने समक्ष बुलवाया और कठोर वचन कहकर इसका कारण पूछा। उन्होने उत्तर दिया कि, "सुल्तान अपनी इच्छा से लौटा है और इस कार्य मे किसी का हाथ नही है।"

शुजाअत खा ने रानी खुर्शीद के परामर्श से किले की मरम्मत कराई और मोर्चो का वितरण कर दिया। नासिर शाह ने भी अपने दायरे[1] से निकल कर किले को घेर लिया और मोर्चे बाट दिये। प्रति दिन दोनो ओर से लोग मारे जाते थे। सुल्तान गयासुद्दीन ने सन्धि कराने के लिए अकजियुल कजात मुशीरुलमुल्क को भेजा। जब उसे इच्छानुसार उत्तर न मिला तो रानी खुर्शीद के भय के कारण वह उस स्थान पर रुक गया। जब अवरोध की अवधि बढती गई तो किले वाले अनाज के प्राप्त न होने के कारण विवश तथा व्याकुल हो गये और उन्होने यह निश्चय किया कि राज्य का कार्य नासिर शाह अपने अधिकार मे ले। किले मे जो अमीर रह गये थे, उनमे से मुआफिक खा तथा मलिक फजलुल्लाह मीर शिकार, अवसर पाकर, नासिर शाह की सेवा मे उपस्थित हुए। सुल्तान नासिरुद्दीन ने मुआफिक खा को १ लाख तन्के इनाम मे दे दिये। रानी खुर्शीद तथा शुजाअत खा को जब इस बात की सूचना मिली, तो उन्होने अली खा को किले के शासन-प्रबन्ध से पृथक् कर दिया और मलिक प्यारा को अली खा की उपाधि देकर, किले की रक्षा तथा नगर का शासन-प्रबन्ध सौप दिया। मुहाफिज खा तथा सूरज मल की हत्या करा दी गई। अमीर, प्रतिष्ठित लोग तथा शहर के समस्त निवासी उस कठोर दण्ड को देखकर हताश हो गये और उन्होने नासिर शाह की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेज कर उससे प्रोत्साहन-युक्त परवानो की प्रार्थना की। अवरोध के कुछ दिन उपरान्त यह स्थिति हो गई कि किले को केवल अनाज शब्द (३६६) की ही स्मृति रह गई और अधिकाश लोग दरिद्रता के कारण किले के बाहर चले गये।

१८ सफर ९०६ हि० (१३ सितम्बर १५०० ई०) की रात्रि मे नासिर शाह किले की विजय हेतु सवार हुआ। जब वह किले के निकट पहुचा तो मोर्चे वाले उपस्थित हुए और उन लोगो ने बाण तथा बन्दूक चलाई। इस युद्ध मे अधिकाश वीर आहत हुए। अन्त मे सुल्तान नासिरुद्दीन ७०० जीने

1 क्षेत्र।

वाले मोर्चे की ओर बढा। दिलावर खा जगजू ने जल के मार्ग से अपने आपको किले मे पहुचा दिया। सुल्तान नासिरुद्दीन भी प्रविष्ट हो गया। शुजाअत खा अपने विश्वासपात्रो के एक समूह को लेकर किले के बुर्ज पर पहुचा और पौरुष तथा वीरता प्रदर्शित करने लगा। सुल्तान नासिरुद्दीन स्वय वाण चला रहा था और बहुत से लोग उसके बाण द्वारा मारे जा रहे थे। क्योकि शुजाअत खा को निरन्तर सहायता पहुचती रही थी अत नासिर शाह की सेना के वीर आहत हो गये। वह लौटना उचित समझ कर, किले के बाहर निकला और अपने शिविर मे ठहरा। जिन लोगो ने वीरता प्रदर्शित की थी, उनमे से प्रत्येक के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की गई और खिलअते प्रदान करके प्रोत्साहित किया गया।

कुछ दिन उपरान्त शेर खा बिन मुजफ्फर खा का पुत्र, जो चदेरी का हाकिम था, १ हजार अश्वारोहियो तथा ११ हाथियो को लेकर नासिर शाह के शिविर मे उपस्थित हुआ। प्रथम दरबार मे उसने (सुल्तान ने) ज्येष्ठ पुत्र को मुजफ्फर खा की उपाधि और दूसरे पुत्र को साद खा की उपाधि प्रदान की। चदेरी की सेना के पहुचने से, नासिर शाह के शिविर वालो की शक्ति बढ गई। उस समय मन्दू के किले वालो मे से कुछ लोगो ने, जो मालपुर[1] द्वार की रक्षा हेतु नियुक्त थे, सूचना भेजी कि "यदि नासिर शाह की सेना इस ओर पार होकर आये, तो किला बिना परिश्रम तथा कठिनाई के प्राप्त हो जायगा।" (३६७) सुल्तान नासिर शाह ने मुबारक खा, शेख हबीबुल्लाह, मुआफिक खा, ख्वाजा सुहेल तथा अन्य लोगो को २४ रबी-उल-आखिर ९०६ हि० (१९ नवम्बर १५०० ई०) की रात्रि मे इस कार्य हेतु नियुक्त किया। शेख हबीबुल्लाह ने यह कह दिया था कि "यदि किले पर विजय प्राप्त हो जायगी तो मै अपनी अगूठी भेज दूगा ताकि पता चल जाय कि किले पर विजय प्राप्त हो गई।" जब अमीर लोग द्वार के निकट पहुचे तो शहर वालो ने जबरदस्त खा बिन हिजब्र खा को, जिसके अधीन किले का शस्त्रागार था, मिलाकर तथा मालपुर द्वार के दरबान की हत्या करके द्वार को खुलवा दिया। नासिर शाह के सहायक घोडा दौडाते हुए किले मे घुस गये।

शुजाअत खा एक सुसज्जित सेना लेकर युद्ध के लिए अग्रसर हुआ किन्तु उसे कोई सफलता प्राप्त न हो सकी और भाग कर वह अपनी हवेली मे पहुच गया। अपने परिवार को लेकर वह सुल्तान गयासुद्दीन के अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गया। शेख हबीबुल्लाह ने जैसा पूर्व निश्चय हो चुका था अगूठी भेजी, और नासिर शाह को उपस्थित किया। वह पलक मारते ही मालपुर के द्वार पर पहुच गया और शहर में प्रविष्ट हो गया। अमीर लोग उसकी सेवा मे उपस्थित हुये और उन्होंने बधाई दी। कुछ मूर्खो ने नासिर शाह की आज्ञा बिना सुल्तान गयासुद्दीन के कुछ महलो तथा भवनो मे आग लगा दी और शुजाअत खा, रानी खुर्शीद तथा कुछ अन्य लोगो को बन्दी बनाकर ले आये और विध्वस का कार्य प्रारम्भ कर दिया। नगर को उन्होने दो दिन तक लूटा। सुल्तान गयासुद्दीन सावधानी[2] की दृष्टि से अर्जे ममालिक[3] के चबूतरे से सरसुती नामक महल मे चला गया।

सुल्तान नासिरुद्दीन का सिहासनारोहण

शुक्रवार २७ रबी-उल-आखिर ९०६ हि० (२० नवम्बर १५०० ई०) को तीसरें दिन सुल्तान नासिरुद्दीन सिहासनारूढ हुआ और शुजाअत खा तथा रानी खुर्शीद को मुअक्किल के सिपुर्द

१ एक पोथी के अनुसार 'बालपुर'।

२ एक पोथी के अनुसार, 'सुल्तान गयासुद्दीन अन्तःपुर की रियायत करके अर्जे ममालिक'।

३ देखिये पृ० ३३ नोट न० १।

कर दिया। मलिक महता को नालचा भेज दिया और अपने मझले पुत्र को, जो मिया मझला के नाम से प्रसिद्ध था, वलीअहद बना दिया और उसे सुल्तान शिहाबुद्दीन की उपाधि प्रदान कर दी। उद्यान (३६८) का सुफ्फा, जो सुल्तान गयासुद्दीन के दौलतखाने के निकट था, उसके निवास हेतु निश्चित कर दिया। उसी दिन नासिर शाह के नाम का खुत्बा पढा गया। मोती तथा जवाहरात जो छत्र पर न्योछावर किये गये थे, सहायता के पात्रो को बाट दिये गये। यगा खा, अम्मन[1], मुहाफिज खा जदीद, हब्शी के पिता मुर्करिह तथा अन्य लोगो की, जिन्होने उसका विरोध किया था, हत्या करा दी। कुछ लोगो की हत्या न कराई और उन्हे बन्दी बना दिया। जो लोग उसके सहायक थे उन्हे उसने प्राचीन प्रथानुसार अक्ताये प्रदान की।

शेख हबीबुल्लाह को आलम खा की उपाधि दी और ख्वाजा सुहेल को आश्ता का परगना देकर सिपहसालारी का पद प्रदान कर दिया। १३ जमादि-उल-आखिर ९०६ हि० (४ जनवरी १५०१ ई०) को वह अपने पिता तथा आश्रयदाता सुल्तान गयासुद्दीन की सेवा मे उपस्थित हुआ। सुल्तान गयासुद्दीन ने उससे आलिगन किया और बहुत रोया। उसके सिर तथा आखो का चुम्बन किया और विदा होते समय रोवेदार कबा, जिसे वह आम दरबार तथा शुभ अवसरो पर पहना करता था, प्रदान की और राजमुकुट उसके सिर पर रख दिया। खजाने की कुजिया उसे सौप दी और उसे बादशाही की बधाई देकर विदा किया।

शिहाबुद्दीन को राजसी चिह्न प्रदान करना

नासिर शाह ने १६ रजब ९०६ हि० (५ फरवरी १५०१ ई०) को वही रोवेदार कबा तथा मुकुट सुल्तान शिहाबुद्दीन को प्रदान किया और २० हाथी, १०० घोडे, ११ चत्र, दो पालकी, पताका, नक्कारा, लाल सरापर्दा[2] तथा २० लाख तन्के बयूतात[3] के व्यय हेतु प्रदान किये।

विद्रोहियो का शेर खां के पास एकत्र होना

कुछ दिन उपरान्त मुक़बिल खा मन्दसौर का हाकिम, दुर्भाग्यवश भाग खडा हुआ। महाबत खा को, जिसकी देख-रेख मे मुकबिल खा था, आदेश दिया गया कि वह उसे बन्दी बनाकर लाये अन्यथा हत्या की प्रतीक्षा करे। महाबत खा अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त शेर खा से जाकर मिल गया। अली खा तथा कुछ अन्य अभागे जो अपने दुष्कर्म के कारण शकित तथा भयभीत होकर कठोर दण्ड की (३६९) प्रतीक्षा कर रहे थे, जाकर शेर खा से मिल गये। शेर खा ने नालचा के समीप से चदेरी की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान नासिरुद्दीन ने मुबारक खा तथा आलम खा को शेर खा के पास भेजा ताकि जिस प्रकार सभव हो सके वे उसे प्रोत्साहन दे। राजदूतो ने यद्यपि उसे बहुत समझाया किन्तु वह निरन्तर उनका उत्तर देता जाता था। वह दोनो को बन्दी बना लेने के विषय मे सोचने लगा। अपनी माता से परामर्श करने के बहाने से वह शिविर से निकला और मुबारक खा तथा आलम खा को उसने अपने सेवको के सिपुर्द कर दिया। उसके सेवको ने मुबारक खा को बन्दी बना लिया और उसके दो सेवको[4] की हत्या कर दी। आलम खा इसी बीच मे अपने घोडे तक पहुच गया और शीघ्रातिशीघ्र उसके शिविर से निकलकर यह बात सुल्तान नासिरुद्दीन तक पहुचा दी। सुल्तान नासिरुद्दीन ने अपने पुत्र

१ एक पोथी के अनुसार 'अमीन खां'।
२ खेमो के समूह (पर्दे)।
३ घर के व्यय।
४ एक पोथी के अनुसार '१० सेवकों'।

सुल्तान शिहाबुद्दीन को शादियाबाद के किले का शासन सौपकर ९ शाबान ९०६ हि० (२८ फरवरी १५०१ ई०) मे नालचा के कूश्के जहानुमा मे पडाव किया। शेर खा जब उज्जैन के किले मे पहुचा तो महाबत खा के बहकाने से पुन युद्ध के उद्देश्य से दयालपुर की ओर रवाना हुआ और हदिया कस्बे को उसने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सुल्तान नासिरुद्दीन ने यह समाचार पाकर धार के कूश्क मे पडाव किया।

सुल्तान गयासुद्दीन की मृत्यु

इसी बीच मे यह समाचार प्राप्त हुये[1] कि सुल्तान गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई। कुछ लोगो का मत है कि सुल्तान गयासुद्दीन को सुल्तान नासिरुद्दीन ने विष दे दिया था किन्तु अनुभव से पता चलता है कि पिता का हत्यारा एक वर्ष से अधिक न तो जीवित रहता है और न सफल रहता है। सुल्तान नासिरुद्दीन ने १३ वर्ष तक राज्य किया, अत पिता की हत्या के विषय मे जो कहा जाता है वह सभवत झूठ हो।

शेर खा का पलायन

(३७०) सक्षेप मे, सुल्तान नासिरुद्दीन ने अपने पिता की मृत्यु पर अत्यधिक विलाप किया और तीन दिन तक शोक प्रकट करने के उपरान्त चौथे दिन वहा से रवाना हुआ। शेर खा ने प्राण के भय से अपने प्रदेश की ओर प्रस्थान किया। ऐनुलमुल्क तथा कुछ अन्य सरदार पृथक् होकर नासिर शाह के शिविर मे पहुच गये। सुल्तान नासिरुद्दीन ने पीछा किया। सारगपुर के निकट शेर खा ने पलट कर युद्ध किया और भाग खडा हुआ। चदेरी के क्षेत्र मे भी वह न ठहर सका और एरचा तथा भादीर की विलायत मे पहुचा। उपद्रव शात हो गया।

चन्देरी के शेखजादो का सुल्तान को बुलवाना

सुल्तान नासिरुद्दीन चदेरी पहुचा। कुछ दिन उपरान्त चदेरी के शेखजादो ने शेर खा को एक पत्र लिखा कि "क्योकि शादियाबाद के अधिकाश सैनिक छिन्न-भिन्न होकर अपनी अपनी जागीरो को चले गये और वर्षा ऋतु के कारण अमीर लोग शीघ्र एकत्र न हो सकेगे अत यदि आप उस ओर से चदेरी की ओर प्रस्थान करे तो शहर के सभी लोग आपके सहायक बन जायेगे। सभव है कि सुल्तान नासिरुद्दीन बन्दी बना लिया जाय। यदि वह भाग जायगा तो नगर पर सुगमतापूर्वक विजय प्राप्त हो जायगी।"

शेर खा से सुल्तान की सेना का युद्ध तथा शेर खां की पराजय

शेर खा ने बिना-सोचे समझे प्रस्थान कर दिया और चदेरी से ६ कोस पर पडाव किया। सुल्तान नासिरुद्दीन को शेखजादो के षड्यन्त्र का पता चल गया। उसने इकबाल खा तथा मल्लू खा को सेना तथा मस्त हाथियों सहित शेर खा को पराजित करने के लिये भेजा। २ लाख तन्के नकद व्यय हेतु प्रदान किये। वे अभी चदेरी से २ कोस आगे भी न बढे थे कि शेर खा शेखजादो के कहने पर विश्वास करके उनसे युद्ध करने के लिए डट गया। दोनो ओर की सेना वालो ने अपनी पक्तिया ठीक करके वीरता प्रदर्शित की। मारकाट मे सयोग से शेर खा आहत हो गया और उसने अपने विद्रोह के परिणाम का उप-भोग कर लिया। सिकन्दर खा रणक्षेत्र मे मारा गया। ख्वाजा सुहेल तथा महाबत खा घायल शेर खा

१ एक पोथी के अनुसार, 'समाचार पहुँचाये गये'।

को हाथी के हौदे मे रखकर भाग खडे हुए। मार्ग मे जब शेर खा की मृत्यु हो गई तो उन्होने उसे दफन कर दिया और स्वय आगे बढ गये। इकबाल खा कुछ दूर तक उनका पीछा करके लौट आया।

(३७१) सुल्तान नासिरुद्दीन यह समाचार पाकर बडा प्रसन्न हुआ और रणक्षेत्र की ओर रवाना हो गया। वहा से उसने सिकन्दर खा को चदेरी के क्षेत्र मे इस आशय से भेजा कि वह शेर खा की लाश को सूली पर चढा दे और उस क्षेत्र का शासन-प्रबन्ध बहजत खा को सौप कर वह (सुल्तान) निरन्तर यात्रा करता हुआ सादलपुर[1] कस्बे मे पहुचा। वहा कुछ लोगो ने निवेदन किया कि शेख हबीबुल्लाह, आलम खा[2] से विश्वासघात करना चाहता है और समय की प्रतीक्षा कर रहा है। सुल्तान नासिरुद्दीन ने उसे बन्दी बनाकर अपने प्रस्थान करने के पूर्व मन्दू भेज दिया।

सुल्तान की निष्ठुरता

१० शाबान ९०७ हि० (१८ फरवरी १५०२ ई०) को वह विजय तथा सफलता प्राप्त करके शादियाबाद के किले मे प्रविष्ट हो गया और भोगविलास मे लिप्त हो गया। वह अपना अधिकाश समय मदिरापान मे व्यतीत करता था। मदिरा के नशे मे वह अपने पिता के अमीरो की उनकी शत्रुता की शका के कारण हत्या करा देता था और अपने सहायको को आश्रय प्रदान करता था। उसकी निष्ठुरता तथा अत्याचार इस सीमा तक पहुच गये थे कि वह एक दिन एक हौज पर मस्त सो रहा था कि सयोग से वह हौज मे गिर पडा। जो सेविकाये पहरा दे रही थी उन्होने उसे जल से निकाला। जब वह सावधान हुआ तो उसने पूछा कि "मुझे हौज से किसने निकाला है"? चार कनीजो ने कहा कि, "हमने यह सेवा सम्पन्न की है।"

उसने उन चारो की हत्या करा दी। उज्जैन कस्बे के प्रतिष्ठित लोगो द्वारा ज्ञात हुआ है कि वह कालियादा नामक हौज था।

भवन-निर्माण

उसने बागे फीरोज मे एक ऐसे महल का निर्माण कराया जिसके विषय मे समस्त ससार के पर्यटको का कथन है कि उन्होने ऐसा महल कही न देखा था। शनै शनै भवन निर्माण से उसे इतनी रुचि हो गई कि मालवा के १७ करोड, जो उसे अपने पूर्वजो द्वारा प्राप्त हुआ था, मे से ५ करोड उसने भवन-निर्माण पर व्यय कर दिया।

अकरा के महल

२२ जीकाद ९०८ हि० (१९ मई १५०३ ई०) को उसने खचवारा[3] पर आक्रमण करने (३७२) के लिए नालचा नामक कस्बे मे पडाव किया। निरन्तर यात्रा करके जब वह अकरा[4] नामक कस्बे मे पहुचा तो उसे वहा की वायु इतनी अच्छी लगी कि उसने वहा एक भव्य महल तथा शानदार भवनो का निर्माण कराया। अभी तक वे भवन ससार की अद्‌भुत वस्तुओ मे समझे जाते है।

१ एक पोथी के अनुसार 'सादालपुर' तथा एक पोथी के अनुसार 'ईदलपुर'।
२ एक पोथी के अनुसार 'शेख हबीबुल्लाह जिसकी उपाधि आलम खा है विद्रोह करना चाहता है'।
३ एक पोथी के अनुसार 'खीचवारा' तथा एक के अनुसार 'खजीवारा'।
४ एक पोथी के अनुसार 'अकर'।

वह बहुत समय तक उस कस्बे मे ठहरा रहा और आसपास सेना भेज कर विद्रोहियो को दण्ड देता रहा। वह उनसे पेशकश लेकर वापस हुआ।

चित्तौड की ओर प्रस्थान

९०९ हि० (१५०३-४ ई०) मे उसने पुन चित्तौड[1] पर चढाई की। जब वह चित्तौड के राज्य के मध्य मे पहुचा तो चित्तौड के राजा एव समस्त जमीदारो ने पेशकश भेजी। सिवदास[2] के पुत्र भवानी दास ने, जो रायमल चित्तौडी का निकट सबधी था, अपनी पुत्री उपहार स्वरूप भेंट की। सुल्तान नासिरुद्दीन ने पुत्री को रानी चित्तौड की उपाधि दी और भवानी दास के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की।

आसीर तथा बुरहानपुर में नासिरुद्दीन के नाम का खुत्बा

लौटते समय गुप्तचरो ने उसे यह समाचार पहुचाये कि निज़ामुलमुल्क दखिनी ने आसीर तथा बुरहानपुर के राज्य पर चढाई कर दी है। क्योकि आसीर का शासक दाऊद खा सर्वदा नासिरशाह से सहायता की प्रार्थना किया करता था, अत सुल्तान नासिरुद्दीन ने इकबाल खा एव ख्वाजये जहा को आसीर की विलायत की ओर भेजा। निज़ामुलमुल्क लौट कर अपनी विलायत को चला गया। इकबाल खा ने नासिर शाह के नाम का खुत्बा आसीर तथा बुरहानपुर मे पढवा दिया और राजधानी शादियाबाद को लौट गया।

सुल्तान शिहाबुद्दीन का विद्रोह

९१६ हि० (१५१०-११ ई०) मे सुल्तान शिहाबुद्दीन ने कुछ अभागे अमीरो के बहकाने पर विद्रोह कर दिया और वह मन्दू के किले के नीचे उतरा। सीमान्त के अधिकाश अमीर उससे मिल गये। वह नालचा कस्बे से प्रस्थान करके धार कस्बे मे पहुचा। सुल्तान नासिरुद्दीन अपने खासा खेल की एक (३७३) सेना सहित नालचा कस्बे की ओर पहुचा। वहा से युद्ध के विचार से धार की ओर रवाना हुआ। सुल्तान शिहाबुद्दीन ने अपने पिता की सेना की दुर्दशा देखकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अन्त मे नासिर शाह की पताकाओ को विजय प्राप्त हुई और सुल्तान शिहाबुद्दीन भाग कर चदेरी की ओर पहुचा। नासिर शाह की सेना के वीरो ने उसका पीछा किया। वे उसे बन्दी बनाने वाले ही थे कि पितृ-प्रेम से प्रभावित होकर उसने अपने सैनिको को पीछा करने से मना कर दिया।

दूसरे दिन उसने उस पडाव से प्रस्थान किया और उसे (सुल्तान शिहाबुद्दीन को) अपने सामने रखा। जब सुल्तान शिहाबुद्दीन चदेरी की सीमा पर स्थित सिरी कस्बे मे पहुचा तो सुल्तान नासिरुद्दीन ने कुछ बुद्धिमानो को अपने पुत्र के पास इस आशय से भेजा कि वे दुष्टता की गली से उसे निकाल कर सन्मार्ग पर लाये किन्तु सन्मार्ग उसकी दृष्टि से लुप्त था और असावधानी तथा ऐश्वर्य के लोभ ने उसे अधा बना दिया था। उसने उचित उत्तर न दिया। दूसरे दिन उसने उत्तर दिया कि, "अभी तक लज्जा के कारण मुझमे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होने का साहस नही है। यदि सुल्तान अपने राज्य का एक भाग दास को प्रदान कर दे तो दास कुछ दिनो के उपरान्त सेवा मे उपस्थित हो जायगा।" जब

१ एक पोथी के अनुसार 'चीतोर'।
२ एक पोथी के अनुसार 'सवीदास'।

राजदूतो ने यह देखा कि दोनो की भेट होनी सभव नही तो वे लौट गये और उन्होने जो बात हुई थी वह सुल्तान नासिरुद्दीन से कह दी।

आजम हुमायू का वलीअहद नियुक्त होना

सुल्तान ने अपने लघु पुत्र आजम हुमायू को रणथम्भोर से बुलवाया। आज़म हुमायू शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ और चदेरी के क्षेत्र मे उसने सुल्तान से भेट की। सुल्तान नासिरुद्दीन ने दूसरे दिन चदेरी से प्रस्थान किया और सिरी कस्बे की ओर रवाना हुआ। उस पडाव पर उसने अपने अमीरो तथा राज्य के (३७४) सहायको को उपस्थित किया और कहा कि, "क्योकि शिहाबुद्दीन ने पिता के हक का कोई ध्यान नही रखा है, अत मै उसे वलीअहद के पद से पृथक् करता हू और अपने पुत्र आजम हुमायू को वलीअहद बनाता हू।" उसने उसकी उपाधि सुल्तान महमूद शाह रखी। खिलअत तथा राजमुकुट उसे प्रदान किया और सिरी कस्बे से वापस होकर बहिश्तपुर नामक स्थान पर कुछ दिन तक पडाव किया।

सुल्तान का रुग्ण होना

क्योकि सुल्तान नासिरुद्दीन के स्वभाव मे गर्मी अधिक थी अत शीत ऋतु के बावजूद वह ठडे जल मे प्रविष्ट हो गया और कुछ देर तक उसमे रहा। उसका स्वभाव तुरन्त परिवर्तित हो गया और विभिन्न प्रकार के रोगो मे वह ग्रस्त हो गया। चिकित्सको ने यद्यपि अत्यधिक उपचार किया किन्तु उसको कोई लाभ न हुआ।

महमूद शाह तथा अन्य अधिकारियों को परामर्श

सुल्तान नासिरुद्दीन ने अपनी दशा बिगडती देखकर महमूद शाह के अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो को अपने समक्ष बुलवाया और उन्हे शिक्षा तथा परामर्श देते हुए कहा कि, "क्योकि ईश्वर ने उस पुत्र को समस्त ससार वालो मे चुन कर प्रजा की बागडोर उसके अधिकार मे दी है, अत उसे चाहिये कि वह ईश्वर की दासता के मार्ग से विचलित न हो तथा वासना के वश मे न आ जाय। ईश्वर ने जो वस्तुए उसे प्रदान की है उसे प्रजा को प्रदान करने मे सकोच न करे। पीडितो पर अत्याचार न होने दे। दीवान[1] मे अपने ऊपर शिथिलता को अधिकार न प्राप्त करने दे और पीडितो को उपस्थित होने से न रोके। पीडितो की बातो पर पूर्णत ध्यान दे। न्याय करते समय शक्तिशाली तथा दीन, सम्मानित तथा साधारण, निकटवर्ती तथा दूर के मनुष्यो मे कोई भेद-भाव न करे ताकि कयामत मे उसे लज्जित न होना पडे। सैयिदो को, जोकि मुहम्मद साहब के उद्यान के फल है, सम्मानित रक्खे। आलिमो को, जोकि नबियो[2] के उत्तराधिकारी है, अपने इनाम द्वारा प्रफुल्लित रखे। मूर्खों तथा (३७५) अयोग्य व्यक्तियो से बचता रहे। दान-पुण्य के स्थानो का, जोकि उसके सौभाग्य के चिह्न रहेगे, निर्माण कराता रहे। सर्वदा ईश्वर की आज्ञाओ का पालन करता रहे। शासन-प्रबन्ध के कार्यो मे सर्वदा परामर्श करता रहे।"

शाहजादा महमूद शाह तथा राज्य के उच्च पदाधिकारी इन बातो को सुन कर विलाप करने

१ विभाग, कर विभाग।

२ ईश्वर के दूत, पैग़म्बर, मुसलमानों के विश्वास के अनुसार इनकी सख्या १,२४,००० है।

लगे और उन्होने सच्चे हृदय से समस्त पापो को त्याग देने तथा निषिद्ध कार्यों को न करने की, आलिमो के समक्ष, प्रतिज्ञा की।

कुछ क्षण उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। उसने ११ वर्ष ४ मास तथा २३ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद शाह बिन नासिर शाह

३ सफर ९१७ हि० (२ मई १५११ ई०) को महमूद शाह बिन नासिर शाह बहिश्तपुर नामक स्थान पर एक शुभ मुहूर्त मे खलजी सुल्तानो के सिहासन पर आरूढ हुआ। दान-पुण्य के उपरान्त उसने प्रत्येक उच्च अधिकारी को शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और तत्काल नासिर शाह का जनाजा शादियाबाद के किले मे भेज दिया।

सुल्तान शिहाबुद्दीन का विरोध

सुल्तान शिहाबुद्दीन इस शोकमयी दुर्घटना के समाचार पाकर शीघ्रातिशीघ्र नुसरताबाद नालचा मे पहुचा। मुहाफिज खा ख्वाजासरा तथा ख्वाजा खा ने द्वार बन्द कर लिये। दूसरे दिन उसने अपने विश्वासपात्रो द्वारा सदेश भेजा कि, "यदि तुम मेरा साथ दोगे तो मुझे विश्वास है कि मै तुम्हे राज्य के (३७६) उच्च पद प्रदान करूगा।" मुहाफिज खा तथा खवास खा ने कहा कि, "क्योकि ईश्वर द्वारा महमूद शाह के राज्य के विषय मे आदेश हो चुका है अत यही उचित होगा कि आप शाही शिविर मे उपस्थित हो जाय और विरोध तथा शत्रुता को त्याग कर मित्रता प्रारम्भ कर दे।" सुल्तान शिहाबुद्दीन निराश होकर कन्दासे की ओर रवाना हुआ। सुल्तान महमूद शाह के पास यह पत्र पहुचा कि सुल्तान शिहाबुद्दीन मन्दू चला गया है। उसने निरन्तर यात्रा करते हुए २ रबी-उल-अव्वल ९१७ हि० (३० मई १५११ ई०) को नालचा के कूश्के जहानुमा मे पडाव किया।

शादियाबाद के किले मे सुल्तान महमूद शाह का सिहासनारोहण

वहा से उसने जाऊश खा[1] के अधीन एक सेना सुल्तान शिहाबुद्दीन से युद्ध करने के लिए भेजी और ११ हाथी उसके साथ किये। ज्योतिषियो के बताये हुए मुहूर्त के अनुसार वह शादियाबाद के किले मे पहुचा। ६ रबी-उल-अव्वल (३ जून १५११ ई०) को शुभ मुहूर्त मे वह सोने के रत्नजटित सिंहासन पर दरबार मे आरूढ हुआ। उस सिहासन के चारो ओर २१ सिहासन लगाये गये थे। महमूद शाह खलजी सुल्तानो के सिहासन पर आरूढ हुआ। अमीरो तथा शहर के प्रतिष्ठित लोगो एव राज्य के सम्मानित व्यक्तियो ने अपने अपने स्थान ग्रहण किये। प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार खिलअत प्रदान की गई और कुछ अमीरो को खिताब द्वारा सम्मानित किया गया। ७०० हाथियो को, जो किले के चारो ओर थे, उसने अपने अधिकार मे कर लिया।

शिहाबुद्दीन का आसीर की ओर पलायन

कुछ दिन उपरान्त जाऊश खा का पत्र प्राप्त हुआ कि, "क्योकि सुल्तान शिहाबुद्दीन का दुर्भाग्य प्रारम्भ हो चुका है अत उसने शिक्षा एव परामर्श की ओर कोई ध्यान नही दिया और युद्ध करने (३७७) लगा। तुच्छ, शाही सौभाग्य को अपना पथ-प्रदर्शक बना कर उसको दण्ड देने के लिये तैयार

१ एक पोथी के अनुसार 'जुलूस खा'।

हुआ। सुल्तान शिहाबुद्दीन पहले ही आक्रमण मे भाग खडा हुआ और उसके चत्रदार[1] की हत्या हो गई तथा चत्र पर अधिकार प्राप्त कर लिया गया। वह (शिहाबुद्दीन) स्वय भाग कर आसीर की विलायत की ओर चला गया है।" क्योकि वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो चुकी थी अत सुल्तान महमूद ने जाऊश खा को बुलवा लिया और वह रबी-उल-अव्वल मास की अतिम तिथि (२७ जून १५११ ई०) को किले मे उपस्थित होकर कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ।

बसन्त राय का पूर्ण अधिकार-सम्पन्न होना तथा उसकी हत्या

सुल्तान महमूद ने, सुल्तान शिहाबुद्दीन की ओर से निश्चिन्त होकर शासन प्रबन्ध बसन्त राय को, जिसे सुल्तान नासिरुद्दीन के समय से विजारत का पद प्राप्त था, सौप दिया। बसन्त राय ने अभिमान तथा मूर्खता के कारण सेना[2] को प्रोत्साहन देना छोड दिया और शासन की गूढ बाते त्याग दी। उसने अनुचित व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। वह अमीरो तथा सरदारो का पूर्ण रूप से सम्मान न करता था। अमीरो ने अवसर पाकर ७ रबी-उस्सानी (४ जुलाई १५११ ई०) को उसकी हत्या कर दी।

नकदुलमुल्क का निर्वासित किया जाना

नकदुलमुल्क, जो उसी के धर्म का अनुयायी तथा उसका सेवक था, भाग कर शाही अत पुर मे प्रविष्ट हो गया। इकबाल खा तथा अन्य विशेष व्यक्तियो[3] ने एक दूसरे से कहा कि, "यदि राज्य का जगल उसके अशुद्ध व्यक्तित्व से शुद्ध न हो जायेगा तो वह बसन्त राय[4] का बदला लेने का प्रयत्न करेगा।" उन्होने सद्र खा तथा अफजल खा के हाथ सुल्तान महमूद के पास सदेश भेजा कि "हम निष्ठावान् दासो ने कभी कोई कार्य निष्ठा के विरुद्ध न तो किया है और न करेगे। आपको ज्ञात है कि अभी शासन प्रबन्ध पूर्णरूप से सुव्यवस्थित नही हुआ है। राज्य-व्यवस्था को अन्य धर्म के अनुयायी को सौप देना शासन प्रबन्ध मे विघ्न डालने का कारण बन जायेगा। आपने कुछ हितैषियो द्वारा सुना होगा कि बसन्त राय ने अमीरो तथा सुल्तान के हितैषियो से किस प्रकार व्यवहार किया। उसका उद्देश्य केवल (३७८) यही था कि प्राचीन दास निराश हो जाय और उनकी सेना छिन्न-भिन्न हो जाय। वास्तव मे यह कार्य निष्ठा के विरुद्ध था। राज्य के हितैषियो ने उसे अपने बीच से हटा दिया। नकदुलमुल्क भी उसके पदचिह्नो पर चल रहा है। यदि सुल्तान का आदेश हो तो उसके व्यक्तित्व से भी ससार को पवित्र बना दिया जाय।" सुल्तान महमूद ने विवश होकर नकदुलमुल्क को भेज दिया किन्तु यह कह दिया कि उसे निर्वासित कर दिया जाय और उसके प्राणो तथा धन-सपत्ति को कोई हानि न पहुचाई जाय। जब नकदुलमुल्क पहुचा तो अमीरो ने मिलकर उसे निर्वासित कर दिया। सुल्तान महमूद अमीरो के इस कार्य तथा उनके प्रभुत्व से रुष्ट हो गया।

मुहाफ़िज खा द्वारा षड्यंत्र

मुहाफिज खा ख्वाजासरा, जिसके स्वभाव मे षड्यत्र तथा दुष्टता थी, विजारत प्राप्त करने की

१ शाही छत्र की देख रेख करने वाला अधिकारी।
२ एक पोथी के अनुसार 'बादशाह को'।
३ एक पोथी मे 'मख़सूसान' के स्थान पर 'मखसूस खा' है।
४ एक पोथी के अनुसार 'निसबत राय'।

महत्वाकाक्षा रखने के कारण सुल्तान से एकान्त मे अमीरो के विरुद्ध झूठी बाते करने लगा। एक दिन अवसर पाकर उसने निवेदन किया कि "इकबाल खा तथा मुख्तस खा[1] यह चाहते है कि नासिर शाह की एक सतान को सिहासनारूढ कर दे।" सुल्तान महमूद यह समाचार पाते ही व्याकुल हो उठा और उसने उन लोगो की हत्या करा देना निश्चय कर लिया किन्तु सहनशीलता एव सम्मान से कार्य लेते हुए इस विषय मे पूछ-ताछ कराई।

मुख्तस खा की हत्या का प्रयत्न

मुहाफिज खा ने जब यह देखा कि उसकी बात का कोई प्रभाव नही हुआ तो वह उसका विरोध करने लगा और नित्य कठोर बाते कहने लगा। एक दिन सुल्तान महमूद ने अपने सैनिको से कहा कि, "जब इकबाल खा तथा मुख्तस खा प्रथानुसार अभिवादन हेतु आये तो उनकी हत्या करा दी जाय।"

जब बात इस सीमा तक पहुच गई तो एक ख्वाजासरा ने, जो मुख्तस खा का विश्वासपात्र था, (३७९) यह बात उसे बता दी। मुख्तस खा ने, तत्काल इकबाल खा को इस बात से अवगत करा दिया। अभी थोडी देर भी न व्यतीत हुई थी कि एक व्यक्ति मुख्तस खा तथा इकबाल खा को बुलाने आया। मुख्तस खा अविलम्ब उसकी सेवा मे पहुचा और इकबाल खा राज्यव्यवस्था के कार्यो मे सलग्न हो गया। मुख्तस खा पूर्व की भाति व्यवहार न होते हुए देखकर वहा से वापस हो गया और इकबाल खा के पास पहुचा। दोनो अपने अपने निवास स्थान को चले गये। मुहाफिज खा ने निवेदन किया कि, "मुख्तस खा तथा इकबाल खा अपने अपने घरो को इस आशय से चले गये है कि तैयारी करके किसी एक शाहजादे को सिहासनारूढ कर दे। यह उचित होगा कि उस स्थान पर पहुँच कर उन्हे बन्दी बना लिया जाय और आज का काम कल पर न टाला जाय।"

सुल्तान महमूद विश्वासघाती तथा षड्यन्त्रकारी की बात पर विश्वास करके मुख्तस खा तथा इकबाल खा के निवास स्थान की ओर रवाना हुआ। मुख्तस खा तथा इकबाल खा भाग कर १०० अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित काज़ीपुर की ओर से २४ रबी-उस्सानी (२१ जुलाई १५११ ई०) की रात्रि मे किले से नीचे उतरे और समस्त रात्रि यात्रा करते रहे। प्रात काल वे नर्बदा के क्षेत्र मे सराया[2] नामक स्थान पर पहुचे। वहा से नुसरत खा बिन इकबाल खा को २५ रबी-उस्सानी (२२ जुलाई १५११ ई०) को सुल्तान शिहाबुद्दीन को लाने के लिए आसीर की विलायत की ओर भेजा गया। प्रात काल सुल्तान महमूद ने दरबार किया और मुहाफिज खा को खाने जहा की उपाधि प्रदान की। विज़ारत का पद उसे प्रदान कर दिया गया। अफजल खा को मजलिसे करीम की और जाऊश खा को दस्तूर खा की उपाधि दी गई। उन्हे मुख्तस खा तथा इकबाल खा के विनाश हेतु विदा किया गया।

सुल्तान शिहाबुद्दीन की मृत्यु

(३८०) जब नुसरत खा यात्रा करता हुआ सुल्तान शिहाबुद्दीन की सेवा मे पहुचा तो वह अत्यधिक प्रसन्न होकर दूसरे दिन बीजागढ तथा खरकून[3] के प्रसिद्ध राज्य की ओर रवाना हुआ। उत्साह मे वह एक रात्रि तथा एक दिन मे ३० कोस यात्रा कर गया। सयोग से वायु बड़ी उष्ण थी, यहा तक कि

१ एक पोथी के अनुसार 'मखसूस खां'।
२ एक पोथी के अनुसार 'सराय'।
३ एक पोथी के अनुसार 'बीजागढ़ व खरकून'।

मछली नदी मे भुन जाती थी। सुल्तान शिहाबुद्दीन रुग्ण हो गया और उसका स्वास्थ्य सयम की सीमा से बाहर निकल गया। ३ जमादि-उल-अव्वल (२९ जुलाई १५११ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

अमीरो का होशग शाह को बादशाह बनाना और उसकी मृत्यु

कुछ लोगो का कथन है कि सुल्तान महमूद के सकेत पर उसे विष दे दिया गया। सुल्तान नुसरत खा ने नीले वस्त्र धारण किये और उसकी लाश को लेकर सराया नामक स्थान की ओर जहा ख़ान लोग एकत्र थे रवाना हुआ। जब वह वहा पहुचा तो मुख्तस खा तथा इकबाल ख़ा ने शोक प्रकट करते हुए लाश को शादियाबाद भेज दिया। सुल्तान शिहाबुद्दीन ने जिस बालक को गोद लिया था, उसे सुल्तान होशग शाह की उपाधि देकर उसके सिर पर चत्र लगा दिया और विद्रोह करके उस प्रदेश से मालवा की ओर रवाना हुए। महमूद शाह ने लाश के पहुचने पर बहुत विलाप किया और उसे दफन कर दिया। शोक सबधी प्रथाओ को सम्पन्न कराया और सहायता के पात्रो को दान दिया। शोक के उपरान्त निजाम खा को दस्तूर खा की सहायतार्थ भेजा। निजाम खा शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ दस्तूर खा से मिल गया। उन्होने मिल कर होशग से युद्ध किया। होशग भाग कर पहाड[1] बाबा हाजी नामक पर्वत मे शरण हेतु चला गया।

सुल्तान को इकबाल खां तथा मुख्तस खा के प्रार्थना-पत्र प्राप्त होना

(३८१) इसी अवसर पर इकबाल खा तथा मुख्तस खा के इस आशय के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये कि, "हम लोगो ने, जो आपके पूर्वजो के समय से आपके दास है, निष्ठा के विरुद्ध कोई कार्य नही किया है। मुहाफिज खा ने ईर्ष्यावश स्वार्थपूर्ण बाते कह कर आपके हृदय को प्राचीन दासो की ओर से फेर दिया है। आशा है कि मुहाफिज खा ने निष्ठा के विरुद्ध जो कार्य किया है और जो हरामखोरी प्रदर्शित की है, उसका आपको शीघ्र पता चल जायेगा। मुझे इस बात का विश्वास है कि कुछ हितैषी स्वार्थ को न देखते हुए एकान्त मे इस बात की पुष्टि करेगे।" जब सुल्तान को प्रार्थना-पत्र के विषय मे ज्ञात हुआ तो उसके कुछ सेवको ने भी इसकी पुष्टि की और कहा कि, "मुहाफिज खा के इस दोषारोपण का उद्देश्य यह है कि वह शासन-प्रबन्ध मे स्वतन्त्र अधिकार प्राप्त कर ले। यदि मुख्तस खा तथा इकबाल खा होते तो उसे विजारत न प्राप्त हो सकती थी। वह इसी बात का प्रयत्न कर रहा है कि कोई परिवर्तन हो और नासिर शाह के किसी पुत्र को बन्दीगृह से निकाल कर उसे नाममात्र को सुल्तान बना कर स्वतन्त्र रूप से राज्य करे।"

मुहाफिज खां द्वारा विद्रोह

सुल्तान महमूद ने जो सावधानी तथा दूरदर्शिता से कार्य न करता था, आदेश दिया कि "मुहाफिज खा जब अभिवादन हेतु आये तो उसे बन्दी बना लिया जाय। पूछताछ के उपरान्त उसे दण्ड दिया जायेगा।" जब मुहाफिज खा के हितैषियो ने सत्य बाते उस तक पहुचाई तो वह दूसरे दिन अर्थात् १८ जमादि-उल-अव्वल (१३ अगस्त १५११ ई०) को अपनी सेना सहित दीवान[2] मे उपस्थित हुआ। कुछ क्षण उपरान्त सुल्तान महमूद ने उसे एकान्त मे बुलवाया। उसने पहुच कर कठोर उत्तर दिये। (३८२) सुल्तान महमूद अत्यधिक क्रोधित होकर बडी वीरता से अपने कुछ विश्वासपात्रों तथा हब्शियो

१ मूल पुस्तक मे 'बहार' अथवा 'भार'।
२ देखिये पृ० १०८ नोट न० १।

के समूह को लेकर बाहर निकल गया। वह अभागा दौलतखाने के बाहर चला गया। बन्द पिरौनी को अपने अधिकार मे करके उसने विद्रोह की पताका बलन्द कर दी। शाहजादा साहब खा बिन मुल्तान नासिरुद्दीन को लाकर उसके सिर पर चत्र लगा दिया। उस हवेली मे महमूद शाह को घेर लिया और वह बन्दी बना ही लिया जाने वाला था कि आधी रात्रि मे वह उज्जैन की ओर चला गया। वहा से उसने दस्तूर खा तथा अन्य अमीरो को प्रोत्साहन देकर अपने पास बुलवाया। जिस रात्रि मे सुल्तान महमूद ने वहा से प्रस्थान किया, उसी रात्रि मे मुहाफिज खा ने शाहज़ादा साहब खा को सुल्तान महमूद की उपाधि देकर सिहासनारूढ कर दिया। कुछ दिन उपरान्त दस्तूर खा उज्जैन पहुचा। उसके पीछे मुख़्तस खा तथा इकबाल खा सुल्तान महमूद से मिल गये। शाहजादा साहब खा ने यह समाचार पाकर सद्र खा तथा अफजल खा को बुलवाया और प्रतिज्ञा तथा शपथ लेकर उनको अपनी ओर मिला लिया।

सुल्तान महमूद का चन्देरी की ओर प्रस्थान

५ जमादि-उल-अव्वल (३१ जुलाई १५११ ई०) को खूदन खा[1] को शादियाबाद के किले मे छोडकर उसने (शाहजादा साहब खा ने) नालचा के कस्बे मे पडाव किया और सद्र खा के परामर्श से सैनिको के वेतन का एक तिहाई भाग खजाने से नकद दिलवा दिया और उज्जैन की यात्रा का प्रबन्ध किया। सुल्तान महमूद उज्जैन से प्रस्थान करके दीपालपुर पहुचा। एक घडी रात्रि के उपरान्त वे सरदार, जिनके परिवार मन्दू के किले मे थे, सवार होकर शाहज़ादे के शिविर मे पहुच गये। दूसरे दिन सुल्तान महमूद ने दीपालपुर से प्रस्थान किया और चदेरी की ओर प्रस्थान किया। उसने समस्त हाल लिखकर बहजत खा को भेजा। उसने उत्तर भेजा कि "यह दास उस व्यक्ति का आज्ञाकारी है जिसके अधिकार मे शादियाबाद की राजधानी हो।" इस उत्तर से सुल्तान महमूद को अपने भविष्य के विषय मे (३८३) बडी चिंता हो गई। उसने बहिश्तपुर नामक स्थान पर पडाव किया और लोगो से परामर्श किया।

रणथम्भोर की ओर प्रस्थान

कुछ हितैषियो ने कहा कि रणथम्भोर के किले मे शरण लेनी चाहिये। कुछ लोगो ने कहा कि सुल्तान सिकन्दर लोदी से सहायता की याचना करनी चाहिये। सुल्तान महमूद ने कहा कि "मेरे हृदय मे यह बात आती है कि कुछ दिन मै सतोष से कार्य करू और अपने सौभाग्य के उदय की प्रतीक्षा करू। इसी कारण रणथम्भोर के किले मे शरण लेना उचित है। वहा सहायता की आशा है। अपने समकालीनो से सहायता की याचना करना उचित नही।" प्रजा से आशा तोड कर वह ईश्वर की लीला की प्रतीक्षा करने लगा।

शाहजादे की पराजय

कुछ दिन उपरान्त मेदिनी राय, जो वीरता तथा योग्यता मे अद्वितीय था, अपने थाने से आया और साथ हो लिया। बहजत खा ने अपने दुष्कर्म से अवगत होकर अपने पुत्र शिरजा खा को सुल्तान की सेवा मे भेजा। सुल्तान महमूद ने मन्दू की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय उपरान्त सूचना मिली कि शाह-ज़ादा साहब खा चदेरी की ओर जा रहा है। जब उसने सहराय नामक स्थान पर पडाव किया तो दोनो

१ एक पोथी के अनुसार 'मोवज़्ज़न खां, और एक पोथी के अनुसार 'मोअद्दब खा'।

ओर की सेनाओ ने यह उचित समझा कि प्रात काल सेनाओ को सुसज्जित करके विजय की प्रतीक्षा की जाय। सयोग से, एक पहर रात के उपरान्त अफजल खा सवार होकर सुल्तान महमूद के शिविर की ओर रवाना हो गया। आधी सेना अपितु उससे अधिक अफजल खा से मिल गई और सुल्तान के शिविर मे पहुच गई। शाहजादा साहब खा तथा मुहाफिज खा भय एव घबराहट मे अपने शिविर[1] मे आग लगा कर भाग गये। चौथे दिन वे नुसरताबाद नालचा मे पहुचे और उन्होने राजकोष के धन का अपव्यय प्रारम्भ कर दिया तथा किले पर पुन अधिकार करने का प्रयत्न करने लगे।

सुल्तान महमूद का शादियाबाद की ओर प्रस्थान

(३८४) सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और शादियाबाद की ओर प्रस्थान किया। जब वह सरसिया नामक स्थान पर पहुचा तो वह व्यक्ति, जिसे सुल्तान शिहाबुद्दीन ने गोद लिया था, तथा अन्य अमीर जो भार[2] बाबा हाजी के पर्वत मे घिर गये थे वचन लेकर सुल्तान महमूद के पास आये और निरन्तर यात्रा करते हुए उन्होने सरसिया मे पडाव किया। दूसरे दिन ७ रमजान ९१७ हि० (२८ नवम्बर १५११ ई०) को वे राजधानी शादियाबाद की ओर रवाना हुए। दोनो ओर से सेनाये सुसज्जित होकर युद्ध के लिये तैयार हो गई।

शाहजादे का भाग कर मन्दू के किले मे पहुँचना

शाहजादा साहब खा ने साहस से कार्य लेते हुए सुल्तान महमूद की सेना पर आक्रमण किया। इसी बीच मे एक हाथी सुल्तान महमूद की ओर बढा। उसने महावत के सीने पर इस प्रकार बाण मारा कि वह उसकी पीठ के बाहर निकल गया। मेदिनी राय ने अपने राजपूत सैनिको की सहायता से बर्छे तथा जमघर द्वारा साहब खा की सेना को नष्ट कर दिया। शाहजादा मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। कुछ लोगो ने किले मे शरण ली और एक समूह उन गुफाओ मे जो मन्दू के निकट स्थित है छुप गया। सुल्तान महमूद हौजे खास तक पीछा करके लौट आया।

सुल्तान द्वारा मन्दू के किले का अवरोध तथा सधि का प्रयत्न

शाहजादा किले को अपने अधिकार मे करने का प्रयत्न करने लगा, रात-दिन वह किले की रक्षा की चेष्टा किया करता था। सुल्तान महमूद ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए सदेश भेजा कि, "वे दोनो भाई है और कृपा तथा दया परमावश्यक है अत स्वाभाविक सौजन्य इस ओर प्रेरित करता है कि जिस स्थान की भी वह इच्छा करे उसे दे दिया जाय। वह जितना धन ले जाना चाहे ले जाय, इसमे कोई आपत्ति नही, ताकि मुसलमानो का व्यर्थ रक्तपात न हो।" शाहजादा साहब खा ने किले की दृढता पर अभिमान करत हुए इस बात को स्वीकार न किया। सुल्तान महमूद ने किले के चारो ओर के स्थान पर अपना अधिकार कर लिया और अवरोध मे अत्यधिक प्रयत्नशील हो गया।

१६ शव्वाल ९१७ हि० (६ जनवरी १५१२ ई०) को मौलाना एमादुद्दीन खुरासानी के प्रयत्नो के फलस्वरूप सेना के वीर सूर्योदय के पूर्व मोर्चे के आदमियो पर टूट पड़े और युद्ध करने लगे।

१ एक पोथी के अनुसार 'घबराहट मे नालचा पहुँचे'।
२ इस शब्द को 'बहार' भी पढ़ा जा सकता है, 'पहाड़' भी हो सकता है।

(३८५) पलक झपकाते ही उन लोगो ने शाहज़ादे के सहायको तथा मित्रो को मिट्टी मे मिला दिया।

शाहजादे का भागकर मुजफ्फर गुजराती के पास पहुचना

शाहजादा तथा मुहाफिज खा थोडे से बहुमूल्य रत्न अपने साथ लेकर ७०० सीढियो के मार्ग से भाग गये और चौथे दिन गुजरात के बरौदा[१] नामक कस्बे मे सुल्तान मुजफ्फर से मिल गये। उसने शाहजादे के चरणो को शुभ समझ कर आतिथ्य-सत्कार मे कोई भी असावधानी न की और यह निश्चय किया कि वर्षा ऋतु के उपरान्त मालवा की विलायत को अपने अधिकार मे करके उसके भाइयो[२] मे बाट दिया जाय।

शाहजादे के कारण ईरान के राजदूत के आदमियो की हत्या

वहा से वह चम्पानीर पहुचा। एक दिन शाहजादा, यादगार मुगल जो सुर्ख़ कुलाह[३] के नाम से प्रसिद्ध था, की मजिल पर पहुचा। वह शाह इस्माईल सफवी[४] की ओर से राजदूत बनकर गुजरात आया था। उन लोगो के सेवको ने एक दूसरे के प्रति कठोर वचन कहे और उनमे शत्रुता उत्पन्न हो गई। सर्वसाधारण मे खलबली मच गई और यह प्रसिद्ध हो गया कि "यादगार सुर्ख़-कुलाह तथा उसके सेवको ने मन्दू के शाहज़ादे को बन्दी बना लिया है।" गुजरात की सेना तथा लोगो की भीड एकत्र हो गई। यादगार सुर्ख़ कुलाह के आदमियो मे से कुछ लोग मारे गये।

शाहज़ादे का आसीर की ओर भागना

शाहजादा लज्जित होकर बिना आज्ञा लिये आसीर की विलायत की ओर चल दिया और ३०० अश्वारोहियो सहित पुरगाव नामक स्थान पर, जो आसीर की सीमा पर बडा प्रसिद्ध है, उसने पडाव किया। कन्दुहा कस्बे का हाकिम लोधा यह सूचना पाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पहुचा और उसने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। साहब खा ने पराजित होकर कावेल के हाकिम से सहायता की प्रार्थना की। कावेल दकिन प्रदेश के अधीन है। क्योकि सुल्तान महमूद तथा कावेल के हाकिम मे अत्यधिक मित्रता थी अत उसने उसकी सहायता न की और उसके मार्ग व्यय हेतु कुछ ग्राम निश्चित कर दिये।

सुल्तान महमूद द्वारा शासन-प्रबन्ध

राज्य की अव्यवस्था का अन्त हो जाने के उपरान्त तथा उपद्रव के शान्त हो जाने के पश्चात्, सुल्तान महमूद शाति के सिहासन पर आरूढ हुआ। हाकिम, थानेदार तथा आमिल लोग, राज्य के विभिन्न भागो मे शासन स्थापित करने के लिये भेजे गये।

१ एक पोथी मे 'बरौदरा'।

२ शाहज़ादे के भाइयो।

३ लाल टोपी वाला, किज़िलबाश, ईरानियों के लिये सामान्य रूप से इसी शब्द का प्रयोग होता था।

४ इस्माईल सफ़वी बिन सुल्तान हैदर ईरान के सफ़वी वश का प्रथम बादशाह था। उसने ईरान में १५०० ई० मे राज्य करना प्रारम्भ किया और २४ वर्ष के राज्य के उपरान्त १५२४ ई० मे उसकी मृत्यु हो गई।

मेदिनी राय का पूर्ण अधिकार-सम्पन्न बनने का प्रयत्न

(३८६) मेदिनी राय ने पूर्ण अधिकार-सम्पन्न बन जाने की अभिलाषा मे सुल्तान गयासुद्दीन शाह एव नासिर शाह के अमीरो को अपने मध्य से हटा देना चाहा। अपने कुत्सित विचारो की पूर्ति हेतु उसने अमीरो की चुगली करना प्रारम्भ कर दिया। वह सुल्तान से एकान्त मे प्रत्येक के विषय मे बुरी बुरी बाते कहा करता था। उसने एक दिन निवेदन किया कि, "अफजल खा तथा इकबाल खा शाहजादा साहब खा को पत्र भेज कर सोये हुए उपद्रव को जगाना चाहते है।" सुल्तान महमूद ने स्वार्थपूर्ण बातो को नि स्वार्थ समझ कर आदेश दिया कि जब अफजल खा तथा इकबाल खा अभिवादन हेतु आये तो उनकी हत्या कर दी जाय। दूसरे दिन जब वे अभिवादन हेतु आये तो उन्हे बन्दी बनाकर उनकी हत्या कर दी गई।

सिकन्दर खा का विद्रोह

सिवास[1] तथा हदिया का हाकिम सिकन्दर खा तथा फतह जग खा शिरवानी मेदिनी राय की यह धृष्टता देखकर अपनी-अपनी जागीरो को चले गये। सिकन्दर खा ने विद्रोह कर दिया और कन्दुहा से शिहाबाबाद कस्बे तक का स्थान अपने अधिकार मे कर लिया। खालसे[2] के आमिलो को निकाल दिया। सुल्तान महमूद इस विद्रोह को शात करने के लिये ५ जमादि-उल-आखिर ९१८ हि० (१८ अगस्त १५१२ ई०) को मन्दू के किले के नीचे से उतरा और नालचा के कूशके जहानुमा मे उसने पडाव किया। विजारत का पद मेदिनी राय को प्रदान कर दिया और चदेरी के हाकिम बहजत खा तथा अन्य अमीरो को अपने आदमियो को भेजकर बुलवाया। बहजत खा ने शाही वश की दासता से सबन्धित होने के बावजूद मेदिनी राय के प्रभुत्व से भयभीत होकर वर्षा ऋतु का बहाना किया।

मंसूर खा का सिकन्दर खा के विरुद्ध भेजा जाना

सुल्तान महमूद ने पूर्ण रूप से उपेक्षा करते हुए भिलसा[3] के मुक्ता मसूर खा को लिखा कि वह सिकन्दर खा को पराजित करने के लिए रवाना हो। मसूर खा अपनी सेना तैयार करके युद्ध के लिए रवाना हुआ। जब वह सिकन्दर खा की विलायत के निकट पहुचा तो गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये (३८७) कि "सिकन्दर खा ने बहुत बडी सेना एकत्र कर ली है और गोडवाना के रायो को भी मिला लिया है।" मसूर खा उसी स्थान पर रुक गया और जो सत्य बात थी उसकी सूचना सुल्तान महमूद को देकर सहायता मागी। मेदिनी राय ने उत्तर मे लिखा कि "यदि तू (मसूर खा) सिकन्दर खा को बन्दी बनाने मे असावधानी तथा शिथिलता प्रदर्शित करेगा तो शाही क्रोध का परिणाम भोगेगा।" मसूर खा इस आदेश से अपने परिणाम के विषय मे चिता मे पड गया और लौट कर बहजत खा से मिल गया। तुज्जार खा भी जो मसूर खा की सहायतार्थ नियुक्त हुआ था जाकर बहजत खा से मिल गया।

मेदिनी राय का सिकन्दर खां के विरुद्ध भेजा जाना

सुल्तान महमूद यह सूचना पाकर प्रस्थान करके धार पहुचा और उसने शेख कमालुद्दीन

१ एक पोथी के अनुसार 'बसवास' तथा एक पोथी के अनुसार 'अवास'। इसे 'सवास' एव 'सुवास' भी पढा जा सकता है।

२ वह भूमि जिसकी आय केन्द्रीय सरकार मे जाती हो।

३ एक पोथी के अनुसार 'फिलसा'।

मालवा निवासी (के मजार) के दर्शन किये। दीपालपुर कस्बे से उसने मेदिनी राय को बहुत बडी सेना तथा ५० हाथी देकर सिकन्दर खा को पराजित करने के लिए भेजा और स्वय उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। जब मेदिनी राय अस्वास[१] की विलायत मे पहुचा तो उसने लूट मार करना प्रारम्भ कर दिया। इस सूचना के कारण सिकन्दर खा के भोग-विलास मे विघ्न पड गया और उसने दीनता प्रदर्शित करते हुए सधि कर ली। हबीब खा के द्वारा वह मेदिनी राय के पास पहुचा। मेदिनी राय ने उज्जैन पहुच कर सुल्तान महमूद से सिकन्दर खा के अपराधो की क्षमा-याचना की। सुल्तान महमूद ने उसका अपराध क्षमा कर दिया और उसके प्राचीन पद तथा जागीर को उसी के अधिकार मे रहने दिया।

शादियाबाद के किले मे विद्रोह तथा उसका दमन

सुल्तान महमूद उज्जैन से प्रस्थान करके आगरा कस्बे मे पहुचा। वहा उसे शादियाबाद के किले के दारोगा का प्रार्थनापत्र प्राप्त हुआ कि "कुछ गुण्डो ने २५ रमजान ९१८ हि० (४ दिसम्बर १५१२ ई०) की रात्रि मे आक्रमण करके सुल्तान गयासुद्दीन की कब्र से छत्र हटाकर एक ऐसे व्यक्ति के सिर पर लगा दिया जिसके वश का कोई पता न था और नगर मे लूट मार प्रारम्भ कर दी। शाही सौभाग्य से उस समूह के नेता को बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या कर दी गई।" सुल्तान महमूद (३८८) शादियाबाद के दारोगा को प्रोत्साहनयुक्त पत्र भेजकर स्वय भार[२] बावा हाजी की ओर चल दिया।

बहजत खा का सुल्तान सिकन्दर लोदी से सहायता की याचना करना

वहा से उसने भैरव दास[३] के हाथ प्रोत्साहनयुक्त पत्र बहजत खा के पास भेजा। क्योकि दुर्भाग्य की धूल का अजन उसकी बुद्धि के आखो मे लग चुका था, अत उसने अनुचित उत्तर दिये और कुछ लोगो को उसने इस आशय से कावेल भेजा कि वे शाहजादा साहब खा को सरदार बनाकर ले आये। उसने सुल्तान सिकन्दर लोदी की सेवा मे भी इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "महमूद शाह ने अपने राज्य का शासन-प्रबन्ध काफिरो के अधिकार मे दे दिया है और मुहम्मद साहब की शरीअत के सन्मार्ग से विचलित होकर मुसलमानो को अपमानित करता है और काफिरो तथा राजपूतो को सम्मान प्रदान करता है। यदि कोई विजयी सेना इस क्षेत्र मे पहुच जाय तो उस इस्लाम को शरण प्रदान करने वाले बादशाह (आपके) के नाम का खुत्बा पढवा दिया जायगा और आपके नाम का सिक्का चालू करा दिया जायगा।" जब भैरव दास ने यह समाचार पहुचाया तो सुल्तान महमूद ने सेना को तैयार करके एक सप्ताह उपरान्त पहाड से प्रस्थान करके शिकारपुर नामक स्थान पर पडाव किया। दूसरे दिन उसने मुख्तस खा को अत्यधिक सेना देकर अपने पूर्व चदेरी की ओर भेज दिया।

मुजफ्फर गुजराती द्वारा आक्रमण

इसी समय यह समाचार प्राप्त हुये कि मुहर्रम ९१९ हि० (मार्च-अप्रैल १५१३ ई०) के मध्य मे सुल्तान मुजफ्फर गुजराती अपार सेना तथा ५०० हाथियो सहित धार के कस्बे मे पडाव किये हुए

१ इसके पूर्व इसे 'सिवास' लिखा गया है।
२ इसे पहाड भी कहा जा सकता है।
३ एक पोथी के अनुसार 'महतर दास'।

है और दिलावरा नामक स्थान के समीप आखेट मे व्यस्त है। राय पिथौरा तथा अन्य अमीरो ने, जो मन्दू के किले मे थे, विश्वासपात्रो को भेजकर दीनता तथा नम्रता प्रदर्शित करते हुए इस आशय का सदेश भेजा कि "इस समय सुल्तान महमूद अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने मे असमर्थ है। ऐसी अवस्था मे उसके राज्य पर चढाई करना सौजन्यता तथा पौरुष का कार्य नही।" किन्तु सुल्तान मुजफ्फर ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। उसने निजामुलमुल्क सुल्तानी को एक बहुत बडी सेना देकर नालचा के क्षेत्र (३८९) मे भेजा। वह हौजे रानी के निकट पहुच कर लौट आया। लौटते समय किले से एक समूह नीचे उतर कर लूट मार करने लगा। निजामुलमुल्क ने वापस होकर कुछ लोगो की हत्या कर दी। अन्य लोग शरण हेतु किले मे पहुच गये। सुल्तान महमूद इस शोकमय समाचार को प्राप्त करके बडा व्याकुल हुआ और वह इस चिंता मे पड गया कि "सर्वप्रथम मै किस ओर प्रस्थान करू ?" जब वह इसी असमजस मे था तो उसे अचानक यह समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान मुजफ्फर गुजराती लौट गया और धोर[1] के मार्ग से गुजरात की ओर चला गया है। सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए बहजत खा की पराजय का सकल्प कर लिया।

सिकन्दर खा द्वारा पुन. विद्रोह

कुछ दिन उपरान्त यह समाचार पुन प्राप्त हुये कि सिकन्दर खा ने पुन विद्रोह की पताका बलन्द कर दी है और खालसा के ग्रामो को अपने अधिकार मे कर लिया है। सुल्तान महमूद ने कन्दुहा कस्बे के हाकिम, मलिक लोधा को उसे दण्ड देने के लिए भेजा। मलिक लोधा सिवास की ओर रवाना हुआ। जब दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई तो प्रात काल से सायकाल तक उपद्रव तथा अशाति की धूल उडती रही। अन्त मे सिकन्दर खा अपने मे युद्ध की शक्ति न देखकर भाग खडा हुआ। मलिक लोधा की सेना ने पीछा करके लूट मार प्रारम्भ कर दी। इसी बीच मे एक व्यक्ति, जिसका परिवार बन्दी था, मलिक लोधा के पास पहुचा और उसने उसके चरणो का चुम्बन करने के बहाने उसके समीप पहुच कर विष भरी कटार उसकी कोख मे भोक दी और उसकी हत्या कर दी। सिकन्दर खा इस घटना के विषय मे सुनकर लौट पडा और उसने मलिक लोधा के सैनिको का पीछा किया। ६ हाथी तथा अत्यधिक घोडे लूट लिये और विजय तथा सफलता प्राप्त करके सिवास की ओर लौट गया।

सुल्तान का चन्देरी की ओर प्रस्थान

जब सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने बहजत खा का विनाश सर्वोपरि समझ कर चदेरी की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे समाचार प्राप्त हुआ कि "जिलहिज्जा ९१९ हि० (फरवरी १५१४ ई०) के मध्य मे शाहजादा साहब खा गोडवाना से चदेरी पहुचा। बहजत खा तथा मसूर खा ने (३९०) उसका स्वागत किया और उसे सिंहासनारूढ कर दिया।" सुल्तान महमूद साजनपुर नामक स्थान पर ठहर कर सेना की तैयारी करने लगा।

सुल्तान सिकन्दर से शाहजादे को सहायता प्राप्त होना

कुछ दिन उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुआ कि सईद खा लोदी तथा एमादुलमुल्क, देहली की सेना सहित सुल्तान सिकन्दर की ओर से शाहजादा साहब खा की सहायतार्थ चदेरी से ५ कोस की दूरी पर

१ एक पोथी के अनुसार 'धोद'।

पहुच गये है। सुल्तान महमूद यह समाचार पाकर बडा व्याकुल हुआ और उसने यह उचित समझा कि वह अपने स्थान को लौट जाय। मार्ग मे उसने अमीरो को अपने समक्ष बुलवाया और उनसे उसने प्रतिज्ञा करवाई। शपथ तथा प्रतिज्ञा के बावजूद जब थोडी सी रात्रि व्यतीत हो गई तब सफदर खा तथा मुख्तस खा जोकि वचन के बडे पक्के अमीर थे, चदेरी की ओर भाग गये। महमूद खा ने एक सेना को उनका पीछा करने के लिए भेजा, और स्वय सरौज कस्बे मे पडाव किया। १ सफर ९२० हि० (२८ मार्च १५१४ ई०) को उसने भिल्सा के कस्बे के उपान्त को पार करके रोदखाने पर पडाव किया। जब शाही शिविर भिल्सा के द्वार के समक्ष से गुजर रहा था, तो मसूर खा के गुमाश्ते ने नगर के गुण्डो की सहायता से शिविर के बचे खुचे लोगो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। यह समाचार पाकर सुल्तान महमूद के पौरुष तथा मर्यादा को ठेस लगी और उसने आदेश दिया कि कोट के ऊपर तुरन्त अधिकार जमाकर परिणाम पर ध्यान न देने वाले उन सैनिको की हत्या कर दी जाय। नगर वाले इस समूह के दुर्भाग्य के कारण नष्ट कर दिये गये और उनके परिवार को दास बना लिया गया।

सुल्तान ने कुछ दिन तक शिकार के लिए उस क्षेत्र मे पडाव किया। शाहजादा साहब खा तथा बहजत खा ने इस पडाव को बहुत बडी देन समझकर मलिक महमूद को अत्यधिक सेना सहित सारगपुर की ओर भेजा। सारगपुर के मुक्ता[1] का गुमाश्ता[2] झझार खा[3] युद्ध के उपरान्त विजयी हुआ। मलिक (३९१) महमूद भाग खडा हुआ और चदेरी तक किसी स्थान पर न ठहरा। झझार खॉ लूट की अत्यधिक धन-सपत्ति लेकर सारगपुर को लौट गया। इसी समय जब कि महमूद की सेना पलायन करती हुई आ रही थी, सईद खा लोदी तथा एमादुलमुल्क ने बहजत खा को सदेश भेजा कि "प्रतिज्ञा हो चुकी थी कि जब सिकन्दर की विजयी सेनाये चदेरी के भूभाग मे पहुचेगी तो सिकन्दर के नाम का खुत्बा पढवा दिया जायेगा और दिरहम तथा दीनार एव सिक्के सुल्तान के नाम से चलेगे। अभी तक इसका कोई चिह्न प्रकट नही हुआ है।" जब उन्हे उचित उत्तर न मिला तो वे सहराई[4] नामक स्थान से कूच करके १४ कोस पीछे हट गये और जो वास्तविक स्थिति थी, उसे सुल्तान सिकन्दर की सेवा मे लिख भेजा। सुल्तान सिकन्दर ने उनको बुलवाने का फरमान भेजा। जब सुल्तान सिकन्दर की सेना कष्ट उठाकर देहली की ओर लौट गई तो सुल्तान महमूद, जो ईश्वर की कृपा पर आश्रित था, आखेट मे व्यस्त हो गया।

एक दिन शिकार के समय एक गुप्तचर ने यह समाचार पहुचाये कि ख्वाजये जहा तथा मुहाफिज खा बहुत बडी सेना लेकर शादियाबाद की ओर चल खडे हुए है। सुल्तान महमूद उसी स्थान से लौट पडा और उसने हबीब खा, फखरुलमुल्क तथा हमीकरण[5] को मुहाफिज खा को पराजित करने के लिए भेजा। हबीब खा तथा अन्य अमीर १६ रबी-उस्सानी ९२० हि० (१० जून १५१४ ई०) को नालचा पहुचे। सयोग से उनके पहुचने के ३,४ घडी पूर्व ही मुहाफिज खा पहुच चुका था। युद्ध प्रारम्भ हो गया। विद्रोह के दुर्भाग्य के कारण मुहाफिज खा की हत्या हो गई। वे उसके सिर को पृथक् करके विजय तथा सफलता

१ अक्ता का स्वामी।
२ एजेंट।
३ एक पोथी के अनुसार 'हिजाज खा' और एक पोथी के अनुसार 'जजार खा'।
४ एक पोथी के अनुसार 'सहरानी'।
५ एक पोथी के अनुसार 'बीम करण', और एक के अनुसार 'हम करण'।

प्राप्त करके अपने शिविर को लौट गये। शाहजादा साहब खा यह समाचार पाकर बडा दुखी हुआ और उसने खानो के आने-जाने के द्वार अपने ऊपर बन्द कर लिये।

सधि

(३९२) बहजत खा तथा सद्र खा ने यह उचित समझा कि आलिमो तथा सूफियो को मध्यस्थ बनाकर अपने अपराधो की क्षमा-याचना करके शाहजादे के लिए राज्य का एक भाग प्राप्त करने की याचना करे। वे इस बात से सहमत होकर साहब खा की सेवा मे पहुचे। शाहजादे ने कहा कि "बहुत समय से यह बात मेरे हृदय मे भी आ रही थी किन्तु मै सुल्तान सिकन्दर की सेना के आगमन के कारण दुखी था। ईश्वर को धन्य है कि इस विपत्ति का निराकरण हो गया।" बहजत खा ने अमीरो के परामर्श मे शेख औलिया को शाही शिविर मे भेज कर अपने अपराधो की क्षमा-चायना की और शाहजादे के व्यय हेतु एक स्थान की याचना की। सुल्तान महमूद ने यह बात ईश्वर की बहुत वडी कृपा तथा देन समझकर राय सेन का किला तथा भिल्सा एव धमौनी के कस्बे शाहजादे को प्रदान कर दिये। १० लाख तन्के नकद व्यय मे सहायता हेतु ओर १२ हाथी इनाम मे प्रदान किये। बहजत खा तथा अन्य अमीरो एव खानो को प्रोत्साहनयुक्त फरमान भेजे और अपने कुछ सेवको को बहजत खा के दूत के साथ बिदा कर दिया।

शाहजादे का सुल्तान सिकन्दर की सेना मे पहुचना

शेख औलिया तथा वे लोग जो भेजे गये थे जब चदेरी पहुचे तो बहजत खा ने अपने पुत्र शिरजा खा को दूतो के स्वागतार्थ भेजा और उनके आगमन को अपने लिए बडे आदर तथा सम्मान का विषय समझा। बहजत खा ने फरमानो के विषय से अवगत होकर रायसेन तथा भिल्सा के राज्य का आदेश-पत्र शिरजा खा के हाथ साहब खा की सेवा मे भेज दिया और १० लाख तन्के नकद एव १२ हाथी अपने पास रोक लिये। कुछ षड्यन्त्रकारियो ने शाहजादा साहब खा से कहा कि, "बहजत खा ने निश्चय किया है कि ईदे फित्र[1] के दिन प्रात काल नमाजगाह मे तुम्हे तथा कुछ विश्वासपात्रो को बन्दी बना ले। इस कारण उसने शेख औलिया को शिविर मे भेज दिया है, और प्रतिज्ञा की शपथ द्वारा पुष्टि करा रहा है। उसने कुछ सैनिको को भी बुलवाया है।" इस समाचार को पाकर शाहजादा बडा आतकित हुआ और दिन भर वह अपने विषय मे चिता मे ग्रस्त रहा।

महमूद शाह का चन्देरी की ओर प्रस्थान

२९ रमजान (८ नवम्बर १५१४ ई०) को अल्पदर्शी शाहजादा अज्ञात मार्ग से सीमान्त पर (३९३) सुल्तान सिकन्दर की सेना मे पहुच गया। जब महमूद शाह को यह समाचार प्राप्त हुआ तो १९ शव्वाल (२७ नवम्बर १५१४ ई०) को वह चदेरी की ओर रवाना हुआ। बहजत खा तथा नगर के प्रतिष्ठित लोग उसके स्वागतार्थ उपस्थित हुए और उन्होने क्षमा-याचना की। महमूद शाह ने उन्हे क्षमा कर दिया और प्रत्येक को खिलअत तथा इनाम द्वारा सम्मानित किया। कुछ दिन तक वह चदेरी मे ठहरा रहा और वहा की व्यवस्था ठीक करता रहा। तदुपरान्त वह राजधानी शादियाबाद की ओर चला गया।

१ पूरे मास के रोज़ों (रमज़ान) के बाद की ईद।

मेदिनी राय का कुप्रभाव

मेदिनी राय के दुष्प्रयत्नो तथा दुष्परामर्श के कारण अमीरो तथा सरदारो के मध्य मे युद्ध छिड गया। नित्यप्रति एक निरपराधी की तोहमत तथा झूठे अपराध लगाकर हत्या करा दी जाती थी। शनै-शनै कार्य इस सीमा तक पहुच गया कि महमूद शाह समस्त अमीरो अपितु समस्त मुसलमानो के विरुद्ध हो गया। प्राचीन आमिलो को, जो वर्षो से गयास शाह तथा नासिर शाह के राज्यकाल मे दीवानी के कार्यों को सम्पन्न कर रहे थे, उसने पदच्युत कर दिया और उनके स्थान पर मेदिनी राय के मित्रो तथा सहायको को नियुक्त कर दिया। परिणामस्वरूप अधिकाश अमीर, सरदार तथा सेवक हताश होकर अपने परिवार सहित स्वदेश छोड कर चल दिये। शादियाबाद का किला, जो इल्म का केन्द्र था और जहा आलिम एव सूफी एकत्र रहते थे, गवारो का निवास-स्थान बन गया। यहा तक कि महमूद शाह के राज्य के समस्त कार्य तथा पद, दरबानी एव फीलवानी, मेदिनी राय अपने गुमाश्तो को प्रदान करने लगा। मुसलमानो मे से सुल्तान महमूद की सेवा मे २०० व्यक्तियो से अधिक न रहे। मुसलमान स्त्रियो तथा सैयिदो की स्त्रियो को राजपूतो ने अपने अधिकार मे करके दासी बना लिया और नृत्य सिखा कर अखाडे मे प्रविष्ट कर दिया। सुल्तान नासिरुद्दीन की गायिकाओ को भी अपने अधिकार मे कर लिया।

राजपूतो द्वारा सुल्तान महमूद के स्थान पर राय रायां को बादशाह बनाने का प्रस्ताव

सुल्तान महमूद राजपूतो के प्रभुत्व को देखकर शक्तिहीन हो गया। क्योकि हिन्दुस्तान वालो मे यह (३९४) प्रथा है कि जब वे अपने सेवको तथा अतिथियो को बिदा करते है तो पान देते है अत सुल्तान महमूद ने पानो का भरा हुआ एक बरतन आराइश खा के हाथ मेदिनी राय के पास भेजा और यह सदेश प्रेषित किया कि "इसके उपरान्त तुम्हे आज्ञा दी जाती है कि मेरा राज्य छोड कर बाहर निकल जाओ"। राजपूतो ने उत्तर दिया कि "हम लोगों ने, जिनमे ४० हज़ार अश्वारोही सम्मिलित है, निष्ठा प्रदर्शित करने तथा प्राणो की बलि देने मे कोई कमी नही की और हमारे द्वारा उचित सेवाये सम्पन्न हुई है। हमे ज्ञात नही कि हमसे क्या अपराध हुआ है।" जब आराइश खा यह उत्तर ले गया तो राजपूतो ने मेदिनी राय के घर मे एकत्र होकर यह योजना बनाई कि सुल्तान महमूद को अपने मध्य से हटा कर मेदिनी राय के पुत्र राय राया को सिहासनारूढ कर दिया जाय। मेदिनी राय ने कहा कि "इस समय मालवा का राज्य वास्तव मे हमारे अधिकार मे है। यदि महमूद शाह मध्य मे न रहेगा तो सुल्तान मुजफ्फर खा गुजराती शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर मालवा की विलायत को अपने अधिकार मे कर लेगा, अत हमे यथासभव अपने स्वामी को सतुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिये।"

मेदिनी राय द्वारा क्षमा-याचना

मेदिनी राय राजपूतो सहित सुल्तान महमूद की सेवा मे उपस्थित हुआ और क्षमा-याचना के स्थान पर खडा हो गया और उसने निवेदन किया कि, "सुल्तान को यह भली भाति ज्ञात है कि हम दासो ने प्राण न्योछावर करने तथा सेवा करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नही किया है। मुहाफिज खा[1] की, जोकि सुल्तान का शत्रु था, स्वामी के सौभाग्य से अत्यधिक कष्ट देकर हत्या कर दी। यद्यपि मनुष्य अपराधो तथा पापो से परिपूर्ण है किन्तु हमने ऐसा कोई अपराध नही किया है जिससे आपको कष्ट पहुचा

१ एक पोथी के अनुसार 'मुजाहिद खां'।

(३९५) हो। यदि मनुष्यता के नाते कोई अनुचित कार्य हमने किया हो तो आपकी स्वाभाविक कृपा तथा क्षमा से हमे आशा है कि हमको क्षमा कर दिया जायेगा। इसके उपरान्त हम लोग आप की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य न करेगे।" सुल्तान महमूद ने विवश होकर उनके प्रति शत्रुता का भाव त्याग दिया और यह शर्त कराई कि "कारखानो के समस्त पदो को प्राचीन नियमानुसार उन्ही मुसलमान पदाधिकारियो को सौप दिया जाय और तुम राज्य के कार्य मे अपने पदाधिकारियो को कदापि प्रविष्ट न होने दो। मुसलमान स्त्रियो को तुम लोग अपने घरो से निकाल दो और अत्याचार त्याग दो।" मेदिनी राय ने समय की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए उन शर्तो को स्वीकार कर लिया ओर सुल्तान की अत्यधिक चाटुकारी की किन्तु सालबाहन पुरबिया ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया ओर उसने अपने दुष्कर्म को न त्यागा।

सालबाहन की हत्या तथा मेदिनी राय का आहत होना

सुल्तान महमूद ने अत्यधिक वीरता के कारण, यद्यपि उसकी सेवा मे २०० मुसलमानो से अधिक न थे, अपने कुछ विश्वासपात्रो से मिलकर निश्चय किया कि "जब हम शिकार से लोटे ओर मेदिनी राय तथा सालवाहन अपने-अपने घरो को प्रस्थान करे तो लौटते समय उन्हे टुकडे-टुकडे कर दिया जाय।" दूसरे दिन वह उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति को नियुक्त करके स्वय शिकार हेतु चला गया और लौट कर एकान्त मे पहुच गया। मेदिनी राय तथा सालबाहन को बिदा कर दिया। उसी समय जो लोग घात लगाये बैठे थे उन्होने मेदिनी राय तथा सालबाहन को आहत कर दिया। सालबाहन की उसी स्थान पर हत्या हो गई। क्योकि मेदिनी राय के घाव गहरे न थे अत उसे लोग उसके घर ले गये।

राजपूतो द्वारा सुल्तान की हत्या का प्रयत्न

राजपूत लोग यह समाचार सुनकर तैयार होकर मेदिनी राय के घर इस आशय से एकत्र हुए कि वे सुल्तान महमूद को हानि पहुचाये। सुल्तान महमूद अपनी वीरता तथा पोरूष के कारण यह समाचार सुनकर १६ अश्वारोहियो तथा कुछ मुसलमान पदातियों सहित शहीद होने के उद्देश्य से महल से निकला और युद्ध करने लगा। कई हजार राजपूतो ने उपस्थित होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। एक पुरबिया राजपूत ने, जो अपने पौरुष के लिए प्रसिद्ध था, वीरता प्रदर्शित करते हुये सुल्तान पर प्रहार किया। सुल्तान ने उसके वार को खाली देकर उसे दो टुकडे कर दिया। दूसरे राजपूत ने बर्छा मारा। सुल्तान (३९६) ने उसके बर्छे को अपनी तलवार पर लेकर उसे कमर से दो टुकडे कर दिया। राजपूत लोग यह दशा देखकर भाग खडे हुए और एक स्थान पर एकत्र हुए। उन्होने इस बात की इच्छा की कि वे एक साथ सुल्तान पर टूट पडे और उसकी हत्या कर दे।

मेदिनी राय द्वारा राजपूतो को शांत करना

जब मेदिनी राय को इस योजना की सूचना मिली तो उसने कहा कि "महमूद शाह मेरा स्वामी यदि उसके आदेशानुसार मुझे आहत किया गया है तो तुमसे क्या मतलब? यदि उसके राज्य की छत्रछाया हमारे सिर पर न होगी तो सुल्तान मुजफ्फर गुजराती हमे नष्ट कर देगा।" राजपूत लोग मेदिनी राय के कहने से अपने-अपने घरो को चले गये और उपद्रव शात हो गया।

मेदिनी राय का सुल्तान की सेवा मे सन्देश

उस रात्रि में मेदित्ती राय ने सुल्तान के पास संदेश भेजा कि, "क्योकि मैने आजीवन निष्ठा तथा

नमकहलाली के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नही किया है, अत इस घाव से मेरे प्राण बच गये। यदि वास्तव मे मेरी हत्या द्वारा राज्य के कार्य सम्पन्न हो सकते हो तो अब भी कोई आपत्ति नही।" महमूद शाह ने कहलाया कि, "हमे इस बात का प्रमाण मिल चुका है कि मेदिनी राय हमारा हितैषी है और पूर्ण निष्ठा प्रदर्शित करते हुए उसने कल राजपूतो को उपद्रव तथा अशाति से रोका। मै उसके हृदय के घाव का अपनी कृपा तथा दया के मलहम से उपचार करूगा।"

मेदिनी राय का सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होना

कुछ दिन उपरान्त जब उसके घाव भर गये तो वह ५०० सशस्त्र राजपूतो सहित अभिवादन हेतु उपस्थित हुआ। इसके उपरान्त वह इसी प्रकार अभिवादन हेतु आता रहा। महमूद शाह ने अत्यधिक वीरता तथा साहस के कारण उसके प्रति पूर्व ही की भाति व्यवहार किया और उसे प्रोत्साहन देकर इस आशय से दीवान मे भेज दिया कि वह राज्यव्यवस्था के कार्य सम्पन्न करता रहे। जब कुछ समय इस प्रकार व्यतीत हो गया तो उसने देखा कि "मै केवल नाममात्र को बादशाह रह गया हूँ।"

सुल्तान का मन्दू से पलायन

९२० हि० (१५१४–१५ ई०) मे वह शिकार के बहाने से मन्दू के किले से उतरा और अपनी प्रिय पत्नी रानी कन्या को उसने अपने साथ ले लिया। राजपूतो का बहुत बडा समूह सर्वदा उसके विषय मे सूचना रखने के लिए उसके चारो ओर फिरा करता था। सुल्तान ने मीर आखुर[1] से जो प्राचीन सेवक (३९७)था एकान्त मे कहा कि "मै कल शिकार खेलने जाऊगा और राजपूतो को शिकार मे इतना दौडाऊगा कि जब वे शिविर मे वापस आयेगे तो हिलने का भी साहस न कर सकेगे। जब आधी रात्रि व्यतीत हो जाय तो तू तीन अत्यधिक द्रुतगामी घोडों को तैयार करके ले आ और हमे सूचना दे।" दूसरे दिन जब वह शिकार खेलने गया और सायकाल लौट कर आया तो राजपूत लोग अत्यधिक थके होने के कारण सो गये। मीर आखुर ने सुल्तान के आदेशानुसार ३ घोडो को चुनकर बाहर निकाला और उसे सूचित किया। महमूद शाह ईश्वर पर भरोसा करके घोडो के पास पहुचा। तीनो जगल मे निकल गये।

गुजरात की सीमा पर सुल्तान का पहुंचना तथा सुल्तान मुजफ्फर द्वारा स्वागत

जब वे यात्रा करते हुए गुजरात की सीमा पर स्थित धोद कस्बे मे पहुचे तो सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजराती के थानेदार कैसर खा ने स्वागत करके आतिथ्य सत्कार किया और शिविर तथा जो कुछ भी आवश्यक था भेट किया। उसने सुल्तान मुज़फ़्फ़र की सेवा मे एक प्रार्थना-पत्र लिख कर भेजा और सुल्तान के पहुचने की सूचना दी। जब सुल्तान मुजफ्फर के पास यह पत्र चम्पानीर मे पहुचा, तो उसने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कैसर खा, ताज खा किवामुलमुल्क तथा अपने अन्य बडे-बडे अमीरो को स्वागतार्थ भेजा और कुछ हाथी, तोषकखाने[2] का सामान, लाल सरापर्दा तथा कारखानो एव फ़र्राशखानो की सामग्री, जिनकी सुल्तानो को आवश्यकता होती है, उसकी सेवा मे भेजी और स्वय कुछ पडाव आगे बढ कर उसका स्वागत किया। तदुपरान्त जब वे एक दरबार मे एक सिहासन पर आसीन हुये तो ऐसा

१ अमीर आखुर—देखिये पृ० ३३ नोट न० ४।
२ वस्त्र रखने का स्थान (घर)।

प्रतीत होता था कि दो सितारे एकत्र हो गये है। सुल्तान मुजफ्फर ने कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए बुजुर्गो के समान उससे पूछताछ कराई और बादशाहो के सम्मान के योग्य उपहार भेंट किये।

सुल्तान मुजफ्फर द्वारा मालवा पर आक्रमण तथा राय पिथौरा की पराजय

कुछ दिन उपरान्त सुल्तान मुजफ्फर ने सेनाये तैयार करके मालवा पर चढाई की। जब वह धार के निकट पहुचा, तो राय पिथौरा ने मन्दू के किले को दृढ करके किले की रक्षा प्रारम्भ करा दी। मेदिनी राय तथा सलाहदी कई हजार राजपूतो को लेकर चित्तौड पहुचे और उन्होंने राणा सागा से (३९८) सहायता की प्रार्थना की। सुल्तान मुजफ्फर ने मन्दू के किले पर अधिकार जमा कर मोर्चे बाट दिये। कुछ दिन उपरान्त राय पिथौरा ने दीनता प्रदर्शित करके क्षमा-याचना कर ली और अपनी जागीर हेतु १४ परगनो की प्रार्थना की। सुल्तान मुजफ्फर ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। दूसरे दिन पिथौरा ने पुन सदेश भेजा कि, "क्योकि मैंने अत्यधिक धृष्टता प्रदर्शित की है, अत मै आतकित हू। यदि शाही सेना ३ कोस पीछे हट जाय तो मै अपने परिवार का हाथ पकड कर नीचे उतर आऊगा और किला जिसे भी आदेश होगा प्रदान कर दिया जायगा।" सुल्तान ने उस विश्वासघाती समूह की प्रार्थना स्वीकार कर ली और ३ कोस पीछे होकर बैठ गया। वहा इस बात का पता चला कि राय पिथौरा समय व्यतीत करना चाहता है और राणा सागा एव मेदिनी राय के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है।

मेदिनी राय तथा राणा सागा के विरुद्ध सेना भेजना

सुल्तान मुजफ्फर ने युद्ध के लिए लौट कर किले को घेर लिया। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि मेदिनी राय तथा सलाहदी ने राणा सागा को अत्यधिक धन-सपत्ति देकर सहायता के लिए बुलाया है। वह उस क्षेत्र के समस्त जमीदारो को सहायता के लिए लेकर उज्जैन नगर के निकट पहुच गया है। सुल्तान मुजफ्फर ने आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिम आजम हुमायू आदिल खा को, जो उसका भागिनेय तथा जामाता था, और फतह खा एव किवामुलमुल्क को, मेदिनीराय तथा राणा सागा को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया और मन्दू के किले को स्वय विजय करने का उसने निश्चय कर लिया।

किले पर आक्रमण का सरल मार्ग

संयोग से, एक व्यक्ति ने पर्वत पर पहुचने का एक सरल मार्ग बता कर कहा कि "राय पिथौरा ने उस स्थान पर बहुत थोडे से व्यक्ति नियुक्त किये है। कल होली का दिन है। राजपूत लोग अपने-अपने घरो मे खेलकूद मे व्यस्त होगे। यदि होली के दिन अन्य मोर्चों पर युद्ध प्रारम्भ करके आप शिविर को लौट जाय और तदुपरान्त एक सेना उस मार्ग से भेजे और दूसरी सेना सहायता के लिए तैयार रखे तो सभव है कि किले पर अधिकार प्राप्त हो जाये।"

सुल्तान की सेना का मन्दू के किले में प्रवेश

सुल्तान मुजफ्फर ने उसके परामर्श को पसन्द करके इनाम तथा उसके प्रति कृपादृष्टि का वचन देकर उसे प्रोत्साहित किया। १६ सफर ९२४ हि० (२७ फ़रवरी १५१८ ई०) को गुजरात के उन (३९९) सैनिको ने चारो ओर से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और पौरुष प्रदर्शित करने लगे। राजपूतो ने

भी अपनी शक्ति से अधिक प्रयत्न किया। गुजरात की सेना ने अस्र[1] के पूर्व वापसी के ढोल बजवाये और अपने मोर्चो मे चले गये। राजपूतो ने क्योकि अत्यधिक परिश्रम किया था और वह होली का दिन था अत सरदार लोग थोडे से आदमी मोर्चो मे छोड कर अपने घरो मे विश्राम हेतु चले गये। जब आधी रात व्यतीत हो गई तो ताज खा तथा एमादुलमुल्क वीरो की एक सेना लेकर मन्दू के किले की विजय हेतु रवाना हुये। थोडी सी यात्रा करने के उपरान्त एमादुलमुल्क उस योजनानुसार निश्चित मार्ग से अग्रसर हुआ। ताज खा ने भी दूसरी ओर से प्रस्थान किया। एमादुलमुल्क जब किले की दीवार के निकट पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ कि "राजपूत सोये हुए है। उन्हे सेना के पहुचने की सूचना नही।" उसने तुरन्त फिरगी भालो से एक सीढी तैयार की और कुछ लोगो को किले के ऊपर ले गया। जब उन लोगो ने यह देखा कि राजपूत लोग मौत की निद्रा मे पडे हुए है तो वे धीरे-धीरे भूमि पर पाव रखते हुए द्वार तक पहुचे और उसे खोल दिया। द्वार खोलने के समय राजपूत सावधान हो गये। जो वीर किले के ऊपर थे उन्होने भी आक्रमण कर दिया और वे द्वार के भीतर प्रविष्ट हो गये और कुछ राजपूतो को उन्होने टुकडे-टुकडे कर डाला। शेष भाग खडे हुए।

सुल्तान मुजफ्फर द्वारा मन्दू के किले पर अधिकार

जब यह समाचार राय पिथौरा को प्राप्त हुआ तो उसने स्वय प्रस्थान करने के पूर्व शादी खा पुरबिया को ५०० सशस्त्र राजपूतो सहित एमादुलमुल्क से युद्ध करने के लिए भेजा और स्वय कई हजार राजपूत लेकर शादी खा के पीछे रवाना हुआ। गुजरात के वीरो ने बाण की गोलाई मे होकर उस समूह को जो शादी खा के समक्ष आ रहा था बाण द्वारा आहत कर दिया। उनको भी घातक घाव लगे और आहत सुअर के समान वे भाग खडे हुए। इसी बीच मे सुल्तान मुजफ्फर भी उसी मार्ग से किले मे पहुच (४००) गया। जब किले वालो की दृष्टि मुजफ्फरशाह की पताका पर पडी तो वे अपने-अपने घरो को लौट गये और जौहर आयोजित किया। राजपूतो मे यह प्रथा है कि परेशानी के समय वे अपने घरो मे आग लगा देते है और अपने परिवार की हत्या कर देते तथा उन्हे जला डालते है। यह प्रथा जौहर कहलाती है। गुजराती वीरो के समूह तथा दल राजपूतो के घरो मे प्रविष्ट हो गये और उन्होने सामान्य रूप से सबकी हत्या करनी प्रारम्भ कर दी। यह बात भली भाति ज्ञात हुई है कि उस रात्रि तथा दिन के थोडे से भाग मे १९ हजार राजपूतो की हत्या हुई और लूट की धन-सपत्ति तथा दास गुजरात की सेना को इतनी अधिक सख्या मे प्राप्त हुए कि उनकी गणना असम्भव है।

सुल्तान मुजफ्फर द्वारा सुल्तान महमूद को मालवा का राज्य प्राप्त होना

जब ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हुई तो नमकहराम राजपूतो ने अपने कुकर्म का फल भोग लिया। सुल्तान महमूद ने उपस्थित होकर बधाई दी और जल्दी मे पूछा कि, "खुदावन्दे जहा ! हमारे लिए क्या आदेश देते है ?" सुल्तान मुजफ्फर ने अपने बडप्पन को प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "मै तुम्हे मालवा के राज्य की बधाई देता हू।"

वह सुल्तान महमूद को मन्दू के किले मे छोडकर तत्काल अपने शिविर मे वापस चला गया।

१ मध्याह्नोपरान्त की अन्तिम नमाज़ का समय जो सूर्यास्त के कुछ पूर्व तक पढी जा सकती है।

राणा सागा की वापसी

दूसरे दिन उसने उज्जैन की ओर राणा सागा को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया। जब वह धार के किले मे पहुचा तो सूचना प्राप्त हुई कि आदिल खा तथा अमीर लोग अभी तक दीबालपुर के कस्बे से नहरिया के आगे तक न पहुच सके थे कि राणा सागा किले की विजय के समाचार पाकर अपने राज्य को भाग गया। प्रथम रात्रि मे उसने २७ कोस की यात्रा की और मेदिनी राय तथा सलाहदी को भी अपने साथ ले गया। सुल्तान मुजफ्फ़र ने यह समाचार पाकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और आदिल खा तथा अमीरो को वापस बुलवा लिया।

सुल्तान मुजफ्फर की गुजरात को वापसी

सुल्तान महमूद ने इस मजिल पर सुल्तान मुजफ्फर की सेवा मे उपस्थित होकर एक दिन के लिए शादियाबाद के किले मे पधारने का आग्रह किया। सुल्तान मुजफ़्फ़र शिविर को धार कस्बे मे छोड कर (४०१) शादियाबाद के किले मे चला गया और सुल्तान महमूद ने आतिथ्य-सत्कार का प्रबन्ध किया तथा उचित उपहार भेट किये। सुल्तान मुज़फ्फर सभा के उपरान्त भवनो तथा उद्यानो का निरीक्षण करके अपनी सेना मे चला गया और वहा से विजय तथा सफलता प्राप्त किये हुये गुजरात की ओर रवाना हो गया।

आसिफ खा की सुल्तान मुजफ्फर द्वारा सुल्तान महमूद की सहायतार्थ नियुक्ति

सुल्तान महमूद अत्यधिक प्रेम तथा निष्ठा के कारण कई पडावो तक उसके साथ गया। सुल्तान मुजफ्फर ने आसिफ खा गुजराती को कई हजार अश्वारोहियो सहित सहायतार्थ नियुक्त करके सुल्तान महमूद को बिदा कर दिया और उससे क्षमा-याचना की। सुल्तान महमूद आसिफ खा के साथ शादियाबाद के किले मे पहुचा। अपने प्राचीन अमीरो, सरदारो तथा सैनिको को प्रोत्साहन-युक्त पत्र भेजकर बुलवाया। उसके प्राचीन अमीर तथा सेवक जिन-जिन स्थानो पर थे वहा से प्रसन्नतापूर्वक मन्दू की ओर चल दिये।

सुल्तान का काकरून के किले पर आक्रमण

जब सुल्तान महमूद के पास अत्यधिक सेना एकत्र हो गई तो उसने आसिफ खा के परामर्श से बीमकरण[1] के ऊपर, जो मेदिनी राय की ओर से काकरून के किले को दृढ बनाकर बन्द किये हुए था, चढाई की। मेदिनी राय ने यह समाचार पाकर राणा सागा से कहा कि, "मेरा सब कुछ काकरून के किले मे है। मैंने आपकी सेवा मे इस उद्देश्य से प्रार्थना की थी कि आप मालवा प्रदेश को साफ करके मुझे सौप देगे और अब यह दशा हो गई है कि जो कुछ मेरा था वह भी मुझसे जबरदस्ती छीना जा रहा है।"

राणा सागा का काकरून के किले वालो की सहायतार्थ प्रस्थान

राणा सागा की मर्यादा तथा उद्दडता को ठेस लगी और वह चित्तौड के किले से कई हज़ार खूख्वार राजपूतों को लेकर काकरून की ओर रवाना हुआ। जब सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुआ

१ पहले 'हमी करण' आया है।

तो वह अत्यधिक वीरता एव पौरुष के कारण सावधानी से कार्य न लेते हुए काकरून के अवरोध को छोड कर राणा सागा से युद्ध करने के लिए अग्रसर हुआ।

सुल्तान महमूद का राणा सागा के विरुद्ध प्रस्थान

(४०२) दिन के अधिकाश भाग मे वह यात्रा करता था। सयोग से जिस दिन युद्ध हुआ सुल्तान महमूद ने अधिक यात्रा की थी ओर राणा सागा से ७ कोस की दूरी पर पडाव कर दिया था। जब राणा सागा को यह ज्ञात हुआ तो उसने अपने अमीरो को बुलवा कर कहा कि "यह उचित होगा कि इसी समय शत्रु पर आक्रमण कर दिया जाय कारण कि वह बडी दूर से यात्रा करके आ रहा है और उसमे युद्ध करने तथा हिलने की शक्ति नही है। यदि शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान कर दिया जायेगा तो वह अपनी सेना को सुव्यवस्थित न कर सकेगा और कार्य सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो जायगा।" समस्त रायो तथा राजपूतो ने उसके विचार की प्रशसा की और वे सेनाये तैयार करके युद्ध के लिए चल खडे हुए।

सुल्तान का आहत होना तथा राणा द्वारा उपचार

जब वे सुल्तान महमूद के शिविर के निकट पहुचे तो जिस प्रकार उन्होने सोचा था सुल्तान महमूद की सेना वाले एक-एक, दो-दो करके युद्ध के लिए आते थे और शहीद हो जाते थे। अव्यवस्थित रूपसे युद्ध करने के कारण ३२ प्राचीन प्रतिष्ठित सरदार मार डाले गये। गुजरात की सेना मे से आसिफखा ५०० मुसलमानो सहित शहीद हुआ और सुल्तान महमूद की सेना बुरी तरह पराजित हो गई। सुल्तान महमूद अपनी वीरता तथा पौरुष के कारण दो-तीन अश्वारोहियो सहित रणक्षेत्र मे डटा रहा। जब राजपूतो की सेना उसकी ओर बढी तो उसने अपने घोडे को एड लगाकर उस सेना मे जो तलवारो तथा बर्छो के समुद्र के समान थी, डुबकी लगाई। उसके जौशन[1] मे १०० से अधिक घाव लगे। उसके शरीर पर दो जौशन थे अत दूसरे जौशन को पार करते हुये ५० घाव उसके शरीर पर लगे। इतने अधिक घावो के बावजूद उसने शत्रु को पीठ न दिखाई। जब वह घोडे से भूमि पर गिर पडा तो राजपूत लोग उसे पहचान कर राणा सागा के पास ले गये। प्रत्येक राजपूत उसकी प्रशसा करता था और अपने आपको उसकी वीरता की तारीफ करता हुआ न्योछावर करता था। राणा सागा सुल्तान के समक्ष हाथ (४०३) बाध कर खड़ा हो गया और उसने सेवा सबधी समस्त सत्कार पूरे किये और उसके उपचार का प्रयत्न करने लगा। जब सुल्तान स्वस्थ हो गया तो राणा सागा ने निवेदन किया कि, "मुझे मुकुट प्रदान करके सम्मानित किया जाय।" सुल्तान महमूद ने जडाऊ ताज जिसमे याकूत लगे हुए थे राणा सागा को प्रदान कर दिया और उसे सतुष्ट कर दिया। राणा सागा ने सुल्तान महमूद के साथ १० हज़ार राजपूत कर दिये और उसे मन्दू भेज दिया। वह स्वय चित्तौड चला गया।

राणा सांगा की उदारता की प्रशंसा

बुद्धिमानो को यह बात भली भाति ज्ञात होनी चाहिये कि राणा सागा की कीर्ति सुल्तान मुजफ्फ़र से श्रेष्ठ थी, कारण कि सुल्तान मुजफ्फ़र ने शरण लेने वाले की सहायता की थी परन्तु राणा सागा ने शत्रु को युद्ध मे बन्दी बनाकर राज्य प्रदान कर दिया।

१ कवच, विशेष रूप से बाज़ू पर बांधने वाला।

सुल्तान मुजफ्फ़र का सुल्तान महमूद की सहायतार्थ सेना भेजना

इतना महान् आश्चर्यजनक कार्य सभवत किसी के द्वारा सम्पन्न न हुआ होगा।

सक्षेप मे यह समाचार पाकर सुल्तान मुजफ़्फ़र ने बहुत बडी सेना उसकी सहायतार्थ भेजी और प्रेमयुक्त पत्रो द्वारा सुल्तान के हृदय के घावो पर मलहम रखा तथा उसके विषय मे कृपादृष्टि प्रदर्शित की। बहुत समय तक गुजरात की सेना मालवा की विलायत मे रही। जब सुल्तान महमूद के राज्य को स्थायित्व प्राप्त हो गया तो उसने कृतज्ञता प्रकट करते हुए सुल्तान मुजफ्फ़र की सेवा मे पत्र भेजकर यह प्रार्थना की कि, "क्योकि हमारी इच्छानुसार राज्य के कार्य सम्पन्न हो चुके है अत गुजरात की सेना को वापस बुलवा लिया जाय।" सुल्तान मुजफ्फ़र ने अपनी सेना को बुलवा लिया।

सुल्तान महमूद के राज्य के विभिन्न भागो का उसके अधिकार से निकलना

गुजरात की सेना के चले जाने के उँपरान्त सुल्तान महमूद की कमजोरी प्रकट होने लगी ओर उसके राज्य का अधिकाश भाग उसके अधिकार से निकल गया। उसके राज्य का कुछ भाग राणा सागा ने शत्रुता प्रदर्शित करते हुए अपने अधिकार मे कर लिया। सारगपुर के क्षेत्र से भिल्सा तथा रायसेन तक के स्थान सलाहदी पुरबिया ने अपने अधिकार मे कर लिये। सिवास तथा उसके आसपास के स्थान सिकन्दर खा ने अपने अधिकार मे कर लिये। मालवा के राज्य का केवल १०वा भाग महमूद शाह के अधिकार मे रह गया और वह ८ हजार[1] अश्वारोहियो सहित शिविर मे रहता था। यद्यपि (४०४) राणा सागा समस्त मालवा के राज्य को अपने अधिकार मे कर सकता था किन्तु सुल्तान मुजफ्फ़र के भय के कारण वह इस बात का साहस न कर सकता था।

सलाहदी से युद्ध तथा सलाहदी की पराजय

सयोग से उन्ही दिनों मे सुल्तान मुजफ्फ़र की मृत्यु हो गई। उसके शत्रुओ को अत्यधिक शक्ति प्राप्त हो गई। सलाहदी का प्रभुत्व सीमा से अधिक बढ गया। ९२६ हि० (१५१९–२० ई०) मे सुल्तान महमूद सेना एकत्र करके भिल्सा की विलायत की ओर रवाना हुआ। सलाहदी ने सारगपुर के समीप पहुचकर युद्ध किया और सुल्तान महमूद की सेना पराजित हो गई। सुल्तान २० अश्वारोहियो सहित रणक्षेत्र मे डटा रहा और बाणो द्वारा वीरता तथा पौरुष का प्रदर्शन करता रहा। यहा तक कि प्रसिद्ध सरदार सुल्तान महमूद के हाथो नष्ट हो गये और अन्तिम दशा यह हो गई कि सलाहदी भाग खडा हुआ। सुल्तान महमूद ने कुछ दूर तक उसका पीछा किया और २४ हाथी उससे पृथक् कर दिये और मन्दू लौट आया। तदुपरान्त सलाहदी ने सुल्तान महमूद से मेल कर लिया और लज्जा प्रदर्शित करने लगा। थोडे से उपहार पेशकश के रूप मे उसने सुल्तान की सेवा मे भेजे और पिछले अपराधों की क्षमा-याचना की।

गुजरात मे चांद खा को सिहासनारूढ़ करने का प्रयत्न

जब ९३२ हि० (१५२५–२६ ई०) मे सुल्तान मुजफ़्फ़र की मृत्यु हो गई और सुल्तान बहादुर सिहासनारूढ हुआ तो चाद खा इब्ने सुल्तान मुजफ़्फ़र सुल्तान महमूद के पास पहुचा। सुल्तान महमूद

१ एक पोथी के अनुसार '२०,०००'।

ने, इस कारण कि सुल्तान मुजफ्फर ने उसका बडा उपकार किया था, चाद खा का अत्यधिक सम्मान किया और उसके प्रति आदर प्रदर्शित करने मे कोई असावधानी न की। रजीउलमुल्क, जो सुल्तान मुजफ्फर का एक विश्वासपात्र था, गुजरात से भाग कर बाबर की सेवा मे पहुचा और इस बात का प्रयत्न करने (४०५) लगा कि गुजरात का समस्त राज्य चाद खा को प्राप्त हो जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह आगरा से मन्दू पहुचा और चाद खा से परामर्श करके आगरा लौट गया। जब सुल्तान बहादुर को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने सुल्तान महमूद को एक पत्र लिखा कि, "आपके प्रेम तथा निष्ठा को देखते हुए यह आश्चर्य होता है कि आपने हमारे हरामखोर को आज्ञा दे दी है कि वह चाद खा की सेवा मे पहुच कर षड्यन्त्र रचने का प्रयत्न करता रहे।" कुछ समय उपरान्त रजीउलमुल्क पुन मन्दू पहुचा और लौटकर आगरा चला गया। इस अवसर पर उसने सुल्तान बहादुर को कोई भी सदेश न भेजा किन्तु सुल्तान महमूद को दण्ड देने का उसने निश्चय कर लिया।

राय रतन सेन का मालवा पर आक्रमण

जब यह भली-भाति ज्ञात हो गया कि सुल्तान महमूद को गुजरात से सहायता न प्राप्त हो सकेगी और उसमे इतनी शक्ति नही है कि वह स्वय शक्तिशाली शत्रु का मुकाबला कर सके तो राय रतन सेन बिन (पुत्र) राणा सागा पूर्ण तैयारी करके मालवा की ओर चल दिया। सयोग से उन दिनो सुल्तान बहादुर भी विद्रोहियो तथा विरोधियो को दण्ड देने के लिए मालवा के निकट पहुचा था। सुल्तान महमूद ने परेशान होकर मुइन खा बिन सिकन्दर खा को सिवास से और सलाहदी को अपनी सहायतार्थ बुलवाया। जब वे सुल्तान महमूद की सेवा मे उपस्थित हुए तो उसने मुईन खा को मसनदे आली की उपाधि देकर लाल सरापर्दा, जो विशेष रूप से बादशाहो के प्रयोग मे आता है, उसे प्रदान कर दिया। सलाहदी को कुछ अन्य परगने प्रदान करके प्रोत्साहित किया। मुईन खा, जो वास्तव मे एक तेल बेचने वाले का पुत्र था और जिसे सिकन्दर खा ने अपना पुत्र बना लिया था, सुल्तान महमूद के पास से भाग कर सबल नामक स्थान मे सुल्तान बहादुर से मिल गया और उसने अपने आश्रयदाता की शिकायत को दरबार मे उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया।

सुल्तान बहादुर से सधि का प्रयत्न

जब सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने दरिया खा को सुल्तान बहादुर की सेवा मे भेजकर यह सदेश प्रेषित किया कि, "क्योकि आपके वश ने मुझे आश्रय प्रदान किया है और हम लोगो मे अब थोडी ही दूरी रह गई है अत मेरी इच्छा है कि मै आपकी सेवा मे उपस्थित होकर आपको (४०६) राज्य की बधाई दू।" सुल्तान महमूद के दूतो ने इस बात की ओर सकेत किया कि महमूद चाद खा को सहायता प्रदान करने के कारण लज्जित है और उसे उपस्थित होने का साहस नही होता। सुल्तान बहादुर ने उसे प्रोत्साहन देते हुए कहलाया कि, "मै चाद खा के कारण रुष्ट नही हू और मै चाद खा को समर्पित करने के लिए उसे कष्ट न दूगा।" उसने वहा से प्रस्थान करके करखी नदी के तट पर पडाव किया। ५ दिन[1] के उपरान्त इस पडाव पर राणा सागा का पुत्र रतन सेन तथा सलाहदी पुरबिया सुल्तान बहादुर की सेवा मे पहुचे और दोनो ने सुल्तान महमूद की शिकायत की। रतन सेन

१ एक पोथी के अनुसार 'कुछ दिन'।

उसी पड़ाव से विदा होकर चित्तौड पहुचा। सुल्तान बहादुर ने प्रस्थान करके सुम्बुला नामक स्थान पर पडाव किया और सुल्तान महमूद के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा किन्तु जब सुल्तान महमूद को ज्ञात हुआ कि उसकी शिकायत कई बार सुल्तान बहादुर की सेवा मे हुई है तो वह सिकन्दर खा के सेवको को दण्ड देने के बहाने से उज्जैन से कूच करके सिवास की ओर चल दिया।

सुल्तान महमूद का मन्दू के किले मे बन्द होना और बहादुर शाह का किला घेरना

सयोग से शिकार के समय एक दिन उसका घोडा गिर पडा और उसका दाया हाथ टूट गया और वह विवश होकर मन्दू के किले मे चला गया तथा किले की रक्षा का प्रयत्न करने लगा। सुल्तान बहादुर निरन्तर यात्रा करता हुआ मन्दू की ओर रवाना हुआ। प्रत्येक पडाव पर सुल्तान महमूद के सेवक उससे पृथक होकर सुल्तान बहादुर की सेवा मे उपस्थित होने लगे। धार कस्बे मे शिरजा खा जोकि प्रतिष्ठित सरदार था उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ। जब वह नालचा के किले मे पहुचा तो उसने किले को घेर लिया और मोर्चे बाट दिये। वह स्वय मुहम्मदपुर मे ठहरा। सुल्तान महमूद ३ हजार (४०७) व्यक्तियो सहित मन्दू के किले मे बन्द हो गया। प्रत्येक रात्रि मे वह एक बार समस्त मोर्चों की ओर जाता था और तदुपरान्त सुल्तान गयासुद्दीन के मदरसे मे विश्राम करता था। जब उसने यह देखा कि किले वाले विश्वासघात कर रहे हैं और सुल्तान बहादुर से मिल गये हैं तो वह मदरसे को छोडकर अपने महल मे चला आया और जशन की व्यवस्था करके भोग-विलास मे लिप्त रहने लगा। उसके कुछ हितैषियो ने पूछा कि, "भोग-विलास का यह कौन सा अवसर है?" उसने उत्तर दिया कि "यह मेरा अतिम समय है, अतः मै चाहता हूँ कि भोग-विलास मे समय व्यतीत कर लू।"

सुल्तान बहादुर का मन्दू के किले पर अधिकार

९ शाबान ९३७ हि० (२८ मार्च १५३१ ई०) को प्रात काल बहादुर शाह की पताकाये मन्दू के किले के उफक पर चमकी और तत्काल चाद खा बिन सुल्तान मुजफ्फर किले से उतर कर भाग खडा हुआ। सुल्तान महमूद अस्त्र-शस्त्र धारण करके थोडे से सैनिको सहित उसका मुकाबला करने के लिए निकला। जब उसने देखा कि उसमे युद्ध करने की शक्ति नही तो उसने अपनी मृत्यु के पूर्व अपने अन्त पुर की स्त्रियो की हत्या कर देने का सकल्प कर लिया और १ हजार अश्वारोहियों सहित अपने महलो की ओर प्रस्थान किया। उसके सैनिक घोडो को बाहर छोड कर महलो मे घुस गये। सुल्तान बहादुर की सेना ने महलो को चारो ओर से घेर लिया। सुल्तान बहादुर ने सदेश भेजा कि, "सुल्तान महमूद तथा उसके अन्त.पुर (की स्त्रियो) एव अमीरो को क्षमा प्रदान की जाती है। कोई किसी से कुछ न कहे अथवा किसी की धन-सपत्ति मे हस्तक्षेप न करे।" सुल्तान महमूद के कुछ निकटवर्तियो ने उसे उसके परिवार की हत्या से रोकते हुए कहा कि, "गुजरात का बादशाह यद्यपि आपका शत्रु है किन्तु उसकी शत्रुता अन्य लोगो की मित्रता से कही अच्छी है। यदि आप जाकर उससे भेट करे तो सभव है कि यह प्रदेश वह आपको ही प्रदान कर दे।" इसी बीच मे सुल्तान बहादुर सुल्तान (४०८) महमूद के महल में प्रविष्ट हो गया और लाल महल के कोठे पर अमीरो के साथ ठहरा। उसने कुछ आदमी सुल्तान महमूद को बुलवाने के लिए भेजे। सुल्तान महमूद सरदारो को महल मे छोड कर स्वय ७ सरदारो सहित सुल्तान बहादुर के पास पहुचा।

सुल्तान ने उसका आदर सम्मान किया और दोनो बादशाह गले मिले। बैठने के उपरान्त सुल्तान महमूद ने कुछ कठोर वचन कहे। गोष्ठी के अन्त तक दोनो चुप रहे, किन्तु कहा जाता है कि

सुल्तान बहादुर के मुख से रुष्टता के चिह्न दृष्टिगत होते थे। उसने उस गोष्ठी मे कहा कि, "महमूद शाह के अमीरो को शरण दी जाती है। वे अपने अपने घरो को चले जाय। जो लोग सुल्तान के अन्त-पुर मे है उन्हे भी क्षमा प्रदान की जाती है।" उसने तवाचियो[1] तथा नकीबो[2] को आदेश दिया कि वे लोगो को महल के बाहर निकाल दे। कुछ क्षण उपरान्त वह आसिफ खा को १०० सिलाहदारो सहित सुल्तान महमूद की रक्षा हेतु छोड कर महल के भीतर चला गया। दूसरे दिन १० शाबान (२९ मार्च १५३१ ई०) को जो ७ व्यक्ति सुल्तान महमूद के साथ आये थे उन्हे भी उसने शरण प्रदान करके लौटा दिया। १२ शाबान (३१ मार्च १५३१ ई०) शुक्रवार के दिन राजधानी शादियाबाद मे सुल्तान बहादुर के नाम का खुत्बा पढा गया। शनिवार की रात्रि मे सुल्तान महमूद के पाव मे बेडिया डाल कर, उसे उसके ७ पुत्रो सहित, जिनमे से सबसे बडे की उपाधि सुल्तान गयासुद्दीन थी, आसिफ खा तथा इकबाल खा को इस आशय से सौप दिया कि वे चम्पानीर के किले मे ले जाकर उन्हे बन्दी रखे।

सुल्तान महमूद की हत्या

शब बरात १४ शाबान (२ अप्रैल १५३१ ई०) को मल्हियाबाद के मुकद्दम रायसिह तथा १ हजार भीलो और कोलो ने आसिफ खा एव इकबाल खा के शिविर पर रात्रि मे छापा मारा। सुल्तान महमूद उसी समय शब बरात की नमाज पढ कर सोया था। शोर के कारण जाग उठा और अपने पाव (४०९) की बेडियो को उसने पृथक् कर दिया। इसी बीच मे रक्षको ने, इस भय से कि कही वह भाग न जाय और राज्य मे उपद्रव न उठ खडा हो, उसकी हत्या कर दी। प्रात काल आसिफ खा तथा इकबाल खा ने उसे धोद के हौज़ के निकट दफन कर दिया। उसके सातो पुत्र चम्पानीर मे बन्दी रक्खे गये।

उसने २० वर्ष ६ मास तथा ११ दिन तक राज्य किया।

१ शाही (महल) तथा बादशाह की व्यक्तिगत सेवाओं के अधीक्षक।
२ शाही आज्ञाओं को उच्च स्वर मे सुनाने वाले।

वह शरा[1] के विरुद्ध कोई बात न कहता था। उसने कभी कोई ऐसी बात अपने कानो से न सुनी थी और कोई नशे की वस्तु अपनी आख से न देखी थी।

एक दिन उसके समक्ष एक माजून प्रस्तुत की गई जो उसके लिए तैयार की गई थी। उसने पूछा कि "इसमे कौन-कौन सी दवाये पडी है ? और जब तक मै आदेश न दू तब तक इसे मेरे समक्ष प्रस्तुत न किया जाय।" वह औषधियो का नाम सुनने लगा। लगभग ३०० औषधिया थी। उनमे से एक दिरम के बराबर अफीम भी थी। सुल्तान ने कहा कि "यह माजून मेरे काम की नही है।" उसमे एक लाख तन्के से अधिक व्यय हुआ था। उसने आदेश दिया कि, "उसे लाकर अगीठी मे डाल दिया जाय।" किसी ने निवेदन किया कि, "उसे किसी व्यक्ति को दे दिया जाय।" उसने कहा कि, "जिस वस्तु को मै अपने लिए उचित नही समझता उसे दूसरे के लिए किस प्रकार अनुमति दू।"

एक दिन उसकी सवारी का विशेष घोडा रुग्ण हो गया। उसने आदेश दिया कि उसका उपचार किया जाय। दूसरे दिन घोडा स्वस्थ हो गया। सुल्तान ने जब घोडे के विषय मे पूछा तो उत्तर मिला कि, "हा घोडा अच्छा हो गया।" सुल्तान ने पूछा कि, "वह आपही आप अच्छा हो गया अथवा उपचार किया गया ?" लोगो ने बताया कि, "उपचार किया गया।" उसने पूछा कि, "क्या दवा दी गई ?" लोगो ने कहा कि, "जो चिकित्सको ने बतायी।" सुल्तान समझ गया कि कोई वस्तु शरा के विरुद्ध दी गई है जिसका नाम लोग नही बताते। सुल्तान ने आदेश दिया कि "घोडो को अश्वशाला से पृथक् कर दिया जाय और जगल मे छोड दिया जाय।" लोगो ने निवेदन किया "ऐसा घोडा जगल मे न छोडा जाय, किसी को प्रदान कर दिया जाय।" सुल्तान ने पुन कहा कि, "जो बात मै अपने लिए उचित नही समझता उसके लिए दूसरे को किस प्रकार अनुमति दे सकता हू।"

शेख महमूद नोमान का एक पडोसी जो उसका शुभचितक था देहली से उसकी सेवा मे पहुचा। जिस प्रकार शहर देहली के अन्य लोग उसकी सेवा मे उपस्थित होते थे और फुतूह[2] लाते थे वह भी उसकी सेवा मे पहुचा और उसने शेख महमूद से कहा कि, "बादशाह का स्मरण करके मै देहली से आया हू। मुझे अपनी पुत्री का विवाह करना है। सुल्तान से कुछ दिलवा दो।" शेख ने कहा कि, "जितनी तुझे आवश्यकता है उसे मै ही दे दूगा।" उसने कहा कि, "मै तुझसे नही मागता। जिस प्रकार लोग बादशाह से ले जाते है, मै भी बादशाह से ले जाऊगा ताकि मै अपनी कौम वालो मे सम्मानित हो सकू और अपनी जाति वालो से कह सकूँ कि मैने भी मन्दू के बादशाह द्वारा प्राप्त किया है।" शेख ने कहा कि, "जो कुछ मै दू उसे बादशाह के नाम से प्रसिद्ध कर दो।" उसने उत्तर दिया कि "लोग समझ जायेगे कि यह वस्तुये बादशाह द्वारा नही प्राप्त हुई है।" शेख ने सोचा कि, "यह मेरा हितैषी है अत इसे सतुष्ट करना चाहिये। मुझे किसी अन्य की चिन्ता नही।" शेख ने कहा कि, "अन्य लोग जो आते है वे सम्मानित (१४८) व्यक्तियो की सतान से सबधित होते है। उन्हे मै इमलाक[3] दिला देता हू, या वे स्वय योग्य व्यक्ति होते है। मै उनकी प्रशंसा कर देता हू। तू न किसी सम्मानित वश ही से है और न योग्य ही है। मै तेरी प्रशंसा किस प्रकार करू ?" उसने कहा कि, "मै क्या जानू ? मै तुम्हारे पास तक पहुच गया हू। अब जिस प्रकार हो सके बादशाह से मेरी भेट करा दो। बादशाह बडा दानी है। जो

१ इस्लाम के धार्मिक नियम।
२ वह उपहार जो धार्मिक लोगों अथवा सूफ़ियों को बिना मागे प्रदान किया जाता था।
३ इनाम मे दी जाने वाली भूमि, जागीर।

कुछ मेरे भाग्य मे होगा वह मुझे मिल जायेगा।" शेख़ बडी कठिनाई मे पड गया। जब वह बादशाह के महल की ओर रवाना हुआ तो यह व्यक्ति भी उसके पीछे पीछे चल खडा हुआ और बादशाह के घर के द्वार पर पहुचा। वहा फकीरो को दान देने के लिए गेहू तौला जा रहा था। शेख ने कहा कि, "एक मुट्ठी ले लो।" वह गेहू ले आया। शेख ने उसे अपना रूमाल देकर कहा कि, "इसमे उसे बाध कर अपने पास रख लो।" जब शेख़ बादशाह के समक्ष पहुचा तो वह भी शेख के पीछे पीछे पहुचा। बादशाह ने पूछा कि, "जो व्यक्ति तुम्हारे पीछे है वह कौन है?" उसने उत्तर दिया, "यह कुरान का हाफिज़ है और दिल्ली से आया है। यह अपने साथ थोडा गेहू लाया है जिसके प्रत्येक दाने पर उसने पूरा कुरान पढा है।"[1] सुल्तान ने कहा कि, "मुझे इसके पास जाना चाहिये था, इसे मेरे पास क्यो लाये?" शेख ने कहा कि, "यह व्यक्ति इस योग्य नही कि बादशाह इसके पास जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "जो कुछ भी हो, वह ऐसा उपहार लाया है कि मुझे स्वय जाना चाहिये।" शेख ने कहा कि, "बादशाह अपनी इच्छानुसार कार्य करे। किन्तु सेवक यह बात उचित नही समझता। समस्त समकालीन वजीर यही कहेगे कि अमुक बादशाह को मै एक अयोग्य व्यक्ति के घर ले गया।" सुल्तान ने कहा कि, "तुम किसी बात का सकोच न करो। केवल इस बात की ओर ध्यान दो कि इसका सबध धर्म तथा अन्त करण से है।" अन्त मे शेख ने यह निश्चय कराया कि "शुक्रवार के दिन यह व्यक्ति जामा मस्जिद मे उपस्थित रहे, आप (बादशाह) इससे यह उपहार ले ले।" सुल्तान ने कहा, "बहुत अच्छा।" शुक्रवार के दिन वह व्यक्ति उपस्थित हुआ। नमाज़ के उपरान्त शेख़ महमूद ने बादशाह को उसके विषय मे स्मृति दिलायी। बादशाह ने आदेश दिया कि, "उसे मिम्बर[2] पर बुलवाया जाय।" जब वह मिम्बर पर पहुचा तो सुल्तान ने अपना दामन फैलाया। उसने ऊपर से गेहू दामन मे डाल दिये और सुल्तान ने ले लिये। उसे एक लाख तन्के प्रदान कर दिये। ईश्वर को धन्य है कि वह युग कितना सौभाग्यशाली था और उस युग के बादशाह कैसे थे।

रूपवती की खोज

(१४९) सुल्तान ने एक दिन अपने विश्वासपात्रो की गोष्ठी मे कहा कि, "मैने इतनी हजार स्त्रिया एकत्र की किन्तु जैसी छवि मेरे हृदय मे है उसमे से कोई भी मुझे नही मिली।" एक विश्वासपात्र ने निवेदन किया कि, "जो लोग इस कार्य हेतु नियुक्त हैं उन्होने सभवत किसी रूपवती को नही देखा है और वे उसे नही पहचानते। यदि मेरे सरीखे किसी व्यक्ति को यह कार्य सौपा जाय तो आप की इच्छानुसार पूछताछ करके ले आऊ।" बादशाह ने आदेश दिया कि, "मै तुझसे भी कहता हू। तू भी खोज करता रह।" वह व्यक्ति विदा होकर चला गया। जब वह चलने लगा तो सुल्तान ने उसे पुन बुलवा कर पूछा कि, "तू मुझे इस बात से संतुष्ट कर दे कि रूपवती किसे कहते हैं।" उसने उत्तर दिया कि, "हे बादशाह! दास की बुद्धि के अनुसार रूपवती वह है जिसके किसी अग के ऊपर भी यदि सर्व प्रथम दृष्टि पड जाय तो वहा से दृष्टि न हट सके। उदाहरणार्थ यदि उसके पाव अथवा हाथ पर दृष्टि पडे तो इस बात की इच्छा न हो कि उसका मुख अथवा उसकी आख देखी जाय। यदि उसे पीछे से देखा जाय तो यह हृदय मे न आये कि उसे आगे से देखे। दास की समझ से रूपवती ऐसी ही होनी चाहिये।" सुल्तान ने इसे बहुत पसन्द किया और पूछा कि, "इस प्रकार की रूपवती कहा मिलेगी?"

१ 'पूरा कुरान पढ पढ कर एक एक दाने को फूंका है'।
२ मस्जिद का मच जो ज़ीने के समान होता है।

उसने उत्तर दिया कि, "मुझे ४ मास का अवसर दिया जाय। जहा कही भी मुझे इस गुण से सुशोभित रूपवती मिलेगी, उसे जिस प्रकार भी सभव होगा ले आऊगा। मै समस्त राज्य मे चक्कर लगाऊगा और यदि जीवित रहा तो ख़ाली न आऊगा।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "अच्छा जाओ"। उसने समस्त विलायत मे चक्कर लगाया किन्तु ऐसी रूपवती कही न मिली। एक दिन वह एक ग्राम मे पहुचा। एक युवती पीछे से दृष्टिगत हुई जिसमे उसकी इच्छानुसार गुण विद्यमान थे। वह उसके समक्ष पहुचा। उसने देखा कि उसमे वही गुण है। उसने उससे कहा कि, "मै इस ग्राम मे ठहरना चाहता हू। यहा कोई ठहरने योग्य स्थान होगा?" उसने कहा कि, "क्यो न होगा।" वह उसी स्थान पर ठहर गया। कुछ दिन वहा ठहर कर उसने अपने आप को रोगी बना लिया और बाल कटवा कर कुछ दिन तक वहा ठहरने के पश्चात् उस स्त्री को चोरी से भगा दिया। वह स्वय वहा कुछ समय तक ठहरा रहा। कुछ दिन उपरान्त वह वहा से चल खडा हुआ और जिस स्थान के लिए वचन दिया था वहा पहुचा। वह उस रूपवती को अपने घर मे ले गया। एक मास उपरान्त वह उसे बादशाह की सेवा मे ले गया। बादशाह उसे देखकर बडा प्रसन्न हुआ। उन लोगो को भी (जहा की वह रूपवती थी) इस बात का पता चल गया कि जो व्यक्ति यहा ठहरा हुआ था वह उस युवती को ले गया और वे (युवती तथा पुरुष) मन्दू मे है। उसे भी उनके आने का पता चल गया। वह एक स्थान मे जाकर छिप गया और उसने अपने मित्रो से कह दिया कि, "जब इस बात का अन्त हो जाय तो बादशाह की ओर से उन लोगो को तसल्ली (१५०) देकर हमे सूचना कर देना। तब मै आ जाऊगा।" उसने सुल्तान से उसके लाने के विषय मे कहा था कि, "मै इसे कई हजार देकर लाया हू।" जब शुक्रवार के दिन बादशाह मस्जिद से वापस जा रहा था तो उन लोगो ने फरियाद की और कहा कि, "अमुक व्यक्ति हमारी पुत्री को भगा कर लाया है।" बादशाह के कान मे जैसे ही यह बात पहुची तो उसमे न तो आगे बढने की और न उस स्थान पर ठहरे रहने की शक्ति रही। वह उसी स्थान पर भूमि पर बैठ गया और उसने आलिमो को बुलवाया और कहा कि, "शरा के अनुसार हमारे लिए जो आदेश होता हो उस पर आचरण किया जाय।" जब उन लोगो ने यह हाल सुना और उन्हे इस बात का पता चला कि वह स्त्री बादशाह के घर पहुच गई है तो उन लोगो ने कहा कि, "हम लोग उस व्यक्ति के विरुद्ध फरियाद लेकर आये थे। हमे इस बात की सूचना नही थी। अब हमे इस बात का पता चल गया है कि वह आपकी (बादशाह) की सेवा मे है तो हम सतुष्ट है। वह मुसलमान हो चुकी है। हमारे किसी काम की नही। हम चाहते थे कि जिस व्यक्ति ने उसे भगाया है उसके प्रति न्याय किया जाय किन्तु अब यह हाल सुनकर हम अपने आपको सम्मानित समझते है और सतुष्ट है।" आलिमो ने सुल्तान से कहा कि, "जो कुछ भूल मे हो जाय वह क्षम्य है, उसका कफ़्फ़ारा[1] अदा कर दिया जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "आप लोग मुझे सतुष्ट करने के लिए कोई बात न कहे, जो बात शरा के अनुकूल हो मुझे स्वीकार है। यदि मेरी पवित्रता के लिए मेरी हत्या की आवश्यकता भी हो तो उसका शीघ्र आदेश दे।" जब आलिमो ने सुल्तान को विभिन्न मतो से अवगत कराते हुए सब बात समझा दी तो वह समझ गया। उस समय उसके मित्रो ने उस व्यक्ति को सूचना दी और वह प्रकट हुआ और सुल्तान के समक्ष उपस्थित हुआ। सुल्तान ने कहा कि, "हे दुष्ट। तू ने हमारे धर्म मे विघ्न डाला।" उसने कहा कि, "मैने समस्त राज्य मे खोज की और मै लौट रहा था कि मुझे यह स्त्री इस गुण से सुशोभित मिली। मेरे लिए यह परमावश्यक हो गया

१ प्रायश्चित्त।

कि मै अपने उद्देश्य की पूर्ति करू।" सुल्तान ने इसके उपरान्त फिर कभी स्त्रियो की इच्छा न की।

ख्वाजा हुसेन नागौरी से भेट की अभिलाषा

एक दिन सुल्तान बैठा हुआ था। उसने कहा कि, "मेरे हृदय मे एक अभिलाषा है और वह इस प्रकार है कि मखदूम ख्वाजा हुसेन नागौरी मेरे समकालीन हैं किन्तु मै उनके दर्शन नही कर सका। मुझे इसका खेद है।" किसी ने कहा कि "इसमे कौन सी रुकावट है?" सुल्तान ने कहा कि, "वे वास्तविक बादशाह हैं। इस स्थान पर क्यो आयेगे और यदि मै अन्य राज्य मे जाऊगा तो बहुत से लोगो को हानि होगी। फिर भी मुझे नही ज्ञात कि उनके दर्शन कर सकूगा अथवा नही। मैंने उनके विषय मे सुना है कि वे ससार वालो से सबध नही रखते।" शेख अब्दुल अजीज, मखदूम शेख हुसेन के सबधियो मे से था। उसने कहा कि, "मेरे हृदय मे एक बात आई है जिससे ख्वाजा हुसेन को इस स्थान पर ला सकता हू।" (१५१) सुल्तान ने कहा कि, "यदि यह कार्य करो तो एक लाख तन्के मार्ग व्यय हेतु ले लो और एक लाख तन्के मै तुम्हे मआश[1] के रूप मे भेट करता हू।" वह चल खडा हुआ और नागोर पहुचा। वहा पहुच कर उसने ख्वाजा हुसेन के चरणो का चुम्बन किया। ख्वाजा ने पूछा कि, "हे भाई अब्दुल अजीज! तुम कहा थे और कैसे आये?" उसने कहा कि, "मै मन्दू मे था और अपने स्वामी की सेवा मे आया हू।" उन्होने पूछा कि, "क्या है?" अब्दुल अजीज ने कहा कि, "मन्दू के किले मे मुहम्मद साहब की दाढी का बाल वर्तमान है।" शेख यह सुनते ही उठ खडे हुए और बडी ही मूर्च्छित दशा मे चलते रहे। नागौर के मुक्ता फीरोज खा को इस बात की सूचना मिल गई कि ख्वाजा मन्दू के किले की ओर जा रहे हैं। वह उनकी सेवा मे पहुचा और यात्रा की सामग्री घोडे, ऊट तथा खेमे इत्यादि की व्यवस्था करा दी। जब वह मन्दू के समीप पहुचे तो जिस स्थान से मन्दू का किला दृष्टिगत होता था वहा से वे प्रसन्नता प्रदर्शित करते हुए अग्रसर हुए। शेख अब्दुल अजीज आगे आगे जाता था। उसने सुल्तान गयासुद्दीन के नाम का उल्लेख नही किया था, केवल शुभ बालो की चर्चा की थी और वे (ख्वाजा हुसेन नगौरी) उसके दर्शनार्थ चल खडे हुए थे। अचानक सुल्तान को शेख के पहुचने का समाचार प्राप्त हो गया। वह तथा उसका पुत्र नसीरुद्दीन स्वागतार्थ रवाना हुए और ख्वाजा से मिल कर दोनो ने उनके चरणो पर अपने सिर रख दिये। ख्वाजा ने आकाश की ओर दृष्टि करके शेख अब्दुल अजीज से कहा कि, "तू ने हमे दर्शन के बहाने से धोखा दिया।" शेख अब्दुल अजीज ने कहा कि, "हे स्वामी! मैंने कोई भी विश्वासघात नही किया। ये लोग उस बाल के सेवक हैं।" ख्वाजा ने कहा कि, "सेवक को स्वामी के समक्ष व्यर्थ की बात नही कहनी चाहिये।" जब सुल्तान ने यह बात सुनी तो बाल लाने के लिए गया और इत्र के दो डिब्बे लाया। एक एक बाल दोनो डिब्बो मे था। दोनो व्यक्ति एक एक डिब्बा हाथ मे लेकर आये। ख्वाजा दुरूद[2] पढने लगे। मुहम्मद साहब के बालों के विषय मे यह प्रसिद्ध था कि दुरूद पढने पर वे सुई की नोक के बराबर डिब्बे के बाहर निकल आते थे। ख्वाजा के लिए दोनो बाल हवा मे होते हुए उनके हाथ मे पहुच गये। ख्वाजा ने दोनो को अपनी आखो मे रख लिया और उनके दर्शन से सम्मानित हुए। तदुपरान्त सुल्तान ने ख्वाजा के चरणो का चुम्बन किया और उन बालो को डिब्बो मे रख लिया और आगे आगे रवाना हो गया। ख्वाजा बालो के सम्मान मे हर्ष प्रदर्शित करते हुए चलने लगे, यहा तक कि सुल्तान के अन्त पुर

१ वृत्ति के रूप में।
२ मुहम्मद साहब, उनकी सतान तथा मित्रों के लिये शुभकामना सम्बन्धी वाक्य।

(१५२) मे पहुचे। सुल्तान ने अन्त पुर की समस्त स्त्रियो को आदेश दे दिया था कि प्रत्येक उनके पहुचने पर कुछ न कुछ न्योछावर करे। हर एक ने कुछ न कुछ न्योछावर किया और फूल तथा इत्र छिडका। फूल ख्वाजा के सिर तथा कमर मे लिपट गये। सेवको ने न्योछावर के दो बडे-बडे बोझ एकत्र कर लिए। तदुपरान्त ख्वाजा बाहर निकले और उन्होने दोनो बोझो को एक मुरली बजाने वाले को दे दिया और उसके गले मे बाहे डाल दी। वह मुरली बजाता था और ख्वाजा समा[1] करते हुए मार्ग मे चलते जाते थे। वे गलियो मे जा रहे थे कि शहर का काजी पहुच गया। काजी सैयिद था। उसने शेख से कहा कि, "आप आलिम होकर फूल पहनते है। पुरुष को फूल पहनना उचित नही।" ख्वाजा ने कहा कि, "हे स्वामी! मेरे लिए उचित है कारण कि मैंने इसे तुम्हारे दादा की मित्रता मे पहना है।" ख्वाजा ने कुछ उचित छन्द भी पढे। जो स्थान उनके निवास हेतु निश्चित था वहा पहुचे और दो मास तक वहा ठहरे रहे। सुल्तान गयासुद्दीन दावात तथा कागज लाकर दिन भर बैठा रहता था और उनके मलफूज[2] लिखा करता था। जब मलफूज समाप्त हो गया तो उसने निवेदन किया कि, "आप इसके लिए कोई नाम निश्चित कर दे।" ख्वाजा ने कहा कि, "इसका नाम असरारुन्नबी[3] रक्खो।" ख्वाजा ने मुहम्मद साहब के नाम पर कुरान की टीका के ३० ग्रन्थ तैयार किये और उसका नाम नूरुन्नबी रखा। इसके अतिरिक्त ख्वाजा ने रसूल बाडी नामक एक उद्यान का भी निर्माण कराया तथा मुस्तफा सागर नामक एक हौज नागौर मे बनवाया। सक्षेप मे, वे ईश्वर के बहुत बडे भक्त थे। जब वे बिदा होने लगे तो सुल्तान ने उनसे कहा कि, "हे स्वामी! आपने मुझे यहा पधार कर सम्मानित किया। अब मेरे लिए कुछ भविष्यवाणी भी कर दे।" ख्वाजा ने कहा कि, "ईश्वर तुझे क्षमा करेगा और तुझसे ससार का हिसाब न लेगा, कारण कि तू ने इस लोक को त्याग कर परलोक की चिन्ता की है।" सुल्तान ने निवेदन किया कि, "यदि आप इसे (१५३) अपनी लेखनी से लिख कर मुझे दे देगे तो मै उसे अपनी कब्र मे ले जाऊगा।" ख्वाजा ने उसे लिख कर दे दिया कि, "यदि ईश्वर तुझसे दुनिया का हिसाब ले तो इसकी जमानत मै करता हू।" उस युग के लोग इस विषय मे यह कहते थे कि, "शेख़ ने ईश्वर के कार्यो के सबध मे जमानत ली थी, किन्तु परलोक के विषय मे जो कहा गया वह सदिग्ध है।" किसी ने ख्वाजा से यह बात कही कि, "लोग इस प्रकार कहते है।" उन्होने उत्तर दिया कि, "इसमे कहने सुनने का स्थान शेष है। जब तक गयासुद्दीन जीवित है तब तक इसका अन्त सदिग्ध है। किन्तु जब उसकी मृत्यु हो जायेगी तो लोगो को यह भली-भाति ज्ञात हो जायगा कि वह पवित्रता की दशा मे मरा।"

जब उसकी मृत्यु हुई तो सभी लोगो ने इस बात को स्वीकार किया कि वह इस ससार से बडी पवित्र दशा मे बिदा हुआ। अन्ततोगत्वा जब सुल्तान गयासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन ने अपने पिता से विश्वासघात किया और सुल्तान निरपराध मारा गया तो सभी लोग कहते थे कि, "वह बडी ही पवित्र दशा मे मरा और बडी ही पवित्र दशा मे ससार से विदा हुआ।" उसकी मृत्यु का हाल आगे लिखा जायगा।

शोक सम्बन्धी समाचारों का न सुनना

सुल्तान गयासुद्दीन ने कभी कोई शोक सबधी समाचार न सुने थे। एक दिन उसके जामाता की मृत्यु हो गई। उसकी पुत्री, जो नित्यप्रति अभिवादन हेतु आया करती थी, दो-तीन दिन तक उपस्थित

१ दरवेशों का संगीत, वादन तथा नृत्य।
२ वाणी अथवा प्रवचन।
३ नबी (मुहम्मद साहब) के रहस्य।

न हुई। सुल्तान ने पूछा कि, "अमुक पुत्री नही दिखाई पडती ?" लोगो ने कहा कि, "उसने वस्त्र नही पहने है।" सुल्तान समझ गया कि कोई न कोई कारण है तभी वह मैले कपडे पहने हुए है।

एक बार सुल्तान बहलोल ने रणथम्भोर के किले के समीप के अल्हनपुर नामक स्थान तक आक्रमण किया और तदुपरान्त वापस चला गया। लोग इस समाचार को सुल्तान तक पहुचाना चाहते थे किन्तु इस समाचार के शोक से सबधित होने के कारण कहने का साहस न कर सकते थे। राज्य की महत्व-पूर्ण घटना होने के कारण इसकी सूचना देनी आवश्यक थी। वजीरो ने कुछ नृत्य करने वालो को एक स्वाग सिखा दिया और यह निवेदन किया कि, "एक व्यापारी नृत्य करने वालो को लाया है और सुल्तान को नृत्य दिखाना चाहता है।" सुल्तान ने कहा कि, "अमुक समय पर उपस्थित हो जाओ।" वे उसी समय पर उपस्थित हुए। बीच मे पर्दा डाल दिया गया। नृत्य करने वालो ने भाडो का रूप धारण किया और अफगानो के समान दोतारा बजाते हुए तथा अफगानी गाना गाते हुए उपस्थित हुए। कुछ लोग गठरी सिर पर रख कर भागते हुए तथा रोते-चिल्लाते हुए पर्दे के बाहर आये। सुल्तान को आश्चर्य हुआ। उसने इस विषय मे पूछा। उन लोगो ने जो घटना थी उसका ठीक ठीक उल्लेख कर दिया। सुल्तान ने कहा कि, "शेर खा मर गया अथवा जीवित है ?" इसके अतिरिक्त उसने कुछ न कहा। चन्देरी के मुक्ता शेर खा ने आक्रमण करके हिन्दुओ को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और लौट आया। सुल्तान ने आदेश दिया था कि वह एक स्थान को विध्वस करके लौट आये।

ज़नाना बाजार

(१५४) उसने अत्यधिक स्त्रिया एकत्र की थी और प्रत्येक वस्तु का बाज़ार स्त्रियो द्वारा अपने अन्त पुर मे आयोजित कराया था। घोडे का बाज़ार, गेद का मैदान इत्यादि सभी उसके अन्त पुर मे उपलब्ध थे। वह अपनी इच्छानुसार अन्त पुर मे आमोद-प्रमोद किया करता था। मनोरजन हेतु वह स्त्रियों से चीजे क्रय करता था। उसने ३० वर्ष तक राज्य किया और इस अवधि मे २ बार घर से निकला।

जोधपुर के मन्दिर का खंडन

एक बार जोधपुर मे मन्दिर का निर्माण कर लिया गया था। सुल्तान ने मन्दू के काजी को उस स्थान पर इस आशय से भेजा कि वह मन्दिर का खण्डन करा दे। उसने कह दिया था कि "यदि तेरे कहने से वे लोग मन्दिर को नष्ट न करे तो तू उसी स्थान पर रहना और हमे सूचना कर देना।" जब काजी वहा पहुचा तो काफिरो ने सुल्तान के आदेश का पालन न किया और कहा कि, "गयासुद्दीन को भोग-विलास से इतना अवकाश मिल गया कि वह इस ओर ध्यान देने लगा ?" काजी ने इसकी सूचना बादशाह को कराई। वह मन्दू से सवार होकर एक रात्रि उपरान्त जोधपुर पहुच गया और उसने काफिरो को दण्ड देकर मन्दिर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उस राज्य के लोग अपनी भाषा मे उसे "आकाशदर्शी" कहते थे। हिन्दुस्तान की भाषा मे आसमान को आकाश कहते है।

सुल्तान का चरित्र

इसके अतिरिक्त उसने एक बार और भी यात्रा की थी और वह नालचा नामक स्थान तक जो कि किले से लगभग २ कोस के होगा, हौज, उद्यान तथा भवन के निर्माणार्थ उसके समान विलासी तथा धर्मनिष्ठ बादशाह कोई भी नही हुआ है। उसके अन्त पुर मे धनुर्धर भी रहते थे जो हाथो मे धनुष लिए हुए गोलाई मे खडे रहते थे। वे आदेशानुसार लक्ष्य पर बाण फेका करते थे और प्रत्येक दिशा से बारी

बारी बाण फेकते थे। जब तक वह आदेश न देता था तब तक लक्ष्य हवा मे रहता था। जब वह रुक जाने का आदेश देता तो वह भूमि पर गिर जाता।

सुल्तान की हत्या

उसका पुत्र नसीरुद्दीन हरामखोर हो गया था। उसने तीन बार सुल्तान को शर्बत मे विष दिया। वह खुल्लमखुल्ला कहता था कि, "आप इसे पिये।" सुल्तान उससे कहता था कि, "बादशाही तो तुम्ही करो, मेरा अतिम समय आ गया है। अपने ऊपर इसका दोष क्यो लेते हो?" जब कभी वह शर्बत देता तो सुल्तान पी लेता था और जहरमोहरे की अगूठी, जो उसकी अगुलियो मे रहती थी, मुख में रख लेता था। विष का प्रभाव न होता था। अन्त में नसीरुद्दीन उसकी हत्या करने पर उद्यत हो गया। जब तक धनुर्धर स्त्रियो के हाथ मे बाण होता था उस समय तक कोई भी घर के समीप न पहुच (१५५) सकता था। बाणो के समाप्त हो जाने के उपरान्त दुष्ट लोग घर के भीतर प्रविष्ट हो गये और सुल्तान की हत्या कर दी।

सुल्तान के चमत्कार

मैंने मलिक हुसामुद्दीन खलजी से सुना है कि, "जिस समय सुल्तान गयासुद्दीन की लाश को स्नान कराया जा रहा था, मै उपस्थित था। तीन व्यक्ति, एक इमाम, दूसरा हुज्जाब[1] तथा तीसरा उसका कोई सबधी—स्नान करा रहे थे। तीनो बडे भारी आलिम थे। एक स्नान कराता था और दो जल डालते थे। सिर से लेकर नाभी तक उन लोगो ने धोया, जब उन लोगो ने नाभी के नीचे अडकोष धोने का प्रयत्न किया तो यह सभव न हो सका। सुल्तान ने अपने पाव सीने से चिपका लिये और नाभी के नीचे किसी को हाथ न ले जाने दिया। उसके हाथ मे जो अगूठी थी वह भी उस समय खो गई। इन लोगो को सुल्तान नसीरुद्दीन से भय हुआ कि वह तीनो की हत्या करा देगा। उन्होने कहा कि, "हे ईश्वर! सुल्तान गयासुद्दीन के सम्मान की दृष्टि से, जिनकी विलायत[2] मे कोई सदेह नही, अगूठी मिल जाय।" जो व्यक्ति नहला रहा था उसने अगूठी ले ली थी और उसे छिपा दिया था। जब वह पाव धोने के लिए सुल्तान के पायती पहुचा तो सुल्तान ने अपना एक पाव उसके सीने पर इस जोर से रख दिया कि उसकी कोख फटने ही वाली थी किन्तु उसने अगूठी अपनी पगडी से बाहर फेक दी। सुल्तान ने पाव खीच लिए।

सुल्तान नसीरुद्दीन

भवन निर्माण से रुचि

सुल्तान की मत्यु के उपरान्त नसीरुद्दीन बादशाह हुआ। वह भी विलासी तथा शराबी था। वह अपनी विलायत[3] मे चक्कर लगाया करता था। यहा तक कि अन्त पुर की कई सौ स्त्रिया, स्त्रियो की सेना सहित, शिकार खेलती हुई एक दिशा से यात्रा करती थी और सेना दूसरी दिशा से। उसने अधिकाश स्थानो पर महल, हौज तथा आहूखानों[4] का निर्माण कराया था। अभी तक उसके अवशेष उसके

१ हाजिब'—देखिये पृ० ३० नोट न० ३।
२ 'सन्त होने'।
३ राज्य।
४ विशेष प्रकार के स्थान

राज्य मे शेष हैं। उज्जैन के भूभाग के समीप कालियादा नामक स्थान मे उसने अनेक राज-प्रासादो का निर्माण कराया। वह एक दिन वहा बैठा था। वहा जल की एक नहर बडी कुशलता से बनाई गई थी। वह उस महल के हौज मे पैर लटकाये हुए बैठा था, उसके पाव पर जल गिर रहा था। दिलदार गाचा, जिसकी उपाधि सुल्तान ने नदीमये मजलिस[1] रखी थी, उपस्थित हुई। सुल्तान ने कहा कि उचित छन्द पढो। उसने तुरन्त यह छन्द पढे

(१५६) "जल फरसगो से सिर के बल आ रहा है,

तेरे चरणो के चुम्बन की अभिलाषा मे पत्थर के ऊपर सिर पटकता है"।[2]

वह बडा प्रसन्न हुआ और उसने कहा कि, "इसके पुरस्कार मे यह उचित होगा कि मै राज्य तुझे प्रदान कर दू किन्तु यह कार्य स्त्री के लिए उपयुक्त नही। शासन प्रबन्ध मैं तुझे सौपता हू। जो आदेश मै दिया करता था वह तेरे सिपुर्द कर दिये।"

जल से रुचि का कारण

अधिकाश वह जल से खेला करता था। इसका कारण यह था कि वह अपने मुख मे पारा रखता था। अचानक पारा पेट मे चला गया और बाहर न निकला। रात दिन इसके कारण उसे ज्वर रहता था। एक दिन उसने इस सबध मे मलिकुलहुकमा से कहा कि, "तुमने इसका कोई उपचार नही किया।" मलिकुलहुकमा ने कहा कि, "जब ओलो की वर्षा हो तो आप जितना भी सभव हो सके ओला खा ले और उन्हे एकत्र कर लेने का आदेश दे दे।" एक दिन ओलो की वर्षा हुई। मलिको ने थैले तैयार करा रखे थे और उन मे कोई चीज मल दी थी। उन ओलो को थैलो मे रख लिया गया और मुगरी से कूटा गया। ३० सेर ओले निकले। वे सुल्तान को दे दिये गये। यह अनुमान लगाया गया कि नित्य-प्रति इतना ही ओला खाया जाय। लोगो ने कहा कि "पुन जब ओलो की वर्षा होगी तो एकत्र करके प्रस्तुत करेगे।" उस दिन से इसी कारण ज्वर मे कमी होने लगी।

मलिकुलहुकमा की योग्यता

एक दिन उसने मलिकुलहुकमा से कहा कि, "अन्त पुर के भीतर घर के हौज पर नारगी के दो वृक्ष थे। जब मै हौज मे बैठता था तो मेरी दृष्टि उनमे से एक पर कभी कभी पडती थी। उनमे से एक वृक्ष सूख गया। इसका कोई उपाय है कि वह पुन हरा हो जाय ?" मलिकुलहुकमा ने कहा कि, "एक बार मै उसे देख लू।" उसे उस स्थान पर पहुंचाया गया। उसने उन वस्त्रो को जो पहिने था खोल कर वृक्ष से आलिगन किया और कुछ देर उपरान्त पृथक् होकर कहा कि, "सभव है कि यह हरा हो जाय। इसके लिए जिन वस्तुओ की आवश्यकता हो उनके उपलब्ध करने का आदेश दे दिया जाय।" उस वृक्ष के आस पास का स्थान उसने खुदवाया और एक घास का रस उस गड्ढे मे कई दिन तक निरन्तर डलवा कर उस गड्ढे को भरवा दिया। इसके उपरान्त फिर उसे खोद कर रस डाला गया। ४० दिन मे वह वृक्ष हरा हो गया।

एक व्यक्ति का पुत्र जो रुग्ण था स्वस्थ हो गया। उसने प्रीति भोज का आयोजन किया। मलिकुलहुकमा भी उपस्थित हुआ। जो व्यक्ति रुग्ण हो गया था उसे उसके अभिवादन हेतु लाया गया।

१ दरबार की विशेष सहचर।
२ 'आब अज़ पै सर व क़दत मी आयद अज फ़रसगहा, अज़ हसरते पाबोसे तो सर मी ज़नद बर सगहा'।

उसने अभिवादन किया। मलिकुलहुकमा ने उसे गले लगाया। आलिंगन के समय उसकी कलाई मलिक की पीठ पर थी। मलिक ने नाडी का तत्काल पता लगा लिया और भोजन न किया। वह वहा से चल दिया और कहा कि, "यह अभी अभी मर जायगा। मुर्दे के लिए भोजन करना उचित नही।"

(१५७) एक दिन सुल्तान ने मलिकुलहुकमा की परीक्षा लेने के लिए उसके पास ३ रोगी भेजे। उनके पास जो कारूरा[1] था उसमे एक मे रुग्ण स्त्री का, दूसरे मे बन्दर का और तीसरे मे भैस का मूत्र था। शीशे मलिकुलहुकमा के समक्ष लाये गये। उसने उन्हे एक दास के हाथ मे दे दिया, दास ने शीशा हाथ मे लेकर दिखाया। उसने मुस्करा कर कहा कि, "एक को गरम जल मे दवा दी जाय, दूसरे को रुई का बीज उबाल कर अमुक वस्तु के साथ दिया जाय और तीसरे के गले से रस्सी निकाल कर यह वस्तु दे दी जाय। तीनो अच्छे हो जायेगे।"

सुल्तान नसीरुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त उसके राज्य मे विघ्न पड गया और मुसलमानो को कष्ट होने लगा तथा काफिर प्रभुत्वशाली हो गये। इस दुर्घटना के कारण समस्त सम्मानित व्यक्ति छिन्न भिन्न हो गये। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी स्थान को चल दिया। मलिकुलहुकमा, मलिकुलफुजला तथा आलिम खा तीनो बडे विद्वान् और बडे योग्य थे, और चौथे दिलदार गाचा जिसकी उपाधि नदीमये मजलिस थी। ये लोग सुल्तान सिकन्दर के पास पहुचे। आलिम खा की कुछ समय उपरान्त मृत्यु हो गई। मलिकुलफुजुला तथा मलिकुलहुकमा बहुत समय तक उस स्थान पर रहे। नदीमये मजलिस के सबध मे जब ख्वाजगी शेख सईद ने सुल्तान को समाचार पहुँचाये और उसके गुणो का उल्लेख किया तो उसने उसे अपने पास बुलवाया और उससे वार्ता की और कहा कि, "यह बडी ही समझदार है किन्तु स्त्री है और हमारी गोष्ठी के योग्य नही है। इसके लिए पर्दे मे रहना अच्छा है।" वह वहा न रही। जो दोनो बुजुर्ग रह गये उनमे से मलिकुलफुजला सैनिको का जीवन व्यतीत करता था। सुल्तान ने उसे शेख मन्झू नुरुल्लाह के साथ चन्देरी भेज दिया। इससे सुल्तान का उद्देश्य यह था कि वहा वाले उससे परामर्श लेते रहे।

सुल्तान ने मलिकुलहुकमा को अपने पास रख लिया और एक बार उसे सुल्तान मुजफ्फर गुजराती के पास दूत बना कर भेजा। जब उसने बादशाह को देखा तो उसने अपने जानू पर बाया हाथ रख कर सलाम किया। जब वह निकट पहुचा तो 'अस्सलामु अलैकुम' कहा और कुरान शरीफ उपहार स्वरूप भेट किया। सुल्तान ने तीनो बातो के सबध मे पूछा कि, "तुमने अपना बाया हाथ जानू पर क्यो रखा था ?" उत्तर दिया कि, "मेरे दाये हाथ मे बादशाह का फरमान था।" सुल्तान ने पुन पूछा कि, "कुरान प्रस्तुत करने का क्या कारण था ?" उसने उत्तर दिया कि, "आपके लाभार्थ।" सुल्तान ने पूछा कि (१५८) "किस प्रकार ?" उसने उत्तर दिया कि, "मै आलिम हू। यदि आप मेरा सम्मान न करते तो इस विषय मे आप से कयामत मे पूछताछ होती। कुरान के होने के कारण आपके लिए सम्मान प्रदर्शित करना परमावश्यक था और इस प्रकार आपने एक आलिम का भी सम्मान किया।" सुल्तान ने पुन पूछा कि, "तुमने दूर से अभिवादन कर दिया था पुन. 'अस्सलामु अलैकुम' कहने का क्या कारण था ?" मलिकुलहुकमा ने कहा कि, "यह बात मेरे अधिकार मे न थी। जो बात सुन्नत[2] के लिये आवश्यक थी, उस पर मैंने आचरण किया।" सुल्तान ने कहा कि, "तुम्हारे जैसा व्यक्ति सुल्तान सिकन्दर के पास रहता है। उसे तुम शरा[3] के आदेशो के पालन की शिक्षा क्यो नही देते और उसे दाढी रखने के लिए

१ रोगी का मूत्र।
२ वह आचरण जिसके विषय मे कहा जाता है कि मुहम्मद साहब किया करते थे।
३ इस्लाम के नियम।

क्यो नही प्रेरित करते तथा समय को दृष्टि मे रखकर कार्य क्यो करते हो ?" मलिकुलहुकमा ने उत्तर दिया कि, "वहा आलिम लोग उपस्थित रहते है, जो शरा के आदेशो के अनुसार परामर्श देते होगे।" सुल्तान ने कहा कि, "तुम अपने बादशाह का पक्षपात करते हो, जो बात मैने पूछी उसका उत्तर नही देते।" मलिकुलहुकमा ने कहा कि, "जो उत्तर उचित था उसे मैने दे दिया। सुल्तान ख्वाजा निजामी[1] तथा शेख सादी[2] का अनुसरण करता है। उसका विचार है कि उसकी दाढी बहुत ही छोटी है। यदि वह दाढी रखेगा तो लोग हँसेगे और बहुत से लोग पापी होगे। इस कारण वह दाढी नही रखता।" सुल्तान ने कहा कि, "मुझे इस बात का पता न था।"

रानी पुतली से विवाह

सुल्तान नसीरुद्दीन की यह प्रथा थी कि वह भ्रमण करता हुआ किसी ग्राम के समीप पहुच जाता था और सरापर्दा[3] लग जाता था, ग्रामीण स्त्रिया अपनी प्रथानुसार गाना गाती हुई और अपने सिर पर घडा रखे हुए सरापर्दे मे उपस्थित होती थी और सुल्तान के लिए शुभकामनाये करती थी। एक बार एक युवती अपनी माता के पीछे से सिर उठा कर सुल्तान को देख रही थी। अचानक सुल्तान की दृष्टि उस पर पड गई। उसने पूछा कि, "यह किस कौम से सबधित है ?" उत्तर मिला कि, "यह इसी स्त्री की पुत्री है और कलाल कौम से सबधित है जो कि बरतन बनाते है।" सुल्तान ने पूछा कि, "इसका विवाह हो गया है अथवा नही ?" उत्तर दिया गया कि, "नही।" सुल्तान ने कहा कि, "झूठ मत बोलना।" उसने उत्तर दिया कि, "अन्य स्त्रियो से पूछ लिया जाय कि मै सत्य कहती हू अथवा झूठ।" अन्य स्त्रियो ने भी यही बात कही। तदुपरान्त सुल्तान ने कहा कि, "इसका विवाह मेरे साथ कर दिया जाय।" उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "हमे बादशाह का आदेश शिरोधार्य है।" सुल्तान ने कहा कि, "तुम लोग अपने घर चली जाओ। मै वही आऊगा।" उसने उसी पडाव पर एक भवन का निर्माण प्रारम्भ करा दिया और विवाह का प्रबन्ध करने लगा। उसके (युवती के) भाइयो को सम्मानित किया और उन्हे उच्च पद प्रदान किये और उस युवती को अपने घर ले आया। दो मास तक वह वहा ठहरा रहा। उस स्त्री का नाम रानी पुतली रखा और उससे उसका प्रेम नित्यप्रति बढने लगा। इसी बीच मे एक दिन सुल्तान (१५९) उससे खिन्न हो गया। मन्दू के किले मे सौज तालाब पर जिन महलो के बनवाने का उसने आदेश दिया था वे तैयार हो गये। आराइश खा शीराजी उसका प्रबन्धक था। दो मास व्यतीत हो चुके थे कि सुल्तान ने रानी पुतली से बात न की थी। उसने इस बीच मे उत्तम वस्त्र न धारण किये थे। उसने आराइश खा के पास कहलाया कि, "किसी प्रकार मेरा अभिवादन सुल्तान के समक्ष करा दो।" उसने उत्तर दिया कि, "यदि यह किसी प्रकार सभव हो सकेगा तो मै इसमे कोई कमी न करूगा।" जब महल पूरे बन गये तो आराइश खा ने सूचना दी कि, "घर तैयार है आप उन्हे देख ले।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "स्त्रियो को घर बाट दिये जाय। जब वे घरो मे चली जाय तो हमे सूचना कर दी जाय।" आराइश खा ने वहा पहुच कर घरो का वितरण किया। उसने देखा कि रानी पुतली भूरे रग के वस्त्र पहने हुए

१ निजामी गजवी —खमसे, पांच मसनवियो के प्रसिद्ध लेखक। उनकी मृत्यु १२०६ ई० के लगभग बताई जाती है।

२ शेख़ मसलह उद्दीन सादी शीराज़ी जिनका जन्म शीराज़ में ११७५ ई० में तथा मृत्यु १२६२ ई० में हुई। 'गुलिस्तां' उनकी बड़ी ही प्रसिद्ध कृति है।

३ शिविर।

है। आराइश खा ने कहा कि, "तू ने दो रग के वस्त्र धारण कर रखे हैं। ये शृगार से शून्य है।"[1] उसने उत्तर दिया, "अब किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नही।" आराइश खा ने सबको बडे उत्तम प्रकार के घर दे दिये। एक महल, जो अत्यन्त सफेद था और जिसकी दीवारे तथा छत भी सफेद थी, रानी पुतली को दे दिया और उसके लिए एक स्थान निश्चित कर दिया कि वह वहा खडी रहे। जब सुल्तान भ्रमण करता हुआ वहा पर पहुचे तो उसी स्थान से वह अभिवादन करे और आगे न बढे। आराइश खा ने आशा प्रकट की कि सुल्तान उसके समक्ष आयेगा और इस स्थान से गुजरेगा। उसने उससे प्रार्थना की कि इसके बदले मे उसके प्रति भी न्याय किया जाय। जब सुल्तान उस स्थान पर पहुचा तो वह उसी प्रकार जैसे कि कहा गया था सिर झुकाये तथा आखे भूमि की ओर किये हुए थी। उसके मुख से शोक के चिह्न प्रकट थे। वह भूरे रग के वस्त्र धारण किये हुए थी और उसने उसी स्थान से अभिवादन किया। जब सुल्तान की दृष्टि उस पर पडी तो वह खडा हो गया और चिन्ता मे पड गया कि सभी लोग तो उत्तम वस्त्र धारण किये हुए तथा शृगार किये हुए है और अभिवादन हेतु आ रहे हैं। उसे रानी पुतली के भूरे रग के वही वस्त्र याद आ गये जो उसने प्रथम दिन उसके शरीर पर उसके पिता के घर देखे थे। उसका प्रेम पुन उत्तेजित हो गया और सुल्तान उसका हाथ पकड कर उसे घर के भीतर ले गया। वह रोने लगी। सुल्तान ने अपने रुमाल से उसका मुख साफ किया और उससे आलिगन किया। इस स्थान पर (१६०) शाह मुहम्मद फर्मुली द्वारा रचित दोहरा उसे याद आ गया।

दोहरा

जिमि जिमि आलिंगन करत बलम हरबैन समात।
तुमहू कजल रूप भवे नयन नमक भरान्त॥

जल मे डूबने मे बचाने वाली स्त्रियों को दण्ड

सुल्तान नसीरुद्दीन बडा विलासी था और जल से अधिक खेला करता था। वह सर्वदा स्त्रियो के साथ जल मे प्रविष्ट होकर खेला करता था अंबर नसीरशाही उसी का आविष्कार है और 'एक तारा'[2]-वस्त्र भी उसी ने तैयार करवाये थे। जब वह जल मे होता था तो स्त्रियो को रगीन एकतारे के वस्त्र धारण करवाता था ताकि वे पूर्णत नग्न न दृष्टिगत हो। उसकी मृत्यु भी जल ही मे हुई। यह घटना इस प्रकार घटी कि, "एक दिन वह अपनी प्रथानुसार जल मे प्रविष्ट हुआ। उस समय वह मस्त था और डूबने लगा। जो स्त्रिया उसके निकट थी उन्होने उसके केश पकड कर उसे जल के बाहर निकाला। जब वह सावधान हुआ तो उसने पूछा कि, "मै जल मे प्रविष्ट हुआ था। मुझे स्मरण नही कि मै किस प्रकार बाहर निकला।" उन लोगो ने बताया कि, "बादशाह के शत्रु मस्ती के कारण जल मे डुबकी खाने लगे और डूबने लगे। केवल केश दृष्टिगत थे। हम कुछ सेविकाओ ने प्रयत्न करके बाहर निकाला।" उसने कहा कि, "क्योकि मेरे सिर के केश दृष्टिगत थे अत सभवत इन लोगो ने मेरे केश पकडे होगे।" जो लोग इस कार्य से सबधित थे उनमे से आठ स्त्रियो की उसने हत्या करा दी।

अमीन शह को मन्दु का फ़रमान प्राप्त होना

अमीनशह मार्ग दर्शक का कार्य करता था। वह लोगो को गुजरात की सीमा से नलवर के किले

१ 'भद्दे लगते है'।
२ एक प्रकार के वस्त्र।

तक और इस ओर से गुजरात की सीमा पर पहुचाया करता था। एक दिन एक व्यापारी अत्यधिक लोगो सहित उपस्थित हुआ। अमीन शह ने प्रथानुसार उससे पेशकश[1] मागी। उसने कहा कि, "मै सुल्तान फीरोज का व्यापारी हू। सुल्तान फीरोज करनाल के किले का अवरोध किये हुये है। मै वहा अनाज ले जा रहा हू।" अमीन शह ने कहा कि, "तू जो कोई भी हो, मुझे इसकी चिन्ता नही। दस्तूरी[2] दे दे और चला जा।" उसने कहा कि, "यदि तू दस्तूरी न ले तो जब मै बादशाह के पास जाऊगा तो मन्दू की इस विलायत को तेरे नाम लिखवा कर भिजवा दूगा तथा घोडे और खिलअत भी प्रेषित कराऊगा। उत्तम यह है अथवा दस्तूरी ?" उसने कहा कि, "तू यदि ऐसा कर दे तो मै बादशाह का सेवक हो जाऊगा और जो सेवा मुझसे हो सकेगी मै सपन्न करूगा।" उसने व्यापारी को जाने की अनुमति दे दी। जब वह बादशाह की सेवा मे पहुचा तो उसने निवेदन किया कि, अमीन शह नामक एक व्यक्ति मन्दू का जमीदार है। समस्त मार्ग उसके अधिकार मे है। मन्दू का मुल्क बडी अव्यवस्थित दशा मे है। यदि (१६१) उसे फरमान प्रदान कर दिया जाये तो अत्यधिक समृद्धि उत्पन्न हो जायगी।" बादशाह ने खिलअत तथा घोडे उसी व्यापारी के हाथ उसके पास भेज दिये। जब वह वहा पहुँचा और उसने फरमान तथा खिलअत पहुचाये तो उसने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली और उस दिन से प्यादगी छोड कर सवार बन गया। उसने अपने सहायको को सवार बना दिया और उनकी रक्षा करने लगा। उसने विलायत[3] को सुव्यवस्थित रखा।

होशंग शाह

उसका पुत्र, जिसका नाम होशग था, अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी बना और उसने बादशाही के कार्य सपन्न कराने प्रारम्भ कर दिये। उसने मन्दू की समस्त विलायत को आबाद किया और इधर उधर किलो का निर्माण कराया तथा सेनाये नियुक्त की। महमूद मुगीस खलजी नामक एक व्यक्ति होशग के पास आकर उसका सेवक बन गया और उसने उसे परामर्श दिया कि "अपने १८ पुत्रो को अपने जीवन-काल ही मे १८ स्थानो पर जागीर प्रदान कर दे ताकि अन्य किसी व्यक्ति का उसमे अधिकार न रहे और वे तेरे समक्ष ही अधिकार प्राप्त कर ले।" होशग ने ऐसा ही किया। महमूद ने विश्वासघात करना निश्चय कर लिया था और उसके हृदय मे बादशाही के विचार उत्पन्न हो रहे थे। उसने सर्वप्रथम उसके पुत्रो को इससे पृथक् करा दिया। तदुँपरान्त वह उसका वजीर बन गया। उसने अपनी पुत्री का विवाह बादशाह से इस आशय से कर दिया कि बादशाह से सबध के कारण उसे सम्मान प्राप्त हो जाये और लोग यह समझने लगे कि एक तो वह वजीर था और अब बादशाह उसका जामाता हो गया।[4] १२ वर्ष तक वह इसी चिन्ता मे रहा और किसी अन्य को उसने इसकी सूचना नही दी। वह स्वय इस विषय मे निरन्तर सोचा करता था। उसने अपने घर मे एक ऐसा स्थान बना लिया था जहा वह बादशाह के पास से आकर चला जाता था और यह सोचा करता था कि "मै इस कार्य को इस प्रकार सपन्न करूगा और जब यह कार्य हो जायेगा तो फिर इस प्रकार कार्य करूगा।" महमूद के पिता ने सोचा कि, "जब वह बादशाह के पास से आता है तो किसी और ध्यान नही देता और उसी घर मे चला जाता

१ मार्ग का कर।
२ चुंगी।
३ प्रदेश।
४ यह वाक्य स्पष्ट नही। किन्तु बाद के विवरण से यही अर्थ निकलता है।

है। पता लगाना चाहिये कि वहा वह क्या करता है।" जब वह घर के भीतर पहुचा तो उसके पिता ने उसका पीछा किया और कान लगाकर सुना तो पता चला कि वह राज्य प्रात करने के विषय मे सोचा करता है। उसके पिता ने उसके पास पहुच कर उसके सिर को दोनो हाथ से पीट कर कहा कि, "तेरा दिमाग खराब हो गया है। क्या तू हम लोगो का समूलोच्छेदन कराना चाहता है ?" उसने कहा कि, "हे निर्भीक! तू मेरी १२ वर्ष की चिन्ताओ को नष्ट कर रहा है और जो देग मै पका रहा हू उसे तोड रहा है।" उसका पिता वहा से निकल कर बादशाह के पास पहुचा और उससे कहा कि, "मेरा पुत्र पागल हो गया है और तुझसे नमकहरामी करने के विषय मे सोच रहा है। तुझे सावधान रहना चाहिये।"

(१६२) महमूद ने अपने आपको रुग्ण प्रसिद्ध कर दिया और द्वार पर पर्दा डलवा दिया। दूसरे दिन बादशाह ने अपने दास उसकी सेवा मे भेजे। उसने सोचा कि बादशाह दासो के पीछे-पीछे चिकित्सको को भी भेजेगा और कोई बात छिपी न रहेगी, अत उसने पर्दे को दृढता पूर्वक बँधवा कर उस स्थान मे अँधेरा करा दिया। अपने निकट अँगीठी रख ली। एक जानवर को जिबह करके उसका रक्त पी गया। जब चिकित्सक आये तो उन्हे अपने पास बुलाया। जब वे अँधेरे मे पहुचे तो कुछ देख न सके। चिकित्सको की यह प्रथा है कि जब वे आते है तो कुछ ठहर कर नाडी देखते है। क्योकि उस स्थान पर अँधेरा था अत वे वहा रुक गये। वे उसकी नाडी देखने वाले ही थे कि वह उठ खडा हुआ और उसने कहा कि, "थाल लाया जाय।" जब थाल लाया गया तो उसने बडा कष्ट प्रदर्शित करते हुए वमन किया और कहा कि, "दीपक लाकर देखा जाय कि वमन मे क्या वस्तु है।" वह स्वय सिर को लपेट कर बडी पीडाग्रस्त दशा मे लेट गया। जब दीपक जल गया और चिकित्सको के समक्ष थाल रखा गया तो उन्होने देखा कि वह रक्त से भरा हुआ है। चिकित्सको ने नाडी न देखी और बादशाह की सेवा मे जाकर कह दिया कि, "उसकी बडी ही शोचनीय दशा है और वह थोडे समय मे मर जायेगा।" सुल्तान ने उसकी पुत्री को सूचना दे दी कि वह अपने पिता के अतिम दर्शन कर ले। जब वह पुत्री वहा पहुची तो उसने (महमूद ने) अपनी पुत्री से कहा कि, "होशग के पुत्र बहुत बडी सख्या मे है, मैने यह सबध इस आशय से किया था कि मेरा नाती बादशाह होगा। यदि तू एक कार्य करे तो अच्छा है।" उसने पूछा कि, "क्या ?" उसने उत्तर दिया कि, "होशग को विष दे दे", और विष उसे देकर उसने लौटा दिया। उसने वहा पहुच कर जो कार्य उसे करना था कर दिया।

जिस रात्रि मे सुल्तान होशग की मृत्यु हुई महमूद उठ खडा हुआ ओर अपने नाती को अपनी गोद मे लेकर सिहासन पर आरूढ हो गया। जो लोग उसके सहायक थे वे उसके साथ थे। उसने अस्त्र-शस्त्र तथा चत्र धारण करके अमीरो को सूचना दी और खिलअते मँगवा कर अमीरो को बुलवाया। जो कोई खिलअत स्वीकार कर लेता था उसे वह दूसरे द्वार से लौटा देता था और जो कोई विद्रोह करता उसकी वह वही हत्या करा देता था। उसने एक गुप्त स्थान बना लिया था जहा वह अपने विरोधियों की हत्या करा देता था। कुछ समय उपरान्त उसने अपने नाती की भी हत्या कर दी और स्वय बादशाह हो गया।

सुल्तान महमूद

जब वह वजीरी की श्रेणी से बादशाही की श्रेणी पर पहुच गया तो उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन को अपना वजीर नियुक्त कर दिया और वह उसे अपना बडा भाई कहता था। वह (सुल्तान महमूद) बडा प्रतापी बादशाह था। पौरुष तथा बुद्धिमत्ता के कार्य उसके द्वारा सम्पन्न होते रहते थे।

(१६३) एक दिन सुल्तान गयासुद्दीन ने वाजिबुल अर्ज[1] लिखा कि, "सिपाहियों की जागीर की आय बहुत बढ गई है। जिस किसी की जागीर दो लाख की थी उसकी आय दुगुनी तथा तिगुनी हो गई है। यदि सुल्तान का आदेश हो तो इनकी वास्तविक जागीर इनके पास रहने दी जाय और जो वृद्धि हुई है उससे अन्य सेना की व्यवस्था की जाय ताकि वे लोग भी शाति से रहे और सेना मे भी वृद्धि हो।" सुल्तान ने पूछा कि, "यह विचार तेरे हृदय मे उत्पन्न हुये है अथवा किसी ने तुझसे कहा है?" सुल्तान गयासुद्दीन ने कहा कि, "हे बादशाह! चाहे यह बात मेरे हृदय मे आई हो अथवा किसी अन्य ने कही हो, मैने जो कुछ राज्य के हित मे था कह दिया।" महमूद ने कहा कि, "यह बडा विचित्र 'हित' है! मैने तुझे विजारत का पद प्रदान किया। इसका कारण यह था कि मै विजारत के पद से बादशाही को पहुच गया। मै समझता हू कि वजीर से बढकर बादशाह का कोई शत्रु नही होता, अत अपने पुत्र को ही वजीर करना उचित है। कारण कि वह शत्रु हो अथवा मित्र, घर से बादशाही न जायगी। मै समझता था कि मेरे बाद मेरे घर मे तू बादशाह होगा। क्योकि मै तेरे हृदय मे ऐसे विचार देख रहा हू अत ऐसा ज्ञात होता है कि मैने अपनी आखो से देख लिया कि यह घर नष्ट हो जायगा। यदि किसी अन्य ने तुझे परामर्श दिया है तो वह मेरे वश का शत्रु है उसे अपने पास से भगा दे।" गयासुद्दीन ने कहा कि, "हे बादशाह! मुझे इस बात मे कोई आपत्ति दृष्टिगत नही होती। इसमे जो रहस्य हो उससे कृपया मुझे अवगत करा दे ताकि मै इससे शिक्षा ग्रहण कर सकू।" सुल्तान ने कहा कि, "जिस किसी से उसे जो अधिक आय होती है वह यदि ले ली जायेगी तो वह हतोत्साहित हो जायगा और मेरी बात पर विश्वास न करेगा और उसको मेरी कृपणता समझेगा। मुझे ईश्वर की छाया कहा जाता है। क्योकि ईश्वर के आदेश मे कोई परिवर्तन नही होता अत हमारे आदेश मे भी कोई परिवर्तन न होना चाहिये। हम साल मे दो-तीन बार चित्तौड पर आक्रमण करते है और एक दिन मे ७० कोस तक पहुच जाते है। सिपाही लोग मेरे साथ होते है। प्रत्येक के साथ दो-तीन घोडे होते है। अभियान के समय न तो कोई मुझसे पृथक् होता है और न थकता है। वे अपने सामान को सुव्यवस्थित रखते है। यदि उनके पास ऐसी जागीरे न हो तो वे फिर हमारा साथ न दे सकेगे। बिना सेना के बादशाह क्या कर सकता है?" उसने अपने पुत्र को चेतावनी देकर कहा कि यह कुत्सित विचार अपने हृदय से निकाल दे।

देहली पर आक्रमण

एक बार सुल्तान महमूद ने देहली पर चढाई की। गुजरात के बादशाह ने सोचा कि, "देहली का बादशाह शक्तिहीन हो गया है। महमूद बडा शक्तिशाली बादशाह है। वह नि सदेह देहली के राज्य-सिहासन पर अधिकार जमा लेगा। वहा बैठकर वह अन्य राज्यो को अपने अधिकार मे करेगा और सर्वप्रथम गुजरात पर आक्रमण करेगा। हमे इसकी व्यवस्था करनी चाहिये। जब तक वह देहली के राज्य (१६४) सिहासन पर अधिकार न कर पाये उस समय तक हम मन्दू की विलायत पर आक्रमण कर दे। वह वहा से लौट आयेगा।" उसने ऐसा ही किया। महमूद को सूचना मिली कि गुजराती, मन्दू के राज्य पर आक्रमण करना चाहता है। वह सधि करके लौट आया। यह वृत्तान्त सुल्तान बहलोल के इतिहास मे दिया जा चुका है।

[1] प्रार्थना-पत्र।

गुजरात पर आक्रमण

सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे उसने उस ओर जिसे "ओझडी ख्वार" कहते थे चढाई की थी। वहा से वह गुजरात पहुचा। उस समय गुजरात के बादशाह की मृत्यु हो चुकी थी। उसका पुत्र अल्पावस्था मे था। उसे बादशाह बनाया गया। महमूद ने जब गुजरात पर आक्रमण किया तो वहा के वजीरो ने यह सोचा कि, "हम पर एक विपत्ति आ चुकी है। हम लोग उसका मुकाबला नही कर सकते।" जो कुछ सामग्री तथा खजाना तैयार था, उसे उन्होने खेमो मे छोड दिया। सेना को दो भागो मे विभाजित किया और दो दिशाओ मे घात लगा कर बैठ गये। महमूद ने सुना कि गुजरात की सेना भाग गई और अपनी सपत्ति तथा शिविर छोड गई है। उसने उनका पीछा किया। जब वह उनके शिविरो के समीप पहुचा तो सेना लूट मार मे व्यस्त हो गई। कुछ लोगो ने अस्त्र-शस्त्र उतार कर सामान घोडो पर लाद दिये। इसी बीच मे दोनो दिशाओ से सेना ने आक्रमण कर दिया। उनकी व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई, वे युद्ध न कर सके और जो कोई जहा था वहा से भाग खडा हुआ। सुल्तान महमूद भी भाग खडा हुआ। मार्ग मे महावत ने सुल्तान से पूछा कि, "आप कुछ कर सकते हैं? यदि बादशाह हमारे सिर पर हो तो जो सेना हमारा पीछा कर रही है उसे हम पीछे हटा दे।" सुल्तान ने कहा कि, "ऐसा ही करो ताकि मुझे कुछ अवकाश मिल जाय।" महावत ने हाथी को दूसरी ओर किया और सुल्तान महमूद को कुछ अश्वारोहियो सहित शक्ति प्रदान की। जो सवार एक-एक कर भागे हुए आ रहे थे उन्होने चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया कि, "सुल्तान महमूद आ गया है।" उन लोगो ने लगाम खीच ली। सुल्तान एक ऐसे स्थान पर जहा के दोनो किनारे असमतल थे खडा हो गया। नक्कारा बजाने वाले को नक़्क़ारा बजाने का आदेश दिया। जो लोग भागे जा रहे थे, वे नक़्क़ारे की आवाज सुनकर तथा शिविर देखकर चारो ओर से लौट आये और सुल्तान के समक्ष पहुच कर एकत्र हो गये। गुजरातियो ने भी दूर से शिविर देखा और नक़्क़ारा सुना। महमूद का शिविर देखकर उन्होने यह निश्चय किया कि हम लोग भी शिविर (१६५) लगा ले। नदी को बीच मे करके वे भी उतर पडे। दूसरे दिन उन्होने पत्र भेजा कि, "हमारे बादशाह की मृत्यु हो गई है। हमे अपने राज्य की व्यवस्था करनी है। आप भी मुसलमान हैं। यही नदी हमारे और आपके राज्य के मध्य मे सीमा बन जाय।" महमूद सधि करके लौट आया।

जब वह वहा से लौट आया तो वह हर बार यही कहा करता था कि, "मै एक बालक के समक्ष से भाग खडा हुआ। जब तक मैं गुजरात पर आक्रमण न कर लूगा, यह चिन्ता मेरे हृदय से न जायगी।" एक वर्ष उपरान्त उसने पुन आक्रमण किया किन्तु इसी बीच मे उसकी मृत्यु हो गई। वजीरो ने उसकी मृत्यु को गुप्त रखा और यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह रुग्ण है। वे उसे तख़्ते रवा[1] पर लिटा कर उसके मुख को खुला रखते थे और उसके हाथ मे एक रस्सी बाध दी थी। वह रस्सी एक विश्वासपात्र के हाथ मे रहती थी। जो कोई सिहासन के समीप पहुच कर अभिवादन करता था तो वह व्यक्ति धागा खीच लेता था। हाथ कुछ उठ जाता, नकीब लोग यह नारा लगाते कि, "तेरा अभिवादन स्वीकार हो गया।" उन्होने उसके पेट को खाली कर दिया था और शरीर मे ऐसी औषधि मल दी थी जिससे लाश को कोई हानि न पहुच सके। जब वे मन्दू पहुचे तो उन्होने उसकी मृत्यु को प्रकट किया।

१ एक प्रकार की पालकी।

सुल्तान ग़यासुद्दीन

सुल्तान गयासुद्दीन उसके स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ। इसका उल्लेख इससे पूर्व हो चुका है, किन्तु मै थोडा-सा भूल गया था। वह इस प्रकार है कि एक दिन वह अपने पीर[1] को अन्त पुर मे ले गया। समस्त स्त्रिया अभिवादन हेतु उपस्थित हुई। पीर ने पूछा कि, "इनके अधिकारो मे तुम किस प्रकार सतुलन रखते हो?" सुल्तान गयासुद्दीन ने कहा कि, "इन्हे आज बिदा कर दिया जाय।" दूसरे दिन जिस किसी से भी पूछा गया उसने उत्तर दिया कि, "मै आज रात्रि मे सुल्तान की सेवा मे थी।" यह कहानी प्रसिद्ध है कि जो कोई भी स्त्री गर्भवती होती और वह पुत्र की इच्छा रखती तो उसे दाये पाव के अँगूठे को धो कर पिला दिया जाता था और यदि पुत्री की इच्छा होती तो बाये पाव के अँगूठे को धो कर पिला दिया जाता था और उसकी इच्छा पूरी हो जाती थी।

१ गुरु।

ज़फ़रुल वालेह बे मुज़फ़्फ़र व आलेह

लेखक—अब्दुल्लाह् मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल आसफी, उलुगख़ानी, अलहाजुद्दबीर

(प्रकाशन—लन्दन १९१० ई०)

(१९७) इतिहासकारो के अनुसार मन्दू का पहला सुल्तान महमूद बिन मलिकुश्शर्क खाने जहा मुगीस है। उसके उपरान्त उसका पुत्र गयासुद्दीन बिन महमूद है। उसके पश्चात् नासिरुद्दीन बिन गयासुद्दीन, उसके बाद अलाउद्दीन महमूद बिन नासिरुद्दीन।

ख़लजी कौन थे

कहा जाता है कि तुर्कों के एक नगर का नाम 'खलज' है, और यह भी बताया जाता है कि उसका मूल रूप 'कालज' है और अधिक प्रयोग मे आते-आते खलज हो गया। कालज अफरासियाब[1] के एक पुत्र का भी नाम था। उसने चगेज खा मुगुल की पुत्री से विवाह किया था और फिर उससे पृथक् होने के पश्चात् ३०,००० अश्वारोहियो सहित काबुल मे निवास करने लगा था। चगेज़ खा की मृत्यु के उपरान्त उसने समरकन्द पर अधिकार जमा लिया। वहा उसके तीन पुत्रो का जन्म हुआ। सब से छोटा तूलक खां था। यह वही है जिसने कुन्दुज मे निवास ग्रहण किया और इस्लाम स्वीकार किया। उसके दो पुत्र थे। नसीरुद्दीन तथा फीरोज। वे दोनो उसकी मृत्यु के उपरान्त कुन्दुज से देहली चले आये। उस समय सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन राज्य करता था। कैकुबाद के राज्यकाल मे फीरोज, लोहूर[2] का अमीर था। कैकाऊस के राज्यकाल मे फीरोज ने राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लिया और अपने भाई नसीरुद्दीन को अमरोहा का राज्य प्रदान कर दिया। नसीरुद्दीन के एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम अली शेर बिन नसीरुद्दीन था। अली शेर के यहा मुगीस बिन अली शेर पैदा हुआ और मुगीस के यहा महमूद बिन मुगीस पैदा हुआ। जब होशग वाली[3] हुआ तो महमूद उसका वजीर हुआ। होशग के पुत्र सैफुद्दीन के समय में भी महमूद पूर्व की भाति वजीर रहा। जब महमूद की मृत्यु हो गई तो सैफुद्दीन ने राज्य पर अधिकार जमा लिया। सैफुद्दीन के इतिहास मे इसके कारण की ओर सकेत किया गया है।

शादियाबाद में सोमवार २५ शव्वाल ८३९ हि० (१२ मई १४३६ ई०) को महमूद का सिंहासनारोहण

८४१ हि० (१४३७-३८ ई०) मे महमूद तथा गुजरात के हाकिम अहमद बिन मुहम्मद बिन

१ प्राचीन ईरान का एक पौराणिक बादशाह।
२ लाहौर।
३ प्रान्त का हाकिम।

मुजफ्फर के मध्य मे वह घटना घटी जिसका उसके इतिहास मे इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है। उसने चन्देरी पर आक्रमण किया। वहा शिहाबुद्दीन उपस्थित था। कालपी का हाकिम इस्माईल खा भी उसी समय चन्देरी पहुच गया। वह गुजरात हज के विचार से जा रहा था। वह सधि का कारण बन गया (१९८) और वहा से शिहाबुद्दीन उसके पास चला गया।

खंडवा पर आक्रमण

८४४ हि० (१४४०–४१ ई०) मे महमूद ने खडवा की ओर युद्ध के विचार से प्रस्थान किया। खडवा, राय हरदास की राजधानी थी जहा उसने दृढ अधिकार स्थापित कर लिया था। राय को जब यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने अपनी राजधानी छोड दी। महमूद ने वहा अत्यधिक लूटमार की। वहा से उसने लहरनी की ओर प्रस्थान किया और उस स्थान को लूटने की अनुमति दे दी। वहा से वह खरला की ओर चल दिया। यह राजा बर सिंह देव के प्रभाव का स्थायी स्थान तथा उसकी राजधानी था। वह उस स्थान को छोडकर इसके पास चला आया और उसने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। इस प्रकार उसका राज्य तथा उसके प्राण दोनो ही सुरक्षित रह गये। यदि राय हरदास भी इसी प्रकार आचरण करता तो न उसका राज्य नष्ट होता और न वह शान्ति के आनन्द से वचित होता जो सुरक्षित रहने के उपरान्त ही प्राप्त होता है।

सरकिजा की ओर प्रस्थान

फिर महमूद सरकिजा गया। राय बर सिह देव उसकी सेवा मे था। सयोग से मार्गदर्शक मार्ग भूल गया। तीन दिन उपरान्त मार्गदर्शक ने महमूद को उस पर्वत की ओर पहुचा दिया जिसका नाम साऊ था। उसमे वहशी लोग रहते थे। उनके वे अग, जिनका खुला रखना सभ्यता की दृष्टि से उचित नही, पूर्णत खुले थे। उनकी वार्ता समझ मे न आती थी। वह उन्हे छोडकर आगे बढा। घाटियो तथा पहाडियों मे घूमता हुआ वह एक ऐसे स्थान पर पहुचा जिसे 'कोहपाया' कहा जाता था। वह वहा से उस पर्वत पर पहुचा जिसे 'हिन्दू कर' कहा जाता था। इन स्थानो के निवासी साऊ के निवासियो के समान वहशी थे और बडी निम्न श्रेणी के थे। शरीर के छिपाये जाने वाले अगो को वे एक ऐसे कपडे से छिपाते थे जिसका एक किनारा एक डोरी मे बधा होता था जो नाभि के नीचे के भाग से बधी होती थी और वह कपडा इतना चौडा होता था कि नितब के मध्य भाग को छिपा लेता था और उसका दूसरा किनारा कमर की डोरी से जोड दिया जाता था। पुरुष तथा स्त्री सभी यही धारण करते थे।

खलजी उनमे से जब किसी भाग मे विराजमान होता था तो उन्हे वस्त्र पहनाता था तथा भोजन कराता था और उन्हे सोना-चादी देता था। वे सब इन वस्तुओ से पृथक् थे[1]। फलत वे सब खलजी के मित्र हो गये और वे लोग उन हाथियो द्वारा जो उनके देश मे बहुत बडी सख्या मे पाये जाते थे उसके विश्वास-पात्र हो गये। जब उन लोगो ने यह देखा कि खलजी हाथियो को पाकर प्रसन्न होता है तो उन्होने यह निश्चय कर लिया कि जब कभी भी वे ऐसा हाथी पकडेगे जो खलजी की गजशाला के योग्य होगा तो वे उसे उसके पास अवश्य पहुचा देगे।

सरकिजा राय भोज के अधीन था। जब उसने अपनी प्रजा को रेशमी तथा जरदोजी के वस्त्र धारण किये हुये देखा तो उसने भी खलजी से अपनी आशाये सम्बद्ध कर ली। वह उससे मिला और

१ 'उन्हें ये वस्तुये उपलब्ध न थीं'।

उसे ऐसे हाथी भेट किये जिसे उसने बडा पसन्द किया खलजी ने राजा भोज से हाथी ले लिये और उसे (१९९) सोना तथा वस्त्र प्रदान किये जिन्हे कभी राजा भोज की आखो ने न देखा था। राजा भोज ने यह निश्चय कर लिया कि वह कभी हाथियो के विषय मे अपनी इच्छा को खलजी की इच्छा पर सर्वोपरि न समझेगा। भोज के राय की राजधानी सरकिजा तथा शादियाबाद के मध्य मे २०० कोस की दूरी है।

राणा कुम्भा का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

क्योकि राजा भोज खलजी का विश्वासपात्र था अत राजा भोज ने उससे इस बात की शिकायत कर दी कि रायपुर का राजा राणा कुम्भा उससे युद्ध करता रहता है। इसी कारण खलजी ने राणा कुम्भा को दड देना निश्चय किया। राणा को यह सूचना मिल गई। उसने अपना एक दूत आश्चर्यजनक हाथियो सहित भेजा और खलजी की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और राय भोज के राज मे आक्रमण करना त्याग दिया। खलजी उस समय सरकिजा मे था।

देहली तक आक्रमण

फिर वह वहा से दोली चला गया। दौली होशग के अधिकार मे था जिस पर राय कुम्भा ने अधिकार जमा लिया था। महमूद ने उस पर अधिकार जमा लिया और उसे मन्दू के अधीन कर लिया। वहा से खलजी देहली की ओर गया और वहा विराजमान हुआ। इसका उल्लेख इस इतिहास के दूसरे भाग मे मुहम्मद बिन खिज्र खा के इतिहास मे किया जायगा।

चित्तौड़ पर आक्रमण

८४६ हि० (१४४२–४३ ई०) मे उसने रायपुर का किला विजय किया। तदुपरान्त उसने चित्तौड पर चढाई की और किले के समीप के समस्त स्थानो पर अधिकार जमा लिया। इसी समय उसे सूचना मिली कि राणा कुम्भा मन्दू के आस पास के स्थानो पर आक्रमण कर रहा है। फिर वह उस ओर पलट पडा। मार्ग मे ही उसे यह समाचार प्राप्त हुये कि राजा, खलजी के उन सरदारो द्वारा जो वहा थे, पराजित हो चुका है अत वह बागरा की ओर अग्रसर हुआ। वह स्थान राय के अधीन था। वह वहा पहुचा और उसने उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जिस समय वह वहा था उसे अपने पिता मलिकुश्शर्क खाने जहा मुगीस की मत्यु के समाचार प्राप्त हुये। मलिकुश्शर्क उस समय दसूर मे उसकी विजय के उद्देश्य से पडाव डाले हुये था। यह समाचार पाकर खलजी दसूर की ओर रवाना हो गया। वहा पहुचने के उपरान्त उसने अपने पिता का जनाजा शादियाबाद भेज दिया और दसूर का अवरोध ताज खा के सिपुर्द कर दिया और स्वय चित्तौड वापस चला गया। . . .

करकून की विजय

२६ रजब ८४७ हि० (१९ नवम्बर १४४३ ई०) को वह करकून पहुच गया। यह स्थान होशग के राज्य मे सम्मिलित था और राय फालन ने उसका अपहरण कर लिया था। उसने किले को घेर लिया और उसे अपनी शक्ति से विजय कर लिया। वहा के निवासियों मे से वे, जो वहा उपस्थित थे, तलवार के घाट उतार दिये गये। जिन लोगो की हत्या हुई उनमे से राय का वकील देहरा भी था। राय अपने प्राण बचाकर वहा से निकल गया किन्तु उसकी स्त्रिया अग्नि मे जल कर नष्ट हो गईं। खलजी ने कोट का पुन. निर्माण कराया और उसका नाम मुस्तफाबाद रखा। यह किला उस क्षेत्र मे अत्यन्त दृढता, बलन्दी

तथा शान के लिए प्रसिद्ध था। इस किले को विजय करने के उपरान्त वह जिस किले पर भी पहुचता था उसे वहा के निवासियो से खाली पाता था, कारण कि करकून के निवासियो को उसने जिस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट कराया था उससे भयभीत होकर वे पलायन कर जाते थे। अल्प समय मे किला और नगर के बीच (२००) के २४ स्थानो पर उसने अधिकार जमा लिया।[1]

खाने जहाँ की सहायतार्थ कालपी की ओर प्रस्थान

इसी वर्ष मे जौनपुर के हाकिम महमूद बिन इबराहीम का पत्र प्राप्त हुआ जिसमे उसने उससे कालपी पर अधिकार जमाने की अनुमति चाही थी, कारण कि वहा का हाकिम खाने जहा शरा[2] के क्षेत्र से बाहर निकल चुका था। जो बाते वह शरीअत के विरुद्ध करता था उनमे से एक यह भी थी कि वह मुशरिक[3] स्त्रियो से विवाह करता था। खलजी ने उसकी यह बात स्वीकार कर ली और महमूद बिन इबराहीम ने अपनी शक्ति से कालपी पर अधिकार जमा लिया। खाने जहा चन्देरी पहुचा। चन्देरी मन्दू के अधीन है। वहा पहुच कर उसने जौनपुर के हाकिम के अत्याचार की शिकायत की और इस सबन्ध मे उसने उन सेवाओ का स्मरण दिलाया जो वह होशग के राज्यकाल मे सम्पन्न कर चुका था। खलजी ने उन सेवाओ का स्मरण किया और उन सेवाओ के कारण वह इस बात पर तैयार हो गया कि इस सबन्ध मे जो कुछ उसका आचरण रहा है उसमे वह सशोधन करे; अत वह चन्देरी पहुचा। महमूद जौनपुरी ने भी चन्देरी की ओर प्रस्थान किया और इस विषय पर उसने खलजी से बातचीत की। परामर्श के उपरान्त दोनो ने यह निश्चय किया कि खाने जहा से तोबा[4] कराई जाय। तदनुसार खाने जहा ने तोबा कर ली। फिर खाने जहा कालपी वापस गया और महमूद जौनपुर चला गया।

इसी वर्ष मे शादियाबाद मे दारुश्शफा का निर्माण कराया गया। यह भवन उसके (सुल्तान के) उत्कृष्ट स्मृति-चिह्नों मे है। इसके लिए उसने बहुत सी जमीने वक्फ कर दी और वहा हकीम फज्लुल्लाह को नियुक्त कर दिया। हकीम फजलुल्लाह अपने समय के बहुत बडे गुणवान् व्यक्तियो मे से थे। उनके हाथ को ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त था और उनका मुख बडा भाग्यवान् था।

ब्याना पर आक्रमण

८५१ हि० (१४४७–४८ ई०) मे वह ब्याना जा पहुचा। ब्याना मुहम्मद खा के अधीन था। दोनो मे इस बात पर सधि हो गई कि मुहम्मद खा उसकी अधीनता स्वीकार कर ले और उसके नाम का खुत्बा पढवाये।

गुजरात के सुल्तान से संधि

८५४ हि० (१४५०–५१ ई०) मे खलजी गुजरात के अधीन बारा सीनूल नामक स्थान पर पहुचा। चम्पानीर के हाकिम राय गगदास[5] ने उससे कुतुबुद्दीन बिन मुहम्मद शाह के विरुद्ध सहायता

१ मूल ग्रन्थ मे यह वाक्य स्पष्ट नही है।
२ इस्लाम के नियम।
३ एक ईश्वर के अतिरिक्त कई ईश्वरों की सत्ता पर विश्वास रखना।
४ घृणित अथवा निद्य कर्म पुन. न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।
५ इसे 'गुँग दास' भी पढा जा सकता है।

की याचना की थी। ८५५ हि० (१४५१–५२ ई०) मे खलजी तथा कुतुबुद्दीन अली मे इस बात पर सधि हो गई कि वे ईश्वर के शत्रुओ के विरुद्ध युद्ध मे एक दूसरे का साथ देगे। इस बात से इस्लाम को बडी शक्ति प्राप्त हो गई। उसके राज्यकाल के इतिहास मे इस घटना का उल्लेख किया जा चुका है। ऐसी सधि की क्या प्रशसा की जा सकती है जो उचित युद्ध के सबन्ध मे की जाय।

हारूनी इत्यादि पर आक्रमण

८५८ हि० (१४५४ ई०) मे वह हारूनी, कतवास, देव सतीर तथा मेहतूनी के नगरो मे युद्ध के लिए पहुचा। उसका पुत्र गयासुद्दीन देहरवारा तथा उससे सबन्धित स्थानो पर युद्ध करने के लिए गया। क्योकि प्रत्येक स्थान के हाकिम अपने-अपने स्थान की रक्षा मे व्यस्त थे, अत वे किसी अन्य को सहायता न पहुचा सके, फलत उस ओर के स्थानो मे लूट मार प्रारम्भ हो गई और गाजियो[1] के पास लूट की धन-सपत्ति इतनी अधिक सख्या मे एकत्र हो गई कि वे सब धन-धान्य-सपन्न हो गये।

रणथम्भोर के आसपास के स्थानो तथा अजमेर की विजय

तदुपरान्त महमूद ने रणथम्भोर की ओर प्रस्थान किया और किले के अतिरिक्त उसने समस्त (२०१) स्थानो पर अधिकार जमा लिया। फिर वह अजमेर की ओर मुड गया और उसे अपने अधिकार मे कर लिया। अजमेर का राज्य उसने अपने पुत्र आजम हुमायू को प्रदान कर दिया और उसे अपने स्थान पर नियुक्त कर दिया। उसके राज्य मे रणथम्भोर की विलायत एव उससे सबन्धित स्थानो को मिला दिया और अपनी राजधानी को लौट आया।

दक्षिण की ओर प्रस्थान

इसी वर्ष मे महमूद दकिन की विलायत के मुनवर नामक स्थान पर जा पहुचा। वह वहा जलाल खा, सिकन्दर खा, मुगुल सरदारो तथा राय सतूदास[2] की प्रार्थना पर गया था। ये लोग एक स्थान पर एकत्र हुए और दकिन को विजय करने का उन्होने निश्चय कर लिया। तदुपरान्त उन्होने अपनी स्त्रियो के लिए एक सुरक्षित स्थान के प्रश्न पर गौर किया। सैफुलमुल्क ने उनकी स्त्रियो की रक्षा का आदेश दिया और उन्हे होशगाबाद पहुचा दिया। इस घटना का उल्लेख गुजरात के सुल्तान महमूद के हाल मे किया जा चुका है।

बकलाना के राय को सहायता

इसी वर्ष मे आसीर का हाकिम मुबारक खा बकलाना के हाकिम राय मानू[3] के राज्य मे प्रविष्ट हो गया। राय ने खलजी के पास सदेश भेजा और उससे आसीर के हाकिम के विरुद्ध सहायता मागी। खलजी ने अपनी ओर से सैफुलमुल्क तथा इकबाल खा को भेजा। इसी बीच मे राजा भानू के हृदय मे यह बात आई कि वह स्वय खलजी से भेट करे और वह इस उद्देश्य से चल खडा हुआ। मुबारक खा को

१ इस्लाम के लिये युद्ध करने वालों।
२ 'सिवदास' अथवा 'शिवदास' हो सकता है।
३ सम्भवत 'राय भानु'।

इसकी सूचना मिल गई। वह मार्ग मे एक दृढ स्थान के ऊपर था। वहा से वह हटा नही। राजा ने खलजी के पास यह सदेश भेजा कि "आप मुझे उसके (मुबारक खा के) पजे से मुक्ति दिलाये" और वह स्वय अपने स्थान पर जमा बैठा रहा। यहा तक कि खलजी ने उसकी सहायतार्थ अपने पुत्र गयासुद्दीन को भेज दिया। जब वह ताप्ती नदी पर पहुचा तो मुबारक खा आसीर लौट गया। गयासुद्दीन उन स्थानो पर जो आसीर की विलायत से मिले हुए थे उस ढालू पहाडी तक जो अन्तूर के नाम से प्रसिद्ध है आक्रमण करता रहा। यह स्थान दकिन के राज्य के क्षेत्र मे है और उस पर एक दृढ किला है जो देवगीर (देवगिरि) से एक दिन की दूरी पर स्थित है। देवगीर (देवगिरि) दौलताबाद के नाम से प्रसिद्ध है।

फिर उसने अपने किसी सरदार को सुनकीर के राय के स्वागतार्थ भेजा। सुनकीर उस समय और अब भी बुरहानपुर के अधीन है। वह इस प्रकार जीतापुर मे था जो उसके राज्य का क्षेत्र नही है और उस सवार के लिए, जो सुनकीर से चले, एक दिन की दूरी पर है। जब राय तथा गयासुद्दीन मिले तो गयासुद्दीन ने अपने पिता के विषय मे यह बताया कि, "वह चित्तौड मे है और उस क्षेत्र मे उसने एक ऐसे ग्राम का निर्माण कराया है जिसकी चहारदीवारी भी बनवा दी गई है। उसका नाम उसने खलजीपुर रक्खा है। वहा से मुझे उसने यह लिखा है कि मै आपको आसीर के हाकिम के हाथ मे न फँसने दू। आप उसके हाथो से मुक्त हो गये है। चित्तौड आपसे बहुत दूर है अत आप अपने शरण के स्थान को लौट जाय।" तदनुसार राय वापस चला गया। गयासुद्दीन भी अपनी राजधानी को लौट गया। ये दोनो थालनीर मे (२०२) मिले थे किन्तु महमूद खलजीपुर मे रहा, यहा तक कि राणा कुम्भा ने उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली।

जानागढ की विजय

८५९ हि० (१४५४-५५ ई०) मे गयासुद्दीन बिन महमूद खलजी ने जानागढ को विजय कर लिया। यह राणा कुम्भा का सबसे अधिक दृढ किला था और इसी कारण वह विपत्ति काल मे वहा जाकर निवास किया करता था। उसकी समस्त धन-सपत्ति सर्वदा वही रहती थी। महमूद उस समय दसूर मे था। विजय इस प्रकार हुई कि जब वह उस किले पर पहुचा तो किले की सेना उससे युद्ध करने के लिए बाहर निकली और घोर युद्ध होने लगा। उनमे से कोई भी अपने केन्द्रीय स्थान से पृथक् नही हो रहा था। जब पूर्ण रूप से रात्रि का अधकार व्यापक हो गया, और वायुमण्डल जो पूर्व ही से घोडो के खुरो की उडाई हुई धूल के कारण अधकारमय बना था, तो इन दोनो अधकारो ने काले हृदय वाले अत्याचारियो की आखो को भली भाति बन्द कर दिया। कठोर युद्ध की अधिकता से वे अत्याचारी पीठ फेर कर भाग खडे हुए और किले की ओर जाने लगे किन्तु उसका मार्ग नही मिल रहा था। जब किसी न किसी प्रकार उन्हे द्वार मिला तो वे उसमे एक साथ घुसने लगे। सरदार तथा सेवक सभी की स्थिति इस विषय मे एक समान थी। अचानक उनके पीछे सैफुल्लह भी पहुच गया। वह न उन पर दया करता था और न किसी को जीवित छोड रहा था। मुसलमानो ने तत्काल किले पर अधिकार जमा लिया। शत्रुओ की स्त्रियों ने प्रथानुसार जौहर की अग्नि को प्रज्वलित करवाया और वे सब उसमे कूद पड़ी। पुरुषों में केवल वही लोग बच गये जो बडे ही वृद्ध थे। यह बहुत बडी विजय थी।

सजन्द की विजय

इसी वर्ष इकबाल खा खलजी ने सजन्द नामक किला विजय कर लिया। इसी वर्ष मे खाने

आजम ताज खा झैन[1] की ओर युद्ध हेतु रवाना हुआ। सेना मे लूट के माल का बाहुल्य हो गया। फिर वहा गयासुद्दीन तथा इकबाल खा एकत्र हुए और सब सुल्तान महमूद की ओर चल दिये जो उस समय दसूर मे था।

तोदाभीम पर आक्रमण

उसने उन सबको लेकर तोदाभीम पर आक्रमण किया। यह ब्यास नदी पर बडा ही दृढ किला है और उसे उन्होने अपनी शक्ति से विजय कर लिया। इससे जो स्थान समीप है उदाहरणार्थ खादूनी मेवाड इत्यादि, उनके अधिकाश मनुष्य कुछ न कुछ महत्त्व रखते है और वहा इतनी खाने है कि जिन्हे कभी आखो ने नही देखा। इसी अधिकता के कारण यह कहा गया है कि किले मे जो धन-सपत्ति है वह कारून[2] की धन-सपत्ति का शेष भाग है।

अजमेर की ओर प्रस्थान

जब वह इस किले मे था तो अजमेर के बहुत से सरदार उसके पास आये और उससे शरीअत[3] की सहायता के लिए निवेदन किया कारण कि वह बडी ही शक्तिहीन हो गई थी और उसे झुका दिया गया था। उन्होने इसका विस्तार से उल्लेख किया। इस पर वह अजमेर की ओर चल खडा हुआ।

राय चीता की सहायतार्थ प्रस्थान

मार्ग मे उसे बादापुर के किले का हाकिम राय चीता मिला। उसने राणा कुम्भा की शिकायत की। उसने (खलजी ने) कहा कि, "मै इस विषय मे कोई शिकायत नही सुन सकता जब तक कि तुम मुसलमान न हो जाओ।" वह मुसलमान हो गया। तदुपरान्त उसने (खलजी ने) उस पर कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसकी सहायतार्थ ख़लजी राय चीता के साथ बादापुर गया। राणा ने उसे अपने (२०३) अधिकार मे कर लिया था। ख़लजी ने उसे उससे वापस ले लिया और राय चीता को दे दिया। तदुपरान्त उसने एक दरबार किया उसमे राय चीता को बुलवाया और उसे खिलअत, तलवार, पताका, पेटी, घोडे, हाथी तथा नकद धन देकर चीता खा की उपाधि प्रदान की। जो स्थान उसकी सीमा से मिले हुए थे उन्हे उसने उसी के राज्य मे मिला दिया। यह घटना ८६० हि० (१४५५–५६ ई०) मे घटी।

अजमेर की विजय

फिर वह वहा से अजमेर की ओर इस आशय से रवाना हुआ कि वह शरीअत की सहायता करे। वहा के राजा राय गजाधर ने उसका मुकाबला किया किन्तु तलवार ने निर्णय कर दिया और वह पराजित होकर अजमेर की ओर लौट गया। वह निरन्तर दूसरे तीसरे चौथे दिन युद्ध के लिए बाहर निकलता और युद्ध करके फिर अजमेर की ओर भाग जाता। ५वे दिन वह युद्ध के लिए बाहर निकला किन्तु फिर वापस नही गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया। ख़लजी ने किला विजय कर लिया और ख़्वाजा नेमतुल्लाह को वहा का हाकिम नियुक्त कर दिया। उसने उसे सैफ ख़ा की उपाधि प्रदान की।

१ झायन।
२ एक बहुत बडा धनी जो मूसा पैग़म्बर के दादा का पुत्र बताया जाता है।
३ इस्लाम के नियमो।

मन्दलगढ़ की ओर प्रस्थान

वहा से खलजी मन्दलगढ पहुचा। मन्दलगढ राणा कुम्भा के अधीन है। राणा कुम्भा वहा उपस्थित भी था किन्तु वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हो जाने के कारण वह शादियाबाद लौट गया। हिन्दुस्तान मे वर्षा ऋतु ४ मास तक रहती है।

मेवाड़ तथा मदलगढ की विजय

८६१ हि० (१४५६–५७ ई०) मे उसने मेवाड तथा उसके अधीन एक स्थान को विजय कर लिया। तदुपरान्त उसने मन्दलगढ पर चढाई की और नगर को अपनी शक्ति से विजय कर लिया। इसके पश्चात् उसने किले के निवासियो को शरण प्रदान करके सधि कर ली और किला अपने अधिकार मे कर लिया। यह सब ८६१ हि० (१४५६–५७ ई०) मे हुआ।

परन्दी के किले की विजय

८६२ हि० (१४५७–५८ ई०) मे आजम हुमायू बिन महमूद खलजी ने परन्दी का किला विजय कर लिया।

कुम्फरनीर के किले पर आक्रमण तथा वहा से वापसी

८६३ हि० (१४५८–५९ ई०) मे वह कुम्फरनीर की ओर चल खडा हुआ। जब वह पर्वत के आचल मे जो वहा से ७ कोस की दूरी पर है पहुचा तो उसे अनुभव हुआ कि वहा तक पहुचना कठिन है, कारण कि वह भाग इतने कठोर पत्थर का था कि उसमे खूटा तक नही गाडा जा सकता था। इसके अतिरिक्त वहा पहुचने का कोई अन्य मार्ग न था। पर्वत की ऊचाई के कारण किला ऐसा ज्ञात होता था कि मानो वह बडे ही ऊचे बादल मे हो। उसने इन वस्तुओ का अनुभव करके यह कहा कि, "इस किले को वही व्यक्ति विजय कर सकता है जिसे समय अपनी दुर्घटनाओ से सुरक्षित रक्खे अथवा मृत्यु उसे दीर्घ काल तक भूल जाय या फिर कोई उसे रोकने वाला न हो।" अत उसने किले की विजय का विचार त्याग दिया और वहा से वापिस चला आया।

मै भी यही कहता हू कि जैसा उसने विचार किया था स्थिति वैसी ही थी कारण कि सुल्तानुल-हिन्द जलालुद्दीन अकबर बादशाह ने गुजरात विजय कर लेने के उपरान्त ९८० हि० (१५७२–७३ ई०) मे एक बहुत बडी सेना उस किले पर भेजी थी जो पर्वत की घाटी मे कई वर्षो तक ठहरी रही किन्तु विजय सधि द्वारा ही हो सकी। एक बात जरूर है कि वह दृढ किले तथा शरण के स्थान, जिन्हे मुसलमान बादशाहो ने (ईश्वर उनके प्रयत्नो का उन्हे बदला दे) अपने प्राण और धन-(२०४) सपत्ति तथा आराम त्याग कर विजय किया था, उसने उनके मुशरिक निवासियों को सौप दिये और उनके द्वारा उन्हे अपनी सेवा मे ले लिया।

दकिन (दक्षिण) पर आक्रमण

८६६ हि० (१४६१–६२ ई०) मे उसने दकिन को विजय करने का सकल्प किया और इस उद्देश्य से उसने नर्मदा नदी पर शिविर लगा दिये। उस समय उसके पास सैयिद जलालुद्दीन फरियाद लेकर पहुचा। सैयिद जलालुद्दीन आसीर के हाकिम के पदाधिकारियो में सम्मिलित था। किसी कारण से उसके भाई सैयिद कमालुद्दीन की हत्या कर दी गई थी। सैयिद जलालुद्दीन वहा से भागकर खळजी के पास पहुचा

और अपने भाई के खून का बदला लेने की प्रार्थना की। अब खलजी को आसीर पर आक्रमण करने का मार्ग मिल गया और वह वहा पहुच गया। इस घटना का उल्लेख आदिल खा के इतिहास मे लिखा गया है। फिर खलजी दकिन की ओर चल खडा हुआ किन्तु ऐसा सयोग हुआ कि वह अकारण अपनी राजधानी मे लौट गया। गुजरात के हाकिम महमूद के इतिहास मे इसका उल्लेख किया गया है।

ख़लीफा मुस्तन्जिद बिल्लाह का खिलअत

८७० हि० (१४६५-६६ ई०) मे शरफुलमुल्क हाजिब, खलीफा मुस्तन्जिद बिल्लाह यूसुफ इब्न मुहम्मद अब्बासी, जोकि मिस्र के ख़लीफा थे, की ओर से खिलाफत का ख़िलअत लेकर आया। ख़लजी ने शरफुलमुल्क का बडे समारोह के साथ स्वागत किया और उसके स्वागतार्थ अपने बहुत से कर्मचारियो को भेजा। उसने खिलअत धारण किया और खुत्बे मे अपने नाम के साथ खलीफा का नाम भी सम्मिलित कर लिया।[1]

स्वप्न

खिलअत पहनने के थोडे दिन उपरान्त उसने कहा कि, "मैंने स्वप्न मे देखा है कि मै एक बडी सेना के साथ सवार होकर कही जा रहा हू और ख़िलअत पहने हुए हू। मेरे एक ओर शरफुलमुल्क है। उसने मुझसे कहा कि पैदल चलो, तो मै घोडे से उतर पडा और पैदल चलने लगा। अचानक एक चितकबरा घोडा आकाश से मेरे लिए उतरा और मुझसे शरफुलमुल्क ने कहा कि, "इस पर सवार हो जाओ तो मै उस पर सवार हो गया और फिर ऐसा ज्ञात हुआ कि मानो मै अचानक देहली द्वार पर पहुच गया। मैंने उसमे प्रविष्ट होना निश्चय किया। द्वारपाल ने मुझे रोका तो मैंने पलट जाना निश्चय किया। तदुपरान्त एक अरब निवासी प्रकट हुआ जिसने मुझसे यह कहा कि, 'हे बडे सरदार तुम घुस जाओ।' मै प्रविष्ट हो गया और मेरे पीछे शरफुलमुल्क आ गया। वहा मुझे एक चबूतरा दृष्टिगत हुआ, जिस पर एक बडा सिहासन रक्खा हुआ था। उस पर अरबो का एक समूह आसीन था जो काली चादरे पहने हुए थे। तदुपरान्त मैंने अपनी खिलअत की ओर देखा तो मैंने उसे उन लोगो की चादरो के रग का पाया। मै फिर एक अरब की ओर बढा और उससे मैंने पूछा कि, 'ये कौन लोग हे ?' उसने मुझे उत्तर दिया कि, 'ये अब्बासी खलीफा हे।' मैंने उससे पूछा कि, 'मै किसे अभिवादन करू ?' उसने अपने हाथ से सकेत किया कि, 'यह रशीद[2] है और यह मसूर[3] है। इन दोनो को अभिवादन करो', मैंने अभिवादन किया। फिर मैंने ऐसा सुना कि कोई व्यक्ति उस समूह मे से मेरे विषय मे पूछ रहा है कि, 'यह कौन है ?' उसने उसे उत्तर दिया कि, 'यह हमारा मित्र महमूद शाह है।' मेरे हृदय मे आया कि मै रशीद से उन बातो के

१ एक प्रकार से ख़लीफ़ा की अधीनता स्वीकार कर ली।

२ हारुनुर्रशीद, जो अलफ़ लीला की प्रसिद्ध कहानियो का नायक है, वास्तव मे एक बडा प्रतापी अब्बासी ख़लीफ़ा हुआ है। वह अपने बडे भाई के उपरान्त बग़दाद मे ७८६ ई० मे सिहासनारुढ हुआ। उसने २३ वर्ष तक राज्य किया और उसकी मृत्यु ख़ुरासान मे शनिवार २४ मार्च ८०६ ई० को हुई।

३ 'अब्दुल्लाह' अल मामून हारूनर्रशीद का दूसरा पुत्र था और अपने पिता के समान वह भी बड़ा प्रतापी अब्बासी ख़लीफ़ा हुआ है। वह ६ अक्तूबर ८१३ ई० को बग़दाद मे ख़लीफ़ा घोषित हुआ। उसी दिन उसके बड़े भाई तथा हारूनुर्रशीद के उत्तराधिकारी अल-अमीन की हत्या हुई। उसके राज्यकाल मे साहित्य एव सस्कृति को विशेष प्रोत्साहन प्रदान हुआ। उसकी मृत्यु १८ अगस्त ८३३ ई० को हुई।

विषय मे पूछू जो उसके विषय मे मुझ तक पहुची है। उसके दस्तरख्वान पर उसका काजी अबू यूसुफ[१] भी था। रशीद ने उसे अपने हाथ से किसी पीने वाली वस्तु का एक चमचा दिया। अचानक एक धमाका हुआ जिससे मै जाग उठा। जब स्वप्न का अर्थ बताने वालो से उसका अर्थ पूछा गया तो उन्होने उत्तर दिया कि, 'ये सब परीशान ख्यालात है। हम इनका अर्थ नही जानते।"

लोहियाना की विजय

इसी वर्ष मे उसके एक सरदार मुकर्रब खा ने लोहियाना विजय किया और उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

हरतामिल की विजय

(२०५) इसी वर्ष उसका एक अमीर खवास खा हरतामिल किले पर पहुच गया फिर वहा खलजी भी जा पहुचा। हरतामिल के किले का अधिकारी निराश हो गया और वह इस बात पर उद्यत हो गया कि किले मे आग लगाकर स्वय वहा से भाग खडा हो। खलजी ने उस पर अधिकार जमा लिया और उसे आसीर के अधीन कर दिया।

बहमनी राज्य से सधि

८७१ हि० (१४६६–६७ ई०) मे खलजी तथा दकिन के सुल्तान से इस बात पर सधि हो गई कि, "खलजी के पास वह भूभाग रहेगा जो उसके राज्य के समीप है। केवल चपूर तथा उस क्षेत्र से सबन्धित स्थान उसमे सम्मिलित न होगे। बहमनी की ओर से हाजिब[२] के पद पर काजी शेख रहेगा।" काजी शेख खलजी की ओर से प्रतिज्ञापत्र लेकर गया और उसके साथ खलजी का हाजिब शरफुलमुल्क भी था जो वहा से बहमनी का प्रतिज्ञा-पत्र लेकर वापस आया।

राणा कुम्भा पर आक्रमण

इसी वर्ष मे खलजी कुम्फरनीर[३] पहुचा। राणा कुम्फा[४] भी वहा उपस्थित था। वही इकबाल खा का पत्र लेकर एक दूत पहुचा। इकबाल खा खलजीपुर का अमीर था। उस पत्र मे यह समाचार पहुचाये गये थे कि चित्तौड सेना से रिक्त हो गया है। खलजी ने अपने अमीरो मे से एक के बाद एक को खलजीपुर भेज दिया ताकि वे सब वहा एकत्र हो जाय और राणा कुम्फा (कुम्भा) को इस बात का पता न चल सके कि चित्तौड मे अचानक लोगो के एकत्र होने का क्या उद्देश्य है? इसी बीच मे राणा को खलजी की सेना के छिन्न-भिन्न होने के समाचार प्राप्त हो गये। राणा को लालच पैदा हुआ और वह युद्ध के लिए निकल खडा हुआ। इन दोनो मे ऐसा भीषण युद्ध हुआ कि खलजी को इससे पूर्व कभी ऐसा अवसर न प्राप्त हुआ था,

१ इमाम अबू यूसुफ़ बिन हबीब अल कूफ़ी बग़दाद का बड़ा प्रसिद्ध काज़ी हुआ है। वह इमाम अबू हनीफ़ा का शिष्य था, अबू हनीफ़ा के सिद्धान्तों को काज़ी अबू यूसुफ़ द्वारा विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उसका जन्म ७३१ ई० मे तथा मृत्यु ७९८ ई० मे हुई।

२ हाजिब दरबार में सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य में खड़े होते थे। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब द्वारा ही सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत होते थे।

३ 'कुम्भलमीर' अथवा 'कुम्भलनीर'।

४ राणा कुम्भा।

किन्तु ईश्वर ने खलजी की सहायता की ओर राणा भ।ग कर चित्तोड पहुच गणा। जब राना वहा पहुच गया तो खलजी ने अपने विचार त्याग दिये।

अमरैली की विजय

इसी वर्ष मे सिर खा (तुर्की मे सिर, सिह को कहते है), जो खलजी का एक अमीर था, अमरैली के किले को विजय कर लिया और उसके हाकिम राय चीता की हत्या कर दी।

शेख नज्मुद्दीन कुबरा का खिर्का प्राप्त होना

इसी वर्ष जिलहिज्जा मास मे मौलाना एमाद शेखुल इस्लाम, मौलाना शेख नज्मुद्दीन कुबरा[1] का खिर्का[2] लेकर खलजी के पास आया। खलजी ने उसे बडे आदरपूर्वक स्वीकार किया और उसके साथ अपना ऐसा व्यवहार रखा ताकि उस खिर्के से सबन्धित आशीर्वाद प्राप्त हो सके। उस खिलअत के कारण उसे इस लोक तथा परलोक दोनो के लाभ प्राप्त हुए।

तातारियों का उत्पात

तातारियो के उत्पात मे शेख ख्वारज्म मे मौजूद थे। उन्होने अपने सहचरो मे से उन लोगो को बुलवाया जो बडे सिद्ध पुरुष समझे जाते थे उदाहरणार्थ शेख सादुद्दीन हमवी, शेख रज़ीउद्दीन अली, लाला इत्यादि। उन्होने उनसे कहा कि, "मै ऐसी अग्नि देख रहा हू जो पूर्व से प्रकट हो रही है और उसकी लपट पश्चिम को अपने लपेट मे ले रही है, अत तुम सब लोग अपने परिवार के पास चले जाओ।" शेख़ ने तातारियो के तूफान के पूर्व यह बात कही थी। उन लोगो ने शेख़ से प्रार्थना की कि वे ईश्वर से प्रार्थना करे कि इस्लाम के प्रदेशो पर जो विपत्ति आने वाली है उसका निराकरण हो जाय। शेख़ ने उत्तर दिया (२०६) कि, "भाग्य का अटल निर्णय प्रार्थना द्वारा परिवर्तित नही हो सकता।" उन लोगो ने तदुपरान्त शरण के स्थान को जाने के लिए अपनी आवश्यकताये प्रस्तुत की और यह भी कहा कि "आप भी ख्वारज़्म से खुरासान तक हमारा साथ दे।" इसके उत्तर मे शेख ने कहा कि, "मुझे यहा से बाहर जाने की अनुमति नही है। मेरे लिए शहीद हो जाने का आदेश हो चुका है। अत तुम सब जाने का सकल्प करो। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

जब तातारियो ने आक्रमण किया और वे लोग ख्वारज्म पहुचे तो शेख ने अपने शेष साथियों से कहा कि, "ईश्वर के नाम पर कटिबद्ध हो जाओ। हम ईश्वर के मार्ग मे युद्ध करेगे।" फिर वे स्वय चले गये और खिर्का पहन लिया और कमर कसी। खिर्के मे एक जेब थी। उसमे उन्होने पत्थर भर लिये और अपने हाथ मे एक शस्त्र ले लिया तथा घर के प्रागण मे आ गये और तातारियो के मुख पर पत्थर मारने लगे, यहा तक कि उनका खिर्का पत्थरो से रिक्त हो गया। तातारियो के पास बाण थे जिनकी वे उन पर वर्षा कर रहे थे। अत मे उनका एक बाण शेख़ के शुभ सीने मे घुस गया। शेख़ ने उसे अपने हाथ से खीच कर फेक दिया और शहीद होकर गिर पडे। ईश्वर उनके सम्मान मे वृद्धि करे। यह घटना ६१८ हि० (१२२१ ई०) मे घटी।

१ शेख़ नज्मुद्दीन कुबरा बड़े प्रसिद्ध सन्त हुये हैं। जब चगेज़ खा ने ख्वारज़्म पर १२२१ ई० मे आक्रमण किया तो तातारियो ने उनकी हत्या कर दी।

२ चीवर।

इस दुर्घटना का, जो इतनी बढ गई थी और अत्याचार सीमा से अधिक हो गया था तथा जिसने लोगो को बहरा और अधा बना दिया था, एक कारण यह है जिसका उल्लेख मैंने अपने इतिहास 'फवतिहुल इकबाल व फवाएहुल इन्तेकाल' मे किया है। इस इतिहास का सकलन मैंने अपने आश्रयदाता जमालुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद उलुग खा के सकेत पर किया। (ईश्वर उनकी कब्र को पवित्र करे।)

खरेला के राय के पुत्र से ताज खा का युद्ध

८७२ हि० (१४६७–६८ ई०) मे यह घटना घटी कि महमूदपुर के आमिल ने, जो वहा खलजी की ओर से था, जो कुछ वसूल किया था, उसे दकिन के हाकिम के पास भेज दिया। खलजी के जो हाथी उसके पास थे उन्हे उसने खरेला के राय के पुत्र के पास भेज दिया। इसकी सूचना महमूद खलजी के पुत्र ताज खा को प्राप्त हुई। रात्रि प्रारम्भ होते ही वह बडी तीव्र गति से राय के पुत्र की ओर रवाना हो गया। वहा से वह ६० कोस पर था। अभी सूर्य उदय भी न हुआ था कि वह नगर के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गया। इसकी सूचना राय के पुत्र को प्राप्त हुई। वह उससे युद्ध करने के लिए बाहर निकला। बडा घोर युद्ध हुआ। तदुपरान्त राय का पुत्र रणक्षेत्र से भाग कर उस समूह की ओर चल दिया जिसे भील कहते हैं। ताज खा ने अपने पिता के हाथी वापस ले लिये और राय के जिन हाथियो को उसने प्राप्त किया था उन्हे भी उन हाथियो मे सम्मिलित कर दिया। भीलो के नेता को उसने इस आशय का एक पत्र प्रेषित किया कि वह राय को बन्दी बनाकर भेज दे। इस कार्य हेतु मलिकुल उमरा दाऊद को रवाना किया। वह अत मे कोहपाया पहुचा। राय के पास इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह गया कि वह उसका आदेश माने अत उसने राय के पुत्र को मलिकुल उमरा के पास भेज दिया।

सुल्तान अबू सईद के दूत का आगमन

(२०७) इसी वर्ष मे, जब कि खलजी सुन्नारगाव मे था, उसके पास खाजा कमालुद्दीन अस्तराबादी खुरासान के सुल्तान अबी सईद बहादुर खा मुगूली[1] की ओर से हाजिब के रूप में आया था। खलजी ने उसका बडा ही आदर सम्मान किया। जब उसने उसे विदा किया तो अपनी ओर से अलाउद्दीन जादे को हाजिब के रूप मे भेज दिया।

कछवारा मे किले का निर्माण

८७३ हि० (१४६८–६९ ई०) मे महमूद खलजी के पुत्र गयासुद्दीन ने कछवारा मे एक किले का निर्माण कराया और उसका नाम जमालपुर रखा।

करेहरा पर आक्रमण

इसी वर्ष महमूद चन्देरी पहुचा और उसने दो वीर अमीरो सिर खा तथा फतह खा को करेहरा के किले पर भेजा। यह किला बडा भव्य तथा विशाल था। ये दोनो सर्व प्रथम नगर के समीप उतरे और

१ सुल्तान अबू सईद मीर्ज़ा बिन (पुत्र) मुहम्मद मीर्ज़ा बिन मीरान शाह बिन अमीर तिमूर का जन्म १४२७ ई० में हुआ था। वह १४५७ ई० मे समरकन्द मे सिहासनारूढ हुआ। बाबर सुल्तान बिन बायसकर मीर्ज़ा की जो खुरासान का सुल्तान था १४५७ ई० मे मृत्यु हो गई। सुल्तान अबू सईद ने उसकी मृत्यु के उपरान्त खुरासान पर भी अधिकार जमा लिया और अपने राज्य का क्षेत्र अत्यधिक बढा लिया। १८ वर्ष के राज्य के उपरान्त ८ फ़रवरी १४६९ ई० को उसकी हत्या कर दी गई।

उसे घेर कर नगर निवासियो को युद्ध द्वारा उन्होने परेशान कर दिया। एक दिन उन लोगो ने नगर के कोट पर बडा तेज आक्रमण किया और उसके पूर्णत निकट पहुच गये, यहा तक कि उन्हे इस बात का अवसर मिल गया कि वे उसके एक भाग मे आग लगा दे। नगर वालो को इस बात की सूचना न थी। हवा अग्नि को एक घर से दूसरे घर तक पहुचाती रही, यहा तक कि ३० हजार घरो मे अग्नि की लपट पहुच गई और अन्त मे नगर को विजय कर लिया गया। नगर मे जो लोग बन्दी बनाये गये उनकी सख्या ७ हजार थी। जिस रात्रि मे आग लगाई गई उसी रात्रि मे खलजी को सूचना मिल गई। वह चन्देरी की ओर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ। चन्देरी करेहरा से ८० फरसख की दूरी पर है। वहा वह प्रात काल किले को विजय करने के उद्देश्य से पहुच गया और शक्ति तथा अपने बल से उसे उसने विजय कर लिया। इससे पूर्व उसे किसी ने विजय नही किया था। उसने उस किले के हाकिम दरिया को उसके परिवार तथा सबन्धियो सहित बन्दी बना लिया और उसी के साथ उसके ७ हजार आदमी भी बन्दी बना लिये गये। जिन लोगो की हत्या कराई गई उनकी सख्या ४ हजार तक पहुच गई। खलजी ने उसकी तथा उसके पुत्रो की खाल खिचवाने तथा उन्हे शूली देने का आदेश दे दिया। उसके आदमियो के सबन्ध मे यह आदेश दिया कि उन्हे हाथियो के समक्ष डाल दिया जाय। दण्ड की दृष्टि से यह दिन बडा ही कठोर, महत्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध था ओर काफिरो के लिए बडे ही कष्ट तथा परेशानी का था।

आमोदा के किले की विजय

इसी वर्ष मे सिर खा ने आमोदा का किला विजय किया। इस युद्ध मे ४ हजार लोग मारे गये और ८ हजार लोग बन्दी बनाये गये।

सुल्तान बहलोल द्वारा सहायता की प्रार्थना

इसी वर्ष मे जब कि खलजी फतहाबाद मे था, उसके पास शेखजादा मुहम्मद करमुली,[1] कुतुब खा लोदी, राय कपूरचन्द बिन राय गिरी सिह बिन राय दुनगरसी ग्वालियर का हाकिम देहली के सुल्तान बहलोल का एक पत्र लेकर पहुचे। इस पत्र मे उससे जोनपुर के सुल्तान, सुल्तान हुसेन के विरुद्ध सहायता मागी गई थी। इस सहायता के बदले मे देहली के राज्य मे से ब्याना का राज्य देने का वचन दिया गया (२०८) था। खलजी ने सहायता का वचन दे दिया और यह कहा कि, "आवश्यकता के समय मै वहा पहुच जाऊगा।" जो लोग पत्र लेकर आये थे वह उसका उत्तर लेकर लौट गये।

सुल्तान की मृत्यु

इस प्रकार खलजी भी शादियाबाद वापस चला गया। उस समय बडी कडी गर्मी पड रही थी। गर्मी की अधिकता से खलजी रुग्ण हो गया और उसका रोग उत्तरोत्तर बढता ही गया। २१ जीकाद ८७३ हि० (२ जून १४६९ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान बडा प्रतापी था। उसकी विजय बडी ही महत्वपूर्ण थी। जिहाद[2] मे वह अत्यधिक व्यस्त रहता था और उसने बहुत से नगरो तथा किलो पर अधिकार प्राप्त कर लिया था। उसने ३४ वर्ष राज्य किया। ईश्वर उसके प्रयत्नो को सफल करे और उससे सतुष्ट रहे तथा उसे स्वर्ग प्रदान करे।

१ 'फ़रमूली'।
२ इस्लाम के लिये युद्ध।

ग़यासुद्दीन मुहम्मद शाह

सुल्तान की विशेषताये

गयासुद्दीन मुहम्मद शाह बिन महमूद शाह खलजी २२ जीकाद ८७३ हि० (३ जून १४६९ ई०) को सिहासनारूढ हुआ। उसकी उत्कृष्ट विशेषताओ मे से एक यह बडी विशेषता है कि उसने अपने पिता के आमिलो मे से किसी को पदच्युत नही किया और जो बाते उसके पिता के राज्यकाल से प्रचलित थी उनमे परिवर्तन नही किया, मानो उसके पिता की मृत्यु ही न हुई थी अर्थात् उसके राज्यकाल का अन्त न हुआ था। इसी कारण उसे लोगो की अत्यधिक शुभकामनाये प्राप्त थी और लोग उसकी बडी प्रशसा करते थे, विशेषकर इस कारण कि उसने अपने भाई ताज खा आजम को उसी प्रदेश मे हाकिम रहने दिया जहा उसे उसके पिता ने नियुक्त किया था। उसने उसे अलाउद्दीन की उपाधि द्वारा सम्मानित किया।

तदुपरान्त उसने अपने वजीरो तथा अमीरो मे से उन लोगो को जो बडे अधिकार-सम्पन्न थे एक विशेष दरबार मे बुलवाया और उनसे पूछा कि "जो चीजे तुम्हे मेरे पिता द्वारा प्राप्त थी उसके सबन्ध मे मेरा पिता तुमसे किस प्रकार व्यवहार करता था ?" उसने उनसे जन साधारण तथा उनकी समस्याओ के विषय मे भी प्रश्न किये। उन लोगो ने उसके प्रश्नो के उत्तर दिये। उनके उत्तरो से गयासुद्दीन के हृदय मे जो बाते आई उनकी दृष्टि मे उसने कुछ चीजो को करने का आदेश दिया और कुछ बातो का निषेध किया।

विलासी जीवन व्यतीत करने का निर्णय

तदुपरान्त उसने कहा कि, "मैने दीर्घ काल तक तलवार बाधी है और सर्वदा उससे युद्ध करता रहा हू। उसे चलाया और शत्रुओ को शुद्ध विष पिलाया, यहा तक कि मैने बहुत से किले विजय कर लिये। जमीनो को वहा के निवासियो से रिक्त करा लिया। युवावस्था की सावधानी ने मेरी सहायता की और मेरे साथ वह बुद्धि भी रही जो मनुष्यो के वस्त्र भी लूट सकती है, किन्तु अब मै वृद्धावस्था के वश मे हो गया हू। इसके साथ केवल विश्राम तथा विलासिता ही उचित है और मै उनसे शीघ्र लाभ प्राप्त करूगा। अब तुम मे से प्रत्येक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि जो जिस दशा मे अथवा जिस स्थान पर था उसी स्थान पर रहे और नवीन परिस्थिति के उत्पन्न होने के अतिरिक्त मुझसे किसी विषय मे वार्ता न करे।" तदुपरान्त उसने हिन्दुस्तान के चारो ओर इस आशय के पत्र भेजे कि सगीतज्ञ तथा नर्तक एव विचित्र कलाओ के ज्ञाता एकत्र किये जाय।

भोग विलास सम्बन्धी तैयारियाँ

उसने इतनी अधिक सख्या मे युवतिया क्रय की कि उनकी संख्या १२ हजार तक पहुच गई। उसने आदेश दिया कि उन्हे विभिन्न कलाओ, व्यवसायो तथा ज्ञान एव सगीत की शिक्षा दी जाय। उसने प्रत्येक समूह को किसी न किसी कला के साथ विशेष रूप से सबन्धित कर दिया। उसने उसमे से एक समूह को महल के पहरे, शस्त्रो की रक्षा तथा चाऊश[1] के कर्तव्यो पर नियुक्त किया। इसी प्रकार

1 चाऊश सेना तथा दरबार की पक्तियाँ ठीक करते थे।

उसने कजा[1], एहतिसाब[2], अजान[3], खुत्बा[4], इमामत[5], वाज[6], निदामत[7], इफ्ता[8], किरअत[9] करना तथा पढाने का कार्य स्त्रियो को सौप दिया। स्त्रियो को जनाने वस्त्र से मर्दाने वस्त्र मे परिवर्तित किया।

स्त्रियो की पृथक् बस्ती तथा बाजार

तदुपरान्त उसने राजधानी मे एक पृथक् बस्ती बसाई जिसमे बाजार भी था, थाना भी था, दारुल कजा[10] भी था, मदरसा, मस्जिद, हम्माम[11], इबादत के स्थान, भट्ठी तथा इसके अतिरिक्त अन्य चीजे भी थी। बाजार मे उसने वह सब वस्तुये एकत्र कर दी जिनकी लोगो को आवश्यकता हो सकती है। प्रत्येक समूह जिस योग्य होता था उन वस्तुओ का उत्तरदायित्व ले लेता था। वे बाजार के कार्यो को सम्पन्न करने के लिए उसी प्रकार व्यस्त हो जाती थी जिस प्रकार नगर के पुरुष उन्हे सम्पन्न करने मे व्यस्त रहते है।

पुरुषो से पृथक् रहना

जब गयासुद्दीन की इच्छानुसार समस्त व्यवस्था पूर्ण रूप से सम्पन्न हो गई तो वह पुरुषो की गोष्ठी से पूर्णत पृथक् हो गया और केवल स्त्रियो के साथ रहने लगा। वह उन बातो मे व्यस्त हो गया जो भोग-विलास के लिए आवश्यक होती है और नेत्रो को आनन्द प्रदान करती है, किन्तु वे लोग ऐसे घर मे थे जहा कोई व्यक्ति यह बात नही जानता कि भविष्य मे वह कल क्या प्राप्त कर सकेगा। उन स्त्रियो मे वह भी थी जो उसके साथ भोजन करने के लिए बैठती थी। वे उसे आयते[12] सुनाती थी जो उन्हे कण्ठस्थ होती थी, या वे कुछ हदीसो[13] की चर्चा करती थी अथवा किस्से कहती थी।

दान-पुण्य

उनमे से कुछ सोने चादी के सिक्को से भरी हुई थैलिया लिए रहती थी और इस बात की प्रतीक्षा

१ काजी का विभाग। काजी न्यायाधीश होते थे जो शरा के अनुसार मुकदमो का निर्णय करते थे।
२ मुहतसिब का कार्य। मुहतसिब इस्लाम के विरुद्ध सम्पूर्ण बातो पर रोक-टोक रखता था। शरा के नियमो के पालन की जाँच उसी के सिपुर्द होती थी। वह स्वय दंड देकर शरा के विरुद्ध बाते रोक सकता था।
३ अज़ान—नमाज के समय की सूचना जो मस्जिद की छत अथवा दूसरे ऊचे स्थान पर खड़े होकर दी जाती है।
४ 'ख़ुत्बा' एक प्रकार का धार्मिक प्रवचन जिसमे अल्लाह, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान तथा समकालीन बादशाह की प्रशसा होती है।
५ इमाम का कार्य। इमाम शब्द का सामान्य रूप से प्रयोग उस व्यक्ति के लिये होता है जो मुसलमानो को नमाज़ पढाता है। मुसलमानो का सबसे बड़ा धार्मिक नेता इमाम कहलाता था।
६ धार्मिक प्रवचन।
७ नदीम का कार्य। नदीम सुल्तान के मुसाहिब होते थे। उनसे आशा की जाती थी कि वे बादशाह को परामर्श किया करेगे किन्तु अधिकाशत वे चाटुकारी ही करते थे।
८ मुफ्ती का कार्य। वह व्यक्ति जो धार्मिक समस्याओ के सम्बन्ध मे व्यवस्था दे।
९ कुरान को उचित स्वर मे पढ़ना।
१० क़ाज़ी का कार्यालय।
११ स्नानागार।
१२ क़ुरान के वाक्य।
१३ मुहम्मद साहब की वाणी का सग्रह।

किया करती थी कि "वह ईश्वर के देनो का स्मरण कर रहा है अथवा उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा है ?" ईश्वर के नाम का उच्चारण तथा ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के अवसर पर वे आदेशानुसार निश्चित सख्या मे विभिन्न मुद्राये निकाल कर उस व्यक्ति को सौप देती थी जिसका यह उत्तर-दायित्व होता था ताकि वह उन्हे फकीरो तथा सहायता के पात्रो को पहुचा दे। यह उस समय होता था जब वह घर के भीतर होता था, किन्तु जब वह घर के बाहर होता था तो इस सेवा हेतु दास नियुक्त थे। वे न्योछावर के धन की थैलिया लिए रहते थे। इसी प्रकार कुछ दासो का यह कर्तव्य था कि वे प्रजा की आवश्यकता उसके समक्ष प्रस्तुत किया करे। इसी प्रकार कुछ दास भी नियुक्त थे जोकि प्रार्थियो के लिए थैलिया लिए रहते थे। इसका कारण यह था कि उसने निश्चय कर लिया था कि जो व्यक्ति भी उससे कुछ मागेगा अथवा प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करेगा तो उसे चाहे वह जो कोई हो थैली मे से हजार तन्के दे दिये जायेगे। इन्ही आदेशो के कारण उसका कोई समय भी दान-पुण्य से खाली न रहता था। दिन रात यही क्रम चलता रहता था।

एबादत तथा राज्य के कार्य

प्रात काल से आधी रात तक वह भोग विलास मे ग्रस्त रहता था। तदुपरान्त वह स्नानागार जाता था और स्नान करता तथा सुगधित वस्तुये मलता था। इसके पश्चात् वह एबादत[१] के स्थान मे चला जाता था और प्रात काल तक ईश्वर की एबादत किया करता था। तदुपरान्त वह उस मस्जिद मे नमाज के लिए जाता था जो उसके दारुल एबादा[२] के समीप थी और वहा उस समय तक नमाज पढने के स्थान पर आसीन रहता था जब तक कि वह इशराक[३] की नमाज से निवृत न हो जाता था। वह मुसल्ले[४] पर बैठा रहता था। फिर वह उस गोष्ठी मे पहुचता था जहा केवल उसके विशेष व्यक्ति उपस्थित होते थे। आवश्यकता ग्रस्त लोग भी हाजिर होते थे। साहेबुल बरीद[५] भी वही उपस्थित रहता था। तदुपरान्त वह भोग-विलास की गोष्ठी मे पहुच जाता था।

रानी खुर्शीद का प्रभुत्व

उसकी पत्नियो मे से रानी खुर्शीद, बकलाना के हाकिम राय भानु की पुत्री थी। यह नाम उसे गयासुद्दीन ने प्रदान किया था। राय खुर्शीद को गयासुद्दीन के दरबार मे इतना अधिक सम्मान प्राप्त हो गया था कि राज्य मे उसके आदेशो का पालन होने लगा था। उसकी दासिया बडे बडे पदों की स्वामी हो गई।

आहूखाना

(२१०) इन सब बातो के बावजूद गयासुद्दीन के पिता के समय के अधिकारी उसकी इच्छानुसार कार्य करते थे और राज्य का शासन सुव्यवस्थित रखते थे। राज्य तथा ससार के समाचार उनके द्वारा

१ ईश्वर की उपासना।
२ एबादत के स्थान।
३ प्रात काल की अनिवार्य नमाज के बाद की नमाज़।
४ वह कपड़ा अथवा चटाई जिसे बिछा कर नमाज पढते हैं।
५ डाक की व्यवस्था करने वालो का मुख्य अधिकारी।

उस तक पहुचते रहते थे। उसके निर्माण कराये प्रसिद्ध तथा भव्य भवनो मे एक आहूखाना था जोकि नालचा से प्रारम्भ होकर उज्जैन तक चला गया था। प्रत्येक ४ फरसख पर एक भवन का निर्माण कराया गया था जो एक एहाते से घिरा हुआ था। उस भवन मे फर्श, बरतन, सामान, भोग-विलास की सामग्री गजशालाये तथा अश्वशालाये, पीने की वस्तुये, फल एव प्रत्येक वस्तु का भण्डार यहा तक कि स्त्रिया, रक्षक और सेवक सभी उपस्थित रहते थे। यह सब इस कारण था कि जिस समय भी गयासुद्दीन कोई वस्तु मागे तो वह उपलब्ध हो सके। उस एहाते मे विभिन्न प्रकार के पशु भी इस उद्देश्य से रहते थे कि यदि वह उनमे से किसी का शिकार करना चाहे तो वे प्राप्य रहे। फलत वह अपनी राजधानी से अपने अन्त पुर सहित जिस भवन मे भी चला जाता था तो वह उनके साथ चौगान[1] खेलता अथवा जिस जानवर का शिकार करना चाहता उसका शिकार करता। तदुपरान्त वह लौट जाता। यदि वह वही विश्राम करना चाहता तो जिस वस्तु की उसे आवश्यकता होती वह उसे तुरन्त प्राप्त हो जाती। उसे समा[2] से बडी रुचि थी।

८७९ हि० (१४३४ ई०) मे वह चम्पानीर के हाकिम रानी तपाई की सहायतार्थ नालचा गया। इसका उल्लेख गुजरात के सुल्तान महमूद के इतिहास मे कर दिया गया है।

गयासुद्दीन के पुत्रो के नाम अलाउद्दीन तथा नासिरुद्दीन थे। रानी खुर्शीद अलाउद्दीन से अधिक प्रेम करती थी और उसे उसके भाई नासिरुद्दीन से श्रेष्ठ समझती थी, यद्यपि दोनो उसी के गर्भ से थे। एक दिन दोनो भाइयो मे झगडा हुआ। रानी खुर्शीद ने अलाउद्दीन का पक्ष लेते हुए नासिरुद्दीन का घर लूट लेने का आदेश दे दिया। नासिरुद्दीन नगर के बाहर निकल गया। उसके पिता की सेना मे से एक समूह उसका सहायक बन गया। उन्हे साथ लेकर उसने नगर पर आक्रमण किया और उसको घेर लिया। गयासुद्दीन वृद्ध हो गया था और वह चल फिर भी न सकता था। अलाउद्दीन ने आक्रमणकारियो की रोक थाम का सकल्प किया और इस बात का प्रयत्न किया कि नगर की रक्षा वह उन लोगो को साथ लेकर करे जो गुजरात निवासी थे तथा उसके साथ हो गये थे, किन्तु नगर वाले नासिरुद्दीन से मिल गये और नासिरुद्दीन नगर मे प्रविष्ट हो गया। अलाउद्दीन वहा से भाग कर अपने पिता के पास पहुच गया किन्तु नासिरुद्दीन ने उसको उसके परिवार सहित बन्दी बना लिया और उसकी हत्या करा दी। वह स्वय सिहासनारूढ हो गया। कहा जाता है कि उसने गयासुद्दीन को विष दे दिया। यह भी कहा जाता है कि वह रुग्ण था और वह उसके सिहासनारूढ होने के पश्चात् ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। तदुपरान्त वह अपनी माता रानी खुर्शीद के पास पहुचा और उसकी कुशलता को इस बात पर अवलम्बित कर दिया कि वह राजकोष से अपना सबन्ध त्याग दे।[3] उसने ऐसा ही किया। गयासुद्दीन ने ३२ वर्ष तथा १७ दिन तक राज्य किया।

नासिरुद्दीन क़ादिर शाह

९०५ हि० (१४९९–१५०० ई०) मे नासिरुद्दीन कादिर शाह सुल्तान गयासुद्दीन के सिहासन का अपहरण करके उस पर आरूढ हो गया। अपने पिता के उन अमीरो को, जो उसके भाई के सहायक थे, अपने क्रोध का निशाना बनाया और उनकी धन सपत्ति को छीन लिया। उन लोगो मे से, जो यहा

१ एक प्रकार का पोलो।
२ सूफ़ियों का सगीत तथा नृत्य।
३ राजकोष लौटा दे।

से निकल कर गुजरात चले गये, अमीर सैयिद बारानहर था जिसकी उपाधि गुजरात मे अली खा हुई। वह बडा ही योग्य तथा सदाचारी था।

अपने पिता के अमीरों की हत्या

(२११) उसके (सुल्तान के) पिता के अमीरो मे जिन लोगो की हत्या की गई उनमे चन्देरी का आमिल सिर खा बिन मुजफ्फर खा था। नासिरुद्दीन ने उसका पीछा किया और उसके पास पहुच कर उसने उससे युद्ध किया और उसकी हत्या कर दी। उसके पिता के अमीरो मे से जो शेष थे उन पर नासिरुद्दीन ने कृतघ्नता का आरोप लगाया और उनको इस बात का अपराधी ठहराया कि उन्होने उसके जीवन-काल ही मे उसकी सहायता करनी त्याग दी थी। इस कारण उन लोगो को हर प्रकार की कठिनाइयो का सामना करना पडा और उन्हे भी सिर खा के साथ मिला दिया गया (कत्ल करा दिया गया)।

आजम हुमायूँ के स्थान पर महमूद खा की नियुक्ति

जब राज्य मे उसे प्रभुत्व प्राप्त हो गया तो उसने अपने पुत्र महमूद खा को अपने चाचा आजम हुमायू के अधीनस्थ स्थानो पर अपनी ओर से नायब नियुक्त कर दिया। उसने अजमेर मे स्थान ग्रहण किया और नासिरुद्दीन के लिए राज्य साफ कर दिया।

आहूखाने का निर्माण

नासिरुद्दीन तदुपरान्त ऐसी बातो मे व्यस्त हो गया जिन्होने उसे पथभ्रष्ट कर दिया। उसने भोग विलास मे तल्लीन रहना प्रारम्भ कर दिया। उसने किले मे एक आहूखाने का निर्माण कराया और उस पर ५ लाख तन्के जो मालवा मे प्रचलित थे व्यय कर दिये। उसके पिता ने जो सपत्ति छोडी थी, उसमे से उसके पास नकद १८ लाख तन्के थे।

अत्याचार का एक उदाहरण

किस प्रकार वह उपकार का बदला अत्याचार से देता था इसका एक उदाहरण यह है कि एक दिन वह अन्त पुर के एक हौज पर नशे से बदमस्त होकर बैठा था। वह उसमे गिर पडा और उसे इस बात की कोई भी सुधबुध न रही। वह डूब कर मृत्यु को प्राप्त होने वाला ही था कि स्त्रियो ने उसकी सहायता की और उसको हौज मे से निकाल लिया। जब वह सावधान हुआ तो उसे इस बात की सूचना हुई। उसने उन स्त्रियो की हत्या करा दी। वह ४ स्त्रिया थी। यह घटना इस हदीस को प्रमाणित करती है 'जो किसी अत्याचारी की सहायता करता है तो ईश्वर उस अत्याचारी को उस पर अधिकार प्रदान कर देता है।'

शिहाबुद्दीन द्वारा विद्रोह

९१६ हि० (१५१०–११ ई०) मे उसके पुत्र शिहाबुद्दीन ने उस पर आक्रमण किया और जन्नताबाद मे स्थान ग्रहण कर लिया। अधिकाश अमीर उसके पिता के अत्याचार के कारण उससे मिल गये। नासिरुद्दीन को इस बात का भय हुआ कि उसके साथ कही वही व्यवहार न हो जो उसके पिता के साथ हुआ, अत वह जन्नताबाद की ओर चल दिया। शिहाबुद्दीन ने उससे युद्ध किया किन्तु नासिरुद्दीन की सेना की सख्या यद्यपि कम थी, तब भी उसे विजय प्राप्त हो गई और उसने उसका पीछा किया तथा उसके समीप जा पहुंचा। वह उसे बन्दी बना लेने वाला ही था कि फिर उसने उसके प्रति दया प्रकट की और

अपने घोडे की लगाम को रोक लिया और शनै शनै बडे सम्मान के साथ उसका पीछा किया यहा तक कि वह उसके राज्य से निकल कर देहली के राज्य मे प्रविष्ट हो गया।

तदुपरान्त नासिरुद्दीन ने उसे लौट आने के लिए प्रेरित किया किन्तु उसने यह बात स्वीकार न की। विवश होकर नासिरुद्दीन अपने राज्य की ओर लौट गया। मार्ग मे वह अपने अमीरो से शिहाबुद्दीन के आचरण के सबध मे वार्तालाप करता रहा। इससे उन अमीरो का उसकी ओर से ख्याल खराब हो गया और उन्होने सगठित होकर उसे विष देना निश्चय कर लिया और उसे विष दे दिया। वह मार्ग मे मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके साथ उसका पुत्र महमूद खा भी था और उसका तीसरा पुत्र भी जिसका (२१२) नाम मुहम्मद था। सेना ने महमूद को सिहासनारूढ करना निश्चय किया और किसी ने भी उसकी आज्ञाकारिता के प्रति विरोध नही प्रकट किया। वे सब उसकी सेवा मे शादियाबाद पहुच गये। नासिरुद्दीन ने ११ वर्ष ४ मास तथा २० दिन तक राज्य किया।

अबुल मुज़फ़्फ़र अलाउद्दीन महमूद शाह

राजसिहासन पर अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन महमूद शाह बिन (पुत्र) कादिर शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) महमूद शाह बिन (पुत्र) मुगीसुद्दीन मलिकुश्शर्क खाने जहा बिन (पुत्र) अली शेर बिन (पुत्र) नसीरुद्दीन बिन (पुत्र) तूलक खा बिन (पुत्र) कालिज खलजी, जो तुर्क बादशाह अफरासियाब से सम्बन्धित था, राजधानी शादियाबाद मे सिहासनारूढ हुआ। उसकी बैअत[1] से किसी ने विरोध नही किया। शिहाबुद्दीन को जैसे ही अपने पिता की मृत्यु का ज्ञान हुआ वह शीघ्रातिशीघ्र मन्दू की ओर चल पडा और वहा महमूद के पूर्व पहुच गया किन्तु किले के अमीर ख्वाजये जहा तबाशी खलजी ने, जिसकी उपाधि मुहाफिज खा थी, किले के द्वार बन्द करा दिये और शिहाबुद्दीन को भीतर प्रविष्ट न होने दिया, अत वह असफल होकर लौट गया और उसी शोक तथा दुख मे आसीर चला गया और वही आजीवन निवास करता रहा। उसकी मृत्यु के उपरान्त महमूद का कोई प्रतिस्पर्धी न रहा। उस समय उसकी अवस्था २० वर्ष की थी।

ख्वाजये जहा का गुजरात की ओर प्रस्थान

९१७ हि० (१५११–१२ ई०) मे ख्वाजये जहा अपने स्वामी मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन को लेकर गुजरात चला गया। उसके जाने का कारण यह था कि महमूद उससे अपने भाई मुहम्मद की हत्या करने के लिए बराबर कहा करता था। वह यह बात स्वीकार न करता था। एक दिन उसने इस प्रकार आग्रह किया कि महमूद को क्रोध आ गया और उसने उसी क्रोध मे म्यान मे रखी हुई तलवार उसके सिर पर मारी। तलवार ने म्यान को काटा, पगडी को काटा और उसका सिर फाड दिया। वह उसी दशा में बाहर आया। हालाकि उसके मुह पर से रक्त बह रहा था। खलजी दास उसके पास एकत्र हो गये और उन्होने किले को घेर लिया फलत महमूद रात ही मे वहा से सारगपुर चला गया। ख्वाजये जहा किले मे प्रविष्ट हो गया और उसने मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन को सिहासनारूढ कर दिया। खलजी दासो ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। खलजी शाहजादो तथा अमीरो ने उसकी बैअत न की और उन सब ने महमूद की बैअत कर ली और किले को घेर लिया। उन्ही मे से अमीर कबीर एमादुद्दीन खुरासानी

१ आज्ञाकारिता की शपथ।

भी था। ख्वाजये जहा को यह समाचार प्राप्त हुए कि "वह उन लोगो से जो किले मे है तथा दासो से पत्रव्यवहार कर रहा है। उसको सब लोग शासन का आधार मानते हैं और उसकी बात पर आचरण करते है।" ख्वाजये जहा के हृदय मे उनकी ओर से इस कारण नाना प्रकार की शकाये उत्पन्न हो गई और वह मुहम्मद को लेकर रात्रि ही मे चाम्पानीर चला गया और सुल्तान मुजफ्फर से मिल कर विचार-विमर्श (२१३) किया। उसने मन्दू के एक भाग का राज्य उसे देने का वचन दे दिया और जब तक ऐसा हो उस समय तक उसने उसे चाम्पानीर का इतना भाग दे दिया जो उसकी आवश्यकता से अधिक था, अत ख्वाजये जहा ने अपने घोडे, हाथी और आदमी उस विलायत[1] मे भेज दिये और वह स्वय तथा नासिरुद्दीन का पुत्र मुहम्मद अकेले चाम्पानीर मे मुजफ्फर के दरबार मे रहे यहा तक कि मुहम्मद और ईरानी हाजिब के नेता मे एक ऐसी घटना घटी जिसका उल्लेख मुजफ्फर के इतिहास मे कर दिया गया है।

मेदिनी राय का प्रभुत्व

मन्दू के अमीरो मे से एक व्यक्ति उससे पत्र-व्यवहार किया करता था। उस घटना से वह बडा लज्जित हुआ और वह पुन लौट कर अपने घर नही गया। ख्वाजये जहा भी उससे वही जाकर मिल गया। मन्दू की ओर से प्रस्थान करते समय वह ईरानी के एहाते से निकल गया था। जब वह मन्दू के भूभाग पर पहुचा तो वह व्यक्ति जो उससे पत्र-व्यवहार किया करता था आ गया। महमूद के हृदय मे अपने मित्रो की ओर से शकाये और सदेह उत्पन्न हो गया। वह रायचन्द पुरबिया से मिल गया और उसके सम्मान मे उसने वृद्धि कर दी। उसे विजारत का पद प्रदान कर दिया तथा मेदिनी राय की उपाधि द्वारा सम्मानित किया। मेदिनी राय ने अपने लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये और अल्प समय ही मे उसने अपने समूह के अत्यधिक व्यक्ति एकत्र कर लिये तथा किले का शासन-प्रबन्ध अपने हाथ मे ले लिया। उसने महमूद को साथ लेकर उसके भाई पर आक्रमण कर दिया। उसकी सर्वोत्कृष्ट सेना वह थी जो उसने पूरब से एकत्र की थी। भीषण युद्ध हुआ जो ख्वाजये जहा की हत्या के उपरान्त समाप्त हुआ। नासिरुद्दीन का पुत्र देहली पलायन कर गया। इस सेवा के कारण मेदिनी राय को मन्दू मे मुसलमान अमीरो पर प्रभुत्व प्राप्त हो गया, राज्य की रक्षा का कार्य भी उसी को सौप दिया गया।

मुहम्मद तथा देहली की सेना की चन्देरी मे पराजय

९१८ हि० (१५१२–१३ ई०) मे मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन देहली की सेना के साथ चन्देरी मे पहुचा। महमूद भी उससे युद्ध करने के लिए निकला। दोनो ओर की सेनाये एक दूसरे के विरुद्ध पक्तिया जमा कर खडी हो गई। राय मेदिनी पुरबिया वीरो सहित अग्रसर हुआ और भालो तथा तलवारो द्वारा शत्रुओ की हत्या करना तथा उनके सिर काटने का पूर्ण प्रयत्न करने लगा, यहा तक कि महमूद की बात ऊची हो गई और उसके लिए मैदान साफ हो गया। अब राय मेदिनी पर महमूद का भरोसा और भी बढ गया और वह उसका सर्वदा सहारा लेने लगा। उसके प्रति उसे जो विश्वास था उसमे वृद्धि हो गई। उसने अपने समस्त कार्य उसे सौप दिये।

राय का प्रभुत्व तथा कुफ्र की प्रथाये

प्रारम्भ मे जब राय उन बातो को किया करता था जिनसे महमूद प्रसन्न हो सके तब भी वह समय

1 प्रदेश।

समय पर अन्य अमीरो के विरुद्ध विभिन्न प्रकार के आरोप लगा कर उन्हे राज्य से निर्वासित करने का प्रयत्न किया करता था, यहा तक कि किले मे तथा पूरे राज्य भर मे अमीरो एव सैनिको मे से कोई भी तलवार चलाने वाला शेष न रह गया। केवल थोडे से सेवक महमूद की सेवा के लिये किले मे रह गये। राय मेदिनी जब किसी मुसलमान को दूर हटाता था तो उसके स्थान पर किसी काफिर को निकट ले आता था। यहा तक कि राय मेदिनी को पूरे राज्य पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया और उसके समूह वाले वहा स्थायी रूप से जम गये। अब राय अपनी इच्छानुसार कार्य करने लगा और उसने मदिरो तथा मूर्तियो के निर्माण का आदेश दे दिया। राज्य मे कुफ्र उसी प्रकार व्यापक हो गया जैसा कि इससे पूर्व था।

अली खा तथा मेदिनी राय का युद्ध तथा अली खा की हत्या

(२१४) राय के पूर्ण अधिकार सम्पन्न होने पर जो बात प्रकट हुई वह सैयिद बारानहर अली खा के पुत्र अली खा से सबधित घटना थी। इस घटना का पूर्ण विवरण इस प्रकार है। महमूद एक बार शिकार खेलने के लिए बाहर गया। अली खा अपने पिता के गुजरात चले जाने के उपरान्त यहा रह गया था। उसका यह विचार था कि मुशरिको के समूह पर अधिकार प्राप्त कर ले। जब महमूद किले से बाहर गया तो उसके पास जो हब्शी थे वह उन्हे लेकर किले मे प्रविष्ट हो गया। और यह घटना उस युद्ध के उपरान्त घटी जो उसके तथा राय की सेना के मध्य मे हुई। उसने एक हजार से अधिक मनुष्यो की हत्या कर दी और किले पर अधिकार जमा लिया और उसकी रक्षा उस समय तक करता रहा जब तक कि उसके पास खाद्य सामग्री उपलब्ध रही। राय किले पर आक्रमण किया करता था अत अली खा किले से बाहर निकला और राय की सेना पर टूट पडा। उसने ४०० से अधिक मनुष्यो की हत्या कर दी। अब राय मेदिनी अपने समस्त सहायको सहित युद्ध के लिए उद्यत हो गया। अली खा अपने स्थान पर दृढ रहा और युद्ध करता रहा। इस युद्ध मे बहुत से मुशरिको की हत्या हो गई। सध्या समय जब घोडे बहुत थक गये और लोगो की बडी ही दुर्दशा हो गई तो उस समय अली खा ३०० व्यक्तियो सहित मारा गया।

सुल्तान का मेदिनी राय के प्रति असन्तोष

इस घटना के उपरान्त भवन अपने निवासियो से रिक्त हो गया और खलजी को परेशानी होने लगी। किसी भी मुसलमान का चिह्न वहा दृष्टिगत न होता था। कुफ्र व्यापक हो गया था। राय मेदिनी के सहायक राजधानी पर पूर्ण अधिकार जमाये हुए थे। जो कुछ राजधानी मे था उसे अपने अधिकार मे कर लेने की धृष्टता किया करते थे। सुल्तान से सबधित जो भी वस्तुये थी उनके विषय मे भी उन्होने सुल्तान के सम्मान की ओर कोई दृष्टि नही की, यहा तक कि अन्त पुर पर भी हाथ साफ करने का इरादा कर डाला। अब सुल्तान अपनी सीमा से आगे बढ जाने पर लज्जित हुआ और उसे अनुभव हुआ कि घर मे उसका अस्तित्व कोई महत्व नही रखता। उसे बडा शोक तथा दुख हुआ, यहा तक कि वह एक दिन प्राण त्याग देने के उद्देश्य से अपने उन सहायको सहित जो घर मे थे कटिबद्ध हो गया। उसने राय मेदिनी के पास एक दूत भेजा, जिसके द्वारा उसे आदेश दिया गया था कि वह उसके राज्य से बाहर निकल जाये। दूत आता जाता रहा किन्तु राय मेदिनी अपने उत्तर मे नम्रता ही प्रदर्शित करता रहा। फलत राय के सहायक उसके विरुद्ध हो गये। उन्होने यह सकल्प कर लिया कि उसके पुत्र राय राया को शासन-प्रबन्ध मे पूर्ण अधिकार प्रदान करके उसे खलजी के स्थान पर नियुक्त कर दे। किन्तु

मे उसका यह ज्ञान तथा यह विश्वास कि वह इस समय जिस कष्ट मे डाला गया है वह उस कष्ट से हल्का है जिससे उसे पृथक् कर दिया गया है, उसके कष्ट को सहन करने के हित मे सहायक सिद्ध होगा और दूसरी बात यह है कि 'मै इस समय जिस कष्ट मे हू वह आशा है कि मुझे ऐसी दशा मे पहुचा देगा जो मेरी वर्तमान दशा से अच्छी होगी।' मानो उसको यह ज्ञात था कि कष्ट तथा कठोरता कभी कभी आराम का कारण बन जाती है। यह बात इसका साधन वन सकती है कि वह कठोरता को कठोरता न समझे 'और विपत्ति को विपत्ति न स्वीकार करे'।

छन्द

"कोई दुर्घटना जो घटे उसके लिए एक समय होता है और जो कोई दशा भी प्रकट हो वह परिर्वातत अवश्य होती है।

जीवन की अवधि थोडी है फिर हम कहा तक अपने शोक को बढाये और उसकी अवधि मे वृद्धि करे।"

तदुपरान्त वह अपने घर से रणक्षेत्र मे आया। उसने म्यान मे से तलवार निकाल ली थी। वह उस सिंह के समान, जिसे उसके जगल मे परेशान कर दिया गया हो, शत्रुओ के समक्ष डट गया और उसने अपने शत्रुओ पर आक्रमण कर दिया मानो वह ईश्वर के सतोष के लिए युद्ध कर रहा हो। उसने बडे वेग से आक्रमण किया और बहुत बडी सख्या मे लोगो को अपने चारो ओर भूमि पर गिरा दिया। इस विपत्ति का वेग राय मेदिनी के पुत्र राय राया की हत्या के उपरान्त बन्द हो गया। जो लोग हत्या से बचे वे इधर उधर छिन्न-भिन्न हो गये। वह अपने घोडे की लगाम को रोक नही रहा था और न उनकी ओर से मुड रहा था, यहां तक कि उन्हे उसने घर से निकाल दिया और अपमान तथा लज्जा उनसे सबधित हो गई। खलजी ने अपने समूह के लिए वह छन्द पढे जिन्हे हसन बिन अली[1] उदाहरण स्वरूप पढा करते थे।

छन्द

"जो व्यक्ति तलवार की शरण लेता है उसे सतोष प्राप्त हो जाता है, या तो शीघ्र उसकी मृत्यु हो जाती है, या फिर वह न्याय प्राप्त करने वालो का जीवन व्यतीत करता है।

(२१६) नरम भूमि पर न सवार हो। यह तो स्थिति को और भी शोचनीय बना देगी, श्रेष्ठता उस समय तक न प्राप्त हो सकेगी जब तक तेजी के साथ सवारी न करोगे।"

राय मेदिनी के पास जब उसका पुत्र मृत अवस्था मे लाया गया तो उसने अपने आसपास के लोगो से कहा कि, "मैने तुम को बारबार खलजी के साथ छेड़-छाड करने से रोका किन्तु तुमने मेरी बात स्वीकार न की, यहा तक कि मुझे अपने पुत्र की हत्या का दिन देखना पडा। तुम मुझे अब अपनी दशा पर छोड दो।" तदुपरान्त उसने खलजी के पास एक दूत भेज कर अपने पुत्र की धृष्टता के विषय मे क्षमा-याचना की और यह कहलाया कि, "उसने अपने दुष्कर्म का दण्ड भोग लिया।" उसने खलजी से उसके दरबार मे उपस्थित होने की अनुमति चाही। खलजी ने उसे अनुमति दे दी। जब वे दोनो एक स्थान पर एकत्र हुए तो राय मेदिनी ने उससे कहा कि, "आप पुत्र के कारण मुझसे शकित न हो, मेरा आपके साथ वही

१ हजरत अली के ज्येष्ठ पुत्र (जन्म १ मार्च ६२५ ई०, हत्या १७ मार्च ६६६ ई०)।

व्यवहार रहेगा जो इससे पूर्व था।" खलजी ने उसके उत्तर मे कहा कि, "मुझे तुमसे इस विषय मे कहने की अधिक आवश्यकता है। तुम्हारे पुत्र ने मेरे प्रति अत्याचार किया तो मै क्या करता। तुम मेरी क्षमा को स्वीकार करो।" राय मेदिनी ने उसके चरणो का चुम्बन करके उससे इस बात की अनुमति मागी कि, "जो लोग मेरे साथ दीवान मे आये उन्हे सशस्त्र आने की आज्ञा प्रदान की जाय ताकि मेरे हृदय को सतोष प्राप्त हो।" खलजी ने उसे इसकी अनुमति दे दी। वह उसके दरबार मे ५०० सशस्त्र व्यक्तियो सहित जाता था। खलजी को यह भय अवश्य था कि वह किसी न किसी दिन उसके साथ विश्वासघात करेगा। वह उसके साथ युक्तिपूर्ण व्यवहार करता था और प्रसन्न चित्त होकर उससे वार्तालाप करता था। यहा तक कि वह एक दिन सुल्तान मुजफ्फर के पास चला गया। इसका उल्लेख सुल्तान के इतिहास मे किया जा चुका है।

गुजरात

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ मन्झू इब्ने अकबर

मिरआते सिकन्दरी

अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की

अलआसफी, उलुग खानी, अलहाजुद्दबीर जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह

तबक़ाते अकबरी

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)
(प्रकाशन—कलकत्ता १९३५ ई०)

गुजरात के सुल्तान

(८२) गुजरात का राज्य ७९३ हि० (१३९१-९२ ई०) से ९९० हि० (१५८२ ई०) तक रहा। तदुपरान्त वह अकबर बादशाह के अधिकार मे आ गया। १८७ वर्ष तक १५ लोगो ने इस प्रकार राज्य किया —

सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) सुल्तान मुजफ्फर : २ मास तथा कुछ दिन।
सुल्तान मुजफ्फर शाह ३ वर्ष, ८ मास तथा २० दिन।
सुल्तान अहमद : ३२ वर्ष, ६ मास तथा २० दिन।
सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) अहमद . ७ वर्ष तथा ४ मास।
सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह . ७ वर्ष, ६ मास तथा १३ दिन।
दाऊद शाह : ७ दिन।
सुल्तान महमूद शाह ५५ वर्ष, ११ मास तथा २ दिन।
सुल्तान मुजफ्फर बिन महमूद १४ वर्ष तथा ९ मास।
सुल्तान सिकन्दर २ मास तथा १६ दिन।
सुल्तान महमूद ४ मास।
सुल्तान बहादुर ११ वर्ष तथा ११ मास।
सुल्तान मुहम्मद शाह १½ मास।
सुल्तान महमूद बिन लतीफ खा १८ वर्ष तथा कुछ दिन।
सुल्तान अहमद ३ वर्ष तथा कुछ मास।
सुल्तान मुजफ्फर बिन (पुत्र) महमूद १६ वर्ष तथा कुछ मास।

आज़म हुमायूं ज़फ़र ख़ां

इतिहास की पुस्तको मे लिखा है कि जब निजाम मुफर्रेह का, जिसे रास्ती खा की उपाधि प्राप्त थी, और जिसे सुल्तान मुहम्मद बिन सुल्तान फीरोज शाह की ओर से गुजरात का राज्य प्राप्त था, अत्याचार समस्त ससार मे प्रसिद्ध हो गया और पीडित लोग फरियाद लेकर राजधानी देहली पहुचे और (८३) उन्होने सुल्तान मुहम्मद की सेवा मे उसके अत्याचारो की चर्चा की और उसके विद्रोह का वृत्तात दिया तो सुल्तान मुहम्मद शाह ने अत्यधिक सोच विचार के उपरान्त आजम हुमायू जफर खा बिन वजीहुलमुल्क को, जो बहुत बडा अमीर था, अपनी कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और उसे गुजरात की अक्ता प्रदान की। ३ रबी-उल-अव्वल ७९३ हि० (८ फरवरी १३९१ ई०) को आजम हुमायू जफर खा को

चत्र, लाल बारगाह[1], जो विशेष रूप से बादशाह लोग प्रयोग करते हैं, प्रदान किये और गुजरात जाने की अनुमति प्रदान कर दी। उसने उसी दिन नगर से निकल कर हौज़े खास पर पडाव किया। उसी मास की ४ तारीख को सुल्तान मुहम्मद जफर खा के शिविर मे पहुचा और उसके कानो को शिक्षा के मोतियो द्वारा वजनी बना दिया, और उसे पुन विशेष खिलअत प्रदान करके शहर लौट आया।

उसकी उपाधियाँ

कहा जाता है कि जब वजीरो ने उसके राज्य हेतु आदेश-पत्र लिखा तो सुल्तान के हुक्म से उपाधियो का स्थान रिक्त छोड दिया। सुल्तान ने उसकी उपाधिया अपने हाथ से इस प्रकार लिखी : "मेरा भ्राता मजलिसे आली, खाने मुअज़्ज़म, आलिम, न्यायकारी, दानी, मुजाहिद, ईमान तथा धर्म का सबसे बडा भाग्यशाली, सल्तनत को पुष्टि देने वाला, धर्म का रक्षक, कुफ्र का विनाशक, पापियो तथा मुर्तिदो को नष्ट करने वाला, आध्यात्मिकता के आकाश का ध्रुवतारा, उच्च आकाश का सितारा, युद्ध के दिन सेना की पक्तियो को नष्ट-भ्रष्ट करने वाला, रुस्तम के समान किला विजय करने वाला, राज्यो को विजय करने वाला, कूटनीति मे आसिफ, राज्य का प्रबन्धक, सर्वसाधारण के मामलो को ठीक करने वाला, सफलता एव सौभाग्य का स्वामी, बुद्धि तथा सार्थकता का नरेश, न्याय तथा परोपकार को वितरण करने वाला, साहिब किरान का वजीर उलुग कुतलुगे आजम हुमायू जफर खा।"

निजाम मुफर्रेह पर विजय

सक्षेप मे, वह निरन्तर यात्रा करता हुआ गुजरात की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे उसे ज्ञात हुआ कि तातार खा बिन जफर खा के, जो सुल्तान मुहम्मद शाह का वजीर था, एक पुत्र का जन्म हुआ है और उसका नाम अहमद खा रखा गया है। जफर खा इस सुखद समाचार को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने एक भव्य जशन का आयोजन कराया और सेना के अधिकाश लोगो को खिलअते प्रदान की। (८४) जब वह नागौर के भूभाग मे पहुचा तो खम्बायत के लोग निज़ाम मुफर्रेह के विरुद्ध फरियाद करने के लिये पहुचे। जफर खा ने उन लोगो को प्रोत्साहन देकर नहरवाला की ओर प्रस्थान किया। जब वह नहरवाला, जिसे अब पटन कहते हैं, पहुचा तो उसने एक पत्र मलिक निजाम मुफर्रेह की सेवा मे लिख कर भेजा कि, "सुल्तान मुहम्मद शाह की सेवा मे यह निवेदन किया गया है कि मलिक निज़ाम मुफर्रेह ने शाही खालसे का कई वर्ष का कर अपनी आवश्यकताओ पर व्यय कर लिया है और खज़ाने मे एक दीनार भी नही भेजा है तथा निष्ठुरता एव अत्याचार प्रारम्भ कर रखा है जिसके कारण यहा के निवासी बहुत दुखी हैं। वे लोग देहली मे फरियाद करते रहते हैं। क्योकि राज्य के इस भाग का शासन तथा इसकी सुव्यवस्था मेरे सिपुर्द कर दी गई है अत यही उचित है कि जो कुछ भी खालसे का कर मौजूद हो[2] वह शीघ्रातिशीघ्र देहली भेज दिया जाय और पीडितो को प्रोत्साहन देकर आप भी राजधानी देहली चले जाय।"

मलिक निजाम मुफर्रेह ने उत्तर मे लिखा कि, "आप अत्यधिक यात्रा करके आये हैं। आप उसी स्थान पर रहे और कष्ट न करे। मै वही उपस्थित होकर स्वय इस शर्त पर हिसाब प्रस्तुत करूगा कि

१ मडप।
२ 'अदा करना आवश्यक हो'।

आप मुझे मुअक्किलो[1] को न सौपे।" जब उसका यह उत्तर प्राप्त हुआ और उसके विद्रोह का विश्वास हो गया तो आजम हुमायू जफर खा ने सेना को तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुआ कि मलिक निजाम मुफर्रेह अत्यधिक सेना लेकर इस ओर शीघ्रातिशीघ्र आ रहा है, तो आजम हुमायू भी सेना तैयार करके युद्ध के उद्देश्य से पटन नगर के बाहर निकला और ७ सफर ७९४ हि० (४ जनवरी १३९२ ई०) को काम्मू[2] नामक स्थान पर जो पटन से १२ कोस पर है घोर युद्ध (८५) हुआ। मलिक निजाम मुफर्रेह अपनी चुनी हुई सेना लिये हुये जफर खा की खोज मे था और इधर उधर घोडा दौडा रहा था। इसी बीच मे जफर खा की सेना के एक व्यक्ति ने उस पर विजय प्राप्त कर ली और उसके बडा घातक घाव लगाया जिसके कारण वह घोडे से भूमि पर गिर पडा। तत्काल उसके सिर को काट कर जफर खा की सेवा मे प्रस्तुत कर दिया गया।

खम्बायत को सुव्यवस्थित करना

यह दशा देख कर निजाम मुफर्रेह की सेना पराजित हो गई और अत्यधिक लोग मारे गये। अपार धन-सपत्ति प्राप्त हुई। जफर खा कुछ दूर तक सेना का पीछा करके पटन के क्षेत्र मे लौट आया और उसने समस्त परगनो मे अपने गुमाश्ते[3] नियुक्त कर दिये। ७९५ हि० (१३९२-९३ ई०) मे उसने उन लोगो के विरुद्ध जिन्होने खम्बायत मे विद्रोह कर दिया था प्रस्थान किया और उस स्थान को विरोधियो से मुक्त कर दिया। जिन लोगो को निजाम मुफर्रेह द्वारा कष्ट पहुचा था उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। वहा से उसने असावल कस्बे की ओर प्रस्थान किया। कुछ दिन वहा ठहर कर वहा के निवासियो को अपनी ओर से सतुष्ट करके वहा से लौट कर पटन के क्षेत्र मे आ गया।

ईदर पर आक्रमण

७९६ हि० (१३९३-९४ ई०) मे यह समाचार प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान मुहम्मद शाह इब्ने (पुत्र) सुल्तान फीरोज़ की देहली मे मृत्यु हो गई है और राज्य के कार्यो मे अव्यवस्था उत्पन्न हो गई है तथा अधिकाश जमीदार विद्रोह कर रहे है, विशेष रूप से ईदर के राजा ने आज्ञाकारिता त्याग कर विद्रोह (८६) प्रारम्भ कर दिया है।" जफर खा ने सेना तैयार करके अत्यधिक सेना एव पर्वत रूपी हाथियो को लेकर ईदर के राजा को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया। उसने शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर किले को घेर लिया और ईदर के राजा को किले की रक्षा की व्यवस्था करने का समय न मिल सका। वह विवश होकर किले मे बन्द हो गया। सुल्तान मुजफ्फर की सेनाओ ने ईदर की विलायत[4] को अपने अधिकार मे करके लूट मार तथा विध्वस प्रारम्भ कर दिया। उन्हे जो भी मदिर मिला उसे धराशायी कर दिया। अल्प समय मे किले वाले अकाल से इतने व्याकुल हो गये कि ईदर के राजा ने अत्यधिक नम्रता प्रदर्शित करते

१ मुअक्किल का अर्थ प्रतिनिधि होता है किन्तु इस स्थान पर सम्भवत उन अधिकारियो से तात्पर्य है जो दण्ड इत्यादि देने के लिये नियुक्त होते थे। बन्दीगृह के अधिकारी।

२ यह स्थान 'काथू' भी कहलाता है। हस्तलिखित पोथियो मे कातू, काबा, काघू इत्यादि इसके अन्य नाम मिलते है।

३ कार्यकर्ता, एजेन्ट।

४ राज्य।

हुए अपने प्रतिनिधियो को भेज कर क्षमा-याचना की। जफर खा ने उससे इच्छानुसार पेशकश लेकर सोमनाथ पर चढाई करने का सकल्प किया।

नद्रबार की ओर प्रस्थान

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुआ कि आसीर के अधिकारी, मलिक नसीर राजा ने, जो आदिल खा के नाम से प्रसिद्ध था, मूर्खता प्रदर्शित करते हुए नद्रबार के स्थानो को हानि पहुचायी है। आजम हुमायू ने अपने राज्य की रक्षा (सोमनाथ) के मदिर की विजय की अपेक्षा सर्वोपरि समझ कर नद्रबार की ओर प्रस्थान किया। आदिल खा यह समाचार प्राप्त करके अपनी विलायत[1] को लौट गया। सुल्तान उस स्थान के निवासियो को प्रोत्साहन देकर अपनी राजधानी पटन को वापस हो गया।

सोमनात की ओर प्रस्थान

७९७ हि० (१३९४-९५ ई०) मे उसने सेना तैयार करके जरौना प्रान्त, जोकि पटन के पश्चिम मे है, पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया और कुछ स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट करके उस ओर के प्रतिष्ठित लोगो से पेशकश प्राप्त की और उस स्थान से सोमनात के मदिर तक विध्वस हेतु प्रस्थान किया। मार्ग मे उसने राजपूतो को तलवार का भोजन बना दिया और जिस स्थान पर भी उसे मदिर दृष्टिगत (८७) हुआ उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जब वह सोमनात पहुचा तो उसने मदिर को जलवा डाला और सोमनात की मूर्ति का खण्डन करवा दिया। काफिरो की हत्या करके नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। वहा उसने एक जामा मस्जिद का निर्माण करवाया और शरा के अधिकारियो को नियुक्त किया। वहा पर थाने स्थापित करके वह पटन की ओर लौट आया।

मंदलगढ़ की विजय

७९८ हि० (१३९५–९६ ई०) मे आजम हुमायू को समाचार प्राप्त हुआ कि मदलगढ के राजपूतो ने इस प्रकार प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है कि वहा के मुसलमान हानि के भय से स्वदेश त्याग कर अन्य स्थानो को चले जा रहे है। जफर खा ने गुजरात की सेना एकत्र करके निरन्तर प्रस्थान करके उस ओर के जगलो तथा मैदानो को अपने अधिकार मे कर लिया। वहा के राजा ने अपने किले की दृढता पर अभिमान करते हुए किले की रक्षा प्रारम्भ कर दी और सुल्तान मुजफ्फर की सेना ने पर्वत तथा किले को घेर लिया। चारो ओर से मन्जनीक[2] लगवा दी। नित्यप्रति राजपूतो पर पत्थर फेंके जाते थे। क्योंकि किला इतना दृढ था कि मन्जनीक से कार्य नही चल सकता था अत. जफर खा ने आदेश दिया कि चारो ओर से साबात[3] तैयार किये जाय। शीघ्रातिशीघ्र उन्हे तैयार कर लिया गया। साबातो के बावजूद किला विजय न हुआ। अत मे एक वर्ष तथा कुछ मास के अवरोध के उपरान्त राजपूतो ने दीनता प्रगट करते हुए क्षमा-याचना की। पुरुषो तथा स्त्रियो ने नगे सिर होकर बडी दीनता से क्षमा-

१ राज्य।
२ पत्थर, आग तथा अन्य शीघ्र जलने वाले पदार्थों को फेंकने की एक मशीन।
३ एक प्रकार का ढँका हुआ मार्ग जिससे आक्रमणकारी बिना अधिक हानि के सुगमतापूर्वक किले पर आक्रमण कर सकते थे।

याचना की और पेशकश[1] प्रदान करके यह निश्चय किया कि वे प्रति वर्ष बिना मागे हुए पटन मे खराज[2] भेजते रहेगे और तदुपरान्त मुसलमानो को कष्ट न पहुचायेगे।

अजमेर की ओर प्रस्थान

आजम हुमायूँ ने अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण उन लोगो की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हे शरण प्रदान कर दी। पेशकश प्राप्त करके वार्षिक खराज निश्चित करने के उपरान्त वह उस क्षेत्र से निश्चिन्त होकर लौट गया। वहा से वह ख्वाजा मुईनुद्दीन हसन सिजजी[3] के मकबरे के दर्शन हेतु (८८) रवाना हुआ और उस प्रान्त के कस्बो को विध्वस करके वहा आबादी का कोई चिह्न शेष न रहने दिया। विध्वस कार्य की समाप्ति के उपरान्त उसने दन्दवाना की ओर प्रस्थान किया और दीलवारा[4] तथा जलवारा[5] की विलायत[6] को नष्ट-भ्रष्ट करके अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त की। १७ रमजान ८०० हि० (३ जून १३९८ ई०) को वह पटन लौट आया। क्योकि वह ३ वर्ष से निरन्तर आक्रमण कर रहा था अत उसने आदेश दिया कि सैनिको को एक वर्ष के लिए सेवा तथा परिश्रम से क्षमा किया जाय।

देहली पर आक्रमण करने की तैयारी

८०० हि० (१३९७–९८ ई०) के अन्त मे उसका पुत्र तातार खा, जो सुल्तान महमूद बिन (पुत्र) सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) फीरोज शाह का वजीर था, मल्लू खा के प्रभुत्व के कारण गुजरात से भाग कर अपने पिता की सेवा मे पहुचा। इसका विवरण देहली के सुल्तानो के वृत्तान्त मे लिखा जा चुका है। तातार खा ने अपमान का बदला लेने के लिए अपने पिता से आग्रह किया कि, "मै आपकी सेना को लेकर इकबाल मल्लू खा से बदला लूगा।" आजम हुमायू जफर खा सेना की तैयारी की चिन्ता करने लगा तथा लोगो को प्रोत्साहन देने लगा। क्योकि साहिब किरान अमीर तैमूर गुर्गान के पौत्र पीर मुहम्मद ने मुल्तान को अपने अधिकार मे कर लिया था और सारग खा को बन्दी बना लिया था अत आजम हुमायू अपनी योजना को कार्यान्वित करने मे विलम्ब करने लगा। वह समझ गया था कि मिर्जा पीर मुहम्मद साहिब किरान की सेना का मुकद्दमा है।[7] कुछ दिन उपरान्त ८०१ हि० (१३९८ ई०) मे यह समाचार प्राप्त हुआ कि अमीर तैमूर एक बहुत भारी सेना लेकर देहली पहुच गया है। जफर खा ने अपने पुत्र को तसल्ली देकर देहली का आक्रमण, अवसर की प्रतीक्षा मे स्थगित कर दिया।

ईदर पर आक्रमण

(८९) उसी समय दोनो ने मिल कर ईदर की विलायत की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर

१ उपहार।
२ राज्यों से प्राप्त किया जाने वाला वार्षिक कर।
३ एक प्रसिद्ध सूफ़ी जिनकी मज़ार अजमेर मे है। उनका जन्म ११४२ ई० मे सीस्तान में हुआ। भारत आकर वे अजमेर मे निवास करने लगे। उनका निधन १२३६ ई० मे हुआ। हिन्दुस्तान मे सूफ़ियों के चिश्ती सिलसिले वाले उन्ही के भक्त हैं।
४ इसे 'दिलवारा' भी लिखा गया है।
५ एक पोथी के अनुसार 'दन्दुआना'।
६ राज्य।
७ सेना के अग्र भाग का अधिकारी।

यात्रा करके ईदर के किले को घेर लिया। नित्यप्रति विलायत के चारो ओर सेना को भेजकर उसके विध्वस मे कोई कसर न उठा रक्खी। ईदर के राजा ने अत्यधिक दीनता प्रकट करते हुए दूतो को भेज कर पेशकश अदा करना स्वीकार कर लिया। क्योकि देहली का राज्य अव्यवस्थित था अत जफर खा केवल पेशकश से सतुष्ट हो गया और रमज़ान ८०१ हि० (मई-जून १३९९ ई०) मे पटन लौट आया।

सुल्तान महमूद का गुजरात के राज्य में पहुंचना

इसी बीच मे देहली से बहुत से लोग साहिब किरान के आक्रमण के कारण भाग कर पटन पहुचे। आजम हुमायूँ ने उनकी श्रेणी के अनुसार उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और जो जिस कृपा का पात्र था उसके प्रति उसने वह कृपा प्रदर्शित की। कुछ समय उपरान्त सुल्तान महमूद बिन (पुत्र) सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) सुल्तान फीरोज शाह, साहिब किरान से भाग कर गुजरात की विलायत मे पहुचा किन्तु जिस प्रकार जफर खा को व्यवहार करना चाहिये था उसने न किया। वह निराश होकर मालवा की ओर चला गया। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा।

ईदर के किले की विजय

८०३ हि० (१४९०–९१ ई०) मे आजम हुमायू ने सेना को एक वर्ष का वेतन प्रदान करके अत्यधिक तैयारी के उपरान्त ईदर[१] के किले को विजय करने के लिए आक्रमण किया। जब सुल्तान की सेना ने किले को चारो ओर से घेर लिया और कई दिन तक निरन्तर युद्ध होता रहा तो एक रात्रि मे ईदर का राजा किले को खाली करके बीजानगर की ओर भाग गया। प्रात काल ज़फर खा ने किले पर पहुच कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और मदिरो को नष्ट करके किले मे थाने निश्चित कर दिये। ईदर की विलायत[२] अमीरो को बाट दी। उस प्रदेश के कार्यो को सुव्यवस्थित करने के उपरान्त वह पटन लौट गया।

सोमनात की विजय

८०४ हि० (१४०१–२ ई०) मे ज़फर खा को समाचार प्राप्त हुये कि सोमनात के मदिर के काफिरो तथा हिन्दुओ ने पुन अपने धर्म के नियमो को उन्नति देने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया है। आज़म (९०) हुमायू ने उस ओर प्रस्थान किया और अपने पूर्व एक सेना भेज दी। जब सोमनात के निवासियो को पता चला तो उन्होने समुद्र के मार्ग से बढकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। आजम हुमायू शीघ्रातिशीघ्र उस स्थान पर पहुच गया और उसने उस समूह को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जो लोग बच गये थे बन्दर द्वीप के किले मे पहुच गये। कुछ दिन उपरान्त (गुजरात की सेना ने) उस किले को विजय करके उस समूह को तलवार के घाट उतार दिया और उस समूह के नेताओ को हाथी के पाव के नीचे डलवा दिया गया। उसने मदिरो का खण्डन करा कर जामा मस्जिद का निर्माण कराया। काजी, मुफ्ती[३] तथा शरा के अधिकारी नियुक्त किये और थाने निश्चित करके राजधानी पटन की ओर प्रस्थान किया।

१ एक पोथी के अनुसार, 'वह बीजानगर की विजय हेतु रवाना हुआ। वहा का वाली भाग गया'।
२ राज्य।
३ फ़तवा (व्यवस्था) देने वाला अधिकारी।

तातार खा द्वारा देहली पर आक्रमण करने का आग्रह

८०६ हि० (१४०३–४ ई०) मे तातार खा ने पुन अपने पिता से निवेदन किया कि, "मल्लू खा ने देहली को अपने अधिकार मे कर लिया है। यद्यपि सुल्तान महमूद केवल कन्नौज से सतुष्ट हो गया है, किन्तु इस पर भी वह उसे नही छोडता। यदि आप दास को सेना प्रदान करे तो दास देहली जाकर उसे अपने अधिकार मे कर ले और अपना बदला लेकर सुल्तान महमूद को पुन सिहासनारूढ कर दे।" आजम हुमायू ने कहा कि, "इस समय फीरोज शाह की सतान मे कोई योग्य व्यक्ति नही है। मल्लू इकबाल खा ने देहली को अपने अधिकार मे कर लिया है। आलिम लोग इस्लाम के विभिन्न समूहो मे रक्तपात को उचित नही समझते।" तातार खा तसल्ली के इन शब्दो से सतुष्ट न हुआ और उसने कहा कि, "आज हम मे इतनी शक्ति है कि देहली का राज्य प्राप्त कर ले। बादशाही तथा सल्तनत किसी को तर्के मे नही प्राप्त होती", और उसने यह छन्द पढा

छन्द

"राज्य किसी को तर्के मे नही प्राप्त होता
जब तक कि वह तलवार नही चलाता।"

जफर खा का राज्य त्यागना

आजम हुमायू ने जब यह देखा कि तातार खा अपने इस सकल्प को नही त्यागता तो उसने अपने आप को राज्य से पृथक् करके समस्त सेना तथा परिजन उसे सौप दिये।

तातार खां बिन आज़म हुमायूं ज़फ़र खां

(९१) जब जफर खा ने स्वत राज्य के कार्य को त्याग दिया तो तातार खा ने १ जमादि-उल-आखिर ८०६ हि० (१६ दिसम्बर १४०३ ई०) को असावल कस्बे मे शानदार दरबार किया और सिहासनारूढ हुआ। अपने सिर पर चत्र लगवा कर उसने सुल्तान मुहम्मद शाह की उपाधि धारण कर ली। अमीरो, प्रतिप्ठित व्यक्तियो तथा राज्य के सरदारो को खिलअते पहनाई और जो धन चत्र पर न्योछावर हुआ था उसे योग्य लोगो तथा सहायता के पात्रो को बाट दिया। विजारत का पद शम्स खा दन्दानी को, जो आजम हुमायू का छोटा भाई था, प्रदान किया। अपने फरमान के तुगरे[1] मे उसने इस वाक्य को लिखने का आदेश दिया.

अल मोअफ्फक वल वासिक बे ताईदुर्रहमान, इफतेखारुद्दूनिया वद्दीन अबुल गाजी मुहम्मद शाह बिन मुजफ्फर शाह।

नादौत पर आक्रमण

राज्य के कार्य सुशासित करने के उपरान्त उसने एक भारी सेना एकत्र करके १ शाबान ८०६ हि० (१३ फरवरी १४०४ ई०) को असावल कस्बे से देहली की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे उसे यह समाचार पहुचाये गये कि नादौत के राजा ने अपनी बुद्धि के पाव आज्ञाकारिता के क्षेत्र से बाहर निकाल

१ फ़रमानों के ऊपर लिखी जाने वाली शाही उपाधिया।

लिये है।[1] मुहम्मद शाह अपने साहस की लगाम को उस ओर मोड कर शीघ्रातिशीघ्र नादौत की विलायत मे पहुच गया[2] और वहा के कस्बो तथा ग्रामो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उसने सिनूर कस्बे मे पडाव किया। (९२) अपनी उन्नति की बहार ही मे वह मदिरापान के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया।

उसने २ मास तथा कुछ दिन तक राज्य किया। जब यह दु खपूर्ण समाचार भरौच मे आजम हुमायू के पास पहुचे तो वह बडा दुखी हुआ और शीघ्रातिशीघ्र शिविर मे पहुच गया। उसने उसकी उपाधि मशूरो[3] मे खुदायगाने शहीद[4] लिखवाई। शम्स खा दन्दानी को प्रोत्साहन देते हुए, मलिक जलाल खोखर को स्थानान्तरित करके, नागौर का शासन प्रबन्ध उसको सौप दिया। वह बडे दु ख की अवस्था मे आवश्यकतावश शासन प्रबन्ध करता था। चत्र तथा राजसिहासन को एक कोने मे रख दिया था और अपने आप को उनके द्वारा सम्मानित न करता था। अन्त मे अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो के आग्रह पर ८१० हि० (१४०७–८ ई०) मे सिहासनारूढ हुआ। कुछ इतिहासो मे लिखा हुआ है कि शम्स खा दन्दानी ने जफर खा के सकेत पर मुहम्मद शाह की मदिरा मे विष दिला दिया।

ज़फ़र ख़ां जिसकी उपाधि मुज़फ़्फ़र शाह थी

जब गुजरात के राज्य की अशान्ति जो ३ वर्ष तथा ४ मास तक रही समाप्त हो गई तो आजम (९३) हुमायू जफर खा बीरपुर कस्बे मे अमीरो, प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्तियो के आग्रह पर ज्योतिषियो द्वारा निश्चित मुहूर्त मे सिहासनारूढ हुआ और उसने सुल्तान मुजफ्फर शाह की उपाधि धारण कर ली। उसके फरमानो मे उसकी उपाधि इस प्रकार लिखी जाती थी

अल-वासिक बिल्लाहिल मन्नान, शम्सुनिया वद्दीन अबुल मुजाहिद मुजफ्फर शाह अस् सुल्तान।

मालवा पर आक्रमण

जो धन चत्र पर न्यौछावर किया गया था उसे उसने सहायता के पात्रो को बाट दिया। अमीरो, प्रतिष्ठित लोगो तथा विभिन्न समूह के नेताओ को उसने खिलअते प्रदान की और निरन्तर यात्रा करता हुआ मालवा के राज्य की ओर रवाना हुआ। जब वह धार के समीप पहुचा तो सुल्तान होशग ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। क्योकि उसमे मुजफ़्फ़र शाह का मुकाबला करने की शक्ति न थी अत वह भाग कर धार के किले मे शरण हेतु चला गया। अन्त मे वह सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ। क्योकि सुल्तान मुजफ्फर शाह को यह ज्ञात हुआ था कि उसने अपने पिता दिलावर खा को, जिसमे तथा मुज़फ्फर शाह मे जब वे सुल्तान मुहम्मद फीरोज शाह की सेवा मे थे, प्रेम तथा भ्रातृत्व भाव थे, विष दिलवा दिया है, अत उसने सुल्तान होशग तथा उसके कुछ विश्वासपात्रों को बन्दी बना दिया और अपने छोटे भाई नुसरत खा को मालवा मे सिहासनारूढ कर दिया।

देहली की ओर प्रस्थान तथा वापसी

इसी बीच मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि सुल्तान इबराहीम शर्की देहली की विजय के विचार

१ विद्रोह कर दिया है।
२ 'साहस से कार्य लेकर नादौत पहुच गया'।
३ राज्य के पत्र व्यवहार, फ़रमान इत्यादि।
४ शहीद स्वामी।

से जौनपुर से प्रस्थान कर चुका है। मुजफ्फर शाह ने यह समाचार सुनते ही देहली की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान इबराहीम को जब यह ज्ञात हुआ कि सुल्तान मुज़फ्फर उससे युद्ध करने का सकल्प करके आ रहा है तो वह मार्ग ही से लौट कर जौनपुर चला गया। इसका उल्लेख जौनपुर के सुल्तानो के इतिहास मे किया जा चुका है। सुल्तान मुजफ्फर यह समाचार पाकर मार्ग से लौट गया और गुजरात की ओर चल दिया।

होशग का मालवा मे सिहासनारूढ किया जाना

वह सुल्तान होशग को बन्दी बना कर अपने साथ ले गया। जब कुछ समय व्यतीत हो गया तो (९४) मालवा की सेना तथा प्रजा ने नुसरत खा के दुर्व्यवहार के कारण उस पर आक्रमण कर दिया और उसे स्वामियो के समान धार से निकाल कर गुजरात की ओर चलता कर दिया और उसके जो लोग वहा रह गये थे उनको कष्ट तथा हानि पहुचाई। सुल्तान मुजफ्फर के भय से मूसा खा को, जोकि सुल्तान होशग का सबन्धी था सरदार नियुक्त किया और मन्दू का किला उसके निवास हेतु चुना। इस समाचार के प्राप्त होते ही सुल्तान मुजफ्फर ने सुल्तान होशग को बन्दीगृह से मुक्त करके शाहजादा अहमद खा बिन मुहम्मद शाह को उसकी सहायतार्थ इस आशय से नियुक्त किया कि वह मालवा पर अधिकार जमा कर उसे सौप दे। शाहजादा अहमद खा ने धार कस्बे मे पहुच कर उस प्रदेश को अपने अधिकार मे कर लिया और उसे सुल्तान होशग को सौप दिया और स्वय धोद[1] के मार्ग से गुजरात की राजधानी को लौट गया। इसका सविस्तार उल्लेख मालवा के सुल्तानो के वृत्तान्त मे किया जा चुका है।

८१२ हि० (१४०९–१० ई०) मे सुल्तान मुजफ्फर को यह समाचार प्राप्त हुआ कि कच्छ के अधीन कन्थाकोट[2] के राजपूतो ने विद्रोह तथा उपद्रव प्रारम्भ कर रखा है। यह समाचार पाते ही उसने एक बहुत बडी सेना को उस समूह को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया। कहा जाता है कि खुदावन्द ख़ा को शेख़ मुहम्मद कासिम की सेवा मे इस आशय से धोद मे भेज दिया गया कि वह इस्लामी सेना के लिए उनसे शुभ कामनाये कराये। शेख मुहम्मद कासिम ने उस सेना मे नियुक्त हुये लोगो के नामो की सूची को देख कर कुछ नामो पर चिह्न बना दिया। सयोग से जब मुजफ्फर शाह की सेना विजय प्राप्त करके वापस हुई तो जिन नामो के ऊपर चिह्न बनाया गया था वे उस युद्ध मे मारे गये।

सुल्तान मुजफ़्फर की मृत्यु

८१३ हि० (१४१०–११ ई०) मे सुल्तान मुजफ्फर नहरवाला पटन नामक नगर मे रुग्ण हो गया। उसने शाहजादा अहमद खा को अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियो की उपस्थिति मे सिहासनारूढ (९५) किया और उसे नासिरुद्दुनिया वद्दीन अबुल फतह अहमद शाह की उपाधि प्रदान की। उसके आदेशानुसार इस्लामी मिम्बरो पर उसके नाम का खुत्बा पढा गया। उसके राज्य को आरम्भ हुये ३ वर्ष, ८ मास तथा १६ दिन व्यतीत हो चुके थे। सुल्तान अहमद शाह को सिहासनारूढ करने के ५ मास तथा १३ दिन उपरान्त वह मृत्यु को प्राप्त हो गया और सफर ८१४ हि० (मई-जून १४११ ई०) मे वह ससार की प्राचीन सराय से परलोकगामी हो गया। वह पटन मे दफन है और "खुदायेगाने कबीर" के नाम मे पुकारा जाता है।

१ यह नाम हस्तलिखित पोथियो मे विभिन्न प्रकार से लिखा है. धोर, धूर इत्यादि।
२ एक पोथी के अनुसार 'कुहना कोट'।

सुल्तान अहमद शाह बिन सुल्तान मुहम्मद बिन मुज़फ़्फ़र शाह

सुल्तान अहमद शाह ने सिहासनारूढ होने के उपरान्त राज्य के अमीरो तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो, नगर के बडे बडे आदमियो और विभिन्न समूह के विशेष व्यक्तियो को सम्मानित किया और समस्त प्रजा को अपने दान-पुण्य द्वारा लाभ पहुचाया। उसने दीवानो[1] से सम्बन्धित अधिकारियो तथा कर्मचारियो को उनके प्राचीन स्थानो पर रहने दिया। उसने कृषि को उन्नति देने, राज्य को समृद्ध बनाने तथा न्याय के प्रबन्ध का विशेष प्रयत्न किया।

फीरोज खा का विद्रोह

जब सुल्तान् अहमद शाह के सिहासनारोहण के समाचार फीरोज खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुजफ्फर शाह को बरोदा[2] कस्बे मे प्राप्त हुये तो उसने ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण विरोध तथा शत्रुता की पताका बलन्द कर दी। उसने जीवन दास खत्री[3] को अपना वजीर नियुक्त कर दिया। खम्बायत का हाकिम[4] अमीर महमूद बर्की भी उसका सहायक बन गया। दुष्ट प्रवृत्ति के अन्य अमीर भी फीरोज खा को अपने (९६) लाभ तथा सफलता का साधन समझकर उससे मिल गये। वे फीरोज खा को खम्बायत ले गये। वहा सुल्तान मुजफ्फर के पुत्र हैबत खा ने उससे भेट की। कुछ दिन उपरान्त सुल्तान मुजफ्फर का पुत्र सआदत खा तथा शेर खा भी आ कर उससे मिल गये। फीरोज खा की शक्ति उसके भाइयो के मिल जाने के कारण बहुत बढ गई। वह भरौच कस्बे की ओर रवाना हुआ। वहा से उसने एक पत्र सुल्तान होशग गोरी को लिखा और उससे सहायता करने का आग्रह किया और उसके मार्ग व्यय हेतु प्रत्येक पडाव के लिये कई लाख तन्के अदा करना स्वीकार किये। उसने गुजरात प्रदेश के जमीदारो को घोडे तथा खिलअत भेजकर अपनी ओर मिला लिया।

अहमद शाह का फीरोज के विरुद्ध प्रस्थान

जब अहमद शाह को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने अपनी सेना तैयार करके भरौच की ओर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। जब वह वहा पहुच गया तो उसने विद्रोह की अग्नि शान्त करने के लिये अमीरो के पास यह सदेश देकर एक दूत भेजा·

छन्द

"जिसे ईश्वर ने सम्मानित किया है उसे भाग्य कभी अपमानित नही कर सकता,
जो ईश्वर को प्रिय है उसे ससार कभी नीचा नही दिखा सकता।"

"क्योकि खुदायेगाने कबीर मुजफ्फर शाह[5] ने मेरा हाथ पकड कर मुझे राज्य के सिहासन पर आरूढ किया है और इस भव्य भवन की नीव और मेरे राज्य का महल अमीरो तथा देश के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित

१ माल विभाग, राजस्व विभाग।
२ एक पोथी के अनुसार 'बरोदरा'।
३ एक पोथी के अनुसार 'जीवन प्याग दास खत्री'।
४ गवर्नर।
५ एक पोथी के अनुसार 'हमारे बाबा (पिता) मुजफ्फर शाह'।

व्यक्तियो एव सर्वसाधारण की बैअत[1] द्वारा दृढ हो गया है अत तुम्हारे लिये यह उचित नही कि तुम आज्ञाकारिता एव निष्ठा के बाहर पाव रक्खो कारण कि विद्रोह का परिणाम विनाश होता है। प्रत्येक व्यक्ति उस अक्ता से जो उसे खुदायेगाने कबीर मुजफ्फर शाह ने प्रदान की थी, सन्तुष्ट रहे और अधिक प्रोत्साहन की आशा करता रहे।"

जब अमीरो को दूत ने यह सदेश पहुचाया तो उन्होने आपस मे परामर्श करके अहमद शाह के (९७) सगे चाचा हैबत खा को दूत के साथ सुल्तान की सेवा मे भेज दिया। सुल्तान अहमद की हैबत खा के प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि से प्रोत्साहित होकर, फीरोज खा तथा अन्य खान लोग भी, सुल्तान अहमद की सेवा मे उपस्थित हो गये। उसने प्रत्येक को नई-नई कृपाओ द्वारा प्रोत्साहित किया और उनकी प्राचीन जागीरे उनके पास रहने दी और उस क्षेत्र का शासन-प्रबन्ध भली भाति सम्पन्न कर लेने के उपरान्त वह पटन की ओर वापस होना चाहता था कि उसे समाचार प्राप्त हुये कि, "सुल्तान होशग ने फीरोज खा की सहायता के उद्देश्य से धार से इस क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर दिया है।"

होशग की पराजय

सुल्तान अहमद यह समाचार पाते ही, भरोच के किले से निरन्तर यात्रा करता हुआ वन्तज नामक स्थान पर पहुचा। उस स्थान पर भीकन आदम खा अफगान जो सुल्तान मुजफ्फर शाह के राज्य-काल मे बरौदा का मुक्ता था और विद्रोह के कारण कोनो मे छिपता घूमता था, सेवा मे उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। सुल्तान अहमद क्योकि फीरोज खा के कार्य को भली भाति सम्पन्न कर चुका था अत वह एक बहुत बडी सेना लेकर होशग से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। उसने एमादुलमुल्क को अपने पूर्व उससे युद्ध करने के लिए भेज दिया। होशग पराजित होकर लज्जावश अपने राज्य को लौट गया। एमादुलमुल्क ने कई पडाव तक उसका पीछा किया और जो जमीदार सुल्तान होशग से मिल गये थे उन्हे बन्दी बनाकर (सुल्तान अहमद) की सेवा मे लाया।

अहमदाबाद का बसाया जाना

सुल्तान अहमद शाह, जब लौटते समय असावल कस्बे मे पहुचा, तो उसे वहा की वायु (९८) अपने अनुकूल प्रतीत हुई। इस्तिखारे[2] तथा पवित्र शेख अहमद कम्बोह से परामर्श के उपरान्त उसने साबरमती नदी के तट पर जीकाद ८१३ हि० (फरवरी-मार्च १४१२ ई०) मे अहमदाबाद के भव्य नगर का, जिसके समान हिन्दुस्तान के नगरो मे कोई नगर नही है, शिलान्यास किया। उसमें उसने दो किलो, एक जामा मस्जिद तथा बहुत से बाजारो का निर्माण कराया। किले के बाहर ३६० पुरे, जिनमे से प्रत्येक पुरे मे बाजार, मस्जिद तथा दीवार बन्द[3] थे, बसाये। अहमदाबाद के विषय मे यदि यह कहा जाय कि ससार के समस्त नगरो मे कोई नगर भी उसके समान सजा हुआ तथा शानदार न होगा तो यह अतिशयोक्ति न होगी।

फीरोज खां तथा हैबत खां का विद्रोह

८१४ हि० (१४११–१२ ई०) मे फीरोज खा तथा हैबत खा ने, मलिक बद्रे अला के बहकाने

१ अधीनता की शपथ।
२ किसी कार्य के करने अथवा न करने के सम्बन्ध मे निर्णय करने के पूर्व ईश्वर की इच्छा ज्ञात करना।
३ सम्भवत चहार दीवारी।

से, जो सुल्तान मुजफ्फर का निकटतम सबन्धी था, पुन विद्रोह प्रारम्भ कर दिया और विलायत से निकल कर ईदर[1] नामक पर्वत मे शरण ली। सुल्तान अहमद शाह यह समाचार पाते ही उस समूह के विनाश हेतु रवाना हुआ। जब वह वन्तज नामक कस्बे मे पहुचा तो उसने फतह खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुजफ्फर को अपने पूर्व ही भेज दिया। वह भी सैयिद इबराहीम निजाम मुक्ता के मार्ग भ्रष्ट करने से महरासा[2] के कस्बे मे जाकर अपने भाइयो से मिल गया। सुल्तान अहमद ने यह सुनकर महरासा की ओर प्रस्थान किया और मलिक बद्रे अला तथा सैयिद इबराहीम ने, जिसकी उपाधि रुक्न खा थी, महरासा के किले के चारो ओर एक खाई खुदवाई और किले की रक्षा की व्यवस्था करने लगे। फीरोज खा तथा हैबत खा ने ईदर के राजा रायमल[3] को अपनी सहायतार्थ बुलवा कर अनखूर[4] नामक स्थान पर जो महरासा कस्बे से ५ कोस पर है पहुच गया।

सुल्तान का मलिक बद्रे अला के पास दूत भेजना

(९९) जब सुल्तान अहमद महरासा कस्बे के समीप पहुचा तो उसने सर्वप्रथम आलिमो के एक समूह को मलिक बद्रे अला तथा रुक्न खा के पास इस आशय से भेजा कि वे उसकी दृष्टि के समक्ष से असावधानी के पर्दे हटाकर सत्य बात को उसके सम्मुख प्रस्तुत करे। जब दूतो को उचित उत्तर न मिला तो वे सुल्तान के पास लौट आये। सुल्तान ने अत्यधिक कृपा के कारण उनके पास पुन सदेश भेजा कि, "मैने तुम्हे क्षमा कर दिया है। तुम्हारी जहा इच्छा हो चले जाओ।" मलिक बद्रे अला तथा रुक्न खा ने उत्तर भेजा कि, "निजामुलमुल्क, जो नायब वज़ीर[5] है, और मलिक अहमद अजीजुलमुल्क, जोकि कार-गुजार[6] तथा नायब वकीलदर[7] है, मलिक सईदुलमुल्क तथा मलिक सैफ ख्वाजा आ जायँ और हमे अपने साथ ले जाकर सुल्तान की सेवा मे उपस्थित कर दे।" सुल्तान अहमद ने आदेश दिया कि, "उपर्युक्त अमीर चले जाय किन्तु वे बद्रे अला की धूर्तता तथा छल से चौकन्ने रहे और किले के भीतर प्रविष्ट न हो।"

मलिक बद्रे अला की धूर्तता

जब उपर्युक्त अमीर महरासा के किले के द्वार की ओर रवाना हुये तो मलिक बद्रे अला तथा रुक्न खा ने एक सेना को एक गुप्त स्थान पर छिपा दिया और स्वय उनका आदर-सत्कार करने लगा। मलिक निजामुलमुल्क तथा मलिक सईदुलमुल्क को अमीरो से पृथक् करके वार्तालाप करने लगा। इसी बीच मे कुछ लोग, जो छिपे हुये थे, निकल पडे और वे मलिक निजामुलमुल्क तथा सईदुलमुल्क को बन्दी बनाकर किले के भीतर ले गये। निजामुलमुल्क उच्च स्वर मे कहता जाता था कि, "सुल्तान से कह देना कि किले की विजय मे विलम्ब उचित नही। हमारे भाग्य मे जो कुछ लिखा था वह हो गया।" मलिक बद्रे अला ने दोनो के पाँव मे जजीर डलवा कर एक अँधेरे घर मे बन्दी बना दिया। इस कार्य का कारण

१ एक पोथी के अनुसार 'इन्दर'।
२ एक पोथी के अनुसार 'बहरासा'।
३ एक पोथी के अनुसार 'रणमल'।
४ एक पोथी के अनुसार 'ईखूर'।
५ वज़ीर का सहायक।
६ जिसे शासन प्रबन्ध मे अधिक अधिकार प्राप्त हो।
७ शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियो का प्रबन्ध करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी।

यह था कि मलिक बद्रे अला समझता था कि जब तक अमीर बन्द है किले को कोई हानि न पहुचेगी।

सुल्तान द्वारा किले पर आक्रमण

सुल्तान अहमद ने यह हाल सुनकर आदेश दिया कि, "मोर्चे बाट दिये जाय और चारो ओर से युद्ध प्रारम्भ कर दिया जाय। उसने स्वय ५ जमादि-उल-अव्वल ८१४ हि० (२५ अगस्त १४११ ई०)[१] को द्वार पर आक्रमण किया और अमीर तथा वीर लोग यह हाल देख कर खाई मे कूद पडे और किले से (१००) चिपट गये। पलक झपकाते ही चारो ओर से वे किले की दीवारो पर पहुच कर मलिक निजा-मुलमुल्क को मुक्त कराने का प्रयत्न करने लगे। क्योकि इन दोनो की मृत्यु का समय न आया था अत इन दोनो को निकाल कर उन्होने विद्रोहियो को नष्ट कर दिया। मलिक बद्रे अला तथा रुक्न खा की, जोकि विद्रोहियो के नेता थे, हत्या करा दी। फीरोज़ खा तथा ईदर का राजा इस विजय के समाचार पाकर ईदर पर्वत मे चले गये।

कुछ दिन उपरान्त ईदर के राजा रणमल ने अपने कार्यों को सुव्यवस्थित करने के लिए फीरोज़ शाह से विश्वासघात करके उसके खजाने तथा हाथियो को अपने अधिकार मे कर लिया। उन्हे उसने सुल्तान अहमद की सेवा मे भेज दिया और दीनता प्रकट करते हुए मालगुजारी अदा करना स्वीकार कर लिया। सुल्तान विजय प्राप्त करके अहमदाबाद लौट आया। फीरोज खा अपने भाइयो[२] के साथ भाग कर नागौर के क्षेत्र मे चला गया। जिस दिन राजा के मुअक्किल[३] ने नागौर के हाकिम फीरोज खा बिन शम्स खा दन्दानी से युद्ध किया उस दिन शाहजादा फीरोज खा की हत्या हो गई।

मलिक शाह इत्यादि का विद्रोह तथा सुल्तान होशंग का विद्रोहियो की सहायतार्थ प्रस्थान

८१६[४] हि० (१४१३–१४ ई०) मे मलिक अहमद सरकन्जी[५], मलिक शाह मलिक, मलिक अहमद बिन शेर मलिक, भीकन आदम खा अफगान तथा मलिक ईसा सालार ने सोये हुए उपद्रव को जगा (१०१) दिया और कुछ विद्रोही जमीदारो को मिला लिया। उन्होने राज्य के कुछ भागो पर आक्रमण किया। जिन जिन स्थानो पर अभागे लोग थे वे उनसे मिल गये। इसी दशा मे मन्दल के राजा तथा नादौत और बुधवल के राजा ने सुल्तान होशग के पास प्रार्थना-पत्र भेज कर गुजरात की विजय हेतु प्रेरित किया। सुल्तान होशग बुद्धि की कमी के कारण विद्रोहियो की सहायता के भरोसे पर गुजरात की ओर चल दिया। सुल्तान अहमद ने जब यह देखा कि दो दिशाओ से उपद्रव उठ खडा हुआ है तो उसने अपने सगे भाई लतीफ खा बिन मुहम्मद शाह को मलिक निजामुलमुल्क नायब वजीर के साथ मलिक शाह मलिक तथा अन्य अमीरो को दण्ड देने के लिए भेजा और स्वय सेना तैयार करके सुल्तान होशग से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ।

१ एक पोथी के अनुसार '८१७ हि०'।
२ एक पोथी के अनुसार 'भाई'।
३ फ़िरिश्ता के अनुसार 'रण मल'।
४ एक पोथी मे '८१८ हि०' है।
५ सरकीजी (सरकिज निवासी) उचित होगा।

सुल्तान होशग की अपने राज्य मे वापसी

जब वह बान्धू नामक स्थान पर, जो चम्पानीर के समीप है पहुचा तो मलिक एमादुलमुल्क समरकन्दी को एक बहुत बडी सेना देकर अपने पहले भेज दिया। सुल्तान होशग ने जब यह सुना कि सुल्तान अहमद का दास उससे युद्ध करने आ रहा है तो वह इस बात को अपने लिए अपमानजनक समझ कर अपनी विलायत को लौट गया। एमादुलमुल्क ने उन लोगो को जो इस विद्रोह के जन्मदाता थे, बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा मे भेज दिया। बुद्धिमानो को यह भली-भाति समझ लेना चाहिये कि सुल्तान होशग लौटने के लिए बहाना ढूढ रहा था अन्यथा क्या यह सभव न था कि वह अपने दास को एमादुलमुल्क से युद्ध करने के लिए भेजता और जब सुल्तान अहमद अपनी सेना की सहायतार्थ प्रस्थान करता तो वह भी रवाना होता ?

मलिक शह इत्यादि का पलायन

सुल्तान होशग के लौट जाने के समाचार प्राप्त होते ही द्रुतगामी समाचार-वाहको ने यह समाचार पहुचाये कि मलिक शह मलिक तथा अन्य अमीर, युद्ध की शक्ति न रखने के कारण बिना युद्ध किये ही भाग (१०२) खडे हुए। शाहजादा लतीफ खा ने कुछ दूर तक उनका पीछा किया। तदुपरान्त पडाव किया। शह मलिक ने उन विद्रोहियो से मिल कर जो उसके सहायक बन गये थे रात्रि मे शाहजादे के शिविर पर छापा मारा किन्तु सेना के लोगो के सावधान होने के कारण वह सफलता प्राप्त न कर सका और बहुत से लोगो की हत्या कराके भाग खडा हुआ। उसने करनाल के ज़मीदार से (सहायता की) प्रार्थना की। सुल्तान अहमद ने यह समाचार पाकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और अहमदाबाद के निवासियो को इनाम तथा कृपा द्वारा प्रसन्न किया।

करनाल की विजय

८१७ हि० (१४१४–१५ ई०) मे जब राजा करनाल ने शह मलिक तथा अन्य विद्रोहियो को अपने राज्य मे शरण प्रदान कर दी तो सुल्तान ने उसको दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया। जब वह करनाल के समीप, जो जूनागढ के नाम से प्रसिद्ध है, पहुचा तो उस स्थान के राजा ने एक सेना सहित किले से निकल कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। आरम्भ मे वह भाग कर करनाल के किले मे प्रविष्ट हो गया। उसके अधिकाश योग्य व्यक्ति पलायन के समय मृत्यु को प्राप्त हो गये। सुल्तान अहमद ने किले को घेर लिया और नित्यप्रति सोरठ[1] की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए सेना भेजने लगा। कुछ दिन उपरान्त रजब ८१७ हि० (सितम्बर–अक्तूबर १४१४ ई०) मे करनाल के किले पर जबरदस्ती अधिकार जमा लिया गया। करनाल का राजा अन्य लोगो के साथ जो विद्रोह कर रहे थे भाग कर करनाल पर्वत पर पहुच गया। कुछ दिन उपरान्त वे लोग दीनता प्रकट करते हुए क्षमा-याचना करके नीचे उतरे और पूर्व की भाति मालगुजारी अदा करने लगे। सुल्तान अहमद, अबुलखैर तथा सैयिद कासिम को मालगुजारी वसूल करने के लिए नियुक्त करके अहमदाबाद की राजधानी को लौट गया।

आसीर के अधिकारी को दड

(१०३) ८२१ हि० (१४१८–१९ ई०) में यह समाचार प्राप्त हुआ कि, "आसीर तथा

1 एक पोथी के अनुसार 'सूरत'।

बुरहानपुर के अधिकारी नसीर बिन आदिल खा ने अत्यधिक अभिमान प्रदर्शित करते हुए सुल्तानपुर तथा नद्रबार के कुछ स्थानो को हानि पहुचाई है।" यह समाचार पाते ही, वह निरन्तर यात्रा करता हुआ नद्रबार की ओर रवाना हुआ और एक सेना तम्बोल नामक किले की विजय हेतु, जो दकिन की सीमा पर स्थित है, भेजी। जब वह नद्रबार पहुचा तो नसीर आदिल खा भाग कर आसीर चला गया और उस समूह ने जोकि तम्बोल के किले मे पहुच गया था, वहा के सरदार को प्रोत्साहन देकर किले को अपने अधिकार मे कर लिया। वर्षा ऋतु के कारण चारवा[1] को जगल मे कष्ट उठाने पडे।

सुल्तान होशग के आक्रमण के समाचार

सुल्तान अहमद शाह अहमदाबाद लौटने के विषय मे सोच ही रहा था कि इसी बीच मे द्रुतगामी समाचारवाहको ने यह समाचार पहुचाये कि ईदर, चम्पानीर, मन्दल तथा नादौत के राजाओ ने सुल्तान होशग के पास निरन्तर प्रार्थनापत्र भेज कर उसे गुजरात बुलवाया है और सुल्तान होशग महरासा कस्बे मे पहुच गया है।

नागौर से होशग के समाचार प्राप्त होना

इसी बीच ने एक शुतुर सवार[2] नागौर से ९ दिन की यात्रा करके नद्रबार कस्बे मे पहुचा और फीरोज खा बिन शम्स खा दन्दानी का इस आशय का पत्र लाया कि, "सुल्तान होशग गुजरात की विजय के उद्देश्य से आ रहा है। क्योकि उसे बाह्य रूप से यह पता चला था कि फकीर आपसे सतुष्ट नही है अत उसने फकीर को यह लिखा है कि गुजरात के जमीदारो ने प्रार्थना-पत्र भेज कर मुझे बुलवाया है और मै गुजरात जा रहा हू। आप भी शीघ्रातिशीघ्र तैयार होकर पहुच जाये। गुजरात की विजय के उपरान्त नहरवाला की विलायत आपको प्रदान कर दी जायेगी। क्योकि आप हमारे स्वामी है अत आवश्यक समझ कर आपको सूचना भेजी जा रही है।"

सुल्तान होशग की युद्ध किये बिना वापसी

सुल्तान अहमद ने वर्षा ऋतु के बावजूद, निरन्तर यात्रा करके नर्मदा नदी पार की और महेन्द्री नदी के तट पर पडाव किया। जब वह एक सप्ताह मे महरासा कस्बे के समीप पहुचा गया तो गुप्तचर यह समाचार सुल्तान होशग के पास ले गये। सुल्तान होशग ने उपर्युक्त जमीदारो को बुलवाकर उन्हे बुरा भला कहना आरम्भ कर दिया और वह अपनी गुद्दी खुजलाता हुआ[3] लौट गया। क्योकि सुल्तान (१०४) अहमद शाह जरीदा[4] आया था अत कुछ दिन तक उसने सेना एकत्र करने के लिए उस मजिल पर पडाव किया।

सोरठ मे विद्रोह तथा विद्रोह का शान्त होना

इसी बीच मे यह समाचार प्राप्त हुआ कि सोरठ[5] के राजा ने इस विद्रोह के कारण मालगुजारी

१ बोझ लादने वाले पशुओं।
२ ऊंट पर यात्रा करने वाला।
३ लज्जित होकर।
४ थोडे से सैनिको सहित शीघ्रातिशीघ्र।
५ फ़िरिश्ता के अनुसार 'सूरत'।

अदा करना बन्द कर दिया है और नसीर बिन आदिल खा ने, जो आसीर का अधिकारी था, गजनी खा वल्द सुल्तान होशग से मिल कर थालनीर के किले को घेर लिया है और छल तथा धूर्तता द्वारा उसे अपने अधिकार मे कर लिया है। नादौत के राजा के परामर्श से वह सुल्तानपुर की विलायत मे पहुचा और उसे नष्ट-भ्रष्ट करके लौट गया। सुल्तान अहमद ने यह समाचार पाकर महमूद खा को एक बहुत बडी सेना देकर सोरठ की विलायत की ओर भेजा। उसने वहा पहुच कर प्राचीन प्रथानुसार सोरठ के जमीदारो से मालगुजारी प्राप्त की और मलिक महमूद बर्की[1] तथा मुखलिसुलमुल्क को नसीर बिन आदिल खा को दण्ड देने के लिए भेजा। मलिक महमूद तथा मुखलिसुलमुल्क ने प्रथम बार नादौत की विलायत के थोडे से भाग को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। नादौत के राजा ने विवश होकर निश्चित पेशकश अदा कर दी।

सुल्तान की विजय

जब वे वहा से सुल्तानपुर के समीप पहुचे, तो गजनी खा अपनी विलायत की ओर भाग गया और नसीर खा बिन आदिल खा थालनीर के किले मे बन्द हो गया। जब अवरोध मे अधिक समय व्यतीत हो गया तो नसीर खा बिन आदिल खा ने मलिक महमूद बर्की द्वारा अपने अपराधो की क्षमा-याचना की। सुल्तान अहमद ने उसके अपराधो को क्षमा करके खिलअत तथा नसीर खा की उपाधि द्वारा सम्मानित किया।

राजाओ द्वारा क्षमा-याचना

(१०५) क्योकि सुल्तान होशग ने बार बार गुजरात की विलायत पर आक्रमण करके सुल्तान को कष्ट पहुचाया था अत सुल्तान अहमद उस वर्ष के सफर[2] मास मे मालवा की विलायत को विजय तथा सुल्तान होशग को दण्ड देने के लिए रवाना हुआ। मार्ग मे ईदर, चम्पानीर तथा नादौत के राजाओ और अन्य जमीदारो के वकीलो[3] ने पहुच कर अपने अपराधो की क्षमा-याचना की। उन्होने प्रत्येक वर्ष की दुगुनी पेशकश भेजना निश्चय किया। सुल्तान अहमद ने उस समूह के अपराधो की ओर ध्यान न दिया और उनकी क्षमा को स्वीकार कर लिया।

सुल्तान का मालवा की ओर प्रस्थान

क्योकि मन्दल के राजा ने अभिमान के कारण विद्रोह करते हुए भी क्षमा-याचना न की अत सुल्तान अहमद, मलिक निजामुलमुल्क को गुजरात मे नियाबते गैवत[4] देकर, मन्दल के राजा को दण्ड देना उसके सिपुर्द करके, स्वय वायु की उष्णता के बावजूद मालवा की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करता हुआ कालियादा नामक स्थान के समीप उतरा।

सुल्तान होशंग का युद्ध हेतु कालियादा पहुंचना

सुल्तान होशग ने कालियादा के निकट एक उचित भूमि को चुन कर, अपनी सेना के एक बाजू को

१ एक पोथी के अनुसार 'तुर्की'।
२ सफ़र ८२१ हि० (मार्च-अप्रैल १४१८ ई०)।
३ प्रतिनिधियों।
४ बादशाह की अनुपस्थिति मे जो उच्च अधिकारी राज्य का कार्य चलाता था।

कालियादा नदी द्वारा दृढ बनाया और अपने सामने के बडे बडे वृक्षो को कटवा कर ख़ारबन्दी[1] करा दी। सुल्तान अहमद खुले मैदान मे सवार होकर खडा हुआ और निश्चय हुआ कि दाये भाग की सरदारी अमीर महमूद बर्की तथा बाये भाग की सरदारी मलिक फरीद एमादुलमुल्क को सौपे और मध्य भाग मे नसीरुद्दीन अजदुद्दौला रहे। सयोग से, जिस समय वह सवार होकर मलिक फरीद के शिविर की ओर पहुचा तो वही खडे होकर उसने एक सेवक को भेज कर उसे बुलवाया ताकि उसे उसके पिता की उपाधि, जो एमादुलमुल्क थी, प्रदान करे। दूत ने लौट कर कहा कि, "मलिक ने अपने शरीर पर तेल की मालिश कराई है ओर वह अब कुछ क्षण उपरान्त आयेगा।" सुल्तान ने कहा "आज युद्ध का दिन है। विलम्ब के कारण उसे पश्चात्ताप करना होगा।" और बिना ठहरे वह रणक्षेत्र की ओर चला गया।

सुल्तान अहमद की विजय

(१०६) जब दोनो बादशाह एक दूसरे के समक्ष खडे हो गये और सेना वाले जोश मे आये तो सुल्तान अहमद की सेना के एक हाथी ने सुल्तान होशग की सेना पर आक्रमण किया और उसे अत्यधिक हानि पहुचाई। वह अश्वारोहियो को इधर उधर दौडाता फिरता था। गज़नी ख़ा वल्द सुल्तान होशग ने अपने धनुष मे बाण जोड कर हाथी के मस्तक को बाण द्वारा आहत करके लौटा दिया। प्रत्येक दिशा से वीर योद्धा निकल खडे हुए और उन्होने सुल्तान अहमद की सेना पर आक्रमण कर दिया और गुजरात वाले अत्यधिक परेशान हो गये। इसी बीच मे मलिक फरीद अपनी सेना सहित सवार होकर मैदान मे पहुचा। यद्यपि उसने अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु उसे मार्ग न मिला। अन्त मे एक व्यक्ति ने कहा कि, "मुझे मार्ग ज्ञात है और मै शत्रु की सेना के पीछे पहुचा सकता हू।" मलिक फरीद ने इस मार्ग को बहुत बडी देन समझ कर उस ओर प्रस्थान किया। जब दोनो सेनाये युद्ध कर रही थी तो मलिक फरीद की सेना सुल्तान होशग के पीछे से प्रकट हुई। मलिक फरीद बेतहाशा आक्रमण करने लगा। घोर युद्ध हुआ। सुल्तान होशग यद्यपि स्वय बडा वीर था किन्तु रणक्षेत्र का विजेता न था अत वह भाग खडा हुआ और मन्दू के किले तक भागता चला गया।

सुल्तान का गुजरात वापस होना

सुल्तान अहमद तथा उसकी सेना को अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त हुई। उन्होने मन्दू के एक कोस तक उसका पीछा किया और सुल्तान अहमद ने उस विलायत के चारो ओर इस आशय से सेनाये भेजी कि वे उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे। मन्दू के समीप जितने फल वाले अथवा बिना फल वाले वृक्ष थे काट डाले गये। वर्षा ऋतु आ जाने के कारण वह गुजरात लौट गया और चम्पानीर तथा नादौत की विलायतो को, जोकि (१०७) उसके मार्ग मे थी, नष्ट-भ्रष्ट करता हुआ रवाना हुआ। अहमदाबाद पहुचने के उपरान्त वह कई मास तक निरन्तर जश्नो का आयोजन कराता रहा और जिसने थोडा सा भी परिश्रम किया था उसे उसने कृपा द्वारा सम्मानित किया तथा उपाधि प्रदान की।

चम्पानीर पर आक्रमण

1 जीकाद ८२१ हि० (३० नवम्बर १४१८ ई०) को उसने चम्पानीर के राजा को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ चम्पानीर पर्वत के समीप जोकि ३ कोस ऊचा और

1 कांटों का बाड़ा।

७ कोस की परिधि मे है, घेर लिया और आने जाने के मार्ग रोक दिये तथा विजय की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिन उपरान्त चम्पानीर के राजा ने दीनता प्रकट करते हुए अपना वकील[1] भेजा और यह प्रार्थना कराई कि, "सेवक दरबार का एक दास है और अपने आपको सर्वदा 'बरसिह दास अहमदशाही' लिखवाता है। यदि स्वाभाविक कृपा के कारण इस तुच्छ का अपराध क्षमा कर दिया जाय तो सेवक एक वर्ष का व्यय ख़जाने मे पहुचा देगा और प्रत्येक वर्ष मालगुजारी देता रहेगा।" क्योकि सुल्तान अहमद को अन्य कार्य करने थे अत उसने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और पेशकश ले ली।

सोनकरा की विजय

१ सफर ८२२ हि० (२७ फरवरी १४१९ ई०) को वह सोनकरा[2] कस्बे की ओर रवाना हुआ और सोनकरा की विलायत[3] के कुछ भाग को उसने नष्ट भ्रष्ट कर दिया। २२ सफर ८२२ हि० (२० मार्च १४१९ ई०) को वह कस्बे के क्षेत्र मे उतरा और वहा एक जामा मस्जिद का उसने निर्माण कराया तथा शरा के अधिकारियो को नियुक्त कराया। ११ रबी-उल-अव्वल ८२२ हि० (७ अप्रैल १४१९ ई०) को उसने उस स्थान से प्रस्थान करके मानकती नामक स्थान पर पडाव किया और आदेश दिया कि "इस (१०८) स्थान के थाने के लिए दृढ किले का निर्माण कराया जाय।"

मन्दू की ओर प्रस्थान

१२ रबी-उल-अव्वल ८२२ हि० (८ अप्रैल १४१९ ई०) को वह मन्दू की ओर रवाना हुआ। कान्तू पर्वत के निवासियो को दण्ड देता हुआ वह निरन्तर यात्रा करता गया। मार्ग मे मौलाना मूसा तथा अली हामिद[4] सुल्तान होशग की ओर से दूत बन कर पहुचे और उन्होने मलिक निजामुलमुल्क नायब वजीर, मलिक महमूद बर्की[5] तथा मलिक हुसामुद्दीन द्वारा दीनता प्रकट करते हुए यह निवेदन किया कि, "इस्लाम के बादशाह के लिए यह बात उचित नही है कि वह मालवा के मुसलमानो तथा पीडितो को कष्ट पहुचाये।" सुल्तान अहमद ने अपनी सदाचारिता के कारण दूतो की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया ओर एक स्नेहमय पत्र सुल्तान होशग की सेवा मे भेजा और ७ रबी-उस्सानी ८२२ हि० (३ मई १४१९ ई०) को चम्पानीर के समीप पडाव किया। जिन जिन स्थानो पर मदिर थे उन्हे नष्ट करा कर वह अहमदाबाद पहुचा।

किलो का निर्माण

८२३ हि० (१४२०—२१ ई०) मे उसने कुछ किलो के निर्माण हेतु प्रस्थान किया। सर्वप्रथम उसने जनकूर[6] नामक स्थान पर, जो महेन्द्री नदी के तट पर स्थित है, एक दृढ किले का निर्माण करवाया। तदुपरान्त उसने धामूर[7] कस्बे के चारो ओर एक चहार दीवारी का निर्माण करवाया और वहा की आबादी

१ प्रतिनिधि।
२ एक पोथी के अनुसार 'सोनखरा' तथा एक अन्य पोथी के अनुसार 'सोनखेरा'।
३ राज्य।
४ अली जामदार।
५ कुछ पोथियों के अनुसार 'मलिक महमूद तुर्क'।
६ एक पोथी के अनुसार 'हीनूर'।
७ एक पोथी के अनुसार 'धाहूर'।

तथा कृषि की उन्नति का प्रयत्न किया। जब उसने कारतीहा[1] कस्बे मे पडाव किया तो उसने प्राचीन किले को, जिसका निर्माण सुल्तान अलाउद्दीन खलजी के गुमाश्ते[2] अलप खा सजर ने ७०४ हि० (१३०४-५ ई०) मे करवाया था, पुन निर्माण करवाया और वहा की समृद्धि मे वृद्धि करने का प्रयत्न किया। उस कस्बे का नाम उसने सुल्तानाबाद रखा।

८२४ हि० (१४२१ ई०) मे उसने पुन चम्पानीर की ओर प्रस्थान किया और चम्पानीर के (१०९) अवरोध के उपरान्त पेशकश प्राप्त करके १९ सफर ८२५ हि० (१२ फरवरी १४२२ ई०) को सोनकरा की ओर प्रस्थान किया। २२ सफर (१५ फरवरी १४२२ ई०) को वह सोनकरा पहुच गया और वहा एक अन्य जामा मस्जिद का निर्माण कराया।

मन्दू की ओर प्रस्थान तथा विजय

उस स्थान पर उसे यह समाचार प्राप्त हुआ कि सुल्तान होशग बहुत समय से मालवा प्रदेश से कही चला गया है और उसका कही पता नही। अमीरो तथा विभिन्न समूह के नेताओ ने उसकी विलायत[3] को आपस मे विभाजित करके अपने अधिकार मे कर लिया है। यह समाचार पाकर उसने मन्दू की ओर कूच किया और निरन्तर यात्रा करता हुआ ३ रबी-उल-आखिर (२७ मार्च १४२२ ई०) को महीर के किले को घेर लिया। महीर का थानेदार क्षमा-याचना करके सुल्तान से मिल गया। १२ रबी-उल-आखिर ८२५ हि० (५ अप्रैल १४२२ ई०) को वह मन्दू के किले के नीचे उतरा और विभिन्न सेनाओ को उस विलायत को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए उसने भेजा। वर्षा ऋतु के समीप आ जाने के उपरान्त १ जमादि-उल-आखिर ८२५ हि० (२३ मई १४२२ ई०) को किले से प्रस्थान करके वह उज्जैन की ओर रवाना हुआ। उसने राज्य को विभिन्न अमीरो को बाट दिया। दीपालपुर बनहरिया को मलिक मुखलिस को, कायथा[4] को मलिक फरीद एमादुलमुल्क को, महेद्रपुर को, जो इस समय मुहम्मदपुर कहलाता है, मलिक इफ्तेखारुलमुल्क को जागीर मे प्रदान किया। अमीरो ने अपने गुमाश्तो को परगनो मे भेज कर खरीफ का कर अपने अधिकार मे कर लिया।

जाजनगर से सुल्तान होशग की वापसी तथा युद्ध

इसी बीच मे सुल्तान होशग, जो हाथियो के लिए जाजनगर की यात्रा को गया था और जिसका सविस्तार उल्लेख मालवा के सुल्तानो के इतिहास मे हो चुका है, लौट आया और मन्दू के किले मे पहुच गया। सुल्तान अहमद ने वर्षा ऋतु के उपरान्त २० रमजान ८२५ हि० (७ सितम्बर १४२२ ई०) को उज्जैन से मन्दू पहुच कर देहली द्वार के समक्ष पडाव किया और मोर्चो को बँटवा कर पर्वत को घेर लिया। उसने मलिक अहमद अयाज के पास अहमदाबाद मे इस आशय का एक फरमान भेजा कि वह (११०) खजाना तथा अन्य सामग्री लेकर उसकी सेवा मे उपस्थित हो। मलिक अहमद खजाना तथा जो कुछ मागा गया था अपने साथ लेकर १२ शव्वाल ८२५ हि० (३० सितम्बर १४२२ ई०) को उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसे खिलअत प्रदान किया गया और तारापुर के मोर्चे की सेवा उसे सौप दी गई।

१ एक पोथी के अनुसार 'काथ'।
२ प्रतिनिधि, सुल्तान की ओर से उस स्थान के सर्वोच्च अधिकारी एजेंट।
३ राज्य।
४ एक पोथी के अनुसार 'कांतीहा'।

सुल्तान अहमद का सारगपुर की ओर प्रस्थान

जब होशग के आगमन के कारण सुल्तान अहमद की सेना, जो मालवा की विलायत मे छिन्न भिन्न हो गई थी और परगनो का शासन कर रही थी, एकत्र हो गई तो सुल्तान अहमद ने यह उचित समझा कि विलायत के केन्द्रीय स्थान पर पडाव करके अमीरो को कस्बो तथा परगनो मे भेजे। इस उद्देश्य से वह किले से प्रस्थान करके सारगपुर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान होशग अन्य मार्ग से सारगपुर पहुच गया। जब गुजरात की सेना सारगपुर के समीप पहुची तो सुल्तान होशग ने एक दूत भेज कर दीनता प्रकट करते हुए पेशकश अदा करना स्वीकार कर लिया। सुल्तान अहमद दूतो के विनय तथा उनकी दीनता को देखकर निश्चित हो गया और खाई खुदवाने तथा खारबन्दी[1] की ओर से असावधानी करने लगा।

सुल्तान होशंग द्वारा रात्रि मे छापा

१२ मुहर्रम ८२६ हि० (२६ दिसम्बर १४२२ ई०) की रात्रि मे सुल्तान होशग ने उसके शिविर पर छापा मारा। क्योकि लोग असावधान थे अत वे बहुत बडी सख्या मे मारे गये। उनमे से दन्दाह की विलायत[2] का राजा सामत राय ५०० राजपूतो सहित एक स्थान पर मारा गया। जब सुल्तान अहमद जागा तो दौलतख़ाने मे कोई भी व्यक्ति न था। चौकी[3] के दो घोडे वहा उपस्थित थे। उसने मलिक जोना रिकाबदार[4] को एक घोडे पर सवार कराया और दूसरे घोडे पर स्वय सवार हुआ और अपने स्थान से निकल कर देखा कि शिविर नष्ट-भ्रष्ट हो रहा है। वह विवश होकर जगल की ओर चल दिया। कुछ क्षण उपरान्त उसने मलिक जोना रिकाबदार को शिविर मे पूछताछ करने के उद्देश्य से भेजा। (१११) मलिक जोना जब शिविर मे प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि मलिक मुकर्रब अहमद अयाज़ तथा मलिक फरीद अपने आदमियो सहित तैयार होकर दौलतखाने की ओर जा रहे हैं। उन्होने उससे सुल्तान के समाचार पूछे। मलिक जोना ने वास्तविक बात का उल्लेख करके दोनो को अपने साथ ले लिया और सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। क्योकि सुल्तान अस्त्र-शस्त्र धारण न किये हुए था अत मलिक मुकर्रब ने अपने शस्त्र-अस्त्र उतारकर सुल्तान को पहना दिये और युद्ध की अनुमति चाही। सुल्तान ने कहा कि, "क्षण भर ठहरो ताकि सुबह हो जाय।" उसने मलिक जोना को पुन शिविर मे इस बात का पता लगाने के लिए भेजा कि सुल्तान होशग किस स्थान पर खडा है और क्या कर रहा है।

सुल्तान अहमद द्वारा सुल्तान होशग पर आक्रमण तथा उसकी विजय

मलिक जोना ने लौट कर बताया कि "सेना शिविर को लूटने मे व्यस्त है और होशग ने कुछ व्यक्तियो सहित ख़ासे के घोडो तथा हाथियो को अपने समक्ष एकत्र कराया है। सुल्तान अहमद सूर्योदय होने पर, जिसे उसके सौभाग्य का सूर्योदय कहना चाहिये, एक हजार अश्वारोहियों सहित, जो मलिक मुकर्रब तथा मलिक फरीद के साथ आये थे, होशग से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। जब दोनो सेनायें

१ काटे इत्यादि का बाड़ा।
२ राज्य।
३ पहरे।
४ सुल्तान का वह सेवक जो उसके घोड़े की रिकाब पकड़ता था।

एक दूसरे के समक्ष पहुची तो सुल्तान ने स्वय शत्रु की सेना पर आक्रमण किया और जो परिश्रम तथा पौरुष वह प्रदर्शित कर सकता था उसे प्रदर्शित करके उसने होशग को आहत कर दिया और स्वय भी आहत हुआ। सुल्तान होशग भी वीरता तथा पौरुष के कारण आहत होने के बावजूद युद्ध करता रहा। इसी बीच मे गुजरात के महावतो ने सुल्तान अहमद को पहचान कर सुल्तान होशग की सेना पर आक्रमण कर दिया और यद्यपि सुल्तान होशग ने इस बात का अत्यधिक प्रयत्न किया कि वह अपनी सेना के पृष्ठ भाग की रक्षा करे किन्तु यह बात उससे सभव न हो सकी। अन्त मे वह भाग कर सारगपुर की ओर चल दिया और स्थिति मे पूर्ण परिवर्तन हो गया। जो समूह सुल्तान अहमद की सेना को नष्ट भ्रष्ट कर रहा था वह तलवार के घाट उतार दिया गया। हाथी, घोडे, ऊट तथा धन-सपत्ति जो कुछ नष्ट हुई थी वह सब की सब पुन प्राप्त हो गयी। जाजनगर के हाथियो मे से ७ हाथी जिन्हे सुल्तान होशग अत्यधिक परिश्रम (११२) के उपरान्त लाया था अधिकार मे कर लिये गये। सुल्तान अहमद ने विजय प्राप्त करके अपने शिविर मे विश्राम किया और अपने घावो का उपचार कराया।

उसने एक दरबारे आम करके अमीरो तथा विभिन्न समूहो के नेताओ को प्रोत्साहन प्रदान किया। दूसरे दिन उसने इफ्तेखारुल-मुल्क तथा मलिक सफदर खा सुल्तानी को सेना देकर जगल की ओर इस आशय से भेजा कि वह शिविर के मवेशियो की, जो चरने गये थे, रक्षा करे। सयोग से शत्रु की सेना के कुछ लोग उनको हानि पहुचाने के लिए अपने शिविर से गये हुए थे। मार्ग मे दोनो का युद्ध हो गया। उन्होने मरने-मारने मे कोई कमी न की किन्तु अन्त मे सुल्तान होशग की सेना भाग कर सारगपुर चली गई और मलिक इफ्तेखारुल-मुल्क तथा सफदर खा सुल्तानी विजय प्राप्त करके लौट आये और सुल्तान ने उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की।

सुल्तान की अहमदाबाद को वापसी

सुल्तान अहमद राज्य की आवश्यकताओ के कारण २४ रबी-उल-आखिर ८२६ हि० (६ अप्रैल १४२३ ई०) को गुजरात की ओर रवाना हुआ। सुल्तान होशग ने विलम्ब किये बिना सारगपुर के किले से निकल कर उसका पीछा किया। सुल्तान अहमद पलट कर खडा हो गया और दोनो सेनाओ मे युद्ध होने लगा। सुल्तान अहमद स्वय पौरुष का प्रदर्शन करता था किन्तु अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त सुल्तान होशग पराजित हो गया और भाग कर किले मे प्रविष्ट हो गया। इस बार भी जाजनगर के कुछ हाथी गुजरात वालो द्वारा बन्दी बना लिये गये। उस दिन उसने उसी मजिल पर पडाव करके दूसरे दिन अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया और ४ जमादि-उल-आखिर ८२६ हि० (१५ मई १४२३ ई०) को अहमदाबाद पहुच कर जश्नो का आयोजन कराया और अमीरो तथा सैनिको को इनाम, खिलअत तथा उनके वेतन मे वृद्धि प्रदान की। क्योकि इस युद्ध मे अत्यधिक सैनिको के सामान नष्ट हो चुके थे, अतः उसने ३ वर्ष तक कही भी आक्रमण न किया और अहमदाबाद मे निवास करते हुए अपना अधिकाश समय न्याय, शासन-प्रबन्ध तथा कृषि की उन्नति मे व्यय करता रहा।

पूजा द्वारा विद्रोह

(११३) इसी बीच मे वजीरो ने निवेदन किया कि ईदर के पूजा वल्द रणमल ने उन दिनो मे जब कि उसने मालवा पर चढाई की थी, मालगुज़ारी देना बन्द करके सुल्तान होशग की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेजे थे और उसकी सहायता का दावा करता था। सुल्तान ने ८२९ हि० (१४२५-२६ ई०) मे पूजा को दण्ड देने के लिए एक सेना तैयार करके भेजी। जब उसकी सेना ईदर की विलायत

मे प्रविष्ट हुई तो उसने लूट मार करना प्रारम्भ कर दिया। पूजा ने विरोध करते हुए उन्हे रोका।

अहमदनगर का निर्माण

जब इस कार्य मे अधिक समय लग गया तो सुल्तान ने स्वय ईदर पर चढाई की और ईदर से १० कोस पर साबरमती नदी के तट पर अहमदनगर नामक शहर का निर्माण प्रारम्भ करके किले का बनवाना शुरू कराया। वह किले को पूरा कराने का अत्यधिक प्रयत्न किया करता था और अहमदनगर से ईदर के चारो ओर सेनाये इस आशय से भेजा करता था कि वह जो कुछ भी सूखा या गीला[1] मिले उसे जला डाले और जो कोई भी हाथ लगे उसकी हत्या करा दे। पूजा यह दशा देख कर भी युद्ध के लिये डटा रहा और कभी कभी वह उस सेना पर, जो उन लोगो के साथ जो चारे का प्रबन्ध करने के लिए जाते थे, आक्रमण किया करता था और कभी कभी लूट मार करके उन पर अधिकार प्राप्त करता रहता था।

पूजा द्वारा सधि का प्रयत्न

अन्त मे, जब उसने देखा कि वह सफल नही हो सकता और अहमद शाह की सेना के आक्रमण का मुक़ाबला नही कर सकता तो उसने अपना वकील भेज कर निष्ठा प्रदर्शित करते हुए अत्यधिक पेशकश अदा करना स्वीकार किया किन्तु इस कारण कि वह कई बार अपने वचन को तोड चुका था सुल्तान अहमद ने स्वीकार न किया और स्वय ईदर की ओर रवाना हुआ। पहले दिन उसने ३ किले विजय किये। पूजा ने भाग कर बीजानगर के पर्वतो मे शरण ली। सुल्तान ने दूसरे दिन ईदर नगर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और वह अहमदनगर की ओर लौट आया। ८३० हि० (१४२६–२७ ई०) मे जब अहमद नगर का निर्माण पूरा हो गया तो सुल्तान अहमद ने पुन ईदर को विजय तथा नष्ट भ्रष्ट करने के लिए प्रस्थान किया। उसने ईदर के चारो ओर इस आशय से सेनाये भेजी कि वे उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे और (११४) स्वय उस ओर रवाना हुआ। पूजा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए दूतो को भेज कर सधि कर ली और अत्यधिक पेशकश देना स्वीकार किया।

पूंजा की हत्या

क्योकि इस बार सुल्तान उसको नष्ट करने का सकल्प कर चुका था अत उसने दूतो की बात की ओर कोई ध्यान न दिया। पूजा निराश होकर अपनी विलायत के विभिन्न स्थानो मे पतगो के समान मारा मारा फिरता था और प्रत्येक स्थान पर लूट मार किया करता था, यहा तक कि जमादि-उल-आखिर ८३१ हि० (मार्च-अप्रैल १४२८ ई०) की एक बृहस्पतिवार के दिन वह उस सेना के पास, जो चारे का प्रबन्ध करने वालो के साथ जगल मे गई हुई थी, पहुच गया और अत्यधिक युद्ध करने के उपरान्त भाग गया। पलायन करते समय उसे सेना से पृथक् एक हाथी दृष्टिगत हुआ। वह उसकी ओर बढा। बर्छे के घाव से उसने हाथी को गिरा दिया। जब वीरो ने उसका पीछा किया तो पूजा दुर्गम तथा ऊबड खाबड स्थानो की ओर चल दिया। सयोग से उसका घोडा हाथी से भडक कर एक खड्ड मे गिर पडा। अहमद शाह की सेना ने वहा पहुच कर हाथी को वापस कर दिया। उन्हे पूजा के गिरने की सूचना नही थी। इसी बीच मे एक निर्धन व्यक्ति लकड़ी चुनने के लिए खड्ड की ओर पहुचा। उसने देखा कि एक व्यक्ति

1 कृषि तथा घर इत्यादि।

उत्तम वस्त्र धारण किये हुए मरा हुआ पडा है। उसे देख कर उसने यह अनुमान लगाया कि वह कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। वह उसका सिर काट कर सुल्तान अहमद की सेवा मे लाया। कुछ लोगो ने पहचाना कि यह पूजा का सिर है। कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने पूजा के सिर को देख कर अभिवादन किया। जब उसका कारण पूछा गया तो उसने कहा कि, "मै बहुत समय तक उसका सेवक रह चुका हू।" सुल्तान अहमद उसके उत्तम व्यवहार से बडा प्रसन्न हुआ और उसने उसे सम्मानित किया।

पूजा के पुत्र को क्षमा दान

सुल्तान दूसरे दिन ईदर की ओर रवाना हुआ और उसने सेनाये भेज कर ईदर तथा बीजानगर के विनाश का आदेश दे दिया। हर राय वल्द पूजा ने खाने जहा सुल्तानी की सिफारिश से अपने अपराध (११५) क्षमा कराये और प्रत्येक वर्ष ३ लाख चादी के तन्के पेशकश के रूप मे अदा करना स्वीकार किया। सुल्तान अहमद ने उसके प्रति दया करते हुए उसे क्षमा कर दिया और उसे अपने निष्ठावानो मे सम्मिलित कर लिया।

उसने मलिक हसन को सफदरुलमुल्क की उपाधि देकर बहुत बडी सेना सहित अहमदनगर के थाने मे नियुक्त कर दिया और स्वय कीलवारा की विलायत को नष्ट भ्रष्ट करके अहमदाबाद चला गया। उसने शहरवालो को इनाम तथा परोपकार द्वारा लाभान्वित कराया।

ईदर को सुल्तान द्वारा अपने अधिकार मे करना

कुछ दिन उपरान्त उसने मलिक मुकर्रब एव अपने कुछ विशेष दासो का वेतन हर राय की विलायत से बरात[1] कर दिया। जब वे लोग ईदर पहुचे तो हर राय ने धन अदा करने मे टालमटोल करना प्रारम्भ कर दिया। सयोग से उसे समाचार प्राप्त हुआ कि सुल्तान शहर से निकल कर चढाई करने का विचार कर रहा है। वह भय तथा आतक के कारण पलायन करके एक कोने मे चला गया। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो वह ४ सफर ८३२ हि० (१३ नवम्बर १४२८ ई०) को शीघ्रातिशीघ्र ईदर के किले की ओर रवाना हुआ और ६ सफर (१५ नवम्बर १४२८ ई०) को उसने ईदर के किले मे पडाव किया। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उसने वहा एक जामा मस्जिद का निर्माण करवाया और वहा एक बहुत बडी सेना छोड कर अहमदनगर की ओर चला गया।

झालावर के राना कान्हा के विरुद्ध सेना

८३३ हि० (१४२९–३० ई०) मे झालावर के राजा कान्हा ने जब यह देखा कि सुल्तान अहमद ईदर के कार्य को समाप्त कर चुका है और वहा से निश्चिन्त होकर अन्य जमीदारो पर भी आक्रमण करेगा तो उसने अपने लिए यही उचित समझा कि वह स्वदेश त्याग कर भाग जाय। जब उस सेना ने, जो उसे दण्ड देने के लिए नियुक्त हुई थी, उसका पीछा किया तो वह आसीर तथा बुरहानपुर की विलायत मे घुस गया। आसीर के अधिकारी नसीर खा ने, इस कारण कि कान्हा ने उसे दो हाथी पेशकश के रूप मे दिये थे, उसको आश्रय प्रदान करते हुए अपनी विलायत मे स्थान दे दिया। कुछ दिन (११६) उपरान्त कान्हा गुलबर्गा पहुचा और उसने सुल्तान अहमद बहमनी से अपनी सहायतार्थ एक सेना लाकर नद्रबार के थोडे से स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

[1] वह पत्र जिसके अनुसार सेना वाले वेतन दूसरे राज्य की आय से प्राप्त करते हैं।

दक्षिण की सेना पर शाहज़ादा मुहम्मद खा की विजय

जब सुल्तान अहमद को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र शाहज़ादा मुहम्मद खा को इस अभियान पर भेजा और बडे बडे सरदारो, उदाहरणार्थ सैयिद अबुल खैर, सैयिद कासिम बिन सैयिद आलम, मलिक मुकर्रब, अहमद अयाज, तथा मलिक इफ्तेखारुलमुल्क, को साथ कर दिया। शाहज़ादा मुहम्मद खा ने दक्षिण वालो की सेना से युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली और उनकी सेना के बहुत से आदमियो की हत्या कर दी तथा बन्दी बना लिया। शेष लोग भाग कर दौलताबाद पहुच गये।

जब सुल्तान मुहम्मद बहमनी को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान अलाउद्दीन तथा मझले पुत्र खाने जहा को शाहज़ादा मुहम्मद खा से युद्ध करने के लिए भेजा और सेना की व्यवस्था राय कदर खा को, जो दक्षिण का एक विश्वस्त अमीर था, सौप दी। सुल्तान अलाउद्दीन ने कदर खा के परामर्श से निरन्तर यात्रा करके दौलताबाद के किले मे पडाव किया। इस पडाव पर आसीर तथा बुरहानपुर का हाकिम नसीर खा तथा झालावर का राजा कान्हा भी सुल्तान अलाउद्दीन के शिविर मे पहुचे। उसकी शक्ति मे वृद्धि हो गई। शाहज़ादा मुहम्मद खा भी दौलताबाद की ओर रवाना हुआ। जब दोनो सेनाओ के मध्य मे अधिक दूरी न रही तो मुहम्मद खा ने युद्ध के विचार से अपनी सेना की पक्तिया ठीक की। दोनो ओर से युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो गई। युद्ध के (११७) समय मलिक मुकर्रब अहमद अयाज तथा कदर खा मे, जो दोनो सिपहसालार थे, युद्ध हो गया। कदर खा घोडे की पीठ से अपमान की धूल मे गिर पडा। मलिक इफ्तेखारुलमुल्क ने बडे हाथी को अपने अधिकार मे कर लिया। सुल्तान अलाउद्दीन भाग कर दौलताबाद के किले मे शरण हेतु पहुच गया। आसीर का हाकिम नसीर खा भी भाग कर कलन्द पर्वत[1] मे, जोकि आसीर की विलायत मे स्थित है, पहुच गया। मुहम्मद खा ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और यह देखकर कि दौलताबाद के किले की विजय कठिन है वहा से लौट कर आसीर तथा बुरहानपुर की विलायत का थोडा सा भाग नष्ट करके नद्रबार कस्बे मे पडाव किया। वहा से उसने अपने पिता के पास यह विवरण लिख कर भेज दिया। सुल्तान अहमद ने उत्तर भेजा कि "तू कुछ दिन उस ओर के कार्यो को अपने अधिकार मे रख और सुव्यवस्थित करने के लिए नद्रबार मे रह।"

महायम के विरुद्ध शाहज़ादा जफर खा का भेजा जाना

८३४ हि० (१४३०-३१ ई०) मे महायम द्वीप के अधिकारी कुतुब तथा कुछ अन्य पीडितो ने सुल्तान अहमद की सेवा मे निवेदन किया कि, "मलिक हसन ने, जिसे मलिकुत्तुज्जार की उपाधि प्राप्त है, और जो सुल्तान अहमद बहमनी का एक अमीर है, दकिन प्रदेश से आकर महायम द्वीप तथा उसके समीप के स्थानो को जबरदस्ती अपने अधिकार मे कर लिया है और इस्लाम के राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करके मुसलमानो को बन्दी बना लिया है।" सुल्तान अहमद ने शाहज़ादा ज़फर खा को मलिकुत्तुज्जार को पराजित करने के लिए भेजा तथा योग्य बडे बडे अमीरो को उसकी सेवा में नियुक्त किया। द्वीप (११८) के कोतवाल मुखलिसुलमुल्क को लिखा कि, "तुम बन्दरगाहों के जहाज़ो को तैयार करके जफर खा की सेवा मे उपस्थित हो।" मलिक मुखलिसुलमुल्क पटन तथा खम्बायत के क्षेत्र से १७ छोटे

१ एक पोथी मे 'कोल कन्दा'।

बडे जहाजो को तैयार करके महायम की विलायत के निकट जफर खा की सेवा मे उपस्थित हुआ। अमीरो के परामर्श से निश्चय हुआ कि जहाजो को थाना के क्षेत्र मे भेज कर वह स्वय शाहजादे की सेवा मे उपस्थित रहे।

जब वह थाना के भूभाग मे पहुचा तो उसने इफ्तेखारुल मुल्क तथा मलिक सुहराब सुल्तानी को अपने पूर्व ही इस आशय से भेज दिया कि वह उस क्षेत्र का अवरोध करे। उस समय युद्ध करने वालो से लदे हुए जहाज समुद्र से उसके पास पहुचे और मार्ग को रोक दिया। जब जफर खा ने उस क्षेत्र पर विजय की छाया डाली[१] तो थाना के हाकिम ने किले से निकल कर वीरता का प्रदर्शन किया। गुजरात की सेना से युद्ध न कर सकने के कारण वह पलायन कर गया। शाहजादा अमीरो के परामर्श से उस क्षेत्र मे सेना छोड कर महायम की ओर रवाना हुआ। मलिकुत्तुज्जार ने बडे बडे वृक्षो को काट कर महायम के तट की खारबन्दी[२] कर ली। जब अहमद शाह की सेनाये पहुची तो उसने खारबन्द से निकल कर युद्ध किया। प्रात काल से सायकाल तक दोनो ओर के वीर युद्ध करते रहे और उन्होने इसमें किसी प्रकार की कमी न की। अत मे मलिकुत्तुज्जार भाग कर द्वीप मे प्रविष्ट हो गया और जब जहाज़ समुद्र के मार्ग से पहुचे तो गुजरात की सेना ने जल तथा स्थल पर अधिकार जमा लिया। मलिकुत्तुज्जार ने सुल्तान (११९) अहमद बहमनी के पास एक प्रार्थना-पत्र भेजकर सहायता की याचना की। सुल्तान अहमद बहमनी ने १० हज़ार अश्वारोही तथा ६० के लगभग मस्त हाथी अपने दोनो पुत्रो को देकर दौलताबाद से उन्हे विदा किया। अपने वज़ीर खाने जहा को भी इस आशय से उनके साथ कर दिया कि वे उसके परामर्श के अनुसार कार्य करते रहे। जब दक्षिण की सेना महायम के समीप पहुची, तो मलिकुत्तुज्जार द्वीप तथा खारबन्द से निश्चिन्त होकर दोनो शाहजादो की सेवा मे उपस्थित हुआ। विचार-विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि सर्वप्रथम थाना के क्षेत्र को मुक्त कराने का प्रयत्न करना चाहिये। यह निश्चय करके वह थाना की ओर रवाना हुआ।

महायम की विजय

शाहजादा जफर खा भी तैयार होकर थाना वालो की सहायतार्थ रवाना हुआ। जब दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई तो प्रात काल से सायकाल तक दोनो सेनाये युद्ध करती रही। अन्त मे दक्षिण की सेना पराजित हुई और मलिकुत्तुज्जार भाग कर जालना नामक स्थान तक पहुच गया। उसके आदमियो ने प्राणो के भय से महायम द्वीप को छोड दिया और जफर खा विजय तथा सफलता प्राप्त करके महायम द्वीप मे प्रविष्ट हो गया। मलिकुत्तुज्जार के कुछ अधिकारियों को, जो समुद्र के मार्ग से भाग गये थे, उसने जहाज़ भेज कर बन्दी बना लिया। कपडो तथा तन्को से कई नौकाओ को लाद कर उन्हे समुद्र के मार्ग से सुल्तान अहमद की सेवा मे भेज दिया और महायम की समस्त विलायत को अपने अधिकार मे कर लिया तथा अमीरो और विभिन्न समूह के नेताओ को बाट दिया।

सुल्तान अहमद बहमनी का बकलाना पर आक्रमण

जब सुल्तान अहमद बहमनी को यह हाल ज्ञात हुआ तो वह बडा दुखी हुआ और ईर्ष्या-वश सेना की व्यवस्था करके बकलाना की विलायत को, जो कि सूरत के बन्दरगाह के निकट है, नष्ट-भ्रष्ट

१ 'विजय करने का प्रयत्न किया'।
२ कांटों इत्यादि का बाड़ा अथवा घेरा।

करने के लिए रवाना हुआ। शाहजादा मुहम्मद खा ने, जोकि नद्रबार तथा सुल्तानपुर के क्षेत्र मे था, (१२०) अपने पिता के पास इस आशय का प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "सेवक ४ वर्ष तथा कई मास से सेवा मे उपस्थित होने से वचित है। दीर्घ समय व्यतीत हो जाने के कारण अमीरो तथा खानो के सेवक अपने अपने घरो को जा चुके हैं और इस क्षेत्र मे अधिक सेना नही रह गई है। सुना जाता है कि सुल्तान अहमद बहमनी बकलाना की विलायत मे पहुच गया है और इस ओर आक्रमण करने का विचार रखता है।"

सुल्तान अहमद का बहमनी के विरुद्ध प्रस्थान

जब सुल्तान अहमद के पास पत्र पहुचा तो उसने चम्पानीर का अवरोध अन्य समय के लिए स्थगित करके नादौत की ओर प्रस्थान किया और उस प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट करके निरन्तर यात्रा करते हुए नद्रबार कस्बे के क्षेत्र मे पडाव किया। शाहजादा मुहम्मद खा तथा अन्य अमीर जो उसकी सेवा मे थे, उपस्थित हुए और उन्हे उनकी श्रेणी के अनुसार विशेष कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित किया गया।

उसी स्थान पर ८३५ हि० (१४३१–३२ ई०) मे गुप्तचरो ने यह समाचार पहुचाये कि, "सुल्तान अहमद बहमनी, सुल्तान के पहुचने का समाचार पाकर एक सेना को अपने राज्य की सीमा पर नियुक्त करके गुलबर्गा की राजधानी की ओर लौट गया।" सुल्तान यह समाचार पाकर प्रसन्नतापूर्वक अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करते हुये पतनी नदी पार ही की थी कि उसे पुन समाचार प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान अहमद बहमनी ने तम्बोल[1] के किले को घेर लिया है और मलिक सआदत सुल्तानी प्राणो की बाजी लगाने मे कोई भी कमी नही करता है।" सुल्तान यह समाचार पाते ही उस स्थान से लौटकर शीघ्रातिशीघ्र तम्बोल के किले की ओर रवाना हुआ।

(१२१) जब सुल्तान अहमद बहमनी को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने पायको[2] के एक समूह को अत्यधिक खिलअत तथा इनाम द्वारा सम्मानित करके कहा कि, "किले की सहायतार्थ सेना आ रही है। यदि आज की रात्रि मे तुम लोग सफलता प्राप्त कर लोगे[3] तो तुम्हारी समस्त इच्छाये पूरी कर दी जायेगी और तुम्हे इतना अधिक इनाम दिया जायेगा कि निश्चिन्त हो जाओगे।" जब रात्रि का कुछ भाग व्यतीत हो गया तो पायक लोग किले के आचल मे पहुच गये और शनै शनै पत्थर की आड मे किले की दीवार पर पहुचे और किले के भीतर प्रविष्ट होकर द्वार को खोलने ही वाले थे कि मलिक सआदत सुल्तानी सावधान होकर वहा पहुँच गया। उसने उन लोगो की बहुत बडी सख्या को तलवार के घाट उतार दिया। शेष लोग किले की दीवार से फाद कर नष्ट हो गये। उसने[4] इतने ही को पर्याप्त न समझा अपितु द्वार को खोल कर उस मोर्चे पर जोकि द्वार के निकट था रात्रि मे छापा मारा। क्योंकि मोर्चे वाले सो गये थे अत. अधिकाश आहत एव छिन्न-भिन्न हो गये।

सुल्तान अहमद बहमनी का पलायन

इसी बीच मे सुल्तान अहमद गुजराती समीप पहुच गया। सुल्तान अहमद बहमनी किले को

१ एक पोथी के अनुसार 'रन्हतोल'।
२ पदाती।
३ मूल ग्रन्थ मे 'नकशे बाख्तेद' है जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं।
४ 'मलिक सआदत सुल्तानी'।

छोडकर उसका मुकाबला करने के लिये बढा और अपने अमीरो तथा सेना के सरदारों को बुलवा कर उसने कहा कि, "गुजरात की सेना दक्षिण की सेना पर कई बार विजय प्राप्त कर चुकी है। उसने महायम को अपने अधिकार मे कर लिया है। यदि इस बार भी मुझसे शिथिलता हुई तथा मैं पराजित हुआ तो दक्षिण का राज्य हाथ से निकल जायेगा।" सेना की पक्तिया ठीक करके उसने युद्ध प्रारम्भ कर दिया और सुल्तान अहमद गुजराती भी सेना तैयार करके मुकाबला करने के लिए आया। घोर युद्ध हुआ। दाऊद खा ने जोकि दक्षिण के प्रतिष्ठित अमीरो मे था युद्ध हेतु गुजरात वालो को चेतावनी दी और अजदुलमुल्क द्वारा बन्दी बना लिया गया। दोनो सेनाओ ने युद्ध मे अत्यधिक वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित किया। एक दिन के समाप्त हो जाने के उपरान्त वे वापसी के ढोल बजाते हुए अपनी अपनी सेना को चले गये। क्योकि दकिन की सेना के बहुत से लोग नष्ट हो गये अत सुल्तान अहमद बहमनी विवश होकर भाग खडा हुआ।

महायम के राय की पुत्री का शाहज़ादा फतह खा से विवाह

(१२२) दूसरे दिन सुल्तान अहमद तम्बोल के किले मे पहुचा और उसने मलिक सआदत सुल्तानी को सम्मानित किया। एक समूह को उसकी सहायतार्थ नियुक्त करके वह थानीर[1] की ओर रवाना हुआ और उस स्थान के किले का निर्माण सम्पन्न करा कर ग्रामो को नष्ट-भ्रष्ट करा दिया। मलिक ताजुद्दीन को मुईनुलमुल्क की उपाधि देकर उसने उसे वही नियुक्त कर दिया। तदुपरान्त वह सुल्तानपुर तथा नन्दबार के मार्ग से अहमदाबाद लौट आया और कुछ दिन उपरान्त महायम के राय की पुत्री का विवाह शाहज़ादा फतह खा से कर दिया।

'तारीखे बहमनी' मे तम्बोल के किले के अवरोध का विवरण अन्य प्रकार से मिलता है और दक्षिण के सुल्तानों के हाल मे उसकी चर्चा (अन्य प्रकार से) की गई है। संक्षेप मे वह इस प्रकार है कि जब अवरोध २ वर्ष तक होता रहा तो सुल्तान अहमद शाह गुजराती ने मित्रता तथा स्नेह के भाव प्रदर्शित करते हुए सुल्तान अहमद बहमनी की सेवा मे दूत भेज कर उससे प्रार्थना की कि "आप इस किले को मुझे प्रदान कर दे।" सुल्तान अहमद बहमनी ने स्वीकार न किया। सुल्तान अहमद ईर्ष्यावश अपनी विलायत की सीमा से प्रस्थान करके दक्षिण की विलायत मे प्रविष्ट हुआ और उसे नष्ट-भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान अहमद बहमनी को पुन अवरोध का अवकाश न मिला। मैं समझता हूँ कि 'तारीखे बहमनी' के लेखक ने इस घटना का सविस्तार उल्लेख स्पष्ट रूप से नही किया है और गुजरात के इतिहासो मे जो कुछ लिखा गया है वही ठीक है।

मेवाड की ओर आक्रमण

(१२३) रजब ८३६ हि० (फरवरी-मार्च १४३३ ई०) मे सुल्तान अहमद ने मेवाड[2] तथा नागौर की विजय हेतु चढाई की। जब वह हरपुर[3] कस्बे मे पहुचा तो उसने ग्रामो तथा कस्बो के विध्वस हेतु सेनाये भेजी और जिस जिस स्थान पर भी कोई मदिर दृष्टिगत हुआ उसे धराशायी कर दिया।

१ कुछ पोथियों मे 'तालनीर'।
२ मूल पुस्तक मे 'मेवात' है जो सम्भवत पुस्तक नकल करने वालों की भूल है।
३ कुछ पोथियों मे 'परपुर' तथा 'बरपुर'।

वहा से उसने दूगरपुर के कस्बे मे पडाव किया। वहा का राजा गणेश[1] पलायन के उपरान्त अपने इस कार्य से लज्जित होकर सुल्तान की सेवा मे पहुचा और उसने उसके आज्ञाकारियो मे सम्मिलित होकर उसकी सेवा मे उचित पेशकश[2] प्रस्तुत की। सुल्तान अहमद शाह कीलवारा की विलायत[3] को नष्ट-भ्रष्ट करके दीलवारा की विलायत मे प्रविष्ट हो गया और उसने दीलवारा के राजा राणा मूकल के गगनचुम्बी भवनो को मिट्टी मे मिला दिया और मदिरों तथा मूर्तियों को नष्ट करा दिया। कुछ विद्रोहियो, जो बन्दी बना लिये गये थे, को कठोर दण्ड देने के लिये हाथी के पाव के नीचे कुचलवा दिया गया। मलिक मीर सुल्तानी को वहा का खराज वसूल करने के लिए भेज कर वह राठौरो की विलायत की ओर रवाना हुआ। राठौरो के नेता[4] ने आज्ञाकारिता प्रदर्शित करते हुए कई लाख तन्के पेशकश के रूप मे प्रस्तुत किये। सुल्तान अहमद पेशकश को उन्हे प्रदान करते हुए उस स्थान के कुछ सैनिको को मवास[5] के कुछ महालों की थानेदारी के लिए नियुक्त करके राजधानी अहमदाबाद लौट गया।

जब सुल्तान किसी यात्रा तथा अभियान से लौटता था तो वह एक भव्य जश्न का आयोजन कराता था और अमीरो तथा सैनिकों मे से जो लोग उचित सेवाये सम्पन्न करते थे, उन्हे इनाम, प्रोत्साहन, वेतन-वृद्धि तथा पद-वृद्धि द्वारा सम्मानित करता था। गुजरात के छोटे बडे निवासियो, सूफियो तथा सहायता के पात्रों मे से एक-एक को वह अपनी कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित करता था। (१२४) इस बार भी उसने एक जश्न का आयोजन कराया और प्रत्येक को विशेष रूप से सम्मानित किया।

मालवा पर आक्रमण

८३९ हि० (१४३५–३६ ई०) मे मालवा से यह समाचार प्राप्त हुआ कि "महमूद खा बिन (पुत्र) मलिक मुगीस ने, जो सुल्तान होशग का वज़ीर था, सुल्तान होशग की मत्यु के उपरान्त गजनी खा शाहजादे की, जो अपने पिता की मत्यु के उपरान्त उसका उत्तराधिकारी बना था, विष देकर हत्या करा दी और स्वयं बादशाह हो गया है तथा सुल्तान महमूद की उपाधि धारण कर ली है।" उन्ही दिनों मे शाहजादा मसऊद खा मालवा से भाग कर सुल्तान की शरण मे पहुचा। सुल्तान अहमद सेना तैयार करके मालवा की ओर रवाना हुआ। मालवा का अधिकाश प्रदेश अपने अधिकार मे करके वह शाहजादा मसऊद खा को उसके पूर्वजो के सिहासन पर आरूढ करना चाहता था कि सयोग से सुल्तान अहमद की सेना मे महामारी फैल गई और लोगो को कफन-दफन का भी अवकाश न मिलता था। २ दिन मे कई हजार आदमी मर गये और सुल्तान अहमद भी रुग्ण हो गया, वह गुजरात की ओर लौट गया और मसऊद खा को दूसरे वर्ष आक्रमण करने के लिए आश्वासन दे गया। मालवा के सुल्तानो के वृत्तान्त मे इस विषय मे विस्तार से लिखा जा चुका है।

१ मूल पुस्तक मे 'कन्था' है। कुछ पोथियों मे इसे 'कनेसा' तथा 'कनेसाय' लिखा गया है। ये शब्द 'गणेश' के ही बिगड़े हुये रूप ज्ञात होते हैं।
२ उपहार।
३ राज्य।
४ राजा।
५ वह स्थान जहाँ विद्रोही तथा विरोधी शरण हेतु छिप जाते थे।

सुल्तान की मृत्यु

जब वह गुजरात पहुचा तो ४ रबी-उल-आख़िर ८४६ हि० (१२ अगस्त १४४२ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसका जन्म शुक्रवार की रात्रि मे १९ जिलहिज्जा ७९३ हि० (१७ नवम्बर १३९१ ई०) को राजधानी देहली मे हुआ था। इसका उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है। कहा जाता है कि प्रौढावस्था से मृत्यु के समय तक उसने कभी भी नमाज रोजा न त्यागा। उसमे बडे ही उत्तम गुण थे और वह ईश्वर का बडा भय करता था। वह २२ वर्ष की अवस्था मे सिंहासनारूढ हुआ और ३२ वर्ष ६ मास तथा २० दिन तक राज्य करके राजधानी अहमदाबाद मे दफन हुआ। उसकी मृत्यु के उपरान्त पत्रो तथा मन्शूरो मे उसे 'ख़ुदायगाने मगफ़ूर' लिखा जाता था।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन अहमदशाह

(१२५) जब शोक सबधी सब प्रथाये ३ दिन तक सम्पन्न हो चुकी तो अमीरो, वजीरों, नगर के प्रतिष्ठित लोगो ने ७ रबी-उल-आख़िर[1] ८४६ हि० (१५ अगस्त १४४२ ई०) को शाहजादा मुहम्मद ख़ा को सिंहासनारूढ किया और "गयासुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद शाह" उसकी उपाधि रखी। अत्यधिक दान-पुण्य किया गया और जो धन चत्र पर न्योछावर किया गया था वह सहायता के पात्रो को बाट दिया गया। अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो को उपाधिया एव पद प्रदान किये गये और उसके सिहासनारोहण के कारण राज्य को नये सिरे से रौनक प्राप्त हुई और दानपुण्य इस प्रकार प्रारम्भ हो गया कि सर्वसाधारण मुहम्मद शाह को "जरबख़्श"[2] कहने लगे।

महमूद ख़ां का जन्म

२० रमज़ान ८४९ हि० (२० दिसम्बर १४४५ ई०) को मुहम्मद शाह के एक पुत्र का जन्म हुआ और उसका नाम महमूद खा रखा गया। मुहम्मद शाह ने जश्नो का आयोजन कराया और अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो को इनाम द्वारा सम्मानित किया।

ईंदर पर आक्रमण

जश्न के उपरान्त उसने उपर्युक्त वर्ष मे ईदर को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए उस ओर प्रस्थान किया और उसके नष्ट-भ्रष्ट कराने मे उसने कोई कमी न उठा रखी। ईदर के राजा पूँजा के पुत्र हर राय ने विवश होकर अपनी पुत्री को पेशकश के रूप मे प्रस्तुत किया। वह पुत्री अत्यन्त रूपवती थी। सुल्तान मुहम्मद शाह उसके वश मे हो गया और उसने कुछ दिन उपरान्त यह प्रार्थना की कि "ईदर का किला मेरे पिता को प्रदान कर दिया जाय।" सुल्तान मुहम्मद शाह ने ईदर का किला हर राय को दे दिया (१२६) और बाकर की विलायत की ओर रवाना हुआ।

डूंगरपुर से पेशकश प्राप्त करना

डूंगरपुर का राजा गणेश[3] भाग कर पर्वत के खड्ड मे घुस गया। जब उसने यह देखा कि

१ मूल पुस्तक में '३ रबी-उल-आख़िर' है किन्तु इसे मृत्यु की तिथि के अनुसार '७ रबी-उल-आख़िर' होना चाहिये।
२ सोना अथवा धन दान करने वाला।
३ मूल पुस्तक मे 'कन्था' है।

उसकी विलायत नष्ट हो रही है तो वह मलिक मुनीर सुल्तानी, जिसकी उपाधि खाने जहा थी, के द्वारा मुहम्मद शाह की सेवा मे उपस्थित हुआ और पेशकश प्रदान करके अपनी विलायत की उसने रक्षा कर ली। सुल्तान मुहम्मद शाह वहा से अहमदाबाद लौट गया।

चम्पानीर पर आक्रमण

८५३ हि० (१४४९-५० ई०) मे उसने चम्पानीर के किले की विजय हेतु प्रस्थान किया और जब निरन्तर यात्रा के उपरान्त वह चम्पानीर के समीप पहुचा तो चम्पानीर का राजा राय गगदास अपने सहायको सहित किले से बाहर निकला और उसने अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया। अन्त मे वह भाग कर किले मे प्रविष्ट हो गया और सुल्तान मुहम्मद ने किले को घेर लिया और किले की विजय का प्रयत्न आरम्भ किया। राय गगदास ने सुल्तान महमूद खलजी को अपनी सहायतार्थ बुलवाया और यह निश्चय किया कि वह प्रत्येक मजिल पर १ लाख तन्के व्यय हेतु प्रदान करेगा। सुल्तान महमूद खलजी धन के लोभ मे उसकी सहायतार्थ चल खडा हुआ और जब वह धोद कस्बे मे पहुचा, तो सुल्तान मुहम्मद किला छोड कर अहमदाबाद की ओर रवाना हो गया तथा कोथरा नामक स्थान मे ठहर कर युद्ध के सामान की व्यवस्था करने लगा और सुल्तान महमूद को लाछन देने लगा। सुल्तान महमूद खलजी जिस स्थान पर पहुचा था वही ठहर गया और आगे न बढा।

मुहर्रम ८५५ हि० (फरवरी १४५१ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई। मृत्यु के उपरान्त उसे "खुदायगाने करीम" लिखा जाता था। उसने ७ वर्ष, ९ मास तथा ४ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन अहमद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) अहमद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) मुज़फ़्फ़र शाह

(१२७) जब अमीर तथा अन्य प्रतिष्ठित लोग ३ दिन तक शोक सबधी प्रथाओ को सम्पन्न कर चुके तो चौथे दिन ११ मुहर्रम ८५५ हि० (१३ फ़रवरी १४५१ ई०) को सुल्तान मुहम्मद शाह का ज्येष्ठ पुत्र, जिसकी अवस्था २० वर्ष की थी, सिंहासनारूढ हुआ और उसकी उपाधि सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह निश्चित हुई। उसका नाम अहमद था किन्तु वह अपनी इसी उपाधि से प्रसिद्ध है। सिहासनारोहण के समय उसने गुजरात के लोगो को, जो सहायता के पात्र थे, न्योछावर कर धन देकर, सतुष्ट किया और अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियो को शाही कृपादृष्टि, उपाधियो तथा पद-वृद्धि द्वारा प्रसन्न किया।

सुल्तान महमूद खलजी की पराजय

सयोग से जिस समय सुल्तान मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई और सुल्तान कुतुबुद्दीन अपने पिता का उत्तराधिकारी बना तो सुल्तान महमूद खलजी, जो चम्पानीर की सहायतार्थ आया था और अभी गुजरात की सीमा ही मे था अवसर पाकर शीघ्रातिशीघ्र गुजरात की विलायत मे प्रविष्ट हुआ। जब वह बरौदा के क्षेत्र मे पहुचा तो उस दिन सुल्तान महमूद की सेना का एक मस्त हाथी, बरनामा नामक ग्राम मे पहुच गया और वहा के ब्राह्मणों ने हाथी तथा महावत की हत्या कर दी। सुल्तान महमूद को प्रजा की वीरता पर आश्चर्य हुआ और प्रतिकार हेतु उसने बरनामा के कस्बे को नष्ट-भ्रष्ट करने का आदेश दे दिया।

क्योकि अभी कुतुबुद्दीन के राज्यकाल का प्रारम्भ ही था और सुल्तान महमूद बडे प्रभुत्व तथा शक्ति के साथ आया था अत सुल्तान कुतुबुद्दीन ने उस बक्काल से, जो उसका विश्वासपात्र था, परामर्श किया। उसने कहा कि "यही उचित होगा कि आप स्वय सोरठ की विलायत की ओर चले जाय। जब सुल्तान महमूद गुजरात के प्रदेश मे सेना छोड कर चला जायगा तो आप सुगमतापूर्वक उसकी सेना (१२८) को अपनी विलायत से निकाल सकेगे।" सुल्तान कुतुबुद्दीन ने उसके मतानुसार आचरण करना निश्चय किया किन्तु अमीर लोग, उसकी बात पर ध्यान न देते हुए, उसे युद्ध के लिए ले गये। जब विजय हो गई तो अमीरो ने बक्काल को दण्ड देना चाहा। उसने कहा कि, "यदि सुल्तान की इच्छा युद्ध करने की होती तो वह आप लोगो से परामर्श करता। क्योकि उसकी इच्छा पलायन करने की थी अत उसने मुझसे पूछा।"

सक्षेप मे, सुल्तान कुतुबुद्दीन ने कीरीख[1] कस्बे मे, जो अहमदाबाद से २० कोस पर है, सुल्तान महमूद से युद्ध किया। उस पडाव पर मलिक अलाउद्दीन सोहराब सुल्तानपुर का थानेदार, जो आवश्यकतानुसार सुल्तान महमूद से मिल गया था, भाग कर सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेवा मे उपस्थित हो गया और एक ही दरबार मे उसे ७ बार खिलअत द्वारा सम्मानित किया गया और अलाउलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई। जब ३ कोस की दूरी रह गई तो सुल्तान महमूद ने यह छन्द लिख कर सुल्तान कुतुबुद्दीन के पास भेजे --

छन्द

"सुना जाता है कि तू घर के भीतर बिना चौगान[2] के गेद खेलता है।
यदि तुझे किसी प्रकार का कोई दावा हो तो आ, यह गेद है और यह चौगान ॥"

सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सद्रे जहा को आदेश दिया कि वह इस छन्द का उत्तर लिखे। सद्रे जहा ने उत्तर मे लिखा --

छन्द

"यदि मै चौगान हाथ मे लूँगा तो तेरे सिर को गेद के समान कर दूँगा।
किन्तु मुझे इस बात से लज्जा आती है कि जो व्यक्ति मेरे बन्दीगृह मे हो
उसे क्या कष्ट पहुचाया जाय ॥"

इस छन्द मे इस ओर सकेत था कि सुल्तान होशग को, जो सुल्तान महमूद का स्वामी तथा आश्रयदाता था, सुल्तान मुजफ्फर शाह ने बहुत समय तक बन्दी रखा था और पुन उसको आश्रय प्रदान करके मालवा की विलायत दे दी थी। सुल्तान मुजफ्फर के राज्यकाल के विवरण मे इस घटना का उल्लेख किया गया है।

(१२९) कुछ दिन उपरान्त सफर ८५५ हि० (मार्च-अप्रैल १४५१ ई०) को सुल्तान महमूद रात्रि में छापा मारने के उद्देश्य से सवार हुआ और पराजित होकर मालवा चला गया। मालवा के सुल्तानो के इतिहास मे इसका सविस्तार विवरण दिया गया है। उसे मार्ग मे कोल तथा भील लोगो द्वारा अत्यधिक कष्ट पहुचा। सुल्तान कुतुबुद्दीन विजय तथा सफलता प्राप्त करके अहमदाबाद लौट गया।

१ सम्भवत 'कपर बज'।
२ बल्ला।

राणा कुम्भा की पराजय

कुछ समय उपरान्त वजीरो ने निवेदन किया कि नागौर के हाकिम "फीरोज खा बिन शम्स खा दन्दानी की मृत्यु हो गई है और उसके भाई मुजाहिद खा ने नागौर को अपने अधिकार मे कर लिया है।" शम्स खा बिन फीरोज खा ने अपने चाचा के भय से भाग कर राणा कुम्भा वल्द राणा मूकल से प्रार्थना की। राणा कुम्भा ने यह निश्चय किया कि "नागौर को मुजाहिद खा से निकाल कर उसे सौप दे किन्तु उसकी शर्त यह होगी कि वह नागौर के किले के ३ कगूरे[1] तुडवा डाले।" उसका कारण यह था कि इसके पूर्व फीरोज खा से युद्ध करते हुये मूकल अपमानित होकर पलायन कर चुका था और उस युद्ध मे ३ हजार राजपूत मारे गये थे। जब उसका पुत्र किले के ३ कगूरो को नष्ट कर देगा तो ससार वाले यही कहेगे कि राजा मूकल यद्यपि पलायन कर गया, किन्तु उसके पुत्र ने किले पर अधिकार जमा लिया और बदला ले लिया। शम्स खा ने विवश होकर यह बात स्वीकार कर ली और कुछ दिन उपरान्त राणा कुम्भा सेना को तैयार करके नागौर की ओर रवाना हुआ। मुजाहिद खा ने युद्ध की शक्ति न देखकर सुल्तान महमूद खलजी से प्रार्थना की। शम्स खा ने जाकर नागौर के किले पर अधिकार जमा लिया।

राणा कुम्भा ने सदेश भेजा कि वह अपने वचन को पूरा करे। शम्स खा ने अमीरो एव सरदारो (१३०) को बुलवा कर यह बात उनसे कही। कुछ लोगो ने कहा कि, "क्या अच्छा होता कि फीरोज खा के किसी पुत्री का जन्म हुआ होता ताकि वह अपनी मर्यादा की रक्षा कर सकती।" शम्स खा ने अपनी मान-मर्यादा की रक्षा हेतु उत्तर दिया कि, "जब तक अत्यधिक सिर न कट जायेगे तब तक कगूरे को नष्ट करना संभव न हो सकेगा।" राणा कुम्भा यह उत्तर सुनकर अपनी विलायत[2] की ओर चला गया और उसने अत्यधिक सेना एकत्र करके पुन नागौर पर आक्रमण किया। शम्स खा किले की टूट-फूट की मरम्मत करके सेना तथा सरदारों को छोड कर स्वय शीघ्रातिशीघ्र सहायता की याचना करने के लिए अहमदाबाद पहुचा। सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसकी पुत्री से विवाह कर लिया। विवाह के सम्पन्न होने के उपरान्त, उसने अमीनचन्द पायक[3], मलिक गदाई तथा कुछ अन्य अमीरो को नागौर की सहायतार्थ भेजा और शम्स खा को अपनी सेवा में रख लिया। एक दिन यह समाचार प्राप्त हुआ कि राणा कुम्भा ने नागौर वालो से युद्ध किया और वहा के अत्यधिक सैनिक मार डाले। किले के बाहर प्रत्येक स्थान पर जो आबादी थी उसे नष्ट कर दिया।

यह समाचार पाते ही सुल्तान कुतुबुद्दीन की मर्यादा को ठेस लगी और उसने ८६० हि० (१४५५-५६ ई०) को कुम्भलमीर के किले पर आक्रमण किया। जब वह आबू के किले के समीप पहुचा तो उपर्युक्त किले के राजा गीता देवरा ने उसकी सेवा मे उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "राणा कुम्भा ने आबू के किले को मुझसे जबरदस्ती छीन लिया है और अपने थानेदार को वहा नियुक्त कर दिया है। सुल्तान कुतुबुद्दीन मलिक शाबान सुल्तानी को, जिसकी उपाधि एमादुलमुल्क थी, आबू के किले के शासन-प्रबन्ध हेतु नियुक्त करके स्वयं अपने वास्तविक लक्ष्य की ओर रवाना हुआ। मलिक एमादुलमुल्क ने अनुभव-शून्यता के कारण तुरन्त युद्ध करके अत्यधिक लोगो की हत्या करा दी। जब सुल्तान को यह (१३१) समाचार प्राप्त हुआ तो उसने कहा कि, "लौटते समय आबू के किले को विजय करके मै उसे

१ शिखर।
२ राज्य।
३ 'नायक' उचित होगा।

गीता देवरा को प्रदान कर दूँगा।" उसने एमादुलमुल्क को बुलाने के लिए आदमी भेजे और स्वय सरोही के किले की ओर रवाना हुआ। जब वह सरोही के समीप पहुचा तो वहा के राजा ने युद्ध किया किन्तु पराजित हो गया।

सुल्तान उस स्थान से राणा कुम्भा की विलायत मे प्रविष्ट हो गया और उसने प्रत्येक दिशा मे विलायत पर आक्रमण तथा मदिरो को नष्ट करने के लिए सेनाये भेजी। जब वह कुम्भलमीर के किले मे पहुचा तो राणा कुम्भा ने किले से उतर कर युद्ध की अग्नि प्रज्वलित कर दी और बहुत से लोगो की हत्या करा दी और पुन किले मे प्रवेश किया। वह नित्यप्रति एक सेना बाहर भेज कर युद्ध किया करता था किन्तु सर्वदा पराजित हो जाता था। अत मे कुम्भा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए उचित पेशकश प्रस्तुत की और सुल्तान लौट कर अहमदाबाद चला गया।

सुल्तान महमूद खलजी से सँधि

इस वर्ष के अन्त[1] मे, सुल्तान महमूद खलजी ने, ताज खा को जो उसका एक बहुत बडा अमीर था, गुजरात मे सधि की वार्ता करने के लिए भेजा। गुजरात के अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियों ने जन-साधारण के कल्याण हेतु सुल्तान कुतुबुद्दीन को सधि करने पर तैयार कर लिया। सुल्तान महमूद की ओर से शेख निजामुद्दीन तथा मलिकुलउलमा सद्रे जहा चम्पानीर पहुचे और अहमदाबाद से काजी हुसा-मुद्दीन तथा कुछ अन्य लोग गये। उन्होने इस शर्त पर सधि कर ली कि राणा कुम्भा के राज्य का जितना भाग गुजरात के समीप है उसे सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना नष्ट-भ्रष्ट करे और मेवाड, अमहर तथा उस प्रदेश के स्थानो पर सुल्तान महमूद अधिकार जमा ले। आवश्यकता पड़ने पर वे एक दूसरे की सहायता करते रहे। इन शर्तो पर सधि-पत्र लिख लिया गया और बुजुर्गों ने उन पर अपनी तौकी[2] लगा दी।

राणा कुम्भा के विरुद्ध प्रस्थान

(१३२) ८६० हि०[3] (१४५५–५६ ई०) मे सुल्तान कुतुबुद्दीन ने कुम्भलमीर पर चढाई करने के लिए प्रस्थान किया और मार्ग मे आबू के किले को विजय करके प्रतिज्ञा के अनुसार गीता देवरा को दे दिया और वहा से कुम्भलमीर की ओर रवाना हुआ। राणा कुम्भा उस स्थान से निकल कर चित्तौड चला गया और मार्ग मे एक कठिन तथा दुर्गम स्थान देख कर ठहर गया। जब दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई तो युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो गई। जब रात्रि हुई तो दोनो ओर की सेनाये अपने-अपने स्थान को चली गईं और दूसरे दिन पुन युद्ध प्रारम्भ हुआ। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने स्वय रुस्तमो के समान वीरता प्रदर्शित की और राणा कुम्भा पर्वत मे छिप गया। दूतो को भेज कर उसने क्षमा याचना की। ४ मन सोना, कुछ हाथी तथा अन्य उत्तम वस्तुएँ पेशकश के रूप मे भेट करके प्रतिज्ञा की कि तदुपरान्त वह नागौर की विलायत को हानि न पहुचायेगा। सुल्तान कुतुबुद्दीन विजय तथा सफलता प्राप्त करके अहमदाबाद लौट गया।

अभी ३ मास भी व्यतीत न हुये थे कि पुन समाचार प्राप्त हुये कि "राणा कुम्भा ५० हज़ार अश्वा-रोहियो सहित नागौर को नष्ट करने के लिए रवाना हुआ है।" सुल्तान ने उसी दिन, जब कि समाचार

१ ८६७ हि० (१४५५-५६ ई०) के अन्त में।

२ मुहर।

३ फ़िरिश्ता के अनुसार '८६१ हि० (१४५६ ५७ ई०)'।

सुल्तान दाऊद शाह बिन अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह

जब अमीर तथा राज्य के उच्च पदाधिकारी सुल्तान की मृत्यु की शोक सबन्धी प्रथाओ को सपन्न कर चुके तो उन्होने शाहजादा दाऊद खा बिन अहमद शाह को, जो सुल्तान कुतुबुद्दीन का चाचा होता था, सिहासनारूढ किया। क्योकि ईश्वर ने राज्य उसके भाग्य मे न लिखा था अत वह अनुचित कार्य सम्पन्न करने लगा और कुछ ऐसी बाते करने लगा जिससे उसकी साहसहीनता पर प्रकाश पडता था। इससे सर्वसाधारण को उसके प्रति घृणा हो गई। उसने एक फर्राश को, जो उस समय जब कि वह शाहजादा था उसका पडोसी था, एमादुलमुल्क की उपाधि प्रदान करने का वचन दे दिया। अमीर तथा प्रतिष्ठित (१३५) लोग उसके उन कार्यो को देख कर, जिनके कारण अव्यवस्था पैदा होती थी, उससे घृणा करने लगे और उन्होने यह निश्चय किया कि उसे राज्य से क्षमा रखा जाय।[1] उन्होने मलिक एमादुलमुल्क बिन सोहराब को, सुल्तान मुहम्मद शाह की पत्नी मखदूमये जहा, जोकि हिन्दुस्तान के एक सुल्तान की पुत्री थी, के निवास-स्थान पर इस आशय से भेजा कि वह शाहजादा फतह खा बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह को लाकर सर्व सम्मति से सिहासनारूढ कर दे। मखदूमये जहा ने उत्तर दिया कि, "मेरे पुत्र को क्षमा करो, वह इस भारी बोझ को सहन न कर सकेगा।" सयोग से मलिक एमादुलमुल्क शाहजादा फतह खा की सेवा मे पहुच गया और उसे सवार करके शाही दौलतखाने मे लाया। अमीर लोगों ने उसकी सेवा मे उपस्थित होकर उसे बधाई दी और उसी दिन अर्थात् रविवार प्रथम शाबान ८६३ हि० (३ जून १४५९ ई०) को उसे सिहासनारूढ किया और उसकी उपाधि सुल्तान महमूद शाह निश्चित की।

सुल्तान दाऊद ने ७ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान महमूद शाह बिन मुहम्मद शाह

जब रविवार १ शाबान ८६३ हि० (३ जून १४५९ ई०) को महमूद शाह बिन मुहम्मद शाह अमीरो के परामर्श तथा सहमति से गुजरात के सिहासन पर आरूढ हुआ तो समस्त लोगो को उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम द्वारा लाभान्वित कराया। कहा जाता है कि उस दिन उसने अरबी, एराकी, तथा तुर्की घोडों, बहुमूल्य खिलअतो, जडाऊ पेटियो तथा तलवारो एव सोने की कटारो के अतिरिक्त १ करोड तन्का नकद दान किया।

कुछ अमीरो द्वारा षड्यत्र

(१३६) जब ६ मास व्यतीत हो गये, तो मलिक कबीर सुल्तानी जिसकी उपाधि अजदुलमुल्क, थी मौलाना खिज्र जिसकी उपाधि सफीउलमुल्क और प्यारा इस्माईल जिसकी उपाधि बुरहानुलमुल्क तथा झज्जू मुहम्मद जिसकी उपाधि हुसामुलमुल्क थी, अपनी दुष्टता के कारण उपद्रव तथा अशांति की योजना बनाने लगे। उन्होने यह निश्चय किया कि, "सर्वप्रथम मलिक शाबान एमादुलमुल्क को जिसके अधिकार मे विजारत की बागडोर है बीच से हटा दिया जाय", ताकि उनके कुत्सित विचारो को सफलता प्राप्त हो सके। इस उद्देश्य से उन्होने सुल्तान से एकान्त मे निवेदन किया कि, "एमादुलमुल्क की इच्छा है कि वह अपने पुत्र शिहाबुद्दीन को सिहासनारूढ कर दे और मलिक मुगीस खलजी के समान यह विचार है कि

1 'राज्य से पृथक् कर दिया जाय'।

राज्य के कार्य अपने वश मे स्थानान्तरित कर दे।" महमूद शाह ने कहा कि, "मै भी कई दिन से उसके ललाट पर यह बात देख रहा हू" और उसके बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। उसे अहमदाबाद द्वार के कोठे पर बन्दी बना दिया गया। उसने अपने ५०० विश्वासपात्रो को उसकी रक्षा हेतु नियुक्त कर दिया और अजबुलमुल्क तथा अन्य षड्यत्रकारी सफल होकर अपने-अपने घर चले गये।

सयोग से मलिक अब्दुल्लाह शहनये फील[1] ने, जोकि उसका विश्वासपात्र था, एकान्त मे उन धूर्तो के छल तथा धूर्तता के विषय मे निवेदन किया और कहा कि, "इन लोगो ने शाहजादा हसन खा को अपने घर ले जाकर प्रतिज्ञा की है तथा शपथ ली है और अपनी सफलता के लिए एमादुलमुल्क को बन्दी बनवा दिया है।"

सुल्तान महमूद ने पूछताछ करके जो वास्तविक बात थी उसे अपने हृदय मे बैठा लिया और अपने कुछ प्राचीन निष्ठावानो, उदाहरणार्थ हाजी मलिक बहाउद्दीन, मलिक कालू, तथा मलिक ऐनुद्दीन, को (१३७) तत्काल बुलवा कर मलिक अब्दुल्लाह से कहा कि, "तुम हाथियो को तैयार कर के दरबार मे उपस्थित करो" और मलिक शरफुलमुल्क से कहा कि "शाबान हरामखोर को दरबार मे इस आशय से उपस्थित किया जाय ताकि शहनये सियासत[2] उसे हाथी के पॉव के नीचे कुचलवा दे।" शरफुलमुल्क जब एमादुलमुल्क के पास जाने लगा तो रक्षको ने कहा कि, "अजबुलमुल्क की आज्ञा बिना जाने की अनुमति नही दी जा सकती।" उसने उपस्थित होकर (सुल्तान से) इस विषय मे निवेदन किया। सुल्तान महमूद ने बुर्ज के कोठे पर पहुच कर चिल्ला कर कहा कि, "शाबान को शीघ्र उपस्थित करो और हाथी के पॉव के नीचे डलवा दो।" जब लोगों ने यह बात सुल्तान महमूद के मुँह से सुनी तो बहुत से लोग उसे जाकर ले आये। जब सुल्तान की दृष्टि उस पर पडी तो उसने कहा कि "हरामखोर[3] को ऊपर ले आओ ताकि उससे कुछ पूछा जाय।" जब उसे ऊपर पहुचाया गया तो उसने कहा कि, "हलालखोर[4] की ग्रीवा तथा हाथ से इस आशय से जजीर पृथक् कर दी जाय कि मै हरामखोरो को दण्ड दे सकूँ।" जो अमीर उसे बन्दी बनाने मे व्यस्त थे उनमे से कुछ लोग यह हाल देख कर कोठे से कूद पडे और कुछ लोग क्षमा-याचना करने लगे।

जब यह समाचार अजदुलमुल्क तथा षड्यत्रकारियों को प्राप्त हुआ तो उन्हे अपने भविष्य के विषय मे बड़ी चिन्ता हुई और वे अपने कार्यों की व्यवस्था करने लगे। प्रात काल महमूद दरबार के झरोखे मे पहुचा और लोगो ने अभिवादन किया। सुल्तान ने एमादुलमुल्क को मक्खी उडाने के लिए रूमाल प्रदान कर दिया। मलिक अब्दुल्लाह शहना समस्त हाथियो को उपस्थित किए हुए था। लगभग ३०० स्वतत्र तथा दास व्यक्ति अभिवादन हेतु एकत्र हुए। इसी बीच मे विद्रोही अमीर, शहर के गुण्डो तथा अपने सहायको को सशस्त्र करके दरबार की ओर पहुचे। जब वे निकट आ गये तो एमादुलमुल्क, मलिक हाजी तथा अन्य सरदारो ने विशेष दासो को लेकर हाथियो द्वारा शत्रुओ पर आक्रमण किया। (१३८) अजबुलमुल्क तथा अन्य षड्यत्रकारी भाग खड़े हुए। सैनिको ने अपने अस्त्र-शस्त्र नगर की

१ शाही हाथियों की देख-रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।

२ कुछ पोथियों मे केवल 'शहना'। 'शहनये सियासत' का अर्थ मृत्यु दण्ड देने वाला मुख्य अधिकारी। सम्भवत यहाँ 'शहनये पील' होना चाहिये। शहनये पील का यह भी कर्तव्य होता होगा कि वह अपनी देख-रेख मे अपराधियों को हाथी के पाव के नीचे कुचलवाये।

३ राज-विद्रोही।

४ राज-भक्त।

गलियो तथा बाज़ारो मे फेक दिये और छिप गये। उनमे से हुसामुद्दीन अपने भाई, पटन के कोतवाल रुकनुद्दीन, के पास चला गया। वहा से दोनो भाई मालवा चले गये। अजदुलमुल्क एक व्यक्ति सहित करासियो के पास चला गया। क्योकि उसके आदमियो ने उस क्षेत्र के करासियो की हत्या कर दी थी अत उन लोगो ने उसे पहचान कर उसकी हत्या कर दी और धृष्टता से भरे उसके सिर को अहमदाबाद भेज दिया। बुरहानुलमुल्क मोटा होने के कारण न भाग सका और वह सरकन्ज[1] कस्बे के निकट साबरमती नदी के ऊबड-खाबड स्थानो मे छिप गया। सयोग से एक ख्वाजासरा शेख अहमद खत्तू के मजार के दर्शनार्थ जा रहा था। उसने बुरहानुलमुल्क को एक ऊबड-खाबड स्थान मे बैठे देखा और तुरन्त बन्दी बनाकर दरबार मे ले आया। सुल्तान के आदेशानुसार उसकी हत्या करा दी गई। मौलाना ख़िज्र सफीउलमुल्क को बन्दी बना कर देब भेज दिया गया।

जब इस षड्यत्र का दमन हो गया और मित्र तथा शत्रु का पता लग गया तो एमादुलमुल्क विजारत के उच्च पद से पृथक् हो गया और अनेक स्वतत्र मनुष्यो के समान ससार को त्याग कर एकान्तवासी हो गया, जागीर छोड कर वजीफेदार[2] हो गया। सुल्तान महमूद ने सैनिको को आश्रय देने के उद्देश्य से अपने ५२ प्राचीन दासो को आश्रय प्रदान किया और अल्प समय मे उसकी सेना सुल्तान कुतुबुद्दीन तथा पिछले सुल्तानो की सेना की अपेक्षा देहबिस्त[3] हो गई। उसन प्रत्येक प्राचीन दास को उपाधियो द्वारा सम्मानित किया और मलिक हाजी को एमादुलमुल्क की उपाधि तथा आरिजे लश्कर[4] नियुक्त किया। मलिक बहाउद्दीन को इख्तियारुलमुल्क, मलिक तुगान को फरहतुलमुल्क और मलिक ऐनुद्दीन को निजा-मुलमुल्क तथा मलिक साद बख्त को बुरहानुलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई।

मन्दू तक का प्रबन्ध

(१३९) ८६४ हि० (१४५९-६० ई०) मे वह सैर तथा शिकार हेतु कीरेज[5] के समीप तक गया और इस बार मन्दू की सीमा तक शिकार खेलता हुआ लौट आया। इसी बीच मे थानो तथा परगनो का प्रबन्ध करके पीडितो के प्रति न्याय किया।

निजाम शाह की सहायतार्थ प्रस्थान

८६६ हि० (१४६१-६२ ई०) में उसने पुन सैर तथा शिकार के लिए राजधानी अहमदाबाद से प्रस्थान किया और खारी नदी के तट पर, जो अहमदाबाद से १५ कोस पर है, पडाव किया। इस पडाव पर दक्षिण के वाली[6] निजाम शाह बिन हुमायूँ शाह का एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमे सुल्तान महमूद खलजी की शिकायत करते हुए उससे सहायता तथा कुमक की याचना की गई थी। महमूद शाह अपार सेना तथा ५०० हाथी लेकर निज़ाम शाह की सहायतार्थ रवाना हुआ। जब उसने नद्रबार तथा सुल्तानपुर मे पडाव किया तो उसे पुन पत्र प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान महमूद खलजी ने अपनी सख्या पर अभिमान के

१ 'सरकिज' होना चाहिये।
२ 'वृत्ति पर जीवन निर्वाह करने लगा'।
३ दस के स्थान पर बीस अथवा दुगुनी।
४ दीवाने अर्ज का एक अधिकारी। उसका कार्य सेना का निरीक्षण तथा सेना की भरती करना होता था।
५ एक पोथी के अनुसार 'कपरबज'।
६ शासक।

कारण निरन्तर यात्रा करते हुए फकीर पर आक्रमण किया।" जब दोनो सेनाओ मे युद्ध हुआ तो प्रथम बार उसकी सेना पराजित हो गई और हमारे सैनिको ने उसके शिविर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया तथा ५० हाथियो पर अधिकार जमा लिया किन्तु सुल्तान महमूद उस समय जब कि हमारे सैनिक लूट मे व्यस्त थे १२ हजार अश्वारोहियो सहित एक गुप्त स्थान से निकल पडा और सिकन्दर खा बुखारी तथा ख्वाजये जहा तुर्क ने जितना प्रयत्न वे कर सकते थे किया। सुल्तान महमूद स्वय एक बाण के मार की दूरी पर पहुच गया और उसने सिकन्दर खा के हाथी के मस्तक पर बाण मारा। उस हाथी ने पलट कर अपनी ही सेना को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और सिकन्दर खा तथा ख्वाजये जहा तुर्क फकीर के घोडे की बागडोर पकड कर (१४०) बीदर की ओर रवाना हो गये। फकीर इस समय फीरोजाबाद मे है और सुल्तान महमूद बीदर नगर को घेरे हुए है। क्योकि आप जैसे आश्रयदाता ने सहायता के लिए सकल्प कर लिया है अत आशा है कि आप शीघ्रातिशीघ्र पहुच जायेगे।"

सुल्तान महमूद दकिन की ओर चल खडा हुआ। मार्ग मे उसने सुना कि सुल्तान महमूद खलजी वापिस होकर मालवा की ओर चला गया है। सुल्तान महमूद आसीर तथा बुरहानपुर की विलायत मे इस आशय से प्रविष्ट हो गया कि पलायन का मार्ग रोक दे, और थालनीर के समीप, जो आसीर की विलायत मे है, पडाव किया। सुल्तान महमूद खलजी परिचित मार्ग को छोड कर गोडवाना के मार्ग मे प्रविष्ट हो गया और मार्ग के सकरे होने तथा जल के अभाव के कारण उसके आदमियो को बडा कष्ट भोगना पडा। कहा जाता है कि १००० से अधिक व्यक्ति जल के अभाव तथा मार्ग के सकरे होने के कारण नष्ट हो गये। महमूद शाह ने एक पत्र निजाम शाह को लिख कर भेजा कि, "जब कभी भी राज्य के नेत्रो की पुतली (तुझ को) को कुमक तथा सहायता की आवश्यकता हो तो तू सूचना दे दिया करना। सहायता भेजने मे किसी प्रकार का विलम्ब न किया जायेगा।" वह लौट कर अहमदाबाद चला गया।

सैनिको को भूमि

विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि इस सेना मे महमूद शाह के साथ ७० हजार चुने हुए अश्वारोही थे। उसने गुजरात का समस्त राज्य सिपाहियों को जागीर मे दे दिया और एक स्थान को भी अपने खालसे के लिए न छोडा। ४ वर्ष मे उसने अपने पूर्वजो के खजाने का दो भाग[1] व्यय कर डाला।

सुल्तान का निजाम शाह की सहायतार्थ पुन प्रस्थान

८६७ हि० (१४६२-६३ ई०) मे निजाम शाह का इस आशय का पत्र पुन प्राप्त हुआ कि "सुल्तान महमूद खलजी ने ९० हजार अश्वारोहियो सहित दक्षिण पर आक्रमण कर दिया है। क्योकि आप सहायता का वचन दे चुके है अत. आपके उच्च साहस से इस बात की आशा की जाती है कि आप अपने (१४१) वचन के पालन का प्रयत्न करेगे।" महमूद शाह अपनी सेना को तैयार करके दकिन (दक्षिण) की ओर रवाना हुआ। जब वह सुल्तानपुर तथा नद्रबार पहुचा तो सुल्तान महमूद खलजी दौलताबाद के समीप के स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट करके अपने स्थान को वापस चला गया। निजाम शाह के क्षमायुक्त पत्र तथा उपहार सुल्तान की सेवा मे पहुचे और वह भी लौट कर अहमदाबाद की ओर चला गया और उसने सुल्तान महमूद खलजी को पत्र लिखा कि, "मुसलमानो की विलायत पर अकारण आक्रमण करना इस्लाम के नियम तथा शिष्टाचार के विरुद्ध है और बिना युद्ध किये हुए वापस चले जाना व्यर्थ है। यदि आपने पुनः

1 एक पोथी मे 'एक भाग' दूसरी पोथी मे 'दसवां भाग'।

दक्षिण के निवासियो को कष्ट पहुचाने का प्रयत्न किया तो आप विश्वास रखे कि मैं भी मालवा के विनाश हेतु आक्रमण कर दूँगा।" सुल्तान महमूद खलजी ने उत्तर भेजा, "क्योकि आपने दक्षिण की सहायता करना निश्चय कर लिया है अत उस प्रदेश के निवासियो को अब कोई कष्ट न पहुचायेगा।"

बावर्द पर आक्रमण

८६९ हि० (१४६४-६५ ई०) मे सुल्तान की सेवा मे निवेदन किया गया कि, "बावर्द के जमीदार लोग तथा दून बन्दरगाह वाले जहाजो को हानि पहुचा रहे है। क्योकि गुजरात के सुल्तानो ने उन्हे कोई दण्ड कभी नही दिया है अत उन्हे विद्रोह की आदत हो गई है।" यद्यपि सुल्तान महमूद के हितैषी मार्ग की कठिनाई तथा किले की दृढता के कारण उस ओर आक्रमण करने मे सहमत न थे, किन्तु फिर भी वह उस ओर आक्रमण करने तथा विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए रवाना हो गया। जब वह अत्यधिक कठिनाई के उपरान्त किले के समीप पहुचा तो किले के सरदार ने युद्ध करते हुए अत्यधिक वीरता प्रदर्शित की। जब रात हो गई तो उसने कोट मे शरण ले ली। कई दिन तक नित्यप्रति युद्ध करता तथा वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करता रहा। सयोग से एक दिन सुल्तान महमूद सेना सहित बावर्द के ऊपर पहुच गया। जब लोगो की दृष्टि शाही चत्र पर पडी और उन्होने सेना की अधिकता देखी तो दीनता प्रकट करते हुए सधि कर ली और सरदार ने सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होकर शरण की प्रार्थना की। सुल्तान (१४२) महमूद ने अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उन लोगो के अपराधो को क्षमा कर दिया और सभी को शरण प्रदान कर दी। जब किले के सरदार तथा उस स्थान के समीप के प्रतिष्ठित लोग उसकी सेवा मे उपस्थित हुए तो उसने प्रत्येक को खिलअत द्वारा सम्मानित किया और सवार होकर किले की सैर के लिए रवाना हुआ। जब वह किले की सैर कर चुका तो किले के सरदार ने अत्यधिक पेशकश भेट की। उसी दरबार मे समस्त पेशकश उसने उसे वापस कर दी और विशेष खिलअत तथा सोने की पेटी उसे प्रदान की। वार्षिक पेशकश निश्चित करके उस ओर का शासन-प्रबन्ध उसे सौप दिया और सफलता प्राप्त करके अहमदाबाद लौट आया।

सुल्तान का न्याय

८७० हि० (१४६५-६६ ई०) मे वह अहमदनगर की ओर शिकार हेतु रवाना हुआ। मार्ग मे एक दिन किसी स्पष्ट कारण के बिना ही बहाउलमुल्क बिन (पुत्र) उलुग खा ने आदम सिलाहदार की हत्या कर दी और भाग कर ईदर की विलायत की ओर चला गया। सुल्तान अहमद ने, एमादुलमुल्क तथा अजदुलमुल्क को उसे बन्दी बनाने के लिए सेना सहित भेजा। वे लोग दो निरपराध व्यक्तियो को ले आये और उन्हे समझा दिया कि इस बात को स्वीकार कर ले कि "आदम सिलाहदार की हत्या हमने की है।" तदनुसार उन लोगो ने मार्ग से लौट कर निवेदन किया कि, "हम लोग आदम सिलाहदार के हत्यारे को बन्दी बना कर लाये है और वे इस बात को स्वीकार करते है। बहाउलमुल्क भाग कर ईदर की विलायत की ओर चला गया है।" सुल्तान महमूद ने आदेश दिया कि, "इन दो (निरपराध) व्यक्तियो की हत्या कर दी जाय।"

कुछ दिन उपरान्त जब यह विश्वास हो गया कि वे दोनो आदम सिलाहदार के हत्यारे न थे और (१४३) एमादुलमुल्क ने छल तथा धूर्तता से उन दोनो निरपराध व्यक्तियो को इस बात पर तैयार किया था कि वे यह अपराध स्वीकार कर ले तो सुल्तान ने आदेश दिया कि एमादुलमुल्क तथा अजदुलमुल्क की भी हत्या कर दी जाय और उनके तर्के तथा ग्रामो को खालसे मे सम्मिलित कर लिया जाय। सुल्तान ने

मलिक इख्तियारुलमुल्क को एतमादुलमुल्क की उपाधि देकर उसे नायबे गैबत[1] का पद प्रदान कर दिया और एमादुलमुल्क के समस्त सैनिको को उसे सौप दिया।

करनाल पर आक्रमण

८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे उसने करनाल की विजय हेतु, जो इस समय जूनागढ के नाम से प्रसिद्ध है, प्रस्थान किया। कहा जाता है कि लगभग २ हजार वर्ष से यह विलायत राय मदलीक के पूर्वजो के अधीन थी। सुल्तान मुहम्मद तुगलुक तथा सुल्तान अहमद शाह गुजराती के उपरान्त[2] किसी ने भी उस पर अधिकार नही जमाया। सुल्तान महमूद ने ईश्वर की सहायता पर विश्वास करके उस ओर प्रस्थान किया और मार्ग मे सोरठ[3] की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जब वह करनाल पर्वत के समीप पहुचा तो उस क्षेत्र के निवासियो ने अपनी धन-सपत्ति एव परिवार को दूर के स्थानो तथा वृक्ष से भरे हुए पर्वतो की ओर भेज दिया और स्वय किले मे बन्द हो गये। तुगलुक खा ने, जोकि सुल्तानो की सतान मे से था और सुल्तान का मामा था, इस विषय की सूचना सुल्तान को दी। सुल्तान महमूद दूसरे दिन शिकार के बहाने से उस ओर रवाना हुआ और मार्ग की कठिनाई के बावजूद वहा पहुच गया। अत्यधिक प्रयत्न तथा परिश्रम के उपरान्त राजपूत लोग भाग कर पर्वत तथा जगल के मार्ग से करनाल के किले मे पहुच गये। सैनिको को अत्यधिक दास तथा धन-सपत्ति प्राप्त हो गई। सुल्तान उस स्थान से उस समूह के मदिर की ओर गया। बहुत से राजपूतो ने, जोकि परव्हान कहलाते है, प्राणो की बलि देना निश्चय करके, मदिर मे तलवार तथा बर्छे से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया और पलक झपकाते ही तलवार के घाट उतार दिये गये। दूसरे दिन सुल्तान ने उस पडाव से प्रस्थान करके किले के नीचे (१४४) पडाव किया और सेनाये राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये भेजी। राय मदलीक ने दीनता प्रदर्शित करते हुए क्षमा याचना की और अत्यधिक पेशकश भेजी। सुल्तान महमूद किले की विजय को दूसरे वर्ष के लिए स्थगित करना उचित समझ कर उसे प्रोत्साहन देकर अहमदाबाद चला गया।

८७२ हि० (१४६७-६८ ई०) मे सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ कि, "राय मदलीक ने अभिमानवश चत्र धारण कर लिया है और रत्न तथा आभूषण अपने गले तथा हाथ मे बाध कर दरबार करता है।" यह समाचार पाते ही सुल्तान ने ४० हजार अश्वारोही प्रसिद्ध हाथियो सहित उसे दण्ड देने के लिए भेजे और विदा के समय अपने अमीरो तथा सेनापतियो से कहा कि, "यदि राय मदलीक आज्ञाकारिता स्वीकार कर ले और चत्र तथा बहुमूल्य रत्न जो मूर्तिपूजा के समय वह धारण करता है दे दे और निश्चित पेशकश अदा कर दे तो उसके राज्य को हानि न पहुचाई जाय।" जब गुजरात के अमीर राय मदलीक की विलायत के निकट पहुचे तो उन्होने कुछ दूतो को भेज कर जो कुछ सुल्तान ने कहा था उसे सदेश के रूप मे कहलाया। राय मदलीक ने दूतो का बडे सम्मान से स्वागत किया और चत्र, रत्न तथा बहुमूल्य आभूषण, जो वह मूर्तिपूजा के दिन तथा अन्य शुभ दिनो मे धारण करता था, अत्यधिक पेशकश सहित अमीरों की सेवा मे भेज दिये और उनकी तसल्ली करके उन्हे लौटा दिया। अमीर लोग जब सुल्तान की सेवा मे पहुचे तो जो कुछ वे लाये थे उन्हे उन्होने प्रस्तुत किया। सुल्तान ने भोग-विलास की गोष्ठी में, जो कुछ प्राप्त हुआ था उसे गायकों तथा कविता पाठ करने वालों को इनाम मे दे दिया।

१ वह अधिकारी जो सुल्तान की अनुपस्थिति मे राजधानी का शासन-प्रबन्ध चलाये।
२ सम्भवत: तात्पर्य 'अतिरिक्त' से है।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'सूरत'।

मालवा पर आक्रमण अस्वीकार करना

८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) मे मालवा के सुल्तान महमूद खलजी की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। अमीरो ने निवेदन किया कि, "जिस समय सुल्तान महमूद शाह बिन अहमद शाह की मृत्यु हो गई थी तो सुल्तान महमूद खलजी गुजरात की विलायत की विजय के उद्देश्य से कीरेज[1] के कस्बे तक पहुच गया था। (१४५) यदि ससार के स्वामी इस समय जब कि विजय की समस्त सामग्री उपलब्ध है उस ओर आक्रमण करे तो साधारण से प्रयत्न से मालवा की विलायत अधिकार मे आ जायगी।" सुल्तान ने कहा कि, "इस्लाम (के अनुसार) तथा मुसलमानो के लिए यह उचित नही है कि मुसलमान परस्पर युद्ध करे और प्रजा नष्ट हो। ऐसी दशा मे जब कि सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गई है और उसके राज्य के कार्य अव्यवस्थित है उसकी विलायत पर आक्रमण करना सौजन्य, वीरता तथा पौरुष के लिए उचित नही।" उसने शिकार के उद्देश्य से अहमदाबाद से निकल कर कुछ दिन जगल मे व्यतीत किये और पुन लौट कर अहमदाबाद मे पडाव किया।

सोरठ पर आक्रमण

८७४ हि० (१४६९-७० ई०) मे उसने पुन सोरठ[2] की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए सेनाये नियुक्त की जो अल्प समय मे सोरठ की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करके तथा अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त करके लौट आई।

सुल्तान की वीरता

इस वर्ष की महत्वपूर्ण घटनाओ मे एक घटना यह है कि एक दिन सुल्तान महमूद हाथी पर सवार होकर एरम उद्यान की ओर भ्रमण कर रहा था। मार्ग मे एक अन्य मस्त हाथी अपनी जजीर को तोड कर सेना की ओर बढा। अन्य हाथी उसे देखकर भाग खडे हुए और वह उस हाथी की ओर, जिस पर सुल्तान सवार था, बढा। सुल्तान के हाथी ने उससे दो तीन टक्करे ली और भाग खडा हुआ। सुल्तान के हाथी के पलायन करते समय उसने[3] उसके कन्धो पर एक टक्कर लगाई जिससे सुल्तान का पाव घायल हो गया और रक्त बहने लगा। उस समय सुल्तान ने पूर्ण वीरता प्रदर्शित करते हुए हाथी के मस्तक के ऊपर अकुश से प्रहार किया और रक्त प्रवाहित हो गया। हाथी ने दूसरी टक्कर मारी। सुल्तान ने अकुश से दूसरा वार किया। हाथी के मस्तक से फव्वारे के समान रक्त प्रवाहित था। हाथी ने चिघाडते हुए सुल्तान के हाथी के एक दूसरी टक्कर मारी और इस प्रकार अकुश खाया कि विवश होकर भाग खडा हुआ। सुल्तान कुशलतापूर्वक अपने महल की ओर चला गया और समस्त सहायता के पात्रो को न्योछावर तथा दान द्वारा लाभान्वित कराया।

सोरठ पर आक्रमण

(१४६) कुछ दिन उपरान्त सीमात के अमीरो को बुलवा कर सेना तैयार करके जूनागढ के किले तथा करनाल पर्वत की विजय हेतु रवाना हुआ। एक रात्रि तथा एक दिन मे सेना को ५ करोड धन वितरित कर दिया। उनमे से उसने ढाई हजार तुर्की, एराकी तथा अरबी घोडे लोगो को दे दिये जिनमे से कुछ का मूल्य १२ हजार तन्के तक था। ५ हजार तलवारे, ७०० जडाऊ पेटियाँ, १००७ सोने के खोल

१ 'कपरबंज'।
२ कुछ पोथियो के अनुसार 'सूरत'।
३ मस्त हाथी ने।

की कटारे इनाम मे दी और निरन्तर यात्रा करता हुआ उस ओर रवाना हुआ। जब वह सोरठ की विलायत मे पहुचा तो प्रत्येक दिशा मे विध्वस हेतु सेनाये भेज दी। राय मदलीक ने अत्यधिक विवशता तथा दीनता प्रकट करते हुए उसकी सेवा मे आकर निवेदन किया कि, "दास बहुत समय से आज्ञाकारिता प्रदर्शित करते हुए जीवन व्यतीत कर रहा है और मैंने कोई ऐसा कार्य नही किया है कि जिससे मेरे ऊपर प्रतिज्ञा अथवा वचन भग करने का आरोप लग सके। इस समय जितनी भी पेशकश का आदेश हो मै देने के लिये तैयार हू।" सुल्तान ने कहा कि, "इस समय मेरा यही विचार है कि इस विलायत को अपने अधिकार मे करके इस्लाम की पताकाओ को बलन्द करू ताकि इस्लाम की प्रथाये यहा प्रचलित हो सके। यदि तुम इस्लाम स्वीकार कर लोगे और किले को सौप दोगे तो फिर तुमसे कोई अन्य माग न की जायेगी।"

राय मदलीक को जब यह विश्वास हो गया कि यह सेना अन्य सेनाओ के समान नही है तो अवसर पाकर रात्रि मे वह भाग खडा हुआ और जूनागढ के किले मे प्रविष्ट हो गया। सुल्तान दूसरे दिन उस पडाव से प्रस्थान करके जूनागढ के किले के समीप उतरा और उसकी सेना से कुछ लोग पृथक् होकर किले के निकट पहुचे। राजपूतो का एक समूह बाहर निकला तथा युद्ध करके भाग खडा हुआ। दूसरे दिन भी युद्ध हुआ। तीसरे दिन सुल्तान स्वय किले की ओर रवाना हुआ और प्रात काल से सायकाल तक युद्ध होता रहा। चौथे दिन शाही बारगाह[1] को किले के फाटक के निकट लगाकर किले को समीप से घेर लिया गया और प्रत्येक दिशा मे साबात[2] लगा दिये गये। राजपूत लोग अधिकाश समय किले (१४७) से निकल-निकल कर लूट-मार करते थे और योग्य व्यक्तियो को नष्ट कर देते थे। एक दिन उन्होने आलम खा फ़ारुकी के मोर्चे पर आक्रमण किया और उसकी हत्या कर दी। सुल्तान महमूद ने अवरोध को किले के इतने समीप पहुचा दिया कि कभी-कभी मजनीक[3] के पत्थर सुल्तान के सिहासन के निकट गिरते थे। राय मदलीक ने यद्यपि सधि करने तथा पेशकश अदा करने का बडा प्रयत्न किया, किन्तु सुल्तान का किले की विजय के अतिरिक्त कोई अन्य विचार न था, अत उससे लाभ न हुआ।

मुस्तफाबाद का बसाया जाना

अत मे राय मदलीक ने दीनता प्रकट करते हुए क्षमा याचना की और किला उसे सौप दिया तथा समस्त राजपूतो सहित शरण हेतु करनाल पर्वत मे चला गया। सुल्तान महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए विलायत[4] मे अपना शासन-प्रबन्ध स्थापित करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन उपरान्त उसने करनाल पर्वत को घेर लिया। अत मे राय मदलीक विवश होकर सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने अपने आदमियों के लिए क्षमा-याचना करके करनाल पर्वत को भी उसे सौप दिया। क्योकि उसने कुछ दिन तक निरन्तर सुल्तान की सेवा में उपस्थित होकर सुल्तान के उत्तम गुणो का अवलोकन किया अत उसने एक दिन निवेदन किया कि, "शाह शम्सुद्दीन दरवेश की गोष्ठी के आशीर्वाद से इस्लाम तथा मुसलमानो के प्रति मेरे हृदय मे प्रेम आरूढ हो गया था। इस समय जब मै सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो इस्लाम की सत्यता का मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया। मेरी इच्छा है कि मै मुसलमान हो जाऊं।" सुल्तान महमूद ने उसे मुसलमान किया और उसकी उपाधि खाने जहा रखी। उस क्षेत्र मे

१ खेमा।
२ देखिये पूर्व पृ० १७८ नोट न० ३।
३ देखिये पूर्व पृ० १७८ नोट नं०२।
४ राज्य।

इस्लाम की उन्नति हेतु उसने मुस्तफाबाद नामक नगर का शिलान्यास किया और समस्त अमीरो को आदेश दिया कि वे वहा अपने निवास हेतु भवन बनवाये। अल्प समय मे मुस्तफाबाद नगर अहमदाबाद के समान हो गया।

अहमदाबाद के लिए कोतवाल की नियुक्ति

(१४८) जब अमीर लोग तथा सैनिक मुस्तफाबाद मे निवास करने लगे तो अहमदाबाद के चारो ओर जितने चोर तथा उपद्रवी थे वे अहमदाबाद की ओर रवाना हो गये और उन्होने डाका डालना तथा लूट मार करना प्रारम्भ कर दिया। प्रजा के आने जाने के मार्ग बन्द हो गये। जब यह समाचार सुल्तान महमूद को प्राप्त हुए तो उसने मलिक जमालुद्दीन बिन (पुत्र) शेख मलिक को, जोकि शिविर का कोतवाल तथा सिलाहखाने[1] का अधिकारी था, मुहाफिज खा की उपाधि, पताका तथा तास[2] प्रदान किये। उसे अहमदाबाद का शहना तथा कोतवाल नियुक्त करके विदा कर दिया।

मलिक जमालुद्दीन मुहाफिज खा ने अहमदाबाद नगर को अल्प समय मे अपनी इच्छानुसार सुव्यवस्थित कर दिया और ५०० चोरो को सूली दे दी। जब उसने यह सेवा उचित रूप से सम्पन्न कर ली तो उसे अन्य सेवाये भी सौपी गई और इस्तीफाये ममालिक[3] का पद भी उसे प्रदान कर दिया गया। शनै-शनै उसके कार्य इस सीमा को पहुच गये कि १७०० घोडे उसकी अश्वशाला मे एकत्र हो गये। जहा कही भी कोई उत्तम सैनिक होता वह उसका सेवक बन जाता। उसकी शक्ति इस सीमा तक बढ गई कि उसका पुत्र मलिक खिज्र, बाकर, ईदर तथा सरोही के राजाओ से पेशकश लेने लगा।

चित्तौड की ओर प्रस्थान

८७५ हि० (१४७०-७१ ई०) के प्रारम्भ मे सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुआ कि "चम्पानीर के राजा जयसिंह बिन (पुत्र) गगदास ने मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन की सहायता पर अभिमान करके बरोदा तथा दबोही[4] के विद्रोहियो को अपने राज्य मे शरण प्रदान कर दी है और स्वय विद्रोह करना (१४९) चाहता है। सुल्तान मुस्तफाबाद नगर से प्रस्थान करके जयसिह को दण्ड देने के लिए रवाना हुआ। मार्ग मे जब मुहाफिज खा उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ तो कोतवाली के साथ-साथ उसे विजारत का पद भी प्रदान कर दिया गया। वह अपने गुमाश्तों[5] को कोतवाली की सेवा पर नियुक्त करके स्वय विजारत का कार्य सम्पन्न करने लगा।

कच्छ पर आक्रमण

जब सुल्तान को कच्छ के जमीदारो के विद्रोह तथा मुसलमानो पर उनके प्रभुत्व के समाचार प्राप्त हुए तो वह चम्पानीर की विजय के विचार को त्याग कर भारी सेना लेकर उस ओर रवाना हुआ। जब वह खारी भूमि मे जो कि रन के नाम से प्रसिद्ध है पहुचा, तो वहा से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके एक दिन मे ६० कोस की यात्रा की और कुल सेना मे से ६०० अश्वारोहियो से अधिक उसके साथ न पहुच

१ शस्त्रागार।
२ घटा बजवाने का अधिकार।
३ Auditor General, वह व्यय पर नियन्त्रण रखता था।
४ मूल पुस्तक मे 'बरोदरा' तथा बोधी है।
५ प्रतिनिधियों।

सके। जब वह उस विनाशकारी भूमि से निकला और शत्रु सामने से प्रकट हुए तो कहा जाता है कि उनके साथ ४० हजार धनुर्धर थे। सुल्तान ने अपनी सेना की सख्या कम होने तथा शत्रु की सेना के अधिक होने के बावजूद अस्त्र-शस्त्र धारण किया। क्योकि शत्रु को सुल्तान की वीरता तथा पौरुष का ज्ञान था अत उन्होने निष्ठा प्रदर्शित करते हुए क्षमा-याचना की और सुल्तान ने उन लोगो को क्षमा करते हुए अत्यधिक पेशकश लेकर सधि कर ली। उनके प्रतिष्ठित लोगों को अपने साथ मुस्तफाबाद लाकर इस्लाम की शिक्षा देने लगा। उसने प्रत्येक को इनाम तथा कृपाओं द्वारा प्रसन्न किया और उन्हे विदा कर दिया। जिन लोगो ने स्वेच्छा से उसकी सेवा करना निश्चय किया उन्हे उसने अपने साथ रख लिया और प्रत्येक को उचित जागीर तथा सेवाये प्रदान की।

सिन्ध पर आक्रमण

८७७ हि० (१४७२–७३ ई०) मे सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुआ कि, "सिन्ध की विलायत के समीप ४० हजार विद्रोही धनुर्धर एकत्र हो गये है और ग्रामो तथा सीमान्त के स्थानो को हानि पहुचा रहे है।" सुल्तान महमूद सेना एकत्र करके उस ओर रवाना हुआ। जब वह खारी भूमि (१५०) की ओर पहुचा तो उसने आदेश दिया कि प्रत्येक अश्वारोही अपने साथ दो घोडे रखे और ७ दिन के खाने-पीने की सामग्री अपने साथ ले ले। ईश्वर की कृपा पर विश्वास करके वे उस खतरनाक भूमि क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गये और प्रति दिन ६० कोस की यात्रा करने लगे। जब वे सिन्ध की विलायत मे पहुचे तो विद्रोही छिन्न-भिन्न हो गये और उस समूह का कोई चिह्न न रहा। बिना किसी कठिनाई के उसने सिन्ध प्रदेश को अपने अधिकार मे कर लिया। कुछ अमीरो ने निवेदन किया कि "क्योकि हम लोग अत्यधिक परिश्रम तथा कठिन यात्रा करके इस स्थान पर पहुचे है अत यह उचित होगा कि इस राज्य मे हाकिम तथा दारोगा नियुक्त कर दिये जाय।" सुल्तान ने कहा कि "क्योकि मखदूमये जहा सिन्ध के सुल्तान के वश से थी अत उनके प्रति दया करना हमारे लिए परमावश्यक है और उनके राज्य पर अधिकार जमाना उचित नही।" सिन्ध नदी के तट पर शिकार खेलने के उपरान्त वह मुस्तफाबाद लौट आया।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान बन्दर जगत[1] जो कि ब्राह्मणो का पूजागृह है विजय करने के विषय मे सोचने लगा। वह मार्ग की कठिनता के कारण उपेक्षा किया करता था। एक दिन सयोग से मौलाना मुहम्मद समरकन्दी नामक एक विद्वान् अपने दो पुत्रो सहित नगे सिर तथा नगे पाव सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि, "हम लोग दक्षिण से समरकन्द की यात्रा के विचार से जहाज पर बैठकर हुरमुज्र की ओर रवाना हुए। जब हम जगत के समीप पहुचे तो कुछ लोगों ने अस्त्र-शस्त्र से भरी हुई नौकाओ सहित हमारा मार्ग रोक लिया और हमे नष्ट कर दिया। मुसलमान स्त्रियो तथा बालकों को बन्दी बना लिया। इन पुत्रों की माता भी बन्दी बना ली गई।" सुल्तान महमूद ने मौलाना के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुये उसे अहमदाबाद भेज दिया और उसकी वृत्ति निश्चित कर दी। बिदा के समय उससे कहा कि, "तुम सतुष्ट रहो। जो कुछ तुम्हारा छिन गया है वह तुम्हे (१५१) उसी प्रकार लौटा दिया जायगा और वे लोग भी उचित दण्ड के पात्र होगे।" उसने अपनी मर्यादा की रक्षा हेतु अमीरो तथा विभिन्न समूहो के सरदारो को अपने पास बुलाकर कहा कि, "यदि कयामत[2] मे मुझसे पूछा गया कि तुम्हारे पडोस में काफिर लोग इस प्रकार का अत्याचार करते थे और

१ सम्भवतः 'द्वारिका'।
२ मुसलमानों, ईसाइयो आदि के विश्वासानुसार प्राणियो के कर्मों का लेखा लेने का दिन। प्रलय।

तुमने शक्ति के बावजूद उपेक्षा की तो मैं क्या उत्तर दूँगा ?" अमीरो ने उसके प्रति शुभ कामनाये प्रकट करते हुए कहा कि, "दासो के लिये आज्ञाकारिता के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नही। उन लोगो को नष्ट करने का सकल्प कर लेना चाहिये।"

सुल्तान ने यह सकल्प करके १६ जिलहिज्जा ८७७ हि० (१४ जुलाई १४७३ ई०) को बन्दर जगत की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के सकरे तथा जगलो के अधिक होने के कारण वे वडी कठिनाई से जगत पहुचे। काफिर लोग भाग कर बैत नामक द्वीप मे चले गये। उस भूमि पर सर्पो की बहुत बडी सख्या दृष्टिगत हुई। जिस स्थान पर सुल्तान का सरापर्दा था वहा एक पहर मे ७०० सर्प मारे गये। उस द्वीप मे अत्यधिक सिहो, बबरो तथा चीतो ने लोगो को कष्ट पहुचाया। बहुत से वन-पशुओ की हत्या कर दी गई। जगत के मदिर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। सुल्तान महमूद ४ मास तक वहा ठहरा रहा। इसी बीच मे उसने बहुत से वीर सैनिको को तोपखाना सहित तैयार करके बैत द्वीप की ओर भेजा। बैत द्वीप के लोग भी नौकाओ मे बैठ कर युद्ध के लिए निकले ? किन्तु अत मे भाग कर बैत द्वीप मे चले गये। वीर योद्धा जहाजो पर बैठे हुए बैत द्वीप मे प्रविष्ट हुए और बैत के किले को विजय करके अत्यधिक राजपूतो की हत्या कर दी। वहा का राजा राय भीम जहाज मे बैठ कर किसी ओर भाग गया। सुल्तान महमूद ने बहुत से लोगो को जहाजो पर बैठा कर उसके पीछे भेजा और स्वय बैत नगर मे प्रविष्ट होकर, (१५२) मुसलमान बन्दियो को मुक्त करा दिया और अत्यधिक धन-सपत्ति प्राप्त की। मलिक तुगान को, जिसकी उपाधि फरहतुलमुल्क थी, उस स्थान की थानेदारी हेतु नियुक्त करके विजय तथा सफलता प्राप्त करके मुस्तफाबाद लौट गया। शुक्रवार १३ जमादि-उल-अव्वल ८७८ हि० (६ अक्तूबर १४७३ ई०) को, जो लोग राय भीम का पीछा करने के लिए गये थे, वे उसे बन्दी बनाकर ले आये और दरबार के समक्ष खडा कर दिया। सुल्तान महमूद ने मौलाना मुहम्मद समरकन्दी को अहमदाबाद से बुलवाया और राय भीम को अपमानित तथा तिरस्कृत करके उसे (मौलाना समरकन्दी) को दिखाया और उसे (राय भीम) मुहाफिज खा के पास इस आशय से भेज दिया कि वह उसके ४ टुकडे करके अहमदाबाद के चारो ओर लटका दे ताकि अन्य विद्रोहियो को शिक्षा प्राप्त हो।

समुद्री डाकुओ से युद्ध

उसी वर्ष रजब मास (नवम्बर-दिसम्बर १४७३ ई०) मे वह एक सेना को मुस्तफाबाद में नियुक्त करके चम्पानीर के किले की विजय हेतु रवाना हुआ। मार्ग मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि, "व्यापारियो[1] के एक समूह ने अत्यधिक नौकाये एकत्र कर ली है और वे समुद्री यात्रियो को हानि पहुचाना चाहते है।" यह समाचार पाते ही उसने कुछ जहाज तैयार कराये और स्वय कुछ वीरो को लेकर ईश्वर पर आश्रित होकर रवाना हो गया। जब वह व्यापारियो के जहाजो के समीप पहुचा तो वे लोग भाग खडे हुए और उसने कुछ नौकाओं को छीन लिया। वहा से प्रस्थान करके उसने खम्बायत नामक बन्दरगाह पर पडाव किया और शाबान ८७८ ई० (दिसम्बर १४७३ ई० जनवरी १४७४ ई०) मे राजधानी अहमदाबाद को लौट गया।

१ एक पोथी के अनुसार 'मलाबारी'।

कुछ नियुक्तिया

(१५३) ८७५ हि०[1] (१४७०-७१ ई०) मे मलिक बहाउद्दीन एमादुलमुल्क को सुनधरा[2] थाने मे, किवामुलमुल्क को कोधरा कस्बे के थाने मे, फरहतुलमुल्क को बैत किले के थाने तथा जगत थाने मे, एव मलिक निजामुलमुल्क को थानेसुर[3] थाने मे भेजा गया व खुदावन्द खा को वजीरे ममालिक नियुक्त किया गया और उसे शाहजादा अहमद खा की सेवा मे अहमदाबाद मे छोड कर वह स्वय जूनागढ तथा उसके समीप के स्थानो को विजय करने के लिए रवाना हुआ।

खुदाबन्द द्वारा षड्यंत्र

एक दिन खुदावन्द खा ने रायराया से निष्ठापूर्वक एकान्त मे कहा कि, "हम लोग सुल्तान महमूद के आक्रमणो से परेशान हो गये है। कोई वर्ष तथा मास ऐसा नही व्यतीत होता जब वह कोई बात बीच मे डालकर आक्रमण न करता हो। यदि आप अपने सहायको तथा मेरे ५०० सैनिको को अपने साथ लेकर एमादुलमुल्क के निवास-स्थान पर जाकर उसे बीच से हटा दे तो मै कल शाहजादा अहमद खा को सिंहासनारूढ कर दूँ। एमादुलमुल्क की हत्या के लिए इससे अधिक कोई उचित अवसर न मिलेगा। कारण कि उसके सहायक थाने गये हुए है। मैने यह बात शाहजादा अहमद खा से कह दी है, वह भी इस बात से सतुष्ट है और उसने इसे स्वीकार कर लिया है।" रायराया ने कहा कि, "एमादुलमुल्क सदैव से ही मेरे प्रति निष्ठावान् रहा है और मुझसे गोपनीय बातो की चर्चा किया करता है। क्योकि वह सुल्तान महमूद से रुष्ट तथा खिन्न है अत यह विश्वास है कि वह इस बात मे हमारा साथ देगा और उसकी सहायता से इस कार्य को अधिक दृढता प्राप्त हो जायेगी।" यद्यपि खुदावन्द खा ने उसे बहुत मना किया किन्तु इसमे कोई लाभ न हुआ और रायराया ने एमादुलमुल्क की मित्रता पर विश्वास करके सर्वप्रथम उससे (१५४) एकान्त मे कुरान की शपथ ली कि वह इस रहस्य को न खोलेगा, तदुपरान्त उसने यह बात कही। एमादुलमुल्क ने जब यह देखा कि उसके आदमी जागीर को गये हुए है तो उसने तुरन्त यह बात स्वीकार कर ली और कहा कि, "इस बात मे मै खुदावन्द खा का साथ दूँगा किन्तु मै यह सोचता हू कि रमजान मास व्यतीत हो जाय। तदुपरान्त इस विषय मे कोई प्रयत्न किया जाय।" रायराया को यह बात बडी अच्छी लगी और उसने खुदावन्द खा की सेवा मे यह सदेश भेज दिया।

रायराया के विदा होने के उपरान्त एमादुलमुल्क ने अपने पुत्रो[4] को एकान्त में बुलवा कर कहा कि, "सुल्तान कुतुबुद्दीन के राज्यकाल मे मै इस बात की इच्छा किया करता था कि कोई घोडा प्राप्त हो जाय किन्तु वह न प्राप्त होता था। इस समय सुल्तान महमूद के सौभाग्य से इस वश मे कोई मुझसे अधिक श्रेष्ठ नही।" उसने तत्काल मलिक फरहतुलमुल्क को, जो सरखीज कस्बे मे पडाव किये हुए था, आदमी भेजकर बुलवाया और रखपाल[5] नामक स्थान मे मलिक किवामुलमुल्क को भी पत्र भेजा कि वह कुछ दिन तक उस पडाव से प्रस्थान न करे। प्रात काल मलिक फरहतुलमुल्क ५०० अश्वारोहियो

१ जिस क्रम से घटनाओं का उल्लेख हो रहा है उसके अनुसार यह तिथि ठीक नही। इसे ८७६ हि० (१४७४-७५ ई०) होना चाहिये।
२ यह 'सुनखिर' भी हो सकता है।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'कीज'।
४ एक पोथी मे 'मलिक मुन्ना'।
५ एक पोथी के अनुसार 'रखाल' तथा एक पोथी के अनुसार 'रखयाल'।

सहित एमादुलमुल्क के निवास-स्थान पर पहुचा और एमादुलमुल्क कुछ देर तक उससे वार्तालाप करता रहा। तदुपरान्त उसने मलिक फरहतुलमुल्क को उसके निवास-स्थान को भेज दिया। कुछ समय उपरान्त उसने मुहाफिज खा कोतवाल शहर को बुलवा कर कहा कि, "क्योकि हम लोगो मे रिश्तेदारी हो गई है अत हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम एक दूसरे के प्रति निष्ठावान् रहने का प्रयत्न करते रहे। आप इसी प्रकार निष्ठावान् रह सकते है कि आप नगर के विषय मे सचेत रहे । कही कोई उपद्रव न उठ खडा हो। ईद के दिन आप अपनी सेना तथा परिजनो को तैयार करके शाहजादा अहमद खा की सेवा मे ईदगाह को जाय और आधे दिन तक नगर की रक्षा का अत्यधिक प्रयत्न करते रहे।"

(१५५) खुदावन्द खा इन बातो को सुनकर शकित हो गया और उसने रायराया को अपने पास बुलवा कर कहा कि, "मै न कहता था कि एमादुलमुल्क इस कार्य के लिए तैयार न होगा। अब ऐसा समय आ गया है कि हम लोगो के घरो का विनाश हो जायगा।" जब ईद हो गई और एमादुलमुल्क की सेना पहुच गई तो खुदावन्द खा ने भय के कारण इस बात की चर्चा न की और यह योजना उसी प्रकार गुप्त रही। कुछ दिन उपरान्त मुस्तफाबाद मे यह समाचार पहुचे कि, "ईद के दिन खुदावन्द खा ने एमादुलमुल्क की हत्या कर दी और समस्त अमीर उससे मिल गये और शाहज़ादा अहमद खा को सिहासनारूढ कर दिया।" एक धृष्ट विश्वासपात्र ने यह समाचार तत्काल सुल्तान महमूद को पहुचा दिये।

सुल्तान ने यह समाचार पाकर कैसर खा तथा फीरोज़ खा को एकान्त मे बुलवा कर कहा कि, "इससे पूर्व शाहजादे के रुग्ण होने के समाचार प्राप्त हुये थे। आज शाहजादे की ओर से मुझे बडी ही चिन्ता है। दो कोस आगे जाओ और अहमदाबाद से जो कोई भी आ रहा हो उससे ठीक-ठीक बात का पता लगाकर आओ।" मलिक सईदुलमुल्क जब कुछ दूर आगे गया तो उसने अपने एक सबधी को अहमदाबाद से आते देखा। उसने उससे सब हाल पूछा। उसने कहा कि, "मै ईद के दिन अहमदाबाद मे था। शाहजादा नमाज के लिए पहुचा। खुदावन्द खा तथा मुहाफिज खा उसके साथ थे। जब शाहजादा लौटकर राजभवन मे पहुच गया तो दो घडी दिन तक मुहाफिज खा दरबार मे उपस्थित रहा किन्तु शहर वाले कहते है कि एमादुलमुल्क अमीरो को अपने थानो मे जाने की अनुमति नही देता और सब लोग अपने-अपने घरो मे ठहरे हुए है।" मलिक सईदुलमुल्क ने जाकर सब हाल सुना दिया। सुल्तान ने कहा कि, "किसी ने झूठ कहा था कि शाहजादा रुग्ण है।" दो तीन दिन उपरान्त उसने कैसर खा तथा फीरोज खा को एकान्त मे बुला कर सब हाल सुनाया और कहा कि, "मै लोगो से कह दूँगा कि मै हज करने जाना चाहता हू। जो कोई मेरे इस विचार की सराहना करेगा उसके विषय (१५६) मे मै यह समझ लूँगा कि वह मुझे नही चाहता।" कुछ दिन उपरान्त उसने जहाजो को तैयार करने का आदेश दिया और जहाज के अधिकारियो को कई लाख तन्के इस आशय से प्रदान किये कि वे उनसे मक्का मे दान हेतु चीजे क्रय करे। वह मुस्तफाबाद से खोखा[1] पहुच कर नौका मे खम्बायत के बन्दरगाह को जाने के लिए उतर पडा।

जब यह समाचार अहमदाबाद पहुचा तो समस्त अमीर उसकी सेवा मे उपस्थित हुए। सुल्तान ने कहा कि, "शाहजादा अब बहुत बडा हो गया है और अमीर लोग मेरी इच्छानुसार शिक्षित हो गये है। मै राज्य की ओर से निश्चिन्त हो गया हू। मेरी इच्छा है कि मै हज के लिये चला जाऊ।" एमादुलमुल्क ने कहा कि, "आप एक बार अहमदाबाद चले चले और इसके उपरान्त जो कुछ उचित हो उस पर आचरण करे।" सुल्तान समझ गया कि अभी प्याला आधा भरा है और वह अहमदाबाद की ओर रवाना हो गया।

१ 'घोघा' उचित है ।

शहर पहुंच कर एक दिन उसने समस्त अमीरो को बुलवाया और कहा कि, "मुझे हज हेतु जाने दो और जब तक तुम लोग उत्तर न दोगे मै भोजन न करूगा।" अमीर लोग समझ गये कि, "सुल्तान इस बात मे हमारी परीक्षा करना चाहता है।" सब लोग मौन रहे। जब सूर्य मध्याह्न की ऊचाई पर उठ गया तो एमादुलमुल्क ने अमीरो से कहा कि, "सुल्तान भूखा है। उत्तर देना चाहिये।" निजामुलमुल्क ने सुल्तान से निवेदन किया कि, "जिस प्रकार शाहजादे को अत्यधिक निपुणता प्राप्त हो गई है उसी प्रकार दास के पुत्र मलिक बुद्ध को भी बडा अनुभव हो गया है और इस समय तक उसे शीतोष्ण का ज्ञान हो गया है। आशा है कि आप दास के थाने को उसे सौप देगे और दास को इस शुभ यात्रा मे अपनी सेवा से पृथक् न करेगे।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि यह बात प्राप्त हो जाय तो बडे सौभाग्य का कारण होगी किन्तु राज्य के कार्य तेरे बिना सम्पन्न नही हो सकते। जाकर अमीरो से उचित उत्तर ला।" निजामुलमुल्क ने अमीरो के पास उपस्थित होकर इस बात का उल्लेख किया किन्तु किसी ने कोई उत्तर न दिया। एमादुल-(१५७) मुल्क ने जब यह देखा कि कोई भी उत्तर नही देता और सुल्तान भूखा है तो उसने निजामुलमुल्क से कहा कि, "क्योकि आप हम सब मे वृद्ध है अत जो उचित हो वह आप समस्त अमीरो की ओर से जाकर निवेदन कर दे कि ससार के स्वामी सर्वप्रथम खजाने तथा अन्त पुर की रक्षा हेतु चम्पानीर के किले को विजय कर ले तदुपरान्त हज करने के लिए जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो ऐसा ही होगा।" सुल्तान ने भोजन किया किन्तु उसने कैसर खा को एकान्त मे बुलवाकर कहा कि, "एमादुलमुल्क सच्ची बात नही कर रहा है। मैने यह निश्चय कर लिया है कि जब तक वह सच्ची बात न कहेगा मै उससे बात न करूगा।"

जब कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो एक दिन एमादुलमुल्क ने एकान्त मे कहा कि, "दास को अपने अपराध का ज्ञान नही।" सुल्तान ने कहा, "जब तक तू सच बात न कहेगा मै तुझसे बात न करूगा।" एमादुलमुल्क ने कहा कि, "मुझे कुरान की शपथ दी गई है।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि निष्ठा हेतु प्राण भी चले जायें तो जाने दे।" एमादुलमुल्क ने विवश होकर सच बात कह दी। सुल्तान ने धैर्य धारण किया और खुदावन्द खा को केवल यह हानि पहुचाई कि अपने एक कबूतर[1] का नाम उसने खुदावन्द खा रख दिया।

एमादुलमुल्क का जालौर की ओर भेजा जाना -

कुछ दिन उपरान्त उसने नहरवाला पर आक्रमण किया और वहा से मलिक एमादुलमुल्क को जालौर तथा साजौर की विजय हेतु भेजा और कैसर खा को उसके साथ कर दिया। एमादुलमुल्क ने बिदा होकर शेख हाज़ी रजब के शुभ मजार के समीप पडाव किया। रात्रि मे मुजाहिद खा वल्द खुदावन्द खा ने अपने मामू के पुत्र साहब खा से मिल कर अपने घर से निकल कर कैसर खा के सरापर्दे मे प्रवेश किया और उसकी हत्या कर दी। प्रात काल एमादुलमुल्क ने सुल्तान की सेवा मे पहुच कर यह समाचार उसे पहुचाया। एक व्यक्ति ने यह निवेदन किया कि "अजदर खा बिन उलुग खा ने यह अपराध किया (१५८) है।" सुल्तान ने यह बात सुनते ही फीरोज खा को इस आशय से भेजा कि वह अजदर खा को बन्दी बना लाये। जब रात्रि हो गई तो मुजाहिद खा तथा साहब खां अपने परिवार सहित भाग गये। प्रात काल जब यह पता चला कि अजदर खा ने कोई अपराध नही किया है और मुजाहिद खा तथा साहब

१ एक पोथी के अनुसार 'नौकर'।

खा हत्यारे है तो उसने आदेश दिया कि, "खुदावन्द खा को बन्दी बनाकर मुहाफिज खा के सिपुर्द कर दिया जाय और अज़दर खा को मुक्त कर दिया जाय।" कुछ दिन उपरान्त वह अहमदाबाद लौट गया। इसी बीच मे एमादुलमुल्क की मृत्यु हो गई। सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करके उसके ज्येष्ठ पुत्र को, जिसका नाम मलिक बुद्ध था, इख्तियारुलमुल्क की उपाधि प्रदान कर दी और विज़ारत का पद मुहाफिज खा को प्रदान कर दिया।

चम्पानीर पर आक्रमण

८८० हि० (१४७५-७६ ई०) मे गुजरात वालो को अकाल तथा वर्षा के अभाव के कारण घोर कष्ट हुआ। सयोग से मलिक सधा चम्पानीर के कुछ स्थानो पर आक्रमण करने के लिए गया था। राय विनाय पुत्र राय उदयसिह ने, जो चम्पानीर का राजा था, सेना एकत्र करके उस पर आक्रमण कर दिया। युद्ध मे मलिक सधा की हत्या हो गई। राय विनाय ने मलिक सधा के दो हाथियो, घोडो, धन-सपत्ति तथा आदमियो को नष्ट कर दिया। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो वह प्रथम जीकाद ८८० हि० (२६ फरवरी १४७६ ई०) को चम्पानीर की ओर रवाना हुआ। जब निरन्तर यात्रा करके वह बरोदा कस्बे मे पहुचा तो राय विनाय ने अपने दुष्कर्म पर लज्जित होकर सुल्तान की सेवा मे राजदूत भेजे और क्षमा-याचना करते हुए निवेदन कराया कि, "दोनो हाथी जो आहत हुए थे मर चुके है किन्तु (१५९) दास सोने[1] से लदे हुए दो अन्य हाथी आप की सेवा मे भेज देगा।" सुल्तान ने कहलाया कि, "इस बात का उत्तर कल तलवार से दिया जायेगा" और राजदूतो को वापस कर दिया। उसने अपने प्रस्थान करने के पूर्व ताज खा, अज़दुलमुल्क, बहराम खा तथा इख्तियार खा को इस आशय से भेजा कि वे १७ सफर[2] को पर्वत के नीचे पहुँच जाये। नित्य-प्रति राजपूत लोग युद्ध के लिए निकल कर प्रात काल से सायकाल तक युद्ध किया करते थे।

सुल्तान ने स्वय बरोदा कस्बे से प्रस्थान किया और चम्पानीर से प्रस्थान करके वह करनारी नामक ग्राम मे उतरा। मार्ग की रक्षा तथा रसद के पहुँचाने के लिए उसने सैयिद बुदी अलगदार को नियुक्त किया। सयोग से, एक दिन सैयिद रसद ला रहा था, राजपूत लोग जो एक स्थान पर घात लगाये बैठे थे निकल कर उस पर टूट पडे। बहुत से लोग मारे गये और वे रसद को उठा ले गये। सुल्तान यह समाचार पाकर बडा दुखी हुआ और सफर के अत[3] तक चम्पानीर के नीचे ठहरा और किले के अवरोध का अत्यधिक प्रयत्न करता रहा। मुहाफिज खा रोज़ाना प्रात काल सवार होता था और आधे दिन तक मोर्चो का निरीक्षण करके लौटकर सुल्तान की सेवा मे समस्त विवरण प्रस्तुत करता था। जब अवरोध भलीभाति सम्पन्न हो गया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि चारो ओर से साबात[4] लगवाये जाये। कहा जाता है कि पर्वत के ऊपर एक लकडी के ले जाने की मजदूरी एक लाख तन्का दी जाती थी। राय विनाय ने यह हाल देखकर दीनता प्रकट करते हुए पुन. दूत भेजे और निवेदन कराया कि, "मै ९ मन सोना तथा सेना के दो वर्ष के व्यय हेतु जितना अनाज आवश्यक होगा पेशकश के रूप मे दूगा।" सुल्तान ने कहा कि, "जब तक किले पर विजय न प्राप्त हो जायेगी मै इस स्थान से न जाऊँगा।"

१ धन-सम्पत्ति।
२ १७ सफ़र ८८१ हि० (११ जून १४७६ ई०)।
३ सफर ८८१ हि० (२३ जून १४७६ ई०) के अन्त।
४ किले पर आक्रमण करने के लिये ढँका हुआ मार्ग।

जब दूत निराश होकर लौट गये तो राय विनाय ने ८८८ हि० (१४८३–८४ ई०) मे अपने एक योग्य वकील[1] को, जिसका नाम सूरा था, सुल्तान गयासुद्दीन खलजी की सेवा मे भेजा और उससे सहायता (१६०) की याचना की और यह निश्चय किया कि, "प्रत्येक पडाव पर व्यय की सहायता हेतु मैं १ लाख तन्के दूगा।" सुल्तान गयासुद्दीन ने सेना तैयार करके नालचा कस्बे मे पडाव किया। जब यह समाचार सुल्तान को प्राप्त हुये तो वह अमीरो को विभिन्न स्थानो पर नियुक्त करके युद्ध के उद्देश्य से धोद[2] कस्बे तक पहुचा। उस स्थान पर समाचार प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान गयासुद्दीन ने आलिमो को बुलवा कर एक दिन उनसे पूछा कि मुसलमानो के बादशाह ने काफिरो के पर्वत को घेर लिया है। ऐसी दशा मे काफिर की सहायतार्थ जाना उचित है अथवा नही?" आलिमो ने कहा कि, "यह उचित नही", और वह तत्काल लौट कर मन्दू चला गया। सुल्तान यह सुखद समाचार सुनकर पुन चम्पानीर पहुचा और वहा उसने एक जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।

इस बार अमीरो तथा सरदारो को विश्वास हो गया कि जब तक किला विजय न होगा सुल्तान वापस न जायेगा। उन्होने नये सिरे से किले की विजय के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये। जब साबातो का निर्माण हो गया तो एक दिन खासे के मोर्चे के सैनिको ने खासे के साबात से देख कर पता लगाया कि राजपूत लोग प्रात काल अधिकाश दातून तथा स्नान के लिए जाते हैं और बहुत थोडे से लोग मोर्चे पर रह जाते हैं। जब इस बात की सूचना सुल्तान को दी गई तो उसने आदेश दिया कि "कल प्रात काल किवामुलमुल्क ८८९ हि० (१४८४ ई०) को खासे की सेना अपने साथ लेकर अपने साबात से किले मे प्रविष्ट हो जाय, आशा है कि विजय हो जायगी।" दूसरे दिन प्रात काल प्रथम जीकाद (२० नवम्बर, १४८४ ई०) थी। मलिक किवामुलमुल्क खासे के सैनिको को लेकर अपने साबात से किले के भीतर कूद पडा और बहुत से लोगो की हत्या कर दी। भीषण युद्ध हुआ। उसने राजपूतो को किले के द्वार तक भगा दिया। राय विनाय तथा अन्य राजपूतो ने जौहर की व्यवस्था की और किवामुलमुल्क तथा (१६१) अन्य सरदार शहीद होने की आकाक्षा मे अत्यधिक प्रयत्न एव परिश्रम करने लगे।

सयोग से इसके पूर्व कुछ दिन पहले पश्चिम दिशा की ओर किले की दीवार पर एक तोप लगा दी गई थी और किले की दीवार मे दरारे पड गई थी। मलिक अयाज सुल्तानी बहुत से सैनिको सहित अवसर पाकर उस दरार की ओर पहुच गया और उस दरार द्वारा, जो वास्तव में किले वालो के लिए मृत्यु की दरार थी, बडे किले मे प्रविष्ट हो गया और बाडे के द्वार से बडे फाटक के कोठे पर पहुच गया। उस समय सुल्तान महमूद साबात पर पहुच कर बडी दीनता से ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था और विजय की याचना कर रहा था तथा लोगो को सहायतार्थ भेज रहा था। राजपूत लोगो ने व्याकुल होकर दरवाजे के कोठे पर गोला मारा। ईश्वर की कृपा से विजय तथा सफलता की पवन बह निकली थी। शाही सेना ने उस गोले को उठाकर राय विनाय के महल के प्रागण मे फेक दिया। राजपूतो ने जब यह दशा देखी तो जिन-जिन स्थानो पर उन्होने जौहर की व्यवस्था की थी, उनमे आग लगा दी और अपने समस्त परिवार को जला डाला। उस दिन, दिन भर तथा दूसरे दिन रात्रि तक समस्त सेना युद्ध करती रही। दूसरे दिन प्रात.काल २ जीकाद ८८९ हि० को (२१ नवम्बर १४८४ ई०) द्वार को जबरदस्ती तोड डाला गया और बहुत से लोगो की हत्या हो गई। सुल्तान महमूद भी द्वार तक पहुचा। राजपूत लोग (१६२) अस्त्र-शस्त्र फेक कर हौज़ के चारो ओर एकत्र हुये और सभी ने जल में प्रविष्ट होकर स्नान

१ प्रतिनिधि।
२ मूल पुस्तक में 'धोर' है।

किया तथा जल से निकल कर हाथ मे तलवार लेकर खडे हो गये। जब कुछ सैनिक हौज के निकट पहुचे तो ७०० राजपूतो ने एक साथ आक्रमण कर दिया और बहुत से लोग दोनो ओर से मारे गये। उस युद्ध मे राय विनाय, दुनगरसी तथा बहुत से लोगो को बन्दी बनाकर प्रस्तुत किया गया।

सुल्तान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके राय विनाय तथा दुनगरसी को मुहाफिज खा को इस आशय से सौप दिया कि वह उनके घावो का उपचार करे। उसी दिन वह चम्पानीर का नाम मुहमदाबाद रख कर शहर मे प्रविष्ट हुआ। वहा से राजपूत भाग कर तीसरे किले मे प्रविष्ट हो गये। उन लोगो को भी तीसरे दिन अपमानित करके बाहर निकाला गया। जब मुहाफिज खा ने यह समाचार पहुचाये कि राय विनाय के घाव अच्छे हो गये हैं तो सुल्तान ने उससे इस्लाम स्वीकार करने के लिए कहा। उसने स्वीकार न किया। वह ५ मास तक बन्दीगृह मे रहा फिर भी उसने इस्लाम स्वीकार न किया। आलिमो के आदेशानुसार राय विनाय तथा दुनगरसी को फासी दे दी गई। यह घटना ८९० हि० (१४८५-८६ ई०) मे घटी। उसी वर्ष मे हिसारे ख़ास, हिसारे जहापनाह, महलो तथा उद्यानो के निर्माण का आदेश देकर उसने मुहाफिज खा को कार्य सौप दिया। ८९२ हि० (१४८६-८७ ई०) मे उसने सोरठ की विलायत, जूनागढ का किला तथा करनाल पर्वत शाहज़ादा खलील खा को प्रदान कर दिया।

व्यापारियो के प्रति न्याय

८९२ हि० (१४८६-८७ ई०) मे देहली से व्यापारियो ने अहमदाबाद पहुच कर फरियाद की कि, "हम लोग ४०३ घोडे ला रहे थे। आबू पर्वत के राजा ने उन सबको हम पर अत्याचार करके छीन लिया और समस्त काफिले को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। यह बात सुनते ही उसने (सुल्तान ने) आदेश दिया (१६३) कि; "घोडो का मूल्य खज़ाने से व्यापारियो को दिला दिया जाय। सभी को खिलअत प्रदान करके वह सेना की तैयारिया करने लगा। कुछ दिन उपरान्त वह उस प्रदेश को नष्ट करने के लिए रवाना हुआ और अपने प्रस्थान करने के पूर्व एक फरमान आबू के राजा के नाम इस आशय का व्यापारियो के पास भेजा कि, "क्योकि व्यापारी लोग घोडे तथा धन-सपत्ति मेरे (सुल्तान के) लिए ला रहे थे और उसे तुमने अत्याचार करके अधिकृत कर लिया है अत तुमको चाहिये कि जो कुछ भी तुमने अधिकृत किया है उसी प्रकार लौटा दो। अन्यथा तुम मेरे क्रोध के भागी होगे।" जब व्यापारियो ने फरमान पहुचाया तो आबू के राजा ने भय के कारण ३७० घोडे जो उसी प्रकार विद्यमान थे व्यापारियो को दे दिये और ३३ घोडे जो नष्ट हो गये थे उनका मूल्य तथा अत्यधिक पेशकश व्यापारियो के हाथ सुल्तान की सेवा मे भेज दी। जब व्यापारी सुल्तान की सेवा मे पहुचे और उन्होने समस्त हाल कह कर आबू के राजा की पेशकश प्रस्तुत की तो सुल्तान मुहमदाबाद चम्पानीर लौट गया।

बहादुर गीलानी को दंड

८९६ हि० (१४९०-९१ ई०) मे यह समाचार प्राप्त हुआ कि, "ख्वाजा महमूद गीलानी के गुमाश्ते[1] बहादुर गीलानी ने अपने आश्रयदाता का विरोध प्रारम्भ कर दिया है। दकिन के वाली[2] सुल्तान मुहम्मद लश्करी की आज्ञाकारिता त्याग कर दाबुल बन्दरगाह पर जबरदस्ती अधिकार जमा लिया है। समुद्री मार्ग के जहाजों को हानि पहुचा रहा है और गुजरात की यात्रा का मार्ग बन्द हो गया है।

१ प्रतिनिधि।
२ सुल्तान।

वह खासे[1] के जहाजो को जबरदस्ती पकड ले गये हैं।" यह समाचार पाते ही उसने सेना तैयार करके खुश्की के मार्ग से मलिक किवामुलमुल्क को नियुक्त किया और समुद्री मार्ग से अत्यधिक जहाज नियुक्त किये। जब यह समाचार सुल्तान महमूद[2] बहमनी को प्राप्त हुये तो उसने अमीरो को बुलवा कर कहा कि, "सुल्तान के पूर्वजो द्वारा हमे कई बार सहायता मिल चुकी है। सुल्तान महमूद की शक्ति का सभी (१६४) को ज्ञान है। इस सम्मानित वश के प्रति आभार प्रदर्शित करना हमारे लिये आवश्यक है अत यह उचित है कि हम उसके (शत्रु के) विनाश हेतु प्रस्थान करे।" अमीरो तथा वजीरो ने उसकी राय की प्रशसा की और उसकी बात का समर्थन किया तथा सेना तैयार करने लगे। उन्होने निष्ठा से परिपूर्ण एक पत्र सुल्तान महमूद की सेवा मे प्रेषित किया और बहादुर गीलानी को दण्ड देने का प्रयत्न करने लगे। ज्योतिषियो द्वारा निश्चित समय पर सुल्तान महमूद ने बीदर नगर से बहादुर के विनाश हेतु प्रस्थान किया और युद्ध के उपरान्त उसकी हत्या कर दी। इसका सविस्तार उल्लेख दक्षिण के सुल्तानो के इतिहास मे किया जा चुका है।

अलिफ खां की उद्दडता

८९९ हि० (१४९२ ई०) मे सुल्तान महमूद महरासा कस्बे की ओर रवाना हुआ। मार्ग में गुप्तचरो ने उससे निवेदन किया कि, "अलिफ खा बिन उलुग खा ने क्योकि सेवको का वेतन स्वय व्यय कर लिया था अत. इस भय से कि कही वे न्याय की याचना करे और वह अपमानित हो, वह भाग खडा हुआ।" सुल्तान ने शरफ जहा को उसके प्रोत्साहन हेतु भेजा। शरफ जहा ने यद्यपि उसे अत्यधिक शिक्षा तथा नसीहत प्रदान की किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ।

वह कुछ हाथियो को, जिन्हे वह अपने साथ रखता था शरफ जहा द्वारा भेजकर मन्दू की विलायत को चला गया। क्योकि उसके पिता ने सुल्तान महमूद खलजी के प्रति कृतघ्नता प्रकट की थी अतः सुल्तान गयासुद्दीन ने उसे अपने राज्य मे कोई स्थान न दिया और उसके प्रति कोई कृपादृष्टि प्रदर्शित न की। अलिफ खा अपमानित तथा लज्जित होकर सुल्तानपुर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान महमूद ने काजी पीर इसहाक को मलिक शेखा की सहायतार्थ भेजा। जब काजी पीर इसहाक सुल्तानपुर के समीप (१६५) पहुचा तो उलुग खा ने उससे युद्ध किया और काजी का पुत्र मलिकुल मशायख तथा कुछ अन्य व्यक्ति उस युद्ध मे मारे गये। अन्त मे उलुग खा ने अत्यधिक परेशान होकर दीनता प्रकट करते हुए सुल्तान की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेजे और क्षमा-याचना की। क्योंकि वह सुल्तान का प्राचीन दास था अतः उसने उसे क्षमा कर दिया और ९०१ हि० (१४९५-९६ ई०) मे वह पुन सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की किन्तु उसका भाग्य पतन के गर्त मे पहुच चुका था अत ३ मास उपरान्त उसने अपने नायबे अर्ज की अकारण हत्या कर दी और उसे बन्दी बना लिया। उसकी उस बन्दीगृह मे मृत्यु हो गई।

आदिल खां फारुकी का आज्ञाकारिता स्वीकार करना

क्योकि आसीर के हाकिम आदिल खा फारुकी ने बहुत समय से निर्धारित पेशकश न भेजी थी और

१ सुल्तान के।
२ कुछ पोथियो के अनुसार 'मुहम्मद'।

अभिमान प्रदर्शित कर रहा था अत सुल्तान सेना तैयार करके ९०६ हि० (१५००–१५०१ ई०) मे उसे दण्ड देने के लिए रवाना हुआ। जब वह ताप्ती नदी के समीप पहुचा तो आदिल खा ने अत्यधिक पेशकश प्रेषित की और क्षमा-याचना की। सुल्तान ने उसके ऊपर कृपा करके उसकी याचना स्वीकार कर ली और मुहमदाबाद चम्पानीर लौट आया।

मालवा पर आक्रमण करने का विचार त्यागना

उसी वर्ष ९०६ हि० (१५००–१५०१ ई०) मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान नासिरुद्दीन अब्दुल कादिर कृतघ्नता प्रकट करते हुए राज्य को सुल्तान गयासुद्दीन से छीन कर स्वय सुल्तान बन बैठा है।" सुल्तान महमूद उसको दण्ड देने के लिए मालवा की ओर प्रस्थान करने वाला ही था कि इसी बीच मे नासिरुद्दीन की पेशकश तथा निष्ठा सबधी पत्र दीनता प्रकट करते हुए प्राप्त हुआ। उसमे इस बात का उल्लेख था कि, "जो कुछ भी मैंने किया वह अपने स्वामी, आश्रयदाता तथा पिता की अनुमति से किया परन्तु क्योकि शुजा खा तथा रानी खुर्शीद को सुल्तान गयासुद्दीन पर प्रभुत्व प्राप्त हो गया था अत वे उसे छिपाने का प्रयत्न किया करते थे।" सुल्तान ने उसकी दीनता के प्रति दया प्रदर्शित करते हुए आक्रमण के विचार त्याग दिये।

(१६६) उसी वर्ष क्योकि फिरगियों[1] ने इस्लाम के बन्दरगाहो मे अशाति उत्पन्न कर दी अत सुल्तान ने महायम बन्दरगाह की ओर प्रस्थान किया। जब वह दून के भूभाग मे पहुचा तो उसे समाचार प्राप्त हुये कि "अयाज नामक विशेष दास ने दीप नामक बन्दरगाह से शाही जहाजो तथा १० रूमी[2] जहाजो को तैयार करके जयोल[3] बन्दरगाह मे फिरगियो से युद्ध किया और अत्यधिक फिरगियो की हत्या कर दी। उस युद्ध मे ४०० रूमी मारे गये और फिरगी भाग खडे हुए। उनका एक बहुत बडा जहाज, जिसमे १ करोड की धन-सपत्ति थी, इस कारण कि उसके मस्तूल को तोप द्वारा तोड डाला गया था, समुद्र मे डूब गया।" सुल्तान, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके, मुहमदाबाद चम्पानीर की ओर लौट गया।

आसीर पर चढाई

९१४ हि० (१५०८–९ ई०) मे आदिल खा बिन (पुत्र) हसन खा ने अपनी माता द्वारा, जो सुल्तान की पुत्री थी, यह प्रार्थना की कि, "आदिल खा बिन मुबारक खा, आसीर तथा बुरहानपुर का हाकिम ७ वर्ष तथा कुछ मास पूर्व मृत्यु को प्राप्त हो चुका है, और उसके कोई पुत्र नही है। आशा है कि पूर्वजो का स्थान फकीर को प्रदान कर दिया जायगा।" सुल्तान ने अपनी पुत्री की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उस वर्ष रजब मास (अक्तूबर-नवम्बर १५०८ ई०) मे सेना तैयार करके शाबान मास (नवम्बर-दिसम्बर १५०८ ई०) मे आसीर तथा बुरहानपुर पर चढाई की। रमजान मास (दिसम्बर १५०८-जनवरी १५०९ ई०) को नर्मदा नदी के तट पर सीली[4] नामक स्थान पर व्यतीत किया और शव्वाल (जनवरी-फरवरी १५०९ ई०) मे नद्रबार की ओर रवाना हो गया। जब वह नद्रबार कस्बे में पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ कि "मलिक हुसामुद्दीन मुगल ने, जिसके अधीन आसीर तथा बुरहानपुर की आधी

१ सम्भवत 'पुर्तगालियो'।
२ तुर्की।
३ कुछ पोथियो के अनुसार 'चौल', इसे 'जेवल' भी पढ़ा जा सकता है।
४ कुछ पोथियों के अनुसार 'सवली'।

(१६७) विलायत थी, खानजादा आलम खा को, जो आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिमो की सतान में से था, निज़ामुलमुल्क बहरी से, जो कावेल का हाकिम था, मिल कर, आसीर तथा बुरहानपुर के सिहासन पर आरूढ कर दिया है। मलिक लादन खलजी, जिसके अधीन आसीर की आधी विलायत थी, मलिक हुसामुद्दीन मुगुल का विरोध करके आसीर पर्वत मे एक दृढ स्थान पर डट गया है।" सुल्तान ने इस घटना के समाचार पाकर थानीर की ओर प्रस्थान किया और मलिक आलिम शह, जो थानीर का थानेदार था, सुल्तानपुर के थानेदार अजीजुलमुल्क सुल्तानी द्वारा सेवा मे उपस्थित हुआ और थाने को रिक्त करके पेशकश के रूप मे दे दिया।

निजामुलमुल्क बहरी यह समाचार पाकर ४ हजार अश्वारोही आलम खा तथा हुसामुलमुल्क को देकर स्वय कावेल चला गया। जब थानीर मे सुल्तान महमूद रुग्ण हो गया तो उसने कुछ दिन तक वहा पडाव किया। उसने आसफ खा तथा मलिक अज़ीजुलमुल्क को सेना देकर, मलिक हुसामुद्दीन तथा आलम खा को दण्ड देने के लिए भेजा। जब आसफ खा तथा अज़ीजुलमुल्क बुरहानपुर की ओर रवाना हुए तो निजामुलमुल्क बहरी की सेना मलिक हुसामुलमुल्क की आज्ञा बिना अपने प्रदेश की ओर चली गई और मलिक लादन खलजी ने आसिफ खा के स्वागतार्थ उपस्थित होकर उससे भेट की। आसिफ खा उसे अपने साथ सुल्तान की सेवा मे ले गया। मलिक हुसामुद्दीन लज्जित होकर सुल्तान की सेवा मे सम्मिलित हो गया और दोनो उसकी कृपाओ द्वारा सम्मानित हुए।

आदिल खा को आसीर तथा बुरहानपुर प्राप्त होना

(१६८) ईदुज्जुहा (१ अप्रैल १५०९ ई०) के उपरान्त सुल्तान ने एक शुभ मुहूर्त मे आदिल खा को आजम हुमायू की उपाधि देकर ४ हाथी तथा ३० लाख तन्के उसके व्यय हेतु प्रदान किये और आसीर तथा बुरहानपुर का राज्य एव उसकी रक्षा उसे सौप दी। मलिक लादन खलजी को खाने जहा की उपाधि देकर आजम हुमायू आदिल खा के साथ बिदा कर दिया। क्योकि मलिक लादन का जन्म बनास[1] नामक स्थान पर हुआ था अत उसने उस स्थान को उसे इनाम मे दे दिया। मलिक मुहम्मद बाखा वल्द एमादुलमुल्क आसीरी को गाजी खा की, मलिक आलम शह थानीर के थानेदार को कुतुब खा की, मलिक हाफिज को मुहाफिज खा की और उसके भाई मलिक यूसुफ को यूसुफ खां की उपाधि देकर आजम हुमायूँ की सेवा मे भेजा। मलिक नुसरतुलमुल्क तथा मुजाहिदुलमुल्क गुजराती को व्यय हेतु धन देकर आजम हुमायू की सेवा मे नियुक्त किया।

चम्पानीर मे सुल्तान की वापसी

१७ ज़िलहिज्जा को वहा से प्रस्थान करके सुल्तानपुर तथा नन्द्रबार की ओर रवाना हुआ। प्रथम पडाव पर मलिक हुसामुद्दीन मुगुल को उसने शहरयार की उपाधि दी और धनोरा[2] नामक स्थान को, जो सुल्तानपुर के समीप है, तथा २ हाथी उसे प्रदान करके जाने की अनुमति दे दी और स्वय निरन्तर कूच करते हुये १० मुहर्रम ९१६ हि० (१९ अप्रैल १५१० ई०) को चम्पानीर मे पड़ाव किया।

१ मूल पोथी में 'नबास'।
२ कुछ पोथियों के अनुसार 'धोरा'।

बुरहानपुर मे षड्यत्र

जब आदिल खा बुरहानपुर पहुचा तो मलिक हुसामुद्दीन शहरयार, मलिक मुहम्मद बाखा तथा गाजी खा, मलिक लादन खलजी से जो सबध रखते थे उसके कारण, बुरहानपुर से आकर थानीर मे निवास (१६९) करने लगे। कुछ दिन उपरान्त आजम हुमायू को यह समाचार प्राप्त हुए कि, "मलिक हुसामुद्दीन शहरयार, निजामुलमुल्क बहरी से मिल कर विद्रोह करना चाहता है।" आजम हुमायू ने इस षड्यत्र के समाचार पाकर कुछ लोगो को मलिक हुसामुद्दीन को बुलवाने के लिए भेजा। मलिक हुसामुद्दीन कार्य के विषय मे अवगत होकर, ४ हजार अश्वारोहियो को लेकर, बुरहानपुर की ओर रवाना हुआ। जब वह बुरहानपुर के समीप पहुचा तो आजम हुमायू ने ३०० गुजराती अश्वारोहियो के साथ उसका स्वागत किया और उसे अपने निवास स्थान पर लाकर खिलअत प्रदान की तथा दायरे[1] की ओर विदा कर दिया। दूसरे दिन उसने अपने विश्वासपात्रो से मिलकर यह निश्चय किया कि, "जब मलिक हुसामुद्दीन दीवानखाने मे आये तो मै उसका हाथ पकड कर खिलवतखाने[2] मे ले जाऊँ और विदा होते समय दरियाशह गुजराती, जिसके पास आजम हुमायू की तलवार रहती है, मलिक हुसामुद्दीन पर तलवार का वार करे। उसकी हत्या के उपरान्त उसके आदमियो की भी विभिन्न स्थानों पर हत्या कर दी जायेगी।" यह निश्चय करके उसने कुछ क्षण उपरान्त मलिक हुसामुद्दीन को बुलवाने के लिए आदमी भेजे। मलिक हुसामुद्दीन अभिमान के कारण अत्यधिक सैनिको को लेकर आया। भेट के उपरान्त परामर्श के बहाने से वह मलिक हुसामुद्दीन का हाथ पकड करअपने खिलवतखाने मे ले गया और कुछ वार्तालाप करके उसे पान देकर विदा कर दिया। जब मलिक हुसामुद्दीन खडा होने लगा तो दरिया खा ने उस पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह दो टुकडे हो गया।

जब मलिक बुरहान अताउल्लाह को, जो आज़म हुमायू का वजीर था, इस बात की सूचना मिली तो उसने गुजरातियो के उस समूह से, जो उसके साथ था, कहा कि, "हरामखोरो की हत्या कर दो।" जब उन लोगो ने तलवार निकाली तो मलिक मुहम्मद बाखा तथा अन्य सरदार, जो मलिक हुसामुद्दीन के (१७०) साथ थे, भाग खडे हुए। ४०० हब्शी, जो दरबार में उपस्थित थे, सब के सब तलवार के घाट उतार दिये गये और मलिक मुहम्मद बाखा तथा अन्य सरदार धूल एव रक्त मे मिल गये। उसके अधिकार मे जो आधी विलायत[3] थी वह बिना किसी विवाद के आजम हुमायू के अधिकार मे आ गई। जब उपर्युक्त वर्ष के रबी-उल-अव्वल मास (जून-जुलाई १५१० ई०) मे सुल्तान महमूद को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने कहा कि "जो कोई भी नमक के प्रति कृतज्ञता नही प्रकट करता वह नष्ट हो जाता है।"

९१६ हि० (१५१०–११ ई०)में आजम हुमायू का इस आशय का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ कि, "एक बार मै आसीर के किले मे गया। मैने शेर खा तथा सैफ खा को, जिनके अधीन किला है, दुष्टता तथा षड्यत्र से शून्य नही पाया। यद्यपि मलिक हुसामुद्दीन की हत्या हो चुकी है, फिर भी दोनो अभागो ने एक दूसरे से मिल कर विरोध तथा षड्यत्र प्रारम्भ कर रखा है। उन लोगो ने निज़ामुलमुल्क बहरी को पत्र लिखकर आलम खा खानजादे को बुलवाया है। दास ने मलिक लादन खाने जहा, मलिक मुजाहिदुलमुल्क

१ शिविर।
२ एकान्त का कमरा।
३ राज्य।

तथा अन्य अमीरो सहित जाकर किले को घेर लिया। निजामुलमुल्क बहरी अपनी सेना सहित आलम खा को अपने साथ लेकर अपने राज्य की सीमा पर पहुच गया है। यदि वह दास की विलायत मे प्रविष्ट होगा तो दास किले का अवरोध छोड कर उससे युद्ध करने के लिए जायेगा।" सुल्तान ने ५ लाख तन्के नकद आजम हुमायू को व्यय की सहायतार्थ इनाम मे भेजे और दिलावर खा, कदर खा, सफदर खा तथा अन्य अमीरो को आजम हुमायू की सहायतार्थ भेजा और उत्तर लिखा कि, "पुत्र को निश्चिन्त रहना चाहिये। यदि आवश्यकता हुई तो मै स्वय पहुच जाऊगा। निजामुलमुल्क बहरी को, जो दक्षिण के सुल्तानो का एक दास है, पुत्र की विलायत को हानि पहुचाने का साहस कहा से पैदा हो (१७१) गया?" अभी उपर्युक्त अमीर शहर के बाहर भी न गये थे कि शाहज़ादा मुजफ्फ़र खा, जिसके विषय मे अभी उल्लेख किया जायेगा, बरोदा के कस्बे से आया और अपने पिता के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। उसने ७ लाख तन्के आज़म हुमायू के व्यय हेतु मागे जो भेज दिये गये।

कुछ दिन उपरान्त निजामुलमुल्क बहरी का दूत उसकी (सुल्तान की) सेवा मे उपस्थित हुआ और इस आशय का पत्र उसकी सेवा मे प्रस्तुत किया कि, "क्योकि आलम खा खानजादे ने मुझसे प्रार्थना की है अत आशा है कि आप आसीर तथा बुरहानपुर की विलायत का थोडा सा भाग उसे प्रदान कर देगे।" सुल्तान ने निज़ामुलमुल्क के दूत को बुलवा कर कहा कि, "क्योकि उसने अपनी कमली के बाहर पाव निकालना प्रारम्भ कर दिया है अत शीघ्र ही उसको उचित दण्ड दिया जायगा।"

जब उपर्युक्त अमीर नद्रबार कस्बे मे पहुचे, तो शेर खा तथा सैफ खा ने अपने भविष्य के विषय मे चिंतित होकर मलिक मुजाहिदुलमुल्क से क्षमा-याचना की। आजम हुमायू ने इस बात को अपने लिए बहुत बडी देन समझ कर प्रतिज्ञा की तथा वचनबद्ध हुआ। शेर खा तथा सैफ खा उसके वचन पर विश्वास करके किले के नीचे उतर आये और कावेल की विलायत को चले गये। आदिल खा ने दिलावर खा तथा अन्य अमीरो के पहुचने के उपरान्त कालना की विलायत पर आक्रमण करने का सकल्प किया। उसने कालना के कुछ ग्रामो तथा स्थानो को ही नष्ट-भ्रष्ट किया था कि कालना के राजा ने पेशकश भेज कर क्षमा-याचना की और आदिल खा ने इस भूभाग से गुजरात के अमीरो को गुजरात भेज दिया और स्वय बुरहानपुर आ गया।

सुल्तान सिकन्दर के पास से उपहार प्राप्त होना

उसी वर्ष देहली के बादशाह सुल्तान सिकन्दर लोदी ने सुल्तान (महमूद) के प्रति निष्ठा के कारण उसकी सेवा मे कुछ उपहार भेजे। इसके पूर्व देहली के बादशाह ने कभी भी गुजरात के बादशाह को उपहार न भेजे थे।

आलिमों तथा सन्तो से भेट

(१७२) जिलहिज्जा ९१६ हि० (मार्च १५११ ई०) मे सुल्तान महमूद ने नहरवाला की ओर प्रस्थान किया और वहा के निवासियो, आलिमो, पवित्र लोगो तथा फकीरो को इनाम एव कृपा द्वारा प्रसन्न किया और कहा कि, "मेरे आने का उद्देश्य आप जैसे सन्तो से विदा होना था। सभव है कि मृत्यु मुझे अवसर न दे।" आलिमो तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने अपने अपने विशेष ढग से उसके दीर्घायु होने की शुभकामनाये की। वह उसी गोष्ठी से सवार होकर पटन के सूफियो के मजार के दर्शनार्थ रवाना

हुआ और बुद्धवार के दिन अहमदाबाद की ओर चल दिया। वहा शेख अहमद खत्तू के पवित्र रौजे का तवाफ[1] करके अहमदाबाद लौट गया।

सुल्तान का रुग्ण होना

रोग तथा दुर्बलता का अनुभव करके उसने शाहजादा मुजफ्फर खा को बरोदा कस्बे से बुलवाया और उसे उचित परामर्श दिये। ४ दिन उपरान्त अपने आपको स्वस्थ होते देखकर, उसने शाहजादे को बरोदा की ओर बिदा कर दिया। कुछ दिन उपरान्त उसका रोग पुन बढ गया और वह अत्यधिक शक्ति-हीन हो गया।

शाह इस्माईल सफवी के हाजिब का आगमन

इसी बीच मे एक दिन फरहतुलमुल्क ने निवेदन किया कि, "ईरान के बादशाह शाह इस्माईल[2] ने यादगार बेग किजिलबाश को कुछ किजिलबाशो सहित हाजिब[3] बनाकर भेजा है और उत्तम प्रकार के उपहार प्रेषित किये है।" सुल्तान ने कहा कि, "ईश्वर मुझे किजिलबाशो का मुख, जोकि मुहम्मद साहब के शत्रु तथा अत्याचार के जन्मदाता है न दिखावे।" सयोग से ऐसा ही हुआ।

सुल्तान की मृत्यु

सुल्तान ने आदेश दिया कि शाहज़ादा मुजफ्फर खा को शीघ्र बुलवाया जाय। यादगार बेग किजिलबाश अभी पहुच भी न पाया था कि सोमवार २ रमजान ९१७ हि० (२३ नवम्बर १५११ ई०) को सुल्तान की मृत्यु हो गई।

(१७३) वह ६९ वर्ष तथा ११ मास तक जीवित रहा और उसने ५५ वर्ष, १ मास तथा २ दिन तक राज्य किया। उसे मशूरो[4] मे "खुदायगाने हलीम" लिखा जाता है और उसे 'महमूद बेकर' भी कहते है। बेकर उस गाय को कहते है जिसकी सीघे ऊपर को उठी हुई तथा वृत्ताकार हो। क्योकि उसकी मूँछे उसी प्रकार थी अत उसे बेकर कहते थे। वह बडा ही सहनशील, दयालु, वीर, दानी तथा ईश्वर का भय करने वाला बादशाह था।

१ किसी पवित्र स्थान अथवा काबा के चारो ओर निर्धारित नियमानुसार चक्कर लगाना। एक प्रकार की परिक्रमा।

२ शाह इस्माईल सफ़वी बिन सुल्तान हैदर ईरान के सफ़वी वश के राज्य का सस्थापक था। उसका जन्म १७ जुलाई १४८७ ई० को हुआ था और उसकी मृत्यु २३ मई १५२४ ई० को हुई। हिजरी महीनो के अनुसार उसने २४ वर्ष राज्य किया। उसके प्रयत्न के फलस्वरूप ईरान मे शीओ का राज्य दृढ रूप से स्थापित हो गया। कट्टर सुन्नी उसके बड़े विरोधी थे और वह आजीवन टर्की के सुल्तानो से निरन्तर युद्ध करता रहा।

३ हाजिब दरबार मे सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य मे खड़े होते थे, और उनकी आज्ञा बिना कोई सुल्तान तक न पहुँच सकता था। उनका सरदार अमीर हाजिब कहलाता था। समस्त प्रार्थना-पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबों द्वारा ही सुल्तानों की सेवा में प्रस्तुत किये जा सकते थे। वे लोग दूत बना कर भी दूसरे राज्यों को भेजे जाया करते थे।

४ शाही फ़रमान तथा आज्ञा-पत्र।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह बिन महमूद शाह

जब सोमवार २ रमज़ान ९१७ हि० (२३ नवम्बर १५११ ई०) को सुल्तान महमूद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मदशाह की मृत्यु हो गई तो[1] रमजान मगलवार की रात्रि मे दो घडी उपरान्त शाहजादा मुजफ्फर ख़ा पहुचा और अमीरों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो के प्रयत्न से सिहासनारूढ हुआ और उसने आवश्यक दान-पुण्य किये। उसने उसी रात्रि मे अपने पिता की लाश को शेख अहमद खत्तू के मजार की ओर भेज दिया और २ लाख तन्के अजीजुलमुल्क को इस आशय से सौप दिये कि वह सरकीज कस्बे के सहायता के पात्रो को बाट दे। अमीरों तथा समस्त राज्य के उच्च पदाधिकारियो को खिलअते देकर कुछ को उचित उपाधियो द्वारा सम्मानित किया। उसी दिन इस्लाम के मिम्बरों पर उसके नाम का खुत्बा[1] पढा गया। उसने अपने खासा खेलों[2] मे से मलिक खुशकदम को एमादुलमुल्क तथा मलिक रशीदुलमुल्क को खुदावन्द खा की उपाधि प्रदान की और विजारत की बागडोर उसके हाथ मे दे दी।

शाह इस्माईल के दूत का स्वागत

उसी वर्ष शव्वाल मास (दिसम्बर १५११–जनवरी १५१२ ई०) मे शाह इस्माईल का दूत यादगार बेग किजिलबाश एराक से मुहमदाबाद के समीप पहुचा। सुल्तान ने समस्त अमीरो तथा वजीरो को उसके स्वागतार्थ भेज कर उससे प्रसन्नतापूर्वक तथा कृतज्ञता-भाव से भेट की। यादगार बेग सुल्तान महमूद के लिए जो उपहार लाया था उन्हे उसने सुल्तान मुज़फ्फर की सेवा मे प्रस्तुत किया और सुल्तान (१७४) ने यादगार बेग तथा समस्त किजिलबाशो को शाही खिलअते प्रदान की और इन लोगो के निवास हेतु विशेष स्थान निश्चित किया।

साहब ख़ा का मालवा से सुल्तान की सेवा मे पहुचना

कुछ दिन उपरान्त वह मुहमदाबाद से बरोदा कस्बे की ओर रवाना हुआ और उस स्थान का नाम दौलताबाद रखा। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुये कि, "साहब ख़ा वल्द सुल्तान नासिरुद्दीन खलजी ने ख़्वाजये जहा नामक ख़्वाजासरा की सहायता सें सुल्तान महमूद से विश्वासघात करके मन्दू को अपने अधिकार मे कर लिया है और सुल्तान मुहम्मद की उपाधि धारण कर ली है तथा अधिकाश अमीरो को मिला लिया है।" मालवा के सुल्तानो के विवरण मे इसका उल्लेख हो चुका है। वह मन्दू से भाग कर (सुल्तान की सेवा में) प्रार्थना करने के लिए पहुचा। सुल्तान मुजफ्फर ने मुहाफिज़ खा को साहब खा के स्वागतार्थ भेजा ताकि वह आतिथ्य सत्कार एव उसको प्रोत्साहन देने का कार्य करे। भेट के उपरान्त वह कुछ दिन तक आतिथ्य सत्कार हेतु बरोदा मे ठहरा। तदुपरान्त मुहमदाबाद कस्बे की ओर रवाना हो गया और कैसर खा को घोद कस्बे मे इस आशय से भेज दिया कि वह सुल्तान महमूद खलजी, मालवा के राज्य तथा वहा के अमीरो के विषय मे सूचना दे।

जब वर्षा ऋतु आ गई और लोग विभिन्न स्थानों पर ठहर गये तो साहब खां ने एक दिन संदेश भेजा कि, "फकीर को आये हुए बहुत समय व्यतीत हो चुका है और वह अपने कार्यों को उचित रूप से

१ एक प्रकार का प्रवचन जिसमे ईश्वर, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान तथा समकालीन बादशाह की प्रशंसा की जाती है। एक इस्लामी राज्य मे केवल एक ही सुल्तान का ख़ुत्बा पढा जा सकता है। ख़ुत्बा 'जुमे' दोनो ईदों तथा दरबार के विशेष अवसरों पर पढा जाता था।

२ विशेष सेवको।

सम्पन्न होते हुए नही देख रहा है।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो वर्षा ऋतु के उपरान्त जिस प्रकार भी सम्भव हुआ सुल्तान महमूद से आधी विलायत[1] छीन कर तुझे प्रदान कर दूँगा।"

क्योकि साहब खा के भाग्य का नक्षत्र पतनोन्मुख था अत सयोग से वह यादगार बेग किजिलबाश के, जोकि गुजरात वालो मे सुर्ख कुलाह[2] के नाम से प्रसिद्ध था, सम्पर्क मे आने लगा। एक दिन उनके सेवको मे शत्रुता के कारण युद्ध हो गया और यादगार बेग का निवास स्थान नष्ट हो गया। गुजरात की (१७५) सेना मे यह प्रसिद्ध हो गया कि तुर्कमानो ने साहब खा को बन्दी बना लिया है। मालवा का शाहजादा इस बात से लज्जित होकर सुल्तान मुजफ्फर से आज्ञा लिये बिना चला गया। इसका विवरण मालवा के सुल्तानो के इतिहास मे दिया जा चुका है।

राजपूतो को दड देने के उद्देश्य से प्रस्थान

साहब खा के चले जाने के उपरान्त जब राजपूतो के प्रभुत्व तथा सुल्तान महमूद खलजी की शक्तिहीनता के समाचार सुल्तान मुजफ्फर को प्राप्त हुए तो उसकी मर्यादा को ठेस पहुची और उसने उस समूह को दण्ड देने के लिए प्रस्थान करना निश्चय कर लिया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ ताकि थानों की ओर से निश्चिन्त हो जाय। मरे हुए तथा जीवित बुजुर्गों[3] से सहायता की प्रार्थना करके मालवा की ओर रवाना हुआ। एक सप्ताह तक अहमदाबाद मे ठहर कर कोधरा[4] की ओर चल दिया और वहा सेना एकत्र करने के लिए कुछ समय तक पडाव किया।

ऐनुलमुल्क का ईदर के राजा से युद्ध तथा ऐनुलमुल्क की पराजय

इसी बीच मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि पटन का हाकिम मलिक ऐनुलमुल्क अपनी सेना सहित उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ था। मार्ग मे उसे समाचार मिले कि ईदर के राजा ने अवसर पाकर उस क्षेत्र मे विद्रोह कर दिया और साबरमती की सीमा तक धावे मारे है। मलिक ऐनुलमुल्क ने उसके प्रति निष्ठा के कारण इस बात की इच्छा की कि उसे दण्ड देकर सुल्तान की सेवा मे पहुचे। उसने महरासा कस्बे मे पहुच कर उस पर आक्रमण किया। इसी बीच मे ईदर का राजा सेना एकत्र करके युद्ध के लिए निकला और दोनो सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। मलिक अब्दुल मलिक की २०० व्यक्तियो सहित हत्या हो गई और जो हाथी उसके साथ था वह टुकडे टुकडे हो गया। ऐनुलमुल्क के दृढता के पाव अपने स्थान से उखड गये और वह भाग खडा हुआ।

सुल्तान का ईदर के राजा पर आक्रमण

सुल्तान मुजफ्फर यह समाचार पाकर ईदर की ओर रवाना हुआ। जब वह महरासा कस्बे में पहुचा तो उसने एक सेना ईदर को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए भेजी। ईदर का राजा किले को खाली करके (१७६) स्वय बीजानगर पर्वत मे छिप गया। जब सुल्तान ईदर पहुचा, तो १० राजपूतों की, जोकि मृत्यु के लिए कटिबद्ध होकर खडे थे, अपमानित करके हत्या कर दी गई। भवनो, मन्दिरों, उद्यानो तथा

१ राज्य।
२ लाल टोपी वाला।
३ सम्मानित व्यक्तियों, सन्तों तथा आलिमों।
४ 'गोधरा'।

वृक्षो का कोई भी चिह्न न रहने दिया गया। ईदर के राजा ने दीनता प्रकट करते हुए मलिक कूपा[1] जुन्नार-दार[2] को उसकी सेवा मे भेज कर क्षमा-याचना की और सदेश भेजा कि, "मलिक ऐनुलमुल्क दास से शत्रुता के कारण आकर मेरी विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करने लगा था। दास ने व्याकुल होकर इस प्रकार का आचरण कर दिया। यदि दास ने पहल की होती तो वह शाही क्रोध तथा दण्ड का पात्र होता। दास २० लाख तन्के तथा १०० घोडे पेशकश के रूप मे सम्मानित वकीलो को सौप रहा है।" क्योकि मालवा की विजय सुल्तान मुजफ्फर की दृष्टि मे थी अत सुल्तान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और कोधरा की ओर प्रस्थान कर दिया। उसने मलिक ऐनुलमुल्क को २० लाख तन्के तथा १०० घोडे इस आशय से प्रदान किये कि वह अपने आदमियो की व्यवस्था करे।

मालवा की ओर प्रस्थान

उसने कोधरा से शाहजादा इस्कन्दर खा को महमदाबाद पर शासन करने के लिए भेज दिया। जब वह धोद कस्बे मे पहुचा तो उसने कैसर खा को आदेश दिया कि वह देवला नामक स्थान को जो सुल्तान महमूद खलजी के आदमियो के अधिकार मे है अपने अधीन कर ले, और तदुपरान्त वह धारागढ की ओर रवाना हो। मार्ग मे धार के निवासी राय हर खोखा का पुत्र सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और धार के निवासियो के लिए शरण की प्रार्थना की। सुल्तान ने उन्हे शरण प्रदान कर दी और किवामुल-मुल्क तथा इख्तियारुलमुल्क बिन एमादुलमुल्क को धार के निवासियो के प्रोत्साहन हेतु पहले भेज दिया। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान महमूद खलजी स्वय विवश हो गया है। चन्देरी के अमीरो (१७७) ने उस पर आक्रमण कर दिया है और वह चन्देरी की ओर गया है।" सुल्तान मुजफ्फर ने अपने अमीरो को वापस बुलवा लिया और कहा कि, "इस अभियान का वास्तविक उद्देश्य यह था कि पुरबिया काफिरो को निकाल कर राज्य सुल्तान महमूद तथा साहब खा वल्द सुल्तान नासिरुद्दीन मे बराबर बराबर बाट दे। इस समय जब कि सुल्तान महमूद चन्देरी के अमीरो के दमन हेतु गया हुआ है और अत्याचारी राजपूतो को अपने साथ ले गया है तो ऐसे समय पर उसके राज्य मे प्रविष्ट होना मनुष्यता तथा पौरुष के अनुकूल नही।"

सुल्तान का धार की ओर प्रस्थान

जब किवामुलमुल्क उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ तो उसने धार के आहुखाने के कुछ गुणो की चर्चा की और सुल्तान को उस क्षेत्र की सैर तथा शिकार के लिए प्रेरित किया। सुल्तान मुजफ्फर किवामुलमुल्क को शिविर की रक्षार्थ छोडकर २ हजार[3] अश्वारोहियो तथा १५० हाथियों सहित धार की ओर रवाना हुआ। जब वह धार पहुचा तो उसी दिन अस्त्र[4] के समय सवार होकर शेख अब्दुल्लाह जगाल तथा शेख कमालुद्दीन मौलवी के मजार के दर्शन किये। कहा जाता है कि शेख अब्दुल्लाह का राजा भोज के समय मे पाण्डे बृज नाम था और वह राजा का वजीर था। किसी प्रकार इस्लाम स्वीकार करके उसने उपासना तथा प्रार्थना करके आध्यात्मिक निपुणता प्राप्त कर ली। सक्षेप मे उसने धार के

१ एक पोथी के अनुसार 'लूना' तथा एक पोथी के अनुसार 'कोपी'।
२ ब्राह्मण।
३ एक पोथी के अनुसार १०,०००।
४ मध्याह्नोत्तर तथा सायकाल के मध्य मे।

समीप निजामुलमुल्क को इस आशय से विदा कर दिया कि वह दिलावरा के समीप तक शिकार करे। निजामुलमुल्क दिलावरा से निकल कर नालचा पहुचा। लौटते समय कुछ पुरबियो (राजपूतो) ने (१७८) आकर निजामुलमुल्क के शिविर को हानि पहुचाई और उचित दण्ड भोगा। इसका उल्लेख मालवा के सुल्तानो के इतिहास मे किया जा चुका है। सुल्तान मुजफ्फर ने यह समाचार पाकर निजामुलमुल्क के प्रति केवल इस आशय से क्रोध प्रकट किया कि इस वर्ष वह यात्रा करके लौट आये। इस प्रकार के कार्य, जो निजामुलमुल्क द्वारा सम्पन्न हुआ, से उसकी चिन्ता बढ जाती। सुल्तान मुजफ्फर लौट कर गुजरात चला गया और महमदाबाद चम्पानीर मे पडाव किया।

ईदर के भार मल की सहायता

शव्वाल ९२१ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १५१५ ई०) मे क्योकि ईदर के राजा राय भीम की मृत्यु के उपरान्त राणा सागा ने अपने जामाता राय मल बिन सूरज मल का पक्ष लेकर ईदर की विलायत[1] मे प्रविष्ट होकर उस विलायत तथा किले को भार मल बिन राय भीम के अधिकार से निकाल कर राय मल को सौप दिया अत सुल्तान मुजफ्फर ने निजामुलमुल्क को इस आशय से नियुक्त किया कि वह ईदर की विलायत को राय मल के अधिकार से निकाल कर भार मल को सौप दे। सुल्तान स्वय अहमदनगर की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे जब भार मल निजामुलमुल्क से मिला तो उसने उसे सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया। सुल्तान मुजफ्फर उस पडाव से खुदावन्द खा तथा निजामुलमुल्क को शिविर की रक्षा हेतु नियुक्त करके पटन की सैर को रवाना हुआ और वहा के निवासियो को साधारणत एव विद्वानो तथा आलिमो को विशेष रूप से सम्मानित करके शिविर मे पहुंच गया। उसने भार मल को निजामुलमुल्क के साथ करके इस आशय से विदा कर दिया कि वह जाकर ईदर को राय मल के अधिकार से निकाल ले और भार मल को सौप दे। निजामुलमुल्क ने जाकर ईदर को भार मल को सौंप दिया। राय मल ने क्योकि बीजानगर के पर्वत मे शरण ले ली थी अत निजामुलमुल्क ने बीजानगर के पर्वत मे पहुचकर युद्ध किया। दोनो ओर से बहुत से लोग मारे गये। जब यह समाचार सुल्तान मुजफ्फर को प्राप्त हुआ तो उसने आदेश दिया कि, "क्योंकि ईदर के राज्य पर अधिकार प्राप्त हो गया है अत अब बीजानगर जाने (१७९) तथा युद्ध करने का यही परिणाम होगा कि सैनिक अकारण नष्ट होंगे। यह उचित होगा कि वह (निजामुलमुल्क) तत्काल लौट आये।"

निजामुलमुल्क की ईदर से वापसी तथा राय मल का प्रभुत्व

लौटने के उपरान्त निजामुलमुल्क ने अहमदनगर से अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया और एक विराट् जश्न का आयोजन हुआ। उसने शाहजादा सिकन्दर खा, बहादुर खा तथा लतीफ खा के विवाह किये और अमीरो एव नगर के प्रतिष्ठित लोगो को घोडे तथा खिलअते इनाम मे प्रदान की। वर्षा ऋतु के उपरान्त वह "सैर तथा शिकार के नियम" से ईदर की ओर रवाना हुआ। निजामुलमुल्क के रुग्ण हो जाने तथा चिकित्सकों के उसके उपचार की ओर से निराश हो जाने के कारण ९२३ हि० (१५१७ ई०) के प्रारम्भ मे महमदाबाद चम्पानीर आ गया। सुल्तान ने वहा से मलिक नुसरतुलमुल्क को ईदर भेज दिया और निजामुलमुल्क को अपने पास बुलवा लिया। नुसरतुलमुल्क के पहुचने के पूर्व, निजामुल-मुल्क ज़हीरुलमुल्क को १०० सवारो सहित ईदर मे छोड कर शीघ्रातिशीघ्र महमदाबाद की ओर रवाना

1 राज्य।

हो गया। अभी नुसरतुलमुल्क अहमदनगर के समीप ही था, कि राय मल अवसर पाकर ईदर की ओर रवाना हुआ। जहीरुलमुल्क ने मित्रो की कमी तथा शत्रुओ की अधिकता के बावजूद राय मल से युद्ध किया और २७ व्यक्तियो सहित मारा गया। जब सुल्तान मुजफ्फर को यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने मलिक नुसरतुलमुल्क को इस आशय का फरमान भेजा कि वह बीजानगर को जोकि विद्रोहियो तथा विरोधियो के शरण का स्थान है नष्ट-भ्रष्ट कर दे।

मालवा के सुल्तान का सहायता की प्रार्थना हेतु आगमन

इसी बीच मे शेख जायल्दा, जो अपने काल के बहुत बडे सिद्ध पुरुष थे, तथा आश्तानगर का मुक्ता हबीब खा पुरबिया राजपूतो के प्रभुत्व के कारण मन्दू से भाग कर सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुए और पुरबियो के प्रभुत्व की शिकायत की। कुछ दिन उपरान्त धोद के दारोगा का इस आशय का प्रार्थना-पत्र (१८०) प्राप्त हुआ कि "सुल्तान महमूद खलजी पुरबिया राजपूतो के प्रभुत्व से आतकित होकर सहायता के लिए प्रार्थना करने उपस्थित हुआ। जब वह भकूर नामक स्थान पर, जो कि गुजरात की सीमा पर है, पहुचा तो दास उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और यथासभव उसकी सेवा करने मे किसी प्रकार की कमी न की।" सुल्तान मुजफ्फर यह बात सुनकर बडा प्रसन्न हुआ और कैसर खा के हाथ सरापर्दा तथा लाल बारगाह[1], जो विशेष रूप से बादशाहो द्वारा ही प्रयोग मे आ सकता है, समस्त कारखानो तथा अत्यधिक उपहारो सहित प्रेषित करके स्वय स्वागतार्थ रवाना हुआ। देवला के समीप उनकी भेट हुई। सुल्तान मुजफ्फर ने उसको अत्यधिक प्रोत्साहन देते हुए कहा कि, "आप अपने परिवार से पृथक् होने के कारण दुखी न रहे, कारण कि शीघ्र ही ईश्वर की कृपा से पुरबिया को नष्ट कर दिया जायगा और मालवा का राज्य उपद्रव तथा अशाति से मुक्त करा कर आपके सेवकों को प्रदान कर दिया जायगा।" उसने इसी मजिल पर ठहर कर सेना की तैयारी का आदेश दिया और अल्प समय मे अपार सेना लेकर मालवा की ओर रवाना हुआ।

मन्दू के किले पर सुल्तान का आक्रमण

जब मेदिनी राय को सुल्तान मुजफ्फर के आक्रमण के समाचार प्राप्त हुये तो वह राय पिथौरा को राजपूतो की एक सेना सहित मन्दू के किले मे छोड-कर स्वय २ हजार राजपूत अश्वारोहियो तथा महमूद के हाथियों को लेकर धार की ओर रवाना हुआ। वहा से वह राणा सागा के पास इस आशय से पहुचा कि उसे अपनी सहायतार्थ लाये। सुल्तान मुजफ्फर मन्दू के अवरोध के उद्देश्य से अग्रसर हुआ। जब सुल्तान मुजफ्फर की सेना मन्दू के समीप पहुची तो राजपूतो ने किले से निकल कर वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित किया, अन्त मे भाग कर वे शरण हेतु किले मे चले गये। दूसरे दिन बाहर निकल कर उन्होंने पुन घोर युद्ध किया। किवामुलमुल्क सुल्तानी ने अत्यधिक परिश्रम करके राजपूतो की बहुत बडी सख्या की हत्या कर दी। सुल्तान मुजफ्फर ने उस दिन किले के विभिन्न भागो को अपने अमीरो मे विभाजित करके निकट से अवरोध प्रारम्भ कर दिया।

(१८१) इसी बीच मे मेदिनी राय ने राय पिथौरा को एक पत्र भेजा कि, "मै राणा के पास जाकर मारवाड तथा आसपास के समस्त राजपूतो को सहायतार्थ ला रहा हू। तुम किसी न किसी युक्ति से सुल्तान मुजफ्फर को एक मास तक टालते रहो।" राय पिथौरा ने पूर्ण छल तथा धूर्तता से

१ एक प्रकार का मंडप।

कार्य लेते हुए सदेश भेजा कि, "बहुत समय से मन्दू का किला राजपूतो के अधिकार मे है। उनके परिवार तथा सैनिक किले मे है। यदि आप एक पडाव पीछे हट कर पडाव करे तो हम लोग अपने परिवार को निकाल ले जायेगे और एक मास मे किला खाली करके सौप देगे तथा स्वय आपके हितैषियो मे सम्मिलित हो जायेगे।" सुल्तान मुजफ्फर यद्यपि जानता था कि वे लोग समय टालने का प्रयत्न कर रहे है और कुमक की प्रतीक्षा कर रहे है किन्तु सुल्तान महमूद के पुत्रो तथा सबधियो के किले मे होने के कारण उसने विवश होकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उस पडाव से हट कर ३ कोस पीछे ठहर गया।

उस पडाव पर आसीर तथा बुरहानपुर का हाकिम आदिल खा सेना लेकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पहुच गया। उसी समय समाचार प्राप्त हुआ, कि मेदिनी राय राणा सागा को कुछ हाथी तथा अत्यधिक धन देकर अपनी सहायतार्थ लाया है और उज्जैन के समीप पहुच गया है। सुल्तान मुजफ्फर को इस पर जोश आ गया और उसने आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिम आदिल खा फारुकी और किवामुलमुल्क सुल्तानी को राणा सागा से युद्ध करने के लिए भेजा और स्वय मन्दू के किले के अवरोध हेतु रवाना हुआ। वह इस बात का प्रयत्न करने लगा कि किला राणा सागा से युद्ध करने के पूर्व ही विजय हो जाय। उन्होने अमीरो तथा सेना के सरदारो को विभिन्न स्थानो पर नियुक्त करके १४ सफर ९२४ हि० (२५ फरवरी १५१८ ई०) को प्रात काल किले को चारो ओर से घेर कर युद्ध प्रारम्भ कर दिया और नसीनिया लगा कर वे किले मे प्रविष्ट हो गये। राजपूतों ने जौहर आयोजित करके अपने घर मे आग लगा दी और अपने (१८२) परिवार तथा मतानो मे से कुछ की हत्या कर दी और कुछ को जला डाला और स्वय युद्ध के लिए निकल खडे हुए। जब तक उनके शरीर मे प्राण रहे वे युद्ध करते रहे। सुल्तान मुजफ्फर ने भी किले मे प्रविष्ट होकर कत्लेआम का आदेश दे दिया। यह बात प्रामाणिक रूप से ज्ञात हुई है कि उस दिन १९ हजार राजपूतो की हत्या हुई। इसका सविस्तार उल्लेख मालवा के सुल्तानों के इतिहास मे किया गया है।

सक्षेप मे, जब वे पुरबिया राजपूतो की हत्या से निश्चिन्त हो गये तो सुल्तान महमूद सुल्तान मुजफ्फर की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने उसे बधाई दी और व्याकुल होकर पूछा कि, "दास के लिए क्या आदेश होता है?" सुल्तान मुजफ्फर ने कहा कि, "मन्दू का किला तथा मालवा का राज्य ईश्वर तुम्हारे लिए शुभ करे।" वह वहा से लौट कर अपने शिविर मे चला गया और दूसरे दिन राणा सागा से युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। एक प्रतिष्ठित राजपूत किले से आहत होकर भाग कर राणा के पास पहुचा और उसने सुल्तान मुजफ्फर के हत्याकाड तथा आतक का इस प्रकार उल्लेख किया कि राणा का पित्ता पानी हो गया और वह पलायन करके चित्तौड की ओर चला गया। उस राजपूत की उसी सभा मे मृत्यु हो गई।

जब सुल्तान महमूद ने मन्दू से धार पहुच कर सुल्तान से प्रार्थना की कि, "आप (सुल्तान) फकीर के पिता तथा चाचा के स्थान पर है अत आशा है कि प्राचीन कृपा को नवीन कृपा से मिश्रित करके फकीर की कोठरी को अपने शुभ चरणों द्वारा प्रकाशमान करेगे।" सुल्तान मुजफ्फर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और शाहजादा बहादुर खा, लतीफ खा तथा आसीर एव बुरहानपुर के हाकिम आदिल खा को अपने साथ लेकर मन्दू की ओर प्रस्थान किया और रात्रि मे नालचा मे पडाव किया। प्रात काल वह हाथी पर सवार होकर किले मे प्रविष्ट हुआ और सुल्तान महमूद के महल मे उतरा। सुल्तान महमूद ने यथासभव आतिथ्य-सत्कार का पूर्ण प्रयत्न किया और स्वय खडा हुआ सेवा करता रहा। भोजन के उपरान्त उसने उचित उपहार सुल्तान तथा शाहजादे की सेवा मे प्रस्तुत किये और क्षमा सबधी वाक्य कहे। सुल्तान मुजफ़्फर पिछले सुल्तानो के महलो तथा भवनो का निरीक्षण करके धार की ओर चला गया

और वहा से सुल्तान महमूद को उसने विदा कर दिया और आसफ खा गुजराती को १० हजार अश्वा-(१८३) रोहियो सहित उसकी सहायतार्थ नियुक्त करके गुजरात की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान महमूद स्नेह से विवश होने के कारण विदा होने के बावजूद देवला नामक स्थान तक सुल्तान मुजफ्फर के साथ गया और वहा से पुन विदा होकर मन्दू लौट गया।

ईदर की ओर प्रस्थान

सुल्तान मुजफ्फर ने कुछ दिन तक महमदाबाद चम्पानीर मे पहुच कर विश्राम किया, और गुजरात के प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्ति उसको बधाई देने के लिए उसकी सेवा मे उपस्थित हुए और उन्हे इनाम तथा कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया। इसी बीच मे एक नदीम[1] ने उससे निवेदन किया कि, "जिस समय आप मालवा की विजय हेतु गये हुए थे उस समय ईदर के राजा राय मल ने बीजानगर पर्वत से निकल कर पटन के राज्य के कुछ भाग तथा कहराला कस्बे मे छापा मारा। जब मलिक नुसर-तुलमुल्क ईदर से उससे युद्ध करने के उद्देश्य से रवाना हुआ तो वह वहा से पलायन करके बीजानगर के दुर्गम स्थानो मे प्रविष्ट हो गया।" सुल्तान ने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो वर्षा ऋतु के उपरान्त इस विषय मे प्रयत्न किया जायेगा।" सुल्तान ने वर्षा ऋतु के बाद ९२५ हि० (१५१९ ई०) मे राय मल तथा अन्य विद्रोहियो को दण्ड देने के लिये ईदर की ओर प्रस्थान किया। क्योंकि माल का राजा, राय मल को सहायता दिया करता था अत सुल्तान ने उसे दण्ड देना सर्वोपरि समझ कर उसकी विलायत[2] को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और कुछ दिन तक ईदर मे ठहरा रहा। तदुपरान्त उसने वहा से महमदाबाद चम्पा-नीर पहुच कर विश्राम किया।

सुल्तान महमूद की पराजय तथा राणा सागा की उदारता

कुछ दिन उपरान्त यह समाचार प्राप्त हुआ कि "सुल्तान महमूद खलजी आसफ खा के साथ काकरून के किले की विजय के उद्देश्य से भीम करण[3] पुरबिया के विरुद्ध गया हुआ था किन्तु मेदिनी राय ने राणा सागा को अपनी सहायतार्थ बुलाकर घोर युद्ध किया। मालवा के अधिकाश अमीर उस युद्ध मे मारे गये। आसफ खा के पुत्र की भी कुछ वीरो सहित हत्या हो गई और सुल्तान महमूद बुरी तरह (१८४) घायल होकर बन्दी बना लिया गया। राणा सागा ने उस पर कृपा करते हुए अपनी एक सेना उसके साथ करके उसे मन्दू भेज दिया।" सुल्तान मुजफ्फर यह समाचार पाकर बडा दुखी हुआ और उसने कुछ अन्य सरदारों को उसकी (सुल्तान महमूद) सहायतार्थ भेज कर उसे स्नेहमयी पत्र लिखे।

सुल्तान का ईदर की ओर प्रस्थान

सुल्तान मुजफ्फर उन दिनो सैर तथा शिकार के नियम से ईदर पहुचा और वहा एक भवन का निर्माण प्रारम्भ कराया। वह नुसरतुलमुल्क को अपने साथ लेकर अहमदाबाद पहुचा और ईदर का राज्य मलिक मुबारिजुलमुल्क को सौप दिया।

१ मुसाहिब।
२ राज्य।
३ पुस्तक में 'बीम करण'।

राणा सागा तथा मुबारिजुलमुल्क का युद्ध

एक दिन मुबारिजुलमुल्क की सेवा मे एक बादफरोश[1] ने राणा सागा के पौरुष का कुछ हाल बयान किया। मुबारिजुलमुल्क ने अत्यधिक अभिमान प्रदर्शित करते हुए अपशब्द कहे और एक कुत्ते का नाम राणा सागा रख कर ईदर के द्वार के समक्ष बँधवा दिया। बादफरोश ने जाकर यह हाल राणा सागा को बताया। राणा सागा ने अपनी मूर्खतापूर्ण मर्यादा की रक्षा हेतु ईदर पर चढाई की और सरोही की सीमा तक के प्रदेश नष्ट-भ्रष्ट कर दिये। इसी बीच मे सुल्तान मुजफ्फर, किवामुलमुल्क बिन किवामुलमुल्क को करास[2] की व्यवस्था के उद्देश्य से अहमदाबाद मे छोड कर चम्पानीर की ओर रवाना हुआ। राणा सागा जब बाकर[3] की विलायत[4] मे पहुचा तो बाकर का राजा यद्यपि सुल्तान मुजफ्फर का आज्ञाकारी था, किन्तु परेशान होकर राणा सागा से मिल गया। राणा सागा वहा से डुनगरपुर पहुचा। मुबारिजुलमुल्क ने जो वास्तविक बात थी वह सुल्तान के पास लिख भेजी। क्योकि सुल्तान के वजीर मुबारिजुलमुल्क से असतुष्ट थे अत उन्होने सुल्तान से कहा कि, "मुबारिजुलमुल्क के लिए यह उचित न था कि वह एक कुत्ते का नाम राणा सागा रख कर उसे अपमानित करे और फिर भयभीत होकर सहायता मागे अन्यथा राणा सागा को इस बात का कैसे साहस हो सकता था कि वह सुल्तान की विलायत मे पाव रखे।" (१८५) सयोग से जो सेना ईदर की सहायतार्थ नियुक्त की गई थी वह वर्षा की अधिकता के कारण अहमदाबाद तथा अपने घरों को चली गई थी और थोडी-सी सेना मुबारिजुलमुल्क के पास रह गई थी।

राणा सागा को जब इस बात की सूचना मिली तो वह ईदर की ओर रवाना हुआ। जब वह निकट पहुचा तो मुबारिजुलमुल्क अन्य सरदारो की सहायता से युद्ध की तैयारी करके राणा सागा के स्वागतार्थ निकला। अभी दोनो सेनाओ ने एक दूसरे को देखा भी न था कि वे लौट कर ईदर आ गये। सरदारो ने कहा कि, "मित्रो की न्यूनता तथा शत्रुओ की अधिकता का सभी को पता है। अब यह उचित होगा कि सहायता पहुचने तक अहमदनगर के किले मे जा कर उसे बन्द कर ले।" इस प्रस्ताव के अनुसार वे लोग मुबारिजुलमुल्क को विवश करके अपने साथ ले गये और अहमदनगर के किले मे चले गये। दूसरे दिन प्रात काल राणा सागा ईदर पहुचा और मुबारिजुलमुल्क के विषय मे पूछताछ कराई। गुजरात के करामो[5] ने जो किवामुलमुल्क से भाग कर राणा से मिल गये थे कहा कि, "मुबारिजुलमुल्क ऐसा व्यक्ति नही है जो भागे किन्तु अमीर लोग उसे जबरदस्ती अहमदनगर के किले मे ले गये है और कुमक की प्रतीक्षा कर रहे है।" राणा सागा शीघ्रातिशीघ्र ईदर से अहमदनगर की ओर रवाना हुआ। उसी बादफरोश ने, जिसने मुबारिजुलमुल्क के समक्ष राणा सागा की प्रशसा की थी, उसकी सेवा मे उपस्थित होकर कहा कि, "राणा सागा बहुत बडी सेना लेकर आया है। खेद है कि आप सरीखे व्यक्तियो की व्यर्थ हत्या हो रही है। यह उचित होगा कि आप अहमदनगर के किले मे बन्द रहे। राणा अपने घोडे को किले के नीचे जल पिलाकर लौट जायगा और वह इससे अधिक कुछ न करेगा।" मुबारिजुलमुल्क ने उत्तर दिया

१ भाट।

२ वह घूस जो किसी शक्तिशाली सरदार को अपने राज्य की रक्षा हेतु दी जाती है ताकि वे आक्रमण इत्यादि से सुरक्षित रहें अथवा वह भूमि जो बड़े बड़े जमीदारो को शान्त रखने एव उपद्रव को रोके रखने के लिये दी जाती थी।

३ एक पोथी के अनुसार 'बाका'।

४ राज्य।

५ करास के स्वामी, जमीदार।

कि, "उसे मै इस नदी मे घोडे को पानी न पिलाने दूंगा।" और अपनी वीरता के कारण नदी पार करके एक थोडी-सी सेना, जो राणा की सेना का दसवा भाग भी न थी, लेकर पहुच गया। जब राणा वहा पहुचा तो घोर युद्ध हुआ।

(१८६) असद खा, जोकि एक सरदार था, कुछ अन्य सरदारो सहित मारा गया और सफदर खा आहत हो गया। मुबारिजुलमुल्क ने कई बार राणा की सेना पर आक्रमण किया और आहत हुआ। अधिकाश गुजराती मारे गये। मुबारिजुलमुल्क सफदर खा सहित अहमदाबाद पहुचा। राणा अहमदाबाद को नष्ट करके एक दिन तक वहा रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल अहमदनगर से प्रस्थान करके वह दुनगर की ओर चला गया। जब वह दुनगर[1] पहुचा तो वहा के सर्वसाधारण व्यक्तियो ने उपस्थित होकर कहा कि, "हम जुन्नारदार[2] है। आपके पूर्वज सर्वदा हम लोगो का सम्मान करते रहे है।" राणा सागा ने दुनगर का विनाश नही किया और बेलनगर[3] की ओर रवाना हुआ। उस स्थान का थानेदार मलिक हातिम प्राण देने के उद्देश्य से बाहर आया और युद्ध करके मृत्यु को प्राप्त हुआ। राना सागा बेलनगर को विध्वस करके अपने राज्य को लौट गया।

मलिक किवामुलमुल्क ने मुबारिजुलमुल्क तथा सफदर खा के साथ एक सेना इस आशय से भेजी कि वे उन लोगो को जिनकी हत्या हुई है दफन कर दे। मुबारिजुलमुल्क ने अहमदनगर पहुच कर उन्हे दफन कराया। इसी बीच मे ईदर के समीप के कोलियो तथा करासो ने मुबारिजुलमुल्क की सेना की सख्या को कम पाकर अहमदनगर पर आक्रमण किया। मुबारिजुलमुल्क ने किले से निकल कर युद्ध किया और करासों के ६१ सरदारो की हत्या कर दी और विजय तथा सफलता प्राप्त करके अहमदनगर लौट गया। क्योकि अहमदनगर नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था और अनाज तथा जीविका सबन्धी वस्तुओ की प्राप्ति मे कठिनाई होती थी अत वे अहमदनगर से प्रस्थान करके धीज कस्बे मे चले गये।

राणा सागा से युद्ध

जब यह समाचार सुल्तान मुजफ्फर को प्राप्त हुए तो उसने एमादुलमुल्क तथा कैसर खा को अत्यधिक सेना तथा १०० हाथी प्रदान करके राणा सागा से युद्ध करने के लिये भेजा। एमादुलमुल्क (१८७) तथा कैसर खा ने अहमदाबाद पहुच कर, किवामुलमुल्क के साथ धीज[4] कस्बे की ओर प्रस्थान किया और राणा सागा के लौट जाने का समाचार सुल्तान को लिख कर चित्तौड पर आक्रमण करने की प्रार्थना की। सुल्तान ने उत्तर भेजा कि, "क्योकि वर्षा ऋतु आ गई है अत तुम लोग अहमदनगर मे ठहरो और वर्षा ऋतु उपरान्त चित्तौड पर आक्रमण करो।" अमीर लोग सुल्तान के आदेशानुसार अहमदनगर मे ठहर गये। सुल्तान मुजफ्फर ने कुछ दिन उपरान्त सेना को एक वर्ष का वेतन खजाने से नकद प्रदान करके अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया और चित्तौड पर आक्रमण करने तथा राणा सागा को दण्ड देने का सकल्प कर लिया।

इसी बीच मे मलिक अयाज सुल्तानी ने सोरठ की विलायत से अत्यधिक सेना सहित उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "सुल्तान का प्रताप, राणा सागा को दण्ड देने के लिये प्रस्थान करने की अपेक्षा

१ इसे 'बद नगर' भी पढा जा सकता है। इसे 'दूगरपुर' तथा 'दुनगरपुर' भी लिखा गया है।
२ ब्राह्मण।
३ कुछ पोथियों के अनुसार 'बेसलनगर'।
४ एक पोथी के अनुसार 'धतीज'।

कही अधिक है। हम जैसे दासो को इसी कारण आश्रय प्रदान किया गया है कि यदि कोई इस प्रकार का कार्य सामने आ जाय तो सुल्तान को कष्ट न करना पडे।" मुहर्रम ९२७ हि० (दिसम्बर १५२०-जनवरी १५२१ ई०) मे सुल्तान मुजफ्फर अहमदनगर पहुच गया। जब सेनाये एकत्र हो गई तो मलिक अयाज ने पुन राणा सांगा पर आक्रमण करने की अनुमति चाहने हेतु निवेदन किया। सुल्तान ने एक लाख अश्वारोही तथा १०० हाथी उसके साथ करके राणा सागा को दण्ड देने के लिए भेजे। उसके पीछे किवामुलमुल्क को भी २० हजार अश्वारोहियो सहित बिदा किया। जब मलिक अयाज तथा किवा-मुलमुल्क ने महरासा की मज़िल पर पडाव किया, तो सुल्तान ने सावधानी की दृष्टि से ताज खा तथा निजा-मुलमुल्क सुल्तानी को भी उस ओर भेज दिया। मलिक अयाज ने सुल्तान की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "राणा सागा को दण्ड देने के लिये इतने विश्वस्त अमीरो को भेजना मेरे लिये बडे सम्मान का विषय (१८८) है किन्तु मुझे इन सब हाथियो की भी आवश्यकता नही। इस दास ने स्वामी के प्रताप के भरोसे पर यह सेवा प्रारम्भ की है।" उसने अधिकाश हाथियो को भी वापस भेज दिया और महरासा से कूच करके धौल नामक स्थान पर पडाव किया और वहा से बहुत बडी सख्या मे लोगो को उस राज्य को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये भेजा।

उसने सफदर खा को लकिया कोट के राजपूतों को दण्ड देने के लिये नियुक्त किया। सफदर खा ने उस स्थान पर पहुच कर, यद्यपि वह बडा ही दुर्गम स्थान था, आक्रमण किया और अत्यधिक राज-पूतो की हत्या कर दी। जो बच गये उन्हे उसने बन्दी बना लिया और मलिक अयाज़ से मिल गया। वहा से प्रस्थान करके उसने डुनगरपुर तथा बासवाला को जला कर राख कर डाला और चित्तौड की ओर रवाना हुआ। सयोग से उस पडाव पर एक व्यक्ति ने उपस्थित होकर मलिक अशजउलमुल्क तथा सफदर खा को यह सूचना दी कि माल[1] का राजा उदय सिह, राणा सागा की राजपूत सेना तथा उग्रसेन पुरबिया सहित एक पर्वत के पीछे छिपा हुआ है, वे रात्रि मे छापा मारना चाहते है। अशजउलमुल्क तथा सफदर खा ने मलिक अयाज सुल्तानी को सूचना भेजे बिना लगभग २०० अश्वारोहियो को अपने साथ लेकर शीघ्रातिशीघ्र उस ओर प्रस्थान किया और भीषण युद्ध हुआ। उग्रसेन घायल हो गया और ८० राजपूत रणक्षेत्र मे मारे गये। अन्य राजपूत भाग खडे हुए। मलिक अयाज सुल्तानी को जब यह सूचना मिली तो वह सेना तैयार करके सफदर खा की सहायतार्थ रवाना हुआ। जब वह रणक्षेत्र मे पहुचा तो सफदर खा की वीरता को देखकर आश्चर्य मे पड गया और उसने योद्धाओ के घावो पर कृपा का मलहम लगाया।

दूसरे दिन प्रात.काल मलिक किवामुलमुल्क सुल्तानी उस समूह की खोज मे बासवाला पर्वत मे प्रविष्ट हुआ और वहा आबादी का कोई चिह्न उसने शेष न रहने दिया। उग्रसेन आहत होकर राणा के पास पहुँचा और उसे सब हाल बताया। जब मलिक अयाज ने मन्दसौर पहुँच कर उसे घेर लिया तो (१८९) राणा सागा अपने थानेदार की सहायतार्थ पहुचा और मन्दसौर से १२ कोस पर पडाव किया। उसने मलिक अयाज को सदेश भेजा कि, "मै सुल्तान की सेवा मे दूत भेज रहा हूँ और उसके हितैषियो मे सम्मिलित हो रहा हूँ, आप अवरोध त्याग दे।" मलिक अयाज ने दूतों से इस प्रकार की वार्त्ता की जिसका कोई भी अर्थ न था, और किले की बिजय का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। सुरग को उस स्थान तक पहुंचा दिया कि आज या कल मे सफलता होने ही वाली थी।

१ एक पोथी मे 'नाल'।

इसी बीच मे शिरजा खा शिरवानी ने सुल्तान महमूद खलजी के पास से पहुचकर मलिक अयाज को इसकी ओर से यह सदेश पहुचाया कि, "यदि सहायता तथा कुमक की आवश्यकता हो तो मै भी वहा पहुच जाऊ।" मलिक अयाज ने प्रसन्न होकर उससे आने का आग्रह किया। सुल्तान महमूद क्योकि सुल्तान मुजफ्फर का ऋणी था अत उसने सलाहदी पुरबिया को अपने साथ लेकर मन्दसौर की ओर प्रस्थान किया। राणा सागा ने सुल्तान महमूद के आगमन से व्याकुल होकर सलाहदी के पास मेदिनी राय को यह सदेश लेकर भेजा कि, "तुम्हे इस बात की ओर ध्यान देना चाहिये कि हम लोग एक ही समूह से है और इस बात को दृष्टि मे रखते हुए जो तुम्हारे अनुकूल कर्तव्य है उसकी उपेक्षा न करनी चाहिये। इस समय सधि का प्रयत्न करना चाहिये।"

कुछ दिन उपरान्त कार्य इस सीमा को पहुच गया कि किले वालो के प्राण मुह को आ गये। किवामुलमुल्क अपने मोर्चे को सामने ले जाकर किले मे प्रविष्ट होने वाला ही था कि मलिक अयाज ने यह देखकर कि कही विजय किवामुलमुल्क के नाम पर न हो जाय उसे उस दिन युद्ध से रोक दिया। गुजरात के अमीर यह सूचना पाकर मलिक अयाज से खिन्न हो गये और दूसरे दिन प्रात काल मुबारि-जुलमुल्क तथा कुछ अन्य सरदार मलिक अयाज की आज्ञा बिना युद्ध के विचार से राणा सागा की सेना से युद्ध करने के लिये रवाना हुए। मलिक तुगलुक शाह फौलादी ने पहुच कर मुबारिजुलमुल्क को मार्ग से लौटा दिया और अमीरो के मध्य मे मतभेद उत्पन्न हो गया किन्तु वे सुल्तान के दण्ड के भय से (१९०) मलिक अयाज की आज्ञा बिना आक्रमण न कर सकते थे। मलिक अयाज़ ने अमीरो के मतभेद के बावजूद सेना को तैयार करके सुरग मे आग लगा दी। जब बुर्ज भी गिर पडा तो ज्ञात हुआ कि राजपूतो ने इस बात की सूचना पाकर बुर्ज के बराबर दूसरी दीवार का निर्माण कर दिया था।

दूसरे दिन राणा सागा के दूतो ने आकर कहा कि, "राणा कहता है कि मेरी इच्छा है कि मै अब सुल्तान के हितैषियो मे सम्मिलित हो जाऊ और जो हाथी अहमदनगर के युद्ध मे प्राप्त हुए है उन्हे अपने पुत्र के साथ सुल्तान की सेवा मे भेज दूँ। मेरी समझ मे नही आता कि आपकी इस कठोरता एव निष्ठु-रता का क्या कारण है।" मलिक अयाज़ ने किवामुलमुल्क के विरोध के कारण सधि करना स्वीकार कर लिया और सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। अन्य अमीर असतुष्ट होकर सुल्तान महमूद खलजी की सेवा मे पहुचे और उसे युद्ध के लिये तैयार करके यह निश्चय किया कि बुधवार को युद्ध हो। उस गोष्ठी से एक व्यक्ति ने मलिक अयाज़ के पास पहुच कर उसे सब हाल बता दिया। मलिक अयाज ने तत्काल एक व्यक्ति सुल्तान महमूद की सेवा मे भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि, "सुल्तान ने इस सेना के अधिकार की बागडोर दास को सौप दी है और दास को इस बात का अधिकार दे दिया है कि जिस बात मे वह सुल्तान का हित देखे उस पर आचरण करे। आप गुजरात के अमीरों के कहने पर राणा सागा से युद्ध करना चाहते है किन्तु सेवक इस बात से सहमत नही, कारण कि उसे विश्वास है कि मतभेद तथा विरोध के कारण सफलता प्राप्त न हो सकेगी।"

मलिक अयाज़ ने बुधवार को प्रात काल जिस दिन अमीरो ने युद्ध करना निश्चय किया था उस पडाव से खलजीपुर नामक स्थान को प्रस्थान कर दिया और राणा सागा के दूतों को खिलअते देकर बिदा कर दिया। सुल्तान महमूद खलजी ने भी मन्दू की ओर प्रस्थान किया। मलिक अयाज़ जब चाम्पानीर (१९१) मे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो सुल्तान ने उसके प्रति कठोरता तथा क्रोध प्रकट करते हुए उसे बन्दर द्वीप की ओर भेज दिया ताकि वह अपने आदमियो को तैयार करके वर्षा ऋतु उपरान्त उसकी सेवा में उपस्थित हो और यह निश्चय किया कि वर्षा ऋतु के पश्चात् सुल्तान स्वय राणा को दड देने के लिए प्रस्थान करेगा।

मलिक अयाज ने अपने एक विश्वासपात्र को राणा सागा के पास भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि, "क्योंकि हम लोग प्रेम के बधन मे बध चुके है अत एक दूसरे के प्रति निष्ठा तथा शुभाकाक्षा का प्रयत्न करते रहना आवश्यक है। क्योकि सुल्तान अमीरो के उस प्रदेश से वापस चले आने के कारण रुष्ट हो गया है और उस ओर आक्रमण करके विद्रोहियो को दण्ड देना चाहता है अत ऐसी दशा मे उस विलायत का अत्यधिक विनाश हो जायगा। यह उचित होगा कि तुम अपने पुत्र को पेशकश तथा अत्यधिक उपहार सहित शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान की सेवा मे भेज दो ताकि उस प्रदेश के निवासी सुल्तान के क्रोध से सुरक्षित हो जाय।"

सुल्तान मुजफ्फर ने मुहर्रम ९२८ हि० (दिसम्बर १५२१ ई०) मे चम्पानीर से अहमदाबाद की ओर इस आशय से प्रस्थान किया कि वह तैयारी करके चित्तौड पर आक्रमण करे। कुछ दिन मे अहमदाबाद मे सेना की व्यवस्था करके काकरिया हौज पर पडाव किया। सेना एकत्र करने के लिए वह ३ दिन तक उस पडाव पर ठहरा रहा। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुआ कि राणा सागा ने अपने पुत्र को अत्यधिक उपहार देकर सुल्तान की सेवा मे भेजा है और वह महरासा कस्बे मे पहुच गया है। कुछ दिन पश्चात् जब उसके पुत्र ने सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होकर उपहार भेट किये तो सुल्तान ने उसके पिता के अपराधो को क्षमा करके उसे शाही खिलअत द्वारा सम्मानित किया। उस सेना को भग करके कुछ दिन तक झालावर के समीप सैर तथा शिकार मे व्यस्त रहा और फिर अहमदाबाद चला गया। (१९२) वहा उसने राणा के पुत्र को खिलअत प्रदान करके बिदा कर दिया और स्वय सरकीज की ओर रवाना हुआ।

उस वर्ष मलिक अयाज़ सुल्तानी की, जो राज्य की शक्ति था, मृत्यु हो गई। सुल्तान यह समाचार पाकर बडा दु खी हुआ और उसने उसकी जागीर उसके पुत्र को प्रदान कर दी।

सुल्तान की पत्नी की मृत्यु

९३० हि० (१५२३-२४ ई०) मे विद्रोहियो को दण्ड देने के लिए उसने चम्पानीर से प्रस्थान किया और महरासा तथा हरसौल कस्बे के मध्य मे कुछ दिन तक पडाव किया। उसने महरासा के किले का नये सिरे से निर्माण कराया तदुपरान्त अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ, मार्ग मे सुल्तान की सबसे अधिक प्रिय पत्नी की मृत्यु हो गई। सुल्तान तथा शाहजादे उसकी मृत्यु से बडे दुखी हुए और उसकी कब्र पर जाकर उन्होने शोक सबन्धी प्रथाये सम्पन्न कराईं। शोक की अवधि के समाप्त होने के उपरान्त वे बडे दु ख तथा चिन्ता की अवस्था मे अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। वे अपना अधिकाश समय दु ख मे व्यतीत करते थे। एक दिन खुदावन्द खा ने, जोकि अमीरों तथा वज़ीरो मे अपनी योग्यता के कारण सर्वश्रेष्ठ था, सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होकर सतोष के लाभ के विषय मे बडा विशद विवरण दिया और सुल्तान को कष्ट से मुक्ति दिला दी। क्योंकि वर्षा ऋतु आ गई थी अत सुल्तान को चम्पानीर की सैर के लिये तैयार किया। सुल्तान चम्पानीर की वायु का स्मरण करके उस ओर रवाना हुआ।

सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध आलम खा को सहायता

एक दिन देहली के बादशाह सुल्तान सिकन्दर लोदी के पुत्र आलम खा ने निवेदन किया कि, "सुल्तान इबराहीम बिन सुल्तान सिकन्दर अनुभव-शून्यता के कारण रक्त पीने वाली तलवार को म्यान (१९३) से निकाल कर बडे-बडे अमीरो की हत्या करा रहा है। शेष लोग बार-बार प्रार्थना-पत्र भेज कर मुझे बुलवा रहे है। क्योंकि यह फकीर दीर्घ काल से इस आशा से सेवा कर रहा है कि इस उच्च

वश के प्रयत्न से वह अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगा और अब वह समय आ गया है कि मेरे भाग्य के नक्षत्र उदय हो, अत आशा है कि आप फकीर की सहायता करेगे ताकि उसे उसके पूर्वजो का राज्य प्राप्त हो जाय।" सुल्तान मुजफ्फर ने बहुत से लोगो को उसके साथ करके उसे पर्याप्त धन देकर विदा कर दिया और वह सुल्तान इबराहीम से युद्ध करने के लिये देहली की ओर रवाना हुआ। आलम खा का शेष हाल देहली के सुल्तानो के इतिहास मे लिखा जा चुका है।

शाहजादा बहादुर खा का रुष्ट होना

९३१ हि० (१५२४-२५ ई०) मे सुल्तान चम्पानीर से ईदर की ओर रवाना हुआ। मार्ग मे शाहजादा बहादुर खा ने अपनी आय की कमी तथा व्यय की अधिकता की शिकायत करके प्रार्थना की कि "मेरा वेतन शाहजादा सिकन्दर खा के बराबर कर दिया जाय।" सुल्तान ने कुछ कारणवश इस कार्य मे विलम्ब उचित समझ कर उसे केवल वचन देकर टाल दिया। शाहज़ादा बहादुर खा दुखी होकर बिना आज्ञा ही अहमदाबाद चला गया और वहा से मालवा की विलायत मे पहुच गया। मालवा के राजा, उदय सिंह ने शाहज़ादा बहादुर खा के आगमन को एक बहुत बडी देन समझ कर, नाना प्रकार से उसकी सेवा की। जब वह चित्तौड की विलायत मे प्रविष्ट हुआ तो राणा सागा ने भी उसका स्वागत करके उसे नाना प्रकार के उपहार भेट किये और निवेदन किया कि, "यह प्रदेश आपके सेवको के अधीन है। आप जो भी आदेश देगे उसका पालन किया जायगा।" शाहज़ादा बहादुर खा ने अपने उच्च साहस के कारण उसको प्रोत्साहन प्रदान किया और उसकी प्रार्थना को रद्द करते हुए ख्वाजा मुईनुद्दीन हसन सिजज़ी के मज़ार के दर्शनार्थ पहुचा। दर्शन के उपरान्त वह मेवात की ओर रवाना हुआ। हसन खा मेवाती ने कई मजिल आगे बढकर आतिथ्य-सत्कार का प्रबन्ध किया। बहादुर खा वहा से देहली की ओर रवाना हुआ।

शाहजादे का देहली पहुंचना

(१९४) सयोग से उन्ही दिनो मे फिरदौस मकानी[1] जहीरुद्दीन सुल्तान बाबर बादशाह हिन्दुस्तान की विजय के उद्देश्य से देहली के समीप पडाव किये हुए थे। सुल्तान इबराहीम ने शाहजादे के आगमन को अपनी शक्ति मे वृद्धि का कारण समझ कर, उसका अत्यधिक आदर तथा सम्मान किया। एक दिन शाहज़ादा बहादुर खा गुजरात के वीरो सहित सवार होकर युद्ध हेतु अग्रसर हुआ और उसने मुगुल वीरो से युद्ध किया। दोनो ओर से उचित प्रयत्न हुआ। अफगान अमीर क्योंकि सुल्तान इबराहीम से घृणा करते थे अत वे इस बात की इच्छा करने लगे कि उसे हटा कर सुल्तान बहादुर को सिंहासनारूढ कर दे। सुल्तान इबराहीम को जब इस बात का पता चला तो उसने विश्वासघात करना निश्चय किया। शाहज़ादा बहादुर खा को जब यह पता चला तो वह जौनपुर की ओर चला गया।

सुल्तान की मृत्यु

जब सुल्तान मुजफ्फर को यह समाचार प्राप्त हुआ कि बहादुर खा देहली चला गया है और बाबर बादशाह मुगुलो की सेना सहित उस क्षेत्र मे आ गया है तो वह अपने पुत्र के वियोग के कारण बडा दुखी हुआ। उसने खुदावन्द खा को आदेश दिया कि, "प्रार्थना-पत्र भेज कर शाहज़ादे को बुलवाओ।"

१ बाबर के सम्मान हेतु मुगुल इतिहासकार उसका नाम न लिखते थे और उसे फ़िरदौस मकानी अथवा स्वर्गीय लिखते थे।

इसी बीच मे गुजरात मे घोर अकाल पडा और लोग बडे परेशान हुए। सुल्तान मुजफ्फर ने अपनी स्वाभाविक दयालुता के कारण कुरान शरीफ तथा सहाहे सित्ता[1] का पाठ प्रारम्भ कर दिया। ईश्वर ने उसके सदाचरण के कारण उस कष्ट का अन्त कर दिया। उन्ही दिनो सुल्तान रुग्ण हो गया और उसका रोग नित्यप्रति बढने लगा। एक दिन सुल्तान मुज़फ्फ़र ने विलाप करते हुए शाहज़ादा बहादुर खा का स्मरण किया। एक व्यक्ति ने अवसर पाकर कहा कि, "सेना दो दलो मे विभाजित हो गई है। एक समूह शाहजादा सिकन्दर खा को चाहता है ओर एक समूह लतीफ खा की ओर आकर्षित है।" सुल्तान ने पूछा कि, "शाहज़ादा बहादुर खा के भी कोई समाचार प्राप्त हुए हैं?" बुद्धिमानो ने उसकी इस बात से समझ (१९५) लिया कि वह उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता है। सुल्तान ने सिकन्दर खा को अपने पास बुलवा कर उसके भाइयो के विषय मे वसीयत करके उसे बिदा कर दिया और अन्त पुर मे चला गया। कुछ देर उपरान्त फिर बाहर आकर थोडी देर विश्राम किया। थोड़ी देर पश्चात् जुमे की अजान की ध्वनि उसके कानों मे पहुची और उसने कहा कि, "मुझ मे मस्जिद मे जाने की शक्ति नही है।" अन्य लोगो को मस्जिद मे भेज कर स्वय जुहर[2] की नमाज़ पढना प्रारम्भ कर दिया। नमाज़ के उपरान्त उसने एक घडी आराम किया। तदुपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। उसने १४ वर्ष तथा ९ मास तक राज्य किया।

सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह

जब सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु हो गई तो एमादुलमुल्क सुल्तानी, खुदावन्द खा, फतह खा बिन फतह खा के प्रयत्न से शाहज़ादा सिकन्दर खा को सिंहासनारूढ किया गया। उसने अपने पिता की लाश को सरकीज कस्बे मे भेज कर शोक सबधी प्रथाये सम्पन्न कराई।

शोक सबधी प्रथाओ के तीसरे दिन वह चम्पानीर की ओर रवाना हुआ। जब वह बतूह कस्बे मे पहुचा तो उसने उस स्थान के बुजुर्गों की जियारत की। वहा उसने सुना कि कुतुब आलम सैयिद बुरहानुद्दीन के एक पुत्र शेख़ जियू ने यह भविष्यवाणी की है कि राज्य शाहजादा बहादुर खा को प्राप्त होगा।

सिकन्दर के प्रति असतोष

सुल्तान सिकन्दर ने शेख जियू को झूठा बताया और उनके विषय मे अपशब्द कहे। जब वह (१९६) चम्पानीर पहुचा तो उसने अपने सेवकों को सम्मानित करके उन्हें विलायते प्रदान कर दी और अपने पिता तथा पितामह के अमीरो के प्रति कोई भी कृपादृष्टि प्रदर्शित न की। इस कारण समस्त अमीर दुखी हो गये और ईश्वर की ओर किसी परिवर्तन के विषय मे देखने लगे। एमादुलमुल्क सुल्तानी जोकि सुल्तान मुज़फ्फर शाह का एक दास था और सुल्तान सिकन्दर की माता का दास था बड़ा खिन्न हुआ।

सुल्तान सिकन्दर के कुछ आश्रितों द्वारा अनुचित कार्य सम्पन्न होने लगे और सेना तथा प्रजा वाले हृदय से उससे घृणा करने लगें और वे ईश्वर से उसके विनाश की प्रार्थना करने लगे। सुल्तान सिकन्दर ने एक दिन विशेष दरबार करके अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो को खिलअते प्रदान की और १७००

१ हदीसों का एक सग्रह।
२ मध्याह्नोपरान्त की प्रथम नमाज़।

बहलाने के लिए चौगान खेलने चल दिया। कुछ लोगो को इस स्वप्न का पता चल गया। एक पहर उपरान्त वह अपने महल मे पहुचा और भोजन करके आराम करने के लिए चला गया। जब अमीर तथा उसके विश्वासपात्र अपने-अपने घरो को पहुचे तो १९ शाबान ९३२ हि० (१३ जून १५२६ ई०) को एमादुलमुल्क उन लोगो[1] तथा मुजफ्फर शाह के दो तुर्क दासो एव एक हब्शी के साथ शाही महल मे प्रविष्ट हो गया।

उसने[2] उन लोगो से जो उसके साथ थे कहा कि, "इस भवन की लीला देखो। यह ससार की एक अद्भुत वस्तु है।" जब वे हौज के किनारे पहुचे तो नुसरतुलमुल्क तथा इबराहीम बिन (पुत्र) जौहर उस स्थान पर थे। वे लोग तुरन्त तलवारे निकाल कर उनके विरुद्ध दौडे। नुसरतुलमुल्क तथा इबराहीम ने भी तलवारे निकाल ली किन्तु उनके घाव घातक न निकले और वे[3] मार डाले गये। वे[4] वहा से सुल्तान सिकन्दर के शयनागार मे पहुचे। सैयिद इल्मुद्दीन पलग के सामने बैठा हुआ पहरा दे रहा था। अचानक वे लोग प्रविष्ट हो गये। सैयिद इल्मुद्दीन ने इस बात से घबडा कर तलवार निकाल ली और दो व्यक्तियो को घायल कर दिया। सैयिद इल्मुद्दीन की उसी स्थान पर हत्या कर दी गई। सुल्तान सिकन्दर को पलग के ऊपर दो तीन घाव लगाये गये। सुल्तान भयभीत होकर पलग से कूद कर भूमि पर खडा हुआ। इसी बीच मे एक व्यक्ति ने सुल्तान सिकन्दर पर तलवार का वार करके उसकी हत्या कर दी। उसने दो मास तथा १६ दिन तक राज्य किया।

नसीर ख़ां बिन सुल्तान मुज़फ़्फ़र जिसकी उपाधि सुल्तान महमूद थी

(१९९) जब सुल्तान सिकन्दर की हत्या कर दी गई तो एमादुलमुल्क ने बहाउलमुल्क से मिल कर अन्त पुर से नसीर खा को बाहर निकाला और उसे सिहासन पर आरूढ कर दिया और उसकी उपाधि सुल्तान महमूद निश्चित की। सुल्तान सिकन्दर के अमीर आतकित होकर इधर-उधर भाग खडे हुए और उनके घर नष्ट कर दिये गये। सुल्तान सिकन्दर की लाश को चम्पानीर के अधीन हालोल मे भेज कर दफन कर दिया गया। गुजरात के अमीरो तथा उच्च अधिकारी विवश होकर वहा पहुचे और उन्होने उसे बधाई दी। एमादुलमुल्क ने प्रथानुसार अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियो को खिलअते तथा उपाधिया प्रदान करके उन्हे प्रोत्साहित किया। उसने १८१ व्यक्तियो को उस दिन उपाधि प्रदान की किन्तु किसी अमीर के वेतन तथा वृत्ति मे वृद्धि न की।

अधिकाश लोग सुल्तान बहादुर के आगमन की प्रतीक्षा किया करते थे और उसके बुलाने के लिए पत्र-व्यवहार किया करते थे, विशष रूप से खुदावन्द खा तथा ताज खा इस विषय मे सबके आगे बढ गये थे। एमादुलमुल्क प्राचीन तथा नवीन शत्रुता के कारण खुदावन्द खा तथा ताज खा की हत्या करना चाहता था। ताज खा अपनी कौम तथा कबीले की सेना लेकर सुल्तान बहादुर को बुलाने के लिए चल (२००) खडा हुआ। एमादुलमुल्क व्याकुल होकर निजामुलमुल्क दखिनी को पत्र भेज कर चम्पानीर के समीप पहुचा और सावधानी तथा दूरदर्शिता की दृष्टि से बाबर बादशाह की सेवा मे उसने यह पत्र

१ जिन लोगो ने उससे यह कहा था कि सुल्तान तेरी हत्या कराना चाहता है।
२ एमादुलमुल्क।
३ नुसरतुलमुल्क तथा इबराहीम बिन जौहर।
४ 'एमादुलमुल्क' तथा उसके साथी।

भेजा कि "यदि एक शाही सेना फकीर की सहायतार्थ आये तो मै बन्दर द्वीप तथा एक करोड तन्का नकद बादशाह के सेवको के व्यय की सहायतार्थ प्रदान करूगा।"[१]

बहादुर शाह का बुलवाया जाना

दुनगरपुर के थानेदार ने एमादुलमुल्क के प्रार्थना-पत्र की सूचना पाकर, ताज खा तथा खुदावन्द खा के पास यह पत्र भेजा कि "एमादुलमुल्क ने बाबर बादशाह को पत्र लिखकर बुलवाया है।" गुजरात के अमीरो ने एक व्यक्ति को बहादुर शाह के पास भेज कर उसे बुलवाया। गुजरात के अमीरो के दूत देहली के समीप पहुच कर सुल्तान बहादुर की सेवा मे उपस्थित हुये और अमीरो के प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किये। सुल्तान बहादुर ने अपने पिता की मृत्यु से दुखी होकर शोक सबधी प्रथाये सम्पन्न कराई। पाइन्दा खा अफगान ने जो बहादुर शाह को बुलवाने के लिए जौनपुर से आया था, उससे यद्यपि बहुत कुछ कहा और बिलादे शर्क[२] के राज्य को अधिकार मे करने का प्रलोभन दिलाया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। बहादुर शाह उसे बिदा करके अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ।

सुल्तान बहादुर का गुजरात की ओर प्रस्थान

कहा जाता है कि एक ही समय पर लोग जौनपुर तथा गुजरात से सुल्तान बहादुर को बुलाने के लिये आये। उसने कहा कि, "मै अपने घोडे की लगाम छोडे देता हू, जिस ओर चाहे ले चले।" घोडा गुजरात की ओर चल दिया। जब वह चित्तौड के समीप पहुचा तो गुजरात के सिपाहियो ने लगातार (२०१) पहुच कर सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु तथा नसीर खा के सिहासनारोहण के समाचार सुल्तान को पहुचाये। सुल्तान बहादुर दुखी होकर वहा से प्रस्थान करके चित्तौड मे उतरा। उस स्थान पर चाद खां तथा इबराहीम खा बिन (पुत्र) सुल्तान मुजफ्फर आये और अपने भाइयो से भेट करके प्रसन्न हुए। चाद खा बिदा होकर वही रह गया। इबराहीम खा उसकी सेवा करना निश्चय करके उसके साथ हो लिया। अल्प समय मे जब वह चित्तौड से गुजरा, तो माल का राजा उदय सिह तथा सुल्तान सिकन्दर के कुछ सहायक उदाहरणार्थ मलिक सरवर, मलिक यूसुफ, लतीफ तथा अन्य लोग उसकी सेवा मे पहुचे।

सुल्तान बहादुर ने मलिक ताज जमाल को प्रोत्साहनयुक्त फरमान देकर ताज खा तथा अन्य अमीरो के पास भेजा और अपने पहुचने के विषय मे सूचना दी। ताज खा दन्दूका से पूरी तैयारी करके सुल्तान बहादुर की सेवा मे उपस्थित हुआ और लतीफ खा बिन सुल्तान मुजफ्फर को व्यय हेतु सहायता देकर बिदा कर दिया कि, "अब सुल्तान मुजफ्फर तथा सुल्तान महमूद का उत्तराधिकारी आ गया है अत तुम्हारा इस स्थान पर रहना उचित नही।" लतीफ खा अत्यन्त दुखी होकर सुल्तान बहादुर के चाचा के पुत्र फतह खा के पास पहुचा और उससे फरियाद की। जब सुल्तान बहादुर दुनगरपुर पहुचा तो, खुर्रम खा तथा अन्य खान उसके स्वागतार्थ पहुचे। प्रत्येक दिशा से सरदार उसकी ओर आकर्षित हुये। एमादुलमुल्क यह समाचार पाकर जान से हाथ धोकर सेना एकत्र करने लगा और उसने खज़ानो को रिक्त करना प्रारम्भ कर दिया। उसने अत्यधिक सेना को तैयार करके ५० हाथियो सहित, अज़दुलमुल्क के साथ किया और महरासा कस्बे की ओर इस आशय से भेजा कि वह वहा पहुच कर लोगो के आने-जाने

१ बादशाह के मार्ग-व्यय में सहायता हेतु दूँगा।
२ पूर्व के राज्य।

के मार्ग रोक दे और किसी को सुल्तान बहादुर के पास न जाने दे। सुल्तान बहादुर शाह जब महमूदाबाद (२०२) कस्बे मे पहुचा, तो सुल्तान सिकन्दर के कुछ अमीर, जो प्राणो के भय से भाग गये थे, उसकी सेवा मे उपस्थित हुए। अजदुलमुल्क के आदमी महरासा कस्बे को छोड कर भाग गये। जब सुल्तान महरासा कस्बे मे पहुचा तो ताज खा चत्र तथा बादशाही चिह्नो सहित सुल्तान बहादुर की सेवा मे उपस्थित हुआ और उससे भेट की। सुल्तान ने बडी शान से २६ रमजान ९३२ हि० (६ जुलाई १५२६ ई०) को नहरवाला पटन कस्बे मे पडाव किया। वहा उसने अपनी बादशाही की सूचना कराई और अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। २७ रमज़ान (७ जुलाई १५२६ ई०) को वह सरकीज मे, वहा के सूफियो तथा अपने पूर्वजों की कब्रों के दर्शन करके अहमदाबाद पहुचा।

एमादुलमुल्क परेशान होकर सैनिको को एक वर्ष का धन पेशगी देकर युद्ध के लिए तैयार करने लगा। सुल्तान बहादुर ३-४ दिन उपरान्त अहमदाबाद से बडे वैभव से पहुच चुका था। इसी बीच मे अधिकाश अमीर एमादुलमुल्क से धन लेकर सुल्तान की सेवा मे सम्मिलित हो गये। बहाउलमुल्क तथा दावरुलमुल्क जो सुल्तान सिकन्दर के हत्यारे थे, एमादुलमुल्क के विरोधी हो गये और (सुल्तान) की सेवा मे उपस्थित हुए। सुल्तान बहादुर समय की आवश्यकता को देखते हुए उन्हे प्रोत्साहन देने लगा। सुल्तान महमूद नसीर खा ने ४ मास से अधिक राज्य न किया।

मिरआते सिकन्दरी

(सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ मन्झू इब्ने अकबर)

(प्रकाशन—बम्बई १३०८ हि०, १८९०-९१ ई०)

गुजरात के सुल्तानों की वंशावली

(५) गुजरात के सुल्तानो के वश वालो मे सर्वप्रथम जो मुसलमान हुआ वह सहारन[१] था। उसकी उपाधि वजीहुलमुल्क[२] थी। वह नानक[३] कौम से था। हिन्दुओ के इतिहास मे लिखा हुआ है कि नानक तथा खत्रियो मे भ्रातृ-भाव थे। उनमे से एक मदिरापान करने लगा। खत्रियो ने उसे अपनी कौम से निकाल दिया। ऐसे बहिष्कृत लोग हिन्दुई भाषा में नानक कहलाते है अर्थात् कौम से बहिष्कृत। इसी कारण नानक लोगो के धर्म की प्रथाये तथा नियम पृथक् हो गये और प्रत्येक अपने-अपने नियमानुसार जीवन व्यतीत करने लगा। सहारन के पिता का नाम हरचन्द था, उसके पिता का नाम हरपाल, हरपाल के पिता का नाम कन्द्रपाल, कन्द्रपाल के पिता का नाम हरपाल, हरपाल के पिता का नाम धरबन्धर[४], धरबन्धर के पिता का नाम कुअरयाल[५], कुअरयाल के पिता का नाम दरिमन, दरिमन के पिता का नाम दरस्प, दरस्प के पिता का नाम कुअर, कुअर के पिता का नाम त्रिलोक, त्रिलोक के पिता का नाम सलाहन, सलाहन के पिता का नाम मौलाहन, मौलाहन के पिता का नाम मन्दन, मन्दन के पिता का नाम भूकत, भूकत के पिता का नाम नाकत, नाकत के पिता का नाम दुलभ[६], दुलभ के पिता का नाम महसू, महसू के पिता का नाम सहसू[७]। इसी प्रकार यह वशावली रामचन्द्र तक, जिनको हिन्दू ईश्वर मानकर पूजा करते है, पहुचती है।

उन लोगो मे सर्वप्रथम जिसे गुजरात की हुकूमत[८] प्राप्त हुई, जफर खा बिन वजीहुलमुल्क था। सर्वप्रथम जो इस प्रदेश मे सिहासनारूढ हुआ, सुल्तान मुहम्मद शाह बिन ज़फर ख़ा था। उसकी उपाधि तातार खा थी। कहा जाता है कि देहली के बादशाह सुल्तान फीरोज शाह को, जो सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के चाचा का पुत्र था, शिकार से अत्यधिक रुचि थी। बहुत ही प्राचीन तथा बाद के बाद-

१ फरीदी के अनुसार 'सहारन ताक' बम्बई के गज़ेटियर मे टांको को सूर्यवशीय राजपूत बताया गया है। वे तथा गूजर बहुत पहले से पजाब के मैदानों के निवासी बताये गये हैं। (पृ० १)

२ फ़रीदी के अनुसार भी 'वजीहुलमुल्क' है किन्तु मूल पुस्तक मे 'वजीहतुलमुल्क' है अन्य स्थान पर वजीहुलमुल्क भी है। (पृ० १)

३ फ़रीदी के अनुसार 'तांक' (पृ० १)।

४ फ़रीदी ने भी इसे 'भरबन्धर' पढा है किन्तु इसे 'धिरेन्धर' भी पढा जा सकता है (पृ० १)।

५ 'कुअरपाल' उचित होगा।

६ फ़रीदी के अनुसार 'दुलहा' (पृ० १)।

७ फ़रीदी के अनुसार 'नहसू' (पृ० १)।

८ देहली के सुल्तान की ओर से वाली का पद।

शाहो मे कोई भी उसके समान इस कला मे दक्ष न था। बहराम गोर[1] के उपरान्त किसी ने भी उसके समान शिकार खेलने मे परिश्रम नही किया। अब भी समस्त शिकारी इस कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व उसी सम्मानित सुल्तान का स्मरण तथा उसी की आत्मा से सहायता की याचना करते है।

साधू तथा सहारन

एक दिन सुल्तान बादशाह होने के पूर्व मृग का शिकार खेलता हुआ अपनी सेना से पृथक् हो गया। (६) सूर्यास्त के उपरान्त वह रात्रि मे विश्राम के विषय मे किसी स्थान की चिन्ता मे पड गया। दूर से उसे थानीर[2] कस्बे के अधीनस्थ एक ग्राम दृष्टिगत हुआ। वह उस ग्राम की ओर अग्रसर हुआ। उसने देखा कि ग्राम के बाहर जमीदारों का समूह बैठा है। वह घोडे से उतर कर उनके साथ बैठ गया। उनमे से एक से उसने अपने पाव से मोजा[3] उतारने के लिये कहा। वह व्यक्ति मुख[4] सामुद्रिक तथा सूझ-बूझ मे बडा दक्ष था। उसने सुल्तान के पाव के तलवे को देखकर अपने मित्रों से कहा कि "बादशाह के अतिरिक्त किसी अन्य के पाव ऐसे नही हो सकते। यह नही कहा जा सकता कि यह बादशाह है या शीघ्र बादशाह होनेवाला है।" कहने वाले दो भाई थे। उनमे से एक का नाम साधू तथा दूसरे का नाम सहारन था। वे बडे ही प्रभावशाली तथा सुव्यवस्थापक थे। उनके एक सकेत पर सहस्रो अश्वारोही तथा पदाति उनके पास एकत्र हो जाते थे। उन्होंने सुल्तान के समक्ष धरती चुम्बन करके निवेदन किया कि, "आप रात्रि मे अपने चरणो के प्रकाश से हमारी कोठरी को प्रदीप्त करे।" सुल्तान ने स्वीकार कर लिया। रात भर दोनो भाई खडे हुये सेवा करते रहे।

साधू तथा सहारन की बहिन से सुल्तान फीरोज का विवाह

साधू की पत्नी बडी ही बुद्धिमती थी। उसकी बुद्धि तथा सूझबूझ बडी उत्कृष्ट थी। उसने अपने पति से कहा कि, "यद्यपि इस पुरुष के ललाट से सौभाग्य तथा ऐश्वर्य के चिह्न दृष्टिगत है किन्तु परीक्षा के बिना किसी पर विश्वास न करना चाहिये। सर्वप्रथम मदिरा की एक गोष्ठी आयोजित करनी चाहिये ताकि उसकी योग्यता की सुगमतापूर्वक परीक्षा हो सके। कारण कि मदिरा से मनुष्य के गुणो का पता चल जाता है।" मदिरा लाई गई, साधू की बहिन ने जो बडी ही रूपवती तथा योग्य थी प्याला भर कर सुल्तान (७) को दिया। सुल्तान ने प्रसन्नतापूर्वक प्याला उसके हाथ से लेकर पीना प्रारम्भ किया। एक तिहाई प्याला पीने के उपरान्त उसके मन की कली खिल उठी और वह परिहास की ओर आकृष्ट हो गया। साधू की पत्नी ने जब उसे (सुल्तान को) मदिरा पिलाने वाली के हाथ मे बन्दी देखा तो सौजन्य एव शिष्टतापूर्वक उससे इधर-उधर की बाते करके उसके वश के विषय मे पूछा और यह कहा कि, "यदि आप अपने वंश का परिचय दे दे तो मै इस रूपवती को जो सूर्य से भी अधिक श्रेष्ठ है आपको पत्नी के रूप मे दे दूं।" सुल्तान ने कहा कि, "मेरा नाम फीरोज खा है। मै सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के चाचा का पुत्र हू। बादशाह ने मुझे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया है।" साधू की पत्नी ने अपने पति

१ ईरान के सासानी वश के बादशाहों का १४वां बादशाह जो बहराम गोर के नाम से प्रसिद्ध है। वह ४२० ई० में सिंहासनारूढ हुआ और ४३८ ई० मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

२ फ़रीदी के अनुसार 'थानेश्वर'।

३ जूते।

४ कयाफ़ा।

से वास्तविक स्थिति का उल्लेख करके अपने पति की बहिन का विवाह सुल्तान से करा दिया। सुल्तान ने वह रात भोग-विलास मे व्यतीत की। प्रात काल जब सुल्तान उठा तो प्रत्येक दिशा से सेना प्रकट होने लगी। सुल्तान ने नगर की ओर प्रस्थान किया। साधू तथा सहारन दोनो भाई छाये के समान उसके (८) साथ हो लिये और वे क्षण भर को भी उसकी सेवा से पृथक् न होते थे। सुल्तान को उनकी बहिन से अत्यधिक प्रेम हो गया। अल्प समय मे दोनो भाई मुसलमान हो गये। सुल्तान ने सहारन को वजीहुल-मुल्क[1] की उपाधि प्रदान की।

सहारन तथा साधू का मख़दूम जहानिया का मुरीद होना

तदुपरान्त वह सुल्तान की अनुमति से कुतबुल अक्ताब मख़दूम जहानिया[2] का मुरीद हो गया और उसे लोक तथा परलोक दोनो का सौभाग्य प्राप्त हो गया। सुल्तान ने उनका मुरीद होना बडा पसन्द किया। मख़दूम जहानिया भी दोनो भाइयो को नित्यप्रति अधिक प्रोत्साहन देने लगे।

मख़दूम जहानिया की मुजफ्फर खा बिन वजीहुलमुल्क के प्रति कृपा

एक दिन मख़दूम जहानिया की खानकाह मे बहुत से फकीर एकत्र थे। भोजन उपस्थित न था। यह सूचना मुजफ़्फ़र खा बिन वजीहतुलमुल्क को, जो मख़दूम जहानिया का मुरीद था, प्राप्त हुई। वह तुरन्त उठ खडा हुआ। अपने घर तथा बाजार से वह अत्यधिक भोजन एव मिष्टान्न लेकर मख़दूम जहा-निया की खानकाह मे पहुचा और फकीरो को भोजन कराया। फकीरो ने प्रसन्नतापूर्वक तकबीर[3] का नारा लगाया। जब यह नारा मख़दूम जहानिया के कानो मे पहुचा तो उन्होने इस विषय मे पूछा। सेवकों ने जो बात थी उसके विषय मे निवेदन किया। मख़दूम जहानिया ने मुजफ्फर खा को बुलवाया। उसने उपस्थित होकर धरती चुम्बन किया। मख़दूम जहानिया ने कहा कि "हे मुजफ्फर खा! इस भोजन के बदले मे गुजरात का समस्त राज्य तुम्हे प्रदान किया जाता है। तुम्हारे लिये ईश्वर इसे शुभ बनाये।" मख़दूम जहानिया ने तत्काल खासे[4] का एक पलगपोश[5] भी प्रदान किया। मुज़फ्फर खा धरती चुम्बन करके प्रसन्नतापूर्वक अपने घर चला गया और यह बात जाकर उसने अपनी पत्नी से कही। उसकी पत्नी ने कहा, "तू वृद्धावस्था को प्राप्त हो चुका है। यदि तुझे गुजरात का राज्य प्राप्त हुआ तो तू कब तक राज्य कर सकेगा। अत तू जाकर उनसे प्रार्थना कर कि वे इस बात की शुभकामना करे कि राज्य तेरे वश मे चलता रहे। आज मख़दूम जहानिया की कृपा का सूर्य तेरे सिर पर उदय हो गया है। तू जो भी प्रार्थना करेगा वह स्वीकार हो जायेगी।" मुज़फ़्फ़र सुगधित इत्र, फूल, पान तथा स्वादिष्ट मेवे अपने साथ लेकर पुन मख़दूम जहांनिया की सेवा मे पहुचा। मख़दूम जहानिया ने कहा कि, "तू बडे अच्छे अवसर पर सुगन्धित वस्तुएं लाया।" छुहारे का एक थाल सामने रखा था। उसमें से एक मुट्ठी लेकर मुजफ़्फ़र खा को दे दिये और कहा कि "इन छुहारो की सख्या के बराबर तेरी संतान

१ मूल पुस्तक मे 'वजीहतुलमुल्क'।

२ मख़दूम जहानिया जहांगश्त शेख़ जलाल का जन्म ८ फ़रवरी १३०८ ई० तथा मृत्यु ३ फ़रवरी १३८४ ई० को हुई।

३ अल्लाहो अकबर।

४ अपने विशेष प्रयोग का।

५ पलग पर बिछाने की चादर।

(९) गुजरात पर राज्य करेगी।" कुछ लोगो का कथन है कि छुहारे १२ अथवा १३ थे और कुछ लोग कहते हैं कि इससे अधिक।

सुल्तान फीरोज शाह का सिहासनारोहण तथा दोनों भाइयो की उन्नति

इतिहासकारो का कथन है कि ७४७ हि० मे (१३४६–४७ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह ने थट्टा पर आक्रमण किया और जब वह उसके समीप पहुचा तो उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के १२ दिन उपरान्त, उसके चाचा का पुत्र फीरोज खा, सुल्तान फीरोज की उपाधि से सुशोभित होकर सिहासनारूढ हुआ। मुजफ्फर खा तथा उसके भाई शमशेर खा[1] के सम्मान मे वृद्धि कर दी और उनके ऊपर पूर्ण विश्वास करते हुए शराबदारी[2] का पद प्रदान किया। जो लोग गुजरात के सुल्तान को मदिरा बनाने वालो तथा बेचने वालो के वश से सम्बन्धित बताते हैं, तो यह ठीक नही। इसका कारण यह है कि एक वर्ष अत्यधिक अगूर सुल्तान की सेवा मे आया था और वह नष्ट हो रहा था सुल्तान ने उन्हे आदेश दिया कि वे उस अगूर से मदिरा तैयार करे। ईर्ष्यालुओ ने ईर्ष्यावश यह प्रसिद्ध कर दिया कि उनका पेशा मदिरा बनाना रहा है। जो बात प्रमाणित हुई है वह इस प्रकार है कि वे, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, नानक[3] कौम से थे। वे जो भी रहे हो, पर बडे ही विचित्र स्वभाव के स्वामी थे। उनके दानपुण्य तथा सार्वजनिक हित के कार्यों एव सौजन्य पूर्णव्यवहार का जिसका सर्वसाधारण को अनुभव हो चुका है उल्लेख उचित स्थान पर किया जायगा।

सुल्तान फीरोज की मृत्यु तथा राज्य की दुर्दशा

जब सुल्तान फीरोज़ की अवस्था ९० वर्ष के लगभग हो गई तो उसने राज्य के कार्य अपने पुत्र को, जिसकी उपाधि मुहम्मद खा थी, सौप दिये और स्वय ईश्वर की उपासना मे व्यस्त हो गया। दोनो के नाम का खुत्बा पढा जाता था। ७९० हि० (१३८८ ई०) मे सुल्तान फीरोज के दासो ने, जिनकी सख्या १ लाख थी, सुल्तान फीरोज़ से निराधार बाते कही और अपहरण किया। वे मुहम्मद शाह के विरोधी हो गये। मुहम्मद शाह उनसे युद्ध हेतु निकला। उन्होने जाकर सुल्तान फीरोज के पास शरण ली। वे सुल्तान फीरोज को बन्दी बनाकर बाहर लाये और युद्ध की पक्ति मे बैठा दिया। जब सेना वालो तथा महावतो की दृष्टि सुल्तान पर पडी तो वे उसके गौरव तथा पहले के दानपुण्य से प्रभावित होने के कारण, शाहजादे का साथ छोड कर सुल्तान से मिल गये। मुहम्मद शाह भाग कर शेरपुर[4] पहुचा। और (१०) फीरोज शाह के दासो ने मुहम्मद शाह तथा उसके विश्वासपात्रो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उसी वर्ष ७९० हि० (१३८८ ई०) मे सुल्तान फीरोज की मृत्यु हो गई। सुल्तान फीरोज शाह ने ३८ वर्ष तथा ९ दिन तक राज्य किया।

तदुपरान्त फीरोज़ शाह के दासो ने गयासुद्दीन तुगलुक बिन फतह खा बिन सुल्तान फीरोज को कूश्के[5] फीरोजाबाद मे सिहासनारूढ किया और सुल्तान मुहम्मद के विरुद्ध एक बहुत बडी सेना भेजी।

१ साधू अथवा साहू।
२ मदिरा तथा अन्य पीने वाली वस्तुओ की देख-रेख करने वाला अधिकारी।
३ फ़रीदी के अनुसार 'ताक'।
४ कर्नल बेली के अनुसार 'सिरमूर'।
५ राजप्रासाद।

सुल्तान मुहम्मद थोडा सा युद्ध करके पराजित हो गया और शेरपुर से सका पहुचा। तुगलुक शाह के उसका पीछा करने पर वह नगरकोट चला गया। तुगलुक शाह युवावस्था के कारण भोग-विलास में लीन हो गया। उसके दासो ने अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। ७९१ हि० (१३८८–८९ ई०) मे मलिक रुकनुद्दीन नायब[1] ने तुगलुक शाह की हत्या कर दी और उसका सिर दरबार के सामने लटकवा दिया। उसने ६ मास तक राज्य किया। तदुपरान्त अबूबक्र बिन (पुत्र) जफर खा बिन शाह फीरोज़,सिंहासनारूढ हुआ। उसमें तथा सुल्तान मुहम्मद मे बहुत बडे बडे युद्ध हुये। सुल्तान मुहम्मद पराजित हुआ। अन्त मे सेना अबूबक्र की विरोधी हो गई और वह सुल्तान मुहम्मद के पास पहुच गई। अबूबक्र सुल्तान मुहम्मद द्वारा बन्दी बना लिया गया और बन्दीगृह ही मे उसकी मृत्यु हो गई। देहली का राज्य सुल्तान मुहम्मद को प्राप्त हो गया।

मुहम्मद जफर खा की गुजरात मे नियुक्ति

इसी वर्ष अर्थात् ७९३ हि० (१३९०–९१ ई०) के लगभग यह समाचार प्राप्त हुआ कि गुजरात का मुक्ता[2] निजाम मुफर्रेह जिसकी उपाधि रास्ती खा थी, विद्रोही हो गया है और अपराधियो के समान व्यवहार कर रहा है। २ रबी-उल-अव्वल ७९३ हि० (७ फरवरी १३९१ ई०) को सुल्तान ने मुज़फ़्फ़र खा को लाल सरापर्दा[3] प्रदान किया और निज़ाम मुफर्रेह को दण्ड देने के लिए गुजरात मे नियुक्त किया। खान ने देहली से प्रस्थान किया और हौजे खास पर शिविर लगाये। ४ रबी-उल-अव्वल ७९३ हि० (९ फरवरी १३९१ ई०) को सुल्तान मुहम्मद, (जफर) खा के साथ उस स्थान पर पहुचा और उसे बिदा किया। तातार खा बिन जफर खा को अपना पुत्र बनाकर अपने पास रख लिया।

कुछ दूर यात्रा करने के उपरान्त सूचना प्राप्त हुई कि तातार खा के घर मे एक भाग्यशाली पुत्र का जन्म हुआ है। उसका नाम अहमद खा रखा गया।

पटन की ओर प्रस्थान

वह (जफर खा) वहा से निरतर यात्रा करता हुआ रवाना हुआ। जब वह नागौर के भूभाग मे पहुचा तो खम्बायत की प्रजा, जिस पर रास्ती खा ने अत्याचार किया था, खान की सेवा मे उपस्थित (११) हुई और खान ने फरियाद की। खान उन्हे प्रोत्साहन देकर अग्रसर हुआ और विभिन्न पडावों को पार करता हुआ पटन नगर में पहुच कर पडाव डाला।

रास्ती खा की पराजय

वहा से उसने रास्ती खां को परामर्श देते हुए यह पत्र लिखा कि "उपद्रव की अग्नि शात करना बुद्धिमानो का कार्य है। अग्नि के उत्कट रूप धारण कर लेने के पूर्व ही उसको शात कर देना अच्छा होता है, कारण कि जो कोई अपने आश्रयदाता के प्रति विद्रोह करता है वह अन्त मे नष्ट हो जाता है। यह उचित होगा कि तू क्षमा-याचना कर ले और मै बादशाह से तेरी सिफारिश कर दूगा।"

१ नायबुस्सल्तनत. राज्य का सबसे बड़ा अधिकारी जो सुल्तान की ओर से उसकी अनुपस्थिति में शासन-प्रबन्ध करता था।

२ अक़्ता का स्वामी।

३ एक प्रकार का मंडप जिसे केवल बादशाह ही प्रयोग कर सकते थे।

उस अभागे ने इस परामर्श को स्वीकार न किया और उचित उत्तर न दिया। युद्ध के लिए तैयार होकर वह पटन की ओर, जिसे नहरवाला कहते है, रवाना हुआ। अन्त मे सन्हू[1] नामक स्थान के निकट, जो पटन सरकार के अधीन है, खान से युद्ध किया। घोर युद्ध हुआ; युद्ध मे खान को विजय प्राप्त हो गई। निज़ाम की हत्या हो गई। ज़फर खा विजय तथा सफलता प्राप्त करके पटन पहुचा। यह घटना ७९४ हि० (१३९१–९२ ई०) मे घटी। कुछ समय तक वह पटन कस्बे मे ठहरा। जिस स्थान पर युद्ध हुआ था वहा जीतपुर[2] नामक एक ग्राम बसाया। विजय का यह स्थान इस समय तक आबाद है।

७९५ हि० (१३९२–९३ ई०) मे खान ने खम्बायत की ओर प्रस्थान किया और गुजरात की विलायत[3], जिस प्रकार मुसलमानो के अधीन थी, उसे अपने अधिकार मे कर लिया। अशान्ति का अन्त हो गया। प्रजा को अत्याचार तथा शोषण से मुक्ति प्राप्त हो गई।

जफर खा की उपाधिया

"महमूद शाही" नामक इतिहास मे लिखा हुआ है कि सुल्तान मुहम्मद ने जो अहदनामा खान हेतु तैयार हुआ था उसमे उसके सम्मान हेतु दो पक्तिया अपने हाथ से बढा दी। वह इस प्रकार है। मेरा भ्राता, मजलिसे आली, ख़ाने मुअज्जम, न्यायकारी, दानी, मुजाहिद, ईमान तथा धर्म का सबसे बडा भाग्यशाली, सल्तनत को पुष्टि देने वाला, धर्म का रक्षक, कुफ्र का विनाशक, पापियो तथा मूर्तिदो को नष्ट करने वाला, आध्यात्मिकता के आकाश का ध्रुवतारा, उच्च आकाश का सितारा, युद्ध के दिन सेना की पक्तियों को नष्ट-भ्रष्ट करने वाला, रुस्तम के समान किला विजय करने वाला, कूट-नीति मे आसिफ, (१२) राज्य का प्रबन्धक, सर्वसाधारण के मामलो को ठीक करने वाला, सफलता एव सौभाग्य का स्वामी, बुद्धि तथा सार्थकता का नरेश, न्याय तथा परोपकार को वितरण करने वाला, साहिब किरान का वज़ीर, उलुग कुतलुगे आजम हुमायू जफर खा।

सुल्तान मुहम्मद के उत्तराधिकारी

कहा जाता है कि रबी-उस्मानी ७९३ हि० (मार्च-अप्रैल १३९१ ई०) मे सुल्तान ने उसके लिए शरा के मुफ्तियों[4] की अनुमति से खान के लिए शाही लाल आफ़्ताबगीर[5] तथा बारगाह प्रेषित किये। ७९६ हि० (१३९३–९४ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद बिन फीरोज शाह की मृत्यु हो गई। उसके ताबूत[6] को तैयार करके महमदा बाद से देहली नगर भेज दिया गया और सुल्तान फीरोज के मकबरे मे दफन कर दिया गया। उसने ६ वर्ष तथा ७ मास तक राज्य किया। तदुपरान्त सुल्तान मुहम्मद का ज्येष्ठ पुत्र हुमायूं खा १९ रबी-उल-अव्वल ७९६ हि० (२१ फरवरी १३९४ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ और उसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित हुई। ५ जमादि-उल-अव्वल ७९६ हि० (८ मार्च १३९४ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसने १ मास तथा १६ दिन तक राज्य किया। तदुपरान्त २० जमादि-

१ फ़रीदी के अनुसार 'कम्भोई' (पृ० ५)।
२ फ़रीदी के अनुसार 'जीतपुर' (पृ० ६)। यही उचित ज्ञात होता है। किन्तु प्रकाशित ग्रन्थ में 'हसबपुर' है।
३ प्रदेश (राज्य)।
४ न्याय विभाग के वे अधिकारी जो काज़ी की सहायतार्थ फ़तवे देते थे।
५ छत्र, आफ़ताबगीर तथा बारगाह (एक प्रकार का मडप) केवल बादशाह ही प्रयोग मे ला सकते थे।
६ जनाजा ले जाने का सदूक।

उल-अव्वल ७९६ हि० (२३ मार्च १३९४ ई०) को उसका छोटा भाई महमूद खा सिहासनारूढ हुआ। उसकी उपाधि सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद हुई।

ईदर के राजा पर आक्रमण

इसी बीच मे ज़फर खा को ईदर के राजा के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुए। जफर खा ने ईदर पर चढाई की। राजा ने किले को बद कर लिया। ज़फर खा ने किले को घेर कर अपनी सेनाये उसके राज्य मे इधर-उधर इस आशय से भेज दी कि उसके राज्य को वे लोग विध्वस कर दे। अन्त मे ईदर के राजा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए उचित उपहार भेट किये।

आसीर के सुल्तान के विरुद्ध प्रस्थान

ख़ान ने लौटकर सोमनात (सोमनाथ) अर्थात् पटनदेव के मदिर को विध्वस करना निश्चय कर लिया। इसी बीच मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि आदिल ख़ा आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिम ने अपनी सीमा से आगे पाव निकालकर सुल्तानपुर तथा नद्रबार की विलायत मे जो गुजरात के अधीन है अपने पाव रखे है। ख़ान ने वहा से पटनदेव की ओर प्रस्थान करना स्थगित करके, निरन्तर यात्रा करते हुए आदिल खा को पराजित करने के लिए प्रस्थान किया। यह समाचार पाकर आदिल खा आसीर की ओर लौट गया और ज़फर खा भी नहरवाला अर्थात् पटन की ओर लौट गया।

जहदंद पर आक्रमण

७९७ हि० (१३९४–९५ ई०) मे उसने जहदद[1] की ओर जो राय भारा के राज्य के अधीन है आक्रमण किया और वहा के काफिरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

सोमनात की विजय

वहा से उसने सोमनात की ओर प्रस्थान किया और उस प्रसिद्ध मदिर को नष्ट कर डाला। उस नगर को इस्लाम के नियमों द्वारा शोभा प्रदान की।

मन्दू पर आक्रमण

(१३) ७९८ हि० (१३९५–९६ ई०) मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि मन्दू के काफिर अपने आसपास के मुसलमानो पर अत्याचार कर रहे है। ख़ान ने अपने राज्य के उच्च पदाधिकारियो को बुलवा कर कहा कि, "यदि पूर्व दिशा के मुसलमानो को कठिनाई हो तो पश्चिम की ओर के मुसलमानो के लिए उनकी सहायता करना आवश्यक है। इसी प्रकार यदि इसका उल्टा हो तो भी आचरण करना चाहिये। सुना जाता है कि मन्दू के काफिर उस ओर के मुसलमानों को कष्ट पहुचा रहे है। यदि मै इस विषय में असावधानी करूगा तो कल ईश्वर के समक्ष क्या उत्तर दूगा? मै समझता हू कि इन दुष्ट काफिरो को दण्ड देना परमावश्यक है? तुम्हारा इस विषय मे क्या मत है?" सभी ने कहा कि, "जो बात उचित है वही हमे करना चाहिये।" ज़फर खा ने कूच का आदेश दे दिया और उन लोगो ने मन्दू की ओर निरन्तर यात्रा प्रारम्भ कर दी। मन्दू का राजा चिन्तित होकर किले मे बन्द हो गया। जफर खा ने

1 फ़रीदी के अनुसार 'जहरन्द (जूनागढ)' पृ० ६।

किले को घेर लिया और उसको विजय करने का प्रयत्न करने लगा, किन्तु किले के अत्यधिक दृढ होने के कारण उसे सफलता प्राप्त न हो सकी। एक वर्ष तथा कुछ मास तक खान किले को घेरे रहा। अन्त मे मन्दू के राजा ने दीनता प्रदर्शित करते हुए निवेदन किया कि, "मै इसके उपरान्त मुसलमानो को कोई कष्ट न पहुचाऊगा," और उचित पेशकश प्रस्तुत की।

अजमेर होते हुए राजधानी को वापसी

ज़फर खा ने वहा से ख्वाजा मुईनुद्दीन की कब्र के दर्शनार्थ अजमेर की ओर प्रस्थान किया और मजार से ३ कोस पूर्व पैदल यात्रा करके मज़ार के दर्शन द्वारा सम्मानित हुआ। वहा से उसने साभर तथा दन्दवाना की ओर प्रस्थान किया और उस प्रदेश के काफिरो को नष्ट कर डाला। वहा से उसने दीलवारा तथा चकवारा[1] की ओर प्रस्थान किया और वहा भी काफिरो को दण्ड दिया। वहा से वह अपनी राजधानी को लौट आया।

तातार ख़ां का देहली से आगमन और ज़फ़र ख़ां से भेंट

तातार खा की पराजय

(१४) 'तारीख़े महमूदशाही' के अनुसार सुल्तान मुहम्मद बिन फीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त देहली मे अत्यधिक अशाति फैल गई। प्रत्येक ओर से विद्रोही उठ खडे हुए और देहली के राज्य की इच्छा करने लगे। जब कुछ समय उपरान्त देहली का राज्य इकबाल खा[2] की नियाबत मे पहुच गया[3], तो उस समय तातार खा बिन जफर खा पानीपत कस्बे मे था। इकबाल खा ने तातार खा के ऊपर आक्रमण करने के लिए पानीपत की ओर प्रस्थान किया। तातार खा अपने शिविर को पानीपत के कोट मे छोड़ कर स्वय शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुचा और उसे घेर लिया। इकबाल खा ने तीसरे दिन पानीपत के कोट पर विजय प्राप्त कर ली और तातार खां के समस्त शिविर को अपने अधिकार मे कर लिया।

तातार खां का गुजरात पहुंचना

इस घटना के उपरान्त तातार खा उस क्षेत्र मे न ठहर सका और इस विचार से गुजरात की ओर चल दिया कि गुजरात से सेना लेकर वह पुन. इकबाल खा पर आक्रमण करे। जब तातार खा ने ज़फर खा के चरणो के चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया तो यद्यपि उसकी इच्छानुसार वहा समस्त साधन उपलब्ध थे किन्तु उसके साहस का पक्षी, जो बहुत ऊची उडान उडना चाहता था उस घोसले से सतुष्ट न हुआ और इकबाल खा से प्रतिकार लेने तथा देहली के राज्य की इच्छा उसके हृदय से न मिटी। वह सर्वदा इस बात की आकाक्षा किया करता था कि सेना लेकर देहली पर चढाई करे।

इसी बीच मे उसे समाचार प्राप्त हुआ कि, "मिर्ज़ा मुहम्मद मुगुल ने साहिब किरान अमीर तैमूर गुर्गान के आदेशानुसार मुल्तान पर चढाई कर दी है और इकबाल खा के भाई सारग खा को मुल्तान के कोट में घेर लिया है तथा देहली पर आक्रमण करने का दृढ सकल्प कर लिया है।" अत वह रुक गया।

१ फ़रीदी के अनुसार 'जलवारा' अथवा काठियावाड़ मे 'झालावर', दिलवारा आबू पर्वत को कहते हैं (पृ० ६)।
२ 'मल्लू इकबाल खा'।
३ अर्थात् इकबाल खा नायब हो गया।

ईदर पर आक्रमण

(१५) ८०० हि० (१३९७–९८ ई०) मे उसने (तातार खा ने) जफर खा के साथ ईदर के काफिरो को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया और ईदर के किले को घेर लिया। उसके अधीनस्थ स्थान विध्वस कर डाले। इस बार उसका उद्देश्य यह था कि, "जब तक मै ईदर की विलायत पर अधिकार प्राप्त न कर लू किसी अन्य ओर प्रस्थान न करू।" ८०१ हि० (१३९८–९९ ई०) मे समाचार प्राप्त हुआ कि साहिब किरान की पताकाओ के सूर्य ने देहली के क्षेत्र पर छाया डाली और देहली को विजय कर लिया। इस समय उसने युद्ध करना उचित न देख कर ईदर के राजा से सधि कर ली और उचित उपहार लेकर पटन लौट गया।

सोमनात पर आक्रमण

उसी वर्ष यह समाचार प्राप्त हुआ कि सोमनात के समीप के काफिर प्रत्येक दिशा से आक्रमण करके अपना प्रभुत्व बढाने का प्रयत्न कर रहे है। उसने उनके अनुचित विचारो के उच्छेदन हेतु उस ओर चढाई की और उनके झूठे दावो को नष्ट करके इस्लाम को उन्नति प्रदान की। वहा से वह पुन पटन पहुचा।

इसी साल सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद बिन फीरोज़, साहिब किरान के आक्रमण के कारण अपने पूर्वजो के राज्य को त्याग कर पटन पहुचा। ज़फर खा ने उसका उचित स्वागत किया और वह उसे बड़े सम्मान से नगर मे लाया। उसका उद्देश्य यह था कि, "यदि जफर खा मेरा साथ दे तो मै देहली पर चढाई करू।" जब खान ने आक्रमण करना उचित न देखा तो सुल्तान महमूद रुष्ट होकर मालवा की विलायत के हाकिम अलप खा के पास चला गया। उसको भी उचित व्यवहार करते हुये न देखकर वह कन्नौज चला गया और उस अक्ता से सतुष्ट हो गया।

सुल्तान मुहम्मद बिन ज़फ़र ख़ां का, जिसका नाम तातार ख़ां था, गुजरात मे सिंहासनारोहण तथा उसकी मृत्यु

'तारीखे महमूद-शाही' का लेखक लिखता है कि जब तातार खां गुजरात पहुँचा और ज़फर खां के समक्ष धरती चुम्बन करके सम्मानित हुआ तो कुछ दिन उपरान्त उसने अपने पिता से नम्रतापूर्वक देहली के राज्य की अव्यवस्था तथा साहिब किरान अमीर तैमूर के ध्वस कार्य के विषय मे निवेदन करते हुये कहा कि, "यदि इस समय देहली की ओर प्रस्थान करे तो उस क्षेत्र वाले बडे प्रसन्न होगे।" जफर खा ने कहा कि, "यद्यपि तेरा उद्देश्य वहा वालों का उपकार है किन्तु समकालीन लोग इसे राज्य की लिप्सा (१६) बतायेगें अत उस ओर इस समय प्रस्थान करना स्वार्थपूर्ण कार्य समझा जायेगा।" शाहजादे ने कहा कि :

छन्द

"राज्य किसी को उसके पूर्वजो से नही प्राप्त होता,
जब तक कि वह तलवार न चलाये।"

तातार खां का सिहासनारोहण

अत्यधिक वाद-विवाद के उपरान्त जफर खा ने ८०६ हि० (१४०३-४ ई०) मे राजसिंहासन तथा राजमुकुट तातार खा को सौप कर उसे नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की उपाधि से सम्मानित कर दिया

और सेना तथा खजाना अपने पुत्र को देकर स्वय असावल कस्बे की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान मुहम्मद शाह ने जमादि-उल-आख़िर ८०६ हि० (दिसम्बर १४०३ ई०) मे असावल कस्बे मे अपना राज्याभिषेक किया।

नादौत पर आक्रमण

उसी सप्ताह मे राजसिहासन से घोडे की ज़ीन पर पहुचा और जिहाद के लिये तैयार हो गया। नादौत के काफिरो को, जो सेना की अधिकता तथा ऊचे ऊचे पर्वतो के कारण, समकालीन सुल्तानो की उपेक्षा किया करते थे, नष्ट कर दिया।

देहली पर आक्रमण करने का सकल्प तथा मृत्यु

वहा से बहुत बडी सेना लेकर देहली की ओर प्रस्थान किया। इकबाल खा यह समाचार पाकर बडा व्याकुल हुआ। शाबान ८०६ हि० (फरवरी १४०४ ई०) मे सुल्तान रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसे पटन की शुभ भूमि मे दफ़न कर दिया गया।

सुल्तान की मृत्यु का कारण

जो बात प्रसिद्ध है और जिसे गुजरात के जानकार लोग प्रमाणित रूप से बताते है वह इस प्रकार है कि तातार ख़ा ने जफर ख़ा को बन्दी बनाकर राजसिहासन पर अधिकार जमा लिया और अपनी उपाधि मुहम्मद शाह कर ली। समस्त सेना तथा परिजनों को अपनी ओर मिला लिया। तदुपरान्त (१७) वह नादौत के काफिरों से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ और उन्हे नष्ट कर दिया। वहा से वह देहली पर चढाई करने वाला था कि इसी बीच मे उसकी मृत्यु हो गई। इसका कारण यह बताया जाता है कि, "क्योकि, सुल्तान ने ससार के लिये अपने पिता के सम्मान का, जो लोक तथा परलोक मे कल्याण का साधन है, ध्यान न रखा था, अत ईश्वर ने पिता के हृदय मे स्नेह के स्थान पर ईर्ष्या उत्पन्न कर दी। सुल्तान के कुछ विश्वासपात्रो ने, जो हृदय से ज़फर ख़ा के सहायक थे, सुल्तान को विष दे दिया। यद्यपि 'तारीखे मुहम्मदशाही' के लेखक ने इधर उधर की बहुत सी बाते लिखी है किन्तु अन्त मे इस घटना की ओर भी सकेत कर दिया है। सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त लोग उसे "खुदायेगाने शहीद" की उपाधि से पुकारते थे। यह भी प्रसिद्ध है कि सुल्तान मखदूम जहानिया का मुरीद था।

कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद ने कुछ धन कुतुबुल आरेफीन शेख गज बख्श की सेवा मे भेजकर अपने राज्य के स्थायित्व के लिये प्रार्थना की। शेख ने उपहार स्वीकार न किया और कहलाया कि, "यह धन तुम्हारे स्वामी का है, इसे तुम्हे व्यय न करना चाहिये"; और उसे वापिस भेज दिया।

संक्षेप मे जब सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई तो जफर ख़ा पुन सिहासनारूढ हुआ और राज्य के अधिकारियो ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। ख़ान ने प्रत्येक को प्रोत्साहित किया और अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया। उस दिन से अपनी मृत्यु तक ख़ान सर्वदा विलाप किया करता था और (१८) सुल्तान शम्स खा से, जो उसका छोटा भाई था, राज्य पर अधिकार जमाने के लिये कहा करता था और स्वय एकान्तवास ग्रहण करना चाहता था किन्तु शम्स ख़ा यह बात स्वीकार न करता था।

ईदर पर आक्रमण

(१५) ८०० हि० (१३९७–९८ ई०) मे उसने (तातार खा ने) जफर खा के साथ ईदर के काफिरो को दण्ड देने के लिए प्रस्थान किया और ईदर के किले को घेर लिया। उसके अधीनस्थ स्थान विध्वस कर डाले। इस बार उसका उद्देश्य यह था कि, "जब तक मै ईदर की विलायत पर अधिकार प्राप्त न कर लू किसी अन्य ओर प्रस्थान न करू।" ८०१ हि० (१३९८–९९ ई०) मे समाचार प्राप्त हुआ कि साहिब किरान की पताकाओ के सूर्य ने देहली के क्षेत्र पर छाया डाली और देहली को विजय कर लिया। इस समय उसने युद्ध करना उचित न देख कर ईदर के राजा से सधि कर ली और उचित उपहार लेकर पटन लौट गया।

सोमनात पर आक्रमण

उसी वर्ष यह समाचार प्राप्त हुआ कि सोमनात के समीप के काफिर प्रत्येक दिशा से आक्रमण करके अपना प्रभुत्व बढाने का प्रयत्न कर रहे है। उसने उनके अनुचित विचारो के उच्छेदन हेतु उस ओर चढाई की और उनके झूठे दावो को नष्ट करके इस्लाम को उन्नति प्रदान की। वहा से वह पुन पटन पहुचा।

इसी साल सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद बिन फीरोज़, साहिब किरान के आक्रमण के कारण अपने पूर्वजो के राज्य को त्याग कर पटन पहुचा। ज़फर खा ने उसका उचित स्वागत किया और वह उसे बड़े सम्मान से नगर मे लाया। उसका उद्देश्य यह था कि, "यदि जफर खा मेरा साथ दे तो मै देहली पर चढाई करूं।" जब खान ने आक्रमण करना उचित न देखा तो सुल्तान महमूद रुष्ट होकर मालवा की विलायत के हाकिम अलप खा के पास चला गया। उसको भी उचित व्यवहार करते हुये न देखकर वह कन्नौज चला गया और उस अक्ता से सतुष्ट हो गया।

सुल्तान मुहम्मद बिन ज़फ़र ख़ां का, जिसका नाम तातार ख़ां था, गुजरात में सिंहासनारोहण तथा उसकी मृत्यु

'तारीखे महमूद-शाही' का लेखक लिखता है कि जब तातार खा गुजरात पहुँचा और जफर खां के समक्ष धरती चुम्बन करके सम्मानित हुआ तो कुछ दिन उपरान्त उसने अपने पिता से नम्रतापूर्वक देहली के राज्य की अव्यवस्था तथा साहिब किरान अमीर तैमूर के ध्वस कार्य के विषय मे निवेदन करते हुये कहा कि, "यदि इस समय देहली की ओर प्रस्थान करे तो उस क्षेत्र वाले बडे प्रसन्न होगे।" जफर खा ने कहा कि, "यद्यपि तेरा उद्देश्य वहा वालो का उपकार है किन्तु समकालीन लोग इसे राज्य की लिप्सा (१६) बतायेगे अत. उस ओर इस समय प्रस्थान करना स्वार्थपूर्ण कार्य समझा जायेगा।" शाहजादे ने कहा कि •

छन्द

"राज्य किसी को उसके पूर्वजो से नही प्राप्त होता,
जब तक कि वह तलवार न चलाये।"

तातार खां का सिहासनारोहण

अत्यधिक वाद-विवाद के उपरान्त जफर खां ने ८०६ हि० (१४०३-४ ई०) मे राजसिंहासन तथा राजमुकुट तातार खा को सौप कर उसे नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह की उपाधि से सम्मानित कर दिया

और सेना तथा खजाना अपने पुत्र को देकर स्वय असावल कस्बे की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान मुहम्मद शाह ने जमादि-उल-आखिर ८०६ हि० (दिसम्बर १४०३ ई०) मे असावल कस्बे मे अपना राज्याभिषेक किया।

नादौत पर आक्रमण

उसी सप्ताह मे राजसिहासन से घोडे की जीन पर पहुचा और जिहाद के लिये तैयार हो गया। नादौत के काफिरो को, जो सेना की अधिकता तथा ऊचे ऊचे पर्वतो के कारण, समकालीन सुल्तानो की उपेक्षा किया करते थे, नष्ट कर दिया।

देहली पर आक्रमण करने का सकल्प तथा मृत्यु

वहा से बहुत बडी सेना लेकर देहली की ओर प्रस्थान किया। इकबाल खा यह समाचार पाकर बडा व्याकुल हुआ। शाबान ८०६ हि० (फरवरी १४०४ ई०) मे सुल्तान रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसे पटन की शुभ भूमि मे दफन कर दिया गया।

सुल्तान की मृत्यु का कारण

जो बात प्रसिद्ध है और जिसे गुजरात के जानकार लोग प्रमाणित रूप से बताते है वह इस प्रकार है कि तातार खा ने जफर खा को बन्दी बनाकर राजसिहासन पर अधिकार जमा लिया और अपनी उपाधि मुहम्मद शाह कर ली। समस्त सेना तथा परिजनों को अपनी ओर मिला लिया। तदुपरान्त (१७) वह नादौत के काफिरों से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ और उन्हे नष्ट कर दिया। वहा से वह देहली पर चढाई करने वाला था कि इसी बीच मे उसकी मृत्यु हो गई। इसका कारण यह बताया जाता है कि, "क्योकि, सुल्तान ने ससार के लिये अपने पिता के सम्मान का, जो लोक तथा परलोक मे कल्याण का साधन है, ध्यान न रखा था, अत ईश्वर ने पिता के हृदय मे स्नेह के स्थान पर ईर्ष्या उत्पन्न कर दी। सुल्तान के कुछ विश्वासपात्रो ने, जो हृदय से जफर खा के सहायक थे, सुल्तान को विष दे दिया। यद्यपि 'तारीखे मुहम्मदशाही' के लेखक ने इधर उधर की बहुत सी बाते लिखी है किन्तु अन्त मे इस घटना की ओर भी सकेत कर दिया है। सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त लोग उसे "खुदायेगाने शहीद" की उपाधि से पुकारते थे। यह भी प्रसिद्ध है कि सुल्तान मखदूम जहानिया का मुरीद था।

कहा जाता है कि सुल्तान मुहम्मद ने कुछ धन कुतुबुल आरेफीन शेख गज बख्श की सेवा मे भेजकर अपने राज्य के स्थायित्व के लिये प्रार्थना की। शेख ने उपहार स्वीकार न किया और कहलाया कि, "यह धन तुम्हारे स्वामी का है, इसे तुम्हे व्यय न करना चाहिये", और उसे वापिस भेज दिया।

संक्षेप में जब सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई तो जफर खा पुन सिंहासनारूढ हुआ और राज्य के अधिकारियो ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। खान ने प्रत्येक को प्रोत्साहित किया और अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया। उस दिन से अपनी मृत्यु तक खान सर्वदा विलाप किया करता था और (१८) सुल्तान शम्स खा से, जो उसका छोटा भाई था, राज्य पर अधिकार जमाने के लिये कहा करता था और स्वय एकान्तवास ग्रहण करना चाहता था किन्तु शम्स खां यह बात स्वीकार न करता था।

अन्त मे उसने शम्स खा को जलाल खोखर के स्थान पर नागौर भेजा और उस प्रदेश का राज्य उसे सौप दिया। अहमद खा बिन सुल्तान मुहम्मद को अपना वलीअहद[1] बनाकर आश्रय प्रदान करने लगा। शाबान ८०७ हि० (फरवरी १४०५ ई०) मे समाचार प्राप्त हुए कि अमीर तैमूर साहिब किरान की मृत्यु हो चुकी है। उसने ३६ वर्ष तक राज्य किया था। उसी वर्ष इकबाल खा ने देहली से कन्नौज पर सुल्तान फीरोज के पौत्र सुल्तान महमूद के विरुद्ध, जो कन्नौज को अपने अधिकार मे करके उसी से सतुष्ट था, इस आशय से चढाई की कि वह उसे उससे छीन ले। सुल्तान महमूद कन्नौज के किले मे बन्द हो गया। इकबाल खा ने कुछ समय तक प्रयत्न किया किन्तु उसे विजय न प्राप्त हुई और वह देहली लौट गया। ८०८ हि० (१४०५-६ ई०) मे खान ने महमूद की सहायतार्थ सेना तैयार की और देहली के ऊपर चढाई करने का विचार कर ही रहा था कि इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि "१९ जमादि-उल-अव्वल ८०८ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १४०५ ई०) को इकबाल खा तथा खिज्र खा मे युद्ध हुआ। खिज्र खा को विजय प्राप्त हुई और इकबाल खा की मृत्यु हो गई। सुल्तान महमूद कन्नौज से देहली पहुचा और अपने पूर्वजो के सिंहासन पर आरूढ हो गया।" खान ने अपना विचार त्याग दिया।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र का सिंहासनारूढ़ होना

जब देहली के बादशाहो के शासन प्रबन्ध मे कोई शक्ति न रही तो राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने जफर खा से शुभ मुहूर्त मे निवेदन किया कि, "गुजरात की व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध बादशाही दबदबे तथा ज़िल्लल्लाही[2] ऐश्वर्य के बिना सम्भव नही। इस उच्च कार्य के लिये आपसे अधिक कोई भी उपयुक्त नही। सर्वसाधारण की यही इच्छा है कि मुहम्मद साहब के धर्म को शक्ति पहुचाने के लिये आप अपने शुभ सिर पर शाही छत्र लगा ले और अपने हितैषियो की दृष्टि को इस रोशनी से चमका दे।" (१९) तदनुसार बीरपुर नामक स्थान पर ८१० हि० (१४०७-८ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के तीन वर्ष तथा सात मास उपरान्त उसने राज्य का चत्र अपने सिर पर लगाया और अपनी उपाधि मुज़फ़्फ़र शाह निश्चित की।

धार पर आक्रमण

वहा से उसने धार की ओर, जो मालवा के उपान्त मे है, इस आशय से प्रस्थान किया कि, "उस विलायत के हाकिम अलप खा बिन दिलावर खा से अपनी बैअत[3] कराये। यदि वह स्वीकार कर ले तो अच्छा है, अन्यथा उसे राज्य से पृथक् कर दे।" अलप खा ने सोभाग्य की कमी तथा राज्य के अभिमान के कारण उससे युद्ध किया। सुल्तान मुजफ़्फर के वीरों ने उसकी सेना को पराजित कर दिया। अलप खां भाग कर धार के किले मे प्रविष्ट हो गया। सुल्तान ने किले को घेर लिया। अल्प समय मे ही वह इतना विवश हो गया कि सुल्तान (मुजफ्फर) की सेवा मे उपस्थित हुये बिना उसके लिये कोई उपाय न रहा। जब वह सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो सुल्तान ने उसे बन्दी बनाकर नुसरत ख़ा को सौंप दिया।

१ उत्तराधिकारी।
२ ईश्वर की छाया होना।
३ अधीनता स्वीकार कराये।

देहली के सुल्तान की सहायतार्थ प्रस्थान

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि जौनपुर के सुल्तान इबराहीम ने देहली पर चढाई के उद्देश्य से प्रस्थान कर दिया है और अपनी पताकाये कन्नौज मे बलन्द कर रक्खी हैं। सुल्तान ने देहली के वाली[1] सुल्तान महमूद बिन सुल्तान मुहम्मद की सहायतार्थ प्रस्थान किया। यह समाचार पाकर सुल्तान इबराहीम जौनपुर वापस चला गया। सुल्तान भी वापिस होकर अपनी राजधानी मे पहुचा और अलप खा को अपने साथ ले आया।

अलप खा को मन्दू का राज्य प्रदान होना

अलप खा एक वर्ष तक बन्दी रहा। इसी बीच मे अलप खा के एक सम्बन्धी मूसा खा ने, जो अलप खा के आदेशानुसार मन्दू का हाकिम था, प्रभुत्व प्राप्त करके मालवा का अधिकाश भाग अपने अधिकार मे कर लिया। एक दिन अलप खा ने अपनी लेखनी से एक प्रार्थनापत्र लिख कर सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया। उसमे यह लिखा था कि "मूसा खा मेरा एक सम्बन्धी है। उसने मालवा का राज्य अपने अधिकार मे कर लिया है। यदि सुल्तान मुझे बन्दीगृह से मुक्त करके अपने उपकार का बन्दी बना ले तो मैं उससे शीघ्र ही मालवा का राज्य छीन कर अपने आप को आजीवन सुल्तान का दास समझता रहूगा।" सुल्तान ने अलप खा को सम्मानित किया और अपने पौत्र अहमद खा को एक बहुत बडी सेना देकर उसके साथ इस आशय से कर दिया कि वह मूसा को निकाल कर मन्दू का किला तथा उसके अधीनस्थ स्थान अलप खा को सौप कर लौट आये। शाहजादे ने निरन्तर यात्रा करते हुए मन्दू की ओर प्रस्थान किया। (२०) मूसा खा युद्ध की शक्ति न रखने के कारण भाग खडा हुआ और शाहज़ादा अलप खा को मन्दू में नियुक्त करके वापिस हो गया।

कुम्भ कोट की विजय

८१२ हि० (१४०९-१० ई०) मे सुल्तान ने कुम्भ कोट[2] के काफिरो के विरुद्ध सेना नियुक्त की। खुदावन्द खा को सेना का सरदार नियुक्त किया। एक व्यक्ति को शेख कासिम की सेवा मे, जो अपने समय के बहुत बडे सन्त थे, भेजा और इस्लामी सेना की सहायता की प्रार्थना की। शेख ने, जो सेना नियुक्त हुई थी, उसकी सूची देखकर कुछ नामों पर चिह्न बना दिया और कहा कि, "ये लोग मारे जायगे और शेष सुरक्षित तथा लूट की धन सम्पत्ति सहित वापिस होगे।"

सुल्तान की मृत्यु

'तारीख़े बहादुरशाही' के लेखक ने सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु ८१३ हि० (१४१०-११ ई०) मे बताई है किन्तु मृत्यु का कोई कारण नही लिखा है। प्रसिद्ध यह है कि जब असावल कस्बे के कोलियो ने विद्रोह कर दिया और लूट-मार प्रारम्भ कर दी तो सुल्तान मुज़फ्फर ने अहमद खा को उस सेना सहित, जो राजधानी मे उपस्थित थी, उन लोगों को दड देने के लिये भेजा। खान ने शहर से निकल कर खान सरवर नामक हौज पर पडाव किया और आलिमों को बुलवा कर उनसे पूछा

१ शासक।
२ 'तबकाते अकबरी' के अनुसार 'कच्छके अधीनस्थ कन्थ कोट'।

कि, "यदि कोई किसी के पिता की अकारण हत्या कर दे तो उसके पुत्र के लिये यह उचित है अथवा नही कि वह उससे बदला ले ?" प्रत्येक ने उसे उचित बताकर फतवा[1] दे दिया। खान कागज को अपने पास सुरक्षित रख कर दूसरे दिन नगर मे पहुचा और सुल्तान को बन्दी बनाकर उसने उसे विष दे दिया। सुल्तान ने पूछा, "हे पुत्र! तूने जल्दी किस कारण की? यह सब तेरे ही लिये था।" उसने उत्तर दिया, "आपका समय आ गया था। जब उनका समय आ जाता है तो वे क्षण भर को नही ठहरते और न जल्दी करते है।" सुल्तान ने कहा, "तू मुझसे कुछ शिक्षा की बाते सुन ले जो तेरे काम आयेगी। सर्वप्रथम यह कि जिसने तुझे इस कार्य के लिये प्रेरित किया उससे कोई मित्रता न रख अपितु, उसकी हत्या कर दे। दूसरे मदिरा पान कभी मत कर। बादशाहो को यह कार्य कभी न करना चाहिये। इसके अतिरिक्त शेख मलिक तथा शेर मलिक की हत्या करा दे कारण कि वे बहुत बडे षड्यन्त्रकारी है।"

(२१) सक्षेप मे सफर मास[2] के अन्त मे मुजफ्फर की मृत्यु हुई और उस मकबरे मे, जो जहा-पनाह पटन के कोट मे है, दफन हुआ।

कहा जाता है कि सुल्तान अहमद अपने दादा की मृत्यु के उपरान्त बडा लज्जित हुआ और इसका उसके ऊपर बडा प्रभाव हुआ। उसने यह कार्य दुष्टो की बुरी सगत एव युवावस्था की असावधानी के कारण किया अन्यथा सुल्तान के चरित्र को देखते हुए यह कार्य बडा आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

सुल्तान अहमद

अमीरो के विद्रोह

(२२) सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु के उपरान्त १४ रमजान ८१३ हि० (१० जनवरी १४११ ई०) को अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुजफ्फर शाह सिहासनारूढ हुआ। कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हुये। अचानक समाचार प्राप्त हुये कि, "मुईज्जुद्दीन फीरोज खा, जो उसके चाचा का पुत्र तथा बरोदा का हाकिम था, आसपास के अमीरो को मिला कर राज्य पर अधिकार जमाने के लिये आ रहा है। हुसामुलमुल्क भन्दरी, मलिक अहमद बिन हुसामुलमुल्क, मलिक शह खत्री का पिता, हबीबुल-मुल्क मुस्तौफी[3] का पुत्र, मलिक करीम खुसरो, जीवनदास[4] दुष्ट प्यागदास नरबाद[5] पहुँच कर उससे मिल गये। उन्होने भीकन[6], आदम[7] तथा अफगान खा को, जो सुल्तान के मित्र थे, पराजित कर दिया और जीवन दास खत्री को अपना नेता बना कर दुष्टता के मार्ग पर अग्रसर है।" एक दिन जीवन दास ने अमीरों को एकत्र करके कहा कि, "नहरवाला को विजय करने का प्रयत्न करना चाहिये ताकि हमारी इच्छा-नुसार कार्य सम्पन्न हो जाय।" अमीरो ने कहा, "हममे सुल्तान अहमद से युद्ध करने की शक्ति नही। उचित यही है कि हम सधि कर ले।" जीवन दास ने उनकी बात स्वीकार न की और उनमे अत्यधिक

१ व्यवस्था। धार्मिक समस्याओ मे शरा के अनुसार मुफ़्ती का निर्णय।
२ सफर ८१३ हि० (जून १४१० ई०)।
३ मुस्तौफ़ी राज्य के हिसाब किताब की जाच करने वाले अधिकारी होते थे।
४ प्रकाशित ग्रन्थ मे 'जीवन्द' है किन्तु कादरी के अनुसार यह 'जीवन दास' है, (पृ० ११)।
५ फ़रीदी के अनुसार 'नदियाद' (पृ० ११)।
६ फ़रीदी के अनुसार 'भीकन खां' (पृ० ११)।
७ फ़रीदी के अनुसार 'आदम सुल्तान'।

वादविवाद होने लगा। अन्त मे जीवन दास की हत्या कर दी गई और अमीर लोग सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हो गये। उन्हे इनाम-इकराम द्वारा सम्मानित किया गया।

मुईद्दुद्दीन फीरोज खा खम्बायत पहुचा। इसी बीच मे शेख मलिक, जिसकी उपाधि मस्ती खा थी और जो सोरठ का हाकिम तथा सुल्तान मुजफ्फर खा का पुत्र था, मुईद्दुद्दीन बिन फीरोज खा से मिल गया। जब सुल्तान ने उन्हे भगाने का सकल्प किया तो वे खम्बायत से भरौच चले गये। सुल्तान ने उनका पीछा करके भरौंच को घेर लिया। मस्ती खा की सेना सुल्तान को देखते ही उससे मिल गई। (२३) तत्पश्चात् मस्ती खा ने भी उपस्थित होकर सुल्तान के चरण चूमने की अभिलाषा प्रकट की। कुछ दिन उपरान्त सुल्तान ने उसे बुलवा कर उसके अपराध क्षमा कर दिये। उसने भी उपस्थित होकर, सुल्तान की चौखट चूमी। सुल्तान सफलतापूर्वक लौट गया। जब वह असावल पहुचा तो आसा भील के विनाश की योजना बनाने लगा। उसी शुभ वर्ष मे उसने असावल के समीप, शेख अहमद गज बख्श की अनुमति से अहमदाबाद के भव्य नगर का निर्माण प्रारम्भ कराया। हलवी शीराजी ने इसके विषय मे यह कविता लिखी है।

अहमदाबाद का निर्माण

जब बादशाह ने कुछ दिन तक साभर नदी के तट पर पडाव किया तो उसने एक बडी ही सुखद भूमि देखी। उसे शोक की धूलि से मुक्त पाया। वहा की वायु के कारण वहा निवास करने की इच्छा होती थी। उसने वहा एक उत्तम स्थान तथा उत्तम जलवायु पाई। दैवी प्रेरणा से बादशाह के हृदय मे यह आया कि, "इस भूमि पर मैं एक नये नगर का निर्माण कराऊ।" तत्काल उसने भवन निर्माण करने वालो को बुलवाकर आदेश दिया कि, "इस स्थान पर एक भव्य नगर का निर्माण किया जाय। ऐसा नगर बनाया जाय जिससे भूमि तथा आकाश को ईर्ष्या हो।" उसके कारण गुजरात से खुरासान तक के स्थान भी ईर्ष्या करने लगे।

(२४) बादशाह ने यह निश्चय करके ज्योतिषियो को बुलवाया। उन्होने नगर के निर्माण के लिये एक शुभ मुहूर्त निश्चित की और जीकाद ८१३ हि० (फरवरी-मार्च १४११ ई०) मे इसका निर्माण (२५) प्रारम्भ हुआ। जब इसकी नीव रक्खी गई तो आकाश ने इसके लिये बधाई दी। जब वह नगर बस गया तो सात इकलीमो[1] वाला ससार आठ इकलीमो वाला हो गया। जब शहर पूरा हो गया तो उसका नाम अहमदाबाद रक्खा गया। हे ईश्वर! तू कयामत तक इस भव्य नगर को सुरक्षित रख।

८१६ हि० (१४१३-१४ ई०) मे अहमदाबाद नगर पूरा हुआ। कहा जाता है कि अहमदाबाद नगर का निर्माण अहमद नाम के चार व्यक्तियों के हाथो से प्रारम्भ हुआ। एक कुतुबुल मशायख वल औलिया शेख अहमद खत्तू, दूसरे सुल्तान अहमद नगर का वाली जिसके हाथ मे रस्सी का एक सिरा था और दूसरा सिरा शेख अहमद खत्तू के हाथ मे। तीसरे शेख अहमद, चौथे मुल्ला अहमद। ये दोनो भी अपने युग के बडे सम्मानित तथा योग्य व्यक्ति थे। कहा जाता है कि सुल्तान अहमद मे बाह्य तथा आन्तरिक गुण पाये जाते थे। वह अधिकाश समय ईश्वर के स्मरण में व्यतीत करता था। अहमदाबाद नगर की सुन्दरता इस बात का प्रमाण है कि चारों अहमदों का अन्त बडे उत्तम ढग से हुआ। उनके आशीर्वाद से इस नगर को ऐसी रौनक प्राप्त हुई कि यह समस्त सातों इकलीमो के नगरों से बढ गया। समुद्र तथा

१ मध्यकालीन भूगोल-वेत्ताओं के अनुसार समस्त संसार ७ जलवायु वाले प्रदेशो मे विभाजित था।

भूमि के यात्री इस बात से सहमत है कि ऐसे हृदयग्राही तथा सुन्दर नगर का निर्माण भूमि पर न हुआ होगा। सम्भव है कि जनसख्या के आधार पर कुछ नगर इससे बढ कर हो किन्तु सुन्दरता एव रौनक मे अहमदाबाद के समान कोई अन्य नगर नही।

पद्य[1]

अहमदाबाद ऐसा नगर है जिसके समान ईश्वर के आकाश के नीचे किसी नगर का निर्माण न (२६) हुआ होगा। बहार की वायु से अधिक वहा की वायु सुगन्धित है। इसके उद्यान स्वर्ग के उद्यानो से अधिक सुन्दर है और उसकी प्रसिद्धि अरब से चीन की सीमा तक है। उसके किनारे ऐसी नदी बहाती है जिससे नील नदी भी ईर्ष्या करने लगे। उसके भवन आकाश से भी ९०० हाथ ऊचे है। बहुत से भवन जिन पर सोने से बेल-बूटे बने हुए है, आकाश की ओर सिर उठाये रखते है। सुनहरे गुम्बद प्रत्येक दिशा मे आकाश के समान है। उसकी दूकाने तथा बाज़ार सजे रहते है और जिस वस्तु की भी इच्छा हो यहा प्राप्य रहती है। उसमे आदर तथा सम्मान के योग्य एक मस्जिद है जिसकी मज़िले काबा के समान है। उसमे एक सुनहरा मिम्बर[2] रक्खा हुआ है जिससे आकाश को सम्मान प्राप्त होता है। उसमे सज्जा के लिये चादी के दीपक तथा सोने की कन्दीले लटकती रहती है। उसमे अत्यधिक मदरसे तथा खानकाहे है, जहा यात्री ठहरते है।

राजप्रासाद ऐसा भव्य है कि उसके बुर्ज चन्द्रमा तक पहुचते है। उसमे सोने की ईटे तथा ऊद[3] (२७)की लकडी लगी है। उसमे स्वर्ग के उद्यान के समान एक उद्यान है। उसकी धूल कस्तूरी तथा अम्बर[4] के समान है। उसमे एक हौज़ का निर्माण कराया गया जो आबे हयात के समान है।

भव्य मस्जिद का निर्माण जो मानक चौक के निकट है, ८१७ हि० (१४१४-१५ ई०) मे हुआ। उसकी तिथि से सम्बन्धित कविता शहर के मुफ्ती मौलाना यहया ने लिखी थी

पद्य

"इस शुभ भवन का निर्माण, जो काबा के समान है, सुल्तान अहमद शाह के राज्यकाल मे हुआ। इसका निर्माण सैयिद आलम अबूबक्र हुसेनी द्वारा हुआ। वह प्रथम रजब ८१७ हि० (१६ सितम्बर १४१४ ई०) मे प्रारम्भ हुई।

प्रागण को छोडकर उत्तरी एव दक्षिणी एवान[5] की लम्बाई १०० गज, चौडाई प्रागण को छोडकर (२८) ५० गज़। प्रागण की चौडाई १२० गज, उत्तरी तथा दक्षिणी बाहुओ मे से प्रत्येक की चौडाई २० गज़। मस्जिद के भीतरी स्तम्भ, मुलूक खाने[6] को छोडकर ३५०, मुलूक खाने के द्वार के २ स्तम्भ, मुलूक खाने के तख्त के ८ स्तम्भ, उत्तरी तथा दक्षिणी बाहुओं मे से प्रत्येक मे २१२ स्तम्भ, पूर्वी उत्तरी तथा दक्षिणी द्वारों मे से प्रत्येक मे ३२ स्तम्भ, गुम्बद के ऊपर ९८ स्तम्भ, उत्तरी तथा दक्षिणी एवानो के

१ केवल सारांश दिया जा रहा है।
२ मस्जिद का मच।
३ अगर।
४ एक सुगन्धित वस्तु।
५ एवान :—बरामदा।
६ मुलूक खाना :—इस शब्द का ठीक तात्पर्य ज्ञात नही हो सका।

गुम्बदो को छोडकर बडे द्वार मे ७७, छोटे मे २०, दोनो मीनारों मे से प्रत्येक मे ५७ जीने, प्रत्येक मीनारा १८६ हाथ तथा ९३ स्तम्भ।

ईंदर पर आक्रमण

सुल्तान के भरौच से लौटने तथा अहमदाबाद नगर के निर्माण के उपरान्त उसी वर्ष मे मुईदुद्दीन बिन फीरोज़ खा तथा मस्ती खा ने बद्र औला के बहकाने से ईदर के राजा रणमल से मिलकर विद्रोह कर दिया और ईदर को अपने शरण का स्थान बना लिया। सुल्तान ने उनसे युद्ध करने के लिये ईदर की ओर प्रस्थान किया। परनही नामक स्थान से होशग को, जिसकी उपाधि, फतह खा थी और जो उसके एक चाचा सुल्तान मुजफ्फर का पुत्र था[१], बहुत बडी सेना देकर यह आदेश दिया कि वह केहराव[२] कस्बे के मार्ग से ईदर की विलायत मे प्रविष्ट हो जाय। इसी बीच मे इबराहीम खा बिन निजाम को, जिसकी उपाधि रुक्न खा थी और जो सुल्तान की ओर से मोरासा[३] कस्बे मे था, मुईदुद्दीन ने मार्ग भ्रष्ट करके अपनी ओर मिला लिया। बद्रे उला, मुईदुद्दीन, मस्ती खा तथा ईदर के राजा रणमल ने सेना एकत्र करके ईदर से प्रस्थान करने के उपरान्त, ईदर के अधीन रगपुर नामक ग्राम मे जो मोरासा से ५ कोस पर स्थित है पडाव किया और मोरासा के किले को दृढ करने मे व्यस्त हो गये। उन्होने किले के चारो ओर एक गहरी खाई खुदवाई और किले मे तोपे लगवा दी।

सुल्तान ने कूच करके मोरासा के उपान्त मे पडाव किया और अपनी धर्मनिष्ठता एव ईश्वर के भय के कारण दयापूर्वक एक दूत उन्हे यह परामर्श देने के लिये भेजा कि "विद्रोह तुम लोगों के विनाश का कारण होगा। अच्छा होगा कि तोबा तथा क्षमा-याचना करके मुक्ति प्राप्त कर लो।" उन लोगों ने इस ओर ध्यान न दिया। सुल्तान ने किले को घेर कर पुन उन्हे शिक्षा देने का अत्यधिक प्रयत्न किया। विद्रोहियों ने छल तथा विश्वासघात करते हुए निवेदन किया कि, "हमने बार-बार अपराध किये है। उनके कारण हमे अपने प्राणों तथा अपने घर-बार के विनाश का भय होता है। राज्य के कुछ उच्च पदा- (२९) धिकारी उदाहरणार्थ निजामुलमुल्क, वजीर, सादुलमुल्क सिलाहदारे[४] मैसरा[५], मलिक अहमद अज़ीज़ुलमुल्क तथा नसीर सैफ[६] आकर हमारे हाथ पकड कर हमे सुल्तान के चरणो मे पहुचा दे।" सुल्तान ने उन लोगो को आज्ञा प्रदान करदी और आदेश दिया कि वे किले के भीतर न प्रविष्ट हो और विद्रोहियों के विश्वासघात से सावधान रहे। जब उपर्युक्त अमीर किले के निकट पहुचे तो बद्र उला ने एक सशस्त्र सेना को एक गुप्त स्थान मे नियुक्त करके उन लोगो के पास उपस्थित होकर भेट की। उन्हे चिकनी-चुपडी बातो तथा चाटुकारी द्वारा इतना प्रभावित किया कि अमीरों के हृदय मे विश्वासघात की शका न रही।

१ फ़रीदी के अनुसार 'होशग फ़तह खां सुल्तान मुज़फ़्फ़र का चचा ज़ाद भाई था' (पृ० १२) और यही उचित है।
२ फ़रीदी के अनुसार 'खेरालू' (पृ० १२)।
३ इसे अन्य स्थानों पर 'महरासा' भी लिखा गया है।
४ सिलाहदारे मैसरा :—सिलाहदार सुल्तान के रक्षक होते थे और जब सुल्तान दरबार करता अथवा कहीं बाहर जाता था तो वे उसके साथ साथ रहते थे। दाहिनी तथा बाईं ओर के पृथक् सिलाहदार होते थे। बाईं ओर का सिलाहदार, 'सिलाहदार मैसरा' कहलाता था।
५ फ़रीदी के अनुसार 'मैमना' अथवा दाईं ओर का (पृ० १२)।
६ फ़रीदी के अनुसार 'नसीर सैफ़' जिसकी उपाधि 'बाज़दार खा' थी।

इसी बीच मे उसने मलिक निजामुलमुल्क तथा सादुलमुल्क से निवेदन किया कि, "आप एकान्त मे आ जाय तो अपनी प्रार्थना प्रस्तुत करू।" वे लोग गोष्ठी से एकान्त मे चले गये। इसी बीच मे उसने उन लोगों को, जो सशस्त्र घात लगाये बैठे थे, आदेश दे दिया और उन लोगो ने लपक कर दोनों मलिकों को बन्दी बना लिया और किले के भीतर ले गये। निजामुलमुल्क ने चिल्लाकर कहा, "सुल्तान से निवेदन कर देना कि हमारे भाग्य मे यही लिखा था। आप हमारे कारण किले को विजय करने मे कमी न करे।" सुल्तान के आदेशानुसार सेना वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करती हुई किले से चीटी के समान चिमट गई। तीसरे दिन सुल्तान स्वय खाई पर पहुच गया और सेना प्रत्येक दिशा से किले के ऊपर पहुच गई। विद्रोही व्याकुल होकर तहखाने मे प्रविष्ट हो गये। अन्त मे बद्रे उला तथा रुक्न खा की हत्या कर दी गई। मुईदुद्दीन फीरोज खा तथा राजा ईदर भाग कर बाहर चले गये। निजामुलमुल्क तथा सादुलमुल्क, जिस कोठरी मे बन्द थे, उसमे से सुरक्षित बाहर निकले। यह घटना ५ जमादि-उल-अव्वल ८१४ हि० (२५ अगस्त १४११ ई०) मे घटी।

राजा ईदर ने यह देखकर अपनी मुक्ति के उद्देश्य से मुईदुद्दीन फीरोज खा तथा मस्ती खा के समस्त हाथी एव घोडे पकडवा कर सुल्तान की सेवा मे भिजवा दिये और उनके शिविर को नष्ट कर डाला। मुईदुद्दीन तथा मस्ती खा नागौर की ओर चले गये और शम्स खा दन्दानी से मिल गये। दन्दानी उसे इस कारण कहा जाता था कि उसके कीले वाले दात लम्बे थे। अन्त मे मुईदुद्दीन (३०) की, चित्तौड के राणा मोकल तथा शम्स खा दन्दानी के युद्ध मे, मृत्यु हो गई। ईदर के राजा के इस कार्य को देखते हुये सुल्तान ने उसके अपराध क्षमा कर दिये और वहा से सुरक्षित वापस लौट आया।

शेख मलिक इत्यादि का विद्रोह

८१६ हि० (१४१३-१४ ई०) मे उस्मान अहमद सरखीजी[1], शेख मलिक इब्ने शाह मलिक नहर वाला नगर के तुरकदारो[2], अहमद शेर मलिक, सुलेमान अफगान जो आजम खा के नाम से प्रसिद्ध था, तथा ईसा सालार, ने कृतघ्नता प्रदर्शित करते हुये गुप्त रूप से मालवा के बादशाह सुल्तान होशग को प्रार्थना-पत्र भेजे कि "(यदि आपको बादशाह को) गुजरात की विलायत[3] को विजय करने की इच्छा हो तो इस ओर चले आये। इस ओर से हम लोग भी कटिबद्ध होकर सुल्तान अहमद को पृथक् कर देगे। गुजरात का राजसिंहासन आपको प्राप्त हो जायगा।" इस कार्य हेतु गुजरात के ज़मीदारों उदाहरणार्थ काथा[4] तथा सत्रसाल झालावर की विलायत के राजा इत्यादि को भी उन्होंने अपनी ओर मिला लिया और वे लोग भी मार्ग-भ्रष्ट होकर विद्रोह के लिये तैयार हो गये। सुल्तान होशग ने कुछ विद्रोहियों के प्रस्ताव पर सुल्तान अहमद से युद्ध करने के लिये गुजरात की ओर प्रस्थान किया।

इस समाचार को पाकर सुल्तान अहमद ने अपने भाई शाहजादा लतीफ खा तथा निज़ामुलमुल्क

१ सरखीज निवासी।
२ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। फ़रीदी ने 'शेख़ मलिक पुत्र शेर मलिक जो पटना मे निवास करता था' लिखा है। (पृ० १३)।
३ राज्य।
४ फ़रीदी के अनुसार 'काथी' (पृ० १३)।

वज़ीर को शेख मलिक को दड देने के लिये भेजा और स्वय प्रस्थान करके यान्ड्रमन[1] ग्राम के समीप जो सावली परगने मे है और चाम्पानीर पर्वत से १३[2] कोस पर है पडाव किया।

एमादुलमुल्क को होशग के विरुद्ध भेजना

एमादुलमुल्क को एक बहुत बडी सेना का सरदार बनाकर सुल्तान होशग से युद्ध करने के लिये अपने आगे भेजा। सुल्तान होशग ने अपने अमीरों तथा वजीरो से कहा कि, "एमादुलमुल्क से युद्ध करना हमारे लिये उचित नही।[3] यदि हमे विजय हुई तो हम सुल्तान अहमद के दास को पराजित करेगे और यदि इसके विरुद्ध बात हुई तो कहा जायगा कि सुल्तान अहमद के दास ने सुल्तान होशग को पराजित कर दिया। हमारे लिए यह बहुत बडी पराजय होगी, अत इस युद्ध से बचना ही अच्छा है।" सुल्तान होशग ने लौट जाने का सकल्प कर लिया। एमादुलमुल्क मालवा के आसपास के स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट करके लौट गया।

विद्रोहियो का पलायन

लतीफ खा तथा निजामुलमुल्क ने शेख मलिक तथा सत्रसाल[4] को पराजित करके सोरठ की विलायत[5] की ओर, जो किरनार के राजा मद्रलीक के अधीन था, भगा दिया अपराधियों को और भी अनेक अपराधो को सौपकर वे लौट गये। सुल्तान भी प्रसन्नतापूर्वक अहमदाबाद पहुचा।

लोगो को ज्ञात होना चाहिये कि गुजरात प्रदेश मे देहली के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन के (३१) कारण कुफ्र का अन्त हुआ किन्तु नहरवाला नगर से जो पटन कहलाता है भरौच के किले तक इस्लाम का प्रकाश फैला। अन्य दिशाओ मे पूर्व की भाति ही कुफ्र का अन्धकार था। अन्त मे गुजरात के सुल्तानो के प्रयत्न के फलस्वरूप वहा शनै. शनै इस्लाम फैला। जिन महालों[6] मे सुल्तान अहमद के प्रयत्न के फलस्वरूप इस्लाम फैला उनका उल्लेख नीचे किया जाता है।

सुल्तान का सोरठ की विलायत की ओर किरनार के क़िले की विजय हेतु प्रस्थान तथा विजय किये बिना वापसी

८१७ हि० (१४१४-१५ ई०) मे सुल्तान ने किरनार के काफिरो के प्रसिद्ध किले सोरठ पर चढाई की। किरनार के राजा मदलीक ने पर्वत के आचल के निकट सेना एकत्र करके युद्ध किया। शाही सेना के अग्र भाग के आक्रमण के कारण काफिरों की सेना पराजित हो गई। कहा जाता है कि उस युद्ध मे काफिर बहुत बडी सख्या मे मारे गये। किरनार का राजा भागकर किले के ऊपर चला गया। हलवी ने उसका विवरण इस प्रकार दिया है:

१ फ़रीदी के अनुसार 'बाधरू' (पृ० १०)।
२ फ़रीदी के अनुसार '१०' (पृ० १३)।
३ अर्थात् हमारे लिये अपमानजनक है।
४ सम्भवत क्षत्रसाल।
५ राज्य।
६ राज्य के भागो।

पद्य

"इस्लाम की सेना को इस प्रकार विजय प्राप्त हुई, कि काफिरो की सेना का मध्य भाग छिन्न भिन्न हो गया। वे लोग व्याकुल, दुखी तथा चकित हो गये, गीले बेत के समान वे कम्पित हो उठे। धर्म-निष्ठ लोग विजयी हुये,

दुष्ट, पिशाच तथा अपवित्र काफिरो पर।".

(३२) यद्यपि इस बार समस्त प्रदेश इस्लाम के प्रकाश द्वारा रोशन न हुआ किन्तु जूनागढ[1] का किला, जो पर्वत के आचल के निकट स्थित है, सुल्तान के अधिकार मे आ गया। सोरठ के अधिकाश ज़मीदार आज्ञाकारी बन गये और उन्होने क़र देना स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने सैयिद अबुल ख़ैर तथा सैयिद कासिम को जमीदारो की सलामी[2] वसूल करने के लिये उस क्षेत्र मे नियुक्त कर दिया और स्वय उस क्षेत्र से अपनी राजधानी मे पहुच गया।

जमादि-उल-अव्वल ८१८ हि० (जुलाई-अगस्त १४१५ ई०) मे उसने सैयिदपुर[3] के मन्दिरों के विनाश हेतु, जहा की मूर्तिया सोने तथा चाँदी की थी, प्रस्थान किया।

पद्य

"दैवी प्रेरणा से प्रस्थान किया,
सैयिदपुर के मन्दिर के खडन हेतु
वह स्थान जो काफिरों का घर था,
और अपवित्र अग्निपूजकों का स्वदेश।
उसमे रात दिन रहते थे,
जुन्नारदार[4] मूर्ति-पूजक।
सर्वदा वह मूर्तियों तथा मूर्ति-पूजकों का स्थान रहता था,
किसी स्थान से उसे कोई हानि न होती थी।
वह ससार में आबाद तथा प्रसिद्ध था,
वह कलकित काफिरो का स्वदेश था।
उसकी नीव दृढ पत्थर से पडी थी,
उसमे नीले आकाश के समान बेलबूटे बने थे।
उसमे ऊद[5] तथा चन्दन के द्वार लगे थे,
उसमे सोने के छल्ले लगे हुये थे।
उसके फर्श सगमरमर के थे,

१ मूल पुस्तक में 'खूबा गढ' किन्तु इसे 'जूना गढ' होना चाहिये। फ़रीदी ने भी इसे 'जूना घढ़' पढ़ा है। (पृ० १४)।
२ कर।
३ फ़रीदी के अनुसार 'सिधपुर' जो सरस्वती नदी पर अहमदाबाद के उत्तर मे ५८ मील पर स्थित है, (पृ० १४)।
४ ब्राह्मण।
५ एक सुगंधित लकड़ी।

और आइने के समान चमकते थे।
(३३) उसमे ऊद ईंधन के समान जलता था,
उसमे बडी सख्या मे काफूरी मोमबत्तिया जला करती थी।
प्रत्येक कोने मे मेहराब थे
और प्रत्येक मेहराब मे सोने की कन्दीले लटकी रहती थी।
उसमे चादी की मूर्तिया स्थापित थी,
उनसे चीन तथा खतन की मूर्तिया लज्जित होती थी।. .
ऐसा प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर,
जिसकी ससार मे प्रसिद्धि थी,
अहमद के प्रयत्न से वह मूर्तियों से मुक्त हो गया,
मूर्ति-पूजकों के हृदय शोक से टुकडे-टुकडे हो गये।
उसने मस्जिदों का निर्माण कराया और उनमे मिम्बर रखवाये,
वहा से मुहम्मद साहब की शरा की प्रथा प्रारम्भ हो गई।
मूर्तियों, मूर्ति का निर्माण करने वालो, तथा मूर्ति-पूजकों के स्थान पर,
इमाम[1], अजान देने वाले तथा खतीब[2] नियुक्त हो गये।
अहमद के सौभाग्य ने इतनी सहायता की,
कि मूर्तियो का घर अल्लाह का घर हो गया।"

जब सुल्तान सैयिदपुर के अभियान से निश्चित हो गया, तो इसके उपरान्त उसने ८१९ हि० (१४१६-१७ ई०) मे धार की ओर चढाई की। इसका कारण यह था कि जब सुल्तान ने सुल्तानपुर तथा नद्रबार[3] पर आसीर तथा बुरहानपुर की विलायत के हाकिम नसीर बिन ऐनुलमुल्क के विरुद्ध आक्रमण किया तो गुजरात के जमीदारो, उदाहरणार्थ ईदर के राजा पूंजा, त्रबकदास चम्पानीर के राजा, छत्रसाल झालावर के राजा, तथा सीरा नादोत के राजा, ने मिल कर सुल्तान होशग को पत्र लिखा कि "सुल्तान अहमद शाह ने सुल्तानपुर तथा नद्रबार की ओर नसीर ऐनुलमुल्क पर चढाई की है। यदि इसी बीच मे आप (सुल्तान होशग) गुजरात पर आक्रमण करे तो इस अभियान को हम लोग सुगमतापूर्वक सफल करा सकते है।"

सुल्तान होशंग द्वारा आक्रमण

सुल्तान होशग ने सेना तैयार करके शम्स खा दन्दानी तथा मुईज्ज़ुद्दीन फीरोज खा को जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है लिखा कि "हमने गुजरात पर आक्रमण करना निश्चय किया है। यदि इस समय आप लोग हमारी सहायता करे तो नहरवाला नगर अर्थात् पटन एव उसके अधीनस्थ स्थान आपको प्रदान (३४) कर दिये जायगे अन्यथा सुल्तान अहमद आपसे प्राचीन ईर्ष्या का बदला लेगा।" इस सदेश के पहुचते ही शम्स खा ने सुल्तान अहमद को लिखा कि, "सुल्तान होशग ने आप का विरोध करने के लिये हमसे सहायता मागी है और वह गुजरात पर आक्रमण करने का विचार कर रहा हैं। दास लोग आपके

१ नमाज़ पढ़ाने वाले।
२ ख़ुत्बा पढ़ने वाले।
३ मूल पुस्तक मे 'नज़्रबार'।

हितैषी है और आपके प्रताप के आशीर्वाद से इस कोने मे राज्य कर रहे है। हमारे लिये यह कहा उचित है कि हम सुल्तान के शत्रु के मित्र हो जाय। जो आवश्यक था, उसका उल्लेख कर दिया।"

सुल्तान अहमद का मोरासा पहुंचना

नागौर से नवे दिन एक शुत्र सवार[1] ने यह पत्र सुल्तान की सेवा मे सुल्तानपुर मे पहुचा दिया। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान होशग ने मगरीज कस्बे को पार करके[2] मोरासा मे पडाव किया है। सुल्तान ने शीघ्रातिशीघ्र नद्रबार से वर्षा ऋतु मे गुजरात की ओर प्रस्थान किया। वर्षा की अधिकता तथा काली खराब दलदल, जो मार्ग मे थी, के बावजूद उसने सातवे दिन १६ रजब ८२० हि० (२९ अगस्त १४१७ ई०) को मोरासा के निकट सुल्तान होशग के समक्ष पडाव कर दिया।

सुल्तान होशंग की वापसी

सुल्तान होशग ने उपर्युक्त राजाओ से कहा कि "तुम लोग तो कहते थे कि जब तक सुल्तान अहमद को सूचना मिलेगी उस समय तक हम आप को अहमदाबाद पहुचा देगे। सुल्तान अहमद ने पाच कोस पर पहुच कर पडाव कर दिया और तुम लोगो ने मुझे इस विषय मे सूचना भी न दी अत इससे तुम्हारे विश्वासघात का पता चलता है न कि मित्रता का। अब मै तुम लोगों की बात पर विश्वास न करूगा।" सुल्तान होशग रातो-रात भाग खडा हुआ और राजा लोग छिन्न-भिन्न हो गये, और जो कुछ उन्होने किया था उस पर लज्जित हुये।

आसीर के हाकिम नसीर का विद्रोह

सुल्तान अहमद शाह ने कुछ दिनो तक मोरासा मे पडाव किया। इसी बीच मे उसे समाचार प्राप्त हुये कि "सोरठ की विलायत के ज़मीदारो ने सुल्तान होशग के आक्रमण के कारण मालगुजारी देना बन्द कर दिया है और विद्रोह कर दिया है। आसीर की विलायत के हाकिम नसीर बिन राजा ने सुल्तान होशग के पुत्र गैरत खा से मिलकर शत्रुता प्रारम्भ कर दी है और थानसिर[3] के किले को घेर लिया है। उसने इफ़्तेखारुलमुल्क बिन राजा के विश्वासघात के कारण उपर्युक्त किले पर अधिकार जमा लिया और नादौत की विलायत के ज़मीदारो से मिलकर सुल्तानपुर तथा नद्रबार की ओर प्रस्थान किया है और उपद्रव के वृक्ष को सीच रहा है। वे शाही हाजिब मलिक अहमद की सुल्तानपुर के कोट मे हत्या करके उस पर विजय करने का प्रयत्न कर रहे है। पता नही कि इस समय तक क्या घटना घटी होगी।"

विद्रोहियो के दमन हेतु सेना की नियुक्ति

(३५) सुल्तान अहमद शाह ने मलिक महमूद[4] तथा मुखलिसुलमुल्क को एक शक्तिशाली सेना सहित नसीर के विरुद्ध नियुक्त किया। खाने आजम महमूद खा को एक भारी सेना देकर सोरठ के विद्रोहियो

१ ऊँट पर डाक ले जाने वाला।
२ फ़रीदी के अनुसार 'गुजरात की सीमा'।
३ फ़रीदी के अनुसार 'थालनेर' (पृ० २१५), यही उचित है।
४ फ़रीदी के अनुसार 'मलिक महमूद बर्की'।

को दड देने के लिये नियुक्त किया। जब मलिक महमूद नादौत की विलायत नष्ट-भ्रष्ट करके सुल्तानपुर के निकट पहुचा तो गैरत खा मालवा की ओर भाग गया। नसीर ने थानसीर[1] की ओर पलायन किया। मलिक महमूद ने उसका पीछा किया। नसीर थानसीर[1] के किले मे बन्द हो गया। मलिक ने किले को घेर कर अल्प समय मे उसे इतना परेशान कर दिया कि वह सुल्तान की दासता स्वीकार करने पर विवश हो गया। मलिक महमूद ने सुल्तान की सेवा मे वास्तविक स्थिति का उल्लेख करके नसीर के अपराधों की क्षमा-याचना की। सुल्तान ने नसीर को खान की उपाधि प्रदान की और अपना आज्ञाकारी बना लिया।

मालवा पर चढाई

कुछ समय उपरान्त सुल्तान अहमद ने होशग के अपराध के कारण, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है, मालवा पर चढाई की। इसी बीच मे ईदर के राजा पूजा ने, जो रणमल का पुत्र था, चम्पानीर के राजा त्रम्बक दास तथा नादौत के राजा इत्यादि ने, जोकि सुल्तान होशग के आक्रमण के समय उसके सहायक थे, अपने वकील सुल्तान की सेवा मे भेजे और क्षमा-याचना की। सुल्तान ने कूटनीति की दृष्टि से उनके अपराध क्षमा कर दिये। उसने मलिक जियाउद्दीन वजीर को, जिसकी उपाधि निजामुलमुल्क थी, राजधानी मे छोडकर, स्वय मालवा की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर यात्रा करके उज्जैन के समीप कालयादा नदी के तट पर सुल्तान होशग से युद्ध किया। सुल्तान होशग ने गहरी खाई खोद कर अपनी सेना को सुव्यवस्थित किया और शाखबन्दी[2] को दृढ करके युद्ध के लिये कटिबद्ध हुआ।

कहा जाता है कि युद्ध के दिन सुल्तान अहमद शाह सशस्त्र होकर सवार हुआ। मलिक फरीद बिन एमादुलमुल्क का डेरा मार्ग मे था। वह वहा ठहर गया और मलिक फरीद को सन्देश भेजा कि "एमादुलमुल्क की उपाधि, जो तेरे पिता को प्राप्त थी, तुझे शुभ हो। तू आकर खिलअत पहिन ले।" मलिक फरीद उस समय अपने शरीर पर तेल मलवा रहा था अत. सूचना पहुचाई गई कि मलिक तेल मलवा रहा है, थोडा सा अवकाश चाहता है। सुल्तान चला गया और रणक्षेत्र की ओर अग्रसर हुआ। दोनो ओर की सेनाये अपने अपने स्थान पर पक्तियाँ जमाये हुये थी। मलिक तेल मलवाने के उपरान्त सवार होकर नहर पर पहुचा जहा का मार्ग सकरा था और बहुत बडी भीड़ एकत्र थी। उसे सुल्तान तक पहुचने का मार्ग न मिलता था। उसने कहा, "कोई है। जो मुझे मार्ग दर्शा दे ताकि (३६) मै शीघ्र सुल्तान की सेवा मे पहुच जाऊ?" एक व्यक्ति ने कहा, "मै मार्ग जानता हू किन्तु यह मार्ग सुल्तान होशग के शिविर के पीछे पहुचता है।" मलिक ने कहा, "इससे अच्छा और क्या है!" मलिक उसके मार्ग दर्शाने पर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ। सयोग से जिस समय दोनो सेनाये एक दूसरे के मुक़ाबले पर डटी हुई थी और प्रतीक्षा कर रही थी उसी समय ईश्वर की ओर से क्या होता है कि मलिक फरीद सुल्तान होशग की सेना के पीछे से प्रकट हो गया और निर्भीक होकर "अल्लाह अल्लाह" का नारा लगाते हुए सिंह तथा चीते की भाति उसने सुल्तान होशंग की सेना पर आक्रमण कर दिया। इसी बीच मे सुल्तान होशग की सेना का अग्रिम दल पराजित हो गया। सुल्तान होशग ने यद्यपि बडा पौरुष प्रदर्शित किया किन्तु अहमदशाही वीरों ने उन्हे मैदान से गेद के समान हटा दिया।

१ थालनेर।
२ काँटों तथा वृक्ष की डालियों इत्यादि द्वारा सेना की रक्षा हेतु एक प्रकार की मज़बूत रोक।

सुल्तान अहमद शाह विजय तथा सफलता पाकर लौट गया। सुल्तान होशग के समस्त हाथी, खजाना तथा शिविर की धन-सपत्ति सुल्तान अहमद शाह के अधिकार मे आ गई। सुल्तान होशग ने मन्दू के किले मे शरण ली और सुल्तान अहमद शाह की सेना ने किले के द्वार तक उसका पीछा किया। सुल्तान अहमद शाह ने मन्दू के समीप पहुच कर पडाव किया। वहा से उसने मालवा की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये सेनाये नियुक्त की और कुछ समय उपरान्त अपनी राजधानी की ओर लौट गया।

चम्पानीर पर आक्रमण

तत्पश्चात् उसने १ जीकाद ८२१ हि० (३० नवम्बर १४१८ ई०) को चम्पानीर के राजा त्र्यम्बक दास को दड देने के लिये वहा से प्रस्थान किया। उस वर्ष उसने किले को विजय करने की प्रतीक्षा न की कारण कि उसकी आकाक्षा मन्दू के किले को विजय करने की थी।

सोनखेड़ा की विजय

कुछ समय तक उस क्षेत्र मे आक्रमण तथा ध्वस-कार्य के उपरान्त उसने अत्यधिक सलामी[1] लेकर १९ सफर ८२२ हि० (१७ मार्च १४१९ ई०) को सोनखेडा बहादुरपुर की ओर प्रस्थान किया। हलवी कवि ने इस यात्रा का विरवण इस प्रकार दिया है:

"चम्पानीर से ससार का बादशाह,
सोनखेडा के किले की ओर रवाना हुआ।
वहा दुष्ट काफिरो का अधिकार था,
वहा वाले मुसलमानों के शत्रु थे।
(३७) खुसरो के समान जब वह सोनखेडा की ओर पहुचा, तो उसने विलायत के किनारे (पर) आक्रमण किया।
उस ओर के समस्त भूभाग को, एक बार छिन्न भिन्न कर दिया।
अश्वारोहियो तथा पदातियो ने निकट एव दूर से, कठोरता-पूर्वक धन-सम्पत्ति प्राप्त की।
प्रत्येक प्रकार की अत्यधिक सामग्री, हर व्यक्ति ने अपने लिये प्राप्त की।
लोगो ने सोने-चांदी से अपने भडार भर लिये, प्रत्येक कोने से अत्यधिक दास वे ले गये।
चन्द्रमा तथा वृहस्पति नक्षत्र के समान दास, हूरो तथा परियो के समान दासिया।"

सक्षेप मे सोनखेडा विलायत[2] की विजय तथा उसका विनाश २२ सफर ८२२ हि० (२० मार्च १४१९ ई०) को सम्पन्न हुआ।

निर्माण-कार्य

उसी मास मे उसने सोनखेडा नामक कोट को बनवाया और भव्य भवनो तथा मस्जिदो का निर्माण कराया। मुहम्मद साहब की शरा तथा इस्लाम के लिये, वहा काजी तथा खतीब नियुक्त करके इस्लाम की प्रथाओ को प्रचलित कराया। उसी वर्ष उसने सोनखेडा के अधीन मानकेनी[3] ग्राम

१ कर, खराज।
२ राज्य।
३ फ़रीदी के अनुसार 'मान गनी' (पृ० १७)।

मे एक कोट का निर्माण कराया और एक सेना को उस ओर की रक्षा हेतु नियुक्त करके मन्दू पर चढाई की।

मन्दू पर आक्रमण तथा सुल्तान होशग को क्षमा करना

जब वह धार कस्बे मे पहुँचा तो सुल्तान होशग के दूत मौलाना मूसा तथा अली जामदार[1], जो उसके राज्य के विश्वासपात्र थे, उपस्थित हुये और उन्होने धरती-चुम्बन करने के उपरान्त सुल्तान होशग की क्षमा सम्बन्धी प्रार्थना उसके सम्मुख प्रस्तुत की। इसी बीच मे धर्मनिष्ठ वज़ीरो तथा सदाचारी अमीरो ने इस प्रकार सिफारशे की कि सुल्तान के पास कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रहा। प्राचीन ईर्ष्या, शत्रुता एव प्रतिकार की भावनाये उसके हृदय से निकल गई और उसका हृदय उसकी ओर से साफ हो गया। तत्पश्चात् वह वापस हो गया।

चाम्पानीर को नष्ट-भ्रष्ट करना

(३८) वहा से उसने चाम्पानीर के किले के समीप पहुच कर आदेश दिया कि धर्म की रक्षा करने वाली सेना उस विलायत को मिट्टी मे मिला दे। वहा से रबी-उल-आखिर मास के अन्त मे (मई १४२० ई० मे) वह अहमदाबाद पहुचा।

विद्रोहियो के दमन हेतु प्रस्थान

तदुपरान्त ८२३ हि० (१४२०–२१ ई०) मे उसने अपने राज्य के विभिन्न भागो को सुव्यवस्थित एव सुशासित करने के लिये प्रस्थान किया। जिस जिस स्थान पर भी उसे कोई विरोधी प्राप्त हुआ, उसे उसने पददलित कर दिया। मन्दिरो का विनाश करा दिया और उनके स्थान पर भवनो एव मस्जिदो का निर्माण कराया। उसने किले बनवाये तथा थाने निश्चित किये।

सर्वप्रथम उसने चितोर (चित्तौड) के किले का, जो सीनोर परगने के अधीन है, निर्माण कराया[2]। तत्पश्चात् पर्वतीय प्रदेश के मध्य मे धामोद को आबाद कराया और वहा पर कोट का निर्माण कराया। तत्पश्चात् कारेथ नामक कस्बे की, जिसे सुल्तान अलाउद्दीन के समय मे अलप खा सजर ने ७०४ हि० (१३०४–५ ई०) मे बसवाया था, मरम्मत कराई और उसमे जो कुछ टूट-फूट हो गई थी, उसे ठीक कराया। उसका नाम सुल्तानाबाद रक्खा।

मालवा पर आक्रमण

वहा से लौट कर वह अहमदाबाद पहुचा और ८२४ हि० (१४२१–२२ ई०) मे उसने अहमदाबाद से चाम्पानीर पर चढाई की और वहा से सोनखेडा पहुच कर चोली मीर की ओर, जो मन्दू की विलायत के अधीनस्थ है, प्रस्थान किया। २ रबी-उल-अव्वल ८२५ हि० (२४ फरवरी १४२२ ई०) को उसने मेसर कस्बे मे पड़ाव किया और मेसर के किले को घेर लिया। उस समय सुल्तान होशग हाथियो के शिकार के लिये जाजनगर गया हुआ था। जब किले वाले सहायता से निराश हो गये तो वे सुल्तान

१ जामदार अथवा जामादार शाही वस्त्रों का प्रबन्ध करता था। जानदार अगरक्षक होते थे।

२ फ़रीदी के अनुसार 'उसने बारासीनो तथा दोहद परगने के अधीनस्थ चितोर किले को जो पर्वतो के मध्य मे है बसाया'।

की सेवा मे उपस्थित हो गये और किले की कुजी सुल्तान के सेवको को सौप दी। सुल्तान ने एक विश्वस्त सेना को उस स्थान की थानेदारी[1] के लिये नियुक्त करके १२ रबी-उल-अव्वल (६ मार्च १४२२ ई०) को मन्दू के किले के निकट पडाव किया और किले को घेर लिया और मालवा के राज्य के महालो पर अधिकार जमाने के लिये सेनाये नियुक्त की। वह किले को एक मास १८ दिन तक घेरे रहा और युद्ध करता रहा। वर्षा ऋतु के निकट आ जाने पर वहा से प्रस्थान करके उज्जैन नगर मे, जो मन्दू के राज्य के मध्य मे है, पहुचा और वहा पडाव किया। मालवा की अधिकाश विलायत अपने अधिकार मे कर ली। वर्षा ऋतु के पश्चात् सुल्तान ने पुन मन्दू के किले को घेर लिया।

इसी बीच मे सुल्तान होशग जाजनगर से, प्रसिद्ध हाथियों पर अधिकार जमा कर, शीघ्रातिशीघ्र तारापुर द्वार के मार्ग से किले मे प्रविष्ट हो गया और किले को उसने अत्यधिक दृढ बना लिया। सुल्तान (३९) अहमद ने यह देख कर कि इस समय किला विजय न होगा प्रस्थान करके सारगपुर की ओर इस आशय से प्रस्थान किया कि "यदि सुल्तान होशग किले से निकल कर युद्ध करे तो बडा ही उत्तम होगा अन्यथा यह विलायत हमारे अधिकार मे आ जायगी। देखना है कि वह किले की रक्षा कब तक करता है।" सक्षेप मे, सुल्तान ने जाकर सारगपुर के किले को घेर लिया। इसी बीच मे सुल्तान होशग के दूतो ने विश्वासघात को मित्रता का वस्त्र पहना कर सुल्तान की सेवा मे निवेदन किया कि, "सुल्तान होशग ने निष्ठा प्रदर्शित करते हुये कहलाया है कि मुझे सुल्तान की धर्मनिष्ठता एव ईश्वर-भक्ति पर आश्चर्य होता है कि वह मेरी एक भूल के कारण इस्लामी प्रदेश को विध्वस कर रहा है और मेरी क्षमा स्वीकार नही करता। इस समय मैं प्रतिज्ञा करता हू कि निष्ठा तथा आज्ञाकारिता के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य मेरे द्वारा सम्पन्न न होगा। मेरी पिछली भूलो को क्षमा करके अपने राज्य को लौट जाय और इससे अधिक प्रतिकार की चेष्टा न करे।" सुल्तान प्रतिकार के स्थान पर क्षमा की ओर प्रेरित हो गया।

इसी बीच मे वजीरो तथा नदीमो[2] ने इस प्रकार की भाषा मे सिफारिश की कि सुल्तान ने उसे स्वीकार कर लिया और वह सधि करके उस स्थान से अपनी राजधानी को वापस हो गया। सुल्तान होशग ने १२ मुहर्रम ८२६ हि० (२६ दिसम्बर १४२१ ई०) को, जिस समय सुल्तान अहमद सधि करने की ओर प्रेरित हो गया था और सुल्तान होशग की धूर्तता की ओर से असावधान था, रात्रि मे छापा मारा। शिविर मे चीत्कार होने लगा। कुछ लोग समझे कि कोई मस्त हाथी खुल गया होगा। अन्त मे ज्ञात हुआ कि शत्रु के रात्रि मे छापा मारने का शोर है। मलिक मुनीर ने सुल्तान को जगाया। सुल्तान खेमे के बाहर निकला। अस्पे नौबती[3] उपस्थित था। सुल्तान उस पर सवार हुआ। दूसरे घोडे पर मलिक खूबा रिकाबदार[4] सवार हुआ। दोनो सवार होकर शिविर के किनारे खडे हो गये।

सर्वप्रथम होशग ने विश्वासघात के विष को वुन्दारा की विलायत[5] के राजपूतो तथा गरासिया लोगों पर डाला। वे लोग अपने शिविर को बाई ओर लगाये थे। उन्होंने ५०० राजपूत अश्वारोहियो (४०) की हत्या कर दी। तत्पश्चात् उन्होने दूसरी ओर आक्रमण किया और सुल्तान अहमद की सेना

१ रक्षा।
२ मुसाहिबो।
३ वह घोड़ा जो बहुत से लोगो से सम्बन्धित हो और बारी बारी अनेक लोग उस पर सवार होते हों।
४ रिकाबदार :—सुल्तान के घोड़े के साथ साथ रहता था और घोड़े पर सुल्तान के बैठते समय उसे सहायता देता था।
५ राज्य।

के बहुत से लोगो की हत्या कर दी। सुल्तान ने मलिक खूबा से पूछा, "क्या तू फरीद सुल्तान[1] तथा मलिक मुकर्रब के समाचार ला सकता है ?" मलिक खूबा घोडा भगाता हुआ शिविर मे पहुचा। उसने देखा कि दोनो अमीर अपनी सेना सहित सशस्त्र अपने "डेरो" से शाही दरबार(खेमे)की ओर जा रहे है। मलिक खूबा ने पूछा, "कहा जा रहे हो ? तुम्हे सुल्तान बुलवा रहा है।" उन्होने कहा, "शत्रु ने ससार को छिन्न-भिन्न कर दिया है। हमे उनसे युद्ध कर लेने दो।" मलिक खूबा ने कहा," सुल्तान अकेला शिविर के किनारे खडा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। सर्वप्रथम सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हो। तदुपरान्त सुल्तान के आदेशानुसार कार्य करो।" वे दोनो शाही समुद्र के अजगर १००० सशस्त्र अश्वारोहियों सहित सुल्तान की सेवा मे पहुच गये। सुल्तान ने उन्हे बुरी बुरी गालिया देकर कहा कि "तुम्हारी सावधानी के भरोसे पर हमने असावधानी की और तुम हमसे भी अधिक असावधान हो गये।" उन लोगो ने कहा, "ईश्वर की इच्छा इसी प्रकार थी। आदेश हो ताकि इस विश्वासघाती को मजा चखा दे। ईश्वर ने चाहा तो वह अपने विश्वासघात का फल भोग लेगा।" सुल्तान ने कहा "धैर्य धारण करो ताकि सुबह हो जाय और शत्रु उस धन-सम्पत्ति सहित जो उसने लूटी है बन्दी बना लिया जाय।" सुल्तान ने फिर मलिक खूबा को आदेश दिया कि वह शत्रु के समाचार ले आये। मलिक खूबा घोडा दौडाता हुआ शाही शिविर की ओर पहुचा। उसने देखा कि "सुल्तान होशग सुल्तान अहमद के दरबार[2] के समक्ष थोडी सी सेना सहित खडा हुआ है और सुल्तान के प्रयोग के घोडे तथा शाही हाथी लाये जा रहे है और उसके सम्मुख प्रस्तुत किये जा रहे हैं। सेना वाले लूटने मे व्यस्त है।" मलिक खूबा ने लौट कर जो स्थिति थी, उसका उल्लेख कर दिया। सुबह भी होने लगी। सुल्तान (अहमद) ने कहा, "हा वीरो ! वीरता प्रदर्शित करने का समय है।" सुल्तान एक हजार अश्वारोहियो सहित, जिनमे से प्रत्येक शेर बबर था, अग्रसर हुआ। जब सुल्तान होशग की सेना दृष्टिगत हुई तो उन लोगो ने तलवार निकाल कर "अल्लाह अल्लाह" कहते हुये आक्रमण कर दिया। दोनो बादशाहो ने अपने सम्मान की रक्षा हेतु ऐसा युद्ध किया कि जिसका उल्लेख सम्भव नही। दोनो आहत हुये। जब सुबह हुई तो महावतो की दृष्टि अपने बादशाह अहमद शाह पर पडी। उन्होने हाथियों के मुख को मोड कर सुल्तान होशग की सेना पर आक्रमण कर दिया। सुल्तान होशग मुकाबले पर ठहर न सका और भाग खडा हुआ। अहमद शाह को विजय प्राप्त हो गई। होशग शाह की सेना लूटी हुई सम्पत्ति भी छोड गई और प्राण लेकर भाग खडी हुई। अहमद शाह की सेना ने प्रत्येक दिशा सें एकत्र होकर उसे बधाई दी और अपना मुख सुल्तान (४१) के चरणो पर मला। सुल्तान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। सुल्तान होशग अपनी मार्गभ्रष्ट सेना को लेकर गिरता-पडता सारगपुर के किले मे पहुचा और वहा शरण ली।

सुल्तान की अहमदाबाद को वापसी

२४ रबी-उल-आखिर (६ अप्रैल १४२३ ई०) को सुल्तान अहमद शाह ने गुजरात की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान होशग ने अपनी स्थिति पुन ठीक करके युद्ध करना निश्चय किया। यह समाचार पाकर सुल्तान ठहर गया। अचानक शत्रु पहुच गया और युद्ध प्रारम्भ हो गया किन्तु इसमे भी वह पराजित हुआ। कहा जाता है कि इस युद्ध मे सुल्तान होशग के ४००० सैनिक मारे गये और जो भयकर हाथी वह जाजनगर से लाया था, सभी सुल्तान अहमद को प्राप्त हो गये। सुल्तान ने विजय तथा सफ-

१ फ़रीदी के अनुसार 'फ़रीद सुल्तानी' (पृ० १८)।
२ खेमें।

लता प्राप्त करके अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया। ४ जमादि-उल-आखिर ८२६ हि० (१५ मई १४२३ ई०) को वह अहमदाबाद नगर मे पहुच गया और भोग-विलास मे लीन हो गया। शहर वालो ने बधाई दी और उसकी प्रशसा करते हुये प्रसन्नता प्रदर्शित की।

समकालीन सूफी

कहा जाता है कि सुल्तान अहमद शाह ने इस घटना के दो मास पूर्व शेख़ अहमद खत्तू को लिखा था कि "यहा की स्थिति को देखते हुये आपका क्या विचार है कि कब तक यहा ठहरना होगा ?" उन्होने उत्तर मे लिखा था कि "यदि ईश्वर ने चाहा तो आप ८२६ हि० (१४२२–२३ ई०) मे अपनी राजधानी मे विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट जायगे।" ऐसा ही हुआ। क्या ही शुभ था वह काल जो इस प्रकार के पूज्य व्यक्तियो द्वारा सुशोभित था, उदाहरणार्थ कुतुबुल अकताब बुरहानुल हक वश्शरा वद्दीन सैयिद बुरहानुद्दीन, शाह आलम उनके पुत्र तथा उनके पूज्य भाई जिनमे से प्रत्येक अपने समय का कुतुब[1] था।

ईदर पर आक्रमण

सक्षेप मे, तदुपरान्त सुल्तान अहमद शाह ने तीन वर्ष तक किसी ओर चढाई न की। सभी लोग सुख-सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करते रहे। तत्पश्चात् उसने ८२९ हि० (१४२५–२६ ई०) मे ईदर पर चढाई की। ईदर का राजा भाग कर पर्वतो मे घुस गया। उसकी विलायत विध्वस कर दी गई।

अहमदनगर का बसाया जाना

सुल्तान ने ८३० हि० (१४२६–२७ ई०) मे हाथबनी[2] नदी के तट पर ईदर से १८ कोस दूर गुजरात की सीमा पर अहमदनगर नामक शहर बसाया। नगर के चारो ओर पत्थर की दृढ चहारदीवारी बनवाई और वह स्वय वहा ठहरा।

पूँजा की मृत्यु

८३१ हि० (१४२७–२८ ई०) मे सुल्तान की एक सेना घास लाने के लिये गई थी। ईदर के (४२) राजा पूजा ने उस स्थान से, जहा वह घात लगाये था, निकल कर उन लोगो पर छापा मारा। वे लोग पराजित हो गये। उनके साथ जो हाथी था, उसे पूजा ने अपने अधिकार मे कर लिया और वहा से चल दिया। अन्त मे सेना ने, जो छिन्न-भिन्न हो गई थी, पुन एकत्र होकर पूजा का पीछा किया। सयोग से वह एक ऐसे दर्रे मे पहुच गया जिसके एक ओर गगनचुम्बी पर्वत और दूसरी ओर बडा गहरा खड्ड था। मध्य मे केवल इतना मार्ग था कि एक अश्वारोही बडी कठिनाई से उसे पार कर सकता था। जब पूजा उस सँकरे मार्ग मे प्रविष्ट हुआ तो शाही सेना पीछे से पहुच गई। महावतो ने हाथियो के मुख फेर कर पूजा पर आक्रमण कर दिया। पूजा का घोडा भडक गया और खड्ड में गिर पडा। पूजा तत्काल नरक को पहुच गया। शाही सेना हाथी को लेकर लौट आई। पूजा का किसी को पता न चला। दूसरे दिन एक लकडहारा उसका सिर काट कर दरबार मे लाया। सुल्तान को बडा आश्चर्य हुआ और

१ जो सूफ़ी सन्त अपनी पवित्रता, त्याग एवं धर्मनिष्ठता की चरम सीमा पर पहुँच जाते थे, वे कुतुब कहलाते थे।

२ फ़रीदी के अनुसार 'हाथ मती'।

उसे विश्वास न होता था। उसने पूछा कि, "कोई पूजा को पहचानता है ?" सुल्तान के एक सैनिक ने जो कुछ समय तक उसका, पूजा का सेवक रह चुका था, कहा कि, "मैं पहचानता हू।" जब उसने पूजा का सिर देखा तो कहा, "हा राव जियु का सिर यही है।" उपस्थितगण ने उसे फटकारते हुये कहा, "उस काफिर का नाम इस सम्मान से लेता है ?" सुल्तान ने कहा, "कुछ मत कहो। उसे नमक के हक का ध्यान है।"

सेना का प्रबन्ध

सक्षेप मे, इसके उपरान्त वह दो वर्ष तक स्थायी रूप से अपनी राजधानी मे रहा। उसने अपने राज्य को सुशासित एव सुव्यवस्थित करने के अतिरिक्त किसी अन्य राज्य की चिन्ता न की। ईमानदार वजीरों और हितैषी अमीरो के परामर्श से सेना के लिये यह अधिनियम बनाया गया कि "सेना की जीविका साधन के लिये आधा वेतन जागीर के रूप मे और आधा नकद खजाने से दिया जाय। क्योकि यदि सभी नकद निश्चित कर दिया जायगा तो नकद वेतन से अधिक लाभ नही होता और सैनिक के पास कोई सामान नही रहता और वह राज्य की रक्षा मे असावधानी से कार्य करने लगता है। यदि वेतन मे आधा जागीर के रूप मे प्रदान कर दिया जाय तो जागीर से ईंधन, दूध, दही प्राप्त होता रहता है। कृषि तथा उसकी उन्नति से यदि उन्हे लाभ होने लगता है तो वे हृदय से अपनी विलायत की रक्षा का प्रयत्न करने लगते हैं और आधा नकद उन्हे प्रतिमास बिना प्रतीक्षा के प्राप्त होता रहता है। उसे लेने के लिये (४३) वहा, जहा नियुक्त होते हैं, उपस्थित रहते हैं। यदि कही आक्रमण की आवश्यकता होती है तो उन्हे ऋण नही लेना पडता चाहे उन्हे दूर की यात्रा करनी हो और चाहे निकट की। ऐसा भी सम्भव है कि सैनिको के पास दूर की यात्रा हेतु मार्ग मे व्यय करने के लिये धन न हो तो वह आधा वेतन शाही खजाने से लेता रहे ताकि सेना में किसी वस्तु की कमी न रहे और उसे ऋण न लेना पडे। वह अपने घर वालो की ओर से भी निश्चित रहता है कारण कि जागीर से घर का खर्च चलता रहता है।"

"जाबतये अरबाबुत्तहावील[1]—यह अधिनियम इस प्रकार था कि तहवीलदार[2] को बादशाह का कोई दास होना चाहिये और मुशरिफ[3] को असील[4] कारण कि यदि दोनो असील होगे तो परस्पर मित्र अथवा सम्बन्धी बन जायगे और धन का अपहरण करने लगेंगे; यही स्थिति यदि दोनो दास होगे तो भी उत्पन्न हो जायगी।" परगने के आमिलो[5] की नियुक्ति भी इसी सिद्धान्त पर होती थी।

यह अधिनियम सुल्तान मुज़फ्फर बिन सुल्तान महमूद बेगरह के राज्य-काल के अन्त तक इसी प्रकार चलता रहा।

सुल्तान बहादुर के राज्यकाल मे जब आफ़ाकी[6] सेना बडी संख्या मे एकत्र हो गई तो राज्य की बचत पर दृष्टि रखने वाले वजीरो ने विलायत के हासिल की सेहत[7] की। कोई महाल यके व देह[8], कोई

१ कोषाध्यक्ष के नियम।
२ कोषाध्यक्ष।
३ मुशरिफ :—प्रान्तों द्वारा प्राप्त हिसाब किताब मुशरिफ़ लिखता था। वह Accountant General के विभाग का अधिकारी होता था। ग्रामों के मुशरिफ फ़सलो का निरीक्षण करते थे।
४ जो दास न हो, सम्मानित वंश का हो।
५ भूमि-कर वसूल करने वाले।
६ अन्य देशों की।
७ राज्य के कर की आय को ठीक किया।
८ एक के स्थान पर १०।

ब नौ[1] कोई ब हश्त[2] और कोई ब हफ्त[3] पहुच गया। कोई भी महाल देह बिस्त[4] से कम न हुआ। तत्पश्चात् इन अधिनियमो मे परिवर्तन हो गया और राज्य मे उपद्रव तथा अशान्ति फैल गई। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायगा।

सुल्तान फीरोज बहमनी की सहायतार्थ सेना भेजना

८३५ हि० (१४३१–३२ ई०) मे सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये कि दक्षिण के राज्य के सुल्तान फीरोज बहमनी ने बीज। नगर के काफिरो पर चढाई की और पराजित हुआ। क्योकि उसमे तथा सुल्तान अहमद मे निष्ठा भाव तथा विशेष सम्बन्ध थे, अत एक शक्तिशाली सेना उसकी सहायतार्थ भेजी गई। जब सेना भान्देर[5] के किले के समीप पहुची तो सयोगवश सुल्तान फीरोज की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र सुल्तान अहमद बहमनी सिहासनारूढ हुआ। उसने सुल्तान की सेवा मे बहुमूल्य उपहार भेज कर सुल्तान की सेना को लौटा दिया।

विभिन्न अभियान

तदुपरान्त ८३६ हि० (१४३२–३३ ई०) से ८४५ हि० (१४४१–४२ ई०) तक सुल्तान प्रत्येक वर्ष कभी ईदर की विलायत पर आक्रमण करने और कभी आसीर के हाकिम नसीर खा बिन (४४) राजा के विरुद्ध और कभी सुल्तान अहमद बहमनी को दड देने के लिये और कभी मोरासा[6] की विलायत को नष्ट करने के लिये सेना भेजा करता था। कभी कभी स्वय आक्रमण करता था और सर्वदा उसकी सेनाओ को विजय प्राप्त होती रहती थी। अपने राज्यकाल मे कभी भी उसकी पराजय न हुई और गुजरात की सेना सर्वदा मन्दू, दखिन[7], आसीर तथा मेवाड और उसके आसपास के काफिरो पर विजय प्राप्त करती रही।

मृत्यु

८४५ हि० (१४४१–४२ ई०) मे अहमदाबाद नगर मे उसकी मृत्यु हो गई और उस कब्रिस्तान में जो मानक चौक अहमदाबाद के मध्य में स्थित है वह दफन हुआ।

सुल्तान की आयु

सुल्तान का जन्म, जैसा कि ऊपर उल्लेख हो चुका है, १९ जिलहिज्जा ७९३ हि० (१७ नवम्बर १३९१ ई०) मे हुआ था। वह २० वर्ष की अवस्था मे सिहासनारूढ हुआ। उसने ३२ वर्ष, ६ मास तथा २२ दिन तक राज्य किया। उसकी अवस्था ५२ वर्ष, ६ मास तथा कुछ दिन थी।

१ एक के स्थान पर ९।
२ एक के स्थान पर ८।
३ एक के स्थान पर ७।
४ एक के स्थान पर बीस, दुगुना।
५ फ़रीदी के अनुसार 'नान्देर' (पृ० २१)।
६ फ़रीदी के अनुसार 'मेवाड़' (पृ० २१)।
७ इसे 'दकिन' तथा 'दखिन' (दक्षिण) दोनों लिखा गया है।

चरित्र

कहा जाता है कि प्रौढावस्था से जीवन के अन्त तक उसने प्रात काल की नमाज कभी भी न त्यागी। वह कुतुबुल मशायख शेख रुक्नुद्दीन काने शकर का, जो शेख फरीद गजशकर[1] के पौत्र थे मुरीद था। शेख रुक्नुद्दीन का मजार पटन गुजरात नगर मे है। सुल्तान को शेख अहमद के प्रति अत्यधिक निष्ठा थी। एक रात्रि मे उसने इस्तिजे[2] का ढेला शेख को दे दिया। रात्रि के अधेरी होने के कारण शेख ने पूछा कि, "सलाहुद्दीन है ?" वह शेख का सेवक था। सुल्तान ने कहा, "नही, अहमद।" शेख ने कहा, "सदाचारी बादशाह!" सुल्तान ने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद को शेख अहमद का मुरीद बनवा दिया था और स्वय शेख रुक्नुद्दीन का, जिनका रौजा पटन मे है, मुरीद रहा। न्याय, पवित्रता तथा दानशीलता मे सुल्तान अद्वितीय था। सर्वदा धर्मयुद्ध का प्रयत्न किया करता था।

सुल्तान का न्याय

कहा जाता है कि सुल्तान के जामाता ने अभिमानवश युवावस्था की मस्ती मे एक निर्दोष की हत्या कर दी। सुल्तान ने उसे बन्दी बना कर काजी के पास भेज दिया। काजी ने वध किये गये व्यक्ति के (४५) वारिसो को २०० ऊट पर सतुष्ट करा लिया। जब सुल्तान के समक्ष यह बात कही गई तो उसने कहा कि, "यद्यपि वध किये गये के वारिस सतुष्ट है किन्तु मुझे यह बात स्वीकार नही कारण कि धनी लोग अपने धन के बल पर निर्दोषो की हत्या करने लगेगे; अत इस अवसर पर उसकी हत्या करानी उचित है।" जल्लाद ने बाजार मे उसकी हत्या कर दी और उसे सूली पर लटका दिया। एक दिन तक वह लटका रहा। दूसरे दिन उसने आदेश दिया कि उसे उतार कर दफन कर दिया जाय। इस दड को देख कर उसके समस्त राज्यकाल मे अमीरो तथा सैनिको में से किसी ने कभी भी किसी निर्दोष की हत्या न की।

कहा जाता है कि सुल्तान एक दिन अपने राजभवन के झरोखे मे बैठा था और साभर नदी का दृश्य, जो महल के नीचे से बहती थी, देख रहा था। उस समय नदी मे बाढ आई हुई थी। सुल्तान ने देखा कि कोई काली वस्तु जल मे लुढकती चली आ रही है। उसने उसके लाने का आदेश दिया। वह एक मटका था जिसमे एक लाश निकली जिसे उसमे डाल दिया गया था। उसने आदेश दिया कि नगर के समस्त कुम्हारो को बुलवाया जाय। उसने उन लोगो से पूछा कि, "तुम लोग पहचानते हो कि यह मटका (४६) किसका बनाया हुआ है?" एक ने कहा, "यह मेरा बनाया हुआ है और इसे मैंने अमुक ग्राम मे अमुक अहमदाबादी युवक के हाथ बेचा था।" सुल्तान ने उसके उपस्थित किये जाने का आदेश दिया। पूछताछ के उपरान्त पता चला कि उसने एक बक्काल की हत्या करके उसे मटके मे डाल कर बहा दिया था। सुल्तान के आदेशानुसार उसकी हत्या करा दी गई। सुल्तान अहमद शाह के राज्यकाल मे इन्ही दो निर्दोषियो की हत्या हुई। तत्पश्चात् सुल्तान के आतंक के कारण किसी ने भी किसी निर्दोष की हत्या न की।

१ शेख फ़रीद गंजशकर, ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के मुरीद थे। उनका जन्म ११७३ ई० और निधन १२६५ ई० मे हुआ। अजोधन अथवा पाक पटन मे इनकी मजार है।

२ मुसलमानो के लिये उनके धर्मशास्त्र के अनुसार लघुशका के पश्चात् जननेन्द्रिय को मिट्टी के ढेले से सुखाना परमावश्यक बताया गया है

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि सुल्तान अहमद कवि था। उसने इस छन्द की रचना की जिसमे कुतुबुल अकताब सैयिद बुरहानुद्दीन बिन सैयिद मुहम्मद बिन सैयिद जलाल जो, मखदूम जहानिया के नाम से प्रसिद्ध ह और जो सुल्तान के समकालीन थे, की प्रशसा की है।

छन्द

"हमारे युग के कुतुब बुरहान हमारे लिये पर्याप्त है,
उनका प्रमाण उनके नाम के समान स्पष्ट है।"

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन अहमद शाह का अपने पिता के राजसिंहासन पर आरूढ़ होना और ईदर के राजा पर चढ़ाई

सुल्तान अहमद शाह की मृत्यु के उपरान्त तीसरे दिन ८४५ हि० (१४४१–४२ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद शाह बिन अहमद शाह सिहासनारूढ हुआ और भोग-विलास मे तल्लीन हो गया। उसे राज्य-व्यवस्था की चिन्ता न थी अपितु उसके साहस की कमन्द[1] बादशाही की उच्च श्रेणी के कार्यो तक न पहुचती थी। वह बहुत बडा दानी था। लोग उसे 'सुल्तान ज़रबख्श[2]' कहते थे।

पुत्र का जन्म

२० रमजान ८४९ हि० (१९ दिसम्बर १४४५ ई०) को ईश्वर ने उसे एक पुत्र प्रदान किया और शुभ मुहूर्त मे उसका नाम फतह खा रक्खा गया।

ईदर के राजा से सधि

उसी वर्ष उसने ईदर के राजा पर चढाई की। वह भाग कर पर्वत मे घुस गया और वहा से उसने अपने दूत सुल्तान की सेवा मे भेजे और अपने पिछले अपराधो की क्षमा-याचना करके अपनी (४७) पुत्री को भी सुल्तान की सेवा मे भेज दिया। सुल्तान मुहम्मद उसकी सुन्दरता पर आसक्त हो गया और उसकी सिफारिश से ईदर का राज्य उसके पिता को प्रदान कर दिया।

वहा से उसने बाकर (बागर) की विलायत पर चढाई की और उसे नष्ट-भ्रष्ट करके अपनी राजधानी को लौट गया।

शेख खत्तू की मृत्यु

उसी वर्ष शेख खत्तू की, जो गज बख्श के नाम से प्रसिद्ध थे, मृत्यु हो गई। वे बाब इसहाक के, जिनका मज़ार खत्तू कस्बे मे है, मुरीद थे। खत्तू नागौर के अधीनस्थ कस्बो मे से एक कस्बा है।

चाम्पानीर पर आक्रमण

सक्षेप मे इसके उपरान्त सुल्तान ने ८५५ हि० (१४५१ ई०) मे चाम्पानीर के किले की विजय हेतु प्रस्थान किया। त्रम्बक दास के पुत्र राय गगदास ने उससे युद्ध किया और पराजित होकर किले के

१ फदेदार रस्सी जिसके सहारे ऊँचे भवनों पर चढ जाते हैं।
२ सोना दान करने वाला। अत्यधिक दान-पुण्य करने वाला।

ऊपर चढ गया। सुल्तान किले को घेर कर नित्यप्रति युद्ध किया करता था। जब किले वाले विवश हो गये, तो राजा ने अपना दूत मन्डू के सुल्तान की सेवा मे भेजकर प्रार्थना कराई कि, "यदि सुल्तान सेवक की सहायतार्थ इस समय कष्ट करे तो वह प्रत्येक मजिल पर सेना के व्यय हेतु एक लाख सोने के तन्के प्रस्तुत करेगा।" सुल्तान महमूद झूठे लोभ मे फँसकर इस्लाम पर ध्यान दिये बिना अपने स्थान से रवाना हुआ। जब वह गुजरात के अधीन दाहूद कस्बे मे जो मालवा की सीमा पर है पहुचा तो सुल्तान मुहम्मद शाह किले का अवरोध छोड कर सावली परगने के अधीन कोधरा नामक स्थान की ओर पहुचा। वहा वह रुग्ण हो गया और अहमदाबाद लौट गया।

सुल्तान की मृत्यु

२० मुहर्रम ८५५ हि० (२२ फरवरी १४५१ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई और मानक चौक के मकबरे मे अपने पिता के बराबर दफन हुआ। उसने ९ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

'तारीखे अहमदशाही' मे जो कुछ लिखा है उसका ऊपर उल्लेख हुआ किन्तु जो प्रसिद्ध है और जो विश्वस्त सूत्रों से निरन्तर ज्ञात हुआ है इस प्रकार है कि सुल्तान महमूद खलजी मालवा का बादशाह राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध मे, जो बादशाहों का कर्त्तव्य है, लेशमात्र भी कोई कसर न उठा रखता था चाहे वह कार्य सेना के प्रोत्साहन से और चाहे प्रजा पर कृपा प्रदर्शित करने से सम्बन्धित हो। इन गुणो के अतिरिक्त वह दरवेशो का भक्त तथा मुरीद था। जहा कही भी उसे किसी बडे दरवेश तथा सिद्ध पुरुष का पता चल जाता तो वह उसको, चाहे वह दूर हो अथवा निकट अपनी निष्ठा तथा भक्ति प्रदर्शित करने के लिये उपहार भेजा करता था और उसको अपना मित्र बना लेता था।

शेख़ कमाल से संघर्ष

(४८) उसके राज्यकाल मे गुजरात मे एक बहुत बडे सूफी शेख़ कमाल थे जिनका मकबरा खुदावन्द खा की, जो मलिक अलीम के नाम से प्रसिद्ध हैं, मस्जिद के पीछे अलीमपुर में, जो शहर अहमदाबाद के समीप स्थित है, है। सम्भवत सुल्तान महमूद की शेख से पूर्व ही से मित्रता थी और उनसे परिचय प्राप्त था। इसी कारण वह उनके पास उपहार भेजा करता था। उसने शेख से निवेदन किया कि "यदि आपकी कृपा के आशीर्वाद से ईश्वर की ओर से मुझे गुजरात की शहनगी[1] स्वतत्र रूप से प्राप्त हो जाय तो उस निष्ठा के कारण, जो मेरे हृदय मे आपके सेवकों के प्रति[2] है, मै आपकी ख़ानकाह के फकीरों की सेवा करूंगा। इस समय मै शेख अहमद खत्तू के मकबरे की वृत्ति के बराबर जो गुजरात के तीन करोड तन्के है, शेख़ के सेवकों की वृत्ति करता हू।" उसने उस समय गुजरात के प्रचलित ५०० सोने के दीनार फुतूह[3] के रूप मे भेजे। यह समाचार सुल्तान के पास किसी ने पहुंचा दिये और कहा कि, "शेख़ कमाल दरवेशी तथा एकान्तवासी होने का दावा करने के बावजूद धन का इतना बडा लोभी है कि उसने कुरान शरीफ को सुल्तान महमूद ख़लजी द्वारा प्रेषित किये हुए सोने के तन्कों का भंडार बना रक्खा है।[4] सुल्तान को पूछ-

१ शासन।
२ आपके प्रति।
३ वह उपहार जो धार्मिक व्यक्तियों एवं सूफ़ियों इत्यादि को बिना मांगे ही प्रदान किया जाता है।
४ 'सोने के तन्के कुरान शरीफ़ के गिलाफ़ मे रखता है'।

सैयिद रातोरात छिपकर मीरकू द्वार से शाहज़ादे को अहमदाबाद ले गया और उसने सुल्तान मुहम्मद को विष दे दिया। (२०) मुहर्रम ८५५ हि० (२२ फरवरी १४५१ ई०) मे सुल्तान की मृत्यु हो गई।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन बिन मुहम्मद शाह का, जिसका नाम जलाल ख़ां था, सिंहासनारोहण और अभागे महमूद ख़लजी से युद्ध

११ मुहर्रम ८५५ हि०[1] (१३ फरवरी १४५१ ई०) को सुल्तान मुहम्मद का ज्येष्ठ पुत्र अर्थात् सुल्तान कुतुबुद्दीन सिंहासनारूढ हुआ और उसने अपने पूर्वजो की प्रथानुसार सैनिको तथा प्रजा को खिलअत और इनाम प्रदान किये।

सुल्तान महमूद खलजी का आक्रमण

'तारीखे बहादुरशाही' के लेखक का कथन है कि इस बीच मे मालवा का बादशाह सुल्तान महमूद खलजी गुजरात विजय करने के उद्देश्य से अपनी राजधानी से गुजरात की ओर सेना लेकर प्रस्थान (५१) कर चुका था। जब वह सुल्तानपुर के उपान्त मे पहुचा तो मलिक अलाउद्दीन बिन सोहराब ने, जो सुल्तान कुतुबुद्दीन की ओर से उस स्थान का हाकिम था, किले के द्वार बन्द कर लिये और तोप तथा बन्दूक से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। सात दिन तक किले का अवरोध चलता रहा। तत्पश्चात् मुबारक खा बिन अहमद शाह के, जो सुल्तान कुतुबुद्दीन का चाचा था और जो सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल मे (गुजरात) से चला आया था, कहने पर उसने सुल्तान महमूद से भेट की। सुल्तान ने उसे कुरान शरीफ की शपथ दी। उसने धूर्तता की दृष्टि से शपथ लेते हुये कहा, "यदि अलाउद्दीन अपने स्वामी से विरोध करे तो कुरान उसके प्राण का शत्रु बन जाय।" उसने (महमूद खलजी ने) विश्वास करके उसकी स्त्री तथा बालक को मान्दू[2] भेज दिया और उसे सम्मानित किया। उसने दो प्रतिष्ठित सरदारों सहित उसे अपनी सेना के अग्रभाग मे नियुक्त किया। वहा से वह निरन्तर यात्रा करता हुआ रवाना हुआ। जब वह सरकार भरौच के अधीन सारसा पालरी नामक स्थान पर पहुचा तो उसने (सुल्तान महमूद खलजी ने) मलिक मर्जान को जो भरौच के किले का हवालादार[3] था, सदेश भेजा कि, "जिस प्रकार अलाउद्दीन बिन सोहराब सेवा मे उपस्थित होने के कारण नाना प्रकार के आदर तथा सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ है उसी प्रकार यदि तू भी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ले तथा सहयोग प्रदान करे तो तेरे उद्देश्यो की भी पूर्ति हो जायगी। तुझे चाहिये कि प्रतिष्ठित व्यापारियो को, जिनका भरौच मे निवास-स्थान है, अपने साथ ले आये ताकि वे सेवा मे उपस्थित हो जाय।" मलिक मर्जान[4] ने कठोर उत्तर देकर किले को दृढ बनाना प्रारम्भ कर दिया और युद्ध के लिये तैयार हो गया।

सुल्तान महमूद ने अलाउद्दीन से पूछा, "भरौच का किला कितने दिन मे विजय हो जायगा?" उसने उत्तर दिया कि, "कम से कम छ सात मास तक किले का अवरोध करना होगा। प्रत्येक दिशा मे

१ इसी पृ० पर सुल्तान की मृत्यु २० मुहर्रम ८५५ हि० (२२ फ़रवरी १५५१ ई०) लिखी है। इस प्रकार सिंहासनारोहण की तिथि २१ मुहर्रम ८५५ हि० (२३ फरवरी १४५१ ई०) होनी चाहिये।
२ इसे मन्दू, एव मादू दोनो ही लिखा गया है।
३ रक्षक।
४ फ़रीदी के अनुसार 'सीदी मर्जान' (पृ० २७)।

सुरगे लगानी होगी और साबात[1] तैयार कराने होगे। उस पर भी (सफलता मे) सन्देह है।" सुल्तान ने कहा, "हम चाहते हैं कि छ मास मे समस्त गुजरात को अधिकार मे कर ले और वहा से प्रस्थान करके नर्बदा नदी को पार करके बरोदा की ओर रवाना हो।"

उस मज़िल से जहा से नरयाद को मार्ग जाता है सुल्तान के एक मस्त हाथी ने खुल कर बदमस्ती प्रारम्भ कर दी और सेना से निकल कर जगल की ओर रवाना हो गया। सयोग से वह रातोरात नरयाद पहुच गया। उस स्थान के जुन्नारदारो ने तलवार तथा बाण से हाथी की हत्या कर दी और बाहर निकल गये। जब प्रात.काल सुल्तान नरयाद पहुचा तो उसने देखा कि हाथी टुकडे-टुकडे कर दिया गया है। जब उसने घटना की पूछताछ कराई तो पता चला कि नरयाद के जुन्नारदार यह कार्य करके बाहर निकल गये हैं। सुल्तान ने कहा, "गुजरात के जल मे वीरता है कि ऐसे कार्य जुन्नारदारो[2] द्वारा सम्पन्न होते हैं।"

कुतुबुल आलम सैयिद बुरहानुद्दीन की सहायता की कहानी

(५२) सक्षेप मे, वह वहा से बरोदा पहुचा और उसने उस नगर को नष्ट कर डाला। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि "सुल्तान कुतुबुद्दीन ने अहमदाबाद नगर के पीरो[3] के आशीर्वाद से विजय हेतु कटिबद्ध होकर बाकानेर खानपुर[4] के स्थान पर जो महेन्द्री[5] नदी के घाट पर स्थित है, पडाव किया", किन्तु 'तारीखे बहादुरशाही' के लेखक ने पीरो के आशीर्वाद का उल्लेख नही किया है। इस तुच्छ को गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से जो कुछ ज्ञात हुआ है वह इस प्रकार है कि जब सुल्तान महमूद के आगमन के विषय मे गुजरात वालो को ज्ञात हुआ तो वे बड़े आतकित हुये। इसका कारण यह था कि गुजरात की सेना की सख्या बहुत थोड़ी थी और सुल्तान महमूद की सेना की सख्या बहुत अधिक थी।

गुजरात के पवित्र लोगो एव सदाचारियो ने यह निश्चय किया कि "क्योकि इस वश वालो का प्रताप अपने काल के कुतुब मखदूम जहानिया के कारण है अत यह परमावश्यक है कि इस महान् कार्य मे कुतुबुल आलम सैयिद बुरहानुद्दीन से सहायता की याचना की जाय। वे मखदूम जहानिया के उत्तराधिकारी हैं अपितु वश की दृष्टि से मखदूम जहानिया वही हैं।" दूसरे दिन सुल्तान कुतुबुद्दीन को कुतुबुल अकताब (सैयिद बुरहानुद्दीन) की सेवा मे प्रस्तुत करके उसे उनका मुरीद कर दिया गया। उनसे कहा गया कि, "आपको भली भाति ज्ञात है कि महमूद खलजी ८०,००० अश्वारोहियो तथा अत्यधिक हाथियो सहित गुजरात के आक्रमण का सकल्प करके आ रहा है। गुजरात का राज्य आपके पूर्वजो की देन है। आशा है कि आपकी कृपा से महमूद के उत्पात का निराकरण हो जायगा और यह युद्ध अधिक दिनो तक न चल सकेगा।" सैयिद बुरहानुद्दीन ने कहा, "तुम लोग सतुष्ट रहो। ईश्वर दुखियो तथा पीडितो का सहायक है किन्तु मैं दरवेशो के रुष्ट होने से, जिसका कारण तुम्हारा पिता है, चिन्तित हू। यथासम्भव इसका भी उपचार किया जायगा।"

१ साबात :—एक प्रकार का ढँका हुआ मार्ग जिससे आक्रमणकारी बिना अधिक हानि के सुगमतापूर्वक किले पर आक्रमण कर सकते थे।

२ ब्राह्मणों।

३ सन्तों।

४ मूल पुस्तक मे 'जानपुर बाकानेर' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'बाकानेर खानपुर' (पृ० २७)।

५ फ़रीदी के अनुसार 'माही' (पृ० २७)।

तत्पश्चात् सैयिद ने कहा कि, "कोई शेख़ कमाल के पास जाकर उनसे क्षमा-याचना कर सकता है?" उपस्थितगण ने निवेदन किया कि, "इस कार्य के लिये शाह मझन से अधिक उपयुक्त कोई अन्य (५३) न होगा।" सैयिद ने कहा, "वास्तव मे इस कार्य हेतु मझन से अधिक उपयुक्त कोई अन्य नही।" तत्पश्चात् सैयिद ने शेख मझन की ओर मुख करके कहा, "हमारी शुभकामना शेख की सेवा मे पहुचा दो और क्षमा-याचना करो तथा निवेदन करो कि पिता के अपराध का दड पुत्र को न मिलना चाहिये। जो कुछ होना था वह हो गया अब आप क्षमा करे।

'क्षमा मे जो आनन्द है वह प्रतिकार मे नही।'

"आप सुल्तान महमूद को लिख दे कि वह सधि करके अपने राज्य को लौट जाय ताकि प्रजा को कष्ट से मुक्ति प्राप्त हो जाय।"

शाह आलम ने शेख की सेवा मे उपस्थित होकर जो कुछ कुतुबुल अकताब (सैयिद बुरहानुद्दीन) से सुना था, शेख़ से कह दिया। शेख़ ने स्वीकार न किया और उचित उत्तर न दिया। शाह आलम ने लौट कर शेख़ से जो कुछ सुना था, वह कुतुबुल अकताब को सुना दिया। हज़रत कुतुब (सैयिद बुरहानुद्दीन) ने कहा, "बाबा पुन जाओ, यह कार्य तुम्ही सम्पन्न कर सकोगे। तुम शेख़ को मेरी शुभकामना पहुचा कर कहो कि सर्वसाधारण के आराम पर दृष्टि रखनी चाहिये और क्षमा के अनुसार कार्य करना चाहिये। इससे अत्यधिक मनुष्यो का उपकार होगा। जो लोग क्रोध को अपने वश में करते हैं और लोगो का उपकार करते हैं, ईश्वर ऐसे सदाचारियो से प्रेम करने लगता है।"

छन्द

"पूज्य फिरदौसी ने क्या ख़ूब कहा है, उसकी पवित्र कब्र पर ईश्वर कृपा करे।
एक चियुटी को भी, जो दाना खीचती है, कष्ट मत दो,
कारण कि उसके प्राण होते हैं और प्रिय प्राण सभी को अच्छे लगते हैं।"

शाह ने शेख़ की सेवा मे पुन उपस्थित होकर शुभकामना करते हुये सदेश प्रस्तुत किया और पुन क्षमा-याचना की। शेख ने पूर्व की भाति इस बार भी कठोरता एव क्रोध से परिपूर्ण उत्तर दिया। शाह (आलम) दुखी होकर कुतुबुल अकताब की सेवा मे पहुचे और जो कुछ हुआ था, उसकी चर्चा करते हुये निवेदन किया, "शेख अभिमान त्याग कर मनुष्यता की ओर नही आता, इस कारण मुझे उसके पास जाते हुये अच्छा नही लगता।" कुतुबुल अकताब ने कहा, "हमारी दृष्टि सर्वसाधारण की सुख-शान्ति पर है। (५४) इस कार्य मे अपने अपमान की ओर ध्यान न देना चाहिये। इस बार तुम पुन जाओ और निवेदन करो कि, 'आपका दास बुरहानुद्दीन आपके चरणो का चुम्बन करके निवेदन करता है कि मुहम्मद साहब तथा उनकी सन्तान के प्रति निष्ठा के विचार से इस अपराध के क्षमा का दास को ऋणी बना कर प्रतिकार को त्याग दे। मान्दू के लोग बडे निष्ठुर हैं और इस प्रदेश वाले उनके साथ जीवन न व्यतीत कर सकेंगे।" शाह (आलम) ने पुन शेख़ की सेवा मे उपस्थित होकर सैयिद का सदेश प्रस्तुत किया।

शेख कमाल, दरवेशी के उच्च स्थान से अनभिज्ञ था। वह परिणाम को न समझ सका। तपस्या तथा सुमिरन की अधिकता के कारण उसे निपुणता प्राप्त हो गई थी और वह इसी से प्रसन्न था। उसे दैवी रहस्य का, जो असीम है, कोई ज्ञान न था अन्यथा वह कुतुबे रब्बानी के आग्रह पर परिणाम को समझ जाता और उनकी इच्छा के अधीन हो जाता। यह समझ लेना चाहिये था कि गुजरात का राज्य

यदि सुल्तान कुतुबुद्दीन के भाग्य मे न होता तो कुतुबुल अकताब कदापि क्षमा-याचना न करते कारण कि नबी[1] लोग असम्भव कार्य की इच्छा नही करते और वली[2] लोग, जो उनके अधीन है, भी असम्भव कार्य की इच्छा नही करते, अत सैयिद की क्षमा-याचना पर्याप्त थी .

शेख ने इस रहस्य से अनभिज्ञता के कारण पुन कठोर उत्तर देने प्रारम्भ कर दिये और कहा कि, "मैने सात वर्ष की नमाज तथा रोजे के उपरान्त गुजरात का राज्य ईश्वर से सुल्तान महमूद खलजी को प्रदान कराया है। जिस व्यक्ति ने मुझ पर अत्याचार किया है उसके पुत्र को गुजरात का राज्य किस प्रकार दिलवाऊ और महमूद खलजी को, जो दरवेशो का मित्र तथा भक्त है किस प्रकार निराश करके लौटा दूं ? सैयिद बुरहानुद्दीन को मेरी शुभकामनाये पहुचा कर कह दो कि जो बाण लक्ष्य तक पहुच चुका हो उसे लौटा लाना असम्भव है।" शाह आलम ने मुस्करा कर कहा

छन्द

(५५) "सन्तो को ईश्वर की ओर से यह शक्ति प्राप्त है,
वे फेंके हुये बाण को मार्ग से लौटा ला सकते है।"

शेख ने यह बात सुनकर कहा, "यह बालकों का खेल नही जो क्षण-क्षण पर परिवर्तित होता रहे। लौहे महफूज[3] पर देखो कि गुजरात का राज्य मानक[4] बादशाह के अधिकार से निकल चुका है और महमूद खलजी को प्रदान हो गया है" और हाथ ऊपर करके परोक्ष से कागजे तूमी[5] लेकर शाह आलम को दे दिया और कहा, "यह गुजरात के राज्य का फरमान है जो महमूद खलजी के नाम पर तैयार किया गया है। अब इस विषय मे अधिक आग्रह से कोई लाभ न होगा। लौट जाओ और जो वास्तविक बात है उसका अपने पिता से उल्लेख कर दो।" यह उत्तर सुनकर सैयिद (शाह आलम, मझन) को अत्यधिक क्रोध आ गया और उन्होने उस कागज को तत्काल फाडकर कहा, "इस फरमान की कुतुबुल अकताब के परवाने के बिना ईश्वर के यहा पुष्टि नही हो सकती।" उस समय शेख को परिणाम का पता चला और वह समझ गया कि भाग्य मे इसी प्रकार लिखा था। सर्वप्रथम शेख अचेत हो गया और उसने कहा, "सैयिद के पुत्र ने हिंसा प्रदर्शित की" यह कहकर प्राण त्याग दिये। जब कुतुबुल अकताब (सैयिद बुरहानुद्दीन) को यह समाचार प्राप्त हुये तो उन्होने कहा, "मझला ने शीघ्रता से कार्य किया। अब भी धैर्य से कार्य लेना चाहिये था।"

सुल्तान महमूद खलजी का आक्रमण

सुल्तान महमूद को जब इस घटना के समाचार मिले तो उसने अभिमानवश तथा युद्ध के अस्त्र-शस्त्र, तोप-बन्दूक की अधिकता के कारण शिक्षा नही ग्रहण की और निरन्तर कूच करता ही गया।

१ ईश्वर के दूत। मुसलमानों का विश्वास है कि उनकी सख्या, १,२४,००० थी और मुहम्मद साहब अन्तिम दूत थे।
२ सन्त।
३ लौहे महफ़ूज़ :—मुसलमानों के विश्वास के अनुसार समस्त प्राणियों का भाग्य आदिकाल से ही एक तख़्ती पर लिख जाता है जिसे 'लौहे महफ़ूज़' कहते हैं।
४ फ़रीदी के अनुसार 'टानक' (पृ० २८)।
५ तूस का काग़ज़। तूस ख़ुरासान के एक नगर का नाम है। सम्भवत यहा तात्पर्य 'दैवी कागज़' से है।

गुजरात मे बडी खलबली मच गई। इस प्रदेश के निवासियो मे कुछ देश छोडने और कुछ आत्महत्या पर उद्यत हो गये। वे अपने घरबार से निराश हो गये। सक्षेप मे सुल्तान कुतुबुद्दीन ने पीरे दस्तगीर[1] कुतुबुल अकताब से निवेदन किया, "यदि इस युद्ध मे आप पधारने का कष्ट करे तो यह बडे ही सौभाग्य की बात है, अन्यथा बाब जियु अर्थात् शाह आलम (बुरहानुद्दीन उन्हे इसी नाम से पुकारते थे) को आदेश दे दिया जाय कि इस सेना पर अपनी छाया डाले ताकि उनके चरणो के आशीर्वाद से ईश्वर विजय प्रदान करे।" कुतुबुल अकताब ने उनसे कहा, "कुतुबुद्दीन पर अत्याचार हुआ है और महमूद अत्याचारी है। जिस पर अत्याचार हुआ हो उसकी सहायता पुण्य है। तुम उसका साथ दो।" शाह (आलम) ने सेना के साथ प्रस्थान किया। अहमदाबाद से दूसरे पडाव पर जल का अभाव हो गया यहा तक कि शेख के तहज्जुद[2] (५६) की नमाज के वजू[3] हेतु भी जल प्राप्त न हो सका। उन्होने सुल्तान कुतुबुद्दीन से कहा, "सेना के शिविर की वायु की खराबी तथा मार्ग के कष्ट के कारण मैं आज्ञा चाहता हू। तुम निश्चिन्त रहो। ईश्वर की ओर से विजय तुम्हारी है।" सुल्तान ने निवेदन किया कि, "आप अपनी तलवार मुझे प्रदान कर दे।" सैयिद ने कहा, "तलवार, जूता तथा लाठी जो कोई वस्तु भी दरवेशों की होती है, उसमे प्राण होते है। तुम लोग बादशाह हो। सम्भव है कि तुम्हारे द्वारा उनके सम्बन्ध मे कोई ऐसा कार्य सम्पन्न हो जाय जो दरवेशों के योग्य न हो। उस समय इस तलवार से तुम्हे हानि होगी।" सुल्तान सैयिद के चरणो पर गिर पडा और उसने कहा, "मुझे आप लोगो ने धूल से उठाया है। आप मेरे आश्रयदाता एव मेरे पीर के पुत्र है। मै आपके प्रति किस प्रकार धृष्टता कर सकता हूँ ?" सैयिद ने कहा, "भाग्य से वह दिन भी आने वाला है, और जो कुछ कहा गया वह होने वाला है।" सुल्तान रोने लगा। शाह (आलम) ने अपनी तलवार सुल्तान को दे दी।

उसी समय यह चर्चा की गई कि "सुल्तान महमूद के पास एक पर्वतरूपी हाथी है और वह दैत्य के समान है। उसका नाम गालिबजग है। नक्कारे की ध्वनि से वह मस्त हो जाता है। उस दशा मे कोई भी हाथी उसका मुकाबला नही कर सकता। यदि किसी की उससे मुठभेड हो जाय तो वह बच नही सकता और वह (गालिबजग) उसके पेट को फाडे बिना नही छोडता। इसी कारण उसे कसाई कहा जाता है।"

शाह (आलम अर्थात् बाब जियु) ने यह सुन कर कहा, "सुल्तान के खासे के समस्त हाथी प्रस्तुत किये जाय।" उन हाथियो मे एक ऐसा हाथी था, जो अभी मस्ती पर नही आया था। उसे पृथक् कर दिया गया। शाह ने उसके सिर तथा मुख पर हाथ फेर कर कहा "हे शुदनी ! कसाई का पेट फाड डाल।" तदुपरान्त एक बिना नोक का बाण धनुष मे लगा कर सुल्तान महमूद की सेना की ओर फेका और कहा, "यह बाण सीधा महमूद के छत्र मे पहुच गया और उसे तोड डाला।" तत्पश्चात सुल्तान ने शाह (आलम) को विदा करके उस स्थान से प्रस्थान किया।

जब उसने महेन्द्री नदी के घाट पर बाकानेर खानपुर[4] नामक स्थान पर पडाव किया तो चाम्पानीर के राजा गगदास ने, जिसने विद्रोह कर दिया था और सुल्तान महमूद से मिलकर उसका मार्गदर्शक बन गया,

१ आश्रयदाता सन्त।
२ रात्रि के समय की नमाज़े जो अनिवार्य नही है।
३ नमाज़ तथा पवित्र रहने के लिये क्रमशः हाथ मुह धोना।
४ मूल पुस्तक मे 'जानपुर बाकानेर', फ़रीदी के अनुसार 'बाकानेर खानपुर'।

(५७) था, सुल्तान महमूद से निवेदन किया कि "खानपुर[1] का घाट शत्रु ने रोक लिया है अत यदि आदेश हो तो बारासीनूर[2] परगने के अधीन इतयारी[3] घाट को पार करके कबीर बज[4] के मार्ग पर पहुच जाय।" सुल्तान ने इसे स्वीकार कर लिया और उपर्युक्त मार्ग की ओर प्रस्थान किया।

उस पडाव पर मलिक एमादुद्दीन बिन सोहराव ने अपने मित्र अमीरो से कहा, "मैने शपथ ली थी कि अपने स्वामी का साथ न छोडूँगा। मेरा स्वामी सुल्तान कुतुबुद्दीन है। मै उसके पास जाता हू। तुम लोग उस मार्ग पर जिस पर तुम्हारा स्वामी जाय प्रस्थान करो।" वहा से उसने पृथक् होकर सुल्तान कुतुबुद्दीन के चरणो के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और कहा "शत्रु कबीर बज के मार्ग पर गया हुआ है। स्वामी भी उसी ओर प्रस्थान करे।"

सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सुल्तान महमूद के पहुचने के पूर्व कबीर बज कस्बे मे अपने शिविर लगवा दिये। दूसरी ओर से सुल्तान महमूद ने भी तीन कोस पर पहुच कर पडाव कर दिया। सफर[5] मास की अन्तिम रात्रि मे सुल्तान महमूद ने रात्रि मे छापा मारने के उद्देश्य से अपने शिविर से प्रस्थान किया। उसका मार्ग दर्शाने वाला मार्ग भूल गया। वह रात भर तेली के बैल के समान घूमता रहा और किसी स्थान पर न पहुच सका। प्रात काल सुल्तान कुतुबुद्दीन ने अपनी सेना सगठित की। दाया भाग बहुत बडी सेना तथा खूँख्वार हाथियो सहित दिलावर खा के अधीन किया। बाया भाग मलिक निजाम मुख-लिसुलमुल्क को सौपा। मध्य भाग मे वह स्वय तथा खाने जहा, मलिक मुनीर वजीर, मत्था खा बिन मुज़-फ्फ़र शाह, जियाउलमुल्क, तुगान शाह खत्री जिसकी उपाधि इफ्तेखार खा थी, सिकन्दर खा बिन सुल्तान मुहम्मद बिन अहमद शाह, मलिक हलीम आज़म खा तथा कदर खा को रक्खा, उसने अग्र भाग का सरदार वीर तथा अनुभवी दिलावर खा को नियुक्त किया। उस ओर से सुल्तान महमूद ने बाये भाग को दाये भाग के सामने, दाये भाग को बाये भाग के सामने और अग्र भाग को अग्र भाग के मुकाबले पर नियुक्त किया।

(५८) कहा जाता है कि जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो सुल्तान महमूद हाथी पर सवार हुआ और काला छत्र अपने सिर पर लगवाया। गालिबजग नामक हाथी को कुजी के समान विजय का ताला खोलने के लिये आगे रक्खा। किन्तु उसे यह ज्ञात न था।

छन्द

"जो गाठ भाग्य के कारण बंध चुकी हो, वह कभी किसी उपाय से खुल सकती है?"

उसने उस हाथी को ताले के समान अपनी सेना के कोट के द्वार पर इस उद्देश्य से रक्खा था कि वह किसी कुजी से न खुल सकेगा। उसे इस घटना की सूचना न थी।

१ मूल पुस्तक मे 'जानपुर'।
२ फ़रीदी के अनुसार 'बालासीनूर' (पृ० ३०)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'इतादी' (पृ० ३०)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'कपड वज', कैरा जिले की मुख्य तहसील (पृ० ३०)।
५ सम्भवत सफ़र ८५५ हि० (२ अप्रैल १४५१ ई०) किन्तु मूल पुस्तक ही मे पृ० ५६ पर विजय की तिथि १ सफ़र ८५५ हि० (५ मार्च १४५१ ई०) लिखी है।

छन्द

"बहुत से ताले जिनकी कुजी नही होती,
उनके खोलने वाले दृष्टिगत हो जाते है।"

सुल्तान कुतुबुद्दीन रणक्षेत्र मे कई रगों के घोडे पर सवार था और हरा छत्र सिर पर लगाये था। सक्षेप मे दोनो बादशाह अपनी-अपनी सेना के मध्य मे खडे हुये वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे और सैनिकों के प्रोत्साहन हेतु उन्हे पुरस्कार का आश्वासन दिला रहे थे।

कहा जाता है कि सर्वप्रथम चन्देरी के हाकिम सुल्तान मुजफ्फर खा ने सुल्तान महमूद की ओर से कुछ प्रतिष्ठित हाथियो सहित सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के बाये भाग पर आक्रमण किया और उसे पराजित करता हुआ सुल्तान कुतुबुद्दीन के शिविर तक चढ गया और लूटमार प्रारम्भ कर दी, यहा तक कि सुल्तान कुतुबुद्दीन के खजानो को अपने घोडो पर लदवाना प्रारम्भ कर दिया। इसी बीच मे सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के दाये भाग ने सुल्तान महमूद की सेना के बाये भाग को पराजित कर दिया और दोनो ओर के अग्र भाग युद्ध करने लगे। यहा तक कि मध्य भाग की बारी आ गई। सुल्तान कुतुबुद्दीन के हाथी गालिबजग के सामने से भाग खडे हुये। सुल्तान ने कहा, "शुदनी को सामने लाओ ताकि वह कसाई का पेट फाड डाले, कारण कि बाब जियु ने यही कहा है।" शुदनी दौड कर कसाई से भिड गया। इसी बीच मे कुछ हाथियो जैसे डीलडौल वाले तथा सिहो की हत्या करने वाले वीरो का एक समूह जो ध्वालका के निवासी थे और दुरवाजिया कहलाते थे घोडो से उतर पडा और उन्होने कसाई के पाव की नसे (५९) काट दी। वह बैल के समान भूमि पर गिर पडा। शुदनी के दात कुजी के समान कसाई के पेट मे घुस गये और उसकी आते ताले के पुरजो के समान बाहर निकाल डाली। इसी प्रकार परोक्ष से एक बाण सुल्तान महमूद के चत्र मे प्रविष्ट हो गया और शाह आलम का चमत्कार जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है प्रकट हो गया और उसका छत्र टूट गया। यह देखकर सुल्तान महमूद की सेना पराजित हो गई।

मुज़फ्फर खा, जो इस विद्रोह की जड था, बन्दी बना लिया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसका शीर्ष उसके शरीर से पृथक् करके कबीर बज[1] के द्वार पर लटका दिया जाय। यह घटना शुक्रवार १ सफर ८५५ हि० (५ मार्च १४५१ ई०) को घटी। सक्षेप मे, सुल्तान महमूद जिसने अस्त्र-शस्त्र तथा सेना की अधिकता पर भरोसा किया था, पराजित हो गया और सुल्तान कुतुबुद्दीन, जिसने दरवेशों के वचन पर विश्वास किया था, विजयी हुआ।

कहा जाता है कि बिदा होते समय शाह आलम ने सुल्तान से कहा कि "अपनी सफलता के लिये मनौती करो।" सुल्तान ने कहा, "आपका जो आदेश हो वह करू।" शाह आलम ने कहा, "जो तुम्हारी इच्छा हो।" सुल्तान ने कहा, "मै मनौती करता हू कि प्रत्येक पैगम्बर[2] की आत्मा के लिये एक सोने का तन्का फकीरों को बाटने के लिये भेजूंगा।" शाह (आलम) ने कहा, (६०) "यह बहुत अधिक है। सासारिक व्यक्तियों के लिये इतना अधिक दान करना बडा कठिन है।" सुल्तान ने आग्रह किया। शाह (आलम) ने कहा, "सोने के तन्के के स्थान पर चादी का तन्का कर दो।"

१ फ़रीदी के अनुसार 'कपड़ बंज'।
२ नबी, ईश्वर के दूत जिनकी सख्या मुसलमानो के अनसार १,२४००० है।

सुल्तान ने स्वीकार कर लिया। कहा जाता है कि सुल्तान ने विजय के उपरान्त ७०,००० चादी के तन्के भेजे। शाह (आलम) ने कहलाया कि "पैगम्बरो की सख्या ७०,००० से अधिक है" और धन लौटा दिया। सुल्तान ने इस ओर ध्यान न दिया। शाह (आलम) ने अपने खजाने से १,२४,००० चादी के तन्के फकीरो को बँटवा दिये। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने कुतुबुल अकताब शेख (बुरहानुद्दीन) से कहा, "मैंने ७०,००० तन्के शाह आलम की सेवा मे भेजे किन्तु उन्होंने स्वीकार न किये और उन्हे लौटा दिया, किन्तु मनौती के विषय मे कुछ न कहा।" कुतुबुल अकताब ने शाह आलम से कहा, "बाबा फुतूह[1] के विषय मे कोई वाद-विवाद नही किया जाता। जो कुछ सुल्तान कुतुबुद्दीन ने भेजा था, उसे लौटाना न चाहिये था।" शाह आलम कुतुबुल अकताब के सम्मान के कारण चुप रहे और उन्होंने कुछ न कहा। इस घटना से शाह आलम सुल्तान कुतुबुद्दीन से खिन्न हो गये।

कहा जाता है कि जब सुल्तान महमूद खलजी गुजरात की सीमा पर पहुचा तो बहुत से हिन्दू अहले कलम[2] जिन्हे सुल्तान मुहम्मद ने दड दे रक्खा था, सुल्तान महमूद की सेवा मे पहुचे। सुल्तान ने उन लोगो से गुजरात के राज्य की तकसीम[3] मगवाई। उन लोगो ने जब उसे प्रस्तुत किया तो उन्होंने देखा कि विलायत[4] के दो भाग सैनिको की जागीर तथा शाही खालसे मे और एक भाग दान के लिये ऐमा आदि के रूप मे दिया जाता है। कहा जाता है कि इतना दान सुल्तान कुतुबुद्दीन के राज्यकाल तक होता था। तत्पश्चात् प्रत्येक ने इसमे वृद्धि की। सुल्तान महमूद ने कहा, "गुजरात के राज्य को विजय करना बडा कठिन है। यहा दिन की सेना भी सुव्यविस्थत रहती है और रात्रि की भी[5]।"

सुल्तान का भोग-विलास

(६१) संक्षेप मे, जब सुल्तान कुतुबुद्दीन विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौटा तो अहमदाबाद मे वह भोग-विलास मे पड गया और सर्वदा शाही जश्न किया करता था और बादशाहो के समान सभाये कराया करता था। वह अपना समय मदिरापान तथा माशूको से प्रेम मे व्यतीत किया करता था। उसने भव्य भवनों का निर्माण कराया उदाहरणार्थ काकरिया हौज जो अद्वितीय है, बागे नगीना जो उपर्युक्त हौज़ के मध्य मे स्थित है, मकदपुर के महल जिनमे से प्रत्येक स्वर्ग के उपवनो तथा महलों के समान है। फक़ीर ने इससे पूर्व इनमे से प्रत्येक को देखा था। इस समय उन महलों का अब कोई चिह्न नही, केवल उपर्युक्त हौज़ तथा उद्यान शेष है।

नागौर पर आक्रमण

८५५ हि० (१४५१-५२ ई०) मे सुल्तान महमूद ने नागौर की विलायत[6] पर चढाई की। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सैयिद अताउल्लाह को, जिसकी उपाधि किवामुलमुल्क थी, एक बहुत बडी सेना

१ वह धन जो बिना मागे आलिमो तथा सूफियों इत्यादि को लोग अपनी श्रद्धा अनुसार भेट करते है।
२ कार्यालयों मे लिखने-पढने का कार्य करने वाले।
३ राज्य मे जो धन का वितरण होता है।
४ राज्य।
५ दान पाने वालो को रात्रि की सेना कहा गया है, जो रात्रि मे ईश्वर की उपासना किया करते थे और राज्य की समृद्धि की ईश्वर से शुभकामना करते थे।
६ राज्य।

देकर, नागौर के हाकिम की सहायतार्थ नियुक्त किया। वह साभर के निकट पहुचा ही था कि सुल्तान महमूद सूचना पाकर युद्ध किये बिना ही अपने राज्य की ओर लौट गया। किवामुलमुल्क भी अपने प्रदेश की ओर वापस चला गया।

शम्स खा का नागौर मे अधिकार प्राप्त करना

इसके उपरान्त जब फीरोज खा बिन शम्स खा दन्दानी की मृत्यु हो गई और फीरोज खा के भाई मुजाहिद खा ने शम्स खा बिन फीरोज़ खा के प्रति कठोरता प्रदर्शित करते हुये उसे निर्वासित कर दिया और नागौर का राज्य अपने अधिकार मे कर लिया तो शम्स खा ने राणा के पास पहुच कर शरण ली और उससे सहायता लेकर नागौर पहुचा। मुजाहिद खा मुकाबला न कर सका और भाग कर सुल्तान महमूद खलजी के पास चला गया।

राणा तथा शम्स खा मे शत्रुता

उस समय राणा चाहता था कि मैं नागौर के भवनों का खडन करा दूं। शम्स खा ने उसे रोका। बात यहा तक बढ गई कि दोनो मे युद्ध हो गया। राणा रुष्ट होकर अपने राज्य को चला गया और उपर्युक्त झगडे के कारण उसने पुन सेना लेकर नागौर पर आक्रमण किया।

शम्स खा नागौर के किले को दृढ करके सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेवा मे सहायता की याचना करने (६२) पहुचा और उसने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान से कर दिया। सुल्तान ने राय अमीन चन्द मानक[1] तथा मलिक गदाई को अमीरो एव सैनिको सहित नागौर के किले वालों की सहायतार्थ भेजा और शम्स खा को अपनी सेवा मे रख लिया। उपर्युक्त अमीरो ने नागौर के समीप राणा से युद्ध किया। बहुत से मुसलमान मारे गये और असख्य काफिरो को नरक पहुचा दिया गया। किसी पक्ष को निश्चित रूप से विजय प्राप्त न हुई। राणा नागौर के समीप के स्थानो को विध्वस करके अपने प्रदेश को लौट गया।

यह घटना सुनकर ८६० हि० (१४५५-५६ ई०) मे सुल्तान ने नागौर के समीप के स्थानों के विध्वस का बदला लेने के लिये राणा की विलायत[2] पर चढाई की। मार्ग मे सिरोही[3] के राजा कन्था देव[4] ने सुल्तान के चरणों के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। उसने प्रार्थना की कि, "आबू के किले को जो हमारे पूर्वजो का निवास-स्थान है राणा ने मुझसे जबरदस्ती छीन लिया है। बादशाहे आलम मेरे प्रति न्याय करे।" सुल्तान ने मलिक शाबान एमादुलमुल्क को इस आशय से नियुक्त किया कि वह आबू के किले को राणा के सम्बन्धियो से छीन कर कन्था[5] को सौप दे। मलिक ने कभी इस प्रकार की सेवा न की थी।[6] वह सेना सहित किले के सकरे मार्ग मे प्रविष्ट हो गया और काफिरों का आना-जाना भी बन्द कर दिया। काफिर पर्वत के चारों ओर से युद्ध करने लगे। मलिक पराजित हुआ। बहुत बडी सख्या मे उसकी ओर के सैनिक मारे गये।

१ फ़रीदी के अनुसार 'राय अमि चद मानेक' (पृ० ३४)। सम्भवत. 'राय अमिय चन्द्र मणिक'।
२ राज्य।
३ 'सिरोही' तथा 'सरोही' दोनों प्रयुक्त हुए है।
४ सम्भवत, 'कृष्ण देवरा' (फ़रीदी पृ० ३४)।
५ फ़रीदी के अनुसार 'कृष्ण देवरा'।
६ 'कभी पर्वतो मे युद्ध न किया था'।

राणा कुम्भा की पराजय

इस घटना की सूचना सुल्तान को कुम्भलमीर मे प्राप्त हुई। इसी बीच मे कुम्भलमीर के राणा ने किले से उतर कर युद्ध किया और पराजित होकर लौट गया और किले मे प्रविष्ट हो गया। सुल्तान ने कुम्भलमीर को घेर लिया और बहुत बडी सेना राणा की विलायत के चारो ओर इस आशय से नियुक्त की, कि वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे। कहा जाता है कि इस बार राणा का राज्य इस प्रकार विध्वस हुआ कि किसी हिन्दू के घर मे भी किसी मवेशी का पता न चलता था। दास तो इतनी अधिक सख्या मे प्राप्त हुये कि उनकी गणना न हो सकती थी। कुम्भा ने विवश होकर क्षमा-याचना कर ली और उचित कर देना स्वीकार किया और इस बात की प्रतिज्ञा की कि "मै इसके पश्चात् पुन नागौर अथवा इस्लामी राज्य पर आक्रमण न करूगा।" सुल्तान लौटकर अपनी राजधानी मे पहुचा और बादशाहो के समान भोग-विलास तथा दान-पुण्य मे व्यस्त हो गया।

सुल्तान महमूद खलजी से सधि

कुछ समय पश्चात् सुल्तान महमूद खलजी के राजदूत यह सदेश लाये कि "मुसलमानों का परस्पर (६३) विरोध काफिरों के आराम का कारण बन जाता है। यह उचित होगा कि हम लोग भ्रातृ-भाव से सगठित होकर दुष्ट काफिरो, विशेष रूप से इस काफिर अर्थात् राणा कुम्भा के विनाश का, जिसके कारण अनेकों बार मुसलमानों को हानि पहुची है, प्रत्यन करे। उस ओर से सुल्तान पधारे और इस ओर से मै आऊँ ताकि उसका विनाश कर दिया जाय और उसका आधा-आधा राज्य अपने-अपने अधिकार मे कर ले।" सुल्तान ने यह बात स्वीकार कर ली और इस विषय मे प्रतिज्ञाये हो गई।

राणा कुम्भा पर आक्रमण तथा उसकी पराजय

८६१ हि० (१४५६-५७ ई०) मे सुल्तान ने राणा कुम्भा पर चढाई की। उस ओर से सुल्तान महमूद चढाई करके मन्दसौर कस्बे तक पहुचा। सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सर्वप्रथम आबू के किले को विजय करके कन्था देव[1] को सौप दिया और वहा से कुम्भलमीर पर चढाई की और उसके समीप के स्थान नष्ट-भ्रष्ट कर दिये। उस समय कुम्भा का राणा, चित्तौड के किले के ऊपर था। सुल्तान ने चित्तौड की ओर प्रस्थान किया। राणा ४०,००० अश्वारोहियों तथा २०० प्रसिद्ध हाथियो सहित चित्तौड के नीचे उतरा और सकरे मार्गों तथा ऊबड-खाबड भूमि के सहारे पर युद्ध करने लगा। कहा जाता है कि पाच दिन तक युद्ध होता रहा और जल के एक गिलास का मूल्य ५ भेदिये तक, जो १२ मुरादी तन्के के बराबर होता है, पहुच गया था। पाचवे दिन इस्लामी सेना की विजय हुई। राणा पराजित होकर दुःख से परिपूर्ण चित्तौड के किले पर पहुँच गया। सुल्तान ने चित्तौड को घेर लिया। अन्त मे राणा कुम्भा के वकील[2] शाही चौखट का चुम्बन करने के लिये पहुचे और उन्होने दीनता प्रकट करते हुये क्षमा-याचना की। सुल्तान ने राणा के उपहार स्वीकार किये। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि "हम इसके उपरान्त नागौर की विलायत को हानि न पहुंचायेगे।" उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। सुल्तान अपनी

१ फ़रीदी के अनुसार 'कृष्ण देवरा' (पृ० ३५)।
२ प्रतिनिधि ।

राजधानी को लौट गया। सुल्तान महमूद भी अपनी विलायत को लौट गया। राणा ने मन्दसौर तथा कुछ अन्य परगने जो मालवा की सीमा के समीप थे, सुल्तान महमूद को प्रदान करके उसे लौटा दिये।

राणा कुम्भा द्वारा पुनः आक्रमण

कहा जाता है कि तीन मास उपरान्त राणा ने अपनी प्रतिज्ञा भग करके नागौर के विध्वस हेतु पुन चढाई की। आधी रात मे मलिक शाबान एमादुलमुल्क वजीर को यह समाचार प्राप्त हुये। मलिक ने तत्काल महल के द्वार पर पहुच कर सुल्तान के विषय मे पता चलाया। पता चला कि वह सो रहा है। उसने कहा, "जगा दो।" सेवको ने कहा कि "हममे इसका साहस नही।" मलिक स्वय शयनागार मे प्रविष्ट हो गया और सुल्तान के पाव सहलाने लगा। सुल्तान जाग उठा। पूछा, "कौन है?" उत्तर मिला "दास, शाबान।" उसने पूछा, "कुशल है?" शाबान ने कहा, "जी हा।" सुल्तान ने कहा, "बताओ!" उसने कहा, "समाचार प्राप्त हुये है कि पिशाच कुम्भा ने पुन वचन भग करके नागौर पर चढाई कर दी है। यदि सुल्तान इसी समय कूच का नक्कारा बजवा दे और स्वय नगर के बाहर पडाव करे तो राजा यह (६४) समाचार पाते ही लौट जायगा और पुन वह इस प्रकार का साहस न कर सकेगा अन्यथा बहुत समय तक युद्ध करना पडेगा। इसी समय उचित देख-रेख करनी चाहिये।" सुल्तान ने कहा, "मुझे नीद आ रही है और मै सवार नही हो सकता।" मलिक ने निवेदन किया, "पालकी पर सवार हो जाइये।" सुल्तान ने तत्काल कूच का नक्कारा बजवा दिया और स्वय पालकी पर सवार होकर नगर के बाहर कुम्भलमीर की ओर पडाव किया। राणा के गुप्तचरो ने तत्काल जो घटना घटी थी, उसकी सूचना कर दी। राणा यह समाचार पाते ही लौट गया और अपनी विलायत[1] को चला गया।

सिरोही पर आक्रमण

तत्पश्चात् ८६२ हि० (१४५७-५८ ई०) मे सुल्तान कुतुबुद्दीन ने सिरोही पर चढाई की और वहा से राणा की विलायत पर आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और लौट गया।

सुल्तान की मृत्यु

२० रजब ८६३ हि० (२३ मई १४५९ ई०) को सुल्तान की मृत्यु हो गई। उसने २० वर्ष, छ मास तथा १३ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान द्वारा फतह खा की हत्या का प्रयत्न

कहा जाता है कि जब सुल्तान कुतुबुद्दीन सिहासनारूढ हुआ तो सुल्तान के सौतेले भाई फतह खा[2] की माता मुगली ने अपनी बहिन बीबी मिरकी[3] द्वारा, जो सिन्ध के बादशाह जाम जूना[4] की पुत्री तथा शाह आलम की पत्नी थी, शाह आलम की सेवा मे शरण ली। बीबी मिरकी शाह भीकन की माता

१ राज्य।
२ सुल्तान महमूद बेगढ।
३ फ़रीदी के अनुसार 'बीबी मिरगी'।
४ मूल पुस्तक मे 'जाम ख़ूबा' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'जूना'। यही उचित है।

थी। शाह आलम ने कहा कि, "तुम निश्चित होकर अपनी बहिन के साथ रहो। तुम्हे कोई हानि न पहुचेगी।" फतह खा की माता बडी सावधानी से उस भवन मे खान की रक्षा करती थी, किन्तु सुल्तान कुतुबुद्दीन के भय से उसके प्राण शरीर मे समाते न थे। कुछ समय उपरान्त सुल्तान कुतुबुद्दीन ने नशे की अवस्था मे फतह खा का स्मरण किया और पूछा, "वह कहा है?" उत्तर मिला "वह शाह के घर मे अपनी मौसी के साथ रहता है और शाह आलम की कृपा-दृष्टि द्वारा सम्मानित है।" सुल्तान के शरीर मे ईर्ष्या की अग्नि धधक उठी और उसका भोग-विलास, क्रोध तथा आतक मे परिवर्तित हो गया और वह फतह खा के विनाश हेतु कटिबद्ध हो गया किन्तु उसे इस बात का ध्यान न था, कि यही बात उसके पतन तथा विनाश का कारण बनेगी।

(६५) एक दिन उसने शाह आलम की सेवा मे सन्देश प्रेषित करके इस बात का प्रयत्न किया कि वह जिस प्रकार हो सके फतेह खा को भेज दे। शाह आलम ने कहलाया, "उसने अपने प्राणों के भय से दरवेशो के पास शरण ले रक्खी है। यह उचित नही कि उसे बन्दी बना कर आप को सौप दिया जाय। आप शासक है। आपको जहा वह मिले उसे ले जाय।" सुल्तान ने गुप्तचरो को नियुक्त कर दिया और स्वय नगर से निकल कर खेदपुर के महलो मे, जो रसूलाबाद के निकट है, पडाव किया। वह स्थान शाह आलम का निवास-स्थान था। उसने आदेश दिया कि जैसे ही फतह खा के विषय मे सूचना प्राप्त हो, सूचना पहुचाई जाय और उसे बन्दी बना लिया जाय।

एक दिन सुल्तान ने अपनी खास पत्नी रानी रूपमजरी को, जो शाह आलम की मुरीद थी, बहुत से ख्वाजासराओं के साथ उनके घर भेजा और आदेश दिया कि ढूँढकर फ़तह खा को बन्दी बना लिया जाय और इस बात पर बडा जोर दिया कि, "जहा कही भी वह दृष्टिगत हो उसे छोडा न जाय और ले आया जाय।" रानी ने शाह आलम की सेवा मे फतह खा को बैठा देखा। वह उसका हाथ पकड कर खीचने लगी। शाह आलम ने मुस्करा कर कहा, "आज तू फतह खा का हाथ खीच रही है, एक दिन वह भी तेरा हाथ खीचेगा।" अन्त मे सुल्तान कुतुबुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त रानी का विवाह फतह खा से हो गया। राज्य प्राप्त करने के उपरान्त फतह खा की उपाधि सुल्तान महमूद हुई। रानी ने शाह आलम की बात सुनते ही फतह खा का हाथ छोड दिया और शाह आलम से क्षमा-याचना की और वहा से लौट गयी। सुल्तान से जाकर उसने कह दिया, "यद्यपि बहुत ढूढा किन्तु कुछ पता न चला।"

कहा जाता है कि एक दिन एक गुप्तचर ने सुल्तान की सेवा मे निवेदन किया कि, "फतह खां शाह आलम के पास अमुक घर में बैठा हुआ पाठ पढ रहा है। सुल्तान घोडे पर सवार होकर घोडा दौडाता हुआ पहुँचा और नि सकोच घर मे प्रविष्ट हो जाना चाहा। मुकबिल नामक द्वारपाल ने रोका। सुल्तान ने कहा, "बाब जियु के आदेश से मुझे रोकता है?" जब सुल्तान की आवाज शाह आलम के कान मे पडी तो उन्होने कहा, "मुकबिल! आने दो।" शाह आलम ने फतह खा से कहा, "पढ डुगरे', अर्थात् हे वृद्ध! पढ।" सुल्तान को फतह खा लम्बी दाढी, सफेद भवो वाला कुबडा आदमी दिखाई पडने लगा। उस समय फतह खा की अवस्था दस वर्ष की थी। वह सुल्तान के साथ एक ही खाल पर बैठा रहा। सुल्तान उस कोठरी मे चारो ओर दृष्टि डालता था और उसे शाह आलम तथा उस वृद्ध के अतिरिक्त कोई अन्य दृष्टिगत न होता था। वह लज्जित होकर लौट गया और उसने गुप्तचरों को दड दिया।

सुल्तान महमूद का कथन है कि "उन दिनो मुझे बालिकाओ के वस्त्र पहनाये जाते थे। यदि कोई (६६) अचानक देख लेता तो मुझे न पहचान पाता था। जब मेरे विषय मे सुल्तान कुतुबुद्दीन की खोज का बडा शोर हुआ तो मै एक दिन घर के कोठे पर था। मेरी धाया मेरे साथ थी। किसी गुप्तचर ने सुल्तान को यह सूचना पहुचा दी। सुल्तान दौड़ता हुआ कोठे पर चढ गया। मेरी धाया के प्राण निकल

गये। यह समाचार शाह आलम को प्राप्त हुये। उन्होने कहा, 'भय मत करो। वह सिह को किस प्रकार पकड सकता है।' सुल्तान ने मेरे हाथ पकड लिये। धाया ने शोर मचाया कि यह अमुक सूफी की पुत्री है। सुल्तान ने मेरे 'लम्बे'[1] को खुलवा कर देखा। बालिकाओ के चिह्न देखकर मुझसे हाथ खीच लिया और उतर कर चला गया। उसने जो बात देखी थी उसकी चर्चा अपने सहचरों से की। उन्होने कहा, 'जो कोई भी हो उसे ले आना चाहिये था।' सुल्तान पुन कोठे पर पहुचा और मेरा हाथ पकड लिया। मेरा पजा उसे सिंह के पजो के समान दृष्टिगत हुआ। वह उसे छोड कर भाग गया। उस दिन से उसने पुन. मेरे पकडवाने का सकल्प न किया किन्तु उसका क्रोध शाह आलम के प्रति नित्यप्रति बढता ही गया। किन्तु यह अग्नि भडकने न पाती थी।"

इसी बीच मे शाह आलम की पत्नी बीबी मरयम[2] की मत्यु हो गई। शाह आलम ने बीबी मुगली से कहलाया कि, "जब तक तुम्हारी बहिन जीवित थी, तुम महरम[3] थी, अब यह उचित होगा कि तुम किसी पथक् स्थान पर जाकर रहो।" वे बडी दुखी हुई। उन्होने अपने चाचा जाम फीरोज से कहा, "सर्वप्रथम मेरे माता-पिता ने मुझे शाह की सेविका बनाना निश्चय किया था किन्तु सुल्तान मुहम्मद ने जबरदस्ती मुझसे विवाह किया। यह इस प्रकार हुआ कि सिन्ध के बादशाह जाम जूना[4] के दो पुत्रिया थी। एक बीबी मुगली और दूसरी बीबी मिरकी।[5] बीबी मिरकी से सुल्तान मुहम्मद का विवाह तथा बीबी मुगली से शाह आलम का विवाह निश्चय हुआ था। जब सुल्तान मुहम्मद ने बीबी मुगली के सौन्दर्य की प्रसिद्धि सुनी तो उसने जाम के अधिकारियो को कुछ धन देकर तथा कुछ डरा धमका कर इस बात के लिये तैयार करा लिया कि वे बीबी मुगली का विवाह सुल्तान से करा दे और बीबी मिरकी का शाह आलम से। जब शाह आलम को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होने कुतुबुल अकताब से यह बात कही। कुतुबुल अकताब ने कहा, 'बेटे तुसाद नसीब दोहू व बच्चा।'[6] अर्थात् हे पुत्र! तुम्हारे भाग्य मे दोनो है।"

सक्षेप मे जब शाह आलम ने बीबी मुगली की यह इच्छा देखी और कुतुबुल अकताब की बात का (६७) स्मरण किया तो उन्होंने बीबी मुगली से विवाह कर लिया। बीबी मुगली आसक्तो तथा दासियो के समान सेवा करती रहती थी और रात-दिन शाह आलम की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयत्न किया करती थी। शाह आलम भी बीबी के सदाचरण एव रूपवती होने के कारण उनका अत्यधिक ध्यान रखते थे। सयोग से बीबी मुगली एक रात्रि मे शाह आलम से अत्यधिक प्रेम के कारण उनकी विशेष कोठरी को अपने सिर के केश से झाड रही थी। शाह आलम को इस बात की सूचना मिल गई। उन्होने बीबी के प्रति अत्यधिक प्रेम प्रदर्शित किया और कहा, "जो कुछ मागना हो माग लो। ईश्वर की दया के द्वार खुले हुये है।" बीबी ने कहा, "क्योकि आपने फतह खा पर कृपा करते हुये कह दिया है कि वह अपने पूर्वजों के सिहासन पर आरूढ होगा, ऐसी अवस्था मे यदि उससे कभी कोई धृष्टता हो जाय तो आप उससे रुष्ट न हों। मेरी इच्छा यही है।" शाह आलम ने कहा, "फतह खा के भाग्य मे गुजरात की बादशाही लिखी हुई है और शीघ्र ही उसे प्राप्त हो जायगी। यह भी निश्चय है कि वह धृष्टता करेगा किन्तु मैं तेरी प्रसन्नता के लिये उसे क्षमा कर दूंगा।"

१ पायजामा।
२ 'बीबी मिरकी' अथवा 'मिरगी'।
३ वे स्त्रिया जिनसे ऐसे निकट के सम्बन्ध हो कि उनसे विवाह न किया जा सकता हो।
४ मूल पुस्तक में 'जाम जानवा' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'जाम जूनां' (पृ० ३८)।
५ फ़रीदी के अनुसार 'मिरग़ी'।
६ यह वाक्य फ़ारसी ग्रन्थ में इसी प्रकार है।

कहा जाता है कि एक दिन मेवे की एक टोकरी शाह आलम की सेवा मे लाई गई। शाह आलम ने परिहास करते हुए टोकरी को फतह खा के सिर पर रख दिया। बीबी मुगली ने कहा, "आप इस टोकरी को उलटा कर इसके सिर पर रख दे।" शाह ने मुस्करा कर बीबी की प्रशसा की और उसी प्रकार कर दिया। अन्त मे उसका परिणाम प्रकट हो गया। उसका छत्र चन्द्रमा से ऊचा हो गया।

जब बीबी मुगली को शाह आलम का फर्राश होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया तो सुल्तान कुतुबुद्दीन को यह बडा ही बुरा लगा। जो कुछ उसके हृदय मे था, वह प्रकट हो गया। उसने खुल्लमखुल्ला झगडा करना तथा शिकायत करना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन वह मदिरा के नशे मे सवार हुआ और उसने रसूलाबाद के नष्ट-भ्रष्ट करने का आदेश दे दिया। लोग बहुत बडी सख्या मे एकत्र हो गये और एक दूसरे की ओर देखते थे, किन्तु कोई भी अग्रसर न होता था और हर एक टालने का प्रयत्न करता था। सुल्तान घोडे को भगाता जाता था और रसूलाबाद के नष्ट करने के सम्बन्ध मे जिह्वा तथा हाथ हिलाता जाता था। इसी बीच मे भाग्य से एक मस्त ऊट प्रकट हुआ। सुल्तान ने तलवार खीच कर ऊट पर फेकी। तलवार ऊट के न लगी अपितु सुल्तान के ज़ानू पर लग गई। सुल्तान घोडे पर से गिर पडा (६८) और उसे पालकी मे डालकर पडाव पर लाया गया। तीन दिन उपरान्त ८६३ हि० (१४६१-६२ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

लोगो का कथन है कि यह ऊट न था, अपितु मौत का फ़िरिश्ता था जो ऊट के रूप मे प्रकट हुआ था। कहा जाता है कि यह तलवार वही तलवार थी जिसे सुल्तान महमूद ख़लजी से युद्ध के समय बिदा होते हुये शाह आलम ने सुल्तान को प्रदान की थी।

कुछ लोग सुल्तान की मृत्यु की कहानी का अन्य प्रकार से उल्लेख करते है। वह इस प्रकार है कि एक दिन सुल्तान की इच्छा हुई कि "मै अहमदाबाद नगर को अपने अन्त पुर की स्त्रियो को दिखलाऊ।" उसने आदेश दे दिया कि, "कोई भी पुरुष घर के बाहर न निकले।" तत्पश्चात् वह अपने अन्त पुर की स्त्रियो सहित प्रत्येक गली मे भ्रमण करने लगा। अचानक एक व्यक्ति गली के पीछे से प्रकट हो गया। सुल्तान ने क्रोधित होकर उस पर तलवार का वार किया। वह व्यक्ति अदृश्य हो गया और तलवार सुल्तान के घुटने पर लगी और उसे तोड दिया। उसी घाव के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

कहा जाता है कि सुल्तान के घाव की पीडा मे क्षण-क्षण पर वृद्धि होती जाती थी और वह अच्छा न होता था। एक दिन अपने महल के झरोखे मे वह साँभर नदी के तट की ओर देख रहा था। उसने देखा कि एक लकडहारे ने अपने सिर पर लकडी का एक बोझ रक्खे हुये बडे कष्ट से नदी पार की और लकडी का गट्ठा, जो वह अपने सिर पर रक्खे हुये था, उतारा और अपनी कमर से सूखी रोटी तथा कुछ प्याज़ निकाल कर बडे शौक से खाना प्रारम्भ किया। तदुपरान्त नदी मे उतर कर उसने जल पिया और एक दीवार की छाया मे हो गया। सुल्तान ने कहा, "कितना अच्छा होता यदि मेरा राज्य इस लकडहारे को दे दिया जाता और लकडहारे का स्वास्थ्य मुझे प्रदान कर दिया जाता और मै लकड़ी काटता रहता।"

'बहादुरशाही' का लेखक लिखता है कि शम्स खा की पुत्री खातून सुल्तान ने शम्स खा के कहने से उसे विष दे दिया। जब सुल्तान मरने लगा तो सुल्तान कुतुबुद्दीन के अमीरो ने शम्स खा की हत्या कर (६९) दी। सुल्तान की माता ने आदेश दिया कि कनीज़े ख़ातून के टुकडे-टुकडे कर दे। यह भी दरवेशों से शत्रुता का परिणाम है कि ईश्वर मित्र से शत्रुओ का कार्य करा लेता है। बुद्धिमानो से यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि जो बात सर्वप्रसिद्ध है तथा जो बात 'बहादुरशाही' के लेखक ने लिखी है उसमे सामजस्य सम्भव है। सम्भव है कि सुल्तान के घायल होने के उपरान्त विष देने की भी घटना घटी हो।

सुल्तान दाऊद बिन अहमद शाह बिन सुल्तान क़ुतुबुद्दीन

सुल्तान कुतुबुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त तीसरे दिन वज़ीरो तथा अमीरो की सहमति से सुल्तान दाऊद बिन अहमद शाह २३ रजब[1] ८६३ हि० (२६ मई १४५९ ई०)को सिहासनारूढ हुआ और अन्तिम रजब को पदच्युत हो गया। कहा जाता है कि अभी उसके आदेश प्रारम्भ भी न हुये थे कि उसने एक फर्राश को, जो उसकी खानी के समय उसका पडोसी था, एमादुलमुल्क की उपाधि प्रदान करने की आशा दिला दी, यद्यपि उत्कृष्ट वजीर एमादुलमुल्क जीवित था।[2] उस छिछोरे का यह कार्य प्रसिद्ध हो गया। वजीरो तथा बडे-बडे अमीरो ने परामर्श किया कि, "यद्यपि अभी उसकी आज्ञाये चालू नही हुई है किन्तु उसने ऐसे आदेश देने प्रारम्भ कर दिये है। जब उसकी आज्ञाये चलने लगेगी तो पता नही वह किस प्रकार के आदेश दिया करेगा।"

इसके अतिरिक्त उसने सुल्तान अहमद के समय के आभूषणो तथा वस्त्रो का हिसाब लेना प्रारम्भ कर दिया। स्वर्गीय सुल्तान के अन्त पुर की स्त्रियो के आभूषण राजकोष मे जमा करा दिये।

कहा जाता है कि सुल्तान दाऊद का प्रथम आदेश यह हुआ कि, "कबूतरो का दाना तथा दीपको का तेल कम कर दिया जाय।" अमीरो ने यह देख कर कहा कि, "यह व्यक्ति गुजरात पर राज्य करने (७०) के योग्य नही, और उसके स्थान पर फतह खा को जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है आरूढ करना चाहिये। उसके ललाट से बादशाही शान टपकती है।" अलाउलमुल्क बिन सोहराब को इस आशय से भेजा गया कि वह फतह खा की माता मखदूमये जहा बीबी मुगली से इस विषय मे निवेदन करके फतह खा को ले आये। बीबी ने प्रथम बार स्वीकार न किया। एमादुलमुल्क ने निवेदन किया कि, "गुजरात के राजसिंहासन हेतु इस व्यक्ति के अतिरिक्त कोई अन्य उपयुक्त नही। इस कार्य को रोकना उचित नही।"

अन्त मे मलिक एमादुलमुल्क, फतह खा को सवार करके शाही ऐश्वर्य से भदर की ओर रवाना हुआ। वजीरो तथा अमीरो ने उसका स्वागत करके अभिवादन किया और उसका नाम महमूद शाह रख कर उसके लिये शुभकामनाये की। कहा जाता है कि जब फतह खा, शाही महलो के निकट पहुचा तो बाजों की ध्वनि सुल्तान दाऊद के कानो मे पहुची। उसने पूछा, "क्या बात है ?" उसे बताया गया कि, "राज्य का कार्य सुल्तान कुतुबुद्दीन के भाई फतह खा को प्रदान कर दिया गया है। अमीर लोग उसे सिहासनारूढ करने के लिये ला रहे है।" सुल्तान दाऊद उस झरोखे से जो साभर[3] नदी की ओर है निकल गया और एकान्तवासी हो गया। उसने यह आयत[4] प्रमाणित कर दी "तू जिसे चाहता है राज्य देता है और जिसे चाहता है उससे छीन लेता है।" समस्त सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो ने देख लिया कि यह आयत कितनी सत्य है।

१ फ़रीदी के अनुसार ३ रजब ८६३ हि० (६ मई १४५६ हि०)। यही उचित है।

२ फ़रीदी की पोथी मे सम्भवत यह वाक्य भी था 'इसी प्रकार उसने एक तुच्छ व्यक्ति को बुरहानुलमुल्क की उपाधि प्रदान करने का वचन दे दिया यद्यपि इस नाम का अमीर जोकि क़ुतुबुद्दीन के अमीरों मे सर्वश्रेष्ठ था, जीवित था'।

३ फ़रीदी के अनुसार 'साबरमती'।

४ क़ुरान का वाक्य।

कहा जाता है कि पदच्युत होने के उपरान्त सुल्तान दाऊद शेख अधन[1] रूमी की ख़ानकाह को चला गया और उनका मुरीद होकर उनकी सेवा मे रहने लगा। अल्प समय मे उसने इस क्षेत्र मे उन्नति कर ली और उन्ही दिनो मे उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान महमूद बेकरह[2] का सिहासनारोहण और जूनागढ़ तथा चाम्पानीर के क़िले की विजय

(७१) दीन[3] का रक्षक सुल्तान महमूद शाह बेकरा रविवार प्रथम शाबान ८६३ हि० (३ जून १४५९ ई०) मे अहमदाबाद के भव्य नगर मे सिहासनारूढ हुआ। गुजरात के कुछ लोग बेकरा नाम होने का यह कारण बताते है कि हिन्दी भाषा मे 'बेकरा' ऐसी गाय को कहते है जिसकी दाईं तथा बाईं सीगे किसी व्यक्ति के दो हाथों के समान हों जो अपने हाथो को आलिगन हेतु खोले हुये हो। सुल्तान की मूछे उपर्युक्त सीगो के समान घनी तथा लम्बी थी। इस कारण वह इसी नाम से प्रसिद्ध हो गया। कुछ लोगों का कथन है कि 'बे' शब्द गुजरात के हिन्दुओ की भाषा मे 'दो' की सख्या को कहते है। 'करा' उनकी भाषा मे 'किले' को कहते है। क्योकि सुल्तान ने दो किले विजय किये—एक जूनागढ और दूसरा चाम्पानीर, इसी कारण सुल्तान महमूद को बेकरा कहते है।

सुल्तान का चरित्र

यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि सुल्तान महमूद गुजरात के सुल्तानो मे चाहे वह पहले के हो और चाहे बाद के, न्याय की अधिकता, धर्मयुद्ध के प्रबन्ध, इस्लाम के आदेशो के प्रचार, तथा उत्कृष्ट मत के कारण सर्वश्रेष्ठ था। वह अपनी बाल्यावस्था एव प्रौढावस्था तथा वृद्धावस्था मे बुद्धिमत्ता, शक्ति की अधिकता तथा दान-पुण्य मे अद्वितीय था। राज्य तथा बादशाही के बावजूद उसकी भूख बहुत अधिक थी। सुल्तान का भोजन गुजरात के एक मन के बराबर होता था। वहा सेर, तोल मे १५ बहलोली[4] के बराबर होता था। भोजन के उपरान्त वह ५ सेर भुने चावल खा जाता था। सोते समय उसके पलंग के दाईं और बाईं ओर चीनी की एक प्लेट मे समोसे रख दिये जाते थे; जब वह जागता तो लेकर थोडे से खा लेता था और सो जाता था। रात्रि मे कई बार ऐसा होता था। प्रात काल उठकर नमाज़ के उपरान्त एक शहदे मक्की[5] का भरा हुआ प्याला, घी का भरा हुआ एक प्याला और १५० केले खा जाता था। वह कहा करता था कि "हे ईश्वर! यदि तूने महमूद को बादशाही न प्रदान की होती तो उसका पेट कौन भर सकता था।" मैथुन शक्ति उसमे इतनी अधिक थी, कि कोई भी स्त्री उसके साथ रतिक्रिया को सहन न कर पाती थी। केवल एक लम्बी हब्शी युवती थी जिससे, अनेक स्त्रियो से सम्भोग के बाद, रतिक्रिया के उपरान्त सुल्तान सन्तुष्ट होता था।

१ फ़रीदी के अनुसार 'अदहम'।
२ इस नाम को अनेक प्रकार से लिखा गया है, 'बेगड़ा' अथवा 'बेगढ' अधिक प्रसिद्ध है।
३ धर्म (इस्लाम)।
४ मूल पुस्तक मे 'पहलवी' है किन्तु फ़रीदी ने इसे 'बहलोली' पढा है (पृ० ४२)।
५ मधु मक्खी का शहद।

(७२) जब वह सिहासनारूढ हुआ तो उसकी अवस्था १३ वर्ष, दो मास तथा तीन दिन हो चुकी थी। उसने अपने पूर्वजो की प्रथानुसार सेना को इनाम-इकराम द्वारा सम्मानित किया और कुछ लोगो को उपाधिया प्रदान की।

राज्य हेतु षड्यंत्र

जब इसी प्रकार कुछ मास व्यतीत हो गये तो कुछ दुष्ट अमीरों ने, जिनके नाम कबीरुद्दीन सुल्तानी अजदुलमुल्क[1] 'मौलाना खिज्री सफी-उल-मुल्क', चाद बिन इस्माईल 'बुरहानुलमुल्क'[2] तथा ख्वाजा मुहम्मद हुसामुलमुल्क थे, मलिक एमादुलमुल्क वजीर से शत्रुता के कारण, उसके पतन तथा विनाश हेतु षड्यन्त्र रचना प्रारम्भ किया। एक दिन एमादुलमुल्क के दरबखाना[3] पहुचने के पूर्व उन्होने सुल्तान से निवेदन किया कि, "एमादुलमुल्क नमकहरामी करने की योजना बना रहा है। वह अपने लघु पुत्र शिहाबुद्दीन को सिंहासनारूढ करके मनमाना कार्य करना चाहता है। हम लोग जिनको इस दरबार द्वारा आश्रय प्राप्त हुआ है किस प्रकार इस बात की उपेक्षा करे ? इस विषय मे वास्तविक चिन्ता करनी चाहिये।" सुल्तान ने कहा, "वह क्या ?" उन लोगो ने कहा, "या तो उसे बन्दी बना लिया जाय और या उसकी हत्या करा दी जाय।" सुल्तान चुप हो रहा।

जब मलिक एमादुलमुल्क दरबखाने मे पहुचा तो अमीर लोगो ने, मलिक को बन्दी बना लिया और उसकी ग्रीवा मे तौक[4] तथा पाव मे बेडी डाल दी और अपने ५०० विश्वासपात्रो को उसकी रक्षा हेतु नियुक्त करके आदेश दिया कि वे उसे दरबार के कोठे पर जिसे भदर[5] कहते है ले जाकर उसकी रक्षा करे। वे लोग स्वय सन्तुष्ट होकर अपने-अपने घरो को चले गये तथा भोग-विलास मे ग्रस्त हो गये। रात्रि के प्रारम्भ होने पर अब्दुल्लाह शहनये फील[6] ने सुल्तान की सेवा मे गुप्त रूप से निवेदन किया कि, "एमादुलमुल्क का बन्दी बनाना राज्य के हित मे उचित न था कारण कि मलिक के सहयोगी अमीर इस बात से भागने की तैयारी कर रहे है। विरोधी अमीर ने सुल्तान के चाचा "हबीब खा"[7] को अपने घर मे रख छोडा है। उनकी इच्छा है कि अवसर पाकर वे सुल्तान से विश्वासघात करे और हबीब खा को सिहासनारूढ कर दे। जो कुछ मै जानता था, मैने उसके विषय मे निवेदन कर दिया। अब इसके उपरान्त सुल्तान की जो आज्ञा हो वह उचित है।" इन बातो को सुनकर सुल्तान अपनी माता के पास गया और उसने जो कुछ सुना था, उसे बता दिया। सुल्तान की माता ने मलिक अब्दुल्लाह को बुलवाया और उसे कई शपथ देकर उससे समस्त हाल पूछा। मलिक अब्दुल्लाह ने जो कुछ पहले कहा था, उसकी पुनरावृत्ति कर दी। सुल्तान ने अपने विशेष हितैषी दासो को, जिनके नाम मलिक हाजी, मलिक कालू तथा (७३) मलिक ईसा थे, बुलवाकर इस विषय मे परामर्श किया। अन्त मे यह निश्चय हुआ कि एमादुलमुल्क को मुक्त करवाने के उपरान्त अत्याचारी अमीरो के घरो को नष्ट करा दिया जाय ताकि वे अपने दुष्कृत्यो का फल भोग ले।

१ फ़रीदी के अनुसार 'कबीरुद्दीन सुल्तान बुरहानुलमुल्क'।
२ फ़रीदी के अनुसारः 'चांद बिन इस्माईल अजदुलमुल्क'।
३ ड्योढी।
४ हंसुली जो बन्दियों के गले मे डाली जाती थी।
५ फ़रीदी के अनुसार 'भधर' (पृ० ७२)।
६ शाही हाथियों का मुख्य प्रबन्धक।
७ फ़रीदी के अनुसार 'हबीब खा बिन (पुत्र) अहमद शाह'।

सुल्तान ने आदेश दिया कि मलिक अब्दुल्लाह समस्त हाथियो को सशस्त्र करके दरबार मे ले आये। तत्पश्चात् सुल्तान बाहर निकल कर राजसिंहासन पर आसीन हुआ और शरफुलमुल्क से कहा कि "एमादुलमुल्क हराम ख्वार[1] को बन्दीगृह से इस आशय से लाया जाय कि उसे दड दूँ और अन्य लोग शिक्षा ग्रहण कर सके।" मलिक शरफुलमुल्क वहा पहुचा किन्तु अमीरो के रक्षको ने सुल्तान की आज्ञाओ का पालन न किया। शरफुलमुल्क लौट गया और उसने इस विषय मे उल्लेख किया। सुल्तान स्वय आगे बढकर भदर के बुर्ज पर पहुचा और उसने क्रोध प्रदर्शित करते हुए उच्च स्वर मे कहा कि, "शाबान को ले आओ।" जब सुल्तान की आवाज रक्षको के कान मे पहुची तो वे मलिक को बन्दीगृह से लेकर पहुचे। सुल्तान ने कहा, "ऊपर लाओ ताकि इस नमकहराम से पूछू कि बादशाह के क्रोध का भय न करके यह षड्यन्त्र क्यो रचा ?" जब वह ऊपर लाया गया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि, "बेडिया मलिक के पाव से पृथक् कर दी जाय।" रक्षको ने जब यह हाल देखा तो कुछ लोग भाग कर अमीरो के पास चले गये। कुछ हाथ बाध कर खडे हो गये और निवेदन किया कि, "हम सुल्तान के दास है और हमने सुल्तान के आदेशानुसार बन्दी बनाया था और अब सुल्तान के आदेशानुसार मुक्त करते है। इसमे हमारा कोई अपराध नही।"

सुल्तान ने उन लोगो को प्रोत्साहन दिया। प्रात काल सुल्तान भदर के ऊपर पहुचा और वही बैठ गया। जब अमीरो को यह समाचार प्राप्त हुये तो वे अपनी सेना सहित सशस्त्र होकर दरबार की ओर रवाना हुये। उस समय दासो तथा असील[2] लोगो मे कुल ३०० व्यक्ति सुल्तान की सेवा मे उपस्थित थे। उनमे से कुछ लोगो ने कहा कि, "दरीचे के मार्ग से जो साभर[3] नदी की ओर है निकल जाना चाहिये और किसी अन्य स्थान पर पहुच कर सेना एकत्र करके लौटना चाहिये।" सुल्तान ने दृढतापूर्वक आचरण किया और दु साहसो की बात न सुनी। जब अमीर लोग दरबार के निकट पहुचे तो मलिक शाबान, मलिक हाजी तथा मलिक कालू ने कहा कि, "यदि आदेश हो तो महावत लोग हाथियो को एक साथ उन हराम नमको पर रेल दे और वे तत्काल भाग जायगे।" सुल्तान ने आदेश दे दिया। और ५००-६०० हाथियो ने एक साथ आक्रमण कर दिया। उनका समूह छिन्न-भिन्न हो गया। अमीर लोग भाग खडे हुये। उनके सैनिक अपने शरीर से अस्त्र-शस्त्र पृथक् करके अपने-अपने घरो मे घुस गये। अमीर लोग भाग कर नगर के बाहर छिन्न-भिन्न हो गये।

(७४) हुसामुलमुल्क पटन की ओर भाग गया। उसका भाई रुक्नुद्दीन उस नगर का मीर कोई[4] था।

१ हरामखोर, नमक हराम अथवा कृतघ्न।
२ कुलीन, शुद्ध रक्त वाला।
३ फ़रीदी के अनुसार 'साबरमती' (पृ० ४४)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'पुलिस अधिकारी' (पृ० ४४)। सम्भवतः यह शब्द 'अमीर कोही' है। बरनी के अनुसार सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक ने कृषि की उन्नति के लिये एक दीवान बनाया था (बरनीः, 'तारीखे फ़ीरोज़शाही' पृ० ४६८, 'तुग़लुक कालीन भारत', भाग १ पृ० ६२)। 'तबकातेनासरी' मे मलिकुल उमरा इफ्तेखारुद्दीन अमीर कोह का उल्लेख सुल्तान इल्तुतमिश के अमीरो की सूची मे हुआ है ('तबकाते नासिरी' कलकत्ता, पृ० १७७, 'आदि तुर्क कालीन भारत', पृ० २६)। मलिक हमीदुद्दीन अमीर कोह तथा उसके पुत्रों से सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख बरनी ने अलाउद्दीन के इतिहास मे किया है। (बरनी, पृ० २८१, 'खलजी कालीन भारत' पृ० ६४)। इससे पता चलता है कि अमीर कोह इससे पूर्व भी नियुक्त होते थे। 'तबकाते अकबरी' मे मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्यकाल के 'दीवाने अमीर कोही' को 'अमीर गोई' ('तबकाते अकबरी,' भाग १, कलकत्ता (पृ० २१३), तथा 'तारीखे फ़िरिश्ता' में 'अमीर कोई' है ('तारीखे फ़िरिश्ता', नवल किशोर प्रेस, भाग १, पृ० १४०)।

कबीरुद्दीन अजदुलमुल्क कान्थ मे साभर नदी के निकट पहुचा। वहा चपूनी[1] ने, जिसके भाई की अजदुलमुल्क ने हत्या करा दी थी, उसका सिर उसके शरीर से पृथक् कर दिया और उसे सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया। उसे नगर के द्वार पर लटकवा दिया गया। बुरहानुलमुल्क बडा मोटा-ताजा व्यक्ति था। वह भाग न सका। साभर नदी के उस पार सरखीज की ओर जहा आजकल फतहपुर बसा हुआ है अपने घोडे को छोडकर एक कोने मे बैठा था। एक शाही ख्वाजासरा, कुतुबुल मशायख शेख अहमद खत्तू के मकबरे के दर्शन करके नगर की ओर लौट रहा था। उसने उसे पहचान लिया और उसे सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया। सुल्तान ने आदेश किया कि उसे हाथी के पाव के नीचे डाल दिया जाय। मौलाना खिज्र सफीउलमुल्क को बन्दी बनाकर इस आशय से देव भेज दिया गया कि वहा बन्दी बना दिया जाय। क्योकि उसका सम्बन्ध मलिक शाबान से था, (अत) मलिक ने उसके अपराध क्षमा करा दिये और देव से बुलवाकर उसकी वृत्ति निश्चित करा दी।

उस समय सुल्तान की अवस्था १४ वर्ष की थी। उसने ऐसा पौरुष प्रदर्शित किया जो वृद्धो का कार्य होता है और विश्वासघातियो का अन्त करा दिया और न्याय के इच्छुको को न्याय प्रदान कर दिया। इसके उपरान्त सुल्तान की मृत्यु के समय तक सुल्तान का आदेश इस प्रकार चलता रहा कि कोई भी आज्ञाओ का उल्लघन न कर सका।

अमीरो को उपाधिया

जब विद्रोहियो की हत्या कर दी गई तो मलिक हाजी को अजदुलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई और उसे आरिजे ममालिक[2] नियुक्त कर दिया गया। मलिक बहाउद्दीन को इख्तियारुलमुल्क की उपाधि प्रदान की गई। मलिक तुगान को फरहतुलमुल्क तथा मलिक ईसा को निजामुलमुल्क की उपाधियो द्वारा सम्मानित किया गया। मलिक सादुल्लाह को बुरहानुलमुल्क की उपाधि प्रदान हुई। मलिक कालू को एमादुलमुल्क की तथा मलिक सारग को मुखलिसुलमुल्क की उपाधि प्रदान हुई। कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने उसे किवामुलमुल्क की उपाधि प्रदान कर दी। उसने अपने ५२ दासो को उपाधिया प्रदान की और उनके मसब[3] मे बृद्धि कर दी। उन्हे जागीर मे परगने प्रदान किये। अल्प समय मे अत्यधिक सेना सुल्तान कुतुबुद्दीन की सेना के समान एकत्र हो गई और गुजरात प्रदेश मे नई रौनक पैदा हो गई। समस्त सैनिक सुखी, प्रजा निश्चिन्त और दरवेश लोग सन्तुष्ट होकर ईश्वर का सुमिरन किया करते थे। व्यापारी लोग अपने व्यापार से प्रसन्न थे और राज्य मे शान्ति तथा मार्ग डाकुओ से शून्य थे। कोई भी किसी कारण समय को दोषी न ठहराता था।

जागीर के विषय मे अधिनियम

(७५) सुल्तान ने यह आदेश दे दिया था कि "अमीरो तथा सैनिको मे जिस किसी की भी युद्ध मे हत्या हो जाय अथवा वह अपनी मृत्यु से मर जाय तो उसकी जागीर उसके पुत्र को प्रदान कर दी जाय। यदि उसके कोई पुत्र न हो तो उसकी आधी जागीर उसकी पुत्री को दे दी जाय और यदि उसके पुत्री भी न हो तो उसके सम्बन्धियो की जीविका के साधनो का प्रबन्ध कर दिया जाय ताकि उन्हे उस युग से कोई शिकायत

१ फ़रीदी के अनुसार "एक राजपूत"।
२ आरिज़े ममालिक सेना की भरती तथा निरीक्षण इत्यादि करता था।
३ पद, श्रेणी।

न रहे।" कहा जाता है कि एक दिन एक व्यक्ति ने निवेदन किया कि, "अमुक अमीर का, जिसकी मृत्यु हो चुकी है, पुत्र जागीर के योग्य नही।" सुल्तान ने आदेश दिया कि, "जागीर उसे योग्य बना देगी।" तत्पश्चात् किसी ने पुन इस प्रकार की कोई बात न कही।

राज्य की सुख-सम्पन्नता

प्रजा की सुख-सम्पन्नता का कारण यह था कि जागीरदार का स्थानान्तरण उसके द्वारा अत्याचार प्रदर्शित हुये बिना सम्भव न था। उसने जो विधान बना दिया था, उसमे लेशमात्र भी परिवर्तन न करता था। सुल्तान महमूद शहीद[1] के राज्यकाल मे बचत पर ध्यान देने वाले कुछ वजीरो ने राज्य की आय का (लेखा) जब ठीक कराया तो आय मे १० गुने की वृद्धि निकली और किसी भी ग्राम मे दुगुने से कम अन्तर न था। व्यापारियो की सुख-सम्पन्नता मार्गो के सुरक्षित होने तथा उनमे किसी प्रकार का भय न होने के कारण थी। सुल्तान के समस्त राज्यकाल मे किसी भी चोर का पता न था। ऐमा[2] की सम्पन्नता का यह कारण था कि सुल्तान (धार्मिक व्यक्तियो) का भक्त था और प्रत्येक को वजीफे के अतिरिक्त फुतूह[3] प्रदान किया करता था। कोई भी उनके वज़ीफे पर किसी प्रकार की आलोचना न कर सकता था। उसने यात्रियो के लिये बडी-बडी सराये बनवाई और स्वर्गरूपी मदरसो तथा मस्जिदो का निर्माण कराया। सुल्तान अत्यधिक न्याय से सुशोभित था और कोई भी किसी व्यक्ति पर न तो अत्याचार कर सकता था और न कठोरता।

(७६) गुजरात के साधारण तथा सम्मानित व्यक्ति इस बात से सहमत है कि सुल्तान महमूद बेकरा के समान गुजरात मे कोई भी बादशाह नही हुआ। उसने अपने न्याय से जूनागढ का किला, सोरठ का राज्य तथा चाम्पानीर का किला और आसपास के स्थान विजय किये और कुफ्र की प्रथाओ का उस प्रदेश से अन्त करा दिया और इस्लाम की प्रथाये चालू कराई। कयामत तक वहा जो कुछ पुण्य के कार्य सुल्तानो द्वारा होगे वे उसकी कीर्ति-पजिका मे लिखे जायगे। यद्यपि उसके पौत्र सुल्तान बहादुर ने उसकी अपेक्षा अधिक स्थान विजय किये किन्तु उसमे (शासन-प्रबन्ध की) इतनी योग्यता न थी। सुल्तान दोनो बातो मे अद्वितीय था।

ईश्वर को धन्य है कि सुल्तान का युग बडा ही उत्कृष्ट युग था। उस युग मे खुरासान का राज-सिहासन सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा[4] के व्यक्तित्व से सुशोभित था और उसका वजीर अद्वितीय अमीर अली शेर[5] था और मुल्लाई तथा कविता की गद्दी मौलाना जामी[6] द्वारा सुशोभित थी। देहली के राजसिहासन पर सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल लोदी आरूढ था और उसका वजीर बुद्धिमान् तथा अनुभवी मिया बहलोल खा था। मान्डू मे सुल्तान गयासुद्दीन बिन महमूद खलजी और दखिन मे सुल्तान महमूद

१ सम्भवत·—'महमूद तृतीय'।
२ धार्मिक व्यक्तियों।
३ वह उपहार जो आलिमो अथवा सूफियो को बिना मागे प्रदान होता था।
४ फ़रीदी ने उसके वजीर ख्वाजा जहां का भी उल्लेख किया है।
५ मीर अली शेर (निजामुद्दीन) सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का प्रधान मन्त्री था। उसकी मृत्यु १५०० ई० में हुई। वह लेखक भी था।
६ नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी फ़ारसी के बडे प्रसिद्ध कवि हुये हैं। इनका जन्म १४१४ ई० मे तथा मृत्यु १४९२ ई० मे हुई। इनकी कवितायें बड़ी प्रसिद्ध है।

बहमनी सिहासनारूढ था मानो सुल्तान महमूद गाजी की आत्मा इतने वर्षो उपरान्त सुल्तान महमूद बेकरा के रूप मे प्रज्वलित हो गई हो। उसके समस्त कार्य एव उसका आचरण सुल्तान महमूद के समान था। कहा जाता है कि सुल्तान के सिंहासनारोहण के दिन खुदावन्द खा ने, जिसका सुल्तान जामाता था और जो बडा ही योग्य व्यक्ति था, ख्वाजा हाफिज[1] का दीवान सुल्तान के हाथ मे देकर कहा कि, "इसमे से फाल[2] निकालो।" यह गजल परोक्ष से निकली

"हे! जिसका गौरवशाली व्यक्तित्व बादशाही की कबा को सजाता है।"

(७७) इस फाल से राज्य के उच्च पदाधिकारी प्रसन्न हो गये और सुल्तान के लिए शुभ कामनाये करने लगे। सुल्तान ने शेख सादी की 'बोस्ता' खोली तो यह कविता निकली

"हे ईश्वर! अपनी कृपा द्वारा उसकी रक्षा कर। "

इसी बीच मे सुल्तान का दबीर[3] उठ खडा हुआ और उसने दरबार वालो को यह गजल पढ कर प्रसन्न किया

"हे! तेरे मुख से बादशाही का प्रकाश प्रकट होता है। "

(७८) कहा जाता है कि सुल्तान के राज्यकाल मे अनाज कभी महँगा न हुआ। समस्त वस्तुये इतनी सस्ती थी कि तदुपरान्त गुजरात वालो ने इतनी अल्पमूल्यता कभी न देखी। चगेज खा मुगुल की सेना के समान सुल्तान की सेना की कभी पराजय न हुई। सर्वदा विजय तथा सफलता प्राप्त होती रहती थी। उसने आदेश दे दिया था कि सेना वालो मे से कोई भी ऋण न ले और उसने पृथक् खराजी[4] नियुक्त कर दिया था ताकि जिस सैनिक को भी आवश्यकता हो, वह उससे वादे पर ले ले। इसी कारण सूदखोर[5] लोग दुखी रहते थे अपितु वे कुत्ते से भी अधिक नीच समझे जाते थे। सुल्तान कहा करता था कि "यदि मुसलमान ब्याज पर ऋण लेगे तो वे किस प्रकार धर्मयुद्ध कर सकेगे?" उसके सद्विचारो के कारण ईश्वर उसे सर्वदा विजय तथा सफलता प्रदान करता रहता था।

गुजरात मे वृक्षो की जो अधिकता पाई जाती है, उदाहरणार्थ आम, अनार, खिन्नी, जामुन, गूलर, नारियल, बेल, महवा इत्यादि, यह सब उस सुल्तान के कारण है। जो कोई अपनी भूमि पर पौधे लगाता था उसके प्रति कृपादृष्टि रक्खी जाती थी। इसी कारण प्रजा वृक्ष लगाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करती थी। कहा जाता है कि किसी मार्ग पर अथवा किसी घर पर यदि वह देख लेता कि किसी दरिद्र ने कोई वृक्ष लगाया है तो वह घोडे की लगाम रोक कर ठहर जाता और वृक्ष लगाने वाले पर कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए पूछता कि, "जल कहा से देते हो?" यदि वह कहता कि, "मै दूर से लाता हू और इस कारण मुझे कष्ट होता है" तो वहा वह कुआ खुदवा देता और उसे धन प्रदान कर देता था तथा उसे आदेश दे देता था कि, "यदि तू बडी सख्या मे वृक्ष लगायेगा तो पुरस्कृत होगा।" बागे फिरदौस को, जो ५ कोस लम्बा तथा एक कोस चौडा है, उसने लगवाया था। बागे शाबान, जो स्वर्ग के उद्यान को लज्जित (७९) करता है, उसी के राज्यकाल मे लगवाया गया। इसी प्रकार शहरो तथा कस्बो मे यदि उसे कोई

१ ख़्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद हाफ़िज़ फ़ारसी गजल के बड़े प्रसिद्ध कवि हुवे हैं। इनकी ग़ज़लों के संग्रह से फ़ाल निकाली जाती है। इनकी मृत्यु शीराज में १३८६ ई० में हुई।
२ किसी कार्य के करने अथवा न करने के सम्बन्ध मे किसी वस्तु द्वारा परीक्षा करना।
३ सचिव, वह व्यक्ति जो शाही पत्र, विजय पत्र इत्यादि लिखा करता था।
४ फ़रीदी के अनुसार 'खज़ानची'।
५ ब्याज का धन खाने वाले।

खाली दूकान अथवा गिरा पडा घर मिलता तो मुकद्दमो[1] एव मुतसद्दियो[2] से वह उसका कारण पूछता और जिस बात की आवश्यकता होती उसे पूरा करके वह ठीक करा देता। समस्त गुजरात वाले सन्तुष्ट थे और कोई भी दुखी न था।

कहा जाता है कि सुल्तान महमूद अपनी अन्तिम अवस्था मे एबादत मे तल्लीन रहता था और अधिकाश, विलाप किया करता था। एक दिन मलिक सारग ने जिसकी उपाधि किवामुलमुल्क थी और जिसने अहमदाबाद नगर के बाहर सारगपुर का निर्माण कराया था, निवेदन किया कि, "राज्य तथा बादशाही प्राप्त होने के उपरान्त विलाप का क्या कारण है ?" सुल्तान ने कहा, "हे मूर्ख ! मेरे आश्रयदाता शाह आलम कहा करते थे कि 'महमूद का अन्त उत्कृष्ट होगा।' मै जितना अधिक प्रयत्न करता हू अपने आप मे वह योग्यता नही पाता। मेरी अवस्था समाप्त हो रही है। जो कुछ चला जा रहा है वह वापस नही लौटता। इसी कारण मै विलाप करता रहता हू और दुखी रहता हू। खेद है कि अपने आश्रयदाता का मूल्य, जैसा चाहिये था, वैसा मैने नही समझा।"

सुल्तान का शेख सिराजुद्दीन का मुरीद होना

कहा जाता है कि अन्त मे सुल्तान शेख सिराजुद्दीन की सेवा मे, जो अपने समय के अद्वितीय बुजुर्ग थे, पहुचा और उनकी शिक्षा के आशीर्वाद से इस व्याकुलता से उसे मुक्ति प्राप्त हो गई। शेख सिराजुद्दीन दरवेश शेख अली खतीब के खलीफा[3] थे। शेख अली खतीब ने खिलाफत[4] का खिरका[5] कुतुबुल अकताब बुरहानुलहक वश्शरा वद्दीन द्वारा प्राप्त किया था और मार्ग-भ्रष्ट लोगो को सन्मार्ग पर लाया करते थे। (८०) इसी कारण उनकी बडी प्रसिद्धि थी।

एक दिन सुल्तान ने अमीनुलमुल्क नामक अपने एक विश्वासपात्र अमीर से, जो शेख का मुरीद[6] तथा भक्त था, शेख के विषय मे पूछा। अमीनुलमुल्क ने शेख की प्रशसा मे कुछ बाते बताई। सुल्तान के हृदय मे शेख से भेट करने का विचार आरूढ हो गया। उसने अमीनुलमुल्क से कहा, "आज रात्रि मे एशा[7] की नमाज के उपरान्त उस दरीचे की ओर, जो साभर[8] नदी की ओर है, अकेले आ जाना। मुझे तुझसे एक काम है।" अमीनुलमुल्क ने ऐसा ही किया। सुल्तान अकेला हाथ मे एक छोटी सी तलवार लिये हुए बाहर निकला। अमीनुलमुल्क से कहा कि, "शेख के निवास-स्थान की ओर मुझे ले चल।" अमीनुलमुल्क आगे-आगे चल दिया। उसके पीछे-पीछे सुल्तान रवाना हुआ और वे शेख के निवासस्थान पर पहुच गये। सुल्तान बाहर खडा रहा। अमीनुलमुल्क शेख की सेवा मे भीतर चला गया और उसे सूचना भेजी। शेख ने बुलवा लिया। सुल्तान भीतर चला गया। सलाम के उपरान्त हाथ मिलाया। शेख एक पुरानी

१ गांव का मुखिया।
२ निम्न वर्ग का एक अधिकारी जो सम्भवतः ग्रामो के हिसाब किताब तथा अन्य देखभाल से सम्बन्धित था।
३ सूफ़ियो के उत्तराधिकारी भी ख़लीफ़ा कहलाते है।
४ ख़लीफ़ा होने।
५ चीवर।
६ भक्त, चेला।
७ रात्रि की अन्तिम अनिवार्य नमाज जो अधिकांश ८ बजे रात तक समाप्त हो जाती है।
८ फ़रीदी के अनुसार 'साबरमती'।

चारपाई पर बैठे थे। बैठने का सकेत किया। सुल्तान पायती बैठ गया। थोडी देर के उपरान्त सुल्तान ने कहा, "मुझे एक बात पूछनी है। आशा है आप उसका उत्तर ऐसे वाक्यो मे देगे जिन्हे मै समझ सकूँ।" शेख ने कहा, "कहिये।" सुल्तान ने कहा, "फकीर ने सुना है कि आपके प्रयत्न से मार्ग-भ्रष्टता की घाटी मे भटकने वाले सन्मार्ग पर आ जाते है। यदि यह सत्य है तो ईश्वर के लिए इस रहस्य को खोले।" शेख ने कहा, "नि सन्देह, यदि कोई पीडित अपने दुख के विषय मे निवेदन करता है तो दरवेश उसका पथ-प्रदर्शन कर देता है।" सुल्तान ने शेख के चरणो पर सिर रख कर कहा, "उन पीडितो मे महमूद भी है। ईश्वर के लिए आप उसका उपचार कर दे ताकि महमूद वासना के अन्धकार के असमजस से मुक्त हो जाय और बिना किसी शिथिलता के अन्त करण के मार्ग पर अग्रसर हो सके।" शेख ने उत्तर दिया कि, "आपके सिर पर राज्य का चत्र तथा आपके कन्धो पर शासन का बोझ है। इस मार्ग के पथिक को सम्बन्धो को तोडना पडता है ताकि बिना किसी कठिनाई के सफलता प्राप्त हो सके। इस मार्ग की शर्तें सभी को (८१) स्पष्ट है। उनके उल्लेख की आवश्यकता नही।" सुल्तान ने कहा, "आपकी सेवा मे उपस्थित होकर मेरे हृदय मे यही विचार आता है कि यदि आप मुझे अपनी सेवा हेतु स्वीकार कर ले तो मै राज्य त्याग दूँ और सच्चे दिल से सेवक बन जाऊ।" शेख ने इस बात से प्रसन्न होकर कहा, "यदि कोई बादशाह न्यायपूर्वक राज्य करे तो उसकी बादशाही से उसे हानि नही पहुच सकती।"

तत्पश्चात् शेख ने कहा, "आप इस समय लौट जाय और कल मै जो कुछ कहला भेजूँ, उसे स्वीकार करे और उसमे किसी प्रकार की आपत्ति प्रकट न करे।" सुल्तान उठकर अपने निवास-स्थान को चला गया। दूसरे दिन उसने अमीनुलमुल्क को शेख की सेवा मे भेजा और कहा, "जो कुछ शेख कहे उसे सम्पूर्ण रूप से बिना कुछ घटाये बढाये मुझे आकर बताओ।" अमीनुलमुल्क शेख की सेवा मे पहुचा। शेख ने कहा, "अमीनुलमुल्क! सुल्तान मुझे बडा अच्छा आदमी तथा फकीरो का मित्र ज्ञात हुआ। मै सुल्तान की सेवा करना चाहता हू। जाकर मेरी जो कुछ इच्छा है उसे सुल्तान से कह दो। यदि सुल्तान स्वीकार करे तो मुझे कोई सेवा प्रदान कर दी जाय।" अमीनुलमुल्क ने कहा, "सुल्तान की आपके प्रति जो श्रद्धा है वह इस बात से कही अधिक है जो आपके हृदय मे आई है। सेवा की क्या आवश्यकता है? जो कुछ आप कहे वह करेगा।" शेख ने कहा, "यह ठीक है किन्तु सेवा मे बडा लाभ है।" अमीनुलमुल्क उठ खडा हुआ। वह बडे ही असमजस मे था कि, "मैने सुल्तान के समक्ष शेख की प्रशसा अन्य ही प्रकार से की है। अब मैं शेख की इस बात को सुल्तान से किस प्रकार कहू?" क्योकि सुल्तान ने उसे चेतावनी दे दी थी कि जो कुछ शेख कहे उसे मूल रूप से बिना कुछ घटाये बढाये कहा जाय अत जो बाते हुई थी उन्हे उसने कह दिया।

सुल्तान ने कहा, "मुझे स्वीकार है किन्तु शेख से पूछा जाय कि वे कौन सा पद स्वीकार करेगे।" अमीनुलमुल्क ने शेख को सन्देश पहुचा दिया। शेख ने कहा, "मुझे गणित का अच्छा ज्ञान है। वक़्फ के (८२) बहुत से अधिकारी मेरे नायब है। इस्तीफाये ममालिक[1] का पद मुझे प्रदान कर दिया जाय।" सुल्तान ने स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन प्रात काल शेख ने तलवार कमर मे बाधी और घोडा मगवा कर सवार हुए तथा सुल्तान की सेवा मे पहुंचे। मुस्तौफ़ीगीरी[2] की ख़िलअत पहन कर अपने घर लौट

१ इस्तीफाये ममालिक :—मुस्तौफिये ममालिक का कार्य। मुस्तौफिये ममालिक Auditor General के समान होता था। वह व्यय पर नियन्त्रण रखता था।

२ मुस्तौफ़ी के पद की।

आये। नगर वालों ने, जो शेख को गौस[1] तथा कुतुब समझते थे, जब यह हाल देखा तो शेख के प्रति उनकी श्रद्धा का अन्त हो गया और वे उनकी आलोचना करने लगे तथा आपस मे कहने लगे कि, "इस धूर्त, दुष्ट शेख को देखो कि उसने क्या किया ? इतने वर्षों की पवित्रता को त्याग कर धन-सचय किया और धर्म को ससार के हाथ बेच डाला। उसकी समस्त तपस्या सुल्तान को अपना भक्त बनाने के लिए थी।" नगर वाले शेख के विरुद्ध हो गये और उसकी निन्दा तथा शिकायत करने लगे।

शेख कुछ दिन तक नि सकोच तथा चिन्ता किये बिना सुल्तान की सेवा करते रहे। तदुपरान्त उन्होने अमीनुलमुल्क से कहा कि, "सुल्तान से कहो कि मै वृद्ध हो गया हू और मेरा निवासस्थान बडी दूर है। आने-जाने मे मुझे बडा कष्ट होता है। यदि मेरे लिए निकट ही कोई घर निश्चित हो जाय तो मैं सर्वदा सेवा मे उपस्थित रहूगा।" सुल्तान ने अपने शयनागार के निकट उनके लिये एक स्थान निश्चित कर दिया। शेख वहा ठहरे रहे और अन्य लोगो से छिपा कर सुल्तान को शिक्षा देने लगे। अल्प समय मे ईश्वर की देन की वायु ने सुल्तान के हृदय को खिला दिया। तत्पश्चात् शेख ने सुल्तान से मुक्त हो जाने की इच्छा की और पूर्व की भाति एकान्तवास ग्रहण कर लिया, और सुल्तान से कहा कि, "अब आप मुझसे भेंट न करे और यदि आवश्यक हो तो सन्देश अथवा पत्र भेज दिया करे।" क्या ही उत्तम दरवेशरूपी वह सुल्तान था और कितना उत्कृष्ट वह सुल्तान रूपी दरवेश था।

(८३) सुल्तान, शेख सिराजुद्दीन बिन शेख अजीजुल्लाह मुतवक्किल सिद्दीकी का मुरीद था। उनका मकबरा शेखपुर मे बडा प्रसिद्ध है। वह स्थान उन्ही (शेख) का बसाया हुआ है। उसे शहर अहमदाबाद के अधीन बताया जाता है।

यद्यपि सुल्तान ने शिक्षा प्राप्त की थी किन्तु आलिमो तथा विद्वानो की सगत के कारण धार्मिक समस्याओ, कविता, सूफियो की कहानियो तथा इतिहास के विषय मे इस प्रकार वार्तालाप करता था कि आलिमो के अतिरिक्त सभी उपस्थितगण यह समझते थे कि सुल्तान आलिम तथा फकीह[2] है कारण कि वह अपनी सूझ-बूझ तथा बुद्धिमत्ता के कारण अत्यन्त गूढ बाते करता था .

कबीर पंज की ओर प्रस्थान

(८४) सक्षेप मे, ८६४ हि० (१४५९-६० ई०) मे सुल्तान ने कबीर पज[3] की ओर शिकार हेतु प्रस्थान किया और उस स्थान के समीप सेना का अर्ज़[4] किया और फातेहा[5] पढ कर कहा, "यदि ईश्वर ने चाहा तो मैं दूसरे वर्ष नये नगर के बसाने का प्रयत्न करूगा।" क्योंकि फातेहा पढते समय सुल्तान का मुख सोरठ की विलायत की ओर था अत समकालीन बुद्धिमानो ने अनुमान लगाया कि सुल्तान गिरनार के किले को विजय करना चाहता है। सक्षेप मे कबीर पज से वह अहमदाबाद के भव्य नगर की ओर लौट गया।

१ गौस :—जिसे सहायता के लिये पुकारा जा सके। वह मुसलमान सत जो अपनी आध्यात्मिक यात्रा में उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया हो। कुछ लोगो का मत है कि गौस कुतुब की अपेक्षा उच्च श्रेणी का स्वामी होता है। कुछ लोगों का मत है कि कुतुब सबसे ऊँची श्रेणी का स्वामी होता है।

२ फ़िकह अथवा इस्लामी धर्मशास्त्र के नियमो का विद्वान्।

३ फ़रीदी के अनुसार 'कपड वज' (पृ० ५०)।

४ निरीक्षण।

५ कुरान का प्रथम सूरा पढ कर किसी काम के लिये सकल्प करना।

निजाम शाह की सहायतार्थ प्रस्थान

८६५ हि० (१४६०-६१ ई०) मे उसने अहमदाबाद से प्रस्थान करके खारी नदी के तट पर पडाव किया। उस स्थान पर दखिन के बादशाह निजाम शाह बिन हुमायूँ बादशाह का इस आशय का पत्र प्राप्त हुआ कि, "सुल्तान मुहम्मद गोरी के बहकाने से सुल्तान महमूद खलजी ने बहुत बडी सेना ले कर दखिन की विलायत मे प्रविष्ट होकर लूट-मार प्रारम्भ कर दी है। (सुल्तान मुहम्मद गोरी, हुमायूँ बादशाह के राज्यकाल मे सुल्तान महमूद खलजी के पास भाग कर चला गया था।) इसी कारण हम भी नगर से निकल कर तथा चालीस कोस आगे बढकर घाट के निकट युद्ध हेतु तैयार हैं और हमे सुल्तान के आगमन की प्रतीक्षा है।" सुल्तान (महमूद बेकरह) पत्र पाते ही शीघ्रातिशीघ्र दखिन की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करके नद्रबार की विलायत मे पहुच गया। उस मजिल पर निजाम शाह का पत्र पुन प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि, "क्योकि सुल्तान महमूद ने युद्ध मे बडी शीघ्रता की, हमारी ओर से भी कोई कमी न हुई। हमने उसकी सेना को पराजित करके उनके ५० हाथियो को उनसे पृथक् करके अपने अधिकार मे कर लिया। अन्त मे दखिन की सेना लूटने मे व्यस्त हो गई। इसी बीच मे सुल्तान महमूद १२,००० अश्वारोहियो सहित उस स्थान से जहा वह घात लगाये बैठा था, निकला। उस समय हमारे पास कुछ सैनिको से अधिक न थे। इस पर युद्ध मे कोई कमी न की गई। अन्त मे सिकन्दर खा मुझे सेना के शिविर से लेकर बिदर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान महमूद ने बिदर नगर घेर लिया है। इस समय सुल्तान की सहायता के बिना इस कष्ट का अन्त नही हो सकता। अत आप शीघ्रातिशीघ्र पहुच जाय।"

सुल्तान (महमूद बेकरह) ने प्रस्थान किया। जब सुल्तान महमूद खलजी ने सुना कि गुजरात (८५) का बादशाह सुल्तान महमूद अपार सेना लिये हुए बुरहानपुर के मार्ग से निजाम शाह की सहायतार्थ आ रहा है तो बिदर नगर के अवरोध को छोड कर गोंडवाना के मार्ग से अपने राज्य की ओर चल दिया। उस समय गोडवाना के राजा ने, जो साथ था, बताया कि, "इस मार्ग मे बहुत कम जल मिलता है और अत्यधिक जगल तथा कठिन मार्ग है।" सुल्तान महमूद खलजी ने सुल्तान महमूद गुजराती के भय के कारण उसी मार्ग को चुना और निरन्तर कूच करता हुआ रवाना हुआ। दो मजिल की यात्रा वह एक मज़िल मे समाप्त करता था। कहा जाता है कि वह एक ऐसी मजिल पर पहुच गया जहा छ हजार व्यक्ति जल के अभाव के कारण गीदडो तथा गिद्धो का भोजन बन गये। जब वह गोडवाना के पर्वत मे प्रविष्ट हुआ तो बडे कठिन मार्ग का सामना करना पडा। गोंड लोगो ने उसके शिविर पर दो ओर से आक्रमण करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अन्त मे वह बडी कठिनाई से उस पर्वत को पार करके अपने राज्य की सीमा पर पहुचा। तत्पश्चात् उसने गोडवाना के राजा को बन्दी बनाकर उसकी हत्या करा दी। यद्यपि उसने बहुत कुछ कहा कि, "जो सत्य बात थी उसे मैंने पूर्व ही से बता दिया था" किन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ।

सक्षेप मे, सुल्तान महमूद शाह (बेकरह) थानीर[1] कस्बे मे, जो बुरहानपुर के समीप है, पहुचा। अपनी सेना का अर्ज़[2] किया। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि गुजरात के किसी बादशाह के राज्यकाल में इतनी अधिक सशस्त्र सेना न थी। अपितु उस काल में आसपास के बादशाहो मे से किसी ने भी इतनी

१ फ़रीदी के अनुसार 'थानेसर' (पृ० ५०)।
२ निरीक्षण।

बडी सेना लेकर किसी ओर चढाई न की थी। उसके साथ ७३ प्रतिष्ठित अमीर थे। समस्त गुजरात सेना के वेतन के व्यय के लिये था और चार वर्ष तक सुल्तान के खालसे[1] मे एक स्थान भी न था। सुल्तान का व्यय शाही खजाने से, जिसे भूत काल के बादशाह छोड गये थे, चलता था।

कहा जाता है कि इन चार वर्षो मे दो-तिहाई खजानये बयूतात[2] तथा इनाम मे व्यय हो गया था। सक्षेप मे, जब सुल्तान महमूद खलजी अपनी विलायत[3] की ओर वापस हुआ तो निज़ाम शाह ने अपने राजदूत सुल्तान की सेवा मे भेजे और कृतज्ञता प्रकट करने मे कोई कसर न उठा रक्खी और सुल्तान से उस स्थान से अपनी राजधानी को लौट जाने की प्रार्थना की। सुल्तान वहा से अपनी राजधानी की ओर लौट गया।

तदुपरान्त ८६७ हि० (१४६२-६३ ई०) मे सुल्तान महमूद खलजी ने पुन ९०,००० अश्वारोहियों सहित दखिन की ओर प्रस्थान किया और दौलताबाद तक के स्थान नष्ट-भ्रष्ट कर दिये। निजाम शाह ने (सुल्तान महमूद से) सहायता की पुन याचना की। सुल्तान रवाना हुआ और नद्रबार तक पहुचा ही था कि सुल्तान महमूद (खलजी) सुल्तान (बेकरह) की सेना के अग्र भाग के पहुचने के समाचार (८६) पाकर जिस मार्ग से वह इसके पूर्व वापस हुआ था, उसी मार्ग से वापस हो गया और अपनी विलायत[4] को चला गया। सुल्तान अपनी राजधानी मे पहुचा और वहा से उसने सुल्तान महमूद (खलजी) को लिखा कि, "हर बार इस्लामी प्रदेश को हानि पहुचाना सज्जनता का कार्य नही। आप इस असम्भव विचार को अपने मस्तिष्क मे न लाये अन्यथा जैसे ही आप दखिन पर आक्रमण करेगे मैं माँडू पर चढाई कर दूँगा। अब आपको अधिकार है। तदुपरान्त सुल्तान महमूद खलजी ने दखिन की विलायत पर आक्रमण करने से हाथ खीच लिया।

बारूदर पर आक्रमण

८६८ हि० (१४६३-६४ ई०) मे सुल्तान ने धर्मयुद्ध के उद्देश्य से जवाहरदार[5] लोहे के अस्त्र-शस्त्र बहुत बडी सख्या मे तिलगाना के राज्य से मँगवाये। ८६९ हि० (१४६४-६५ ई०) मे सुल्तान ने बारूदर[6] पर्वत की ओर चढाई की और उस किले को विजय कर लिया और अपनी राजधानी को लौट गया।

सुल्तान का न्याय

८७० हि० (१४६५-६६ ई०) मे सुल्तान ने शिकार हेतु अहमदनगर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे बहाउद्दीन बिन अलिफ खा उर्फ़ अलाउद्दीन बिन सोहराब ने सुल्तान के सिलाहदार[7] की अकारण हत्या कर दी और भाग कर छिप गया। सुल्तान ने मलिक हाजी एमादुलमुल्क तथा मलिक कालवी अजदुलमुल्क को आदेश दिया कि वे जाकर जहा कही भी वह मिले उसे पकड लाये। मलिक हाजी तथा मलिक कालू ने पूछताछ करके बहाउद्दीन का पता लगवा लिया और उसके दो सैनिको को छल तथा

१ वह भूमि जिसका प्रबन्ध सीधे केन्द्रीय शासन की ओर से होता था।
२ बयूतात :—बादशाह के महल के निजी व्यय का खजाना।
३ राज्य।
४ राज्य।
५ एक प्रकार का लोहा।
६ सम्भवत: 'बरूर'।
७ वह अधिकारी जो सुल्तान के अस्त्र-शस्त्र रखता था।

धूर्ततापूर्वक इस बात पर तैयार किया कि वे सुल्तान के समक्ष इस बात को स्वीकार कर ले कि, "यह अपराध हमने किया है और बहाउद्दीन निरपराध है। तुम्हे इससे अधिक दड न मिलेगा कि सुल्तान तुम्हे बन्दी बनवा देगा। कुछ दिन उपरान्त हमारी प्रार्थना पर वह तुम्हे मुक्त कर देगा।" उन दोनो मूर्खों ने अपने सरल स्वभाव के कारण सुल्तान की सेवा मे यह अपराध स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने तत्काल दोनो की हत्या का आदेश दे दिया। कुछ दिन पश्चात् सच बात का पता चल गया। सुल्तान ने कहा कि, "इन दोनो दुष्टो तथा धूर्तो ने दो निरपराध मुसलमानो की हत्या करा दी है अत उनके बदले मे यदि मै इनकी हत्या न कराऊगा तो कल कयामत मे ईश्वर के समक्ष क्या उत्तर दूंगा?" सुल्तान ने आदेश दिया कि दोनो अमीरों की एक साथ हत्या कर दी जाय। तदुपरान्त सुल्तान के राज्यकाल मे किसी निरपराध की हत्या न हुई।

(८७) उसने मलिक बहाउद्दीन इख्तियारुलमुल्क को एमादुलमुल्क की उपाधि देकर विजारत का पद प्रदान किया। इसके उपरान्त ८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे उसने गिरनार के किले के काफिरो पर चढाई की।

सुल्तान की गिरनार के राज्य पर चढाई और उस प्रदेश को विध्वस करने के उपरान्त वापसी और सेना का पुन भेजना, राजा मदलीक से, जो बडा प्रतिष्ठित काफिर था, चत्र तथा धन-सम्पत्ति प्राप्त करना और सुल्तान द्वारा उस किले पर पुन. चढाई, ईश्वर की कृपा से उस पर विजय तथा राय का सुल्तान महमूद के प्रयत्न से मुसलमान होना

घटनाओ का उल्लेख करने वाले इस प्रकार उल्लेख करते है कि सुल्तान महमूद बेकरह के राज्यकाल मे गिरनार तथा जूनागढ के राजा राव मदलीक ने विद्रोह कर दिया। उसे गुजरात के बादशाह की कुछ चिन्ता न थी और वह उसे अपने से श्रेष्ठ न समझता था। इसका कारण यह था कि गिरनार का किला बडा ही भव्य था और किसी बादशाह को उसे विजय करने का विचार न हुआ था एवं जूनागढ का किला जिसके कोट की दीवार सिकन्दर की दीवार[1] के समान थी, उसका निवासस्थान था।

सोरठ

(८८) सोरठ सरीखा राज्य उसके अधीन था, मानो मालवा, खानदेश तथा गुजरात तीनो राज्यो की विशेषताये ईश्वर ने राय के उस एक राज्य मे प्रदान कर दी हो। इन तीनो राज्यो मे जो अनाज तथा फल उत्पन्न होता था उसके अतिरिक्त सोरठ के राज्य से भी लाया जाता था। (तीनो राज्य वाले) अपने बन्दरगाहो मे सोरठ के बन्दरगाह से सामान लाते थे। ईश्वर को धन्य है कि आजकल वही सोरठ है जहा की दरिद्रता के विषय मे सुन कर ग्राहक वापस चले जाते है। वह डाकुओ, दुष्टों, विद्रोहियों तथा उपद्रवियों का निवासस्थान है। अधिकाश प्रदेश उजाड है और वहा अधिकतर पीडित, फकीर, यात्री, उदाहरणार्थ योगी इत्यादि रहते हैं। वहा के व्यापारी झूठे तथा चोर है। वहा के आमिलों[2] पर ईश्वर का कोप रहता है। वहा के जागीरदार दरबार द्वारा दडनीय रहते है। वहा पर्यटक उल्टी नौका पर

१ अत्यन्त दृढ दीवार की 'सद्दे सिकन्दर' अथवा 'सिकन्दर की दीवार' से उपमा दी जाती है।
२ भूमि कर वसूल करने वाले।

बैठे हुए कापते रहते है। वहा की ऐमा वाले[1] सनद लिये हुए दुखी पडे रहते है कारण कि उन्हे कुछ प्राप्त नही होता। इस दुर्दशा का कारण वहा के हाकिमो का स्थायी न होना है। एक वर्ष मे न जाने कितने व्यक्ति वहा हाकिम नियुक्त होते है।

सक्षेप मे सोरठ के राज्य के डाकू सर्वदा गुजरात के आस पास के स्थानो की लूट मार किया करते थे (८९) और वहा के चोर चोरी करने मे बडे ढीठ थे। इसके पूर्व अहमदाबाद नगर के निर्माता सुल्तान अहमद ने सोरठ के राज्य तथा उसके किलो पर विजय प्राप्त करने का सकल्प किया था, किन्तु इसमे सफलता न होते हुए देख कर उसे लूट कर वापस चला गया था। इसी कारण सुल्तान रात दिन गिरनार के किले की विजय की चिन्ता किया करता था किन्तु वहा के किले की दृढता एव खाद्य सामग्री के बाहुल्य के कारण वह उपेक्षा करता रहता था। अन्त मे ८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे इस्तेख़ारे[2] के उपरान्त उसने गिरनार के किले के काफिरो की पराजय हेतु प्रस्थान किया।..　.

गिरनार के तीनो ओर गुलाई मे पर्वत स्थित है किन्तु उत्तर की ओर यह पर्वत से मिला है। दक्षिण (९०) की ओर एक दर्रा है जो १२ कोस लम्बा है। उसके मध्य मे ऐसा घना जगल है जिसमे से घोडे भी नही चल सकते। उसमे अत्यधिक गुफाये है और वन पशुओं तथा पक्षियो के अतिरिक्त वहा मनुष्य नही रहते केवल काफिरो का एक समूह रहता है जो खान्त कहलाता है। वे भी वन पशुओ के समान होते है और पर्वत के आचलो मे निवास करते है। यदि कोई सेना उन पर आक्रमण करती है तो वे भाग कर जगल तथा गुफाओ मे घुस जाते है। उस जगल मे बहुत से ऐसे विचित्र प्रकार के वृक्ष है, जिनके नाम भी कोई नही जानता और वे केवल उसी भूभाग मे पाये जाते है। उस पर्वत मे मेवेदार वृक्ष उदाहरणार्थ आम, खिन्नी, जामुन, गूलर, इमली, आवला इत्यादि बहुत बडी सख्या मे पाये जाते है। गिरनार पर्वत के आचल के निकट तथा पश्चिम दिशा मे तीन चार बाणो के पहुचने की दूरी पर तली[3] का पथरीला मार्ग जाता है। उसके ऊपर एक किला बना हुआ है जो जूनागढ के नाम से प्रसिद्ध है जिसके कोट की दीवार सिकन्दर की दीवार के समान दृष्टिगत होती है। उसमे तीन द्वार है। एक पश्चिम दिशा के सामने और दूसरा पूर्व दिशा के सामने, तीसरा उत्तर दिशा के सामने। उत्तर दिशा के सामने के द्वार मे प्रविष्ट होने पर पश्चिम दिशा के द्वार के सामने वाले द्वार मे प्रविष्ट होना पडता है।

जूनागढ नाम रखने का कारण सोरठ वाले यह बताते है कि भूतकाल मे सोरठ के राज्य के राजा की राजधानी बथली नामक स्थान मे, जो जूनागढ से ५ कोस पर स्थित है, थी। बथल[4] तथा जूनागढ के मध्य मे ऐसा जगल था जिसमे न तो घोडे चल सकते थे और न मनुष्य। राजा की कई पीढिया वहा राज्य कर चुकी थी। एक दिन एक लकडहारा बडे परिश्रम से उस जगल मे प्रविष्ट हुआ। शनै-शनै वह एक ऐसे स्थान पर पहुच गया जहा उसे पत्थर की एक दीवार द्वार सहित दृष्टिगत हुई। वहा से वापस होकर उसने इसका उल्लेख राजा से किया। राजा ने आदेश दिया कि जगल काट डाला जाय। उसके बीच में वह किला मिला। उसके विषय मे राजा ने जब उस प्रदेश के वृद्धो एव योग्य इतिहासकारो से पूछा तो

१ धार्मिक व्यक्तियों तथा विद्वानों को दी जाने वाली भूमि।

२ .क़ुरान के कुछ वाक्यो को पढकर किसी कार्य के करने अथवा न करने के विषय मे ईश्वर की इच्छा का पता लगाना।

३ फ़रीदी के अनुसार 'वनथली जो जूनागढ के दक्षिण-पश्चिम में ८ मील पर स्थित है और एक ग्राम है'। (पृ० ५२)

४ पुस्तक में 'बथल'।

उन्होने कहा, "हमे इस विषय मे कोई ज्ञान नही।" उसी दिन से उस किले को जूनागढ कहने लगे अर्थात् 'प्राचीन किला जिसके निर्माण-काल तथा निर्माता के विषय मे कोई ज्ञान न हो।' किले के मध्य मे दो बावलिया है। एक को 'आरी' तथा दूसरी को 'चरी' कहते है। उसमे दो कुएँ है। एक को नोखन तथा दूसरे को अगुलिया कहते है।

(९१) इस भूभाग के राजा का नाम राव मदलीक था। हिन्दुओ के इतिहास मे लिखा है कि १९,००० वर्ष से राव मदलीक के पूर्वज वहा राज्य करते चले आये है। इस बीच मे एक बार सुल्तान मुहम्मद शाह बिन तुगलुक शाह, देहली के बादशाह, के राज्यकाल मे यह किला विजय हुआ था और एक बार गुजरात के बादशाह अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह के राज्यकाल मे । प्रत्येक बार हिन्दुओ ने अपनी शक्ति से उसे उनके गुमाश्तो[1] से छीन लिया।

सुल्तान की जूनागढ पर आक्रमण की तैयारी

कहा जाता है कि जब सुल्तान महमूद ने गिरनार तथा जूनागढ को विजय करने का सकल्प किया तो उसने खजानेदार[2] को आदेश दिया कि "पाच करोड नकद धन जिसमे सोने के अतिरिक्त कुछ अन्य न हो अपने साथ लो।" कूरबेगी[3] को आदेश दिया कि, "१७०० मिस्री[4], यमनी[5], मगरिबी[6] तथा खुरासानी[7] तलवारे जिनमे से प्रत्येक की मूठ गुजरात की तोल से छ सेर से लेकर ४ सेर सोने तक की हो तथा ३३०० अहमदाबादी तलवारे जिनमे से प्रत्येक की मूठ ५ सेर से लेकर ४ सेर (गुजरात की तोल से) चादी तक की हो, १७०० कटारे तथा जमधर जिनमे से प्रत्येक की मूठ ३ सेर से २½ सेर तक सोने तक की हो, अपने साथ ले लो।" आखुरबेगी[8] को आदेश दिया कि, "२००० अरबी तथा तुर्की घोडे जीन सहित अपने साथ ले लो।"

जूनागढ का अवरोध

सक्षेप मे जब सुल्तान ने जूनागढ के किले को घेर लिया तो आसपास के काफिर अपने परिवार को लेकर एक ऊबड-खाबड दर्रे मे चले गये और स्वय मरने के लिये तैयार हो गये। उन्होने निश्चय कर लिया कि "जो कोई यहा हमारे ऊपर आक्रमण करेगा तो या तो हम स्वय मर जायेगे और या उनकी हत्या कर देगे।"

महाचला दर्रे की विजय

एक दिन सिन्ध प्रदेश के शाहजादे तुगलुक खां ने सुल्तान से निवेदन किया कि, "लोग कहते है। कि महाचला नामक दर्रा बडा ही दुर्गम है और वहा कदापि कोई सेना नही पहुच सकी है और न उसे

१ प्रतिनिधियों।
२ कोषाध्यक्ष।
३ वह अधिकारी जो शाही शस्त्रागार की देखरेख करता था।
४ मिस्र की।
५ यमन की।
६ मराको।
७ खुरासान की।
८ शाही घोड़ों की देखभाल करने वाला अधिकारी।

विजय कर सकी है।" सुल्तान ने कहा, "यदि ईश्वर ने चाहा तो मै विजय करूगा।" एक दिन सुल्तान ने शिकार हेतु प्रस्थान किया और महाचला दर्रे की ओर रवाना हुआ। हिन्दुओ ने जब उनकी सख्या कम देखी तो वे असावधान रहे और समझने लगे कि "वे लोग हम पर आक्रमण न करेगे।" अचानक सुल्तान ने उन पर आक्रमण कर दिया। काफिर लोग थोडा सा युद्ध करके भाग खडे हुए और जगल मे घुस गये।

जब शाही सेना को ज्ञात हुआ कि सुल्तान ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया है तो वह भी पीछे-पीछे (९२) पहुच गई। थोडे से लोगों को दर्रे के बाहर छोड दिया और सेना पैदल दर्रे मे प्रविष्ट हो गई। अधिकाश हिन्दुओ के परिवारो को मुसलमानो ने बन्दी बना लिया।

किले की विजय का प्रयत्न

सुल्तान विजय तथा सफलता प्राप्त करके अपने शिविर को वापस चला गया और अवरोध के सम्बन्ध मे अत्यधिक प्रयत्नशील हो गया। कहा जाता है अवरोध के चार दिनो मे ५ करोड धन नकद, घोडे, तलवारे तथा कटार सभी सेना को प्रदान कर दिये ताकि वे किले की विजय हेतु अत्यधिक प्रयत्न करे और शिथिलता प्रदर्शित न करे।

सुल्तान की वापसी

उसने शाही सेना सोरठ के राज्य के चारो ओर इस आशय से भेजी कि वे उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दे। जब सेना को अपार लूट की धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गई तो राव मदलीक ने अपने प्रतिनिधियो को भेज कर दीनता एव निष्ठा प्रदर्शित की। सुल्तान ने उस वर्ष किले की विजय को स्थगित कर देना उचित समझ कर अपनी राजधानी की ओर प्रस्थान किया।

राव मंदलीक के विरुद्ध सेना का भेजा जाना

८७२ हि० (१४६७-६८ ई०) मे सुल्तान ने सुना कि "राव मदलीक जब सवार होकर कही जाता है तो मूर्तिपूजा हेतु छत्र को सामने कर देता है और जडाऊ बहुमूल्य आभूषण पहन कर निकलता है।" सुल्तान ने इस बात को अपने लिये अत्यन्त अपमानजनक समझ कर ४०,००० अश्वारोहियो तथा अत्यधिक हाथियो (की सेना) को नियुक्त करके आदेश दिया कि या तो उसके छत्र तथा आभूषण पर अधिकार जमा ले और या उसके राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर दे। जब राव मदलीक को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने तत्काल चत्र एव आभूषण उचित उपहार सहित सुल्तान की सेवा मे भेज दिये। सेना ने वापस होकर सुल्तान के चरणो का चुम्बन करने को सम्मान प्राप्त किया। सुल्तान ने आभूषणों को वकीलों[1] को प्रदान कर दिया।

८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) मे समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान महमूद खलजी की मृत्यु हो गई और उसका ज्येष्ठ पुत्र गयासुद्दीन सिहासनारूढ हो गया है। कुछ अमीरो ने निवेदन किया कि "दीन[2] को शरण प्रदान करने वाले शहशाह अहमद शाह सुल्तान के निधन के उपरान्त सुल्तान महमूद खलजी ने गुजरात पर आक्रमण किया था। इस समय यदि आप मालवा पर आक्रमण करे तो उस पर सुगमता-

१ सम्भवत राव के प्रतिनिधियों को।
२ इस्लाम।

पूर्वक विजय प्राप्त हो जायगी।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि "यह बात एक मुसलमान के लिये उचित नही कि वह अपने भाई मुसलमान के राज्य की इच्छा करे, चाहे बादशाह जीवित हो अथवा उसकी मृत्यु हो गई हो।"

गिरनार पर आक्रमण

उसने ८७४ हि० (१४६९-७० ई०) मे पुन सोरठ पर चढाई करने के लिये सेना भेजी और उसे नष्ट-भ्रष्ट करके लौट आया। कुछ दिन उपरान्त सुल्तान ने गिरनार के किले की विजय के उद्देश्य (९३) से सोरठ के राज्य की ओर प्रस्थान किया और निरन्तर कूच करता चला गया। यह समाचार पाकर राव मदलीक बिना बुलाये सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि "सुल्तान जो सेवा भी सिपुर्द करे दास हृदय से उसे सम्पन्न करने के लिये उद्यत है। बिना अपराध बताये हुये अपने आज्ञाकारी को नष्ट करने का आप क्यो प्रयत्न कर रहे है?" सुल्तान ने कहा, "कुफ्र से बढकर कौन-सा अपराध हो सकता है? यदि तू शान्ति चाहता है तो तौहीद[1] का कलमा पढ और हृदय से मुसलमान हो जा ताकि तेरे राज्य को अन्य अक्ताओ सहित तुझे प्रदान कर दूँ अन्यथा मै तुझे नष्ट-भ्रष्ट कर दूँगा।"

जब राव मदलीक ने यह हाल देखा तो रातोरात भाग कर किले मे प्रविष्ट हो गया। जिस समय तक वह शाही सेना मे रहा, उसके प्रतिनिधियों ने अत्यधिक खाद्य सामग्री एकत्र करके गिरनार तथा जूनागढ के किलो को दृढ बना लिया। जिस दिन सुल्तान पर्वत के आचल मे पहुचा तो काफिर लोग चीटियो एव टिड्डियो के समान किले तथा पर्वत से उतरकर युद्ध में तल्लीन हो गये। अत्यधिक युद्ध के उपरान्त वे पराजित होकर भाग खडे हुये और गिरनार के किले पर चढ गये। दो दिन तक इसी प्रकार युद्ध होता रहा। तीसरे दिन सुल्तान स्वय युद्ध के लिये निकला। प्रात काल से सायकाल तक युद्ध होता रहा। जब सुल्तान की सेना ने ज़ोर लगाया, तो काफिर भागकर गिरनार के किले के ऊपर चले गये। सुल्तान ने सेना को मोरचे बाट दिये और प्रत्येक अमीर को एक स्थान पर नियुक्त कर दिया और जूनागढ के किले को घेर लिया। काफिर लोग नित्य किसी न किसी ओर पहुच कर युद्ध करते थे। एक दिन आलम खा फारूक़ी के, जो एक प्रतिष्ठित अमीर था और जिसका महल अभी तक अहमदाबाद मे प्रसिद्ध है, मोरचे पर एक फिदाई[2] पहुच गया और उसकी हत्या करके भाग गया। सुल्तान ने सावधान रहने का अत्यधिक प्रयत्न किया और हिन्दू लोग विवश हो गये। राव मदलीक के वजीर तनहल[3] नामक बक्काल ने किले वालों से परामर्श किया और कहा, "इस बार सुल्तान महमूद किले को विजय किये बिना हमारे सिर पर से न हटेगा अत हमारे लिये जूनागढ मे रहना गिरनार के किले में रहने से अच्छा है कारण कि वह इससे अधिक दृढ है और उसमे खाद्य-सामग्री अधिक है।" किले वालों ने उसके मतानुसार राजदूतों को सुल्तान की सेवा मे भेज कर निवेदन कराया कि, "सुल्तान हमे क्षमा करके हमारे हृदय को अपने वश मे कर ले और (९४) हमारे परिवार वालो से कोई रोक-टोक न करे ताकि हम अपने परिवार को लेकर किले से निकल जाय और किले को सुल्तान के दासो को सौप दे।" सुल्तान ने कहा, "अच्छा है।" वे अपने परिवार को

१ एकेश्वरवाद अथवा इस्लाम का कलमा 'ला इलाहा इल्लिल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'।

२ फ़िदाई इस्माईली मुसलमानों की एक शाखा जो १०वी शताब्दी ईसवी से लेकर १४वी शताब्दी ईसवी तक छिप छिप कर सुन्नी मुसलमान अधिकारियों तथा मुसलमानों की हत्या कर देते थे। वे अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राण त्याग देना बहुत बड़ा पुण्य तथा साधारण बात समझते थे।

३ फ़रीदी के अनुसार 'विट्ठल' (फ़रीदी पृ० ५६)। यही उचित ज्ञात होता है।

लेकर गिरनार के किले की ओर रवाना हुये। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने लूट-मार का आदेश दे दिया। सेना भाग कर पर्वत के मध्य मे पहुच कर युद्ध करने लगी। उस दिन बहुत से मुसलमान शहीद हुये और हिन्दुओ को नरक भेज दिया गया। किन्तु हिन्दुओं ने अपने परिवार को गिरनार के किले पर पहुचा दिया और जूनागढ का किला विजय हो गया। वे प्रतिदिन गिरनार के किले से निकल कर युद्ध करते थे। जब अधिक समय के उपरान्त खाद्य-सामग्री का अभाव हो गया तो उन्होने अपने प्राणो की रक्षा की याचना की। सुल्तान ने कहलाया कि, "यदि वे इस्लाम स्वीकार कर ले तो उनका प्रस्ताव स्वीकार हो सकता है।"

सुल्तान की विजय

राव मदलीक ने किले से नीचे उतर कर धरती चुम्बन किया और किले की कुजी सुल्तान के दासो को दे दी। यह घटना ८७७ हि० (१४७२-७३ ई०) मे घटी। सुल्तान ने राव से तौहीद का कलमा[१] पढने के लिये कहा। उसने तत्काल कलमा पढ कर सुल्तान के क्रोध की अग्नि से, जो नरक के समान थी, मुक्ति प्राप्त कर ली। तत्पश्चात् राव ने कहा कि, "आप की भेट के पूर्व शाह शम्सुद्दीन बुखारी ने, जिनका मजार ओना कस्बे के निकट है, मेरे हृदय को इस्लाम की सत्यता स्वीकार करने की ओर प्रेरित किया था, इस समय सुल्तान की कृपा से मैने जिह्वा तथा हृदय से इस्लाम स्वीकार कर लिया", किन्तु कहा जाता है कि वह गिरनार पर्वत तथा अपने राज्य को स्मरण करके फूट फूट कर रोया करता था।

'(तारीखे) बहादुर शाही' के लेखक ने जो कुछ लिखा है वह यही है किन्तु गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से सुल्तान के अन्तिम बार गिरनार तथा जूनागढ को विजय करने का अन्य ही कारण ज्ञात होता है। वह इस प्रकार है कि राव मदलीक का वजीर तनहल[२] बक्काल, जिसके अधिकार मे समस्त शासन-प्रबन्ध था, उसका विरोधी बन गया था। इसका कारण बक्काल की पत्नी थी जो अपने काल मे सुन्दरता मे अद्वितीय थी।

(९५) एक दिन राव मदलीक उसकी सुन्दरता देखकर उस पर आसक्त हो गया और उसने अत्यधिक प्रयत्न के उपरान्त उस पर अधिकार जमा लिया। उसका पति इस बात से अत्यन्त रुष्ट होकर उसके विनाश का प्रयत्न करने लगा। उसने धूर्ततापूर्वक उससे (राव से) कहा, "किले की खाद्य-सामग्री पुरानी हो गई है और नष्ट हो रही है। यदि आदेश हो तो उसे बाहर निकाल कर मै नई सामग्री एकत्र करू।" क्योकि राव का समस्त शासन-प्रबन्ध उसके परामर्श द्वारा सम्पन्न होता था अत राव ने कहा, "ऐसा क्यों नही करते।" उसने खाद्य-सामग्री नीचे उतरवानी प्रारम्भ कर दी। वजीर ने गुप्त रूप से अपने आदमी सुल्तान की सेवा मे भेज दिये और निवेदन कराया कि "यदि इस समय सुल्तान किले की विजय का सकल्प करे तो इस समस्या का सुगमतापूर्वक समाधान हो सकता है।" सुल्तान प्रसन्न हो गया और उसी दिन जूनागढ तथा गिरनार की ओर रवाना हो गया और उसने निरन्तर यात्रा करते हुये वहां पहुच कर युद्ध के उपरान्त दोनों किलो पर विजय प्राप्त कर ली।

कुछ लोग राव मदलीक के इस्लाम स्वीकार करने का कारण यह बताते है कि जब राव मदलीक किले के नीचे उतरा और सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो सुल्तान उसे अपने साथ लेकर अहमदाबाद पहुचा। एक दिन उसने रसूलाबाद की ओर, जो शाह आलम का निवासस्थान था और जहां उनका

१ देखिये पृ० ३१३ नोट न० १।
२ 'विट्ठल' (फ़रीदी पृ० ५७)।

मजार है, पहुचा तो उसने शाह आलम के दरबार के समक्ष घोडों, हाथियों तथा मनुष्यों की बहुत बडी भीड देखी। राव ने पूछा, "यह किस अमीर का घर है?" लोगो ने बताया कि, "यह शाह आलम का दरबार है।" राव ने पूछा, "वे किसके सेवक तथा किसके अधीन है?" लोगों ने बताया "खुदा के अतिरिक्त उनका किसी से सम्बन्ध नही।" राव ने पूछा, "यह राजसी ठाठ-बाट किस प्रकार प्राप्त हुये?" लोगों ने कहा, "खुदा देता है।" राव ने कहा, "मै एक बार उनकी सेवा मे उपस्थित होना चाहता हू।" (९६) जैसे ही राव की दृष्टि शाह आलम पर पडी उसने कहा, "जो मुसलमान लोग कहते है, वह मुझे भी बताइये।" शाह आलम ने इस्लाम का कलमा सिखाया। उसने जिह्वा तथा हृदय से उसकी सत्यता स्वीकार की। अल्लाह ने उसे शाह आलम के दर्शन द्वारा इस्लाम से सम्मानित किया।

सक्षेप मे, उस समय किले मे तोप तथा बन्दूक बडी कम सख्या मे थी। किले वाले पत्थर से और कभी कभी बाणो तथा बन्दूको से युद्ध करते थे। दीर्घ काल तक प्रयत्न के बावजूद सुल्तान किले को विजय न कर सका। सुल्तान बडा दुखी हुआ। उसने खुदावन्द खा वजीर को, जो जफर[1] विद्या मे अद्वितीय था, और जिसने उस समय विजारत का पद त्याग दिया था और अहमदाबाद मे एकान्तवास ग्रहण कर लिया था, लिखा कि, "मेरे प्रयत्न एव चेष्टा मे कोई कमी नही होती किन्तु अभी तक किले पर विजय प्राप्त नही होती दिखाई पडती। मैंने यह सकल्प कर लिया है कि या तो मैं विजय प्राप्त करूगा और या प्राण त्याग दूँगा।" खुदावन्द खा ने उत्तर मे लिखा कि, "जिन अमीरों को अवरोध का आदेश हुआ है तथा जिन्हे मोरचे दिये गये हैं, उनके नाम लिख कर भेज दिये जाय।" उसके पास नाम भेज दिये गये। खान ने प्रत्येक स्थान को जिस जिसके लिये वह उपयुक्त था, लिख कर सुल्तान की सेवा मे भेज दिया और निवेदन किया कि, "मोरचो का वितरण इसी प्रकार किया जाय और अमुक दिन किले को विजय करने का प्रयत्न करे। ईश्वर ने चाहा तो विजय हो जायगी।" सुल्तान ने जिस प्रकार खान ने लिखा था, उसी प्रकार व्यवस्था कराई। ईश्वर ने उसी दिन सुल्तान को विजय प्रदान कर दी।

मुस्तफाबाद नामक नगर का बसाया जाना

(९७) इसके उपरान्त सुल्तान ने प्रतिष्ठित सैयिदो, आलिमो, तथा काजियो को गुजरात नगर एव कस्बे से लाकर जूनागढ एव उसके कस्बो मे नियुक्त किया और उनके निवासस्थान की व्यवस्था करा दी और उसको बसाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। जहा पनाह नामक किले का निमार्ण भी शुरू करा दिया। वहा उसने बडे ऊचे ऊचे महल बनवाये। उसने अमीरों को आदेश दे दिया कि वे अपने अपने लिये भव्य भवनो का निर्माण कराये। अल्प समय मे अहमदाबाद सरीखा नगर बस गया। उसका नाम मुस्तफाबाद रक्खा गया। सोरठ का राज्य बिना किसी प्रतिस्पर्धी के सुल्तान के अधिकार मे आ गया। समस्त ज़मीदारों ने आज्ञाकारिता प्रदर्शित करते हुये जो कर उन्हे अदा करना था, बिना मागे ही अदा कर दिया।

शासन-प्रबन्ध को सुव्यवस्थित करना

इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुये कि चम्पानीर के राजा जयसिह बिन गगदास ने बरोदा तथा दभोई के विद्रोहियो का पक्षपात करते हुये उन्हें शरण दे रक्खी है और उपद्रव तथा विद्रोह की योजना

१ भविष्यवाणी करने से सम्बन्धित एक प्रकार का ज्ञान। इमाम जाफ़र सादिक के विषय मे यह प्रसिद्ध है कि यह ज्ञान उन्ही का ईजाद किया हुआ है।

बना रहा है। मन्दू के बादशाह से मिलकर उससे सहायता की आशा कर रहा है। अहमदाबाद के विद्रोही भी जिस प्रकार खरबूजे को देखकर खरबूजा रग पकडता है उन्ही विद्रोहियो के समान आचरण कर रहे है।" सुल्तान ने मलिक जमालुद्दीन असलहादार[1] बिन मलिक शेख़ को मुहाफिज खा की उपाधि द्वारा सम्मानित किया और उसे अहमदाबाद तथा आसपास के स्थानो की फौजदारी[2] प्रदान की। मलिक ने इस कार्य हेतु इतना अधिक प्रयत्न किया कि चोरों तथा डाकुओ का कोई चिह्न भी न रहा। नगर तथा ग्रामनिवासी द्वार खोल कर निश्चिन्त होकर सोते थे। यात्री निश्चिन्त होकर अपना सामान लिये हुये यात्रा करते थे। मुहाफिज खा के कार्य को सफलता प्राप्त हो गई। मलिक मुहाफ़िज खा के पुत्र ने ऐसे ऐसे विद्रोहियों से सलामी[3] वसूल की जिन्होने इससे पूर्व कभी किसी को सलामी न अदा की थी। सुल्तान ने कुछ दिन उपरान्त मलिक को समस्त नगर का शासन-प्रबन्ध सौप दिया। उसने इस कार्य को भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। कुछ दिन उपरान्त वह मुस्तौफिये ममालिक[4] हो गया। उसने इस्तीफा की सेवाये भी भली भाति सम्पन्न की। कुछ समय पश्चात् उसे वजीर का पद प्रदान कर दिया गया और पिछले पद भी उसने उसी के पास रहने दिये जिनका प्रबन्ध उसके गुमाश्ते[5] करते थे। यह मुहाफिज खा (९८) 'तारीखे बहादुरशाही' के लेखक का दादा था।

सक्षेप मे, सुल्तान ने बरोदा को भी सुव्यवस्थित करने के लिये अमीरो को नियुक्त किया। मलिक बहाउलमुल्क को, जिसकी उपाधि एमादुलमुल्क थी, सोनखेडा बहादुरपुर के थाने मे नियुक्त किया तथा मलिक सारग किवामुलमुल्क को कोदरा[6] थाने मे नियुक्त किया। ताज खा बिन सालार को नोरख[7] थाने मे, जो महेन्द्री नदी के तट पर स्थित है, नियुक्त किया। इन नियुक्तियो के कारण राय जयसिह ने विद्रोह करना बन्द कर दिया।

राव मंदलीक को उपाधि

सुल्तान ने ८७६ हि० (१४७१-७२ ई०) मे राव मदलीक को खाने जहा की उपाधि द्वारा सम्मानित किया और उसे जागीर प्रदान की। उसने सोने की समस्त मूर्तिया जो राव मदलीक के मन्दिर से प्राप्त की थी, सेना को पुरस्कार मे प्रदान कर दी।

सिन्ध पर आक्रमण

तत्पश्चात् उसने सिन्ध की विलायत[8] पर आक्रमण किया। एक दिन मे ६१ कोस का मार्ग चलकर सिन्ध की विलायत के जमीदारो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। वह भूमि खारी है और वर्षा के समय वह जल मे डूबी रहती है। उसका एक छोर समुद्र से मिला हुआ है और समुद्र का जल भी उस भूमि पर

१ असलहादार —वह अधिकारी जो अस्त्र-शस्त्र की देख-रेख करता था।
२ फौजदार —सरकार के मुख्य सैनिक तथा असैनिक कार्यों पर नियन्त्रण रखने वाला अधिकारी।
३ कर।
४ मुस्तौफिये ममालिक :—देखिये पृ० ६३ नोट न० २।
५ प्रतिनिधि, एजेन्ट।
६ फ़रीदी के अनुसार 'नोरखा' (पृ० ५६)।
७ फ़रीदी के अनुसार 'दखना' (पृ० ५६)।
८ राज्य।

पहुच जाता है। सक्षेप मे उस भूमि पर कही कही छ कोस तक और कही कही कुछ अधिक अथवा कम सर्वदा जल खारी रहता है। वहा की भूमि कृषि योग्य नही। वहा नमक तथा मछली के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु उत्पन्न नही होती।

कहा जाता है कि उस अभियान के समय सुल्तान के साथ कुल ६०० अश्वारोही थे। सिन्ध के आस-पास के जमीदारो के, जो 'सूमरा' तथा 'सूदा' कहलाते हैं, २४००० अश्वारोही एकत्र हुये थे। सुल्तान के पहुचने के पूर्व उन्हें सूचना मिल चुकी थी और वे एक कठिन मार्ग पर पहुच कर युद्ध की प्रतीक्षा कर रहे थे किन्तु बादशाही सेना देख कर उन्होने अपने प्रतिनिधि सुल्तान की सेवा मे भेजे और इस्लाम के नाम पर इतनी अधिक दीनता प्रदर्शित की कि सुल्तान ने उनकी हत्या कराने के विचार त्याग दिये और कहा कि, "तुम लोग इस्लाम के नाम पर अपनी मुक्ति चाहते हो तो तुम्हे चाहिये कि इस्लाम के आदेश का पूर्ण-रूपेण पालन करो और काफिरो से जो तुम लोग वैवाहिक सम्बन्ध रखते हो उसे त्याग दो। प्रत्येक समूह का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति हमारी सेवा मे उपस्थित हो और जूनागढ तक साथ चलकर इस्लाम के आलिमो से इस्लाम के नियमो तथा इस्लाम की प्रथाओ का ज्ञान प्राप्त करे और उन्हे अपनी कौम तथा कबीले वालो (९९) को सिखाये।" उन्होने यह बात स्वीकार कर ली, उचित उपहार भेट किये। वे सुल्तान के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुये, और सुल्तान की सवारी के साथ-साथ जूनागढ तक गये। सुल्तान ने उन्हे इस्लाम के आलिमो तथा फकीहों[1] को इस आशा से सिपुर्द कर दिया कि वे उनसे इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करते रहे। कुछ समय के बाद इस्लाम के नियमो की शिक्षा प्राप्त करके अपने प्रदेश को लौट गये और कुछ लोग बादशाह की कृपाओ से प्रभावित होकर अपने देश को त्याग कर सुल्तान की सेवा मे प्रविष्ट हो गये। उनमे से जो लोग सुल्तान के विश्वासपात्र हो गये उन्हे उसने उपाधियो द्वारा सम्मानित किया।

८७७ हि०[2] (१४७२-७३ ई०) मे सुल्तान ने पुन एक बहुत बडी सेना लेकर सिन्ध के आसपास के विद्रोहियो को दड देने के लिये शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। ९०० दो अस्पा अश्वारोहियो[3] को लेकर वह सरपला पहुचा और सिन्ध के ४०,००० हिन्दू जमीदारो से, जो बडे कुशल धनुर्धर थे, युद्ध किया। उनके परिवारो को बन्दी बना कर जूनागढ लाया।

जगत की विजय

उसी वर्ष उसने जगत[4] एव साखू द्वार को विजय किया। इस विजय का यह कारण था कि मौलाना महमूद समरकन्द जो बहुत बडे विद्वान् तथा कवि थे, दखिन (दक्षिण) के तट से नौका पर बैठ कर समर-कन्द जा रहे थे। मार्ग में साखू द्वार के समुद्री लुटेरो ने उनकी धन-सम्पत्ति लूट ली तथा उनके परिवारों को बन्दी बना कर साखू द्वार लाये। उन्होने मुल्ला तथा उसके दोनो पुत्रों को तट पर मुक्त कर दिया और मुल्ला की पत्नी को नौका तथा धन-सम्पत्ति सहित रोक लिया। मुल्ला बडी कठिनाई से महमूद शाह के दरबार में पहुचा। कहा जाता है कि मुल्ला के दोनों पुत्रो की अवस्था बडी ही कम थी। वे पैदल यात्रा न कर सकते थे। मुल्ला मे इतनी शक्ति न थी कि वह दोनो को एक साथ उठा कर ले जा सकता। इस कारण

१ इस्लाम के धर्मशास्त्र के नियमों के विद्वान्।
२ मूल पुस्तक मे '८७६ हि०', किन्तु फ़रीदी के अनुसार '८७७ हि० (१४७२—७३ ई०) पृ०'; ६०।
३ सम्भवतः ऐसे अश्वारोही जिनके पास दो घोड़े हों।
४ मूल पुस्तक मे 'झकत' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'जगत' (पृ० ६०)।

वह एक को कन्धे पर थोडी दूर ले जाता और फिर उसे वहा छोड कर दूसरे पुत्र को ले जाता। इस प्रकार वह बहुत दिनों मे ७० कोस की यात्रा समाप्त करके सुल्तान की सेवा मे पहुचा और विलाप करते हुये न्याय की याचना की। मुल्ला की फरयाद से सुल्तान तथा समस्त उपस्थितगण के हृदय दु ख से भर गये। सुल्तान ने उसे अपने समक्ष बुला कर सब हाल पूछा। उसने विलाप करते हुये सम्पूर्ण हाल बताया।

यद्यपि इससे पूर्व भी सुल्तान का विचार जगत, जो काफिरों का सबसे अधिक प्रसिद्ध मन्दिर (१००) है, तथा साखू द्वार के टापू को विजय करने का था, किन्तु जब लोग जगत के मार्ग के कठिन होने, आसपास के जगलो तथा साखू द्वार टापू की दृढता की अत्यधिक चर्चा करते तो सुल्तान सोच मे पड जाता। वह इसी असमजस मे था कि यह घटना घटी और उसके पिछले विचार ताजे हो गये। सुल्तान व्याकुल हो उठा और उसने कहा, "यदि ईश्वर ने चाहा तो मै इन काफिरो को नष्ट कर दूगा।" उसने मुल्ला महमूद पर कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुये उसे प्रोत्साहन दिया और उसे अहमदाबाद भेज दिया।

१७ जिल्हिज्जा[1] को वह जगत की ओर रवाना हुआ और निरन्तर यात्रा करता हुआ उस स्थान पर पहुच गया। जगत के काफिर भाग कर साखू द्वार टापू मे चले गये। सुल्तान ने जगत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और उसके भवनो का खडन करा दिया। वहा की मूर्तियों को तुडवा डाला। वहा से प्रस्थान करके उसने अदामेरा नामक स्थान पर, जो जगत से १० कोस पर स्थित है, समुद्र-तट पर साखू द्वार टापू के समक्ष, अपने शिविर लगाये।

'तारीखे महमूदशाही' के लेखक का कथन है कि इस पडाव पर सर्प बहुत बडी सख्या मे थे। शाही सेना वालो मे से कोई भी रात्रि मे सर्पो के भय से सो न सका। कोई ऐसा डेरा न था जहा सर्प न आया हो। कहा जाता है कि उस रात्रि मे ७०० सर्प सुल्तान के सरापर्दे[2] मे मारे गये।

इस प्रदेश की विचित्र बातो मे से एक यह है कि ९ आषाढ से जब से वर्षा ऋतु प्रारम्भ होती है ११ तथा १४ तक जिसे हिन्दू ग्यारस, बारस, तेरस तथा चौदस कहते है और जो पूर्णमासी कहलाती है, मैना के बराबर एक गौरैया जिसका बडा ही विचित्र रूप होता है और जो किसी पक्षी से नही मिलता, समुद्र की ओर से एक मन्दिर के ऊपर जो मगलौर के अधीन माधोपुर नामक स्थान पर है, बैठ जाती है। वह दो-तीन घडी से अधिक नही जीवित रहती। जब वह उडती है तो वहा के रहबान[3] उसे पकड लाते है और उससे वर्षा का पता लगाते है। यदि वे उसके सिर तथा दुम की ओर कालापन अधिक पाते है और मध्य मे सफेद तो वे इससे इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि वर्षा ऋतु के प्रारम्भ तथा अन्त मे वर्षा अधिक होगी और बीच मे कम। यदि गौरैया के शरीर का मध्य भाग काला होता है और दोनों ओर सफेद तो वे यह निष्कर्ष निकालते है कि वर्षा मध्य मे अधिक होगी और प्रारम्भ तथा अन्त मे कम। यदि हर ओर कालापन अधिक है तो वर्षा अधिक होगी। यदि हर ओर सफेदी अधिक है तो वर्षा कम होगी। (१०१) यदि उसका समस्त शरीर काला हो तो समस्त ऋतु मे एक समान वर्षा होगी। यदि समस्त सफेद हो तो वर्षा न होगी। कोई ऐसा वर्ष व्यतीत नही होता जब वह गौरैया दृष्टिगत न हो।

कहा जाता है कि इसी प्रकार की गौरैया पटन देव तथा जगत के मन्दिरों मे भी, जो समुद्र तट पर स्थित है, आकर बैठती है। वे लोग भी इसी प्रकार निष्कर्ष निकालते है।

१ १७ जिलहिज्जा ८७७ हि० (१५ मई १४७३ ई०)।
२ एक प्रकार का मडप।
३ पुजारी।

सक्षेप मे जगत के राज्य के काफिर साखू द्वार टापू मे पहुच गये और उसे दृढ बना लिया। साखू द्वार टापू समुद्र-तट से २० कोस पर स्थित है। वहा जगत के राजा के चोर निवास करते थे और समुद्र के यात्रियो पर डाका मारा करते थे। जब सुल्तान ने देखा कि काफिर उस टापू मे प्रविष्ट हो गये तो उसने बन्दरगाहो से नौकाये मँगवाई और अपने सशस्त्र सैनिको को लेकर उस टापू की ओर प्रस्थान किया। प्रत्येक दिशा से गाजी[1] लोगो ने नौका मे बैठ कर टापू को घेर लिया और युद्ध करने लगे। काफिरो ने तलवार तथा बन्दूक चलाने मे कोई कमी न की। अन्त मे इस्लामी सेना को विजय प्राप्त हो गई। वहा के अधिकाश काफिरो की हत्या हो गई। कुछ लोग जहाजो पर बैठ कर भाग खडे हुये। सुल्तान ने टापू मे प्रविष्ट होकर नौकाये तथा समुद्र मे तैरने वाले मगरमच्छो[2] को आदेश दिया कि वे काफिरो के जहाजो का पीछा करे और उन्हे बन्दी बना ले। मुसलमान लोग मन्दिरो पर चढ कर उच्च स्वर मे अजान[3] देने लगे और मन्दिरो को नष्ट-भ्रष्ट करने तथा मूर्तियो का खडन करने लगे। सुल्तान ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये नमाज पढी। मुल्ला के परिवार वाले, जिन्हे काफरो ने बन्दी बना लिया था, मुक्त हो गये। कहा जाता है कि अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति, माणक, सच्चे मोती तथा बहुमूल्य सामग्री प्राप्त हुई। सुल्तान कुछ समय तक वहा ठहरा रहा। वहा उसने एक मस्जिद का निर्माण कराया तथा अत्यधिक खाद्य-सामग्री एकत्र की। मलिक तुगान को जिसे फरहतुलमुल्क की उपाधि प्राप्त थी, साखू द्वार तथा जगत का राज्य प्रदान किया। सुल्तान स्वय जूनागढ पहुचा। जगत एव साखू द्वार की विजय ८७८ हि० (१४७३-७४ ई०) मे हुई। किसी भी बादशाह के राज्यकाल मे उस टापू पर विजय प्राप्त नही हुई। यह केवल सुल्तान महमूद गाजी द्वारा विजय किया गया था।

शाह आलम का निधन

दो वर्ष उपरान्त ८८० हि० (१४७५-७६ ई०) मे फख्रुल औलिया बद्रुल अतकिया महबूबे (१०२) बारी शाह आलम इब्ने कुतुबुल मुहिब्बीन सैयिद बुरहानुद्दीन बुखारी का निधन हो गया।

सक्षेप मे, सुल्तान शुक्रवार १३ जमादि-उल-अव्वल[4] को मुस्तफाबाद जूनागढ पहुचा। सयोग से उसी दिन जो गाजी नौका पर जगत के राजा भीम बिन सागर का पीछा करने के लिये भेजे गये थे वे उसे (राजा को) बन्दी बना कर मुस्तफाबाद लाये। सुल्तान ने प्रत्येक को अत्यधिक सम्मानित किया। मुल्ला समरकन्दी को अहमदाबाद से बुलवाया। जब वह सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ तो सुल्तान ने आदेश दिया, "भीम को मुल्ला के सिपुर्द कर दिया जाय ताकि वह अपना बदला उससे ले ले।" भीम को बन्दी बना कर उपस्थित किया गया। मुल्ला उठ खड़ा हुआ। बादशाह तथा उसके इस्लाम के प्रति उत्साह की उसने प्रशसा की और कहा, "बादशाह के प्रताप से मेरा उद्देश्य पूरा हो गया।" तत्पश्चात् उसने आदेश दिया कि उस काफिर को मुहाफिज खा के पास अहमदाबाद भेज दिया जाय ताकि वह उसके

१ मुसलमान विजेता।
२ कुशल तैराको, नाविको।
३ नमाज के समय की सूचना जो मस्जिद के एक विशेष ऊँचे स्थान पर खड़े होकर उच्च स्वर मे दी जाती है।
४ सम्भवत: १३ जमादि-उल-अव्वल ८८० हि० (१४ सितम्बर १४७५ ई०)। फ़रीदी के अनुसार १० जमादि-उल-अव्वल (पृ० ६३)।

चम्पानीर पर आक्रमण

जिन लोगो ने कष्ट भोगे थे उनकी प्रसन्नता के विचार से सुल्तान ने शाबान मास अहमदाबाद (१०४) मे व्यतीत किया। रमजान मे उसने अहमदाबाद से चाम्पानीर पर चढाई की। जब वह सावली परगने के अधीन मोर आमली नामक स्थान पर, जो महेन्द्री[1] नदी के तट के निकट है, पहुचा तो वहा से चाम्पानीर के आसपास के स्थानो को नष्ट करने के लिये उसने सेना भेजी। सेना आसपास के स्थानों को नष्ट-भ्रष्ट करके लौट आई। वर्षा ऋतु के आ जाने के कारण सुल्तान अहमदाबाद लौट आया और वर्षा ऋतु वही व्यतीत की।

तत्पश्चात् उसने मुस्तफाबाद की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय तक वह मुस्तफाबाद क समीप भ्रमण तथा शिकार मे व्यस्त रहा और पुन अहमदाबाद वापस आया। तत्पश्चात् वह प्रत्येक वर्ष अहमदाबाद से मुस्तफाबाद जाता और कुछ दिन तक भ्रमण तथा शिकार मे व्यस्त रहकर अहमदाबाद चला आता था किन्तु वह चाम्पानीर की विजय की सर्वदा चिन्ता किया करता था। जब कभी भी वह अहमदाबाद से सैर तथा शिकार के लिये जाता था तो उसका अभिप्राय चाम्पानीर पर (चढाई की तैयारी) होता था।

महमूदाबाद नामक नगर का निर्माण

सयोग से, एक दिन वह शिकार खेलता हुआ बातरक[2] नदी के तट पर, जो अहमदाबाद से १२ कोस पर दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है, पहुचा। उसने सुना कि वहा डाके पडा करते हैं। उसने आदेश दिया कि "यहा एक नगर बसाया जाय।" उसका नाम उसने महमूदाबाद रक्खा। उसी दिन से नगर का निर्माण प्रारम्भ हुआ। नदी के तट पर पत्थर के दृढ पुश्ते के निर्माण का आदेश हुआ। उस भव्य पुश्ते पर उसने शानदार महलो का निर्माण कराया। उस नगर का बसाया जाना सुल्तान की अत्यधिक बुद्धिमत्ता एव सूझ-बूझ का प्रमाण है। उस नदी का जल बडा ही मीठा तथा स्वादिष्ट है। उस नगर का वायुमडल ऐसा उत्तम है कि यदि यह कहा जाय कि ससार के किसी नगर का भी ऐसा वायुमडल नही तो उचित होगा। उसका प्रत्येक उद्यान स्वर्गरूपी और प्रत्येक वृक्ष स्वर्ग के वृक्षों एव प्रत्येक झरना और नहर स्वर्ग के झरनो और नहरो के समान है।

राज्य हेतु षड्यंत्र

(१०५) ८८५ हि० (१४८०-८१ ई०) मे सुल्तान ने जूनागढ की ओर प्रस्थान किया और अपने ज्येष्ठ पुत्र अहमद शाह को अहमदाबाद मे छोड गया। खुदावन्द खा को शाहजादे का अतालीक[3] नियुक्त किया। क्योंकि सेनावाले सुल्तान के सर्वदा यात्रा करते रहने से परेशान थे अत कुछ षड्यत्र-कारियो ने खुदावन्द खा को इस बात पर तैयार किया कि अहमद शाह को सिहासनारूढ करके सुल्तान से विद्रोह कर दे। एमादुलमुल्क ने, जो सुल्तान का बहुत बडा विश्वासपात्र था, इस योजना का विरोध किया और इस अग्नि को बढने न दिया। अन्त मे सुल्तान इस घटना से अवगत होकर मुस्तफाबाद से वापस आया और उसने खुदावन्द खा तथा उसके सहायको को कडी चेतावनी दी।

१ माही।
२ फ़रीदी के अनुसार 'वातरक' (पृ० ६५)।
३ गुरू।

८८७ हि० (१४८२–८३ ई०) मे चाम्पानीर के अतिरिक्त समस्त गुजरात मे वर्षा नही हुई। मलिक अहमद, सुल्तान के खासा खेल[1], ने जो मोर आमली अथवा रसूलाबाद नामक स्थान पर था, चाम्पानीर के राज्य मे लूट-मार करना प्रारम्भ कर दिया। जब वह चाम्पानीर के किले के समीप पहुचा तो चाम्पानीर का राजा रावल[2] किले के नीचे उतरा और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मलिक ने भी बडी वीरता से युद्ध किया। अन्त मे पराजित हुआ। उसके अधिकाश साथी मार डाले गये। राज्य के दो विशेष शाही[3] हाथी तथा कुछ घोडे, जो मलिक के साथ थे, पूर्णत नष्ट हो गये। सुल्तान यह समाचार पाकर बडा रुष्ट हुआ और उसने चाम्पानीर की विजय का दृढ सकल्प कर लिया।

सुल्तान की चाम्पानीर पर चढ़ाई और तलवार की कुंजी से उसकी विजय

इतिहासकारो का कथन है कि जब सुल्तान ने चाम्पानीर के किले को विजय करने के उद्देश्य से अहमदाबाद से प्रस्थान किया और बरोदा कस्बे मे पहुचा तो पताई (गवल) के तथा चाम्पानीर वालो के हृदय काप उठे। उसने अपने वकील[4] सुल्तान की सेवा मे भेज कर अत्यधिक दीनता प्रकट की। उसके (१०६) प्रतिनिधियो ने यद्यपि बहुत क्षमा-याचना की किन्तु सुल्तान ने स्वीकार न किया। उसने कहा "इस समय हमारे तथा तुम्हारे मध्य मे तलवार के अतिरिक्त कोई दूत अथवा सदेश न रहेगा।" रावल पताई के वकील बडी ही शोचनीय दशा तथा लज्जा की अवस्था मे उसकी सेवा मे पहुचे और उसे समस्त हाल बताया। रावल ने मरने के लिये तैयार होकर किले को दृढ बना लिया और युद्ध के लिये तैयार हो गया। सुल्तान ने पहुच कर किले को घेर लिया। प्रतिदिन प्रात काल से सायकाल तक इस्लामी सेना एव दुष्ट काफिरों मे युद्ध होता रहता था।

राय पताई द्वारा सुल्तान गयासुद्दीन खलजी से सहायता की प्रार्थना करना

जब कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो सुल्तान ने साबात[5] की तैयारी का आदेश दिया। इस कला मे जो लोग दक्ष थे, वे एकत्र होकर साबात तैयार करने लगे। कहा जाता है कि लकडी के लट्ठो का एक गट्ठर एक अशरफी मे मोल लिया जाता था और प्रयोग मे आता था। रावल पताई ने सूर नामक अपने वजीर को सुल्तान गयासुद्दीन बिन सुल्तान महमूद खलजी की सेवा मे भेजा और यह प्रस्ताव रक्खा कि "यदि सुल्तान मन्दू से हमारी सहायतार्थ चाम्पानीर की ओर प्रस्थान करे तो प्रत्येक मजिल के व्यय हेतु एक लाख तन्के, जिनमे से प्रत्येक ८ अकबरी तन्के के बराबर होता है, उपहार-स्वरूप भेट करूंगा।" जब सुल्तान गयासुद्दीन को इस घटना का पता चला तो उसने मन्दू से प्रस्थान किया और नालचा मे, जो मन्दू से ३ कोस पर स्थित है, पडाव किया और सेना तैयार करने लगा।

सुल्तान महमूद का मन्दू की ओर प्रस्थान तथा गयासुद्दीन खलजी का वापस होना

यह समाचार पाकर सुल्तान (महमूद) किले का अवरोध कुछ अमीरो को सौप कर स्वयं मन्दू

१ विशेष दास। मूल पुस्तक मे 'खासा फ़ील' है किन्तु सम्भवत· लेखक का अभिप्राय 'खासा खेल' से ही है।
२ फ़रीदी के अनुसार 'रावल पताई'।
३ 'फ़ीले ख़ासये सरकार'।
४ प्रतिनिधि।
५ साबात —देखिये पृ० १७८ नोट न० ३।

की ओर रवाना हुआ और धोद[1] कस्बे मे जो मन्दू तथा गुजरात की सीमा पर स्थित है, पडाव किया। सुल्तान गयासुद्दीन ने परिणाम की ओर ध्यान देते हुये अपने सकल्प को त्याग दिया। इसका कारण यह था कि उसने बडे-बडे आलिमो तथा काजियो को बुलवा कर उनसे प्रश्न किया कि, "सुल्तान महमूद ने चाम्पानीर कस्बे को घेर लिया है। चाम्पानीर के राजा ने हमसे सहायता मागी है। आप लोग इस विषय मे क्या कहते है ?" उन लोगो ने सहमत होकर उत्तर दिया, "मुसलमान बादशाह को इस समय काफिरो की सहायता न करनी चाहिये।" सुल्तान वापस होकर अपनी राजधानी को चला गया। सुल्तान महमूद भी चाम्पानीर को लौट गया।

सुल्तान महमूद की विजय

जब रावल पताई सहायता से निराश हो गया और इस बीच मे साबात भी तैयार हो गये और काफिर परेशान हो गये तो वे अपने परिवार को अग्नि मे जला कर युद्ध के लिये कटिबद्ध हो गये। रावल पताई तथा उसके मत्री दुगरसी, जो आहत था, के अतिरिक्त सभी मार डाले गये। वे बन्दी बनाकर (१०७) सुल्तान की सेवा मे उपस्थित किये गये। सुल्तान ने उन्हे निजाम खा को सौप दिया। कहा जाता है कि उस दरबार मे रावल पताई से यद्यपि सुल्तान के प्रति अभिवादन करने के लिये कहा गया किन्तु उसने स्वीकार न किया। अन्त मे ५ मास उपरान्त जब उसके घाव ठीक हो गये तो उसे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित किया गया। सुल्तान ने उससे इस्लाम स्वीकार करने के लिये कहा किन्तु उसने स्वीकार न किया। अन्त मे आलिमो तथा काजियो के आदेशानुसार उसके सिर को कटवा कर सूली पर लटका दिया गया। दुगरसी वजीर को जब सूली के निकट लाया गया तो उसने झपट कर एक आदमी के हाथ से तलवार छीन ली और उसे सुल्तान के एक विश्वासपात्र शेखन बिन कबीर के फेक कर मारा और उसकी हत्या कर दी। अन्त मे उसे भी नरक भेज दिया गया।

कहा जाता है कि रावल पताई के पूरे वश मे दो पुत्रिया तथा एक पुत्र बच गये थे। जब उन्हे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित किया गया तो सुल्तान ने पुत्रियो को अन्त पुर मे भेज दिया और उसके पुत्र को सैफुलमुल्क को इस आशय से दे दिया कि वह उसे अपना पुत्र बना ले। उसका पालन-पोषण उसी ने किया। अन्त मे सुल्तान मुजफ्फर बिन महमूद के राज्यकाल मे उसे निजामुलमुल्क की उपाधि प्राप्त हुई और वह बहुत बडा अमीर हो गया। सक्षेप मे, चाम्पानीर की विजय २ जीकाद ८८९ हि० (२१ नवम्बर १४८४ ई०) को प्राप्त हुई।

चाम्पानीर का राजधानी बनाया जाना

सुल्तान को चाम्पानीर की जलवायु बडी अच्छी लगी। उसे उसने अपनी राजधानी बना लिया। इस कारण उसने वहा एक बहुत बडा नगर बसाया और उसका नाम मुहमदाबाद रक्खा। वहा एक भव्य मस्जिद का तथा एक कोट, जहापनाह, का भी निर्माण कराया। अमीरो, वजीरों, व्यापारियों तथा बक्कालो ने भी अपने अपने लिये वहा भव्य भवनो का निर्माण करा लिया। ८९० हि० (१४८५ ई०) मे उसने नगर के निकट स्वर्गरूपी उद्यानो का निर्माण कराया। अल्प समय मे मुहमदाबाद नगर इतना सुसज्जित हो गया कि गुजरात वाले अहमदाबाद को भूल गये। वे इस बात से सहमत थे कि यह नगर अद्वितीय है और मुहमदाबाद के समान गुजरात मे कोई स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान नही अपितु ससार मे कोई

१ फ़रीदी के अनुसार 'दोहद' (पृ० ६६)।

ऐसा स्थान न होगा। वह नगर भव्य भवनो, स्वास्थ्यवर्द्धक, अशुद्धता से शून्य जलवायु, समकालीन प्रतिष्ठित लोगो तथा संसार की रूपवतियो के निवासस्थान, नाना प्रकार के फूलो तथा मेवो से लदे (१०८) हुये उद्यानो से परिपूर्ण था।

वहा के फलो मे आम ऐसा होता था जिसके फूल की सुगन्धि से ईश्वर की स्मृति हो जाती थी और जिसके फल की सुगन्धि से दरूद[1] पढना उचित हो जाता था। मिश्री उसकी मिठास के सामने लज्जित रहती थी। शकर अपनी मिठास की प्रसिद्धि के बावजूद दुर्दशा को प्राप्त रहती थी। अनार के हृदय का रक्त उसके सामने जमा रहता था। अजीर का हृदय टुकडे-टुकडे रहता था। अगूर उसके कारण आखो मे आसू भरे रहता था। बादाम की आख उसके सौन्दर्य के सामने चकित रहती थी। सेब उसके बल्ले का गेद था और उसका रस दूध तथा शकर के समान होता था। इसके अतिरिक्त ताड होते थे जिनका डील-डौल आदम[2] के समान था और जिनका शीरा माता के दूध के समान होता था। इसके अतिरिक्त ताड का फल होता था, जो शर्बत के फालूदे के समान होता था। इसके अलावा नारियल होता था, जिसका गूदा मगज़ी के हलुवे के समान तथा जल अत्यन्त मीठा एव स्वादिष्ट होता था। कटहल, बडहल, कमरख, फालसा तथा आवला, समुद्री आवला, प्रत्येक ही विचित्र प्रकार का स्वाद रखते थे। उनसे हृदय तथा प्राण को आराम मिलता था।[3]

(१०९) हिन्दुस्तान के कुछ सुन्दरताप्रिय लोग आम को गन्ने से अच्छा समझते हैं। कुछ लोग इसके विपरीत कहते हैं। मेरा विचार है कि जिस प्रकार विशेष फिरिश्ते अपनी श्रेणी के अनुसार साधारण मनुष्यो से श्रेष्ठ है उसी प्रकार विशेष मनुष्य समस्त फिरिश्तो से श्रेष्ठ है। इसी प्रकार विशेष प्रकार के गन्ने स्वाद मे साधारण आमो से बढ कर है और विशेष प्रकार के आम समस्त प्रकार के गन्नो से श्रेष्ठ हैं। एक समझदार व्यक्ति ने यह बात सुनकर कहा, "मै इस बात को दोनो से अधिक स्वादिष्ट समझता हू।"

सुगन्धित फूलो मे लाला, स्योती, चमेली, चम्पा, बेला, मोगरा जाई-जुई, किरना, क्योडा तथा कर्गी, प्रत्येक अत्यधिक सुगन्धि वाला फूल होता था, उनकी प्रत्येक पखडी कस्तूरी के समान होती थी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के रगो के फूल भी होते थे, जिनको देख कर हृदय की मलिनता का अन्त हो जाता था।

कहा जाता है कि मेवेदार वृक्षो तथा सुगन्धित फूलो के अतिरिक्त चाम्पानीर के क्षेत्र मे इतने अधिक चन्दन के वृक्ष होते थे कि नगरवाले भवनो के निर्माण में चन्दन की लकडी का प्रयोग करते थे।

इस समय उसी चाम्पानीर की यह दुर्दशा हो गई है कि यहा शेर-बबर रहते है और यहा के भवन गिर चुके है। यहा के निवासी नष्ट हो चुके है और यहा का जल विष के समान ज्ञात होता है। यहा की वायु शरीर की शक्ति क्षीण कर देती है, फूलो के स्थान पर काटे और उद्यानो के स्थान पर जगल उग आये है, चन्दन के वृक्षो का न तो नाम शेष रह गया है और न चिह्न।

कहा जाता है कि एक खुरासानी ने सुल्तान (महमूद) से निवेदन किया कि "मै उद्यानो के लगवाने तथा भवनों का निर्माण कराने मे दक्ष हू। यदि आप कोई स्थान निश्चित कर दे तो मै ऐसा उद्यान तैयार करा दू जिससे आपके हृदय को अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।" सुल्तान ने कहा, "नगर के निकट जो उचित

१ मुसलमानो के लिये किसी सुगन्धित अथवा सुन्दर वस्तु को देख कर दरूद पढना आवश्यक होता है। दरूद मे मुहम्मद साहब, उनकी संतान तथा मित्रों के लिये शुभकामना की जाती है।

२ आदि-पुरुष, वह पहले पुरुष जिनसे सृष्टि की रचना प्रारम्भ हुई।

३ लेखक ने फलों के गुणो के वर्णन के सम्बन्ध मे अतिशयोक्ति से काम लिया है।

स्थान हो उसे चुन लो" और अपने अधिकारियो को आदेश दे दिया कि "जिन जिन वस्तुओ की आवश्यकता हो उसकी व्यवस्था कर दी जाय।" उसने (खुरासानी ने) एक बडा ही सुन्दर उद्यान, सुन्दर हौज तथा (११०) कृत्रिम झरनो सहित तैयार कराया। क्योकि इससे पूर्व गुजरात मे इस कारीगरी का कोई चिह्न न था, अत सुल्तान उसमे सैर करके बडा प्रसन्न हुआ और उसे बडा आश्चर्य हुआ। उसके निर्माण-कर्त्ता को उसने इनाम-इकराम देकर सम्मानित किया।

इसी अवसर पर बेलो[1] नामक गुजरात के एक बढई ने कहा, "यदि आदेश हो तो मै भी इसी प्रकार के उद्यान का निर्माण कर दूँ।" सुल्तान ने कहा, "यदि तुझसे हो सके तो क्यो न तैयार कराये।" उसने भी थोडे दिनो मे पिछले उद्यान से उत्तम उद्यान तैयार करा दिया। सुल्तान उसके द्वारा निर्मित किये हुये उद्यान को देख कर बडा प्रसन्न हुआ और उससे पूछा, "गुजरात वालों को इस कला का ज्ञान नही। तूने इसे कहा से सीख लिया?" उसने निवेदन किया, "जब गुरु ने निर्माण-कार्य प्रारम्भ कराया तो दास थी। मिश्री की माता गन्ना भी उसकी दासी के समान था। उसमे नाना प्रकार की मिठास पाई जाती थी। उसका डीलडौल शकर सरीखे होठ रखने वाले माशूको के समान और उसका हिलना युवतियो की कमर के समान होता था। इस स्वाद को जानकार लोग ही जान सकते थे। वह उत्तम प्रकार के रेशमी वस्त्र वाली युवती, जो शकर बेचने वाले तोते के समान होती है, था।

अन्य अद्वितीय फलो मे अजीर था जिसके समान मीठा कोई और फल नही होता। उस फल की यह विशेषता भी है कि आदम पैगम्बर भी उसके कृतज्ञ है। दूसरे अगूर जिसके गुच्छे कातियुक्त कृत्तिका के समान होते थे। उसका प्रत्येक कौर पवित्र मदिरा के समान जीवन दान करता था। अशुभ-चिन्तको की कुदृष्टि से वह सुरक्षित था। वह अद्वितीय था। उसका उबाल खाया हुआ शर्बत नमक के साथ हलाल[2] और बिना नमक हराम[3] था।

इसके अतिरिक्त अनार था जिसका प्रत्येक दाना चमकदार माणिक था। वह स्वर्ग के फलो के समान था। केला जो बिना दूध का हलुवा है सोने की बट्टी के समान होता था। अमृत फल का भीतरी भाग अमृत जल से परिपूर्ण होता था और बाहरी भाग उच्च सम्मान वाले खिज्र[4] के समान होता था। सदा फल सेब के समान होता था और देखने मे बडा सुन्दर लगता था। नारगी भी होती थी, जो चरित्र मे अनार की बहिन तथा देखने मे अनार के गिलास के समान होती थी। खिन्नी का, जो दु ख से परिपूर्ण सोने के समान होती है, स्वाद इस कला के रहस्य को इस प्रकार से गुप्त रखता था कि इस कला की जानकारी रखने वालो को उद्यान के निकट न फटकने देता था। मै मूर्ख मजदूरो के वेश मे प्रविष्ट हुआ। कुछ उसे देख कर कुछ अपनी बुद्धि से इस कला को सीख लिया। सुल्तान प्रसन्न हो गया और उसके प्रयत्न तथा उसकी योग्यता की प्रशसा की और उसे अत्यधिक इनाम तथा खिलअत प्रदान की। अभी तक वहा के कुछ महाल उसी प्रकार विद्यमान है। वह उद्यान गुजरात वालो मे हालोल के उद्यान के नाम से प्रसिद्ध है।

१ फ़रीदी के अनुसार 'हालो'।
२ इस्लाम के नियमानुसार जिसका ग्रहण, भोग विहित हो।
३ इस्लाम के नियमानुसार जिसका ग्रहण, भोग निषिद्ध हो।
४ एक पैग़म्बर जिनके विषय मे मुसलमानो का विश्वास है कि वे सर्वदा जीवित रहेंगे तथा जो यात्री मार्ग भूल जाते हैं उनको मार्ग दर्शाते हैं।

कला-कौशल की उन्नति

गुजरात में आज तक जिस विचित्र प्रकार के कलाकौशल की प्रसिद्धि है उनमे से अधिकाश का आविष्कार अन्य देश वालो ने सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे किया। गुजरात इन्साने कामिल[1] के समान, सुल्तान महमूद के प्रयत्न के फलस्वरूप, पूर्ण है। गुजरात वालो ने बुद्धिमानी, शुद्ध स्वभाव, चपलता तथा चातुरी सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे सीखी अन्यथा इसके पूर्व वहा के अधिकाश लोग सरल स्वभाव के तथा मूर्ख थे, उदाहरणार्थ सुल्तान का एक विश्वासपात्र सैनिक अवकाश लेकर अपने घर गया। कुछ समय तक वह वहा रहा। लौटते समय उसने सुल्तान के लिये उपहार की तैयारी की। उपहार मे उसने मोठ की फलिया चुनकर कुछ पिटारो मे बन्द कराई और उन पिटारो पर लाल कपडा लपेट दिया और सुल्तान की सेवा मे भेट किया। सुल्तान ने पूछा, "इसमे क्या है?" उसने कहा "शाही घोडो के लिये मोठ की फलिया लाया हू। ये बडी ही उत्तम है और इनके दाने बडे-बडे है।" सुल्तान मुस्कराने (१११) लगा। उसने कहा, "मेरे ग्राम मे एक कोली स्त्री है जो प्रत्येक वर्ष एक पुत्र को जन्म देती है। इस वर्ष उसके पति की मृत्यु हो गई है। यदि आदेश हो तो मै उसे सुल्तान के लिये ले आऊ ताकि बहुत बडी सख्या मे शाहजादे पैदा हो जाय।" सुल्तान हँसने लगा। उसने शपथ लेकर कहा, "उसके सात वर्ष मे सात पुत्र हुये है मै झूठ नही कहता।"

प्रजा की दशा

सक्षेप मे ईश्वर ने सुल्तान को केवल प्रजा की सुख-शान्ति हेतु पैदा किया था। उसके राज्यकाल मे किसी को भी किसी के द्वारा कष्ट न पहुचा था और सभी सुख-सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करते थे। सुख-सम्पन्नता के बावजूद मुहम्मद साहब की शरा का इतना अधिक पालन होता था कि किसी को बाल बराबर भी शरा के मार्ग के विरुद्ध आचरण करने का साहस न होता था। इसका कारण यह था कि बादशाह स्वय शरा का पालन करता था और लोग "प्रजा बादशाह के धर्म का पालन करती है" के अनुसार कार्य करते थे।

शरा के आदेशो का पालन तथा शाह आलम

कहा जाता है कि एक सुनार एक जडाऊ रबाब[2] बडे उत्तम ढग से तैयार करवा कर सुल्तान की सेवा मे ले जा रहा था। मार्ग मे शरीअत पनाह काजी नज्मुद्दीन, जो अहमदाबाद का काजी था, मिल गया। जब काजी ने रबाब देखा तो पूछा, "यह क्या है और यह किसका है?" उत्तर मिला "सुल्तान का रबाब है।" काजी ने कहा, "इसे ले आओ।" मुतकाजी[3] लोग दौड कर उसे ले आये। काजी ने लेकर उसे टुकडे टुकडे कर दिया। उसके रत्नों को भी पाव से रगड कर चूर्ण कर डाला। सुनार सिर पर मिट्टी डाल कर फरियाद करता हुआ सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि 'मैने कई महीने सुल्तान के आदेशानुसार रबाब पर जडाऊ काम करने मे व्यय किये थे। आज मै जब उसे सेवा मे ला रहा था, काजी ने मुझसे लेकर उसे इस प्रकार नष्ट कर दिया।" सुल्तान ने कुछ न कहा

१ इन्साने कामिल :—पुरुषोत्तम, सूफ़ियो के अनुसार वह व्यक्ति जिसने आध्यात्मिक यात्रा मे बडी ऊँची श्रेणी प्राप्त कर ली हो और साधारण मनुष्यो से श्रेष्ठ हो।

२ एक प्रकार की सारगी।

३ बलपूर्वक वसूल करने वाले कर्मचारी।

और तदुपरान्त उठकर एकान्त मे चला गया और कहा "नीची बेरी सब कोई झोरे।[1] मुझे शरा के आदेशो के विषय मे आदेश देते है और रसूलाबाद जाकर मिया मझला अर्थात् शाह आलम को शरा के आदेश नही बताते जो रेशमी वस्त्र धारण करते है और सगीत सुनते है।"

(११२) काजी को इस बात का पता चल गया। उसने रेशम के वस्त्रो के प्रयोग तथा सगीत सुनने के हराम होने के विषय मे रवायते[2] को एक कागज पर लिख कर अपनी पगडी मे शाह आलम को दिखाने के आशय से रख लिया। उसने सोचा कि "वे स्वय आलिम है, देखे क्या उत्तर देते है।" शुक्रवार के दिन काजी रसूलाबाद रवाना हुआ, कारण कि शुक्रवार के अतिरिक्त शाह आलम से भेट सम्भव न थी। वे छ दिन तक लोगो से पृथक् रहकर ईश्वर की उपासना किया करते थे। शुक्रवार के दिन वे सर्व-साधारण से भेट करते और शिक्षा-दीक्षा मे तल्लीन रहते थे। उसी दिन धर्म की अभिलाषा रखने वाले एव उनके मुरीद सूफी तथा विभिन्न आवश्यकताये रखने वाले अपनी आवश्यकताओ के विषय मे निवेदन करते थे और शाह आलम की कृपा द्वारा उनकी आवश्यकताये पूरी होती थी। अस्र[3] तक यही कार्यक्रम रहता। अस्र की नमाज के उपरान्त वे अपनी कोठरी मे चले जाते थे। दूसरे शुक्रवार तक यदि समकालीन बादशाह भी उपस्थित होता तो लौट जाता।

सक्षेप मे, जब काजी शाह आलम पनाह के दरबार मे पहुचा तो शाह आलम ने उसे बुला लिया। शाह साहब को देखते ही काजी की दशा मे परिवर्तन हो गया। धर्माधता की अग्नि बुझ गई। काजी शिष्टतापूर्वक उपस्थित होकर शाह आलम के समक्ष बैठ गया। एक बढई शाह साहब के सामने बैठा कार्य कर रहा था। शाह आलम उस दिन काली कमली का जुब्बा[4] तथा कुलाह[5] पहने हुये थे। शाह आलम ने काजी से पूछा, "आपकी पगडी मे यह कैसा कागज है?" काजी ने उत्तर दिया, "कुछ रवायते लिखी है।" शाह आलम ने पूछा, "किस विषय मे?" काजी ने उसे खोलकर शाह आलम को दे दिया। जब शाह आलम ने खोला तो वह सफेद था। शाह आलम ने कहा, "यह सफेद कागज है।" काजी को आश्चर्य हुआ। उसने अपनी पगडी मे बहुत ढूँढा किन्तु वह न मिला। वह बडा प्रभावित हुआ। शाह आलम के प्रागण मे एक लकडी पडी हुई थी। उनकी (शाह आलम की) कीमिया[6] का गुण रखने वाली दृष्टि जब उस पर पडी तो वह सोना बन गई। शाह आलम ने कहा, "काज़ी तेरा परिवार बहुत बडा है। यह ले जा। तेरे पुत्रों के काम आयगा।" काजी ने कहा, "मुझे सोने की इच्छा नही। मुझे ईश्वर की प्राप्ति की अभिलाषा है।" शाह आलम ने कहा, "काजी मेरे घर मे सगीत तथा वादन है एव (११३) रेशमी वस्त्र। जो कोई यह सब स्वीकार करे मेरे साथ बैठे।"

काजी ने कहा, "मुझे स्वीकार है। मैंने जो कुछ किया मुझे उस पर लज्जा आती है।" शाह आलम उठ खडे हुये। जो रस्सी बढई के सामने पडी हुई थी, उसे अपनी कमर मे लपेट लिया और एक लकडी कटार के स्थान पर लगा ली और मस्जिद की ओर टहलते हुये चल दिये। जब वे घर के बाहर निकले तो वह रस्सी उपस्थितगणों को सोने की पेटी और वह लकडी जडाऊ कटार तथा कम्बल का वस्त्र रेशम एव ज़रबफ्त का वस्त्र नजर आने लगा। शाह आलम ने काजी से कहा, "काजी तुम साक्षी

१ फ़रीदी के अनुसार 'नीची बेरी सबने झोरे' (पृ० ७०—७१)।
२ मुहम्मद साहब तथा उनके मित्रों एव अन्य विद्वानो के कथन।
३ सायकाल के पूर्व।
४ वह ढीला-ढाला वस्त्र जो समस्त वस्त्रों के ऊपर पहना जाता था।
५ टोपी।
६ रसायन-विद्या, सोना बनाने की विद्या।

रहना कि मज्ञन का वस्त्र वही है। ईश्वर लोगो को इस प्रकार दिखाता है। सम्भव है कि मज्ञन बीच मे नही है।" तदुपरान्त वे नमाज पढने लगे। नमाज़ के उपरान्त काजी ने उनसे बैंअत कर ली और उनका मुरीद हो गया। शनै-शनै वह शाह आलम का बहुत बडा विश्वासपात्र एव खलीफा हो गया।

सैयिद मुहम्मद बुखारी का, जो "तारीखे शमा-ए-जलाली" के सकलनकर्ता हैं, कथन है कि "शरीअत के आश्रयदाता तथा बिदअत[1] के विनाशक नव्वाब खाने आजम मिर्जा (अजीज) कोका के (गुजरात के) शासन-काल मे एक मुहतसिब[2] शाह आलम के उर्स[3] के दिन शाह साहब के मकबरे के भीतर प्रविष्ट हो गया। उसने एक गायक को मस्जिद के प्रागण मे बैठे हुये देखा। वह एक छन्द को बजा रहा था। अभिमानी मुहतसिब ने उस बेचारे को पकड कर उसके बाजे के टुकडे-टुकडे कर डाले और कुछ दुर्रे[4] उस कव्वाल की पीठ तथा कन्धे पर लगाये। शोर होने लगा। मुहतसिब खानकाह मे जहा कव्वाल तथा सूफी एकत्र थे, पहुचा। उस सभा मे पहुचते ही मुहतसिब की दशा मे परिवर्तन हो गया। (११४) दुर्रा उसके हाथ से गिर पडा और वह मूर्च्छित हो गया। कुछ समय तक नृत्य करता रहा। तदुपरान्त गिर कर असावधान हो गया।" शाह साहब के चमत्कार बहुत बडी सख्या मे (प्रसिद्ध) हैं। इस स्थान पर इस घटना का उल्लेख विषय के अनुकूल होने के कारण कर दिया गया।

अन्य घटनाये

८९१ हि० (१४८६ ई०) मे सुल्तान ने मुस्तफाबाद की ओर प्रस्थान किया और अहमदाबाद नगर मुहाफिज़ खा को सौप दिया। कुछ समय तक मुस्तफाबाद के शासन को सुव्यवस्थित करके वह पुन मुहमदाबाद पहुंच गया। ८९२ हि० (१४८६-८७ ई०) मे उसने मुस्तफाबाद की ओर पुन प्रस्थान किया। जब वह धदूका कस्बे मे, जो गुजरात तथा सोरठ की सीमा पर स्थित है, पहुचा तो सोरठ की विलायत[5] जूनागढ के किले सहित शाहजादा खलील खा को सौप दी और स्वय मुहमदाबाद लौट गया।

सिरोही के राजा को चेतावनी

उसी वर्ष मे कुछ व्यापारियो ने निवेदन किया कि, "हम लोग ४०० एराकी तथा तुर्की घोड़े खुरासान एव एराक से ला रहे थे। हमारे पास हिन्दुस्तानी वस्त्र भी थे। हम लोग उन्हे बादशाह की सेवा मे उपस्थित करने वाले थे। जब हम आबू पर्वत मे पहुचे तो सिरोही के राजा ने समस्त वस्तुये हमसे छीन ली। यहा तक कि पुराने वस्त्र भी हमारे शरीर पर न रहने दिये। हम बादशाह के दरबार के अतिरिक्त किससे इस अत्याचार का न्याय मागे। ईश्वर के लिये आप हमारा न्याय करे।" सुल्तान ने घोड़ो तथा धन-सम्पत्ति का मूल्य उनसे लिखित रूप मे मागा और मूल्य को खजाने से अदा करने का आदेश दे दिया और कहा, "इसे हम सिरोही के राजा से वसूल कर लेगे।" धन सुल्तान के समक्ष लाकर गिन कर व्यापारियो को दे दिया गया। सुल्तान ने सिरोही की ओर कूच कर दिया और सिरोही के राजा को कठोर आदेश दिये कि, "फरमान पाते ही घोडे तया जो कुछ धन-सम्पत्ति व्यापारियो से ली हो, शाही सेवा मे पहुंचा दो। अन्यथा शाही सेना को पहुचा ही समझो।" सिरोही के राजा ने फरमान की सूचना

१ इस्लाम मे शरीअत के विरुद्ध बातों को सम्मिलित करना।
२ वह अधिकारी जो शरा के विरुद्ध बातों को रोकता था।
३ किसी मुसलमान सूफ़ी-सन्त की निधन तिथि को मनाया जाने वाला उत्सव।
४ कोड़े।
५ प्रदेश।

पाते ही घोडे तथा धन-सम्पत्ति बिना हस्तक्षेप किये उचित उपहार सहित भेज दिये। और दीनता प्रकट करते हुये क्षमा-याचना की।

सुल्तान लौटकर मुहमदाबाद पहुचा। चार वर्ष तक मुहमदाबाद मे निश्चिन्त होकर भोग-विलास का जीवन व्यतीत करता रहा, किन्तु ग्रीष्म मे खरबूजा पकने के समय मुहमदाबाद से अहमदाबाद पहुच जाता था। दो-तीन मास तक अहमदाबाद मे आराम से रहकर पुन मुहमदाबाद चला जाता था।

बहादुर गीलानी का विद्रोह

(११५)८९६ हि० (१४९०-९१ ई०) मे सुल्तान ने सुना कि, "ख्वाजा महमूद की, जिसकी उपाधि ख्वाजये जहा थी और जो अद्वितीय वजीर था, दखिन (दक्षिण) के बादशाह सुल्तान मुहम्मद लशकरी[1] ने हत्या करा दी है। इसी कारण बहादुर गीलानी ने, जिसे ख्वाजये जहा द्वारा आश्रय प्राप्त हुआ था, दाभोल[2] मे विद्रोह कर दिया। इसी बीच मे सुल्तान मुहम्मद लशकरी की भी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र सुल्तान महमूद बहमनी सिंहासनारूढ हो गया। उसकी अवस्था बहुत कम है। दखिन के अधिकाश अमीरो ने विद्रोह कर दिया है और दखिन के शासन-प्रबन्ध मे विघ्न पड गया है। इसी बीच मे बहादुर गीलानी ने दखिन के कुछ प्रदेश अपने अधिकार मे कर लिये है और बहुत बडी सख्या मे जहाज एकत्र कर लिये है और उसने गुजरात के बन्दरगाहो मे लूटमार प्रारम्भ कर दी है। उसके भय के कारण गुजरात के किसी भी बन्दरगाह मे कोई नौका नही आती-जाती।"

विद्रोह का कारण

गुजरात के बन्दरगाहो मे डाके का कारण यह था कि दखिन का मलिकुत्तुज्जार ख्वाजये जहा की हत्या के उपरान्त दखिन से भाग कर खम्बायत के बन्दरगाह मे पहुच गया। बहादुर ने अपने आदमी दाभोल से उसकी पुत्री से अपने विवाह की प्रार्थना करने के लिये भेजे। इसी बीच मे मलिकुत्तुज्जार की मृत्यु हो गई। उसके प्रतिनिधि मुहम्मद हयात ने बहादुर का प्रस्ताव रद्द करके उसके विषय मे अपशब्द कहे और कहा कि, "छ· पल्ली[3] के दास को मलिकुत्तुज्जार की पुत्री से विवाह करने का किस प्रकार साहस हो गया।"

जब बहादुर के दूत लौटकर उसके पास पहुचे और उन्होने सब हाल बताया तो उसने उस स्थान से कुछ फिदाई[4] भेजे जिन्होने चोरी से मुहम्मद हयात की हत्या कर दी। अन्त मे खम्बायत वालो की सहायता से वह पुत्री बहादुर को प्राप्त हो गई। उस अभागे ने गुजरात के बन्दरगाहो मे डाका मारना प्रारम्भ कर दिया। कहा जाता है कि कई वर्षों तक गुजरात के किसी भी बन्दरगाह मे जहाज आ-जा न सके। समुद्री वस्तुये गुजरात मे इस प्रकार अप्राप्य हो गई कि लोग पान मे सुपारी के स्थान पर धनिया खाने लगे।

१ मूल पुस्तक मे 'सुल्तान महमूद बहमनी' किन्तु फरीदी के अनुसार 'मुहम्मद लशकरी' (पृ० ७३)।
२ रत्नागिरि जिले मे वशिष्ठी नदी के उत्तरी किनारे पर। उस समय यह बहुत बड़ा बन्दरगाह था।
३ पैसे।
४ देखिये पृ० ३१३ नोट नं० २।

सुल्तान महमूद का बहादुर के विरुद्ध सेना भेजना

सक्षेप मे, सुल्तान इस घटना से बडा रुष्ट हुआ। उसने मलिक सारग किवामुलमुल्क को बहुत बड़ी सेना तथा पर्वतरूपी हाथियो को देकर खुश्की के मार्ग से दाभोल के विरुद्ध नियुक्त किया। उसने ३०० नौकाये योद्धाओं तथा तोप और बन्दूक से भरकर समुद्री मार्ग से भेजी। जब खुश्की के मार्ग वाली सेना अगासी तथा बसीन[1] तक, जो गुजरात एव दखिन की सीमा पर स्थित है, पहुची तो सुल्तान महमूद बहमनी के वकीलो[2] ने सोचा कि, "सुल्तान महमूद गुजराती हमारे स्वामियो का आश्रयदाता है। उसने (११६) हमे अनेकों बार सहायता देकर मन्दू के बादशाह महमूद खलजी के हाथ से बचाया है अत यह उचित होगा कि सुल्तान की सेना के बहादुर के विरुद्ध पहुचने के पूर्व, बहादुर के उपद्रव का अन्त कर दिया जाय। सम्भव है कि अन्य व्यक्ति की सेना हमारे राज्य मे प्रविष्ट होकर अशान्ति उत्पन्न करे, अत यही उचित होगा कि बहादुर की दुष्टता का अन्त करके उस उपद्रव को समाप्त कर दिया जाय।" उन्होंने[3] सुल्तान की सेवा मे इस आशय का प्रार्थना-पत्र भेजा कि, "दखिन (दक्षिण) की समस्त सेना आपकी हितैषी है। आप आदेश दे दे कि शाही सेना अपने स्थान पर रहे, और बहादुर को दड देना हमारे सिपुर्द कर दे। यदि इसके पालन मे किसी प्रकार की कमी हो तो आपको अधिकार है।" तत्पश्चात् समस्त दखिन की सेना ने बहादुर पर चढाई की और उससे युद्ध करके उसकी सेना को पराजित कर दिया। बहादुर जीवित बन्दी बना लिया गया और उसके सिर को पृथक् करके सुल्तान महमूद बहमनी की सेवा मे प्रस्तुत कर दिया गया। इस घटना का विवरण सुल्तान (महमूद बेकरह) की सेवा मे भेज दिया गया। सुल्तान ने अपनी सेना वापस बुला ली।

अलिफ खां का विद्रोह

८९९ हि० (१४९३–९४ ई०) मे सुल्तान ने मोरासा कस्बे के ऊपर चढाई की। इसका कारण यह था कि अलिफ खा, सुल्तान के मौलाजादे[4] एव मोरासा के मुक्ते[5] ने विद्रोह कर दिया था। सुल्तान के आगमन के ऐश्वर्य को सुनकर वह भाग कर कारन्थ[6] नगर की ओर, जो नूनावारा[7] के पर्वतीय क्षेत्र मे है, चला गया और कुछ समय तक वहा रहा। तदुपरान्त वह सुल्तान गयासुद्दीन खलजी की सेवा मे पहुचा। सुल्तान गयासुद्दीन ने, उस अपराध के कारण जो उसके पिता अलाउद्दीन बिन सोहराब के कारण हुआ था, उसे शरण न प्रदान की। वह वहा से सुल्तानपुर पहुँचा। अन्त मे सुल्तान ने उसके अपराध क्षमा कर दिये और ९०१ हि० (१४९५–९६ ई०) में वह सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हो गया।

आसीर के विरुद्ध प्रस्थान

९०४ हि० (१४९८–९९ ई०) मे सुल्तान ने आसीर पर चढाई की। इसका कारण यह था कि आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिम आदिल खा फारूकी ने निर्धारित कर अदा करने के प्रति उपेक्षा की थी।

१ मूल पुस्तक मे 'आकासी वैसी' है किन्तु फरीदी के अनुसार 'अगासी' तथा 'बसीन'।
२ प्रतिनिधियो।
३ सुल्तान महमूद बहमनी के अमीरो ने।
४ दास के पुत्र।
५ अक्ता का अधिकारी।
६ फ़रीदी के अनुसार 'कारेथ' (पृ० ७५)।
७ फ़रीदी के अनुसार 'लूनावारा' (पृ० ७५)।

जब सुल्तान तापती[1] नदी के तट पर पहुचा तो आदिल खा ने उपहार भेज कर क्षमा-याचना की। सुल्तान वापस हो गया और उसने शिविर को नद्रबार के मार्ग से भेज दिया और स्वय थालनीर[2] तथा धरमाल के किले के निरीक्षण हेतु, जिसे एमादुलमुल्क असस ने विजय किया था, प्रस्थान किया। वहा से वह शाही शिविर मे नद्रबार पहुच गया और वहा से वह मुहमदाबाद नगर की ओर गया।

मदू पर आक्रमण करने का विचार

(११७) ९०६ हि० (१५००–१५०१ ई०) मे सुल्तान को ज्ञात हुआ कि सुल्तान नासिरुद्दीन बिन सुल्तान गयासुद्दीन अपने पिता की हत्या करके सिहासनारूढ हो गया है। सुल्तान ने मन्दू पर चढाई करने का सकल्प किया। अन्त में सुल्तान नासिरुद्दीन के दीनता प्रदर्शित करने पर सुल्तान ने यह विचार त्याग दिया।

फिरंगियो के विरुद्ध युद्ध

सात वर्ष तक उसने किसी ओर चढाई नही की। तत्पश्चात् ९१३ हि० (१५०७–८ ई०) मे उसने चौल[3] की विलायत[4] पर चढाई की। वहा से उसने फिरगियों के उत्पात के कारण बसीन[5] तथा महायम[6] के क्षेत्र पर आक्रमण किया। जब वह आबूद[7] के क्षेत्र मे पहुचा तो सूचना प्राप्त हुई कि, "सुल्तान का दास मलिक अयाज, देव का हाकिम, रूम[8] की सेना को मिला कर १० रूमी जहाज सहित चौल के बन्दरगाह पर पहुचा और उपद्रवी फिरगियो से युद्ध करके बहुत से फिरगियो की हत्या कर दी। उनके एक बडे जहाज को जिसमे अत्यधिक धन-सम्पत्ति थी बन्दूक तथा तोप (के गोलों) से डुबा दिया। मलिक की ओर से ४०० व्यक्ति, रूमी इत्यादि मारे गये। मलिक विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट गया और देव पहुचा।" सुल्तान बडा प्रसन्न हुआ और मलिक अयाज के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। उसे खिलअत भेजी और स्वय बसीन वापस हो गया। वह वहा छ दिन तक ठहरा रहा। ११ मुहर्रम ९१४ हि०[9] (१२ मई १५०८ ई०) को वह अपनी राजधानी मे लौट गया।

आलम खा का आसीर का हाकिम नियुक्त किया जाना

इसके उपरान्त सुल्तान के नाती आलम खा बिन (पुत्र) एहसन खा ने, जिसके पूर्वज आसीर तथा बुरहानपुर के हाकिम थे, अपनी माता से कहा कि, "आप सुल्तान से निवेदन करे कि आदिल खा बिन (पुत्र) मुबारक ७ वर्ष हुये मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके कोई सन्तान न थी। उसके अमीरों

१ मूल पुस्तक मे 'तैती' अथवा 'तपती'।
२ मूल पुरतक मे 'थानीर'।
३ मूल पुस्तक मे 'जलोल' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'चौल' (पृ० ७५)।
४ राज्य।
५ मूल पुस्तक मे 'बसी' किन्तु फरीदी के अनुसार 'बसीन' (पृ० ७५)।
६ मूल पुस्तक मे 'महाम' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'महायम' (पृ० ७५)।
७ फरीदी के अनुसार 'दून' (पृ० ७५)।
८ टर्की।
९ फरीदी के अनसार ६ मुहर्रम ९१४ हि०।

ने, मलिक राजा के वश के एक व्यक्ति को बादशाह बना दिया और उसकी उपाधि आदिल खा कर दी। उन लोगों ने राज्य का अपहरण किया है। यदि सुल्तान मुझे मिट्टी से उठा कर मेरे पूर्वजो के सिंहासन पर आरूढ कर दे तो यह कार्य एक तुच्छ व्यक्ति को सम्मान प्रदान करने के समान होगा, जोकि सुल्तान के उच्च वश की परम्परा है।" जब आलम खा बिन एहसन खा ने सुल्तान से यह निवेदन किया तो सुल्तान ने उसे स्वीकार कर लिया।

सुल्तान ने रजब ९१४ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १५०८ ई०) मे आलम खा को आसीर की ओर भेज दिया और स्वय नद्रबार की ओर प्रस्थान किया। रमजान (दिसम्बर १५०८—जनवरी १५०९ ई०) मे वह महेन्द्री[1] नदी के तट पर सनली[2] नामक स्थान पर ठहरा रहा। उसने शाहज़ादा खलील (११८) खा को बरोदा के भूखड से बुलवा कर अपने साथ रख लिया। जब सुल्तान नद्रबार मे पहुचा तो मलिक हुसामुद्दीन मुगुल ने, जिसके अधीन बुरहानपुर की आधी विलायत[3] थी और जो इससे पूर्व गुप्त रूप से आलम खा से इस विषय मे पत्र-व्यवहार कर रहा था कि 'यदि आप सुल्तान की सहायता तथा आदेश से इस ओर आये तो मेरे पूर्वजो के राज्य को आपके द्वारा शोभा प्राप्त हो जायगी और सेवक हृदय से इस कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने का प्रयत्न करेगा', यह देखकर कि सुल्तान महमूद स्वय इस अभियान हेतु रवाना हुआ है जो कुछ निश्चय किया था उसके विरुद्ध कार्य प्रारम्भ कर दिया। उसने अहमदनगर के हाकिम निज़ामुलमुल्क बहरी से मिलकर उसे अपनी सहायतार्थ बुलवाया।

मलिक लादन खलजी, जिसके अधीन बुरहानपुर की आधी विलायत थी, हुसामुद्दीन से विरोध के कारण सावधानी की दृष्टि से आसीर पर्वत के आचल मे चला गया। सक्षेप मे, जब सुल्तान थालनीर[4] कस्बे मे पहुचा, तो उसने अपनी सेना मे से ४००० अश्वारोहियों को चुनकर हुसामुद्दीन की सहायतार्थ बुरहानपुर मे छोड दिया और स्वय अपनी राजधानी की ओर वापस चला गया। सुल्तान को थालनीर मे बडी थकावट का अनुभव हुआ। वह कुछ दिन तक उस स्थान पर ठहरा रहा। उसने सैयिद अलिफ[5] खा को, जो योग्यता मे अद्वितीय था, नद्रबार के मुक्ता अज़ीज़ुलमुल्क सहित हुसामुद्दीन के विरुद्ध इस आशय से नियुक्त किया कि वे उसे उस विलायत से निर्वासित कर दे और लादन खलजी को प्रोत्साहन देकर उसके स्थान पर नियुक्त कर दे। जब सैयिद रानोबर कस्बे मे, जो बुरहानपुर के अधीनस्थ है, पहुचा तो निज़ामुलमुल्क बहरी की सेना आलम खा खानजादे के साथ भाग खडी हुई और दखिन की ओर (११९) चल दी। हुसामुद्दीन मुकाबला छोड कर अन्य मार्ग से थालनीर कस्बे मे पहुचा और सुल्तान के चरणो के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। मलिक लादन खलजी ने भी उपस्थित होकर चौखट का चुम्बन किया। ईदुज्जुहा[6] के उपरान्त आलम खा बिन एहसन खा को आदिल खा की उपाधि से सम्मानित किया गया और ३० लाख तन्के[7] उसे इनाम मे दिये गये तथा आसीर तथा बुरहानपुर के राज्य का

१ फ़रीदी के अनुसार 'माही' (पृ० ७६)।
२ फ़रीदी के अनुसार 'सबली'।
३ राज्य।
४ मूल पुस्तक मे 'थानीर'।
५ फ़रीदी के अनुसार 'आसिफ खां' (पृ० ७७)।
६ १० ज़िलहिज्जा ९१४ हि० (१ अप्रैल १५०९ ई०)।
७ फ़रीदी के अनसार '४ हाथी और ३ लाख तन्के' (पृ० ७७)।

हाकिम नियुक्त कर दिया गया। मलिक लादन खलजी को खाने जहा की उपाधि से सम्मानित किया गया। बनास[1] नामक स्थान जो सुल्तानपुर तथा नद्रबार के अधीन है उसे इनाम मे दे दिया गया। बनास, मलिक (लादन) की जन्मभूमि थी। उसे आलम खा की सहायतार्थ नियुक्त किया गया। उसने मलिक हुसामुद्दीन का खाने जहा से मेल करा दिया।

सुल्तान ने मलिक मुहम्मद[2] को, जो एमादुलमुल्क आसीरी का पुत्र था, गाज़ी खा की उपाधि दी और मलिक आलम शाह को जो थालनीर का थानेदार था, फतह खा की उपाधि प्रदान की। उसके भाई मलिक यूसुफ को सैफ खा की उपाधि प्रदान की। मलिक लादन के ज्येष्ठ पुत्र को मुजाहिद खा की उपाधि प्रदान की। उसने इन सब अमीरो को मलिक नुसरतुलमुल्क तथा मुजाहिदुलमुल्क गुजराती सहित आदिल खा की सहायतार्थ नियुक्त किया। आदिल खा प्रसन्नतापूर्वक निश्चिन्त होकर एव बडे समारोह तथा गौरव से आसीर की ओर रवाना हुआ। सुल्तान अपनी राजधानी को लौट गया। मलिक हुसामुद्दीन दो मजिल तक सुल्तान की सवारी के साथ रहा। बिदा होते समय सुल्तान ने दनथूरा[3] नामक स्थान जो सुल्तानपुर तथा नद्रबार के अधीन था, उसे इनाम मे दे दिया।

सक्षेप मे जब सुल्तान मुहमदाबाद पहुचा तो शाहजादा खलील को विदा कर दिया कि वह अपने स्थान, बरोदा कस्बे को चला जाय। सिकन्दर खा तथा लतीफ खा बिन (पुत्र) खलील खा को साथ कर दिया। उसके छोटे भाई बहादुर खा को सुल्तान ने अपनी सेवा मे रख लिया और उसके प्रति, दादा तथा पिता दोनो का स्नेह प्रदर्शित करता था। वह अनेक बार कहा करता था कि, "मेरा यह पुत्र बहुत बडा बादशाह होगा।" कहा जाता है कि एक दिन उसने बहादुर खा को अपनी जाघ पर बैठा कर कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते हुये कहा, "बहादुर खा मैंने ईश्वर से तेरे लिये गुजरात की बादशाही की शुभकामना की, जिसे ईश्वर ने स्वीकार कर लिया।"

सुल्तान की मृत्यु

सुल्तान ने जिलहिज्जा ९१६ हि० (मार्च १५११ ई०) मे पटन की ओर प्रस्थान किया। (१२०) सुल्तान की यह अन्तिम यात्रा थी। अन्त मे उसने वहा के प्रतिष्ठित लोगो उदाहरणार्थ मोलाना मुईनुद्दीन गाज़रूनी तथा मौलाना ताजुद्दीन सुयूती[4] से भेट की और उनसे कहा, "मै इस बार आप लोगों से विदा होने आया हू। मै जानता हू कि मेरा अन्तिम समय आ गया है।" सबने उसके लिये शुभकाम-नाये की। उसने पटन के समस्त पीरो[5] के मकबरे के दर्शन किये। चौथे दिन उसने पटन से अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। जब वह सरखीज पहुचा तो उसने बद्रुस्सिद्दीकीन, बुरहानुल आरेफीन, शेख अहमद खत्तू के मकबरे के दर्शन किये। अपने मकबरे को, जो उसने शेख के मकबरे के पायती बनवाया था, बडी शिक्षा की दृष्टि से देखा और कहा, "महमूद का भविष्य मे यही महल होगा। शीघ्र ही वह इस घर मे पहुच जायगा।" तदुपरान्त वह अहमदाबाद पहुचा और रुग्ण हो गया। वह तीन मास तक रुग्ण

१ मूल पुस्तक में 'बपास' किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'बनास' (पृ० ७७)।
२ फ़रीदी के अनुसार 'मलिक महमूद माखा' अथवा 'बाखा'।
३ फ़रीदी के अनुसार 'धनूरा' अथवा 'धनतरा'।
४ मूल पुस्तक में 'सूई' है (फ़रीदी पृ० ७८)।
५ सूफ़ियों, सन्तों।

रहा। उसने शाहजादा खलील खा को बरोदा से बुलवाया और अपनी मृत्यु के समय के निकट होने की उसे सूचना और शिक्षा दी। सयोग से इसी बीच मे एक दिन वह स्वस्थ हो गया। उसने शाहजादा खलील खा को विदा कर दिया, किन्तु थकावट तथा वृद्धावस्था के कारण उसका आमाशय बडा शक्तिहीन हो गया था। तीन मास उपरान्त वह पुन रुग्ण हो गया। उसने खलील खा को बुलवाने का आदेश दिया। शाहजादे के पहुचने के पूर्व अस्र की नमाज़ के समय सोमवार रमजान ९१७ हि०[1] (नवम्बर-दिसम्बर १५११ ई०) को उसकी मृत्यु हो गई। उसका जनाजा सरखीज पहुचाया गया और उपर्युक्त मकबरे मे दफन कर दिया गया।

उसने ५४ वर्ष तथा १ मास तक राज्य किया। उसकी अवस्था ६७ वर्ष तथा ३ मास थी। सुल्तान शेख रहमतुल्लाह इब्ने शेख अजीजुल्लाह का, जिनकी मजार शेखपुरा अहमदाबाद मे है, मुरीद था। उपर्युक्त पुरा उन्ही का बसाया हुआ है। शेख को आध्यात्मिक यात्रा मे बडा ऊचा स्थान प्राप्त था और उन्हे बहुत बडा सम्मान प्राप्त था।

सुल्तान के मित्र

कहा जाता है कि जब सुल्तान शाहजादा था तो तीन व्यक्ति उसके मुसाहिब तथा नदीम थे। एक दरिया खा गुम्बदे कला[2] का निर्माता जो अहमदाबाद के कोट मे है। उसके समान ईंट के किसी इतने लम्बे-चौडे गुम्बद का गुजरात मे निर्माण नही हुआ। दूसरे अलिफ खा भूकाली, जिसने धोलका कस्बे मे एक मस्जिद का किले के पश्चिम मे निर्माण कराया है। जल तथा स्थल के यात्रियो का कथन है कि किसी (१२१) भी स्थान पर इस प्रकार की ईंट की मस्जिद का निर्माण नही हुआ है। इसके अतिरिक्त मलिक मुहम्मद[3] था। जब सुल्तान सिहासनारूढ हुआ तो उसने प्रत्येक को पज हजारी मसब प्रदान कर दिया और खान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया। किन्तु मलिक मुहम्मद ने उपाधि स्वीकार न की और कहा, "मेरा नाम मुहम्मद है। इस नाम से बढकर कौन सी उपाधि हो सकती है।" किन्तु जो अन्य वस्तुये प्रदान हुई थी, उन्हे सभी ने स्वीकार कर लिया। बहुत समय तक इसी प्रकार सब कुछ होता रहा।

मलिक मुहम्मद

एक दिन मलिक मुहम्मद पालकी पर सवार होकर मन्थापुर[4] की ओर जो अहमदाबाद के भव्य नगर का प्रसिद्ध पुर है पहुचा। वह वहा एक इमली के वृक्ष की छाया में जो डालियों तथा पत्तियो से लदी हुई थी खडा हो गया। वायु गरम थी। उसकी छाया मे ठडक थी। उसने थोडी देर आराम करके वहा चक्कर लगाया। उसने देखा कि एक मुल्ला एक मस्जिद के कोने मे बालको को पढाने मे व्यस्त है। मुल्ला का नाम शेख कबीर था और वह सुल्तानुल आरेफीन शेख हमीदुद्दीन नागौरी के पौत्रों मे से था। वह बडा ही योग्य तथा पवित्र व्यक्ति था। मुहम्मद (इमली की) छाया मे सो गया। मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय उठा और वज़ू करके मुल्ला के पीछे नमाज पढने लगा। नमाज़ के उपरान्त मुल्ला ने

१ मूल पुस्तक मे '९१६ हि०' है किन्तु फ़रीदी के अनसार '९१७ हि०, (पृ० ७८)। उसके उत्तराधिकारी का सिहासनारोहण ९१७ हि० मे मूल ग्रन्थ ही मे लिखा गया है।
२ फ़रीदी के अनुसार यह गुम्बद नगर के उत्तर मे था। (पृ० १२०)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'मलिक मुहम्मद इख्तियार' (पृ० ७६)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'मीथापुर।'

मलिक की ओर कृपा की दृष्टि डाली। मलिक के अन्त करण को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। मलिक बडा प्रसन्न हुआ और उस समय के आस्वादन से मूर्च्छित हो गया। कुछ समय उपरान्त जब उसे चेतना हुई तो उठकर अपने घर को चला गया। यद्यपि उसके घर मे अत्यधिक सम्पन्नता थी किन्तु शेख के आकर्षण ने उसे उस ओर[1] प्रेरित न किया। प्रात काल वह पुन मुल्ला की सेवा मे पहुच गया। जब वह मुल्ला की सेवा मे पहुचा तो शिष्टतापूर्वक एव दीन भाव से बैठ गया। कुछ समय तक आसीन रहने के उपरान्त वह उठ कर अपने घर चला गया। जब कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये तो एक दिन मुल्ला ने एकान्त मे उससे कहा कि, "तुम सासारिक व्यक्ति हो। यहा किस कारण आकर अपने कार्यो मे विघ्न डालते हो। यदि ईश्वर की उपासना करना चाहते हो तो अन्य सभी वस्तुओ से सम्बन्ध विच्छेद कर लो और अपने आप को पूर्ण रूप से ईश्वर को सौप दो अन्यथा कष्ट न उठाओ। आराम के जीवन से कोई सफलता नही प्राप्त हो सकती।" मलिक ने कहा, "मै कुछ समय चाहता हू ताकि अपने अन्त.करण से (१२२) परामर्श कर लू। देखू वह मुझे किस कार्य की ओर प्रेरित करता है और किस चीज से बचाता है।" मुल्ला ने कहा, "ऐसा ही करो।"

मलिक अपने घर पहुचा। उसने अपने अधिकारियो को बुलवाया। सेवको के वेतन तथा उनकी मागो का हिसाब करवाया। प्रत्येक को इस आशय से अधिक प्रदान किया कि उन्हे कठिनाई के समय दरिद्र न रहना पडे। तदुपरान्त उसने अपनी दासियो को बुलाया और कहा, "जिसे स्वतत्र होने की इच्छा हो उसे मै स्वतत्र करता हू। जो कोई विवाह करना चाहे उसका विवाह करा दू।" प्रत्येक ने अपनी अपनी इच्छा प्रकट की। मलिक ने उनकी इच्छा पूरी की। वह यह सब कुछ ईश्वर के लिये कर रहा था किन्तु अपना उद्देश्य किसी को न बताता था। सक्षेप मे, उसने इसके पश्चात कहा कि, "मेरी सरकार मे हाथी, घोडे, नकद धन तथा अन्य सम्पत्ति जो कुछ है उसकी सूची लाई जाय।" उसकी आज्ञाओ का पालन किया गया। तदुपरान्त उसने सुल्तान की सेवा मे पहुच कर अपनी समस्त धन-सम्पत्ति की सूची एव जागीर का फरमान सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत करके कहा, "मुझे सुल्तान के प्रताप से ससार की कोई अभिलाषा नही। मैने समस्त अभिलाषाये एव महत्वाकाक्षाये त्याग दी है। यह जागीर का फरमान तथा धन-सम्पत्ति की सूची है जो मुझे सुल्तान के सौभाग्य से प्राप्त हुई है। सुल्तान इसे जिसको उचित समझे प्रदान कर दे।" सुल्तान ने सोचा कि सम्भवत वह रुष्ट होकर यह बात कह रहा है। उसने उसे प्रोत्साहन देते हुए इसका कारण पूछा और कहा, "यदि किसी ने तुझसे अनुचित व्यवहार किया हो तो मै उसे दड दू।" उसने कहा, "मै आजीवन सुल्तान की सेवा करता रहा। अब मेरी इच्छा है कि मै उस व्यक्ति की सेवा करू जिसने मखदूमी की टोपी सुल्तान के सिर पर रक्खी है[2] और सेवा की पेटी हमे प्रदान की है।" यह कह कर वह खडा हो गया और घर चला गया।

सुल्तान ने दरिया खा तथा अलिफ खा को, जो उसके मित्र तथा हितैषी थे, बुलवाया और मलिक से जो कुछ सुना था, उन्हे बता दिया और दोनो लिखी हुई वस्तुये[3] उसे दिखलाई। उन लोगो ने उसकी मित्रता तथा उसके प्रति निष्ठा के कारण निवेदन किया, "सम्भवत वह पागल हो गया है जो इस प्रकार की बात करता है। हमे कागज प्रदान कर दिये जाय ताकि हम जाकर उसे समझाये।" सुल्तान ने दोनों

१ धन-सम्पत्ति की ओर।
२ 'सुल्तान को शासक बनाया है'।
३ सूची तथा फरमान।

कागज उन्हे दे दिये। वे दोनो मलिक के घर पहुचे। मलिक उनका उद्देश्य समझ गया। उसने कहलाया, (१२३) "क्षण भर ठहरो मै आ रहा हू।" उसने नाई को बुलवाया और तलवार हाथ मे लेकर कहा, "यदि तू मेरे आदेश के पालन मे विलम्ब करेगा तो तेरी हत्या कर दूगा। मेरे सिर के बाल मूड।" उसने अपने सिर के बाल, दाढी, मूछ तथा भौहे मुडवा दी कारण कि वे हराम के भोजन से बढी थी। तदुपरान्त उसने अपनी पत्नी से कहा कि, "तू या तो अपनी आवश्यकतानुसार धन-सम्पत्ति ले ले और अपने माता-पिता के घर चली जा और यदि विवाह करना चाहे तो विवाह कर ले।" पत्नी ने उसके साथ जीवन व्यतीत करने का आग्रह किया और मलिक के आदेशानुसार अपनी धन-सम्पत्ति तथा आभूषण फेककर अपने वस्त्र कनीज[1] को दे दिये और उसके वस्त्र स्वय पहन लिये। तदुपरान्त मलिक अपनी पत्नी का हाथ पकड कर अलिफ खा तथा दरिया खा के सामने से निकल कर शेख के घर चला गया। दरिया खा एव अलिफ खा चकित होकर खेद प्रकट करते हुये सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुये और कहा कि, "बडा दु ख है कि वह पागल हो गया।"

(१२४) शेख ने मलिक तथा उसकी पत्नी का स्वागत किया और मलिक की पत्नी से कहा, "बहिन अपनी बहिनों के पास चली जाओ।" शेख, मलिक की पत्नी को स्वय अपने घर की स्त्रियों के पास ले गया और कहा, "जानती हो, यह किसकी पत्नी है? यह हमारे युग के इबराहीम[2] अदहम की पत्नी है। इनके साथ रहना बहुत बडा सौभाग्य समझो और इनकी सेवा करने मे कोई कसर न उठा रक्खो।" तदुपरान्त शेख, मलिक की शिक्षा-दीक्षा मे व्यस्त हो गये मलिक तरीकत तथा सुलूक[3] के क्षेत्र मे प्रविष्ट हो गया।

कहा जाता है वह रोजाना शेख के लिये जल का एक घडा भर कर अपने सिर पर साभर[4] नदी से त्रिपुलिया के बाजार से होता हुआ लाता था। इस मार्ग की दूरी पक्का एक कोस होगी। लोग मलिक के इस कार्य को उसका पागलपन कहते थे। वह (मलिक) इसे बुरा न समझता था और इसे अपना सौभाग्य समझता था। एक दिन सुल्तान शिकार से लौट कर अपने घर आ रहा था। मलिक घडा भरे हुये शीघ्रता से चला जा रहा था। दूर से सुल्तान की दृष्टि मलिक पर पडी; उसने पहचान कर कहा, "दरिया खा! मलिक मुहम्मद को देखते हो।" उसने कहा, "जी हा।" सुल्तान ने कहा, "बड़ी उन्नति की है। यदि सुलूक के मार्ग के लिये इतने अपमान की आवश्यकता है तो यह बडी ही विचित्र दशा है।" दरिया खा ने कहा, "मै इस व्यक्ति की तन्मयता को (देखकर) यह निष्कर्ष निकालता हू कि शीघ्र लोग इसके चरणों की धूल पर अपने सिर रखेगे और यह किसी के सामने सिर न नवायेगा।" सक्षेप मे कुछ समय उपरान्त उसके सौभाग्य की शीतल पवन बही और उसके कृत्यों के उद्यान मे फल आये। ससार उसकी दशा पर मूर्च्छित हो गया और दुनिया उसकी निपुणता पर आसक्त हो गई। सहस्रों लोग उसके चरणो का चुम्बन करने की आशा से एकत्र होकर उस तक पहुचने की अभिलाषा मे इकट्ठा होते थे।

एक दिन शेख ने कहा कि मै उसे एकान्त में रख कर उच्च श्रेणी को पहुचाना चाहता था और उसे अस्तित्व के बन्दीगृह से मुक्त कराना चाहता था किन्तु उसने स्वय अपने लिये एक स्थान बना लिया

१ दासी।

२ बलख का बादशाह जो संसार त्याग कर दरवेश हो गया था और ११० वर्ष की अवस्था मे ८७५ से ८८० ई० के बीच मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

३ सूफियों की 'आध्यात्मिक यात्रा'।

४ फ़रीदी के अनुसार 'साबरमती' (पृ० ८१)।

(१२५) और चरम सीमा तक पहुचने का प्रयत्न नही किया।" मलिक इससे बडा लज्जित तथा प्रभावित हुआ और वह अपनी प्रसिद्धि का अन्त कराने का प्रयत्न करने लगा। उसने ऐसे कार्य प्रारम्भ कर दिये कि लोग उससे बचने लगे। यदि किसी अमीर का पुत्र सुन्दर घोडे पर सवार होकर उसकी सेवा मे आता तो वह उसको अपनी ओर से किसी कव्वाल को दिला देता। वह पुन मलिक की भेट के लिये न आता। इसी प्रकार तलवार तथा वस्त्र लेकर वह दरिद्रियों को दिलवा देता। शनै शनै लोग उससे घृणा करने लगे, यहा तक कि यदि मलिक किसी मार्ग पर जाता होता तो लोग उससे बचने लगते। उन्हे भय होता कि सम्भव है वह कुछ माग कर किसी अन्य को न दिला दे। अल्प समय मे लोगों की भीड कम होने लगी और मलिक नित्यप्रति आध्यात्मिक उन्नति करता गया और ईश्वर की ओर से उसे मुहम्मद इख़्तियार की उपाधि प्रदान हो गई। उसने ईश्वर के अतिरिक्त सभी से मुख मोड लिया था।

कहा जाता है कि शाह आलम बुखारी का एक मुरीद, मलिक मुहम्मद इख़्तियार की सेवा मे पहुंच गया। एक व्यक्ति ने शाह आलम से निवेदन किया कि "आपका अमुक मुरीद मलिक मुहम्मद इख़्तियार की सेवा मे पहुच गया है और उसने इजतेहाद प्रारम्भ कर दिया है।" शाह ने कहा, "कोई हरज नही।"

(१२६) कहा जाता है कि एक दिन मार्ग मे मलिक से शाह (आलम) की भेट हो गई। उन दोनों ने एक दूसरे से खिर्का[1] मागा। मलिक ने कहा कि, "यह शाहो की देन है।" शाह (आलम) ने कहा, "मलिक भी उन्ही लोगों मे से है।" उन्होंने मलिक को पीराहन[2] दिया। मलिक ने अपनी टोपी शाह के समक्ष रक्खी।

मलिक दावरुलमुल्क

फिरिश्ते जैसा एक अन्य धर्म-निष्ठ अमीर मलिक दावरुलमुल्क था। उनका नाम अब्दुल लतीफ इब्न (पुत्र) मलिक महमूद कुरेशी था। सासारिक वैभव के बावजूद सर्वदा पवित्रता तथा सदाचारिता की चेष्टा किया करता था। जब उसके घर पर सैनिकों तथा अन्य लोगो की भीड होने लगी तो उसने अपने पडोसी से कहा, "मै अपने घरो को बेच रहा हू। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो क्रय कर लो।" उसने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा, "आपके लिये यह आवश्यक है कि आप अपने घरो की मरम्मत कराये और यदि हम लोगों मे से कोई अपना घर बेचना चाहे तो आप क्रय कर ले न कि आप अपना घर स्वय बेच डाले।"

अन्त मे मलिक उस मुहल्ले को छोडकर शहर के बाहर रहने लगा और अपने लिये घर का निर्माण करा लिया। इसका कारण यह था कि लोग बहुत बडी सख्या मे उसके घर के निकट एकत्र होते थे और घोड़े तथा हाथी शोर करते थे। मलिक को भय था कि इससे पडोसियो को कष्ट होता होगा।

कहा जाता है कि मलिक अपनी जागीर से शरा के अनुसार कर प्राप्त करता था और लेशमात्र भी उससे अधिक न वसूल करता था। यदि शाही पदाधिकारी उसे वीरान जागीर प्रदान कर देते थे तो प्रजा बिना बुलाये तथा बिना प्रोत्साहन के आकर उसे आबाद कर देती थी। सयोग से उसकी जागीर पूर्ण रूप से आबाद हो गई थी। सुल्तान के जामाता ने उस ओर से आखे बन्द कर ली, और सुल्तान से

१ चीवर।
२ कुर्ता।

निवेदन किया कि, "मलिक की जागीर मुझे प्रदान कर दी जाय। मलिक को जहा कही भी जागीर मिलेगी वह उसे समृद्ध कर लेगा।" सुल्तान ने स्वीकार न किया। उसने ईश्वर की चिन्ता न करते हुये, अपनी सेना मे से कुछ लोगो को मलिक की हत्या हेतु नियुक्त किया। एक रात्रि मे उन मार्ग-भ्रष्ट लोगों ने अवसर पाकर मलिक पर प्रहार किया। ईश्वर ने मलिक की रक्षा की और घाव गहरे न लगे। (१२७) उन्हे बन्दी बना लिया गया। मलिक ने पूछा, "तुम लोगो ने यह कार्य क्यो किया ?" उन्होने उत्तर दिया, "हमारे सयानी पुत्रिया है। हम उनके विवाह का प्रबन्ध न कर सकते थे। सुल्तान के जामाता ने हमे थोडे से धन का लोभ देकर हमसे यह कार्य कराया।" मलिक ने कहा, "तुम लोग ठीक कहते हो। आवश्यकता ऐसी ही चीज है जिसके कारण मनुष्य अनुचित कार्य करने पर विवश हो जाता है।" उसने उनकी आवश्यकताओ का प्रबन्ध करा दिया।

मलिक, शाह आलम बुखारी बिन (पुत्र) कुतुबुल अकताब सैयिद बुरहानुद्दीन बिन (पुत्र) सैयिद महमूद बिन कुतुबे जहा व मखदूमे जहानिया का मुरीद था। कहा जाता है कि एक दिन शाह आलम वजू कर रहे थे। मलिक उनके हाथ पर जल डाल रहा था। यह सेवा विशेष रूप से मलिक ही के सिपुर्द थी। इसी बीच मे दखिन (दक्षिण) के शाहजादे को, जो कोढ के रोग मे ग्रस्त था, उसके वकीलो ने उपस्थित किया और शाह आलम से उसके स्वस्थ होने की प्रार्थना की। शाह आलम पनाह वजू की दुआये[1] पढ रहे थे अत उन्होने प्रार्थना का कोई उत्तर न दिया। उन लोगो ने पुन प्रार्थना की। वजू के उपरान्त वजू के जल की कुछ बूदे शाह आलम ने शाहजादे को पिलवा दी। ईश्वर की कृपा से वह स्वस्थ हो गया। तदुपरान्त शाह आलम पनाह ने कहा, "क्योकि लोग ख्वाजा मुईनुद्दीन[2] से अपनी आवश्यकताओ के विषय मे अत्यधिक प्रार्थना करते थे, अत वे लोगो को सालार मसऊद[3] को सौप देते थे और स्वय अलग हो जाते थे। मुझे भी यही करना चाहिये।" मलिक ने अपने हृदय मे सोचा कि सालार मसऊद सरीखा व्यक्ति इस युग मे होना बडा कठिन है। शाह आलम ने मलिक के विचारो से अवगत होकर कहा, "आश्चर्य की क्या बात है ? ईश्वर यह सम्मान तुम्हे प्रदान कर देगा।"

उस समय लोग बडी दूर-दूर से मलिक के दर्शनार्थ आया करते थे, विशेषकर दखिन वाले, और वे अपने उद्देश्य की पूर्ति के पश्चात् लौट जाते थे। सक्षेप मे, कुछ समय पश्चात् मलिक को अम्बरून की, जो कच्छ के राज्य की सीमा पर है और सरकार झालावर के अधीन मोरवी कस्बे से १० कोस पर है, थानेदारी के लिये भेज दिया गया। वह स्थान कुफ्र तथा विद्रोहियों की खान था। मलिक वहा पहुचने के उपरान्त अधिकाश उस क्षेत्र के काफिरो से जिहाद[4] किया करता था। एक दिन उसने भीच[5] के समीप (१२८) के स्थानो के काफिरो पर आक्रमण किया। भीच, कच्छ के राजा की राजधानी था। रन के

१ कुरान के वाक्य जो वजू के अवसर पर बडे-बडे आलिम, सूफी तथा धर्मनिष्ठ लोग पढते हैं। इनका पढ़ना अनिवार्य नही है।

२ एक प्रसिद्ध सूफी जिनकी मजार अजमेर मे है। इनका जन्म सीस्तान मे ११४२ ई० मे और मृत्यु अजमेर मे १२३६ ई० मे हुई।

३ सालार मसऊद गाज़ी, जो बहराइच मे दफन हैं, सुल्तान महमूद के भागिनेय थे। उनकी मृत्यु १५ जून १०३३ ई० मे १६ वर्ष की अवस्था मे हुई। दोनो के काल मे इतना अन्तर है कि वह घटना असम्भव है।

४ इस्लाम के प्रसार के लिये युद्ध।

५ फ़रीदी के अनुसार 'भोज'।

एक भाग को जोकि खारी जल के समुद्र की एक बाहु है पार करके तीसरे दिन एक आबाद स्थान पर पहुच कर उसने एक वृक्ष के नीचे पडाव किया और वही सो गया। जब वह जागा तो उसने देखा कि सैनिकों ने अपने घोडो को पास के ज्वार के खेतो मे छोड दिया है और वे चर रहे हैं। मलिक ने कहा, "मित्रो! तुम्हे ईश्वर का भय नही जो अन्य व्यक्तियो की सम्पत्ति मे हस्तक्षेप करते हो।" उन लोगो ने उत्तर दिया, "हे स्वामी! तीन दिन से घोडो तथा मनुष्यो ने किसी भी भोजन की वस्तु के दर्शन नही किये हैं, किन्तु हम तो ईश्वर के भय के कारण सहन कर सकते हैं परन्तु पशुओ मे यह समझ कहा है।" मलिक ने कहा, "यदि तुम लोग केवल ईश्वर की प्रसन्नता के लिये (कष्ट) सहन करते तो तुम्हारे घोडे भी तुम्हारा साथ देते।" मलिक ने अपने घोडे की लगाम खोल कर खेत के निकट छोड दिया। घोडा आगे न बढा और सिर झुकाये खडा रहा। अन्त मे उस क्षेत्र के काफिरो ने मलिक की अधीनता स्वीकार कर ली, यहा तक कि अम्बरून कस्बे के गरासियों[1] ने भी उपस्थित होकर सेवा करना स्वीकार कर लिया। उन लोगो मे से एक दुष्ट ने मलिक से कहा, "मेरे सम्बन्धियो मे अमुक गरासिये के पास एक तलवार है जो अद्वितीय है। जब वह आये तो उससे लेकर उसे म्यान से निकाल कर देख ले कि वह कितनी उत्तम है।" उस दुष्ट ने गरासिया से कहा, "मलिक ने विश्वासघात द्वारा तेरी हत्या करना निश्चय कर लिया है और यदि तुझे विश्वास न हो तो यह समझ ले कि जब मलिक तेरे हाथ से तलवार लेकर म्यान से निकालेगा तो यह तेरी हत्या का आदेश होगा।" उसने अपने सम्बन्धियो को सिखा दिया कि, "जब मलिक मेरे हाथ से तलवार ले ले तो उसके तलवार म्यान से निकालने के पूर्व तुम लोग मलिक की हत्या कर देना।" जब गरासिया उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ, तो मलिक ने उस षड्यन्त्र से अनभिज्ञ होने के कारण तलवार हाथ मे ले ली। उसके साथियो ने मलिक की हत्या कर दी। उस दिन से आज तक लोग मलिक के मकबरे के दर्शनार्थ निकट तथा दूर से जाते हैं और उनके (लोगो के) उद्देश्यो की पूर्ति होती है।

(१२९) मलिक की हत्या १३ ज़ीकाद[2] को हुई। मलिक के शहीद हो जाने के उपरान्त उसके चमत्कार बहुत बडी सख्या मे प्रकट हुये। सहस्रो मनुष्य निकट तथा दूर से वहा पहुचते हैं और सभी की आवश्यकताये पूरी होती हैं। अन्धे, लगडे, अपाहिज, सतान के इच्छुक तथा धन-सम्पत्ति की अभिलाषा रखने वाले वहा उपस्थित होते हैं। कुछ लोग अपने पाव मे बेडिया डाले, कुछ अपने होठो मे लोहे के ताले लटकाये अपने घरो से इस उद्देश्य से आते हैं कि जब हमारी इच्छा पूरी हो जायगी तो ये ताले तथा बेडिया आप ही आप खुल जायगी। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी इच्छा का उत्तर स्वप्न मे मिल जाता है। कुछ को तुरन्त, कुछ को देर मे।. . . उसकी मृत्यु से आज तक जो १०२७ हि० (१६१६-१८ ई०) है, इसी प्रकार लोगों का व्यवहार चला आ रहा है।

मलिक अयाज

सुल्तान के अन्य प्रतिष्ठित अमीरो मे एक मलिक अयाज था। यद्यपि वह उसका मोल लिया हुआ दास था किन्तु वह बहुत बडे राज्य पर शासन करने योग्य था। उसके पास वैभव के बड़े विचित्र साधन थे। कहा जाता है कि निम्न वर्ग के सेवको के अतिरिक्त १००० सक्के उसकी सरकार मे जल खीचते थे। उसने चमडे का एक हौज़ बनवाया था। जब वह किसी स्थान पर चढाई करता तो उसे भर

१ कृषक राजपूतो का एक समूह।
२ १३ ज़ीकाद ९१५ हि० (२२ फ़रवरी १५१० ई०)।

दिया जाता था। सेना वाले उससे जल ले जाते थे। घोडे तथा हाथी इत्यादि उसी से जल पीते थे। मलिक के कारनामो की गुजरात मे बडी प्रसिद्धि है। देव के किले का निर्माण उसी ने कराया था। उसे इस समय फिरगियों ने नष्ट कर दिया है, और उसके स्थान पर दूसरे किले का निर्माण करा दिया है। उसने समुद्र मे एक बुर्ज का निर्माण कराया जिसका नाम "साकल कोट है"। वहा से समुद्र-तट तक लोहे की जजीर (१३०) इस आशय से बधवाई थी, कि फिरगियो के जहाज उस मार्ग से न जा सके। अभी तक वह इमारत वर्तमान है।

सुल्तान बहादुर की हत्या के पश्चात् उसके भतीजे सुल्तान महमूद शहीद के राज्यकाल मे वह किला, नगर तथा बन्दरगाह फिरगियो[1] के अधिकार मे आ गये। देव नामक द्वीप मे उसने उद्यान लगवाये। समुद्र की दो शाखाओं पर, जो देव नामक द्वीप से निकल कर उत्तर की ओर एक दूसरे को काटती हैं, उसने पत्थर के एक पुल का निर्माण कराया जिसे फिरगियो ने इस समय नष्ट कर दिया है। जब मलिक वहा का हाकिम था तो फिरगियो को गुजरात के बन्दरगाहो मे प्रविष्ट होने का साहस न होता था। शनै. शनै कार्य इस सीमा को पहुच गया कि किसी भी बन्दरगाह से फिरगियो की अनुमति के बिना कोई नौका नही निकल सकती। केवल सूरत के बन्दरगाह मे ऐसा नही है और वह भी मोअक्किलो[2] की वीरता तथा पौरुष का परिणाम है।

कहा जाता है कि भोजन के समय मलिक के आदेशानुसार बिगुल बजाया जाता था और द्वारपाल हट जाते थे। जिस किसी को भोजन की इच्छा होती वह आकर दस्तरख्वान[3] पर बैठ जाता था। सभापति से लेकर अन्त मे बैठे हुए व्यक्ति तक को एक ही प्रकार का भोजन प्रदान किया जाता था। मलिक दस्तरख्वान के दाये-बाये देखता जाता था। यदि दस्तरख्वान लगाने वाला लेशमात्र भी भोजन मे अन्तर कर देता तो वह बडी कठिनाई मे पड जाता था। मलिक अत्यधिक क्रोधित होता। प्रत्येक प्रकार के ईरानी, रूमी[4] तथा हिन्दुस्तानी भोजन, जिनसे स्वर्ग के भोजन की स्मृति हो जाती थी, दस्तरख्वान पर उपस्थित किये जाते थे। भोजन के उपरान्त समस्त लोगो के सेवकों को भोजन प्रदान किया जाता था। इस कार्य मे इतनी अधिक सावधानी बरती जाती थी कि इससे अधिक की कल्पना भी नही हो सकती। तदुपरान्त पान तथा इत्र लाये जाते थे। सर्वदा इसी प्रकार भोजन होता था।

कहा जाता है कि मलिक की समस्त सेना मखमल एव जरबफ्त के वस्त्र धारण करती थी, यहाँ तक कि हलाल खोर तक चिकन और सकरलात पहनते थे। समस्त सेना की तलवार, निषग तथा कटार के खोल एव मुठिया सोने और चादी की होती थी।

कहा जाता है कि मुजफ्फर बिन महमूद के राज्यकाल मे राणा सागा लगभग एक लाख अश्वारोहियो को एकत्र करके गुजरात की सीमा पर अहमदनगर के निकट, जो ईदर से लगभग १० कोस पर स्थित है, पहुच गया। सुल्तान मुज़फ्फर की सेना राज्य के विभिन्न भागों मे बिखरी हुई थी। उनके एकत्र होने मे समय लगा। निजाम खा बहमनी तथा अहमदनगर प्रान्त के मार्ग के रक्षको ने ४००० अश्वारोहियो सहित निकल कर युद्ध किया और राणा की अधिकाश सेना को पराजित कर दिया। अन्त मे (१३१) उसके ३००० सहायक मार डाले गये और उसके बहुत से घाव लगे। लगभग ७०००

१ पुर्तगालियो।
२ सूरत के बन्दरगाह के अधिकारियों।
३ खाना खाने के फ़र्श या चौका आदि पर फैलाया जाने वाला कपड़ा।
४ टर्की के।

राजपूत अश्वारोही मार डाले गये। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने मलिक अयाज को सोरठ की विलायत से बुलवाया। मलिक अयाज शीघ्रातिशीघ्र पहुचा। सुल्तान ने मलिक अयाज को कुछ अमीरो सहित बहुत बडी सेना देकर राणा के विरुद्ध नियुक्त किया। राणा युद्ध किये बिना ही लौट गया। मलिक ने उसका पीछा किया।

कहा जाता है कि इस निरन्तर यात्रा तथा भय के समय भी नित्यप्रति अमीर लोग मलिक के दस्तरख्वान पर उपस्थित होते थे। जो लोग उपस्थित न होते थे उनके लिये भोजन भेजा जाता था। जो अमीर अपने आप को मलिक के समान समझते थे उन्हे यह बात अच्छी न लगती थी। वे अपने सेवको को आदेश दे देते थे कि तबको और चीनियो[1] को लौटाया न जाय ताकि फिर हमारे लिये भोजन न आये। तीन दिन तक तबकचियो[2] को मागने पर जब चीनिया[3] वापस न मिली तो उन्होंने मलिक से कहा कि, "तबक तथा चीनिया जिनमे भोजन अमीरो के डेरो मे भेजा जाता है वापस नही आती।" मलिक ने कहा, "कोई चिन्ता नही। तुम लोग जिस प्रकार भोजन भेजते थे, उसी प्रकार भेजते जाओ।" कहा जाता है कि एक मास तक इसी प्रकार भोजन भेजा गया और चीनिया न मागी गईं। एक मास उपरान्त अमीरो ने मलिक के सामान तथा साहस की प्रशसा करते हुये चीनिया वापस भेज दी, और मलिक की श्रेष्ठता को उन्होने स्वीकार कर लिया।

मलिक ने मदसौर कस्बे तक राणा का पीछा किया। एक रात्रि मे राजपूतो ने मलिक की सेना पर छापा मारा और बहुत से घोडो की हत्या करा दी। मलिक ने तत्काल आदेश दिया कि घोडो को दफन कर दिया जाय और उन्ही घोडो के समान उसकी अश्वशाला से घोडे ले लिये जायँ। सात शक्तिहीन तथा घायल घोडे रह गये। उन्हे उसी प्रकार छोड दिया गया। प्रातःकाल गुप्तचरो ने राणा को सूचना पहुचाई कि रात्रि के छापे मे मलिक की सेना के केवल सात घोडे आहत हुये तथा मारे गये। राणा ने राज-पूतो को धिक्कारते हुये कहा, "तुम लोग कहते थे कि हमने बहुत से घोडो की हत्या कर दी है। हमारे गुप्तचर गिन कर बताते हैं कि केवल सात घोडे मारे गये।"

मलिक के तीन पुत्र थे। एक इसहाक जिसकी उपाधि चगेज खा थी, दूसरा मलिक तुगान तथा तीसरा इलियास। इसहाक बडा मोटा-ताजा था और अधिकाश हाथी[4] पर सवार होता था। घोडे उसे (१३२) उठा न पाते थे। इसके बावजूद वह बडा उत्तम धनुर्धर था और मल्लयुद्ध की कला मे बडा कुशल था। उस काल मे कोई पहलवान उससे मल्लयुद्ध न कर सकता था। अन्त मे सुल्तान बहादुर इब्न (पुत्र) सुल्तान मुज़फ्फर बिन (पुत्र) सुल्तान महमूद ने रूमी खा के बहकाने से तीनो पुत्रो की हत्या करा दी।

राणा के सुल्तान मुजफ्फर बिन सुल्तान महमूद बेकरह के राज्यकाल मे आक्रमण करने तथा सुल्तान बहादुर बिन सुल्तान मुजफ्फर के राज्यकाल मे मलिक अयाज़ के पुत्रो की हत्या के विषय मे विस्तार से उचित स्थान पर लिखा जायगा।

कहा जाता है कि इसहाक के १०० पत्निया थी और वह सबको सतुष्ट कर लेता था। मैथुन-शक्ति की अधिकता के कारण वह प्रत्येक रात्रि मे २० स्त्रियों से सम्भोग करता था। कहा जाता है कि

१ थालो तथा प्लेटो।
२ रसोई के बर्तनों का प्रबन्ध करने वाले।
३ प्लेटें।
४ फ़रीदी के अनुसार 'ऊँट' (पृ० ८६)।

इसहाक की मृत्यु के पश्चात् उसकी अधिकाश पत्नियो ने अपना पेट फाडकर आत्म-हत्या कर ली। मलिक अयाज की सुल्तान मुजफ्फर के राज्यकाल मे मृत्यु हो गई।

मलिक शाबान

सुल्तान के प्रतिष्ठित अमीरों मे एक मलिक शाबान था। उसकी उपाधि मलिकुश्शर्क थी और उसे सुल्तान मुहम्मद इब्ने सुल्तान अहमद ने क्रय किया था। वह सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे बढा और विजारत के पद तक पहुच गया। वह बडे ही विचित्र तथा दानी स्वभाव का व्यक्ति था। कहा जाता है कि इस युग मे मलिक के समान कोई अन्य वजीर पूर्व तथा पश्चिम मे न था। समस्त प्रजा उसके राज्यकाल मे सतुष्ट थी। उसने एक उद्यान भव्य मस्जिद सहित अहमदाबाद के समीप पूर्व की ओर बनवाया और उसका नाम 'बागे शाबान' रक्खा। अन्त मे वह पवित्र जीवन व्यतीत करने का सकल्प करके उस उद्यान मे निवास करने लगा। सुल्तान ने यद्यपि उससे विजारत स्वीकार करने के विषय मे बडा आग्रह किया किन्तु वह तैयार न हुआ। वह कहा करता था कि, "जितनी निश्चिन्तता मुझे एक दिन मे इस एकान्तवास मे प्राप्त हुई, उतनी निश्चिन्तता समस्त जीवनकाल मे न प्राप्त हो सकी थी।" वह अपने जीवन के अन्त तक उद्यान के बाहर न निकला और उसने अपना शेष जीवनकाल वही व्यतीत किया। वह मस्जिद के प्रागण मे उद्यान मे दफन हुआ।

खुदावन्द खा अलीम

एक अन्य अमीर खुदावन्द खा अलीम था। नगर के दक्षिण मे अलीमपुर नामक स्थान उसी ने बसाया था। उसने उसमे पत्थर की एक मस्जिद का निर्माण कराया जिसका फर्श सगमरमर का था जो २०० कोस से लाये गये थे। वह सुल्तान मुहम्मद बिन सुल्तान अहमद का जामाता था। वह बडा ही योग्य तथा वाक्पटु था। वह प्रत्येक भाषा मे वार्तालाप कर लेता था। बाण चलाने तथा गेद खेलने (१३३) मे वह अद्वितीय था। कहा जाता है कि अजीर का वृक्ष तथा बर्छे का बास[1] बीजानगर एव दखिन (दक्षिण) से गुजरात मे उसी ने मगवाया था। उसने कई बार विद्रोह किया और सुल्तान ने उसे क्षमा कर दिया। वह कहा करता था कि, "यदि मै मलिक की हत्या करा दूँ अथवा उसे निर्वासित करा दूँ तो उसके समान मलिक गुजरात मे कहा पाऊगा ?" अन्त मे उसने भी तोबा कर ली और एकान्तवास ग्रहण कर लिया। उसने अपना शेष जीवन एकान्त मे व्यतीत किया।

अलिफ खा भूकाली

एक अन्य अमीर अलिफ खा भूकाली बडा ही गौरवशाली तथा उदार एव सुल्तान का मुसाहिब[2] था। ध्वालका[3] कस्बे के पीछे बडी मस्जिद तथा पत्थर का हौज़ उसी का निर्माण कराया हुआ है। वह भवन उसके सम्मान तथा गौरव का प्रतीक है। ससार के पर्यटक इस बात से सहमत है कि ईंट तथा गारे की ऐसी मस्जिद ससार भर मे कही नही है।

१ फ़रीदी के अनुसार 'खरबूज़ा भी' (पृ० ८६)।
२ मित्र, सहचर।
३ फ़रीदी के अनुसार 'धोलका'।

दरिया खा

इनके अतिरिक्त दरियापुर का निर्माता दरिया खा था। उसका पुरा अहमदाबाद मे प्रसिद्ध है।

एमादुलमुल्क असस

एक अन्य अमीर एमादुलमुल्क असस है। उसने बतुवा तथा रसूलाबाद के मध्य मे अससपुर बसाया था। अहमदाबाद का कोई पुरा इतना सुन्दर नही। उसके चारो ओर पक्की ईटो तथा चूने के पलस्तर का कोट है। उसके समीप आम, खिन्नी तथा ताड के वृक्षो के बहुत बडी सख्या मे उद्यान है। मोगरा का फूल, जिसका विवाह अन्य सुगन्धित फूलो से हुआ है, जैसा अससपुर के उद्यानों मे होता है वैसा कही अन्य नही होता। शाह आलम इस पुरे को करीमुत्तरफैन कहते थे (कारण कि इसके) एक ओर दक्षिण की तरफ बतुवा स्थित है जहा कुतुबुल अकताब का मकबरा है, दूसरी दिशा मे उत्तर की ओर रसूलाबाद है जोकि शाह आलम का निवासस्थान था और जहा उनका मकबरा है। बतुवा से असस पुर तक और रसूलाबाद से उपर्युक्त पूरे तक दोनो ओर खिन्नी तथा आम के उद्यान है। उनकी छाया यात्रियो को माता तथा पिता के प्रेम की स्मृति दिला देती है। मलिक का मकबरा उपर्युक्त पुरे के कोट के बाहर स्थित है। उसमे एक बहुत ही उत्तम मस्जिद है जिसमे १० × १० का एक हौज है।

ताज खा सालारी

इनके (अमीरो के) अतिरिक्त ताज खा सालारी है। वह इतना अधिक दानी तथा दयालु था कि उसकी मृत्यु के उपरान्त किसी भी अमीर ने यह उपाधि स्वीकार न की। इसका कारण यह था कि जितना दान-पुण्य तथा साहस उसमे था वह किसी अन्य के लिये सम्भव न था। लोग उसके दान-पुण्य को देखते (१३४) हुये इस उपाधि को स्वीकार न करते थे। दीर्घ काल के उपरान्त सुल्तान मुजफ्फर बिन सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे शाह आलम बुखारी के रौजे का निर्माता ताज खा तरयानी उस उपाधि द्वारा सम्मानित हुआ। वह भी उसी के समान दान-पुण्य करता था, अपितु उससे भी बढ कर। ताजपुर, जो दक्षिण की ओर शहर अहमदाबाद के कोट के भीतर है, उसी ने बसाया था।

किवामुलमुल्क सारग

एक दूसरा (अमीर) किवामुलमुल्क सारग था जो वास्तव मे एक राजपूत का पुत्र था। उसके भाई का नाम मूला था। दोनो सुल्तान द्वारा बन्दी बना लिये गये थे। सुल्तान ने उन्हे मुसलमान किया।

कहा जाता है कि मूला के खतने[1] के दिन जब हज्जाम ने उसकी लिगेन्द्रिय पर अस्तुरा चलाया तो उसकी अपान वायु निकल गई। उपस्थितगण हँसने लगे। उसने कहा :

"शूँ हसो छू जेनी भाई ना माथा दादतहीन बेनीं बौन पुकार न करे।"

'अर्थात् क्यो हँसते हो। यदि किसी के भाई का सिर काटा जाय तो उसकी बहिन विलाप न करे।' जब सुल्तान को इस बात का पता चला तो वह बहुत हँसा।

मलिक अमीन कमाल कवि, जो सुल्तान बहादुर का नदीम था और चुटकुले कहने तथा

1 इस्लाम ग्रहण करने पर शिश्न के ऊपर की त्वचा काटने की क्रिया।

वाक्पटुता मे अद्वितीय था, उसका पौत्र था। उसका उल्लेख सुल्तान बहादुर के इतिहास के सम्बन्ध में किया जायगा।

दोनो भाई सुल्तान के बहुत बडे विश्वासपात्र थे। कहा जाता है कि मलिक सारग वार्तालाप मे बडा धृष्ट था। सुल्तान उसे पसन्द करता था। सारगपुर तथा अहमदाबाद नगर के बाहर पूर्व की ओर एक मस्जिद उसी की निर्माण कराई हुई है।

हाजी कालू

उसके अतिरिक्त सुल्तान का दास हाजी कालू था। कोट के भीतर पूर्व की ओर कालूपुर उसी का बसाया हुआ है। कहा जाता है कि वह बडा ही योग्य तथा अद्वितीय था।

आजम तथा मुअज्जम

इनके अतिरिक्त आजम तथा मुअज्जम दो खुरासानी भाई थे। वे बडे कुशल धनुर्धर थे। सरखीज[1] तथा अहमदाबाद के मध्य मे एक हौज, जिसमे जल नही रुकता, और उसके पास एक गुम्बद एक मस्जिद सहित उन्ही की निर्माण कराई हुई है। वे दोनो भाई उसी गुम्बद मे दफन है। गुजरात (१३५) के कुछ लोग उनके विषय मे बडी अनुचित बाते किया करते है जो लिखने योग्य नही।

सुल्तान मुजफ़्फ़र

सुल्तान महमूद के पुत्र

सुल्तान महमूद के चार पुत्र थे। उनमे से एक का नाम मुहम्मद काला था। उसकी माता का नाम रानी रूप मजरी था जो पहिले सुल्तान कुतुबुद्दीन की पत्नी थी। उसकी मृत्यु के उपरान्त सुल्तान महमूद ने उससे विवाह कर लिया। उपर्युक्त शाहजादा तथा उसकी माता, दोनो की ही सुल्तान के जीवनकाल मे मृत्यु हो गई। रूप मजरी का मकबरा मानक चौक अहमदाबाद मे प्रसिद्ध है।

दूसरा पुत्र आबा खा[2] था। उसकी माता का नाम रानी सिरानी थी। रानी का मकबरा सूरिया[3] द्वार के निकट स्थित है। आबा खा को सुल्तान के आदेशानुसार इस कारण विष दे दिया गया था कि उसके घर में एक व्यक्ति ने प्रविष्ट होकर उसे पकड लिया था। जब यह समाचार सुल्तान को प्राप्त हुए तो उसने आदेश दिया कि उसे शरबत मे विष मिलाकर दे दिया जाय।

तीसरा पुत्र अहमद खा था जिसकी उपाधि खुदावन्द खा ने अहमद शाह निश्चित की थी।

चौथा पुत्र खलील खा था, जो सुल्तान का उत्तराधिकारी था और जिसकी उपाधि सुल्तान मुजफ्फर थी।

कहा जाता है कि सुल्तान मुजफ्फर का जन्म बुधवार ६ शाबान ८८० हि० (५ दिसम्बर १४७५ ई०) को सूर्योदय के उपरान्त हुआ और उसका नाम खलील खा रक्खा गया। उसकी माता का नाम रानी हीराबाई था जो महेन्द्री नदी के निकट के राजपूत जमीदार नागा राणा की पुत्री थी। खलील खा

१ इसे 'सरकीज' एवं 'सरखीज' दोनों प्रकार से लिखा गया है।

२ फ़रीदी के अनुसार 'आपा ख़ा' (पृ० ८६)।

३ फ़रीदी के अनुसार 'अस्नरिया' (पृ० ८६)।

के जन्म के चौथे अथवा पाचवे दिन रानी की मृत्यु हो गई। रानी की मृत्यु से सुल्तान बडा दुखी हुआ।

कहा जाता है कि जब सुल्तान मुजफ्फर का जन्म हुआ तो सुल्तान महमूद ने उसे उस वस्त्र मे जो वह पहिने हुये था लपेट कर सुल्तान मुहम्मद की पत्नी को, जो सुल्तान महमूद की सौतेली माता थी, सौप दिया क्योकि उसकी यह इच्छा थी कि सुल्तान अपने किसी पुत्र को उसे सौप दे जिसका वह पालन-(१३६) पोषण करती रहे। वह सुल्तान के पालन-पोषण मे सगी माता से अधिक सावधानी से कार्य करती थी। जब सुल्तान महमूद शाहज़ादे को देखता था तो कहता था कि, "मेरे वश की बादशाही इस पुत्र तथा इसकी सतान मे निरन्तर चलती रहेगी", यद्यपि उस समय सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र आबा खा जीवित था और सब लोगो की यही इच्छा थी कि सुल्तान के उपरान्त आबा खा को ही राज्य प्रदान हो कारण कि सुल्तान के जीवनकाल ही मे उसे राज्य के अधिकार प्राप्त थे। क्योकि यह कार्य सुल्तान मुजफ्फर के भाग्य मे लिखा था, अत सुल्तान के जीवन-काल ही मे उसकी (आबा खा की) मृत्यु हो गई, जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है।

सैयिद मुहम्मद जौनपुरी

सुल्तान महमूद के जीवन के अन्तिम दिनो मे सैयिद मुहम्मद जौनपुरी, जिन्होने महदी होने का दावा किया था, जौनपुर से अहमदाबाद नगर मे पहुचे और ताज खा बिन सालार की मस्जिद मे, जो जमालपुर द्वार के निकट स्थित है, ठहरे। वे अधिकाश समय प्रवचन किया करते थे और लोगो को शिक्षा प्रदान करते रहते थे। लोगो के विभिन्न समूह उनसे भेट करने जाते थे। जब बदरुल आरेफीन हज़रत सैयिद जियु इब्ने सैयिद मुहम्मद इब्ने कुतुबुल आलम सैयिद बुराहनुद्दीन उनकी भेट के उद्देश्य से पहुचे तो हाथ मिलाने के उपरान्त मस्जिद मे बैठ गये। उस समय सैयिद ने कुरान की एक आयत[1] उस अवस्था के अनुकूल पढी। उन्होने भी उसका उत्तर दिया। सैयिद ने पुन दूसरी आयत पढी; उन्होने भी उसके (१३७) उत्तर मे आयत पढी। तीसरी बार प्रश्नोत्तर कुरान की आयत द्वारा हुआ। तत्पश्चात् वे वहा से विदा हो गये और मार्ग मे सैयिद के भक्तों मे से एक से उनके विषय मे पूछा। तत्पश्चात् उन्होने कहा कि, "वे साहिबे हाल[2] है, साधारण व्यक्तियो से विशेष व्यक्तियो के योग्य बाते करते है और सर्वसाधारण से उनकी योग्यता के अनुसार बाते नही करते। जो कुछ समझ मे आता है वह इस प्रकार है कि सैयिद की मृत्यु के उपरान्त उनके अनुयायी उपद्रव करेगे।" कहा जाता है कि सैयिद के प्रवचन बडे प्रभावशाली होते थे और जो कोई भी उन्हे सुनता था वह एकान्तवासी हो जाता था और सिर पर एकान्तवास की टोपी पहिन लेता था। सुल्तान ने भी सैयिद से भेट करने का सकल्प किया था किन्तु वजीरों ने उसे रोका और कहा, "कही ऐसा न हो कि सैयिद की बाते सुल्तान को मार्ग से विचलित कर दे और शासन-प्रबन्ध में विघ्न पड जाय।"

कहा जाता है कि एक रात्रि मे एक दुष्ट व्यक्ति अपनी प्रियतमा के घर सम्भोग के उद्देश्य से पहुचा किन्तु उसका समय वाछित रूप से व्यतीत न हुआ। वहा से वह दुखी होकर मस्ती की दशा में तलवार हाथ मे लिये हुए अपने घर की ओर चला। प्रात काल उसने देखा कि सैयिद अपने अनुयायियो सहित साभर नदी के तट पर खडे है। उसने पूछा, "तुम लोग किस काम से आये हो, और यहा क्या कर रहे

१ वाक्य।
२ सूफी, सन्त।

हो ?" सैयिद ने उत्तर दिया कि, "जो कोई अपने मित्र से रुष्ट होकर आया है वह मेरे मार्ग दर्शाने से सन्मार्ग पर आ जायेगा।" यह बात सुनकर उस व्यक्ति पर एक विशेष मूर्च्छा छा गई और उसने एक नारा लगाया और कुछ समय तक असावधान पडा रहा। जब वह सावधान हुआ तो सैयिद की कृपा से तजरीद[1] का खिर्का[2] तथा तफरीद[3] की कुलाह[4] पहनी।

कहा जाता है कि एक दिन सैयिद ने कहा कि, "हम ईश्वर को ससार मे इन्ही आखो से दिखाते है।" सैयिद की यह बात सुनकर अहमदाबाद के आलिमो ने सैयिद की हत्या हेतु फतवा[5] लिख दिया। केवल मौलाना मुहम्मद ताज ने, जो अपने काल के बहुत बडे आलिम तथा नगर के गुरुओ के गुरु थे, आलिमो से कहा कि, "क्या तुमने विद्या अध्ययन सैयिद की हत्या के लिये फतवा देने के हेतु किया है ?"

इस घटना के उपरान्त सैयिद अहमदाबाद छोडकर पटन चले गये और पटन से तीन कोस पर बरली नामक स्थान पर ठहरे तथा अपने महदी होने का दावा किया। जब पटन के आलिमो को इस बात की सूचना मिली तो उन्होने सैयिद की हत्या का सकल्प किया। सैयिद वहा से हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से खुरासान की ओर चल दिये। जब वे कधार पहुचे तो लोगो ने एकत्र होकर सैयिद की हत्या कर दी, किन्तु सैयिद के अनुयायियो का कथन है कि वे अपनी मृत्यु से मरे, किसी ने उनकी हत्या नही की। (१३८) उनकी मृत्यु ९१७ हि०[6] (१५११-१२ ई०) मे हुई।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र का गुजरात के राजसिंहासन पर मंगलवार की रात्रि मे सिंहासनारोहण

मगलवार की रात्रि मे तीसरी रमज़ान[7] को सुल्तान महमूद की मृत्यु के दूसरे दिन सुल्तान मुजफ़्फ़र बरौदा[8] नगर से अहमदाबाद पहुचा। वजीरो तथा अमीरो ने उसका स्वागत किया तथा उसके चरण चूम कर सम्मान प्राप्त किया। रमज़ान ९१७ हि० (२८ नवम्बर १५११ ई०) को शुक्रवार की नमाज के समय २७ वर्ष की अवस्था मे सुल्तान मुजफ़्फ़र सिहासनारूढ हुआ और अपने पूर्वजो के समान अमीरों तथा सैनिको को प्रत्येक की श्रेणी के अनुसार नकद धन तथा खिलअते प्रदान की।

उपाधिया

जिन लोगों को उपाधिया प्रदान की गई उनके नाम इस प्रकार है —रशीदुलमुल्क को खुदावन्द खा की उपाधि दी गई और उसे विज़ारत का पद प्रदान किया गया। खुशकदम को मुख़लिस खा, मलिक बुरहान को मसूर खा, मलिक क़ुतुब को अजदुलमुल्क, मलिक मुबारक मुईन[9] को इफ़्तेखारुलमुल्क, नसीर

१ तजरीदः— एकान्तवास, ससार से सम्बन्ध-विच्छेद।
२ चीवर।
३ तफ़रीदः—एकान्तवास का जीवन।
४ टोपी।
५ व्यवस्था, किसी धार्मिक समस्या के सबन्ध मे मुफ्ती का मत।
६ फ़रीदी ने 'आईने अकबरी' के अनुसार ६१० हि० (१५०४-५ ई०) लिखा है किन्तु फ़रीदी ने जिस हस्त-लिखित पोथी का प्रयोग किया था, उसमे '६१७ हि०' ही था।
७ ३ रमज़ान ६१७ हि० (२४ नवम्बर १५११ ई०)।
८ इसे 'बरोदा', 'बरौदा' दोनों लिखा गया है।
६ फ़रीदी के अनुसार 'मलिक मुबारक' (पृ० ६११)।

शादी को मुबारिजुलमुल्क की, तथा मलिक शाह को रुक्नुलमुल्क की उपाधि दी गई।[1] यह सब लोग अमीरो के पुत्र थे जो उस समय, जब कि सुल्तान शाहजादा था, उसके विश्वासपात्र थे। सुल्तान महमूद के अमीरो के पदो मे वृद्धि की गई और उन्हे विश्वासपात्र बनाया गया। आलिमो तथा सूफियों को भी नाना प्रकार की खिलअते प्रदान की गईं। सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्ति प्रसन्न होकर सुल्तान के लिये शुभ-कामनायें करने लगे।

शाह इस्माईल का दूत

शव्वाल मास[2] मे यह समाचार प्राप्त हुए कि एराक तथा खुरासान के बादशाह का दूत, मीर्ज़ा इबराहीम, आया है। सुल्तान ने मलिकुश्शर्क, हमीदुलमुल्क, कुतुबुलमुल्क तथा बहुत से अन्य अमीरो को आदेश दिया कि वे उसका स्वागत करके उसे सम्मानपूर्वक लाये। वह २५ शव्वाल[3] को राजसिंहासन के समक्ष ४० मुकुटधारियो सहित उपस्थित हुआ। मीर्जा ने फीरोजे का एक बहुमूल्य प्याला और एक सदूक जिसमे जवाहिरात तथा कपडे थे और ३० एराकी घोडे जिन्हे शाह ने भेजा था, उपहार-स्वरूप भेट किये। सुल्तान ने मीर्जा को अत्यधिक सम्मानित किया और उसके समस्त साथियो को शाही ख़िलअते तथा बादशाही इनाम द्वारा सम्मान प्रदान किया और आदेश दिया कि उन्हे उचित स्थान पर ठहराया जाय और उनके लिये वृत्ति का प्रबन्ध किया जाय।

दौलताबाद का बसाया जाना

(१३९) कुछ दिन उपरान्त सुल्तान ने बरोदा की ओर प्रस्थान किया और वहा दौलताबाद नामक एक नगर बसाया।

मंदू के सुल्तान मुहम्मद का आगमन

इसी बीच मे यह समाचार प्राप्त हुए कि मन्दू के बादशाह सुल्तान महमूद ख़लजी के ख्वाजये जहा नामक एक ख्वाजासरा ने, जो प्रतिष्ठित अमीर था, सुल्तान महमूद बिन नासिरुद्दीन को हटाकर उसके छोटे भाई सुल्तान मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन को सिंहासनारूढ कर दिया। सुल्तान महमूद अत्यधिक सेना एकत्र करके पहुचा और मन्दू के क़िले को घेर लिया। कुछ दिनो तक दोनो ओर से युद्ध होता रहा। अन्त मे सुल्तान महमूद को विजय प्राप्त हुई। सुल्तान मुहम्मद सुल्तान मुज़फ्फर के दरबार की ओर भाग खडा हुआ, और महमदाबाद[4] के निकट पडाव किया। इसी बीच मे सुल्तान मुहम्मद के निष्ठा सम्बन्धी पत्र प्राप्त हुए। सुल्तान ने महमदाबाद के दारोगा मुहम्मद मुहाफिज़ ख़ा को आदेश दिया कि वह सुल्तान मुहम्मद को पूर्ण सम्मान सहित शहर मे लाये और उसे जिस वस्तु की भी आवश्यकता हो, उसकी व्यवस्था करे। जब मार्ग के कष्टों से वह निश्चिन्त हो जाय तो उसे दरबार मे भेज दे। फरमान प्राप्त होने के उपरान्त मुहाफिज़ खा ने सेवा तथा आतिथ्य-सत्कार मे कोई कसर न उठा रखी। कुछ समय उपरान्त जब वह सुल्तान की सेवा मे पहुचा तो सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो हम वर्षा ऋतु के पश्चात् प्रस्थान करेंगे और

१ फरीदी ने मलिक शेख़ जी तथा उसकी उपाधि ताईदुलमुल्क का भी उल्लेख किया है, (पृ० ६२)।
२ शव्वाल ९१७ हि० (दिसम्बर १५११-जनवरी १५१२ ई०)।
३ २५ शव्वाल ९१७ हि० (१५ जनवरी १५१२ ई०)।
४ 'महमदाबाद' तथा 'मुहमदाबाद' दोनों ही लिखा गया है।

मालवा की विलायत[1] के दो भाग करके आधा तुम्हे और आधा सुल्तान महमूद को प्रदान कर देगे।"

सुल्तान ने कैसर खा को धोद[2] कस्बे की, जो मन्दू की सीमा पर स्थित है, थानेदारी के लिये इस आशय से नियुक्त किया कि वह उस ओर के ज़मीदारो को अपनी ओर मिलाये और उस तरफ के निवासियो के रहन-सहन से परिचित हो जाय। बख्शियो को आदेश दिया कि वे सेना को इस अभियान की सूचना देकर उन्हे तैयार करे। तदुपरान्त वह स्वय मोर आमली की ओर, जो स्वर्गीय सुल्तान महमूद की शिकारगाह थी, शिकार हेतु चल दिया और कुछ समय तक वहा ठहरकर शिकार खेलता रहा।

(१४०) उसी स्थान पर आसीर तथा बुरहानपुर का हाकिम, मसनदे आली आज़म हुमायू आदिल खा जो सुल्तान का जामाता था अपने पुत्रो सहित सेवा मे उपस्थित हुआ। कुछ दिन उपरान्त आदिल खा अपनी विलायत की ओर चला गया और सुल्तान मुहमदाबाद वापस आ गया।

शाहजादा मुहम्मद तथा राजदूत में झगड़ा

सयोग से एक दिन शाहजादा सुल्तान मुहम्मद के आदमियों का, शाह इस्माईल के दूत के आदमियों से झगडा हो गया। इसका कारण यह था कि शाहज़ादे के पास एक बहुत ही बहुमूल्य रत्न था। मीर्ज़ा इबराहीम ने उसको मोल लेने की इच्छा की किन्तु मूल्य की अधिकता के कारण यह सम्भव न हुआ और क्रय-विक्रय मे वादविवाद हो जाने से दोनो पक्ष खिन्न हो गए। शाहजादा अभी बालक था और उसे कोई अनुभव न था। एक रात्रि मे वह अपने कुछ आदमियों को लेकर अपने एक प्राचीन सेवक के घर पहुचा। उस व्यक्ति का घर उस सराय मे था जहा मीर्ज़ा इबराहीम ठहरा हुआ था। एक दुष्ट ने मीर्ज़ा इबराहीम से कहा कि, "शाहज़ादा भागना अथवा आपकी धन-सपत्ति तथा घोडो पर अधिकार जमाना चाहता है अन्यथा ऐसे समय मे सराय मे आने से उसका क्या उद्देश्य हो सकता है? यदि सम्भव हो तो आज रात मे उसे रोक ले। कल सुल्तान के दरबार मे आपकी यह बात बडी ही पसन्द की जायेगी।" मीर्ज़ा ने परिणाम पर ध्यान दिये बिना ही सराय के द्वार बन्द करा लिये और शाहजादे को आधी रात्रि मे अपने घर ले जाकर बन्द कर लिया। इससे शाहज़ादे को बडा कष्ट हुआ। प्रात काल उसे बन्दीगृह से मुक्ति प्राप्त हुई। उसके सेवकों ने एकत्र होकर शहर तथा बाज़ार मे यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि "शाही आदेश हुआ है कि ताजपोशो[3] के समूह को नष्ट कर दिया जाय।" क्योकि शाहज़ादे का अपमान तथा कष्ट सभी को बुरा मालूम हुआ था अत. इस समाचार को सुनते ही एक बहुत बडी भीड एकत्र हो गई और बहुत से लोगों ने मीर्ज़ा इबराहीम की सराय को घेर लिया। ताजपोशो का समूह अपनी रक्षा के लिये उद्यत हो गया। क्योकि भीड की सख्या उनकी शक्ति से अधिक थी अत उसने (भीड ने) सराय के द्वार खोल दिये। कुछ लोग मारे गये और उसके (मीर्ज़ा इबराहीम के) घर मे आग लगा दी गई और लोग लूट मार मे तल्लीन हो गये।

जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने मलिक शरफ एमादुलमुल्क को आदेश दिया कि वह शाही हाथियो को ले जाकर उस उपद्रव को शान्त करे और ताजपोशो के समूह को कोई हानि न पहुंचने दे तथा उपद्रवियो के नेताओ को दड दे। एमादुलमुल्क ने वहां पहुच कर उपद्रव की अग्नि शात

१ राज्य।
२ फ़रीदी के अनुसार 'दोहद' (पृ० ९३)।
३ किज़िलबाशों अथवा लाल मुकुट धारण करने वालों

(१४१) की और दुष्टो को दंड दिया। उसने मीर्ज़ा इबराहीम को कोई हानि न पहुचने दी और उसे उसके परिवार सहित सुल्तान के दरबार मे पहुचा दिया। सुल्तान ने उनके लिये वही स्थान निश्चित कर दिया।

मीर्ज़ा इबराहीम का ईरान वापस जाना

तत्पश्चात् मीर्ज़ा इबराहीम ने निवेदन किया कि, "मेरी सम्पत्ति मे से नकद तथा अन्य वस्तुये जो नष्ट हुई है उनका मूल्य गुजरात के प्रचलित तन्को के हिसाब से ६ लाख तन्के है।" उस समय गुजरात का एक तन्का ८ मुरादी तन्कों के बराबर होता था। खानदेश तथा दखिन (दक्षिण) में वही तन्के अब भी प्रचलित है। सुल्तान ने वह धन अपने खजाने से दिलवा दिया। शुक्रवार १४ रमजान[1] को १ लाख तन्के नकद तथा उत्तम खिलअते प्रदान करके राजदूत को विदा कर दिया और खुरासान खा को, ईरान के बादशाह से प्रेम तथा निष्ठा के भाव दृढ बनाने के लिये, उसके साथ कर दिया। उसने ७ भयकर हाथी आभूषित हौदो सहित, गैंडा[2] तथा अन्य विचित्र पशु-पक्षी एव उत्तम प्रकार के वस्त्र तथा बहुमूल्य वस्तुये उपहार-स्वरूप शाह के लिये खुरासान खा के हाथ भेजी। २ बडे जहाज़ मीर्ज़ा इबराहीम तथा उससे सम्बन्धित लोगो के लिये पृथक् प्रदान किये तथा अन्य सामग्री दी।

मालवा में मंदली राय का प्रभुत्व

सक्षेप मे, इस घटना के उपरान्त सुल्तान मुहम्मद के प्रति सुल्तान मुजफ्फर का जो स्नेह था उसमे कमी आ गई। सुल्तान मुहम्मद कुछ अमीरों के निमत्रण पर, सुल्तान से आज्ञा लिये बिना ही गुजरात से चला गया। सुल्तान महमूद बिन नासिरुद्दीन ने यह समाचार पाकर तथा अमीरो की शत्रुता से अवगत होकर, हिन्दुओ की एक सेना एकत्र की और उनमे जो सबसे उत्कृष्ट था उसे मन्दली राय[3] की उपाधि प्रदान की और राज्य के समस्त कार्य उसे सौप दिये। उसने अपने सम्बन्धियों तथा सहायको को एकत्र करके काफिरो की एक बहुत बडी सख्या इकट्ठा की। उस सेना ने सुल्तान मुहम्मद से युद्ध किया और ख्वाजये जहा मारा गया। सुल्तान मुहम्मद पराजित हुआ। मन्दू का समस्त राज्य मन्दली राय के अधिकार मे आ गया। यहा तक कि उसने सुल्तान के समस्त कारखानो[4] को अपने सम्बन्धियो तथा हितैषियो को प्रदान कर दिया। मुसलमान अमीरों तथा सुल्तान के सरदारो मे से एक की हत्या करा दी। काफिरो ने अत्याचार तथा उपद्रव जोकि इन पिशाचो का मूल गुण है प्रारम्भ कर दिया। उन्होने ऐसी ऐसी बिदअते[5] (१४२) की कि नगर वाले परेशान हो गये। सुल्तान मुजफ्फर को इस विषय मे सूचना मिली की कई वर्षों के उपरान्त मालवा मे काफिरों का राज्य स्थापित हो गया है और सुल्तान महमूद केवल नाम मात्र को बादशाह रह गया है, वह भी हटा दिया जायेगा। सुल्तान बडा क्रोधित हुआ और उसने काफिरों

१ सम्भवतः १४ रमज़ान ९१८ हि० (२३ नवम्बर १५१२ ई०)।
२ मूल पुस्तक में 'भेड़िया' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'गैंडा' (पृ० ६४)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'मेदिनी राय' (पृ० ६४)। अन्य ग्रन्थों मे भी 'मेदिनी राय' है।
४ कारख़ानों :—बादशाह की आवश्यकताओं तथा शिकार आदि के प्रबन्ध के लिये बहुत से कारख़ानो की स्थापना की जाती थी। शिकारी कुत्ते, बाज़, चीते आदि का प्रबन्ध भी इन्हीं कारख़ानों द्वारा होता था। शाही आवश्यकता की वस्तुये भी इन्हीं कारख़ानों में तैयार होती थीं। प्रत्येक कारख़ाना एक मलिक अथवा ख़ान के अधीन होता था।
५ नवीन अनुचित बाते।

का विनाश अपने लिये परमावश्यक समझ लिया। उसने आदेश दिया कि सेना की तैयारी प्रारम्भ कर दी जाय। वह स्वय मुहमदाबाद से अहमदाबाद पहुचा और शेख अहमद खत्तू कुतुब आलम और उनके पुत्रो के, जिनमे से प्रत्येक अपने समय के कुतुब के समान था, दर्शन किये और उन बुजुर्गों की आत्माओ से सहायता की याचना की। एक सप्ताह अहमदाबाद मे ठहरकर मुहमदाबाद की ओर रवाना हुआ।

सुल्तान का मालवा की ओर काफ़िरों को पराजित करने हेतु प्रस्थान, धार क़स्बे तक पहुंचना और वहां से वापसी

ईदर के राजा द्वारा ऐनुलमुल्क की पराजय

शव्वाल ९१८ हि० (दिसम्बर १५१२-जनवरी १५१३ ई०) मे उसने मुहमदाबाद से काफिरो को पराजित करने तथा धर्मनिष्ठ मुसलमानों की सहायतार्थ मालवा की ओर प्रस्थान किया। वह गोधरह कस्बे मे कुछ दिनों तक सेना एकत्र करने के उद्देश्य से ठहरा। इसी बीच मे उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि, "नहरवाला, जो पटन कहलाता है, के मुक्ता[1] ऐनुलमुल्क ने उसकी सेवा मे उपस्थित होने के लिये प्रस्थान किया ही था कि ईदर के राजा भीम पुत्र भानु ने आक्रमण कर दिया और सांभर[2] नदी के चारों ओर के स्थानो को नष्ट कर रहा है। ऐनुलमुल्क ने उसकी सेना से युद्ध करने के लिये ईदर की ओर प्रस्थान किया और उस विलायत[3] का विनाश तथा विध्वस प्रारम्भ कर दिया। जब वह ईदर से तीन कोस पर पहुचा तो ईदर के राजा ने बहुत बडी सेना एकत्र करके युद्ध किया। ऐनुलमुल्क का भाई अब्दुलमुल्क युद्ध मे मारा गया। ऐनुलमुल्क पराजित होकर पटन पहुचा।"

ईदर पर सुल्तान का आक्रमण

सुल्तान ने मालवा की ओर से मुख मोडकर ईदर की ओर प्रस्थान किया ओर निरन्तर यात्रा करता हुआ मोरासा नामक स्थान पर पहुच गया। मोरासा से उसने ईदर के राजा के विरुद्ध इस आशय से सेनाए भेजी कि वे उसकी विलायत को विध्वस कर दे। ईदर का राजा भागकर पर्वत मे घुस गया और चौथे दिन सुल्तान ने मोरासा से प्रस्थान करके ईदर के निकट पडाव किया। उसने आदेश दिया कि ईदर के घरो तथा मन्दिरो को इस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाय कि उनका नाम तथा चिह्न भी शेष न रहने पाये।

९१९ हि० (१५१३-१४ ई०) मे ईदर के राजा ने यह दशा देखकर मलिक गोपी[4] जुन्नारदार[5] (१४३) से, जो सुल्तान के वजीरो मे से एक था, सहायता की याचना की। मलिक गोपी ने उसके अपराध सुल्तान द्वारा क्षमा करा दिये। क्योकि सुल्तान ने मालवा के काफिरो का विनाश निश्चय कर लिया था, अत उसने उसके अपराध क्षमा कर दिये और बहुमूल्य पेशकश लेकर लौट गया और पुन गोधरह पहुच गया।

१ अक्ता का स्वामी।
२ फ़रीदी के अनुसार 'साबरमती' (पृ० ६५)।
३ राज्य।
४ मूल पुस्तक मे 'कोबी' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'गोपी' (पृ० ६६)।
५ ब्राह्मण।

सुल्तान का मालवा की ओर प्रस्थान

वहा से उसने शाहजादा सिकन्दर खा को मुहमदाबाद भेजा और स्वय मालवा की ओर प्रस्थान किया। जब वह धोद[1] कस्बे मे पहुचा तो वहा एक किले के निर्माण का आदेश दिया और उस स्थान से रवाना हुआ। जब वह देवला के दुर्गम मार्ग पर पहुचा तो उसने उस स्थान पर तीन दिन तक पडाव किया। सफदर खा को उस स्थान का थानेदार नियुक्त किया ताकि मार्ग मे कोई अव्यवस्था न होने पाये।

उस स्थान पर धार कस्बे के मुकद्दम[2] का पुत्र सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और उससे क्षमा याचना की। धार मालवा के अधीन है। सुल्तान ने किवामुलमुल्क सारग को, कुछ अमीरो सहित, धार कस्बे की ओर इस आशय से भेजा कि वह कस्बे वालो को क्षमा-प्रदान करके उनको प्रोत्साहन दे।

इसी बीच मे सूचना प्राप्त हुई कि, "सुल्तान महमूद बिन नासिरुद्दीन तथा मन्दली राय[3] चन्देरी की ओर गये हुए है।" इसका कारण यह था कि सुल्तान महमूद के छोटे भाई सुल्तान मुहम्मद ने अपनी पराजय के उपरान्त, जिसका इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, सुल्तान सिकन्दर के पास जाकर शरण ले ली थी और उसने सुल्तान सिकन्दर से सहायता प्राप्त करके चदेरी की विलायत[4] मे पहुचकर उसे अपने अधिकार मे कर लिया था। सुल्तान मुजफ्फर ने कहा कि, "इस अभियान से मेरा उद्देश्य यह न था कि मै मालवा का राज्य सुल्तान महमूद से ले लू। वह एक मुसलमान बादशाह है। मेरा उद्देश्य यह था कि मन्दली राय तथा अन्य काफिरो को उससे पृथक् करके दोनो भाइयो मे सन्धि करा दूँ। इस समय सुल्तान महमूद को एक युद्ध करना है। अब देखना है कि इसका क्या परिणाम होता है? तदुपरान्त जो कुछ उचित होगा, उस पर आचरण किया जायेगा।"

(१४४) किवामुलमुल्क उसके आदेशानुसार धार कस्बे से आया और धार के आहूखाने की, जिसका निर्माण गयासुद्दीन के आदेशानुसार हुआ था, इतनी अधिक प्रशसा की कि सुल्तान को उसके देखने की इच्छा हुई। उसने उसे उसी स्थान पर छोड कर स्वय २००० वीर अश्वारोही तथा १५० हाथियो सहित आहुखाने को देखने के लिये प्रस्थान किया और धार के हौज के निकट पडाव किया। कुछ अमीरो ने निवेदन किया कि, "यदि सुल्तान मन्दू पर आक्रमण करे तो बडा अच्छा होगा।" सुल्तान ने कहा, "बिना स्वामी के उसके घर को देखने मे कोई आनन्द नही आता।" मध्याह्नोत्तर के उपरान्त उसने शेख कमाल तथा शेख अब्दुल्लाह चगाल के मकबरे के, जो धार कस्बे के समीप स्थित है, दर्शन हेतु प्रस्थान किया। नगर के सभी छोटे-बडे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुए और उन्होने सुल्तान के प्रति शुभकामनाए प्रकट की।

प्रातःकाल सुल्तान ने निजामुलमुल्क, रजीउलमुल्क, इख्तियारुलमुल्क, मलिक चमन, जिसकी उपाधि मुहाफिज खा थी, तथा सैफ खा को आदेश दिया कि दिलावरा ग्राम के महलो तथा उस स्थान के आहुखाने की सैर करके वे उसी रोज लौट आये ताकि यह ज्ञात हो सके कि वह कैसा स्थान है, और उसने स्वय धार के आहुखाने को देखने के लिये प्रस्थान किया। जब समय अधिक हो गया और अमीर लोग

१ फ़रीदी के अनुसार 'दोहद' (पृ० ६६)।
२ इस स्थान पर 'राज्य' से तात्पर्य है।
३ फ़रीदी के अनुसार 'मेंदिनी राय' (पृ ०६६)।
४ राज्य।

उपस्थित न हुए तो उसने कहा कि, "क्या हुआ, हम भी दिलावरा की सैर करें" और दिलावरा की ओर रवाना हुआ। वहा उसे अमीर लोग न मिले। अलिफ खा ने निवेदन किया कि, "सम्भवत निज़ामुल-मुल्क अपने छोटे भाई रायसिंह को देखने के लिये नालचा नामक स्थान को चला गया होगा।" सुल्तान दिलावरा के महलो की सैर करके धार लौट गया। सायकाल की नमाज़ के उपरान्त सूचना प्राप्त हुई कि निज़ामुलमुल्क विजय प्राप्त करके आ रहा है। सुल्तान ने पूछा, "कहा की विजय प्राप्त की ?" उसे बताया गया कि, "जिस समय निज़ामुलमुल्क नालचा से इस ओर आ रहा था तो मन्दू के किले के काफिरों ने उतरकर उसका पीछा किया। उसने पलटकर युद्ध किया। ४० काफिर मारे गये और अन्य लोग भागकर किले मे पहुच गये। निज़ामुलमुल्क विजय तथा सफलता प्राप्त करके सेवा मे उपस्थित हो रहा है।" सुल्तान बडा क्रोधित हुआ और निज़ामुलमुल्क को डाटते हुए कहा कि, "मेरे आज्ञा बिना तू क्यो गया, यदि कोई दुर्घटना हो जाती तो उससे मुझे लज्जा होती।" सक्षेप मे, तीसरे दिन सुल्तान धार से (१४५) शाही शिविर मे उपस्थित हुआ और वहा से अपनी राजधानी की ओर वापस चला गया। 'तारीख़े बहादुरशाही' का लेखक लिखता है कि, "मैंने यह घटना अपने निरीक्षण के आधार पर लिखी है। मै इस अभियान मे सुल्तान के साथ था।" सक्षेप मे, सुल्तान लौटकर मुहमदाबाद पहुचा।

ईदर के राजा राय मल के विरुद्ध सेनाये भेजना

तत्पश्चात् ९२० हि० (१५१४–१५ ई०) मे उसे यह समाचार प्राप्त हुये कि रायमल, राय भीम के भतीजे, जो ईदर का राजा था, ने राजा की मृत्यु के उपरान्त, चित्तौड के राजा राणा सागा की सहायता से, भीम के पुत्र भारमल को ईदर से निकाल कर उस पर स्वय अधिकार जमा लिया है। सुल्तान को यह बात अच्छी न लगी। उसने कहा कि, "भीम मेरी अनुमति से ईदर पर राज्य करता था। राणा को रायमल की सहायता का किस प्रकार साहस हुआ ?" उसने अहमदनगर के मुक्ता निजामुल-मुल्क को आदेश दिया कि ईदर से रायमल को निकाल कर भीम के पुत्र भारमल को सौप दे। तत्पश्चात् उसने स्वय अहमदनगर की ओर प्रस्थान किया और पुन अहमदाबाद लौट आया।

९२३ हि० (१५१७ ई०) मे रायमल शाही सेना से युद्ध करता रहा। कभी वह विजयी होता और कभी पराजित। सक्षेप मे, सुल्तान ने वर्षा ऋतु अहमदाबाद मे आनन्दपूर्वक तथा सफलता से व्यतीत की।

मालवा में मेदिनी राय का प्रभुत्व

इसी बीच मे मालवा के अमीर उदाहरणार्थ हबीब खा, शेख़ चाद इत्यादि मन्दली[1] राय के भय से भागकर सुल्तान की सेवा मे पहुचे और मन्दू के निवासियो का हाल उसे सुनाया और निवेदन किया कि, "मन्दू नगर मे इस्लाम के नियमो का अन्त हो चुका है। मन्दली राय ने अधिकाश विश्वासपात्रों की हत्या करा दी है। कुछ लोग भागकर स्वदेश त्याग कर इधर उधर चले गये है। आज या कल मे वह सुल्तान महमूद की हत्या करा देगा या अन्धा बनाकर बन्दी बना लेगा।" सुल्तान ने काफिरो के उपद्रव से अवगत होकर वर्षा ऋतु के उपरान्त मन्दू पर आक्रमण करने तथा मन्दली राय के अभिमान का अन्त करने और इस्लाम के नियमो को उन्नति देने का निश्चय कर लिया।

1 फ़रीदी के अनुसार 'मेदिनी राय' (पृ० ६८)।

सुल्तान महमूद ख़लजी का गुजरात में आगमन, सुल्तान मुज़फ़्फ़र को सूचना मिलना, मन्दू पर चढ़ाई तथा दुष्ट काफ़िरों पर विजय एवं मालवा राज्य तथा मन्दू के क़िले को सुल्तान महमूद को प्रदान करके वापसी

(१४६) जब सुल्तान महमूद ने देखा कि उसका राज्य तथा समस्त खजाना ,मन्दली राय के अधिकार मे आ चुका है और वह केवल नाममात्र को बादशाह रह गया है तो उसने मन्दू से शिकार के बहाने से भाग जाना निश्चय कर लिया। कुछ दिनो तक वह शिकार मे व्यस्त रहा। प्रात काल से सायकाल तक वह अरबी घोडो को दौडाता रहता था। जो हिन्दू मुअक्किल[1] के रूप मे उसके साथ रहते थे, वे शिकार से थक कर सो गये। सुल्तान के चारो ओर मन्दली राय के विश्वासपात्रो के अतिरिक्त कोई न रहता था। यदि जल लाते तो हिन्दू और भोजन लाते तो हिन्दू, यहा तक कि सेवक तथा दरबान सभी हिन्दू थे। उनमे से खरल कस्बे का किशना नामक राजपूत भी था। क्योकि वह मालवा का जमीदार था अत वह अन्य राजपूतो की अपेक्षा अधिक निष्ठा से सुल्तान की सेवा करता था। सुल्तान ने उससे कहा, "किशना! मै बडा परेशान हो गया हू। क्या तू अश्वशाला से दो घोडे लाकर मुझे गुजरात पहुचा सकता है ताकि मै सुल्तान मुहम्मद के पास पहुचकर उससे सहायता लाकर इस दुष्ट को दड दूँ? यदि तू मेरी यह सेवा करेगा तो तुझे अत्यधिक इनाम प्रदान किया जायगा।" किशना ने यह बात स्वीकार कर ली और अर्द्ध रात्रि मे सुल्तान की विशेष अश्वशाला से वह दो घोडे ले आया। एक घोडे पर वह स्वय सवार हुआ और दूसरे पर अपनी पत्नी, जिससे उसे अत्यधिक प्रेम था, और जिसका नाम रानी कनाकर था, को सवार किया। किशना आगे आगे गुजरात की ओर चल खडा हुआ। आधी रात और समस्त दिन यात्रा करके वे रहुकरा नामक स्थान पर, जोकि गुजरात की विलायत[2] की सीमा पर है, पहुच गये। घोडो के निर्बल हो जाने के कारण निहकोर[3] नामक ग्राम के निकट एक वृक्ष के नीचे उतर पडे। दूसरे दिन यह सूचना धोद[4] कस्बे के मुक्ता कैसर खा को प्राप्त हुई। धोद निहकोर से १० कोस पर है। कैसर खा सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और अभिवादन करके जो कुछ भी उसकी आवश्यकताए थी उन्हे पूरा किया। तत्काल एक शुत्र सवार[5] को सुल्तान की सेवा मे भेज दिया और सुल्तान महमूद के विषय मे जो कुछ भी उसने देखा था, उसकी सूचना कर दी। सुल्तान प्रसन्न हो गया। उसने तत्काल सोने की तथा जडाऊ (१४७) काम की जीने एव लगाम, अरबी घोडे, पर्वत रूपी हाथी, मखमल तथा जरबफ्त की झूले, शाही वस्त्र, बादशाहो के योग्य खेमे, सुन्दर स्वभाव वाली कनीजे, गुलाम, खजाना, कारखाने प्रतिष्ठित अमीरों के हाथ रवाना किये। सुल्तान ने उसे लिखा कि, "आपका आगमन मित्रो के लिये सुख-शान्ति तथा शत्रुओं के लिये कष्ट का समाचार लाया है। आप शाही पताकाओ को शीघ्र ही पहुचा समझे। यदि ईश्वर ने चाहा तो हिन्दुओ तथा नमकहरामो के अभियान का अन्त करके मन्दू का किला तथा मालवा

१ इस स्थान पर 'निरीक्षक'।
२ राज्य।
३ फ़रीदी के अनुसार 'भानकोरह' (पृ० ६६)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'दोहद' (पृ० ६६)।
५ ऊँट पर समाचार ले जाने वाला।

का राज्य आपको प्रदान कर दिया जायेगा।" जब शाही सेना निकट पहुची तो सुल्तान महमूद ने उसका स्वागत किया और समस्त अमीरो ने शाही आदेशानुसार घोड़ों से उतरकर उसके (सुल्तान महमूद के) चरणो का चुम्बन किया। तत्काल शाही बारगाह, लाल सरापर्दा[1] एव समस्त शाही कारखाने लगा दिये गये। सुल्तान प्रसन्नतापूर्वक सरापर्दे मे उतरा। अमीर लोग सुल्तान की बारगाह के चारो ओर उतर पडे और बादशाहो के योग्य सामान एकत्र हो गये।

जब मन्दली[2] राय के गुप्तचरों ने यह हाल देखा तो उसे इस बात की सूचना दे दी। काफिरो के हृदय काप उठे। सक्षेप मे, अमीरों को भेजने के उपरान्त, दूसरे दिन बृहस्पतिवार ४ जीकाद ९२३ हि० (१८ नवम्बर १५१७ ई०) को सुल्तान मुजफ्फर धर्म-युद्ध के उद्देश्य से बाहर निकला। 'बहादुरशाही' के लेखक का कथन है कि, "जब सुल्तान ने मन्दू पर चढाई करने का सकल्प कर लिया तो प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्ति सुल्तान के आदेशानुसार कुरान का पाठ करने लगे। सुल्तान ने भी कुरान मे थोडा-सा भाग पढकर विजय का फाल[3] निकाला।"

तदुपरान्त उसने मुहमदाबाद से प्रस्थान किया और बृहस्पतिवार ११ जीकाद[4] को तीन मजिले पार करके गोधरा कस्बे मे पड़ाव किया। रविवार २१ जीकाद[5] को उसने शाहजादा सिकन्दर खा को मुहमदाबाद की ओर भेज दिया और शाहज़ादा लतीफ खा तथा बहादुर खा को अपने साथ लेकर मुजफ्फराबाद की ओर प्रस्थान किया। मगलवार २७ जीकाद[6] को भिकोरा[7] ग्राम मे पडाव हुआ।

(१४८) बुधवार ९ जिलहिज्जा[8] को उपर्युक्त स्थान पर यह समाचार प्राप्त हुए कि, "देहली के बादशाह सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई है और उसका पुत्र सुल्तान इबराहीम सिहासनारूढ हो गया है।" उसने उसी मजिल पर सुल्तान के निधन की शोक सम्बन्धी प्रथाये सम्पन्न कराई और ११ जिलहिज्जा[9] को वहा से प्रस्थान करके रात्रि मे धनीगाव नामक ग्राम मे पडाव किया। १४ जिलहिज्जा[10] को देवला ग्राम मे पडाव हुआ। १५ जिलहिज्जा को सुल्तान महमूद ने उससे भेट की। सुल्तान मुजफ्फर ने सुल्तान महमूद को प्रोत्साहन देते हुए कहा कि, "आपको अब ससार के कष्टों से मुक्ति प्राप्त हो जायेगी।"

१८ जिलहिज्जा[11] को विजयी पताकाओ ने धार की ओर प्रस्थान किया। मन्दली राय, जो धार मे युद्ध के लिये ठहरा हुआ था, भागकर उज्जैन पहुचा और राय पिथौरा, भीम करण, शादी खा[12], बदन[13]

१ मंडप, ख़ेमे इत्यादि।
२ फ़रीदी के अनुसार 'मेदिनी राय' (पृ० ६८)।
३ ईश्वर की इच्छा का पता लगाना।
४ ११ ज़ीकाद ६२३ हि० (२५ नवम्बर १५१७ ई०)।
५ २१ ज़ीकाद ६२३ हि० (५ दिसम्बर १५१७ ई०)।
६ २७ जीकाद ६२३ हि० (११ दिसम्बर १५१७ ई०)।
७ फ़रीदी के अनुसार 'भनकोरह' (५०१००)।
८ ६ जिलहिज्जा ६२३ हि० (२३ दिसम्बर १५१७ ई०)।
९ ११ जिलहिज्जा ६२३ हि० २५ दिसम्बर १५१७ ई०)।
१० १४ ज़िलहिज्जा ६२३ हि० (२८ दिसम्बर १५१७ ई०)।
११ १८ जिलहिज्जा ६२३ हि० (१ जनवरी १५१८ ई०)।
१२ फ़रीदी के अनुसार 'शाद ख़ा' (पृ० १००)।
१३ फ़रीदी के अनुसार 'बुधन' (पृ० १००)।

कागू[1] तथा उग्रसेन को, जोकि उसकी सेना मे सर्वश्रेष्ठ थे, मन्दू के किले की रक्षा हेतु भेजा । २१ जिलहिज्जा[2] को सुल्तान ने अपनी विजयी सेनाओ को लेकर मन्दू के किले के निकट पडाव किया और मोर्चे बाट दिये। कैसर खा को देहली द्वार की ओर, और मलिक एमादुलमुल्क को अन्य द्वार की ओर नियुक्त किया और किले को चारो ओर से घेर लिया। इसी बीच मे मन्दली राय ने किले वालो को सूचना भेजी कि, "तुम लोग सुल्तान से सधि की वार्त्ता करके एक माह का, किले को रिक्त करने के लिये, अवकाश ले लो इसी बीच मे मै राणा (सागा) से इतनी अधिक सेना लेकर पहुच जाऊगा कि सुल्तान मुजफ्फर किले को युद्ध किये बिना ही छोड कर गुजरात की ओर भाग जायगा।"

काफिरो ने धूर्तता प्रदर्शित की। शुक्रवार २५ जिलहिज्जा को किले के अवरोध के तीसरे दिन राय पिथौरा ने अपने कुछ सम्बन्धियो को उचित उपहार सहित कैसर खा तथा खुदावन्द खा के पास भेजा और इस आशय से अवकाश मागा कि वह अपने परिवार को लेकर किले के बाहर जा सके और किले को सुल्तान के सेवको को सौप सके। कैसर खा तथा खुदावन्द खा उन लोगो को सुल्तान की सेवा मे ले गये। सुल्तान ने उन्हे एक मास का अवकाश दे दिया। काफिर लोग बाह्य रूप से अपने सामान ले जाने की व्यवस्था करने लगे और गुप्त रूप से उन्होने मन्दली राय को लिखा कि, "जो कुछ तेरा उद्देश्य था, वह हमने पूरा कर दिया, अब तुझे विलम्ब न करना चाहिये।"

(१४९) मन्दली राय राणा की सेवा मे पहुचा और कहा कि, "हिन्दुस्तान मे हम लोगो मे तुझसे बडा कोई अन्य नही है। इस समय भी यदि तू अपनी जाति की सहायता न करेगा तो कब करेगा ?" उसने सुल्तान महमूद के प्रसिद्ध हाथियो तथा सुल्तान के खजाने के बहुमूल्य रत्नो को सहायता की शर्त पर राणा को देना स्वीकार कर लिया। राणा ने सोचा कि, "मै सारगपुर तक उसके साथ जाऊ और उससे हाथी तथा रत्न ले लूँ। तदुपरान्त जो कुछ भी समय को देखते हुये उपयुक्त हो, वह करू।" राणा भारी सेना लेकर सारगपुर की ओर, जो मालवा के राज्य के अधीन मन्दू से ५० कोस पर है, पहुचा। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो वह किले वालो के छल तथा षड्यत्र से अवगत हो गया। आदिल खा आसीरी तथा मलिक किवाम सारग को वीर अमीरो सहित राणा के विरुद्ध युद्ध करने के लिये नियुक्त किया। सेना को आदेश दिया कि वह पुन किले को घेर ले और अधिक से अधिक प्रयत्न करे। सेना ने इस बार इतना घोर प्रयत्न किया कि तीसरे दिन २ सफर[3] को किले पर विजय प्राप्त कर ली और बहुत से काफिरो की हत्या कर दी। कहा जाता है कि जिन काफिरो की हत्या हुई उनकी सख्या १९ हजार होगी। 'बहादुरशाही'[4] का लेखक लिखता है कि, "जो लोग मारे गये उनकी सख्या ४० हजार थी और उनमे ५७ प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काफिरो के नाम इस प्रकार है : पिथौरा राय, उदयकरण, कामदेव[5], अजायब देव, गाजी खा, शादी खा, रतनचन्द, माणिकचन्द, बहादुर खा, दौलत खा, अखयचन्द, कबिरत चन्द, दूनगरसी, कागू[6], विक्रमसी, मली खा, राय जगत, धर्म सिंह, मान सिह, जीत सिह, फ़तह खा,

१ फ़रीदी के अनुसार 'गंगू' (पृ० १००)।
२ २१ ज़िलहिज्जा ९२३ हि० (४ जनवरी १५१८ ई०)।
३ २ सफ़र ९२४ हि० (२३ फ़रवरी १५१८ ई०)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'मुज़फ्फ़र शाही' (पृ० १०१)।
५ मूल पुस्तक मे 'कान देव', फ़रीदी के अनुसार 'खान देव' (पृ० १०१)।
६ सम्भवतः 'गगू' (फ़रीदी पृ० १०१)।

तथा उसके पुत्र, डुनगरसी के पुत्र तथा काकरहा इत्यादि। यह विजय ९२४ हि० (१५१८ ई० में) प्राप्त हुई।...

(१५०) सैयिद जलाल मुनव्वरुलमुल्क बुखारी, फिरिश्ते सरीखे मलिक महमूद का कथन है कि, "इस धर्मयुद्ध मे अधिकाश काफिरो की परोक्ष के लोगो ने हत्या की।" उनका कथन है कि, "काफिरो की पराजय के उपरान्त जब द्वारो पर विजय प्राप्त हो गई और द्वार खुल गये तो हम लोग कुछ लोगो के साथ किले के ऊपर पहुचे और हवेलियो की सैर करने लगे। जिस किसी स्थान पर हमे हरबी[1] काफिर मिलते हम उनकी हत्या कर देते थे। सयोग से हम एक हवेली मे पहुचे। उसके द्वार भीतर से बन्द थे। हमे सदेह हुआ कि काफिर लोग घर मे होगे। उसके द्वार को तोडकर घर मे प्रविष्ट हुए, तो उसे खाली पाया। उसके पीछे एक और घर था। हम उसके द्वार पर पहुचे और जब उसमे प्रविष्ट हुए तो देखा कि लगभग ४०-५० काफिर मरे पडे है और उनके शीर्ष शरीर से पृथक् है। एक व्यक्ति में कुछ प्राण अभी थे। उससे पूछ-ताछ की। उसने कहा कि, "प्राणो के भय से हम लोग तहखाने मे घुसे। अचानक एक हाथ नगी तलवार सहित दृष्टिगत हुआ और उसने हम सबकी हत्या कर दी और सिर शरीर से पृथक् कर दिये। कुछ समय उपरान्त वह भी नरक में पहुच गया।"

कहा जाता है कि उसी दिन एक काफिर एक गाजी[2] के सामने से भागा। गाजी ने उसका पीछा किया। जब वह उसके निकट पहुचा और उसके भाला भोंकना चाहा, तो पीठ की ओर से उसका ज़िरह-बकतर फटा हुआ दिखाई पडा। गाजी को आश्चर्य हुआ। उसने अपना हाथ रोक लिया। कई बार उसने यही बात देखी। गाज़ी ने हाथ खीच लिया। अचानक उस काफिर का घोडा भडक उठा और वह गिर पडा। एक बडी कील के समान काटा उसके सीने मे चुभ गया और पीठ के उस पार निकल गया। गाजी चकित होकर ईश्वर की लीला की प्रशसा करता रहा।

सक्षेप मे जब सुल्तान विजय तथा सफलता प्राप्त करके किले के ऊपर पहुचा तो कई योद्धाओ ने निवेदन किया कि, "मालवा जैसा राज्य, जो गुजरात से अधिक विस्तृत है और जिसे इतने परिश्रम से प्राप्त किया गया है, और जिसमे १० हज़ार प्रतिष्ठित अश्वारोहियो की हत्याए हुई है, सुल्तान महमूद को दे देना उचित नही।"

(१५१) यह बात सुनते ही सुल्तान किले से नीचे उतर आया और उसने सुल्तान महमूद को आदेश दिया कि, "हमारे आदमियों मे से किसी को भी किले के ऊपर मत जाने दो। सुल्तान महमूद ने कहा कि, "मुझे जो कुछ भी प्रसन्नता एव निश्चिन्तता प्राप्त हुई है, वह सब आपके प्रताप से है और यह राज्य तथा धन-सपत्ति भी आप ही के कारण मिली है। यदि कुछ दिन तक किले के ऊपर ठहरे तो इससे मेरे सम्मान मे वृद्धि होगी।" सुल्तान ने कहा, "यदि ईश्वर ने चाहा तो तीसरे दिन तुम्हारा अतिथि हूगा। इस समय यही उचित है।" यद्यपि सुल्तान महमूद ने बडा ही आग्रह किया किन्तु उसने स्वीकार न किया। कुछ समय उपरान्त जब सुल्तान के विश्वासपात्रो ने किले से शीघ्रप्रस्थान करने का कारण पूछा तो उसने कहा कि, "लोगो की महत्वाकाक्षा यह थी कि किला सुल्तान महमूद को न दिया जाय। मैने यह धर्म-युद्ध केवल ईश्वर के लिये किया था। मुझे भय हुआ कि यह कुत्सित विचार कही मेरे उद्देश्य की शुद्धता मे बाधक न हो जाय, अत मै तुरन्त वहा चल पडा और कुत्सित विचारों के मार्ग बन्द कर दिये।

१ हरबी :—वे हिन्दू जिनसे मुसलमानों का युद्ध चल रहा हो।
२ मुसलमान विजेता।

मैने सुल्तान का उपकार नही किया अपितु सुल्तान महमूद ने मेरा उपकार किया है कि उसके कारण मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

जडाऊ पेटी जो जामादार[1] की असावधानी तथा घोडे के भडक जाने के कारण खलील खा को प्राप्त हो गई थी उसका विवरण इस प्रकार है जब सुल्तान कुतुबुद्दीन बिन सुल्तान मुहम्मद ने सुल्तान महमूद खलजी को कबीर पज[2] मे पराजित किया और उसने इस प्रकार का हत्याकाड किया कि जिससे अधिक सोचा भी न जा सकता था तो सयोग से इसी मार-काट मे सुल्तान कुतुबुद्दीन जामादार का, जिसके पास जडाऊ पेटी थी, घोडा भडक कर शत्रुओ तक पहुच गया और उसने इतनी तेजी दिखाई कि जामादार घोडे से गिर पडा और शत्रुओ द्वारा बन्दी बना लिया गया। पेटी उससे लेकर सुल्तान महमूद को दे दी गई। वह पेटी मालवा के सुल्तानो के खजाने मे थी। जब सुल्तान मुजफ्फर के प्रयत्न के फलस्वरूप मन्दू का किला विजय हुआ तो सुल्तान महमूद ने उस पेटी को अपने पुत्र के हाथ, जोकि काफिरो के बन्दी-गृह से मुक्त हुआ था, तलवार तथा उत्तम घोडो सहित, सुल्तान मुजफ्फर की सेवा मे भेज दिया और उससे दावत स्वीकार करने की प्रार्थना की। सुल्तान ने दावत स्वीकार करके उसके पुत्र को सम्मान तथा पुरस्कार सहित विदा कर दिया। सुल्तान महमूद ने नगर वालो को प्रसन्न होकर यह आदेश दे दिया कि नगर की आईना बन्दी की जाय[3] और महलो को साफ करके शाही कालीन बिछाये जाय। कहा जाता है कि (१५२) सुल्तान महमूद ने दरबार को सजाने का इतना अधिक प्रयत्न किया था कि जिससे अधिक सोचा भी न जा सकता था।

११ सफर[4] को बचन के अनुसार उसने किले की ओर प्रस्थान किया। मन्दू के किले के छोटे-बडे यहा तक कि स्त्रिया भी दीवारो तथा कोठो से दर्शन कर रही थी। और सुल्तान के प्रति शुभकामनाए कर रही थी। सुल्तान महमूद ने आतिथ्य सत्कार का अत्यधिक प्रबन्ध किया और आदर-सत्कार को सीमा से बढकर सम्पन्न कराया। भोजन के उपरान्त वह सुल्तान को महलो की सैर कराने ले गया। अचानक वे एक हवेली मे पहुचे जिसमे काबा के समान[5] एक भवन था और जिस पर बेल-बूटे बने थे तथा सुनहरा काम था। उसके चारो ओर बहुत से कमरे थे। जब सुल्तान वहा पहुचा तो सुल्तान महमूद की स्त्रिया श्रृगार किये हुए कमरो का द्वार खोलकर स्वर्ग की अप्सराओ के समान प्रकट हुई। कहा जाता है कि सुल्तान महमूद के अत पुर मे दो हजार[6] रूपवतिया थी। मन्दू के सुल्तानो ने भोग-विलास का कार्य इस सीमा तक पहुचा दिया था कि उससे अधिक की कल्पना नही की जा सकती, विशेष रूप से सुल्तान गयासुद्दीन ने। अभी तक यदि किसी की भोग-विलास के सम्बन्ध मे उपमा दी जाती है तो कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति भोग-विलास मे अपने समय का दूसरा सुल्तान गयासुद्दीन है। यदि किसी बात से दुख अथवा खेद प्रकट होने की आशका होती थी तो उसके आदेशानुसार वह सुल्तान के समक्ष न कही जा सकती थी। उसे अपने समस्त राज्यकाल मे दो बार दुख की सूचना हुई। एक बार जब उसके जामाता की मृत्यु हो गई तो उसकी पुत्री को सफेद वस्त्र पहना कर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जब सुल्तान

१ वह अधिकारी जो शाही वस्त्रो का प्रबन्ध करता था।
२ फ़रीदी के अनुसार 'कपड़वंज'।
३ सजाया जाय।
४ ११ सफ़र ९२४ हि० (२२ फ़रवरी १५१८ ई०)।
५ काबा चतुष्कोणीय भवन है अतः चतुष्कोणीय भवन की उपमा काबा से दी गई है।
६ फ़रीदी के अनुसार '१०००' (पृ० १०४।

जाता है कि एक रात्रि मे उन लोगो ने ३७ कोस की यात्रा की। आदिल खा ने बवालपुर के पडाव से, जो मन्दू से १५ कोस पर स्थित है, राणा के पलायन के समाचार सुल्तान को पहुचाये और निवेदन किया कि, "यदि आज्ञा हो तो हम उसका पीछा करे।" सुल्तान ने पीछा करना उचित न समझकर आदिल खा को अपने पास बुलवा लिया और स्वय अपनी राजधानी की ओर लौट गया। देवला नामक स्थान तक सुल्तान महमूद उसके साथ गया। वहा उसने (सुल्तान मुजफ्फर ने) आसफ खा तथा कुछ अमीरो को सुल्तान महमूद की सहायतार्थ नियुक्त करके विदा कर दिया। आसीर के आदिल खा को भी उसी पडाव से विदा कर दिया ताकि वह आसीर तथा बुरहानपुर की ओर चला जाय और वह स्वय वहा से ईदर पहुचा। वहा वह कुछ दिन तक शिकार के लिये ठहरा और उस स्थान से मुहमदाबाद चला गया। ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु उसने अपनी राजधानी मे भोग-विलास मे व्यतीत की ओर सेना ने मार्ग के कष्ट से आराम किया।

सुल्तान महमूद की राणा सांगा द्वारा पराजय, राणा का सौजन्यपूर्ण व्यवहार

तत्पश्चात् ९२५ हि० (१५१९ ई०) मे यह समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान महमूद ने काकरुन[1] पर चढाई की थी। हेमकरण जिसका कि उल्लेख ऊपर हो चुका है, उस स्थान का अधिकारी था। युद्ध मे वह सुल्तान द्वारा बन्दी बना लिया गया। सुल्तान ने उसकी हत्या कर दी। इस कारण राणा ने बहुत बडी सेना एकत्र करके सुल्तान महमूद से युद्ध हेतु प्रस्थान किया। बडा भीषण युद्ध हुआ। अन्त मे सुल्तान राणा द्वारा आहत हुआ। उसकी सेना पराजित हुई और बहुत बडी सख्या मे मुसलमानो की हत्या कर दी गई। सुल्तान (मुजफ़्फ़र) यह समाचार पाकर बडा चिन्तित हुआ और किले की रक्षा हेतु उसने सेना भेजी। राणा यह समाचार पाकर अपनी राजधानी चित्तौड की ओर लोट गया।

कहा जाता है कि जब सुल्तान महमूद रणक्षेत्र मे आहत हो गया और राणा की सेना ने उसे इस सम्बन्ध मे सूचना भेजी तो वह स्वय आकर सुल्तान को बडे सम्मान से पालकी मे सवार करके चित्तौड ले गया और उसके (महमूद के) राज्य के चारो ओर के मुसलमान बादशाहो, उदाहरणार्थ देहली का बादशाह सुल्तान इबराहीम लोदी तथा गुजरात का बादशाह सुल्तान मुजफ्फर इत्यादि, के कारण उसने सुल्तान महमूद से सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। जब सुल्तान के घाव अच्छे हो गये तो वह उसके साथ (१५५) स्वय कुछ मजिल तक गया और उसे बिदा कर दिया। राणा ने सुल्तान के पुत्र को इस आशय से अपने पास बधक के रूप मे रख लिया कि सुल्तान बदला न ले। सुल्तान महमूद मान्दू मे पहुच गया।

ईदर में निजाम खां की नियुक्ति तथा वजीरों में असंतोष

सक्षेप मे उपर्युक्त वर्ष मे सुल्तान मुज़फ्फर अहमदाबाद से ईदर पहुचा और कुछ समय तक वहा शिकार खेलता रहा। मलिक नुसरतुलमुल्क के, जो ईदर का हवालादार[2] था, स्थान पर मलिक हुसेन, जिसकी उपाधि निजाम खा थी और जो वीरता तथा पौरुष मे अपने काल का रुस्तम था, को नियुक्त किया और स्वय अहमदाबाद नगर पहुचा। वजीर लोग इस बात से सन्तुष्ट न थे। सुल्तान ने

१ फ़रीदी के अनुसार 'करवान' (पृ० १०६)।

२ सुल्तान की ओर से मुख्य प्रबन्धक।

कहा, "मैंने तुम्हारे गुरु को नियुक्त किया है।[1] व्याकुलता से कोई लाभ नही।" वजीरो ने इसी कारण शत्रु होकर निजाम खा के पतन का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया।

निजाम खां तथा राणा सांगा का युद्ध

९२६ हि० (१५१९–२० ई०) में एक अवसर पर एक भाट ने निजाम खा की गोष्ठी मे कहा कि, "राणा के समान हिन्दुस्तान मे आजकल कोई राजा नही। वह राय मल की सहायता कर रहा है। आपके कुछ समय तक यहा रहने के कारण ईदर रायमल के अधिकार से न निकल सकेगा।" निज़ाम खां ने कहा कि, "कौन ऐसा कुत्ता है जो राय मल की सहायता उस समय तक जब तक मै हूं, कर सकता है? यदि वह वीर है तो क्यो नही आता?" उसने उत्तर दिया, "वह शीघ्र आयेगा।" निजाम खा ने कहा, "यदि न आये तो कुत्ता ही होगा।" उसने एक कुत्ते को मगवाकर बधवा दिया।और कहा, "यदि राणा न आये तो इस कुत्ते के समान होगा।" भाट राणा की सेवा मे पहुचा और जो कुछ घटना हुई थी उसका उल्लेख किया। राणा सर्प के समान बल खाता रहा और उसने तत्काल शिविर बाहर लगवा दिये। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ सिरोही कस्बे मे पहुचा।

यह समाचार पाकर सुल्तान कुमक भेजना चाहता था किन्तु सुल्तान के मुख्य अधिकारियो ने जो निजाम खा के शत्रु थे, निवेदन किया कि, "राणा मे क्या शक्ति है जो सुल्तान के दासो का विरोध कर सकेगा।" उसी समय दूतो ने यह समाचार पहुचाये कि राणा लौटकर चित्तौड चला गया। यह समाचार उस समय सत्य थे। सुल्तान किवामुलमुल्क को अहमदाबाद नगर की रक्षा हेतु नियुक्त करके स्वय मुहमदाबाद पहुचा और राणा मार्ग से लौटकर बाकर[2] की विलायत की ओर जो ईदर की विलायत के पूर्व मे स्थित है, रवाना हुआ। निज़ाम खा ने यह समाचार सुल्तान को पहुचाया कि "राणा ४० हजार अश्वारोहियो सहित बाकर[2] की ओर पहुच चुका है और उसका विचार है कि वह ईदर पर (१५६) आक्रमण करे। ईदर मे केवल पाच हजार अश्वारोही नियुक्त थे। उनमे से अधिकाश अहमदाबाद जा चुके हैं, अत जो आवश्यक बात थी वह प्रस्तुत कर दी गई।" वजीरो ने निजाम खा के विरोध के कारण यह प्रार्थनापत्र सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत न किया।

सक्षेप, में राणा के विरुद्ध सहायता भेजने की ओर उपेक्षा हुई। राणा शीघ्रातिशीघ्र ईदर पहुचा। निजाम खा ने, जो उन दिनों मुबारिज़ुलमुल्क की उपाधि प्राप्त कर चुका था, यह निश्चय किया कि, "मै कल युद्ध करूगा।" उसके विश्वासपात्रो ने उसे यह न करने दिया और कहा कि, "राणा के साथ ४० हजार अश्वारोही हैं, हम लोग ९०० सवार सहित युद्ध करेगे। यह कोई युद्ध न होगा। इस युद्ध में सुल्तान की पराजय होगी और इससे बदनामी होगी।" उन लोगो ने यद्यपि बहुत वादविवाद किया किन्तु मुबारिज खा अपनी बात से पीछे न हटा। अन्त में अत्यधिक प्रयत्न करने पर यह निश्चिय हुआ कि वे लोग अहमदनगर चले जाय और अहमदनगर के किले को दृढ करके कुमक पहुचने तक तोप तथा बन्दूक से युद्ध करते रहे। तत्पश्चात रणक्षेत्र में निकलकर युद्ध करें। संक्षेप मे मुबारिज़ुलमुल्क को जबरदस्ती लेकर वे अहमदनगर की ओर रवाना हुए किन्तु १०० सवार, जो सुल्तान के सिलाहदार[3] थे, यह निश्चय

१ 'उस व्यक्ति को नियुक्त किया है जो तुम लोगों मे सबसे श्रेष्ठ है'।
२ फरीदी के अनुसार 'बागढ़' (पृ० १०८)।
३ सिलाहदार'—अग-रक्षक।

करके कि हम प्राण त्याग देगे, ईदर मे इस प्रकार रुक गये कि मुबारिजुलमुल्क को इसकी सूचना न हुई। जब राणा ईदर पहुचा तो उन लोगो ने निकलकर युद्ध किया। सब के सब मारे गये। उनमे मलिक नज्जन[1], उथेरिया सर्वोत्कृष्ट थे। इस घटना का यह कारण था कि वज़ीरो ने मलिक नज्जन से कहा था कि, "मलिक ! क्या तू कोई ऐसा कार्य कर सकता है जिसके कारण मुबारिजुलमुल्क को लज्जित होना पडे ?" कहा जाता है कि एक अन्य भाट ने मुबारिजुलमुल्क की प्रशसा मे एक छन्द लिखा था जिसका तात्पर्य यह था कि, "राणा की सेना सारस के समान है और मुबारिजुलमुल्क की सेना बाज के समान।" राणा जब ईदर के निकट पहुचा तो उसने भाट से कहा कि, "वे बाज जिनके विषय मे तूने कहा था, कहा चले गये ?" इसी बीच मे वीर लोग निकल कर, जो लोग आगे-आगे जाते थे, उन परटूट पडे। भाट ने कहा, "जिन बाज़ों के विषय मे मैंने कहा था वे आ गये।"

मुबारिजुलमुल्क की पराजय

मार्ग मे मुबारिजुलमुल्क से ख़िज़्र खा, असदुलमुल्क[2], गाजी खा, शुजाउलमुल्क तथा सैफ खा[3] जो अहमदनगर से आ रहे थे मिले। उन्होने मुबारिजुलमुल्क से कहा कि, "आपको ईदर ही मे ठहरना चाहिये था। हम लोग भी ईदर पहुच ही रहे थे और सगठित होकर राणा से युद्ध करने वाले थे। कल जब राणा अहमदनगर पहुच जायगा तो हमसे यह न हो सकेगा कि हम उसके भय के कारण किले मे बन्द हो जाय। हम लोग रणक्षेत्र मे निकलकर युद्ध करेगे। इस प्रकार हमारे लिये ईदर मे युद्ध करना अच्छा था।" मुबारिजुलमुल्क ने कहा कि, "हमारे सहायको ने इसी प्रकार परामर्श दिया कि अहमदनगर चलना (१५७) चाहिये अन्यथा मै इसे स्वीकार न कर रहा था। अब जो कुछ तुम परामर्श दो वह उचित है, मै उसी पर आचरण करूगा।" क्योकि उनकी भेट अहमदनगर के निकट हुई थी अत वे अहमदनगर पहुचे। प्रात काल वे तैयार होकर और सेना को सुसज्जित करके बाहर निकले और खडे हो गये। केवल १२०० अश्वारोही तथा एक हजार पदाती बन्दूक चलाने वाले इस्लामी सेना मे थे। सक्षेप मे, एक दिन व्यतीत न हुआ था कि राणा की सेनाए प्रत्येक दिशा से पर्वत के समान प्रकट हुई। मुबारिजुलमुल्क के सहयोगियो मे से १२०० अश्वारोहियो तथा एक हजार पदातियो एव अन्य अमीरो के सेवको मे से ४०० अश्वारोहियो ने प्राण त्याग देना निश्चय कर लिया और तैयार होकर अल्लाह-अल्लाह कहते हुए युद्ध हेतु रणक्षेत्र मे प्रविष्ट हुए। सब लोगो ने दुष्टो की सेना के अग्र भाग पर आक्रमण किया और तलवार द्वारा अग्र भाग को पराजित करके भगा दिया। लगभग २० हजार अश्वारोहियो का उन्होने एक कोस तक पीछा किया। यहाँ तक कि वे अपनी उस सेना की दृष्टि से, जो पीछे थी, छिप गये। वे लोग यह समझे कि वे लोग मार डाले गये और उनमे से कोई भी नही लौट सका। वे शत्रुओ को पीठ दिखाकर अहमदनगर की ओर चल दिये।

सक्षेप मे, मृत्यु के आकाक्षी योद्धाओ ने अग्र भाग को मध्य भाग पर ढकेल दिया और मध्य भाग को भी पराजित कर दिया। इस युद्ध मे ग़ाजी खा, इरादत खा[4], तथा सुल्तान शाह, जोकि बडे ही वीर थे, आहत हुए और बहुत से गाजी मार डाले गये। कुछ लोग रणक्षेत्र ही मे घायल होकर मर गये। बहुत

१ फ़रीदी के अनुसार 'सज्जन' अथवा 'शेख़न' (पृ० १०८)।
२ फ़रीदी के अनुसार 'असद खां' (पृ० १०६)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'सैफ़ुलमुल्क' (पृ० १०६)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'इबराहीम ख़ां' (पृ० १०६)।

कम ऐसे लोग होगे जो घायल न हुए हो। मुबारिजुलमुल्क के विश्वासपात्रों ने जब यह देखा कि पर्वत से सिर टकराने से इसके अतिरिक्त कुछ लाभ न होगा कि सिर टूट जायगा और पर्वत को कोई हानि न होगी, तो उसके घोडे की लगाम पकड कर उसे जबरदस्ती रणक्षेत्र के बाहर निकाला, और अहमदनगर के किले की ओर चल दिये। उनका विश्वास था कि किला, किले के रक्षको के अधिकार मे होगा। जब वे किले के द्वार पर पहुचे तो उन्होने देखा कि किले के रक्षक उनके पहुचने के पूर्व ही किले को छोडकर जा चुके है। मुबारिजुलमुल्क तथा सफदर खा, बरहनी[1] कस्बे की ओर, जो अहमद नगर से १० कोस[2] पर है, चले गये। (१५८) किन्तु उन लोगो ने सीधा मार्ग छोडकर अन्य मार्ग ग्रहण किया। असदुलमुल्क इत्यादि सीधे रास्ते से रवाना हुये। काफिरो ने पीछा किया और असदुलमुल्क के पास पहुच गये। असदुलमुल्क ने लौटकर युद्ध किया और अपने सहायको सहित मारा गया। उसके हाथी तथा सामान, जो कुछ उसके पास था, काफिरो को प्राप्त हो गया। राणा ने अहमदनगर कस्बे के निकट पडाव किया और समस्त अहमद-नगर शहर को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। सभी नगरवासी बन्दी बना लिये गये। रात्रि मे राणा ने अपने अमीरो तथा वजीरो को बुलवाकर परामर्श किया। कुछ लोगो ने कहा कि, "अहमदनगर यहा से ५० कोस है। हमे उस पर शीघ्रातिशीघ्र आक्रमण कर देना चाहिये।" राणा ने कहा कि, "४०० मुसलमान अश्वारोहियों ने २० हजार अश्वारोहियो को पराजित कर दिया और १००० प्रतिष्ठित अश्वारोहियो की हत्या कर दी। यदि चार हज़ार एकत्र होकर युद्ध करेगे तो तुम उनका मुकाबला न कर सकोगे। हमारे पूर्वजों मे से कोई भी इस स्थान तक नही पहुच सका है और ऐसा यश नही कमाया है। हमे इसी से सतोष होना चाहिये।" गुजरात के राज्य के गरासियों ने जो राणा के साथ थे निवेदन किया कि, "यदि आप अहमदाबाद पर आक्रमण नही करते तो हरिंगर[3] कस्बा निकट है। उसे विध्वस करके लौट आना चाहिये, कारण कि उस कस्बे के समस्त निवासी व्यापारी है और उनके पास अत्यधिक धन-सपत्ति है।" तदनुसार प्रात काल उन्होंने हरिंगर पर चढाई की। क्योकि हरिगर के समस्त निवासी ब्राह्मण थे अतः उन्होने राणा की सेवा में एकत्र होकर निवेदन किया कि, "हमारे पूर्वजो की २२ पीढिया इस कस्बे मे निवास करती आयी है और हम पर किसी ने अत्याचार नही किया। तुम हिन्दू बादशाह होकर क्यो हम पर अत्याचार करते हो?" राणा ने उस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट न किया, किन्तु उपहार लेकर बेलनगर[4] मे पडाव किया। बेलनगर के शिकदार[5] ने किला बन्द कर लिया। राणा के आदमियो ने किले को घेर लिया और सायकाल की नमाज तक किले को घेरे रहे। इस युद्ध मे बेलनगर क़स्बा भी नष्ट-भ्रष्ट हो गया। रात्रि मे राणा के शिविर मे हलचल मच गई कि पटन के सूबे का मुक्ता ऐनुलमुल्क तथा फतह खा आ गये है। रात भर राणा की सेना सशस्त्र रही और प्रात काल ईदर की ओर रवाना हो गई और ईदर से अपने राज्य की ओर चल दी।

सक्षेप मे, जिस दिन से युद्ध प्रारम्भ हुआ, अहमदाबाद का हाकिम किवामुलमुल्क, शहर से मुबा-रिजुलमुल्क की सहायतार्थ मलाद[6] नामक स्थान पर, जो अहमदाबाद से सात कोस पर है, पहुच गया।

१ फ़रीदी के अनुसार 'परान्तीज' (पृ० ११०)।
२ फ़रीदी के अनुसार '१५ मील' (पृ० ११०)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'वादनगर' (पृ० ११०)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'बीसानगर' (पृ० ११०)।
५ शिक़दार —शिक़ का स्वामी
६ फ़रीदी के अनुसार 'वलाद' (पृ० ११०)।

पराजित सेना के कुछ सैनिक वहा पहुचे और उन्होने बताया कि मुबारिजुलमुल्क, सफदर खा तथा गाजी खा की हत्या हो चुकी है। किवामुलमुल्क ने उपर्युक्त स्थान पर पडाव किया और इस घटना की सुल्तान को सूचना दे दी। तीसरे दिन ज्ञात हुआ कि मुबारिजुलमुल्क तथा सफदर खा जीवित है और करी परगने (१५९) के अधीन रुनपाल[1] नामक स्थान पर पडाव किये हुए है।

'तारीखे बहादुरशाही' का लेखक लिखता है कि किवामुलमुल्क ने लेखक को मुबारिजुलमुल्क को लाने के लिये भेजा ताकि वे दोनो मिलकर राणा का पीछा करे। मै जाकर मुबारिजुलमुल्क को मलाद नामक स्थान पर लाया। मलिक ने किवामुलमुल्क से भेट की। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि राणा ईदर से निरन्तर यात्रा करता हुआ चित्तौड चला जा चुका है। तत्पश्चात् मलिक मुबारिजुल-मुल्क तथा लेखक मलिक किवामुलमुल्क को छोडकर, अहमदनगर पहुचे। इस हत्याकाड की घटना के १६वे दिन जो लाशे मैदान मे पडी हुई थी उन्हे दफन कराया। काथ[2] के कोलियो मे से जो अनाज लेने के लिये अहमदनगर मे थे, ६० व्यक्तियो को उन्होने नरक पहुचा दिया। एक रात्रि मे वे अहमदनगर मे रहे। प्रात काल अनाज के अभाव के कारण वे बरहनी[3] कस्बे मे पहुचे। इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान मुजफ्फर ने एमादुलमुल्क तथा कैसर खा को बहुत बडी सेना एव कुछ युद्ध के हाथी देकर सहायतार्थ भेजा है। वह सेना अहमदाबाद मे पहुची और वहा से मलाद नामक स्थान पर आई। उन लोगो ने किवामुलमुल्क के साथ मिलकर प्रस्थान किया और बरहनी नामक ग्राम मे पडाव किया। वहा से उन्होने सुल्तान की सेवा मे प्रार्थनापत्र भेजा कि "पिशाच राणा चित्तौड चला गया है। यदि शाही आदेश हो तो हम लोग चित्तौड की ओर प्रस्थान करे। और हर प्रकार का प्रयत्न करे।" सुल्तान ने उत्तर भेजा कि, "अभी वर्षा ऋतु है। इसे अहमदनगर ही मे व्यतीत करो। तदुपरान्त हम स्वय उस पिशाच काफिर को नष्ट करने के लिये प्रस्थान करेगे।" अमीरो ने अहमदनगर पहुँचकर पड़ाव किया।

सुल्तान का राणा से युद्ध हेतु प्रस्थान

वर्षा ऋतु के उपरान्त सुल्तान ने समस्त सेना के मासिक वेतन मे देह बिस्त[4] की वृद्धि कर दी और सेना को एक वर्ष का वेतन खजाने से नकद पेशगी दिलवा दिया ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपना सामान ठीक कर ले। उसने स्वय शव्वाल मास[5] में मुहमदाबाद से प्रस्थान किया और हालौल नामक स्थान पर जो मुहमदाबाद से तीन कोस पर है, पडाव किया। वहाँ से वह शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ अहमदाबाद पहुँचा और खेम धरोल के महलो मे, जो काकरिया हौज के निकट थे, पडाव किया। इसी बीच मे सोरठ की अक्ता के मुक्ता मलिक अयाज ने २०,००० अश्वारोहियो तथा बहुत-सी तोपो और तोप चलाने वालो सहित सेवा मे उपस्थित होकर निवेदन किया कि, "यदि यह सेवा दास को सौप दी जाय (१६०) तो ईश्वर ने चाहा तो दास राणा को जीवित बन्दी बना लायेगा या उसकी हत्या कर देगा।" सुल्तान, मलिक अयाज की प्रार्थना से बडा प्रसन्न हुआ।

१ फ़रीदी के अनसार 'रूपाल' (पृ० १११)।
२ फ़रीदी के अनुसार 'कांथा' (पृ० १११)।
३ फ़रीदी के अनुसार 'बुरहनी' अथवा 'परान्तीज' (पृ० १११)।
४ दस के स्थान पर २० अथवा दुगुनी।
५ शव्वाल ९२६ हि० (सितम्बर-अक्तूबर १५२० ई०)।

मलिक अयाज का राणा के विरुद्ध भेजा जाना

मुहर्रम ९२७ हि० (दिसम्बर १५२०-जनवरी १५२१ ई०) मे उसने खेम धरौल और हरसोल नामक स्थान पर पहुच कर पडाव किया। उसने अहमदाबाद की सेना को भी बुलवा कर शाही शिविर से मिला दिया।[1] मलिक अयाज ने पुन अपनी पहली प्रार्थना प्रस्तुत की। सुल्तान ने मलिक अयाज़ को सरतापाई[2] खिलअत प्रदान करके विदा किया। 'तारीखे बहादुरशाही' का लेखक लिखता है कि सुल्तान ने लगभग एक लाख अश्वारोही तथा १०० मस्त हाथी मलिक अयाज के साथ किये। २० हजार अश्वारोही तथा २० हाथी मलिक किवामुलमुल्क के साथ किये। दोनो सेनाओं को विदा कर दिया। मलिक अयाज तथा किवामुलमुल्क मोरासा कस्बे मे पहुँचे और मोरासा से बाकरा[3] विलायत के अधीन रहमूला नामक स्थान पर पहुचे। वहां से उन्होने प्रत्येक दिशा मे सेनाए इस आशय से नियुक्त की कि वे समस्त बाकरा विलायत को नष्ट-भ्रष्ट कर दे। इसका कारण यह था कि बाकरा का राजा भी विद्रोह मे राणा के साथ था। डूँगरपुर को, जोकि बाकरा के राजा की राजधानी थी, उन्होनें जलाकर राख कर दिया। वहा से वे सागवारा के मार्ग से बासवारा[4] पहुंचे। सयोग से शुजाउलमुल्क, सफदर खा तथा मुजाहिद खा शिविर के समीप २०० वीर अश्वारोहियो सहित खडे थे, कि इसी बीच मे उनके पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि, "बासवारा का राजा मदली राय[5] सम्बन्धियो सहित इस स्थान से दो कोस पर सेना लिये पर्वत मे खडा है। उपर्युक्त अमीर उन लोगो सहित, जो वहा उपस्थित थे, पर्वत की ओर रवाना हुए। जब काफिरों के करावलो[6] ने ऊचाई पर से देखा कि मुसलमानो की सेना बडी थोडी सख्या मे आ रही है तो उन्होने युद्ध छेड दिया। अन्त मे मुसलमानो की सेना को विजय प्राप्त हुई और काफिर पराजित हुए। कुल आठ मुसलमान उस युद्ध मे मारे गये और बहुत बडी सख्या मे काफिर तलवार के घाट उतार दिये गये। यह समाचार शाही शिविर मे पहुचा तो सेनाओ के बहुत से दल सहायतार्थ रवाना हुये किन्तु शाही सैनिकों के पहुचने तक अमीरो ने उस सेना पर विजय प्राप्त कर ली और सफलतापूर्वक वे लौट पडे। मुसलमानों की वीरता देखकर काफ़िर आतकित हो गये और यह समाचार पाकर राणा के प्राण निकल गये।

मलिक अयाज का मंदसौर पहुंचना तथा राणा द्वारा सधि का प्रस्ताव

तत्पश्चात् शाही सेना ने उस स्थान से प्रस्थान किया और खरजी घाट[7] को पार करके निरन्तर यात्रा करते हुये मदसौर के किले को, जो राणा के अधीन था और जहा उसकी ओर से आसोक मल[8] राजपूत शासन करता था, घेर लिया। कहा जाता है कि वह किला अत्यन्त दृढ था और उसकी दीवारें (१६१) दस गज़ चौडी थी। नीव से लेकर ऊपर तक किले का आधा भाग कडे पत्थर का था और शेष

१ 'अन्य सेना के साथ सम्मिलित कर दिया'।
२ सम्भवत. पूरे शरीर के लिये विभिन्न वस्त्र।
३ फ़रीदी के अनुसार 'बागर' (पृ० ११२)।
४ मूल पुस्तक में 'बासला' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'बांसवारा' (पृ० ११२)
५ फ़रीदी के अनुसार 'मेदिनी राय'।
६ सेना के अग्र भाग।
७ फ़रीदी के अनुसार 'खरजी' अथवा 'खरज़ी' (पृ० ११३)।
८ सम्भवतः 'अशोक मल'।

आधा भाग पक्की ईंटो का था। उसे मान्दू के वाली सुल्तान होशग ने बनवाया था। राणा ने भी उस ओर से बहुत बडी सेना लेकर नदीसी नामक ग्राम के निकट, जो मन्दसौर से दस कोस पर है, पडाव किया। मलिक अयाज ने किले के चारों ओर सुरगे खुदवानी तथा साबातो[1] को तैयार कराना प्रारम्भ कर दिया किन्तु किवामुलमुल्क तथा सेना के अन्य अमीरो का मलिक अयाज से मतभेद हो गया। इसी बीच मे राणा ने अपने वकील, मलिक (अयाज) की सेवा मे भेजे और कहलाया कि, "मुझसे बडा घोर अपराध हुआ है। इसका कोई उपचार नही हो सकता। यदि आप कृपा करके मेरे अपराधो को क्षमा कर दे तो मै प्रतिज्ञा करता हू कि तदुपरान्त मै दासता प्रदर्शित करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न करूगा। घोडे, हाथी, बन्दी जो कुछ भी अहमदनगर के युद्ध मे मुझे प्राप्त हुए है, उन्हे सेवा मे उसी प्रकार भेज दूँगा। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी मेरे लिये निश्चित किया जाय उसे मै स्वीकार करूगा।"

गुजरात के अमीरो मे परस्पर मतभेद

इसी बीच मे सुल्तान महमूद खलजी भी मान्दू से सुल्तान की सेना की सहायतार्थ पहुच गया। रायसेन के किले से सलाहदी राजपूत दस हजार अश्वारोहियो सहित मलिक अयाज से भेट करने आ रहा था किन्तु मन्दली राय ने बीच मे पडकर उसे मार्ग-भ्रष्ट कर दिया और राणा की सेवा मे ले गया। शनै शनै उस क्षेत्र के समस्त राजा लोग राणा की सहायतार्थ पहुच गये और दोनो ओर से बहुत बडी सेनाए एकत्र हो गई किन्तु अमीरो के परस्पर विरोध के कारण सुल्तान मुजफ्फर तथा राज्य के हितैषियो की आशा के अनुकूल युद्ध भली-भाति सम्पन्न न हो सका और मन्दसौर के किले पर विजय प्राप्त न हो सकी। मलिक अयाज ने किवामुलमुल्क तथा उसके साथियो की इच्छा के विरुद्ध राणा से सन्धि करना स्वीकार कर लिया किन्तु किवामुलमुल्क ने स्वीकार न किया और सुल्तान महमूद को सूचित किया कि, "यदि सुल्तान स्वीकार करे तो हम उसके साथ मिलकर राणा से युद्ध करे।" सुल्तान ने भी इसे स्वीकार कर लिया किन्तु मलिक अयाज सेना का सरदार तथा प्रतिष्ठित सैनिक था, इस कारण सुल्तान महमूद ने उसके सम्मान को दृष्टि मे रखते हुए युद्ध न किया। मलिक अयाज ने सुल्तान तथा किवामुलमुल्क के परामर्श बिना सन्धि कर ली और कूच करके १० कोस आगे बढकर पडाव किया। सुल्तान महमूद ने भी उपेक्षा की। कारण कि जैसा कि उल्लेख हो चुका है, सुल्तान महमूद राणा का आभारी था और उसका पुत्र राणा के पास बन्दी था किन्तु राणा ने उसे मुक्त कर दिया था। सुल्तान ने राणा को पेशकश अदा करना भी स्वीकार कर लिया था। उसने किवामुलमुल्क से कहा कि, "हम सुल्तान मुजफ्फर के आदेशानुसार (१६२) कार्य करते है। हमारे लिये यह उचित नही कि हम सुल्तान के आदेशो की अवहेलना करे।" सुल्तान महमूद भी मान्दू की ओर चला गया। अमीरो ने यद्यपि बहुत क्रोध प्रदर्शित किया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। मलिक (अयाज) गुजरात की ओर चल खडा हुआ और अहमदाबाद पहुचा। सुल्तान ने मलिक अयाज की कडी आलोचनाए की और उससे रुष्ट हो गया। गुजरात के सभी लोग मलिक से घृणा करने लगे। सुल्तान ने निश्चय किया कि वर्षा ऋतु के उपरान्त वह स्वय प्रस्थान करे; और मलिक अयाज को सोरठ की ओर विदा कर दिया। सुल्तान ने वर्षा ऋतु मुहमदाबाद मे व्यतीत की।

राणा से युद्ध हेतु सुल्तान का प्रस्थान, राणा के पुत्र का आगमन

वर्षा ऋतु उपरान्त उसने ९२८ हि० (१५२१–२२ ई०) मे अहमदाबाद की ओर राणा को दड

1 देखिये पृ० १७८ नोट न० ३।

देने के लिये प्रस्थान किया। जब वह अहमदाबाद पहुचा तो वहा राणा का पुत्र हाथियो तथा पेशकश सहित, जो राणा ने देना स्वीकार किया था, सुल्तान की सेवा मे पहुचा। सुल्तान ने आक्रमण करना त्याग दिया। कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने शिकार हेतु झालावर की ओर प्रस्थान किया और वहा से पुन वापिस होकर ग्रीष्म ऋतु तथा वर्षा ऋतु अहमदाबाद मे व्यतीत की। वर्षा ऋतु उपरान्त उसने राणा के पुत्र को विदा कर दिया। उसी वर्ष मलिक अयाज की मृत्यु हो गई। जब यह समाचार सुल्तान को प्राप्त हुआ तो उसने कहा कि, "मलिक अयाज अन्तिम अवस्था को प्राप्त हो गया था। यदि वह राणा से युद्ध करता हुआ मारा जाता तो अच्छा था, कारण कि ऐसी दशा मे वह शहीद हो जाता।" सक्षेप मे, सुल्तान ने मलिक अयाज का पद उसके ज्येष्ठ पुत्र इसहाक को प्रदान कर दिया और सोरठ का खजाना मगवाया। इसहाक ने खज़ाने को अत्यधिक सामग्री सहित प्रस्तुत किया। सुल्तान अहमदाबाद से कबीर पज[1] के मार्ग से मुहमदाबाद पहुचा और वर्षा ऋतु उपर्युक्त नगर मे भोग-विलास मे व्यतीत की।

बीबी रानी की मृत्यु

९३० हि० (१५२३–२४ ई०) के प्रारम्भ मे वह अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने के लिये मोरासा की ओर रवाना हुआ और मोरासा के किले को फिर से दृढ बनाया और उसकी मरम्मत कराई। ग्रीष्म ऋतु के निकट आ जाने के कारण उसने अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे सिकन्दर खा शाहजादे की माता बीबी रानी, जो सुल्तान महमूद की सर्वश्रेष्ठ पत्नी थी और सुल्तान के राज्य के वजीरो तथा उच्च पदाधिकारियो एव सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो के प्रति माता के समान कृपा प्रदर्शित करती थी, मृत्यु को प्राप्त हो गई और सुल्तान की माता के कब्रिस्तान मे, जो खेम धरोल के निकट (१६३) स्थित है, दफन हुई। सुल्तान ने वहा तीन दिन तक पडाव किया और अहमदाबाद पहुचा। रानी की मृत्यु का सुल्तान को बडा शोक हुआ। कई दिन तक वह शोक के कारण रुग्ण रहा। स्वस्थ होने पर वह अहमदाबाद पहुचा और वर्षा ऋतु उसने वही व्यतीत की।

आदिल खा का देहली को प्रस्थान

इसी बीच मे आदिल खा बिन सुल्तान बहलोल ने, जो सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे सेवा मे उपस्थित हुआ था, निवेदन किया कि, "मेरे भतीजे सुल्तान इबराहीम ने कुछ प्रतिष्ठित अमीरो की हत्या करा दी है और सेना को असतुष्ट कर दिया है। इस कारण सुल्तान इबराहीम के अधिकाश अमीरो ने सहमत होकर मुझे बुलवाया है। यदि बादशाह की अनुमति हो तो मै देहली की ओर प्रस्थान करू।" सुल्तान ने सामान तैयार करके उसे विदा कर दिया। आदिल खा देहली पहुचा और उसने सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण कर ली। उसने सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध युद्ध किया किन्तु सफल न हो सका और भाग कर काबुल मे ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह के पास चला गया। वहा से उस बादशाह को साथ लेकर हिन्दुस्तान पहुचा और उसन अपने वश का विनाश करा दिया।

बहादुर खा का गुजरात से प्रस्थान

९३१ हि० (१५२४–२५ ई०) मे सुल्तान मुजफ़्फ़र ने मुहमदाबाद से अहमदाबाद की ओर

[1] फ़रीदी के अनुसार 'कपड वज' (पृ० ११४)।

प्रस्थान किया और कुछ समय तक मोरामा मे शिकार खेलता रहा। ग्रीष्म ऋतु मे वह अहमदाबाद चला आया। इसी बीच मे शाहजादा बहादुर खा ने निवेदन किया कि, "जो जागीर मुझे प्रदान की गई है उसकी आय मेरे व्यय के लिये पूरी नही होती। मुझे आशा है कि मेरी जागीर सिकन्दर खा की जागीर से कम न रखी जायेगी।" उसकी यह प्रार्थना स्वीकार न की गई। बहादुर खा रुष्ट होकर उसी वर्ष के रजब[1] मास के अन्त मे डूँगरपुर की ओर चल दिया। रावल राय सिह, डूँगरपुर का राजा, उसकी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने सेवा करने का सम्मान प्राप्त किया। कुछ समय उपरान्त वह चित्तौड के राणा सागा की सेवा मे चला गया। वहा जो घटना घटी, उसका बाद मे उल्लेख होगा।

वहा से वह मेवात की विलायत मे पहुचा। मेवात के हाकिम हुसेन खा मेवाती ने निवेदन किया कि, (१६४) "जिस चीज की भी आवश्यकता हो वह उपस्थित है, और जो भी आदेश हो उसका पालन किया जायगा।" उसने उससे कोई चीज भी स्वीकार न की और वहा से सुल्तान इबराहीम लोदी की सेवा मे पहुचा। जिस समय सुल्तान इबराहीम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह से देहली से ४० कोस पर स्थित पानीपत नामक स्थान पर युद्ध करने के लिये पहुचा हुआ था, उसने बहादुर खा को बुलवाकर उससे बडे सम्मान से भेट की और उसके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की। एक दिन कुछ मुगुल सैनिक सुल्तान इबराहीम की सेना के कुछ लोगो को बन्दी बनाकर लिये जा रहे थे। बहादुर खा ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया और उनके पास पहुच कर युद्ध करने लगा। अन्त मे कुछ मुगुलो की हत्या करके बन्दियो को मुक्त करा लिया। यह देखकर देहली वाले बहादुर खा की प्रशसा करने लगे। जब सुल्तान इबराहीम ने सुना कि देहली वाले बहादुर खा से बडे सतुष्ट है और हृदय मे उसके मित्र है तो उसके प्रति सुल्तान के हृदय मे ईर्ष्या उत्पन्न हो गई। यह हाल जब बहादुर खा को ज्ञात हुआ तो वह सुल्तान इबराहीम से पृथक् होकर इस आशय से जौनपुर चला गया कि जौनपुर के अमीर सुल्तान इबराहीम से बडे रुष्ट थे और वहा की प्रजा भी परेशान हो चुकी थी। उन्होने गुप्त रूप से बहादुर खा के पास सदेश भेजा था कि, "यदि शाहज़ादा इस ओर पधारे तो हम लोग हृदय से निष्ठा प्रदर्शित करेगे।" शाहजादा उस ओर चल दिया। इसी बीच मे सुल्तान (मुज़फ्फर) की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए और उसने गुजरात की ओर प्रस्थान किया।

जब सुल्तान मुजफ्फर ने सुना कि बहादुर खा रुष्ट होकर बाकर[2] की ओर चला गया है तो उसने खुदावन्द खा वज़ीर से कहा कि, "बहादुर खा को लिख दो कि उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाती है।" खुदाबन्द खा ने निवेदन किया कि, "बहादुर खा बाकर को भी पार करके इबराहीम लोदी के पास चला गया है।" यह बात सुनकर सुल्तान बडा दुखी हुआ और अहमदाबाद से मुहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। जो कुछ 'बहादुरशाही' के लेखक ने लिखा है उसे नकल कर दिया गया। गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से जो कुछ ज्ञात हुआ है उसे बाद मे लिखा जायगा।

सुल्तान की मृत्यु

सक्षेप में, उन्ही दिनो वर्षा की कमी हो गई। लोग व्याकुल हो उठे। सुल्तान मुजफ्फर ने ईश्वर से प्रार्थना की कि, "हे भगवान् ! यदि मेरे पापों के कारण सर्वसाधारण को यह दड मिल रहा है, तो मेरी मृत्यु हो जानी ही उचित है। सर्वसाधारण शान्ति से रहे और अकाल के कष्टो से मुक्त हो जाय।"

१ रजब ६३१ हि० (अप्रैल-मई १५२५ ई०)।
२ फ़रीदी के अनुसार सम्भवतः 'वागर' (पृ० ११६)।

(१६५) ईश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वर्षा होने लगी। सुल्तान रुग्ण हो गया और उसकी भूख कम होने लगी। एक दिन वह 'मआलिमुत्तजील' नामक तफसीर[1] का अध्ययन कर रहा था। उसने कहा कि, "मैंने बादशाही प्राप्त करने के उपरान्त शाहजादगी की अपेक्षा अधिक विद्याध्ययन किया। मैंने आधी तफसीर का इस जीवन मे अध्ययन कर लिया है और आशा है कि शेष आधी का अध्ययन स्वर्ग मे करूगा।" सभी उपस्थितगण ने सुल्तान के प्रति शुभकामनाए की। सुल्तान ने कहा कि, "मेरे शरीर के एक-एक अग का अन्त हो रहा है, ऐसा मैं अनुभव कर रहा हू।" अन्त मे ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) मे वह अहमदाबाद से बरोदा पहुचा और उसने कहा कि, "मै बरोदा से जोकि मेरा निवास स्थान था विदा होने के लिये आया था। अब यहा से मै अपने स्वामी के मकबरे की ओर जाता हू।" वहाँ से वह निरन्तर यात्रा करता हुआ खेम धरोल के महलो मे पहुचा और वहा पडाव किया। वह नित्यप्रति शक्तिहीन होता गया, यहा तक कि एक महीने तक भोजन नही किया।" सुल्तान के विश्वासपात्रो मे से खुर्रम खा नामक एक व्यक्ति ने निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो कुछ दान-पुण्य किया जाय।" उसने उत्तर दिया कि, "बैतुलमाल से मेरे प्राण के ऊपर अत्यधिक धन व्यय हो चुका है। मेरी समझ मे नही आता कि मै उसका उत्तर ईश्वर को किस प्रकार दूंगा। अब इसमे और वृद्धि किस प्रकार कराऊ?"

जब लोग सुल्तान के जीवन की ओर से निराश हो गये तो शाहज़ादा लतीफ खा ने सोचा कि "सिकन्दर खा वलीअहद[2] है, वह मुझे जीवित न छोडेगा।" इस कारण वह १ जमादि-उल-अव्वल[3] को अपने परिजनो सहित बरोदा चला गया। कुछ लोगो का मत है कि सुल्तान ने उसे इस विषय मे आदेश दिया था।

सक्षेप मे, प्रातःकाल की नमाज़ के उपरान्त २ जमादि-उल-अव्वल[4] को सुल्तान ने सिकन्दर खा को बुलवाकर राज्य के विषय मे उसे शिक्षाये दी और उससे कहा कि, "अपने भाई को कोई कष्ट न देना। इससे तुम्हारे राज्य मे विघ्न न पडेगा।" सिकन्दर खा रोने लगा। सुल्तान ने उसे विदा किया और कहा कि, "अपने निवास-स्थान को चले जाओ फिर भेट होगी।" तत्पश्चात् वह पालकी मँगवाकर उस पर सवार हुआ और फ़ीलखाने[5] तथा पायगाह[6] की ओर रवाना हुआ और कहा कि, "सभी लोगो से मैं विदा हो लिया। आज शुक्रवार है। अपने कारखाने वालो से भी विदा होकर अपने अपराध क्षमा करा लूँ।" उसने कारखाने पहुचकर सभी से अपने अपराध क्षमा कराये। सब लोगो ने विलाप करते हुए उसे क्षमा (१६६) किया। तत्पश्चात् वह अपने शयनागार पहुंचा और फर्राशो से कहा कि, "मुझे इस सिहासन से, जोकि मेरे पूर्वजों का है, उठाकर पलग पर लिटा दो, कारण कि सिहासन मेरे उत्तराधिकारी से सम्बन्धित होगा।" उसके आदेशो का पालन किया गया। इसी बीच मे सुल्तान ने शुक्रवार की नमाज़ की अजान सुनी। उसने पूछा कि, "नमाज़ का समय हो गया?" उपस्थितगण ने उत्तर दिया, "हा।" सुल्तान ने कहा कि, "मुझमे मस्जिद तक जाने की शक्ति नही।" उसने कुछ लोगो को नमाज पढने के लिये भेज दिया। कुछ क्षण उपरान्त उसने वजू करके स्वय नमाज पढी और ईश्वर से अपने अपराधो

१ क़ुरान की टीका।
२ उत्तराधिकारी।
३ १ जमादि-उल-अव्वल ९३२ हि० (१३ फ़रवरी १५२६ ई०)।
४ २ जमादि-उल-अव्वल ९३२ हि० (१४ फ़रवरी १५२६ ई०)।
५ गजशाला।
६ अश्वशाला।

की क्षमा याचना की। चारपाई पर लेट गया और तीन बार कलमा पढा। तदुपरान्त मृत्यु को प्राप्त हो गया। सुल्तान महमूद बेकरह के मकबरे मे, जो शेख अहमद खत्तू के मकबरे के पायती है, दफन हुआ। उसकी मृत्यु २ जमादि-उल-अव्वल ९३२ हि० (१४ फरवरी १५२६ ई०) को हुई। उसने १४ वर्ष तथा ९ मास तक राज्य किया।

सुल्तान, सैयिद ताहिर का, जो बरोदा नगर मे दफन है, मुरीद था। गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि गुजरात के सुल्तानो मे से कोई भी पवित्रता, विद्वत्ता तथा बुद्धिमत्ता मे सुल्तान मुज़फ्फर के समान न था। उसे अपने राज्यकाल मे ही स्वप्न मे मुहम्मद साहब द्वारा शुभकामनाए मिली थी कि ईश्वर ने उसे नरक से मुक्त कर दिया है। उसी रात्रि मे १०० पवित्र व्यक्तियों ने वही स्वप्न देखा। प्रात काल सभी ने यह समाचार सुल्तान को पहुचाये। क्या ही सदाचारी बादशाह था वह जिसे अपने राज्यकाल मे ही परलोक के कष्टो से मुक्ति की सूचना मिल गई।

सुल्तान मुजफ्फर द्वारा कुरान कठस्थ करना

कहा जाता है कि एक शबेकदर[1] मे सुल्तान महमूद आलिमो तथा पवित्र लोगों की गोष्ठी मे बैठा हुआ था और नाना प्रकार की बातो का उल्लेख हो रहा था। इसी बीच मे एक आलिम ने कहा कि, "कयामत के दिन सूर्य पापियों को जलाने के लिये एक भाले की ऊचाई तक आकाश से उतरकर नीचे आ जायगा। उस समय ऐसे व्यक्ति, जिन्हे कुरान कठस्थ हो अथवा जिनकी सात पुश्तो मे से किसी को कुरान कठस्थ हो, ईश्वर की कृपा की छाया मे रहेगे और सूर्य की गर्मी उन लोगो तक न पहुच सकेगी।" सुल्तान ने ठडी सास भर कर कहा कि, "खेद है कि मेरे किसी पुत्र को भी यह सौभाग्य न प्राप्त हो सका।" सुल्तान (१६७) मुज़फ्फर उस गोष्ठी मे उपस्थित था। वहा से कुछ दिन उपरान्त जब वह आज्ञा लेकर अपनी जागीर बरोदा पहुचा तो वह कुरान पढने तथा उसे कठस्थ करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न करता था। यहा तक कि उसकी आखे उठ आई। सुल्तान के विश्वासपात्रो ने कहा कि, "यह अत्यधिक जागने तथा कुरान के कठस्थ करने का प्रभाव है।" यदि कुछ दिनो के लिये आप कुरान को कठस्थ करना तथा जागना कम कर दे तो आखों की लाली का अन्त हो जायेगा।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि, "मै इससे प्रसन्न हूं। यह बात मेरे सौभाग्य की द्योतक है।" सक्षेप मे, परिश्रम करके उसने एक वर्ष तथा कुछ मास मे समस्त कुरान कठस्थ कर लिया और रमजान[2] के शुभ मास मे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित होकर उसने निवेदन किया कि, "यदि आज्ञा हो तो तरावीह[3] मे कुरान खत्म करू।" सुल्तान यह बात सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसका उल्लेख नही हो सकता। तदुपरान्त उसने कुरान के कठस्थ करने का कारण पूछा। उसने उस गोष्ठी की वार्ता का उल्लेख किया। सुल्तान ने उसे आलिगन किया और उसके शरीर तथा आखो का चुम्बन करके उसकी प्रशसा की और उसके लिये शुभकामनाए प्रकट की। उस पवित्र रमजान मास मे १६ दिन की तरावीह मे उसने १६ कुरान खत्म किये।[4] सुल्तान ने कहा कि, "मैं खलील खा के ऋणी से किस प्रकार उऋणी हो सकता हू ? उसने मुझे तथा मेरे पूर्वजो को कयामत के दिन

१ २७ रमजान की रात्रि।
२ इस्लामी वर्ष का ९वा मास जिसमें मुसलमान पूरे मास मे रोजा रखते है। इस मास मे रात्रि मे कुरान का पाठ करने में बड़ा पुण्य बताया जाता है।
३ रमजान मास मे रात्रि में खड़े होकर सामूहिक रूप से कुरान का पाठ करना।
४ एक रात्रि मे पूरा कुरान पढ डाला।

के सूर्य की गर्मी से मुक्ति दिला दी। इसके बदले मे मै कर ही क्या सकता हू ? मेरे हाथ मे बादशाही है, इसे मै अपने जीवनकाल मे उसे प्रदान करता हू।" वहा से उठकर उसने खलील खा को सिहासनारूढ कर दिया और स्वय दूसरे सिहासन पर बैठ गया। दूसरे दिन समस्त अधिकारियो, दरबार से सम्बन्धित लोगों, वजीरो, अमीरों तथा सैनिको को बुलवाकर उन्हे भोजन कराया। कहा जाता है कि किसी बादशाह के राज्यकाल मे इस प्रकार की दावत न हुई थी। समस्त अमीरो तथा उच्चपदाधिकारियो के समक्ष (१६८) उसने रात का हाल तथा कुरान कठस्थ करने के बदले मे खलील खा को राज्य प्रदान करने के विषय मे बताया। सभी ने बादशाह तथा शाहजादे की प्रशसा की।

मदिरा से सुल्तान को घृणा

कहा जाता है कि सुल्तान का एक घोडा अपने समय मे दौडने तथा उत्तमगति से चलने मे अद्वितीय था और विशेष रूप से वह सुल्तान की सवारी के प्रयोग मे आता था। एक दिन उसके पेट मे दर्द होने लगा, बडा उपचार हुआ किन्तु किसी से कोई लाभ न हुआ। एक कुशल चिकित्सक ने कहा कि, "यदि उसे मदिरा पिलाई जाय तो उसे लाभ होगा।" मदिरा पिलाने से पीड़ा का तुरन्त अन्त हो गया। मीर आखुर[1] ने इसकी चर्चा सुल्तान से की। सुल्तान ने अपने दातो के नीचे अगुली दबा ली और तदुपरान्त वह उस घोडे पर सवार न हुआ।

कहा जाता है कि सुल्तान ने न तो उस समय जब कि वह शाहजादा था और न उस समय जब कि वह बादशाह था कभी किसी नशे की वस्तु का सेवन किया। एक दिन किवामुलमुल्क सारग ने उससे पूछा कि, "क्या कभी सुल्तान ने किसी नशे की वस्तु का उपयोग किया है?" सुल्तान ने कहा, "हा! पाच वर्ष की अवस्था मे मै कोठे के जीने से लुढक कर भूमि पर गिर पडा। मेरे बडी चोट लगी। मेरी दादी हानसबाई, जिनके ऊपर मेरे पालन-पोषण का भार था, मुझे मदिरा के २-३ प्याले दिये। मैंने उसी समय कै कर दी और मरने के निकट पहुच गया। हानसबाई ने स्वप्न देखा कि कोई व्यक्ति उनसे कह रहा है कि, 'तूने खलील खा को मदिरा पिलाई थी?' हानसबाई ने कहा, 'हा।' उस व्यक्ति ने कहा, 'तोबा कर तदुपरान्त उसे मदिरा कभी मत पिलाना। वह स्वय स्वस्थ हो जायगा।' हानसबाई ने कहा, 'मै तोबा करती हू।' उनका पाव कापने लगा और वे जाग उठी तथा ईश्वर से क्षमा-याचना करने लगी। मै तत्काल स्वस्थ हो गया। मुझे स्मरण है कि मैंने उस दिन मदिरा पान किया था। तदुपरान्त ईश्वर ने मुझे इससे सुरक्षित रखा।"

कहा जाता है कि सुल्तान मुजफ्फर नशे की वस्तु का नाम न लेता था। यदि नशे की वस्तु के नाम लेने की आवश्यकता पड़ती थी तो गोली शब्द का प्रयोग करता था। अत गुजरात वाले तदुपरान्त नशे की वस्तु को गोली कहने लगे।

शरा पर आचरण

कहा जाता है कि शरा द्वारा स्वीकृत कार्यो मे कोई भी ऐसा कार्य न था जिसे सुल्तान न करता हो। सर्वदा वह वजू किये रहता था और मौत की स्मृति रखता था और उसे कभी न भूलता था। सर्वदा ईश्वर के भय के कारण विलाप करता रहता था और दुखी रहता था। आलिमो के आदर-सम्मान का वह अत्य-

1 अमीर आख़ुर तथा मीर आख़ुर शाही अश्वशाला का सबसे बडा अधिकारी।

धिक प्रयत्न करता था किन्तु दरवेशों के प्रति उसे श्रद्धा न थी अपितु उनके विषय मे इन्कार करता था। (१६९) उलमाये जाहिर[1] का सूफियो से मतभेद रहता है। जब वह सुल्तानुल आरेफीन शाह शेख जियु इब्न (पुत्र) सैयिद बुरहानुद्दीन बुखारी, जो कुतुबुल आलम के नाम से प्रसिद्ध हैं, की सेवा मे पहुचा तो इसके उपरान्त जहा भी किसी दरवेश का नाम सुन लेता वह उससे लाभान्वित होने के लिए पहुच जाता था। सुल्तान तथा शेख बुरहानुद्दीन की भेट का उल्लेख बाद मे किया जायेगा।

गुजरात के विश्वसनीय लोग सुल्तान के अनेको चमत्कारो की चर्चा किया करते हैं। उनमे से एक इस प्रकार है . मलिक अल्लाह दिया[2], जिसकी उपाधि हुरमुजुलमुल्क थी, सुल्तान का विश्वासपात्र था। उसके कोई पुत्र न था। इस कारण वह बडा दुखी रहता था। उसने सोचा कि, "मै काबा जाकर जहा सभी की प्रार्थनाए स्वीकार हो जाती हैं, ईश्वर से पुत्र के लिये प्रार्थना करू, सम्भव है मेरी प्रार्थना स्वीकार हो जाय।" वह सुल्तान की सेवा मे पहुचा और उसने आखो मे आंसू भरकर जो कुछ निश्चय किया था उसके विषय मे निवेदन किया और उससे काबा जाने की अनुमति मागी। सुल्तान भी रोने लगा और उसने कहा कि, "मलिक अल्लाह दिया! इस वर्ष प्रतीक्षा कर, ईश्वर तुझे पुत्र देगा।" मलिक ने धैर्य धारण किया। सुल्तान ने मास का सेवन त्याग कर रात्रि मे जागना प्रारम्भ कर दिया, तहुज्जुद की नमाज़ के उपरान्त ईश्वर से प्रार्थना किया करता था और मलिक अल्लाह दिया के लिये पुत्र की दुआ करता रहता था। उसी सप्ताह मे शुक्रवार की रात्रि मे उसने मुहम्मद साहब को स्वप्न मे देखा और उनसे मलिक अल्लाह दिया के पुत्र के विषय मे प्रार्थना की। मुहम्मद साहब ने कहा कि, "मलिक अल्लाह दिया के दो पुत्र होगे किन्तु अन्य स्त्री से।" सुल्तान यह सुखद समाचार पाकर जाग उठा और प्रसन्न होकर उसने वजू किया और नमाज पढकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। वह घर की एक कनीज युवती को जो राजपूत वश से थी और बडी रूपवती थी, अपने साथ लेकर मलिक अल्लाह दिया के घर पहुचा और उस कनीज को उसे देकर कहा कि, "इस स्त्री से तेरे दो पुत्र होगे। कुछ मनौती कर।" मलिक ने हृदय में मनौती की। कुछ समय उपरान्त वह कनीज गर्भवती हुई और एक रूपवान पुत्र का जन्म हुआ। सुल्तान ने स्वय वहा पहुचकर उसके कान मे अजान कही और खुशी मनाई गई। एक सप्ताह उपरान्त उसका नाम लुत्फुल्लाह रखा गया।

सैयिद महमूद बिन सैयिद जलाल का कथन है कि "मैंने उस पुत्र को देखा था। सुल्तान अहमद (१७०) द्वितीय के राज्यकाल मे उसकी उपाधि हिजब्रुलमुल्क हुई। सुल्तान का यह चमत्कार बडा प्रसिद्ध है। उस कनीज़ के कुछ समय उपरान्त एक अन्य पुत्र का जन्म हुआ और उसे भी बाद मे उपाधि प्राप्त हुई। गुजरात के विश्वसनीय लोगो का कथन है कि सुल्तान को मुहम्मद साहब के प्रति अत्यधिक निष्ठा-भाव तथा स्नेह था। वह अत्यधिक दरूद[3] पढा करता था एव मुहम्मद साहब की पवित्र आत्मा के नाम पर भोजन वितरण करता रहता था। आलिमो को एकत्र करके उनके हाथ धुलवाता था। १२वे दिन विदा के समय प्रत्येक को इतना अधिक वस्त्र तथा सामान देता था कि, दूसरे वर्ष तक उन्हे वे पर्याप्त होते थे।

१ वे आलिम अथवा मुसलमान विद्वान् जो अधिकाश शासन से सहयोग रखते हैं।
२ फ़रीदी ने इसे 'मलिकुल हिदाया' पढ़ा है, (पृ० १२०)।
३ देखिये पृ० १३६ नोट नं० २।

कहा जाता है कि एक दिन वह कुरान मजीद पढ रहा था, कयामत से सम्बन्धित टिप्पणी सहित आयत[1] पर उसकी दृष्टि पडी और वह रोने लगा। उसने कहा कि, "उस दिन मेरी क्या दशा होगी ?" मिया शेख जियु ने, जो सुल्तान के नदीम थे, निवेदन किया कि, "मै जानता हू कि सुल्तान ने कभी कोई बडा पाप नही किया है। आप अपना अधिकाश समय ईश्वर की उपासना मे व्यतीत करते रहते है। प्रजा भी आपसे सतुप्ट है। उस दिन आप को उच्च श्रेणी प्राप्त होगी।" सुल्तान ने कहा, "शेख जियु! मेरी ग्रीवा पर भारी बोझ है, मै उसके लिये विलाप करता रहता हू। मुहम्मद साहब का कथन है कि, 'जिसका भार हल्का होता है उसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है और जिसका भार अधिक होता है वह नष्ट हो जाता है।'"

सुल्तान का चरित्र

सैयिद जलाल मुनव्वरुलमुल्क बुखारी का कथन है कि, "जब मेरी अवस्था चार वर्ष की थी तो मेरे पिता सैयिद महमूद की हत्या हो गई। तीसरे दिन मलिक असदुलमुल्क, जो शेख जियु तमीम[2] के नाम से प्रसिद्ध था और सुल्तान का विश्वासपात्र था, मेरा हाथ पकडकर सुल्तान की सेवा मे ले गया और मेरे पिता के विषय मे निवेदन किया। सुल्तान ने मुझे आगे बुलवाकर मेरे सिर तथा मुख के ऊपर हाथ फेरा और कहा कि 'यह पुत्र भाग्यशाली होगा।' उस तिथि से दस वर्ष तक मै सुल्तान का विश्वासपात्र रहा। मैने सुल्तान को न तो कभी किसी की आलोचना करते हुए और न मुरव्वत के विरुद्ध कोई कार्य करते हुए देखा। यहा तक कि सुल्तान किवामुलमुल्क सारग के प्रति शकित था और उसमे वह निष्ठा सुल्तान न पाता था जो सेवको को स्वामी के प्रति होनी चाहिये।" क्योकि वह सुल्तान महमूद का विश्वास-पात्र था अत. सुल्तान उस पर बडा भरोसा किया करता था। सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त भी वह (१७१) आबदारी[3] के पद पर नियुक्त रहा। रमजान के मास मे रोजे खोलने के लिये वह जल लाया करता था। सुल्तान उसके हाथ से जल लेकर कुछ आयते तथा दुआए, जोकि विष का प्रभाव समाप्त करने के लिये पढी जाती है, पढा करता था किन्तु मुरव्वत के कारण वह उस पद को उससे न लेता था। अन्त मे मलिक को इस बात का पता चल गया। उसने कहा, "यह दास वृद्ध हो चुका है और आबदारी की सेवा उससे नही हो सकती।" सुल्तान ने कहा, "तेरे अतिरिक्त किसे यह पद प्रदान किया जा सकता है ?" उसने कहा कि, "मेरे चाचा का पुत्र उस समय जब कि आप शाहजादे थे आपके अधीन शराबदारी[4] अथवा आबदारी के पद पर नियुक्त था। अब यह पद उसी को प्रदान कर दिया जाय कारण कि वह युवक है और सेवा कर सकता है। वृद्ध दास को मुक्त कर दिया जाय।" सुल्तान ने ऐसा ही किया। उसने आजीवन किसी भी व्यक्ति को अपमानित न किया और किसी भी व्यक्ति का नाम घृणापूर्वक न लिया, सर्वदा सम्मानपूर्वक नाम लेता था। सुल्तान से कोई भी व्यक्ति किसी विषय मे रुष्ट न था। वह कभी कभी कहा करता था कि, "यदि मै जगल मे अकेला भी रहू तो भी कोई व्यक्ति मुझे हानि न पहुचायेगा क्योंकि मैने कभी किसी को कोई हानि नही पहुचाई है।"

१ कुरान का वाक्य।

२ मूल पुस्तक मे यह शब्द 'यतीम' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'तमीम' (पृ० १२२)।

३ वह अधिकारी जो सुल्तानों अथवा अन्य बड़े बड़े अधिकारियों के लिये जल अथवा अन्य पीने की वस्तुओं का प्रबन्ध करता था।

४ वह अधिकारी जो सुल्तानों तथा अन्य बड़े बड़े अधिकारियों के लिये मदिरा का प्रबध करता था।

कहा जाता है कि एक दिन सुल्तान प्रात काल की नमाज के पूर्व स्नान कर रहा था। आफताबची[1] लोग जल डाल रहे थे। शरीर धोने के उपरान्त उसने सिर पर डालने के लिये जल मागा। सयोग से रात्रि मे अँधेरा होने के कारण, गरम पानी के देग मे एक चूहा गिर पडा था। उसकी हड्डी तथा मास निकल आये थे। आफताबचियो को इस बात का पता न था। उन्होने उसी देग से आफताबा[2] भरकर सुल्तान के हाथ मे दे दिया। सुल्तान ने जैसे ही जल अपने सिर पर डाला, समस्त खाल तथा मास उसके मुह और कन्धो पर गिर पडा। सुल्तान घृणा प्रदर्शित करता हुआ वहा से उठ खडा हुआ और हौज मे कूद पडा। अपना सिर, मुह तथा कन्धा धोकर बाहर निकला और नमाज पढी। नमाज के उपरान्त उसने आफताबचियो को बुलवाया। आफताबची लोग (अपनी दृष्टि मे) अपने जीवन से हाथ धो चुके थे। सुल्तान ने पूछा कि, "तुम लोगो मे से कितने व्यक्ति इस कार्य हेतु नियुक्त है ?" उन्होने उत्तर दिया कि, "१०० व्यक्ति।" सुल्तान ने कहा कि, "१०० व्यक्ति भी एक व्यक्ति की भली-भाति सेवा नही कर सकते। मै स्वय वृद्ध हू, मै तुम्हारे अपराध क्षमा करता हू किन्तु मेरे पुत्र युवक है, तुम उनकी सेवा किस प्रकार कर सकोगे ? मुझे तुम्हारे जीवन पर खेद होता है कि इस प्रकार तुम मेरे पुत्रो की कैसे सेवा करोगे और अपने प्राण सुरक्षित रख सकोगे। हे अभागो ! अब इसके उपरान्त ऐसी असावधानी मत करना ताकि मुझे तुम्हे डाटने मे अपना समय नष्ट करना पडे।"

अन्त मे सुल्तान बहादुर बिन सुल्तान मुजफ्फर के राज्यकाल मे उन्ही आफताबचियो मे से एक व्यक्ति सुल्तान के हाथ पर गरम पानी डाल रहा था। सुल्तान ने आदेश दिया कि, "इसी प्रकार का (१७२) उबलता हुआ जल इसके अण्डकोष पर डाला जाय ताकि अन्य लोग शिक्षा ग्रहण कर सके।" कहा जाता है कि वैसा ही उबलता हुआ जल उसके अण्डकोष पर डाला गया और वह फट गया और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई।

सैयिद जलाल बुखारी का कथन है कि सुल्तान हर दिन कुरान का एक रुकू[3] नस्ख[4] लिपि मे लिखता था। जब कुरान समाप्त हो जाता तो वह उस कुरान को वक्फ करके मक्का अथवा मदीना इस आशय से भेज देता था कि जिसे भी कुरान पढने की इच्छा हो, वह उसे पढे। एक दिन वह कुरान नकल करने मे व्यस्त था। एक पृष्ठ को बडा ही सुन्दर लिखकर वह बडा प्रसन्न हुआ और कहा कि, "इस पृष्ठ को मैने बडे सुन्दर ढग से लिखा है।" वह वरक को उलटना चाहता था कि इसी बीच मे सुल्तान का कूरची[5] लतीफुलमुल्क सोधा, जो तलवार लिये पीछे खडा था, अफीम के नशे मे 'पिनक' गया। उसके हाथ से तलवार सुल्तान के कन्धे पर गिर पडी और लेखनी सुल्तान के हाथ से पृष्ठ पर गिर पडी। कुछ पक्तिया काली हो गयी। सेवको ने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया। सुल्तान ने कुछ न कहा और चाकू लेकर पृष्ठ पर जो स्याही गिर पडी थी, उसे मिटा दिया। खरिये का पौडर उसपर मल दिया और मोहरा रगडकर पुन लिखना प्रारम्भ कर दिया। रुकू को समाप्त करके कलम को कलमदान मे रख दिया और कहा कि, "वह मूर्ख लतीफुलमुल्क कहा है ?" शेख जियु ने उसकी सिफारिश करते हुए कहा कि, "वह

१ हाथ धुलाने तथा स्नान कराने वाला।
२ एक प्रकार का लोटा।
३ एक अश।
४ एक प्रकार की लिपि। अरबी अधिकाश इसी लिपि मे लिखी जाती है।
५ शाही अस्त्र-शस्त्र रखने वाला।

बाहर पडा है और फूट-फूट कर रो रहा है कि 'मैंने बहुत बडा अपराध किया है। मैं इस योग्य हू कि चाहे मेरे हाथ कटवा लिये जाय और चाहे हाथी के पाव के नीचे डलवा दिया जाय।" सुल्तान ने कहा, "मैं ही क्यों उसके हाथ कटवाऊ ? जो कोई ऐसी असावधानी करेगा उसके हाथ कट ही जायेंगे, किन्तु उससे कह (१७३) दो कि वह फिर मेरे अभिवादन हेतु न आये।" मलिक शेख जियू ने कहा कि, "यह दड गरदन कटवाने से अधिक कठोर है। उसे इस ससार मे कहा स्थान है ?" सुल्तान ने कहा, "अच्छा उससे कहो कि वह फिर गोली न खाये और नशे के निकट न जाय।" मलिक शेख जियू ने निवेदन किया कि, "वह तोबा करता है कि वह पुन न खायेगा।" सक्षेप मे मलिक शेख जियू ने उसे उसी गोष्ठी मे बुलवाकर सुल्तान के चरणो में डाल दिया और सुल्तान ने उसे क्षमा कर दिया। वह पुन तलवार लिये हुए पीछे खडा हो गया।

सैयिद जलाल बुखारी इस कहानी की चर्चा करते थे कि एक आफताबची का पुत्र बडा ही चपल तथा वाक्पटु था। सुल्तान कभी कभी उससे कुछ पूछा करता था और वह वाक्पटुता का प्रदर्शन करता था। सुल्तान प्रसन्न होकर मुस्कराता था। एक दिन सुल्तान वजू कर रहा था और वह जल डाल रहा था। ऐसा निश्चय था कि मसा[1] के समय एक सेवक सुल्तान के सिर से पगडी उठा लेता था। सुल्तान मसा करके पुन पगडी पहिन लेता था। वजू के उपरान्त पगडी के २-३ घुमाव खोलकर पुन लपेट लेता था। एक बार वजू के उपरान्त प्रथानुसार पगडी हाथ मे लेकर उसने २-३ घुमाव खोले और उन्हे लपेटने लगा। एक नदीम ने कहा कि, "सुल्तान सलामत ! यह कपडा कितना सुन्दर है ?" सुल्तान ने कहा, "ऐसा सुन्दर तो नहीं, हमारे सेवक इससे अधिक सुन्दर प्रयोग मे लाते हैं किन्तु वे जिस प्रकार मैं बाधता हू उस प्रकार नही बाधते अपितु मरोड कर बाधते हैं।" आफताबची के पुत्र ने कहा कि, "यदि वे मरोड कर न बाधे तो अच्छी न लगे।" सुल्तान ने पूछा, "मेरे जिस प्रकार पगडी लपेटी जाती है क्या वह अच्छी नही लगती ?" उसने कहा, "सुल्तान की पगडी मुल्लाओ तथा बोहरो[2] की पगडियों के समान मालूम होती है।" असदुलमुल्क ने उसके मुख पर तमाचा मारा और डाटा। सुल्तान ने कहा, "क्यो मारते हो ? बालक है, जो कुछ अपने माता-पिता से सुनता है, वही कहता है। मैं इस बात से सतुष्ट हू कि, मेरी पगडी मुल्लाओ की पगडी के समान कही जाती है किन्तु बोहरों की पगडियो के समान क्यो कही जाती है ? वे राफजी[3] होते हैं और मैं सुन्नी हू।"

कहा जाता है कि एक दिन एक मदिरा बेचने वाले ने सुल्तान के समक्ष एक प्रार्थनापत्र प्रस्तुत (१७४) किया। उसके हाथ मे लोहे की अँगूठी थी। वह सुल्तान की आस्तीन से उलझ गई और सुल्तान की आस्तीन टुकडे-टुकडे हो गई। सुल्तान ने कागज खोलकर उसे पढा और उसकी इच्छानुसार आदेश दे दिया और कहा कि "तदुपरान्त उसे कोई भी प्रार्थनापत्र न दिखाया जाय। यदि दिखाया जाय तो लकड़ी की तख्ती पर रखकर दिखाया जाय अथवा सेवक लोग प्रार्थियो के हाथ से लेकर मेरे हाथ मे दे दें।"

यह बात छुपी न रहनी चाहिये कि सुल्तान सदाचरण के कारण अपव्ययता से बचता रहता था। इस प्रकार जो लोग सहायता के पात्र न होते थे वे इन बातों को सुल्तान की कृपणता का फल बताते थे

१ वजू मे मुह हाथ इत्यादि धोने के उपरान्त ग्रीवा को एक प्रकार से मलना।
२ बोहरा—शीआ मुसलमानों की एक शाखा जो अधिकाश गुजरात एवं बम्बई मे निवास करते है।
३ राफ़ज़ी—शीआ।

और सभाओ तथा गोष्ठियो मे इसकी चर्चा करते रहते थे। यह उनके लोभ के कारण होता था न कि सुल्तान के ससार को प्रिय रखने के कारण। यदि सुल्तान ससार को प्रिय रखता तो मालवा सरीखा राज्य तथा उसका ख़जाना, जो उसने इतने परिश्रम से मन्दली राय से प्राप्त किया था, सुल्तान महमूद खलजी को न दे देता। इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। यद्यपि गुजरात के अन्य सुल्तान अत्यधिक दान-पुण्य करते रहे है, उदाहरणार्थ मुहम्मद बिन अहमद शाह, सुल्तान बहादुर बिन सुल्तान मुजफ़्फ़र, किन्तु दान-पुण्य करने तथा राज्य प्रदान करने मे बडा अतर है। यद्यपि सुल्तान दान-पुण्य करने मे बडे साहस से कार्य लेता था किन्तु सयम से।

कहा जाता है कि मुहिब्बुलमुल्क[1] ख्वाजासरा, जिसे सुल्तान बहादुर ने अपने राज्यकाल मे ख़ाने जहा की उपाधि प्रदान की थी और जो सुल्तान मुजफ़्फ़र के समय मे अहमदाबाद के नगर का कोतवाल था, बडी दीर्घायु का स्वामी हुआ है और कोतवाली के कार्य मे अद्वितीय था। चोर का मुँह देखकर उसे पहिचान लेता था।

कहा जाता है कि एक दिन सुल्तान बाज़ार मे जा रहा था। उसने एक आदमी को बैठा हुआ देखा। वह वही रुक गया और जीवन नामक नकटे जल्लाद से कहा, "जीवन! इस व्यक्ति को पकड लो।" लोग आश्चर्य मे पड गये कि उसने कोई भी अपराध नही किया फिर क्यो पकडा जा रहा है। जब उसे पकड कर लाया गया तो उसके सिर और कमर की[2] तलाशी ली गई। घोडो के पाव की ज़ंजीर की कुजी उसकी पगडी के नीचे से निकली। अन्त मे ज्ञात हुआ कि वह बडा प्रसिद्ध चोर है।

सक्षेप मे, ख़ाने जहा ने सोचा कि, "गुजरात के बादशाहो की चार पीढिया समाप्त हो चुकी है किन्तु ऐमा[3] की वृत्ति उसी प्रकार है। इस बीच मे उसमे कोई भी परिवर्तन नही हुआ अपितु प्रत्येक बादशाह ने पिछले बादशाह के राज्यकाल की अपेक्षा अपने राज्यकाल मे उसमे वृद्धि की। उनके विषय मे (१७५) पूछताछ करनी चाहिये कि कौन कौन लोग मर चुके है और कौन कौन राज्य छोड चुके है।" पूछताछ के उपरान्त मरे हुए लोगो की सख्या अधिक निकली और राज्य छोडने वालो की बडी थोडी। भूतकाल मे गुजरात के राज्य मे धन-सम्पत्ति का इतना बाहुल्य था कि ससार के किसी भी भाग से कोई व्यक्ति, जो वहा पहुच जाता, किसी अन्य स्थान को न जाता था और गुजरात के किसी व्यक्ति का अपने देश से जाना असम्भव था। सक्षेप मे, उसने मरे हुए लोगो का वजीफा जब्त कर लिया। उस धन को प्राप्त करके वह सुल्तान की सेवा मे लाया। जब सुल्तान ने पूछा कि, "यह किसका धन है?" तो उसने उत्तर दिया कि, "सुल्तान का है, और इसका कारण यह है कि सुल्तान मुज़फ़्फ़र के राज्यकाल से ऐमा की इमलाक[4] प्रदान की गई थी और उस काल से सुल्तान के समय तक उसमे वृद्धि होती रही। पूछताछ करने पर मरे हुए लोगो की सख्या अधिक निकली। मरे हुए लोगो के वजीफे की आय एकत्र करके सुल्तान की सेवा मे लाया हू।" सुल्तान ने उसकी कटु-आलोचना करते हुए उसे डाटना शुरू किया और कहा, "हे निर्लज्ज तथा मूर्ख! मै तुझे क्या कहू, यदि तू पुरुष होता तो मै तुझे नामर्द होने की गाली देता, यदि स्त्री होता तो व्यभिचारिणी कहता, किन्तु न तो तू पुरुष है और न स्त्री अपितु दोनो ही के दोष तुझमे विद्यमान

१ फ़रीदी के अनुसार 'इज्जतुलमुल्क'।
२ 'जो वस्त्र सिर तथा कमर मे थे'।
३ धार्मिक लोगो तथा विद्वानो इत्यादि की वृत्ति।
४ धार्मिक लोगो तथा विद्वानो इत्यादि को प्रदान की हुई भूमि।

है। जिस व्यक्ति की मृत्य हो गई होगी उसके पुत्र जीवित होगे, यदि पुत्र न होगे तो पुत्री तथा पत्नी होंगी। यदि ये भी न होगे तो दास एव दासिया अवश्य ही होगे। तूने जो यह पाप किया है, यदि अपनी ओर से किया है तो बहुत बडा पाप किया, ऐसा कभी न करना चाहिये। जाकर जिन-जिन लोगो से यह धन लिया है, उन्हे दे दे और दरिद्रियो के हृदय को सतुष्ट कर।" तदुपरान्त उसने आदेश दिया कि "गुजरात के समस्त ऐमा के विषय मे यह फरमान जारी किया जाय कि जिस किसी की मृत्य हो गई है उसको वृत्ति प्रदान होती रहे। वर्तमान काल तथा भूतकाल के आमिलो मे से कोई भी उसमे हस्तक्षेप न करे। तदुपरान्त जिन लोगो की मृत्य हो जाती थी, उनका वजीफा उनकी सन्तान को दैवी आदेशानुसार प्रदान कर दिया जाता था। और वह इस प्रकार कि पुरुष को स्त्री के हिस्से से दुगना मिलता था।

(१७६) कहा जाता है कि सुल्तान महमूद के राज्यकाल मे मालवा के बादशाह सुल्तान महमूद खलजी ने गुजरात को विजय करने के लिये आक्रमण किया, जैसा कि इससे पूर्व लिखा जा चुका है। जब वह गुजरात की सीमा पर पहुँचा तो कुछ "अहले कलम[1]" जिन्हे सुल्तान ने पदच्युत कर दिया था, सुल्तान महमूद की सेवा मे उपस्थित हुए और परगनो की सविस्तार पजिकाए उसे दिखाई। सुल्तान ने सुना कि "लोग कह रहे है कि यह बडा अच्छा शगुन है कि गुजरात की पजिकाए प्राप्त हो गईं। गुजरात का राज्य भी इसी प्रकार प्राप्त हो जायेगा।" सुल्तान महमूद ने कहा कि, "इस राज्य मे अत्यधिक दान-पुण्य होता है। कोई परगना अपितु कोई ग्राम ऐसा नही है जिसमें वक्फ तथा वजीफे न हो। यह बिना सवार तथा घोडे की सेना है जो रात्रि भर नक्षत्रो के समान जागती रहती है और शुभकामनाए प्रकट किया करती है।"

यद्यपि यह कहानी इससे पूर्व लिखी जा चुकी है किन्तु इस स्थान पर प्रसग के कारण लिख दी गई। उसने मक्का तथा मदीना के फकीरो के लिये वजीफे निश्चित कर दिये थे जो उन्हे प्रत्येक वर्ष निरन्तर पहुचते रहते थे। एक जहाज केवल फकीरों के लिये वक्फ था। वह उन्हे मक्का ले जाता और वापस लाता था। जहाज तथा जहाजवालो का व्यय सरकार की ओर से दिया जाता। वह अपने व्यय मे कभी अपव्ययिता न करता था किन्तु दान-पुण्य में कभी कोई कमी न करता था। एक पूज्य व्यक्ति ने कहा है कि, "अपव्ययी कभी भी अधिक दान-पुण्य नही कर सकता। मनुष्य को दान-पुण्य करना चाहिये जिससे परलोक मे उसका उपकार हो सके और इस लोक मे भी लाभ हो, न कि भाट तथा सगीतज्ञ उससे कुछ प्राप्त करे। इससे ससार में भी दरिद्रता उत्पन्न होती है और परलोक मे भी।"

सुल्तान का सैन्य-कला में ज्ञान

सुल्तान सैन्य-कला मे अद्वितीय था। वह तलवार चलाने मे इतना अधिक दक्ष था कि वह जिबह किया जाने वाला जानवर बाये हाथ मे ले लेता था और उसे दाहिने हाथ से तलवार की एक चोट से दो टुकडे कर देता था। भाला चलाने मे इतना कुशल था कि मानो इस छन्द की रचना उसी के लिये की गई हो :

छंद

"यदि तू इस प्रकार भाले की नोक पर छल्ला उठा ले,
तो तू काले मुख से शीत ऋतु की सबसे लम्बी रात्रि मे तिल भी उठा लेगा।"

१ लिखने पढने का काम करने वाले, असैनिक कर्मचारी।

कहा जाता है कि सुल्तान रात्रि मे फकीरो, प्रजा, धनी तथा अन्य लोगो के विषय मे पूछताछ (१७७) करने के लिये अकेला चक्कर लगाया करता था और प्रत्येक गली-कूचे मे पूछताछ किया करता था। लोग जो कुछ भी रात्रि मे वार्त्ता करते उसे सुनकर प्रात काल तदनुसार रोकथाम करता था। एक रात्रि मे वह एक मस्जिद मे प्रविष्ट हुआ। उसने देखा कि एक पीडित कोने मे बैठा विलाप कर रहा है। उसने उससे इसका कारण पूछा। उसने कहा, "मेरी दुर्दशा का क्या हाल पूछते हो?" सुल्तान ने कहा, "कुछ बताओ, सम्भव है मै तुम्हारे कष्ट दूर कर सकूँ।" उसने कहा कि, "मै एक फ़क़ीर तथा दु खी हू। प्रत्येक रात्रि मे एक गुडा मेरे घर मे प्रविष्ट हो जाता है और मै उसे रोक नही पाता। मै परेशान हू और मेरी समझ मे नही आता कि यह रहस्य किससे बताऊ और इसका उपचार किस प्रकार कराऊ।" सुल्तान ने पूछा कि, "वह कब आता है?" उसने उत्तर दिया, "हर रात्रि मे।" सुल्तान ने कहा, "तुम चिन्ता मत करो। जब तक मै उसकी हत्या न कर लूगा भोजन न करूगा। चलकर मुझे उसे दिखादो।" वह आगे-आगे तथा सुल्तान उसके पीछे उसके घर तक गया। सयोग से वह रात्रि को न आया। सुल्तान दूसरी रात्रि मे पहुचा। उस रात्रि मे भी वह न आया। तीसरी रात्रि मे आया। वह उसी मस्जिद मे बैठा विलाप कर रहा था और सुल्तान के आगमन से निराश हो गया था, कारण कि उसने सोचा कि, "वह दो रात्रि तक लगातार आता रहा था, सम्भव है कि आज रात्रि मे न आये।" इसी बीच मे सुल्तान पहुच गया। उसने सुल्तान से कहा कि, "आज रात्रि मे वह आया है।" बादशाह उसके साथ रवाना हुआ। सुल्तान ने पूछा कि, "दोनो की हत्या करू या केवल व्यभिचारी की?" उसने कहा, "व्यभिचारी की।" सुल्तान उसके घर मे प्रविष्ट हो गया। देखा कि एक गुडा उसकी पत्नी के पास बैठा हुआ है। सुल्तान ने कहा, "सावधान हो जा। आज तेरे कुकर्मो का दड आ पहुचा[1]।" वह तलवार लेकर आगे बढा और सुल्तान पर वार किया। सुल्तान ने उसका वार बचाकर उसकी कमर पर इस प्रकार तलवार मारी कि वह दो टुकडे हो गया और वह गिर पडा। इस ओर स्वय सुल्तान भी शक्तिहीन होकर बैठ गया। जिस रोज से उसने शपथ ली थी, भोजन न किया था। उस व्यक्ति से पूछा कि, "तेरे पास कुछ भोजन है?" उसने कहा "हा, बाजरे की रोटी का एक टुकडा है।" सुल्तान ने कहा, "ले आ।" उसमे से सुल्तान ने थोडा-सा खाया और वहा से बाहर निकला। पीडित ने कहा कि, "कल जब कोतवाल के आदमी यह देखेगे तो मेरे घर को नष्ट कर देगे और मुझे बन्दीगृह मे भेज देगे।" सुल्तान ने कहा कि, "उसकी भी व्यवस्था मै करता हू, तू सतुष्ट रह।" सुल्तान अपने महल मे पहुचा और तत्काल कोतवाल को बुलवाया और कहा कि, "अमुक मुहल्ले मे इस प्रकार का घर है, धीरे से उस घर मे जा, यहा तक कि घर के पडोसियो को भी पता न लगे। उस घर मे एक व्यक्ति मरा पडा है। उसे वही घर के कोने मे दफन करके चला आ और इस बात का किसी से उल्लेख मत करना।"

सुल्तान धनुर्विद्या मे भी दक्ष था। कहा जाता है कि, "एक दिन वह सोरठ के भू-भाग मे शिकार (१७८) खेल रहा था और मृग के पीछे घोडा दौडा रहा था। शनै शनै सेना से पृथक् हो गया। अचानक राजपूत डाकुओ का एक समूह उसे दृष्टिगत हुआ। सुल्तान ने उस पर बाण चलाना प्रारम्भ कर दिया और कुछ को नरक पहुचा दिया। कुछ अन्य लोग बडी कठिनाई से भागकर मुक्त हो सके। इसी बीच मे सेना भी पीछे-पीछे पहुच गई। लोगो ने देखा कि कुछ राजपूत मरे पडे है और सभी बाण द्वारा घायल है और सुल्तान उनके पास खडा हुआ है। सभी उतर पडे और उन्होने सुल्तान के हाथ और पैरो का

१ सुल्तान ने अपने आपको 'दंड' कहा है।

चुम्बन किया तथा सुल्तान की वीरता एव धनुष-विद्या के ज्ञान की प्रशसा की। इसके अतिरिक्त सुल्तान मल्ल-युद्ध मे भी अद्वितीय था। उस समय का कोई पहलवान मल्ल-युद्ध मे उससे मुकावला न कर सकता था। हफ्तअन्दाजी[1] का ज्ञान भी उसे इसी प्रकार था। खरादी[2] की कला मे भी वह दक्ष था। सक्षेप मे, जिस कला को भी वह देख लेता था उसको इस प्रकार सीख जाता था मानो वह उसे अधिक समय से सीख रहा हो। वाक्पटुता मे भी वह अद्वितीय था।

(१७९) कहा जाता है कि एक व्यक्ति विद्वान् के रूप मे सुल्तान के दरबार मे उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, "अस्मलामुन अलैकुम[3]।" सुल्तान ने तुरन्त उत्तर दिया, "अलैकुमुस्सलाम ! या जामे-उत्-तन्वीन वल् लाम[4]।"

मुल्ला अय्यूब नामक एक विद्वान् तथा वडे उत्तम कवि ने अफीम के विषय मे एक पद्य की इस प्रकार रचना की·

पद्य

"हे ख्वाजा ! एक कण भर अफीम का सेवन कर,
ताकि वह तुझे मैथुन के समय सहायता दे।
अफीम आलिमो के लिये लाभप्रद होती है,
इल्म के लिये अमल[5] के साथ होना चाहिये।"

किसी ने सुल्तान की सेवा मे यह छन्द पढ दिये। सुल्तान ने मुस्करा कर कहा, "मुल्ला ने यह पद अफीम के सेवन के लाभ के विषय मे नही लिखे है अपितु अफीम की निन्दा मे इनकी रचना की है। अधिक से अधिक इन्हे नकल करने वाले ने भूल कर दी और 'बे' के स्थान पर 'मीम'[6] नकल कर दिया।

हे ख्वाजा ! जरा भी अफीम का सेवन मत करो।

सगीत मे रुचि

सुल्तान सगीत की कला मे भी वडा कुशल था और बडे ही उत्तम स्वर से गाता था। जो बाजा भी उसे मिल जाता उसे वह बडी कुशलता से बजाता था चाहे वह रबाब हो चाहे चतरी व चत्र, चाहे ओछा तथा सरमन्दत। वादन मे लोग सुल्तान का शिष्य बनने मे गर्व करते थे। सुल्तान स्वय बडा कलाकार था और सगीत की सभी कलाए उसे ज्ञात थी चाहे वह सुरव्वा हो चाहे धया, चाहे नालधया, चाहे बारह गीत चाहे स्वरदही चाहे छन्द और चाहे दोहरा।

१ 'हफ्तअन्दाजी' का अर्थ स्पष्ट नहीं।
२ खरादी का अर्थ स्पष्ट नही।
३ ठीक शब्द 'अस्सलामो अलैकुम' है।
४ तन्वीन को लाम से मिलाने वाले अथवा 'अस्सलामो अलैकुम' के स्थान पर 'सलामुन अलैकुम' कहने वाले।
५ इस छन्द मे इल्म तथा अमल शब्दों का प्रयोग छन्द मे दो अर्थ पैदा करने के लिये किया गया है। अमल शब्द के दो अर्थ होते हैं : आचरण अथवा मादक, अत छन्द की अन्तिम पक्ति का अनुवाद दो प्रकार से हो सकता है : "इल्म (ज्ञान) को मादक के साथ होना चाहिये" और "इल्म (ज्ञान) को अमल (आचरण) के साथ होना चाहिये।"
६ 'बे' से बखुर अथवा 'खाओ, सेवन करो' और 'मीम से' मखुर अथवा 'मत खाओ' या 'मत सेवन करो'।

कहा जाता है कि युवावस्था मे उसने अपने दरबार के उन लोगो से जो इस कला मे निपुण थे कहा कि, "क्या इस युग मे कोई ऐसी 'पातुर' है जो सरस्वती का 'स्वाग' कर सकती हो और जो उसका अर्थ है उसे बता सकती हो ? हिन्दुओ के ग्रथो मे लिखा है कि सर्वश्रेष्ठ कवियित्री, उत्कृष्ट स्वरवाली गायिका, प्रत्येक वादन मे दक्ष, चपल नर्तकी सरस्वती का रूप धारण कर सकती है। अत जिसमे उपर्युक्त सभी गुण पूर्ण रूप से हो वह सरस्वती का रूप धारण कर सकती है। इसके अतिरिक्त उसके लिये अत्यधिक रूपवती होना भी आवश्यक है।" लोगो ने निवेदन किया, "बादशाह सलामत ! सरस्वती का अनुकरण अत्यधिक कठिन है। इसे इस युग मे कोई नही कर सकता। केवल चम्पा बाई[1] सुल्तान की 'पातुर' इस कला मे दक्ष तथा अद्वितीय है।" सुल्तान ने कहा, "निस्सदेह वह कर सकती है।" तदुपरान्त उसने कहा कि, "इस कार्य के लिये जो कुछ भी आवश्यक हो, तैयार किया जाय।" उन लोगो ने निवेदन किया कि, "सब कुछ उपस्थित है, केवल हस की आवश्यकता है, जो सरस्वती का 'वाहन' है।" सुल्तान ने आदेश दिया कि नगर के सभी सुनारो को एकत्र किया जाय। वे उपस्थित किये गये। जो कुछ सोने तथा जवाहिरात की आवश्यकता थी वह सुनारो को प्रदान किया गया और सुनार उसे छ मास मे तैयार करके लाये। सुल्तान ने जश्न किया। पातुर चम्पा बाई ने अपने आपको सरस्वती के रूप मे सभा मे उपस्थित किया। सर्वप्रथम कविता पढना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक मिसरा[2] दूसरे मिसरे से श्रेष्ठ होता था। तदुपरान्त उसने वादन प्रारम्भ किया और इस कला के दक्ष पडितो को सरस्वती के दर्शन की आवश्यकता न रही। (१८०) तदुपरान्त उसने सगीत प्रारम्भ कर दिया और सभावालो को मस्त तथा अचेत कर दिया। तदुपरान्त नृत्य प्रारम्भ किया और बडी योग्यता से नृत्य किया। जिस किसी ने भी देखा वह चकित रह गया और कहने लगा, "ससार मे किसी ने भी इस प्रकार का प्रदर्शन न किया होगा। यदि किसी ने प्रयत्न भी किया होगा तो वह इसमे इस प्रकार सफल न हुआ होगा।"

सुल्तान की मृदुलता

इतिहासकारो का कथन है कि सुल्तान मुजफ्फर बडा ही सहनशील था, इसी कारण उदड स्वभाव के लोग, जो कठोर दड के बिना आज्ञा पालन ही न करते थे, उसकी आज्ञाओ की उपेक्षा करने लगे थे और निर्भीक होकर चोरी तथा डकैती किया करते थे। अहमदाबाद के आस-पास के मार्गो तक मे अत्यधिक भय रहता था। धृष्ट गुडे नगर मे रक्तपात के बीज बोया करते थे। सुल्तान के शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी समस्त कार्य किवामुलमुल्क सारग तथा मलिक कोबी[3] जुन्नारदार[4] के अधिकार मे थे। वे लोग सुल्तान के आदेशों की चिन्ता न करते थे और उनके जो जी मे आता उसे, चाहे सुल्तान की इच्छा हो या न हो, कर डालते थे। सुल्तान सहनशीलता की आस्तीन से अपने दड के हाथ कदापि न निकालता था और क्रोध की कटार म्यान से न निकालता था।[5] लोगो की शिकायत पर वह उत्तर देता था कि, "हम भी ईश्वर से प्रार्थना करते है, तुम भी ईश्वर से प्रार्थना करो ताकि अत्याचार तथा अत्याचारियो का अन्त हो जाय।"

१ मूल पुस्तक मे 'चहा' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'चम्पा' (पृ० १३०)।
२ छन्द का आधा भाग।
३ 'गोबी' अथवा 'गोपी'।
४ ब्राह्मण।
५ 'दड कभी न देता था और क्रोध कदापि न करता था'।

उसकी सहनशीलता का यह कारण बताया जाता है कि जब सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गई तो अमीर लोग उसके उत्तराधिकारी चुनने मे मतभेद प्रकट करने लगे। कुछ लोगो ने कहा, "ख़लील ख़ा का स्वभाव मुल्लाओं के समान है और वह बादशाही के योग्य नही। इस महान् कार्य को उसके पुत्र बहादुर ख़ा को सौपना उचित है। उसके ललाट से बादशाही गौरव प्रकट होता रहता है।" कुछ लोगों ने खलील ख़ा का पक्ष लिया। उनमे से किवामुलमुल्क सारग तथा मलिक कोबी ने कहा कि, "क्योकि स्वर्गीय सुल्तान ने अपने जीवन-काल ही मे ख़लील ख़ा को सिंहासनारूढ कर दिया है अत हमारे लिये यह उचित नही कि हम सुल्तान की इच्छा के विरुद्ध कार्य करे।" सभी इस बात से सहमत हो गये और उन्होंने खलील ख़ां को सिहासनारूढ कर दिया। कुछ लोगो का मत है कि उनकी इस निष्ठा के कारण उनके (१८१) अपराध क्षमा कर दिये जाते थे। वे जो अनुचित बात कहते, उसे क्षमा कर दिया जाता था। यहाँ तक कि काफिर राणा ने उनके कहने से निज़ामुलमुल्क पर आक्रमण किया। (इसका उल्लेख ऊपर हो चुका है)। सुल्तान को इस बात का प्रमाण मिल गया किन्तु उनसे बिल्कुल रुष्ट न हुआ। राज्य के हितैषियो ने निश्चय किया:

छन्द

"जो कोई राज्य का शुभ चिन्तक नही है,
उसकी हत्या कर दो। उसका खून हलाल है।"

इसी बीच मे एक और बात पैदा हो गई। मलिक कोबी बडा ही विलासी था और उसे जश्न करने का बडा शौक था। उसने बडी ही उत्तम 'पातुर' एकत्र की थी। कहा जाता है कि जिस रात्रि मे उसका जश्न होता तो समस्त फूल बाजारो से तथा उद्यानो से उसकी सभा में पहुच जाते थे। उस रात्रि मे यदि किसी को फूल की आवश्यकता होती तो वे प्राप्त न हो पाते थे। उसकी एक पातुर का नाम 'धार' था। सयोग से, अहमद ख़ा नामक एक युवक, जो नानक[1] कौम से सम्बन्धित था और सुल्तान का सम्बन्धी था, उसके रूप पर बिना उसे देखे ही आशिक हो गया। एक रात्रि मे जब जश्न हो रहा था तो वह चिरागदारी[2] के बहाने से वहा पहुचा। हाथ मे चिराग[3] लेकर प्रविष्ट हो गया। यद्यपि उसने अपने आपको चिरागदारो के रूप मे प्रस्तुत करने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु यह रहस्य खुल गया। (१८२) अहमद ख़ा को बन्दी बनाकर इतना पीटा गया, कि वह मरने के निकट पहुच गया। जब कोबी ने देखा कि अब उसकी कुछ ही सासे शेष हैं, तो उसने अज्ञानी बनते हुए अपने आदमियो को बुरा-भला कहना प्रारम्भ कर दिया और क्षमा-याचना करते हुए कहा कि, "हमे इस विषय मे कुछ ज्ञान न था। यदि आपको जश्न देखने की इच्छा थी, तो आपने सूचना क्यो न की। हम आपको आमन्त्रित करके जश्न दिखाते।" उसने अपनी पालकी मंगवाकर उसमे अहमद ख़ा को डालकर उसके घर भिजवा दिया। दूसरे दिन अहमद ख़ा ने रात की मारपीट के कारण प्राण त्याग दिये। इस घटना के विषय मे सुल्तान से निवेदन किया गया। वह बडा क्रोधित हुआ। अहमद ख़ा के सम्बन्धी बदले की आकाक्षा करने लगे। सुल्तान ने गुप्त रूप से उन्हे अनुमति दे दी।

१ फ़रीदी के अनुसार 'टाको'।
२ दीपकों का प्रबन्ध करने के लिये।
३ दीपक।

एक रात्रि मे मलिक कोबी सुल्तान के दरबार से अपने घर जा रहा था। उन्होने उसका मार्ग रोक लिया। उसे आहत करके वे चले गये। कोई घाव गहरा न लगा। प्रात काल मुहिब्बुलमुल्क ख़्वाजा सरा ने रात्रि की घटना का विवरण सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया और मलिक के घावो के विषय मे निवेदन करते हुए कहा कि, "किसी का भी कोई प्रभाव न हुआ।" किवामुलमुल्क ने कहा, "कोबी जुन्नारदार राज्य का हितैषी है, अशुभचिन्तको के घावो का उस पर कोई प्रभाव न होगा।" सुल्तान ने उपेक्षा की किन्तु उसने हृदय मे सोचा कि "कटी हुई दुम के सर्प को मुक्त कर देना उचित नही।" दूसरे दिन उसने कोबी के घर को नष्ट-भ्रष्ट करने का आदेश दे दिया। लोगो ने पलक झपकाते ही उसका घर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और कोबी को बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा मे लाये। सुल्तान ने उसकी हत्या का आदेश दे दिया। कोबी ने कहा, "मै जुन्नारदार हू और भिखारी था। आपके पिता की कृपा से मुझे यह सम्मान प्राप्त हुआ है। जो कुछ मेरे पास था, उसका सम्बन्ध राज्य से था, वह सब नष्ट हो गया। उनमे दो वस्तुये बडी अप्राप्य थी। यदि वे सरकार मे उपस्थित कर दी जाती तो मुझे कोई चिन्ता न थी। एक अद्वितीय रूपवती कनीज थी। दूसरे कुछ बहुमूल्य जवाहिरात थे जिनका स्थान बादशाह के ख़ज़ाने के अतिरिक्त कही नही हो सकता।" सुल्तान ने कहा, "जो चीज व्यर्थ प्राप्त हुई थी वह व्यर्थ नष्ट हो गई।" तत्पश्चात् उसने कहा कि, "इस काफिर के अत्याचार से प्रजा परेशान हो चुकी है और इसने मुसलमानो (१८३) को बडा कष्ट पहुचाया है, इसकी हत्या कर दो।" सभी लोग उस आदेश से सतुष्ट हो गये और उस पिशाच काफिर का सिर कुत्ते के समान पृथक् कर दिया गया।

सुल्तान के कुछ कथन

विद्वानो तथा समझदार लोगो को यह बात भली-भाति ज्ञात है कि, "राज-सिहासन के योग्य वही व्यक्ति है जिसका शरीर स्वस्थ हो और जो शक्तिशाली हो। उसकी आत्मा दैवी गुणो से सुसज्जित हो क्योकि सुल्तान का कार्य शासन-प्रबन्ध के नियमो की तथा शरा के कार्यो की देखभाल होता है। बादशाह को शरीअत तथा सुन्नत की विद्या का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये ताकि वह अपने ज्ञान के अनुसार अपने दड की तलवार से प्रजा की रक्षा कर सके। उसकी तलवार को विद्रोहियो तथा उपद्रवियो का विनाशक होना चाहिये।" क्योकि सुल्तान की सभा मे सर्वदा प्रतिष्ठित आलिम तथा प्रसिद्ध विद्वान् रहते थे और वे इल्म (ज्ञान) से सम्बन्धित बातो पर वाद-विवाद किया करते थे। अत जो बाते उस बादशाह द्वारा उन सभाओ मे होती थी यदि वे सभी सकलित की जाय तो एक ग्रथ तैयार हो जायगा। उनमे से कुछ बातो का उल्लेख किया जाता है। . . . .

शाह शेख़ जियू मख़दूम जहानियां द्वितीय की बहादुर ख़ां के कारण तपस्या तथा उसका परिणाम

(१८५) गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि जब सुल्तान महमूद की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान मुजफ्फर सिहासनारूढ हुआ तो शेख के कुछ मुरीदो ने उनसे निवेदन किया कि, "पिछले ख़लीफा की मृत्यु हो गई और वर्तमान खलीफा सिहासनारूढ हुआ है। पिछले खलीफा के लिये फातेहा तथा वर्तमान ख़लीफ़ा को बधाई देने के लिये यदि आप कष्ट करे तो बडी कृपा होगी।" शेख़ ने कहा, "अन्त मे हमारे तथा सुल्तान के पिता के सम्बन्ध अच्छे न रहे थे। वह युवक है तथा कोरा

विद्वान्[1] है। उसे दरवेशो के प्रति इतनी श्रद्धा नही है, अत मेरे लिये यही उचित होगा कि मै न आऊ।" इस पर उन लोगो ने कहा कि, "गुजरात का राज्य आपके पूर्वजो के कारण चल रहा है। यदि सुल्तान का पिता इस देन का महत्व न समझ सका तो यह सुल्तान विद्वान् तथा बुद्धिमान् है, वह समझेगा।"

अन्त मे कुछ हितैषियो के प्रयत्न से शेख चाम्पानीर गये। अधिकाश अमीर तथा वज़ीर उनके तथा उनके बुजुर्गों के मुरीद थे। उन्होने उनका स्वागत किया और सुल्तान के महल मे सुल्तान के विशेष निवास-स्थान के निकट एक स्थान पर ठहराया। हाजिबो[2] ने दौड कर शेख के आने के समाचार पहुचाये। (१८६) सुल्तान को इस बात का पता न था कि वे इतने निकट ठहरे हुए है। उसने कहा कि, "शेख ने मेरे पिता के लिये कितनी बुरी कामनाए की थी मेरे विषय मे वे क्या करेगे?" शेख ने स्वय यह बाते सुन ली। खिन्न होकर बिना भेट किये हुये चले गये।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। जब वह कुतुबल अकताब (शाह आलम) के मकबरे पर पहुचा तो प्रथानुसार घोडे से उतर कर सम्मान प्रदर्शित न किया और ज़ियारत[3] न की। घोडे पर बैठे-बैठे ही फातेहा पढा। शेख ने भी इस ओर कोई ध्यान न दिया। कुछ समय उपरान्त सुल्तान रुग्ण हो गया। उस समय कुतुबल अकताब का उर्स[4] निकट था। उर्स की रात्रि मे सुल्तान ने कहा, "कल कुतुबल अकताब का उर्स है। रसोई सरखीज मे पहुचा दी जाय और उनकी पवित्र आत्मा के लिये भोजन तैयार किया जाय। मै कल वहा पहुच जाऊगा।" सुल्तान के आदेशो का पालन हुआ। रात्रि मे स्वप्न मे सुल्तान ने कुतुब साहब को देखा जो कह रहे थे, "मुजफ्फर खा ! तू मेरे घर क्यो नही आता?" सुल्तान ने पूछा कि, "आपका घर कहा है?" कुतुब साहब ने कहा, "बतुवा मे शेख जियू के घर। जो शेखा के घर गया वह मानो मेरे घर आया। जिसने शेखा को प्रसन्न किया उसने मानो मुझे प्रसन्न किया। तू शेखा के पास जा ताकि तू स्वस्थ हो जाय।" प्रात काल सुल्तान ने उठकर पालकी मँगवाई और सवार होकर बतुवा पहुँचा। उसी रात्रि मे कुतुब साहब ने शेख जियू से स्वप्न मे कहा कि, "कल मुज़फ्फर खा तेरे घर आयेगा, उससे कृपापूर्वक भेट कर और उसके सिर तथा कन्धे पर हाथ रख। उसके लिये शुभकामनाये कर। ईश्वर तेरी शुभकामना से उसे स्वस्थ कर देगा।" प्रात काल सुल्तान के शेख जियू के घर पहुचने के पूर्व शेख जियू ने अपने मित्रो से कहा कि, "कल रात्रि मे कुतुबुल अकताब ने मुझमे तथा सुल्तान मे सधि करा दी है। आज सुल्तान आ रहा है। उसके लिये भोजन तैयार किया जाय। आप लोग अपने घरों पर कहला दे कि जिसके घर जो अच्छा भोजन बना हो वह उसे उपस्थित करे।" कुछ क्षण उपरान्त समाचार प्राप्त हुये कि सुल्तान आ रहा है। जब बादशाह असमपुर पहुंचा तो उसने एक सेवक शेख के पास भेजा और यह कहलाया कि, "मै भूखा हू, मेरे लिये भोजन का प्रबन्ध कराये।" तदुपरान्त सुल्तान भी शेख के दरबार मे पहुच गया और दूर ही से पालकी से उतर पडा। सर्वप्रथम उसने कुतुबुल अकताब के मकबरे की ओर ज़ियारत की। तदुपरान्त शेख जियू से हाथ मिलाया। (१८७) दोनो बुजुर्ग एक दूसरे को देखकर मुस्कराये। शेख जियू ने धीरे से कहा कि, "कल जब आपको

१ आलिमे खुश्क।
२ हाजिब —देखिये पृ० ३० नोट नं० ३।
३ दर्शन तथा .कुरान के कुछ वाक्यों द्वारा शाह की आत्मा के लिये शुभकामनाये।
४ सूफ़ियो की निधन तिथि पर होने वाला वार्षिक उत्सव।

दरवेश से भेट करने का आदेश हुआ तो दरवेश को भी आपसे भेट करने का हुक्म मिला।" सुल्तान शेख जियू के चरणो मे गिर पडा। शेख़ जियू ने अपना हाथ सुल्तान के सिर तथा मुख पर फेरा और उसे उठाकर आलिगन किया। तदुपरान्त सुल्तान ने प्रत्येक शाहजादे को शेख़ के चरणो मे डाल दिया और सभी शेख़ जियू के चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुए। शेख़ जियू सुल्तान को अपने घर ले गये और उससे वार्तालाप करते रहे। क्योकि शेख़ जियू सभी प्रकार के ज्ञानो से सम्पन्न थे अत उन्होंने धर्म तथा ज्ञान सम्बन्धी ऐसी बाते कही जिनसे सुल्तान मूर्च्छित हो गया और द्वार तथा दीवारे भी शेख़ के प्रवचन से मस्त हो गई।

पद्य

"वली मे तीन गुण होने चाहिये। सर्वप्रथम उसका रूप,
जो कोई उसके रूप को देखे तो उसका हृदय उसकी ओर आकृष्ट हो जाय।
दूसरे उसकी गोष्ठी मे जो वार्त्ता हो उससे लोग मूर्च्छित हो जाय,
अपने जीवन की समस्त वस्तुए उसकी वार्त्ता पर न्योछावर कर दे।
उस ससार के सर्वश्रेष्ठ वली[1] मे तीसरी यह विशेषता होनी चाहिये,
कि उसके शरीर का कोई अग कोई बुरा कार्य न करे।"

यह तीनो गुण शेख जियू मे विद्यमान थे और इस सीमा तक थे कि उनका उल्लेख नही हो सकता। शेख़ कुछ समय उपरान्त उठकर अत पुर मे चले गये और सुल्तान के लिये भोजन भिजवाया। सुल्तान ने उनसे अपने साथ भोजन करने का आग्रह किया। शेख़ ने कहलाया कि "मुझे खासी आती है।" सुल्तान ने पुन आग्रह किया। वे बाहर आये और सुल्तान के साथ उन्होने भोजन किया। भोजन अत्यधिक स्वादिष्ट था। सुल्तान ने भोजन की बडी प्रशसा की। भोजन के उपरान्त वे उठ खडे हुए। सुल्तान विश्राम करने के लिये चला गया और मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय उठा। शेख़ के पीछे नमाज़ पढी। तत्पश्चात् वे बैठ गये। सुल्तान ने अपनी रुग्णावस्था का हाल कहा और बताया कि, "कुछ समय से मै (१८८) भूल के रोग मे ग्रस्त हू और मेरे स्वभाव मे शका रहती है। अन्य दिनो की अपेक्षा शेख़ के चरणो के आशीर्वाद से मै अपने आपको कुछ स्वस्थ पाता हू। मुझे आशा है कि शेख़ की सेवा मे उपस्थित होने के कारण इसका अन्त हो जायेगा। शेख़ मेरे लिये शुभकामनाए करे।" शेख़ ने शुभकामनाए की और सुल्तान को विदा किया। सुल्तान ने मार्ग मे कहा, "यदि मै उनकी सेवा मे न उपस्थित होता तो ईश्वर के ज्ञान के आस्वादन से वचित रहता। मुझे दुख है कि मै इतने समय तक उनसे पृथक् रहा।" तदुपरान्त सुल्तान हृदय से दरवेशो का भक्त हो गया और उसने उनके सत्सग द्वारा ज्ञान का आस्वादन प्राप्त किया।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र का शेख़ जियू की सेवा मे सिकन्दर ख़ाँ के लिए गुजरात की बादशाही के विषय मे निवेदन

सुल्तान मुजफ्फर के आठ पुत्र थे। सब से बडा सिकन्दर खा था। इसके अतिरिक्त बहादुर खा, लतीफ खा, चाद खा, नसीर खा, इबराहीम ख़ा इत्यादि थे। उसके दो पुत्रिया थी। उनमे से

1 सन्त।

राजी रुकय्या आदिल शाह बुरहानपुरी की पत्नी थी और राजी आयशा सिन्ध के बादशाहजादे फतह खा की पत्नी थी। सिकन्दर खा, राजी आयशा और राजी रुकय्या एक माता से थे। उसका नाम बीबी रानी था। बहादुर खा की माता का नाम लखिम बाई[1] था और वह गोहेल राजपूत थी। लतीफ खा की माता का नाम राज बाई था जो राना महिपत[2] की पुत्री थी और राजपूत वश से थी। चाद खा नमीर खा तथा दो अन्य पुत्र कनीजो से थे। महल, राज्य तथा सेना के समस्त प्रबन्ध मे बीबी रानी का हाथ रहता था और ७००० सेवक बीबी की सरकार से सम्बन्धित थे। सुल्तान ने सिकन्दर खा को अपने जीवन-काल मे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। उसे अन्य पुत्रो पर कोई विश्वास न था। उसने प्रत्येक के लिये दो तीन ग्राम निश्चित कर दिये थे। उनके व्यय का साधन वही ग्राम थे। इसी प्रकार दो ग्राम बहादुर खा के भी अधीन थे। एक कज कस्बा जो अहमदाबाद से १० कोस पर महमूदाबाद के निकट स्थित है। दूसरा गोना जो उपर्युक्त नगर से ९ कोस[3] पर है। वह शातह[4] ग्राम के निकट जो (१८९) वतुवा नामक स्थान के अधीन है, स्थित है। वह कुतुबुल अकताव की वृत्ति मे दिया जा चुका था। इसी कारण बहादुर खा अधिकाश वतुवा मे रहता था और कुतुबुल अकताव का मुरीद हो गया था। कुतुबुल अकताब भी बहादुर खा पर बडी कृपादृष्टि रखते थे।

कहा जाता है कि मुरीदो के शजरे[5] मे कुतुबुल अकताब ने बहादुर खा के नाम के साथ अपनी कलम से "सुल्तान बहादुर" लिखा था। कुछ लोगो का मत है कि उन्होने "सुल्तान बहादुर गुजरात का बादशाह" लिखा था। एक दिन उन्होने अपने विशेष पलग पर बहादुर खा को आसीन करके उपस्थितगण से कहा कि, "अन्त मे गुजरात का बादशाह यही होगा।" सभी लोगो ने अभिवादन किया। इस समाचार को प्रसिद्धि प्राप्त हो गई।

बीबी रानी इसे सुनकर बडी चिन्ता मे पड गई। उसने इस विषय मे सुल्तान मुजफ्फर से निवेदन किया और अपनी व्याकुलता को उसके समक्ष व्यक्त किया और कहा कि, "सिकन्दर खा को भी कुतुबुल अकताब की सेवा मे ले जाओ और निवेदन करो कि "मैंने इसे वलीअहद बना दिया है। आप भी मेरा साथ दे और उसके लिये ईश्वर से शुभकामनाए करे।" सुल्तान ने कहा कि, "बहादुर खा की वतुवा मे जागीर है और वह अधिकाश समय वही रहता है। सर्वदा उनकी सेवा किया करता है। जो कोई भी दरवेशों की सेवा में पहुचता है वे उसके लिये शुभकामनाए करते है। तुम सतुष्ट रहो। जब मैंने अपने जीवन-काल मे सिकन्दर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया है और सेना तथा प्रजा उसकी ओर आकृष्ट है तो बहादुर खा को यह सौभाग्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है? कुतुबुल अकताब को भी इस विषय मे ज्ञान है। प्रात काल उनके समक्ष उपस्थित हो कर मै इस विषय में निवेदन करूगा और सिकन्दर खा के लिये उनसे शुभकामनाए करने को कहूगा। बीबी ने अपनी ओर से भी सुल्तान के समक्ष अत्यधिक उपहार रख दिये और निवेदन किया कि, "इन्हे भी उनकी सेवा मे उपस्थित करो।"

प्रात काल सुल्तान सपरिवार कुतुबुल अकताब की सेवा मे पहुचा। सिकन्दर खा तथा अपने अन्य पुत्रों को उसने उनका मुरीद बना दिया। इसी बीच मे बहादुर खा आ गया और अभिवादन करके

१ फ़रीदी के अनुसार 'लक्ष्मीबाई' (पृ० १३६)।
२ मूल पुस्तक मे 'महीब' है किन्तु फ़रीदी के अनुसार 'महिपत' (पृ० १३६)।
३ फ़रीदी के अनुसार '१० कोस' (पृ० १३६)।
४ फ़रीदी के अनुसार 'तातह'।
५ वशवृक्ष।

सुल्तान तथा सिकन्दर खा के बीच मे बैठ गया। सुल्तान, कुतुबुल अकताव से वार्त्ता कर रहा था। वह बहादुर खा के आगमन तथा बीच मे बैठने के विषय मे अवगत न हो सका। जब सिकन्दर खा की सिफारिश का अवसर आया तो सुल्तान ने कहा कि, "आपको स्वय ज्ञात है कि सिकन्दर खा मेरे सभी पुत्रो मे अवस्था मे सबसे बडा है और वह सबसे अधिक योग्य है। मैने उसे अपना वलीअहृद कर दिया है।" (१९०) यह कहकर उसने हाथ बढाकर बहादुर खा का हाथ पकडकर, इस विश्वास से, कि यह सिकन्दर खा का हाथ है, कुतुबुल अकताब के हाथ मे दे दिया। कुतुबुल अकताब ने भी उसके विषय मे शुभकामना की कि ईश्वर उसे गुजरात का राज्य प्रदान करे और कहा कि "ईश्वर ने तुम्हारी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली है और यह गुजरात का बादशाह होगा। गुजरात के अतिरिक्त वह अन्य राज्यो को भी विजय करेगा।" सुल्तान ने प्रसन्न होकर सिकन्दर खा की ओर देखा किन्तु बहादुर खा का हाथ अपने हाथ मे देखकर उसकी दशा परिवर्तित हो गई और वह चकित रह गया। कुतुबुल अकताव ने कहा कि, "आपकी इच्छा पूरी होगी।" सभा वाले, जो योग्य तथा बुद्धिमान् थे, समझ गये कि राज्य की गेद बहादुर खा के बल्ले के मोड से लग चुकी है और सिकन्दर खा इस सौभाग्य से वचित हो चुका है।

वहा से विदा होकर सुल्तान ने मार्ग मे अपने विश्वासपात्रो से कहा कि, "इस कलन्दरक[1] अर्थात् बहादुर खा को देखा कि उसने आज कैसी धृष्टता की और आकर अपने बडे भाई के ऊपर बैठ गया।" उसने सिकन्दर खा से कहा, "तूने उसे क्यो वहा बैठने दिया ?" सिकन्दर खा ने कुछ न कहा। दूसरे दिन सुल्तान ने अमीरो तथा वजीरो को एकत्र करके दरबारे-आम किया और कहा कि, "तुम लोग इस विषय मे पूर्ण जानकारी रखते हो और स्वय बुद्धिमान् हो कि मेरा वलीअहृद सिकन्दर खा है। इस आदेश का पालन तुम्हारे लिये आवश्यक है।" सभी लोगो ने इसे स्वीकार करके सम्मान प्रदर्शित किया। बीबी रानी तथा सिकन्दर सतुष्ट हो गये किन्तु ईश्वर के निर्णय का उन्हे कोई ज्ञान न था और भाग्य का उन्हे कोई पता न था कि अन्त मे किसकी इच्छा पूरी होगी और ससार किसका साथ देगा।

यद्यपि इसके पूर्व सेना तथा प्रजा इस बात को भली-भाति समझती थी कि सुल्तान मुजफ्फर का वलीअहृद सिकन्दर खा के अतिरिक्त कोई नही है और न होगा किन्तु इस अवसर पर यह निश्चय हो गया और इस बात पर विश्वास हो गया कि सभी लोग सिकन्दर खा के अधीन होगे। सिकन्दर खा ने ईर्ष्यावश बहादुर खा की जड काटने का षड्यन्त्र रचना प्रारम्भ कर दिया। बहादुर खा अपने पीर दस्तगीर[2] की (१९१) छत्रछाया मे चला गया। वह अपने पिता की कृपा से निराश हो चुका था। उसने बतुवा मे निवास करना प्रारम्भ कर दिया और अपना सौभाग्य अपने पीर की ही सेवा को समझने लगा। कुतुबुल अकताब भी उसे अपनी कृपा की छाया मे रखकर विशेष रूप से सम्मानित करते थे किन्तु बहादुर खा से कभी-कभी बादशाहो और कभी-कभी बालको के समान आचरण बतुवा के लोगो के सम्बन्ध मे प्रदर्शित हो जाता था। कभी वह किसी की पगडी से खेलता हुआ उतार लेता था और कभी किसी बेचारे के पीछे अपने गरजी कुत्ते[3] छोड देता था। कुतुबुल अकताब का एक सेवक काबिल नामक था और वह द्वारपाल था। वह अफीम का अत्यधिक सेवन करता था। बहादुर खा उसे बहुत छेडा करता था और तत्पश्चात् उसे इनाम, मिठाई तथा भोजन देकर प्रसन्न करता था। एक दिन उसने आदेश दिया कि उसके हाथों

१ तुच्छ कलन्दर।
२ आश्रयदाता पीर।
३ कुत्तों की एक किस्म।

को बाधकर उसका पायजामा खोल दिया जाय और पायजामे के पाइचो को बाध कर उसमे चमगादड डाल दी जाय। चमगादड ने व्याकुल होकर अपने नख से उसकी जाघ को छील डाला। नखो के घाव के कारण रक्त बहने लगा। वह उसी दशा मे कुतुबुल अकताब की सेवा मे उपस्थित हुआ और फरियाद की। कुछ लोग जो बहादुर खा से रुष्ट थे कहने लगे कि, "बहादुर खा अधिकाश धृष्टता करता रहता है। अमुक व्यक्ति की पगडी को सिर से उतार लिया। अमुक दिन अमुक व्यक्ति के पीछे कुत्ता छोड दिया, यदि वह भागकर घर मे न घुस जाता तो वह उसे फाड डालता।" यह सुनकर कुतुबुल अकताब बडे क्रोधित हुये और कहा, कि "फिरगी कुत्ते उसे भी फाड डालेगे और उसका पतन कुत्ते सरीखे लोगो द्वारा होगा।" बहादुर खा यह सुनकर बडा लज्जित हुआ और उसने तोबा की। कुछ सूफियो की सिफारिश लेकर वह कुतुबुल अकताव की सेवा मे उपस्थित हुआ। अन्त मे सुल्तान बहादुर फिरगियो द्वारा मारा गया। सयोग से कुछ विद्वानो ने बहादुर खा की मृत्यु की तिथि "कलाबे फिरग" शब्दो द्वारा प्राप्त की। इन शब्दो से ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) का पता चलता है।

बहादुर खां का सिकन्दर खां की शत्रुता के कारण हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

(१९२) गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि बहादुर खा के विषय मे शेख जियू के शब्द सुनकर सिकन्दर खा ईर्ष्यावश बहादुर खा की हत्या हेतु कटिबद्ध हो गया। बहादुर खा को जब इस बात का पता चला तो उसने अपने कुछ विश्वासपात्रो सहित (गुजरात से) भाग जाना निश्चय किया और इस विषय मे अपने पीर से निवेदन किया कि "सिकन्दर खा के सकल्प के विषय मे सुल्तान को सूचना दी गई थी। उसने कहा कि, 'मेरी वृद्धावस्था आ चुकी है। मुझे ऐसे रोग लग गये हैं जिनका कि चिकित्सक उपचार नही कर पाते। ईश्वर की भूमि बडी विस्तृत है, इसे तू (बहादुर खा) क्यो छोटा बना रहा है और एकान्तवास क्यो नही ग्रहण कर लेता ?' इस कारण मै देहली की ओर प्रस्थान कर रहा हू। यदि (शेख जियू) मुझे इस बात की अनुमति दे तो मैं उस ओर प्रस्थान करू।" शाह ने कहा कि, "ईश्वर की ओर से गुजरात के राज्य का फरमान तेरे लिये तैयार हो चुका है और उस समय पर यह बात प्रकट होगी। उस समय तक यात्रा की तैयारी कर। तेरे लिये यह यात्रा शुभ हो।" उसी समय उसने (बहादुर खा ने) मनौती की कि, "यदि ईश्वर मुझे गुजरात का राज्य प्रदान कर देगा तो शाहजादगी के समय की जागीर मै शुभ रौजे के फकीरों की आवश्यकता हेतु कुतुबुल अकताब को प्रदान कर दूँगा।" संक्षेप मे, बहादुर खा अपने पीर की अनुमति से देहली रवाना हुआ।

कहा जाता है कि विदा के समय शाह ने कहा कि, "गुजरात का राज्य तुम्हे प्रदान हो चुका है। इसके अतिरिक्त तुम्हारी जो कोई इच्छा हो तुम बताओ ताकि ईश्वर उसे भी लोगो की दृष्टि मे प्रकट करे।" बहादुर खा ने निवेदन किया कि, "चित्तौड की विजय के अतिरिक्त मेरी कोई अन्य अभिलाषा नही। इसका कारण यह है कि चित्तौड के राजा अर्थात् राणा ने अहमद-नगर के मुसलमानों को बडा कष्ट पहुचाया है। उसने मुसलमानो की हत्या करके उन्हे बन्दी बनाया तथा उनकी धन-सम्पत्ति नष्ट की है।" शाह, ईश्वर के ध्यान मे लीन हो गये। बहादुर खा ने वही बात पुन कही किन्तु उत्तर न मिला। तीसरी बार उसने फिर वही प्रार्थना की। शाह ने कहा, "चित्तौड की विजय तुम्हारे राज्य के पतन से (१९३) सम्बद्ध है।" उसने कहा, "मुझे यह हृदय से स्वीकार है।" शाह ने कहा, "ऐसा ही होगा, भाग्य को कौन पलट सकता है।" तदुपरान्त उन्होने कहा कि, "यह हमारी और तुम्हारी अन्तिम भेंट है।

तुम शीघ्र ही लौटोगे किन्तु मुझे न पाओगे। तुम्हे चाहिये कि सैयिद महमूद उर्फ शाह बुद्ध का ध्यान रखने मे कोई कमी न रखना, इसमे तुम्हारा ही उपकार होगा।" सक्षेप मे बहादुर खा चाम्पानीर की ओर चल दिया। उस क्षेत्र के आमिलो से कुछ धन लेकर देहली की ओर रवाना हो गया।

९३१ हि० (१५२४–२५ ई०) मे शाह जियू का, जिनका नाम सैयिद जलाल इब्न सैयिद महमूद इब्न कुतुबुल आलम सैयिद बुरहानुद्दीन था, निधन हो गया। वे ७५ वर्ष तथा छ मास तक जीवित रहे।

कहा जाता है कि बहादुर खा चाम्पानीर कस्बे से वासला पहुचा और वहा से वह राणा के पास चित्तौड पहुचा। वह वहा कुछ समय तक ठहरा। राणा ने उसका वडा आदर-सम्मान किया और राणा की माता उसे पुत्र कहकर अपना प्रेम प्रदर्शित करती थी।

कहा जाता है कि एक दिन राणा के भतीजे ने बहादुर खा को अपने घर प्रीतिभोज हेतु आमन्त्रित किया। रात्रि मे जश्न का आयोजन हुआ। एक बडी ही रूपवती पातुर बडा सुन्दर नृत्य करती थी। बहादुर खा ने उसकी ओर ध्यान देकर उसे वडा प्रसन्न किया। जब राणा के भतीजे ने बहादुर खा को उसकी ओर अत्यधिक आकृष्ट देखा तो ईर्ष्यावश कहा, "बहादुर खा! तू पहचानता है कि यह पातुर कौन है?" बहादुर खा ने कहा "बताओ।" उस अभागे ने कहा कि, "यह अहमदनगर के जिसे राणा ने लूट लिया था सम्मानित व्यक्तियो मे से एक की पुत्री है।" यह सुनते ही बहादुर खा ने राणा के भतीजे की कमर पर इस प्रकार तलवार लगाई कि वह अभागा दो टुकडे होकर नरक मे पहुच गया। इस पर हाहाकार मच गया। बहादुर खा रक्त-रजित तलवार लिये हुए खडा हो गया। राजपूतो ने उसे घेर लिया और उसकी हत्या का सकल्प कर लिया। जब राणा की माता को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह कटार लिये हुये दौडती हुई आयी और कहा, "यदि कोई बहादुर खा की हत्या करेगा तो मै अपने पेट को फाड डालूँगी।" राणा ने यह बात सुनकर कहा कि, "इस दुष्ट ने गुजरात के बादशाहजादे के समक्ष ऐसी अनुचित बात क्यो कही? कोई भी बहादुर खा की हत्या का सकल्प न करे।" जब बात यहा तक पहुच गई तो बहादुर (१९४) खा वहा से प्रस्थान करके मेवात की ओर चल दिया। उस प्रदेश के खान ने उसके आतिथ्य-सत्कार का प्रबन्ध किया और उसे सहायता का आश्वासन दिलाया किन्तु वहा से वह सुल्तान इबराहीम बिन सुल्तान सिकन्दर, देहली के बादशाह, की सेवा मे पहुचा। उस समय सुल्तान इबराहीम बाबुर बादशाह से पानीपत के रणक्षेत्र मे युद्ध कर रहा था। सुल्तान ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। जो घटना उस अवसर पर घटी, उसका उल्लेख बाद मे किया जायेगा।

सिकन्दर शाह बिन सुल्तान मुज़फ़्फ़र का सिंहासनारोहण तथा राज्य के प्रारम्भ मे उसकी हत्या

शुक्रवार २२ जमादि-उल-आखिर ९३२ हि० (५ अप्रैल १५२६ ई०) को सुल्तान मुज़फ्फर की मृत्यु हो गयी। इसी दिन सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान मुजफ्फर सिहासनारूढ हुआ और शीघ्र ही उसने मुहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। कहा जाता है कि उसने बतुवा के पीरो के दर्शन की ओर कोई ध्यान न दिया। जब वह कुतुबुल आलम के रौजे के समक्ष पहुचा तो उसने जियारत का सम्मान प्राप्त न किया और कहा कि "इनके पौत्र मिया शेख़ जियू ने, जिन्हे लोग मख़दूये जहानिया कहते है, क्यो यह बात कही थी कि बहादुर ख़ा गुजरात का बादशाह होगा? उसका ससार में पता नही।"

सक्षेप मे, जब सिकन्दर मुहमदाबाद पहुचा तो २५ जमादि-उल-आखिर[1] को अपने पूर्वजो की प्रथानुसार राजसिहासन पर आरूढ हुआ और शाहजादगी के समय जिन लोगो ने उसकी सेवाये की थी उनमे से प्रत्येक को उपाधिया प्रदान की और १७०० घोडे[2] अपने आदमियो को प्रदान कर दिये। इस कारण मुजफ्फर शाह के अमीर तथा वजीर रुष्ट हो गये। यहा तक कि ऐमादुलमुल्क खुशकदम, जोकि सुल्तान का अत्का[3] था, उससे रुष्ट हो गया। इसके कारण का यदि ईश्वर ने चाहा तो बाद मे उल्लेख होगा। सक्षेप मे इसी बीच मे समाचार प्राप्त हुए कि लतीफ खा ने मूँगा पर्वत[4] के राजा भीम की सहायता के भरोसे पर सुल्तानपुर तथा नन्दुरबार के पर्वतीय क्षेत्र मे शरण ले ली है। कुछ अमीर उससे पत्र-व्यवहार कर रहे है। सुल्तान सिकन्दर ने, मलिक लतीफ को शिर्ज़ा खा की उपाधि द्वारा सम्मानित किया और तीन हजार वीर अश्वारोहियो सहित इस आशय से नियुक्त किया कि वह लतीफ खा को पर्वत (१९५) से ले आये। जब शिर्ज़ा खा उस पर्वत मे प्रविष्ट हुआ तो राजपूतो तथा कौलियो ने उसका मार्ग रोक लिया और युद्ध करने लगे। शिर्ज़ा खा कुछ प्रतिष्ठित अमीरो सहित मारा गया। उसकी सेना मे से १२०० व्यक्तियो की हत्या कर दी गई। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने कैसर खा को बहुत बडी सेना देकर (इस कार्य हेतु) नियुक्त किया। इस बीच मे कुछ अमीरों ने एमादुलमुल्क से मिलकर उसे बताया कि "सुल्तान तुम्हारी हत्या कराना चाहता है। तुम्हे इस विषय मे असावधान न रहना चाहिये।" मलिक ने कहा, "यदि सुल्तान हमारी हत्या का इरादा करता है तो मै क्यो पहले ही से सुल्तान की हत्या का सकल्प न करू।"

कहा जाता है कि उन्ही दिनो मे एक रात्रि मे सुल्तान सिकन्दर ने स्वप्न देखा कि, कुतुबुल अकताब मखदूम जहानिया, शाह आलम तथा शेख जियू बैठे हुए है। सुल्तान मुजफ्फर भी उन्ही के साथ है और कह रहा है कि "बाबा सिकन्दर खा उठ। इससे अधिक सिहासन पर रहना तेरे भाग्य मे नही।" शेख जियू ने कहा, "ठीक है। ऐसा ही है।" जब सुल्तान जागा तो याकूब से, जिसकी उपाधि दरिया खा थी, रात्रि की घटना का उल्लेख किया और कहा कि, "मेरा हृदय यह कहता है कि बहादुर खा आ जायेगा और हममे तथा उसमे युद्ध होगा।" 'तारीखे बहादुरशाही' का लेखक लिखता है कि दरिया खा ने यह स्वप्न यूसुफ बिन लुत्फुल्लाह से कहा और यूसुफ ने मुझसे कहा और इस प्रकार यह कडी चलती गई और इसकी प्रसिद्धि हो गई। सक्षेप मे कुछ क्षण उपरान्त सुल्तान चौगान खेलने के लिये सवार हुआ। चौगान खेलकर एक पहर दिन उपरान्त अपने महल को चला गया और वहा भोजन किया। तदुपरान्त दोपहर तक विश्राम किया और प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने निवास स्थान को चला गया।

सैयिद जलाल मुनव्वलरुलमुल्क का कथन है कि, "जब सुल्तान चौगान खेलकर लौटा तो मै तथा मेरा भाई सैयिद बुरहानुद्दीन बाजार मे खडे थे। हमने देखा कि नगर की स्त्रियों तथा पुरुषों मे कोई भी व्यक्ति ऐसा न था जो अपने घर तथा दूकान से निकलकर सुल्तान के रूप-रग का निरीक्षण न कर रहा हो अपितु उस दिन फिरिश्ते भी सुल्तान के रूप के दर्शन करके चकित थे।"

(१९६) कहा जाता है कि सुल्तान बडा रूपवान् था और लोग उसे दूसरा यूसुफ[5] कहते थे।

१ २५ जमादि-उल-आखिर ९३२ हि० (८ अप्रैल १५२६ ई०)।
२ फ़रीदी के अनुसार '२७०० घोडे' (पृ० १४१)।
३ दूसरे माता-पिता का धात्री पुत्र, कोका भाई।
४ मोहनगढ अथवा छोटा उदयपुर।
५ यूसुफ़ पैग़म्बर जो बड़े रूपवान् बताये जाते है।

सक्षेप मे, सुल्तान शाही ऐश्वर्य से बाज़ार से होता हुआ अपने महल को पहुचा। समस्त अमीर तथा सैनिक अभिवादन करके अपने अपने घरो को चले गये। कुछ समय उपरान्त एमादुलमुल्क अपने सिर तथा कान को छिपा कर ४०–५० वीर अश्वारोहियो सहित अपने घर से शाही महल की ओर रवाना हुआ। जब वह बाज़ार मे पहुचा तो कुछ लोगो ने कहा कि, "आज मलिक १६ दिन उपरान्त सुल्तान के अभिवादन हेतु जा रहा है।" अभी क्षण भर भी व्यतीत न हुआ था कि शोर होने लगा कि एमादुलमुल्क ने सुल्तान की हत्या कर दी। इस घटना से नगर मे हाहाकार मच गया। प्रत्येक चकित तथा व्याकुल था और शोक प्रकट करता था तथा विलाप करता था कि, "हे ईश्वर! यह कैसी दुर्घटना घटी।" उस दिन से मानो शान्ति के शब्द को गुजरात के राज्य के सिहासन से सुल्तान के रक्त से धो दिया गया हो। गुजरात के सुल्तानो मे सर्वप्रथम सुल्तान सिकन्दर की हत्या की गई। तदुपरान्त सुल्तान मुजफ्फर तृतीय[1] इब्ने सुल्तान मुहम्मद द्वितीय सभी की हत्या होती रही।

कहा जाता है कि जब वह नमकहराम राजप्रासाद मे पहुचा और शाही सरापर्दे[2] के निकट पहुचा तो उसने देखा कि "दो व्यक्ति पर्दे के बाहर खडे है, एक सैयिद अलीमुद्दीन बिन अहमद भक्करी शाह आलम इब्ने कुतुबुल आलम का पौत्र और दूसरा मलिक बैरम बिन मसऊद और वे शतरज खेल रहे है। मलिक सोधा द्वारपाल शाही पर्दे का कोना पकडे खडा है। मलिक पीर मुहम्मद महलदार[3] सुल्तान के पाव दाब रहा है और सुल्तान सो रहा है और कोई अन्य व्यक्ति नही है।" उसने भीतर प्रविष्ट होना चाहा। मलिक सोधा द्वारपाल ने कहा कि, "सुल्तान सो रहा है।" इससे अधिक वह उससे कुछ कहने का साहस न कर सका कारण कि राजप्रासाद के समस्त अधिकार उस दुष्ट के हाथ मे थे। उसने मलिक सोधा को कोई उत्तर न दिया और मलिक बहार को अपने साथ लेकर शाही सरापर्दे मे प्रविष्ट हो गया। उसका हाथ पकड कर कहा कि, "पुर्तगाल से सुल्तान के लिये जो शीशा आया है, उसे तुमने देखा है अथवा नही?" वह शीशा सुल्तान के पलग के पायती लटका हुआ था। उसकी विशेषता यह थी कि जब दीपक जल जाते थे तो अनेक दीपको का प्रतिबिम्ब उसमे दृष्टिगत होता था। वह बडी ही विचित्र वस्तु थी। बहार हरामखोर ने कहा कि, "मैने नही देखा है।" वह (एमादुलमुल्क) उसे पकडकर सुल्तान के पलग के निकट ले गया। बहार ने उसकी ओर दृष्टि डाली। उस अभागे ने कहा कि, "तू क्या देखता है? (१९७) प्रहार कर।" दुष्ट बहार ने तलवार खीच ली। इसी बीच मे सुल्तान जाग उठा और उसने पूछा कि, "क्या है?" जब तक अन्य लोग उपस्थित हो उस दुष्ट ने प्रहार करके उसकी हत्या कर दी। तदुपरान्त पीर मुहम्मद महलदार की भी तलवार के एक वार से हत्या कर दी। इसी प्रकार वह तथा एमादुलमुल्क नगी तलवार लिये हुए, जिससे रक्त टपक रहा था, बाहर निकले। अलीमुद्दीन ने जब यह दशा देखी तो एमादुलमुल्क पर तलवार चलाई। एमादुलमुल्क ने कहा, "सैयिद हरामखोर मत बन।" सैयिद ने कहा, "हे दुष्ट! हरामखोर तू है। तूने अपने आश्रयदाता की हत्या की है।" सैयिद ने तलवार उस दास की ओर फेकी। तलवार छत से टकराकर टूट गयी। सैयिद ने आगे बढकर टूटे हुए टुकडे को मलिक के सिर पर मारा। उसके थोडा-सा घाव लगा। सैयिद तथा मलिक बैरम की उसी स्थान पर हत्या हो गई। यह घटना १४ शाबान ९३२ हि० (२६ मई १५२६ ई०) को घटी

१ पुस्तक मे 'द्वितीय' है किन्तु इसे 'तृतीय' होना चाहिये।
२ यहा सुल्तान के 'शयनागार' से तात्पर्य है।
३ राजप्रासाद की देख-रेख करने वाला अधिकारी।

ईश्वर को धन्य है कि सुल्तान सिकन्दर को जो इतने ऐश्वर्य तथा वैभव के बाजार से होता हुआ अपने महल को पहुचा था एक क्षण भी व्यतीत न हुआ था कि एक टूटी हुई चारपाई पर, जिसके पाये निकले हुए थे और लटक रहे थे डालकर चम्पानीर नगर से १० कोस पर हालोल नामक स्थान पर ले जाकर दफन कर दिया गया।

दो घडी पूर्व चौगान के मैदान मे लोग सुल्तान की प्रतीक्षा कर रहे थे और प्रत्येक अभिवादन हेतु पतगे के समान व्यवहार कर रहा था। यदि वह अपने किसी तुच्छ दास के साथ किसी को कही भेजता तो वह सिर के बल जाता। उस समय सुल्तान सिकन्दर के जनाज़े की नमाज पढने के लिये दुष्ट दास के भय से ४० व्यक्ति भी एकत्र न हुए।

सुल्तान सिकन्दर की हत्या के उपरान्त वह स्वय सुल्तान के अन्त पुर मे पहुचा। वह सुल्तान मुजफ्फर के लघु पुत्र नसीर खा को, जिसकी अवस्था ५ अथवा ६ वर्ष की थी, गोद मे लेकर पहुचा और उसे सिहासनारूढ कर दिया। उसकी उपाधि महमूद शाह रखी। समस्त सैनिको ने उनका साथ दिया। (१९८) अमीरो, सैनिको तथा परिजनो ने उपस्थित होकर अभिवादन किया। अमीरो मे से केवल ३ व्यक्तियो ने बैअत न की।[1] एक खुदावन्द खा मसनदे आली जो सुल्तान मुजफ्फर का वजीर था और सुल्तान सिकन्दर ने भी जिसे वजीर रहने दिया था। दूसरा फतह खा बुद्ध सिन्धी का शाहजादा जो सुल्तान मुजफ्फर का जामाता था और सुल्तान सिकन्दर की सगी वहिन का जिससे विवाह हुआ था। तीसरा ताज खा तरियानी जो शाह आलम के रौजे का निर्माता था।

एमादुलमुल्क की सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान मुज़फ़्फ़र के प्रति नमकहरामी

गुजरात के विश्वस्त सूत्रो से ज्ञात हुआ है कि सुल्तान सिकन्दर के सिहासनारोहण के दिन बीबी रानी का दास खुशकदम, जिसकी उपाधि एमादुलमुल्क थी, हाथ मे छडी लिये हुए वजीरो के समान व्यवहार कर रहा था, कारण कि सुल्तान की माता बीबी रानी ने अपनी मृत्यु के समय सुल्तान का हाथ उसके हाथ मे दे दिया था। अत उस पापी के मस्तिष्क मे यह कुत्सित विचार आ गया था कि "सुल्तान के राज्यकाल मे विजारत का पद मुझे प्रदान किया जायेगा।" अत उसके सिहासनारोहण के दिन जब शहर के सम्मानित व्यक्ति बधाई हेतु आये तो उसने उनके विदा के समय निवेदन किया कि, "यदि आदेश हो तो इन लोगों को खिलअतों द्वारा सम्मानित किया जाय।" सुल्तान ने कहा कि स्वर्गीय सुल्तान के वज़ीरे आजम खुदावन्द खा से कहो कि प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार खिलअते प्रदान करे। यह सुनकर उस दुष्ट दास के हृदय मे ईर्ष्या की अग्नि धधक उठी। उसने उस समय कुछ न कहा। सुल्तान ने खुदावन्द खा को बुलवाया। वह उपस्थित होकर शाही सरापर्दे के बाहर खडा हो गया। एमादुलमुल्क ने उसे देखकर उपेक्षा की। वज़ीरे आज़म खुदावन्द खा नियम के विरुद्ध देर तक बाहर खडा रहा। सुल्तान के एक विश्वासपात्र ने निवेदन किया कि "खुदावन्द खा बाहर खडा हुआ है।" सुल्तान ने कहा, "उसे बुलवाओ।" उस समय एमादुलमुल्क ने ऐसा रूप धारण किया कि मानो उसे खान के आगमन की सूचना न हो। उसने बडी नम्रता से उच्च स्वर मे कहा, "खान जियु पधारे।" खुदावन्द खा (१९९) उपस्थित हुआ और उसने सुल्तान के चरणो पर सिर रखा और उसकी आखो मे आसू भर आये। सुल्तान भी रोने लगा और उसने खान को आलिंगन करके कहा कि, "विजारत का पद पूर्व की भाति

१ अधीनता की शपथ न ली।

तुम्हे शुभ हो।" खान ने निवेदन किया कि, "यह दास वृद्ध हो चुका है और अब मुक्त होने की अभिलाषा रखता है ताकि एक कोने मे बैठकर सर्वदा ईश्वर से इस राज्य के हित के लिये प्रार्थना किया करे।" सुल्तान ने कहा, "तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी इस कार्य के योग्य नही" और उसने विजारत का खिलअत खुदावन्द खा को प्रदान कर दिया। इस बात से उस दास के हृदय मे ईर्ष्या की अग्नि अधिक तीव्र हो गई।

कहा जाता है कि कुछ दिन उपरान्त एमादुलमुल्क ने अहमदाबाद नगर के कोतवाल को, जो ख्वाजासरा था, सुल्तान की अनुमति बिना तथा खुदावन्द खा से परामर्श न करके अपनी ओर से मुहिब्बुलमुल्क की उपाधि दे दी और उसके मसब मे वृद्धि करके उसे सुल्तान की सेवा मे लाया और कहा कि, "यह ख्वाजासरा बडी योग्यता मे सेवाए करता है। इस कारण इसे मुहिब्बुलमुल्क की उपाधि दी गई है और इसके मसब मे भी वृद्धि कर दी गई है।" सुल्तान ने कहा कि, "तूने यह उपाधि क्यो दी ? मै बालक नही हूँ। बुद्धिमान् तथा प्रौढ हू। तूने मेरे आदेश के बिना यह कार्य किया तो ठीक नही किया। मसब तथा उपाधि का सम्बन्ध खुदावन्द खा से है। वही वजीरे ममालिक है। जो कोई इसमे हस्तक्षेप करे वह अनधिकृत है।" उसने उसकी प्रार्थना रद्द कर दी।

क्योकि वह दास बडा ही उद्दड था और सेना उससे मिली हुई थी, अत खुदावन्द खा ने समय को देखते हुए निवेदन किया कि, "एमादुलमुल्क की प्रसन्नता के लिये उसे उपाधि दे दी जाय और किसी अन्य अवसर पर मसब मे भी वृद्धि करके उसे सम्मानित कर दिया जाय।" सुल्तान मौन रहा और इससे उसकी स्वीकृति का अनुमान लगा लिया गया। इस घटना के कारण वह दुष्ट दास बडा रुष्ट हुआ और तदुपरान्त अपने कार्यो के विषय मे सोचने लगा। अमीरो तथा सैनिको मे से जो लोग उससे मिले हुए थे उन्हे वह आश्रय प्रदान करता था, जो लोग उससे कम मिलते-जुलते थे उनका उपकार करके उसने उनका हृदय अपने हाथ मे लेना प्रारम्भ कर दिया। वह एक-एक को अपने घर बुलवाकर उसके विषय मे पूछता था कि, "तेरे कितने पुत्र है ? तूने उनका विवाह किया अथवा नही ?" वह उस विषय मे निवेदन करता। यदि वह अपनी दरिद्रता की चर्चा करता तो वह कहता कि, "मुझसे ऋण लेकर अपने पुत्रो का विवाह कर दे।" इस बहाने से वह लोगो को धन देकर लोगो से लिखवा लेता था। तदुपरान्त वह उनके सामने उन्हे फाड डालता था। इस प्रकार वह लोगो को अनुग्रहीत करता था। सुल्तान सिकन्दर को इस विषय में कोई (२००) सूचना न होती थी। वह युवावस्था की मस्ती मे इतना प्रसन्न था कि उसके लिये प्रत्येक दिन ईद का दिन होता था और प्रत्येक रात्रि शबेबरात होती थी। वह नित्यप्रति किसी न किसी वस्तु का आविष्कार करता रहता था, उदाहरणार्थ "जामए सिकन्दर शाही"[1] "रीशे सिकन्दर शाही"[2], भोगविलास की सामग्री मे से जो भी उसके हृदय मे आता वह एकत्र करता। उनमे से उसकी एक पत्नी थी जिसका नाम नाजुक लहर था। वह सुल्तान को बडी प्रिय थी। कहा जाता है कि उस युग मे गुजरात की समस्त स्त्रिया इस बात से सहमत थी कि नाजुक लहर के समान गुजरात के किसी भी बादशाह के अन्त पुर में कोई स्त्री न रही होगी अपितु समस्त गुजरात मे उसके समान रूपवती तथा सदाचारिणी कोई अन्य न होगी।" सुल्तान सिकन्दर के समान कोई युवक रूपवान् न था।

कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त नाजुक लहर सुल्तान बहादुर के अत-पुर मे प्रविष्ट हो गई। सुल्तान भी उससे अत्यधिक प्रेम करता था। जिस समय सुल्तान बहादुर ने मन्दू

१ सिकन्दरशाही वस्त्र।
२ सिकन्दरशाही दाढ़ी।

पर विजय प्राप्त की और समस्त मालवा प्रदेश अपने अधिकार मे कर लिया तो उसने एक दिन आदेश दिया कि उसके शिविर मे मन्दू नगर की समस्त डोमनिया, पातुर, कमाचीनी, परीशान तथा लूली उपस्थित की जाय। लगभग एक हजार स्त्रिया एक से एक उत्तम शृगार करके राज्य के विभिन्न भागो से प्रस्तुत की गई। कहा जाता है कि उनमे से अधिकाश बडी ही सुन्दर थी और कुछ सर्वसाधारण के अनुसार अद्वितीय थी। सुल्तान बहादुर ने एक एक को बुलवाकर इनाम प्रदान किया और विदा कर दिया। इसी बीच मे सुल्तान के एक विश्वासपात्र तथा विशेष अमीर शुजा खा ने निवेदन किया कि, "इन रूपवतियो मे से किसी की निगाह का बाण आपके हृदय के लक्ष्य पर भी लगा या नही ?" सुल्तान ने कहा, "शुजा खा ! मेरे अत - पुर मे एक ऐसी रूपवती है जिसकी सुन्दरता के सूर्य के समक्ष यह सब सितारो के समान मद हो जायेगी। मै तुझे उसे दिखलाऊगा।" कहा जाता है कि कुछ दिन उपरान्त नाजुक लहर ने, जब कि सुल्तान मस्ती की (२०१) दशा मे था कोई ऐसी बात करदी कि वह इतना रुष्ट हुआ कि उसने तलवार निकालकर उसे दो टुकडे कर दिया। उस समय उसने शुजा खा को जो वचन दिया था, उसका स्मरण किया। नाजुक लहर को लिहाफ मे लपेट कर शुजा खा को बुलवाया और कहा कि, "शुजा खा मैंने वचन दिया था कि उस सूर्य सरीखी युवती को मै तुझे दिखाऊगा। दुर्भाग्य से उसकी आज मृत्यु हो गई। तूने उसे उसके जीवनकाल मे न देखा। अब मृत्यु के उपरान्त देख ले कि वह कैसी थी।" यह कहकर उसने उसके शरीर से लिहाफ खीचा। शुजा खा ने देखा कि वह सूर्य के समान थी जो क्षितिज पर पहुच चुका हो और उस समय की लाली के समान उसके चारो ओर रक्त फैला था और चन्द्रमा की तरह वह दो टुकडे थी। वह भूमि पर गिर पडा और खेद प्रकट करते हुए कहने लगा कि, "यह कैसी दुर्घटना हुई।" सुल्तान भी बडा लज्जित हुआ और उसने भूमि पर सिर पटका किन्तु उससे क्या लाभ हो सकता था।

जब सुल्तान सिकन्दर सवार होकर कही जाता था तो स्त्री तथा पुरुष, जो कोई भी सुल्तान को देखता आसक्त हो जाता किन्तु सुल्तान के ऐश्वर्य के कारण किसी को इस विषय मे कुछ कहने का साहस न होता था। एक दिन एक व्यक्ति ने यह प्रदर्शित किया कि, "मै सुल्तान पर आसक्त हू।" सुल्तान ने यह समाचार सुनकर उसे बुलवाया और कहा कि, "यह सदाचारी है किन्तु निर्लज्ज ज्ञात होता है। इससे कहो कि इसे १०० अशर्फिया दी जायेगी और यह अब इस कार्य को पुन न करे अन्यथा इसके सिर के बाल तथा दाढी मुडवाकर गधे पर सवार करके इसे गली तथा बाजार मे अपमानित किया जायेगा।" उसने अशर्फियां लेना स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने अशर्फिया मँगवाकर उन्हे थैली मे बन्द करवाया और उसके गले मे लटकवा दिया। उसके सिर के बाल तथा दाढी मुडवाकर गधे पर सवार कराके गलियो और बाजारो मे घुमवाया ताकि कोई फिर झूठा दावा न करे। यदि वह अपने अपमान को पहले स्वीकार कर लेता तो उसे यह बुरा दिन न देखना पडता। जो कोई अपमान से भागा उसने आशिकी के सम्मान को नष्ट कर दिया। . .

जब सुल्तान सिकन्दर सिंहासनारूढ हुआ तो समस्त सैयिद, प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अन्य लोग बधाई हेतु उसकी सेवा मे पहुचे। केवल शाह बुद्ध इब्ने शाह शेख जियु बुखारी, जो बतुवा के सैयिदो मे सर्वश्रेष्ठ थे, सुल्तान सिकन्दर की शत्रुता के कारण न आये। सुल्तान की शत्रुता का कारण यह था कि जब बहादुर खा गुजरात से देहली चला गया तो कुछ समय उपरान्त शेख जियु की भी मृत्यु हो गई। सुल्तान सिकन्दर ने कहा, "पीर मुआ मुरीद जोगी हुआ" अर्थात् पीर की मृत्यु हो गई और मुरीद आवारा हो (२०३) गया। शेख बुद्ध ने कहलाया कि, "पीर की मृत्यु नही होती, तुम्हे भलि-भाँति ज्ञात होना चाहिये कि ईश्वर के मित्रो की मृत्यु नही होती। वे एक घर से दूसरे घर को चले जाते हैं। और न मुरीद आवारा होते हैं। लोगों ने कभी हमारा विरोध नही किया। तुम्हारी बादशाही बुलबुले के समान है। उसका

कोई स्थायित्व नहीं।" यह सुनकर सुल्तान की शत्रुता और बढ गई और बतुवा कस्बा, जिसका सम्बन्ध प्रतिष्ठित सैयिदो से था, सैयिद मुहम्मद बुखारी को, जिनकी उपाधि सादात खा थी और जो शाह आलम के पुत्रो मे से थे, प्रदान कर दिया, किन्तु उन्होने स्वीकार न किया।

अन्त मे शेख जियु का कथन पूरा हुआ। सुल्तान सिकन्दर का राज्य २ मास तथा १६ दिन तक रहा। सुल्तान के नमकहराम दास एमादुलमुल्क खुशकदम ने उसकी हत्या कर दी। बुजुर्गो ने कहा है कि 'ईश्वर जिसका विनाश करना चाहता है उसका दरवेशो से मतभेद करा देता है।' सुल्तान, सैयिद मीरान बिन सैयिद सुल्तान बिन शाह आलम का मुरीद था।

सक्षेप मे, सिहासनारोहण के दिन नसीर खा ने, जिसे एमादुलमुल्क ने सुल्तान महमूद की उपाधि दी थी, और जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, खिलअते, घोडे तथा उपाधिया अमीरो एव सैनिको को बाटी किन्तु जागीर जोकि खिताब का परिणाम है न प्रदान हुई। इस कारण लोग कहते थे कि, "उपाधि बिना जागीर अपमान की वस्तु है।" अन्त मे अधिकाश अमीर तथा सैनिक उसके इस दुष्कर्म से अर्थात् सुल्तान सिकन्दर की हत्या के कारण उसके रक्त के प्यासे हो गये, किन्तु सरदार के बिना वे कुछ न कर सकते थे। प्रत्येक अपनी-अपनी जागीर को चला गया। जब इस प्रकार अव्यवस्था उत्पन्न हो गई तो उसने इसके उपचार के लिये एमादुलमुल्क ऐलिचपुरी को लिखा कि, "यदि तुम इस समय सहायता करो और नद्रबार कस्बे तथा सुल्तानपुर तक पधारने का कष्ट करो तो यात्रा के बदले मे पर्याप्त धन प्रस्तुत किया जायगा।" इसी प्रकार का एक पत्र उसने राणा सागा को भी लिखा तथा उस क्षेत्र के जमीदारो को एकत्र करके बाबर बादशाह के पास भी प्रार्थनापत्र भेजकर सहायता की याचना की।

"तारीखे बहादुरशाही" का लेखक लिखता है कि, "मै उस समय बीर नगर[1] कस्बे मे था। मैने वहा से यह समाचार ताज खा को, जो धन्धूका मे था, पहुचाया कि 'एमादुलमुल्क ने बादशाह (बाबर) से सहायता की याचना की है। इस कारण गुजरात के सुल्तानो के हाथ से राज्य निकल जायगा। आप इस विषय मे उचित रूप से प्रयत्न करे और बहादुर खा को भी पत्र लिख कर किसी द्रुतगामी दूत के हाथ शीघ्रातिशीघ्र प्रेषित करे।" उस समय बहादुर खा जौनपुर के अमीरो के निमत्रण पर पानीपत से, जहा (२०४) सुल्तान इबराहीम का बाबर बादशाह से युद्ध हो रहा था, (सुल्तान इबराहीम से) विदा हुये बिना जौनपुर की ओर प्रस्थान करने के लिये पानीपत के उद्यान मे ठहरा हुआ था। उसी स्थान पर पायदह खा अफगान उपर्युक्त अमीरो[2] के पास से बहादुर खा की सेवा मे पहुचा और निवेदन किया कि, "जौनपुर की अक्ता के समस्त अमीर आपको अपना बादशाह समझकर आपकी प्रतीक्षा कर रहे है। उन्होने मुझे आपकी सेवा मे इस आशय से भेजा है कि मै आपको वहा का हाल बताकर आपसे वहा पधारने के लिये आग्रह करू। आपके लिये यह यात्रा शुभ हो। आप विलम्ब न करे।"

सुल्तान उस ओर प्रस्थान करने वाला ही था कि इसी बीच मे खुर्रम खा का पत्र, जिसमे सुल्तान मुज़फ्फर के निधन तथा सुल्तान सिकन्दर के सिहासनारोहण का उल्लेख था, प्राप्त हुआ। उसमे यह भी लिखा था कि "अमीर तथा सैनिक आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे है। यदि आप इस समय शीघ्राति-शीघ्र पहुच जायेगे तो विश्वास है कि राज्य के कार्य आपके अधिकार मे आ जायेगे, कारण कि सुल्तान सिकन्दर से प्रजा तथा सेना असतुष्ट है।" पत्र प्राप्त होने के उपरान्त वह तीन दिन तक उसी स्थान पर

१ फ़रीदी के अनुसार 'बाद नगर'।
२ जौनपुर के अमीर।

ठहरा रहा और उसने शोक-सम्बन्धी प्रथाओ को सम्पन्न कराया। चौथे दिन उसने पायदह खा को विदा कर दिया और वहा से शीघ्रातिशीघ्र गुजरात की ओर प्रस्थान किया।

जब वह चित्तौड पहुचा तो मुईनुद्दीन अफगान का पुत्र अली शेर[1] जो सुल्तान सिकन्दर की हत्या के उपरान्त गुजरात से बहादुर खा की सेवा मे रवाना हुआ था, पहुच गया। उसने सिकन्दर खा की हत्या, एमादुलमुल्क की नमकहरामी तथा नसीर खा के सिहासनारोहण का हाल एक-एक करके बताया। बहादुर खा ने कहा, "ईश्वर ने चाहा तो मै मुहमदाबाद पहुचकर उस नमकहराम को सूली पर लटकवा दूँगा।" वह वहा से भी रवाना हो गया। चाद खा शाहजादा, जो उसके साथ था, इस स्थान से उससे पृथक् होकर मादू के बादशाह सुल्तान महमूद के पास चला गया। चाद खा का भाई इबराहीम खा बहादुर खा के साथ रवाना हुआ। वहा से वह दूगरपुर पहुचा। यह समाचार पाकर ताज खा धन्दूका से सुल्तान की सेवा मे रवाना हो गया।

इसी बीच मे शाहज़ादा लतीफ खा ने धन्दूका के समीप पहुच कर ताज खा के पास सन्देश भेजा कि, "यदि खान मेरा साथ दे तो गुजरात का समस्त शासन-प्रबन्ध मै उसे सौप दूँगा।" ताज खा ने लतीफ खा को कुछ धन भिजवाकर निवेदन कराया कि, "मै इससे पूर्व अपने आपको बहादुर खा से सम्बन्धित कर चुका हू। अब मै इसके विरुद्ध कुछ नही कर सकता। आपके लिये यही उचित है कि आप एकान्त-वास ग्रहण कर ले।"

(२०५) सक्षेप मे बहादुर खा के आगमन तथा अमीरो के उससे मिल जाने के समाचार पाकर एमादुलमुल्क तथा उसके सहायक काप उठे। एमादुलमुल्क ने अज्दुलमुल्क कुष्टरोगी को शाही पायगाह[2] से ३०० घोडे तथा फीलखाने[3] से ५० हाथी प्रदान करके मोरासा की थानेदारी हेतु नियुक्त किया और आदेश दिया कि, "वह उस स्थान पर रहे और किसी को भी बहादुर खा के पास न जाने दे।" अज्दुल-मुल्क उस ओर रवाना हो गया। इसी बीच मे रजी-उल-मुल्क तथा खुर्रम खा मुहमदाबाद से निकल कर बहादुर खा की सेवा मे रवाना हुये। बहादुर खा कबीर पच[4] कस्बे मे जो महमूदनगर[5] कहलाता है, पहुंचा। उसके कुछ विश्वासपात्र, आजम इब्न पीरू, मलिक यूसुफ बिन लुत्फुल्लाह, राजी मुहम्मद बिन फरीद तथा मलिक मसऊद इत्यादि जिन्होने एमादुलमुल्क के भय से भागकर एकान्तवास ग्रहण कर लिया था, उसकी सेवा मे उपस्थित हुये। बहादुर खा वहा से मोरासा पहुचा। मोरासा से वह हरसोल और हरसोल से सिगार गाव पहुचा। इसी बीच मे खुर्रम खा, रजी-उल-मुल्क तथा मुजफ्फर शाह के अधिकाश अमीरो ने पहुचकर बहादुर शाह के चरणो के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। दूसरे दिन उसने अपने शिविर नहरवाला मे लगवाये।

१ फ़रीदी के अनुसार 'सैयिद शेर' (पृ० १५०)।
२ अश्वशाला।
३ गजशाला।
४ फ़रीदी के अनुसार एक पोथी मे 'कपड वंज' तथा एक मे 'भगरेच' (पृ० १५१)।
५ फ़रीदी के अनुसार 'मुहम्मदनगर' (पृ० १५१)।

ज़फ़रुल वालेह बे मुज़फ़्फ़र व आलेह

भाग १

(लेखक अब्दुल्लाह् मुहम्मद बिन उमर अल हाजुद्दबीर)

(प्रकाशन—लन्दन १९१० ई०)

अबुल जूद मुईज़ुद्दीन मुहम्मद शाह बिन अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह इब्न मुज़फ़्फ़र शाह

वह ७ रबी-उल-आखिर ८४६ हि० (१६ जुलाई १४४२ ई०) मे अहमदाबाद मे सिहासनारूढ हुआ। उसने अपने पिता के वजीरो तथा अधिकारियो की ओर (अपने पिता की ही भाति) कृपादृष्टि रखी। उसके पिता के राज्यकाल मे जिस व्यक्ति को जो नेमते[1] प्राप्त थी उन्हे उसने उसी प्रकार रहने दिया और उसमे परिवर्तन नही किया।

क़ुतुब शिहाबुद्दीन शेखी बरकती सैयिदना शेख अहमद सरीखीज के अधिकारी का जन्म तथा मृत्यु

मैंने इसे अबी हामिद इस्माईल बिन इबराहीम की शरह[2] से सकलित किया है जो उस पुस्तक पर है जिसे कुतुबुल आरेफीन मौलाना शेखुल इस्लाम शिहाबुद्दीन अहमद सरखीज के अधिकारी ने आबिद[3] मुजाहिद सुल्तान अहमद बिन मुहम्मद बिन मुजफ्फर के नाम से शेख के जन्म, मृत्यु तथा अवस्था के विषय मे सकलित किया है। उसमे इस प्रकार लिखा है कि नागौर के अधीनस्थ खत्तू नामक स्थान मे (२) ७३७ हि० (१३३६-३७ ई०) मे उनका जन्म हुआ और बृहस्पतिवार १४ शव्वाल ८४९ हि० (१३ जनवरी १४४६ ई०) को सध्यापूर्व अपने निवास-स्थान सरखीज मे मृत्यु को प्राप्त हुए। टीकाकार ने इस घटना पर शोक प्रकट करते हुए जो कविता लिखी है उसका भी उल्लेख किया है। उसका प्रथम छन्द इस प्रकार है

"हमारे हृदय पर एक बहुत बडी विपत्ति आ गई है।
हमारा उदाहरण मिट्टी सरीखा है और वह शोक पर्वत के समान है।"

एक कवि ने सुल्तान मुहम्मद के दरबार मे दो छन्दो मे उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया है और उसके प्रति जो शुभकामनाये की है उससे उसकी मृत्यु की तिथि का भी पता चलता है। ये छन्द भी बडे उत्तम है

"जब शेख अहमद लोक तथा परलोक के इमाम[4] (ने),
स्वर्ग की ओर प्रसन्नतापूर्वक प्रस्थान किया।

१ पद इत्यादि।
२ टीका।
३ उपासक, धर्म-युद्ध करने वाला।
४ नेता।

युद्ध हेतु कोथरा तक पहुच गया। ये दोनो स्थान चम्पानीर के अधीनस्थ दृढ स्थानों मे है और मन्दू के समीप है। फिर खलजी अपने राज्य की ओर लौट गया। रुग्णावस्था के कारण मुहम्मद शाह भी बडा ही शक्तिहीन तथा परेशान हो गया था। उसने अपने घोडे की लगाम अहमदाबाद की ओर मोड दी।

सुल्तान की मृत्यु

८ मुहर्रम ८५५ हि० (१० फरवरी १४५१ ई०) को मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई और वह अपने पिता की क़ब्र के समीप एक ही गुम्बद मे दफन कर दिया गया। दोनो की क़ब्रे एक दूसरे से मिली हुई है। जब वह सिहासनारूढ हुआ तो उसकी अवस्था १९ वर्ष की थी। उसका जन्म सुल्तानपुर मे हुआ था। सुल्तानपुर नद्रबार के समीप है, उसी के कारण उसका नाम सुल्तानपुर रखा गया। वह एक चहारदीवारी से घिरा हुआ है। उसकी जब मृत्यु हुई तो उसकी अवस्था २८ वर्ष की थी। यह वही व्यक्ति है जिसने खाने ख़ाना इब्न अहमद बहमनी को पराजित किया और दौलताबाद पर चढाई की। इसका उल्लेख उसके पिता के इतिहास मे किया जा चुका है। वह बडा प्रतापी बादशाह, उत्कृष्ट सरदार तथा घुडसवार था। वह बडा वीर था। उसके आदेशो का पालन किया जाता था। वह दानी भी था, मानो यह उसी के विषय मे कहा गया हो

"वह लाखो प्रदान करता है
इसी कारण उसे लखबख़्श[1] कहा जाता है।"

वह बडा सदाचारी था, उसके निर्माण कराये हुए भवन बडे ही सुन्दर है। उसके उपरान्त उसका पुत्र अहमद सिहासनारूढ हुआ।

अबुल फ़ज़्ल क़ुतुबुद्दीन अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह इब्न अहमद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह

११ मुहर्रम ८५५ हि० (१३ फरवरी १४५१ ई०) को अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह सिहासना-(४) रूढ हुआ। वह अपने राज्यकाल मे सभी श्रेणियो के लोगो के साथ उदारतापूर्वक व्यवहार करता था, विशेषकर उन पदाधिकारियो के प्रति जो उसके पिता के राज्यकाल मे भी सेवा करते थे। उसने अपने पिता के पदाधिकारियो मे से किसी को भी पदच्युत नही किया। उसका राज्यकाल कुशलतापूर्वक तथा भली-भाति व्यतीत हुआ।

महमूद खलजी से युद्ध

उसके पिता के इतिहास मे इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि ख़लजी दहयूद तक पहुच गया था। कुतुबुद्दीन उस समय ईदर की विलायत[2] मे था। जब उसने यह सुना तो वह अपने पिता के पास पहुँच गया। सयोग से उसके पिता की मृत्यु हो गई और ख़लजी वापस लौट गया। तदुपरान्त वह (खलजी) सेना को तैयार करके वापस हुआ। उसकी सेना मे १ लाख अश्वारोही तथा ५०० हाथियों से अधिक थे। कुतुबुद्दीन को इसकी सूचना मिली। अपने पिता की मृत्यु की शोक सबन्धी प्रथाओ को

१ लाख प्रदान करने वाला।
२ राज्य।

सम्पन्न कराने के उपरान्त उसने आदेश दिया कि उसका शिविर महमूदपुर मे भेज दिया जाय। फिर उसने महेन्दी नदी की ओर प्रस्थान किया और वहा पहुच कर पडाव किया। महमूद खलजी जब सुल्तानपुर पहुचा तो वहा अलाउद्दीन सोहराब सुल्तानी था। महमूद खलजी ने उससे अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा। सोहराब सुल्तानी उसके पास पहुच गया और अपना परिवार खलजी को सौप दिया। उसने उसे तलीयतुल अस्कर[1] नियुक्त किया। इसी बीच मे खलजी को मुहम्मद शाह की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। वह बाबागूर के दर्शनार्थ रवाना हुआ और भरौच की ओर प्रस्थान किया। वह सारसा ग्राम मे पहुचा। जब वह पालरी मे पहुचा तो उसने भरौच के अमीर मर्जान सुल्तानी को अपनी आज्ञाकारिता स्वीकार करने के लिये कहा। उसने उसे स्वीकार नही किया। इस पर उसने भरौच के अवरोध का आदेश दे दिया। सोहराब ने कहा कि, "भरौच की विजय मे इतना समय लग जायगा जितने मे राजधानी की विजय की जा सकती है, और राजधानी की विजय के उपरान्त भरौच की विजय मे कोई बात बाधक नही हो सकती।" यह सुनकर खलजी ने बरौदरा का सकल्प किया। खलजी के पास एक मस्त हाथी था जो सेना के आगे-आगे चलता था। बरनामा के हौज़ पर उसकी हत्या कर दी गई। यह घटना इस प्रकार घटी कि ब्राह्मणो का एक समूह उस तालाब के तट पर था। उनमें से कुछ लोग भोजन बनाने मे और कुछ स्नान करने मे, जैसा कि भोजन के समय उनकी प्रथा है, व्यस्त थे। यह हाथी उनके पास पहुच गया। उस अवसर पर उनके पास उसकी हत्या के अतिरिक्त रक्षा का कोई अन्य उपाय न था। जैसा कि कहा गया है कि सख्या की अधिकता वीरता पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेती है, वे सब लोग उस पर टूट पडे और उसकी हत्या कर दी, यद्यपि वे तलवार चलाने वाले न थे। यह वैसी ही बात थी जैसी कि कहा गया है कि कभी कभी मच्छर हाथी की हत्या कर देता है। जब खलजी को यह पता चला तो उसे बडा आश्चर्य हुआ।

सुल्तान महमूद गजनवी के विषय मे भी एक इसी प्रकार की कहानी का उल्लेख किया जाता है। (५)जब वह नहरवाला मे युद्ध कर रहा था तो एक दिन शिकार हेतु निकला। उसने देखा कि एक कुत्ता एक खरगोश पर झपटा। खरगोश पलट गया और उसने कुत्ते का मुकाबला किया। उसने भी वही किया जो खलजी ने किया था। औफी ने अपने इतिहास मे लिखा है कि जब उसने खरगोश को देखा कि उसने कुत्ते पर आक्रमण किया है और उससे युद्ध करने पर कटिबद्ध हो गया है तो उसने गर्दन झुका ली। जो कुछ देखा था उस पर आश्चर्य करते हुये उसने अपना सिर उठाया, खरगोश ने वह किया जो खलजी ने किया था। नहरवाला शक्ति तथा बल से ४१६ हि० मे विजय हुआ।

बरौदरा मे खलजी के पास गगदास इत्यादि वहा के निवासी एकत्र हो गये और उन्होने महेन्द्री नदी के पार करने का सकल्प किया। गगदास ने कहा कि, "सवार के लिए उसमे प्रविष्ट होना बडा कठिन है। उसे जलाब[2] के अतिरिक्त किसी अन्य साधन से पार नही किया जा सकता। वहा कुतुबुद्दीन पहले ही से डट गया है, अबयाली की ओर से सुगमतापूर्वक नही पार की जा सकती है।" खलजी ने इसका सकल्प किया और वहा से कबीरपज की ओर नदी पार की। सोहराब पीछे रह गया और उसके साथ जो खलजी सरदार थे, उनसे उसने कहा कि, "कुशलतापूर्वक जाओ और अपने स्वामी से कहो कि मेरी शपथ पूरी हो गई। मैंने इस बात की शपथ ली थी कि मै अपने स्वामी से विश्वासघात न करूगा। स्वामी से मेरा तात्पर्य कुतुबुद्दीन से था। उससे तात्पर्य खलजी नही था।" फिर उसने थनेसर से नदी पार की

१ सेना के अग्रिम भाग, जो शत्रु के विषय मे पता लगाने के लिये भेजा जाता है, का सरदार।
२ सम्भवत नौका।

और कुतुबुद्दीन से जाकर मिल गया। कुतुबुद्दीन उससे बडा प्रसन्न हुआ ओर उससे पूछा कि "खलजी से उसका व्यवहार किस प्रकार का रहा?" उसने उत्तर दिया कि, "जब मैंने यह देखा कि उसकी बात न मानना उसे इससे नही रोक सकता कि वह किले को शक्ति से विजय करे तो मैं उतने समय के लिए उससे मिल गया। अब मै अपने स्वामी के पास आ गया?" कुतुबुद्दीन ने उससे सहमत होते हुए पूछा कि, "अब तेरी पत्नी तथा बालको की क्या दशा होगी?" उसने उत्तर दिया कि, "पत्नी दूसरी मिल सकती है, अब रह गये बालक तो यदि अल्पावस्था ही मे उनकी हत्या हो गई तो क्या बात है? क्योकि बडे होने पर भी उनका परिणाम स्वामी की सेवा तथा स्वामिभक्ति मे यही होता, तो फिर उन्होने अपना उत्तरदायित्व पूरा कर दिया। अब पिता की बारी है और वह इसके लिए उपस्थित हो गया है।" कुतुबुद्दीन ने उसके प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए उसे अलाउलमुल्क उलुग खा की उपाधि दे दी। तदुपरान्त उससे खलजी के विषय मे पूछा। उसने उत्तर दिया कि, "उसके पास बहुत बडी सेना तथा शक्ति है। वह स्वय बडा सावधान रहता है और सहायता तथा विजय तो केवल ईश्वर की ओर से हो सकती है। उसने कबीरपज जाने के लिए नदी पार कर ली है, अत यही उचित है कि उस पर आक्रमण करने मे जल्दी की जाय। इस पर कुतुबुद्दीन सशस्त्र तथा बिना शस्त्र के ४० हजार अश्वारोही लेकर खलजी से युद्ध करने के लिए कबीरपज की ओर चल दिया।

सन्तो की सहायता

कुतुबुद्दीन की सहायतार्थ नि सदेह परोक्ष से लोग आये। हुसाम खा ने अपने 'तबकात' नामक ग्रन्थ मे लिखा है कि, "नहरवाला मे, युद्ध के दिन सब्जे[1] घोडो पर, सफेद वस्त्र धारण किये हुए, जामा मस्जिद के द्वार पर बहुत से लोग देखे गये। वही एक कुब्बा[2] है जिसमे सुल्तानुस्सालेहीन मिनहाजुल आबेदीन किबलतुल आरेफीन, मदारुस्सालेकीन नहरवाला के स्वामी तथा सहायक और उसके कुतुब मौलाना शेख हुसामुद्दीन की कब्र है। इस कुब्बे के एक कोने मे कोई धर्मनिष्ठ व्यक्ति लेटा हुआ था। (६) उसने सुना कि कोई व्यक्ति यह कह रहा है कि, 'सहायता के लिए शीघ्र तैयार हो जाओ।" कुब्बे से यह उत्तर मिला कि, 'फिर नगर की रक्षा कौन करेगा?' इसके उत्तर मे कहा गया कि, 'बीबी आराम रक्षा करेगी।' फिर कुब्बे मे से एक अश्वारोही निकला और उनसे जाकर मिल गया। वे लोग तदुपरान्त अदृश्य हो गये। आलमुल आमिल, कामिलुल वासिल, मौलाना शेख कासिम बिन मुहम्मद दोहर के विषय मे, जो प्रसिद्ध खान सरवर हौज पर विद्यार्थियो को शिक्षा प्रदान किया करते थे, यह सुना गया है कि वे सलाम का उत्तर दे रहे हैं। जब वे पाठ पढा चुके तो एक व्यक्ति ने जो उनका विश्वासपात्र था इस विषय मे पूछा। उन्होने उत्तर दिया कि 'इस देश के वलियो[3] ने उसके बादशाह कुतुबुद्दीन की सहायता की ओर ध्यान दिया है और जब वे मेरे पास से गुजरे तो उन्होने मुझे सलाम किया। मैंने उनमे से प्रत्येक के सलाम का उत्तर दिया। उन्होने मुझसे मैत्रीपूर्ण प्रश्न किया तो मैंने इसे पर्याप्त समझा[4]।' कुछ लोगो ने यह भी कहा कि जो सवार मस्जिद मे प्रविष्ट हुआ था वह, 'जल्दी करो जल्दी करो' का नारा लगाता था। उत्कृष्ट व्यक्तित्व वाले, मौलाना सैयिद हसन खिंगसवार थे, खिंग सिह को कहते

१ वह घोड़ा जिसकी सफ़ेदी मे स्याह रंग की झलक हो।
२ गुम्बद।
३ सन्तो।
४ इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं।

हैं। बीबी आराम उनकी बहिन है ईश्वर उन दोनो से हमे लाभ उठाने का सौभाग्य प्रदान करे।"

मै कहता हू कि यह विषय कि मनो ने कुतुबुद्दीन की सहायता की एक चुटकुला है जिसका उल्लेख घटनाओं की चर्चा करने वाले तथा उनके साथी निरन्तर किया करते है। यह चुटकुला इस विषय को स्पष्ट करता है कि, "उन्हे ईश्वर के पास से सब वस्तुये प्राप्त हैं जिनकी वे इच्छा करते है।" इस चुटकुले का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि मुहम्मद शाह के राज्यकाल मे अपने समय के अद्वितीय व्यक्ति, मालवा के शेख कमाल गुजरात पहुचे, उन पर ऋण था जिसे अदा करने के लिए उनसे कहा गया। वे उस समय उसे दे न सकते थे। फिर उन्होने खलजी को इस विषय मे लिखा और यह कहा कि, "यदि वह इस ऋण को अदा कर देगा तो गुजरात उसके लिए स्वीकार कर लिया जायेगा।" खलजी ने जो कुछ पत्र मे लिखा था उसे स्वीकार कर लिया। जब खलजी तथा कुतुबुद्दीन के मध्य मे युद्ध का समय आया और जब दोनो युद्ध के लिए एक दूसरे के समक्ष आये तो तुच्छ सम्मान वाले वली, तरीकत[1] और हकीकत[2] के बादशाह, जिनसे शहूद[3] की कोई मजिल बाकी नही रह गई थी फातमा जहरा की सतान, मुहम्मद साहब के रहस्य के ज्ञाता, मौलाना बुरहानुद्दीन कुतुब आलम ने अपने पुत्र मौलाना मझन शाह आलम को मालवा (७) के शेख कमाल के पास इस आशय से भेजा कि वे कुतुबुद्दीन के लिए शुभकामनाये करे और सहायता प्रदान करे। उन्होने उत्तर दिया कि, "अब तो ऐसा हो गया और एक सज्जन पुरुष ने जो वचन दे दिया था उसे पूरा कर दिया।" शाह आलम ने इस पर कहा कि, "यदि इसका कारण ऋण है तो मेरे पिता इस बात का उत्तरदायित्व लेते हैं कि वे उसे अदा कर देगे।" मालवा के शेख कमाल ने इसका उत्तर यह दिया कि, "आदेश हो चुका है। लिखा जा चुका और उस पर मुहर हो चुकी।" इस पर शाह आलम ने कहा कि, "यदि मै आपके पास वह वस्तु ला दू जो इसके अतिम निर्णय की सूचना दे?" तो शेख ने उत्तर दिया कि, "उस समय इसके आदेश का प्रभाव न रहेगा।" इस पर शाह आलम ने अपनी जेब से एक परवाना निकाला, जिस पर उनके स्वामी की मुहर लगी हुई थी जिसे केवल उसके (रहस्य के) ज्ञाता ही जानते हैं। ईश्वर की दया बडी विशाल है। जब मालवा के शेख कमाल ने यह देखा तो कहा कि, "अब मै भी उसका अनुसरण करते हुए, जिसने कुतुबुद्दीन को विजय के लिए नियुक्त कर दिया है, कुतुबुद्दीन के लिए प्रार्थना करूगा।" फिर उन्हे शेख ने दो बाण दिये ताकि कुतुबुद्दीन अपने शत्रुओ पर उन्हे चलाये। शाह-आलम ने बाणो को अपने पास रख लिया और उन्हे लेकर अपने पिता के पास आये। उन्हे देखकर उनके पिता मुस्कराये। शाह आलम ने कहा कि, "वे उस समय तक सतुष्ट न हुए जब तक कि मैने उनके विषय मे ईश्वर का आदेश हो चुका है उसकी सूचना न दे दी।" तदुपरान्त व्यर्थ के रक्तपात को रोकने के लिए उन बाणो के दोनो फल बाणो से पृथक् कर दिये और उन्हे सुल्तान के पास भेज दिया। फिर जो कुछ होना था वह हुआ। हे ईश्वर! तू हमे उनके आशीर्वाद से लाभ पहुचा और उन्हे जो कुछ प्रदान हुआ है, उसमे से हमारे लिए भी कोई भाग निश्चित कर और जब कि तूने उनके लिए अपने अस्तित्व से सबधित निर्णय कर दिया है तो फिर हमे उनके लाभ से वचित न रख। कुछ लोगों ने इस घटना को मौलाना शेख कमाल, जो मालवी के नाम से प्रसिद्ध हैं, से सम्बन्धित किया है। वे ईलमपुर मे खुदावन्द खा की मस्जिद के समीप

१ सूफियों की आध्यात्मिक यात्रा का मार्ग।
२ ईश्वर की वास्तविकता। सूफियों के आध्यात्मिक मार्ग का एक उच्च लक्ष्य।
३ ईश्वर का साक्षात्कार।

दफन है। खुदावन्द खा मलिक ईलम के नाम से प्रसिद्ध है। ईलमपुर राजधानी अहमदाबाद के समीप है। शेख मालवी तथा खलजी के मध्य मे सम्बन्ध थे और पत्र-व्यवहार भी होता था। वे खलजी के लिए गुजरात के राज्य की शुभकामना भी किया करते थे। एक बार उसने (खलजी ने) उनके पास ५०० सोने के तन्के भेजे। सुल्तान मुहम्मद को उनके विषय मे यह ज्ञात हुआ कि सोना उन्हे (शेख को) बडा प्रिय है। उस सोने के लिए जो महमूद खलजी के पास से उनके पास आता था, उन्होने कुरान शरीफ के खोल को थैली के समान बना लिया था। यह खोल कुरान शरीफ से कभी पृथक् न होता था। सुल्तान मुहम्मद ने सच बात का पता लगाने का प्रयत्न किया तो उसे यह ज्ञात हुआ कि, "जो समाचार मिला है वह ठीक है।" फिर उसने एक व्यक्ति को भेजा जिसने जबरदस्ती उसमे से सोना निकाल लिया और उसे खज़ाची को सौप दिया। इसका शेख पर बडा प्रभाव हुआ। वे ईश्वर से उसकी शिकायत करते थे और प्रार्थना करते थे कि गुजरात का राज्य महमूद को प्राप्त हो जाय। इस प्रार्थना के स्वीकार होने के चिह्न उन्हे ज्ञात हुए। उन्होने महमूद को पत्र लिख दिया जिसमे उसे गुजरात का राज्य प्राप्त होने की सूचना दी और उससे प्रार्थना की कि वह इस पर अधिकार जमाने के लिए रवाना हो जाय। खलजी ने ऐसा ही किया। सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु हो गई और कुतुबुद्दीन सुल्तान बना। सेना की कमी के कारण वजीर एकत्र हुए और उन्होने यह कहा कि इस वश का राज्य मखदूम जहानिया[1] के आशीर्वाद से स्थापित है अत: यह उचित होगा कि उनके पुत्र, कुतुब आलम से इस विषय मे सहायता मागी जाय। अत उन्होने कुतुबुद्दीन को उनकी सेवा मे उपस्थित किया और उनसे सहायता की याचना की। कुतुब आलम ने उसे सहायता का वचन दे दिया और फिर कहा कि, "यह कष्ट उस धृष्टता का परिणाम है जो सुल्तान मुहम्मद ने दरवेश के सम्बन्ध मे की थी। ईश्वर ने चाहा तो इसका समाधान हो जायेगा।" सब इस बात पर सहमत थे (८) कि यह कार्य केवल शाह आलम द्वारा ही सम्पन्न हो सकता है। कुतुब आलम ने उत्तर दिया कि, "हा, यह कार्य केवल शाह आलम ही कर सकेगा।" फिर शाह आलम को शेख के पास भेजा गया और यह कहलाया गया कि "एक का पाप दूसरे के सिर पर नही लादा जा सकता। कुतुबुद्दीन से उसके पिता के अपराधो का बदला नही लिया जा सकता, अत यह उचित होगा कि खलजी को यह लिख दिया जाय कि वह अपने राज्य को वापस चला जाय।" शाह आलम ने शेख के पास जाकर यह सदेश पहुचाया। शेख ने उसका वह उत्तर नही दिया जिससे वे (शाह आलम) सहमत होते। शाह आलम वापस चले गये और जो कुछ सुना था उसे बयान किया। कुतुब आलम ने कहा कि, "उनके पास फिर वापस जाओ और यह कहो कि फकीरो का कार्य अपराध क्षमा करना है और प्राणियो के आराम पर दृष्टि रखना है, अत यह उचित होगा कि आप खलजी को जैसा कहा गया है वैसा ही लिख दे।" शाह आलम वापस होकर मालवा के शेख कमाल के पास गये और उन्हे यह सदेश पहुचाया, किन्तु उनका क्रोध और बढता ही गया। शाह आलम उनके पास से वापस आ गये और जो हाल देखा था वह बता दिया। कुतुब आलम ने शाह आलम को तीसरी बार पुन शेख के पास जाने का आदेश दिया और यह कहा कि, "जाकर उनसे यह कहो कि दास बुरहानुद्दीन आपके चरण चूमता है और आप को मुहम्मद साहब के प्रेम की शपथ देता है कि जो कुछ हो गया है उसे क्षमा कीजिये और परोपकार कीजिये। क्योकि यदि किसी घर के किसी पुरुष से किसी प्रकार की कोई कठोरता होती है तो उस घर के रहने वाले उसे सहन नही कर सकते।" शाह आलम पुन शेख की सेवा मे पहुचे। शेख ने उत्तर दिया कि, "मै ७ वर्ष से महमूद खलजी के लिए राज्य की शुभ

१ मख़दूम जहानियां जहांगश्त—जन्म ८ फ़रवरी १३०८ ई० तथा मृत्यु ३ फ़रवरी १३८४ ई०। वे उच्छ मे दफ़न है। वे अत्यधिक यात्रा करने के कारण जहानियां जहांगश्त कहलाते हैं।

कामना कर रहा हू और यह प्रार्थना अब स्वीकार हो चुकी। महमूद फकीरो का मित्र है तो ऐसी अवस्था मे मैं उससे किस प्रकार प्रार्थना करू और उसे ऐसे व्यक्ति के लाभार्थ वापस कर दू जिसके पिता ने मुझ पर अत्याचार किया है, यह नही हो सकता।" फिर उन्होने अपना हाथ ऊपर उठाया उसमे कोई ऐसी वस्तु थी जो कागज के समान थी। उसे उन्होने शाह आलम को दिया और कहा कि, "यह खलजी के नाम राज्य का परवाना है, अत इसके विरुद्ध प्रयत्न करने से कोई लाभ न होगा। अपने पिता के पास लौट जाओ और इस घटना की सूचना दे दो।" यह सुनकर हाशमी[1] की मर्यादा को ठेस लगी और उन्होने (शाह आलम ने) उस कागज को टुकडे टुकडे कर डाला और कहा कि, "यह परवाना दैवी आज्ञा से जारी हुआ है किन्तु यह कुतुबुल अकताब तक नही पहुचाया गया अत इसे कोई महत्व नही दिया जा सकता।" उस समय शेख की चेतना का अत हो गया और उन्होने जो कुछ भाग्य मे लिखा जा चुका था उसे स्वीकार किया। फिर उन्होने कहा कि, "सैयिद के पुत्र ने हिसा प्रदर्शित की" और उनकी मृत्यु हो गई। शाह आलम वापस चले गये। कुतुब आलम ने कहा कि "तुमने शीघ्रता से कार्य किया। सहनशीलता से कार्य लेना चाहिये था।"

तदुपरान्त कुतुबुद्दीन ने कुतुब आलम से प्रार्थना की कि "शाह की छत्रछाया शाह आलम द्वारा मुझ पर रहे ताकि मैं उन वस्तुओं की ओर से जिसकी मुझमें शक्ति नही है निश्चित रहूँ।" इस पर शाह आलम से कुतुब आलम ने कहा कि, "कुतुबुद्दीन पर महमूद ने अत्याचार किया है और पीडित की सहायता करना एक अच्छा कार्य है अत इस आक्रमण मे तुम उसकी सहायता करो और उसके साथ चले जाओ।" शाह आलम कुतुबुद्दीन के साथ नगर से युद्ध के उद्देश्य से निकले किन्तु दूसरे पडाव पर सयोग से जल का इतना अभाव हो गया कि तहज्जुद[2] की नमाज के वजू[3] के लिए भी पर्याप्त जल न मिल सका। फिर जब दिन निकला तो उन्होंने कुतुबुद्दीन से कहा कि, "सेना की जलवायु दूषित हो गई है और मार्ग मे लोगों के आने-जाने की अधिकता के कारण मुझे ईश्वर के ध्यान मे कठिनाई होती है अत मैं शीघ्र तुम्हारी अनुमति से चला जाऊगा, किन्तु विजय के विषय मे तुम्हे कोई सदेह नही होना चाहिये। वह तुम्हारे नाम पर निश्चित हो चुकी है।" इस पर कुतुबुद्दीन ने उनसे आशीर्वाद हेतु उनकी तलवार मागी। उन्होने उत्तर दिया कि, "तलवार, डडा, जूता, चादर और जो कुछ भी फकीरो के लिए है उसमे जीव होता है। (९) तुम सम्मानित बादशाह हो। सभव है कि तुम उन वस्तुओ के सबध मे कोई ऐसा कार्य कर डालो जो उनके योग्य न हो तो ऐसी दशा मे तलवार से हानि हो सकती है।" इस पर कुतुबुद्दीन, शाह आलम के चरणों पर गिर पडा और उन्हे चूमने लगा। तदुपरान्त यह कहा कि, "मुझसे अपने आश्रयदाता के प्रति किस प्रकार कोई धृष्टता हो सकती है?" शाह आलम ने उत्तर दिया कि, "शीघ्र ही ईश्वर के आदेश से वह दिन भी आयेगा और जो कुछ तुमने कहा है वह भी शीघ्र ही सम्पन्न होगा।" तदुपरान्त शाह आलम ने अपनी तलवार कुतुबुद्दीन को दे दी। जब शाह आलम के समक्ष यह चर्चा की गई कि महमूद रणक्षेत्र मे जिस हाथी पर भरोसा करता है उसका नाम 'गालिब जग' है, तो शाह आलम ने राज्य के हाथियों को उपस्थित करने का आदेश दे दिया। फिर उन्होने उनमे से एक ऐसे हाथी को जो अभी मस्ती की सीमा तक नही पहुचा था पृथक् कर लिया और उसके सिर पर अपना पूज्य हाथ फेर कर कहा कि, "कस्साब के पेट के फटने का समय आ गया।" उस हाथी को कस्साब इस कारण कहा जाता था कि

१ सैयिदो की मर्यादा।
२ रात्रि के समय की नमाज जो अनिवार्य नही है।
३ नमाज अथवा पवित्रता हेतु क्रमश. हाथ-मुँह धोना।

जब वह किसी हाथी को पराजित कर देना था तो वह उसे उस समय तक न छोडता था जब तक कि उसका पेट न फाड डालता था। फिर उन्होने बिना पख का एक बाण लिया और उसे धनुष मे रख कर खलजी की सेना की ओर फेका और कहा कि, "बाण शीघ्र ही महमूद के शिविर के उस बीच के डडे तक पहुच जायगा जिस पर खेमा आधारित है और उसे तोड डालेगा।" तदुपरान्त शाह आलम, सुल्तान से विदा हुए और लौट गये। उन्होने जैसा कहा था वैसा ही सब कुछ हुआ।

युद्ध

महमूद खलजी कबीर पज के समीप अपना शिविर लगा चुका था और उसने किसी कलन्दर[1] के हाथ कुतुबुद्दीन के पास यह छन्द लिखकर भेज दिया था :

छन्द

"मुझे ज्ञात हुआ है कि तू प्रागण मे बिना चौगान के गेद खेलता है,
यदि तुझे सरदार होने का दावा है तो आ, यह गेद है और यह मैदान।"

उसे यह उत्तर देकर वापस भेज दिया गया.

छन्द

"यदि मै चौगान अपने हाथ मे लूँगा तो तेरे सिर को गेद बना दूँगा,
किन्तु मुझे इस कार्य से लज्जा आती है, कारण कि अपने बन्दी को मै
किस प्रकार कष्ट पहुचाऊ।"

कुछ दिनो तक युद्ध होता रहा। तदुपरान्त खलजी ने रात्रि मे छापा मारना निश्चय किया और काफिरो मे से किसी को मार्गदर्शक बनाया। सफर की अतिम रात्रि मे वह सवार हुआ था किन्तु सतो की कृपादृष्टि के कारण ऐसा हुआ कि उसके मुह की ओर वायु बडी तीव्र गति से चलने लगी, फलत वायु-मण्डल मे अधकार छा गया। इसके कारण स्वय मार्ग-दर्शक मार्ग मे इधर-उधर इस प्रकार भटकता फिरता था जैसे वह ऊटनी जिसको रतौधी आती हो, यहा तक कि सुबह हो गई और वह सेना मे इसी प्रकार दाये-बाये भटकता फिरता रहा। खलजी को इसमे विश्वासघात तथा छल की शका हुई और उसने अपने निर्णय के कमजोर होने के कारण प्रहार कर दिया। वह उस ओर के सम्मानित व्यक्तियो मे बडे गौरव तथा श्रेष्ठता का स्वामी था, अत सभी इस घटना से प्रभावित हुए और उसके विरोधी बन गये।

उसके इस उद्देश्य का ज्ञान कुतुबुद्दीन को हो गया था। उसने उसका अपने प्रताप की सहायता (१०) से स्वागत किया और इस बात की चिता न की कि उसके (खलजी के) पास घोडो तथा हाथियो की बडी अधिक सख्या है। ईरान के किसरा के इस कथन को स्पष्ट करते हुए कि कसाई भेड बकरो की अधिकता से नही भयभीत होता, उसने अपनी तलवार की मूठ पकड ली और कहा कि, "यह निर्णय करने वाली एक उत्तम वस्तु है।" उसने अपनी सेना के अग्रिम भाग मे महता खा बिन सुल्तान मुजफ्फर, सिकन्दर खा, जो उसके पिता मुहम्मद शाह का मामा था, इफ्तेखारुलमुल्क तुगान खत्री, खाने जहा मुनीर सुल्तानी, आज़म खा सुल्तानी, कद्र खा, अलाउलमुल्क उलुग खा सोहराब सुल्तानी को नियुक्त किया। दायें भाग मे इख्तियारुलमुल्क सुल्तानी तथा दिलावर खां सुल्तानी को नियुक्त किया और बाये भाग मे

[1] सूफ़ियों का एक समूह जो अधिकांश सिर, दाढी तथा मूँछ मुँडाये हुये, एवं पारिवारिक सम्बन्धों को त्याग कर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते हैं।

निजामुद्दीन मुस्तसुलमुल्क को। फिर जब पताकाये प्रकट हुईं, सहनशीलता को क्रोध आया, क्रोध की अग्नि प्रज्ज्वलित हुई, मृत्यु तथा विनाश निकट आ गये, आखो के घेरे लाल हो गये, बाछे क्रोध के फेन मे डूब गईं, सेना ने शीघ्रता से कार्य किया और एक दूसरे से लहरे लेने वाले समुद्र के समान भिड गईं। खलजी की सेना के दाये भाग पर चन्देरी का अमीर मुज़फ्फर खा था। चन्देरी मन्दू के अधीनस्थ नगरो मे बडा प्रतिष्ठित नगर है। उसने बाये भाग पर आक्रमण किया और उसे पीछे की सेना के सरदार तक हटा दिया और खजाने तथा अन्य सामग्री पर अधिकार प्राप्त कर लिया, किन्तु तुरन्त ही उसके सिर पर दाये भाग का सरदार इख्तियारुलमुल्क पहुच गया और उसने उस पर आक्रमण कर दिया। वह (मुजफ्फर खा) घोडे की जीन से गिर पडा और बन्दी बना लिया गया। क्योंकि उपद्रव का मूल कारण वही था अत युद्ध के उपरान्त उसे कबीर पज के द्वार पर सूली दे दी गई। महता खा ने खलजी की सेना के अग्रिम भाग पर आक्रमण किया किन्तु वह वहा स्वय न रुका अपितु विचित्र प्रकार का आचरण प्रदर्शित करके वह सेना के मध्य भाग मे लौट आया।

उन लोगो मे से, जिन्होने अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित करते हुए सेना की पक्तियो को फाडा और सेना के मध्य भाग मे प्रविष्ट हो गये तथा चत्र तक पहुच गये, उलुग खा सोहराब था। उसने चत्र पर तलवार मारी और कुशलतापूर्वक लौट आया। इसी प्रकार उसके भतीजे, मलिक दादन ने भी बडा कठोर आक्रमण किया और चत्र पर तलवार का प्रहार किया और युद्ध मे मारा गया। तदुपरान्त खलजी ने बडा भीषण आक्रमण किया। उसके आगे-आगे वह बडा हाथी था जिसे कस्साब कहा जाता था। कुतुबुद्दीन ने खलजी से बलवान् तथा वीर आदमियो को अपने साथ लेकर युद्ध किया। उसके आगे-आगे छोटा हाथी था जो 'होशियार मस्त' के नाम से प्रसिद्ध था। जब कस्साब ने 'होशियार मस्त' पर आक्रमण किया तो वह अपने स्थान पर दृढ रहा और उसने उसके दात को अपने दात पर रोका। इसमे होशियार मस्त का एक दात टूट गया किन्तु इसके बावजूद होशियार मस्त अपने स्थान पर दृढ रहा। जब उसे कस्साब ने पराजित कर देना चाहा तो उसने उसे अपने बचे हुए दात से मारा और वह कस्साब के मुह मे प्रविष्ट हो गया और उसे अत्यधिक घायल कर दिया। इससे वह पीछे हट गया। इस पर होशियार मस्त ने उस पर आक्रमण किया और कस्साब बैठ गया। होशियार मस्त के दोनो ओर जो लोग उसकी देखरेख तथा रक्षा के लिए नियुक्त थे, उन्होने अपने शस्त्रों से उस पर आक्रमण कर दिया और वह मर गया। (११) इसके उपरान्त दो अन्य हाथी जो देखने मे कस्साब से कम न थे होशियार मस्त की ओर बढे। उनका मुकाबला उस हाथी ने किया जो मलिक सुदनी[1] के अधीन था। सुदनी का तात्पर्य उस व्यक्ति से होता है जिसकी बुद्धि नशे से नष्ट हो गई हो। इन दोनों पर भी जो सेवक रक्षा के लिए नियुक्त थे, उनकी विजय हो गई। तदुपरान्त कुतुबुद्दीन तथा महमूद की सेना में भीषण युद्ध प्रारम्भ हो गया। अधकार व्यापक था। तलवार तथा भाले की चमक ही से कुछ दृष्टिगत हो जाता था। इस अधकार का कुतुबुद्दीन की विजय के उपरान्त अन्त हो गया। खलजी ने अपने समस्त हाथियो, सामग्री तथा बहुत से आदमियो को पीछे छोड दिया और स्वयं कुशलतापूर्वक निकल गया। जब वह मेखरीज पहुचा तो उसमे कोल लोगो तथा दुष्टो ने बडी गडबडी फैला दी और वहा अत्यधिक विनाश हुआ जिसका सबन्ध खलजी से नही है। मेखरीज एक प्रसिद्ध गाव है। यह घटना इसी वर्ष के सफर मास के अतिम दिन को घटी। इतिहासकार हुसाम का कथन है कि खलजी की सेना मे ऐसे लोग भी मरे थे जिनके शरीर पर घाव का कोई चिह्न

१ अन्य ग्रन्थों में 'शुदनी'।

दृष्टिगत न होता था। कोडे की चोट के चिह्न अवश्य दृष्टिगत होते थे। इससे ज्ञात होता है कि ईश्वर के वलियो[1] की सहायता, जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, उसे अवश्य प्राप्त थी।

ख़लजी द्वारा नागौर की ओर प्रस्थान

८५७ हि० (१४५३-५४ ई०) मे खलजी दन्दवाने की ओर नागौर पर आक्रमण करने के उद्देश्य से चला। उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि अमीर कबीर सैयिद अताउल्लाह किवामुलमुल्क वहा पहुच गया है। इस पर खलजी ने उस पर रात्रि मे छापा मारने का सकल्प किया और एक मजिल पीछे रह गया। तदुपरान्त उसने रात्रि मे छापा मारा किन्तु किवामुलमुल्क को अपने स्थान पर न पाया और वापस लौट गया। किवामुलमुल्क को अपने स्थान पर न पाने का कारण यह हुआ कि जब किवामुलमुल्क को यह समाचार प्राप्त हुए कि वह एक मजिल पीछे रुक गया है तो उसे उसकी ओर से धूर्तता का सदेह हुआ और वह उठकर अपने शिविर के किसी कोने मे चला गया। फिर ख़लजी के सहायको ने सर्व सहमति से उसे यह कार्य (युद्ध) करने से रोका और वह अपने राज्य की ओर वापस चला गया।

राणा कुम्भा के विरुद्ध सेनाओ का भेजा जाना

इसी वर्ष नागौर के हाकिम फीरोज खा बिन (पुत्र) शम्स खा दन्दानी बिन वजीहुलमुल्क की मृत्यु हो गई और किले पर मुजाहिद खा बिन फीरोज खा ने अधिकार जमा लिया। (यह देख कर) शम्स खा बिन फीरोज खा कुम्पलन्हीर के हाकिम राणा कुम्भा के पास पहुच गया और अपने चाचा के विरुद्ध उससे सहायता की याचना की। क्योकि फीरोज खा तथा राणा कुम्भा के पिता राणा मूकल के मध्य मे बहुत से युद्ध हो चुके थे और उनमे से एक में जो काफिर मारे गये थे उनकी सख्या १० हजार तक पहुच गई थी, इस कारण उसने शम्स खा बिन फीरोज खा से यह शर्त की कि वह किले की ३ बुर्जो को गिरवा देगा। जब शम्स खा ने यह शर्त स्वीकार कर ली तो राणा कुम्भा उसकी सहायता के लिए पहुचा। मुजाहिद खा, खलजी के पास भाग कर चला गया और शम्स खा ने किले पर अधिकार जमा लिया तथा बुर्ज गिराना निश्चय किया। अमीरो तथा सेनावालो ने इसे स्वीकार न किया। इस पर राणा कुम्भा को बडा क्रोध आया और वह वापस चला गया तथा युद्ध की तैयारी करने लगा। शम्सुद्दीन, कुतुबुद्दीन के पास पहुंचा और उससे नागौर को अधिकार मे कर लेने के लिए राणा कुम्भा की तैयारी की चर्चा की। कुतुबुद्दीन ने नागौर की रक्षा के लिए सेना भेज दी और शम्स खा कुतुबुद्दीन की सेवा मे रहने लगा। उसकी (१२) पुत्री, पत्नी के रूप मे कुतुबुद्दीन के पास भेज दी गई। कुतुबुद्दीन ने उसका बडा सम्मान किया और वह उससे अत्यधिक प्रेम करने लगा किन्तु राणा कुम्भा बहुत बडी सेना एकत्र करके नागौर पहुच गया। उसकी तथा कुतुबुद्दीन की भेजी हुई सेना के मध्य में घोर युद्ध हुआ। इसमे बहुत से मुसलमान मारे गये और उस विलायत (राज्य) के बहुत से निवासी बन्दी बना लिये गये। राणा ने किले के अतिरिक्त समस्त राज्य पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

सिरोही की विजय

८६० हि० (१४५५-५६ ई०) मे सुल्तान को जब यह समाचार पहुचे तो उसने सरोही के किले

1 सन्तो।

की ओर प्रस्थान किया और उसे विजय कर लिया। यह किला पर्वत की चोटी पर था। उसने बहुत से मुश्रिको[1] की हत्या कर दी। विजय के समय वह हाथी पर सवार था।

कुम्भलमीर की ओर प्रस्थान

उसके नष्ट करने के उपरान्त वह कुम्पलन्हीर की ओर बढा। उसका किला तथा वह पर्वत सरोही की तुलना मे अत्यधिक दृढ एव ऊचा था। किले के नीचे की नरम भूमि के साथ उसने वही व्यवहार किया जो सरोही मे किया था फिर उसने किले को घेर लिया। उसमे राणा कुम्फा[2] भी उपस्थित था। वह किले से नीचे उतरा और कई बार उन आदमियो से, जो किले को घेरे हुए थे, युद्ध किया, किन्तु प्रत्येक आक्रमण मे उसे पराजित होकर भागना पड़ता था। अन्त मे उसे आज्ञाकारिता स्वीकार करने तथा खराज अदा करने एव नागौर को जो हानि पहुची थी उसका बदला चुकाने के लिए विवश होना पडा। नागौर मे जो हानि हुई थी उनमे से एक तो बादशाह का हाथी था और शम्स खा की १० हजार अशर्फिया थी। इसके उपरान्त वह अहमदाबाद वापस हो गया।

सुल्तान गयासुद्दीन खलजी द्वारा आक्रमण

उसी वर्ष गयासुद्दीन बिन महमूद खलजी ने सूरत और रानीर पर छापे मारे किन्तु शीघ्र वापस हो गया।

खलजी तथा कुतुबुद्दीन मे संधि

इसी वर्ष मे ईश्वर की सहायता की बिजली चमकी और खलजी ने कुतुबुद्दीन के पास इस आशय का सदेश भेजा कि वे दोनो परस्पर सधि कर ले और ईश्वर के मार्ग मे युद्ध तथा कठिनाइयो के अवसर पर एक दूसरे की सहायता के लिए तैयार हो जायँ। कुतुबुद्दीन भी इस बात से सहमत हुआ और खलजी को उसने विचार पर और दृढ बनाया तथा उसे इस ओर प्रेरित किया। पत्र-व्यवहार के उपरान्त कुतुबुद्दीन चम्पानीर से प्रस्थान करके खलजी के राज्य के क्षेत्र मे प्रविष्ट हुआ। इस प्रकार खलजी ने हिजाबत[3] का उत्तरदायित्व निजामुल मिल्लत वद्दीन शेख महमूद व मलिकुल उलमा तथा सद्रे जहा को सौप दिया। कुतुबुद्दीन ने उनके स्वागत का आदेश दिया; और उनके आगमन पर अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए उनको अत्यधिक इनाम द्वारा सम्मानित किया। फिर उन्होंने खलजी के प्रस्तावित प्रतिज्ञा-पत्र की चर्चा की तो कुतुबुद्दीन भी उससे सहमत हुआ। मुशी ने इस प्रतिज्ञा तथा वचन को लिपिबद्ध किया। उस पर हिजाबत के उत्तरदायित्व के स्वामियों पर तथा जो लोग दरबार मे उपस्थित थे उन पर न्योछावर करने का आदेश दिया। यह सब ईश्वर के बताये हुए मार्ग के सम्मान के उद्देश्य से था और उस समय यह बात जिहाद थी। जब वे लोग खलजी के पास वापस जाने लगे तो उनके साथ साथ सद्रुलकुज्जात तथा मौलाना काज़ी हुसामुद्दीन इस उद्देश्य से गये कि वे स्वय खलजी से प्रतिज्ञापत्र के विषय मे सुन ले और उस पर अपनी मुहर लगा दे। प्रतिज्ञापत्र मे लिखा था कि, "वह वर्तमान की सतान से है। भूतकाल को वापस नही लाया जा सकता। वे दोनों इस पर सहमत हो गये हैं कि ईश्वर (के आदेशों) की सहायता

१ कई सत्ताओं को ईश्वर स्वीकार करने वाले।
२ अन्य ग्रन्थों में 'कुम्भा'।
३ हाजिब होने।

करे और उसके कल्मे[1] को उन्नति प्रदान करे।" उन्होने इस बात की भी प्रतिज्ञा कर ली है कि, "वे अपने राज्य की सीमा से आगे न बढेगे और उन्होने जो प्रतिज्ञा की है उसे पूरा करेगे। राणा कुम्फा के अधीनस्थ स्थान, चित्तौड, सरोही और कुम्पलन्हीर तथा इनके समीप जो स्थान हैं वे सब सुल्तान कुतुबुद्दीन के (१३) अधिकार क्षेत्र मे समझे जायेगे। मेवाड तथा अजमेर और जो स्थान उनके निकट हैं, वे सब सुल्तान महमूद खलजी से सबधित समझे जायेगे।" इन्ही शर्तो पर सधि हो गई।

आबू की विजय हेतु प्रस्थान

८४१ हि०[2] (१४३७-३८ ई०) मे कुतुबुद्दीन आबू की विजय हेतु रवाना हुआ। राणा कुम्फा ने उसे विजय कर लिया था, यद्यपि वह उसका न था। उसका प्राचीन स्वामी कुतुबुद्दीन का आज्ञाकारी था अत उसने उसे वापस लौटा दिया और स्वय सरोही की ओर अग्रसर हुआ। वहा आम लूट-मार होती रही।

सुल्तान का राणा कुम्फा से युद्ध

फिर उसने कुम्पलन्हीर पर आक्रमण करने का सकल्प किया और वहा उसने वह सब कुछ किया जो राणा कुम्फा ने नागौर मे किया था। फिर राणा कुम्फा एक दिन वहा पर्वत की सँकरी घाटियो मे ४००० अश्वारोही, उतने ही पदाती और २०० हाथी लेकर प्रकट हुआ। उस पर मुसलमानो ने आक्रमण किया और उसको पराजित कर दिया। इस युद्ध मे राणा कुम्फा केवल थोडे से आदमियो सहित ही बच कर निकल सका। राणा के जब विशेष व्यक्ति नष्ट हो गये तो वह हताश हो गया और उसने खराज अदा करना स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त कुतुबुद्दीन ने उसे क्षमा कर दिया और अपनी राजधानी मे लौट आया।

इसी वर्ष नागौर से एक दूत ने आकर समाचार पहुचाये कि राणा कुम्फा ने पुन नागौर के ऊपर आक्रमण किया है। उस समय रात्रि थी। एमादुलमुल्क शाबान सुल्तानी ने उसी समय अन्त पुर के द्वार खुलवाये और उसके भीतर प्रविष्ट हो गया तथा सुल्तान के कक्ष तक पहुच गया और प्रविष्ट होने की अनुमति चांही। सुल्तान ने पूछा कि, "इस समय उसके आने का क्या कारण है ?" उसने उत्तर दिया कि "मुझे ऐसी सूचना मिली है जिसके कारण यह उचित है कि इसी समय नगर के बाहर प्रस्थान किया जाय, कारण कि इस स्थान पर अवश्य ही कोई गुप्तचर अथवा विरोधी होगा। जब वह अपने स्वामी को लिखेगा कि सुल्तान ऐसे समय मे युद्ध के लिए बाहर निकल आया तो यह बात समस्त स्थानो पर प्रसारित हो जायेगी कि सुल्तान को अपने राज्य के कार्यो को सम्पन्न करने की कितनी चिता है तो फिर कोई भी अपनी सीमा से आगे न बढेगा।" तदुपरान्त उम्दतुलमुल्क ने तुरन्त पालकी मँगवाई और हाथ पकडकर सुल्तान को शयनागार मे उठाया और पालकी मे सवार किया और उसे लेकर राजधानी के बाहर निकला। जब उन्होंने नदी पार की तो सेना के अमीरो के विभिन्न समूह उनसे मिल गये और वे सरखीज के समीप पहुच गये। सयोग से राणा कुम्फा का एक गुप्तचर राजधानी में था। उसने राणा को इस घटना की

१ इस्लाम का कलमा, "अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं और मुहम्मद साहब उसके रसूल (दूत) हैं"।
२ इसे ८६१ हि० होना चाहिये।

सूचना दे दी। जिस समय कुतुबुद्दीन सरखीज मे था, तो कुम्फा का हाजिब आया और जो समाचार प्रसारित हो चुके थे उनके विषय मे क्षमा-याचना की और कुतुबुद्दीन की सेवा मे ऐसे बहुमूल्य उपहार प्रस्तुत कराये जिनके द्वारा वह उसे अपनी ओर आकर्षित कर सका। सुल्तान ने एमादुलमुल्क से कहा कि, "क्योकि तुम्ही इसका कारण हो अत तुम्ही उपहारो के अधिक पात्र हो।" तदुपरान्त वह राजधानी वापस चला गया।

८६१ हि० (१४५६-५७ ई०) में कुतुबुद्दीन कुम्पलन्हीर पर जा पहुचा और उसे जला डाला। वहा की धन-सपत्ति मे से, जीवधारी अथवा बिना जीव वाले, सभी अपने राज्य की ओर भेज दिये। इसी (१४) प्रकार खलजी ने भी अपनी ओर से उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। क्योकि कुतुबुद्दीन तथा खलजी ने एक दूसरे की सहायता करके यह निश्चय कर लिया था कि राणा कुम्फा को अल्प समय ही मे इस योग्य न रखे कि वह अपने विषय मे इन बातो पर ध्यान दे सके अत उसके पास न कोई ऐसा ग्राम रहा और न कोई ऐसा स्थान जो उसकी प्रजा के निवास-स्थान के लिए उपयुक्त होता। इसी प्रकार उसके घोडो तथा पशुओ के लिए भी कोई चरागाह शेष न रह गई। राज्य के निकल जाने के उपरान्त जब स्वय उसके विनाश का भय सामने आ गया तो उसने एमादुलमुल्क शाबान को क्षमा तथा आज्ञाकारिता स्वीकार कराने का साधन बनाया। सुल्तान अपनी राजधानी को लौट गया।

सुल्तान की मृत्यु

कुछ समय उपरान्त कुतुबुद्दीन रुग्ण हो गया और जमादि-उल-आखिर ८६२ हि० (अप्रैल-मई १४५८ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। वह अपने पिता की कब्र के समीप दफन कर दिया गया। उसने ७ वर्ष तथा ६ मास तक राज्य किया। वह प्रतापी, नेतृत्व के योग्य, वीर तथा ऐसा व्यक्ति था जिससे लोग भय करते थे और ईश्वर की सहायता उसके साथ रहती थी। उसकी माता के हृदय मे यह विचार उत्पन्न हो गया कि शम्स खा की पुत्री ने, जो उसकी पत्नी थी, उसे विष दे दिया, अत उसने कुतुबुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त उसको कष्ट पहुचाने मे कोई कसर उठा न रखी। वास्तव मे इसका कारण शम्स खा की पुत्री की सौते थी, क्योकि कुतुबुद्दीन की दृष्टि मे वह बडी ही प्रिय थी। शम्स खा पर भी इसी कारण क्रोध प्रदर्शित किया गया और जो कुछ ईश्वर ने चाहा वही हुआ।

इतिहासकार का कथन है कि कुतुबुद्दीन एक दिन मौलाना शाह आलम की सेवा मे उपस्थित हुआ। वार्ता के प्रसग मे उन भाग्यशाली पुत्रो की चर्चा होने लगी जो अपने पिता के यश का कारण होते है। कुतुबुद्दीन ने भी अपने हृदय मे इस बात की इच्छा की। अचानक शाह आलम यह कह उठे कि, "तेरे उपरान्त तेरे भाई को बडा सम्मान प्राप्त होगा।" थोडी देर तक वह (सुल्तान) इस शोक मे कि उसके उपरान्त उसके पुत्र सिहासनारूढ न होगे, सिर झुकाये रहा। ईश्वर अपना राज्य जिसे उसकी इच्छा होती है प्रदान करता है।

जब कुतुबुद्दीन की मृत्यु हो गई तो राजसिहासन पर उसका पुत्र दाऊद आरूढ हुआ। वह राज्य के योग्य न था और भोग-विलास की ओर अत्यधिक प्रेरित था। उसने साधारण लोगो को सम्मानित व्यक्तियो का पद प्रदान करने का वचन दे दिया। जब उन लोगो को (सम्मानित व्यक्तियो को) भी इसकी सूचना मिल गई तो वे इस बात पर संगठित हो गये कि उसे राज्य से पृथक् कर दे। एमादुलमुल्क शाबान अन्त पुर मे प्रविष्ट हुआ और महमूद को उसकी माता से मागा। महमूद की माता अभी इस बात मे आपत्ति प्रकट कर रही थी और क्षमा-याचना कर रही थी कि महमूद आ गया। एमादुलमुल्क ने उसके

प्रति अभिवादन किया और सवार करके अन्त पुर से उसे राजधानी मे ले गया। दाऊद को इसके समाचार मिल गये। वह छिप गया और फिर वह कभी दृष्टिगत न हुआ।

अबुल फ़तह सैफ़ुद्दीन महमूद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह ग़ाज़ी

शुक्रवार ११ रजब ८३२ हि० (२५ मई १४५८ ई०) को अबुल फतह महमूद शाह बिन मुहम्मद शाह सिहासनारूढ हुआ। उस दिन दासो मे से ५३ व्यक्तियो को उपाधियाँ प्रदान हुई। एमादुलमुल्क (१५) शाबान उसी प्रकार विजारत के पद पर आरूढ रहा, जिस प्रकार वह उसके भाई कुतुबुद्दीन के राज्यकाल मे था। वह बडा ही सतुलित स्वभाव का एव दृढ और मजबूत निर्णय शक्ति का व्यक्ति था। उसके (सुल्तान के) राज्यकाल के प्रारम्भ मे उपर्युक्त वजीर को बन्दी बनाये जाने की दुर्घटना घटी। इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि दासों तथा मलिको के एक समूह ने, जिनमे अब्दुलमुल्क कबीर सुल्तानी, सफीउलमुल्क खिज्र, बुरहानुलमुल्क इस्माईल तथा हुसामुलमुल्क छज्जू सम्मिलित थे, यह निर्णय किया कि हसन खा बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) मुजफ्फर शाह को सिहासनारूढ कर दे किन्तु वे इस बात को भली-भाति जानते थे कि एमादुलमुल्क की उपस्थिति मे यह उद्देश्य पूरा नही हो सकता। अत उन सब ने सगठित होकर महमूद से कहा कि एमादुल "मुल्क राज्य पर अपने पुत्र शिहाबुद्दीन को सिंहासनारूढ करना चाहता है।" महमूद इससे प्रभावित हुआ और इस बात पर सहमत हो गया कि एमादुलमुल्क को राजधानी के एक बुर्ज़ मे बन्द कर दिया जाय। फिर जब वह उसकी ओर से सतुष्ट हो गये तो वापिस होकर उन्होने अपने उद्देश्य की पूर्ति का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। रात्रि मे मलिक अब्दुल्लाह, फीलखाने का अधिकारी, बादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ और इस बात की गवाही दी कि, "एमादुल-मुल्क के विषय मे जो कहा गया है उससे एमादुलमुल्क का कोई भी सबन्ध नही। वे स्वय इस बात पर सगठित हो गये हैं कि हसन खा को सुल्तान बना दे। एमादुलमुल्क के ऐश्वर्य तथा शक्ति से वे भयभीत थे अत उन्होने उसे बन्दी बना देने का प्रयत्न किया। सूर्य उदय होने के पूर्व ही मै जो कुछ कह रहा हू उसकी सत्यता का प्रमाण मिल जायेगा।" महमूद तुरन्त अपनी माता के पास पहुचा और उससे वह बात, जिसकी फीलखाने के अधिकारी ने सूचना दी थी, कही। सुल्तान की माता ने उसे बुलवा कर इस विषय मे पूछा। उसने जो कुछ कहा था उसकी पुनरावृत्ति की और उसे शपथ द्वारा अधिक दृढ बना दिया। तदुपरान्त सुल्तान की माता ने उससे इस विषय मे वार्त्ता की कि, "इसका उपाय क्या होना चाहिये ?" उसने यह कहा कि, "इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नही है कि एमादुलमुल्क को मुक्त कर दिया जाय।" महमूद की माता ने इस विषय मे आदेश दे दिया। महमूद बाहर आया और उसने शाही दासो के सरदारों को बुलवाया। उन्ही मे हाजी कालू तथा बहाउद्दीन भी थे। उन्हे इस घटना की सूचना दी। वे सब एमादुलमुल्क को मुक्त करा देने पर सगठित हो गये। अब सुल्तान ने स्वयं बुर्ज़ की ओर प्रस्थान किया और इस कार्य हेतु शरफुलमुल्क को भेजा। वह बुर्ज़ के भीतर प्रविष्ट हुआ और अवज्ञाकारियों तथा विद्रोहियो का, जिनकी देखरेख मे एमादुलमुल्क बन्दी था, विरोध करते हुए उसे लेकर बाहर निकल आया। महमूद ने आदेश दिया कि, "उसकी हथकडिया तथा बेड़िया निकाल दी जाय।" उसने एमादुलमुल्क से क्षमा-याचना की और उन अवज्ञाकारियो के विषय मे उससे परामर्श किया। उसने सुल्तान से यह निवेदन किया कि "आप उस खिडकी के समीप बैठ जायं जो राजधानी के द्वार की ओर खुलती है।" सुल्तान ने ऐसा ही किया।

तदुपरान्त उसने हाथियो को मँगवाया। मलिक अब्दुल्लाह उन्हे लाया और उन्हे द्वार के दोनो ओर पक्ति मे तरपुलिया[1] की भाति खडा कर दिया। शाही दास अपने सहायको सहित द्वार के भीतर से, जो मैदान से मिला हुआ था, एकत्र हो गये। एमादुलमुल्क की सेना द्वार के बाहर दोनो ओर चौडाई मे खडी की गई और वह स्वय द्वार से ऊचाई पर, जहा से महमूद उसके सामने रहे, बैठ गया।

(१६) प्रात काल विद्रोही सशस्त्र होकर हसन खा के साथ उस ओर बढे। अचानक उन्होने देखा कि एमादुलमुल्क द्वार पर सेना को सुव्यवस्थित किये हुए उपस्थित है। अब उन्होने जो कुछ किया वह इस उदाहरण के अनुसार है "यह कार्य वह है जिसका रात्रि मे निर्णय कर दिया गया है।" अभी वे इस विषय मे विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि एमादुलमुल्क की सेना उनकी ओर अग्रसर हुई और उसके पीछे दासो की सेना चली। तदुपरान्त सर्वसाधारण ने प्रत्येक दिशा से आक्रमण कर दिया। अज़्दुलमुल्क अपनी सेना से भागरा काथ की ओर रवाना हुआ और वही मारा गया। उपर्युक्त कालू को उसकी उपाधि दी गई। बुरहानुलमुल्क भी बन्दी बनाया गया और सादबख्त सुल्तानी को उसकी उपाधि दी गई। इसी प्रकार सफीउलमुल्क भी बन्दी बना लिया गया। हुसामुलमुल्क अपने भाई रुक्नुद्दीन से जाकर मिल गया। रुक्नुद्दीन लुबानी नामक ग्राम का हाकिम था। इस प्रकार सब को अपमान, लज्जा तथा हानि उठाकर लौट जाना पडा।

एमादुलमुल्क का चरित्र

एमादुलमुल्क स्थाई रूप से वजीर नियुक्त कर दिया गया। वह बडा ही सदाचारी वजीर था। सदाचारियो को प्रिय रखता था। फकीरो के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता था। अहमदाबाद के समीप बागे शाबान नामक उसका एक उद्यान था। लोगो का कथन है कि इस उद्यान के अधिकाश वृक्ष उसने अपने हाथ से लगाये थे। इससे उसका उद्देश्य वही था जोकि मुहम्मद साहब की हदीस[2] मे है कि प्रत्येक व्यक्ति को वही प्राप्त होता है जिसकी वह इच्छा करता है। लोगों का कथन है कि यह अकाल के कारण बनवाया गया था। ऐसी दशा मे उसने यह इच्छा की कि वह दरिद्रियो की इस प्रकार सहायता तथा उनसे सहानुभूति करे कि उन्हें कुछ मागने की आवश्यकता न पडे। मेमार[3] को उसने यह आदेश दे दिया था कि, "जो व्यक्ति काम करने के लिये उपस्थित हो, चाहे वह कार्य न भी कर सकता हो, उसे लौटाया न जाय। तुम इस बात की आशा न करो कि जिसको रखा जाय वह कार्य मे लगा ही रहे और न उसे कार्य हेतु शीघ्र आने पर ही विवश किया जाय। तुम्हारे लिये यही पर्याप्त है कि वह आ जाय, चाहे वह कार्य करे अथवा न करे।" इसी कारण वह स्वय साय के समय आता था और मज़दूरो को मजदूरी देता था।

एक दिन ऐसा सयोग हुआ कि वह अपने घर से सायंकाल कुछ आदमियो को साथ लेकर उद्यान की ओर इस आशय से चला कि मजदूरो को उनकी मजदूरी दे दे। उस दिन के लिए जितने धन की आवश्यकता थी वह सब भैल[4] पर लदा हुआ था। मार्ग मे एक समूह ने रुपया छीनने के उद्देश्य से उसे रोक लिया। उसने उन लोगो से कहा कि, "मजदूरो ने दिन भर कार्य किया है और यह उनकी मजदूरी है। यदि मैं तुम्हे यह धन दे देता हू तो वे तथा उनके परिवार वाले रात भर भूखे रहेगे। तुमको इतना ही

१ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नही है।
२ मुहम्मद साहब की वाणी का सग्रह।
३ भवन-निर्माण कार्य की देख रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।
४ सम्भवतः बैल।

धन कल मिल जायेगा।" उन लोगो ने उत्तर दिया कि, "इस समय के उपरान्त जब भी तुम हमे मिलोगे तो हमसे बचते हुए तथा भय करते रहोगे।" इस पर एमादुलमुल्क ने वचनबद्ध होने के लिये शपथ ली। तब वे उसे छोडकर चल दिये। दूसरे दिन उसने जितने धन का वचन दिया था वह अपने साथ लिया और सेना सहित निश्चित स्थान पर पहुचा। वे सब उसके भय के कारण छिन्न-भिन्न हो गये। जो लोग उसके साथ थे उन्हे उसने वही रोक दिया और स्वय उनकी ओर थोडा-सा अग्रसर हुआ उनसे उनकी जीविका-साधन के विषय मे पूछा। उन्होने अपने कष्ट, परेशानियो तथा किसी सहायता के न होने का उल्लेख किया। उसने उनसे कहा कि वे उसके दरबार मे उपस्थित हो और वह स्वय बाग की ओर मुड गया। (१७) जब वे दरबार मे आये तो उसने उनमे से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी श्रेणी तथा योग्यता के अनुसार सहायता प्रदान की। तदुपरान्त उन्होने डाका मारना छोड दिया कारण कि वे विवश होकर डाका मारा करते थे, जैसा कि हदीस मे है, "फकीरी कुफ्र बन सकती है।"

मै कहता हू कि यदि अब्दुल करीम एतमाद खा सुल्तानी अपने समय मे जब कि वह 'वजीरे दयार' था, दरिद्रियो तथा फकीरो का कौन उल्लेख करे, यदि वह देश की सेना से यही व्यवहार करता तो जल तथा स्थल मे कोई विद्रोह न होता। वह ऐसे व्यक्ति के हाथ मे फँसा जिसने उसके प्रति कोई भी दया प्रदर्शित न की। इसी कारण एमादुलमुल्क के प्रति प्रत्येक वह व्यक्ति, जिसने उसे देखा है और जिसने उसके विषय मे सुना है, विशेष रूप से शुभकामनाए करता है। एतमाद खा के प्रति कोई ऐसा नही करता। हे ईश्वर, हमे भी सदाचरण का सौभाग्य प्रदान कर और जिनके साथ उत्तम व्यवहार किया जाय उन्हें कृतज्ञता प्रकट करने के लिये सर्वदा जीवित रख। तू बनाने वाला भी है और स्वीकार करने वाला भी।

नई उपाधिया

इतिहासकार का कथन है कि फिर एमादुलमुल्क ने विजारत के पद से त्याग-पत्र दे दिया और कुछ समय उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। उसकी उपाधि हाजी सुल्तानी को दे दी गई। बहाउद्दीन सुल्तान की उपाधि इख्तियारुलमुल्क सुल्तान हो गई। कालू सुल्तानी को अज्दुलमुल्क की उपाधि दी गई। ऐसन सुल्तानी को निज़ामुलमुल्क की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया। सादबख़्त सुल्तानी बुरहानुलमुल्क हो गया। सारग सुल्तानी मुखलिसुलमुल्क तथा तुगान सुल्तानी फरहतुलमुल्क बनाया गया।

निजाम शाह को सुल्तान महमूद खलजी के विरुद्ध सहायता

८६६ हि० (१४६१-६२ ई०) मे जब सुल्तान कारी नहर के क्षेत्र मे शिकार खेल रहा था तो निजाम शाह बिन हुमायूँ शाह का दूत एक पत्र लेकर आया जिसमे सुल्तान महमूद ख़लजी के विरुद्ध फरियाद की गई थी। पत्र पढ कर सुल्तान ने शिकार से अपने घोडे की लगाम मोड दी और जो लोग उसके साथ थे उन्हें लेकर सुल्तानपुर की ओर प्रस्थान किया। उसने वज़ीर को आदेश दे दिया कि वह सेना लेकर आ जाय। जब सुल्तान, सुल्तानपुर पहुचा तो दूसरा दूत आया और युद्ध के समाचार लाया और यह कहा कि सर्वप्रथम निजाम शाह की सेना को सफलता प्राप्त हुई और दक्षिण वाले लूट-मार हेतु छिन्न-भिन्न हो गये किन्तु ख़लजी एक स्थान पर १२ हजार अश्वारोहियो सहित छिपा बैठा हुआ था। वह निज़ाम शाह की ओर अग्रसर हुआ। निजाम शाह के विशेष व्यक्तियो की सख्या कम थी और उसकी अवस्था आठ वर्ष की थी। सिकन्दर खा ने उसे अपने पीछे बैठा लिया और उसे लेकर अपनी राजधानी बिदर को भाग गया। वजीर ख्वाजये जहा, खलजी के मुकाबले मे उस समय तक डटा रहा जब तक कि सिकन्दर अदृश्य न हो गया। फिर वह भी उसके पीछे चल दिया। यह युद्ध राजधानी से ४० कोस की दूरी पर हो रहा था। ख़लजी ने

बहुत से मनुष्यो की हत्या की और समस्त धन-सम्पत्ति प्राप्त कर ली तथा राजधानी पहुच गया और उसका अवरोध प्रारम्भ कर दिया।

जब हाजिब ने समस्त समाचार पहुचा दिये तो महमूद सुल्तानपुर से चल खडा हुआ। जब उसने थालनीर मे पडाव किया तो तीसरा राजदूत खलजी के वापस चले जाने के समाचार ले कर आया। इसका (१८) कारण यह हुआ कि जब उसने महमूद के पहुचने के समाचार सुने तो उसने बिदर को छोड दिया। महमूद के आक्रमण के भय से गोदवारा का हाकिम राय उसे एलिजपुर के मार्ग से ले गया। जल के अभाव के कारण उसकी सेना मे से ६ हज़ार तथा पशुओ मे से इसके दुगुने एव चौगुने मर गये। तदुपरान्त पर्वत के विद्रोहियो तथा अपराधियो ने उस पर आक्रमण कर दिया। इसमे उपर्युक्त सख्या से भी अधिक लोग मारे गये। उसे अपना अधिकाश सामान पीछे छोड देना पडा। जब खलजी गोदवारा की सीमा के बाहर निकला तो उसने गोदवारा के राजा की इस क्रोध मे, कि उसकी सेना वाले तथा पशु इतनी अधिक सख्या मे नष्ट हो गये थे, हत्या कर दी और असफल होकर अपने राज्य को लौट गया। यह लोकोक्ति है कि दुराचारी के लिये उसका दुराचार ही पर्याप्त होता है। इस समय उसने (सुल्तान महमूद ने) अपनी ओर से एक दूत निजाम शाही दूतो के साथ भेजा और अहमदाबाद वापस चला गया।

८६७ हि० (१४६२-६३ ई०) मे निजाम शाह का दूत उसके पास यह समाचार लेकर पहुचा कि खलजी ने ९० हज़ार अश्वारोहियो को लेकर निजाम शाह के राज्य पर आक्रमण कर दिया है। सुल्तान महमूद यह समाचार सुनकर राजदूतो सहित युद्ध हेतु उठ खडा हुआ। खलजी को यह समाचार फतहाबाद में प्राप्त हुआ। फतहाबाद तिलग के अधीन बरगुद नगर से सम्बन्धित है। वह फिर अपनी राजधानी को वापस चला गया। जब सुल्तान भानबीर मे पहुचा तो निजाम शाह का दूत धन्यवाद का पत्र तथा खलजी के लौट जाने के समाचार लेकर आया। तदुपरान्त सुल्तान महमूद ने सुल्तान खलजी को इस आशय का पत्र लिखा कि, "यह कोई वीरता नही है कि एक बालक पर आक्रमण किया जाय। मैने यह निश्चय कर लिया है कि जब तक वह प्रौढ न हो जायेगा उस समय तक मै उसके राज्य की रक्षा करता रहूगा। यदि तुम उसके राज्य में हस्तक्षेप करोगे तो मै तुम्हारे राज्य मे हस्तक्षेप करूगा। तुम्हे अपने राज्य से मिली हुई कुफ्र की सीमाओ पर आक्रमण करना इस बालक के राज्य मे हस्तक्षेप करने से निश्चिन्त कर सकता है और फिर जिहाद के कारण तुम्हारे सम्मान मे भी वृद्धि होगी:

"जब तुम अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लो तो फिर उसके आगे न बढो।"

८६९ हि० (१४६४-६५ ई०) मे सुल्तान ने बारदू नामक किले पर, जो पर्वत की चोटी पर से दमन नामक बन्दरगाह के क्षेत्र मे है, आक्रमण किया, किन्तु वहा के निवासियों ने उस भू-भाग मे उपद्रव मचा रखा था अत वहा सुल्तान ने खूब हत्याकाड तथा लूट-मार की। जब वे पर्वत पर किले की विजय हेतु चढने लगे तो उसका हाकिम उसकी कुजी लेकर सुल्तान से मिला और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और सुरक्षित रहा। सुल्तान किले मे प्रविष्ट हुआ और उसने उसका निरीक्षण किया। तदुपरान्त उसने उसे उसके हाकिम ही को सौप दिया और स्वय किले से नीचे उतर गया।

सुल्तान का न्याय

८७० हि० (१४६५-६६ ई०) मे वह अहमदनगर गया। वहा उसे बहाउलमुल्क बिन (पुत्र) अलाउलमुल्क उलुग खा सोहराब के विषय मे यह समाचार प्राप्त हुए कि उसने अपने सिलाहदार की (१९) हत्या कर दी है। सुल्तान ने उसे बुलवाया तो उसने एमादुलमुल्क हाजी तथा अब्दुलमुल्क कालू की शरण ली और उनसे सहायता की याचना की। उन दोनो को भी उसके मुक्त कराने का इसके अति-

रिक्त कोई मार्ग दृष्टिगत न हुआ कि वे दो आदमियो को, उन्हे मुक्त कर देने का उत्तरदायित्व देकर, इस बात पर तैयार कर ले कि वे यह स्वीकार कर ले कि उन्होने हत्या की है। उनके स्वीकार कर लेने के उपरान्त उन दोनो ने उसके रक्त का मूल्य अदा कर देने का प्रयत्न किया। उन दोनो को उनके मुक्त करा लेने के विषय मे वडा विश्वास था किन्तु रक्त का मूल्य न स्वीकार किया गया और उनकी हत्या का आदेश दे दिया गया। बहाउलमुल्क इस प्रकार मुक्त हो गया। कुछ समय उपरान्त सुल्तान महमूद को इस विषय की सूचना हुई तो उसे इससे अत्यधिक कष्ट एव दु ख हुआ। फिर वह उनका निर्णय करने हेतु बैठा और एमादुलमुल्क एव अब्दुलमुल्क की हत्या का आदेश दे दिया। एमादुलमुल्क तथा अब्दुल-मुल्क उसके विश्वासपात्र तथा बहुत बडे अमीर थे किन्तु शरीअत के आदेशो का पालन कराने मे वह किसी बात से प्रभावित न हुआ। इन दोनो की घटनाओ से बडी शिक्षा मिलती है। यदि वे दोनो रक्त का मूल्य अदा कराने का पूर्व ही से प्रयत्न करते और निरपराध व्यक्तियो से हत्या का अपराध स्वीकार न कराते तो सभी सुरक्षित रह जाते किन्तु ईश्वर ने जो चाहा वही हुआ। आश्चर्य की बात यह है कि वास्तव मे हत्यारा बहाउलमुल्क था जो बच गया। इससे भी बडी शिक्षा मिलती है।

करनाल पर चढाई तथा राय मन्दलीक से युद्ध

८७१ हि० (१४६६-६७ ई०) मे सुल्तान ने करनाल पर चढाई की। यह किला सहस्रो वर्षों से राय मन्दलीक तथा उसके पूर्वजो का था और किसी ने कभी भी इसमे हस्तक्षेप न किया था। केवल मुहम्मद शाह बिन तुगलुक शाह गाज़ी ने जो देहली का बादशाह था अपने राज्यकाल के अन्त मे अवश्य हस्तक्षेप किया। मुहम्मदशाह ने ७५० हि० (१३४९-५० ई०) मे करनाल को विजय कर लिया और उसके स्वामी राणा किरवार को, जब कि वह किले से निकल गया था और समुद्र की यात्रा पर रवाना हो चुका था, बन्दी बनवाकर बुलवा लिया। तदुपरान्त अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह बिन मुजफ्फर शाह के राज्यकाल के प्रारम्भ तक यह राज्य उन्ही लोगो के अधिकार मे रहा किन्तु अहमद शाह बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह ने उस पर आक्रमण कर दिया था और करा नामक स्थान को, जो उसके अधीन था, विजय कर लिया। जैसा कि इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है किला बच गया था। इसी वर्ष महमूद शाह ने उस पर आक्रमण किया और उसके आसपास के स्थान, जो सोरथ के नाम से प्रसिद्ध है, विध्वस कर दिये। वह स्थान बहुत आबाद था। उस सेना की सख्या, जो जूनागढ के किले मे युद्ध कर रही थी, ३६ हज़ार तक पहुच गई थी। इसी मे से वह कस्बा है जो दरा महायला के नाम से प्रसिद्ध है। उस तक पहुचने के बडे सँकरे मार्ग है, बडी कठिनाई से वहा तक पहुचा जा सकता है। उसे यह समाचार प्राप्त हुआ कि उनके समस्त भडार वही है। उसने उस ओर प्रस्थान किया और यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह शिकार हेतु जा रहा है। वह अपने हाथ मे शिकरा लिये हुए था। तदुपरान्त उसने अचानक आक्रमण किया और वही सेना भी पहुच गई। उन भडारो पर, जिसका कोई लेखा नही तैयार हो सकता, अधिकार जमा लिया। इन घाटियो के बहुत से निवासी नष्ट हो गये। वहा उनकी एक प्रसिद्ध मूर्ति थी। जब महमूद (२०) ने उसके खडन का सकल्प किया तो बरावान समूह के बहुत से लोगों ने उसे घेर लिया। उन सब लोगों की हत्या कर दी गई और मूर्ति का खडन कर दिया गया।

तदुपरान्त राय मन्दलीक का प्रतिनिधि राय की ओर से आज्ञाकारिता स्वीकार करने तथा खराज अदा करने के सम्बन्ध मे सदेश लेकर आया। उसका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया।

८७२ हि० (१४६७-६८ ई०) मे राय मन्दलीक के बारे मे सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ

कि वह जवाहिरात का हार पहिनकर जडाऊ जीन घोडे पर लगवा कर निकलता है और चत्र उसके सिर पर होता है। उसे पत्र लिखकर रोका गया। उसने यह बात त्याग दी।

सुल्तान महमूद की मृत्यु

८७३ हि० (१४६८-६९ ई०) मे सुल्तान महमूद बिन (पुत्र) मुगीमुद्दीन मलिकुश्शर्क खाने जहा खलजी की मृत्यु हो गई। उसके सौभाग्य तथा पतन का उल्लेख खलजी वश के अन्तिम बादशाह अलाउद्दीन महमूद की मृत्यु के सम्बन्ध मे शीघ्र ही किया जायेगा और इसका सुल्तान बहादुर बिन मुजफ्फर शाह के इतिहास मे वर्णन होगा। सुल्तान महमूद को जब खलजी की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए तो उसे वडा दु ख हुआ और उसने उसकी जियारत बनवा दी। उसके (सुल्तान के) परामर्शदाताओ मे से एक व्यक्ति ने मन्दू पर चढाई करने का सकेत किया तो उसने उसे यह उत्तर दिया कि "यह कोई वीरता की वात नही है कि किसी व्यक्ति के घर पर एक ही समय मे दो विपत्तियो को इकट्ठा होने का समय दिया जाय। एक तो उसकी मृत्यु और दूसरी उसके राज्य मे विघ्न।

राय मन्दलीक पर आक्रमण

८७४ हि० (१४६९-७० ई०) मे वह करनाल पहुचा। क्योकि राय मन्दलीक आज्ञाकारिता स्वीकार कर चुका था अत वह उसके दरबार मे उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उससे कहा कि, "मै तुम्हे इस बात के योग्य पाता हू कि तुम्हे आश्रय प्रदान करू और तुम्हारे साथ सद्व्यवहार तथा भलाई करू, किन्तु यह उसी समय सम्भव है कि तुम इस्लाम स्वीकार कर लो। इस प्रकार तुम सुरक्षित रहोगे और तुम्हे वह सब मिल जायगा जिसकी तुम्हे इच्छा है।" उसने गर्दन झुका ली और कोई उत्तर न दिया। फिर सुल्तान ने कहा कि "तुम्हारे इस्लाम स्वीकार कर लेने मे तुम्हारे राज्य का भी हित है।" इस पर वह कुछ समय तक क्रोध के कारण मौन रहा और उसके मुख पर लज्जा के चिह्न दृष्टिगत होते थे मानो वह दरबार मे उपस्थित होने पर पश्चात्ताप कर रहा हो। इस पर सुल्तान ने उससे कहा, "तुम सतुष्ट रहो। तुम्हे इस बात का पूर्ण अधिकार है कि चाहे युद्ध करो और चाहे इस्लाम स्वीकार करो। इसी स्थान पर इसके निर्णय की आवश्यकता नही है। तुम जब अपने किले मे पहुच जाओ और अपने आपको पूर्ण अधिकार-सम्पन्न समझो उस समय कुछ निर्णय करो। इस समय तुम्हे मै रक्षा का वचन देता हूँ। तुमसे कोई रोक-टोक न की जायेगी। तुम अपने किले को वापस चले जाओ और अपने आप यह निश्चय करो कि तुम्हारा कल्याण किस प्रकार सम्भव है। फिर यदि तुम युद्ध के लिये उद्यत हो तो ईश्वर के निर्णय पर भरोसा करते हुए मुझे यह आशा है कि किले पर मुझे विजय प्राप्त होगी और जब तुम वहा पूर्ण अधिकार-सम्पन्न हो जाओगे तो मै उसे तुमसे छीन लूँगा।" राय मन्दलीक ने धरती चुम्बन करके उसके विषय मे शुभकामनाएं कीं किन्तु इससे अधिक कोई बात न कही। जब रात हो गई तो राय ने जान-बूझकर अपना शिविर छोड दिया और किले की ओर चला गया। वहाँ जाकर किला बन्द कर लिया।

जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने कहा, "हम शत्रु से बच गये।" फिर प्रात.काल ही उसकी सेना किले के द्वार पर पहुच गई। इस पर राय मन्दलीक बाहर निकलकर युद्ध करने के लिये आया और उसने युद्ध किया किन्तु विवश होकर किले मे प्रविष्ट हो गया। तीन दिन तक यही होता रहा। वह युद्ध करता किन्तु पराजित होकर किले को लौट जाता। उन्ही दिनो मे से एक दिन आलम खा बिन (२१) आलम खा की हत्या हो गई। वह सुल्तान के समक्ष ही युद्ध कर रहा था। बादशाह एक

कुब्बे[1] मे था जो किले के द्वार के समक्ष लगा दिया गया था। बादशाह को आलम खा की हत्या का बडा दु ख हुआ और वह क्रोधित भी हुआ। तदुपरान्त वह स्वय युद्ध मे सम्मिलित हो गया। वीरो, योद्धाओं तथा सेनानायकों ने बडा भीषण युद्ध किया। उसके युद्ध से यह आशा हो गई थी कि ईश्वर शीघ्र ही विजय प्रदान करेगा। किन्तु सध्या समय राय ने जो कुछ मकल्प किया था उस पर पुन दृष्टि डाली। वह किले की रक्षा की ओर से निराश हो चुका था। उस दिन उसके बहुत से आदमी मारे गये अत उसने क्षमा-याचना हेतु राजदूत भेजे और आज्ञाकारिता तथा खराज अदा करने का वचन दे दिया किन्तु सुल्तान ने इसे स्वीकार न किया और यह उत्तर दिया कि, "या तो मुसलमान हो जाओ और या किला सौप दो।" उसने दूसरी बार शरण की याचना करते हुए सदेश भेजा और यह कलहाया कि, "मे यहा से अपनी समस्त धन-सम्पत्ति लेकर करनाल चला जाऊगा। तदुपरान्त किला सौप दिया जायगा।" यह बात स्वीकार कर ली गई। जब उसने वहा से निकलना निश्चय किया तो उसे बडा दु ख हुआ। उसने अपने समस्त आदमियों को एकत्र किया और कहा कि, "किला छोड देने के उपरान्त व्यर्थ अपमान का जीवन कोई जीवन नही है। हमारे लिये इससे बढकर और कौन-सा अपमान हो सकता है कि हम किले से, जो हमारा जन्मस्थान है और जो हमे हमारे पूर्वजो की स्मृति दिलाता है और जिसे एक हजार वर्ष से हमारे पूर्वजो ने हमारे लिये छोडा है, पृथक् होकर, उसे किसी अन्य को सौप दे ? जब तक तलवार हमारे हाथ मे है, ऐसा न होगा।" उसके करनाल की ओर जाने की प्रतीक्षा की ही जा रही थी कि सुबह होते ही वह युद्ध मे व्यस्त हो गया। बडा घोर युद्ध हुआ। वह कयामत का दिन था। बहुत बडी सख्या मे लोग मारे गये। राय अपने निर्णय के विषय मे बडा लज्जित हुआ। तदुपरान्त उसने पुन क्षमा तथा शरण के विषय मे वार्त्ता की और वह अपने समस्त आदमियो तथा धन-सम्पति सहित करनाल चला गया। लोग उसे देख रहे थे। किन्तु इस कारण कि उसे क्षमा प्राप्त हो चुकी थी किसी ने कोई रोक-टोक न की किन्तु वह किले से कोई सम्बन्ध न रख सका। उसने साधारण-सी एक दृष्टि किले की ओर डाली। उस ईश्वर के लिये सभी प्रकार की स्तुतिया है जिसे इस बात का अधिकार प्राप्त है।

जूनागढ की विजय

१० जमादी-उल-आखिर ८७५ हि० (४ दिसम्बर १४७० ई०) को जूनागढ का किला विजय हुआ। किले का अमीर उसमे प्रविष्ट हो गया। उसके द्वार के ऊपर नक्कारा रख दिया गया और कुछ दिन तक विजय के बाजे बजते रहे। तदुपरान्त सुल्तान किले मे प्रविष्ट हुआ और उसके जितने मकान थे वहा ठहरा। जहा जहा उसके हृदय मे भवन निर्माण का विचार उत्पन्न हुआ उसका उसने आदेश दे दिया। तदुपरान्त वह वहा से अपने शिविर की ओर रवाना हो गया और भवन-निर्माण करने वालो को यह आदेश दिया कि वे पर्वत के आचल मे एक अन्य नगर का निर्माण करे। उसकी इच्छा पूरी की गई। उसका नाम मुस्तफाबाद रखा गया। सुल्तान ने उसे अपनी राजधानी बनाया।

मुहाफिज खा

वहा उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि चाम्पानीर के अधिकारी राय जयसिह बिन (पुत्र) गगदास रावल ने अहमदाबाद के क्षेत्र मे आक्रमण प्रारम्भ कर दिया है और लूट-मार कर रहा है। इस पर सुल्तान ने

१ खेमे।

जमालुद्दीन मुहम्मद बिन मलिक शेख को वहा का अमीर तथा सरदार नियुक्त किया और उसे मुहाफिज खा की उपाधि देकर पताका तथा नक्कारा रखने की अनुमति दे दी। उसके सम्मान मे वृद्धि कर दी और कुछ शर्तें करके उसे वहा के शासन-प्रबन्ध का अधिकार प्रदान कर दिया। उन्ही शर्तों मे से एक शर्त (२२) यह भी थी कि वह प्रजा की भली-भाति देख-भाल करेगा और प्रजा मे दयापूर्वक व्यवहार करेगा। यह सरदार बडा अच्छा हाकिम था। वह बडा ही उत्तम सुव्यवस्थापक, राजनीतिज्ञ तथा घुडसवार था। युद्ध मे दक्ष था। वह बडा ही न्यायपूर्ण तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। वह लोगो की भूल क्षमा कर देता था। घूस से अत्यधिक घृणा करता था। उसके कारण नगर आबाद हो गये औरउसके निर्माण कराये हुए भवन बडे ही सुन्दर थे। बाद मे वह नियाबत की श्रेणी तक पहुच गया और बादशाह का विश्वासपात्र बन गया कारण कि वह बडा ही योग्य परामर्शदाता था। उसका ऐश्वर्य तथा वैभव इस सीमा को पहुच गया था कि उसकी अश्वशाला में १७०० घोडे रहते थे। यह ईश्वर की बहुत बडी देन है। वह इतिहासकार हुसाम खा का दादा था।

सुल्तान ने जिन लोगो के सम्मान मे वृद्धि की उनमे मे बहाउद्दीन भी था जिसे सुल्तान ने एमादुलमुल्क की उपाधि प्रदान की। उसके राज्य के अधीन जो स्थान थे उनमे सुनकेरा भी था। उसकी अश्वशाला मे ३५०० घोडे थे। उसके दासो की सख्या १२०० थी। उसके अन्य सेवको तथा नौकर-चाकरो की सख्या चार हजार थी। उसने जूनागढ मे बीस फरसख[1] पर कतीताना नामक किले का निर्माण कराया।

इसी प्रकार उसने सारग मुखलिसुलमुल्क के पद मे भी उन्नति कर दी और उसे कयामुलमुल्क की उपाधि प्रदान की और कोधरा सौप दिया। इसी प्रकार ताज खा बिन मलिक शाह के भी सम्मान मे वृद्धि की। ये दोनो शासन-प्रबन्ध मे एमादुलमुल्क के समान थे। उनको मुहाफिज खा के साथ उनके आमाल[2] की ओर भेज दिया गया।

सिन्ध पर आक्रमण

८७६ हि० (१४७१-७२ ई०) मे सुल्तान ने सिन्ध पर चढाई की। एक दिन मे ६१ कोस यात्रा करके, वह उस समूह मे से जिसका प्रत्येक वीर रुस्तम दृष्टिगत होता था, ६०० व्यक्तियों को लेकर बढा। उसके पीछे सेना तथा अन्य सेवक थे। यहा तक कि वह खौरबहर तक पहुच गया जिसे रन कहा जाता है। मास के प्रारम्भ मे उसका जल बढ जाता था और उससे दस दिन के उपरान्त फिर जल मे कमी हो जाती थी। उस समय वहा जल थोडा था अत वह उस पर यात्रा करता गया और एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहा सूमरा, सौदा, तथा कहला नामक समूह बसे हुए थे और जिनमे लगभग २४ हज़ार अश्वारोही थे। जब उन्होंने उसकी पताकाएँ देखी तो वे भयभीत हो गये और उन्होंने सावधानी से कार्य किया और सब के सब सवार हो गये। जब उन्हे सुल्तान के विषय मे सूचना मिली और सुल्तान का दूत भी उनके पास पहुच गया तो वे सब क्षमा-याचना करते हुए उसके पास उपस्थित हुए। सुल्तान ने उनसे उनके वंश तथा धर्म के विषय मे जब प्रश्न किये, तो उन्होंने जो उत्तर दिये उससे यह पता चला कि वे मुसलमान थे किन्तु उन्हे इस्लाम के आदेशो का पता न था। इसी कारण वे काफिरो से मित्रता रखते थे और उनमे विवाह करते थे। सुल्तान ने उन्हे अपनी ओर प्रेरित किया और अपनी सेवा मे सम्मिलित हो जाने के

१ फ़रसख़, लगभग १८,००० फ़ीट की दूरी।
२ अक्ता।

लिए उनसे कहा। उन्होने इसे स्वीकार कर लिया। वह उन्हें इस स्थान से मुस्तफावाद ले गया और उनके निवास हेतु स्थान निश्चित कर दिये तथा जीवन निर्वाह हेतु भूमि एव जागीर प्रदान की। उन्हे अपने दरबार मे एकत्र किया और उनके लिये एक ऐसा फकीह[1] नियुक्त किया जो उन्हे हलाल तथा हराम के विषय मे शिक्षा दे।

८७७ हि० (१४७२-७३ ई०) मे महमूद को सिन्ध के नोतकुल कव्वासा के सुल्तान के विद्रोह (२३) एव समुद्री आक्रमण के समाचार प्राप्त हुए। नोतकुल कव्वासा की सख्या ४० हजार थी। यह एक समुद्री समूह था जोकि सिन्ध के द्वीपो मे निवास करता था। वह किसी के आज्ञाकारी न थे और समुद्री डाकू थे। सुल्तान यह समाचार सुनकर मुस्तफाबाद से चल खडा हुआ। नित्यप्रति ६० फरसख यात्रा करके जब वह सिन्ध के समीप पहुचा तो वे लोग छिन्न-भिन्न हो गये। सुल्तान अपने पडाव पर ठहर गया। यहा तक कि सिन्ध के बादशाह के राजदूत उपहार लेकर उसकी सेवा मे उपस्थित हुये और धन्यवाद का पत्र भी लाये। सुल्तान महमूद की माता इससे पहले वाले सिन्ध के सुल्तान की पुत्री थी।

जगत की विजय

इसी ८७७ हि० (१४७२-७३ ई०) मे सुल्तान ने जगत को नष्ट-भ्रष्ट करने का सकल्प किया। इसका कारण यह था कि जगत का राजा राय भीम अपनी सीमा से बहुत बढ गया था। जगत कुफ्र तथा शिर्क सम्बन्धी स्थानो मे बडा ही प्रसिद्ध स्थान है। उसकी मूर्ति को हिन्दुस्तान के अन्य स्थानों की मूर्तियो की अपेक्षा बडा उच्च स्थान प्राप्त है और इसी मूर्ति के कारण उस स्थान को जगत द्वारका कहते हैं। यह ब्राह्मणों का बहुत बडा अड्डा है। दूर-दूर से हिन्दुस्तान के मुशरिक यहा आते है और इस मूर्ति तक पहुचने के लिये कठिन से कठिन परिश्रम को बहुत बडी उपासना समझते है। उन्ही मे से कुछ ऐसे लोग होते है जो मुह नीचा करके लेट जाते है फिर अपने सामने दोनो हाथ बढाते है और फिर खडे होते है फिर जहा तक हाथ पहुचता वहा तक अपने पाव रखते है।[2] इनमे से बहुत से लोग इसी प्रकार महीनो यात्रा करते है। इनमे से कुछ लोग ऐसे होते है जो अपने पावो मे बेडिया डाल लेते है और फिर यात्रा करते है। उनका विश्वास है कि इस प्रकार वह उस मूर्ति के भक्त हो सकते है। यह मूर्ति एक बहुत ही ऊचे तथा भव्य गुम्बद मे है। इसके लिये बहुत बडी सख्या मे सेवक नियुक्त है। इसके पास अत्यधिक नृत्य तथा गायन होता है और रात-दिन कई फरसख तक समुद्र मे दीपक जलते रहते है। इसका तट जहाजों (के ठहरने) का मूल स्थान है। उसका समुद्र उस व्यक्ति को जो वहा पहुच जाय बाहर जाने से रोकता है। समीप ही एक भव्य किला है जिसे बैत कहते है। समुद्र से उसका मार्ग बडा सरल है किन्तु स्थल से वहा पहुचने के लिये सकीर्ण घाटियो, लम्बे-चौडे जगलों, वन-पशुओ, सर्पो तथा कीडे-मकोडो के कारण बडा कष्ट होता है।

सुल्तान के सकल्प का यह कारण हुआ कि महमूद समरकन्दी नामक एक आलिम, जो कवि तथा व्यापारी भी था, अपने जहाज मे दक्षिण के बन्दरगाह से रवाना हुआ। समुद्र मे तूफान आ गया जिसके कारण समरकन्दी का जहाज जगत के गहरे समुद्र मे पहुच गया। वहा जो कुछ उसके पास था वह सब लूट लिया गया। समरकन्दी, महमूद की सेवा मे पहुचा और उसने उच्च स्वर मे उससे फरियाद की। महमूद ने उसे अपने पास बुलवा लिया और उसके विषय में पूछा। उसने विस्तार से अपना हाल बताया।

१ फ़कीह:—इस्लामी धर्म-शास्त्र के नियमो का विद्वान्।
२ परिक्रमा करते है।

सुल्तान ने उसकी सहायता करने का वचन दिया। और उसे अहमदाबाद भेज दिया। फिर उसी समय उसने नक्कारे के बजाने का आदेश दे दिया और १६ जिलहिज्जा ८७७ हि० (१४ मई १४७३ ई०) को (२४)प्रस्थान करके अरामुरा नामक स्थान पर ठहर गया। यह स्थान कीडे-मकोडो से परिपूर्ण था अत सर्पों एव बिच्छुओ के मारे जाने का शोर होने लगा। खास शाही खेमे मे ७०० से अधिक सर्प तथा बिच्छू मारे गये। इसका कारण यह था कि वर्षा ऋतु आ गई थी, भूमि से भाप निकल रही थी और यह सब कीडे-मकोडे बिलो से निकले भागे जा रहे थे। वहा की भूमि मे वन पशु भी बहुत बडी सख्या मे थे। इसी कारण वन पशुओ ने भी रात्रि के समय शाही शिविर की ओर बढना प्रारम्भ किया। सेना वाले रात्रि मे भी उनसे अपनी रक्षा करते रहे। प्रात काल सुल्तान सवार हुआ। जगत वालो को भी इसकी सूचना मिल गई। उनके विशेष व्यक्ति राय भीम सहित बैत के किले मे बन्द हो गये। सुल्तान कुछ दिन उपरान्त जगत मे प्रविष्ट हो गया और वहा की मूर्तियो का खडन करा दिया। उनके छत्रो को गिरवा दिया और वहा इस्लामी प्रथाये चलवा दी।

बैत नामक किले की विजय

उसने समुद्र की ओर से बैत के किले के अवरोध का आदेश दिया। किला धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण था किन्तु अनाज इत्यादि का अभाव था अत किले वालो को पेट की इच्छा पूरी करनी कठिन हो गई, फलत. राय भीम एक जहाज़ मे बैठकर भाग गया। मुसलमानो की ओर से जो लोग उसकी खोज के लिये नियुक्त थे उन्होने उसका पीछा किया। अमीरुलबहर[1] किले मे प्रविष्ट हो गया और उसने किला अपने अधिकार मे कर लिया। वहा का भडार, बहुमूल्य वस्त्र तथा अन्य वस्तुए अन्य स्थानो पर भेज दी गई। इनमे ससार की वे समस्त वस्तुए थी जो उन जहाज़ो से छीन ली गई थी जिन्हे समुद्र का तूफान जगत के समुद्रीय तट पर फेक देता था। यह सब वस्तुएँ बहुत बडी सख्या मे थी। तदुपरान्त सुल्तान किले मे प्रविष्ट हुआ और आदेश दिया कि वहा अनाज का अधिक भडार एकत्र कर लिया जाय। जीविका के साधनो की वृद्धि की उसमे क्षमता उत्पन्न कर दी जाय। तदुपरान्त उसने उसे अमीर तुगान फरहतुलमुल्क तुर्की को सौप दिया। वह पहला व्यक्ति था जिसने यह किला विजय किया। इसके उपरान्त वह मुस्तफ़ाबाद लौट गया। उसके मुस्तफाबाद पहुचने के उपरान्त ही एक अमीर, शुक्रवार १३ जमादि-उल-अव्वल[2] को, राय भीम बिन (पुत्र) साकन जारहलान को बन्दी बनाकर लाया। सुल्तान ने उसे वही खडा रखा और समरकन्दी के बुलाने का आदेश दिया। जब वह दरबार मे उपस्थित हुआ तो फिर उसने राय भीम को बुलवाया और उसे उसी बन्दी अवस्था मे समरकन्दी को सौप दिया और कहा कि "यह तेरा शत्रु है। तू इसके साथ जैसा उचित समझे व्यवहार कर।" समरकन्दी ने सुल्तान की प्रशसा करते हुए उसके प्रति शुभकामनाये की।

जगत के हाकिम को सूली

फिर सुल्तान ने राय भीम को अहमदाबाद बुलवाया और उसे सूली पर लटका देने का आदेश दे दिया। उसके शरीर के प्रत्येक भाग को किसी न किसी नगर के फाटक पर सूली पर लटकाया गया।

१ समुद्री यात्रा की देख-भाल करने वाला अफ़सर।
२ १३ जमादि-उल-अव्वल ८७८ हि० (६ अक्तूबर १४७३ ई०)।

समरकन्दी ने बैत के किले मे जो धन-सम्पत्ति थी उसमे से अपनी सम्पत्ति ले ली और बहुत सा सामान जिसे वह नही पहिचानता था अपना कहकर ले लिया। सुल्तान ने उसे अत्यधिक इनाम प्रदान करने का (२५) आदेश दिया और उससे कहा कि, "यदि तू चाहे तो वहा रह और चाहे तो चला जा।" वह देव की ओर रवाना हुआ और अहमदाबाद से चला गया। यह विजय ८७८ हि० (१४७३ ई०) मे प्राप्त हुई।

बैत पर पूर्ण विजय

सुल्तान जूनागढ के आसपास बहुत समय तक आता-जाता रहा यहा तक कि २० वर्ष मे बैत के किले पर विजय प्राप्त हो गई। इस बीच वहा बहुत कम "हासिर" देखे गये। शब्दकोश के अनुसार "हासिर" उस व्यक्ति को कहते है जो कवच न धारण किये हुये हो। "अमील" उस व्यक्ति को कहते है जिसके हाथ मे तलवार न हो। "अकशफ" उस व्यक्ति को कहते है जिसके हाथ मे ढाल न हो। "उजम" उस व्यक्ति को कहते है जिसके पास भाला न हो, "आजल" उस व्यक्ति को कहते है जो घोडे की पीठ पर न ठहर सकता हो।

कहा जाता है कि जूनागढ तथा बैत का किला महमूद के अतिरिक्त कोई भी विजय न कर सका। चाम्पानीर की विजय के सम्बन्ध मे भी यही कहा जाता है। इसका उल्लेख शीघ्र ही किया जायेगा। इसी वर्ष मे रजब मास[1] मे सुल्तान ने जूनागढ के अधीनस्थ स्थान उन लोगो को सौप दिये जो उसके विश्वास-पात्र थे और वह स्वय अहमदाबाद लौट आया।

मोरानबली पर आक्रमण

इसी वर्ष महमूद ने मोरानबली पर चढाई की और वहा पहुच गया। वहा पहुचकर उसने चाम्पानीर के समीप के स्थान लूट लिये और वहा से लौट आया।

८८५ हि० (१४८०-८१ ई०) मे उसने जूनागढ की ओर प्रस्थान किया और वहा ठहरा। उसने एमादुलमुल्क को इस बात की अनुमति दे दी कि वह अपने अधीनस्थ स्थानो की ओर चला जाय। इसी प्रकार उसने किवामुलमुल्क, निजामुलमुल्क एसम तथा फरहतुलमुल्क को भी अनुमति दे दी। उनका मार्ग अहमदाबाद से होकर था। वहा अहमद खा बिन (पुत्र) सुल्तान महमूद और खुदावन्द खा बिन (पुत्र) यूसुफ वजीर तथा अमीर कबीर जुमलतुलमुल्क जमालुद्दीन मुहाफिज़ खा थे। जब वे लोग अहमदाबाद पहुचे तो उन्होंने वजीर से मिलकर यह निश्चय किया कि काफिर राय राया से एमादुलमुल्क की हत्या के विषय मे परामर्श करे। राय राया वजीर की ओर से शासन-प्रबन्ध करता था। इसका कारण यह था कि वज़ीर ने यह निश्चय कर लिया था कि अहमद खा बिन महमूद को सिहासनारूढ कर दे। उसे यह आशा थी कि अमीर तथा सेना वाले उससे सहमत होंगे। वहा उन लोगो के पहुचने से उन लोगो का सहयोग प्राप्त करने की उसे इच्छा हुई किन्तु एमादुलमुल्क के विषय मे उसे विश्वास था कि वह उससे सहमत न होगा कारण कि उसमे दृढता तथा राजभक्ति के गुण विद्यमान थे, अत उसने उसकी ओर से निश्चिन्त हो जाना चाहा। एमादुलमुल्क तथा राय राया के मध्य मे इतनी मित्रता थी और वे एक दूसरे के इतने विश्वासपात्र थे कि उससे अधिक की कल्पना नही की जा सकती थी। इसी कारण जब वजीर

१ सम्भवत रजब ८७८ हि० (नवम्बर-दिसम्बर १४७३ ई०)।

ने रायराया से परामर्श किया तो उसने कहा कि, "मैं इस बात का उत्तरदायित्व लेता हू कि एमादुल-मुल्क तुम्हारा साथ देगा और तुम्हे उसके समान कोई अन्य सहायक न प्राप्त होगा।" वजीर ने उससे इस विषय मे वादविवाद किया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ।

राय राया एमादुलमुल्क के पास रात्रि मे पहुचा। उसका शिविर महमूदपुर मे लगा हुआ था। जब वे एकत्र हुए तो राय राया ने एमादुलमुल्क से इस बात को गुप्त रखने की शपथ ली। तदुपरान्त उसने वज़ीर के सकल्प की उसे सूचना दी और इस विषय मे वादविवाद किया। एमादुलमुल्क इस बात से सहमत हो गया और बिना किसी आपत्ति के उसने यह स्वीकार कर लिया कि, "मै अपने सकल्प को पूरा करूँगा।" राय अपने घर लौट गया। उसे इस बात का विश्वास था कि एमादुलमुल्क ने उसकी बात स्वीकार कर ली है, किन्तु एमादुलमुल्क वजीर के विश्वासघात के कारण सतुष्ट न हुआ। अत उसने किवामुल (२६) मुल्क तथा उसके साथियो को, जो ईसनपुर नामक ग्राम के समीप ठहरे हुए थे, यह सदेश भेजा कि जैसे ही रात्रि हो वे सब सशस्त्र होकर उसके पास पहुच जाय। वे लोग यह समझे कि कोई उपद्रव होने वाला है अत उन्होने अपने शिविर उखाड डाले और एमादुलमुल्क के खेमे के पास अपने खेमे लगवा दिये और उसी के पास रात्रि मे ठहरे। किन्तु एमादुलमुल्क ने उनसे वह बात जो उससे कही गई थी गुप्त रक्खी। जब प्रात काल राय राया वजीर के पास गया और उसे यह सूचना दी कि एमादुलमुल्क ने वह बात स्वीकार कर ली है तो वज़ीर हँसा और बोला कि, "यदि वैसा ही होता जैसा तू कह रहा है तो उसके साथी उसके साथ रात्रि मे न ठहरते और प्रात काल तक सशस्त्र उसके पास न रहते।"

सुल्तान को जब यह समाचार प्राप्त हुए कि अमीर लोग अपने अपने अधीनस्थ स्थानो को अभी तक नही गये तो उसे बडा आश्चर्य हुआ। इसी बीच मे उसे अपने पुत्र के अहमदाबाद मे राज्य ग्रहण करने के विषय मे सूचना मिली तो उसे बडा आश्चर्य हुआ कारण कि एमादुलमुल्क की वहा उपस्थिति के बाव-जूद उसे इस आशय का कोई पत्र न प्राप्त हुआ था। एक दिन वह अहमदाबाद की ओर इस आशय से सवार होकर चला कि वहा से कोई समाचार प्राप्त करे। उसने सईदुलमुल्क को आदेश दिया कि वह उसके पूर्व ही जाय और कुछ पता लगाकर आये। वह दूर तक चला गया। वह समाचार की खोज मे था कि उसे अहमदाबाद से आता हुआ एक समूह मिला। सईदुलमुल्क ने उनसे वहा के विषय मे पूछा तो उन्होने कहा कि, "वहा सब कुशल हैं किन्तु एक बात अवश्य है कि एमादुलमुल्क तथा उसके सहयोगी सशस्त्र होकर सुल्तान के पुत्र के साथ ईद की नमाज के लिये सवार होकर गये थे। एमादुलमुल्क दरबार से अन्त मे निकला था और अस्त्र-शस्त्र धारण किये था।" सईदुलमुल्क वापस होकर सुल्तान के पास पहुचा और जो कुछ उन लोगो से सुना था वह सुल्तान को बताया। सुल्तान ने कैसर खा से कहा कि, "यद्यपि एमा-दुलमुल्क ने कुछ लिखा नही हैं किन्तु उसके आचरण से पता चलता है कि कोई विशेष घटना घटी है।" फिर वह खम्बाया गया और अहमदाबाद मे जो अमीर थे उन्हे लिखवा दिया कि "मैने हज के लिये प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया है अत वे सब मेरे पुत्र के अधीन रहे।" उन अमीरो मे से एमादुलमुल्क ने यह उत्तर भेजा कि, "मै सबसे पहले हज मे आपका साथ दूँगा किन्तु आप के लिये यह उचित है कि आप सर्वप्रथम चाम्पानीर विजय कर लें, तदुपरान्त हज के लिये प्रस्थान करे।" सुल्तान के खम्बाया पहुचने के उपरान्त उसके पास समस्त अमीर आये। सुल्तान ने एमादुलमुल्क से एकान्त मे भेट की और उससे कहा कि, "तुम्हारा यह आचरण राज्य मे किसी दुर्घटना का द्योतक है अत तुम मेरे विषय मे मुझसे विस्तार से बताओ ताकि शकाये न बढने पाये और छोटे बडे सभी भस्म न हो जाय", किन्तु एमादुलमुल्क ने इस विषय में कुछ न कहा। फिर सुल्तान ने कहा कि, "मैं तुमसे उस समय तक बात न करूगा जब तक कि तुम मुझसे इस विषय में वार्त्ता न करोगे।" एमादुलमुल्क ने फिर भी कोई बात न कही। इस पर सुल्तान ने कुछ

दिनो तक उसकी ओर कोई ध्यान न दिया। जब बात इस सीम तक पहुच गई तो एक दिन एमादुलमुल्क एकान्त मे उपस्थित हुआ और उसने कहा कि, "मेरे असमजस का कारण यह है कि मैने इस विषय मे कुछ न कहने की शपथ ले रखी है किन्तु आप जब उसके जानने के लिये इतने उत्सुक है तो फिर घटना इस प्रकार है कि राय राया ने मुझे इस बात की सूचना दी और उसने मुझसे साथ देने की इच्छा प्रकट की तो बाह्य रूप से मैने उसकी बात मान ली और सावधानी से आचरण करने लगा। हृदय मे मैने यह सोचा कि, 'यदि मै और मेरे साथी विलायत[1] की ओर प्रस्थान करते है तो सम्भव है कि वही हो जाय जिसका वजीर ने सकल्प किया है और फिर दरार इतनी चौडी हो जायगी कि उसका भरना कठिन हो जायगा। यदि मै इसको स्पष्ट करता हू तो यह उपद्रव इतना बडा और इस प्रकार का है कि उस पर इसके सिद्ध (२७) करने के लिये कोई साधन नही निकल सकता, काफिरो के समाचार से किस प्रकार सिद्ध किया जा सकेगा। अत मैने शपथ ली और विलायत की ओर प्रस्थान न किया।" जब यह बात सुल्तान को ज्ञात हो गई तो उसने नहरवाला की ओर प्रस्थान किया और एमादुलमुल्क को आदेश दिया कि वह जालौर तथा साचौर को विजय कर ले।

फिर उसने (सुल्तान ने) कुतुबुर्रब्बानी मौलाना शेख हाजी रजब के मैदान मे पडाव किया। उसी रात्रि मे मुजाहिद खा तथा साहब खा ने, जो खुदावन्द खा के पुत्र थे, कैसर खा पर आक्रमण किया और उसकी हत्या करके भाग गये। सेना के शिविर मे हाहाकार मच गया। एमादुलमुल्क सवार होकर सुल्तान के पास पहुचा तो वहा देखा कि अजदर खा बिन उलुग खा सोहराव को कैसर खा की हत्या के अपराध मे लाया गया है और तुरन्त ही वह व्यक्ति आ गया जिसने मुजाहिद खा तथा साहब खा के पलायन की सूचना दी। इस प्रकार इस सूचना देने वाले के कारण अजदर खा बच गया। सुल्तान ने उसे प्रोत्साहन दिया और खिलअत प्रदान की। मुजाहिद खा तथा साहब खा की घटना से उनके पिता के विषय मे भी कल्पना का अवसर मिला। सुल्तान अहमदाबाद लौट गया और उसने सर्वप्रथम यह आदेश दिया कि वजीर खुदावन्द खा को बन्दी बना लिया जाय। सुल्तान की एक बहिन उसकी पत्नी थी। उसी के गर्भ से ये दोनो पुत्र थे जिन्होने यह अत्याचार किया। इसका प्रभाव उनके पिता के विरुद्ध हुआ और मुहाफिज खा वजीर हो गया। उसी वर्ष एमादुलमुल्क की मृत्यु हो गई। उसके अधीनस्थ प्रदेश तथा उसकी उपाधि उसके उस पुत्र को, जिसका नाम बुद्ध था, प्रदान की गई। उसके अन्य भाई महमूद, मन्झू तथा गौहर थे।

चाम्पानीर की विजय

८८७ हि० (१४८२-८३ ई०) मे सुल्तान ने चाम्पानीर की विजय का सकल्प किया। इसका कारण यह हुआ कि मलिक सुधा, जो गाजी खा का भाई था, एक दिन अपनी राजधानी रसूलाबाद से चाम्पानीर की ओर सवार होकर गया। यह स्थान उससे सात फरसख की दूरी पर था। वहा उसने हत्याकाड, लूटमार तथा लोगो को बन्दी बनाना प्रारम्भ कर दिया, तदुपरान्त वह वहा से वापस आ गया। उसके पीछे ही उस स्थान के हाकिम, राणा पताई पुत्र राणा उदयसिह, ने उस पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध मे अमीर की हत्या हो गई और राणा ने राजधानी को नष्ट कर डाला तथा दो हाथी लेकर लौट आया। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह उसी वर्ष की जिलहिज्जा मास के प्रथम तिथि

1 राज्य।

(११ जनवरी १४८३ ई०) को काथ धलौहीर की ओर चल खडा हुआ। जब उसने बरौदरा के समीप मे पडाव किया तो उसने ताज खा, अब्दुलमुल्क, बहराम खा, इख्तियारुलमुल्क, एमादुलमुल्क बिन एमादुलमुल्क तथा कदर खा को चाम्पानीर की ओर अग्रसर होने का आदेश दिया। फिर जब वह वहा पहुचा तो राणा पताई ने उससे युद्ध किया और घोर प्रयत्न किया किन्तु उसे पराजित होकर पर्वत के किले की ओर भागना पडा। सुल्तान किरमारी की सीमा के एक ओर से बढता रहा और किले के पीछे की ओर (२८) से ग्रामो की ओर बढा जो हत्याकाड तथा लूटमार के लिये अधिक विस्तृत क्षेत्र थे। तदुपरान्त वह बचीतूरी मे पहुचा। बचीतूरी किले के पर्वत के समीप ही एक अन्य पर्वत है। वह उससे पृथक् है किन्तु उसके समक्ष है। तदुपरान्त सुल्तान, पाल की विलायत[1] मे प्रविष्ट हुआ। वहा उसे जो घी, अनाज तथा पशु मिले उन्हे उसने अपने पडाव पर भेज दिया जो पर्वत के आचल मे था। उनमे से कुछ वस्तुए राणा के समूह को प्राप्त हो गईं। क्योकि उस वर्ष अकाल फैला हुआ था अत उन वस्तुओ से सेना को बडा आराम मिला और उनकी जीविका के साधनो मे वृद्धि हो गई।

तदुपरान्त सुल्तान ने अवरोध प्रारम्भ कर दिया और पडाव के समीप मे रसोईघर बनवा दिये ताकि भिखारी तथा मजदूर सभी उनसे अपना पेट भर सकें। वजीर मुहाफिज खा दिन के प्रारम्भ मे उस सेना मे जाता था जो अवरोध किये रहती थी और दिन के अन्त में दीवान[2] मे उपस्थित होता था। राज्य के कार्यो को सम्पन्न करने तथा उनकी देखभाल हेतु राणा पताई ने अनेक बार क्षमा-याचना की और यह प्रयत्न किया कि उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली जाय किन्तु उसकी यह बात स्वीकार न की गई। जब वह निराश हो गया तो उसने अपने वजीर सूरी को खलजी के पास भेजा और उससे सहायता की याचना की। प्रत्येक पडाव पर उसके लिये धन-सम्पत्ति की एक विशेष मात्रा निश्चित की। गयासुद्दीन उसकी सहायतार्थ नालचा तक आया। उसके समाचार महमूद को मिले तो उसने अवरोध को उसी सीमा पर रहने दिया और अपने सहायको सहित दहयूद की ओर अग्रसर हुआ। खलजी नालचा मे ठहर गया, और उसे अपने इस आचरण पर बडी ही लज्जा आई। उसने आइम्मा[3] को बुलवाया और उनसे इस धार्मिक समस्या के विषय मे पूछा। उसे भय था कि, "यदि उसने (सुल्तान ने) चाम्पानीर पर अधिकार जमा लिया और वहा से निश्चिन्त हो गया तो वह हमारे राज्य की सीमा की ओर अग्रसर होगा।" उसने पूछा कि, "हमारे लिये शरा[4] के अनुसार यह उचित है अथवा नही कि हम उसके (सुल्तान महमूद के) जिहाद के मार्ग मे बाधा डाले ?" उन सब ने उत्तर दिया कि, "यह पूर्णत. शरा के विरुद्ध है। महमूद के जिहाद मे जो भी बाधक होगा वह पापी होगा।" खलजी इस व्यवस्था की आड लेकर अपनी राजधानी को वापस चला गया।

इसी प्रकार महमूद भी पर्वत के आचल की ओर वापस हुआ और वहा उसने एक जामा मस्जिद का निर्माण कराया जो नगर मे इस समय तक वर्तमान है किन्तु नगर स्वय वन-पशुओ की शरण का स्थान बन गया है। ईश्वर ही को हर प्रकार की शक्ति प्राप्त है।

तदुपरान्त सुल्तान ने एक ग्राम पर, जो बहुत ऊचाई तथा दुर्गम मार्ग पर था, आक्रमण कर दिया। इस कारण से उस ग्राम मे जो कुछ था उसका अस्तित्व उस ओर के निवासियो के लिये बडा बहुमूल्य था।

१ प्रदेश।
२ वित्त विभाग।
३ बड़े बड़े आलिमो।
४ इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार इस्लामी नियम।

इस गाव का नाम पीतवारा था। जो लोग वहा थे उनकी हत्या कर दी गई और समस्त भडार अधिकार मे कर लिये गये।

इसी प्रकार मलिक खिज्र बिन मुहाफिज खा, पाल मे प्रविष्ट हुआ और उसने बेजलहत ग्राम मे (२९) धन-सम्पति तथा अनाज के भडार एव मवेशी बहुत बडी सख्या मे प्राप्त किये और इन सबको दीवान मे भेज दिया। यह अवरोध एक वर्ष तथा कुछ मास तक चलता रहा। समय व्यतीत होने के साथ साथ किले के निवासियो की कठिनाइयो मे वृद्धि होती जा रही थी। इस बीच मे महमूद विभिन्न दिशाओ मे निरन्तर आक्रमण करता रहता था और खोज जारी किये हुए था ताकि वहा के भडार इत्यादि प्राप्त कर ले, यहा तक कि फिर कोई कस्बा, ग्राम तथा मकान ऐसा न रह गया जिसका नकद धन उसके खजाने मे न पहुच गया हो और जिसके बहुमूल्य वस्त्र तथा अन्य सामान उसके भडार मे न आ गये हो, जिसके मवेशी उसके तवेले मे न पहुच गये हो, जिसके अनाज के भडार उसके रसोईघर तथा बाजार मे न पहुच गये हो, जिसके युवक उसकी आज्ञाकारिता न स्वीकार कर चुके हो, जिसके अधेड आयु वाले किसी काम योग्य न होने के कारण मुक्त न कर दिये गये हो और जिसके युवको तथा अधेडो के बीच के बहुत से लोग विद्रोह के कारण कत्ल न कर दिये गये हो।

जब यह दशा हुई तो राणा पताई अपनी माता के पास गया और उसने इस विषय मे उससे परामर्श किया और यह बताया कि, "अपनी दीनता, आशाओ के अन्त हो जाने तथा मदद मआश[1] की ओर से निराश हो जाने के कारण मै बडा ही परेशान हू।" उसकी माता ने कहा, "हे पुत्र! तेरे वजीर सूरी ने तुझे इस कष्ट मे डाला है। वह स्वय तो पत्र लेकर खलजी के पास चला गया और लौटा नही। मै तो अब तेरे लिये यही उचित समझती हू कि तू सुल्तान की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ले और उसके दासो मे सम्मिलित हो जा।" उसने उत्तर दिया कि, "मै अग्नि को अपमान से कही अधिक उत्तम समझता हू।" फिर वह अपने सहायको के पास चला गया और उस दिन बडा घोर युद्ध किया।

सध्या समय उसने स्त्रियो को जला डालने का सकल्प कर लिया। इसे झोर[2] कहा जाता है। काफिर जब पूर्णत निराश हो जाते है तो इस पर आचरण करते है। जिन लोगो ने यह सकल्प कर लिया था उन्होने सर्वदा के लिये अपनी स्त्रियो से विदा होने के लिये उन्हे एकत्र किया। यह समय वह था जो पत्थर को भी पिघला देता। फिर जो होना था वह हुआ। स्त्रिया अग्नि तथा धुए मे परिवर्तित हो गईं। राणा पताई तथा उसके ७०० सहायक हौज़ मे प्रविष्ट हुए। वे स्त्रियो के उपरान्त जीवन से पूर्णत निराश हो ही चुके थे। उन्होने स्नान किया तथा सुन्दर वस्त्र धारण किये। तलवारे बाधी, कटारो को पेटी मे लगाया और प्रात काल की प्रतीक्षा करने लगे। वे कहते होगे कि, "हे रात्रि! क्या तेरा अन्त नही है।"

इस्लामी सेना की यह दशा थी कि जब किले वाले इन बातो मे व्यस्त थे और उनके तथा किले के फाटक के मध्य मे रक्षको के बन्धन भी टूट चुके थे तो वे मदाफा[3] लेकर निकल पडे और उन्हे फाटक के समक्ष लगवा दिया। अब सुबह हो चुकी थी। उन्होने मदाफा से द्वार पर आक्रमण किया। यह देख कर मुशरिक एकत्र हो गये और उन्होने प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया, उनमे इतनी शक्ति आ गई कि उन्होंने द्वार बन्द कर लिये और उसमे छिप गये। मदाफा ने किले के द्वार मे एक बहुत बडी दरार उत्पन्न कर

१ जीवन-निर्वाह के साधन।
२ जौहर।
३ सम्भवत मन्जनीक इत्यादि।

दी थी। उसी मे से फरहतुलमुल्क तुगान तुर्को का एक समूह लेकर किले के भीतर प्रविष्ट हो गया और किले के फाटक के बराबर पहुच गया। मुशरिको ने अब उनकी ओर आक्रमण किया, हालाकि पिछली रात जो आई थी वह उन्हे आग मे लपेटती हुई आई थी। उन्होने एक घर मे, जो किले के द्वार से मिला हुआ था, आग लगा दी। आग की लपटे बढने लगी और अन्धकार का अन्त हो गया। मुसलमानो को अब (३०) अधिक चिन्ता उन मुसलमानो की हो गई जो किले के द्वार के ऊपर थे। सुल्तान सिज्दे मे गिर पडा और उसने ईश्वर से गिडगिडाकर अपने साथियो की आग से रक्षा के लिये प्रार्थना की। जब उसने सिर उठाया तो देखा कि आग किले के द्वार को अपनी लपटो मे लपेटना चाहती है किन्तु वायु द्वार के एक ओर से इस प्रकार चल रही है कि ईश्वर का समूह[1] सुरक्षित रहे। फिर आग बढने लगती है और लपटो को घरो की ओर वापस कर देती है। आग एक घर से दूसरे घर मे पहुच जाती है यहा तक कि वह उस घर मे पहुच गई जहा राणा पताई तथा उसके सहायको की स्त्रिया जलने के लिये एकत्र हुई थी। फिर वे सब उस आग मे जल गई जिसे ईश्वर ने भडकाया था। किन्तु सुल्तान ने इस प्रकार रात्रि व्यतीत की कि वह ध्रुवतारे के उदय होने की प्रतीक्षा करता रहा। जब उसने उसे देखा तो वह पर्वत पर चढ गया। सर्वप्रथम जो किले मे द्वार से प्रविष्ट हुये वे मलिक प्यारा भान्देरी तथा मलिक बिच्छू थे। कुछ ही दिन पूर्व यह घटना घटी थी कि सेना मे से एक समूह ने यह निश्चय किया था कि उनका युद्ध केवल ईश्वर के लिये हो और उनका उद्देश्य वृत्ति अथवा जीविका प्राप्त करना न हो, अत उन्होने सेवा से त्यागपत्र दे दिया और ईश्वर के लिये जिहाद हेतु उद्यत हो गये। उन्ही मे से बरोदरा मे शरा का रक्षक काजी एमाद था। वह अपने स्वामी उलुग खा के पास पहुचा और उसने सेवा से त्यागपत्र दे दिया तथा वृत्ति पाने वालो की पजिका से अपना नाम कटवा लिया। इन लोगो ने अपनी एक विशेष पताका चुन ली और उसी के नीचे एकत्र हुये। वे किले के द्वार पर शहीद होने के उद्देश्य से एकत्र हो गये। वे सब सुल्तान के आगे आगे थे। राणा पताई हौज मे से अपने साथियो सहित निकलकर रणक्षेत्र की ओर रवाना हुआ। दु ख तथा शोक को त्यागकर वह तलवार चलाने लगा और अब दोनो समूहो मे लगभग वह समय आ गया था जब कि या तो शहीद अपने स्थान पर दृढ रह सकते थे या भाग्यशाली। अन्त मे राणा पताई तथा काजी एमाद मे युद्ध होने लगा। एमाद ने राणा पताई के शरीर मे अपनी तलवार जमा दी। इस प्रहार मे उस पत्थर की चोट का प्रभाव था, जिसका फेकने वाला दृष्टि के समक्ष न हो और जिसका पता न हो। राणा पताई गिर पडा और असावधान हो गया। वह बन्दी बना लिया गया। तदुपरान्त महमूद ने उसे इस आशय से मुहाफिज खा को सौप दिया कि वह उसकी रक्षा तथा उसका उपचार करे। इसी प्रकार राणा पताई का एक दूसरा बडा सरदार डुगरसी बन्दी बना लिया गया। वे दोनो लकडी के एक पिजडे मे जिसमे लोहे का ताला लगा हुआ था, बन्द रहे यहा तक कि उनके घाव अच्छे हो गये। काजी एमाद निरन्तर तलवार चलाता रहा यहा तक कि वह शहीद हो गया। फिर सुल्तान महल तक पहुच गया और तलवार अपना काम करती रही। फिर वह ऐसे घर पर चढा जो किले मे सबसे ऊचा होता है और जिसे मूलिया कहा जाता है। वहा उसे राणा पताई का एक छोटा पुत्र तथा दो पुत्रिया मिली। आग के प्रारम्भ मे वे सब अपनी माता के साथ थे। जब उन्होने वह देखा जिसने उन्हे घबडा दिया तथा आतकित बना दिया (३१) तो वे अग्नि से भागकर अपनी माता से पृथक् हो गये और मूलिया पहुच गये। महमूद ने पुत्रियो के सम्बन्ध मे आदेश दिया कि उन्हे अन्त पुर पहुचा दिया जाय और पुत्र को सैफुलमुल्क सुल्तानी को

१ मुसलमान।

इस आशय से सौंप दिया जाय कि वह उसे अपना पुत्र बना ले। यह वही पुत्र है जिसे मुजफ्फरशाह के राज्य-काल मे निजामुलमुल्क की उपाधि प्राप्त हुई और जो ईदर का हाकिम नियुक्त हुआ।

सुल्तान के राज्य का विस्तार

जब सुल्तान किले के कार्य से निश्चिन्त हो गया तो उसने आदेश दिया कि पर्वत के आचल मे एक नगर का निर्माण कराया जाय। जब उस शहर का निर्माण हो गया तो उसने उसका नाम शहरे मुकर्रम[1] महमूदाबाद रखा। इसका सविस्तार उल्लेख लाभ से शून्य न होगा। मुजफ्फरी वश के सबसे पहले बादशाह के राज्यकाल मे राजधानी नहरवाला पटन उसी दशा मे रही जैसी कि उससे पूर्व मुइ-मुइज्जुद्दीन मुहम्मद साम के राज्यकाल से लेकर उसके राज्यकाल तक रही थी। देहली के सुल्तानो का वह दारुल इमारा[2] था। मुजफ्फर के राज्यकाल मे वह दारुस्सल्तनत बन गया। अहमद शाह बिन मुहम्मद शाह के राज्यकाल मे अहमदाबाद राजधानी रहा और जब महमूद ने जूनागढ विजय किया तो मुस्तफा-बाद को राजधानी बनाया। जब उसने चाम्पानीर को विजय कर लिया तो फिर मुहम्मदाबाद को राज-धानी बना लिया, एक वर्ष वह वहा निवास करता था और एक वर्ष मुस्तफाबाद मे रहता था। इसका कारण यह था कि सिन्ध वहा से निकट था और मन्दू की सीमा से मुस्तफाबाद की सीमा मिलती थी। उसकी विजय से महमूद के अधिकार मे मन्दू की सीमा से लेकर सिन्ध और जूनागढ, सिवालिक पर्वत से जालौर तथा नागौर, बकलाना से मासिक तुरमक तथा दक्खिन मे बुरहानपुर से बरार तथा मलूकपुर तक और करकून तथा बुरहानपुर से नर्बदा नदी तक, ईदर से चितौड तथा कुम्पलमीर तक एव समुद्र की ओर से चियूल की सीमा तक सब उसने अपने अधिकार मे कर लिये। ईश्वर अपना राज्य जिसे चाहता है, प्रदान करता है।

राणा पताई की हत्या

जब महमूद को यह महान् विजय प्राप्त हो गई तो उसके राज्य के समस्त महान् आलिम एव प्रतिष्ठित लोग विजय की बधाई देने के लिये आये। जब वे उसके दरबार मे उपस्थित हुए तो महमूद ने कहा कि, "राणा पताई का जीवित रह जाना तथा उसके समस्त घर वालो की मृत्यु उसके लिये शिक्षा का कारण होगी। यदि वह इस्लाम स्वीकार कर ले तो उसे उसका राज्य वापिस कर दिया जायगा। उसे सन्मार्ग दिखाओ, सम्भव है कि वह सच्चे मार्ग पर आ जाय।" तदनुसार राणा पताई को बुलवाया गया। जिन लोगो को आदेश दिया गया था उन्होने उससे इस्लाम स्वीकार कराने का प्रयत्न किया परन्तु उसने इसे स्वीकार न किया और अपने परिवार वालो से मिल जाना ही उचित समझा। जिसको ईश्वर मार्ग-भ्रष्ट करे उसे कोई भी सन्मार्ग पर नही ला सकता। उसके स्वीकार न करने पर सुल्तान ने उसे सियाग्रदनगिरि पर सूली दे देने का आदेश दे दिया। यह सियादनगिरि एक छोटी सी पहाडी है जो किले के पर्वत के आचल से मिली हुई भी है और उससे पृथक् भी है। यह घटना ८९० हि० (१४८५ ई०) मे घटी।

१ सम्मानित नगर।
२ प्रान्तीय शासकों की राजधानी।

डुँगरसी की हत्या

(३२) दुगरसी को जब वध के लिये ले जाया जा रहा था तो उसने एक व्यक्ति को, जो उसके बराबर था, असावधान पाकर उसकी तलवार छीन ली और उससे एक मुसलमान पर जिसका नाम शेखैन बिन (पुत्र) कबीर था, आक्रमण कर दिया। वह गिर पडा किन्तु गिरते-गिरते उसने अपनी तलवार खीच ली और उस पर फेक मारी। उसके घातक घाव लगा और वह मर कर गिर पडा। घायल मुसलमान बच गया।

चम्पानीर की विजय का एक अन्य उल्लेख

मनजरुल इन्सान फी तरजुमए तारीखे इब्ने खलकान के प्राक्कथन मे जिसे मौलाना यूसुफ बिन अहमद बिन मुहम्मद बिन उस्मान ने सकलित किया है, चाम्पानीर पर्वत की विजय ८८९ हि० (१४८४ ई०) मे लिखी है। उसने जिस वाक्य से अपना लेख प्रारम्भ किया है उससे यह पता चलता है कि ग्रन्थ की उसी वर्ष मे रचना की गई। इस ग्रन्थ को सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद को समर्पित किया गया और उसका अनुवाद बडी ही उत्तम शैली मे किया गया है। इससे ज्ञात होता है कि वह दोनो भाषाए भली भाति जानता था।

सैयिद उस्मान मौलाना बुरहानुद्दीन कुतुब आलम के सबसे बडे खलीफा[1] थे और उन्हे शम-ए-बुरहानी[2] की उपाधि प्राप्त थी। उन्होने उस्मानपुर नामक ग्राम का निर्माण कराया था और वही निवास करते थे। उनका मजार भी वही है। इस ग्राम तथा अहमदाबाद के कोट के मध्य मे साहबर नामक एक नदी है। वह नदी इस ग्राम से उत्तर-पश्चिम मे है। सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि वह उनका चेला था। क्योकि सुल्तान को उनके प्रति बडी श्रद्धा थी अत वह उनका मुरीद[3] हो गया था। कभी कभी सुल्तान उनसे लाभ प्राप्त किया करता था और उनके पास अधिक आता जाता रहता था। उन्हे महमूद तथा उनके पूर्वजो की ओर से इतना प्राप्त हो गया था कि उन्हे किसी वृत्ति की कोई चिन्ता न रही थी। इसी प्रकार उनके परिवार तथा कबीले वालो को भी बहुत दान दिया गया था। सुल्तान की अधिकाश पुस्तके उन्ही की देखरेख मे तथा उन्ही के मदरसे मे रहती थी। जमादि-उल-अव्वल ८६३ हि० (मार्च–अप्रैल १४५९ ई०) मे उनकी मृत्यु हो गई। ईश्वर हमे उनसे लाभ प्राप्त करने का सौभाग्य प्रदान करे।

यह विजय २ जीकाद ८८९ हि० (२१ नवम्बर १४८४ ई०) को हुई।

धन्दूका पर आक्रमण

इसी वर्ष सुल्तान ने धन्दूका पर चढाई की और अपने पुत्र खलील खा को उस स्थान तथा उन समस्त स्थानों का, जो समुद्र-तट से मिले हुए थे, सरदार नियुक्त कर दिया और स्वय चाम्पानीर लौट आया।

१ आध्यात्मिक उत्तराधिकारी।
२ मौलाना बुरहानुद्दीन का दीपक।
३ भक्त, चेला।

आबू के किले के हाकिम के विरुद्ध कार्यवाही

सुल्तान इसी वर्ष मे हालोल की ओर शिकार के लिए निकला। अचानक उसका सामना ऐसे व्यापारियो से हो गया जो आबू के किले के हाकिम राय की शिकायत लेकर आये थे। उन्होंने बताया कि, "उसने हमसे वह घोडे छीन लिये हैं जिन्हे हम लूहद से आपके नाम पर प्राप्त करके ला रहे थे।" इस पर सुल्तान ने उनसे कहा कि, "जहा तक घोडो का सम्बन्ध है उनका जो मूल्य तुम निश्चित करोगे वह मैं तुम्हे दे दूँगा किन्तु यदि तुम चाहो तो उसके पास लौट जाओ और इस प्रकार लाभान्वित हो।" फिर उसने उसे पत्र (३३) लिखा जिसमे उसे आदेश दिया कि वह उन घोडो को व्यापारियो को लौटा दे। उसने अपने शिविरो के विषय मे आदेश दिया कि "वे ऐसे स्थान पर लगाये जाय जहा से मैं यह देखता रहू कि उन व्यापारियो से राय किस प्रकार व्यवहार करता है।" व्यापारी राय के पास गये। जैसे ही उसे सुल्तान के पत्र की सूचना मिली उसने घोडे वापस कर दिये और उनसे यह प्रार्थना की कि "तुम लोग सुल्तान से इस बात की सिफारिश करो कि वह हमारा अपराध क्षमा कर दे।" घोडे लेकर व्यापारी सुल्तान के पास लौट आये और घोडे उसकी सेवा मे प्रस्तुत कर दिये। सुल्तान इस बात पर सतुष्ट न हुआ और उसने उसे (राय को) आदेश दिया कि वह व्यापारियो को उनका मूल्य भी अदा कर दे। जब मूल्य भी अदा कर दिया गया तब व्यापारियो ने राय के अपराधो की क्षमा याचना के विषय मे निवेदन किया। सुल्तान ने उसे स्वीकार कर लिया।

बहादुर गीलानी का दाबूल मे आतक

८९६ हि० (१४९०-९१ ई०) मे उसे बहादुर गीलानी के विषय मे, जो दाबूल बन्दर का अमीर[1] था, यह समाचार प्राप्त हुए कि वह उन समस्त बन्दरगाहो के तट पर, जो खम्बाया तक फैले हुए हैं, उपद्रव मचा रहा है और वहा वालो को कष्ट दे रहा है तथा जल एव स्थल के समस्त यात्री उसके कारण परेशान हैं। यह समाचार पाते ही सुल्तान ने आदेश दिया कि सेना का अग्रिम भाग दक्षिण की ओर रवाना किया जाय और दक्षिण के बादशाह महमूद शाह बहमनी को गीलानी की रोकथाम के लिये लिखा। उसने यह भी लिखा कि, "यदि इस बात की ओर ध्यान न दिया गया तो मेरी सेना का अग्रिम भाग रवाना हो चुका है। तदुपरान्त उसने किवामुलमुल्क को आदेश दिया कि वह गीलानी की ओर बढे। तदनुसार वह उसकी ओर रवाना हुआ। समुद्रतट की ओर होता हुआ जब वह एकासी बसी नामक बन्दरगाह के समीप पहुचा, तो दक्षिण के सुल्तान का उसे इस आशय का पत्र प्राप्त हुआ कि "आप वही रुक जाय और मैं गीलानी की उचित रोकथाम करूगा।"

महमूद शाह बहमनी द्वारा बहादुर गीलानी की हत्या

यह वीर उस वजीर के अनुयायियो मे से था जो मखदूम की उपाधि से प्रसिद्ध था। उसका नाम महमूद था और उसकी उपाधि ख्वाजये जहा थी। जब इस वजीर की हत्या कर दी गई तो उस समय सुल्तान महमूद बहमनी अल्पावस्था मे था। उस समय दाबूल नामक बन्दरगाह पर, जो बीजापुर के अधीन तथा कनरा की राजधानी था, बहादुर ने अधिकार जमा लिया। इस अवस्था मे दक्षिण के स्वामी

१ हाकिम।

ने अपने राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियो को एकत्र किया और यह कहा कि, "महमूद हमारा आश्रय-दाता है। यदि वह न होता तो खलजी हमे कष्ट मे रखता। बहादुर हमारे राज्य का विद्रोही है। हम गुजरात के सुल्तान से युद्ध नही कर सकते अत हमारे लिये यही उचित है कि हम शीघ्रातिशीघ्र वह कार्य करे जिससे वह हमसे सतुष्ट हो जाय।" सब लोग इस बात पर सहमत हो गये कि उसे (बहादुर को) निकाल दिया जाय और उसके विद्रोह का अन्त कर दिया जाय, अत सुल्तान उस विद्रोह को शान्त करने के लिये निकल खडा हुआ और थोडे से युद्ध के उपरान्त ही रणक्षेत्र मे उसे बन्दी बना लिया तथा उसकी हत्या कर दी। इस घटना की सूचना उसने महमूद को दे दी और किवामुलमुल्क वापस चला गया।

बहादुर के उपद्रव का कारण

बहादुर ने समुद्र तट पर और विशेष रूप से खम्बाया के आसपास उपद्रव मचा रखा था उसका कारण यह था कि ख्वाजये जहा के समय मे एक मलिकुत्तुज्जार[1] था जो बाद मे खम्बाया चला गया था। मलिकुत्तुज्जार की एक बडी ही रूपवती पुत्री थी। बहादुर ने उसके पिता से यह प्रार्थना की कि वह पुत्री से उसका विवाह कर दे किन्तु उसने स्वीकार न किया। कुछ समय उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। तदुपरान्त बहादुर ने मलिकुत्तुज्जार के वकील ख्वाजा मुहम्मद को, जिसकी उपाधि खय्यात थी, उस पुत्री से विवाह के सम्बन्ध मे लिखा। उसने भी टालमटोल की। फिर उसने कई बार इस प्रार्थना की पुनरा-वृत्ति की किन्तु उन्होने यह बात स्वीकार न की। इस पर बहादुर ने खम्बाया मे एक व्यक्ति इस आशय से भेजा कि वह वकील की हत्या कर दे और पुत्री को उसके पास ले आये। वह व्यक्ति वकील की हत्या मे तो सफल हो गया किन्तु पुत्री पर कोई अधिकार प्राप्त न कर सका। वह एक नौका पर बैठ गया और इस भय से भाग गया कि कही वह पकड न लिया जाय। इसी सम्बन्ध मे वह सब हुआ जिसका उल्लेख किया गया।

बहाउद्दीन उलुग खा का विद्रोह

८९७ हि० (१४९१–९२ ई०) मे उसे अमीर कबीर बहाउद्दीन उलुग खा बिन अलाउलमुल्क (३४) उलुग खा सोहराब के सम्बन्ध मे यह समाचार प्राप्त हुए कि उसका व्यवहार प्रजा के प्रति अच्छा नही है। यह समाचार पाकर उसने उसके प्रदेश की सीमाँ की ओर प्रस्थान किया। उलुग खा उसके भय से भाग खडा हुआ। सुल्तान ने शरफ जहा को उसे प्रोत्साहन देने तथा उसे वापस लाने के उद्देश्य से भेजा। उलुग खा ने उसकी बात स्वीकार न की और अपनी समस्त सम्पत्ति उसके सिपुर्द कर दी। वह स्वय गयासुद्दीन खलजी के पास चला गया किन्तु उसे वहा स्वीकार न किया गया कारण कि उसका पिता सोहराब गया-सुद्दीन के पिता महमूद के प्रति इसके पूर्व इसी प्रकार विश्वासघात कर चुका था। उलुग खा उसे छोडकर सुल्तानपुर पहुंचा। वहा अजीजुलमुल्क शेखन सुल्तानी नियुक्त था जो खुशामद के नाम से प्रसिद्ध था। उसने उसे घेर लिया। जब उसकी सहायतार्थ काजी बरा इसहाक पहुचा तो बहाउद्दीन उलुग खा मुर्ग दर्रा के पर्वत मे प्रविष्ट हो गया और वहा के हाकिम राय धावजी से शरण की याचना की। काजी बरा ने तरकीरा कस्बे तक उसका पीछा किया। धावजी ने बहाउद्दीन की सहायता के कारण काजी का विरोध किया। इस युद्ध मे मशायख बिन काजी बरा तथा उसके साथ एक समूह मारा गया। बहाउद्दीन इस

१ मुख्य व्यापारी।

युद्ध से बचकर निकल गया। तदुपरान्त उसने सुल्तान से क्षमा-याचना की। सुल्तान ने उसे क्षमा कर दिया और उसके साथ विशेष व्यवहार किया कारण कि उलुग खा के पिता ने उसके भाई के साथ विशेष रूप से स्वामिभक्ति प्रदर्शित की थी। एक मास उपरान्त उसने साहिबे अर्ज[1] की हत्या कर दी। इस पर सुल्तान ने उसे बन्दी बना लिया। फिर वह रुग्ण हो गया और ९०१ हि० (१४९५-९६ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्तान का आसीर की ओर प्रस्थान

९०४ हि० (१४९८-९९ ई०) मे सुल्तान ने आसीर बुरहानपुर पर चढाई की। उसका कारण यह था कि उसका स्वामी प्रत्येक वर्ष खराज अदा किया करता था। इस वर्ष खराज मे विलम्ब हो गया। जब उसने ब्यास नदी पर पडाव किया तो वहा का वकील पहुच गया। वहा से सुल्तान भाबीर और देरपाल की ओर मुड गया। यह दोनो निजामुलमुल्क ऐसन सुल्तानी ने विजय कर लिये थे।

नासिरुद्दीन को दड देने का सकल्प

९०६ हि० (१५०० ई०) मे उसकी सेना का अग्रिम भाग मान्दू की ओर रवाना हुआ कारण कि यह प्रसिद्ध हो चुका था कि नासिरुद्दीन खलजी ने अपने पिता को विष दे दिया है। इस अभियान से सुल्तान का उद्देश्य यह था कि वह उसे दड दे। वह उसके राज्य पर अधिकार जमाना नही चाहता था। जिस समय वह प्रस्थान करने की योजना बना रहा था, नासिरुद्दीन की ओर से निरन्तर राजदूत आने लगे और यह निवेदन करने लगे कि नासिरुद्दीन का कोई अपराध नही है। सुल्तान ने नासिरुद्दीन को दड देने का विचार त्याग दिया।

सैयिद मुहम्मद जौनपुरी

'मिरआते सिकन्दरी' मे सैयिद मुहम्मद जौनपुरी के सम्बन्ध मे जिनकी उपाधि महदी थी, यह लिखा है कि सुल्तान महमूद बिन मुहम्मद के राज्यकाल के अन्त मे वह अहमदाबाद पहुचे और ताज खा बिन सालार की मस्जिद मे, जो जमालपुर द्वार के समीप है, ठहरे। जिक्र[2] वाज[3] तथा प्रभाव मे उन्हे प्रसिद्धि प्राप्त हो गई। लोग उनके पास एकत्र होने लगे। उनके अनुयायियो की सख्या बहुत अधिक हो गई। उन्होने अपने आगमन के प्रारम्भिक काल में महदी होने का दावा नही किया था। जब उनके विषय मे, शाह शेख जियु बिन (पुत्र) सैयिद महमूद, बिन कुतुबुल आरेफीन सैयिद बुरहानुद्दीन कुतुबुल आलम ने (३५) सुना तो वे उनसे भेंट करने के लिये गये और उनसे हाथ मिलाकर बैठ गये। तदुपरान्त जौनपुरी ने कुरान की एक आयत[4] पढी। इसी प्रकार एक आयत जो उसी के अनुकूल थी, शेख जियु ने पढी। फिर तीन बार दोनो ओर से इसी प्रकार आयते पढी गईं। इसके अतिरिक्त उन लोगो ने कोई वार्त्ता नही की। तदुपरान्त मौलाना (शेख जियु) उनसे बिदा होकर चल दिये। उनके पास से जैसे ही वह बाहर आये तो उनके कुछ साथियो ने सैयिद के विषय मे उनसे प्रश्न किया। उन्होने उत्तर दिया कि "यह साहिबे

१ सम्भवतः आरिज़े ममालिक जो सेना की भरती तथा उसका निरीक्षण करता था।
२ ईश्वर के नाम का स्मरण, जाप।
३ धार्मिक प्रवचन।
४ वाक्य।

हाल[1] व्यक्ति है। साधारण लोगो से ऐसी वार्त्ता करते है जो विशेष लोगों के अनुकूल होती है। वे इस उदाहरण पर आचरण नही करते कि लोगो से उनकी बुद्धि के अनुसार वार्त्ता की जाय। उनको देखते हुए यह समझा जाता है कि उनके अनुयायी उनके उपरान्त कोई उपद्रव खडा करेगे।"

मै कहता हू कि उन्होने जैसा सकेत किया था वैसा ही हुआ क्योकि उनके अनुयायियो ने उनके उपरान्त उनके महदी होने के सम्बन्ध मे बडी अतिशयोक्ति से काम लिया। जो उन्हे महदी स्वीकार न करता था उसे वे काफिर कहते और उसकी हत्या को उचित समझते थे। हिन्दुस्तान का कोई भी भाग उनसे रिक्त न था। उन्होने यहा के निवासियो मे से बहुत से लोगो को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। मैंने यह नही कहा है कि उनके अनुयायी जाहिल ही थे अपितु उनका छल इस सीमा से भी बढ गया था और बुद्धिमान् लोग उसका शिकार हो गये थे।

जब उनका धर्म उन्नति कर गया और अमीरो तथा सेना वालो ने भी उसे स्वीकार कर लिया तो उनके ऐश्वर्य तथा वैभव मे वृद्धि हो गई। वे लोग अपने धर्म के प्रचार मे अद्वितीय थे। उनका साहस इस सीमा तक बढ गया था कि जो लोग उन्हे स्वीकार न करते थे उनकी वे हत्या करा देते थे, विशेष रूप से इस्लाम के आलिमो तथा शरीअत का साथ देने वालो पर तो वे हाथ साफ करते थे। उनमे का एक अकेला व्यक्ति अपने धर्म के प्रचार तथा उसकी सहायता मे एक समूह का मुकाबला कर सकता था। वे प्राण त्याग देना ईश्वर के समीप पहुच जाने का साधन समझते थे। वे बिना किसी सकोच के ऐसे स्थानो मे प्रविष्ट हो जाते थे जहा विनाश उनके सामने होता था। वे लोग इस्माईली फ़िदाईयो की भाति थे।

सुल्तान मसऊद महमूद बिन लतीफ बिन मुज़फ्फर के राज्यकाल मे जब इस समूह का उपद्रव गुजरात मे अत्यधिक बढ गया तो वह उन्हे निकाल बाहर करने की ओर ध्यान देने लगा और उसने उन्हे बडी कठोरता से कुचला। यहा तक कि उस क्षेत्र से उस समूह का अन्त हो जाने वाला ही था कि कुछ समय उपरान्त यह दुर्घटना हुई कि सुल्तान की हत्या कर दी गई। वे लोग इसे अपना चमत्कार समझते थे और वे इसका बराबर प्रचार करते रहे।

जिस समय शेर खा बिन ऐनुलमुल्क पौलादी अमीर तथा मुज़फ्फर बिन महमूद सुल्तान था, उस समय उनके (महदवियो के) धर्म का एक शेख[2] था जो नहरवाला पटन मे निवास करता था। वह स्वय मार्ग-भ्रष्ट था और अन्य लोगो को मार्ग-भ्रष्ट करता था। उसका नाम रशीद था। अकबर के राज्यकाल मे जो दुर्घटनाए हुई उनके प्रारम्भ मे उन लोगो के साथ जो वहा से भागकर निकल गये थे, यह भी गुजरात मे किसी ओर चला गया। गुजरात मे उस समय ख़ाने आजम अजीज कोका की ओर से जो उस समय नायबुस्सल्तनत था, अमीर अमीन सजर नियुक्त था। उसे नायबुस्सल्तनत सजर खा की उपाधि प्राप्त थी। अमीर सजर ने उन लोगों को अपना साधन बनाया जो उसके पास पहुच सकते थे और उसका सदेश पहुचा सकते थे। सजर ने भी उसी धूर्तता से काम लिया जो महदवियो के शेख के स्वभाव मे घुसी हुई थी और उसने यह प्रसिद्ध कर दिया कि वह उन लोगो के धर्म की ओर आकृष्ट है। उसने इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया कि वह उनके शेख को अपने पास इस बहाने मे बुलवा ले कि वह उसका मुरीद[3] होना चाहता है। बहुत प्रयत्न के उपरान्त उसने इसे स्वीकार कर लिया और अपने सहायको

१ सन्त।
२ नेता।
३ चेला।

सहित सजर खा के पास पहुचा। सजर खा ने उसकी दावत का प्रबन्ध किया। ससार मे यह उसका (३६) अन्तिम भोजन था। जब दोनो एकत्र हुए तो सजर खा ने उससे उसके धर्म तथा धर्म के सस्थापक के विषय मे प्रश्न किये। (रशीद) क्योकि उसकी ओर से सतुष्ट था अत उसने अपने हृदय की सब बाते उसे बता दी। सजर खा ने जब तक कि वे लोग भोजन से निवृत्त हो न चुके, कुछ न कहा। तदुपरान्त उसने उसकी तथा उसके साथियो की हत्या करा दी। उसके पुत्र मुस्तफा को छोड दिया और उसे बन्दी बनाकर नायब के पास भेज दिया। उसके उपरान्त अकबर के राज्यकाल मे कोई भी व्यक्ति इस धर्म का शेख[1] बनने के लिये तैयार न हुआ।

सैयिद मुहम्मद, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है, बराबर अहमदाबाद ही मे रहे, यहा तक कि एक बार उन्होने उन लोगो से जो उनके पास उपस्थित थे यह कहा कि, "यदि तुम ईश्वर के दर्शन करना चाहते हो तो मै तुम्हे तुम्हारे मुख की इन्ही आँखो से ईश्वर के दर्शन करा सकता हू।" आलिमो को जब यह समाचार प्राप्त हुए तो वे इस समस्या पर वादविवाद करने लगे। उन्होने सैयिद मुहम्मद की हत्या करा देने का आदेश दिया, केवल मुहम्मद ताज जो उस काल के बहुत बडे आलिम तथा नगर के गुरु समझे जाते थे, इस बात से सहमत न हुए और अन्य आलिमो पर क्रोध करते हुए उन्होने यह कहा कि, "क्या तुमने फतवा[2] देने का ज्ञान इस कारण प्राप्त किया है कि इस सैयिद की हत्या के विषय मे फतवा दो?"

सुल्तान महमूद की उनसे भेट करने की कई बार इच्छा हुई किन्तु राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने निवेदन किया कि "सुल्तान उनसे भेट न करें" और सुल्तान को उन्होने उसके इस इरादे से रोके रक्खा। इसका कारण यह था कि सैयिद मुहम्मद मे, जिन्होने महदी होने का दावा किया था, कुछ ऐसा आकर्षण था कि उन लोगो को, जो उनसे भेट करते थे अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे और वे इस बात पर तैयार हो जाते थे कि ससार का त्याग कर एकान्तवास ग्रहण कर ले।

एक बार एक व्यक्ति, जो किसी स्त्री पर आसक्त था और जिसने रात्रि मे उससे भेट की थी किन्तु वहा से बडे ही क्रोध की दशा मे तलवार की मूठ पर अपना हाथ रक्खे हुए बाहर निकला था, अपने घर की ओर जा रहा था। प्रात हो चुकी थी। वह नदी की ओर रवाना हुआ। वहा उसने सैयिद मुहम्मद तथा उनके साथियो को जल पर पाया। उसने सैयिद से प्रश्न किया कि, "आपको जल की क्या आवश्यकता है?" सैयिद ने उत्तर दिया कि, "जो व्यक्ति अपनी प्रियतमा के कारण क्रोधित होकर निकला है वह इस बात पर विश्वास कर लेगा कि मै वली[3] हू और वह मेरे अनुयायियो के समूह मे प्रविष्ट हो जायेगा।" यह सुनकर वह व्यक्ति मूर्च्छित हो गया और जब वह सावधान हुआ तो उसने तोबा[4] कर ली और ससार को त्याग दिया।

इसके उपरान्त सैयिद मुहम्मद अहमदाबाद से नहरवाला पटन पहुचे और वहा से तीन फरसख पर पडाव किया। एक ग्राम मे जिसे बजली[5] कहा जाता है, उन्होने दावा किया कि वे "महदी मौऊद"[6]

१ नेता
२ किसी कर्म के उचित अथवा अनुचित होने के सम्बन्ध मे मुफ़्ती द्वारा शास्त्र के अनुसार दी गई व्यवस्था।
३ सन्त।
४ घृणित अथवा निंद्य कर्म पुन न करने के लिये पश्चत्ताप या शपथपूर्वक की गई दृढ़ प्रतिज्ञा।
५ बड़ली।
६ मौऊद।

है। सर्वसाधारण मे से बहुत बडे समूह ने उनकी बात स्वीकार कर ली और यह क्रम विशेष व्यक्तियो तक पहुच गया। अब उनकी हत्या के विषय मे फतवा लिया गया। तदुपरान्त वे हिन्दुस्तान छोडकर खुरासान की ओर चले गये और कधार के समीप एक स्थान पर, जो चरख के नाम से प्रसिद्ध है, वे लोग जिन्होने उनकी हत्या की है, उन पर टूट पडे किन्तु उनके अनुयायी उनकी हत्या के विषय मे सहमत नही। यह घटना ९१० हि० (१५०४–५ ई०) मे घटी। उनकी मृत्यु की तिथि के सम्बन्ध मे जो वाक्य कहा गया है वह इस प्रकार है, "अपने दावे मे वह झूठा है" और यह भी लिखा गया है कि वह महदी (३७) नही है।

फिरगियो से युद्ध

९१३ हि० मे हिन्दुस्तान के तट पर फिरगियो के कारण एक बहुत बडी दुर्घटना घटी। सुल्तान जिहाद के उद्देश्य से चाम्पानीर की ओर चल खडा हुआ और समुद्र तट पर होता हुआ दमन तक पहुच गया और वही पडाव किया। उसने मलिक अयाज खास सुल्तानी को, जो जूनागढ तथा बन्दरदीव का हाकिम था, आदेश दिया कि वह समुद्र के मार्ग से फिरगियो के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार रहे। हिन्दुस्तान वाले इस बन्दरगाह को दीब लिखते है किन्तु अरब वाले 'ब' से 'व' कर देते है। जब अयाज दीव से बाहर निकला तो अमीर हुसेन मिस्री तथा तीन जहाज बरस्तीन मे पहुच चुके थे। इन्हे मिस्र के बादशाह कानसूआ गोरी ने फिरगियो के विरुद्ध हिन्द सागर तथा हुरमुज़ मे भेजा था। उसे भी फिरगियो के विषय मे यह समाचार प्राप्त हुए थे कि वे उन दोनो समुद्रो मे अशान्ति उत्पन्न किये हुए है। अयाज़ ने सतुष्ट होकर उनका स्वागत किया और उनके आगमन के कारण बडा प्रसन्न हुआ। उसने उन्हे पूर्ण रूप से प्रोत्साहन दिया। जितनी वह उनकी सहायता कर सकता था उससे अधिक उसने उनकी सहायता की। फिर दोनो चियूल की ओर युद्ध के लिये साथ-साथ चले। अमीर हुसेन, अयाज के लिये तलीए[1] के रूप मे था। चियूल के तटपर फिरगी दृष्टिगत हुए। उनकी सख्या बहुत अधिक थी किन्तु ईश्वर ने इस्लाम के कलमे को सफलता प्रदान की। तलवार ने बहुत से फिरगियो की हत्या कर दी और उनके कई जहाज़ टूट गये। बहुत से बन्दी बना लिये गये। जो जहाज ठीक थे उनमे से बहुत से तलवार से बचकर समुद्र तट पर उतर पडे। मलिक अयाज़ भी उनके पीछे-पीछे उतर पडा। उनमे से सात हजार मनुष्यो की हत्या कर दी और इससे भी अधिक बन्दी बना लिये गये। लगभग कुल १०,००० व्यक्ति मारे गये। अमीर हुसेन (३८) के तुर्क सहायक शहीदो की सख्या ४०० थी। मलिक अयाज की ओर से ६०० व्यक्ति मारे गये। ईश्वर उनके सम्मान मे वृद्धि करे।

अयाज़ ने सुल्तान को इस विजय की सूचना दी और इसे उसके प्रताप का कारण बताते हुए पत्र लिखा। महमूद ने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और बुसी बन्दरगाह की ओर प्रस्थान किया। वहा वह उसके तट पर ठहर गया। अयाज भी उसी ओर पहुचा और अपने जहाज का लगर डाल दिया। जब वह तथा अमीर हुसेन, समुद्र तट पर उतरे तो सुल्तान भी उनके स्वागतार्थ पहुचा। यह सम्मान जिहाद के कारण प्रदर्शित किया गया था। वह उन दोनो को लेकर शिविर मे पहुचा और उन दोनो के प्रति विशेष कृपादृष्टि प्रदर्शित की। उसने अमीर हुसेन को पूर्ण प्रोत्साहन दिया और यह

१ सेना का अग्र भाग जो शत्रु के विषय मे पता लगाने तथा रसद इत्यादि का प्रबन्ध करने के लिये आगे रहता है।

इच्छा प्रकट की कि अमीर हुसेन उसी के पास रहे और उसे महायम से सम्बन्धित स्थान प्रदान करने का वचन दिया। किन्तु उसने यह निवेदन किया कि, "सुल्तान ने मुझे हुरमुज के बन्दरगाह के तट की ओर फिरंगियो के विनाश हेतु भेजा है। उस कार्य को सम्पन्न कर लेने के उपरान्त मै आपके आदेश का पालन करूगा।" सुल्तान अमीर हुसेन के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करता रहा और उसे इनाम प्रदान करता रहा, यहा तक कि अमीर हुसेन ने हुरमुज की ओर प्रस्थान करने की अनुमति चाही। अमीर ने जो कुछ मागा सुल्तान ने उसे देकर उसकी सहायता की। यह घटना इसी वर्ष मे घटी। -

अबुन् नस्त्र शम्सुद्दीन, मुजफ़्फ़र शाह बिन महमूद शाह

(९७) अबुन् नस्त्र शम्सुद्दीन मुजफ्फर शाह बिन महमूद ३ रमजान ९१७ हि० (२४ नवम्बर १५११ ई०) की रात्रि मे सिहासनारूढ हुआ। शुक्रवार के दिन वह राजधानी के द्वार की एक खिडकी मे बैठा। समस्त श्रेष्ठ तथा साधारण व्यक्तियो ने अभिवादन किया। उसने अपने पूर्वजो की प्रथानुसार उनके सम्मान मे वृद्धि की और उन्हे इनाम प्रदान किये। वह अपने दासो की ओर आकृष्ट हुआ और वे मुलूक हो गये। उन मुलूक के साथ उसने बडा ही उत्तम व्यवहार किया।

ईरान के दूत का आगमन

इसी वर्ष शव्वाल मास[1] मे उसने चाम्पानीर की ओर प्रस्थान किया। ईरान का राजदूत वही पहुचा और उसके प्रति सुल्तान ने विशेष कृपादृष्टि प्रदर्शित की।

ईरानियो तथा मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन खलजी का युद्ध

इसी वर्ष अमीर ख्वाजये जहा तवाशी, अपने स्वामी मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन खलजी को लेकर पहुचा। इसके विषय मे सविस्तार उल्लेख सुल्तान बहादुर शाह के इतिहास मे किया जायगा। कुछ अमीरो ने उसका स्वागत किया और मुजफ्फर ने उसकी सहायता का वचन दिया और जीविकोपार्जन की ओर से उसे निश्चिन्त कर दिया। एक दिन सयोग से मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन अहाते मे प्रविष्ट (९८) हो गया जहा ईरान का राजदूत ठहरा हुआ था। वह उस समय बडा ही रूपवान् युवक था। ईरानी लोग उस पर लट्टू हो गये। लोगो को इस बात का पता चल गया। मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन इसे सहन न कर सका। उसने तलवार खीच ली और घोडे को ठोकर लगाई। ईरानी ५०० की सख्या मे थे। जब तलवार चली तो इस कारण कि सभी ईरानी आशिक नही होते उन्होने इस रूपवान् का मुकाबला कठोरता से किया, इस पर सर्वसाधारण ने उन पर पत्थरो की वर्षा की। जो विशेष लोग वहा उपस्थित थे उन्होने मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन की सहायता की। मुहम्मद ने ईरानियो के एक समूह की हत्या कर दी। यदि नगर का हाकिम उचित रूप से हस्तक्षेप न करता तो वे सब के सब नष्ट हो जाते। तदुपरान्त उन्हे उस अहाते से दाजकर स्थानान्तरित कर दिया गया किन्तु मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन इस घटना की प्रसिद्धि से बडा ही लज्जित हुआ। वह इसके कारण सुल्तान की अनुमति बिना ख्वाजये जहा तवाशी के साथ मन्दू वापस चला गया। उस समय देश वालो मे मर्यादा की रक्षा के गुण अत्यधिक पाये

१ शव्वाल ९१७ हि० (दिसम्बर १५११-जनवरी १५१२ ई०)।

के भी समाचार मिल गये जो ईदर के हाकिम राय भीम बिन राय भान द्वारा घटित हुई थी, अत वह महरासा की ओर लौट गया और उसके विरुद्ध सेना भेज दी। राय, बीजानगर की ओर पराजित होकर चल दिया, उसके राज्य के विभिन्न स्थान नष्ट कर दिये गये।

राय भीम द्वारा ऐनुलमुल्क फौलादी की पराजय

इस दुर्घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि ऐनुलमुल्क फौलादी ने नहरवाला से निकल कर चाम्पानीर पर चढाई की। उसे मार्ग मे यह समाचार प्राप्त हुए कि राय भीम सहबर[1] नदी के आस-पास के स्थानो को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। अत वह उसकी ओर मुड पडा। ईदर के निकट महरका नामक एक ग्राम था। वह उसकी ओर बढा और उसने उस प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। वहा के निवासियो की हत्या कर दी और घरो को जला डाला। राय भीम एक बहुत बडी सेना सहित उसके मुकाबले के लिए पहुच गया। ऐनुलमुल्क मुकाबले के लिए सख्या की कमी के बावजूद डट गया और उससे युद्ध किया। उसके भाई अब्दुल मलिक तथा उसके साथियो मे से एक बहुत बडे समूह की हत्या हो गई। वह स्वय शहीद होने की अभिलाषा कर रहा था और इसके लिए उसने प्रयत्न भी किया। (१००) उसके हाथो से मुशरिको की बहुत बडी सख्या नष्ट हो गई किन्तु जब मनुष्य की मृत्यु का समय आ जाता है तभी वह मरता है। फिर रात्रि मे उन दोनो को पृथक् कर दिया। राय, ईदर की ओर वापस चला गया।

सुल्तान की राय से सधि

९१९ हि० (१५१३–१४ ई०) मे सुल्तान ईदर पर टूट पडा और उसने उसे जला डाला। उसने राय भीम को नष्ट-भ्रष्ट करने का सकल्प कर लिया। जब राय भीम ने दीनता प्रकट की और हाथी इत्यादि जो उस युद्ध मे नष्ट हो गये थे उनका बदला चुकाने का वचन दे दिया तो सुल्तान, क्योंकि उसे खलजी की चिन्ता थी, उसे छोड कर खोदरा लौट गया और चाम्पानीर मे अपने पुत्र सिकन्दर शाह को अपना उत्तराधिकारी बनाया। फिर कैसर खा, महेन्द्री नदी को पार करके देवला की ओर अग्रसर हुआ और सुल्तान उसके पीछे पीछे चला। सफदर खा ने घाटी पर, सेना के शिविर की रक्षा हेतु पडाव डाल दिया।

सुल्तान का मालवा की ओर प्रस्थान

जब धार के मुकद्दम पीर खोखारी[2] ने नदी पर सुल्तान के पडाव के समाचार सुने तो उसने अपने पुत्र खिज्र को आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने के लिए भेजा। सुल्तान ने उसे अपने से निकट किया और उस पर कृपा-दृष्टि करके उसके सम्मान को बढाया और उसे वापस चले जाने की अनुमति दे दी। अमीरो मे उसके साथ किवामुलमुल्क सारग, इख्तियारुलमुल्क बिन एमादुलमुल्क बहा नेकबख्त, और कुतुलुग खा थे। फिर उसे यह समाचार प्राप्त हुये कि मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन देहली की सेना सहित चन्देरी पहुच गया है और महमूद उसका मुकाबला करने के लिये चन्देरी तथा देवला के मध्य में थोडे से दिनो की यात्रा की दूरी पर है। सुल्तान ने अपने अमीरो से कहा कि, "मैने यह यात्रा महमूद की सहायतार्थ और काफिरो के विरुद्ध जिन्होंने महमूद पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था प्रारम्भ की थी और मैने वचन दिया था कि

१ सांभर।
२ यह नाम स्पष्ट नही है।

दोनो भाइयो मे सधि करा दूँगा। क्योकि देहली से उसने सहायता प्राप्त कर ली है अत हमे इस विषय मे कष्ट करने की आवश्यकता नही।" उसने उन समस्त अमीरो को जो खिज्र के साथ आये थे वापस जाने की अनुमति दे दी।

उसने स्वय १२ हजार अश्वारोहियो तथा १०० हाथियो सहित मौलाना शेख अब्दुल्लाह तथा मालवा के मौलाना शेख कमाल के दर्शनार्थ प्रस्थान किया। ये दोनो बहुत बडे सत थे और उनके दर्शन दोनो लोको मे समृद्धि के साधन थे। वह धार के हौज पर जुहर की नमाज के समय[1] पहुच गया। वह वहा महल मे उतरा और थोडी देर विश्राम किया। तदुपरान्त सवार होकर दोनो सतो के दर्शन किये। उनकी महान् (आध्यात्मिक) शक्ति से सहायता की याचना की और वहा न्योछावर प्रदान की और अपने महल मे वापस आ गया और रात्रि वही व्यतीत की। तदुपरान्त वह प्रात काल उस आहूखाने मे, जिसे गयासुद्दीन खलजी ने बनवाया था, गया और वहा जो नई नई चीजे बनवाई थी, उन पर आश्चर्य करता रहा। तीसरे दिन वह अपनी सेना के शिविर मे वापस चला आया और वहा से अपनी राजधानी को चल दिया।

इतिहासकार हुसाम खा ने "तारीखे बहादुरशाही" मे लिखा है कि "मै उन लोगो मे से था जो सुल्तान के साथ, जब वह धार पहुचा, उपस्थित थे और वहा उसने रात्रि व्यतीत की।" उसने कहा कि, "जब सुबह हुई तो उसने निजामुलमुल्क सुल्तानी, रजी-उल-मुल्क सुल्तानी, इख्तियारुलमुल्क, मलिक चमन, मुहाफिजुलमुल्क तथा सैफ खा को आदेश दिया कि वे दिलावरा तथा आहूखाने की जो धार मे है सैर हेतु चले जाय और उस भवन का निरीक्षण करे जिसे खलजी ने उन दोनो स्थानो पर बनवाया था। कोई भी (१०१) व्यक्ति ऐसे भवनो का बडी कठिनाई से ही पता दे सकता है जो उनके समान सुन्दर हो और उनका प्रबन्ध ठीक हो। उसकी जिस वस्तु की ओर दृष्टि पडती थी वह अत्यन्त ही पूर्ण दृष्टिगत होती थी। उसने फिर आदेश दिया कि 'तुम सब दिन के अतिम भाग तक वहा अवश्य लौट आना।' जब वे सब दिलावरा की ओर रवाना हुए तो सुल्तान ने धार की ओर प्रस्थान किया और आहूखाने मे प्रविष्ट हुआ। उसने वहा के सम्बन्ध मे समस्त सूचनाये प्राप्त कर ली और वापस चला गया। उन लोगो के वापस होने मे जब देर हो गई तो वह उनके पीछे दिलावरा की ओर सवार होकर पहुचा, वहा से उसे वे लोग न मिले। उसने उनके सम्बन्ध मे समाचार प्राप्त कराये। उलुग खा ने उसे उत्तर दिया कि 'निजामुल-मुल्क का भाई नालचा मे है। उसका नाम राय सिंह है। सभवत निजामुलमुल्क ने उससे भेट की इच्छा प्रकट की हो और सब लोग नालचा चले गये हो।' दिलावरा मे भ्रमण के उपरान्त सुल्तान अपने निवास-स्थान पर धार वापस चला आया। सायकाल सुल्तान को उस विजय के समाचार मिले जो निजामुलमुल्क तथा उसके साथियो को प्राप्त हुई थी और उसे सूचना दी गई कि वे सब आ गये है। जब वे सब उसकी सेवा मे उपस्थित हुए तो सुल्तान ने उनसे सब हाल पूछा। निजामुलमुल्क ने निवेदन किया कि, 'जब मै नालचा की ओर प्रस्थान करने के उद्देश्य से रवाना हुआ तो किले की सेना ने एक समूह मेरे लिए भेजा। वे सब मेरा पीछा करने के लिए किले से उतरे। जब वे सब मेरे पास पहुच गये तो मैने उनसे युद्ध किया और ४० से अधिक मनुष्यो की हत्या कर दी। वे सब भाग खडे हुए और मुझे विजय प्राप्त हो गई।' सुल्तान ने उसके इस साहस पर उसको बुरा-भला कहा और यह कहा कि 'यह बात स्वाभाविक है कि अधिक सख्या को अल्प सख्या पर विजय प्राप्त हो जाती है किन्तु यदि अल्प सख्या को अधिक सख्या

१ मध्याह्नोत्तर में।

पर विजय प्राप्त हो जाय तो यह बात ईश्वर के आदेशानुसार होगी, अत तुम अव ऐसी वात पुन न कहना ।"

सुल्तान द्वारा भारमल की सहायता

९२१ हि० (१५१५-१६ ई०) मे राय भीम बिन राय भान की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र भारमल बिन भीम उसके स्थान पर सिहासनारूढ हुआ। उसके चाचा के पुत्र राय मल बिन सूरज मल ने चित्तौड तथा मेवाड के हाकिम राय सागा की सहायता से उम पर आक्रमण किया। राय सागा, राय मल का ससुर था। सुल्तान अहमदनगर की ओर रवाना हुआ। भारमल निजामुलमुल्क सुलतानी के साथ (सुल्तान की सेवा मे) उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उसकी सहायता का आदेश दिया। सुल्तान नहरवाला की ओर थोडे से सैनिको के साथ रवाना हुआ और वहा से वापस हुआ। उसने निजामुलमुल्क को अहमदनगर की हुकूमत सौप दी और राय भारमल की सहायता करने के लिए उसे आदेश दिया। वह स्वय चाम्पानीर लौट आया। निजामुलमुल्क ने राय मल से युद्ध हेतु प्रस्थान किया और उसे राज्य के बाहर निकाल दिया तथा भारमल को राजधानी ईदर मे नियुक्त कर दिया ओर उसके साथ वहा पर (१०२) पडाव किया, किन्तु जब वह फालिज के रोग मे ग्रस्त हो गया तो उसने सुल्तान को इस विषय मे सूचना दी और अपने सम्बन्ध मे उसने ईश्वर से प्रार्थना करने का आग्रह करते हुए यह निवेदन किया कि, "मेरे स्थान पर कोई अन्य अमीर भेज दिया जाय।" तदुपरान्त नुसरतुलमुल्क भीलम अहमदनगर पहुचा और निजामुलमुल्क से मिल गया। उसने ईदर मे जहीरुद्दीन को १०० अश्वारोहियो सहित नियुक्त कर दिया। इस पर राय मल ने सहस्रो अश्वारोहियो तथा पदातियो सहित वहा आक्रमण कर दिया। जहीर उससे युद्ध करने के लिये बीजानगर की ओर बढा और पदातियो के केन्द्र पर दृढ रह कर उससे युद्ध किया। राय मल ने निरन्तर इस बात का प्रयत्न किया कि वह उनके पाव उखाड दे किन्तु उसे इसमे सफलता न हुई। जहीर दिन भर उससे युद्ध करता रहा। उसके दो चाचा तथा २० पदाती मारे गये। राय मल के समाचार अहमदनगर मे प्रसारित हो गये। नुसरतुलमुल्क उससे युद्ध के लिए सवार हो गया और जैसा कि इस लोकोक्ति मे कहा गया कि, "जल्दी करने वाले को पक्षी के पख मिल जाते है" वही सिद्ध हुआ। वह सायकाल ईदर मे पहुच गया। उसके उस ओर रवाना होने से जहीर तथा राय मल मे दूरी हो गई। जहीर, ईदर लौट गया। निजामुलमुल्क चाम्पानीर के हाकिम राणा पताई का पुत्र था।

मालवा के सुल्तान का गुजरात पहुचना

उसी वर्ष मे राय मेदिनी पुरबिया ने सुल्तान अलाउद्दीन महमूद खलजी पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। अत वह वहा से पलायन कर के भकूर पहुचा। भकूर दहयूर के अधीन है और वहा से १० कोस पर स्थित है। बहादुर के इतिहास के सम्बन्ध मे इसका उल्लेख किया जायेगा।

सक्षेप मे यह घटना इस प्रकार है कि जब मन्दू के अमीर उसके तथा उसके भाई के मध्य मे शत्रुता का कारण बन गये तो महमूद राय मेदिनी का आश्रय लेने लगा। प्रारम्भ मे तो वह जो चाहता था वही हुआ, फिर राय ने प्रभुत्व प्राप्त कर लिया और उसका अधिकार यहा तक बढ गया कि उस प्रदेश को उसने इस्लामी सेना तथा उसके सरदारो से रिक्त करा दिया। महमूद बडी अल्प सख्या के साथ वहा रह गया। उसे यह भय हुआ कि वह उसके साथ वहा नष्ट हो जायगा। तदुपरान्त उसने एक काफिर से जिस पर

उसे भरोसा था और जिसका नाम किश्ना[1] था गुप्त रूप से यह कहा कि "मेरे लिए दो घोडे तैयार कर और जब मै मागूँ तो तू उन्हे ले आना।" वह एक दिन शिकार के लिए सवार हुआ। राय की सेना बकलोना मे थी। वह दूर तक चला गया और रात्रि मे अपने शिविर मे वापस आया। जब लोग सो गये तो किश्ना दोनो घोडे ले आया। एक घोडे पर वह स्वय सवार हुआ और दूसरे पर उसकी पत्नी सवार हुई। किश्ना, जो मार्गदर्शक था, अपने घोडे पर सवार हुआ और वे बडी तेज़ी से यात्रा करते हुए भकूर पहुच गये और एक वृक्ष के नीचे उन्होने पडाव किया। उस गाव के आमिल[2] को इसका पता चल गया। उसने इस विषय मे अपने स्वामी कैसर खा को लिख भेजा। वह चाम्पानीर मे था। वह स्वय खलजी की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसे एक उचित स्थान पर उतारा। कैसर खा ने उसके समाचार सुल्तान को भेजे। सुल्तान ने उसे आदेश दिया कि, "सल्तनत के भण्डार[3] मे से वह समस्त सामग्री जिसकी उसे आवश्यकता हो और जो उसके योग्य हो उसके पास पहुचा दी जाय। और तू स्वय खलजी के पास जा।" उसने ऐसा ही किया। सुल्तान ने पेशरव खा को आदेश दिया कि वह भकूर की ओर बढे और उसके लिए तथा खलजी के लिए बराबर से खेमे लगवाये। उसने वजीर मज्दुद्दीन मुहम्मद मसनदे आली खुदावन्द खा लायजी को (१०३) आदेश दिया कि "तुम उसकी ओर अमीर[4] सामान सहित जाओ और यह वस्तुये ले जाओ। उसकी अश्वशाला के लिए एक हजार घोडे, १०० हाथी, २०० ऊट, चत्र, पताका, नक्कारा, नकद धन, बहुमूल्य वस्त्र, ताबे तथा चीनी के वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र, गाडिया तथा समस्त आवश्यक वस्तुये हो।"

मालवा के सुल्तान से सुल्तान की भेट

९२३ हि० (१५१७-१८ ई०) मे सुल्तान चाम्पानीर की ओर रवाना हुआ। और एक पडाव से दूसरे पडाव को पार करता हुआ भकूर पहुच गया। खलजी उससे भेट करने के लिए सवार होकर गया। उसके साथ सल्तनत के अमीर तथा सरदार भी थे। दोनो ने घोडो पर बैठे बैठे ही आलिगन किया और खलजी के शिविर की ओर चले। मुजफ्फर ने भी उसी के पास पडाव किया और उसके आगमन पर कृतज्ञता प्रकट की और उसके हृदय को सतुष्ट किया।

सुल्तान का खलजी के साथ मालवा की ओर प्रस्थान

खलजी के लिए भोजन आया। जब वह भोजन कर चुका तो सुल्तान उससे विदा हुआ और अपने शिविर की ओर सवार होकर गया। अपने अमीरो के एक समूह को उसकी सेवा मे छोड गया। फिर दोनो पुन एकत्र हुये और मन्डू के चारो ओर से कुफ्र के समूलोच्छेदन का प्रयत्न करने लगे। वे पुन तीसरी बार घोडों की पीठ पर सवार हुए और फिर दोनो साथ साथ देवला चले। तदुपरान्त वे धार की ओर रवाना हुए। राय मेदिनी को जब यह समाचार प्राप्त हुए कि खलजी मुजफ्फर के पास चला गया है तो उसने अपने साथियो से कहा कि, "मुझे इसी का भय था। मै तुम्हे उसको सतुष्ट रखने के लिए जो कहा करता था तो वह इसी दिन से बचने के लिए था। तुम अन्त मे इसी मे गिर पडे। अब तुम्हारा क्या मत है? मुजफ्फर हमारे समीप आ गया है।" उन्होने एक दूसरे के विरुद्ध मत प्रकट किये। राय ने

१ कृष्णा।
२ ग्राम मे भूमि-कर वसूल करने वाला।
३ ज़खीरे।
४ वह अधिकारी जो शाही असबाब का प्रबन्ध करता था।

उनसे कहा कि "अब तुम किले की रक्षा करो, मै रणक्षेत्र की देखभाल करूगा।" उसने १२००० अश्वारोही छाट लिये और किले के समीप के स्थानो की ओर चल दिया। जब उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि देवला मे मुज़फ्फर पडाव किये है तो उसके सकल्प मे कमजोरी आ गई और वह नगर की ओर वापस चला गया। फिर उसने (अपने अधिकारियो से) यह कहा कि, "युद्ध करना सभव नही। अब केवल यही उपाय है कि चित्तौड का हाकिम राय सागा आ जाय, अत तुम लोग मेरी ओर से ४० दिन तक पर्वत के किले की रक्षा करो। मै उसके पास जाता हू और उसे लेकर आता हू।" वह उन सब से विदा हुआ और उन सबने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रस्थान किया। तदुपरान्त सुल्तान ने धार से प्रस्थान किया और किले का अवरोध कर लिया। एमादुलमुल्क, खुगकदम किले के द्वार के समक्ष उतर पडा। एक दिन एक सेना जिसमे केवल चुने हुए लोग थे (किले से) इस बात पर तैयार होकर निकली कि एमादुलमुल्क की हत्या कर दी जाय। वह बडा ही सावधान तथा सचेत रहने वाला व्यक्ति था। उसने सेना पर आक्रमण कर दिया और उसमे से बहुत बडे समूह की हत्या कर दी। शेष लोग भाग गये।

किले वालो द्वारा सधि का प्रयत्न

उनमे से कुछ लोगो ने तलवारे छोडकर धूर्तता का आश्रय लिया और किले को सौप देने के लिए अपनी सुरक्षा के विषय मे प्रार्थना की। इस सबन्ध मे कुछ दिनो तक लोग आते-जाते रहे फिर उन लोगो ने अपनी सपत्ति के लिए रक्षा की प्रार्थना की। जब उसे भी स्वीकार कर लिया गया तो फिर उससे भेट करने के लिए अवकाश मागा गया। तदुपरान्त उससे यह कहा गया कि "तुम किले से दूर हट जाओ ताकि हम उससे बाहर निकलने मे सुरक्षित रहे।"

राय मेदिनी तथा राणा सागा का उज्जैन पहुचना

जब उसने यह भी किया तो उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि राय मेदिनी, राणा सागा को लेकर (१०४) उज्जैन पहुच गया है। इस पर उसे बडा क्रोध आया और वह एक ऊचे टीले पर जो वहा था पहुचा और उस पर बैठ गया, उसके समस्त सरदार उसकी पताका की छाया मे उस टीले के नीचे पूर्ण रूप से सशस्त्र खडे हुए थे। उसने उन सरदारो मे से आसीर के हाकिम आदिल खा को बुलवाया। चित्तौड के हाकिम से युद्ध करने के लिए जो सेना भेजी जा रही थी उसका उसे सेनापति नियुक्त किया। उसे खिलअत, तलवार, ढाल, पेटी, ९ घोडे और कुछ हाथी दिये। उसे कुछ परामर्श देकर विदा कर दिया। फिर उसने मजलिस ग्रामी फतह खा बहरू को बुलवाया और उसे भी यह सब वस्तुये प्रदान की। इसी प्रकार उसने किवाम खा सारग के साथ व्यवहार किया और आदिल खा के विषय मे उसे कुछ आदेश दिये। फिर उन अमीरो के सैनिको को बुलवाया और उन्हे अच्छे वचन दिये। सेना के बडे-बडे लोगो को कबाये प्रदान की। समस्त सेना वालो को जैसा कि हिन्दुस्तानियो के विदा होने के समय प्रथा है, पान प्रदान करने का आदेश दिया।

एमादुलमुल्क द्वारा किले का अवरोध

वह स्वय किले के नीचे, पहले जिस स्थान पर था वही चला गया और विजय की सामग्री एकत्र करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। जब वह वहा उतरा तो उसके दूसरे दिन उनके पास एक व्यक्ति आया। एमादुलमुल्क (उस समय) बघारा नामक द्वार पर पडाव किये हुए था। उसने उससे यह कहा कि, "विजय अमुक द्वार से प्राप्त हो जायेगी। आने वाली रात होली की रात है, पर्वत वाले किले की दृढता पर विश्वास करते हुए अपने मनोरजन मे व्यस्त रहेगे और तुम्हारी ओर से असावधान हो जायेगे, अत

विजय को उस द्वार से प्राप्त करो, वह बहुत निकट है।" मै कहता हू और मुझे इस बात पर कोई सदेह नही है कि वे खिज्र[1] थे। अन्यथा ऐसे हरबी काफिर से जिसे न आखो ने देखा और न किसी ने इस समाचार को पहुचाने का आग्रह किया, यह बात सभव नही। जो कुछ हो, एमादुलमुल्क ने सुल्तान को यह समाचार पहुचाये। सुल्तान ने एमादुलमुल्क से कहा कि, "तुम ईश्वर का नाम लेकर चल दो, ईश्वर के आदेशानुसार सफलता प्राप्त हो जायेगी।"

एमादुलमुल्क का किले मे प्रवेश

जब रात आ गई तो एमादुलमुल्क ने बर्छों की सीढिया तैयार कराई और जिस द्वार के विषय मे सूचना दी गई थी उसकी ओर रवाना हुआ। जिस द्वार का पता बताया गया था उस पर सर्वप्रथम वह सीढी पर चढकर ऊपर पहुचा। जब वहा उसने किसी को न देखा, क्योकि वे सब तो होली के समारोह के मनोरजन मे व्यस्त थे, तो वह सीढी के पास वापस आया और उस रस्सी को हिलाया जिसे इस बात के सकेत के लिये रक्खा गया था कि उचित अवसर आ गया है। फिर लगभग १०० आदमी द्वार की ऊपरी सीमा पर चढ गये और वहा से द्वार के समीप नीचे उतर पडे। एमादुलमुल्क उसके बाहर खडा हुआ था। उन्होने फाटक का ताला तोड दिया और फाटक खोल दिया। जो लोग वहा मिले उनकी हत्या कर दी और बिगुल बजा दिया। एमादुलमुल्क स्वय नगर के द्वार की ओर बढा और उसने उस पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

सुल्तान मुजफ्फर की विजय

जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुआ तो वह समस्त सेना सहित सवार हुआ और उन लोगो को किले की ओर ले चला। वे सब एमादुलमुल्क से मिल गये और मशाले जला दी। किले मे दिन के समान प्रकाश हो गया। फिर तलवार ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया। शादी खा पुरबिया युद्ध के लिए अग्रसर हुआ किन्तु जब उसने युद्ध मे विघ्न पडते हुए देखा तो वह भाग खडा हुआ। इसी प्रकार पिथराय (१०५) तथा उग्रसेन पुरबिया भागे। तलवार उन पर अपना आदेश चला रही थी और वे बडे ही कठिनाई मे पडे हुए थे। अन्त मे विवश होकर वे अपने घरो मे प्रविष्ट हो गये, द्वारो को बन्द करके घरो मे आग लगा दी। वे स्वय तथा उनके परिवार वाले भी उसमे जल गये। जब सुबह हुई तो सुल्तान अपने चत्र के नीचे था और इसी प्रकार महमूद तथा वह दोनो शनै शनै चल रहे थे। बहते हुए झरने के समान किले की गलियो मे प्रत्येक दिशा से नालियो मे रक्त बह रहा था। १९ हजार काफिर मारे गये। इस सख्या मे वे लोग सम्मिलित नही है जिन्होने द्वार बन्द कर लिया था और जल गये। जब मुजफ्फर, खलजी की राजधानी मे पहुचा तो उसने उसे विजय की बधाई दी और राज्य की सम्पन्नता के विषय मे शुभकामनाये की। उसने अपने हाथ उठाकर द्वार की ओर सकेत करते हुए कहा कि, "ईश्वर का नाम लेकर आप इसमे शातिपूर्वक प्रविष्ट हो जाय।" उसने अपने घोडे की बाग मोड ली और किले से निकल कर अपने शिविर की ओर चल दिया। खलजी अपने घर मे प्रविष्ट हुआ और अपने परिवार से मिला तथा ईश्वर के प्रति उसने कृतज्ञता प्रकट की।

१ ख्वाजा खिज्र एक पैग़म्बर थे। मुसलमानो का विश्वास है कि वे अब भी जीवित है और जो यात्री मार्ग भूल जाता है, उसे मार्ग दर्शाते है। वे पीड़ितों की सहायता भी करते हैं और उनकी सहायता से लोगो की मनोकामनाये सिद्ध हो जाती हैं।

इतिहासकार हुसाम खा का कथन है कि किले के आदमियो मे से हेम करण पुरबिया तथा बदन के अतिरिक्त कोई न वच सका। इन दोनो ने किले के एक कगूरे मे रस्सी एकत्र कर रखी थी। जब वे निराश हो गये तो वे रस्सी को पकड कर पर्वत के आचल मे उतर गये और उज्जैन की ओर चल दिये और राय मेदिनी से मिले। बदन ने अभी अपनी बात समाप्त भी न की थी कि वह इस भयानक दृश्य का विवरण देते हुए गिर पडा और मर गया। हेम करण की बुद्धि मे फर्क पड गया। राय मेदिनी चीख़ मार कर मूर्च्छित हो गया। जब राय सागा को यह समाचार प्राप्त हुए कि आदिल ख़ा उज्जैन के समीप पहुच गया है तो वह परेशान हो गया और उसने राय मेदिनी से कहा कि "यह चीत्कार कैसा है ? समय आ गया है, यदि तुम्हारा उद्देश्य यह है कि अपने साथियो से मिल जाओ तो सचेत हो जाओ क्योकि आदिल खा समीप पहुच गया है , और नही तो अपने ऊपर अधिकार प्राप्त करो।" तदुपरान्त उसने उसके विषय मे आदेश दिया और उसे हाथी पर सवार कर दिया गया। वह उज्जैन से निकल कर अपने राज्य की ओर चल दिया। यद्यपि उसका प्रयत्न असफल हो चुका था किन्तु आदिल ख़ा ने दीबालपुर तक उसका पीछा किया और वह वही ठहर गया। यहा तक कि सुल्तान ने उसे बुलवा लिया।

तदुपरान्त खलजी ने अपने भण्डार की तलाशी ली और आतिथ्य सत्कार का प्रबन्ध किया। वह मुज़फ्फर की सेवा मे उतर कर गया और उससे प्रार्थना की कि वह किले की ओर चलने का कष्ट करे। उसने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। आतिथ्य सत्कार से निवृत्त होने के उपरान्त खलजी सुल्तान को उन भवनो की ओर ले गया जिन्हे उसके पूर्वजो ने बनवाया था। मुजफ्फर को यह सब वस्तुये बडी पसन्द आईं। उसने उनके लिए ईश्वर से शुभकामनाये की। तदुपरान्त वे दोनो एक कोने मे बैठ गये। खलजी ने उसके प्रति अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की और यह कहा कि, "ईश्वर को धन्य है कि मैने आपकी वीरता तथा साहस के कारण शत्रुओ को कष्ट मे देख लिया जिसकी मुझे अभिलाषा थी। अब ससार की किसी वस्तु के सबन्ध मे मेरी कोई इच्छा नही रही। सुल्तान मुझसे अधिक इस प्रदेश पर राज्य करने के पात्र हैं। इसमे जो (१०६) कुछ था वह मेरा है अत मैं प्रार्थना करता हू कि आप उसे मेरी ओर से स्वीकार करे और जिसे चाहिये यहा राज्य हेतु नियुक्त कर दे।"

इस पर सुल्तान ने ख़लजी से कहा कि, "मैने इस दिशा मे एक पग ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तथा दूसरा पग तुम्हारी सहायता हेतु उठाया था। मुझे दोनो बाते प्राप्त हो गई। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे और तुम्हारी सहायता करे।" ख़लजी ने कहा कि, "राज्य मनुष्यो से ख़ाली हो गया है। मुझे भय है कि यह फिर कही नष्ट न हो जाय।" सुल्तान मुजफ्फर ने उत्तर दिया कि, "मुझे यह बात स्वीकार है। सैयिद आसफ ख़ा १२ हजार अश्वारोहियो सहित उस समय तक तुम्हारे पास उपस्थित रहेगा जब तक तुम्हारे आदमी एकत्र न हो जाय।" ख़लजी ने तदुपरान्त यह आग्रह किया कि, "अपने पुत्र ताज खा को भी आप यही छोड दीजिये।" मुज़फ्फर ने यह प्रार्थना भी स्वीकार कर ली और आवश्यकता पडने पर सर्वदा उसे सहायता का आश्वासन देकर आसफ ख़ा से कहा कि, "तुम्हे तथा तुम्हारे साथियो को जो वेतन मेरे पास से मिलता था वह उसी प्रकार से मिलता रहेगा, जब तुम अपने घर को वापस आओगे तो वह सब तुम्हे प्राप्त हो जायगा। खलजी जो कुछ तुम्हे प्रदान करेगा वह उसके अतिरिक्त होगा ताकि तुम आगे निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करो।" और खलजी के लिए उसने खजाना प्रदान करने का आदेश दिया।

तदुपरान्त वह उससे विदा होकर किले से नीचे उतरा। जब मुज़फ्फर अपनी राजधानी को जाने के लिए तैयार हुआ तो खलजी भी नीचे उतरा। उसके साथ आसफ ख़ा तथा ताज ख़ा थे। वे अपनी सीमा तक उनके साथ गये और फिर उन्होने सुल्तान से ईश्वर से शुभकामनाये करने के लिए कहा।

सुल्तान ने आदिल खा को विदा कर दिया और फिर वह आसीर को वापस चला गया। सुल्तान सफलता तथा यश प्राप्त करके चाम्पानीर पहुचा। उसके पहुचने का दिन भी विशेष महत्व का था। समस्त लोगो ने उसके लिए शुभकामनाये की। मन्दू की विजय १२ सफर ९२४ हि० (२३ फरवरी १५१८ ई०) को प्राप्त हुई।

इस विजय की तिथि के फारसी पद्य इस प्रकार है

पद्य

"मुजफ्फर शाह दिग्विजयी सुल्तान,
उसने दीन (इस्लाम) तथा शरा की नीव फिर से रक्खी।
मदू का किला छ दिन मे विजय किया,
इस जादू को पूरी तरह खोल दिया।
इस घटना की तिथि के लिये इतना कहना पर्याप्त है,
मन्दू देश विजय करके लौटा दिया।"

अन्य पद्य

"मुजफ्फर शाह दिग्विजयी सुल्तान, जिसकी तलवार ने,
कुफ्र की नीव को नष्ट तथा दीन (इस्लाम) एव शरा
को ताजा किया।
जब उसने अपने सौभाग्य से मन्दू का किला विजय किया,
उस शुभ वर्ष की तिथि इस प्रकार हुई कि,
'मन्दू विजय किया'।"

खलजी का घायल होना

९२५ हि० (१५१९ ई०) मे वह दुर्घटना घटी जिसमे खलजी आहत हुआ था। इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि राय हेम करण पुरबिया करन[1] मे था। खलजी ने उस पर आक्रमण किया और (१०७) रणक्षेत्र मे युद्ध के उपरान्त उसकी हत्या कर दी। उसके साथ राय सागा की सेना थी और यह वही है जो पर्वत पर किले की विजय के दिन उतरा था। महमूद ने भागी हुई सेना का पीछा किया और उसकी खोज का अत्यधिक प्रयत्न करने लगा, यहा तक कि वह अपनी सीमा के बाहर निकल गया। इसी समय राय सागा किसी ओर से ४० हजार अश्वारोहियो सहित निकल पडा। खलजी अपने स्थान पर डटा रहने वाला सवार था। वह हजार सशस्त्र आदमियो का मुकाबला अकेले कर सकता था।

खलजी तथा राणा सागा का युद्ध

जब पताकाये लहराने लगी और बिजली की भाति चमकने वाली तलवारो ने म्यान छोड दी तो खलजी उसके मुकाबले के लिए शक्तिशाली बाहुओ, वीर हृदय तथा दृढ सकल्प के साथ यमनी तलवार

१ अन्य स्थानों पर 'काकरून'।

हाथ मे लेकर अरबी घोडे पर सवार हुआ और युद्ध के लिए कटिबद्ध हो गया। उसने सेना के मध्य भाग पर आक्रमण कर दिया। वह कभी सीधी और कभी उत्तर की ओर घोडे को दौड़ाता था। दोनो समूहों मे सबसे अधिक वीर योद्धा वही था, किन्तु घोडा कभी न कभी फिसल पडता है और पख काटने वाली तलवार की धार कभी न कभी मुड जाती है। राय सागा की सेना की अधिकता उसकी सफलता के मध्य मे आ गई और वह घोडे की जीन से फिसल कर घायल होकर नीचे भूमि पर गिर पडा।

राणा सागा की विजय तथा खलजी के प्रति सौजन्य

राय सागा उसके पास पहुच गया। अन्य लोगो को उसने उसके पास से हटा दिया। वह स्वय उसके पास पहुचा और उसके प्रति श्रद्धापूर्वक अभिवादन किया। यद्यपि खलजी वृद्धावस्था को प्राप्त हो चुका था किन्तु उसके भाला चलाने की तेज़ी तथा उसके आक्रमण की कठोरता ने उसे आश्चर्य मे डाल दिया, फिर उसने उससे क्षमा-याचना की और जर्राह् ने उसका उपचार किया। उसने उसे पालकी मे बैठा कर मन्दू की ओर भेज दिया और वह स्वय उसके साथ चला। जब वह सुल्तान अपने स्थान को पहुच गया तो उसने (राणा ने) उससे विदा चाही। खलजी ने उसके पास अत्यधिक बहुमूल्य सामान भेजे और जो दुर्घटना हुई थी उसके लिये उसे क्षमा कर दिया और उसे जाने की अनुमति दे दी। राय सागा ने उससे स्मृति चिह्न के रूप मे किसी शस्त्र के प्रदान करने की प्रार्थना की। उसने उसे बर्छा प्रदान कर दिया। बर्छे का वजन ३० रतल था और उस लोहे का वजन भी जो मूठ मे लगा था इतना ही था। उसे इस पर बडा आश्चर्य हुआ। उसके कवि ने इस पर कहा कि वह हाथ जो उसे उठाये हुए है इससे भी अधिक आश्चर्यजनक है। खलजी बडा ही वीर, साहसी तथा मर्यादाशील था।

खलजी के गुजरात पहुचने तथा सुल्तान मुजफ्फर द्वारा सहायता का पुन उल्लेख

सुल्तान मुजफ्फर को जब इस घटना की सूचना मिली तो उसने राय सागा को पत्र लिखा जिसमे उसे चेतावनी दी कि इस प्रकार की दुर्घटना पुन न घटे।

महमूद खलजी का कथन है कि जब वह भकूर के समीप विवश होकर एक वृक्ष के नीचे उतरा, क्योकि वह बडी तीव्र गति से दिन भर तथा आधी रात तक यात्रा करता रहा था और घोडे मे लेशमात्र भी हिलने की शक्ति न रह गई थी तो वह उसके नीचे रात्रि मे ठहरा। प्रात काल यह समाचार धोद के आमिल[1] को प्राप्त हो गये। उन दोनो के मध्य मे १० फरसख[2] की दूरी थी। वह तत्काल सवार होकर उस ओर रवाना हुआ और उसके सम्मान को दृष्टि मे रखते हुए उसने भेट की। वह उसकी सेवा के लिए उपस्थित रहा, उसके लिए शिविर लगवा दिये जिसमे उसकी आवश्यकता की समस्त वस्तुये एकत्र कर दी। उसने अपना शिविर भी वही लगवा दिया और एक शुत्रसवार द्वारा उसके समाचार सुल्तान की सेवा मे भेज दिये। सुल्तान ने तुरन्त उसी दिन समस्त आवश्यक वस्तुये, जिनकी शाही खेमों मे (१०८) आवश्यकता होती है, भेज दी, घोडे, हाथी, दास, दासिया और धन। इसके अतिरिक्त भी अन्य वस्तुये उसने अपने अमीरो के एक समूह के साथ भेजी और उन्हे आदेश दे दिया कि वे उसके पास पडाव करे। जब खलजी ने यह सुना कि वे उसके समीप पडाव किये हुए है तो वह उनके स्वागतार्थ सवार हुआ।

१ हाकिम।
२ एक फ़रसख लगभग १८००० फ़ीट के बराबर होता था।

फिर वे अपने घोडो से उतर पडे और उन्होने उसकी रकाब चूमी। वे उसकी सेवा मे उपस्थित रहते हुए शाही शिविर तक पहुच गये। फिर वह वही पडाव किये रहा। खलजी के लिए ऐसी समस्त सामग्रियो की व्यवस्था कर दी कि उसे उस स्थान तथा अपने राज्य मे कोई अन्तर न मिले।

जब सुल्तान मुजफ्फर कोधरा पहुंचा तो उसे देहली के सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। उसने जियारत[1] का प्रबन्ध कराया फिर वहा से उसने देवला की ओर प्रस्थान किया। वहा उसने महमूद खलजी से भेट की। उसने खलजी को जो परेशानी तथा व्याकुलता प्राप्त हो गई थी उसकी ओर से निश्चिन्त कर दिया और उसे लेकर मन्दू गया। मेदिनी राय ने किले को अत्यधिक दृढ बना दिया था और वह स्वय चित्तौड के हाकिम राय सागा के पास सहायता की याचना करने के लिए चला गया था। किले पर आक्रमण के उद्देश्य से मुजफ़्फ़र वहा पहुच गया। किले के निवासियो ने युद्ध मे विलम्ब करने के लिए धूर्तता से कार्य किया। वे बराबर वहा से निकल जाने के लिए समय मागते रहे। उनका उद्देश्य यह था कि राणा सागा सहायता लेकर उनके पास पहुच जाय। यही होता रहा, यहा तक कि सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हो गया कि राणा सागा सारगपुर से, जो मन्दू के अधीन है और वहा से ५० कोस की दूरी पर है, पहुच गया है। इस पर सुल्तान ने आसीर के हाकिम आदिल खा को राणा से युद्ध करने के लिए भेजा। उसके साथ किवामुलमुल्क सारग इत्यादि भी थे। वह स्वय किले के अवरोध के लिए लौट आया। तदुपरान्त उसने क्रोध मे एक बडा ही तीव्र आक्रमण किया, यहा तक कि उसके आगमन के दूसरे ही दिन विजय प्राप्त हो गई। यह घटना ९२४ हि० (१५१८ ई०) मे घटी।

कुछ विचित्र घटनाये

इस घटना का उल्लेख सैयिद जलाल बुखारी, मलिक महमूद प्यार[2] तथा उन लोगो द्वारा जिनकी बात पर विश्वास किया जा सकता है और जो उस विजय के समय उपस्थित थे उल्लेख हुआ है। उसने कहा कि, "मै उन लोगो के साथ था जो विजय के उपरान्त किले मे प्रविष्ट हुए। जिस समय हम वहा के निवासियो के सम्बन्ध मे सूचना प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे और उनके घरो मे आ जा रहे थे तो हम एक घर पर पहुचे जिसके द्वार भीतर से बन्द थे। हमे सदेह हुआ कि इसके भीतर जो लोग है वे जीवित है अथवा नही। हमने द्वार तोड डाला और उसमे प्रविष्ट हो गये। वहा हमे ५० लाशे दृष्टिगत हुई, उनके शरीर एक कोने मे थे और सिर दूसरे कोने मे, उन्ही मे एक ऐसा व्यक्ति था जिसकी कुछ सासे शेष थी। हम उसके पास गये और हमने उससे पूछताछ की तो उसने उत्तर दिया कि, "हमे इस बात का भय हुआ कि कही हम मार न डाले जाय इसलिए हम इस नीचे वाले घर मे उतर गये ताकि अपनी खोज करने वालो की दृष्टि से छिपे रहे। अचानक एक हाथ प्रकट हुआ जो तलवार को दृढतापूर्वक पकडे हुए था। वह हाथ तो दृष्टिगत था किन्तु जिसका हाथ था वह नही दिखाई दे रहा था। फिर हम सब की अचानक यह दशा हो गई जो तुम देख रहे हो।" इतना कह कर वह व्यक्ति भी मर गया।

मलिक महमूद ने तगाई नामक अपने समाचार पहुचाने वाले द्वारा यह बात लिखी है कि "परोक्ष के आदमी इस युद्ध मे आये थे और यह चिह्न इस बात का द्योतक है।"

१ उसकी आत्मा के सम्मान तथा मुक्ति हेतु ईश्वर से प्रार्थना।
२ अन्य स्थानों पर 'प्यारा'।

मुजफ्फर का किले से नीचे उतरना

मुजफ्फर बादशाह के राज्य के उच्च पदाधिकारियो का कथन है कि, "विजय के उपरान्त उन्होने उससे प्रार्थना की कि, "तू अब अपने राज्य की ओर भी ध्यान दे।" तब सुल्तान मुजफ्फर ने खलजी की ओर ध्यान दिया और किले से नीचे उतरने के लिए उससे विदा हुआ। उससे कहा कि, "किले के द्वार (१०९) की रक्षा उन लोगो को सिपुर्द करो जो मेरे यहा से नीचे उतर जाने के उपरात किसी को इसमे प्रविष्ट होने की अनुमति न दे, चाहे वह मेरे सबन्धी ही क्यो न हो।" इस पर खलजी ने उससे प्रार्थना की कि, "आप कुछ दिन और ठहरे।" सुल्तान ने यह बात स्वीकार न की और किले से नीचे उतर आया। फिर ३ दिन के उपरान्त ख़लजी ने उसकी दावत की और उसे उन भवनो की सैर कराई जिनके समान भवन हिन्दुस्तान मे नही मिलते। अन्त मे वह उसे एक ऐसे भवन मे ले गया जिसका द्वार बन्द था। फिर वह उसे जो वहा विभिन्न कोठरिया थी उनमे ले गया और द्वारपालो को आदेश दिया कि वह उनको खोले और जो लोग उनमे उपस्थित हो उनको बुलवाये। इस पर उनमे से ऐसी स्त्रिया आभूषणो तथा बहुमूल्य वस्त्रो से अपने आपको सजाये हुए निकली जिनके समान स्त्रिया आँखो से कम ही देखी होगी। उनमे से खलजी की सेवा के लिए २ हजार थी।

गयासुद्दीन खलजी

खलजी सुल्तानो मे गयासुद्दीन खलजी भोग-विलास के लिए बडा प्रसिद्ध था। वह ऐसी वस्तुओ से बचता था जो व्याकुलता तथा आकुलता का साधन हो। यदि उसके राज्य मे कभी इस प्रकार की कोई घटना हो भी जाती थी तो उसे इसकी सूचना न दी जाती थी। कहा जाता है कि आजीवन उसके कानो तक कोई ऐमी बात नही पहुची जो उसे दुखी बना सकती। यहा तक कि जब उसकी पुत्री के पति की मृत्यु हो गई तो उसके सबन्धियो ने इस समाचार को पहुचाने के लिए यह उपाय सोचा कि पुत्री को हिन्दुस्तान की प्रथानुसार सफेद वस्त्र धारण करा कर उसके सामने से निकाला जाय। जब ऐसा किया गया और गयासुद्दीन की दृष्टि उस पर पडी तो उसने कहा कि, "सभवत इसके पति की मृत्यु हो गई है।"

इसी प्रकार जब देहली के सुल्तान बहलोल की सेना चन्देरी के क्षेत्र मे पहुची तो इस कारण कि चन्देरी खलजी के अधीन था, वजीर को यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि वह उसे इसकी सूचना दे। स्पष्ट रूप से सूचना देना उसकी शक्ति के बाहर था। उसने उस समूह को बुलाया जिसको बहरुया[1] कहा जाता है। उनका नियम यह है कि वे नृत्य तथा गायन करते हुए विभिन्न प्रकार के स्वाग करते है। उस समूह को आदेश दिया कि, "कुछ लोग तलवारे बाधे हुए अफगानियो का वस्त्र धारण करे और कुछ लोग चन्देरी के निवासियों का।" जब अफगानी वेशभूषा मे एक समूह प्रकट हुआ और उसने यह कहा कि, "हम देहली से आये है" और दूसरे समूह ने अपने आपको चन्देरी का बताया और लूट-मार शुरू हो गई तो गयासुद्दीन ने इसे देखकर कहा कि, "क्या चन्देरी का हाकिम मर गया जो वह अपने क्षेत्र से इन्हे हटा न सका।"

सुल्तान मुजफ्फर तथा खलजी की स्त्रिया

सक्षेप मे, स्त्रिया अपनी कोठरियो से निकल पडी। उनके हाथो मे नाना प्रकार के रत्नो से भरे हुए थाल थे। इन स्त्रियों मे से कोई स्त्री ऐसी न थी जिसने मुजफ्फर को अभिवादन न किया हो और जो

१ बहुरूपिया।

कुछ उसके हाथो मे था उसे सुल्तान मुजफ्फर के चरणों पर न्योछावर न किया हो। जब सुल्तान ने उन्हें देखा तो उसने सकेत किया कि, "यह सब पर्दे मे चली जाय क्योकि जो स्त्रिया महरम[1] न हो उनकी ओर दृष्टि डालना उचित नही है।" इस पर खलजी ने कहा कि, "ये सब की सब मेरी सपत्ति है और मै उनका स्वामी हू। दास तथा उसकी समस्त सपत्ति उसके स्वामी की सपत्ति होती है। मुजफ्फर ने उसे आशीर्वाद दिया और अपने शिविर की ओर चला गया।

मेदिनी राय का खलजी की स्त्रियो के प्रति व्यवहार

मेदिनी राय का कथन है कि वह खलजी के चले जाने के उपरान्त नित्य प्रात काल दरबार मे उपस्थित हुआ करता था और स्त्रियों को आशीर्वाद भिजवाते हुए उनकी आवश्यकताओ के विषय मे पुछवाया करता था। खलजी की उपस्थिति मे जो सुविधाये उन्हे प्राप्त थी और जो वस्तुये उन्हे मिलती थीं उनमे उसने लेशमात्र भी कमी न की। उसने उनसे प्रार्थना की कि, "तुम लोग उसे लिखो कि मै (११०) उसका अब भी दास हू और मै किसी ऐसी वस्तु पर भरोसा नही रखता जो उसे सतुष्ट न करे।" जब सुल्तान अपने राज्य की ओर वापस होने के लिए सवार हुआ तो खलजी उसके साथ देवला तक गया। सैयिद आसफ खा, अमीरो के एक समूह के साथ खलजी की सहायतार्थ वही उपस्थित रहा।

राणा सागा द्वारा खलजी की पराजय तथा राणा सागा का सौजन्य

९२५ हि० (१५१९ ई०) मे खलजी ने काकरून पर चढाई की। वह हेम करण के अधीन था। वह युद्ध मे मारा गया। उसके कारण राणा सागा ने आक्रमण किया। राय उस समय पर्वत मे पडाव किये हुए था। राणा सागा के पास उस समय अत्यधिक सेना थी और खलजी की सेना की सख्या बडी कम थी। खलजी बन्दी बना लिया गया और घायल भी हुआ। उसकी सेना पलायन कर गई। उसके साथियो मे से बहुत से लोग मारे गये। कहा जाता है कि खलजी जब घोडे की जीन से नीचे गिरा और काफिरो ने उसे घेर लिया तो इसकी सूचना राणा सागा को भी मिल गई। वह उसके पास पहुचा और नम्रतापूर्वक व्यवहार किया। उसने उसे पालकी मे बैठाकर राजधानी की ओर भेजा। वहा एक जर्राह ने खलजी का उपचार किया। राणा ने फिर उसे मन्दू रवाना कर दिया और कई मज़िलो तक उसके साथ रहा। मुजफ्फर को जब यह समाचार प्राप्त हुआ तो उसने राज्य की रक्षा हेतु एक सेना मन्दू की ओर भेजी। राणा इसी कारण चित्तौड वापस चला गया .. ।

ईदर मे मुबारिजुलमुल्क की नियुक्ति

इसी वर्ष सुल्तान ने ईदर की ओर प्रस्थान किया और वहा की सुव्यवस्था का आदेश दिया। उसने नुसरतुलमुल्क को पदच्युत करके मुबारिज़ुलमुल्क हुसेन बिन खिज्र भट्टी को उसके स्थान पर नियुक्त किया और वापस चला आया।

राणा साघा का मलिक मुबारिजुलमुल्क को पराजित करना

९२६ हि० (१५१९-२० ई०) में राय सागा तथा मुबारिज़ुलमुल्क की घटना घटी[2]। उसका

१ ऐसी सम्बन्धी स्त्रियां जिनसे विवाह हो सकता हो।

२ 'का युद्ध हुआ'।

सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि एक बार मुबारिजुलमुल्क के दरबार मे एक कवि आया और उसकी प्रशसा की। तदुपरान्त उसने राय सागा की प्रशसा की। यह सुनकर मुबारिजुलमुल्क ने कहा कि, "तू जिसकी चर्चा कर रहा है वह इसके समान है", और उस कुत्ते की ओर सकेत किया जो तवेले के अत मे था। कवि ने सागा को यह समाचार पहुचा दिये। सागा की मर्यादा को इससे धक्का लगा और उसने ४० हजार अश्वारोही तथा पदाती लेकर युद्ध करने के लिए चढाई कर दी। उसके सहायको मे से युद्ध मे उसके साथ वही लोग दृढ रहते थे जो उसी के समान वीर होते थे। इसी कारण जब राय सागा निकट (१११) आ गया तो मुबारिजुलमुल्क के साथी उसके पास एकत्र हुए और यह कहा कि, "काफिरो के समूह की तुलना मे हमारी दशा ऐसी ही है, जैसे कि एक काले बैल पर सफेदी का छोटा सा धब्बा हो, अत राज्य के हित के लिये यही अधिक उचित है कि जब तक सहायता प्राप्त न हो अहमदनगर के किले मे किलाबन्द हो जाना चाहिये। अपनी स्थिति को देखते हुए ऐसी वीरता जो हम सब को नष्ट कर दे अधिक निकट की वस्तु ज्ञात होती है।"[1] उसने उनकी बात स्वीकार कर ली और किले की ओर रवाना हुआ। अभी वह उसमे उतरा भी न था कि सफदरूलमुल्क बिन शुजाउलमुल्क वहा पहुचा गया। उसे सागा की सूचना मिल गई थी और वह अहमदाबाद के समीप था। वह जिहाद[2] के उद्देश्य से शीघ्रातिशीघ्र उस ओर रवाना हो गया। जब दोनो एक दूसरे से मिले तो उसने मुबारिजुलमुल्क पर इस विषय मे क्रोध प्रकट किया कि उसने केन्द्र को छोड दिया है।" फिर उसने किले मे उतरने का इरादा किया, हालाकि काफिर युद्ध के लिये पूर्ण प्रयत्न कर रहे थे। उसने (मुबारिजुलमुल्क ने) अपने साथियो के मत को अपनी बचत के लिए प्रस्तुत किया और किले से मैदान की ओर निकल खडा हुआ। वहा उन दोनो ने पडाव किया। रात्रि का तिहाई भाग व्यतीत हुआ था कि सैफ खा बिन सैफ खा उस समाचार के फैलने पर वहा पहुच गया और वह भी उन्हीं के साथ वहा उतर पडा। समीप ही राणा सागा भी पडाव किये हुए था। यह सब लोग एकत्र हुए। उन्होने जब अपनी सेना पर दृष्टि डाली तो उसमे २,२०० अश्वारोही तथा १००० पदाती थे। तदुपरान्त उन्होने किले मे ५०० अश्वारोही तथा समस्त पदाती छोड दिये। जब नगर दृष्टिगत हुआ और सेना की धूल ऊपर उठी तो इस्लाम के नकीब ने यह ढिढोरा पीटा कि, "हे ईश्वर के मार्ग के सवारो सवार हो जाओ।" तदुपरान्त उसकी पताका के नीचे ७०० अश्वारोही एकत्र हो गये, मानो वे प्रकाश प्राप्त करने वालो के लिए चिनगारी हो। आक्रमण के तीव्र हो जाने की दशा मे उन्होने एक दूसरे से धैर्य धारण करने के लिए कहा और तीव्रता से युद्ध की ओर अग्रसर हुये। युद्ध बडे जोर से प्रारम्भ हो चुका था। क्रोध से मुह मे फेन भरा हुआ था, आखे लाल भभूका हो रही थी और वे यह कह रहे थे कि, "ईश्वर की ओर तो एक दिन जाना ही है।" सबने मिल कर पूरी शक्ति से आक्रमण कर दिया, राणा की सेना के अग्र भाग की सख्या बहुत अधिक थी किन्तु उसे उन्होने फाड डाला। फिर वे घोडो को दाये-बाये घुमाने लगे और कहा कि, "जब शत्रु की सख्या अधिक हो तो विभिन्न छोटे-छोटे दल बना कर आक्रमण करना चाहिये।" तदुपरान्त सागा युद्ध के लिये बढा। वह सेना के मध्य मे था। यदि उसे अपनी सेना की अधिकता पर अभिमान न होता तो वह पीछे रहता। उसके पास सेना के अग्र भाग मे से जो लोग भागे थे वे तथा सेना के दोनो बाहुओ मे कुछ लोग एकत्र हो गये। ईश्वर के समूह ने दात कटकटाये। वे उस धूल मे जिससे वायुमण्डल मे अधकार छा रहा था प्रविष्ट हो गये। यह अधकार उस समय क्षण

१ 'वीरता प्रदर्शित करने से विनाश की अधिक सम्भावना है'।
२ इस्लाम की रक्षा तथा प्रसार हेतु युद्ध।

भर के लिए दूर हो जाता जब कडे पत्थरो पर घोडे के खुर पडते। युद्ध बडे जोरो से हो रहा था, तलवारें टूट गई थी और गदा टुकडे-टुकडे हो गये थे। धारो से रक्त प्रवाहित था। काफिरो की वह गर्दने जिन पर सिर अधिकाश भार के समान था हल्की हो गई थी, मुशिरको की पक्तिया टूट गई थी। मुसलमानो का सम्मान शहादत के कारण बढ गया था। शहीद होने वालो मे मुबारिजुलमुल्क का भाई हमीदुलमुल्क गाजी खा, रावत पीर, रावत हुसाम, मलिक पीर, सुल्तान शाह तथा काजी कुतुब पीर थे। रात हो गई (११२) और उपर्युक्त अमीरो के आदमियो मे से ४० व्यक्तियो के अतिरिक्त कोई शेष न रहा। फिर वे किले की ओर यह देखने के लिये मुडे कि किसी मे सहायता की योग्यता भी है अथवा नही। उन्हे कोई भी ऐसा व्यक्ति न मिला। फिर उन्होने नदी पार की और स्थल की एक ओर रात्रि व्यतीत की। अब राय सागा ने किले को जला डालना निश्चय किया। परहनतीज को एक सेना सहित उन हाथियो पर अधिकार जमाने के लिये भेजा, जिनकी उसे सूचना मिली थी। अचानक उसकी मुठभेड असद खा बिन असद खा से हो गई, उसके साथ ७ सवार और ३ हाथी थे। ये सब लोग अपने स्थान पर दृढ रहे। असद खा तथा उसके समस्त साथी बहुत बडी सख्या मे लोगो की हत्या करने के उपरान्त मारे गये। जो तलवार से बच गये वे हाथियो को लेकर वापस चले गये।

राणा सागा का बिर नगर की ओर प्रस्थान

फिर राय सागा बिर नगर चला गया। वहा ब्राह्मणो के अतिरिक्त कोई अन्य न था। उनके एक समूह ने राणा सागा से भेट की और उससे कहा कि, "तेरे पूर्वज इस ग्राम के निवासियो का सम्मान करते थे। तू भी उन्ही की सतान है। फिर इस ग्राम को तू किस प्रकार नष्ट करेगा ?"

राणा द्वारा बेसलनगर पर आक्रमण तथा वापसी

तदुपरान्त राणा सागा वहा से बेसलनगर चला गया। वहा का हाकिम मलिक हातिम सुल्तान शाह था। जब उसे इसकी सूचना मिली तो वह उससे युद्ध करने के लिए निकला और उसके साथ जो अल्प सख्या थी उसे साथ लेकर उसने युद्ध किया और उन सबके साथ मारा गया। जिस समय राय, बेसल नगर के समीप था उसे फतह खा एव ऐनुलमुल्क के पहुचने के समाचार मिल गये। ये दोनो नहरवाला मे थे, राणा ने तुरन्त अपने शिविर उखाड डाले और अपनी राजधानी चित्तौड को वापस चला गया। उसे इस बात का भय था कि "कही युद्ध मे उसी घटना की पुनरावृत्ति न हो जाय जो कल उसके साथियो द्वारा घटी थी।"

राणा की चित्तौड़ को वापसी

इतिहासकार हुसाम का कथन है कि मै उस समय बलाद नामक एक गाव मे अमीरुस्सवाद किवा-मुलमुल्क बिन किवामुलमुल्क के साथ था। जब उसने अमीरो के विषय मे यह सुना कि उन्हे कोई हानि नही पहुची है और यह ज्ञात हुआ कि वे किसी ओर चले गये है तो उसने मुझे उनके पास भेजा। मै उन्हे उनके पास लाया। तदुपरान्त उसने आतिथ्यसत्कार का प्रबन्ध किया और सहायता का वचन दिया। जब उसने अपने साथियो को अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये तो उसे राणा सागा के वापस चले जाने के समाचार प्राप्त हुये। फिर उसने उन्हे अहमदनगर जाने की आज्ञा दे दी और यह कहा कि, "मै तुम्हारे पीछे वहा शीघ्र पहुच जाऊगा।" तदुपरान्त वे आगे चले गये और वह उनसे जाकर मिल गया। एमादुलमुल्क खुशकदम तथा कैसर खा उनकी सहायतार्थ सुल्तान की ओर से आ गये और जहा युद्ध हुआ था वहा

सब एकत्र हो गये। जो लोग मारे गये थे उनकी आत्मा की शाति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की तथा अमीरो की प्रशसा की। वे तदुपरान्त किले की ओर मुड गये और रणक्षेत्र मे उतर पडे।

मलिक अयाज का आगमन

उसी वर्ष सुल्तान ने चाम्पानीर से चित्तौड पर चढाई हेतु प्रस्थान किया और वहा से अहमदाबाद पहुचने का सकल्प किया। उसने हरसोल के समीप पडाव किया और अपने राज्य के चारो ओर के अमीरो को लिख दिया कि, "तुम लोग युद्ध के लिये मेरे पास शीघ्रातिशीघ्र पहुच जाओ।" उन्ही अमीरो मे अमीर कबीर रणक्षेत्र का स्वामी जनाबुलमुल्क अयाज तुर्की भी था। वह जूनागढ से, जहा का वह हाकिम था, (११३) १ लाख अश्वारोही तथा २०० हाथी लेकर आया था। प्रत्येक हाथी पर एक सन्दूक[1] था। १०० मदफा[2] थे जिन पर ६ हजार बहार[3] नियुक्त थे। ८ हजार बन्दूके तथा ४ हजार धनुर्धारी थे। मलिक अयाज के पहुचने का दिन बडे महत्व का दिन था। समस्त सवार पूर्ण रूप से अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए थे और पदाती नाना प्रकार की वर्दिया पहने हुए थे। उन्होने खालो की पखाले बहुत बडी सख्या मे बनवाई थी जो उनकी गाडियो मे थी जो सेना के आगे आगे चल रही थी। उनमे शकर का शर्बत भरा हुआ था। आगे उद्घोषक घोषणा करता जाता था कि जो व्यक्ति यहा आये तथा शर्बत पिये, ईश्वर उसे अपनी कृपादृष्टि द्वारा सम्मानित करे।

मलिक अयाज का सेनापति नियुक्त होना

तदुपरान्त सुल्तान ने सेना के अग्रभाग को चित्तौड की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया। चित्तौड पर्वत की चोटी पर एक दृढ किला है। राय सागा का वह निवास-स्थान है। अयाज ने धरती चुम्बन करते हुए निवेदन किया कि, "सेवक की प्रार्थना है कि राय सागा सरीखे व्यक्ति से युद्ध एव चित्तौड की विजय हेतु अन्नदाता मुझे नियुक्त करे।" उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। उसकी सहायतार्थ किवामुलमुल्क को साथ किया गया और उसे २० हजार अश्वारोहियो तथा २० हाथियो का सरदार बनाया गया। हुसाम खा ने 'तुहफा' नामक पुस्तक मे लिखा है कि सुल्तान ने उसके साथ १ लाख सवार तथा सौ हाथी किये।

उदय सिह की पराजय

९२७ हि० (१५२०-२१ ई०) मे सुल्तान के आदेशानुसार मलिक अयाज ने उस ओर प्रस्थान किया तथा बाकर की विलायत[4] मे शत्रुओ का सहार प्रारम्भ कर दिया तथा कालियाकोट तक लूटमार प्रारम्भ कर दी। इसी प्रकार डूनगरपुर तथा सागवारा मे और फिर बासवाला मे लूट मार प्रारम्भ कर दी। वह राय उदय सिह का निवास-स्थान था और वह बाकर का राजा था। क्योकि वह बासवाला मे था अत उसने उस पर चढाई कर दी।

१ हौदज।
२ वह वस्तु जिससे शत्रुओं को पीछे हटाया जाता था।
३ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नही।
४ राज्य।

एक दिन मुजाहिद खा, अशजउलमुल्क तथा सफदरुलमुल्क तीनो भाई १०० अश्वारोहियो सहित शिकार हेतु रवाना हुए किन्तु वे पूरे हथियार लगाये हुये थे। उन्होने सुना कि राय उदय सिह तथा पुरबिया उग्रसेन एक पर्वत की घाटी मे पडाव किये हुए है और यह चाहते है कि दिन मे सेना पर आक्रमण कर दे अथवा रात मे छापा मारे। इस पर उन लोगो ने कहा कि, "आज यह हमारा शिकार है" और बागो (११४) को उस ओर मोड दिया। राय उदय सिह ने जब यह देखा कि उनकी सख्या बहुत थोडी है तो वह घाटी से निकल पडा। उस समय बहुत बडी आफत आ गई थी किन्तु मलिक अयाज की पताकाओ के उस ओर अग्रसर होने से इस विपत्ति का अन्त हो गया। उदय सिह की सेना के बहुत से आदमी मारे गये और उदय सिह भी आहत हुआ। इसी घाव के भय से उदय सिह रणक्षेत्र से घाटी मे चला गया। अयाज रणक्षेत्र मे ठहरा रहा और उसने सरदारो को एकत्र किया। अनुचित स्थान पर उन्होने जो वीरता प्रदर्शित की थी उसके लिये उसने उनके प्रति क्रोध प्रदर्शित किया किन्तु क्योकि उदय सिह राय सागा के समूह के प्रभावशाली व्यक्तियो मे से था अत उसने उनकी प्रशसा भी की और जो लोग इस युद्ध मे मारे गये थे उनके लिए ईश्वर से शुभकामनाये भी की। उनके चारो ओर बहुत से मुशरिक मरे हुए पडे थे।

करज्हीन का अवरोध

तदुपरान्त अयाज़ सरकोब गया और वहा पडाव किया। फिर उसने कुरज्हीन की घाटी पर चढाई की और वहा से दसूर पर, जो राय सागा के अधीन था, छापा मारा। इस किले का निर्माण मन्दू के हाकिम होशग गोरी ने कराया था। यह दोनो नदियो के मध्य मे पत्थर का बना हुआ है। उसकी दीवार की चौडाई ५ हाथ है। उसी दीवार से दूसरी दीवार मिली हुई है जो चूने की बनी हुई है। उन दोनो के मध्य मे ६ हाथ की दूरी है। दूसरी दीवार पक्की ईंट से बनी हुई है। उसकी चौडाई १६ हाथ है। होशग के उपरान्त यह किला खलजी के अधिकार मे आया और जब राय मेदिनी ने प्रभुत्व प्राप्त कर लिया तो उसने उसे चित्तौड के हाकिम को दे दिया। यह पहले उसी के अधीन था। यह उसे इस कारण दे दिया कि सहायता की आवश्यकता पडने पर वह उसकी सहायता करे। राय सागा की ओर से आसोक पुरबिया[1] उसका शासन-प्रबन्ध करता था। अयाज ने उसका अवरोध प्रारम्भ कर दिया और एक सुरग खोदने का आदेश दे दिया जिसकी सूचना मजदूरो के अतिरिक्त किसी अन्य को न थी।

राय सागा चित्तौड से बदसर गया और वहा उसने पडाव किया। मलिक अयाज को उसने पत्र लिखा कि, "मै अधीनता स्वीकार कर लूँगा तथा खराज अदा करूगा।" अयाज ने उसे इन शर्तो के स्वीकार करने का प्रलोभन भी दिलाया था और सुरग के पूरा होने की प्रतीक्षा करने के लिए मामले को आज कल पर टालता रहा। राय सागा के पास मुशरिक सरदार दो बातो के लिए एकत्र हुए, "एक तो यह कि राय सागा उन सबमे अधिक शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है, दूसरे यह कि जो सधि के समाचार है उनके विषय मे नरमी से काम लिया जाय और यह कि वे सब उसके साथ किले से नीचे उतरेगे।" रायसिंह के किले के हाकिम सलादी पुरबिया के अतिरिक्त, सब इस बात से सहमत थे क्योकि वह सुल्तान की ओर (११५) से वहा नियुक्त था। मलिक अयाज के पास जाने से राय मेदिनी ने उसे रोका था और राय सागा की ओर उसे मोड दिया था। उसने उससे यह कहा था कि उसी के द्वारा सधि होगी। उसके कारण

१ अशोक पुरबिया।

उसने यह बात स्वीकार कर ली थी। १० हजार अश्वारोहियो तथा १० हजार पदातियो एव सौ हाथियो सहित वह राणा सागा के साथ पडाव किये हुए था।

सधि की वार्ता तथा मलिक अयाज द्वारा सुरग की तैयारी

मन्दू के सुल्तान अलाउद्दीन खलजी को जब यह समाचार प्राप्त हुए कि अयाज से युद्ध करने के लिए मुशरिक लोग एकत्र हुए है तो उसने तुरन्त तैयार होकर अपने राज्य से निकल कर मलिक अयाज के साथ पडाव किया। सागा का राजदूत अधीनता स्वीकार करने के विषय मे निरन्तर अयाज के पास आता-जाता रहता था। अयाज उसे निराश भी नही करता था। किवामुलमुल्क ने विजय करने का प्रयत्न उस समय से प्रारम्भ कर दिया था जिस समय से वह आक्रमण करने के उद्देश्य से वहा पहुचा था। यह बात पूरी हो जाने वाली थी किन्तु अयाज यह चाहता था कि यह विजय उसके नाम पर तथा उसकी ओर से हो। इस कारण उसने किवामुलमुल्क को किले से रणक्षेत्र मे अपनी एक ओर कर दिया। वह एक बहुत बडा सरदार था और बडा ही शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली था। उसने उससे इस विषय मे वाद-विवाद किया और वह खलजी से मिला और उससे कहा कि, "किले का हाकिम किले के समीप ही पडाव किये हुए है और वह आखो के सामने है। अयाज उससे खेल कर रहा है। वह इस बात को जानता है कि सधि उसके हाथ मे उसी प्रकार रहेगी जैसे कि अब है। जब वह किले को शक्ति द्वारा प्राप्त करने से निराश हो जायेगा अथवा जो लोग उसके भीतर है उनमे उसकी रक्षा की शक्ति न रहेगी तो फिर वे यथासम्भव सधि का प्रयत्न करेगे। ऐसी अवस्था मे युद्ध अनिवार्य हो जायेगा। यदि अयाज़ ने वहा प्रारम्भ ही से युद्ध किया होता तो किले पर भी उसका अधिकार हो जाता और किले के अतिरिक्त अन्य स्थानो पर भी। मेरी ओर जो भाग था उस पर मै विजय पाने वाला ही था किन्तु उसने मुझे इसमे सफल न होने दिया और मुझे दूसरी ओर भेज दिया। मैने इस पर क्रोध प्रदर्शित किया। अब मै तेरे पास यह समाचार पहुचाने आया हू कि, "मैने जिहाद का सकल्प कर लिया है। अब यदि तू इस पर तैयार है तो मे तेरी पताका के नीचे तेरे समक्ष युद्ध करूगा।" खलजी ने उसकी बात स्वीकार कर ली और नक्कारा बजाने का आदेश दे दिया। वह तथा किवामुलमुल्क युद्ध के लिए अग्रसर होने पर तैयार हो गये। अयाज़ को इस विषय मे समाचार मिल गये। वह सवार होकर खलजी के पास गया और उसे सुरग के विषय मे सूचना देते हुए कहा कि "सुरग के पूरा होने मे दो दिन शेष है, तीसरे दिन ईश्वर की जो इच्छा है वह होगा। इसी निश्चित दिन के लिए सधि के समाचार फैलाये गये थे।" खलजी ने उसकी प्रशसा की। तदुपरान्त किवामुलमुल्क को बुलवाया और इस घटना की सूचना दी और उसे सतुष्ट कर दिया। वह अपने शिविर मे वापस चला गया।

सुरग द्वारा किला विजय करने मे असफलता एव सधि

तीसरे दिन अयाज तैयार हुआ। खलजी तथा किवामुलमुल्क भी आये और सुरग मे आग लगा दी गई। पत्थर की दीवार १० हाथ की दूरी तक खुल गई ईटो की दीवार शेष रही। अत जब अयाज़ ने भीतर प्रविष्ट होने का सकल्प किया तो कोई मार्ग न मिला। उसे इतना दुख हुआ कि वह लगभग मृत्यु को प्राप्त हो जाता। अब उसे साहस न रहा। उसने खराज़ की शर्त पर सधि स्वीकार कर ली। उसने एक शर्त यह भी की कि राणा अपने पुत्र को सुल्तान के दरबार मे अपनी ओर से सेवा के लिए (११६) भेज दे और उन्ही शर्तो मे से एक यह भी थी कि वह अपने पुत्र के साथ इतने घोडे तथा इतने हाथी भी भेजे।

जब अयाज तथा सागा मे सधि हो रही थी तो किवामुलमुल्क खलजी से भेट कर रहा था और उससे यह कह रहा था कि, "पाप मे अयाज की अधीनता नही की जा सकती, हममे इतनी शक्ति है कि हम शत्रु को नष्ट-भ्रष्ट कर सकते है। ऐसी अवस्था मे उससे सधि कर लेने से अधिक कोई अन्य पाप न होगा। हमे युद्ध का आदेश दिया गया। आज हम तेरे समूह मे से है। ईश्वर का नाम लेकर युद्ध के लिए तैयार हो जा।" खलजी ने कहा, "वहुत अच्छा।" फिर उसने अस्त्र-शस्त्र बाटे और युद्ध का नक्कारा बजाने का आदेश दिया। अयाज तुरन्त उसके पास पहुचा और कहा कि, "यदि तू सुल्तान के कार्य को पूरा करने आया है तो अपने नक्कारे को लेकर अपने राज्य को चला जा।" उसने ऐसा ही किया। उसी समय अयाज ने भी नक्कारा बजवाया और वापसी के लिए सवार हो गया। उसके साथ रहाएन[1] तथा राजदूत थे किन्तु जब शाही दरबार मे पहुचा तो सुल्तान ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और उसे जूनागढ चले जाने का आदेश दे दिया। कहा जाता है कि जब वह अहमदाबाद पहुचा तो उसे (सुल्तान का) एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमे उस पर क्रोध प्रकट किया गया था और उसे आदेश दिया गया था कि वह अपने राज्य को चला जाय।

राणा सागा के पुत्र की सुल्तान से भेट

९२८ हि० (१५२१-२२ ई०) मे सुल्तान ने चम्पानीर से अहमदाबाद की ओर चित्तौड पर आक्रमण करने के उद्देश्य से प्रस्थान किया और ककरिया नामक तालाब पर उतरा। इसी बीच मे राय सागा का पुत्र, उस सधि के अनुसार जो अयाज से हुई थी, पहुच गया। उसी कारण सुल्तान ने उसके पिता को क्षमा कर दिया।

मलिक अयाज की मृत्यु तथा उसकी सुव्यवस्था

उसी वर्ष मे मलिक अयाज सुल्तानी की जूनागढ मे मृत्यु हो गई और उसकी लाश उस शुभ ग्राम मे भेज दी गई जिसका नाम उन्ना है। उसे उसके स्वामी गयासुद्दुनिया वद्दीन, मौलाना कुतुबुल आरेफ़ीन, शाह शम्सुद्दीन के पडोस मे दफन किया गया। सुल्तान को जब उसकी मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए तो उसने कहा कि, "वह अपने जीवन-काल मे सदाचारी रहा। जिस कार्य का उसने सकल्प किया था उसे करने मे यदि वह धैर्य धारण करता तो शहादत का सम्मान प्राप्त कर लेता। उसने उसके लिए ईश्वर से शुभकामनाये की और उसकी मृत्यु पर खेद प्रकट किया। जो स्थान उसके अधीन थे वे अपनी उन्नति तथा समृद्धि के लिये बडे प्रसिद्ध थे। उसके प्रयत्न के कारण उसके समुद्र का तट व्यापारियो से खाली न रहता था, विशेषकर देव[2] नामक बन्दरगाह जिसकी प्रशसा सभव नही। यहा से व्यापार की अधिकता के कारण अत्यधिक लाभ प्राप्त होता था। यहा से प्रत्येक वर्ष १०० जहाज से अधिक जाते थे। यात्रा सबन्धी नौकाये तो समुद्र-तट पर हजार से अधिक रहती थी। इसी प्रकार युद्ध की नौकाये १०० से अधिक थी। क्योकि गुजरात का तट उस समय सिध के समीप तक था और कौकन के राज्य के अन्त तक था। यह दक्षिण के बन्दरगाह चियल के पडोस मे था। फिरगी[3] वहा आते-जाते थे। फिरगियो का सबसे

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।
२ डीव।
३ पुर्तगाली।

(२२) वडा स्थान कूवा[1] था। चियूल तथा दाबूल उसके समीप थे, अत दोनो ही स्थानो पर फिरगी आते-जाते रहते थे। चियूल तथा दाबूल बीजापुर के तट से सबन्धित थे। बीजापुर कनरा की राजधानी था, किन्तु चियूल जनेर के तट से सम्बन्धित था। यहा के निवासी मरहट के नाम से प्रसिद्ध है। गुजरात के समुद्रीय तट पर मलिक अयाज के आदेशो का पालन किया जाता था और वह फिरगियो की किसी नौका को भी यहा व्यापार के उद्देश्य के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य से प्रविष्ट न होने देता था। इसी कारण अमीरुलबहर उसके समय मे उस पर बडी कृपादृष्टि रखता था। अयाज का अमीरुलबहर उसके समय मे निरन्तर फिरगियो की नौकाओ की खोज मे रहता था। राज्य के स्थल भाग मे अयाज की न्यायकारिता की यह दशा थी कि उसके राजकोष मे उसके निवासियो की कोई भी वस्तु कण भर भी नही पहुचती थी। समुद्रीय भाग मे उसका न्याय इस सीमा को पहुचा हुआ था कि वह किसी जहाज को उस समय तक प्रविष्ट न होने देता थ। जब तक कि वह उसे हर प्रकार से पूर्ण न पाता था और उसकी देखरेख का पर्याप्त प्रबन्ध न होता था। इसी कारण समुद्रीय यात्रा बडी ही सुरक्षित थी और समुद्रीय व्यापार मे वहुत वडा लाभ होता था। लोग उसके प्रति शुभकामनाये प्रकट किया करते थे। समुद्रीय मार्ग से जो वहा आता था उसके लिए यह कहना सभव था कि ईश्वर जिसको चाहता है बिना हिसाब के देता है। वह बहुत वडा दानी था और लोगो को अत्यधिक भोजन कराता था। कोई भी उसके दस्तरख्वान से निराश वापस न जाता था। विशेष तथा साधारण व्यक्ति सभी उससे लाभान्वित होते थे। उन लोगो ने भी उसके विषय मे मर्सियो[2] की रचनाये की जिन्होने उसके दर्शन नही किये थे अपितु केवल उसके विषय मे सुना ही था। ऐमी अवस्था मे उसके घर वाले जितना भी प्रभावित होते उतना ही कम था। उसने अपने उपरान्त दो पुत्रो को छोडा। एक का नाम इसहाक तथा दूसरे का नाम तुगान था। सुल्तान ने इसहाक के पास, जो कुछ उसके पिता का था, वह रहने दिया।

(१२०) ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) मे सुल्तान मुजफ्फर शिकारी जानवर लेकर महरासा गया और वहा कुछ दिन तक भ्रमण करता रहा। उसने स्वय बाज तथा चीते से शिकार किया। जो चिडिया, मृग तथा नीलगाय उसके समक्ष आ गये वे सुरक्षित न जा सके। लौटते समय उसकी पत्नी बीबी रानी की मृत्यु हो गई। वह दुर्बलता अनुभव किया करती थी। वह सिध के सुल्तान की पुत्री थी और सुल्तान के पुत्र सिकन्दर की माता थी। उसकी मृत्यु से सुल्तान को अत्यधिक शोक हुआ। उसने उसके कफन-दफन का प्रबन्ध कराया और उसके माता-पिता के पास लुहानिया धूलौहर नामक स्थान मे दफन कर दिया। बाद मे उसकी सतान ने उसकी जियारत के लिए एक रौज़े का निर्माण कराया। सुल्तान चाम्पानीर वापस हो गया।

आलम खा का देहली की ओर प्रस्थान

इसी ९३० हि० (१५२३-२४ ई०) मे देहली के किसी अमीर ने आलम खा बिन सुल्तान वहलोल को उसे राज्य प्राप्त करने के सम्बन्ध मे लिखा और यह लिखा कि इबराहीम को राज्य से पृथक् कर दिया जायगा। वह उस समय गुजरात मे था और उसके पास सुल्तान के प्रदान किये हुए जीतलपुर तथा बारीजा नामक दो ग्राम थे जो अहमदाबाद से ७ कोस की दूरी पर थे। क्योकि जीतलपुर की जलवायु वडी अच्छी

१ गोआ।
२ शोक सम्बन्धी कवितायें।

थी, वृक्ष घने थे और शिकार पाया जाता था, अत उसने वही घर बनवा लिए और वही निवास करने लगा। जब उसके पास पत्र आया तो उसने उसे सुल्तान की सेवा मे प्रस्तुत किया और उससे अनुमति चाही। सुल्तान ने उसे ऐसा करने से रोका किन्तु उसने उसकी बात न मानी। सुल्तान ने उसे समस्त धन-सपत्ति के साथ जो उसकी स्थिति के अनुकूल थी प्रदान कर दी और अपने समस्त मलिको को उसका सम्मान करने का आदेश दे दिया। उसके प्रति जो विशेष व्यवहार किया गया वह इस प्रकार था कि उसे २९० घोडे, ५ हाथी तथा १०० ऊट दिये गये। पताका, नक्कारा तथा ४० हजार मुजफ्फरी सिक्के भी प्रदान किये गये। उस यात्रा मे उसके साथ अफीफुद्दीन अब्दुल्लाह बगाली भी था, जो प्रसिद्ध फकीह[1] सिराजुद्दीन उमर बिन जैद दोअती की पत्नी के पिता थे। मै उनसे ९७७ हि० (१५६९-७० ई०) मे अहमदाबाद मे मिला था और उसके विषय मे उनसे पूछा था। मुझसे उन्होने वह चीजे बताई जो उन्होने स्वय देखी थी, सुनी न थी।

बहादुर का दूनगरपुर की ओर प्रस्थान

९३१ हि० (१५२४-२५ ई०) मे सुल्तान ने चाम्पानीर से अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया और ककरिया हौज़ पर उतरा। उन लोगो मे से जो महमूदपुर मे पडाव किये हुए थे सुल्तान का पुत्र बहादुर भी था, उसने अपने पिता से यह प्रार्थना की कि, "मेरे छोटे भाई सिकन्दर के पास जितनी विलायत है यदि उससे अधिक नही तो उसके बराबर ही मुझे प्रदान की जाय।" जब वह प्रार्थना स्वीकार न हुई (१२१) तो बहादुर ने यह निश्चय कर लिया कि वह उससे पृथक् हो जाय। जिन लोगो पर उसे भरोसा था उन्हे साथ लेकर वह रात्रि मे दूँगरपुर की ओर चला गया। वही समीप ही उसका हाकिम राय उदय सिह भी उपस्थित था। उसे जब इसकी सूचना मिली तो उसने उससे भेट की और उसे 'स्वागतम्' कहा। उसे बड़े ही उत्तम घर मे ठहराया और जितना आतिथ्य सत्कार होना चाहिये था उससे अधिक उसने किया। सयोग से उदय सिह के पुत्र ने रात्रि मे एक जश्न किया, उसमे बहादुर भी गया। इस जलसे मे एक कनीज़ का नृत्य बहादुर को बहुत पसन्द आया और उसने उसकी प्रशसा की। उदयसिह के पुत्र ने कहा कि, "तुम पहचानते हो कि यह कौन है?" बहादुर ने कहा कि, "मै नही पहचानता हू।" उसने कहा कि, "यह उस घर की है जिसके तुम भक्त हो?" इस उत्तर से बहादुर की मर्यादा को ठेस लगी। उसके पास तलवार बराबर रहती थी। उससे बहादुर ने आक्रमण कर दिया और तलवार उसके सिर पर मारी। तदुपरान्त वह वहा से निकल कर उस स्थान पर आ गया जहा वह निवास किये हुए था। इस बात को उदयसिह ने सुना और उसने बहादुर की हत्या का सकल्प कर लिया। इस पर उसके पुत्र की माता ने कहा कि, "मेरे पुत्र ने वास्तव मे बडी भूल की जो इस प्रकार उससे सबोधित हुआ। अत तुझे उससे युद्ध करने मे सावधानी से कार्य करना चाहिये, कारण कि मुज़फ़्फ़र तुझसे एक पग की दूरी पर है।" फिर वह बहादुर के पास आई और उससे कहा कि, "यदि तू इस बात से सतुष्ट हो जाय कि मै अपने पुत्र को घोडे की दुम मे बाध कर घुमाऊ तो मै ऐसा करने पर उद्यत हू, कारण कि उसने बहुत बडा अपराध किया है और वह दण्ड का पात्र है। हम तेरे है, और नगर भी तेरे ही आदेश के अधीन है। यदि तू चाहे तो यही ठहर और यदि यहा से जाना चाहे तो तेरी इच्छा।" बहादुर ने उससे क्षमा-याचना की और उदय सिह से विदा हुआ तथा अजमेर की ओर रवाना हुआ। मौलाना ख़्वाजा मुईनुद्दीन सिजजी के रौजे के दर्शन किये और उनकी आत्मा से सहायता की याचना की।

१ इस्लामी धर्म शास्त्रों के अनुसार इस्लामी नियमो का विद्वान्।

बहादुर का देहली की ओर प्रस्थान

तदुपरान्त वह मेवात की ओर रवाना हुआ। जब वह मेवात के समीप पहुचा तो उसके हाकिम अमीर एहसन खा मेवाती ने उससे भेट की और वह उसके घर अतिथि के रूप मे रहा। सपत्ति तथा राज्य में से जो कुछ उसके अधिकार मे था, वह सब उसने बहादुर की सेवा मे उपस्थित कर दिया। बहादुर ने उसके साहस की प्रशसा की और देहली की ओर प्रस्थान किया।

सुल्तान इबराहीम ने जब यह समाचार सुने तो उससे भेट की और दरबार मे आमत्रित किया। जब वह मिला तो उसने बाह्य रूप से सौजन्य प्रदर्शित करके उसे सतुष्ट कर दिया। जिस समय वह देहली मे था एक दिन यह समाचार प्रसारित हुए कि मुगुलो ने देहली के आसपास लूट-मार की है। इसका कारण यह हुआ कि काबुल के हाकिम बाबर बादशाह का देहली के हाकिम से कुछ मतभेद था, कारण कि बाबर अलाउद्दीन बिन बहलोल की सहायता करता था। दूसरे भाग मे इसका उल्लेख किया जायेगा। जो व्यक्ति बन्दी होने से बच गये उन्हे भाग कर देहली के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर जाने का कोई उपाय दिखाई न दिया। फाटक पर प्रजा की भीड लग गई। वहा के निवासियो मे और जो उनके कार्यो के स्वामी थे उनमे यह समाचार फैल गये। मुगुलो के विरुद्ध कोई बाहर न निकला। जो लोग फाटक के रक्षक थे, वे भी आतकित हो गये। इसका ज्ञान न इबराहीम को हुआ और न उसके अनुयायियो को हुआ। जब मुगुल लूट की धन-सपत्ति सहित मध्याह्न की गर्मी से बचने के लिए (१२२) विश्राम कर रहे थे, तो बहादुर उन पर टूट पड़ा और अत्याचार के अपराध मे उनको बन्दी बना लिया। जो कुछ उनके सामने धन सपत्ति थी उस सब पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया। उसे लेकर वह देहली वापस लौट गया। देहली वालो के हृदय मे इस प्रकार उसके प्रति स्नेह उत्पन्न हो गया और वे उससे सहानुभूति करने लगे। यह समाचार जौनपुर वालो को प्राप्त हुआ। उन्होने भी उसे पत्र लिखा। यह हाल देखकर इबराहीम पर भी उसका बडा कुप्रभाव हुआ और उसकी ओर लोगो की सहानुभूति देखकर वह बडा भयभीत हुआ। इससे पूर्व जो उसका व्यवहार था, उसमे परिवर्तन हो गया। बहादुर उससे पृथक् होकर जौनपुर चल दिया। जब वह जौनपुर की सीमा मे पहुचा तो वहा के निवासियो का राजदूत उसके पास आया। इसी बीच मे वजीर कबीर ताज खा नरपाली का राजदूत भी गुजरात से पहुचा। यहा पर बहादुर की यात्रा का अन्त हो गया। उसकी वापसी के समाचार अन्त मे लिखे जायेगे।

सक्षेप मे, यह घटना इस प्रकार है कि जब सुल्तान को बहादुर के रुष्ट होकर चले जाने के समाचार मिले तो उसने खुदावन्द खा को बुलवाया और उससे यह कहा कि वह बहादुर के पास पहुच जाय और उसे वापस लाये और यह सूचना दे दे कि उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली जायगी। किन्तु खुदावन्द खा बहादुर तक न पहुच सका। वास्तव मे मुज़फ्फर, बहादुर को सब बालको से अधिक, यहा तक कि सिकन्दर से भी अधिक प्रिय समझता था।

इसी वर्ष सुल्तान ईदगाह मे वर्षा की प्रार्थना की नमाज हेतु नगर के बाहर निकला। उसने विभिन्न समूहो के आवश्यकताग्रस्त लोगो के प्रति कृपा प्रदर्शित की और उनको न्योछावर प्रदान की और उन्हे आदेश दिया कि वे (वर्षा हेतु) ईश्वर से प्रार्थना करे। तदुपरान्त वह नमाज के लिए आगे बढा। कहा जाता है कि उसकी अतिम प्रार्थना यह थी कि, "हे ईश्वर! मै तेरा दास हू। मै अपनी निजी आवश्यकता के लिए किसी वस्तु का स्वामी नही हू। यदि मेरे पापो के कारण तेरे दास वर्षा से वञ्चित है तो मै उपस्थित हू, मुझे जो चाहे दण्ड दे। हे कृपालु तथा दयालु! हमारी सहायता को पहुच।" यह

कहकर वह सिज्दे मे गिर पडा और "अरहमर्राहिमीन[1]-अरहमर्राहेमीन"—कहता रहा। फिर जैसे ही उसने सिर उठाया, हवा चलने लगी और चमक, गरज तथा वर्षा को लिए हुए एक बदली प्रकट हुई। तदुपरान्त उसने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और ईदगाह से ऐसी अवस्था मे वापस आया कि समस्त प्रजा उसके प्रति शुभकामनाये प्रकट कर रही थी और वह दाये-बाये दान-पुण्य कर रहा था।

बहादुर के देहली प्रस्थान करने की घटना का पुन उल्लेख

(१२८) ९३१ हि० (१५२४-२५ ई०) मे बहादुर ने अपने पिता से यह निवेदन किया कि "मुझे भी मआश[2] के सबन्ध मे उतनी ही वृत्ति मिलनी चाहिये जो मेरे भाई सिकन्दर को मिलती है, कारण कि मुझे इस समय जो कुछ मिल रहा है वह मेरी आवश्यकताओं से कम है।" मुजफ्फर यह सुनकर मौन हो गया और बहादुर उसी वर्ष के अन्त मे रजब मास मे डूँगरपुर चला गया। उसका हाकिम रावल उदय सिह था। वहा से वह फिर चित्तौड चला गया। राय उदय सिह के भतीजे ने जो दावत की थी उसमे उससे तथा बहादुर से बडा झगडा हो गया। इसका कारण वह कनीज थी जिसके नृत्य की बहादुर ने प्रशसा की थी और जिसके विषय मे उदय सिंह के भतीजे ने यह कहा था कि, "वह कनीज उस घराने की है जिसका तुम सब सम्मान करते हो।" इस पर बहादुर ने रुष्ट होकर उसके सिर पर तलवार मारी। यह कनीज अहमदनगर मे राणा तथा मुबारिजुलमुल्क के युद्ध के समय बन्दी बनाई गई थी। राणा की माता को जब यह समाचार प्राप्त हुआ कि जिस व्यक्ति की हत्या कर दी गई है उसके साथी बहादुर की हत्या करने के लिये एकत्र हुए है तो वह शीघ्रातिशीघ्र उस मजमे मे पहुची। उसके हाथ मे कटार थी। उसने कहा कि, "उसे छोड दो और कोई उसके पास न जाय अन्यथा मै आत्महत्या कर लूँगी।" तदुपरान्त राणा वहा पहुचा और लोगो को इससे रोका। बहादुर मेवात चला गया और वहा से सुल्तान इबराहीम के पास पहुचा। वह पानीपत मे मुगुल बाबर के मुकाबले मे पडा हुआ था। इबराहीम ने उसका स्वागत किया। एक दिन ऐसी घटना घटी कि मुगुलो ने अफगानो के एक समूह को सेना के शिविर के निकट बन्दी बना लिया और उस क्षेत्र में लूटमार भी की और बन्दियो को लेकर वापस चल दिये। किसी ने उसका पीछा न किया। इस दशा को देखकर बहादुर अपने विशेष व्यक्तियो सहित सवार हुआ और उनके पीछे बडी तीव्र गति से रवाना हुआ और उनके पास पहुच गया। उसने उनमे से बहुत से लोगो की हत्या कर दी। जो लोग हत्या मे बच गये वे भाग गये। बहादुर बन्दियो को लेकर लौट आया। मुगुल कोई बन्दी नही ले जा सके। अफगानो के हृदय मे उसके प्रति प्रेम मे वृद्धि हो गई और उनकी दृष्टि में उसे बडा सम्मान प्राप्त हो गया। उन्होने उसकी अत्यधिक प्रशसा करनी प्रारम्भ कर दी। बहादुर की ओर लोगो को इस प्रकार आकृष्ट देखकर इबराहीम बडा प्रभावित हुआ और उसके हृदय मे ईर्ष्या तथा द्वेष उत्पन्न हो गये। बहादुर इस बात को समझ गया और उससे पृथक् हो गया।

उसने जौनपुर की ओर प्रस्थान किया। उसका कारण यह था कि जौनपुर के अमीर इबराहीम के राज्य से सतुष्ट न थे। उन्होने बहादुर के विषय मे जब यह समाचार सुने तो इबराहीम की सेना में

१ 'परम कृपालु'।
२ जीविका सम्बन्धी आवश्यकताओं।

(१२९) उसे अत्यधिक प्रसिद्ध कर दिया। उन लोगो ने बहादुर से राज्य पर अधिकार जमाने के सम्बन्ध मे पत्र-व्यवहार किया। जब वह उस स्थान पर पहुचा जिसे बागपथ कहा जाता है तो उसे वहा हाजिब[1] पायन्दा खा अफगानी मिला जो जौनपुर के अमीरों की ओर से दूत बनकर आया था। उसने बहादुर से भेट की और पत्र पहुचाया। बहादुर पायन्दा खा के साथ जौनपुर जाने वाला ही था कि इसी बीच मे गुजरात की ओर से हरम खा[2] का भेजा हुआ दूत पहुचा गया। उसने सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु के समाचार पहुचाये और सुल्तान सिकन्दर के राज्य के विषय मे अमीरो मे जो परस्पर मतभेद हो गया था उसकी चर्चा की। जब बहादुर को इस बात का ज्ञान हुआ तो उसने कुछ देर सोच विचार करके जौनपुर के हाजिब से यह कहकर क्षमा-याचना की कि स्वय उसके राज्य ही मे विघ्न पड गया है। वह फिर गुजरात की ओर रवाना हुआ। जब वह चित्तौड पहुचा तो उसके पास अली शेर बिन मुईनुद्दीन अफगान आया। वह सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त गुजरात से निकल खडा हुआ था।

सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु

९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) मे जब वह (मुजफ्फर) चाम्पानीर से निकला तो उसे ऐसे चिह्न दृष्टिगत हुए जिससे उसके हृदय मे यह विचार हुआ कि वह अब चाम्पानीर और उसके निवासियो से सदा के लिए विदा हो रहा है। उसने वहा भी अत्यधिक दानपुण्य किया और अहमदाबाद के मार्ग मे भी। जब वह अहमदाबाद मे ठहरा तो वहा के शुभ मजारो पर अत्यधिक आने-जाने लगा और वहा भी अत्यधिक दानपुण्य किया। अल्लामा खुर्रम खा के विषय मे उसे बडी ही सद्भावनाये थी। सुल्तान ने एक दिन उससे कहा कि, "मै इस बात पर ध्यान दे रहा हू कि अपने व्यय मे जो लोग सहायता के पात्र हो उनकी ओर अधिक ध्यान रखूँ। मैंने बैतुलमाल से अत्यधिक धन व्यय किया किन्तु जो उसके वास्तविक पात्र थे उनके विषय मे मुझसे कमी हुई। यदि इस विषय मे मुझसे प्रश्न किया जायगा तो मैं क्या उत्तर दूँगा? अब मै ससार से विदा होने वाला हू और मेरी अतिम यात्रा प्रारम्भ होने वाली है। ऐसी अवस्था मे यही उचित है कि ईश्वर से आशा रखी जाय, अत मै ईश्वर से आशा रखता हू कि वह अपनी कृपा तथा दया से मेरी इन दोनो भूलो को क्षमा करेगा। अत तुम बैतुलमाल जाओ और जितना तुमसे सभव हो वहा से ले लो और मेरे जीवन-काल ही मे वास्तविक आवश्यकताग्रस्त लोगो को दे दो। आशा है कि ईश्वर उसे मेरी ओर से स्वीकार करेगा। वह बहुत बडा दयालु है।"

इसके उपरान्त मुजफ्फर ने अपने पुत्र सिकन्दर को बुलवाया और उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। उसने उससे उसके अन्य भाइयो के विषय मे वसीयत की। सिकन्दर रोने लगा। मुज़फ्फर ने उससे आलिगन किया और उसकी आखे भी डबडबा आईं। तदुपरान्त उसने उसके प्रति शुभकामनाये प्रकट की।

अपने अतिम दिनो मे से एक दिन शुक्रवार को उसने अपनी अश्वशाला के पशुओ का निरीक्षण (१३०) किया। फिर वह अपने महल मे गया और वहा लेटा रहा, यहा तक कि सूर्य अस्त होने लगा। तदुपरान्त उसने जल मँगवा कर वजू किया और दो रकात नमाज पढकर अन्त पुर मे चला गया। वहा

१ देखिये पृ० ३०, नोट नं० ३।
२ 'कुर्रम खा'।

स्त्रिया टूटे हुए हृदय के साथ बडी निराश अवस्था मे विलाप करती हुई एकत्र हुईं। वे अपने विषय मे विलाप कर रही थी। इस प्रकार पृथक् होने पर वे दुखी थी, कारण कि वह ऐसी विदा थी जिसके उपरान्त भेट का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता। उसने उनसे धैर्य धारण करने के लिए कहा, कारण कि इससे बडा लाभ होता है। उन्हे सान्त्वना देने के लिए उसने खजाने मे से धन-सपत्ति मगवाई और उसे उन लोगो मे बाट दिया। तदुपरान्त उन्हे विदा किया और ईश्वर को सौप दिया।

फिर वह अपने राजसिहासन के स्थान पर गया। जब वह वहा पहुचा तो उसने उपस्थितगण से कहा कि, "राजसिहासन पर मेरे पूर्वज उस समय से जब से कि उनके राज्य के लिए बैअत की जाती थी आसीन होते रहे है। जब मेरी बारी आई तो मै भी उस पर आसीन हुआ। अब इस राजसिंहासन को मेरे पुत्र के लिए छोड दो। वह इस पर अपने पूर्वजो की आत्मा से आशीर्वाद प्राप्त करता हुआ बैठा करेगा। मेरे लिए दूसरा सिहासन लाओ, मै उस पर लेटूँगा।" उसके लिए दूसरा सिहासन लाया गया, वह कुछ देर उस पर बैठा। तदुपरान्त उसने राजा मुहम्मद हुसेन को जिसे अशजउलमुल्क की उपाधि प्राप्त थी अपने पास बुलवाया और उससे कहा कि, "विद्वत्ता के कारण ईश्वर ने तुम्हे अत्यधिक सम्मानित किया है। मै तुमसे अतिम सेवा लेना चाहता हू। मेरी यह इच्छा है कि तुम मेरी मृत्यु के समय मेरे पास रहो। उस समय सूरये यासीन[1] का पाठ करो। मुझे अपने हाथ से स्नान कराओ तथा मेरे दोषो को छिपाओ" इस सेवा के लिए चुने जाने के कारण अशजउलमुल्क ने अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की और उसके लिए ईश्वर से शुभकामनाये की। जब उसने अजान सुनी तो उस समय कहा कि "यह किस समय की अजान दी गई है ?" असदुलमुल्क ने उत्तर दिया कि, "यह अजान जुमे की नमाज की तैयारी के लिए दी गई है और यह समय के पूर्व होती ही है।" इस पर मुजफ्फर ने कहा कि, "जुहर[2] की नमाज के समय मै तुम्हारे साथ रहूगा किन्तु अस्र[3] की नमाज के समय मै अपने ईश्वर के साथ स्वर्ग मे रहूगा।" तदुपरान्त उसने उपस्थितगण को शुक्रवार की नमाज के लिए प्रस्थान करने की अनुमति दे दी। उसने अपना मुसल्ला[4] मगवाया और नमाज पढी। उसने ईश्वर से बडे ही पवित्र हृदय से तथा ध्यानपूर्वक प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना ऐसे व्यक्ति की प्रार्थना थी जो महल छोड रहा हो और कब्र की ओर जा रहा हो। उसकी अतिम प्रार्थना यह थी "हे ईश्वर ! तू ने मुझे बहुत बडा राज्य प्रदान किया, हदीसो के भाष्य को समझने की शिक्षा दी, तू ने पृथ्वी तथा आकाश को जन्म दिया है, तू लोक तथा परलोक मे मेरा स्वामी है, तू मुझे मुसलमान होने की अवस्था मे मृत्यु प्रदान कर और सदाचारियो मे मुझे सम्मिलित कर।" तदुपरान्त वह मुसल्ले से खडा हो गया और उसने ईश्वर से कहा कि, "हे ईश्वर ! मै अपने आपको तेरे सिपुर्द करता हू।" फिर वह अपने सिहासन पर जो उसके लिए ठीक किया गया था लेट गया और वह स्वय किबले की ओर मुख किये हुए था। उसने कलमा पढा और मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय खतीब[5] मिम्बर[6], पर उसके लिये शुभ कामनाये प्रकट कर रहा था।

१ क़ुरान का एक सूरा जो मुसलमान लोगों की मृत्यु के समय के कष्टो के निवारण हेतु पढ़ा जाता है।
२ जुहरः—मध्याह्नोपरान्त की नमाज़।
३ सायंकाल के पूर्व की तथा दिन की अन्तिम तीसरी अनिवार्य नमाज़।
४ वह चटाई अथवा कपड़ा जिसे बिछा कर नमाज़ पढ़ी जाती है।
५ दोनो ईदो तथा जुमे इत्यादि की नमाज के समय प्रवचन करने वाले जिसमे मुहम्मद साहब, उनकी संतान, मित्रों एव समकालीन ख़लीफ़ा और उनके पूर्वजो के लिये ईश्वर से शुभकामनायें की जाती हैं।
६ मस्जिद का मंच।

यह घटना २ जमादि-उल-आखिर ९३२ हि० (१६ मार्च १५२६ ई०) को घटी। उसने (१३१) १४ वर्ष तथा ९ मास तक राज्य किया। उसका जनाजा सरखीज ले जाया गया और गुम्बद मे उसके पिता की कब्र के समीप दफन किया गया। उसकी कब्र पर भी प्रथानुसार चत्र लगाया गया। वह बडा ही बुद्धिमान् बादशाह था। वह लोगो का उपकार किया करता था। न्यायप्रिय, ज्ञानी, कर्मठ तथा बडा ही उत्तम घुडसवार था। राज्य के समस्त कार्यों से अवगत था। वह वडा वीर तथा पराक्रमी था और ईश्वर के मार्ग मे अपनी वासनाओ पर नियत्रण रखता था। वह नम्रतापूर्वक व्यवहार करता था, लोग उसके आदेशो का पालन करते थे और उसका भय करते थे। वह बडा ही दानी था और शरीअत के आदेशो का पालन करता था।

उसके विषय मे यह समाचार प्रसिद्ध है कि एक दिन चाम्पानीर के काजी का एक दूत उसे बुलाने के लिए आया। घोडो के एक व्यापारी ने उसके प्रति न्याय की याचना की थी। जैसे ही उसे यह समाचार प्राप्त हुआ, उसने अन्त पुर से जिस दशा मे था उसी दशा मे काजी के दूत को उत्तर भिजवाया और पैदल ही उस स्थान पर जहा काजी बैठता था, पहुचा। वह वादी के साथ काजी के समक्ष बैठ गया। व्यापारी ने कहा कि, "मुझे मेरे घोडो का मूल्य अभी तक प्राप्त नही हुआ है" और यह बात सिद्ध हो गई। व्यापारी ने उस समय तक न्यायालय छोडने से इनकार कर दिया जब तक कि उसे मूल्य प्राप्त न हो जाय। काजी ने मूल्य अदा कर देने का आदेश दे दिया। सुल्तान वादी के साथ उस समय तक बैठा रहा जब तक कि व्यापारी ने मूल्य अपने अधिकार मे न कर लिया। सुल्तान जब न्यायालय मे उपस्थित हुआ तथा काजी को अभिवादन किया तो काजी अपने स्थान से न हिला। केवल इतना ही नही अपितु उसने सुल्तान को आदेश दिया कि वह अपने आपको वादी से किसी प्रकार अधिक सम्मानित न समझे और उसी के साथ बैठे। सुल्तान ने इस आदेश का पालन किया। जब व्यापारी को मूल्य मिल गया तो काजी ने उससे प्रश्न किया कि, "सुल्तान पर अब तो तेरा कोई दावा नही है?" उसने कहा, "नही।" तदुपरान्त क़ाज़ी अपने स्थान से खडा हो गया और प्रथानुसार सुल्तान के प्रति अभिवादन किया और क्षमा-याचना करके अपने सिर को झुका लिया। सुल्तान वादी के साथ अपने स्थान से खडा हो गया और उसने काजी का हाथ पकडकर उसे उसके स्थान पर बैठा दिया और स्वय उसके बराबर बैठ गया। उसने उसके प्रति इस कारण कृतज्ञता प्रकट की कि वह अभियोगो के सम्बन्ध मे नरमी नही करता। उसने यह भी कहा कि, "यदि तू अपनी इस प्रथा का मेरे कारण पालन न करता तो मै तुझसे यह पद ले लेता और तुझे सर्वसाधारण लोगो की श्रेणी तक पहुचा देता ताकि तेरे पश्चात् अन्य लोग तेरा अनुसरण न करे। ईश्वर मेरी ओर से तेरा उपकार करे। तू सत्य का पालन करता है। तेरे ही समान व्यक्ति को क़ाज़ी होना चाहिये।" क़ाज़ी ने उसकी प्रशसा की और कहा कि, "आप ही के समान व्यक्ति को सुल्तान होना चाहिये।"

वह मक्का मदीना वालो के प्रति बडी कृपा तथा दया प्रदर्शित करता था। उसने एक जहाज ठीक करवाया और उसे बहुमूल्य वस्त्रो से भर दिया तथा हिजाज के बन्दरगाह जद्दा से रवाना कर दिया। उस जहाज़ को उन समस्त वस्तुओ सहित जो जहाज़ मे थी हिजाज वालो को प्रदान कर दिया। उसने मक्का मे एक सराय का निर्माण कराया जिसमे एक मदरसा, मुसाफिरखाना एव अन्य भवन थे। उनके लिए उसने एक वक़्फ निश्चित किया जिसकी आय मक्का मे मदरसे के अध्यापको, विद्यार्थियो, वहा के निवासियो मुसाफिरखाने के सेवको के लिए भेजी जाती थी। यह धन हज के समय भेजा जाता था। (१३२) इसके अतिरिक्त भी मक्का तथा मदीना के निवासियो के लिए अन्य सामान भी भेजे जाते थे। ये बाते उसके राज्यकाल मे निरन्तर होती रही। मक्का मदीना में उसके हाथ के नकल किये हुये दो

कुरान है जिन्हे उसने सोने के जल से सुल्स लिपि[1] मे लिखा है। हनफियो[2] के इमाम[3] उसे विशेष रूप से पढते है। दो रबय[4] भी इसी लिपि मे लिखे हुए है। इन दोनो कुरानो तथा रबओ के लिए एक विशेष वक्फ है। उसकी आय प्रत्येक वर्ष मक्का मदीना भेजी जाती है। इससे उस कुरान शरीफ तथा रबओ के पढने वालो के लिए, शेखुर्रबआ[5] के लिए, उनके वितरण करने वालो के लिए, उनकी रक्षा करने वालो के लिए, खतम[6] के समय शुभकामना करने वालो के लिये, उस समय जल पिलाने वालो के लिए, नकीब तथा फर्राश के लिए उसमे से धन दिया जाता है। मैने उसे स्वय देखा है और सुल्तान महमूद की मृत्यु तक यह प्रथा चलती रही थी।

बदरुल मआली ज़ियाउद्दीन सिकन्दर शाह बिन मुज़फ़्फ़र शाह

उसके पिता के विवरण मे यह लिखा जा चुका है कि उसने सिकन्दर को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। उसे वसीयत करते समय यह कहा था कि, "हे पुत्र ! मै अब तेरे साथ अतिम बार उपस्थित हू। इस समय तू उस अनुशासन तथा शिक्षा से लाभ प्राप्त कर जिससे मैने तुझे सुशोभित किया है। जो साधारण कार्य हो उनमे तू मेरा अनुसरण कर और जो महत्वपूर्ण कार्य हो उनके विषय मे ईश्वर से शुभ-कामनाये कर। ससार मे से जो भाग तुझे मिलना है उसे न भूल। ईश्वर ने जिस प्रकार तेरा कल्याण किया है तू दूसरो का कल्याण कर। तू ऐसा पुरुष बन जिसके पाव भूमि के भीतर हों और उसका मस्तिष्क, जो साहस का भण्डार हो, सितारो के ऊपर हो। मुहम्मद साहब की हदीस मे उल्लिखित है कि दुनिया बडी अच्छी सवारी है इस पर यात्रा करो, यह तुम्हे परलोक मे पहुचा देगी। हजरत अली ने कहा है कि, लोक, परलोक की खेती है। तू ससार मे इस प्रकार जीवन व्यतीत कर जिसकी ओर हज़रत ईसा ने सकेत किया है अर्थात् ससार पुल है, उस पर नदी को पार करो किन्तु उसी मे बस मत जाओ।" उसने उसे इसी प्रकार अन्य दो-एक परामर्श दिये और अन्त मे यह कहा कि, "मुझे तुझसे यह आशा है कि तू मेरी उत्कृष्ट सतान मे से होगा अत शुभकामनाओ से मुझे कभी मत भुलाना।"

(१३३) जब सिकन्दर शाह ने राज-सिंहासन पर आसीन होना निश्चय किया उस समय उसका दाया हाथ उसकी फुफी के पुत्र मजलिसे ग्रामी फतह खा बिन फतह खा ने पकडा और बाया हाथ मसनदे आली मज्दुद्दीन मुहम्मद खुदावन्द खा ने पकडा और वह सिंहासनारूढ हुआ। सिंहासनारूढ होने के उपरान्त सर्वप्रथम मजलिसे आली, मसनदे आली तथा एमादुलमुल्क खुशकदम ने उसके प्रति अभिवादन किया।

यह घटना २ जमादि-उल-आखिर ९३२ हि० (१६ मार्च १५२६ ई०) को घटी। उसी वर्ष ५ जमादि-उल-आखिर (१९ मार्च १५२६ ई०) को वह अहमदाबाद से चाम्पानीर की ओर रवाना हो गया। जब वह कुतुब आलम बुरहानुद्दीन तथा शेख जियु के शुभ मजार की ओर रवाना हुआ तो उसने यह कहा कि, "मेरे भाई से जिस राज्य का वचन दिया गया था उसका तो इस समय स्वामी मै हू। वह वचन

१ एक प्रकार की लिपि।
२ सच्चे धर्म के; सुन्नी मुसलमानो के।
३ नेता, वे लोग जो मुसलमानो को नमाज़ पढाते है।
४ सम्भवतः सिपारे, कुरान के अध्याय।
५ सम्भवतः उसका प्रबन्धक।
६ जब कुरान शरीफ पूरा समाप्त हो जाता है।

क्या हो गया।" इस वाक्य के कहने के उपरान्त वह बडा लज्जित हुआ। लज्जा तोवा का काम करती है किन्तु उसने यह बात अभिमानवश कही थी, कारण कि वह राज्य के वैभव तथा लाव-लश्कर के साथ जा रहा था, अत यह घटना घटी कि जब वह चाम्पानीर मे उतरा तो इससे पूर्व कि वह अपना सुल्तान होना प्रकट करे उसकी जिह्वा पर व्यर्थ प्रकार की बाते आ गई। उसने निम्न श्रेणी के सेवको को उस जागीर तथा उपाधि का वचन दे दिया जो बडे सम्मान वालो को ही प्रदान होती है।

कुछ लोगो का तो यह कथन है कि जब वह किसी तलवार की परीक्षा करता था तो उसे एक हार मे बँधे हुए किसी मोजे अथवा गन्ने की किसी पोर पर मारता था और कहता था कि, "यह अमुक व्यक्ति है।" तलवार की इस परीक्षा मे जिन लोगो का नाम लिया जाता था उनमे से एक बहुत वडे समूह ने उसे छोड दिया। वे सब इस बात से सहमत हो गये कि उसको राज्य से पृथक् कर दिया जाय, किन्तु उसके उत्तराधिकारी के विषय मे मतभेद था। उनमे से एक समूह बहादुर के पक्ष मे हो गया और उसको बुलाने के लिये लिखा। यह व्यक्ति वजीर कबीर ताज खा नरपाली था। वह बडा ही अधिकार-सम्पन्न था। उन्ही मे से एक व्यक्ति लतीफ खा बिन मुजफ्फर के पक्ष मे हो गया। वह वजीर कबीर कैसर खा था। वह बडा अधिकार-सम्पन्न था किन्तु मसनदे आली खुदावन्द खा इत्यादि पृथक् थे।

एमादुलमुल्क मध्याह्न के भोजन के उपरान्त विश्राम के समय सिकन्दर तक पहुचा और उसने उसकी हत्या कर दी। उसने मुजफ्फर की सतान मे से एक छोटे से बालक को सिहासनारूढ कर दिया और उसकी बैअत[1] करानी चाही। उसके साथियो मे से भी बहुत कम लोगो ने इस बात को स्वीकार (१३४) किया। जमादि-उल-आखिर के अतिम दिन मे यह घटना घटी।[2] बीबी रानी के कारण उसे (एमादुलमुल्क को) बडा प्रिय रक्खा जाता था, दूसरा कारण उसकी अनुपम सुन्दरता तथा रूपरग था। उसे यूसुफ द्वितीय कहा जाता था।

मुजफ्फर के इतिहास के विवरण मे इस बात का उल्लेख हो चुका है कि बहादुर देहली से जौनपुर की ओर रवाना हो गया था और निकट पहुच गया था कि वजीर का राजदूत पहुचा। जौनपुर के दूत ने बडा प्रयत्न किया कि बहादुर जौनपुर ही चले, किन्तु बहादुर ने यह कहा कि "पिता की मृत्यु तथा भाई की हत्या के उपरान्त राज्य मे बडा विघ्न पड गया है, वह मेरा पैतृक राज्य है अत इस उपद्रव का निराकरण आवश्यक है।" बहादुर ने जौनपुर के हाजिब[3] से यह कहकर क्षमा-याचना की। यद्यपि जौनपुर का राज्य उसके लिए ठीक हो चुका था, तथापि वह गुजरात की ओर चल दिया।

१ अधीनता स्वीकार करने की शपथ।
२ १२ अप्रैल १५२६ ई०।
३ देखिये पृ० ३०, नोट नं० ३।

सिन्ध

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी

तारीखे सिन्ध अथवा तारीखे मासूमी

तबक़ाते अकबरी

भाग ३

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन—कलकत्ता)

जाम फ़तह ख़ां बिन सिकन्दर ख़ां

(५१५) उसने १५ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया। अन्त मे वह अपनी मृत्यु से मर गया।

जाम तुग़लुक बिन सिकन्दर ख़ां

(५१६) जाम फतह खा की मृत्यु के उपरान्त उसका भाई जाम तुगलुक हाकिम हुआ। २८ वर्ष उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम मुबारक

जाम तुगलुक की मृत्यु के उपरान्त जाम मुबारक जो उसका सम्बन्धी था और जिसे पददारी[1] का पद प्राप्त था, अपने आप को उस उत्कृष्ट कार्य के योग्य समझ कर सिहासनारूढ हुआ किन्तु तीन दिन से अधिक राज्य न कर सका।

जाम इस्कन्दर बिन जाम फ़तह ख़ां बिन सिकन्दर ख़ां

जाम मुबारक के राज्य के अन्त के उपरान्त सिन्ध के सम्मानित व्यक्तियो ने जाम इस्कन्दर को, जो राज्य का उत्तराधिकारी होने के कारण राज्य का पात्र था, राज्य प्रदान किया। उसने एक वर्ष तथा छ मास तक राज्य किया।

जाम संजर

जाम सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त सिन्ध के उच्च पदाधिकारियो ने जाम सजर को, जो उस समय राज्य के कार्य सम्पन्न करने के लिय नियुक्त था, राज्य प्रदान किया। उसने ८ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

१ सम्भवतः अन्तःपुर द्वार के रक्षक।

निज़ामुद्दीन जाम नन्दा

(५१७) निजामुद्दीन, जो जाम नन्दा के नाम से प्रसिद्ध है, जाम सजर के उपरान्त सिहासनारूढ हुआ। सिन्ध के राज्य को उसके राज्यकाल मे रौनक प्राप्त हो गई। वह मुल्तान के सुल्तान हुसेन लगाह का समकालीन था। उसके राज्यकाल मे शाह बेग ने कन्धार से पहुच कर ८९९ हि० (१४९३–९४ ई०) मे सीवी को, जो उसके गुमाश्ते[1] बहादुर खा के अधीन था, विजय कर लिया और अपने छोटे भाई सुल्तान मुहम्मद को वहा छोड कर स्वय कन्धार चला गया। जाम नन्दा ने मुबारक खा को सुल्तान मुहम्मद के विरुद्ध भेजा। सुल्तान मुहम्मद इस युद्ध मे मारा गया। सीवी जाम के अधिकार मे पुन आ गया। शाह बेग ने यह समाचार पाकर मीर्जा ईसा तर्खान को अपने अनुज के प्रतिकार हेतु भेजा। मीर्जा ईसा ने जाम की सेना से युद्ध किया। उसे विजय प्राप्त हो गई। उसके पीछे ही शाह बेग पहुचा और उसने बक्कर का किला जाम नन्दा के गुमाश्ते काजी कादन के अधिकार से सधि द्वारा प्राप्त कर लिया। फाजिल बेग कोकिलताश को उस स्थान पर छोड दिया। बक्कर का किला उस समय इतना दृढ न था जितना कि आजकल है। उसने सहवान के किले पर भी अधिकार जमा कर ख्वाजा बाकी बेग के सिपुर्द कर दिया और कन्धार लौट गया। जाम नन्दा ने सीवी को मुक्त कराने के लिये पुन सेना भेजी किन्तु उससे कुछ भी सम्भव न हो सका। जाम नन्दा की ६२ वर्ष राज्य करने के उपरान्त मृत्यु हो गई।

जाम फ़ीरोज़

निजामुद्दीन का पुत्र जाम फीरोज अपने पिता के स्थान पर सिहासनारूढ हुआ। उसने विज़ारत का पद दरिया खा को, जो उसका सम्बन्धी था, प्रदान किया। वह पूर्ण अधिकार-सम्पन्न हो गया। जाम (५१८) सलाहुद्दीन, जो जाम फीरोज़ का सम्बन्धी था, अपने आप को राज्य का उत्तराधिकारी समझता था। उसने इसके लिये युद्ध प्रारम्भ कर दिया। जब उससे कुछ न हो सका तो वह भाग कर गुजरात पहुचा और सुल्तान मुजफ्फर गुजराती से प्रार्थना की। क्योकि सुल्तान मुजफ्फर की पत्नी जाम सलाहुद्दीन के चाचा की पुत्री थी, अत सुल्तान मुजफ्फर ने उसे आश्रय तथा प्रोत्साहन प्रदान किया और उसे बहुत बडी सेना देकर थट्टा जाने की अनुमति दे दी। दरिया खा, जिसे राज्य मे समस्त अधिकार प्राप्त हो गये थे, जाम सलाहुद्दीन का सहायक बन गया था। अत सिन्ध का राज्य युद्ध के बिना जाम सलाहुद्दीन को प्राप्त हो गया। जाम फीरोज ने एकान्तवास ग्रहण कर लिया किन्तु अन्त मे दरिया खा ने, जिसके हाथ मे सिन्ध के राज्य की बागडोर थी, जाम फीरोज को बुलवाकर बादशाह बना दिया।

जाम सलाहुद्दीन गुद्दी खुजला कर पुन गुजरात चला गया। सुल्तान मुजफ्फर ने जाम सलाहुद्दीन हेतु पुन तैयारी की और ९२८ हि० (१५१६ ई०) मे उसे सिन्ध भेजा। उसने जाम फीरोज को सिन्ध से निकाल कर राज्य पर अधिकार जमा लिया। जाम फीरोज ने विवश होकर शाही बेग अरगून से प्रार्थना की। अमीर शाही बेग ने अपने दास सुम्बुल को जाम की सहायतार्थ भेजा। जाम फीरोज ने शाही बेग की सेना अपने साथ ले जाकर सिहवान के आस-पास जाम सलाहुद्दीन से युद्ध किया। उस युद्ध (५१९) मे जाम सलाहुद्दीन तथा उसका पुत्र हैबत खा मारे गये। सिन्ध पूर्व की भाति पुन जाम फीरोज के अधिकार मे आ गया।

१ प्रतिनिधि, एजेंट।

इस अशान्ति के काल मे शाह बेग ने, जिसने सिन्ध विजय करने का सकल्प कर लिया था, अवसर पाकर कन्धार से निकल कर ९२९ हि०[1] (१५२२–२३ ई०) मे थट्टा को अपने अधिकार मे कर लिया। दरिया खा की, जो जाम फीरोज का मुख्य पदाधिकारी था, हत्या कर दी गई। जाम फीरोज ने विवश होकर सिन्ध छोडकर सुल्तान मुजफ्फर गुजराती के पास शरण ली। इन्ही दिनो मे सुल्तान मुजफ्फर की मृत्यु हो जाने के कारण जाम फीरोज पुन सिन्ध पहुचा किन्तु वहा कोई सफलता न देख कर गुजरात वापस चला गया और अपनी पुत्री को सुल्तान बहादुर गुजराती से विवाह करके उसके अमीरो मे सम्मिलित हो गया। सुमा जामो के राज्य का अन्त हो गया और शाह बेग को राज्य प्राप्त हो गया।

शाह बेग अरगून

शाह बेग मीर जुन्नून का पुत्र था जो सुल्तान हुसेन मीर्जा[2] का अमीरुल उमरा तथा सिपहसालार एव सुल्तान हुसेन के पुत्र बदी-उज्-जमा[3] मीर्जा का अतालीक था। सुल्तान हुसेन मीर्जा की ओर से उसे कन्धार का राज्य प्राप्त हुआ था। जब मीर जुन्नून बेग शाही बेग ऊजबक के युद्ध मे जो उसने सुल्तान हुसेन मीर्जा के पुत्रो से किया था, मारा गया तो कन्धार का राज्य उसके पुत्र शाह बेग को प्राप्त हो गया और वह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उसने सिन्ध की अधिकाश विलायत अपने अधिकार मे कर ली और पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

(५२०) वह बहुत बडा विद्वान् था। उसने 'अकायदे नफसी' की शरह[4], काफिया की शरह तथा[5] मतालये मन्तक' की शरह सकलित की। वह बडा ही सदाचारी था। युद्ध मे वह सब से पहले आक्रमण करता था। यद्यपि लोग बहुत रोकते और कहते कि इस प्रकार वीरता का प्रदर्शन सरदार के लिये उचित नही किन्तु वह कहता कि "उस समय मुझे अपने ऊपर अधिकार नही रहता। मेरी इच्छा यही होती है कि मेरे समक्ष कोई भी खडा न रहे।"

शाह हुसेन

शाह हुसेन अपने पिता के स्थान पर बादशाह हुआ। उसने अत्यधिक सेना तथा वैभव प्राप्त कर लिया। उसने मुल्तान के हाकिम सुल्तान महमूद पर अधिकार जमा कर समस्त सिन्ध मे पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। भक्कर के किले का नये सिरे से निर्माण कराया और उसे दृढ बनाया। उसने ३२ वर्ष तक राज्य किया। ९६२ हि० (१५२५–२६ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

१ एक पोथी के अनुसार '९२७ हि० (१५२०-२१ ई०)'।

२ सुल्तान हुसेन मीर्जा, अबुल गाज़ी बहादुर बिन मीर्जा बाईकरा, बिन मीर्जा उमर शेख बिन अमीर तैमूर, २४ मार्च १४६६ ई० को सिंहासनारूढ हुआ। उसकी मृत्यु १० मई १५०६ ई० को हुई।

३ बदी-उज़ जमान मी र्जा सुल्तान हुसेन मीर्जा का ज्येष्ठ पुत्र था और अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त १५०६ ई० मे सिहासनारूढ हुआ। ऊज़बेक आक्रमणकारियों तथा अपने भाई के अपहरण के कारण उसे अपना खुरासान का राज्य छोड़कर १५१४ ई० मे टर्की के आटोमन सुल्तान सलीम प्रथम के पास शरण लेनी पड़ी। कुछ मास उपरान्त ताऊन के कारण उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

४ नसफ़ी।

५ टीका।

तारीख़े सिन्ध

अथवा

तारीख़े मासूमी

(लेखक—सैयद मुहम्मद मासूम बक्करी)

(प्रकाशन—बम्बई १९३८ ई०)

जाम फ़तह् खां बिन सिकन्दर

(७०) समय व्यतीत होने पर देहली का राज्य अव्यवस्थित हो गया। मुल्तान की विलायत[1] लगाहो के अधिकार मे और सिन्ध की विलायत, सिन्ध के सुल्तानो के अधिकार मे आ गई। सक्षेप मे जाम फतह खा वीरता एव दान के गुणो से सुशोभित था। उसने १५ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया। तदुपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम तुग़लुक़ बिन सिकन्दर

जब जाम फतह खाँ रुग्ण हो गया और उसे अपना मृत्युकाल निकट दृष्टिगत होने लगा तो उसने तीन दिन पूर्व अपने भाई तुगलुक को सिहासनारूढ किया और राज्य तथा शासन की बागडोर उसके हाथ मे दे दी और उसकी उपाधि जाम तुगलुक निश्चित की। जब वह सिहासनारूढ हुआ तो उसने अपने भाइयो को सिविस्तान तथा भक्कर के किले का राज्य प्रदान कर दिया। वह अपना अधिकाश समय सैर तथा शिकार मे व्यतीत किया करता था। जब बिल्लौच लोगो ने उपद्रव तथा विद्रोह प्रारम्भ कर दिया तो जाम सेना लेकर वहा पहुचा और बिल्लौच सरदारो को दड देकर लौट गया और प्रत्येक परगने मे थाने निश्चित किये। उसने २८ वर्ष तक राज्य किया और तत्पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई।

जाम सिकन्दर

वह अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ। उसके अल्पावस्था मे होने के कारण सिविस्तान तथा भक्कर के हाकिम अपने अपने महाल मे यथेच्छाचार करने लगे। वे उसकी आज्ञाओ का पालन न करते थे तथा एक दूसरे का विरोध किया करते थे। जाम सिकन्दर ने थट्टा से निकल कर भक्कर (७१) की ओर प्रस्थान किया। वह नसरपुर कस्बे तक पहुचा था कि अचानक मुबारक नामक एक

1 राज्य।

व्यक्ति ने जो जाम तुगलुक के जीवनकाल मे पर्दादारी[1] के पद पर नियुक्त था, थट्टा पर आक्रमण करके स्वय जाम मुबारक की उपाधि धारण कर ली और सिहासनारूढ हो गया। क्योकि प्रजा उसे न चाहती थी अत तीन दिन से अधिक वह राज्य न कर सका। थट्टा नगर के उच्च पदाधिकारियो ने उसे भगा दिया और सिकन्दर को बुलाने के लिये आदमी भेजे। जब उसे यह सूचना प्राप्त हुई तो वह अन्य हाकिमो से सधि करके थट्टा पहुचा। डेढ वर्ष उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम रायदना

६ जमादि-उल-अव्वल ८५८ हि० (४ मई १४५४ ई०) को जाम रायदना ने चढाई की। वह जाम रायदना, जाम तुगलुक के राज्यकाल मे कच[2] की सीमा पर था। उसका उन लोगो से सम्वन्ध हो गया और वह योग्य लोगो का बहुत बडा समूह एकत्र करके उनको अत्यधिक प्रोत्साहन देने लगा और उन लोगो को अत्यधिक बहुमूल्य वस्तुये तथा उचित इनाम प्रदान किया करता था। वे लोग भी योग्यता एव गौरव के चिह्न उसमे देख कर उसके बहुत बडे हितैषी हो गये थे।

जब उसे सिकन्दर की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुये तो वह बहुत बडी सेना लेकर थट्टा नगर मे पहुचा और लोगो को एकत्र किया और उनसे कहा, "मै राज्य प्राप्त करने के उद्देश्य से नही आया हू, अपितु मुसलमानो की धन-सम्पत्ति की रक्षा हेतु आया हू। मै अपने आप को राज्य के योग्य नही समझता। तुम लोग जिसे इस कार्य के योग्य समझो उसे राज्य प्रदान कर दो। मै सर्वप्रथम उसकी बैअत[3] करूगा। क्योकि इस बीच मे कोई भी राज्य के योग्य न मिला अत सभी ने सर्वसम्मति से उसे सिहासनारूढ कर दिया। उसने डेढ वर्ष मे समस्त सिन्ध की विलायत, समुद्र से लेकर काजरीली तथा कन्धी ग्राम तक, जो (७२) मातीला तथा औबारा ग्राम की सीमा है, अपने अधिकार मे कर ली।

जब उसके राज्य को साढे आठ वर्ष हो गये तो जाम सजर को जो उसका एक विश्वासपात्र था, राज्य का लोभ हो गया। उसने उसके विश्वासपात्रो तथा नदीमो[4] को मिलाकर एक समय जब वह एकान्त मे मदिरापान कर रहा था, मदिरा के पात्र मे विष मिला कर नदीम द्वारा उसे विष दिला दिया। उसमे से एक घूँट पीते ही तीन दिन उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम संजर

वह बडा रूपवान् था। बहुत बडी सख्या मे लोग उसके रूप पर आसक्त थे। उससे कुछ प्राप्त किये हुये बिना ही वे अधिकाश समय उसकी सेवा मे तल्लीन रहते थे। कहा जाता है कि, "जाम सजर के सिंहासनारूढ होने के पूर्व एक बहुत बडा दरवेश उसकी ओर विशेष रूप से आकृष्ट था। एक रात्रि मे सजर उसकी सेवा मे पहुचा और उससे कहा कि "मै थट्टा का बादशाह बनना चाहता हू चाहे वह आठ दिन के लिये ही हो।" दरवेश ने कहा, "तू बादशाह होगा और आठ वर्ष तक राज्य करेगा।"

१ अन्त पुर का प्रबन्धक।
२ कच्छ।
३ अधीनता स्वीकार करने की शपथ लूंगा।
४ मुसाहिबो।

जाम रायदना की मृत्यु के उपरान्त राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने सर्वसम्मति से जाम सजर को सिहासनारूढ कर दिया और राज्य की बागडोर उसके हाथ मे दे दी। क्योकि वह दरवेश के आशीर्वाद से सिहासनारूढ हुआ अत युद्ध किये बिना ही चारो ओर के लोग उसके अधीन हो गये। सिन्ध के राज्य को उसके राज्यकाल मे इतनी उन्नति प्राप्त हो गई कि भूतकाल मे किसी राज्य को भी न हुई होगी। (७३) सैनिक तथा प्रजाजन पूर्ण रूप से धन-धान्य सम्पन्न एव निश्चिन्त होकर समय व्यतीत करने लगे। जाम सजर सर्वदा आलिमो, पवित्र लोगो तथा दरवेशो की रिआयत एव उनका आदर सत्कार किया करता था। शुक्रवार को फकीरो तथा दरिद्रियो को दान-पुण्य किया करता था और सहायता के पात्रो को वृत्ति तथा अदरार[1] प्रदान किया करता था।

कहा जाता है कि सजर के राज्यकाल के पूर्व पदाधिकारियो को बडा ही अल्प वेतन मिलता था। सजर के राज्यकाल के प्रारम्भ मे मारूफ नामक एक काजी, जिसे इससे पूर्व अधिकारियो ने भक्कर का काजी नियुक्त किया था, और जिसे बहुत थोडा सा वेतन मिलता था, वेतन के कम होने के कारण वादी तथा प्रतिवादी से कुछ[2] लिया करता था। जाम सजर को यह पता चला कि काजी वादी तथा प्रतिवादी से कठोरतापूर्वक घूस लेता है। उसने काजी को उपस्थित करने का आदेश दिया। काजी उपस्थित हुआ। जाम ने कहा, "मुझे ज्ञात हुआ है कि तू वादी तथा प्रतिवादी से जबरदस्ती घूस लेता है।" उसने कहा, "जी हा, मेरी इच्छा तो यह है कि मै साक्षियो से भी कुछ वसूल कर लू किन्तु इसमे पूर्व कि मै उनसे कुछ ले सकू गवाह चल देते है।" जाम हँसने लगा। काजी ने कहा, "मै दिन भर दारुल कजा[3] मे बैठा रहता हू और अपना समय खर्च करता हू। मेरे पुत्र भूखे पडे रहते है।" जाम ने काजी को इनाम देकर उचित वेतन निश्चित किया और आदेश दिया कि समस्त राज्य मे पदाधिकारियो को उचित वेतन प्रदान किया जाय ताकि वे निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत कर सके।

८ वर्ष उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई।

जाम निज़ामुद्दीन जो जाम नन्दा के नाम से प्रसिद्ध है (बिन बाबनिया बिन उनर बिन सलाहुद्दीन बिन तमाची)

सजर की मृत्यु के उपरान्त २५ रबी-उल-अव्वल ८६६ हि० (२८ दिसम्बर १४६१ ई०) को वह सिहासनारूढ हुआ। उसके सिहासनारोहण से सभी आलिम, पवित्र लोग प्रजा तथा सैनिक सहमत (७४) थे। उसने स्वतत्र रूप से शासक बनकर अपने प्रभुत्व की पताका बलन्द कर दी।

कहा जाता है कि जाम निजामुद्दीन प्रारम्भ मे[4] विद्यार्थियो के समान जीवन व्यतीत करता था और मदरसो तथा खानकाहो मे निवास किया करता था। वह बडा ही शिष्ट तथा सज्जन था और उसमे उत्तम गुण, नैतिकता, पवित्रता एव धर्म निष्ठता बडी ही उच्च सीमा तक पाई जाती थी। उसकी श्रेष्ठता एव उसका गौरव इतना अधिक था कि उसमे से थोडे से का भी उल्लेख सम्भव नही।

वह अपने राज्यकाल के प्रारम्भ मे थट्टा से बहुत बडी सेना लेकर भक्कर पहुचा। वहा एक वर्ष ठहर कर उसने डाकुओ तथा लुटेरो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और भक्कर के किले मे हर प्रकार की सामग्री

१ आलिमों, धार्मिक व्यक्तियों तथा सूफियों इत्यादि को दी जाने वाली वृत्ति।
२ घूस।
३ काज़ी का कार्यालय (न्यायालय)।
४ 'अवायले हाल', सम्भवत: राज्य प्राप्त करने के पूर्व।

एकत्र कर दी। उसका एक सेवक दिलशाद नामक था। वह उसके साथ जब वह मदरसो मे था तो सेवा किया करता था। उसने उसे भक्कर मे नियुक्त कर दिया। उसने सिन्ध के आस-पास के स्थान इस प्रकार सुव्यवस्थित कर दिये कि खाते पीते लोग मार्ग मे चलने-फिरने लगे। वहा से निश्चिन्त होकर वह एक वर्ष उपरान्त लौट कर थट्टा पहुचा और ४८ वर्ष तक वहा स्थायी रूप से राज्य करता रहा।

उसके राज्यकाल मे आलिम, पवित्र लोग तथा फकीर सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे। सैनिक तथा प्रजाजन सुखी तथा सम्पन्न थे।

जाम निजामुद्दीन मुल्तान के हाकिम सुल्तान हुसेन लगाह का समकालीन था और उनमे अत्यधिक प्रेम तथा निष्ठा थी और वे एक दूसरे को उपहार प्रेषित किया करते थे।

जाम निजामुद्दीन प्रत्येक सप्ताह अपनी अश्वशाला मे जाया करता था और घोडो के मत्थे पर हाथ फेरकर कहा करता था कि, "हे भाग्यवानो। मै नही चाहता कि गजा[1] के अतिरिक्त तुम्हारे ऊपर सवारी की जाय क्योकि चारो ओर मुसलमानो का राज्य है। तुम प्रार्थना करो कि शरा की आवश्यकता के अति-(७५) रिक्त कही न जाऊ और न कोई अन्य भी यहा आये। कही ऐसा न हो कि निर्दोष मुसलमानो का रक्तपात हो और मै ईश्वर के समक्ष लज्जित हू।"

उसके राज्यकाल मे सुन्नत[2] को इतनी अधिक उन्नति प्राप्त हो गई थी कि इससे अधिक सम्भव नही। मस्जिदो मे जुमे की नमाज इस प्रकार होती थी कि मुहल्ले के छोटे-बडे मस्जिद मे एकत्र होकर (सामूहिक) नमाज़ पढते थे। कोई अकेला नमाज न पढता था। यदि किसी से भी एक समय की जमाअत की नमाज छूट जाती तो वह अत्यधिक लज्जित होता और दो-तीन दिन तक तोबा किया करता था।

जाम निजामुद्दीन के राज्यकाल के अन्तिम दिनो मे शाह बेग की सेना ने कन्धार से पहुच कर अकरी, तन्दूकह, तथा सैदीचह पर चढाई की। जाम ने बहुत बडी सेना मुगुलो के विनाश हेतु भेजी। उस सेना ने वहा पहुचकर घोर युद्ध किया। उस युद्ध मे शाह बेग के भाई की हत्या हो गई और वह पराजित होकर कन्धार लौट गया और जाम निजामुद्दीन के जीवनकाल मे उसने पुन सिन्ध पर आक्रमण न किया।

जाम निजामुद्दीन अपना अधिकाश समय अपने समकालीन आलिमो से इल्मी वाद-विवाद मे व्यतीत किया करता था। मौलाना जलालुद्दीन मुहम्मद दवानी[3] ने शीराज से सिन्ध पहुचने के विषय मे निश्चय करके शम्सुद्दीन तथा मीर मुईन नामक अपने दो शिष्यो को थट्टा भेजा और उनके द्वारा अपने थट्टा मे निवास करने के विषय मे कहलवाया। जाम निजामुद्दीन ने मौलाना के लिये एक उचित स्थान निश्चित करके उनके जीवन निर्वाह की व्यवस्था कर दी और उनके द्वारा मार्गव्यय भेजा। दूतो के पहुचने के पूर्व मौलाना की मृत्यु हो गई। क्योकि मीर शम्स तथा मीर मुईन को जाम निजामुद्दीन की गोष्ठियो मे आनन्द आने लगा था अत वे लौटकर थट्टा मे निवास करने लगे।

१ इस्लाम के प्रसार हेतु युद्ध।
२ इस्लाम के नियमो।
३ जलालुद्दीन मुहम्मद दवाना सादुद्दीन दवानी के पुत्र थे। हाजी खलीफ़ा के अनुसार उनकी मृत्यु ९०८ हि० (१५०२ ई०) मे हुई। उन्होने बहुत से ग्रन्थों की रचना की जिसमे 'अख़लाके जलाली' को अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त है। 'अख़लाके जलाली' १०वीं शताब्दी ईसवी के अरब विद्वान् की किताबुत्तहारत का अनवाद है।

ओर भेज दिया। उसने निरन्तर यात्रा करते हुये तुरन्त थट्टा नदी पार करनी प्रारम्भ कर दी। जाम फीरोज के सहायक घबडा कर उसे दूसरी ओर से बाहर निकाल ले गये। जाम सलाहुद्दीन थट्टा मे सिहासनारूढ हो गया। जाम फीरोज के विश्वासपात्रो को दड देकर उनसे धन सम्पत्ति वसूल करने लगा।

जाम फीरोज को उसकी माता दरिया खा के पास काहान ग्राम मे ले गई और विलाप करके पिछले अपराधो के लिये क्षमा-याचना की। दरिया खा ने अपने कर्त्तव्य को ध्यान मे रखते हुये सेना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। जब भक्कर तथा सिविस्तान की सेनाये जाम फीरोज़ की पताका के नीचे एकत्र हुई और बिलोच लोग तथा अन्य सेनाये जमा हुई तो दरिया खाँ सेना सहित जाम सलाहुद्दीन को (७८) निकालने चला। जाम सलाहुद्दीन युद्ध के लिये प्रस्थान करना चाहता था। हाजी ने, जो उसका बडा योग्य वजीर था, यह उचित समझा कि जाम सलाहुद्दीन शहर मे रहे ओर उसे युद्ध के हाथियो तथा सेना सहित युद्ध के लिये भेज दे। जाम सलाहुद्दीन शहर मे ठहरा रहा और हाजी वजीर को युद्ध के लिये भेज दिया। जब दोनो सेनाओ मे युद्ध प्रारम्भ हुआ तो दोनो ओर से योद्धाओ की हत्या होने लगी। अन्त मे दरिया खा की सेना पराजित होकर भाग गई।

हाजी वजीर ने जाम सलाहुद्दीन को पत्र लिखा कि, "आपकी पताकाओ को विजय प्राप्त हो गई है। आप निश्चिन्त रहे। रात्रि के कारण दरिया खा का पीछा न किया जा सका।" दूत पत्र सहित दरिया खा के आदमियो के हाथ मे पड गये। दरिया खा ने तुरन्त पत्र का विषय परिवर्तित करके दूसरा पत्र हाजी वजीर की ओर से लिख दिया कि, "आप की सेना पराजित हुई। शत्रु का बडा जोर है। आप अपने परिवार को लेकर तुरन्त थट्टा के बाहर चले जाय और क्षण भर भी प्रतीक्षा न करे। हम लोग चाचका ग्राम मे एक दूसरे से मिलेगे।" पत्र के पहुचते ही जाम सलाहुद्दीन ९ रमज़ान की रात्रि मे भोजन किये बिना नदी के उस पार चला गया और उसकी व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। उसने आठ मास तक राज्य किया।

जब हाजी वजीर की जाम सलाहुद्दीन से भेट हुई तो वह उसकी भर्त्सना करने लगा कि उसके (राज्य से) चले आने का क्या कारण था? उसने हाजी का पत्र निकालकर दिखला दिया। हाजी ने कहा, "मैने इसे नही लिखा है।" अन्त मे दरिया खा की धूर्तता से अवगत होकर वे अत्यधिक खेद एव लज्जा प्रदर्शित करने लगे। दरिया खा ने कुछ पडाव तक उनका पीछा किया। ईद फित्र[1] के दिन जाम फीरोज ने ईदगाह मे पहुचकर नमाज पढी। जाम फीरोज कुछ वर्षो तक स्वतत्र रूप से शासन करता रहा।

(७९) ९१६ हि० (१५१०–११ ई०) के अन्त मे शाह बेग अरगून ने सिन्ध पर आक्रमण किया।

शाह बेग के युद्ध का उल्लेख अपने स्थान पर किया जायगा। सूमरा तथा सुमा लोगो का वृत्तात इससे अधिक न मिलने के कारण जो कुछ मिला लिख दिया गया। यदि किसी को इससे अधिक ज्ञात हो तो वह भी उसमे सम्मिलित कर ले।..

शाह बेग

(११२) दो वर्ष तक और भी शाह बेग ने शाल तथा सीवी के उपान्त मे कठिनाई से जीवन व्यतीत किया। अन्त मे उसने सिन्ध-विजय का सकल्प किया। एक बार पुन उसने कूत माचियान ग्राम

1 रमजान के मास की ईद।

तथा चादकह् के क्षेत्र पर आक्रमण किया। उस वर्ष दरिया खा, जिसे थट्टा का हाकिम जाम नन्दा अपना पुत्र कहा करता था, वहुत बडी सेना लेकर सीवी के समीप पहुचा। शाह् बेग जरहीं तथा सीस्तान पर आक्रमण करने के उद्देश्य से गया था। सिन्ध वालो तथा मुगुलो मे घोर युद्ध हुआ। अबुल हम्द मीर्जा की उस युद्ध मे हत्या हो गई। रोजी बेग तथा थोडे से अरगूनो एव हज़ारा लोगो ने जो बच गये थे, घोर परिश्रम किया। सिन्धी लौटकर थट्टा चले गये।

इसी वर्ष के अन्त मे जाम नन्दा की मृत्यु हो गई और जाम फीरोज उसके स्थान पर बादशाह हो गया। इससे पूर्व थोडा सा उल्लेख हो चुका है कि दौलतशाही तथा नूरगाही लोगो ने पराजित होकर थट्टा पहुच कर जाम की सेवा कर ली थी। कीबक अरगून भी उस हत्या के कारण जो उसके कारण हुई थी, पृथक् होकर कुछ लोगो के साथ सिन्ध पहुचा। जाम ने इन लोगो को मुगुलवारा मुहल्ले मे थट्टा मे स्थान दिया। मीर कासिम कीबकी भी कुछ समय तक थट्टा मे रह चुका था। उसे वहा के विषय मे सब कुछ ज्ञात हो गया। उसी वर्ष के अन्त मे लौट कर वह अमीर शाह् बेग की सेवा मे पहुचा और उसे थट्टा (११३) को विजय करने की ओर प्रेरित किया। शाह् बेग ने ९२४ हि० (१५१८ ई०) के अन्त मे सेना एकत्र करके थट्टा पर चढाई की।

कहा जाता है कि जब शाह् बेग फतहपुर तथा गजाबे के पडाव पर सेना तैयार कर रहा था, तो वहुत से लोग उससे आकर मिल गये। उसने बेग अली मीर्जा, सुल्तान अली अरगून, जैनकह तर्खान को सेना सहित किले तथा अपने परिवार की रक्षा हेतु शाल मे नियुक्त कर दिया। शाह् महमूद के भाई सुल्तान महमूद को सीवी मे और कुछ अन्य लोगो को फतहपुर तथा गजाबे मे छोड दिया। अपनी सेना के वीरो मे से २४० अश्वारोही मीर फाजिल कुकिलताश के अधीन आगे भेज कर, रवाना हो गया। उस समय सुम्मा की सेना ने तल्हती ग्राम मे जो सिविस्तान से ३—४ कोस पर है महमूद खा तथा भतन खा वल्द दरिया खा के अधीन एकत्र होकर युद्ध करना निश्चय किया। जब शाह् बेग ने बागबाना नामक स्थान पर पडाव किया तो बागबाना के मलिको ने उसकी सेवा मे उपस्थित होकर तन, मन, धन से उसकी सेवा का प्रयत्न किया। शाह् बेग का उद्देश्य यह था कि उस प्रदेश के शेष लोग बिना युद्ध किये उसका स्वागत करे और उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ले। उन लोगो ने विद्रोह किया और उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार न की।

अन्त मे शाह् बेग ने लक्की पर्वत के मार्ग से थट्टा पर चढाई की और खानवाह् के तट पर थट्टा कस्बे से दक्षिण की ओर तीन कोस पर पडाव किया। उन दिनो मे अधिकाश नदी थट्टा के उत्तर की ओर से बहती थी। इस कारण वह ठहर कर यह सोचता रहा कि यह नदी किस प्रकार पार की जाय। अचानक एक हरकारा छिछले जल को पार करके आता हुआ मिला। चौकी वालो ने उसे बन्दी बनाकर उसके प्रति कठोरता प्रदर्शित की। उसने मार्ग दर्शा दिया। अब्दुर्रहमान दौलतशाही अपने घोडे को नदी मे (११४) डाल कर नदी के उस पार चला गया और पुन लौट आया तथा शाह् बेग को यह सूचना पहुचाई।

सक्षेप मे ११ मुहर्रम ९२६ हि० (२ जनवरी १५२० ई०) को शाह् बेग ने एक सेना अपने शिविर की रक्षा हेतु नदी पर छोड कर अपने घोडे को नदी मे डाल दिया। सेना ने भी उसी के पीछे नदी पार कर ली और वह थट्टा कस्बे के निकट पहुच गयी। दरिया खा, जिसे जाम नन्दा अपना पुत्र कहा करता था, जाम फीरोज को थट्टा मे छोड कर अत्यधिक सेना लेकर युद्ध करने पहुचा। उनमे ऐसा घोर युद्ध हुआ कि उसका उल्लेख सम्भव नही। अन्त मे अमीर को विजय प्राप्त हुई। जाम फीरोज पलायन करके नदी की दूसरी ओर पहुच गया। दरिया खां तगर बरदी किबताश द्वारा जिसे अरगूनो द्वारा किबताश की

उपाधि प्राप्त हुई थी, वन्दी वना लिया गया और सुम्मा सैनिको के एक समूह के साथ उसकी हत्या कर दी गई। २० मुहर्रम ९२६ हि० (११ जनवरी १५२० ई०) तक थट्टा नगर लूटा जाता रहा और वहा के निवासियो का विनाश होता रहा। अधिकाश लोगो के परिवार बन्दी वना लिये गये। जाम फीरोज के पुत्र भी नगर मे घिरे थे। जब शाह वेग को इसकी सूचना मिली तो उसने योग्य लोगो को उन लोगों की रक्षा हेतु उनकी हवेली के द्वार पर भेजा और उनके सम्मान की रक्षा की। अन्त मे काजी काजन के, जो उस समय का वहुत वडा विद्वान् था, प्रयन्न के फलस्वरूप क्रोध की अग्नि शान्त हो गई कारण कि काजी के परिवार वाले भी वन्दी बना लिये गये थे और वह व्याकुल होकर अपने विछुडे हुए लोगो को ढूँढ रहा था। अन्त मे उसने एक पत्र मे वहा के लोगो के विनाश का हाल लिखा। उस पत्र को हाफिज मुहम्मद शरीफ इमाम ने शाह बेग को दिखलाया। उस पत्र के पढने से शाह बेग वडा प्रभावित हुआ। उसने ढिढोरा पिटवा दिया कि कोई भी थट्टा के निवासियो की धन-सम्पत्ति तथा प्रजा के विषय मे कोई हस्तक्षेप न करे। उसने अपने निषग से एक बाण, काजी को प्रदान करके एक आदमी को दे दिया कि जिस किसी (११५) का काजी पता वतलाये, वह बाण उसे दे दिया जाय।

सक्षेप मे, जाम फीरोज़ कुछ लोगो सहित पीरिआर ग्राम मे वडी दु खमय अवस्था मे ठहरा। कारण कि उसका परिवार तथा जाम निजामुद्दीन का परिवार थट्टा मे था। उसने शाह बेग की अधीनता स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न देखकर वाक्पटु लोगो को निरन्तर भेज कर नम्रता एव दीनता पूर्वक यह सदेश भेजा कि 'दास मे आपकी सेना से युद्ध करने की शक्ति नही, जो घटनाये घटी वे प्राण के भय तथा दूसरो के बहकाने के कारण थी। यदि इस दीन के अपराध क्षमा कर दिये जायँ तो वह आजीवन आज्ञाकारिता के क्षेत्र से बाहर न निकलेगा। शाही सवारी के थट्टा के बाहर चले जाने के उपरान्त मैं दरबार मे उपस्थित होकर अपने नेत्रो को वहा की धूल से प्रकाश दूगा।"

शाह बेग ने अपनी स्वाभाविक कृपा एव दया के कारण उसकी दीनता के कारण दयापूर्वक उसके दूतो को खिलअत द्वारा सम्मानित किया और दयायुक्त वाक्य सदेश मे भेजे। जाम फीरोज अपने भाइयो सहित पीरआर नदी के तट पर उपस्थित हुआ और अपनी ग्रीवा मे तलवार लटकाकर अत्यधिक दीनता प्रदर्शित की। शाह बेग ने अलाउद्दीन वल्द मुबारक खा को, जाम फीरोज के परिवार तथा परिजनो एव सेवको सहित आदेश दिया कि वे नदी पार करके उसके पास चले जाय।

सफर मास[1] के अन्त मे शाह बेग थट्टा के पडाव के बाहर निकला। जाम फीरोज ने उचित उपहार प्रेषित किये और प्रतिष्ठित अमीरो की सहायता से शाह बेग के हाथो के चुम्बन के सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ और क्षमा-याचना करते हुए लज्जा प्रदर्शित की। शाह बेग ने जरदोजी का खिलअत (११६) जो सुल्तान हुसेन मीर्जा ने मीर जुन्नून को प्रदान किया था, उसे प्रदान करके सम्मानित किया और थट्टा की अमीरी उसे सौप दी। यह निश्चय हुआ कि जाम फीरोज नगर मे चला जाय और अपने आदमियो को अपने पडाव पर लेता जाय। उसने (शाह बेग ने) अपने अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो से परामर्श किया कि, "सिन्ध एक बडा विस्तृत राज्य है और यदि हम इसे अपने पुत्रो पर छोड कर चले जाय तो वे इसकी रक्षा न कर सकेगे। यह उचित होगा कि आधी विलायत[2] हम जाम फीरोज़ को सौप दे और शेष आधी अपने विश्वासपात्रो को दे दे। सब लोगो ने मिलकर यही निश्चय

१ सफ़र ९२६ हि० (फरवरी १५२० ई०)।
२ राज्य।

किया कि लक्की पर्वत से जो सहवान के समीप है थट्टा तक जाम फीरोज को प्रदान कर दिया जाय और लक्की के ऊपर का भाग शाह बेग के सेवको के अधिकार मे रहे।

शाह बेग वचन तथा प्रतिज्ञा के उपरान्त निरन्तर कूच करता हुआ सिविस्तान पहुचा। जो सेना सिविस्तान मे थी उसने शाह बेग की विजयी सेनाओ के पहुचने के पूर्व, तलहती ग्राम मे पहुच कर अपनी सख्या मे अत्यधिक वृद्धि कर ली। साता एव सूदा नामक समूह वालो ने वहा उपस्थित होकर प्रतिज्ञा की कि, "जब तक हम जीवित है, हम युद्ध करना न छोडेगे।" शाह बेग ने सिविस्तान के किले को अधिकार में करके, मीर अलीकह अरगून, सुल्तान मुकीम बेग लार, कीबक अरगून तथा अहमद तर्खान को सिविस्तान मे छोडकर, सुल्तान महमूद खा कोकिलताश को बक्कर के किले मे नियुक्त कर दिया और स्वय अपने पुत्रो को लाने के लिए शाल की ओर चल दिया। काजी काजन को महमूद वल्द दरिया खा के पास इस आशय से भेजा कि उचित परामर्श तथा शिक्षा-प्रदान करके उसे विरोध के क्षेत्र से आज्ञाकारिता के क्षेत्र मे ले आये। काजी के पहुचने पर उन लोगो ने उससे भेट करना स्वीकार न किया। अन्त मे शाह बेग ने तलहटी के निकट पडाव किया। तीन दिन उपरान्त एक व्यक्ति तलहटी से शाह बेग की सेवा मे पहुचा और उन लोगों के विषय मे समाचार पहुचाये और कहा कि मिया महमूद, मतन खा, जाम सारग (११७)तथा रणमल सूदह अधीनता स्वीकार करना चाहते हैं किन्तु मखदूम बलाल जो वहा के मशायख[1] के आलिमो मे था, उन्हे ऐसा नही करने देता अपितु उन्हे युद्ध करने के लिए उकसाता रहता है। शाह बेग ने इसी कारण विजय के उपरान्त मखदूल बलाल को दड देना निश्चय किया।

सक्षेप मे, शाह बेग ने उसी रात्रि मे कुछ नौकाये प्राप्त करके प्रात काल मीर फाजिल कोकिलताश के साथ नदी पार कर ली। अन्त मे तर्खानो, अरगूनो तथा समस्त सेना ने भी नदी पार कर ली। शाह बेग ने स्वय कलेवा के समय नदी पार की। तलहटी वालो ने किले से निकल कर जोध सूदा के भाई रणमल को आक्रमणकारियो के विषय मे पता लगाने के लिये भेजा। मीर फाजिल ने जो शाह बेग की ओर से अग्र दल का सेनापति था, आगे बढ कर प्रथम आक्रमण मे ही उस सेना को पराजित कर दिया। जब शाह बेग पहुचा तो मुगुलो ने तलहटी के द्वार तक आक्रमण करके शीघ्रातिशीघ्र उसे अपने अधिकार मे कर लिया। अन्त मे सुम्मा लोगों की सेना मे से कुछ की तो हत्या हो गई और कुछ लोग नदी मे कूद कर मृत्यु को प्राप्त हो गये। कुछ लोग भाग कर सिविस्तान पहुच गये। सक्षेप मे तहलटी मे तीन दिन तक पडाव करके उन लोगो ने उस ग्राम के निवासियो की हत्या करा दी। सूदा लोगो ने आश्चर्यजनक रूप से युद्ध किया और रणक्षेत्र मे अत्यधिक पौरुष प्रदर्शित किया। अधिकाश लोग जोध सूदह के भाई रणमल के साथ मारे गये।

अमीर शाह बेग का मीर्ज़ा शाह हसन को शाल तथा सीवी से जाम सलाहुद्दीन एवं अन्य विद्रोहियों के विनाश हेतु भेजना

जिस समय शाह बेग ने थट्टा विजय किया और वहा का राज्य जाम फीरोज को सौप दिया तो (११८) वह शाल तथा सीवी की ओर लौट गया। कुछ समय उपरान्त जाम के सहायक जो कालचक्र के कारण छिन्न-भिन्न हो गये थे, एकत्र हुए। क्योकि जाम सलाहुद्दीन ने इससे पूर्व युद्ध तथा विरोध की

१ सूफी सन्त।

पताका वलन्द की थी और जाम फीरोज को उसके पिता की मृत्यु के उपरान्त पराजित कर दिया था, अत वह कुछ समय तक थट्टा कस्बे पर राज्य करता रहा। किन्तु दरिया खा तथा सिविस्तान की सेना के प्रभुत्व के कारण पराजित होकर गुजरात चला गया था और वहा हैरान तथा परेशान रहा करता था। थट्टा के राज्य पर अधिकार करने के विचार से उसने पुन जारीजहा, सूदह, सुम्मा तथा खिगार लोगो के १०,००० अश्वारोहियो सहित आक्रमण किया। शाह बेग, जाम फीरोज की तसल्ली के लिये, मीर अलीकह अरगून, सुल्तान मुकीम बेग लार, कीवक अरगून तथा अहमद तर्खान को सिविस्तान मे छोड गया था। जाम सलाहुद्दीन थट्टा के उपान्त मे पहुचने के कारण जाम फीरोज विवश होकर थट्टा से शाह बेग के अमीरो की सेवा मे सिविस्तान पहुच गया। उन लोगो ने शाह बेग की सेवा मे एक दूत भेजा और वास्तविक स्थिति के विषय मे निवेदन कराया। जाम फीरोज ने भी अलाउद्दीन बिन मुबारक खा को शीघ्रातिशीघ्र उसके पास भेज कर सहायता की याचना की। शाह बेग ने यह समाचार सुन कर अपने अमीरो को बुलवाया और यह निश्चय किया कि क्योंकि सैनिक लोग पूर्ण रूप से तैयार हो गये है अत उसका पुत्र मीर्जा शाह हुसेन[1] योग्य लोगो की सेना लेकर शीघ्रातिशीघ्र जाम फीरोज के पास पहुच जाय।

सक्षेप मे, १४ मुहर्रम ९२७ हि० (२५ दिसम्बर १५२० ई०) को मीर्जा शाह हसन ने शाल से प्रस्थान किया और सिन्ध की ओर चल दिया। २० दिन मे सिविस्तान के उपान्त मे पहुच गया। अमीर शाह बेग उसके पीछे सामग्री सहित सेनाये भेजने लगा और स्वय उनके पीछे-पीछे प्रस्थान करने लगा। जब वह सिविस्तान के निकट पहुचा तो जाम सलाहुद्दीन की सेना ने जो सारग खा, रणमल सूदह (११९) इत्यादि के अधीन जाम फीरोजा के पीछे-पीछे आ रही थी, मीर्जा शाह हसन के पहुचने के समाचार पाकर नदी पार की और तल्हती ग्राम मे खाई खोद कर युद्ध के लिये तैयार हो गई। इस घटना के कारण मीर्जा शाह हसन उन लोगो को भगाने के विषय मे सिविस्तान के अमीरो तथा जाम फीरोजा से परामर्श करने लगा। इसी बीच मे मीर शाह बेग पहुच गया और उसे काजी काजन को बुलाने के लिए भेजा गया। तत्पश्चात् पूर्व की भाति उसने मीर्जा शाह हसन को एक भारी सेना देकर जाम फीरोज़ा के साथ थट्टा भेजा। जब मीर्जा शाह हसन के पहुचने के समाचार जाम सलाहुद्दीन को प्राप्त हुये तो वह प्रतीक्षा किये बिना चल खडा हुआ और रैन नदी पार करके जौन ग्राम मे पडाव किया। जाम फीरोज ने मीर्जा शाह हसन का स्वागत करके सेवा भाव प्रदर्शित किये और उचित पेशकश प्रस्तुत की। मीर्जा शाह हसन ने अपने पिता के आदेशानुसार जाम फीरोज के प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की और उनका बडा आदर-सम्मान किया। उन लोगो ने थोडे दिनो मे मीर्जा शाह हसन से मिलकर वहुत बडी सेना तैयार की और जाम सलाहुद्दीन से युद्ध करने के लिये बढे। कुछ पडाव पार करके उसके पास पहुच गये। उसने भी युद्ध की पक्ति ठीक करके अपने पुत्र हैबत खा को, जो सुल्तान मुजफ्फर गुजराती का जामाता था, अग्र दल की सेना सहित भेजा। मीर्जा शाह हसन ने, मीर्जा ईसा तर्खान, सुल्तान कुली बेग तथा मीर अलीका को सेना का अग्रदल देकर नियुक्त किया। मीर सैयिद कासिम के भाई मीर अबुल कासिम को मिर्ज़ा के साथ सेना के शिविर[2] मे छोड दिया। दोनो सेनाओ मे घोर युद्ध हुआ। मुगुल सेना ने जाम सलाहुद्दीन के अधिकाश सैनिको की हत्या कर दी। मीर्जा शाह हसन ने इसी बीच मे पीछे से पहुचकर उस सेना के आधार का अन्त कर दिया। जाम सलाहुद्दीन का पुत्र भी उस युद्ध मे मारा गया। जब जाम (१२०) सलाहुद्दीन को अपने पुत्र की हत्या के समाचार प्राप्त हुये तो वह मुगुलो की सेना पर टूट पडा

१ अन्य स्थानों पर शाह हसन।
२ मूल पुस्तक मे गूल है जिसका अर्थ इस स्थान पर स्पष्ट नही है। सम्भवत सेना के शिविर से तात्पर्य है।

और उसने बडा घोर युद्ध किया। अन्त मे उसकी हत्या कर दी गई और जो लोग बच गये वे पलायन करके गुजरात चले गये। मीर्जा शाह हसन ने विजय तथा सफलता प्राप्त करके उसी मैदान मे तीन दिन तक पडाव किया। वहा से उसने जाम फीरोज को इस आशय से विदा कर दिया कि वह लोगो का पता लगा कर लौट आये। (तदुपरान्त) उसने स्वय जाम फीरोज सहित प्रस्थान किया।

रबी-उस्-सानी मास[1] मे शाह बेग, बागबाना के उपान्त मे पहुचा। मीर्जा शाह हसन तथा प्रतिष्ठित अमीरों के पास उपस्थित होने के लिए फरमान भेजे। क्योकि शाह बेग के सैनिको के साथ उनके परिवार थे, अत वे बागबाना के उपान्त मे उतर पडे। माचियान के लोगो की, जिन्होने विद्रोह कर दिया था, हत्या करा दी और उनकी धन-सम्पत्ति तथा मवेशी नष्ट-भ्रष्ट करके उनके घर वार तथा किले को भूमि मे मिला दिया।

शाह बेग का बाग़बाना के उपान्त मे पड़ाव तथा सिविस्तान पर आक्रमण

जिन दिनो मे शाह बेग ने बागबाना कस्बे मे पडाव किया और मीर्जा शाह हसन विजय तथा सफलता प्राप्त करके अपने पिता की सेवा मे पहुचा तो शाह बेग ने उसे नाना प्रकार की कृपाओ तथा सम्मान द्वारा सम्मानित किया। अमीरो तथा सैनिको पर भी दया तथा कृपा प्रदर्शित की। वह कुछ समय तक वहा ठहरा और उस स्थान पर विश्राम किया। मीर्जा शाह हसन को विजयी शिविर मे छोड कर वह स्वय बागबाना के अमीरो तथा मलिकों सहित सिविस्तान के किले मे पहुचा और किले की बाहरी तथा भीतरी दृढता का निरीक्षण करके कुछ योग्य विश्वासपात्रों को उस किले मे नियुक्त कर दिया और आदेश दिया कि कर के बदले मे अनाज प्राप्त करके किले मे एकत्र कर दिया जाय। उसने (१२१) अपने वडे वडे अमीरो मे से प्रत्येक को आदेश दिया कि वे किले मे अपने-अपने लिये हवेलियो तथा घरो का निर्माण कर ले। घरों के वितरण के उपरान्त वह पुन सेना के शिविर मे पहुच गया और भक्कर की ओर प्रस्थान किया।

इसी बीच मे काजी काजन तीन पडावो को पार करके पहुच गया। उसे नाना प्रकार के इनामो द्वारा सम्मानित किया गया। जब वह एक मजिल पार कर चुका तो जाम फीरोज के दूत उसके पास पहुचे और उन्होंने जाम के प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किये और घोडे तथा पेशकश जो उसने प्रेषित किये थे, पेश किये। जाम फीरोज के दूतो को खिलअत एव इनाम द्वारा सम्मानित किया और उन्हे विदा कर दिया। उसने (शाह बेग ने) उसके पास पत्र भेजा कि, "मेरी इच्छा गुजरात विजय करने की है। यदि उस विलायत पर विजय प्राप्त हो जाय तो पूर्व की भाति सिन्ध का राज्य तुम्हे प्रदान कर दिया जायगा।" वहा से शाह बेग ने भक्कर की ओर प्रस्थान किया।

दारीजा लोगों का बन्दी बनाया जाना तथा उस समूह की हत्या

जब शाह बेग चाँदू कस्बे मे, जो भक्कर के पश्चिम मे ३० कोस पर है, पहुचा तो सुल्तान महमूद खा ने बाबा चोचक को, जो उसका अतका था, अपने पिता की सेवा मे भेजा और अपनी स्थिति के विषय मे निवेदन कराया। उसके पिता मीर फाजिल ने उस पत्र को शाह बेग को दिखला दिया और विदा होकर

१ रबी-उस-सानी ९२७ हि० (मार्च-अप्रैल १५२१ ई०)।

चन्दूका के पास २०० अश्वारोहियो सहित नदी पार की। वहा के प्रतिष्ठित लोगो तथा मुकद्दमो[1] को प्रोत्साहन देकर अपने साथ लेता गया। जब वह वरयालू के समीप पहुचा तो सुल्तान महमूद खा ने अपने पिता का स्वागत करना निश्चय किया। जब मीर फाजिल को यह पता चला तो उसने अपने पुत्र को सन्देश भेजा कि "किले के बाहर कदापि मत निकलना और यह वीरता होगी यदि तू उस समूह को (१२२) जिसने विरोध किया था, भक्कर के किले मे बन्दी बना ले।"

जिन दिनो मे सुल्तान महमूद खा भक्कर पर राज्य करने के लिये नियुक्त हुआ था तो भक्कर के प्रतिष्ठित सैयिदो ने उसके कार्यों की व्यवस्था की थी। दारीजो के कुछ प्रतिष्ठित लोगो को भी शाह बेग ने आदेश दे दिया था कि वे किले ही मे रहे। उन अल्पदर्शी लोगो ने अपने वचन का पालन न किया और भाग खडे हुए और कुछ लोगो का विरोध करते हुए सुल्तान महमूद खा को कष्ट पहुचाने का प्रयत्न करने लगे। उन लोगो ने उसको निर्वासित करने का अत्यधिक प्रयत्न किया और उसे मालगुजारी देना बन्द कर दिया। उसके दूतो को अपमानित करके लौटा दिया और एकत्र होकर लहरी नामक रणक्षेत्र मे युद्ध प्रारम्भ कर दिया। उस समय सुल्तान महमूद की अवस्था १५ वर्ष की थी। वह व्याकुल होकर उन लोगो से युद्ध प्रारम्भ कर देना चाहता था किन्तु सैयिदो ने उसे रोक लिया और युद्ध न करने दिया और वे उसे तसल्ली देते रहे। दो बार दारीजा[2] समूह वालो ने नदी पार करके किले मे प्रविष्ट होने तथा सुल्तान महमूद खा को बन्दी बनाने का प्रयत्न किया। भक्कर के सैयिद यह सूचना पाकर किले के बुर्ज इत्यादि को दृढ करके युद्ध के लिये तैयार हो गये। वे लोग सैयिद लोगो की सेना पर दृष्टि रखकर कुछ न कर सके।

सक्षेप मे जब मीर फाजिल भक्कर के उपान्त मे पहुचा तो लाली मिहर, जो वहा के जमीदारो मे सब से अधिक प्रतिष्ठित था, अपने भाइयो सहित उसकी सेवा मे पहुच कर सम्मानित हुआ। प्रतिष्ठित दारीजा लोग आवश्यकतावश प्रत्येक ग्राम से निकल कर उसकी सेवा मे उपस्थित हुए। मीर फाजिल भक्कर पहुच गया और दारीजा नेताओ मे से ४७ व्यक्ति अपने साथ ले गया। सुल्तान महमूद खा अपने पिता के चरण चूमने के सम्मान द्वारा सम्मानित हुआ। अपने कष्टो का उल्लेख करके उसने २७ दारीजा लोगो की हत्या करा दी।

(१२३) जब शाह बेग को सूचना मिली कि मीर फाजिल सुरक्षित भक्कर पहुच गया तो वह जिस मन्जिल पर पहुच गया था वहा से तेजी से भक्कर की ओर रवाना हुआ और भक्कर कस्बे के मैदान मे पडाव किया। सुल्तान महमूद खा ने शाह बेग की सेवा मे पहुच कर उसके चरणो का चुम्बन किया और उसे नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित किया। काजी काजन ने भी जिसका इससे पूर्व कुछ उल्लेख हो चुका है, उसी समय अपने भाइयो तथा नगर के कुछ लोगो को सेवा मे उपस्थित किया। सुल्तान महमूद खा ने दारीजा लोगो का हाल शाह बेग की सेवा मे प्रस्तुत किया। उसने काजी काजन की ओर देखा। काजी ने निवेदन किया कि इस विलायत की भूमि जलमग्न हो जाती है और इस भूमि मे काटे बहुत होते है। काटा काटने वाला कुठार सर्वदा हाथ मे रखना चाहिये। शाह बेग ने यह बात सुनते ही उन लोगों की हत्या का आदेश दे दिया। सुल्तान महमूद खा तत्काल शहर में पहुच गया और रातो-रात उन लोगो की गर्दने कटवा कर उस बुर्ज से, जो खूनी बुर्ज के नाम से प्रसिद्ध है, नीचे फेक दिया। प्रात काल वह उन

१ मुकद्दम : गाँव का मुखिया।
२ इस स्थान पर मूल पुस्तक मे दारीचा छपा है।

सैयिदो को अपने पिता के साथ शाह् बेग की सेवा मे ले गया और उससे उनकी भेट कराई। उसने सैयिदो की निष्ठा के विषय मे निवेदन किया। शाह् बेग उनसे आदरपूर्वक मिला और उनके विषय मे बहुत कुछ पूछा। उस गोष्ठी की समाप्ति के उपरान्त सुल्तान महमूद खा को एकान्त मे बुलवाया और सैयिदो के विषय मे पूछा। सुल्तान ने जो कुछ इससे पूर्व कहा था, उसकी पुनरावृत्ति की और गोष्ठी के अन्त मे कहा, "यद्यपि ये लोग हितैषी है किन्तु इन लोगो का किले मे सगठित रूप से रहना राज्य के हित मे उचित नही।" शाह् बेग ने मुस्करा कर कहा, "खूब सिफारिश की।" अन्त मे उसने सैयिदो के पास यह सन्देश भेजा कि जब मुगुल पहुचे तो सैयिद लोग दो-तीन बडी हवेलियो मे चले जाय। सैयिदो ने किले मे रहना उचित न देख कर वाहर चले जाने के विषय मे निवेदन किया। उनकी प्रार्थना स्वीकार करके उनके निवास हेतु लहरी कस्बा निश्चित कर दिया गया और वे आज तक वही निवास करते है।

(१२४) तत्पश्चात् शाह् बेग किले मे प्रविष्ट हुआ और किले को देख कर बडा प्रसन्न हुआ। नगर के घरो तथा महलो को देखकर उन्हे अमीरो एव सैनिको को बाट दिया। किले को नपवा कर उसको विभक्त करके इस आशय से अमीरो को प्रदान कर दिया कि वे उसका निर्माण कराये। अलवर का किला जो इसके पूर्व राजधानी था नष्ट करके वहा की पक्की ईटे भक्कर मे लाई गई। तुर्क तथा सुम्मा लोगो के भवनो को, जो भक्कर के उपान्त मे थे, नष्ट करवाकर उनकी सामग्री का किले मे प्रयोग कराया। शाह् बेग ने जब किले का निर्माण प्रारम्भ कराया तो मीर्जा शाह् हसन से कहा, "ये दो पर्वत जो दक्षिण मे स्थित है, वे इस किले के सरकोब[1] के समान है। सर्वप्रथम इन दोनो पर्वतो की चिन्ता करू, तत्पश्चात् किले का निर्माण कराऊ।" थोडी देर सोच कर कहा, "सर्वप्रथम किले के निर्माण का महत्व है। क्योकि एक बहुत वडी नदी किले के चारो ओर है अत इन पर्वतो से अधिक भय न होगा। कोई शक्तिशाली बादशाह् इस छोटे से किले की विजय का प्रयत्न न करेगा और पराजित बादशाह् तथा अमीर कुछ न कर सकेगे।" अल्प समय मे किले के निर्माण को पूरा करा लिया और किले के महल अपने तथा मीर्जा शाह् हसन के लिये निश्चित कर दिये और कुछ अमीरो को भी किले मे स्थान दे दिया। उदाहरणार्थ मीर फाजिल तथा उसकी वहिन, अमान सुल्तान बेचा, मलिक मुहम्मद कोका, मीर मुहम्मद सारबान तथा सुल्तान मुहम्मद मुहरदार। इस समय तक अर्थात् १००९ हि० (१६००-१६०१ ई०) तक वह किला वर्तमान है।

बिल्लोचियो की हत्या

एक वर्ष उपरान्त किले के निर्माण तथा प्रजा के कार्य सुव्यवस्थित कर लेने के पश्चात्, बिल्लोचियो के विषय मे, जो उपद्रव तथा विद्रोह से बाज नही आते थे, परामर्श करके उसने यह निश्चय किया कि इस कौम की उद्दडता की अग्नि को तलवार के जल से शान्त किया जाय। इसके लिये यह निश्चय हुआ कि (१२५) प्रत्येक ग्राम मे योद्धाओ को नियुक्त कर दिया जाय कि वे कुछ समय तक उन लोगो के साथ रहे। अन्त मे प्रत्येक ग्राम मे विभिन्न दल नियुक्त कर दिये गये। वे प्रतीक्षा करते रहे। जब निश्चित समय आ गया तो सब लोगो ने तलवारे निकाल कर उस अल्पदर्शी समूह की हत्या कर दी। इस प्रकार क्षण भर मे ५२ ग्रामो के बिल्लोचियो की हत्या कर दी।

गुजरात के आक्रमण हेतु प्रस्थान

९२८ हि० (१५२१-२२ ई०) के शीत ऋतु के प्रारम्भ मे उसने पायन्दह मुहम्मद तर्खान को

१ वह स्थान जहां से सुगमतापूर्वक किलो को नष्ट करने के लिये पत्थर आदि फेंके जा सकते थे

भक्कर का राज्य प्रदान कर दिया और वह स्वय एक भारी सेना लेकर गुजरात की विजय हेतु चल दिया। मजिलो पर मजिले पार करता हुआ नदी के दोनो तट के आसपास के स्थानो को अपवित्र लोगो से पवित्र करता हुआ जब वह चन्दूका पहुचा तो मीर फाजिल को ज्वर चढ आया। वह आज्ञा लेकर भक्कर लौट गया। शाह बेग ने मीर फाजिल के पुत्र अहमद को उसके पिता की सेवा हेतु भेज दिया। शाह बेग मीर फाजिल की रुग्णावस्था से बडा व्याकुल हुआ। यहा तक कि मीर फाजिल के स्वर्गवास होने के समाचार प्राप्त हो गये। शाह बेग तथा मीर्जा शाह हसन को इस दुर्घटना के कारण बडा दु ख हुआ। उसी रात्रि मे उसने सुल्तान महमूद खा, मीर अब्दुर्रज्जाक, अब्दुल फत्ताह तथा उसके समस्त सम्बन्धियो को विदा कर दिया। वे लोग इस आशा से कि मीर फाजिल जीवित है, शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुए और प्रात काल भक्कर पहुच गये। उन्होने देखा कि मीर फाजिल की मृत्यु हो चुकी है। उसको दफन कर दिया गया। शाह बेग तीन दिन उपरान्त शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके भक्कर पहुचा और शोक सम्बन्धी प्रथाओ को पूरा किया। मीर फाजिल की सन्तान को शोक के वस्त्र से पृथक् कराया। तत्पश्चात् कहा कि, "मीर फाजिल की मृत्यु मेरी मृत्यु का प्रमाण है। हम भी उसी के पीछे चले।" दरबार वालो ने इस बात पर अत्यधिक चिन्ता व्यक्त की और उसके दीर्घायु होने के लिये ईश्वर से शुभकामनाये की। वह वहा से उसी प्रकार शोक की अवस्था मे अपने अन्त पुर मे पहुँचा। उसने अन्त पुर के सेवको से भी यही वाक्य कहे। उन लोगो ने कहा, "आप क्या कह रहे है ?" अन्त मे मीर्जा शाह बेग, मीर्जा शाह हुसेन तथा समस्त अमीरो ने वहा से प्रस्थान किया और नदी के तट के निवासियो को दड देते हुए सिविस्तान पहुचे। वहा १५ दिन तक ठहर कर उस ओर से निश्चिन्त हो गये और थट्टा के मार्ग से गुजरात की विजय हेतु प्रस्थान किया और अघम ग्राम के निकट पहुचे। तवाचियो[1] को जाम फीरोज को बुलवाने को भेजा और कुछ दिनो तक वहा ठहरे रहे।

शाह बेग की मृत्यु

जब शाह बेग भक्कर तथा सिविस्तान के युद्ध से निश्चिन्त हो गया तो उसने गुजरात पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर दिया। जब भक्कर से निकल कर उसने प्रस्थान करना निश्चय किया तो सूचना प्राप्त हुई कि मुहम्मद बाबर बादशाह बहरह तथा खुशाब पहुच गया है और वह हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त करना चाहता है। उसने उपस्थितगण से कहा, "बादशाह हमे सिन्ध मे रहने न देगा और अन्त मे इस राज्य के लिये हमसे तथा हमारी सन्तान से युद्ध करेगा। हमारे लिये यह आवश्यक है कि हम किसी अन्य ओर की राह ले।" इस चिन्ता मे उसके हृदय मे पीडा होने लगी। यद्यपि बहुत कुछ उपचार हुआ किन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। शाह बेग की गुजरात पहुचने के पूर्व मृत्यु हो गई।

(१२७) उसकी मृत्यु २२ शाबान ९२८ हि० (१७ जूलाई १५२२ ई०) मे हुई। उसी रात्रि मे समस्त अमीरो तथा उच्च पदाधिकारियो ने मीर्जा शाह हुसेन[2] की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। चगेजी प्रथानुसार उसकी लाश भक्कर भेज दी गई। तीन वर्ष उपरान्त शाह बेग का ताबूत[3] मक्का भेज दिया गया और उसे जन्नतुल मुअल्ला मे दफन किया गया। उस पर एक भव्य भवन का निर्माण कराया गया।

१ तवाची का अर्थ अधिनायक तथा सेनानायक होता है। यहां दूतो से तात्पर्य है।
२ इस स्थान पर मूल पुस्तक मे शाह हसन नही है।
३ जनाज़ा।

शोक सम्बन्धी प्रथाओ के पूर्ण होने के उपरान्त समाचार प्राप्त हुए कि जाम फीरोज तथा थट्टा वालो ने शाह बेग की मृत्यु के समाचार पाकर प्रसन्नता प्रदर्शित की थी और नक्कारे बजवाये थे। मीर्जा शाह हसन इस समाचार से बडा क्रोधित हुआ और अमीरो तथा मुख्य पदाधिकारियो ने गुजरात जाना उचित न समझ कर थट्टा की विजय तथा जाम फीरोज के विनाश के उद्देश्य से प्रस्थान किया।

शाह बेग का संक्षिप्त विवरण

आरम्भ मे वह ख्वाजा अब्दुल्लाह की सेवा मे पहुचा। युवावस्था इल्मी कमाल को प्राप्त करने मे व्यतीत की। अपना अधिक समय एबादत तथा उपासना मे लगाता था। आरम्भ मे जब वह अपने (१२८) पिता की सेवा मे हिरात मे था तो सर्वदा आलिमो की गोष्ठी मे रहा करता था। सप्ताह मे दो बार आलिमो को अपने घर बुलवाता था। उसने "शरहे काफिया", "हाशियये शरहे मताले", "हाशियये शरहे फराइजे", "मीर सैयिद शरीफ" की रचना की और कुछ अन्य ग्रन्थो के हाशिये[1] भी प्रसिद्ध है।

मीर्ज़ा शाह हुसेन[2] के थट्टा पर राज्य का प्रारम्भिक हाल तथा जाम फ़ीरोज़ का पलायन

(१४१) जब मीर्जा शाह हसन नसरपुर मे अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ तो (१४२) सैयिद, काजी, प्रतिष्ठित लोग एव उच्च पदाधिकारी शोक सम्बन्धी प्रथाओ को सम्पन्न करने तथा शाह हसन को बधाई देने हेतु एकत्र हुये। उसने सभी को इनाम इकराम प्रदान करके सम्मानित किया। क्योकि यह घटना प्रथम शव्वाल[3] को घटी अत समस्त अमीरो एव उच्च पदाधिकारियो ने निवेदन किया कि 'यह उचित होगा कि आपके नाम का खुत्बा पढा जाय।" उसने सुनते ही तोबा करते हुए कहा, "जब तक साहिब किरान[4] की सन्तान मे कोई भी जीवित है हमारे लिये यह उचित नही। खुत्बा मुहम्मद बाबर बादशाह के नाम से पढा जाय।" ईद उस ओर व्यतीत करके उसने थट्टा की ओर प्रस्थान किया। जाम फीरोज ने हाफिज़ रशीद खुशनवीस[5] तथा काजी हाजी मुफ्ती को उपहार सहित शाह हसन की सेवा मे भेज कर शोक प्रकट किया और दीनतापूर्वक अपने अपराधो की क्षमा-याचना की किन्तु दूतो ने एकान्त मे उससे कह दिया कि, "जाम फीरोज वाह्य रूप से यह प्रार्थना कर रहा है किन्तु हृदय मे उसका उद्देश्य दूसरा है। उसने युद्ध के लिये अस्त्र-शस्त्र एकत्र कर लिये है और उसका विचार युद्ध करने का है।"

मीर्जा शाह हसन ने दूतो को लौटा दिया और प्रस्थान करना प्रारम्भ कर दिया। जब जाम फीरोज को विजयी सेनाओ के पहुचने के समाचार प्राप्त हुये तो वह मुकाबला करने की शक्ति न देखकर भाग खडा हुआ और शीघ्र थट्टा को छोड कर नदी के उस पार चला गया। मीर्जा शाह हसन ने आदेश दिया कि, "सेना नदी को पार करके थट्टा नगर मे पडाव करे।" पार करते समय मानक वज़ीर तथा जाम फीरोज के जामाता शेख इबराहीम सेना लेकर पहुच गये और तोपे चला दी। वे कुछ नौकाओ को

१ टीका।
२ इस स्थान पर शाह हुसेन है।
३ १ शव्वाल ९२८ हि० (२४ अगस्त १५२२ ई०)।
४ अमीर तैमूर।
५ सुलेख लिखने वाला।

तोपचियो तथा धनुषधारियो से भर कर लाये और मार्ग रोक दिया। इसी बीच मे मीर्जा शाह हसन के कुछ योद्धाओ ने शत्रुओ पर आक्रमण करके सबकी हत्या कर दी। जाम फीरोज़ पराजित होकर (१४३) कच्छ पहुचा और बहुत समय तक वहा रहा तथा कच्छ निवासियो द्वारा सेना मे वृद्धि करता रहा।

मीर्ज़ा शाह हसन द्वारा आक्रमण तथा जाम फ़ीरोज़ की पराजय

जब जाम फीरोज चाचकान तथा राहमान ग्राम के पडाव पर पहुचा तो लगभग ५०,००० अश्वारोही तथा पदाती एकत्र होकर युद्ध के लिये तैयार हुये। थट्टा की विलायत मे अत्यधिक अशान्ति उत्पन्न हो गई। उसी समय अमीर मुहम्मद मिस्कीन तर्खान, मीर फर्रुख, मुल्तान कुली बेग तथा बहुत से अमीर शाह हसन की सेवा मे उपस्थित हुये और उन्होने इस घटना का उल्लेख किया। मीर्जा शाह हसन ने कुछ लोगो को थट्टा भेजकर नगर को दृढ कराया और स्वय शत्रुओ को पराजित करने के लिये नदी पार की और निरन्तर प्रस्थान करता हुआ जाम फीरोज से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। जब वह उस क्षेत्र मे पहुचा तो सेना सुव्यवस्थित करके उसने प्रस्थान किया। अचानक विरोधियो की सेना सामने से दृष्टिगत हुई। जब उन लोगो ने मुगलो की सेना को देखा तो सभी घोडो से उतर पडे और उन्होने अपने सिरो पर से पगडिया उतार ली और चादर के कोनो को एक दूसरे से बाध कर युद्ध के लिये तैयार हो गये। सिन्ध तथा हिन्द के लोगो की यह प्रथा है कि जब वह प्राण त्याग देना निश्चय कर लेते है तो घोडो से उतर कर नगे सिर होकर चादरे तथा कमर बन्द एक दूसरे से बाध लेते है।

सक्षेप मे मीर्जा शाह हसन ने यह दशा देखकर अमीरो को विजय की बधाई दी और आदेश दिया कि सेना धनुष-बाण हाथ मे ले ले। उसने स्वय घोडे से उतर कर वजू करके नमाज़ पढी और ईश्वर से विजय की प्रार्थना की। तत्पश्चात् वह घोडे पर सवार हुआ और अमीरो तथा सैनिको ने तलवारे खीच ली और उन लोगो पर टूट पडे। वह समूह पर कम्पित हो उठा। सक्षेप मे प्रात काल से सध्या समय तक (१४४) युद्ध होता रहा और लगभग २०,००० मनुष्य रणक्षेत्र मे मारे गये। जाम फीरोज पराजित होकर गुजरात चला गया और गुजरात मे अपनी मृत्यु के समय तक निवास करता रहा।

मीर्जा शाह हसन ने तीन दिन तक वहा पडाव किया। धन-सम्पत्ति तथा घोडे इत्यादि जो लूट मे प्राप्त हुये उन्हे अपने आदमियो मे बाट दिया। बडे-बडे अमीरो को नाना प्रकार के इनाम इकराम द्वारा सम्मानित किया। वहा से प्रस्थान करके उसने थट्टा नगर मे पडाव किया और विजय तथा सफलता प्राप्त करके तुगलुकाबाद मे निवास करने लगा। छ मास उपरान्त उसने भक्कर की ओर प्रस्थान किया और हालाकन्दी मार्ग से यात्रा करने लगा। जब वह सिविस्तान के निकट पहुचा तो सिविस्तान के अमीर विजय की बधाई हेतु उपस्थित हुये और उन्होने पेशकश प्रस्तुत की। सिविस्तान के अमीरो तथा अधिकारियो को भी विदा कर दिया गया। सेता तथा दरबेला के अमीरो ने भी सिविस्तान मे उसका स्वागत करके अधीनता प्रदर्शित की। दरबेला उसी तिथि को मीर फर्रुख को प्रदान कर दिया गया। वहा शिकार खेलता हुआ बरलो ग्राम को जो भक्कर से तीन कोस पर है पहुचा। अमीर, उच्च तथा प्रतिष्ठित पदाधिकारी मीर्जा शाह हसन के स्वागतार्थ उसकी सेवा मे पहुचे। मीर्जा ने भक्कर के लोगो को सम्मानित करके इनाम इकराम प्रदान किया। उसी वर्ष शेख मीरक पूरानी कन्धार से सिन्ध पहुचा। दूसरे वर्ष शाह कुतुबुद्दीन शाह तैयिब की सन्तान हिरात से भक्कर पहुचे और मीर्जा शाह हसन की सेवा मे उपस्थित हुई।

मीर्ज़ा शाह हसन तथा दहर वालों का बन्दी बनाया जाना

९२८ हि० (१५२१–२२ ई०) के प्रारम्भ मे मीर्जा शाह हसन को ज्ञात हुआ कि अवबारह, बहती तथा अहन के क्षेत्र मे दहर व माची इत्यादि समूह सर्वदा मातीला परगने के लोगो एव महर इत्यादि की प्रजा का विरोध करते रहते है। तदनुसार मीर फाजिल कोकिलताश के पुत्र बाबा अहमद को सेना सहित उस समूह को दड देने के लिये नियुक्त किया गया। उसने सेना तैयार करके भट्टी, अहन तथा अवबारह के आस-पास के स्थानो पर आक्रमण किया। वहा से वापिस होकर मातीला किले मे पहुचा। (१४५) दहर लोगो ने बिल्लोचियो को जो सिवराय के किले मे थे, यह कहकर बहकाया कि, "मुगूलो ने तुम पर आक्रमण करके तुम्हारी धन-सम्पत्ति एव मवेशी अपने अधिकार मे कर लिये है। जब तक तुम लोग आक्रमण न करोगे वे बाज न आयेगे।" सिवराय के बिल्लोचियो ने एकत्र होकर महर वालो पर आक्रमण किया। बाबा अहमद ने सूचना पाकर उसका पीछा किया। अवबारह मे दोनो की मुठभेड हुई और युद्ध प्रारम्भ हो गया। अन्त मे बिल्लोचियो की पराजय हुई। अधिकाश लोगो की हत्या हो गई और दहर के निवासियो मे से कुछ बन्दी बना लिये गये। मीर्जा हसन ने बिल्लोचियो पर आक्रमण करने के लिये एक सेना कन्दी तथा वित्र ग्राम मे भेजी। उन लोगो ने भी बिल्लोचियो को दड देकर लौटते समय माची वालो मे से वहुत से लोगो की, जिनका सम्बन्ध अवबारह से था, हत्या कर दी और कुछ को बन्दी बनाकर अत्यधिक दड दिया। लोगों ने धन प्रस्तुत किया और एक पुत्री बाबा अहमद को दी। बाबा अहमद ने अवबारह अपने अधिकार मे कर लिया।

उस स्थान से निश्चिन्त होकर कुछ सैनिको को वहा नियुक्त करके वह भक्कर पहुचा। सैलाब के कारण मीर्जा की सरकार के ऊट, जो दहर के लोगो तथा मिहर मुहम्मद फर्राश की देखरेख मे मातीला के निकट थे, उसके विषय मे सिवराय तथा जत के बिल्लोच जो दैरावर तथा फतहपुर एव उस क्षेत्र मे थे, सूचना पाकर ले गये। यह सूचना भक्कर पहुची। बाबा अहमद ३००० अश्वारोहियो को भक्कर से लेकर शीघ्रातिशीघ्र दैरावर पहुचा और उनके एक बडे समूह की हत्या कर दी और ऊटो को वापस ले गया। जब वह बहती तथा अहन पहुचा तो सिवराय तथा दहर के बिल्लोचियो ने एकत्र होकर मार्ग रोक लिया। घोर युद्ध हुआ। बाबा अहमद के घातक घाव लगे और वह उस युद्ध से निकल आया। जब वह मातीला के निकट पहुचा तो घोडे से गिर पडा और मृत्यु को प्राप्त हो गया।

(१४६) मीर अब्दुल फत्ताह वल्द मीर फाजिल को भाई की मृत्यु के समाचार पाकर अपने ऊपर अधिकार न रहा। उसने मीर्जा शाह हसन से आज्ञा ली। क्योकि वह मीर कासिम कम्पक पोश का जामाता था अत मीर्जा शाह हसन ने मीर कासिम से कहा कि वह भी अपनी सेना लेकर जाय। कही ऐसा न हो कि अब्दुल फत्ताह अनुचित कार्य कर डाले। मीर अब्दुल फत्ताह मीर कासिम के साथ उस स्थान पर पहुचा और अपने भाई की लाश भक्कर भेज दी। स्वय वह कुछ समय तक वहा ठहर कर अपनी शक्ति बढाने लगा। एक दिन उसने रहमू दहर के दल पर आक्रमण करके बिल्लोचियो की बहुत बडी सख्या की तथा अन्य लोगो की हत्या कर दी और मू के क्षेत्र मे पहुच कर घोर युद्ध किया। बिल्लोची पराजित हुये। अन्त मे दहर के लोगो ने बीच मे पड कर संधि करा दी और यह निश्चय हुआ कि बहती एव अहन से सिन्ध की सीमा निश्चित रहे। मीर अब्दुल फत्त ह ने भत्ती तथा अहन मे निवास किया और कुछ समय तक वहा रहा। वह अपने भतीजे मीर मुहम्मद कुली को अपने साथ रखता था। यहा तक कि एक रात्रि मे सूचना प्राप्त हुई कि अवबारह के मवेशियो पर बिल्लोचियो ने छापा मारा। मीर अब्दुल फत्ताह अपने घर से सशस्त्र होकर निकला और कुछ दूर गया। वायु के अत्य-

धिक गरम होने के कारण उसमे विचित्र प्रकार की गरमी उत्पन्न हो गई यहा तक कि घर पहुचते-पहुचते उसकी मृत्यु हो गई।

इन दो घटनाओ के उपरान्त ९३० हि० (१५२३–२४ ई०) मे मीर्जा शाह हसन ने मुल्तान विजय करने का सकल्प किया और आदेश दिया कि अमीर तथा सैनिक सभी भक्कर पहुच कर दो वर्ष तक सेना की व्यवस्था करते रहे।

इस युद्ध के समय की कुछ घटनाये

जब मीर्जा शाह हसन ने मुल्तान पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया तो उसने निश्चय किया कि सर्वप्रथम अरगून, तकदर तथा हजारा नामक समूह वालो के भय से जो सीवी की विलायत मे कोच सहित थे, निश्चिन्त हो जाय। वह शीघ्रातिशीघ्र १००० अश्वारोहियो सहित एक सप्ताह मे सीवी पहुचा और सीवी के किले की मरम्मत कराई तथा उसे अपने विश्वासपात्रो को सौप कर निश्चिन्त (१४७) हो गया। लौटते समय उसने चत्र तथा लहरी के मार्ग से प्रस्थान किया। रन्द तथा बगती के बिल्लोचियो पर आक्रमण करके उन्हे बन्दी बना लिया। अन्त मे उसने जिन लोगो को बन्दी बनाया था उन्हे उनके समूह वालो को वचन लेकर सौप दिया। वहा के बडे लोगो तथा नेताओ को अपने साथ भक्कर मे ले आया।

जब बाबर बादशाह के हिन्दुस्तान पर आक्रमण के समाचार प्रसिद्ध हुये तो मीर्जा शाह हसन ने उचित उपहार राजदूतो के हाथ बादशाह की सेवा मे भेजे। जब मीर्जा शाह हसन बादशाह की सेवा मे था तो बादशाह के वकील तथा दीवान बेगी मीर खलीफा ने उससे विशेष सम्बन्ध स्थापित करने तथा जामाता बनने की बात प्रारम्भ करा दी थी और यह प्रार्थना (बादशाह द्वारा) स्वीकार कर ली गई थी। उसकी स्मृति दिलाने के लिये उसने अब्दुल बाकी की दादी शाह सुल्तान को भी, जो सैयिद जाफर की सन्तान थी, बाबर बादशाह की सेवा मे भेजा। बाबर ने मीर खलीफा की पुत्री गुलबर्ग बेगम का निकाह मीर्जा शाह हसन से कर दिया और उसे मीर खलीफा के लघु पुत्र हुसामुद्दीन मीरक के साथ भक्कर भेज दिया। मीर्जा शाह हसन विवाह करके बेगम को अपने महल मे ले गया। पातर तथा बागबान के परगने आतिथ्य सत्कार के रूप मे हुसामुद्दीन मीरक को प्रदान कर दिये और मुल्तान पर चढाई करने के लिये प्रस्थान करना निश्चय किया। बाबर बादशाह ने इसी प्रकार माह बेगम की पुत्री नाहीद बेगम, जिसे माहबेग अल्पावस्था मे काबुल मे छोड कर कन्धार चली गई थी, मीर खलीफा के पुत्र मुहिब अली खा को ब्याह दी ताकि दोनो ओर के सम्बन्ध दृढ हो जाय। ..

(१४८) जब ८४७ हि० (१४४३–४४ ई०) मे सुल्तान अलाउद्दीन बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फरीद शाह बिन (पुत्र) मुबारक शाह बिन (पुत्र) खिज्र खा बादशाह हुआ तो राज्य-व्यवस्था मे विघ्न पड गया और हिन्दुस्तान के प्रदेश अव्यवस्थित हो गये। मुल्तान की विलायत मे मुगलो के निरन्तर आक्रमण के कारण कोई हाकिम न रहा। उस क्षेत्र के निवासियो, प्रतिष्ठित लोगों तथा सर्व-साधारण ने शेख यूसुफ कुरेशी को जो शेख बहाउद्दीन जकरिया[1] के मजार का मुतवल्ली था,

१ बहाउद्दीन जकरिया : मुल्तान के प्रसिद्ध सूफी सन्त जिनका जन्म कोटकरोर (मुल्तान) मे ११७० मे हुआ। शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त वे बगदाद पहुँचे और वहा शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी के मुरीद हो गये और वहा से फिर मुल्तान लौट आये। उनकी मृत्यु १२६६ ई० में हुई।

राज्य प्रदान कर दिया। मुल्तान तथा उच्छ के मिम्बरो पर तथा कुछ कस्बो मे उसके नाम का खुत्बा पढा गया। वह भी शासन-प्रबन्ध मे व्यस्त हो गया और अपनी सेना की सख्या मे वृद्धि करने लगा और जमीदारों के हृदय अपनी मुट्ठी मे ले लिये और राज्यव्यवस्था मे रौनक पैदा कर दी।

सयोग से एक दिन राय सेहरा ने जो लगाहो के समूह का सरदार था तथा रपरी एव उसके आस-पास के कस्बो का अधिकारी था, शेख यूसुफ को सन्देश भेजा कि, "हमारे पूर्वज भी आपके सिलसिले[1] के (१४९) भक्त हैं और देहली का राज्य उपद्रव से खाली नही और कहा जाता है कि मलिक बहलोल ने देहली पर अधिकार जमा लिया है और अपने नाम का खुत्वा पढवा लिया है अत यदि शेख लगाहो के समूह की ओर अधिक से अधिक ध्यान देना प्रारम्भ कर दे और हमे अपने सैनिको मे से समझे तो जो भी कार्य तथा अभियान होगा उसमे हम अपने प्राण समर्पित करने मे कोई कमी न करेगे। इस समय अपने सकल्प की पुष्टि हेतु हम अपनी पुत्री शेख की सेवा मे देते है और आपको अपना जामाता बनाते है।" शेख यह समाचार पाकर प्रसन्न हो गया और राय सेहरा की पुत्री से विवाह कर लिया। वह कभी कभी अपनी पुत्री से भेट करने रपरी कस्बे से मुल्तान जाया करता था और उचित उपहार शेख की सेवा मे भेट करता था। शेख सावधानी के कारण राय सेहरा को मुल्तान मे निवास करने की अनुमति न देता था। वह भी नगर के बाहर ही ठहरता था और अपनी पुत्री से भेट करने अकेला ही जाता था।

एक बार वह अपनी समस्त सेना को लेकर मुल्तान पहुचा और उसने धूर्ततापूर्वक शेख यूसुफ पर अधिकार जमा लेना और मुल्तान का हाकिम बन जाना निश्चय किया। जब वह मुल्तान के निकट पहुचा तो उसने शेख यूसुफ को सन्देश भेजा कि "इस बार मे समस्त लगाहो को अपने साथ लाया हू कि मेरी सेना को देखकर उनके योग्य जो उचित सेवा हो उसे प्रदान कर दे।" शेख यूसुफ सीधा सादा मनुष्य था और काल के छल से अनभिज्ञ था अत उसने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। राय सेहरा सैनिको तथा असबाब को दिखाने के उपरान्त एक रात्रि मे एक सेवक सहित अपनी पुत्री से भेट करने पहुचा।

उसने अपने सेवक से यह निश्चय कर लिया था कि वह घर के एक कोने मे बकरी के बच्चे को जिबह करके उसका गरम गरम रक्त प्याले मे डालकर ले आये। जब सेवक ने उपर्युक्त कार्य कर लिया तो राय सेहरा ने रक्त का प्याला ले लिया। थोडी देर उपरान्त वह चिल्लाने लगा कि मेरे पेट मे पीडा हो रही है और क्षण क्षण पर अधिक विलाप करने लगा। आधी रात्रि के निकट शेख यूसुफ के वकीलो को वसीअत के उद्देश्य से बुलवा कर उन लोगो के समक्ष रक्त का वमन किया। वसीअत के मध्य मे जो शोक (१५०) तथा विलाप से युक्त थी, अपने सम्बन्धियो को जो नगर के बाहर थे, विदा हेतु बुलवाया। जब यूसुफ के वकीलो ने राय सेहरा का अन्तिम समय देखा तो उन्होने उसके सम्बन्धियो तथा सेवको के आने के सम्बन्ध मे कोई आपत्ति प्रकट न की। जब उसके अधिकाश आदमी किले मे प्रविष्ट हो गये, तो उसने राज्य ग्रहण करने के लिये रुग्णावस्था के बिछौने से अपना सिर उठाया और अपने विश्वासपात्र सेवको को चारो द्वारो पर नियुक्त कर दिया ताकि वे शेख यूसुफ के सेवको को किले से महल मे न प्रविष्ट होने दे। तत्पश्चात् उसने शेख के भवन मे प्रविष्ट होकर शेख को बन्दी बना लिया। और उसे वहा से निकाल दिया। शेख देहली की ओर चल दिया। राय सेहरा ने सुल्तान कुतुबुद्दीन की उपाधि धारण करके अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया।

१ 'शेख बहाउद्दीन जकरिया के उत्तराधिकारियों के भक्त हैं।'

मीर्ज़ा शाह हसन का लंगाहों की पराजय हेतु प्रस्थान

९३१ हि० (१५२४–२५ ई०) मे मीर्जा शाह हसन ने मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। जब वह सिवराय के किले के पास पहुचा तो उसने उसे विध्वस तथा नष्ट-भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। उसने आक्रमण करके, जो कोई भी विरोधी मिला, उसकी हत्या कर दी। बिल्लोच, जो सिवराय के किले मे थे, यह समाचार सुनकर उच्छ की ओर बढे। कुछ लोग किले मे बन्द हो गये। वह किला समस्त किलो की अपेक्षा भव्य तथा दृढ था। मीर्जा शाह हसन ने एक झील पर पडाव किया। सुल्तान महमूद खा भक्करी किले की ओर, शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके बिल्लोचियो की एक सेना सहित जो किले के निकट थी, पहुचा। युद्ध प्रारम्भ हो गया। उस दिन सुल्तान महमूद खा के साथ ८० अश्वारोहियो से अधिक न थे। लेखक ने सुल्तान महमूद खा से सुना है कि सिवराय के युद्ध के दिन ३० व्यक्ति उसकी तलवार (१५१) द्वारा मारे गये। उस युद्ध मे समस्त वीरो ने भी वीरता प्रदर्शित की और २०० शत्रुओ को मिट्टी मे मिला दिया। समस्त बिल्लोच लोग यह देख कर बाहर निकल गये। जब प्रात काल मीर्जा शाह हसन को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने दीवानख़ाने मे सुल्तान महमूद की अत्यधिक प्रशसा करके उसे एकान्त मे बुलवाया और अपने हाथ से तीन छडी मार कर कहा, "इस प्रकार की तेजी करना उचित नही।" दूसरे दिन प्रस्थान करके उसने सिवराय के किले के निकट पडाव किया और आदेश दिया कि किले को नष्ट कर दिया जाय। एक सप्ताह मे इस प्रकार का किला नष्ट कर दिया गया।

वहा से उसने मव के किले की ओर प्रस्थान किया और मव के निकट जो झील है उस पर पडाव किया। शेख़ रुहुल्लाह वल्द शेख हम्माद कुरेशी ने जो उस स्थान के एक सुप्रसिद्ध सन्त थे मीर्ज़ा से भेट की और किले वालो की व्याकुलता तथा दीनता के विषय मे उल्लेख किया। मीर्जा ने मिस्कीन तर्ख़ान को आदेश दिया कि वह एक सेना सहित किले मे प्रविष्ट होकर जो अनाज हो उसका निरीक्षण करे। यदि किले मे कोई लगाह तथा बिल्लोच हो तो वह उसे किले के बाहर ले आये। जिस किसी ने भी शेख़ हम्माद की ख़ानकाह मे शरण ले रक्खी हो उसे किसी प्रकार की हानि न पहुचाई जाय। वे उन्हे क्षमा करके, अन्य सैनिको को जो किले मे थे, बन्दी बना कर मीर्ज़ा की सेवा मे लाये। मीर्जा शाह हसन दो-तीन दिन तक किले के निकट पडाव करके किले मे घुसा। वहा के सूफियो के दर्शन के उपरान्त मँव के शेखो से प्रतिज्ञा कराई कि वे उसके आदमियो से उनके आने-जाने के समय कोई रोक-टोक न करेंगे और विरोधियो को अपने पास न फटकने देगे। तत्पश्चात् शेख़ रूहुल्लाह ने रहमू दहर की क्षमा के विषय मे प्रार्थना की। मीर्जा ने कहा, "उन लोगो के विषय मे सुल्तान महमूद ख़ा जाने। उनके कारण उसके (१५२) दो भाई नष्ट हो चुके है।" अन्त मे उसका आना ही उचित देख कर उसे बुलवाया। वह ग्रीवा मे तलवार लटकाये उपस्थित हुआ। सुल्तान महमूद खा भक्करी ने उसके अपराध क्षमा कर दिये। तदुपरान्त उसने अपने भतीजे के क्षमा किये जाने के विषय मे प्रार्थना की और यह प्रस्ताव रक्खा कि वह अन्त पुर के सेवको की श्रेणी मे रहे। उसकी यह बात स्वीकार कर ली गई। जाम जीवन दहर की बहिन सुल्तान महमूद को सौप दी गई।

मव के किले से उसने मुहिब्ब तर्ख़ान को सेना के अग्रभाग का सेनापति नियुक्त किया और ५०० अश्वारोहियो को आगे भेजकर स्वय उसके पीछे प्रस्थान किया और लार वालो की सीमा पर पहुँचा। उस मजिल् पर दहरबन्दा नामक दहर, जो मुल्तान वालो मे बहुत बडा शूरवीर समझा जाता था सेवा में उपस्थित हुआ और उसे खिलअत तथा इनाम द्वारा सम्मानित करके सुल्तान महमूद खा को सौप दिया गया। वहा से उसने उच्छ की ओर प्रस्थान किया।

उच्छ की मंज़िल पर मीर्ज़ा शाह हसन का लंगाहों से युद्ध

दूसरे दिन प्रात काल मीर्ज़ा शाह हसन ने युद्ध हेतु प्रस्थान किया और सेना का अत्यधिक प्रबन्ध किया। दाये भाग की सेना की सरदारी मुहम्मद मिस्कीन तर्खान, तथा मीर्ज़ा ईसा तर्खान को प्रदान कर दी। बाया भाग मीर फर्रुख तथा मीर अलीका अरगून को जो महमूद बेगलार का जामाता था प्रदान किया। अग्रिम दल को सुल्तान महमूद खा, सुल्तान मुकीम बेग लार को प्रदान किया। मीर फर्रुख अरगून तथा सुल्तान कुली बेगलार को अपने साथ गोल मे नियुक्त किया। मीर महमूद सारबान तथा मीर अबू मुस्लिम को करावली[1] के लिये नियुक्त किया। उस ओर से लगाहो के रायजादे, बिल्लोच तथा समस्त मुल्तान की सेना युद्ध करने के लिये सामने आई। नाहर लोगो को हिरावली[2] पर नियुक्त किया गया। मुल्तान की सेना उस दिन इस सेना से कई सौ गुना अधिक थी। जब दोनो सेनाये एक दूसरे के मुकाबले मे खडी हुई तो मुगुल सेना ने हत्याकाड प्रारम्भ कर दिया और लगाह तथा बिल्लोच सेना ने धनुष-बाण अपने हाथ मे ले लिये और बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी।

(१५३) इसी बीच मे मीर्ज़ा की दाये भाग की सेना ने शत्रुओ को पराजित कर दिया। बाये भाग ने भी आक्रमण करके शत्रुओ की सेना को उखाड दिया। बहलोल रायजादा तथा बहुत बडी सख्या मे लोग बन्दी बना लिये गये। मीर्ज़ा ने उन लोगो की हत्या का आदेश दे दिया। इसी प्रकार रणक्षेत्र से नगर की ओर पहुच कर उन लोगो ने किले का द्वार तोड डाला और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। लगाह लोगो ने किले की चहारदीवारी पर एकत्र होकर बाण तथा पत्थर फेकने प्रारम्भ कर दिये। अचानक उनके नेताओ के सिरो को भालो की नोक पर चढा कर उन्हे दिखा दिया गया। वे तत्काल पराजित होकर बुर्जो पर से कूद कूद कर भागने लगे किन्तु मीर्ज़ा के आदेशानुसार उच्छ वालो मे से जो भी पकडा जाता उसकी हत्या कर दी जाती थी और शहर के लोगो को नष्ट किया जाने लगा। इसी बीच मे सैयिद ज़ैनुल आबेदीन बुखारी, शेख इबराहीम, शेख इस्माईल जमाली, काजी अबुल खैर तथा काजी अब्दुर्रह-मान मीर्ज़ा शाह हसन की सेवा मे पहुचे और स्थिति का उल्लेख किया। मीर्ज़ा ने अपने अधिकारियो को आदेश दे दिया कि वे तदुपरान्त किसी के प्रति कोई रोक-टोक न करे और बन्दियो को मुक्त कर दे। जो कोई भी आज्ञा का उल्लघन करे उसका सिर भाले की नोक पर चढाया जाय। उसने उच्छ के किले तथा भवनो को नष्ट करने का आदेश दे दिया। भवनो की लकडिया नौकाओ पर लाद कर भक्कर मे लाई गईं।

जब मीर्ज़ा शाह हसन के प्रभुत्व के समाचार मुल्तान के हाकिम सुल्तान महमूद लगाह को प्राप्त हुये तो उसने सीमा तथा चारो दिशाओ से लोगों को भेजकर बिल्लोच, जत, रन्द, दौदाई, कौराई, चादिया तथा समस्त सैनिको को एकत्र किया। एक मास मे ८०,००० अश्वारोही तथा पदाती मुल्तान मे एकत्र हो गये और बहुत बडी सेना इकट्ठा हो गई। सुल्तान महमूद लगाह युद्ध के लिये तैयार होकर अभिमान से भरा हुआ मुल्तान से निकला। मीर्ज़ा शाह हसन ने सुल्तान महमूद लगाह द्वारा सेना एकत्र करने का हाल सुनकर महरा नदी के तट पर पडाव किया और प्रतीक्षा करने लगा। सुल्तान महमूद लगाह एक मास (१५४) तक मुल्तान के बाहर ठहरा रहा और युद्ध की सामग्री एकत्र करता रहा। सेना का सामान

१ स्काउट, सेना का वह भाग जो शत्रुओं आदि का पता लगाता है।
२ अग्रदल।

तैयार हो जाने के उपरान्त उसने मुल्तान से प्रस्थान किया। एक मजिल के पार करने के उपरान्त उसका अभिमान बढ गया।

शेख शुजा बुखारी ने जो सुल्तान हुसेन लगाह का जामाता था, और जिसे शासन-प्रवन्ध मे विशेष अधिकार प्राप्त था कुछ सेवको तथा खासा खेलो से मिलकर धन का अपहरण किया। यह सुनकर सुल्तान महमूद के क्रोध की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। वे लोग अपना जीवन सुल्तान महमूद की मृत्यु पर अवलम्बित देखकर अपने स्वामी की हत्या पर कटिबद्ध हो गये। उसके हको पर ध्यान न देते हुये घातक विष, जो खजाने मे अन्य लोगो के लिये रक्खा हुआ था, सुल्तान को पिला दिया। वह आधे घूँट ही मे इतना मस्त हो गया कि फिर न जागा।

जब सुल्तान महमूद की माता को इस घटना का पता चला तो उसने कहा, "यह उचित होगा कि हम इसी मजिल पर पडाव करे और सेना को अपनी ओर मिलाये।" दो-तीन दिन तक सेना वालो को वास्तविकता का पता न चल सका। अन्त मे यह रहस्य खुल गया। सेना मे अधिकाश लोग बिल्लोच थे। वे सगठित हो गये। लगाहो ने सुल्तान महमूद के पुत्र सुल्तान हुसेन को सिहासनारूढ करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न देखा, अत उन लोगो ने मखदूमजादा शेख बहाउद्दीन को सन्धि कराने के लिये मध्यस्थ बनाया। शेख ने गहारा नदी के तट पर नव्वाब मीर्जा शाह हसन से भेंट की। मीर्जा शाह हसन ने शेख के सम्मान को दृष्टि मे रखते हुये सधि का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस विषय मे प्रतिज्ञा-पत्र तैयार कराये गये।

(१५५) यह निश्चय हुआ कि "गहारा नदी मुल्तान तथा भक्कर की विलायत की सीमात बने। दोनो ओर के हाकिम तदुपरान्त इसके आगे न बढे।" विदा होते समय उसने शेख को ९ घोडे, ऊट, तथा धन प्रदान किया। शेख प्रसन्न होकर लौट गया। नव्वाब मीर्जा ने आदेश दिया कि उच्छ मे एक अन्य किले का निर्माण कराया जाय। अभी तक उस किले की इमारत वर्तमान है। उसने कुछ विश्वासपात्र तथा वीर पुरुष उच्छ के किले मे नियुक्त किये और लौटने की तैयारी कर दी। इसी बीच मे सुल्तान महमूद लगाह का एक सेवक जिसका नाम इकबाल था, मीर्जा शाह हसन की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने निष्ठा प्रदर्शित की। मीर्जा ने उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करते हुये उसकी प्रार्थनाओ को स्वीकार कर लिया।

मीर्जा शाह हसन का दिलावर की विजय हेतु प्रस्थान तथा ग़ाज़ी खां की हत्या

जिस समय मीर्जा शाह हसन ने उच्छ पर अधिकार जमा लिया तो इकबाल खा ने मीर्जा की सेवा मे उपस्थित होकर निष्ठा प्रदर्शित करते हुए निवेदन किया कि "दिलावर के किले मे अत्यधिक धन-सम्पत्ति है और पिछले सुल्तानों का एकत्र किया हुआ धन वहा जमा है।" मीर्जा ने गाजी खा को प्रोत्साहित करते हुये फरमान भेजा कि, "इस समय हमारा पडाव उच्छ मे है अत तुम्हारे लिये यह उचित होगा कि तुम अपने समस्त देशवासियो सहित अधीनता स्वीकार करके अविलम्ब सेवा मे उपस्थित हो जाओ", किन्तु गाजी खा ने इसे स्वीकार न किया और किले की दृढता के भरोसे पर परामर्श पर ध्यान न दिया तथा सेवा मे उपस्थित न हुआ। अत मीर्जा ने बृहस्पतिवार १ रजब को आदेश दिया कि "विजयी सेना जल तथा अनाज लेकर और एक मास की खाद्य-सामग्री का प्रबन्ध करके दिलावर की ओर प्रस्थान करे। सुम्बुल खा अश्वारोहियो, ख़ासा खेलो, तोपचियो तथा पदातियो सहित वहा शिविर लगा दे, तथा मोर्चे बाट कर किले के अवरोध तथा युद्ध की चेष्टा की जाय।"

(१५६) वास्तव मे वह किला बलन्दी तथा दृढता मे सिकन्दर की दीवार के समान है और वयाबान मे स्थित है और वहा जल का पूर्णत अभाव रहता है। सक्षेप मे, कुशल योद्धाओ ने, तीन दिन मे ३०० कुए खोदे और शिविर मे पर्याप्त जल एकत्र हो गया। मीर्जा ने चार दिन उपरान्त स्वय वहा उपस्थित होकर किले को घेर लिया और किला विजय करने की सामग्री एकत्र करके बाण तथा पत्थर फेकने मे व्यस्त हो गया। जब कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया तो किले वाले व्याकुल हो गये। उन्हे किसी ओर से सहायता न प्राप्त हुई। किले मे अधिक समय तक बन्द रहने के कारण यह स्थिति हो गई कि उबली हुई खाल भी न प्राप्त होती थी। अन्त मे सुम्बुल खा ने किले मे दो ओर से सुरग लगा कर द्वार के समक्ष के बुर्ज तथा बाडे उडा दिये। किले वाले अपनी मृत्यु निकट देखकर गोले तथा अग्नि फेकने लगे। जब घोर युद्ध होने लगा तो योद्धा ढाल मे अपने सिर छिपाये बुर्ज तथा बाडे तक पहुच गये। किले के बहुत से आदमी मारे गये तथा आहत हो गये। थोडे से जो बच गये वे बन्दी बना लिये गये। नव्वाब मीर्जा ने खजाना तथा धन सम्पत्ति एकत्र करने के लिये अपने विश्वासपात्र नियुक्त कर दिये। प्रात काल उसने समस्त धन सेना को बाट दिया। उसमे से जो कुछ शाही हिस्से का था, उसे खजाने मे दाखिल कर लिया। वहा से उसने उच्छ तथा भक्कर की ओर प्रस्थान किया। १५ दिन मे भक्कर पहुच कर भोग-विलास प्रारम्भ कर दिया।

मीर्जा शाह हसन का मुल्तान की ओर प्रस्थान तथा मुल्तान विजय करना

(१५७) ९३२ हि० (१५२५-२६ ई०) के अन्त मे सुल्तान महमूद लगाह की मृत्यु के उपरान्त उसके सम्बन्धियो तथा अमीरो के परस्पर विरोध एव शत्रुता के कारण प्रत्येक ने एक-एक दिशा के स्थान को दृढ बना लिया। कोई भी दूसरे की आज्ञा का पालन न करता था। उसका पुत्र सुल्तान हुसेन, जो अल्पावस्था मे था, शेख शुजा बुखारी एव लगाह स्त्रियो के अधिकार मे आ गया था। वह कुछ न कर सकता था। इस कारण मुल्तान मे उपद्रव, अशान्ति तथा अत्याचार एव जुल्म होने लगा। वहा के प्रतिष्ठित लोग एव साधारण प्रजा दूसरे हाकिम की इच्छा करने लगी, यहा तक कि लगर खा, मीर्जा शाह हसन की सेवा मे पहुचा। मुल्तान तथा मुल्तान वालो के विषय मे उसकी सेवा मे निवेदन किया। मीर्जा को इस बात के लिये तैयार किया कि वह मुल्तान को विजय करने के लिये उस पर आक्रमण करे। इस उद्देश्य से मीर्जा हसन ने मिस्कीन तर्खान को करावल बना कर आगे भेजा।

लगाह लोगो ने अरगून सेना के आक्रमण के समाचार पाकर परामर्श के उपरान्त शेख इस्माईल कुरेशी को दूत बनाकर सन्धि हेतु भेजा। शेख ने मऊ के निकट मीर्जा शाह हसन से भेट की। नव्वाब मीर्जा शाह हसन ने शेख का यथासम्भव सम्मान किया और कुछ धन शेख के सेवको को आतिथ्य सत्कार के रूप मे दिया। शेख ने सन्धि की वार्त्ता प्रारम्भ की किन्तु उससे कुछ लाभ न हुआ। शेख ने लगर खा से कहा, "तो हमे थट्टा मे हमारे सम्बन्धियो के पास भेज दिया जाय।" लगर खा ने मीर्जा से निवेदन किया कि, "क्योकि शेख के सम्बन्धी थट्टा मे है, अत यदि आदेश हो तो शेख थट्टा की ओर प्रस्थान करे।" मीर्जा ने लगर खा की प्रार्थना स्वीकार करके शेख को सिन्ध जाने की आज्ञा प्रदान कर दी। थट्टा के पास का एक ग्राम उसे सयूरगाल[1] मे प्रदान कर दिया। वहा से वह निरन्तर यात्रा करता हुआ

[1] दान मे दी जाने वाली भूमि।

मुल्तान की ओर रवाना हुआ। अरगूनो की सेना के निकट पहुच जाने के कारण लगाह लोग भयभीत होकर मुल्तान मे प्रविष्ट हो गये। लगर खा ने मीर्जा की सेना द्वारा भत्ती कहल्वान पर आक्रमण करके अनाज, मवेशी तथा समस्त वस्तुये मीर्जा की सेना के शिविर मे पहुचा दी। विजयी सेनाओ ने अवरोध एव युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

(१५८) मुल्तान के वाली[1] ने अपने एक भाई को शेख शुजा बुखारी के भाई के साथ नव्वाब मीर्जा की सेवा मे भेजा और अधीनता एव आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। मीर्जा ने उसके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते हुए कहा कि, "अपने भाइयो से कहो कि किले से निकल कर हम से भेट करे और आज्ञाकारिता स्वीकार करे ताकि कृपा प्रदर्शित करते हुये किला उन्ही को प्रदान करके हम लौट जाय।" उन लोगो ने किले मे जाकर जो कुछ सुना था, उन तक पहुचा दिया। किन्तु लगाह लोग अभिमानवश भेट करने के लिये न निकले तथा अरगून सेना को हटाने मे व्यस्त हो गये। और युद्ध की अग्नि प्रज्वलित कर दी। किले के द्वार खोलकर तलवारो तथा बाणो द्वारा आश्चर्यजनक रूप से युद्ध करने लगे। कुछ लोगो की उन्होने हत्या कर दी। मीर्जा शाह हसन के क्रोध की अग्नि भडक उठी। उसने किले के पूर्व की ओर शम्स द्वार के निकट खेमे लगा दिये और किले के आसपास मोर्चे (अपने सैनिको मे) बाट दिये और किले के अवरोध के विषय मे प्रयत्न करने लगा। दोनो ओर से युद्ध की अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई और बाण तथा तोप के गोले वर्षा के समान बरसने लगे। नित्यप्रति युद्ध होता था। मुल्तान नगर मे अनाज का घोर अकाल पड गया। एक गाय के मुख का मूल्य १० तन्के और मुल्तान की तोल से एक मन अनाज का मूल्य १०० तन्के हो गया। अधिकाश लोग गाय की खाल को खाकर जो खाने योग्य न होती थी, जीवन-निर्वाह करते थे। यदि सयोगवश उन्हे कोई बिल्ली अथवा कुत्ता मिल जाता तो उसका मास वे हलुवे तथा मेमने के मास के समान खा जाते थे। दुष्ट जारा माची को, जिसे शेख शुजा बुखारी ने ३००० पदातियों का सरदार नियुक्त करके किले की रक्षा सिपुर्द कर दी थी, जिसके घर के विषय मे यह सन्देह होता था कि उसके यहा अनाज होगा तो वह नि सकोच घर मे प्रविष्ट होकर उसके घर को नष्ट कर देता। इस दुष्कर्म के कारण लोग लगाहो के पतन के विषय मे प्रार्थना किया करते थे। अन्त मे लोग आत्म-हत्या का सकल्प करके किले पर से खाई मे कूदने लगे। मीर्जा शाह हसन ने लोगो की परेशानी के विषय मे सूचना पाकर मुल्तान वालों (१५९) की हत्या से अपने आप को रोक लिया। मुल्तान के अमीरो ने अनाज की कमी के कारण यह आदेश दे दिया था कि कोई भी रोटी न पकाये। जिन लोगो के पास भी अनाज था, वे गुलूर[2] तथा शोरबे पर जीवन व्यतीत करते थे।

जब किले के अवरोध मे एक वर्ष व्यतीत हो गया तो किले वाले तग हो गये। ११ रबीउस्-सानी ९३३ हि० (१५ जनवरी १५२७ ई०) को अरगून लोग बाणों द्वारा अधिकाश लोगो की हत्या करके प्रात काल लोहारी द्वार को तोड कर नगर मे प्रविष्ट हो गये और लूट-मार तथा हत्याकाड प्रारम्भ कर दिया। ७ वर्ष से ७० वर्ष की अवस्था तक वाले नगर-निवासी बन्दी बना लिये गये। मुल्तान वालों पर घोर सकट पड गया। उसकी स्मृति उन्हे कयामत तक रहेगी। लोग बडे-बडे सूफियो की खानकाह मे घुस गये।

१ शासक।
२ सम्भवत गुलूल, वह भोजन जो मनुष्य के पेट मे हो।

नगर को दस-बारह दिन तक नष्ट-भ्रष्ट करने के उपरान्त मुहिब्ब तर्ख़ान ने एक सेना सहित ख़ानकाह मे पहुच कर लोगो की हत्या कर दी और खानकाह मे आग लगा दी और उस मजार मे अत्यधिक रक्तपात किया। उस लूट मे मुग़ुलो को उत्तम जवाहरात तथा अपार नकद धन प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् मीर्ज़ा शाह हसन के क्रोध की अग्नि शान्त हुई और शेष लोग जो रह गये थे, उन्हे उसने क्षमा कर दिया और आदेश दिया कि "लाशो को मार्ग से हटा कर खाइयो मे दफन कर दिया जाय। तत्पश्चात् कोई किसी भी मनुष्य को हानि न पहुचाये।" मखदूमजादा शेख बहाउद्दीन, सुल्तान महमूद लगाह के पुत्र सुल्तान हुसेन तथा (महमूद लगाह) की पुत्री को मीर्जा शाह हसन की सेवा मे लाया। मीर्जा शाह हसन ने दोनो को मिस्कीन तर्खान को दे दिया। मिस्कीन तर्ख़ान ने सुल्तान महमूद की पुत्री से शरा के अनुसार विवाह कर लिया और पुत्र को भी अपनी शरण मे ले लिया।

दो मास वहा ठहरने के उपरान्त मीर्जा शाह हसन ने भक्कर की ओर प्रस्थान किया और दोस्त (१६०) मीर आखुर तथा ख्वाजा शम्सुद्दीन माहौनी को २०० अश्वारोहियो, १०० पदातियो तथा १०० तोपचियो सहित मुल्तान के राज्य के लिये नियुक्त कर दिया। शेख शुजा बुखारी तथा सुल्तान महमूद लगाह के कुछ खासा ख़ेलो को कठोर दड देकर उनसे अत्यधिक धन प्राप्त किया। मीर्जा शाह हसन लौटकर भक्कर पहुचा ही था कि थट्टा के अमीरो के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये कि खिगार लोग थट्टा पर आक्रमण करने का विचार कर रहे हैं। मीर्जा शाह हसन भक्कर से थट्टा की ओर चल दिया। और दोस्त मीर आखुर, ख्वाजा शम्सुद्दीन तथा लगर खा को वहा नियुक्त कर दिया। ये लोग मुल्तान मे लगभग ११ मास तक रहे। लगर खा पृथक् होकर बाबर बादशाह की सेवा मे पहुच गया। मीर्जा शाह हसन ने यह सूचना पाकर मुल्तान बाबर बादशाह को भेट कर दिया। दोस्त मीर आखुर तथा ख्वाजा शम्सुद्दीन भक्कर लौट आये। बाबर ने मुल्तान मीर्जा कामरान को प्रदान कर दिया।

मुल्तान

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

तबक़ाते अकबरी

भाग ३

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन—कलकत्ता)

मुल्तान के सुल्तान

(५२१) मुल्तान का इतिहास इस्लाम के राज्य के प्रारम्भ से, जो हज्जाज[1] के समय मे मुहम्मद (बिन) कासिम[2] के प्रयत्न के फलस्वरूप प्राप्त हुआ, इतिहासो मे लिखा हुआ है। जब सुल्तान महमूद गजनवी ने इसे मलाहेदा[3] के अधिकार से निकाल लिया तो वह बहुत समय तक उसकी सन्तान के अधिकार मे रहा। गजनी के सुल्तानो के शक्तिहीन हो जाने के कारण मुल्तान पुन करामेता[4] के अधिकार मे आ गया। जब से वह सुल्तान मुइज्जुद्दीन मुहम्मद साम के अधिकार मे आया, उस समय से ८४७ हि० (१४४३-४४ ई०) तक वह देहली के सुल्तानो के अधीन रहा। ८४७ हि० (१४४३-४४ ई०) से जब (५२२) से हिन्दुस्तान का राज्य अव्यवस्थित हो गया, मुल्तान के हाकिम पूर्ण रूप से स्वतत्र हो गये। मुल्तान देहली के सुल्तानो के अधिकार के बाहर निकल गया, और कुछ लोगो ने लगातार राज्य किया

शेख यूसुफ लगभग दो वर्ष

सुल्तान कुतुबुद्दीन १६ वर्ष

सुल्तान हुसेन कुछ लोगो के मतानुसार ३४ वर्ष तथा कुछ लोगो के मतानुसार ३६ वर्ष

सुल्तान फीरोज उसके राज्यकाल की अवधि ज्ञात नही

सुल्तान महमूद बिन सुल्तान फीरोज २७ वर्ष

सुल्तान हुसेन उसके राज्यकाल की अवधि ज्ञात नही। कुछ लोगो के मतानुसार एक वर्ष तथा कुछ मास।

१ हज्जाज बिन यूसुफ़ अल-सकफ़ी, उमय्या वश के पाँचवे ख़लीफ़ा द्वारा अरब तथा अरबी एराक का हाकिम (गवर्नर) नियुक्त कर दिया गया था। वह अपनी निष्ठुरता के लिये बड़ा प्रसिद्ध है। उसकी मृत्यु ७१४ ई० मे हुई।

२ मुहम्मद बिन कासिम उमय्या ख़लीफ़ा यजीद प्रथम का चचाजाद भाई तथा हज्जाज बिन यूसुफ़ सकफ़ी का जामाता था। ख़लीफ़ा के आदेशानुसार ७१६ ई० मे उसने सिन्ध पर आक्रमण करने के लिये एक भारी सेना लेकर प्रस्थान किया और २३ जून ७१२ ई० को सिन्ध पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

३ इस्माईली शीआ मुसलमानो को मलाहेदा कहा जाता था।

४ इस्माईली शीआ मुसलमानों की एक शाखा

शेख़ यूसुफ़

जब ८४७ हि० (१४४३-४४ ई०) मे सुल्तान अलाउद्दीन बिन (पुत्र) मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) फरीद शाह बिन (पुत्र) मुबारक शाह बिन (पुत्र) खिज्र खा सिहासनारूढ हुआ तो राज्य-व्यवस्था मे विघ्न पड गया। हिन्दुस्तान मे बडी ही अव्यवस्था फैल गई। मुल्तान की विलायत मे मुगुलो के निरन्तर आक्रमण के कारण कोई भी हाकिम न रहा।

क्योकि शेख बहाउद्दीन जकरिया मुल्तानी का मुल्तान के निवासियो तथा उस ओर के समस्त जमीदारो के हृदय मे अत्यधिक सम्मान आरूढ था, अत वहा के समस्त निवासियो, सम्मानित व्यक्तियो एव सर्वसाधारण ने शेख बहाउद्दीन जकरिया के रौजे के मुजाविर तथा खानकाह के मुतवल्ली शेख यूसुफ कुरेशी को सिहासनारूढ कर दिया तथा मुल्तान, उच्छ एव कुछ अन्य कस्बो मे उसके नाम का खुत्बा पढवा दिया। उसने भी शासन-प्रबन्ध अपने हाथ मे लेकर अपनी सेना मे वृद्धि करनी तथा जमीदारो के हृदय को अपनी मुट्ठी मे लेकर राज्य को रौनक देनी प्रारम्भ कर दी।

(५२३) सयोगवश एक दिन लगाहो के सरदार राय सेहरा ने जिसके अधीन सीवी तथा उस क्षेत्र के कस्बे थे, शेख यूसुफ को सन्देश भेजा कि "हम लोग अपने पूर्वजो के समय से लेकर आज तक आपके सिलसिले के भक्त रह चुके है, और देहली का राज्य अव्यवस्थित हो चुका है और कहा जाता है कि मलिक बहलोल लोदी ने देहली पर अपना अधिकार जमा कर अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया है, ऐसी अवस्था मे आप लगाहो के समूह की ओर कृपादृष्टि प्रदर्शित करे और हमे भी अपने सैनिको मे सम्मिलित समझे तो प्रत्येक सेवा तथा प्रत्येक अभियान मे हम प्राणो की बलि देने को उद्यत है। इस समय अपनी निष्ठा तथा भक्ति की पुष्टि के लिये मै आपको अपनी पुत्री देता हू और आपको अपना जामाता स्वीकार करता हू।" शेख यह समाचार सुनकर प्रसन्न हो गया और राय सेहरा की पुत्री से विवाह कर लिया। वह कभी कभी अपनी पुत्री से भेट करने सीवी कस्बे से मुल्तान जाया करता था और उचित उपहार शेख़ की सेवा में भेजा करता था। शेख सावधानी की दृष्टि से राय सेहरा को मुल्तान मे निवास करने की अनुमति न देता था। वह स्वय शहर के बाहर पडाव करके पुत्री से भेट करने जाया करता था।

एक बार वह अपने समस्त सैनिको को एकत्र करके मुल्तान की ओर रवाना हुआ और छल, धूर्तता एव धोखे से शेख यूसुफ को बन्दी बना लेने तथा मुल्तान का हाकिम बन जाने का उसने सकल्प किया। जब वह मुल्तान के समीप पहुचा तो उसने शेख यूसुफ को सन्देश भेजा कि, "इस बार मै समस्त लगाहो को अपने साथ लाया हू ताकि मेरे सैनिको को देख कर आप उनकी योग्यता के अनुसार सेवा प्रदान कर दे।" शेख़ यूसुफ सरल स्वभाव का व्यक्ति था। वह समय के छल से अनभिज्ञ था। उसने उसके प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित की। राय सेहरा उन लोगो को दिखलाने के उपरान्त एक रात्रि मे एक सेवक के साथ (५२४) अपनी पुत्री से भेट करने गया। उसने अपने सेवक को समझा दिया था कि घर के एक कोने मे एक बकरी के बच्चे को जिबह करके और उसका रक्त गरम करके[1] प्याले मे डालकर ले आना। जब सेवक यह कार्य कर चुका तो राय सेहरा ने रक्त के प्याले को ले लिया। थोडी देर पश्चात् वह छल

१ एक पोथी के अनुसार 'उसका गरम रक्त प्याले मे रख कर ले आना'।

करके चिल्लाने लगा कि, "मेरे पेट मे पीडा होती है" और क्षण-क्षण पर वह अधिक विलाप करने लगा। आधी रात के निकट शेख यूसुफ के वकीलों को वसीयत के लिये बुलवाया और उन लोगो के समक्ष रक्त की कै की। वसीयत, जो शोक तथा विलाप से भरी थी, के समय अपने सम्बन्धियो तथा निकटवर्तियो को जो नगर के बाहर थे, विदा हेतु बुलवाया। जब शेख यूसुफ के वकीलो ने राय सेहरा की शोचनीय दशा देखी तो उन्होने उसके सम्बन्धियो तथा निकटवर्तियो के बुलवाने मे कोई आपत्ति प्रकट न की। जब उसके अधिकाश आदमी किले मे आ गये तो उसने राज्य पर (अधिकार जमाने) के विचार से रुग्णावस्था के बिछौने से सिर उठाया और अपने सेवको तथा विश्वासपात्रो को चारो द्वारो की रक्षा हेतु नियुक्त कर दिया ताकि शेख यूसुफ के सेवक बाहर के किले से महल मे प्रविष्ट न हो सके।

शेख यूसुफ ने लगभग दो वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन लंगाह

राय सेहरा ने शेख को बन्दी बना कर अपने नाम का ख़ुत्बा तथा सिक्का चलवा दिया। उसने अपनी उपाधि सुल्तान कुतुबुद्दीन रक्खी। जब मुल्तान वाले उसके राज्य से सतुष्ट हो गये और उन्होने उससे बैअत कर ली तो शेख़ यूसुफ को उत्तर दिशा के द्वार से, जो शेख बहाउद्दीन ज़करिया के मजार के निकट है, देहली की ओर जाने की अनुमति दे दी। तत्पश्चात् उसने उस द्वार को पक्की ईटो से चुनवा (५२५) दिया। कहा जाता है कि आज तक अर्थात् १००३ हि० (१५९४-९५ ई०) तक वह द्वार बन्द है।

उसने अपना राज्य प्रारम्भ कर दिया। कहा जाता है कि जब शेख यूसुफ देहली पहुचा तो सुल्तान बहलोल ने उसका अत्यधिक आदर-सम्मान किया और अपनी पुत्री का विवाह शेख यूसुफ के पुत्र से, जिसका नाम शेख़ अब्दुल्लाह था और जो शाह अब्दुल्लाह के नाम से प्रसिद्ध है, कर दिया। वह सर्वदा शेख़ को वादो द्वारा प्रसन्न किया करता था। सुल्तान कुतुबुद्दीन मुल्तान मे स्वतत्र रूप से राज्य करता रहा।

उसकी मृत्यु ८६५ हि० (१४६०-६१ ई०) मे हुई और उसने १६ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान हुसेन वल्द सुल्तान क़ुतुबुद्दीन लंगाह

सुल्तान कुतुबुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त शोक सम्बन्धी प्रथाओ के समाप्त हो जाने के पश्चात् अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने उसके ज्येष्ठ पुत्र को सुल्तान हुसेन की उपाधि प्रदान करके मुल्तान तथा उसके आसपास के क्षेत्र मे उसके नाम का ख़ुत्बा पढवा दिया। वह बडा ही योग्य, तथा ईश्वर की कृपाओ का पात्र था। उसके राज्यकाल मे शिक्षा तथा ज्ञान को उन्नति प्राप्त हुई और आलिमो तथा बुद्धिमानो को आश्रय प्राप्त हुआ।

अपने भाग्य की उन्नति के काल मे उसने शोर के किले की विजय हेतु प्रस्थान किया। कहा जाता (५२६) है कि उस समय शोर का किला गाजी सैयिद खा के अधीन था। गाजी ने जब यह सुना कि सुल्तान इस प्रदेश पर चढाई कर रहा है तो उसने तैयारी करके किले से निकल कर १० कोस आगे बढ कर सुल्तान हुसेन से युद्ध किया। उसने अत्यधिक वीरता एव पौरुष का प्रदर्शन किया किन्तु पराजित होकर रणक्षेत्र से भाग खडा हुआ और शोर पहुचे बिना बहरा कस्बे की ओर पहुचा। गाज़ी के परिवार वालो ने जो शोर के किले मे थे विभिन्न भागो मे विभक्त होकर किले को दृढ बना लिया और सर्वदा

बहरा, चुनौत तथा खोशाब से जो सैयिद खा के अधीन थे, सहायता की प्रतीक्षा किया करते थे। जब अवरोध कई दिनो तक चलता रहा और वे सहायता पहुचने से निराश हो गये तो क्षमा-याचना करके किले को समर्पित कर दिया और बहरा चले गये।

सुल्तान हुसेन कुछ दिन तक शोर मे शासन-व्यवस्था ठीक करने के लिए ठहरा रहा। तदुपरान्त उसने चुनौत कस्बे की ओर प्रस्थान किया। मलिक माझी खुक्खर जो सैयिद खा की ओर से उस स्थान का दारोगा था अपने सम्मान की रक्षा हेतु कुछ दिन तक किले मे बन्द रहा। तत्पश्चात् क्षमा-याचना करके चुनौत के किले को समर्पित करके बहरा चला गया। सुल्तान हुसेन अपने राज्य की सीमा की व्यवस्था करके मुल्तान चला गया। मुल्तान मे कुछ दिन तक ठहर कर विश्राम किया। तत्पश्चात् उसने (५२७) कोत करोर के किले की ओर प्रस्थान किया और उस क्षेत्र मे धनकोत के किले की सीमा तक के स्थान अपने अधिकार मे कर लिये।

शेख यूसुफ समय समय पर सुल्तान बहलोल से अपने ऊपर किये गये अत्याचारो के न्याय की याचना किया करता था। जिस समय सुल्तान हुसेन धनकोत की ओर गया हुआ था, तो सुल्तान बहलोल ने अवसर पाकर अपने पुत्र बारबक शाह को, जिसका विवरण देहली तथा जौनपुर के इतिहास के सम्बन्ध मे दिया जा चुका है, मुल्तान पर आक्रमण करने का आदेश दिया। तातार खा लोदी को पजाब की सेना सहित बारबक शाह की सहायता करने का आदेश दिया। बारबक शाह तथा तातार खा ने निरन्तर यात्रा करते हुए मुल्तान की ओर प्रस्थान किया।

सयोग से उसी समय सुल्तान हुसेन के सगे भाई ने जो कोत करोर के किले का हाकिम था, सुल्तान शिहाबुद्दीन की उपाधि धारण करके, विद्रोह कर दिया। सुल्तान हुसेन कोत करोर के किले के उपद्रव को शान्त करना परमावश्यक समझ कर शीघ्रातिशीघ्र उस स्थान पर पहुच गया और सुल्तान शिहाबुद्दीन को जीवित बन्दी बना लिया और उसके पाव मे लोहे की बेडिया डाल कर मुल्तान की ओर चल दिया।

इसी बीच मे गुप्तचरो द्वारा ज्ञात हुआ कि बारबक शाह तथा तातार खा मुल्तान के क्षेत्र मे ईदगाह के निकट नगर के उत्तर मे पडाव किये हुए है और किले पर आक्रमण करने तथा उसको विजय करने का प्रयत्न करने की व्यवस्था कर रहे है। सुल्तान हुसेन रातोरात सिन्ध नदी को पार करके रात्रि के अन्त मे मुल्तान के किले मे प्रविष्ट हुआ और तत्काल अपनी समस्त सेना को एकत्र किया और कहा, "समस्त सेना से युद्ध की आशा नही की जाती। कुछ लोग अपने परिवार की अधिकता के कारण बचते रहते है। वे लोग यद्यपि युद्ध के योग्य नही होते फिर भी अन्य कार्यों के लिए उदाहरणार्थ किले की रक्षा तथा सेना की सख्या को बढाने के काम आते है।" यह कह कर उसने घोषणा की "जो नि सकोच युद्ध के लिए (५२८) उद्यत हो वह प्रात काल नगर के बाहर चला जाय और शेष सेना किले की रक्षा मे व्यस्त रहे।" १०,००० अश्वारोही तथा पदाती युद्ध के लिये तैयार हुए।

प्रात काल वह युद्ध के ढोल बजवाता हुआ नगर के बाहर निकला। सेना को नदी के सामने करके आदेश दिया कि समस्त अश्वारोही घोडो पर से उतर पडे। सर्वप्रथम वह स्वय घोडे पर से उतरा और आदेश दिया कि समस्त सेना वाले तीन तीन बाण शत्रु की ओर फेके। प्रथम बार जब १२,००० बाण धनुष से निकले तो शत्रु की सेना मे घबराहट व्यापक हो गई। दूसरी बार वे सगठित हुए और तीसरी बार जगल की ओर भाग खडे हुए। शत्रुओं के हृदय मे आतक इस सीमा तक आरूढ हो गया था कि पलायन करते हुए जब वे शोर के किले के पास पहुचे तो उन्होने किले की ओर कोई ध्यान न दिया और

जनौत कस्बे तक घोडे की बाग जरा भी न मोडी। इस विजय से मुल्तान की सेना की सख्या तथा समृद्धि मे वृद्धि हो गई।

जब बारबक शाह तथा तातार खा जनौत कस्बे मे पहुचे तो उन्होने सुल्तान हुसेन के थानेदार को उसके ३०० व्यक्तियो सहित वचन देकर किले के बाहर निकाला और तलवार के घाट उतार दिया। सुल्तान हुसेन ने (बारबक शाह) की पराजय को बहुत बडी सफलता समझ कर जनौत को मुक्त कराने की ओर ध्यान न दिया।

उन्ही दिनो मे मलिक सोहराब दौदाई जो इस्माईल खा तथा फतह खा का पिता था, अपनी कौम तथा कबीले सहित कीज तथा मकरान के निकट से सुल्तान हुसेन की सेवा मे उपस्थित हुआ। सुल्तान ने मलिक सोहराब के चरणो को अपने लिये शुभ समझ कर कोत करोर के किले से धनकोत के किले तक (५२९) की समस्त विलायत[1] मलिक सोहराब तथा उसकी कौम वालो को प्रदान कर दी। यह समाचार पाकर बिलोचिस्तान से बिलोचियो की बहुत बडी सख्या सुल्तान हुसेन की सेवा मे उपस्थित हुई। नित्य प्रति उनकी सख्या मे वृद्धि होने लगी। सुल्तान हुसेन ने शेष विलायत, जिसमे सिन्ध तट के आबाद एव समृद्ध स्थान सम्मिलित हैं, अन्य बिल्लोचियो को वेतन मे दे दी। शनै-शनै सीतपुर से धन्कोत तक की समस्त विलायत बिल्लोचियो को प्राप्त हो गई।

उन्ही दिनो मे जाम बायज़ीद तथा जाम इबराहीम जो सहीता कबीले के बुजुर्ग थे, सिन्ध की विलायत के हाकिम जाम नन्दा से रुष्ट होकर सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुए। इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि भक्कर तथा थट्टा के मध्य की विलायत के अधिकाश महाल सहीता लोगो के, जो अपने आपको जमशेद[2] की सन्तान से समझते थे, अधीन थे। क्योकि सहीता लोग वीरता एव पौरुष मे समस्त कबीलो की अपेक्षा श्रेष्ठ थे, अत जाम नन्दा जो सहीता कौम से सम्बिन्धत था और अपने आपको जमशेद की सन्तान समझता था, सर्वदा सहीता कौम से भयभीत रहा करता था। सयोगवश सहीता सरदारो मे परस्पर शत्रुता उत्पन्न हो गई। जाम नन्दा ने यह बात अपने लिये बडी ही हितकर समझकर, जाम बायजीद तथा जाम इबराहीम के विरोधियो का साथ दिया। जाम बायजीद तथा जाम इबराहीम, जो दोनो सगे भाई थे, जाम नन्दा से रुष्ट होकर सुल्तान हुसेन से मिल गये। क्योकि सुल्तान की माता जाम बायजीद की बहिन थी, अत सुल्तान ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया और शोर की विलायत जाम बायजीद को तथा उच्छ की विलायत जाम इबराहीम को प्रदान कर दी और उन दोनों को उनकी जागीर मे भेज दिया।

(५३०) क्योकि जाम बायज़ीद स्वय विद्वान् था, अत वह सर्वदा विद्वानो की गोष्ठी मे रहा करता था। उस क्षेत्र मे जहा कही वह किसी विद्वान् के विषय मे सुन पाता था तो वह उसके प्रति इतनी अधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित करता था कि वह विवश होकर जाम बायजीद की सेवा मे पहुच जाता था और उससे पृथक् न होता था। कहा जाता है कि जाम बायजीद विद्वानो से इतना प्रेम करता था कि शेख जलालुद्दीन कुरेशी को, जो शेख हाकिम कुरेशी के पुत्रो मे से था और खुरासान मे विद्याध्ययन किया करता था, नेत्रहीन होने के बावजूद विजारत का पद प्रदान कर दिया था औराज्य की समस्त समस्याओ मे उससे

१ राज्य
२ जमशेद -ईरान के पेशदादी वश का चौथा बादशाह। उसका राज्यकाल ईसा के ८०० वर्ष पूर्व बताया जाता है। उसके सम्बन्ध मे बड़ी विचित्र कहानियां कही जाती हैं। कहा जाता है कि वह बड़ा प्रतापी बादशाह था।

परामर्श किया करता था। वह अपना समय विद्वानो की गोष्ठी मे व्यतीत करता था और ईश्वर के आदेशो का इतना अधिक पालन करता था कि एक बार उसने शोर मे एक भवन का निर्माण प्रारम्भ कराया। सयोगवश उसमे एक खज़ाना मिल गया। उसने उसमे से कुछ व्यय न किया, और समस्त खजाना सुल्तान हुसेन की सेवा मे भेज दिया। सुल्तान को इससे उसके प्रति अत्यधिक श्रद्धा हो गई।

जब सुल्तान बहलोल की मृत्यु हो गई और सुल्तान सिकन्दर बादशाह हुआ तो सुल्तान ने सवेदना तथा बधाई के पत्र एव उपहार राजदूतो के हाथ भेजे और सधि का प्रस्ताव रक्खा। क्योकि सुल्तान शरीअत का बडा सम्मान करता था, तथा ईश्वर का बहुत बडा भक्त था अत उसने सधि करना स्वीकार कर लिया। यह निश्चय हुआ कि "दोनो पक्ष सगठित तथा एक दूसरे के मित्र रहे। किसी की भी सेना अपने राज्य की सीमा के आगे न बढे। जिस किसी को भी सहायता की आवश्यकता हो वह उसकी सहायता करे।" प्रतिज्ञा-पत्र लिख जाने के उपरान्त अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने उस पर साक्षी के रूप मे अपने-अपने हस्ताक्षर कर दिये। सुल्तान सिकन्दर ने राजदूतो को खिलअत देकर लौटा दिया।

(५३१) कहा जाता है कि सुल्तान हुसेन का सुल्तान मुजफ्फर शाह से पत्र-व्यवहार हुआ करता था और दोनो ओर से राजदूत आते-जाते रहते थे। एक बार सुल्तान हुसेन ने काजी मुहम्मद[1] नामक एक व्यक्ति को, जो बहुत बडा विद्वान् था, राजदूत बना कर सुल्तान मुजफ्फर गुजराती की सेवा मे भेजा और काज़ी से कहा कि "तू सुल्तान मुजफ्फर से विदा होते समय उससे यह प्रार्थना कर कि सुल्तान तेरे साथ एक सेवक कर दे जो तुझे शाही भवनो का निरीक्षण करा दे।" सुल्तान हुसेन का उद्देश्य यह था कि वह मुल्तान मे गुजरात के सुल्तानो के महलो के समान महलो का निर्माण कराये। जब काजी मुहम्मद अहमदा-बाद पहुचा तो उसने उपहार प्रस्तुत किये और विदा होते समय जिस प्रार्थना का उसे आदेश हुआ था, वह प्रार्थना की। सुल्तान मुजफ्फर ने काज़ी मुहम्मद के साथ एक सेवक इस आशय से कर दिया कि वह उसे समस्त भवन विस्तार से दिखा दे।

जब काजी मुहम्मद गुजरात से मुल्तान पहुचा तो राजदूत के कर्त्तव्यो को सम्पन्न करने के उपरान्त उसने गुजरात के सुल्तानो के महलो की थोडी सी विशेषता का उल्लेख करना चाहा किन्तु उससे यह सम्भव न हो सका। उसने धृष्टता करते हुए कहा कि, "यदि मुल्तान के समस्त राज्य का कर एक महल के निर्माण पर व्यय कर दिया जाय तो भी यह नही कहा जा सकता कि वह पूरा हो सकेगा अथवा नही।" सुल्तान हुसेन यह बात सुनकर बडा दुखी हुआ। एमादुलमुल्क बोबक वजीर ने उससे उसके शोक का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "मै इस कारण दुखी हू कि मुझे बादशाह कहा जाता है किन्तु बादशाही (५३२) के अर्थ से वचित हू। इसके बावजूद कयामत मे मुझसे बादशाहो के समान पूछ-ताछ होगी।" एमादुलमुल्क ने कहा कि, "बादशाह को इस बात से दुखी न होना चाहिये कारण कि ईश्वर ने प्रत्येक राज्य को कोई न कोई ऐसी विशेषता प्रदान की है जो अन्य राज्यो मे नही। गुजरात, दक्षिण, मालवा तथा बगाल के राज्य यद्यपि उपजाऊ है और वहा सुख-सम्पन्नता के अपार साधन है किन्तु मुल्तान के राज्य मे योग्य लोग पाये जाते है कारण कि मुल्तान के बुजुर्ग जहा भी गये अत्यधिक सम्मानित हुए। शेखुल इस्लाम, शेख बहाउद्दीन ज़करिया के सिलसिले के न जाने कितने लोग मुल्तान मे है, जो योग्यता मे शेख यूसुफ कुरेशी से, जिसके पुत्र को सुल्तान बहलोल ने अपनी सुपुत्री दे दी थी, और जिसका वह इतना

१ एक पोथी मे 'काज़ी महमूद'।

आदर-सम्मान करता था श्रेष्ठ है। इसी प्रकार बुखारी सिलसिले के न जाने कितने लोग उच्छ तथा मुल्तान मे वर्त्तमान है जो बाह्य तथा आन्तरिक श्रेष्ठता मे हाजी अब्दुल वहहाब से वढकर है। आलिमो मे मौलाना फतहुल्लाह तथा उनके शिष्य मौलाना अजीजुल्लाह, मुल्तान मे ऐसे हुए है कि यदि उनके विषय मे यह कहा जायगा कि हिन्दुस्तान के राज्य को उन पर गर्व होगा तो अनुचित न होगा।" एमादुलमुल्क ने जब इसी प्रकार की अन्य बाते कही तो सुल्तान प्रसन्न हो गया।

सुल्तान फ़ीरोज़

जब सुल्तान हुसेन वृद्ध हो गया तो उसने अपने समक्ष अपने ज्येष्ठ पुत्र फीरोज खा को फीरोज शाह की उपाधि देकर उसके नाम का खुत्बा पढवा दिया और स्वय खुदा की एवादत मे लग गया और वजीर का पद पूर्व की भाति एमादुलमुल्क बोबक के अधीन रहा। सुल्तान फीरोज खा अनुभव-शून्य था, और उसमे क्रोध अत्यधिक था। दान-पुण्य से उसे कोई रुचि न थी। वह सर्वदा बलाल वल्द एमादुलमुल्क (५३३) से, जो विद्वत्ता, दान-पुण्य तथा अन्य गुणो से सुशोभित था, ईर्ष्या किया करता था। उसने एक बार अपने एक विश्वासपात्र दास से कहा, "बिलाल शाही धन पर अधिकार जमा कर विद्रोह करना चाहता है और वह लोगो को मिला कर स्वय राज्य ग्रहण करना चाहता है। राज्य के लिये यही उचित होगा कि विद्रोह के पूर्व उसका प्रवन्ध कर लिया जाय।" वह अल्पदर्शी दास बलाल की हत्या पर कटिबद्ध हो गया और समय की प्रतीक्षा करने लगा। सयोगवश बलाल नौका पर भ्रमण करने गया था। सायकाल की नमाज के उपरान्त वह नगर मे प्रविष्ट होना चाहता था। उस दास ने एक गुप्त स्थान से निकल कर एक ऐसा बाण उसके सीने पर मारा कि उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। एमादुलमुल्क ने थोडे से समय मे सुल्तान फ़ीरोज शाह को विष दे दिया और अपने पुत्र का प्रतिकार भली-भाति ले लिया।

सुल्तान हुसेन वृद्धावस्था मे यह कष्ट पाने के कारण अत्यधिक विलाप किया करता था। उसने अपने राज्य की रक्षा तथा बदला लेने के लिए पुन अपने नाम का खुत्बा पढवा कर महमूद खा बिन (पुत्र) सुल्तान फीरोज़ को अपना वलीअहद नियुक्त कर दिया। पूर्व की भाति शासन प्रबन्ध एमादुलमुल्क को सौप दिया और उसके प्रति किसी क्रोध अथवा शत्रुता का प्रदर्शन न किया। कुछ दिन उपरान्त जाम बायज़ीद को एकान्त मे बुला कर कहा, "तू मेरा मामा होता है और मेरे हार्दिक शोक से अवगत है। ऐसा उपाय कर कि हम इस नमकहराम से बदला ले ले।" जाम बायजीद ने इसे स्वीकार कर लिया और सुल्तान से विदा हो गया। रात्रि मे उसने अपनी सेना मे घोषणा करा दी कि "सुल्तान हुसेन सेना का निरीक्षण करना चाहता है। प्रात काल सभी लोग अस्त्र-शस्त्र लगा कर घर के बाहर उपस्थित हो।" प्रात काल जाम बायज़ीद अपने सैनिको सहित सशस्त्र होकर निकला। जब सुल्तान को सूचना मिली तो उसने एमादुलमुल्क को आदेश दिया कि वह जाकर जाम तथा उसके सेवको का उचित रूप से निरीक्षण (५३४) करे। जब एमादुलमुल्क निरीक्षण करने के लिये निकला तो जाम बायज़ीद के आदमियो ने तुरन्त एमादुलमुल्क को बन्दी बना लिया।

सुल्तान हुसेन ने विजारत का पद तत्काल जाम बायजीद को प्रदान कर दिया और विजारत के साथ साथ उसे महमूद खा बिन फीरोज खां का अतालीक भी नियुक्त कर दिया। कुछ दिन उपरान्त सुल्तान हुसेन रुग्ण होकर मर गया। उसकी मृत्यु रबिवार २६ सफ़र ९०८ हि० (३१ अगस्त १५०२

ई०) और कुछ लोगो के मतानुसार ९०४ हि० (१४९८-९९ ई०) मे हुई[1] कुछ लोगो के मतानुसार उसने ३४ वर्ष और कुछ लोगो के मतानुसार ३६ वर्ष राज्य किया।

लेखक निजामुद्दीन अहमद निवेदन करता है कि 'तबकाते बहादुर शाही' के सकलनकर्त्ता ने अपने विवरण मे दो तीन स्थानो पर भूल की है। एक यह कि सुल्तान महमूद को सुल्तान हुसेन का पुत्र कहा है, दूसरे यह कि सुल्तान फीरोज का सिहासनारोहण, सुल्तान महमूद के बाद लिखा है। इसके अतिरिक्त वह सुल्तान फीरोज को सुल्तान महमूद का भाई कहता है। वास्तव मे सुल्तान महमूद सुल्तान फीरोज का पुत्र था और उसका सिहासनारोहण सुल्तान फीरोज तथा सुल्तान हुसेन के उपरान्त हुआ।

सुल्तान महमूद बिन सुल्तान फ़ीरोज़

जब सुल्तान हुसेन की मृत्यु हो गई तो दूसरे दिन सोमवार २७ सफर[2] को जाम बायजीद ने अमीरो एव प्रतिष्ठित लोगो की सहमति से सुल्तान हुसेन की वसीयत के अनुसार महमूद खा को सिहा- (५३५) सनारूढ करके दरबार कराया। अल्पावस्था के कारण वह नीच लोगों तथा कमीनो को प्रोत्साहन देने लगा। अपना समय हसी-मजाक मे व्यतीत किया करता था। इसी कारण प्रतिष्ठित एव सम्मानित व्यक्ति उससे दूर रहने लगे। कमीनों ने उसके स्वभाव पर अधिकार प्राप्त कर लेने के कारण इस बात का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया कि सुल्तान महमूद को जाम बायजीद का विरोधी बना दे। इस उद्देश्य से वे मनगढत बाते कहने लगे। जाम बायजीद ने यह बात कई बार सुनी। वह अपने दायरे[3] से, जो उसने चनाब नदी के निकट मुल्तान से एक फरसख पर बसाया था, नगर मे आता था और राज्य का प्रबन्ध उसी स्थान से सम्पन्न करता था तथा अपना समय किसी न किसी प्रकार व्यतीत करता था।

इसी दशा मे एक दिन जाम बायजीद ने कुछ कस्बो के मुकद्दमो को कर वसूल करने के उद्देश्य से बुलवाया था। क्योकि कुछ मुकद्दमो ने विद्रोह कर दिया था अत जाम बायजीद ने कहा कि, "उस समूह के बाल काट कर उन्हे नगर मे घुमाया जाय।" अशुभचिन्तको ने सुल्तान महमूद से जाकर कहा कि, "जाम बायजीद ने सुल्तान के कुछ विशेष दासो को अपमानित तथा दड देना प्रारम्भ कर दिया है और वह स्वय दीवान मे नही उपस्थित होता और अपने पुत्र आलम खा को भेज देता है। राज्य के लिये यह उचित होगा कि आलम खा को दरबार मे अपमानित किया जाय ताकि जाम बायजीद के गौरव को धक्का पहुचे और वह लोगो की दृष्टि मे अपमानित हो जाय।"

आलम खा बडा ही योग्य युवक था और सुन्दरता एव चरित्र मे अद्वितीय था। सयोग से आलम खा सुल्तान महमूद के अभिवादन हेतु पहुचा। उसे इस बात का पता न था कि उससे ईर्ष्या रखने वालो ने इस प्रकार का षड्यन्त्र रचा है। जब वह सुल्तान महमूद की सेवा मे पहुचा तो एक दरबारी ने (५३६) उससे पूछा कि, "अमुक मुकद्दमो ने कौन-सा अपराध किया था कि जाम बायजीद ने उनके सिर के बाल मुडवा दिये और उन्हें अपमानित किया ? न्याय यही है कि उसके बदले मे तेरे बाल मुडवा दिये जाय।" क्योकि आलम खा ने इस प्रकार की बात कभी न सुनी थी अत उसने रुष्ट होकर कहा, "हे

१ एक पोथी मे 'कुछ लोगो का मत है कि राज्य की अवधि ३० वर्ष थी'। एक पोथी के अनुसार, कुछ लोगों का मत है कि उसने २८ वर्ष राज्य किया।

२ २७ सफ़र ९०८ हि० (१ सितम्बर १५०२ ई०)

३ यहां 'मुहल्ले' से तात्पर्य है।

दुष्ट तेरा यह साहस कि सुल्तान के दरबार मे मुझसे इस प्रकार की बात कहे।" अभी यह बात समाप्त भी न हुई थी कि बारह व्यक्ति इधर-उधर से आलम खा पर टूट पडे। सर्वप्रथम उन्होने आलम खा के सिर से पगडी उतार ली और उसे घूँसो तथा लातो से मारा। इसी बीच मे आलम खा ने बडी कठिनाई से म्यान से कटार निकाल ली और अपना हाथ उठाया। सयोग से सुल्तान महमूद उस समूह के ऊपर जो एक दूसरे को ढूँढ रहे थे टहल रहा था। कटार की नोक सुल्तान महमूद के मत्थे मे लगी। वह चिल्लाता हुआ भूमि पर गिर पडा। उसके घाव से अत्यधिक रक्त बहने लगा। वे लोग जो आलम खा से चिमटे हुये थे उसे छोड कर सुल्तान की ओर बढे। आलम खा मार खाकर अपने प्राण के भय से भाग खडा हुआ। जब वह द्वार पर पहुचा तो उसने देखा कि द्वार बन्द है। उसने जोर लगा कर द्वार को तोड डाला और बाहर निकल गया। अपने सेवक से कपडा लेकर अपने सिर पर बाध लिया और चल दिया।

जब वह जाम बायजीद की सेवा मे पहुचा तो उसने सब हाल बताया। जाम ने कहा, "हे पुत्र! तूने ऐसा कार्य किया जिससे लोक तथा परलोक मे लज्जित होना पडेगा। क्योकि इसका उपचार अब सम्भव नही। अत शीघ्रातिशीघ्र शोर चला जा और समस्त सेना को सुल्तान महमूद के सेना एकत्र करने के पूर्व शोर पहुचा दे।" जाम बायजीद ने तत्काल आलम खा को शोर की ओर विदा कर दिया। जब उसकी (५३७) सेना शोर पहुच गई तो जाम बायजीद कूच का नक्कारा बजा कर शोर की ओर चल दिया।

सुल्तान महमूद ने यह समाचार पाकर एक सेना अमीरो सहित उसका पीछा करने के लिये भेजी। जब दोनो सेनाये एक दूसरे के निकट पहुची तो जाम बायजीद पलट कर खडा हो गया। दोनो ओर से योग्य युवक पृथक् होकर पौरुष का प्रदर्शन करने लगे। अन्त मे जाम बायजीद उस समूह को पराजित करके शोर की ओर रवाना हो गया। शोर पहुच कर उसने सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल के नाम का खुत्बा पढवा दिया और समस्त घटना का उल्लेख उसकी सेवा मे भेज दिया। सुल्तान सिकन्दर ने जाम बायजीद को प्रोत्साहनयुक्त फरमान तथा खिलअत भेजा और दूसरा फरमान पजाब के हाकिम दौलत खा लोदी को लिखा कि, "क्योकि जाम बायजीद ने हमसे प्रार्थना की है और हमारे नाम का खुत्बा पढवा दिया है अत तुझे चाहिये कि तू उसके विषय मे सावधान रहे और उसको सहायता प्रदान करने मे कोई कमी न करे। जब कभी उसे सहायता की आवश्यकता हो तो सहायता के लिये पहुच जाना।"

कुछ दिन उपरान्त सुल्तान महमूद ने समस्त सेना एकत्र की और शोर की ओर प्रस्थान किया। जाम बायजीद तथा आलम खा ने अपनी सेना सहित शोर से निकल कर १० कोस पर उन लोगो से युद्ध किया और रावी नदी को अपने समक्ष रखते हुए पडाव किया। एक पत्र दौलत खा लोदी को लिखकर उसे पूरी घटना से अवगत कराया। अभी सुल्तान महमूद तथा जाम बायजीद मे युद्ध ही हो रहा था कि दौलत खा लोदी पजाब की सेना सहित जाम बायजीद की सहायतार्थ पहुच गया। उसने अपने विश्वासपात्र सुल्तान महमूद की सेवा मे भेज कर सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। अन्त मे दौलत खा के प्रयत्न से इस शर्त पर सधि हो गई कि रावी नदी के मध्य मे सीमा बनी रहे और कोई भी अपनी सीमा से आगे न बढे। दौलत खा लोदी ने सुल्तान महमूद को मुल्तान भेजा और जाम बायजीद को शोर भेजकर स्वयं (५३८) लाहौर पहुच गया। यद्यपि दौलत खा सरीखा व्यक्ति मध्यस्थ बना किन्तु फिर भी सधि का कार्य यथारूप सम्पन्न न हो सका था।

इसी बीच मे मीर चाकरान्द अपने दो पुत्रो, मीर अलहदाद तथा मीर शहदाद सहित सीवी से मुल्तान पहुचे। सर्वप्रथम मुल्तान मे शीआ[1] मजहब को जिस व्यक्ति ने प्रचलित कराया वह मीर शहदाद

१ सम्भवत लेखक का तात्पर्य १२ इमामो को मानने वाले असना अशअरी शीओ से है।

था। क्योकि मलिक सोहराब दौदाई को लगाहो की सेवा मे पूर्ण सम्मान प्राप्त था अत मीर चाकरान्द वहा न ठहर सका और उसने जाम बायजीद से सहायता की प्रार्थना की। क्योकि वह भी एक कबीले का स्वामी था अत जाम बायजीद ने उससे आदरपूर्वक व्यवहार किया। अपनी विलायत का थोडा-सा भाग जो उसके खालसे मे था मीर चाकरान्द तथा उसके पुत्रो को दे दिया।

जाम बायजीद बडा ही दानी तथा सदाचारी था। वह प्रजा, पवित्र लोगो, तथा आलिमो के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित किया करता था। कहा जाता है कि युद्ध के दिनो मे आलिमो तथा पवित्र लोगो के वजीफे एव अदरार[1] नौकाओ मे रख कर शोर से मुल्तान पहुचवाया करता था। मुल्तान के प्रतिष्ठित लोगो के प्रति निरन्तर उपकार के कारण बहुत से प्रतिष्ठित लोगो ने अपनी जन्मभूमि को त्याग कर शोर मे निवास करना प्रारम्भ कर दिया था। कुछ लोगो को उसने आग्रह करके बुलवाया था। उनमे से मौलाना अजीजुल्लाह मौलाना फतहुल्लाह के चेले थे जिन्हे उसने बडे आग्रह से बुलवाया। जब मौलाना अजीजुल्लाह शोर के निकट पहुचे तो वह उन्हे बडे सम्मान से नगर मे लाया और बडे शिष्टतापूर्वक अपने अन्त पुर मे स्थान प्रदान किया और अपने सेवको को आदेश दिया कि वे मौलाना के हाथ धुलाये और कहा कि, "उस जल को आशीर्वाद हेतु घर के चारो कोनो मे डाल दिया जाय।"

(५३९) जाम बायजीद का वकील शेख जलालुद्दीन कुरेशी एक विचित्र कथा का उल्लेख किया करता था। यद्यपि इस प्रसग मे इसका कोई स्थान नही है किन्तु शिक्षाप्रद होने के कारण उसका उल्लेख किया जाता है। कहा जाता है कि जब मौलाना अज़ीजुल्लाह शोर पहुचे तो जाम बायजीद ने उनका अत्यधिक आदर-सम्मान किया। मौलाना को अपने अन्त पुर मे ले गया और स्त्रियो को आदेश दिया कि वे मौलाना की सेवा करती रहे। शेख जलालुद्दीन कुरेशी ने मौलाना की सेवा मे एक व्यक्ति को भेज कर यह सदेश प्रेषित किया कि जाम बायजीद ने अभिवादन के उपरान्त कहलाया है कि मौलाना की सेवा मे स्त्रियो को भेजने का यह उद्देश्य है कि क्योकि वे अकेले पधारे है अत जिसे वे पसन्द करे उसे मौलाना की सेवा मे भेज दिया जाय। मौलाना ने उत्तर मे कहलाया कि "ईश्वर न करे कि कोई मनुष्य अपने मित्रो की स्त्रियो की ओर बुरी दृष्टि डाले। इसके अतिरिक्त फकीर की अवस्था ऐसी नही है जो वह इस ओर प्रेरित हो।" जब मौलाना अजीजुल्लाह का सेवक जाम बायजीद के पास यह सदेश लेकर पहुचा तो जाम ने कहा कि, "मुझे इस सदेश की सूचना नही।" मौलाना ने लज्जित होकर कहा कि, "जिसने यह कार्य किया हो उसकी गर्दन टूट जाय।" और जाम बायजीद से भेट किये बिना वे अपने घर चले गये। जब तक जाम को सूचना हो उस समय तक मौलाना, जाम की सीमान्त को पार कर चुके थे। अन्त मे जो कुछ मौलाना ने कहा था वही हुआ। शेख जलालुद्दीन सुल्तान सिकन्दर की सेवा से भाग कर शोर पहुचा। रात्रि मे उसका पाव कोठे से फिसल गया और वह सिर के बल गिर पडा तथा उसकी गर्दन टूट गई।

(५४०) जब बाबर बादशाह ने ९३३ हि० (१५२६ ई०) मे पजाब की विलायत[2] को अपने अधिकार मे करके देहली की ओर प्रस्थान किया तो उसने थट्टा के हाकिम मीर्जा शाह हुसेन अरगून को एक मन्शूर[3] इस आशय का भेजा कि मुल्तान तथा उस क्षेत्र का स्थान उसे दे दिया जाये। मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून ने भक्कर के किले के पास से नदी पार की। सुल्तान महमूद यह समाचार पाकर काप उठा

१ धार्मिक लोगों को सहायतार्थ दी जाने वाली वृत्ति।
२ राज्य।
३ फ़रमान।

और सेना को एकत्र करके मुल्तान नगर से दो मंजिल पर पडाव किया। शेख बहाउद्दीन जकरिया के सज्जादा नशीन शेख बहाउद्दीन कुरेशी को मीर्जा शाह हुसेन के पास दूत बनाकर भेजा। मौलाना बहलोल को भी, जो बडा वाक्पटु था और अपना उद्देश्य बडे सुन्दर ढग से प्रस्तुत करता था, शेख बहाउद्दीन के पीछे भेजा। जब शेख बहाउद्दीन तथा मौलाना बहलोल मीर्जा शाह हुसेन की सेना मे पहुचे तो मीर्जा ने उनका बडा आदर-सम्मान किया। मीर्जा ने उत्तर दिया कि, "मै सुल्तान महमूद को शिक्षा देने तथा शेख बहाउद्दीन जकरिया के मजार के दर्शनार्थ आया हू। मौलाना बहलोल ने कहा कि, "सुल्तान महमूद को यदि इसी प्रकार शिक्षा प्रदान की जाय जिस प्रकार मुहम्मद साहब ने ओवैस करनी को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की थी तो अनुचित न होगा। इसके अतिरिक्त शेख बहाउद्दीन उपस्थित हो गया है, अब कष्ट करने की क्या आवश्यकता है ?" जब शेख लौट कर सुल्तान महमूद की सेवा मे पहुचा तो रात्रि मे सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गई। कुछ लोगो का मत है कि इस वश के दास लगर खा ने अपने स्वामी की हत्या कर दी। उसकी मृत्यु ९३१ हि० (१५२४–२५ ई०) मे हुई और उसने २७ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान हुसेन बिन सुल्तान महमूद

(५४१) जब सुल्तान महमूद की मृत्यु हो गई तो किवाम खा लगाह तथा लगर खा जो सुल्तान महमूद की सेना के अग्र भाग मे थे भाग खडे हुये और मीर्जा शाह हुसेन मे मिल गये। उन्हें अत्यधिक आश्रय प्रदान किया गया और उन्होंने मुल्तान के कस्बे मीर्जा को विजय करा दिये। शेष लगाह अमीर निस्सहाय होकर मुल्तान चले गये। उन्होंने सुल्तान महमूद के पुत्र को जोकि अभी बाल्यावस्था मे था, सुल्तान हुसेन की उपाधि देकर उसके नाम का खुत्बा पढवा दिया। यद्यपि वह नाममात्र को बादशाह था किन्तु शेख शुजाउलमुल्क बुखारी, जो सुल्तान महमूद का जामाता था, विजारत के पद को अपने अधिकार मे करके शासन-प्रबन्ध करने लगा। उसे कोई भी अनुभव न था और यद्यपि मुल्तान के किले मे एक मास की भी खाद्य-सामग्री न थी किन्तु वह किला बन्द कर लेने पर उद्यत हो गया। मीर्जा शाह हुसेन ने सुल्तान हुसेन की मृत्यु को मुल्तान की विलायत की विजय का बहाना बना कर लेशमात्र को भी समय नष्ट न किया और शीघ्रातिशीघ्र पहुच कर किले को घेर लिया। जब अवरोध को कई दिन हो गये तो सैनिक भूख से व्याकुल होकर शेख शुजाउलमुल्क की सेवा मे, जिसने मुल्तान की विलायत को नष्ट करना अपना उद्देश्य बना लिया था, पहुचे और कहा कि, "अभी हमारे घोडे ताजा हैं और उनमे युद्ध की शक्ति है। यह उचित होगा कि सेनाओ का वितरण करके युद्ध के लिए अग्रसर हो। सभव है कि हमे विजय प्राप्त हो जाय। इसके अतिरिक्त किले मे बन्द होकर युद्ध करना सैनिक सहायता प्राप्त होने पर अवलम्बित होता है किन्तु आपको किसी स्थान से सहायता की आशा नही।" शेख शुजाउलमुल्क ने उस गोष्ठी मे कोई उत्तर न दिया किन्तु एकान्त मे अपने कुछ विश्वस्त सरदारो को बुलवा कर कहा कि, "अभी तक (५४२) सुल्तान हुसेन के राज्य को स्थायित्व नही प्राप्त हुआ है। यदि हम युद्ध के उद्देश्य से बाहर निकलेंगे तो सम्भव है कि अधिकाश लोग मीर्जा से आश्रय की आशा मे मिल जायगे और कुछ लोग जिन्हें अपने सम्मान की रक्षा का ध्यान है रणक्षेत्र में प्राण त्याग देंगे।"

मौलाना सादुल्लाह लाहौरी, जो अपने समय के बहुत बडे विद्वान् थे, कहा करते थे कि, "मै उन दिनो मे मुल्तान के किले मे था। जब अवरोध की अवधि कई मास तक पहुच गई तो मीर्जा शाह हुसेन की सेना ने किले के आने-जाने के स्थानो को इस प्रकार दृढ बना लिया कि कोई भी व्यक्ति बाहर से किले वालो की सहायता को न पहुच सकता था और न कोई व्यक्ति किले के बाहर जा सकता था और मुक्ति प्राप्त न कर सकता था। जो कोई आता-जाता हुआ पकडा जाता उसे तलवार के घाट उतार दिया जाता।

अन्त मे किले वालो की यह दुर्दशा हो गई कि यदि सयोग से कुत्ता अथवा बिल्ली उन्हे मिल जाती तो उसका मास हलुवे अथवा मेमने के मास के समान खा जाते थे। शेख शुजाउलमुल्क ने जादू नामक पाजी को ३ हजार कस्बे के पदातियो का सरदार बना कर किले की रक्षा उसे सौप दी थी। उस दुष्ट को जिसके घर के विषय मे यह सन्देह होता कि वहा अनाज होगा तो वह नि सकोच उस असहाय के घर को नष्ट कर देता। उसके दुष्कर्मो के कारण लोग शुजाउलमुल्क के राज्य के पतन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। अन्त मे लोगो ने आत्महत्या करना निश्चिय करके किले के ऊपर से खाई मे फादना प्रारम्भ कर दिया। मीर्जा शाह हुसैन ने लोगो की परेशानी के विषय मे अवगत होकर उनकी हत्या करानी बन्द कर दी। अवरोध के एक वर्ष तथा कुछ मास तक चलते रहने के उपरान्त एक रात्रि मे प्रात काल मीर्जा के सेवक किले मे प्रविष्ट हो गये और सहार तथा ध्वस प्रारम्भ कर दिया। ७ वर्ष से ७० वर्ष तक के (५४३) नगर निवासी, जो हत्या से बच गये, वे बन्दी बना लिए गये। जिन लोगो के विषय मे यह सदेह था कि उनके पास धन होगा उन्हे नाना प्रकार का कष्ट पहुचाया गया तथा अपमानित किया गया। यह दुर्घटना ९३२ हि० (१५२५–२६ ई०) के अन्त मे घटी।"

मौलाना सादुल्लाह अपने विषय मे इस घटना का उल्लेख करते थे कि "जब अरगून की सेना ने किले को विजय कर लिया तो कुछ लोग हमारे घर मे प्रविष्ट हो गये। सर्वप्रथम एक व्यक्ति ने मेरे पिता को, जिनका नाम मौलाना इबराहीम जामे था और जो ६५ वर्ष से पठन-पाठन का कार्य कर रहे थे और अतिम अवस्था मे अधे हो गये थे, बन्दी बना लिया। भवन के स्वच्छ होने के कारण उन लोगो को इस बात का सदेह था कि मेरे पिता धनी होगे अत वे उनका अपमान करने लगे। एक व्यक्ति ने प्रविष्ट होकर मुझे बन्दी बना लिया और वज़ीर मीर्जा की सेवा मे उपहार-स्वरूप भेट किया। सयोग से वजीर मीर्जा घर के प्रागण मे लकडी के तख्त पर बैठे थे। उन्होने आदेश दिया कि मेरे पाव मे एक जजीर डाल दी जाय और उसका एक छोर तख्त के पाये मे कस कर बाध दिया जाय। मेरी आखो से आसू न रुकते थे और मेरा विलाप अधिकाश अपने पिता के विषय मे था। कुछ क्षण उपरान्त उसने दावात मगवाई और कलम को ठीक करके कुछ लिखना चाहा किन्तु उसके हृदय मे आया कि वह वजू करके लिखे। वह वहा से उठ कर शौचगृह मे गया। क्योकि उस स्थान पर कोई न था अत मैने सिहासन के निकट पहुच कर कसीदये बर्दा[1] का एक छन्द उस कागज़ पर जिसे वजीर ने लिखने के लिए मगवाया था लिख दिया।

"छन्द लिखकर मै अपने स्थान पर पहुच गया और मेरी आखो से आसू बहते जाते थे। कुछ देर उपरान्त जब वज़ीर ने अपने स्थान पर पहुच कर कुछ लिखना चाहा तो उस कागज पर वह छन्द लिखा (५४४) हुआ मिला। उसने इधर-उधर घर मे देखा किन्तु जब घर मे कोई न मिला तो मुझसे पूछा, क्या तूने यह लिखा है? मैने कहा, 'हा।' उसने मेरे विषय मे पूछा। जब मैने अपने पिता का नाम बताया तो उसने मेरे पाव की जजीर खोल दी और अपना पीराहन[2] मुझे पहना दिया। वह तत्काल सवार होकर मीर्जा के दीवानखाने मे पहुचा और मुझे प्रस्तुत करके मेरे पिता के विषय मे निवेदन किया। मीर्ज़ा ने आदेश दिया कि, 'मेरे पिता को ढूँढ कर लाया जाय।' सयोग से जब मेरे पिता को मीर्जा के दरबार मे बडी अनुचित दशा मे प्रस्तुत किया गया तो उस समय फिकह की 'हिदाया' नामक पुस्तक की चर्चा हो रही थी। मीर्जा ने आदेश दिया कि, 'मेरे पिता तथा मुझको एक एक खिलअत दी जाय।' मेरे पिता ने परेशान होने के बावजूद इस प्रकार वार्त्ता प्रारम्भ की कि उपस्थितगण बडे प्रभावित हुए।

१ मुहम्मद साहब की प्रशसा मे एक प्रसिद्ध अरबी कसीदा।
२ कुर्ता

मीर्जा ने उसी दरबार मे मेरे पिता से अपने साथ चलने के लिए कहा और अपने अधिकारियो से कहा कि, 'मौलाना का जो कुछ भी छीना गया हो, वह उन्हे वापस किया जाय और जो न मिल सके वह सरकार से दे दिया जाय।' मेरे पिता ने कहा कि, 'यह मेरी अतिम अवस्था है और मुझे अतिम यात्रा करनी है न कि मीर्ज़ा के साथ।' अन्त मे वही हुआ जो मेरे पिता ने कहा था। दो मास उपरान्त मेरे पिता की मृत्यु हो गई।"

जब मुल्तान के किले पर विजय प्राप्त हो गई तो मीर्जा शाह हुसेन ने सुल्तान हुसेन को एक मुअक्किल को सौप दिया और शेख शुजाउलमुल्क बुखारी को नाना प्रकार से कष्ट पहुचाने लगा। उससे अत्यधिक धन रोजाना वसूल किया जाता था। जब मुल्तान इस सीमा तक वीरान हो गया कि किसी के हृदय मे भी यह बात न आती थी कि वह पुन बस सकेगा तो मीर्जा ने मुल्तान के कार्य को सरल समझ कर ख्वाजा (५४५) शम्सुद्दीन नामक एक व्यक्ति को मुल्तान के किले की रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया और लगर खा को उसका पेश दस्त[1] बनाकर थट्टा की ओर लौट गया। लगर खा ने प्रत्येक स्थान पर लोगो को प्रोत्साहन देकर मुल्तान को पुन बसाया। उसने मुल्तान के निवासियो से मिल कर ख्वाजा शम्सुद्दीन को वहा से निकाल दिया और स्वय स्थायी रूप से शासन करने लगा।

१ सहायक

1

कश्मीर

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

तबकाते अकबरी

तबक़ाते अकबरी

भाग ३

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)
(प्रकाशन—कलकत्ता)

कश्मीर के सुल्तानों का इतिहास

७४७ हि० (१३४६–४७ ई०) से ९९५ हि० (१५८६–८७ ई०) तक अर्थात् २४९ वर्ष तक कश्मीर मे मुसलमानो का राज्य रहा। उसका उल्लेख इस प्रकार है

सुल्तान शम्सुद्दीन आले ताहिर

(४२४) यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि कश्मीर की विलायत[1] सर्वदा राजा लोगो के अधिकार मे रही और एक के उपरान्त दूसरा राज्य करता रहा। ७१५ हि० (१३१५–१६ ई०) मे राजा सरदेव[2] का राज्य था। उसी समय शाहमीर नामक एक व्यक्ति जो अपने आपको शाहमीर बिन ताहिर आल बिन आले शाशब बिन गर्शास्प बिन नेकरोज कहता था और अपने वश को अर्जुन तक, जो पाडवो मे से था, ले जाता था। पाण्डवो का हाल 'महाभारत' मे लिखा हुआ है जिसका अनुवाद अकबर बादशाह के आदेशानुसार हुआ और उसका नाम "रज्मनामा" रखा गया। कहा जाता है कि वह राजा का नौकर हो गया और बहुत समय तक उसका विश्वासपात्र बनकर सेवा करता रहा।

राजा सरदेव की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र राजा रजन सिहासनारूढ हुआ। उसने शाहमीर को अपना वजीर नियुक्त करके अपने शासन-प्रबन्ध के समस्त कार्य उसे सौप दिये और उसे अपने पुत्र (४२५) चन्द्र नामक का अतालीक बना दिया। जब राजा रजन की मृत्यु हो गई तो उसका सम्बन्धी राजा ऊदन[3] कधार से आकर सिहासनारूढ हो गया और शाहमीर को जो चन्द्र बिन राजा रजन का अतालीक था अपना वकील बना लिया। जब उसके दो पुत्रों को जिनमे से एक का नाम जमशेद तथा दूसरे का नाम अली शेर था,[4] अत्यधिक विश्वास प्राप्त हो गया तो उसने उन्हे अधिकार प्रदान कर दिये। शाह मीर के दो अन्य पुत्र भी थे। एक का नाम शेर अशामक और दूसरे का हिन्दाल था। वे लोग बहुत बडे सूफ़ी थे।

१ राज्य।
२ एक पोथी के अनुसार 'शसह देव'।
३ एक पोथी के अनुसार 'अदवन'।
४ एक पोथी के अनुसार 'एक का नाम जमशेद तथा दूसरे का मुबारिशर था'।

जब शाहमीर तथा उसके पुत्रो को अत्यधिक प्रभुत्व प्राप्त हो गया तो राजा ऊदन देव एक बात पर उनसे रुष्ट हो गया और उन्हे अपने घर मे आने से रोक दिया। शाह मीर तथा उसके पुत्रो ने कश्मीर के समस्त परगनो को अपने अधिकार मे कर लिया और राजा के अधिकाश नौकरो को मिला लिया। उनकी शक्ति तथा प्रभुत्व उन्नति पाने लगा और राजा की शक्ति घटने लगी। ७४७ हि० (१३४६-४७ ई०) मे राजा ऊदन देव की मृत्यु हो गई और उसका स्थान उसकी पत्नी कोपा देवी ने ले लिया। वह दृढतापूर्वक राज्य करना चाहती थी। उसने शाहमीर के पास सदेश भेजा कि वह चन्द्र बिन राजा रजन को सिहासनारूढ कर दे। शाहमीर ने यह बात स्वीकार न की और उसकी आज्ञा का पालन न किया। रानी ने एक बहुत बड़ी सेना लेकर उस पर आक्रमण किया किन्तु वह बन्दी बना ली गई। तदुपरान्त उसने शाहमीर से विवाह कर लिया और इस्लाम स्वीकार कर लिया। एक दिन तथा एक रात्रि मे वे साथ रहे। दूसरे दिन शाह मीर ने उसे बन्दी बना लिया और राज्य की पताका बलन्द कर दी (४२६) तथा खुत्बा एव सिक्का अपने नाम से चला दिया। उसने अपनी उपाधि सुल्तान शम्सुद्दीन रखी। कश्मीर मे इस्लाम का प्रारम्भ उसी से हुआ।

सुल्तान शम्सुद्दीन

जब सुल्तान शम्सुद्दीन बादशाह हुआ तो जो अत्याचार पिछले राजाओ के राज्यकाल मे हुआ करते थे उनका उसने अन्त करा दिया और शत्रुओ से निश्चिन्त होकर समस्त कश्मीर की विलायत को, जो दिलजू के हत्याकाड तथा लूटमार के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी थी, पुन सुव्यवस्थित किया और प्रजा को लिखकर दे दिया कि छ मे से १ से अधिक उनसे कर के रूप मे न लिया जायगा।

कहा जाता है कि दिलजू, कन्धार का मीर बख्श था। उसने अत्यधिक सेना लेकर कश्मीर पर आक्रमण किया और उस विलायत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। राजा सरदेव ने प्रजा से अत्यधिक धन लेकर दिलजू को पेशकश के रूप मे भेजा और स्वय एक ओर चला गया। इस कारण समस्त कश्मीर की विलायत नष्ट-भ्रष्ट हो गई और दिलजू शीत ऋतु की अधिकता के कारण कन्धार लौट गया।

जब सुल्तान शम्सुद्दीन की वीरता तथा यश को प्रसिद्धि प्राप्त हो गई तो वह अपने अधिकार के (४२७) कारण राज्य-व्यवस्था मे तल्लीन हो गया। लौन नामक समूह के बहुत से लोगो को जिन्होने उसका विरोध किया था, किश्तवार की विलायत से बन्दी बनाकर उनकी हत्या करा दी।

राज्य के कार्य को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित तथा दृढ बनाकर उसने शासन-प्रबन्ध अपने पुत्रो, अर्थात् जमशेद तथा अली शेर को सौप दिया और स्वय निश्चिन्त होकर ईश्वर की उपासना करने लगा। तदुपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। उसने ३ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान जमशेद बिन सुल्तान शम्सुद्दीन

सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान जमशेद अपने राज्य के उच्च पदाधिकारियो की सहमति से अपने पिता के स्थान पर सिहासनारूढ हुआ। उसने अली शेर को, जिससे उसे अपने पिता के राज्यकाल मे पूर्ण रूप से सहयोग प्राप्त होता रहता था, नष्ट करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। जब जमशेद के सैनिक अली शेर के पास पहुचे तो उन्होने उसे सिहासनारूढ कर दिया और दनीपुर नामक स्थान पर जोकि एक प्रसिद्ध नगर है, उसे सिहासनारूढ किया। जमशेद ने उन पर चढाई की और सर्व-प्रथम उन सैनिको को प्रोत्साहन देकर अपनी ओर मिलाने तथा सधि करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। अली शेर ने सधि का विरोध करते हुए शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान जमशेद की सेना पर रात्रि मे छापा मारा

और उसे पराजित कर दिया। पराजय के उपरान्त सुल्तान जमशेद ने जब यह सुना कि दनीपुर खाली है तो वह उसे नष्ट करने के लिये रवाना हुआ और अली शेर के सैनिक जो उसकी रक्षा हेतु नियुक्त थे, युद्ध के लिये अग्रसर हुए और अधिकाश लोग मारे गये।

इसी बीच मे जब अली शेर विजय प्राप्त करके उस क्षेत्र मे पहुचा तो सुल्तान जमशेद अपने आप मे युद्ध की शक्ति न देखकर किमराज की विलायत की ओर भाग गया। सिराज नामक जमशेद के वजीर (४२८) ने जिसके सिपुर्द श्रीनगर की रक्षा थी, अली शेर को उच्छ नगर से बुलवाकर उसे सौप दिया। जमशेद ने इस घटना के उपरान्त युद्ध न किया और १ वर्ष तथा २ मास राज्य करके मृत्यु को प्राप्त हो गया।

सुल्तान अलाउद्दीन

जब सुल्तान जमशेद की मृत्यु हो गई तो उसका छोटा भाई, जिसका नाम अली शेर था, सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण करके सिहासनारूढ हुआ। उसने अपने छोटे भाई शेर अशामक को अत्यधिक अधिकार प्रदान कर दिये। उसके राज्यकाल के प्रारम्भ मे अत्यन्त समृद्धि दृष्टिगत हुई किन्तु अन्त मे घोर अकाल पडा और बहुत से लोग नष्ट हो गये। उसने रसतरी समूह को, जो विद्रोह करके किश्तवार चला गया था, किसी न किसी युक्ति से अपने अधिकार मे कर लिया और कश्मीर मे बन्दी बना लिया। याहियापुर के निकट उसने अपने नाम पर एक नगर बसाया। उसने यह अधिनियम बनाया था कि किसी भी व्यभिचारिणी को उसके पति की सम्पत्ति मे से कुछ न दिया जाय।

उसने १२ वर्ष, ८ मास तथा १३ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान शिहाबुद्दीन बिन सुल्तान शम्सुद्दीन

सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त उसका छोटा भाई शेर अशामक सिहासनारूढ हुआ। (४२९) वह बडा वीर तथा पराक्रमी था। जिस दिन किसी स्थान से कोई विजय-पत्र न प्राप्त होता था उस दिन को वह अपनी आयु मे सम्मिलित न समझता था और खिन्न दृष्टिगत होता था। विजय प्राप्त करके वह उन विलायतो को उनके प्राचीन स्वामियो को सौप देता था।

उसने सिन्ध नदी के तट पर चढाई की। कहा जाता है कि जब उस प्रदेश के हाकिम ने उससे युद्ध किया तो वह पराजित हो गया। कधार तथा गजनी के निवासी उससे सर्वदा भय किया करते थे। उसने आश्तनगर पर जोकि अभी तक आश नफर के नाम से पसिद्ध है तथा बरशावर[1] पर आक्रमण किया और विरोधियो के बहुत बडे समूह की हत्या कर दी तथा हिन्दूकुश के पर्वत में प्रविष्ट हो गया। मार्ग की कठिनाइयों के कारण उसे बडा कष्ट भोगना पडा और कष्ट भोगकर वह लौट गया। सतलज नदी के तट पर उसने अपने शिविर लगाये। नगरकोटा का राजा, जो देहली से सम्बन्धित कुछ महालो को नष्ट करके लौट रहा था, मार्ग मे सुल्तान की सेवा मे उपस्थित हुआ और जो धन-सम्पत्ति उसने लूटी थी वह सब की सब सुल्तान को दे दी तथा उसका आज्ञाकारी बन गया। तिब्बत के हाकिम ने उसकी सेवा में उपस्थित होकर उससे निवेदन किया कि शाही सेनाये उसकी विलायत को हानि न पहुचाये।

जब उसने आसपास की विलायतो को विजय कर लिया तो वह अपनी राजधानी को लौट गया और अपने छोटे भाई हिन्दाल को अपना वलीअहद नियुक्त कर दिया। उसके भाई हसन को, यद्यपि

१ एक पोथी के अनुसार 'यशावर' और एक के अनुसार 'बशावर'।

दोनो सगे भाई थे, दूसरी पत्नी के कहने से, जोकि उनकी माता की विरोधी थी, देहली की ओर निर्वासित कर दिया और लछमीनगर तथा शिहाबपुर बसवाया।

उसने २० वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान क़ुतुबुद्दीन बिन सुल्तान शम्सुद्दीन

(४३०) जब सुल्तान शिहाबुद्दीन की मृत्यु हो गई तो उसका भाई हिन्दाल सिहासनारूढ हुआ और उसने अपनी उपाधि सुल्तान कुतुबुद्दीन रक्खी। वह बडा ही सदाचारी था और अपने आदेशो के पालन कराने का बडा प्रयत्न किया करता था। उसने बुदाओ[1] नामक एक सरदार को लोहर कोट के किले की विजय हेतु, जो सुल्तान शिहाबुद्दीन के कुछ अमीरो के अधीन था, भेजा। दोनो पक्षो मे घोर युद्ध हुआ और वह मारा गया। उसने अपने भतीजे हसन[2] बिन शिहाबुद्दीन को देहली से बुलवाया और वह उसे अपना वलीअहद बनवाना चाहता था किन्तु ईर्ष्यालुओ ने सुल्तान के इस सकल्प को पूरा न होने दिया और उसे उसकी हत्या कर देने की ओर प्रेरित किया। सुल्तान के एक अमीर ने जिसका नाम राय रावल था, हसन को इस बात की सूचना दे दी और वह हसन के साथ कश्मीर के मार्ग से भागकर लोहर कोट मे पहुच गया। तदुपरान्त जमीदारो ने इन दोनों को बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा मे भेज दिया। राय रावल की हत्या कर दी गई और हसन को बन्दी बना लिया गया।

सुल्तान के उसकी अन्तिम अवस्था मे दो पुत्र पैदा हुए। एक का नाम सीकार और दूसरे का नाम हैबत खा रक्खा गया। ये दोनों पुत्र अल्पावस्था ही मे थे कि सुल्तान की मृत्यु हो गई।

उसने १५ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान सिक़न्दर बुतशिकन बिन क़ुतुबुद्दीन बिन शम्सुद्दीन जिसका नाम सीकार था

(४३१) वह वज़ीरो तथा अमीरो की सहमति से अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ हुआ और राज्य के कार्य को सुव्यवस्थित करके रवीनादरी वज़ीर को, जो उसका प्रभुत्वशाली वजीर था, तिब्बत की ओर भेजा। उसने उस विलायत को विजय किया। जब उसके पास सेना एकत्र हो गई तो उसने विद्रोह कर दिया और फनीर के समीप सुल्तान से युद्ध किया किन्तु पराजित हुआ। अन्त मे बन्दी बना लिया गया और उसी बन्दीगृह मे उसकी मृत्यु हो गई। बहुत बडी सेनाये सुल्तान के पास एकत्र हो गई और आस-पास के समस्त स्थान उसके अधिकार मे आ गये।

जिस समय साहिब किरान अमीर तैमूर हिन्दुस्तान की विजय हेतु पहुचा तो उसने सुल्तान की सेवा मे एक हाथी भेजा। सुल्तान ने इस बात पर गर्व करते हुए एक प्रार्थनापत्र अपनी निष्ठा तथा दासता प्रदर्शित करते हुए साहिब किरान की सेवा मे भेजा और लिखा कि, "जहा कही भी आदेश हो, मैं आपकी सेवा मे उपस्थित हो जाऊ।" उसने साहिब किरान के दूतो का अत्यधिक सम्मान करके उन्हे बिदा कर दिया। जब उसकी निष्ठा तथा दासता के समाचार साहिब किरान को प्राप्त हुए तो उसने उसके प्रति

१ एक पोथी के अनुसार 'लवार'।
२ एक पोथी मे हुसेन।

कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए जरदोजी की खिलअत तथा जडाऊ जीन सहित घोडा भेजा और कहलाया कि, "जब शाही पताकाए देहली से पजाब की ओर पहुचे तो वह उसकी सेवा मे उपस्थित हो जाय।"

सुल्तान सिकन्दर ने आदेशानुसार, जब साहिब किरान सिवालिक पर्वत से पजाब की ओर रवाना हुआ तो, अत्यधिक पेशकश लेकर उसकी सेवा मे प्रस्थान किया। मार्ग मे उसे ज्ञात हुआ कि साहिब किरान के कुछ अमीर लोग कह रहे हैं कि, "सुल्तान सिकन्दर एक हजार घोडे पेशकश के रूप मे लावे।" (४३२) सुल्तान इस समाचार से बडा परेशान हुआ और उसने प्रार्थनापत्र भेजा कि उचित पेशकश के एकत्र न होने के कारण कुछ दिन तक ठहरना पड रहा है। जब साहिब किरान को इस बात का पता चला तो वह उन लोगो से जिन्होने सुल्तान सिकन्दर से एक हजार घोडे पेशकश के रूप मे मागे थे बडा रुष्ट हुआ और सुल्तान सिकन्दर के दूतो को सम्मानित करके कहा कि, "वजीरो ने अनुचित बात कही है। सुल्तान को चाहिये कि वह बिना किसी सकोच के सेवा मे उपस्थित हो।" जब सुल्तान ने दूतो से यह समाचार सुने तो वह प्रसन्नतापूर्वक सुल्तान की सेवा मे कश्मीर से आया। जब उसने बारामूला को पार किया तो उसे ज्ञात हुआ कि साहिब किरान सिन्ध नदी को पार करके समरकन्द की ओर चला गया है। उसने दूतो को अत्यधिक पेशकश देकर साहिब किरान की सेवा मे भेजा और कश्मीर लौट गया।

उसके अत्यधिक दान-पुण्य के कारण एराक, खुरासान तथा मावराउन्नहर के आलिम उसके दरबार मे उपस्थित होने लगे और कश्मीर मे इस्लाम प्रसारित हो गया। वह आलिमो मे से सैयिद मुहम्मद का, जो, कि अपने समय के बहुत बडे विद्वान् थे, बडा सम्मान करता था और मूर्तियो तथा काफिरो के मन्दिरो को नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयत्न किया करता था। उसने बहरारे के महादेव के प्रसिद्ध मन्दिर का खडन करा दिया। और उसकी नीव खोकदर जल तक गहरा गड्ढा खुदवा दिया। अन्य जगदर के मन्दिर का खडन करा दिया। वहा से बहुत बडी ज्वाला उठी जिसे सुल्तान ने देखा। राजा अलमादत (४३३) ने एक बहुत बडे देवहरे का सिनपुर मे निर्माण कराया था। उसे ज्योतिषियो द्वारा ज्ञात हुआ था कि ११ सौ वर्ष उपरान्त सिकन्दर नामक एक बादशाह उसे नष्ट करायेगा और उतारिद की मूर्ति, जो उसमे है, का खडन करायेगा। इस लेख को उसने ताम्रपत्र पर लिखवाकर बक्स मे रखवा दिया था और उसे मन्दिर के नीचे गडवा दिया था। मन्दिर के खडन के समय वह लेख प्राप्त हुआ। सुल्तान ने कहा कि "यदि यह लेख मन्दिर पर प्रकट होता तो मैं उसके नष्ट कराने का आदेश न देता।' उसके राज्य मे शराब तथा तमगा[1] का पूर्णत निषेध था।"

अन्तिम अवस्था मे उसके ज्वर रहने लगा। उसने अपने तीनो पुत्रो, मीरान खा, शाही खा तथा मुहम्मद खा को बुलवाकर उन्हे परामर्श दिया और मीरान खा को उच्च उपाधि प्रदान करके राज्य का अधिकारी बना दिया।

उसने २२ वर्ष ९ मास तथा ६ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान अली शाह बिन सुल्तान सिकन्दर बुतशिकन

सुल्तान अली शाह का नाम मीरान खा था। यद्यपि वह अल्पावस्था मे था किन्तु उसकी वीरता तथा आतक लोगो के हृदय मे आरूढ था, अत चारो ओर के लोग उसके अधीन हो गये। उसने अपने (४३४) राज्यकाल के प्रारम्भ मे समस्त कार्य सियह भट्ट को, जो मुसलमान हो गया था और सुल्तान

१ एक पोथी के अनुसार "उसके राज्य में शराब, भग तथा तोमा का पूर्णतः निषेध करा दिया गया था'।

सिकन्दर का वजीर था, सौप दिये। ४ वर्ष तक, जब तक वह वजीर रहा, लोगो के ऊपर नाना प्रकार के अत्याचार करता रहा। उसने अधिकाश हिन्दुओ को निर्वासित कर दिया और कुछ लोगो ने आत्म-हत्या कर ली। जब सियह भट्ट की क्षय रोग से मृत्यु हो गई तो सुल्तान ने अपने छोटे भाई शाही खा को, जो वीरता तथा बुद्धिमत्ता के लिये प्रसिद्ध था, वजीर नियुक्त कर दिया। तदुपरान्त शाही खा को अपना वलीअहद बना दिया। अपने छोटे भाई मुहम्मद खा को उसका आज्ञाकारी रहने के विषय मे परामर्श देकर, वह कश्मीर की सैर के विचार से जम्मू के राजा के पास, जो उसका ससुर था, चला गया।

इसी बीच मे कुछ स्वार्थियो ने उसे शाही खा को वलीअहद बनाने के सबध मे लज्जित किया। अली शाह ने जम्मू के राजा तथा राजौरी के राजा की सहायता से प्रस्थान किया और कश्मीर को पुन अपने अधिकार मे कर लिया। शाही खा कश्मीर से सियालकोट पहुचा। उस समय जसरथ खोखर, जो साहिब किरान द्वारा बन्दी बना लिया गया था, उसकी मृत्यु के उपरान्त समरकन्द से भागकर पजाव पहुचा और अत्यधिक प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। शाही खा जसरथ खोखर से मिल गया और उससे मिलकर अली शाह पर आक्रमण करने के लिये पहुचा। अली शाह एक बहुत बडी सेना लेकर जसरथ के विरुद्ध रवाना हुआ। घोर युद्ध हुआ। दोनों ओर से अत्यधिक लोगो की हत्या हो गई। कहा जाता है कि रण-क्षेत्र मे कुछ बिना सिर के शरीर खडे होकर चलने लगे थे। हिन्दुस्तान मे यह बात प्रसिद्ध है कि जिस युद्ध मे १० हजार व्यक्ति मारे जाते है उसमे एक बिना सिर का शरीर जिसे हिन्दी मे केदह कहते है, उठकर चलने लगता है। अन्त मे अली शाह मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। शाही खा उसका (४३५) पीछा करता हुआ कश्मीर पहुचा और नगर के लोगों ने उसके पहुच जाने के कारण अत्यधिक आनन्द-मगल मनाया।

अली शाह ने ६ वर्ष तथा ९ मास तक राज्य किया।

सुल्तान जैनुल आबदीन बिन सुल्तान सिकन्दर बुतशिकन जोकि शाही खां के नाम से प्रसिद्ध है

सुल्तान जैनुल आबदीन अपने भाई के उपरान्त सिहासनारूढ हुआ। जसरथ खोखर यद्यपि शाही सेना की शक्ति के कारण देहली को विजय न कर सका किन्तु उसने समस्त पजाब को अपने अधिकार मे कर लिया और तिब्बत तथा वह समस्त विलायत, जो सिन्ध नदी के तटपर स्थित है, सुल्तान के अधिकार मे आ गई। उसने अपने छोटे भाई मुहम्मद खा को अपना परामर्शदाता बनाकर समस्त प्रबन्ध उसे सौप दिया और स्वय न्याय के प्रबन्ध का प्रयत्न करने लगा। वह सभी समूहो से मिलता था और विद्योपार्जन तथा कला का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया करता था। उसकी गोष्ठियो मे हिन्दू, मुसलमान विद्वान् हर समय उपस्थित रहते थे। सगीत का उसे बडा अच्छा ज्ञान था। कश्मीर के राज्य की उन्नति तथा कृषि की वृद्धि एव नहरो के खुदवाने का जैसा उचित प्रबन्ध उसने कराया वैसा कश्मीर के किसी हाकिम द्वारा सम्भव न हो सका।

(४३६) उसकी विलायत[1] मे जहा कही भी चोरी हो जाती उसका तावान वह उस स्थान के धनी लोगो से लेता था। इस कारण चोरी का पूर्णत अन्त हो गया था। उसके राज्यकाल मे चीजो के मूल्य के लिखने की प्रथा चलाई गई और उन्हे ताम्रपत्रो पर खुदवाकर प्रत्येक नगर मे लगवा दिया

1 राज्य।

गया। इससे कश्मीर से अत्याचार का पूर्णत अन्त हो गया। उसने इस सिद्धात पर आचरण किया कि जो लोग हमारे उपरान्त इस विधान के अनुसार कार्य न करेगे वे जाने तथा उनका भगवान् जाने।

श्री भट्ट की प्रार्थना पर, जोकि तवाबत[1] के ज्ञान मे अद्वितीय था और जिसे सुल्तान द्वारा नाना प्रकार से आश्रय प्राप्त हुआ था, अन्य ब्राह्मण जोकि सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल मे सियह भट्ट के प्रयत्न के कारण निर्वासित हो गये थे, लौट आये और मन्दिरो तथा अपने प्राचीन स्थानो पर पहुच गये। उन्हे वृत्ति प्रदान की गई। सुल्तान ने ब्राह्मणो से इस बात की प्रतिज्ञा करा ली कि जो कुछ उनके ग्रन्थो मे लिखा है उसके विरुद्ध वे कोई बात न कहे। तदुपरान्त उसने उनकी जितनी प्रथाये थी, उदाहरणार्थ टीका लगाना तथा सती इत्यादि, जिन्हे सुल्तान सिकन्दर ने बन्द करा दिया था, उनका पुनरुद्धार किया।

प्रजा से जो जुर्माना, पेशकश तथा अन्य कर[2] लिये जाते थे, उन्हे उसने क्षमा कर दिया। उसने आदेश दे दिया कि जो व्यापारी इधर-उधर से धन लाये वे उसे गुप्त न रक्खे और अपहरण न करे, थोडे से लाभ पर बेचे। जो लोग पिछले राज्यकाल मे बन्दीगृह मे थे, उन सबको उसने मुक्त कर दिया। जिस विलायत पर विजय प्राप्त करता वहा का खजाना नष्ट करा देता और वहाँ अपनी राजधानी के समान खराज निश्चित करता और विद्रोहियो को दड देकर उन्हे उचित स्थान पर बन्दी रखता।

वह फकीरो तथा शक्तिहीन लोगो को आश्रय देता था। वह किसी की स्त्री की ओर बुरी दृष्टि न डालता और न किसी अन्य के धन को अपहरण करता और न किसी अन्य के धन का लोभ करता था। प्रजा के प्रति कृपादृष्टि के कारण जो निश्चित जरीब थी उसमे वृद्धि करा दी। शाही व्यय ताम्बे की उस खान से पूरा होता था जो वहा प्राप्त हुई थी। वहा श्रमिक रहते थे और कार्य करते थे। क्योकि सुल्तान (४३७) सिकन्दर के राज्यकाल मे सोने, चादी तथा ताम्बे की मूर्तियो को तुड्वाकर उससे मुद्राए बनवा दी गई थी अत उस धन का मूल्य घट गया था। उसने आदेश दिया कि खान से जो खालिस ताम्बा निकलता है उसके सिक्के तैयार करके चलाये जाय।

उसका व्यवहार इतना सुन्दर था कि जिस किसी से वह रुष्ट हो जाता था उसे अपनी विलायत से इस प्रकार निर्वासित कर देता था कि उसे इस बात का पता न चल पाता था कि सुल्तान उससे किस कारण रुष्ट है। जिस किसी के विषय मे वह किसी बुरी बात की घटना का सकेत कर देता वह बात उसी प्रकार हो जाती। उसके राज्यकाल मे प्रत्येक धर्म तथा प्रत्येक प्रकार के लोग अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करते थे। सुल्तान सिकन्दर के राज्यकाल मे जो ब्राह्मण मुसलमान हो गये थे उनमे से अधिकाश मुरतिद[3] हो गये, कोई भी आलिम उनसे किसी प्रकार की रोक-टोक न कर सकता था। मारान पर्वत के निकट से एक नहर निकलवाकर उसने एक नगर बसाया जिसकी आबादी पाच कोस तक थी। उसने अन्य नगरो को भी बसाया। कालपुर इत्यादि मे दूर से नहरे निकलवाई। उसने नहरे खुदवाई तथा पुलो का निर्माण कराया। जिन स्थानो को वह आबाद करता था वहा आलिमों, विद्वानो तथा दरिद्रियो को बसा देता था और सर्वदा उनकी देख-रेख रखता था। खजाना एकत्र करने का प्रयत्न न करता था अपितु जो कुछ भी उसे प्राप्त हो जाता था उसे वह व्यय कर देता था।

उसके राज्यकाल में सुल्तान मुहम्मद नामक एक कवि तथा विद्वान् हुआ है जो जिस बहर तथा

१ चिकित्सा।
२ 'जुर्माना व पेशकश व सायर हुबूब'।
३ इस्लाम त्याग कर अपना प्राचीन धर्म स्वीकार कर लिया।

काफिये मे चाहता कविता कर लेता था। ज्ञान सम्बन्धी जिन कठिन समस्याओ को उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता, वह तुरन्त उनका समाधान कर देता। सुल्तान मुसलमान आलिमों का भी अत्यधिक आदर (४३८) करता था और कहा करता था कि वे हमारे मुरशिद[1] है। वह योगियो का भी, उनकी उपासना तथा तपस्या के कारण सम्मान करता था। वह किसी भी समूह की बुराइयो की ओर दृष्टि न डालता था। वह इतना बडा बुद्धिमान् था कि कठिन से कठिन समस्या, जिसका लोग समाधान न कर पाते थे, का वह तुरन्त निर्णय कर देता था। एक स्त्री ने जो अपने पडोसी से ईर्ष्या रखती थी एक रात्रि मे अपने शिशु की हत्या करके उसके घर मे डाल दिया और प्रात काल उस पर अपने पुत्र की हत्या का आरोप लगाकर वह सुल्तान की सेवा मे न्याय हेतु उपस्थित हुई। वजीर अत्यधिक जाच-पडताल करने पर भी उसका कोई निर्णय न कर सके। सुल्तान ने स्वय इस अभियोग के निर्णय की ओर ध्यान दिया। सर्वप्रथम उसने जिस पर आरोप लगाया गया था उसे एकान्त मे बुलवाकर बहुत डराया-धमकाया। क्योकि उसने यह अपराध न किया था अत उसने उसे किसी प्रकार स्वीकार न किया। अन्त मे सुल्तान ने कहा, "यदि तू नग्न होकर लोगो के समक्ष अपने घर चली जाय तो मै यह समझूँगा कि तू सच्ची है ?" स्त्री ने लज्जावश सिर झुकाकर कहा कि, "मेरे निकट मृत्यु इस कार्य से कही अच्छी है अत मै यह कार्य नही कर सकती।"

सुल्तान ने उस स्त्री को छोडकर दूसरी स्त्री को, जिसने आरोप लगाया था, बुलवाया और कहा कि, "यदि तू सच्ची है तो सब लोगो के सामने नगी हो जा।" उस स्त्री ने नि सकोच नगा होना चाहा। सुल्तान ने रोका और कहा कि, "यह अपराध तूने किया है और तू उस पर आरोप लगाती है।" जब उसके कई कोडे लगाये गये तो उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

सुल्तान चोरो की हत्या न कराता था अपितु उसने आदेश दे दिया था कि उनके पावो मे बेडिया डालकर उनसे भवन-निर्माण का कार्य कराया जाय और उन्हे भोजन प्रदान किया जाय। पशुओ की (४३९) हत्या रोकने के लिये उसने शिकार का निषेध कर दिया था। रमजान के महीने मे वह मास नही खाता था। उसके दान-पुण्य के कारण गाने-बजाने वाले अन्य स्थानो से कश्मीर पहुचे। उनमे से मुल्ला ऊदी जो ख्वाजा अब्दुल कादिर का शिष्य था, खुरासान से आया। वह इस प्रकार ऊद[2] बजाता था कि सुल्तान उससे अत्यधिक प्रसन्न होता था और उसने उसे नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा सम्मानित किया। मुल्ला जमील हाफिज ने, जो कविता करने तथा कविता पढने मे अद्वितीय था, सुल्तान द्वारा अत्यधिक आश्रय प्राप्त किया था। उसके स्वर आज तक कश्मीर मे प्रसिद्ध है। हबाब आतशबाज, जिसने कश्मीर मे बन्दूक का आविष्कार किया, सुल्तान के राज्यकाल मे था और आतशबाजी की कला मे अद्वितीय था। "सवाल व जवाब" नामक पुस्तक की, जिसमे बहुत सी लाभदायक बाते लिखी हुई है, सुल्तान ने उसके सहयोग से रचना की। उसके राज्यकाल मे नृत्य करने वाले तथा नट बहुत बडी सख्या मे पैदा हो गये थे और बहुत से ऐसे लोग थे जोकि एक स्वर को बारह प्रकार से बजा सकते थे।

कभी कभी जब सुल्तान प्रसन्न होता तो वह आदेश देता कि रबाब, वीणा तथा अन्य वादन यत्र सोने के जडाऊ काम से तैयार किये जाय। उसके राज्यकाल मे सुतूम नामक एक बुद्धिमान् था जो कश्मीरी भाषा मे कविता करता था और हिन्दवी के ज्ञान मे भी अद्वितीय था। उसने "जैनहरब" नामक एक ग्रन्थ की रचना की जिसमे सुल्तान के राज्यकाल की समस्त घटनाए विस्तार से लिखी। लोदी भट्ट को पूरा

१ गुरु।
२ बरबत नामक एक बाजा।

शाहनामा कठस्थ था। उसने सगीत सम्बन्धी "मामक" नामक एक पुस्तक की सुल्तान के नाम पर रचना की और इस कारण वह सुल्तान का कृपापात्र बना। सुल्तान को फारसी, हिन्दवी तथा तिब्बती इत्यादि भाषाओ का ज्ञान था और उसके आदेशानुसार बहुत सी अरबी तथा फारसी ग्रन्थो का हिन्दवी भाषा मे (४४०) अनुवाद हुआ। 'महाभारत', जोकि एक प्रसिद्ध ग्रथ है, 'राजतरगिणी' जिसमे कश्मीर के बादशाहो का इतिहास है, उसके आदेशानुसार फारसी मे भाषान्तरित हुई।

खुरासान के बादशाह, सुल्तान अबू सईद ने खुरासान से अरबी घोडे तथा बख्ती ऊट उसके पास उपहार-स्वरूप भेजे। सुल्तान ने इस बात से प्रसन्न होकर जाफरान, तिब्बती बैल, कस्तूरी, शाल, शीशे के प्याले तथा कश्मीर की अन्य अद्भुत वस्तुए सुल्तान की सेवा मे भेजी। सुल्तान बहलोल लोदी तथा सुल्तान महमूद गुजराती ने भी अपने देश की उत्तम वस्तुए सुल्तान की सेवा मे भेजकर निष्ठाभाव को दृढ बनाया। मक्का, मिस्र, गीलान इत्यादि के हाकिमो ने भी उसके पास उपहार भेजे और वे उससे इसी प्रकार व्यवहार करते थे। सिन्ध के बादशाह ने सुल्तान के पास अपने एक सेवक के हाथ बहुत सी वस्तुए तथा उसकी प्रशसा मे एक कसीदे की रचना करवाकर उसके पास भेजा। सुल्तान उस कसीदे को पढकर बडा प्रसन्न हुआ। ग्वालियर के राजा डूँगर सेन को जब यह ज्ञात हुआ कि सुल्तान को सगीत से अत्यधिक रुचि है तो उसने इस विषय के २–३ उत्तम ग्रन्थ उसकी सेवा मे भेजे। उसका पुत्र राजा कोटसन[1] भी अपने पिता के उपरान्त सुल्तान के प्रति इसी प्रकार मित्रता तथा निष्ठा के भाव प्रदर्शित करता था। तिब्बत के राजा ने दो सुन्दर पक्षी जो हिन्दुस्तान की भाषा मे हस कहलाते है, मानसरोवर नामक स्थान से, जहा के जल मे किसी प्रकार का परिवर्तन नही होता, सुल्तान की सेवा मे भेजे। सुल्तान उन पक्षियो को देखकर बडा प्रसन्न हुआ। उन पक्षियो की एक यह विशेषता थी कि यदि जलमिश्रित दूध उनके सामने रक्खा जाता तो वे दूध तो अपनी चोच से जल से पृथक् करके पी जाते थे और जल छोड देते थे।

(४४१) सुल्तान ने अपने राज्यकाल के प्रारम्भ मे अपने छोटे भाई मुहम्मद खा को वलीअहद बनाकर शासन-प्रबन्ध उसे सौप दिया था। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसने अपने पुत्र हैदर को उसके स्थान पर अपना विश्वासपात्र बनाया और समस्त शासन-प्रबन्ध उसे सौप दिया। उसने अपने दो कोका को जिनका नाम मसऊद तथा शेर था अपना विश्वासपात्र बनाकर सम्मानित किया। अन्त मे यह दोनो एक दूसरे के विरोधी हो गये और शेर ने मसऊद की, जोकि छोटा भाई था, हत्या करा दी और सुल्तान ने भी उसके बदले मे शेर की हत्या करा दी।

सुल्तान के तीन पुत्र थे। आदम खा सबसे बडा था किन्तु वह सर्वदा सुल्तान की दृष्टि मे तुच्छ दृष्टिगत होता था। हाजी खा तथा बहराम खा दो लघु पुत्र थे, बहराम खा सबसे छोटा था परन्तु उसके सेवको की सख्या बहुत अधिक थी। एक अज्ञातवशीय मुल्ला दरिया नामक को उसने दरिया खा की उपाधि देकर अपने समस्त कार्यों को उसे सौप दिया था और स्वय भोगविलास मे व्यस्त रहता था।

श्री भट्ट की, जो सुल्तान का वजीर था, मृत्यु के उपरान्त सुल्तान ने कश्मीर का एक करोड धन, जोकि ४०० अशर्फियो के बराबर होता है, उसके पुत्रो मे दान कर दिया।

सुल्तान योगियो के ज्ञान मे भी बडा दक्ष था और लोगो ने उसे खलाबदन[2] का, जिसे सीमिया कहते है, प्रदर्शन करते हुए देखा था।

१ एक पोथी के अनुसार 'कोब नन्द'।
२ सम्भवत. आत्मा को शरीर से निकाल लेने का ज्ञान।

कहा जाता है कि एक बार सुल्तान रुग्ण हो गया और मृत्यु के निकट पहुच गया। लोगो ने उसके स्वास्थ्य की ओर से हाथ धो लिये। इसी बीच मे कश्मीर मे एक योगी पहुचा। उसने कहा कि, "मै सीमिया का ज्ञान जानता हू। सुल्तान के इस रोग का, जोकि बडा ही कठिन रोग है, इसके अतिरिक्त कोई अन्य उपचार नही कि मै अपनी आत्मा को अपने शरीर से पृथक् करके सुल्तान के शरीर मे डाल दूँ। सुल्तान के निकटवर्तियो ने योगी तथा उसके एक शिष्य को सुल्तान के सिरहाने ले जाकर अकेले (४४२) छोड दिया। योगी ने उस समय जब कि सुल्तान की आत्मा उसके शरीर से निकल गई अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकालकर अपने ज्ञान से, जोकि वह रखता था, उसे सुल्तान के शरीर मे प्रविष्ट कर दिया और अपने शिष्य से कह दिया कि, "जब मेरा शरीर बेकार हो जाय तो आसन की अवस्था मे ले जाकर उसकी रक्षा करना।" जिस समय शिष्य योगी का शरीर लेकर बाहर निकला तो उसके निकटवर्ती सुल्तान के पास पहुचे और उन्होने उसे स्वस्थ पाकर प्रसन्नता प्रकट की।

कुछ दिन उपरान्त सुल्तान के पुत्रो ने एक दूसरे के विरुद्ध झगडा करना प्रारम्भ कर दिया। आदम खा जोकि सबसे बडा था, कश्मीर से अत्यधिक सेना लेकर तिब्बत की विलायत[1] की ओर चला गया और उस प्रदेश को विजय कर लिया तथा अत्यधिक धन-सम्पत्ति सुल्तान की सेवा मे लाया। सुल्तान ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की। हाजी खा उसके आदेशानुसार लोहर कोट पहुचा। सुल्तान, आदम खा को हाजी खा के दुर्व्यवहार के कारण सर्वदा अपने पास रखता था। अन्त मे हाजी खा कुछ लोगो के बहकाने से लोहर कोट से कश्मीर पहुचा। यद्यपि सुल्तान ने उसे बहुत लिखा और उसके पास सदेश भेजे कि वह न आये किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ। विवश होकर सुल्तान युद्ध के लिये निकला और बिलहसल[2] के मैदान मे शिविर लगा दिये। हाजी खा यद्यपि जो कुछ उसने किया था, उससे लज्जित था किन्तु कुछ वीरो के प्रयत्न से सेनाओ की पक्तिया ठीक करके रणक्षेत्र मे पहुचा और प्रात काल से सायकाल तक युद्ध करता रहा। अन्त मे हाजी खा की सेना की पराजय हुई और आदम खा ने इस युद्ध मे अत्यधिक वीरता का प्रदर्शन किया। हाजी खा भागकर हीरापुर की ओर चला गया। आदम खा ने उसका पीछा किया और उसे बन्दी बना लेने का प्रयत्न किया किन्तु सुल्तान ने उसे इस बात की आज्ञा (४४३) न दी। हाजी खा ने हीरापुर से नबर पहुच कर घायलो का उपचार प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान विजय के उपरान्त कश्मीर पहुचा और उसने आदेश दिया कि, "शत्रुओ के सिर का मीनार तैयार किया जाय।" हाजी खा की सेना के बन्दियो की हत्या कर दी गई और आदम खा ने उन लोगो को, जिन्होने हाजी खा को मार्ग-भ्रष्ट किया था, बन्दी बनाकर कत्ल करा दिया तथा उनके परिवारो को कष्ट पहुचाया। इस कारण अधिकाश लोग हाजी खा से पृथक् होकर आदम खा के पास आ गये।

तदुपरान्त आदम खा स्वतत्रतापूर्वक छ वर्ष तक राज्य करता रहा। इसके उपरान्त कश्मीर मे घोर अकाल पडा और अधिकाश लोग भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। इस कारण सुल्तान बडा दुखी हुआ और उसने अधिकाश अनाज तथा खजाना लोगो को बाट दिया। कुछ स्थानो पर खराज चार मे से एक और कुछ स्थानो पर सात मे से एक निश्चित किया।

आदम खा ने किमराज की विलायत पर अधिकार जमाकर नाना प्रकार से अत्याचार प्रारम्भ कर दिये और बहुत से लोग उसके अत्याचारो से पीडित होकर सुल्तान की सेवा मे न्याय की याचना करने

१ राज्य।
२ एक पोथी में 'सहल' और एक में 'यलहल'।

पहुचे। सुल्तान की ओर से जो फरमान उसके पास पहुचते थे, वह उसे स्वीकार न करता था, यहा तक कि वह बहुत बडी सेना एकत्र करके सुल्तान पर आक्रमण करने के लिये पहुचा और कुतुबुद्दीनपुर मे पडाव किया। सुल्तान ने किसी न किमी युक्ति से उसको प्रोत्साहन देकर किमराज की विलायत की ओर पुन भेज दिया और हाजी खा को शीघ्रातिशीघ्र बुलवाया।

(४४४) आदम खा किमराज पहुच कर अविलम्ब वहा से निकला और सोयापुर[1] पर उसने चढाई की। वहा के हाकिम ने सुल्तान मुईन के अधिकार से निकलकर युद्ध किया और मारा गया। समस्त नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गया। सुल्तान ने यह समाचार पाकर बहुत बडी सेना आदम खा के विरुद्ध भेजी और घोर युद्ध हुआ। दोनो सेनाओ के बहुत से लोग मारे गये और आदम खा पराजित हो गया। जब सोयापुर पुल जो बहत नदी के ऊपर तैयार किया गया था टूट गया तो आदम खा के लगभग ३०० आदमी भागते समय डूब गये।

आदम खा ने नदी पार करके नदी के उस ओर पडाव किया और सुल्तान नगर से निकलकर सोयापुर पहुचा तथा प्रजा को प्रोत्साहन प्रदान किया। इसी बीच मे हाजी खा उस फरमान के अनुसार, जो उसे प्राप्त हुआ था, पजा के मार्ग से बारामूला के निकट पहुचा। सुल्तान ने अपने छोटे पुत्र बहराम को उसके स्वागतार्थ भेजा। दोनो भाइयो मे शत्रुता हो गई। आदम खा उस स्थान से भागकर शाह मुग के मार्ग से नीलाब चला गया और सुल्तान हाजी खा को अपने साथ लेकर शहर आया और उसे अपना वलीअह्द नियुक्त कर दिया। हाजी खा ने निष्ठा हेतु कटिबद्ध होकर इस ओर कोई कसर उठा न रखी और अपने सेवको की, जो हिन्दुस्तान की यात्रा मे उसके सहायक थे, सिफारिश करके उनके लिये बडे बडे पद सुल्तान से ले लिये तथा अच्छी-अच्छी जागीरे उनके लिये निश्चित कराई। सुल्तान ने उसे सुनहरी पेटी प्रदान की और वह सर्वदा उससे सतुष्ट रहता था।

अन्त मे हाजी खा को मदिरापान की अधिकता के कारण आमातिसार रोग हो गया और शासन प्रबन्ध मे विघ्न पड गया। अमीरो ने गुप्त रूप से आदम खा को बुलवा लिया। आदम खा ने अमीरो के सकेत पर उपस्थित होकर सुल्तान से भेट की। सुल्तान उसके आगमन को पसन्द न करता था अत वह अमीरो से रुष्ट हो गया। अन्त मे भाइयों ने भी वचनबद्ध होकर आदम खा के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। कुछ समय उपरान्त जब सुल्तान वृद्धावस्था के कारण निर्बल हो गया और उसके अतिरिक्त (४४५) रुग्ण रहने लगा तो अमीरो एव वज़ीरो ने सगठित होकर निवेदन किया कि, "यदि राज्य को किसी एक शाहजादे को सौप दिया जाय तो इससे राज्य तथा शासन प्रबन्ध मे शान्ति रहेगी।" सुल्तान ने इस बात की ओर ध्यान न देते हुए अपने पुत्रो मे से किसी को भी राज्य के लिये न चुना। ईर्ष्यालुओ ने बीच मे पडकर उन लोगो मे (भाइयो मे) शत्रुता उत्पन्न करा दी। बहराम खा ने धूर्तता पूर्वक विरोध उत्पन्न करने वाली बाते कही और अपने दोनो बडे भाइयो को अपना शत्रु बना लिया। आदम खा शकित होकर कुतुबुद्दीनपुर चला गया और उसने वहा पडाव किया। जब सुल्तान पूर्णत शक्तिहीन हो गया तब भी अमीर लोग अशान्ति के भय से सुल्तान के पुत्रो को उसे देखने के लिये न आने देते थे। कभी कभी वे सुल्तान को उच्च स्थान पर बडे कष्ट की अवस्था मे बैठाते थे और नक्कारे बजवाते थे कि सुल्तान स्वस्थ हो गया। इस प्रकार वे राज्य को सुव्यवस्थित रक्खे रहे। अन्त मे जब सुल्तान का रोग बहुत बढ गया और एक दिन तथा एक रात्रि वह अचेत रहा तो एक रात्रि मे आदम

१ एक पोथी के अनुसार 'सबापुर'।

खा कुतुबुद्दीनपुर से अकेला सुल्तान को देखने के लिये आया और सेना को नगर के बाहर छोड दिया ताकि वह हाजी खा तथा शत्रुओ से सचेत रहे। सयोग से उसी रात्रि मे हसन कच्छी ने, जोकि प्रतिष्ठित अमीर था, सुल्तान के दीवानखाने मे हाजी खा के लिये अमीरो से बैअत ले ली थी। दूसरे दिन अमीरो ने आदम खा को किसी बहाने से कश्मीर से निकाल कर हाजी खा को शीघ्रातिशीघ्र बुलवाया। हाजी खा अमीरो के बुलवाने पर आया और उसने सुल्तान की अश्वशाला के समस्त घोडो पर अधिकार जमा लिया और उसके पास बहुत बडी सेना एकत्र हो गई किन्तु वह उपद्रव के भय और विरोधियो के विश्वास-घात के कारण महल के भीतर न गया।

आदम खा ने जब यह समाचार सुने तो वह भय के कारण मावेल के मार्ग से हिन्दुस्तान की ओर चल दिया। उसके बहुत से सेवक उससे पृथक् हो गये। जैन बद्र, जो हाजी खा का विश्वस्त अमीर था, (४४६) आदम खा का पीछा करने के लिये गया। आदम खा उससे वीरता से युद्ध करते हुए उसके बहुत से भाइयो तथा सम्बन्धियो की हत्या करके वहा से निकल गया। हाजी खा का पुत्र हसन खा, जो कि पजे मे था, अपने पिता के पास आया और उसके कार्यो को अत्यधिक रौनक प्राप्त हो गई।

सुल्तान की मृत्यु हो गई और उसने ५२ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान हैदर शाह बिन सुल्तान ज़ैनुल आबदीन, जिसका नाम हाजी खां था

हाजी खा अपने पिता के उपरान्त, तीन दिन मे सुल्तान हैदरशाह की उपाधि धारण करके, अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और सिकन्दरपुर मे जो नोहता शहर के नाम से प्रसिद्ध है, अपने पिता की प्रथानुसार सिहासनारूढ हुआ और सहायता के पात्रो को अत्यधिक धन बाटा। उसके भाई बहराम खा तथा उसके पुत्र हसन खा उसके सिर पर राजमुकुट रखकर उसकी सेवा करने लगे। किमराज की विलायत हसन खा को जागीर मे दे दी गई और उसे उसने अपना अमीरुल उमरा तथा वलीअहद नियुक्त कर दिया और बहराम खा को नाकाम नामक जागीर प्रदान कर दी। विभिन्न स्थानो के राजाओ जो सवेदना तथा बधाई हेतु आये थे को घोडे तथा खिलअते देकर बिदा किया और अधिकाश अमीरो को पेटी तथा जडाऊ तलवारे एव खिलअते देकर सम्मानित किया।

वह स्वाभाविक रूप से दानी था। वह सर्वदा मदिरापान किया करता था। क्योकि उसके हृदय मे प्रतिकार की भावनाये आरूढ थी, अत उसके अधिकाश अमीर उससे रुष्ट होकर विभिन्न स्थानो को चले गये। क्योकि उसे राज्य के कार्यो की कोई चिन्ता न थी अत वजीर लोग प्रजा पर नाना प्रकार (४४७) के अत्याचार करते थे। उसने लूली नामक एक नाई को अपना विश्वासपात्र बना लिया था और जो कुछ भी वह कहता था उसके अनुसार वह आचरण करता था। लूली लोगो से घूस लेता था और जिसका वह विरोधी हो जाता था उससे वह सुल्तान को रुष्ट करा देता था। कच्छी की, जिसने सबसे अधिक उसकी बैअत के लिये प्रयत्न किया था, लूली नाई की चुगली के कारण हत्या करा दी।

इसके पूर्व आदम खा अत्यधिक सेना एकत्र करके सुल्तान से युद्ध करने के लिये जम्मू की विलायत मे पहुच गया था। जब उसे अमीरो की हत्या के समाचार प्राप्त हुए तो वह लौटकर जम्मू चला गया और जम्मू के राजा मानिक देव के साथ मुगुलो से जो उस क्षेत्र मे आये हुए थे, युद्ध करने के लिये पहुच गया। उसके मुख पर एक बाण लगा और उसी घाव से उसकी मृत्यु हो गई। सुल्तान उसकी मृत्यु के समाचार पाकर बडा प्रभावित हुआ और उसने आदेश दिया कि उसके शरीर को रणक्षेत्र से लाकर उसके पिता के मकबरे के निकट दफ़न कर दिया जाय।

उन्ही दिनो मे सर्वदा मदिरापान के कारण सुल्तान बडे कठिन रोग मे ग्रस्त हो गया। अमीरो

ने गुप्त रूप से बहराम खा से मिलकर उसे सिहासनारूढ करना चाहा। जब यह समाचार फतह खा को, जिसने हिन्दुस्तान मे अत्यधिक किलो पर विजय प्राप्त की थी, और अपार धन-सम्पत्ति एकत्र की थी, पहुचे तो वह एक भारी सेना लेकर शीघ्रातिशीघ्र कश्मीर पहुचा किन्तु वह आज्ञा के बिना आया था अत स्वार्थियो ने उसकी ओर से बाते बनाकर सुल्तान हैदर को उससे रुष्ट कर दिया। सुल्तान ने उसे अभिवादन की अनुमति न दी और उसकी किसी भी सेवा की ओर ध्यान न दिया। एक दिन सुल्तान एवान पर मदिरापान मे व्यस्त था। उसी मस्ती की अवस्था मे उसका पाव कापा और वह गिर पडा और उसकी मृत्यु हो गई।

उसने एक वर्ष तथा दो मास तक राज्य किया।

सुल्तान हसन बिन हाजी खां हैदर शाह

(४४८) वह अपने पिता की मृत्यु के १६ दिन के उपरान्त अहमद[1] आसू के प्रयत्न से सिहासनारूढ हुआ और दूसरे दिन ही उन लोगो को, जो उससे शकित थे बन्दी बना लिया और सिकन्दरपुर से नौशहर पहुचा। वहा उसने पडाव किया और अपने पितामह, पिता तथा चाचा के कोष को लोगो को दान कर दिया। अहमद आसू को मलिक अहमद की उपाधि प्रदान की और शासन प्रबन्ध को उसके ऊपर छोड दिया। उसके पुत्र नौरोज आसू को हाजिबे दर बना दिया।

बहराम खा अपने पुत्र सहित कश्मीर से निकलकर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ और समस्त सैनिक उससे पृथक् हो गये। उसका विवरण शीघ्र ही दिया जायगा। सुल्तान हसन ने सुल्तान जैनुल आबदीन के वे समस्त अधिनियम जो हैदर शाह के राज्यकाल मे बन्द हो गये थे पुन चालू कराये और अपने कार्यो को तदनुसार सम्पन्न कराया। उस समय कुछ षड्यन्त्रकारियो ने बहराम खा के पास जाकर उसे युद्ध की ओर प्रेरित किया और कुछ अमीरो ने भी पत्र लिखकर उसे बुलवाया। बहराम खा किर्मा[2] की विलायत से लौटकर पर्वतो के मार्ग से किमराज की विलायत मे पहुचा। सुल्तान उस समय सैर के लिये दीनापुर गया हुआ था। यह समाचार पाकर वह अपने चाचा से युद्ध करने के लिये सोयापुर पहुचा। कुछ लोगो ने सुल्तान को इस बात पर तैयार किया कि वह हिन्दुस्तान चला जाय किन्तु मलिक अहमद आसू ने उसे युद्ध के लिये प्रेरित करके हिन्दुस्तान की ओर न जाने दिया। सुल्तान ने मलिक अहमद के परामर्श को पसन्द किया। उसने मलिक ताज बेंहैता को एक भारी सेना देकर बहराम खा से युद्ध करने के लिए भेजा। बहराम खा को यह आशा थी कि सुल्तान के सैनिक उससे मिल जायेगे किन्तु अन्त मे (४४९) कार्य इसके विरुद्ध हुआ। लूलू[3] नामक ग्राम मे घोर युद्ध हुआ और बहराम खा पराजित होकर जैनपुर नामक ग्राम मे पहुचा। शाही सेनाओं ने उसका पीछा करके उसे बन्दी बना लिया। उसके मुख पर एक बाण लगा और उसकी चीजे तथा सामग्री नष्ट-भ्रष्ट हो गई और वह बडी शोचनीय दशा मे सुल्तान के पास लाया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसके पिता तथा पुत्र को बन्दी बना दिया जाय। कुछ समय उपरान्त बहराम खा की आखो मे सलाई फिरवा दी गई और वह तीन वर्ष तक बन्दी रहकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

१ एक पोथी के अनुसार 'मुहम्मद'।
२ एक पोथी के अनुसार 'किर्मा' तथा एक अन्य पोथी के अनुसार 'किर्मार'।
३ एक पोथी के अनुसार 'नोलापुर'।

जैनबद्र[1] ने, जो सुल्तान जैनुलआबदीन का वजीर तथा मलिक अहमद आसू से युद्ध कराने का साधन बना था, बहराम खा को अधा करवाने का प्रयत्न किया। सुल्तान जैनुलआबदीन को उससे बडा कष्ट पहुचा था और वह उसकी हत्या कराना चाहता था किन्तु यह सम्भव न हो सका। सुल्तान हसन ने उसे बन्दी बना लिया और सयोग से जिस दिन बहराम खा को अन्धा बनाया गया उसी दिन उसकी आखो मे भी सलाई फिरवा दी गई। तीन वर्ष उपरान्त बन्दीगृह मे उसकी भी मृत्यु हो गई।

मलिक अहमद स्थायी रूप से वजीर हो गया। उसने मलिक यारी भट्ट को आश्रय प्रदान करके मलिक अहमद को अत्यधिक सेना सहित राजौरी मार्ग से देहली की ओर भेजा। जम्मू के राजा अजब देव ने वहा पहुचकर मलिक यारी से भेट की। मलिक यारी बहुत बडी सेना लेकर उसकी सहायतार्थ पहुचा और तातार खा से, जोकि देहली के बादशाह की ओर से पर्वत के आचल तथा पजाब की विलायत का हाकिम था, युद्ध किया और उसकी समस्त विलायत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया तथा स्यालकोट नगर को नष्ट कर दिया।

(४५०) सुल्तान के हयात खातून, द्वारा, जो सैयिद वश से थी, एक पुत्र का जन्म हुआ। सुल्तान ने उसका नाम मुहम्मद रक्खा और उसे मलिक यारी को शिक्षा हेतु सौप दिया। उसने अपने दूसरे पुत्र का नाम हुसेन रखकर मलिक नूर बिन मलिक अहमद को दे दिया ताकि वह उसका पालन पोषण करे। मिया मलिक अहमद तथा मलिक बारी ने रुष्ट होकर एक दूसरे को नष्ट करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया और अमीरो ने भी एक दूसरे का विरोध प्रारम्भ कर दिया जिसके कारण घोर युद्ध हुआ। वे एक रात्रि मे सेना एकत्र करके सुल्तान के दीवानखाने मे पहुचे और उन्होने लूटमार प्रारम्भ कर दी और आग लगा दी। राज्य के कार्य मे बडा विघ्न पड गया। सुल्तान ने मलिक अहमद आसू को उसके अन्य सैनिको सहित बन्दी बना लिया और उसकी धन-सम्पत्ति को नष्ट करा दिया। उसकी बन्दीगृह मे मृत्यु हो गई।

सुल्तान, सैयिद नासिर को, जोकि सुल्तान जैनुल आबदीन का बडा विश्वासपात्र था, दरबार मे अपने ऊपर प्राथमिकता देता था। उसे सुल्तान हसन के आदेशानुसार कश्मीर से निर्वासित कर दिया गया था और वह किसी स्थान को चला गया था, उसे बुलवाया गया। सैयिद नासिर जब पीर पजाल दर्रे के समीप पहुचा तो उसकी मृत्यु हो गई। तदुपरान्त उसने सैयिद हसन वल्द सैयिद नासिर को, जो हयात खातून का पिता था, देहली से बुलवाया और अधिकारो की बागडोर उसके हाथ मे दे दी। सैयिद हसन ने सुल्तान को कश्मीर के विरुद्ध कर दिया। उसके प्रयत्न से अत्यधिक मलिको की हत्या कर दी गई और मलिक यारी को बन्दी बना लिया गया। अन्य लोग आतकित होकर इधर-उधर भाग गये। जहागीर बाकरी, जोकि प्रतिष्ठित अमीर था, भागकर लोहर कोट के किले मे चला गया।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान को आमातिसार हो गया और वह बडा दुर्बल हो गया। उसने (४५१) मरते समय यह वसीयत की कि, "क्योकि मेरा पुत्र अभी अल्पावस्था मे है अत यूसुफ खा बिन बहराम खा को, जो बन्दीगृह मे है, फतह खा पुत्र आदम खाॅ के साथ जो हसवास की विलायत मे है सिहासनारूढ कर दिया जाय और मुहम्मद खा को वलीहअद नियुक्त कर दिया जाय।" सैयिद हसन ने बाह्य रूप से इसे स्वीकार कर लिया। सुल्तान की उसी रोग के कारण मृत्यु हो गई।

उसके राज्य की अवधि का पता नही।

१ एक पोथी के अनुसार 'ऐनबद्र'।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन सुल्तान हसन

मुहम्मद खा ७ वर्ष की अवस्था मे सैयिद हसन के प्रयत्न के फलस्वरूप सिंहासनारूढ हुआ। उस दिन समस्त सोना, चादी, अस्त्र शस्त्र तथा वस्त्र इत्यादि उसके समक्ष प्रस्तुत किये गये। उसने किसी ओर भी दृष्टि न डाली और धनुष को अपने हाथ मे ले लिया। उपस्थितगण ने उसके इस कार्य से उसके पौरुष तथा श्रेष्ठता के विषय मे निष्कर्ष निकाला और वे कहते थे कि वह राज्य-व्यवस्था हेतु प्रयत्नशील होगा।

सैयिदो को इतना अधिक प्रभुत्व प्राप्त हो गया था कि वे किसी अमीर तथा वजीर को सुल्तान के पास न आने देते थे। कश्मीरियो ने इस बात से परेशान होकर, एक रात्रि मे जम्मू के राजा परशराम से, जो तातार खा के भय से कश्मीर मे शरण हेतु चला गया था, मिलकर सैयिद हसन तथा ३० अन्य सैयिदो की नौराहरा उद्यान मे विश्वासघात करके हत्या कर दी और बहत नदी पार कर ली तथा पुल को तोडकर दूसरी ओर सेना एकत्र करके बैठ गये। सैयिद हसन का पुत्र सैयिद मुहम्मद जोकि सुल्तान का मामा था सेना एकत्र करके सुल्तान की रक्षा हेतु दीवानखाने मे पहुचा।

उस रात्रि मे जब कि इतना बडा हाहाकार मचा हुआ था और प्रत्येक व्यक्ति परेशान था, ईदी[1] जैना ने यह निश्चय किया कि यूसुफ खा बिन बहराम खा को, जो बन्दीगृह मे था, बाहर निकाले। सैयिद (४५२) अली खा को, जो सैयिदो का अमीर था, इस विषय की सूचना मिल गई और उसने यूसुफ खा की हत्या कर दी। माची भट्ट की भी, जो यूसुफ खा की हत्या पर पश्चात्ताप करता था, हत्या कर दी। यूसुफ खा की माता सानदेवी ने, जो उस समय विधवा हो गई थी, और तीन कौर रोटी से अधिक भोजन न करती थी, अपने पुत्र की लाश तीन दिन तक घर मे रक्खी। तदुपरान्त उसे दफन कर दिया गया। उसके मकबरे के निकट एक कोठरी बनवाकर वह उसमे निवास करने लगी। इसी अवस्था मे उसकी मृत्यु हो गई।

सक्षेप मे, सैयिद अली खा तथा अन्य सैयिद विद्रोहियो से युद्ध के उद्देश्य से नदी तट पर एकत्र होकर बैठ गये और अत्यधिक धन व्यय करके बहुत बडी सेना एकत्र की। कश्मीर के लोग इधर उधर से बहुत बडी सख्या मे एकत्र होकर शत्रुओ से मिलते जाते थे और दोनो ओर से बाण तथा बन्दूक का युद्ध होता था। नित्यप्रति दोनो ओर से बहुत से लोग मारे जाते थे। चोर खुल्लम खुल्ला नगर मे प्रविष्ट होकर लूटमार करते थे। सैयिदो ने नगर के चारो ओर रक्षा हेतु खाई खोद ली थी ताकि चोरो से रक्षा हो सके और नगर तथा अन्य स्थानो पर जहा कही भी शत्रुओ के घर थे, उन्हे धराशायी कर दिया। उनकी धन सम्पत्ति तथा मवेशी नष्ट कर दिये। अभिमानवश वे अपनी रक्षा न करते थे। उसी समय जहागीर बाकरी, जोकि लोहरकोट मे था, शत्रुओ के बुलाने पर पहुचा। सैयिदो ने यद्यपि उसके पास सधि के सदेश भेजे किन्तु उसने स्वीकार न किया। एक दिन दाऊद बिन जहागीर बाकरी तथा सैफी दानकरी ने पुल पार करके सैयिदों से युद्ध किया। दाऊद अधिकाश विरोधियो सहित मारा गया। सैयिदो ने प्रसन्न होकर नक्कारे बजाये और शत्रुओ के सिरो की मीनार तैयार करा दी। दूसरे दिन सैयिद अपनी (४५३) शक्ति के बल पर पुल पार करना चाहते थे। शत्रु सामने आ गये और पुल के ऊपर युद्ध प्रारम्भ हो गया। जब पुल टूट गया तो दोनो ओर के बहुत से लोग जलमग्न हो गये।

१ एक पोथी के अनुसार 'अहदी'।

तदुपरान्त सैयिदो ने पजाब के हाकिम तातार खा को पत्र लिखकर उसे सहायतार्थ बुलवाया। उसने अत्यधिक सेना उनकी सहायतार्थ भेजी। जब उसकी सेना भनबर के समीप पहुच गई तो उस स्थान के राजा हनश ने उन लोगो मे युद्ध करके बहुत से लोगो की हत्या कर दी। विद्रोही यह समाचार पाकर बड़े प्रसन्न हुए। सैयिदो तथा कश्मीरियो मे दो मास तक युद्ध होता रहा। अन्त मे कश्मीरियो ने सेना को तीन भागों मे विभाजित करके नदी पार कर ली और पर्वत के आसपास के स्थानो को अपने अधिकार मे कर लिया। सैयिदो ने उनका मुकाबला करके वीरता तथा पौरुष प्रदर्शित किया। क्योकि विरोधियो की सख्या बहुत अधिक थी, अत अधिकाश सैयिदों की हत्या हो गई और शेष शहर की ओर भाग गये। कश्मीरियो ने उनका पीछा किया और वे नगर मे प्रविष्ट हो गये और हत्याकाड तथा लूटमार प्रारम्भ कर दिया। नगर मे आग लगा दी जिससे मीर सैयिद अली हमदानी की खानकाह जल गई और उस स्थान पर अग्नि का अन्त हो गया। उस दिन दो हजार व्यक्ति मारे गये। यह घटना ८९२ हि० (१४८८–८९ ई०) मे घटी। सैयिद मुहम्मद विन सैयिद हसन गदाई नामक एक व्यक्ति के घर मे, जो रावन समूह से था, शरण ग्रहण कर ली।

समस्त विद्रोही एकत्र होकर दीवानखाने मे मुहम्मद शाह के अभिवादन हेतु पहुचे और उसे अपनी ओर मिलाकर सैयिद अली खा तथा अन्य सैयिदो को कश्मीर मे निर्वासित करा दिया और परसराम को पर्याप्त धन देकर विदा कर दिया। क्योकि प्रत्येक कश्मीरी नेतृत्व का दावा करता था अत अल्प समय मे उनके मध्य मे विरोध उत्पन्न हो गया और राज्य के कार्य अव्यवस्थित हो गये।

(४५४) फतह खा बिन आदम खा जो तातार खा की मृत्यु के उपरान्त पजाब का हाकिम हो गया था, जालन्धर से अपने पैतृक राज्य के लिये राजौरी पहुचा और वही निवास करने लगा। क्योकि वह जैनुल आबदीन का पौत्र था अत योग्य अमीरो एव प्रजा की बहुत बडी सख्या उसके पास चली गई। उसने उनमे से प्रत्येक व्यक्ति को इनाम देकर प्रोत्साहित किया और इस बात की प्रतीक्षा किया करता था कि जहागीर बाकरी सबसे पहले आकर उससे भेट करेगा। जहागीर बाकरी, इस भय से कि उसके विरोधियो ने सर्वप्रथम उससे भेट की है, फतह खा के पास न गया और उसको कश्मीर की विजय की इच्छा करने से मना किया।

सुल्तान मुहम्मद शाह, जहागीर बाकरी के प्रोत्साहन से कश्मीर से निकला और करसवार[1] के रणक्षेत्र मे अपने शिविर लगाये। फतह खां भी हरपूर[2] के मार्ग से ऊदन[3] के समीप पहुचा और जल के झरने को बीच मे करके सुल्तान के बराबर पडाव कर दिया। सेना की पक्तिया ठीक करके उसने युद्ध की अग्नि प्रज्वलित कर दी। सर्वप्रथम फतह खा को सफलता प्राप्त हुई और सुल्तान की सेना छिन्न भिन्न होने ही वाली थी कि जहागीर ने दृढतापूर्वक फतह खां की सेना के लगभग ५० उत्तम व्यक्तियो की हत्या कर दी और फतह खा की सेना पराजित हो गई। फतह खा बन्दी वनाया जाने वाला ही था कि एक षड्यन्त्रकारी ने यह झूठा समाचार प्रसारित कर दिया कि सुल्तान मुहम्मद शाह विद्रोहियो द्वारा बन्दी बना लिया गया है। जहागीर ने परेशान होकर उसका पीछा न किया।

सुल्तान विजय के उपरान्त कश्मीर पहुचा। उसने मलिक यारी भट्ट को उन स्थानो को नष्ट करने के लिये, जहा फतह खा को शरण प्राप्त हुई थी, भेजा। आदम खा तथा फतह खा बहुत समय तक

१ एक पोथी के अनुसार 'किश्तवार'।
२ एक पोथी के अनुसार 'हरिपुर'।
३ एक पोथी के अनुसार 'अदून'।

गायब रहे और बॅरम कल्ले[1] के समीप प्रकट हुए। दूसरी बार सेना एकत्र करके उन्होने कश्मीर पर (४५५) चढाई की। जहागीर बाकरी ने बहुत बडी सेना सहित युद्ध किया और नाकाम परगने के खसवार नामक ग्राम मे पडाव किया। फतह खा का सेवक जीरक अवसर पाकर नगर मे चला गया। बहुत मे अमीर जो बन्दी थे, उन्हे निकाला। उनमे से सैफी दानकरी भी थे। जहागीर, सफी दानकरी के मुक्त हो जाने से दुखी हुआ और फतह खा से सधि करन का विचार करने लगा। उसने राजौरी के राजा को, जिसकी फतह खा सहायता करने आया था सदेश भजा कि वह फतह खा की सेना मे विरोध उत्पन्न करे। राजोरी का राजा तथा अन्य अमीर पृथक् होकर जहागीर के पास चले गये। फतह खा परेशान होकर भाग गया। जहागीर ने हीरापुर तक उसका पीछा किया। फतह खा ने जम्मू पहुचकर उसे विजय कर लिया और वहा से बहुत बडी सेना लेकर दूसरी बार कश्मीर की विजय हेतु पहुचा।

इसी बीच मे जहागीर ने सैयिदो को, जिन्हे उसने इससे पूर्व निर्वासित कर दिया था, प्रोत्साहन देकर बुलवाया और सुल्तान तथा फतह खा मे घोर युद्ध हुआ। सैफी दानकरी ने फतह खा की ओर से वीरतापूर्वक युद्ध किया और सुल्तान की ओर से सैयिदो ने घोर परिश्रम किया तथा वीरता प्रदर्शित की। उनकी बहुत बडी सेना शहीद हो गई और जो लोग बच गये वे सुल्तान तथा जहागीर के विश्वासपात्र हो गये। इस बार फतह खा पराजित होकर भाग गया और पुन सेना एकत्र करके कश्मीर पहुचा और युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। यहा तक कि सुल्तान के साथ कोई न रहा और उसका समस्त खजाना नष्ट हो गया। जहागीर आहत होकर एक ओर भाग गया और मीर सैयिद मुहम्मद बिन सैयिद हसन फतह खा के पास पहुचा। कुछ समय उपरान्त जमीदारो ने सुल्तान मुहम्मद शाह को बन्दी बनाकर फतह (४५६) खा को सौप दिया। उस समय उसके राज्य को १० वर्ष तथा ७ मास व्यतीत हो चुके थे। फतह खा ने उसे तथा उसके भाइयो को दीवानखाने मे बन्दी बना लिया और आदेश दे दिया कि उनके भोजन तथा अन्य आवश्यकताओ का पूरा प्रबन्ध रखा जाय। सैफी दानकरी सर्वदा उसका सम्मान करता रहा और उसकी सेवा मे उपस्थित रहा।

फ़तह शाह

फतहशाह ८९४ हि० (१४८८–८९ ई०) मे सिहासनारूढ हुआ और उसने सैफी दानकरी को राज्य के समस्त कार्य सौप दिये। उन्ही दिनो में शाह कासिम अनवार का एक चेला मीर शम्स एराक से कश्मीर पहुचा और लोग उसके भक्त हो गये। समस्त वक्फ, इमलाक, पूजागृह तथा देवहरे उसके चेलो को प्रदान कर दिये गये। उसके सूफी, मन्दिरो को नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयत्न करते थे और कोई उन्हे रोक न सकता था। अल्प समय मे अमीरो के मध्य मे झगडा हो गया और दीवानखाने मे पहुचकर उन्होने एक दूसरे की हत्या कर दी। मलिक अच्छी तथा रैना, जोकि फतह खा के अमीरो मे से थे, ने कुछ लोगो से मिलकर यह निश्चय किया कि सुल्तान मुहम्मद शाह को बन्दीगृह से निकालकर बारामूला ले जाया जाय। क्योकि उन्हे उसमे योग्यता के चिह्न न मिले अत वे अपनी कृति से लज्जित होकर मुहम्मद शाह को बन्दी बनाकर फतह खा को दे देने की इच्छा करने लगे। मुहम्मद शाह इस बात की सूचना पाकर एक रात्रि मे कही चला गया।

(४५७) तदुपरान्त सुल्तान फतह शाह ने कश्मीर की विलायत के तीन भाग कर दिये और

१ एक पोथी के अनुसार 'भरम कल्ला'।

अपने आप, मलिक अच्छी तथा शकर मे बराबर बराबर बाट दिया। मलिक अच्छी को वजीरे कुल तथा शकर को दीवाने कुल नियुक्त कर दिया। मलिक अच्छी को मुकदमो के निर्णय मे बडी अच्छी योग्यता थी। दो व्यक्ति रेशम की पेचक के विषय मे झगडा कर रहे थे और प्रत्येक यह कहता था कि यह पेचक मेरी है। दोनो तोल तथा रग मे समान थी। जब यह झगडा मलिक अच्छी के समक्ष प्रस्तुत हुआ तो मलिक अच्छी ने पूछा कि, "इस पेचक को अगुली पर लपेटा गया है अथवा लत्ते पर ?" पेचक के वास्तविक स्वामी ने कहा, "अगुली पर" और झूठे ने कहा, "लत्ते पर।" जब उसे खोला गया तो पता चला कि उसे अगुली पर लपेटा गया था।

जब सुल्तान फतह शाह को राज्य करते हुए कुछ समय हो गया तो जहागीर बाकरी का पुत्र इबराहीम, जिसे अपने पिता का पद प्राप्त था, मुहम्मद शाह के पास पहुचा और उसे हिन्दुस्तान से कश्मीर पर आक्रमण करने की ओर प्रेरित किया और उसे कश्मीर मे लाया। उसमे तथा सुल्तान फतह शाह मे खोहामोया के समीप घोर युद्ध हुआ और सुल्तान फतह शाह की सेना पराजित हो गई। फतह शाह की सेना हीरापुर मार्ग से हिन्दुस्तान चली गई। उसके राज्य के ९ वर्ष उपरान्त यह घटना घटी।

सुल्तान मुहम्मद दूसरी बार सिंहासनारूढ हुआ और उसने इबराहीम बाकरी को स्वतत्र रूप से वजीर और सिकन्दर खा को जोकि सुल्तान शिहाबुद्दीन की सन्तान से था, अपना वलीअहद नियुक्त किया। इबराहीम के पुत्रो ने मलिक अच्छी की, जो उनकी बहिन का पति था, बन्दीगृह मे जाकर हत्या कर दी और फतह खा ने बहुत बडी सेना एकत्र करके पुन कश्मीर पर आक्रमण किया। सुल्तान मुहम्मद (४५८) शाह युद्ध न कर सका और बिना युद्ध किये भाग खडा हुआ। इस बार उसने ९ मास तथा ९ दिन तक राज्य किया।

सुल्तान फतह शाह ने दूसरी बार कश्मीर पर अधिकार जमाकर जहागीर को, जो बद्रा समूह से था, वजीर तथा शकर रैना को दीवाने कुल नियुक्त कर दिया और न्यायपूर्वक राज्य करने लगा। मुहम्मद शाह पराजय के उपरान्त सिकन्दर कक्कर[1] के पास पहुचा। सिकन्दर कक्कर ने बहुत बडी सेना उसकी सहायतार्थ भेजी। जहागीर बद्रा भी सुल्तान फतह शाह से रुष्ट होकर मुहम्मद शाह से मिल गया और उसे राजौरी के मार्ग से कश्मीर लाया। सुल्तान फतह शाह ने जहागीर बाकरी को अपनी सेना के अग्रभाग मे नियुक्त करके मुहम्मद शाह से युद्ध के लिये भेजा। सुल्तान फतह शाह की सेना पराजित हुई। जहागीर बाकरी अपने पुत्रो सहित उस युद्ध मे मारा गया। उसके विश्वस्त अमीर उदाहरणार्थ अलीशाह बेगी तथा अन्य लोग मुहम्मद शाह के पास आये। सुल्तान फतह शाह विवश होकर हिन्दुस्तान की ओर भाग खडा हुआ और वही उसकी मृत्यु हो गई। इस बार उसने एक वर्ष तथा एक मास तक राज्य किया।

सुल्तान मुहम्मद शाह तीसरी बार सिहासनारूढ हुआ और उसने नक्कारे बजवाये। शकर रैना को जो फतह शाह का विश्वस्त अमीर था बन्दी बनाकर काजी चक को, जो बुद्धिमत्ता तथा वीरता से सुसज्जित था, विजारत के लिये चुना। काजी चक को झगडो का निपटारा कराने मे बडी योग्यता प्राप्त थी। उसका एक नवीसिन्दा[2] सयोग से कुछ समय के लिये अपनी पत्नी से दूर हो गया। पत्नी ने धैर्य धारण न

१ एक पोथी के अनुसार 'सिकन्दर काकी', फ़िरिश्ता के अनुसार 'सिकन्दर लोदी'।
२ कार्यालय मे लिखने पढने का कार्य करने वाले मुशी।

कर सकने के कारण अन्य व्यक्ति से विवाह कर लिया। कुछ समय उपरान्त नवीसिन्दा भी आ गया। उसमे तथा दूसरे पति मे झगडा होने लगा और वे काजी चक के पास पहुचे। क्योकि उनमे से (४५९) किसी के पास अपने दावे की पुष्टि के लिये कोई साक्षी न था अत इस अभियोग का निर्णय कठिन हो गया। अन्त मे मलिक काजी चक ने उस स्त्री से कहा कि, "तू सच कहती है और यह नवीसिन्दा झूठा है। आ और थोडा-सा जल मेरी दावात मे डाल दे ताकि मै तेरे लिये दस्तावेज लिख दूँ तदुपरान्त तेरा उससे कोई सम्बन्ध न रहेगा।" स्त्री ने जितना जल आवश्यक था, दावात मे डाल दिया। मलिक ने कहा, "थोडा-सा और डाल।" उसने फिर थोडा सा जल इस सावधानी से डाला कि मसि नष्ट न हो। मलिक ने उपस्थितगण से कहा कि, "इसकी सावधानी से पता चलता है कि यह नवीसिन्दे की पत्नी है।" पत्नी ने भी अन्त मे सच बात स्वीकार कर ली और झगडे का अन्त हो गया।

जब सुल्तान मुहम्मद शाह को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया तो उसने फतह शाह के अधिकाश अमीरों उदाहरणार्थ सैफी दानकरी इत्यादि की हत्या करा दी। शकर रैंना अपनी मृत्यु से मर गया। फतह शाह की लाश उसके सेवक हिन्दुस्तान मे कश्मीर लाये और सुल्तान मुहम्मद शाह उसके स्वागतार्थ गया तथा सुल्तान जैनल आबदीन के मजार के समीप दफन कर दिया। यह घटना ९२२ हि० (१५-१६-७ ई०) मे घटी।

उसी वर्ष देहली के बादशाह सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र इबराहीम सिहासनारूढ हुआ। उन्ही दिनो मे जब मलिक काजी ने इबराहीम बाकरी को वन्दीगृह मे कर दिया तो उसका पुत्र अबदाल बाकरी हिन्दुस्तान के बहुत से लोगो की सहायता से सिकन्दर खा बिन फतह शाह को सिहासनारूढ करके कश्मीर लाया। सुल्तान मुहम्मद शाह तथा मलिक काजी माकल[1] परगने के अधीन लौलपुर[2] ग्राम मे शत्रुओ से युद्ध हेतु निकले। सिकन्दर खा मुकाबला न कर सका और असफल होकर किले मे चला गया। मलिक काजी ने उस किले को घेर लिया। कुछ दिन तक दोनो दलो मे युद्ध होता रहा। इसी बीच मे सुल्तान के कुछ अमीर जोकि विद्रोह की दृष्टि से आये थे, सिकन्दर खा के पास जाते थे। मलिक काजी ने अपने पुत्र मसऊद को उनके विरुद्ध भेजा और उसने उनसे बडी वीरता से युद्ध किया (४६०) तथा मारा गया किन्तु मसऊद की सेना को विजय प्राप्त हो गई। सिकन्दर खा नाकाम नामक किले को छोडकर बाहर चला गया और मलिक किले मे प्रविष्ट हो गया। बाकरी लोग परेशान होकर सिकन्दर के पीछे रवाना हुए। सुल्तान मुहम्मद शाह प्रसन्नतापूर्वक शहर मे लौट आया। यह घटना ९३१ हि० (१५२४–२५ ई०) मे घटी।

इसी वर्ष बाबर बादशाह ने इबराहीम लोदी पर आक्रमण किया और पानीपत के रणक्षेत्र मे उसकी हत्या कर दी। इसी बीच मे सुल्तान, शत्रुओ की चुगली के कारण, मलिक काजी का शत्रु हो गया। मलिक काजी शकित होकर राजौरी पहुचा और आसपास के राजाओ को अपने साथ मिला लिया। उसी समय सिकन्दर खा, जोंकि सुल्तान के द्वारा पराजित होकर चला गया था, बहुत से मुगुलो के साथ आया और उसने लोहर कोट पर अधिकार जमा लिया। मलिक काजी के भाई मलिक यारी ने सूचना पाकर उस पर आक्रमण किया और युद्ध करके उसे बन्दी बना लिया और उसे सुल्तान के पास भेज दिया। सुल्तान ने

१ एक पोथी के अनुसार 'बाकल', फ़िरिश्ता के अनुसार 'माहकल'।
२ एक पोथी के अनुसार 'लूलूपुर', फ़िरिश्ता के अनुसार 'निवलपुर'।

इस निष्ठा के कारण मलिक काजी से सतुष्ट होकर विजारत का पद उसे पुन सौप दिया। सिकन्दर को अन्धा करा दिया।

इसी बीच मे सुल्तान मुहम्मद शाह का पुत्र इबराहीम खा अपने पिता के साथ सुल्तान इबराहीम लोदी के पास देहली गया हुआ था। सुल्तान इबराहीम लोदी ने सुल्तान मुहम्मद शाह को अत्यधिक सेना देकर विदा किया। इबराहीम खा को उसने अपनी सेवा मे रख लिया। सुल्तान इबराहीम लोदी की दुर्घटना के कारण वह कश्मीर आया। मलिक काजी, सिकन्दर खा के अन्धा कर दिये जाने के कारण, सुल्तान से रुष्ट था। उसने सुल्तान के विश्वासपात्रो को, जिस बहाने से भी हो सका, बन्दी बना दिया। तदुपरान्त उसने सुल्तान को बन्दी बनाकर इबराहीम खा को सिहासनारूढ कर दिया। मुहम्मद शाह ने इस बार ११ वर्ष ११ मास तथा ११ दिन तक राज्य किया।

बंगाल

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अह्‌मद

तबक़ाते अकबरी

क़ासिम हिन्दू शाह फ़िरिश्ता

गुलशने इबराहीमी या तारीख़े फ़िरिश्ता

ग़ुलाम हुसेन सलीम

रियाज़ुस्सलातीन

तबक़ाते अकबरी

(लेखक—ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद)

(प्रकाशन—कलकत्ता १९३५ ई०)

बंगाल के सुल्तान

(२६०) बगाले मे इस्लाम का राज्य मुहम्मद बख्तियार के समय से, जो सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक का बडा सम्मानित अमीर था, प्रारम्भ हुआ। उसके उपरान्त देहली के सुल्तानों के अमीर[1] वहा राज्य करते रहे। उनका इतिहास देहली के सुल्तानो के वृत्तात के प्रसग मे लिखा जा चुका है।

(२६१) जब मलिक फ़खरुद्दीन ने, जो बगाले के हाकिम कदर खा का सिलाहदार[2] था, (सुल्तान की) हत्या कर दी तो स्वय सुल्तान की उपाधि धारण कर ली। कदर खा मुहम्मद तुगलुक शाह का गुमाश्ता था। उसके उपरान्त बगाले का पृथक् राज्य स्थापित हो गया और देहली के सुल्तानो का उन पर अधिकार न रहा। बगाले के सुल्तानो का राज्य मलिक फ़खरुद्दीन से प्रारम्भ हुआ।

सुल्तान फख्रुद्दीन १२ वर्ष तथा कुछ मास
सुल्तान अलाउद्दीन १ वर्ष तथा कुछ मास
सुल्तान शम्सुद्दीन १६ वर्ष तथा कुछ मास
सुल्तान सिकन्दर बिन सुल्तान शम्सुद्दीन ९ वर्ष तथा कुछ मास
सुल्तान गयासुद्दीन बिन सिकन्दर ७ वर्ष
सुल्तानुस्सलातीन १० वर्ष
सुल्तान शम्सुद्दीन बिन सुल्तानुस्सलातीन ३ वर्ष
राजा कस ७ वर्ष
सुल्तान जलालुद्दीन बिन कस १७ वर्ष
सुल्तान अहमद बिन जलालुद्दीन १६ वर्ष
सुल्तान नासिरुद्दीन बिन अहमद ७ दिन
सुल्तान नासिर शाह २ वर्ष
बारबक शाह १७ वर्ष
यूसुफ शाह ७ वर्ष, ६ मास
सिकन्दर शाह आधा दिन
फतह शाह ७ वर्ष तथा ५ मास

१ प्रकाशित ग्रन्थ मे 'अमीर' नही है किन्तु एक हस्तलिखित पोथी में 'अमीर' है।
२ देखिये पृ० ३३, नोट न० ३।

बारबक शाह ख्वाजासरा २ मास तथा आधा दिन
फीरोज शाह ' ३ वर्ष
महमूद शाह बिन फीरोज ' १ वर्ष
मुज़फ्फर हब्शी ३ वर्ष तथा ५ मास
अलाउद्दीन २७ वर्ष
नसीब शाह बिन अलाउद्दीन . ११ वर्ष

सुल्तान फ़ख़रुद्दीन

मलिक फख़रुद्दीन कदर ख़ा का सिलाहदार था। उसने अपने आश्रयदाता की विश्वासघात द्वारा हत्या करके राज्य अपने अधिकार मे कर लिया और अपने दास मुख़लिस को सेना देकर बगाले की सीमात पर भेजा। मलिक अली मुबारक ने, जो कदर ख़ा की सेना का आरिज[1] था, मुखलिस ख़ा से युद्ध किया और उसकी हत्या करके उसके समस्त घोडो और सेना को, जो उसके साथ थी, अपने अधिकार मे कर लिया। सुल्तान फखरुद्दीन को क्योकि राज्य पहली बार प्राप्त हुआ था अत वह लोगो से सतुष्ट न रहता था। (२६२) वह अली मुबारक पर आक्रमण न कर सकता था। अन्त मे मलिक अली मुबारक ने सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण करके सुल्तान फखरुद्दीन पर आक्रमण किया। ७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) मे उससे युद्ध करके उसे उसने जीवित बन्दी बना लिया और उसकी हत्या करा दी। लखनौती मे थाना निश्चित करके बगाले[2] की ओर लौट गया।

सुल्तान फ़ख़रुद्दीन ने २ वर्ष[3] तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान अलाउद्दीन

सुल्तान फखरुद्दीन की हत्या कर देने के उपरान्त उसने लखनौती मे बडे वैभव से थाना निश्चित करके बगाले[4] की ओर रवाना हुआ। कुछ दिन उपरान्त मलिक हाजी इलियास अलाउद्दीन[5] ने जो लखनौती की सेना मे नियुक्त हुआ था, सेना को मिला लिया और सुल्तान अलाउद्दीन की हत्या कर दी तथा लखनौती और बगाले पर अधिकार जमा लिया।

सुल्तान अलाउद्दीन ने एक वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

हाजी इलियास

हाजी इलियास ने अपने आपको सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा की उपाधि देकर समस्त लखनौती तथा बगाले पर अधिकार जमा लिया और प्रजा तथा सेना के प्रोत्साहन हेतु अत्यधिक प्रयत्नशील रहता था।

१ सेना का निरीक्षण एवं भरती करने वाला।
२ सम्भवत' सुनार गांव।
३ प्रकाशित पुस्तक मे १० वर्ष है किन्तु दो हस्तलिखित पोथियों मे 'दो वर्ष' है।
४ भट्टासनी के अनुसार 'पड़ुवा' (Bhattasalı, Coins and Chronology of the Early Independent Sultans of Bengal, 1922).
५ एक पोथी के अनुसार 'अलाई'।

(२६३) कुछ समय उपरान्त उसने सेना तैयार करके जाजनगर पर चढाई की। वहा से वह बहुत बडे-बडे हाथी अपने अधिकार मे करके अपनी राजधानी को लौट आया। १३ वर्ष तथा कुछ मास तक देहली के सुल्तानों ने उससे कोई रोकटोक न की और वह स्वतत्र रूप से राज्य के कार्य सम्पन्न करता रहा। १० शव्वाल ७५४ हि० (८ नवम्बर १३५३ ई०) को सुल्तान फ़ीरोज़ शाह बिन रजब ने देहली से लखनौती पर आक्रमण किया। सुल्तान शम्सुद्दीन इकदला के किले मे बन्द हो गया और समस्त बगाले की विलायतो को खाली छोड दिया। सुल्तान फीरोज ने जब यह सुना कि वह इकदला के किले मे बन्द हो गया है तो वह मार्ग से इकदले की ओर रवाना हुआ। जब वह इकदले के समीप पहुचा तो सुल्तान शम्सुद्दीन ने किले से निकलकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। दोनो ओर से अत्यधिक सख्या मे लोग मारे गये। सुल्तान शम्सुद्दीन ने भागकर इकदले मे शरण ग्रहण की और जाजनगर से जो वडे-बडे हाथी वह लाया था वे सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के आदमियो को प्राप्त हो गये।

वर्षा ऋतु के आ जाने एव अत्यधिक वर्षा प्रारम्भ हो जाने के कारण सुल्तान फीरोज शाह ११ रबी-उल-अव्वल को देहली लौट गया। जब सुल्तान फीरोज शाह देहली लौट गया तो ७५५ हि० (१३५४ ई०) मे सुल्तान शम्सुद्दीन ने अत्यधिक पेशकश, जो कि सुल्तानो के योग्य थी, अपने दूतो के हाथ सुल्तान फीरोज शाह की सेवा मे भेजी और क्षमा-याचना की। सुल्तान फीरोज शाह ने भी उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करके दूतो को खिलअते प्रदान की और उन्हे विदा कर दिया।

सुल्तान शम्सुद्दीन ने ७५९ हि० (१३५७-५८ ई०) के अन्त मे मलिक ताजुद्दीन को अत्यधिक पेशकश देकर पुन देहली भेजा और सुल्तान फीरोज शाह ने दूतो के प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। कुछ दिन उपरान्त उसने तुर्की तथा अरबी घोडे अन्य उपहारो सहित, मलिक सैफुद्दीन शहनये फील के हाथ सुल्तान शम्सुद्दीन की सेवा मे भेजे। अभी मलिक सैफुद्दीन तथा मलिक ताजुद्दीन बिहार को पार (२६४) भी न कर पाये थे कि सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु हो गयी। मलिक सैफुद्दीन ने (शाही) आदेशानुसार घोडो को बिहार के अमीरो को दे दिया और ताजुद्दीन स्वय देहली लौट आया।

सुल्तान शम्सुद्दीन ने १६ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान सिकन्दर शाह बिन सुल्तान शम्सुद्दीन

सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त अमीरो तथा विभिन्न समूहो के सरदारो ने तीसरे दिन उसके ज्येष्ठ पुत्र को सिकन्दर शाह की उपाधि देकर सिहासनारूढ किया। उसने न्याय तथा परोपकार की घोषणा करते हुए राज्य के कार्य प्रारम्भ किये और सुल्तान फीरोज शाह को सतुष्ट रखना अपने लिये परमावश्यक समझा। ५० हाथी तथा नाना प्रकार के वस्त्र पेशकश के रूप मे सुल्तान फीरोज़ शाह की सेवा मे भेजे। इसी बीच मे सुल्तान फीरोज शाह ने बगाले पर आक्रमण हेतु ७६० हि० (१३५८-५९ ई०) मे लखनौती पर चढाई की। जब वह पडुवा के क्षेत्र मे पहुचा तो सुल्तान सिकन्दर अपने पिता की प्रथानुसार इकदला के किले मे बन्द हो गया। क्योकि उसमे युद्ध की शक्ति न थी, अत वार्षिक पेशकश भेजने का वचन देकर सुल्तान को लौटा दिया। अभी सुल्तान पडुवा के क्षेत्र ही मे था कि उसने ३७ हाथी, अत्यधिक धन सम्पत्ति एव नाना प्रकार के वस्त्र सुल्तान की सेवा में भेजे और क्षमा-याचना की। अपने पिता की प्रथा पर आचरण करते हुए, वह आजीवन भोग-विलास मे समय व्यतीत करता रहा।

उसने ९ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तान ग़यासुद्दीन

(२६५) सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त अमीरों तथा विभिन्न समूहो के सरदारों ने उसके पुत्र को सुल्तान गयासुद्दीन की उपाधि देकर उसके पिता के स्थान पर सिहासनारूढ कर दिया। वह भी अपने पिता तथा पितामह की प्रथानुसार आजीवन भोग-विलास मे तल्लीन रहा और ७७३ हि० (१३७३-४ ई०) मे उसकी मृत्य हो गई।

उसने ७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तानुस्सलातीन

सुल्तान गयासुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त अमीरो ने उसके पुत्र को सुल्तानुस्सलातीन की उपाधि देकर सिहासनारूढ किया। वह बहुत दानी, सहनशील तथा वीर था। ७८५ हि० (१३८३-८४ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने १० वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान शम्सुद्दीन

सुल्तानुस्सलातीन की मृत्यु के उपरान्त अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने उसके पुत्र को सुल्तान शम्सुद्दीन की उपाधि देकर सिंहासनारूढ कर दिया। वह भी अपने पूर्वजो की प्रथानुसार भोग-विलास मे जीवन व्यतीत करता रहा और ७८८ हि० (१३८६-८७ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गयी।

उसने ३ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

राजा कंस[१]

सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त कस नामक एक जमीदार ने बगाले पर अधिकार जमा लिया। जब ईश्वर ने उसकी दुष्टता का अन्त कर दिया तो उसका पुत्र मुसलमान होकर सिहासनारूढ हुआ।

कस ने ७ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान जलालुद्दीन बिन कंस

(२६६) कस की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्रं, जो राज्य के लोभ से मुसलमान हो गया था, सुल्तान जलालुद्दीन के नाम से बादशाह हुआ। उसके राज्य मे लोग सुखी तथा खुशहाल थे। ८१२ हि० (१४०९-१० ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने १७ वर्ष तक राज्य किया।

सुल्तान अहमद बिन सुल्तान जलालुद्दीन

सुल्तान जलालुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त, अमीरो ने उसके पुत्र को सुल्तान अहमद की उपाधि देकर उसके पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ कर दिया।

८३० हि० (१४२६-२७ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने १६ वर्ष तक राज्य किया।

१ एक पुस्तक में 'कास' है।

नासिर गुलाम

जब सुल्तान अहमद की मृत्यु हो गई तो उसके दास नासिर ने साहस से कार्य लेकर सिंहासन पर अधिकार जमा लिया और राज्य-व्यवस्था करने लगा। सुल्तान अहमद के अमीरों तथा मलिको ने, नासिर की हत्या कर दी और सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा के वश के एक व्यक्ति को सिहासनारूढ कर दिया।

उसने ७ दिन तक राज्य किया। कुछ लोगो के मतानुसार उसका राज्य आधे दिन तक रहा।

नासिर शाह

नासिर गुलाम की हत्या के उपरान्त, सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा की सतान मे से एक व्यक्ति को सिहासनारूढ किया गया और उसको नासिर शाह की उपाधि दी गई। सभी छोटे-बडे, सर्वसाधारण (२६७) तथा सम्मानित व्यक्ति उसके राज्यकाल मे सुख-सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करते रहे। ८६२ हि० (१४५७-५८ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने २ वर्ष तक राज्य किया।

बारबक शाह

नासिर शाह की मृत्यु के उपरान्त, उस प्रदेश के अमीरो तथा प्रतिष्ठित लोगो ने बारबक शाह को सिहासनारूढ कर दिया। उसके राज्यकाल मे नगर-निवासी तथा सैनिक आराम से जीवन व्यतीत करते रहे और वह भी भोग-विलास मे जीवन व्यतीत करता रहता था। ८७९ हि० (१४७४-७५ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने १७ वर्ष तक राज्य किया।

यूसुफ़ शाह

बारबक शाह की मृत्यु के उपरान्त राज्य के प्रतिष्ठित लोगो ने यूसुफ शाह को सिहासनारूढ किया। वह बडा ही सहनशील तथा सदाचारी बादशाह था। ८८७ हि० (१४८२-८३ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने ७ वर्ष तथा ६ मास तक राज्य किया।

सिकन्दर शाह

यूसुफ शाह की मृत्यु के उपरान्त अमीरो तथा वजीरो ने सिकन्दर शाह को सिहासनारूढ किया। (२६८) क्योकि उसे इस बडे कार्य से कोई सम्बन्ध न था अत उसे पदच्युत करके फतह शाह को सिंहासनारूढ किया गया।

उसने आधे दिन तक राज्य किया।

फ़तह शाह

सिकन्दर शाह के पदच्युत कर देने के उपरान्त, अमीरो तथा सम्मानित व्यक्तियो ने, फतह शाह को सिंहासनारूढ किया। वह बडा ही बुद्धिमान् था और सुल्तानो की प्रथानुसार प्रत्येक को उसकी श्रेणी

के अनुसार, सम्मानित करता रहता था। उसके राज्यकाल मे लोगो के ऊपर भोग-विलास के द्वार खुल गये।

बगाले मे यह प्रथा थी कि प्रत्येक रात्रि मे पाच हजार पायक, बारी-बारी पहरे पर उपस्थित होते थे और प्रात काल बादशाह थोडी देर के लिये सिहासन पर आसीन होकर उस समूह का अभिवादन स्वीकार करता था और उन्हे विदा कर देता था। तदुपरान्त अन्य लोग उपस्थित होते थे। एक बार फतह शाह के ख्वाजासरा ने पायको को धन का लोभ दिलाकर उसकी हत्या करा दी और प्रात काल सिहासनारूढ हो गया तथा पायको का अभिवादन स्वीकार किया। यह घटना ८९६ हि० (१४८७-८८ ई०) मे घटी। फतह शाह ने ७ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

कहा जाता है कि बगाले मे कई वर्ष से यही प्रथा हो गई थी कि जो कोई बादशाह की हत्या करके सिहासनारूढ हो जाता था, सभी लोग उसके आज्ञाकारी हो जाते थे।

बारबक शाह

जब अभागे ख्वाजासरा ने अपने स्वामी की हत्या कर दी और स्वय बादशाह हो गया तो जिन जिन स्थानों पर ख्वाजासरा थे वे उसके द्वार पर एकत्र हुए और उसने पतित तथा साहसहीन लोगो को (२६९) धन का लोभ दिलाकर झूठे वचन द्वारा प्रसन्न किया और उन्हे अपने चारो ओर एकत्र कर लिया। नित्यप्रति उसकी शक्ति मे वृद्धि होने लगी। अन्त मे बडे बडे अमीरो ने एक दूसरे से मिलकर पायको को अपनी ओर मिला लिया और उसकी हत्या कर दी।

उसका प्रभुत्व २ मास तथा आधे दिन तक रहा।

फ़ीरोज़ शाह

जब ख्वाजासरा की, जिसकी उपाधि बारबक शाह थी, हत्या कर दी गई तो अमीरो तथा प्रतिष्ठित लोगो ने फ़ीरोज शाह को सिहासनारूढ किया। वह बडा ही दयावान् तथा कृपालु बादशाह था। ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगो का मत है कि पहरे के पायको ने विश्वासघात करके उसकी हत्या कर दी।

उसने ३ वर्ष तक राज्य किया।

महमूद शाह

फीरोज़ शाह की मृत्यु के उपरान्त अमीरो तथा अन्य लोगो ने उसके ज्येष्ठ पुत्र को सुल्तान महमूद शाह की उपाधि देकर सिंहासनारूढ किया। उसमे नाना प्रकार के गुण थे।

सीदी मुजफ्फर हब्शी नामक एक दास ने पायको के सरदार को मिलाकर एक रात्रि मे महमूद की हत्या कर दी और प्रात काल स्वय सिहासनारूढ होकर मुजफ्फर शाह की उपाधि धारण कर ली।

महमूद शाह ने १ वर्ष तक राज्य किया।

मुज़फ़्फ़र शाह हब्शी

(२७०) जब मुजफ्फर शाह हब्शी ने राज्य का अपहरण कर लिया तो समस्त ससार मे अन्धकार छा गया। वह बडा ही निष्ठुर तथा अत्याचारी था। उसने अत्यधिक आलिमो तथा पवित्र व्यक्तियो

की हत्या करा दी। अन्त मे उसका अलाउद्दीन नामक एक सिपाही, पायको के सरदार को अपनी ओर मिलाकर, एक रात्रि मे १३ पायको सहित उसके अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गया और उसकी हत्या कर दी तथा प्रात काल सिहासनारूढ हो गया। उसने अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन रक्खी।

मुजफ्फर शाह हब्शी ने ३ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान अलाउद्दीन

सुल्तान अलाउद्दीन बडा ही बुद्धिमान् था। उसने उच्च वश के अमीरो को प्रोत्साहन देकर एव अपने विशेष सेवको को भी उच्च श्रेणी पर आसीन करके उनके पदो मे वृद्धि की। उसने पायको द्वारा पहरा दिलाने की प्रथा का अन्त करा दिया ताकि उसे कोई हानि न पहुचे। आलिमो, पवित्र तथा सम्मानित व्यक्तियो को राज्य के चारो ओर से बुलवाकर उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की और बगाले की सुख-सम्पन्नता मे वृद्धि करने का अत्यधिक प्रयत्न कराया। कई गाव उसने शख नूर कुतुब आलम के लगर के लिये निश्चित किये और प्रत्येक वर्ष वह शेख नूर के मजार के दर्शनार्थ पडुवा जाया (२७१) करता था। वह अपने सदाचरण एव सच्चरित्रता के कारण आजीवन भोग-विलास मे अपना जीवन व्यतीत करता रहा। अन्त मे ९२९ हि० (१५२२-२३ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने २७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

गुलशने इबराहीमी या तारीखे फ़िरिश्ता (भाग २)

(लेखक—कासिम हिन्दू शाह फिरिश्ता)

(प्रकाशन—नवलकिशोर प्रेस लखनऊ)

सुल्तान फ़ख़रुद्दीन

(२९५) मलिक फखरुद्दीन बगाले के हाकिम कदर खा का सिलाहदार था और उसकी तलवार अपने पास रखता था। जब सुनार गाव मे उसकी मृत्यु हो गई तो ७३९ हि० (१३३८-९ ई०) मे मलिक फख़रुद्दीन ने राज्य पर अधिकार जमा लिया और अपनी उपाधि फ़खरुद्दीन सुल्तान रख ली। उसने अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया और सेनाओ एव परिजनो के एकत्र करने का प्रयत्न करने लगा।

जब सुल्तान मुहम्मद (बिन) तुगलुक को इस बात का पता चला तो उसने लखनौती के हाकिम कदर खा को बहुत से अमीरो उदाहरणार्थ इज्जुद्दीन यहया तथा फ़ीरोज अमीर कोह[1] के साथ उसके विरुद्ध नियुक्त किया। जब उन लोगो मे युद्ध हुआ तो फखरुद्दीन पराजित होकर दूर के जगलों मे भाग गया। उसके घोडे तथा हाथी अन्य लोगो को प्राप्त हो गये। कदर खा उसी स्थान पर रह गया। अमीर लोग अपनी अपनी अक्ता को चले गये।

जब वर्षा ऋतु आ गई तो कदर खा धन एकत्र करने मे व्यस्त हो गया और सेना को सगठित रखने की ओर से असावधान हो गया। उसकी इच्छा थी कि वर्षा ऋतु उपरान्त सुल्तान (मुहम्मद बिन तुगलुक) की सेवा मे पहुच कर राजसिहासन के समक्ष सोने चादी के ढेर लगा दे। सयोग से फखरुद्दीन को इस बात का पता चल गया। उसने कुछ लोगो को गुप्त रूप से सेना वालो के पास भेजकर सबको मिला लिया और यह वचन दिया कि "यदि मै कदर खा पर विजय प्राप्त कर लूँगा तो खजाना लोगो को बाट दूँगा।" जब फखरुद्दीन अपनी सेना सहित जगल से निकलकर सुनार गाव की ओर रवाना हुआ तो अपराधी सैनिको एव विद्रोही अमीरो ने सगठित होकर कदर खा की हत्या कर दी और ख़जाना लेकर फखरुद्दीन से मिल गये। फखरुद्दीन ने अपने वचन का पालन करते हुए उन लोगो को धन बाट दिया और सुनार गाव को अपनी राजधानी बना लिया, तथा उस प्रदेश मे राज्य करने लगा।

उसने मुख़लिस नामक अपने एक दास को एक बहुत बडी सेना सहित लखनौती पर अधिकार जमाने के लिये नियुक्त किया। अली मुबारक, जोकि कदर खा की सेना का आरिज था, ने साहस एव पौरुष प्रदर्शित करते हुए बहुत से लोगो को मिला लिया और मुख़लिस से युद्ध करके उसे पराजित कर दिया। तदुपरान्त उसने मुहम्मद (बिन) तुगलुक के पास विजय-पत्र भेजकर निवेदन किया कि यदि आदेश हो तो मै लखनौती पर अधिकार जमा लूँ। सुल्तान को उसके

१ कृषि की देख-रेख करने वाला मुख्य अधिकारी।

विषय मे कोई ज्ञान न था अत उसे कोई उत्तर न भेजा। उसने देहली के शह्ना[1] यूसुफ को लखनौती का अधिकारी बना दिया और उसे उस ओर भेज दिया। वह वहा न पहुच सका और मृत्यु को प्राप्त हो गया। लखनौती अली मुबारक शाह के अधीन रह गई। क्योंकि बादशाही के सामान एकत्र थे, अत. उसने अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित की किन्तु उन्ही दिनों मे मलिक इलियास ने, जोकि उस क्षेत्र मे रहता था, सेना एकत्र करके लखनौती पर आक्रमण किया और सुल्तान अलाउद्दीन की हत्या कर दी। तदुपरान्त अपनी उपाधि सुल्तान शम्सुद्दीन रख ली। ७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) मे उसने सुनार गाव पर चढाई की और फखरुद्दीन को जीवित वन्दी बनाकर लखनौती लाया और उसकी हत्या करा दी। अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चला दिया किन्तु निजामुद्दीन अहमद बख्शी ने अपने ग्रथ[2] मे लिखा है कि मलिक फखरुद्दीन कदर खा का सिलाहदार था। उसने अपने आश्रयदाता की विश्वास-घात द्वारा लखनौती मे हत्या करके राज्य पर अधिकार जमा लिया और मुखलिस नामक अपने दास को सेना देकर बगाले की सीमा पर आक्रमण करने के लिये भेजा। कदर खा की सेना के आरिज अली मुबारक ने मुखलिस से युद्ध किया और उसको पराजित कर दिया। जो धन-सम्पत्ति एव सेना उसके पास थी, उस पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान फखरुद्दीन को राज्य नया नया प्राप्त हुआ था अत वह अपने आदमियों से सतुष्ट न रहता था। वह शका के कारण अली मुबारक के विरुद्ध न गया, यहा तक कि अली मुबारक ने तैयारी करके सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण कर ली। ७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) मे फखरुद्दीन लखनौती पहुचा किन्तु युद्ध मे अली मुबारक द्वारा मारा गया।

फखरुद्दीन ने दो वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

अली मुबारक "सुल्तान अलाउद्दीन"

(२९६) फखरुद्दीन की हत्या के उपरान्त उसने लखनौती मे बडे वैभ्व से थाना नियुक्त किया और बगाले की ओर रवाना हुआ। कुछ दिनो के उपरान्त मलिक हाजी इलियास, जिसने हाजीपुर बसाया था, ने सुल्तान अलाउद्दीन की सेना को मिला लिया और लखनौती तथा बगाले पर अधिकार जमा लिया। उसने अलाउद्दीन शाह की हत्या कर दी और अपनी उपाधि शाह शम्सुद्दीन रखी। अलाउद्दीन ने एक वर्ष तथा पाच मास तक राज्य किया।

हाजी इलियास "सुल्तान शम्सुद्दीन भंगरा"

जब शाह अलाउद्दीन की हत्या हो गई तो समस्त लखनौती और बगाला हाजी इलियास के अधीन हो गया। उसने अपने अमीरों की सहमति से अपनी उपाधि शाह शम्सुद्दीन भगरा रक्खी और अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। वह भगरा कहलाता था किन्तु लेखक को इसका कारण ज्ञात नही। कुछ समय उपरान्त उसने अमीरो तथा सिपाहियों को प्रोत्साहन देकर जाजनगर पर, जोकि मुहम्मद बख्तियार के उपरान्त मुसलमानो के हाथ से निकल चुका था, चढाई की और उस क्षेत्र से बहुत बडे-बडे हाथी अपने अधिकार में करके अपनी राजधानी को लौट आया। १३ वर्ष तथा कुछ मास तक देहली के बादशाहो मे से किसी ने उसके प्रति कोई रोकटोक न की और वह स्वतत्रतापूर्वक राज्य करता रहा यहा तक कि

१ प्रबन्धक, अधीक्षक।
२ 'तबकाते अकबरी'।

१० शव्वाल ७५४ हि० (८ नवम्बर १३५३ ई०) मे फीरोज शाह ने एक बडी भारी सेना लेकर देहली से लखनौती पर चढाई की। शाह शम्सुद्दीन एकदला के किले मे बन्द हो गया और पूरे बगाले की विलायत[1] को खाली छोड दिया। सुल्तान फीरोज़ शाह एकदला की ओर रवाना हुआ। जब वह एकदला के समीप पहुचा तो शाह शम्सुद्दीन ने किले से निकलकर युद्ध किया। दोनो ओर से बहुत बडी सख्या मे लोग मारे गये। शाह शम्सुद्दीन ने भागकर एकदला मे शरण ली। जो बडे-बडे हाथी वह जाजनगर से लाया था, वह सुल्तान फीरोज शाह के अधिकार मे आ गये। जब वर्षा ऋतु आ गई और अत्यधिक वर्षा होने लगी तो सुल्तान फीरोज शाह देहली चला गया। ७५५ हि० (१३५४ ई०) मे शाह शम्सुद्दीन ने अत्यधिक पेशकश, जोकि बादशाहो के दरबार के योग्य थी, अपने वाक्पटु राजदूतो के हाथ भेजी। फीरोज शाह बादशाह ने राजदूतो के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उन्हे विदा कर दिया। शाह शम्सुद्दीन ने ७५९ हि० के अन्त मे (१३५७-५८ ई०) मलिक ताजुद्दीन को अत्यधिक पेशकश देकर पुन देहली भेजा। फीरोज शाह ने राजदूतो के प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। कुछ दिन उपरान्त उसने तुर्की तथा अरबी घोडे एव अन्य उपहार मलिक सैफुद्दीन शहनये फील के हाथ शाह शम्सुद्दीन के लिये भेजे किंतु मलिक सैफुद्दीन शहनये फील तथा मलिक ताजुद्दीन ने बिहार को पार भी न किया था कि शाह शम्सुद्दीन की मृत्यु हो गई और मलिक सैफुद्दीन ने शाही आदेशानुसार बिहार के अमीरो को घोडे दे दिये। मलिक ताजुद्दीन देहली चला गया।

शाह शम्सुद्दीन ने १६ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

शाह सिकन्दर बिन शाह शम्सुद्दीन शाह

जब शाह शम्सुद्दीन की मृत्यु हो गई तो अमीरो एव सरदारो के प्रस्ताव पर तीसरे दिन उसका ज्येष्ठ पुत्र सिकन्दर शाह की उपाधि धारण करके सिहासनारूढ हुआ और न्याय तथा परोपकार की घोषणा करके शासन-प्रबन्ध करने लगा। उसने फीरोज शाह को सतुष्ट रखने को अत्यधिक महत्व देते हुए ५० हाथी तथा नाना प्रकार के वस्त्र उपहार-स्वरूप भेजे। इस समय फीरोज शाह बगाले की विजय हेतु ७६० हि० (१३५८-५९ ई०) मे लखनौती की ओर रवाना हो गया था। सुल्तान सिकन्दर ने अपनी शक्ति अनुसार उसका मुकाबिला किया और अपने किलो को दृढ बनाया। सुल्तान फीरोज शाह ज़फराबाद पहुचा। सुल्तान सिकन्दर भी अपने पिता की प्रथानुसार एकदला के किले मे बन्द हो गया। क्योकि उसमे युद्ध की शक्ति न थी अत उसने वार्षिक पेशकश अदा करना स्वीकार करके बादशाह को वापिस लौटा दिया। बादशाह अभी पडुवा के क्षेत्र ही मे था कि उसने ३७ हाथी तथा अत्यधिक धन एव वस्त्र उसकी सेवा मे भेजे और क्षमा-याचना करके अपने पिता की प्रथानुसार कार्य करता रहा और अपना जीवन भोग-विलास मे व्यतीत करता रहा।

उसने ९ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

शाह ग़यासुद्दीन बिन सिकन्दर शाह

सिकन्दर शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र सुल्तान गयासुद्दीन सिहासनारूढ हुआ। वह

[1] राज्य।

(२९७) भी अपने पिता तथा पितामह की प्रथानुसार भोग-विलास मे जीवन व्यतीत करता रहा और ७७५ हि० (१३७३-४ ई०) मे मृत्यु को प्राप्त हुआ।

उसने ७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

सुल्तानुस्सलातीन शाह बिन ग़यासुद्दीन शाह

जब गयासुद्दीन शाह की मृत्यु हो गई तो अमीरों ने उसके पुत्र को सुल्तानुस्सलातीन की उपाधि देकर उसके पिता के स्थान पर सिहासनारूढ किया। वह बडा ही वीर तथा सहनशील एव दानी बादशाह था। अमीर तथा वजीर उसकी बुद्धिमत्ता एव योग्यता से प्रभावित थे। उसने कभी उनका विरोध न किया और उन लोगो ने भी कभी उसकी आज्ञाओं की अवहेलना न की तथा आवश्यक राज्य-कर देने मे कभी कमी न की। १० वर्ष राज्य करने के उपरान्त ७८५ हि० (१३८३-४ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

उसने ७ वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

शम्सुद्दीन शाह द्वितीय बिन सुल्तानस्सलातीन

जब सुल्तानुस्सलातीन की मत्यु हो गई तो अमीरो तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने उसके पुत्र को शम्सुद्दीन शाह की उपाधि देकर सिहासनारूढ किया। वह बाल्यावस्था मे होने के कारण बडा ही बुद्धिहीन था। कस[1] नामक एक काफिर को, जोकि उस वश के अमीरो मे से था, उस काल मे बडा प्रभुत्व प्राप्त हो गया और वह बडा ही प्रभावशाली हो गया। उसने अत्यधिक धन एव राज्य के क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया। जब ७८७ हि० (१३८५-६ ई०) मे सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु हुई तो कस ने राजसिहासन पर अधिकार जम लिया।

उसने तीन वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

राजा कंस, काफ़िर

राजा कस यद्यपि मुसलमान न था किन्तु मुसलमानो के साथ अत्यधिक मिलता-जुलता रहता था और उनके प्रति स्नेह प्रदर्शित करता था यहा तक कि बहुत से मुसलमानो का यह मत था कि वह मुसलमान था और मुसलमानों के समान वे उसे दफन करना चाहते थे। उसने ७ वर्ष तक बडे वैभव से राज्य किया। उसका पुत्र, जो मुसलमान था, उसकी मृत्यु के उपरान्त सिहासनारूढ हुआ।

जनमल वल्द कंस "सुल्तान जलालुद्दीन"

जनमल ने अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त राज्य के उच्च पदाधिकारियो एव प्रतिष्ठित लोगो को उपस्थित करके कहा कि "मुझे इस्लाम की सत्यता प्रकट हो चुकी है और मेरे पास अब इसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नही। यदि तुम लोग मुझे स्वीकार करो तो मै राजसिहासन पर आरूढ हू अन्यथा मेरे भाई को सिहासनारूढ कर दो और मुझे क्षमा करो।" समस्त उच्च पदाधिकारियों ने सह-

१ पुस्तक मे 'कास'।

मत होकर कहा कि "हम लोग आपके आज्ञाकारी रहेगे, सासारिक कार्यों के सम्बन्ध मे धर्म का कोई हस्तक्षेप न होना चाहिये।" जनमल ने लखनौती के आलिमो एव विद्वानों को बुलवाकर इस्लाम का कलमा[1] पढा और सुल्तान जलालुद्दीन की उपाधि धारण करके सिहासनारूढ हुआ। उसके न्याय के कारण उसे अपने समय का नौशेरवा कहा जाता था। वह १७ साल तथा कुछ मास तक स्थायी रूप से बगाले तथा लखनौती पर राज्य करता रहा। ८१२ हि० (१४०९-१० ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र अहमद सुल्तान उसके स्थान पर सिहासनारूढ हुआ।

सुल्तान अहमद बिन सुल्तान जलालुद्दीन

जब सुल्तान जलालुद्दीन की मृत्यु हो गई तो अमीरो ने उसके पुत्र को अहमद शाह की उपाधि देकर उसके पिता के स्थान पर सिहासनारूढ किया। वह भी अपने पिता का अनुसरण करते हुए न्याय (२९८) करने का प्रयत्न करता रहा और अत्यधिक लोगो को इनाम तथा परोपकार से प्रसन्न करता रहा। ८३० हि० (१४२६-२७ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने १६ वर्ष तक राज्य किया।

नासिरुद्दीन ग़ुलाम

जब अहमद शाह बिन जलालुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त राजसिहासन खाली हो गया तो नासिरुद्दीन नामक उसका दास वीरता प्रदर्शित करते हुए राजसिहासन पर आरूढ हुआ। वह अत्याचार की पताका बलन्द करते हुए सुल्तान के पुत्रो को, जोकि राज्य के अधिकारी थे, नष्ट करने का प्रयत्न करने लगा और इस प्रकार उसने इस लोक तथा परलोक का पाप अपने सिर पर ले लिया। ७ दिन उपरान्त तथा कुछ लोगो के कथनानुसार आधे दिन बाद भगरा सुल्तानो के अमीरो ने उसकी हत्या कर दी और सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा की सन्तान नासिर शाह को सिहासनारूढ कर दिया। वह अपने पूर्वजो के सिहासन पर राज्य करने लगा।

सुल्तान नासिर शाह भंगरा

यह एक बडी विचित्र बात है कि भगरा सुल्तानो के वश मे इतने वर्ष उपरान्त राज्य पुन लौट आया। नासिर शाह, जोकि उस राज्य के ग्रामीणो के साथ जीवन व्यतीत करने लगा था और कृषि किया करता था तथा जिसने राज्य प्राप्त करने की कभी कोई कल्पना भी न की थी, सिहासनारूढ हो गया और एक बहुत बडा बादशाह बना। उसमे उत्तम प्रकार के गुण पाये जाते थे। भगरा के सहायक जो राजा कस, जलालुद्दीन तथा अहमद के राज्यकाल मे छिन्न-भिन्न हो गये थे उसके सिहासनारोहण के समाचार पाकर पुन उसके दरबार मे लौट आये। अल्प समय मे उसके पास बहुत से लोग एकत्र हो गये। राज्य के सर्वसाधारण तथा सम्मानित व्यक्ति उसके व्यवहार से सर्वदा प्रसन्न रहते थे। इस क़ारण कि शर्की सुल्तान पूर्व तथा देहली के सुल्तानों के बीच मे आ गये थे, अत वह ३२ वर्ष तक निश्चिन्त होकर राज्य करता रहा। ८६२ हि० (१४५७-५८ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

1 ला इलाहा इल्लिल्लाह, मुहम्मदुर्रसूल्लाह ।—"नही है कोई ईश्वर अल्लाह के अतिरिक्त और मुहम्मद उसका दूत है"।

बारबक शाह बिन नासिर शाह

जब नासिर शाह की मृत्यु हो गई तो उस प्रदेश के अमीरो एव सम्मानित व्यक्तियो ने बारबक शाह को सिहासनारूढ किया। उसके राज्यकाल मे सैनिक तथा नगर निवासी समृद्ध थे। वह हिन्दुस्तान का पहला बादशाह था जिसने हब्शी गुलामो को आश्रय तथा सम्मान प्रदान किया। उसने आठ हजार हब्शी एकत्र किये। उसने राज्य के महान् कार्य उदाहरणार्थ वकालत,[1] विजारत[2] तथा एमारत[3] इत्यादि उन्हे प्रदान किये। गुजरात एव दकिन (दक्षिण) के सुल्तान भी उसका अनुसरण करते हुए उन लोगो को सम्मानित करने का प्रयत्न करने लगे। बारबक शाह ने १७ वर्ष तक राज्य किया। ८७९ हि० (१४७४-७५ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

यूसुफ़ शाह वल्द बारबक शाह

जब बारबक शाह की मृत्यु हो गई तो यूसुफ शाह ने राज्य पर अधिकार जमा लिया और न्याय-पूर्वक राज्य करने लगा। वह बडा ही योग्य, विद्वान् तथा अनुभवी था। शरा के आदेशो का पालन करने मे वह अत्यधिक प्रयत्नशील रहता था। उसके राज्यकाल मे कोई भी खुल्लमखुल्ला मदिरापान न कर सकता था और उसके आदेशो की अवहेलना न हो सकती थी। उसने सद्रो तथा आलिमो को कुछ दिन उपरान्त अपने दरबार मे बुलवाकर कहा कि "शरा के सम्बन्ध मे तुम लोग किसी का कोई पक्ष-पात मत करो अन्यथा हममे और तुममे सफाई न रहेगी और मै तुम्हे अत्यधिक कष्ट पहुचाऊगा।" क्योकि वह स्वय बहुत बडा विद्वान् था अत न्याय-विभाग के बहुत से कार्य वह स्वय सम्पन्न कर लेता था। ८८७ हि० (१४८२–८३ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने ७ वर्ष तथा ६ मास तक राज्य किया।

सिकन्दर शाह का राज्य तथा दो मास उपरांत पदच्युत होना

(२९९) शाह यूसुफ की मृत्यु के उपरान्त, अमीरो तथा वजीरो ने शाह सिकन्दर को सिहा-सनारूढ कर दिया। क्योकि उसमे इस महान् कार्य की योग्यता न थी अत उसे पदच्युत करके उन्होने फतह शाह को बादशाह बना लिया।

फ़तह शाह

कहा जाता है कि फतह शाह बडा विद्वान् तथा बुद्धिमान् था। बादशाहो की प्रथानुसार उसने प्रत्येक अमीर को उसकी श्रेणी के अनुसार सम्मानित किया तथा आश्रय प्रदान किया। ख्वाजासराओ तथा हब्शी गुलामो के प्रति जोकि बारबक शाह तथा यूसुफ शाह के राज्यकाल मे एकत्र हो गये थे और जिन्हे अत्यधिक विश्वास प्राप्त हो गया था, उसने न्याय किया और उन्हे ठीक किया। इस समय बगाले मे यह प्रथा थी कि हर रात्रि मे पाच हजार पायक बारी-बारी पहरा देते थे। प्रात काल बादशाह सिहासन पर पहुचकर उन लोगो का अभिवादन स्वीकार करता था और विदा कर देता था। उसके बाद अन्य लोग एकत्र होते थे। सक्षेप मे ख्वाजासरा लोग जोकि बहुत समय से पूर्ण अधिकार प्राप्त किये हुये थे और

१ वकीली, प्रधान मन्त्री का कार्य।
२ वज़ीरी।
३ अमीरी।

अब परेशान हो चुके थे, सुल्तान शाहजादा बगाली नामक ख्वाजासरा के पास पहुचे। समस्त पहरे वाले उसी के अधीन थे। महलो की कुजिया भी उसके अधिकार मे थी और वह बडा प्रभावशाली था। उन्होने उसे राज्य स्वीकार करने के लिये प्रेरित किया। सयोग से उस समय खानेजहा ख्वाजासरा वजीर तथा मलिक अदेल हब्शी, अमीरुल उमरा चुनी हुई सेना सहित सीमान्त के रायो के दमन हेतु गये हुए थे। सुल्तान शाहजादे ने अवसर पाकर ख्वाजासराओ तथा पहरे वाले पायको को मिलाकर फतह शाह की ८९६ हि० (१४९०-९१ ई०) मे हत्या कर दी और प्रात काल सिहासन पर पहुचकर पायको का अभिवादन स्वीकार किया।

फतह शाह ने ७ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

सुल्तान बारबक शाह

जब दुष्ट ख्वाजासरा ने अपने स्वामी की हत्या करके स्वय राज्य प्राप्त कर लिया तो जिस जिस स्थान पर ख्वाजासरा थे वे उसके पास पहुच गये। उसने कमीने तथा दुस्साहसी लोगो को धन का लोभ दिलाकर अपने पास एकत्र कर लिया। उसके प्रभुत्व मे नित्यप्रति वृद्धि होने लगी। अन्त मे वह उन अमीरों के, जोकि अधिक सेना के स्वामी थे, नष्ट करने का प्रयत्न करने लगा। इस समूह के सबसे बडे सरदार मलिक अन्देल हब्शी को जब इस बात का पता चला तो वह यह सोचने लगा कि वह किस प्रकार अपने आप को राजधानी तक पहुचा कर उसका (सुल्तान का) अन्त कर दे। इसी बीच मे ख्वाजासरा ने जिस पर खून सवार था सोचा कि उसे बुलवाकर किसी न किसी बहाने से बन्दी बना दे, अत उसने उसे बुलवाया। मलिक अन्देल हब्शी इसे ईश्वर का वरदान समझकर अपनी चुनी हुई सेना सहित उसके दरबार मे उपस्थित हुआ। क्योकि वह बडी सावधानी से दरबार मे उपस्थित होता था अत ख्वाजासरा उसे नष्ट न कर पाता था।

एक दिन उसने एक दरबार किया और उसे खूब सजवाया। १०-१२ हजार आदमी इधर-उधर से राजधानी मे, जोकि बहुत बडी थे, एकत्र हुए। बडे शान से दरबार का प्रबन्ध किया गया था। सर्वप्रथम उसने मलिक अन्देल को अपने समक्ष बुलवाकर उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और कहा कि "मैंने सुल्तान की अन्य लोगो सहित हत्या कर दी है और सिंहासनारूढ हो गया हू। तू क्या कहता है?" मलिक अन्देल ने छन्द का यह भाग पढा—

"जो बादशाह करे वह अच्छा है"

यह बात सुल्तान शाहजादे को बडी अच्छी लगी। उसने उसे तत्काल खिलअत, जडाऊ कटार पेटी सहित, कुछ हाथी तथा घोडे प्रदान किये और कुरान शरीफ देकर कहा कि शपथ ले कि, "तू मुझे कोई हानि न पहुँचायगा।" मलिक अन्देल हब्शी ने शपथ ली कि, "जब तक तू राजसिंहासन पर रहेगा मै तुझे कोई हानि न पहुचाऊँगा।"

इस कारण कि समस्त लोग उस ख्वाजासरा से रुष्ट थे और मलिक अन्देल हब्शी भी अपने आश्रयदाता का बदला लेने के लिए प्रयत्न कर रहा था अत उसने द्वारपालों को अपनी ओर मिला लिया और समय की प्रतीक्षा करने लगा। एक रात्रि मे वह कृतघ्न मदिरापान करके सिंहासन पर सोया हुआ था। मलिक अन्देल हब्शी द्वारपालो की सहायता से उसकी हत्या हेतु अन्त पुर की ओर रवाना हुआ। जब उसने उसे सिंहासन पर सोता हुआ देखा तो उसे अपनी शपथ याद आ गई और वह सकोच मे पड गया। इसी बीच मे क्योकि उसकी मृत्यु निकट आ गई थी और उसकी आयु तथा सौभाग्य का सूर्य अस्त

करता रहे।" फतह शाह की माता को इस बात का, जो उन लोगो ने सोची थी, पता चला। उसने उत्तर दिया कि, "मैंने ईश्वर से शपथ ली है कि जो कोई फतह शाह के हत्यारे की हत्या करेगा, राज्य मै उसी को सौंपूंगी।" मलिक अन्देल हब्शी प्रारम्भ मे इसे स्वीकार न करता था किन्तु जब समस्त अमीरो ने दरबार में उपस्थित होकर उससे आग्रह किया तो उसने स्वीकार कर लिया। मलिक अन्देल हब्शी ने सिहासनारूढ होकर फीरोज शाह की उपाधि धारण कर ली। कहा जाता है कि बारबक शाह आठ मास और कुछ लोगो के मतानुसार ढाई मास तक राज्य का अपहरण किये रहा। बारबक शाह की घटना के उपरान्त कई वर्ष तक बगाले मे यह प्रथा रही कि जो कोई अपने बादशाह के हत्यारे की हत्या कर लेता था वह उसके स्थान पर सिहासनारूढ हो जाता था और सभी लोग उसके आज्ञाकारी हो जाते थे।

मलिक अन्देल हब्शी "फ़ीरोज़ शाह"

फीरोज शाह बगाले के सिहासन पर आरूढ होने के उपरान्त गौड नामक राजधानी मे पहुचा और वह न्याय तथा परोपकार के अनुसार राज्य करने लगा। उसने प्रजा को सतुष्ट किया। क्योकि उसने अपनी अमीरी के समय महान् कार्य किये थे, अत सेना एव प्रजा ने उसके प्रति विद्रोह न किया और ३ वर्ष तक वह बडे वैभव से राज्य करता रहा। ८९९ हि० (१४९३–९४ ई०) मे वह रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

महमूद शाह बिन फ़ीरोज़ शाह

फीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त अमीरो तथा वजीरो ने उसके ज्येष्ठ पुत्र, सुल्तान महमूद शाह को सिहासनारूढ किया। हब्श खा नामक एक हब्शी दास राज्य-व्यवस्था एव शासन-प्रबन्ध के कार्य सम्पन्न करने लगा और महमूद शाह केवल नाम-मात्र का बादशाह रह गया। एक अन्य हब्शी, जिसे सीदी बद्र दीवाना कहते थे, परेशान होकर हब्श खा की हत्या कर दी और राज्य पर अधिकार जमा (३०१) लिया। कुछ समय उपरान्त उसने पायको के सरदारों से मिलकर सुल्तान महमूद की भी हत्या कर दी और प्रात काल सिहासनारूढ हो गया। दरबार के अमीरो की सहमति से मुजफ्फर शाह की उपाधि धारण कर ली तथा उस राज्य का हाकिम हो गया। सुल्तान महमूद एक साल तक राज्य करता रहा। हाजी महमूद कधारी के इतिहास मे लिखा हुआ है कि, "सुल्तान महमूद शाह फतह शाह का पुत्र था और हब्श खा बारबक शाह का दास था। फीरोज शाह के आदेशानुसार उसको आश्रय प्रदान किया करता था। शाह फीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त शाह महमूद सिहासनारूढ किया गया। ६ वर्ष उपरान्त हब्श खा को राज्य प्राप्त करने का लोभ हो गया। सीदी बद्र दीवाना ने हब्श खा की, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, हत्या कर दी।

सीदी बद्र हब्शी जिसकी उपाधि मुज़फ़्फ़र शाह थी

मुज़फ्फर शाह हब्शी बडा ही अत्याचारी तथा निष्ठुर बादशाह था। उसने उन आलिमो, पवित्र लोगो तथा सम्मानित व्यक्तियो की, जो उसके राज्य करने से सहमत न थे, हत्या करा दी और काफिर रायो के विरुद्ध, जोकि बगाले के बादशाहो के विरोध हेतु कटिबद्ध थे, चढाई की और उनकी हत्या कर दी। उसने शरीफ मक्की को विज़ारत का पद प्रदान किया और उसे राज्य मे पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिया। उसने उसके कहने से अश्वारोहियो तथा पदातियों के वेतन कम कर दिये और ख़जाने को बढाने का प्रयत्न

करने लगा। सभी लोग उससे घृणा करने लगे। यहा तक कि बहुत से बडे-बडे अमीरो ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान मुजफ्फर शाह पाच हजार हब्शी तथा तीस हजार अफगानो और बगालियो सहित किले मे बन्द हो गया। कुछ लोगो के मतानुसार चार मास तक भीतर तथा बाहर वालो मे युद्ध होता रहा। नित्य-प्रति बहुत बडी सख्या मे लोग मारे जाते थे। जिस किसी को भी बन्दी बनाकर सुल्तान मुजफ्फर शाह की सेवा मे लाया जाता था वह कोप एव आतक प्रदर्शित करते हुए तलवार खीचकर अपने हाथ से उसकी हत्या कर दिया करता था, यहा तक कि उसने चार हजार व्यक्तियो की हत्या करा दी। अन्तिम दिन शाह मुजफ्फर शाह एक बहुत बडी सेना लेकर बाहर निकला और अमीरो से, जिनमे कि एक शरीफ मक्की था, युद्ध किया। दोनो ओर से बीस हजार आदमी मारे गये। मुजफ्फर शाह अत्यधिक अमीरो एव विश्वासपात्रो सहित तलवार के घाट उतार दिया गया।

हाजी मुहम्मद कधारी के अनुसार आद्योपान्त इन युद्धो मे १२० हजार मुसलमान तथा काफिर मारे गये। सैयिद शरीफ मक्की को राज्य प्राप्त हो गया किन्तु निजामुद्दीन के इतिहास मे लिखा हुआ है कि जब लोग मुजफ्फर शाह से घृणा करने लगे तो सैयिद शरीफ मक्की ने यह बात समझकर सरदारो और पायको को मिला लिया और एक रात्रि मे १३ पायको सहित अन्त पुर मे प्रविष्ट हो गया। मुजफ्फर शाह की हत्या करके प्रात काल सिहासनारूढ हो गया और अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन रक्खी। मुजफ्फरशाह ने तीन वर्ष तथा पाच मास तक राज्य किया।

शरीफ़ मक्की "सुल्तान अलाउद्दीन"

सैयिद शरीफ मक्की, जिस समय वजीर था, अपने आप को लोगो मे सदाचारी प्रसिद्ध करने के लिये लोगों के कान तक यह बात पहुचाया करता था कि "मुजफ्फर शाह बडा कृपण है और बादशाही के योग्य नही है। मै उससे सेना तथा अमीरो के विषय मे अत्यधिक परामर्श करता हू किन्तु उससे कोई लाभ नही होता और वह धन एकत्र किया करता है।" इस पर अमीर लोग उसे अपने ऊपर कृपालु एव दयालु समझते थे अत जिस दिन शाह मुजफ्फर शाह की हत्या हुई तो बडे बडे अमीर बादशाह की नियुक्ति के विषय मे परामर्श करने लगे और सैयिद शरीफ मक्की को राज्य प्रदान करने की ओर आकृष्ट होकर, उन्होंने उससे पूछा कि, "यदि तुझे बादशाह बना दिया जाय तो तू हमसे किस प्रकार व्यवहार करेगा ?" उसने उत्तर दिया, "जो तुम्हारी इच्छा होगी उसी के अनुसार कार्य करूगा। शीघ्रातिशीघ्र जो कुछ नगर मे भूमि के ऊपर है, तुम्हे प्रदान कर दूंगा और जो कुछ भूमि के नीचे है उस पर मै अधिकार जमा लूँगा।" सक्षेप मे सर्वसाधारण एव विशेष व्यक्तियो ने इस लोभ मे उसकी बैअत[1] कर ली और गौड नामक नगर को जो कि मिस्र से भी बढकर था नष्ट-भ्रष्ट करने लगे। सैयिद शरीफ मक्की ने सुगमतापूर्वक चत्र प्राप्त करके अपने नाम का खुत्बा पढवा लिया। कुछ दिन उपरान्त उसने ध्वस कार्य का निषेध किया। जब वे लोग न माने तो उसने १२ हजार लोगो की हत्या करा दी ताकि वे यह कार्य त्याग दे और अत्यधिक पूछताछ एव खोज के उपरान्त बहुत-सी धन-सम्पत्ति अपने अधिकार मे कर ली। इसमे १३,००० सोने की कश्तिया[2] थी कारण कि बगाले तथा लखनौती की यह प्रथा थी कि जो कोई धन-धान्य सम्पन्न होता था वह सोने की कश्तिया बनाकर उसमे भोजन करता था। विवाह के अवसरो पर जो

१ अधीनता स्वीकार करना।
२ एक प्रकार की लम्बी ट्रे जिसमे चौडाई की ओर पकडने के लिये हैंडिल लगे रहते है।

कोई अधिक सोने की कश्तिया प्रस्तुत करता था वह श्रेष्ठ माना जाता था। अभी तक पूर्वी बगाल के जमीदारो मे यह प्रथा प्रचलित है।

शाह अलाउद्दीन क्योकि बडा ही बुद्धिमान् था अत उसने उच्च वश के अमीरो को प्रोत्साहन देना एव अपने विशेष दासो को सम्मानित करना प्रारम्भ कर दिया। पायको को पहरे के कार्य से पृथक् कर दिया ताकि उसे कोई हानि न पहुचा सके। हब्शियो का अपने राज्य से बहिष्कार करा दिया। (३०२) क्योकि वे अपनी दुष्टता एव स्वामी की हत्या करने के विषय मे कुप्रसिद्ध थे अत उन्हे जौनपुर एव हिन्दुस्तान मे स्थान न मिल। और अधिकाश दक्षिण तथा गुजरात की ओर चल दिये। सुल्तान अलाउद्दीन ने मुगुलो तथा अफगानो को प्रोत्साहन देकर, उत्कृष्ट पदाधिकारी विभिन्न स्थानो पर नियुक्त किये और राज्य सुव्यवस्थित हो गया। पिछले सुल्तानो के राज्यकाल मे जो परिवर्तन एव विनाश हो रहा था उसका अन्त हो गया, विद्रोहियो ने उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली।

उसने बगाले को समृद्ध बनाने का पूर्ण प्रयत्न करके अत्यधिक ग्राम शेख नूर कुतुब आलम के लगर के व्यय हेतु प्रदान किये। वह प्रत्येक वर्ष अपनी राजधानी एकदला से शेख नूर के मजार के दर्शन हेतु पडुवा कस्बे मे जाया करता था। उसने अपनी सदाचारिता, सच्चरित्रता, बुद्धिमत्ता एव कार्यकुशलता के कारण वर्षो तक राज्य किया। अन्त मे ९२७ हि० (१५२०–२१ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने २७ वर्ष तक राज्य किया।

रियाज़ुस्सलातीन

(लेखक—गुलाम हुसेन सलीम)

(प्रकाशन—कलकत्ता १८९० ई०)

शम्सुद्दीन बिन सुल्तानुस्सलातीन

(१०९) सुल्तानुस्सलातीन की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र शम्सुद्दीन राज्य के उच्च पदाधिकारियो के परामर्श से सिहासनारूढ हुआ और अपने पूर्वजो के समान राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध करने लगा। उसने कुछ समय तक भोग-विलास मे सफलतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत किया। ७८८ हि० (१३८६–७ ई०) मे रुग्ण होकर या राजा कस की धूर्तता के कारण, जिसे उस समय पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त था, मृत्यु को प्राप्त हो गया। कुछ लोगो ने लिखा है कि यह शम्सुद्दीन सुल्तानुस्सलातीन का पुत्र न था अपितु उसे गोद लिया गया था और उसका नाम शिहाबुद्दीन था। सक्षेप मे, वह तीन वर्ष, ४ मास तथा ६ दिन तक राज्य करता रहा। यह बात प्रामाणिक है कि राजा कस ने, जोकि बिठूरिया का जमीदार था, उस पर आक्रमण करके उसकी हत्या कर दी और स्वय बादशाह बन गया।

राजा कंस ज़मींदार

(११०) सुल्तान शम्सुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त, राजा कस हिन्दू जमीदार को समस्त बगाले पर प्रभुत्व प्राप्त हो गया और वह सिहासनारूढ हो गया। उसने अत्याचार तथा निष्ठुरता प्रारम्भ कर दी और मुसलमानो का हत्याकाड प्रारम्भ कर दिया। अधिकाश आलिम तथा सूफी उसकी तलवार द्वारा मारे गये और वह इस्लाम का अपने राज्य से समूलोच्छेदन करना चाहता था।

कहा जाता है कि एक दिन शेख बदरुल इस्लाम वल्द शेख मुईनुद्दीन अब्बास, उस दुष्ट के पास बिना अभिवादन किये बैठ गये। उसने कहा, "हे शेख, तूने अभिवादन क्यो नही किया ?" शेख ने कहा, "आलिमो के लिये काफिरो के प्रति अभिवादन करना उचित नही, विशेषकर तुझ जैसे अत्याचारी तथा निष्ठुर काफिर को जो मुसलमानो का रक्तपात करा रहा है।" इस बात पर वह अपवित्र मुलहिद[1] चुप हो गया और सर्प के समान बल खाते हुए उनकी हत्या का प्रयत्न करने लगा। एक दिन वह एक ऐसे घर मे जिसका द्वार सँकरा तथा छोटा था बैठ गया और शेख को बुलवाया। जब शेख पहुचे तो वे उसका (१११) उद्देश्य समझ गये। सर्वप्रथम पाव को भीतर रखकर सिर को झुकाये बिना प्रविष्ट हो गये। वह दुष्ट क्रोधित हुआ और आदेश दिया कि शेख को उसके भाइयो की पक्ति मे बैठाया जाय। उसने तुरन्त शेख की हत्या करा दी और शेष आलिमो को उसी दिन नौका मे बैठाकर नदी मे डुबवा दिया।

१ काफ़िर।

नूर कुतुबुल आलम ने उस काफिर के प्रभुत्व तथा मुसलमानो की हत्या के कारण परेशान होकर सुल्तान इबराहीम शर्की को, जिसके अधिकार मे उस समय बिहार की सीमा तक के स्थान थे, पत्र लिखा कि, "इस देश का हाकिम कस अधर्मी काफिर है और उसने अत्याचार तथा रक्तपात प्रारम्भ कर रखा है। उसने अधिकाश आलिमो तथा सूफियो की हत्या करा दी है और इस समय शेष मुसलमानो की हत्या का प्रयत्न कर रहा है और इस देश से इस्लाम का अन्त कर देना चाहता है। इस्लाम के बादशाह के लिये मुसलमानो की रक्षा अत्यन्त आवश्यक है अत आपको इस बात की सूचना कर दी गई। आप इस स्थान पर पधार कर हम लोगो को अनुग्रहीत करे और अत्याचारी के पजे से मुसलमानो को मुक्त कराये।" जब यह पत्र सुल्तान इबराहीम के पास पहुचा तो उसने उसके प्रति अत्यधिक सम्मान प्रदर्शित (११२) करते हुए उसे पढा। काजी शिहाबुद्दीन जौनपुरी ने, जो अपने युग के बहुत बडे आलिम थे और जिनका सुल्तान अत्यधिक आदर-सम्मान करता था, और जो पवित्र दिनो मे सुल्तान के दरबार मे चादी की कुर्सी पर बैठते थे, उसे प्रेरित करते हुए कहा कि, "शीघ्रातिशीघ्र उस ओर आक्रमण करना चाहिये कारण कि इस आक्रमण से धार्मिक तथा सासारिक दोनो ही लाभ सभव है अर्थात् बगाले का राज्य भी अधिकार मे आ जायेगा और शेख के दर्शन भी हो जायेगे। मुसलमानो की सहायता करने के कारण आपको बडा पुण्य होगा।"

सुल्तान इबराहीम ने शिविर बाहर लगवाकर कूच के ढोल बजवा दिये और निरन्तर यात्रा करता हुआ अल्प समय मे बगाले पहुचा तथा सराय फीरोजपुर मे अपने शिविर लगवाये। राजा कस को जब यह पता चला तो वह व्याकुल होकर कुतुबुल आलम की सेवा मे पहुचा और दीनता तथा विनय प्रकट करने लगा और क्षमा-याचना करते हुए कहा कि, "सुल्तान इबराहीम के प्रभुत्व से इस राज्य को मुक्त रक्खा जाय।" मखदूम[1] ने कहा कि, "अत्याचारी काफिर की सिफारिश करके मै इस्लाम के बादशाह को नही रोक सकता, विशेष रूप से ऐसी दशा मे जब कि वह मेरे बुलाने पर आया है।" कस ने विवश होकर उसके चरणो पर सिर रखकर कहा कि, "जो कुछ भी आपकी इच्छा हो, मुझे स्वीकार है।" शेख ने कहा कि, "जब तक तू इस्लाम स्वीकार न करेगा मै तेरी सिफारिश न करूगा।" कस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया किन्तु उसकी दुष्ट पत्नी ने उसे मार्गभ्रष्टता के गर्त मे ढकेलकर उसे इस्लाम स्वीकार न करने दिया। अन्त मे वह अपने १२ वर्षीय पुत्र को जिसका नाम जदू[2] था, कुतबुल आलम (११३) की सेवा मे ले गया और कहा, "मै वृद्ध हो गया हू और ससार को त्याग देना चाहता हू। इसी पुत्र को मुसलमान करके बगाले का राज्य इसे सौप दिया जाय।" कुतुबुल आलम ने अपने मुह से पान का एक टुकडा निकाल कर जदू के मुह मे डाल दिया और उसे मुसलमान कर लिया। उसका नाम जलालुद्दीन रखा। सुल्तान के आदेशानुसार शहर मे इसकी बात घोषणा कराई गई और राज्य का खुत्बा उसके नाम से पढवाया गया। सम्मानित शरा के आदेश उस तिथि से प्रचलित हो गये।

तदुपरान्त कुतुबुल आलम, सुल्तान इबराहीम से भेट करने पहुचे और उससे उसके कष्ट की क्षमा-याचना करते हुए लौट जाने की प्रार्थना की। सुल्तान ने इस बात से रुष्ट होकर काजी शिहाबुद्दीन की ओर देखा। काजी ने कहा, "हे हजरत! सुल्तान आपकी प्रार्थना पर इस स्थान पर आया

१ कुतुबुल आलम।
२ फ़िरिश्ता के अनसार जनमल।

है। अब आप उसका[1] साथ दे रहे है और उसकी सिफारिश कर रहे है। वह क्या सोचेगा?" शेख ने कहा कि, "उस समय अत्याचारी हाकिम मुसलमानो पर शासन कर रहा था। इस समय सुल्तान के चरणो के आशीर्वाद से बादशाह मुसलमान हो गया है। जिहाद काफिरो के विरुद्ध अनिवार्य है न कि मुसलमानो के ऊपर।" काजी की समझ मे कोई उत्तर न आया और वह मौन रह गया किन्तु सुल्तान के रुष्ट होने के कारण वह सुल्तान की इच्छा को ध्यान मे रखते हुए, शेख के ज्ञान तथा निपुणता की परीक्षा लेने (११४) लगा। अत्यधिक प्रश्नोत्तर के उपरान्त कुतुबुल आलम ने कहा कि, "दरवेशो की ओर हीन दृष्टि से देखने तथा उनकी परीक्षा लेने से हानि के अतिरिक्त कुछ नही प्राप्त हो सकता, शीघ्र ही बडी दुर्दशा मे तेरी मृत्यु होगी।" उसने सुल्तान की ओर भी बडी कठोर दृष्टि से देखा। सक्षेप मे सुल्तान अप्रसन्न तथा कुपित होकर जौनपुर चला गया। कहा जाता है कि शीघ्र ही सुल्तान इबराहीम तथा काजी शिहाबुद्दीन जौनपुरी की मृत्यु हो गई।

जब राजा कस ने सुना कि सुल्तान इबराहीम की मृत्यु हो गई तो उसने सुल्तान जलालुद्दीन को सिहासन से हटा दिया और स्वय दुष्टता प्रारम्भ कर दी। अपने झूठे धर्म के अनुसार उसने कुछ सोने की गाये तैयार कराईं। जलालुद्दीन को गाय के मुह मे डालकर तिम्ब के मार्ग से बाहर निकाला और उस सोने को ब्राह्मणो को बाट दिया। उसने अपने पुत्र को अपने धर्म की शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी। इस कारण कि जलालुद्दीन को कुतुबुल आलम द्वारा शिक्षा प्राप्त हुई थी, वह अपने सच्चे धर्म से न फिरा और काफिरो की बातो का उसके हृदय पर कोई प्रभाव न हुआ। राजा कस ने पुन अत्याचार की पताका बलन्द कर दी और मुसलमानो के विनाश के विषय मे सोचने लगा। जब उसके अत्याचार सीमा से अधिक बढ गये तो एक दिन कुतुबुल आलम के पुत्र शेख अनवर ने अपने पिता से उस अत्याचारी की (११५) शिकायत की और कहा कि, "बडा खेद है कि आप सरीखे कुतुब के होते हुये मुसलमानो को इस काफिर द्वारा कष्ट पहुच रहे है।" शेख उस समय ईश्वर की उपासना कर रहे थे। यह बात सुनते ही वे बडे क्रोधित हुए और कहा कि, "यह अत्याचार उसी समय समाप्त होगा जब कि तेरा रक्त भूमि पर गिरेगा।" शेख अनवर समझ गया कि जो कुछ उसके पिता ने कहा है वह अवश्य होकर रहेगा। कुछ क्षण उपरान्त उसने निवेदन किया कि, "फकीर के विषय मे जो कुछ कहा गया वह बडा ही उचित है। मेरे भतीजे शेख जाहिद के विषय मे क्या आदेश होता है?" कुतुबुल आलम ने कहा कि, "जाहिद के यश का ढोल कयामत तक बजता रहेगा।"

सक्षेप मे, राजा कस ने पहले से भी अधिक अत्याचार प्रारम्भ कर दिये और शनै शनै कुतुबुल आलम के सेवकों तथा उनसे सम्बन्धित लोगो पर भी अत्याचार करने लगा और उनकी धन-सम्पत्ति को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। शेख अनवर तथा शेख जाहिद को बन्दी बना लिया। क्योकि उसने शेख जाहिद के सम्बन्ध मे कुतुबुल आलम की भविष्यवाणी सुन रखी थी अत उसने उसकी हत्या न कराई और उसे सुनार गाम भेज दिया और यह चेतावनी दे दी कि जो कुछ उसके पिता तथा दादा ने धन-सम्पत्ति गाड रखी है उसके विषय मे पता लगाकर उसकी हत्या की जायगी। जब वह सुनार गाम पहुचा तो उसके प्रति बड़ी ही कठोरता प्रदर्शित की गई किन्तु धन का जो कही गडा हुआ न था कोई पता न चला। सर्व-प्रथम शेख अनवर की हत्या कर दी गई। जब उन लोगो ने शेख जाहिद की हत्या करना चाही तो उसने

1 जलालुद्दीन का।

कहा, "अमुक गाव मे एक बहुत बडा देग दफन है।" जब वह स्थान खोदा गया तो एक बहुत बडा बरतन मिला किन्तु उसमे एक अशर्फी के अतिरिक्त कुछ न था। जब उससे पूछा गया कि अन्य धन क्या हुआ तो (११६) उसने कहा "सम्भवत कोई चोर चुरा ले गया होगा।" यह शिक्षा उसे परोक्ष से प्राप्त हुई थी। कहा जाता है कि जिस दिन शेख अनवर की सुनार गाम मे हत्या की गई और उसका शुभ रक्त भूमि पर गिरा तो तत्काल राजा कस नरक को प्राप्त हो गया। कुछ लोगो का मत है कि उसके पुत्र जलालुद्दीन ने, जो बन्दीगृह मे था, सेवको से मिलकर उसकी हत्या करा दी। उस अत्याचारी के राज्य की अवधि ७ वर्ष बताई जाती है।

सुल्तान जलालुद्दीन पुत्र राजा कंस

तदुपरान्त जलालुद्दीन स्थायी रूप से सिहासनारूढ हुआ और उसने अधिकाश काफिरो को मुसलमान बनाया और जुन्नारदारो[1] के प्रति जिन्होंने सोने की गाय खाई थी, अत्यधिक कठोरता एव निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुए उन्हे गोमास खिलवाया। शेख जाहिद को सुनार गाम से बुलवाकर उसका अत्यधिक आदर-सम्मान किया। वह अधिकाश उसकी सेवा मे रहा करता था और राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध जैसा होना चाहिये वैसा ही करता था। उसके राज्यकाल मे लोग बडी सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करते थे। कहा जाता है कि उसके राज्यकाल मे पडुवा नगर इतना अधिक आबाद हो गया था कि इसका उल्लेख नही हो सकता। उसने गौड मे मस्जिद, हौज, ताल्लाब तथा सराय का निर्माण कराया। गौड (११७) उसके राज्यकाल मे पुन बसने लगा। उसने १७ वर्ष तक राज्य किया। ८१२ हि० (१४०९-१० ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। अभी तक पडुवा मे उसका मकबरा वर्तमान है जिसके ऊपर एक भव्य गुम्बद बना हुआ है। उसके पुत्र तथा पत्नी की कब्र भी, उसी के समीप उसी मकबरे मे है।

सुल्तान अहमद शाह बिन जलालुद्दीन

जब सुल्तान जलालुद्दीन की मृत्यु हो गई तो उसका पुत्र अहमद शाह अमीरो तथा सेना के सरदारो की सम्मति से अपने पिता के स्थान पर सिहासनारूढ हुआ। क्योकि वह बडा कठोर, अत्याचारी तथा निष्ठुर था अत वह व्यर्थ मे रक्तपात किया करता था और गर्भवतियो के पेट फडवा डालता था। जब उसका अत्याचार सीमा से अधिक बढ गया और छोटे-बडे उसके अत्याचार के कारण परेशान हो गये तो शादी खा तथा नासिर खा ने, जो दोनो उसके दास थे और जिन्हे अमीरो की श्रेणी प्राप्त थी, सगठित होकर अहमद शाह की हत्या कर दी। यह घटना ८३० हि० (१४२६-२७ ई०) मे घटी। उसने १६ वर्ष और कुछ लोगो के मतानुसार १८ वर्ष तक राज्य किया।

नासिर खां दास

अहमद शाह की मृत्यु के उपरान्त, शादी खां, नासिर खा को हटाकर स्वय राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा। नासिर खा ने उसके उद्देश्य का पता लगाकर, शादी खा की हत्या कर दी और स्वय साहस से कार्य लेकर सिहासनारूढ हो गया तथा आज्ञाये प्रसारित करना प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान अहमद

१ ब्राह्मणों।

(११८) के अमीर तथा मलिक उसके राज्य को सहन न कर सके और उन्होने उसकी हत्या कर दी। उसने ७ दिन तक और कुछ लोगो के मतानुसार आधे दिन तक राज्य किया।

नासिर शाह

जब नासिर खा गुलाम की हत्या हो गई तो अमीरों तथा मलिको ने मिलकर सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा के एक पौत्र को, जिसमे इस पद की योग्यता थी, नासिर शाह की उपाधि देकर सिहासनारूढ कर दिया। नासिर शाह ने न्याय तथा दान-पुण्य प्रारम्भ कर दिया और छोटे-वडे सभी लोगो को सुख-शान्ति प्राप्त हो गई। अहमद शाह के अत्याचार के घाव भर गये। गौड के किले तथा भवनो का निर्माण उसके राज्यकाल मे हुआ। उसने बगाले मे ३२ वर्ष तक राज्य किया। तदुपरान्त उसकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगो के मतानुसार उसने २७ वर्ष से अधिक राज्य न किया।

सुल्तान बारबक शाह बिन नासिरुद्दीन

नासिर शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र बारबक शाह सिहासनारूढ हुआ। वह बडा बुद्धिमान् था और शरा के आदेशो का पालन किया करता था। उसके राज्यकाल मे लोग सुख-शान्ति (११९) से थे और उसने बहुत समय तक भोग-विलास मे अपना जीवन व्यतीत किया। ८७९ हि० (१४७४-७५ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई। उसने १७ वर्ष अथवा १६ वर्ष तक राज्य किया।

यूसुफ़ शाह

बारबक शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र यूसुफ शाह अमीरो तथा राज्य के प्रतिष्ठित लोगो की सहमति से सिहासनारूढ हुआ। वह बडा ही सहनशील, प्रजा का हितैषी, सदाचारी तथा विद्वान् बादशाह था। उसने ७ वर्ष तथा ६ मास तक राज्य किया और ८८७ हि० (१४८२-३ ई०) मे उसकी मृत्यु हो गई।

फ़तह शाह बिन यूसुफ़ शाह

यूसुफ शाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र सिकन्दर शाह सिहासनारूढ हुआ। उसमे थोडा बहुत पागलपन था। क्योकि वह इस उत्कृष्ट पद के योग्य न था अत अमीरो तथा राज्य के उच्चाधिकारियों ने सोच-विचार करके उसे उसी दिन पदच्युत कर दिया और यूसुफ शाह के दूसरे पुत्र फतह शाह को सिहासनारूढ किया। वह बडा बुद्धिमान् था और प्राचीन बादशाहो की पथानुसार कार्य करता था। अमीरो का उनकी श्रेणी के अनुसार सम्मान करता था और प्रजा के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करता था। उसके राज्यकाल मे भोग-विलास के द्वार बगाले के लोगो पर खुल गये। बगाले मे यह प्रथा थी कि प्रत्येक रात्रि मे पाच हजार पायक बारी-बारी से पहरे के लिये उपस्थित रहते थे और प्रात काल बादशाह एक क्षण (१२०) के लिये बाहर निकलकर उन लोगो का अभिवादन स्वीकार करके उन्हे विदा कर देता था और फिर अन्य लोग उपस्थित हो जाते थे। एक दिन फ़तह शाह के ख्वाजासरा ने जिसका नाम बारबक था पायकों से मिलकर फतह शाह की हत्या कर दी। यह घटना ८९६ हि० (१४९०-९१ ई०) मे घटी। फतह शाह ने ७ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया।

बारबक ख़्वाजासरा, जिसकी उपाधि सुल्तान शाहज़ादा थी

बारबक ख़्वाजासरा ने अपने आश्रयदाता की हत्या करके अपनी उपाधि सुल्तान शाहज़ादा रक्खी और सिहासनारूढ हो गया। जहा जहा ख़्वाजासरा थे वे सब उसके पास एकत्र हो गये। उसने कमीने लोगो को धन का लोभ देकर अपनी ओर मिला लिया और अपनी शक्ति की वृद्धि का प्रयत्न करने लगा। जब उसने अपना अधिकार बढा लिया तो वह बडे बडे अमीरो के विनाश का प्रयत्न करने लगा। उन्ही मे सर्वश्रेष्ठ अमीर मलिक अन्देल हब्शी था, जोकि सीमान्त पर रहता था। जब उसे इस (१२१) बात की सूचना मिली तो वह प्रयत्न करने लगा कि किसी प्रकार राजसिहासन तक पहुच कर उसकी हत्या कर दे। इसी बीच मे उस ख़्वाजासरा के हृदय मे यह आया कि उसे[1] बुलवाकर किसी न किसी युक्ति से उसे बन्दी बनवा लिया जाय, अत उसने उसके बुलवाने के लिये फरमान भेजा। मलिक अन्देल इस फरमान को ईश्वर की देन समझकर एक उत्तम सेना लेकर उपस्थित हुआ। जब वह सावधानी से दरबार मे आने-जाने लगा, तो ख़्वाजासरा उसे नष्ट करने मे असमर्थ हो गया। एक दिन उसने दरबार करके मलिक अन्देल के प्रति अत्यधिक प्रेमभाव प्रदर्शित करते हुए उससे कहा कि "कुरान शरीफ की शपथ ले कि तू मुझे किसी प्रकार की हानि न पहुचायगा।" मलिक अन्देल ने शपथ ली कि जब तक वह सिहासन पर रहेगा उसे कोई हानि न पहुचाई जायगी। इस कारण कि सभी लोग उस अभागे ख़्वाजासरा से रुष्ट थे, मलिक अन्देल भी अपने आश्रयदाता के रक्त का बदला लेने के लिये कटिबद्ध हो गया। उसने द्वारपालो को मिला लिया और समय की प्रतीक्षा करने लगा। एक दिन वह कृतघ्न अत्यधिक मदिरा पान करके राजसिहासन पर सोया हुआ था। मलिक अन्देल द्वारपालो की सहायता से उसकी हत्या हेतु अन्त पुर मे चला गया। जब उसने उसे राजसिहासन पर सोते हुए देखा तो उसे अपनी शपथ याद आ (१२२) गई और वह असमजस मे पड गया। अचानक वह मदिरा के नशे मे राजसिहासन से लुढककर भूमि पर गिर पडा। मलिक अन्देल ने प्रसन्न होकर उस पर तलवार का वार किया किन्तु उसका अधिक प्रभाव न हुआ। सुल्तान शाहज़ादा सचेत हो गया और अपने मुकाबले मे नगी तलवार देखकर मलिक अन्देल से लिपट गया। क्योकि वह बडा बलवान् तथा बडे डील-डौल का था अत उसने मल्लयुद्ध मे मलिक अन्देल को नीचे गिरा दिया और उसके सीने पर बैठ गया। मलिक अन्देल ने, जो उसके केशो को दृढता-पूर्वक अपने हाथ मे पकडे हुए था, न छोडा। उसने युगरिश ख़ा को, जोकि कोठरी के बाहर खडा हुआ था आवाज दी कि वह शीघ्र उसके पास आ जाय। युगरिश ख़ा तुर्क तुरन्त हब्शियो के साथ प्रविष्ट हो गया और मलिक अन्देल को नीचे देखकर तलवार का वार करने के विषय मे सोच-विचार करने लगा, कारण कि ढूँढते समय मोमबत्तिया पैरो के नीचे आकर बुझ गई थी और वहा अधेरा था। मलिक अन्देल चिल्लाया कि, "मै उसके केशो को पकडे हुए हू, वह इतने बडे डील-डौल का है कि मेरे शरीर पर ढाल बना हुआ है। तू नि सकोच तलवार चला, कारण कि तलवार उसे पार न कर सकेगी और यदि पार करके मुझ तक पहुच भी जाय तो पहुच जाने दे। मै तथा मेरे सरीखे लाखो व्यक्ति यदि अपने आश्रयदाता के (१२३) रक्त का बदला लेने के लिये मारे जाये तो कोई चिन्ता नही।" युगरिश ख़ा ने धीरे धीरे तलवार के कुछ वार सुल्तान शाहज़ादे की पीठ पर लगाये और सुल्तान शाहज़ादा अपने आप को मुर्दा समझने लगा। मलिक अन्देल उठकर युगरिश ख़ा तथा हब्शियो सहित बाहर चला गया। तवाची बाशी[2] ने सुल्तान शाहज़ादा

१ मलिक अन्देल हब्शी।
२ मुख्य द्वारपाल।

के शयनागार मे पहुचकर दीपक जलाया। सुल्तान शाहजादा उसे मलिक अन्देल समझकर दीपक के जलने के पूर्व प्राण के भय से राजसिहासन पर न पहुचा अपितु मखजन[1] की ओर भाग गया। तवाची बाशी जब उस मखजन से होता हुआ बाहर निकल गया तो सुल्तान शाहजादे ने अपने आपको मुर्दा बना लिया। तवाची बाशी चिल्लाने लगा कि, "खेद है कि विश्वासघातियो ने मेरे स्वामी की हत्या कर दी और राज्य को नष्ट कर दिया।" सुल्तान शाहजादे ने उसे अपना हितैषी समझकर आवाज दी कि, "हे अमुक व्यक्ति! चुप रह, मै जीवित हू" और पूछा कि, "मलिक अन्देल कहा है?" तवाची ने कहा कि "यह समझकर कि उसने बादशाह की हत्या कर दी है, निश्चिन्त होकर वह अपने घर चला गया है।" सुल्तान शाहजादे ने कहा कि, "बाहर जाकर अमुक अमीरो को एकत्र करके उनसे कह कि मलिक अन्देल की हत्या करके उसका सिर ले आये। द्वारो को नौबत के प्यादो को सौपकर कह कि वे सशस्त्र होकर (१२४) सचेत रहे।" तवाची हब्शी ने कहा, "मुझे सिर आखो पर यह बात स्वीकार है, अभी जाता हू और आवश्यक प्रबन्ध करता हू।" उसने बाहर निकलकर मलिक अन्देल के कान मे धीरे से यह बात कह दी। मलिक अन्देल तवाची के साथ पुन भीतर गया और कटार द्वारा उसकी हत्या कर दी और उसे उसी मखजन मे छोडकर उसके द्वार मे ताला लगा दिया और बाहर निकलकर खाने जहा वजीर को बुलवाने के लिये आदमी भेजा। उसके उपस्थित होने के उपरान्त, बादशाह नियुक्त करने के विषय मे परामर्श होने लगा। क्योकि फतह शाह के केवल दो वर्ष का एक बालक था, अत यह सोचा गया कि वह राज्य के योग्य नही है। उसे किस प्रकार सिहासनारूढ किया जाय? अत प्रात काल सभी अमीर मिलकर फतह शाह की पत्नी के घर मे पहुचे और रात की कहानी की उससे चर्चा की और कहा कि, "क्योकि शाहजादा बालक है अत उसे किसी व्यक्ति के सिपुर्द कर दिया जाय जो उसके बडा होने तक राज्य के कार्य को सम्पन्न करता रहे।" शाहजादे की माता को जब इस बात का पता चला तो उसने समझ लिया कि उन लोगो का क्या उद्देश्य है। उसने उत्तर दिया कि, "मैने शपथ ले रखी है कि जो व्यक्ति फतह शाह के हत्यारे की हत्या करेगा, मैं उसी को बादशाही दूगी।" मलिक अन्देल ने प्रारम्भ मे यह बात स्वीकार न की किन्तु अन्त मे जब समस्त अमीरों ने उपस्थित होकर सर्वसम्मति से इस विषय मे आग्रह किया तो वह सिहासनारूढ (१२५) हुआ। सुल्तान शाहजादे के प्रभुत्व की अवधि कुछ लोगो के मतानुसार ८ मास और कुछ लोगो के मतानुसार ढाई मास थी। सुल्तान शाहजादे की हत्या के उपरान्त बगाल मे कुछ वर्षो तक यह प्रथा रही कि जो कोई अपने बादशाह के हत्यारे की हत्या कर देता था वह बादशाह हो जाता था। लोग उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेते थे और कोई रोक-टोक न करते थे। सुल्तान शाहजादे के राज्यकाल की अवधि एक पुस्तक मे ६ मास देखी गई है।

मलिक अन्देल हब्शी फ़ीरोज़ शाह

जब मलिक अन्देल हब्शी अपने सौभाग्य से बगाल के सिहासन पर आरूढ हो गया तो उसने अपनी उपाधि फीरोज शाह रक्खी और राजधानी गौड मे पहुचकर निवास करने लगा तथा न्याय एव उपकार प्रारम्भ कर दिया। प्रजा को उसके राज्यकाल में बडी सुख-शान्ति प्राप्त थी। इस कारण कि उसने उस समय जब कि वह अमीर था, महान् कार्य सम्पन्न किये थे और सेना तथा प्रजा उससे सतुष्ट थी अतः उसके राज्यकाल मे किसी ने उससे विद्रोह न किया। वह दान-पुण्य में अद्वितीय था। उसने खज़ाना तथा

1 खज़ाने।

गडी हुई धन-सम्पत्ति[1] को जिसे पिछले बादशाहो ने अत्यधिक परिश्रम से एकत्र किया था, अल्प समय मे दीनो (१२६) तथा दरिद्रियो को प्रदान कर दिया। कहा जाता है कि एक बार उसने एक लाख रुपया दरिद्रियो को बाट दिया। राज्य के उच्च पदाधिकारियो को यह अपव्यय अच्छा न लगा। उन लोगो ने आपस मे कहा कि "यह हब्शी धन का मूल्य, जो उसे परिश्रम से नही प्राप्त हुआ है, नही जानता। कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि वह धन का मूल्य समझने लगे और अपव्यय न करे", अत उन्होने धन को इस आशय से प्रागण मे एकत्र कराया कि बादशाह अपनी आखो से उसे देख ले। सम्भव है कि वह इस धन का मूल्य समझ ले और उसकी दृष्टि मे वह महत्वपूर्ण हो जाय। जब सुल्तान ने धन को देखा तो उसने पूछा कि, "इस धन को इस स्थान पर क्यो एकत्र किया गया है ?" राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने कहा कि, "यह वही धन है जोकि दरिद्रियो को बाटा जा चुका है।" उसने कहा कि, "इतने से क्या होगा ? एक लाख की ओर वृद्धि कर दी जाय।" राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने आश्चर्य प्रकट करते हुए धन को दरिद्रियो को बाट दिया। मलिक अन्देल ने तीन वर्ष तक राज्य किया। ८९९ हि० (१४९३-९४ ई०) मे वह रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु हो गई किन्तु सबसे अधिक प्रामाणिक बात यह है कि फीरोज शाह भी पायको द्वारा मारा गया। गौड शहर के चारो ओर उसने मस्जिद, मीनार तथा हौज बनवाये।

सुल्तान महमूद बिन फ़ीरोज़ शाह

जब फीरोज शाह की मृत्यु हो गई तो अमीरो तथा वजीरो ने उसके ज्येष्ठ पुत्र को जिसका नाम महमूद था सिहासनारूढ किया। हब्शी खा नामक एक हब्शी गुलाम को राज्य के समस्त कार्यो का (१२७) मुख्य प्रबन्धक नियुक्त कर दिया। उसे बादशाही के कार्यों मे इतना अधिक अधिकार प्राप्त हो गया, कि महमूद शाह केवल नाममात्र को बादशाह रह गया और वह विवश अवस्था मे जीवन व्यतीत करता था। यहा तक कि एक अन्य हब्शी ने, जिसे सीधी[2] बद्र दीवाना कहा जाता था, हब्श खा से परेशान होकर, उसकी हत्या कर दी और स्वय शासन-प्रबन्ध अपने हाथ मे ले लिया। कुछ समय उपरान्त पायको के सरदार को मिलाकर रात्रि मे सुल्तान महमूद की भी हत्या कर दी और प्रात काल दरबार के अमीरो की सहमति से जोकि उससे मिले हुए थे सिहासनारूढ हो गया और उसने अपनी उपाधि मुजफ्फर शाह रक्खी। महमूद शाह ने एक वर्ष तक राज्य किया।

हाजी मुहम्मद कधारी के इतिहास मे लिखा है कि सुल्तान महमूद शाह फतह शाह का पुत्र था। बारबक शाह का दास जश्न खा सुल्तान फीरोज शाह के आदेशानुसार उसको शिक्षा प्रदान करता था। उसने सुल्तान फीरोज़शाह की मृत्यु के उपरान्त सुल्तान महमूद को सिहासनारूढ कर दिया। जब छ मास व्यतीत हो गये तो हब्श खा को राज्य का लोभ हो गया। मलिक बद्र दीवाना ने, जैसा कि ऊपर उल्लेख हो चुका है, हब्श खा की हत्या कर दी।

सीधी बद्र "मुज़फ़्फ़र शाह"

जब मुजफ्फरशाह गौड नगर मे सिहासनारूढ हुआ तो उसने बडा ही अत्याचारी तथा निष्ठुर (१२८) होने के कारण अधिकाश आलिमो, पवित्र व्यक्तियो तथा सम्मानित लोगो की हत्या करा

१ दफ़ीना।
२ फ़िरिश्ता के अनुसार 'सीदी।

दी। उसने काफिर रायो की, जोकि बगाले के सुल्तानों के विरोध हेतु कटिबद्ध थे, आक्रमण करके हत्या कर दी। सैयिद हुसेन शरीफ मक्की को विजारत का पद प्रदान किया और उसे राज्य के कार्यो मे अधिकार प्रदान कर दिया। खजाना एकत्र करने की ओर प्रेरित होकर, सैयिद हुसेन के प्रस्ताव पर, अश्वारोहियो तथा पदातियो का वेतन कम कर दिया। खजाने मे वृद्धि करने के प्रयत्न मे खराज[1] की वसूली मे कठोरता करने लगा। इस कारण एक ससार मुजफ्फर शाह के हाथो से पीडित होकर उससे घृणा करने लगा। शनै-शनै सैयिद हुसेन भी उसका विरोधी हो गया यहा तक कि ९०३ हि० (१४९७-९८ ई०) मे बहुत से बडे बडे अमीरो ने उसका विरोध करके उस पर चढाई की। सुल्तान मुजफ्फर शाह पाच हजार हब्शियो, तीन हजार अफगानो तथा बगालियो सहित गौड के किले मे बन्द हो गया। चार मास तक भीतर वालो और बाहर वालो मे युद्ध होता रहा और रोजाना बहुत से लोगो की हत्या होती रही। कहा जाता है जिन दिनो सुल्तान मुजफ्फर शाह किले मे बन्द था उस समय जिसको भी बन्दी बनाकर उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता, तो वह क्रोध एव अत्याचार के कारण, जो हब्शी लोगो मे स्वाभाविक रूप मे पाये जाते है, अपने हाथो से तलवार निकाल कर हत्या कर देता था। इस प्रकार जिन लोगो की उसने अपने हाथ से हत्या की उनकी सख्या चार हजार तक पहुच गई थी। अन्त मे मुजफ्फर शाह अपनी सेना सहित शहर के बाहर निकला और उन अमीरो से, जिनका नेता सैयिद हुसेन शरीफ था, युद्ध किया। दोनो ओर के लगभग बीस हजार व्यक्तियो की तलवार तथा वाण द्वारा हत्या कर दी गई।

(१२९) अन्त मे अमीरो को विजय प्राप्त हुई, मुजफ्फर शाह अपने विश्वासपात्रो सहित रणक्षेत्र मे मारा गया। हाजी मुहम्मद कधारी के मतानुसार उन दिनो मे आद्योपान्त समस्त युद्धो मे एक लाख बीस हजार मुसलमान तथा काफिर मारे गये। सैयिद हुसेन शरीफ मक्की सिहासनारूढ होकर, शासन-प्रबन्ध करने लगा।

निजामुद्दीन अहमद के इतिहास[2] मे लिखा है कि क्योकि लोग मुजफ्फर शाह के दुर्व्यवहार के कारण उससे घृणा करने लगे थे, अत सैयिद हुसेन शरीफ मक्की ने इस बात के महत्व पर ध्यान देते हुए, पायको के सरदारो को मिलाकर एक रात्रि मे १३ व्यक्तियो सहित अन्त पुर मे प्रविष्ट होकर मुजफ्फर शाह की हत्या कर दी, दूसरे दिन प्रात काल सिहासनारूढ होकर अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन रक्खी।

मुजफ्फर शाह ने तीन वर्ष तथा पाच मास तक राज्य किया। उसने गौड मे एक मस्जिद का निर्माण कराया।

सुल्तान अलाउद्दीन, सैयिद हुसेन शरीफ़ मक्की

क्योकि सैयिद हुसेन शरीफ मक्की अपनी विजारत के समय, समस्त लोगो के प्रति उत्तम व्यवहार करता था और यह बात लोगो के कानो मे पहुचाता रहता था कि "मुजफ्फर शाह अत्यन्त कृपण (१३०) तथा दुष्ट है और मै उसे सेना तथा अमीरो एव दुराचार त्याग देने के विषय मे परामर्श देता रहता हूँ किन्तु इसका कोई लाभ नही होता और वह धन एकत्र करने मे व्यस्त रहता है।" इस कारण अमीर, उसके प्रति कृपा तथा दया किया करते थे। क्योंकि उसका सदाचरण तथा मुजफ़्फर शाह का दुराचरण सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो को ज्ञात हो चुका था। अत जिस दिन मुज़फ्फर शाह की हत्या हुई,

१ राज्य के कर, विशेष रूप से भूमि कर।
२ 'तबकाते अकबरी'।

उसी दिन समस्त अमीरो ने बादशाह की नियुक्ति के विषय मे परामर्श किया और सैयिद हुसेन शरीफ मक्की को बादशाह बनाना स्वीकार किया। लोगो ने उससे पूछा कि, "यदि तुझे बादशाह बना दिया जाय तो तू हमसे कैसा व्यवहार करेगा ?" उसने उत्तर दिया, "जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही करूगा और शीघ्रातिशीघ्र नगर मे जो कुछ भी भूमि पर होगा वह तुम्हे प्रदान कर दूँगा और जो भूमि के नीचे है उसको मै अपने अधिकार मे करूगा।" सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो ने धन-सम्पत्ति के लोभ मे यह बात स्वीकार कर ली और गौड नगर का विनाश जो मिस्र से भी आगे बढ चुका था, प्रारम्भ कर दिया। सैयिद शरीफ मक्की ने बडी आसानी से बादशाही चत्र धारण कर लिया और अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया तथा सिक्का चला दिया।

(१३१) सकलनकर्ता का मत है कि इतिहासकार उसका नाम सैयिद शरीफ मक्की लिखते है। जब वह सिहासनारूढ हुआ तो उसने अलाउद्दीन की उपाधि धारण की किन्तु समस्त बगाले तथा गौड के आस-पास उसका नाम विशेष तथा सर्वसाधारण की जिह्वा पर हुसेन शाह प्रसिद्ध है। जब मुझे हुसेन शाह नाम इतिहास मे न मिला तो मुझे बडा आश्चर्य हुआ। अत्यधिक खोज के उपरान्त गौड नगर के खडहर के बडे द्वार के एक पत्थर, कदम रसूल, सोना मस्जिद तथा कुछ अन्य मजारो के शिला लेखो से जो अभी तक वर्तमान है और जिनका निर्माण सुल्तान हुसेन शाह, उसके पुत्र नुसरत शाह तथा उसके अन्य पुत्र महमूद शाह ने कराया था, उसका नाम सैयिदुस्सादात अलाउद्दीन अबुल मुजफ्फर शाह, हुसेन सुल्तान बिन सैयिद अशरफ हुसेनी ज्ञात हुआ। सैयिद शरीफ मक्की के राज्यकाल की तिथि तथा उपर्युक्त शिलालेखो की तिथिया एक ही है। इससे इस सन्देह का अन्त हो गया। मेरी समझ मे आता है कि उसका पिता सैयिद अशरफ हुसेनी, मक्का का शरीफ[1] था अत वह भी शरीफ मक्की के नाम से प्रसिद्ध हो गया, अन्यथा उसका नाम सैयिद हुसेन था। एक पुस्तक मे यह लिखा है कि हुसेन शाह तथा उसका भाई यूसुफ एव उनके पिता सैयिद हुसेनी तिरमिज नगर के निवासी थे। सयोग मे वे बगाले पहुचे और (१३२) राढ[2] जिले मे चादीपुर नामक स्थान पर ठहरे। दोनो भाई वहा के काजी से शिक्षा प्राप्त करने लगे। इस बात का प्रमाण मिल जाने के उपरान्त कि वे उच्च वश से सम्बन्धित है, काजी ने अपनी पुत्री का विवाह हुसेन शाह से कर दिया। तदुपरान्त वह मुजफ्फर शाह के सेवको मे सम्मिलित हो गया और विजारत के पद तक पहुच गया।

जब वह गौड के सिहासन पर आरूढ हुआ तो कुछ दिन उपरान्त उसने लोगो को शहर को नष्ट-भ्रष्ट करने से रोका। जब वे न रुके तो उसने १२ हजार, शहर को नष्ट करने वालो की हत्या करा दी। यहा तक कि उन लोगो ने इस कार्य से हाथ खीच लिया। पूछताछ के उपरान्त उसने अत्यधिक धन-सम्पत्ति अपने अधिकार मे कर ली। उसमे से १३०० सोने की कश्तिया[3] थी कारण कि प्राचीन काल से लखनौती तथा बगाले मे यह प्रथा थी कि धनी लोग सोने की कश्तिया बनवाकर उनमे भोजन करते थे। जश्ने तथा विवाह के अवसरो पर जो कोई सोने की कश्तियाँ अधिक सख्या मे प्रस्तुत करता था तो इससे यह बात उसके गौरव तथा उसके प्रति विश्वास मे वृद्धि का साधन होती थी। यह प्रथा वहा के धनी तथा समृद्ध लोगो मे अब भी प्रचलित है।

१ सरदार।
२ एक पोथी के अनुसार 'राढा'।
३ ट्रे अथवा लम्बा थाल जिसमे चौड़ाई मे बीच में पकड़ने के लिये हैंडिल लगे रहते है।

सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह क्योकि बडा बुद्धिमान् न था अत वह उच्च वश के अमीरो को प्रोत्साहन देता था और अपने विशेष दासो को भी उच्च पद प्रदान करता था। उसने पायको को जोकि नमकहरामी तथा अपने स्वामी की हत्या करते थे पहरा देने मे रोक दिया और सबको पदच्युत कर दिया (१३३) ताकि उसे किसी प्रकार की कोई हानि न पहुचे। पहरे तथा नौबत[1] के लिये पायको के स्थान पर उसने सरहगो[2] को नियुक्त किया। हब्शियो को भी उसने अपने राज्य से निकलवा दिया कारण कि यह लोग भी दुष्टता तथा अपने स्वामियो की हत्या करते रहते थे। इन लोगो को जौनपुर तथा हिन्दुस्तान मे स्थान न मिला और इनमे से अधिकाश गुजरात तथा दकिन (दक्षिण) की ओर भाग गये।

सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह ने, न्याय हेतु कटिबद्ध होकर अपनी राजधानी एकदला, जोकि गौड नगर के समीप स्थित है, निश्चित की। हुसेन शाह के अतिरिक्त किसी भी बगाले के सुल्तान ने पडुवा तथा गौड नगर के अतिरिक्त किसी स्थान पर राजधानी न बनाई थी। क्योकि वह स्वय शरीफ तथा उच्च वश से सम्बन्धित था अत उसने सैयिदो मुगुलो तथा अफगानो को बडे उच्च पदो पर नियुक्त किया। इस कारण राज्य सुव्यवस्थित हो गया। हब्शी सुल्तान के समय मे राज्य मे जो उथल-पुथल हो गई थी, वह शान्त हो गई और विद्रोही आज्ञाकारी बन गये। उसने चारो ओर के रायो को अपना आज्ञाकारी बनाकर उडीसा तक के स्थान विजय कर लिये और उनसे मालगुजारी लेने लगा। तदुप-(१३४)रान्त उसने आसाम के राज्य पर, जोकि बगाल के उत्तर-पूर्व मे है, विजय प्राप्त करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। पदातियो की एक बहुत बडी सेना तथा अगणित नौकाओ को लेकर उस प्रदेश की ओर रवाना हुआ और उस राज्य को विजय कर लिया। एक बहुत बडी सेना सहित उस राज्य मे प्रविष्ट हो गया। समस्त प्रदेश को, जो कामरूप से कामता तक फैला हुआ था, और बडे-बडे रायो उदाहरणार्थ रूप नारायण, माल कुवर, कोसा लखन, लक्ष्मी नारायण इत्यादि, के अधीन था, विजय कर लिया और उन राज्यो से अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त की। अफगानो ने उनके घरो को नष्ट करके अपने घरों का निर्माण करा लिया[3]।

वहा का राजा युद्ध न कर सका और राज्य को खाली छोड कर पर्वत की ओर भाग गया। सुल्तान अपने पुत्र को एक भारी सेना देकर उस क्षेत्र को विजय करने के लिये नियुक्त करके स्वय विजय तथा सफलता प्राप्त करके बगाले की ओर लौट गया। सुल्तान के लौट जाने के उपरान्त उसका पुत्र उस स्थान का शासन-प्रबन्ध करने लगा किन्तु वर्षा ऋतु के आ जाने के कारण जल की अधिकता से मार्ग बन्द हो गये। राजा ने अपने सहायको तथा अधिकारियो सहित पर्वत से उतर कर उस स्थान को घेर लिया और युद्ध करने लगा तथा रसद पहुचानी बन्द कर दी। अल्प समय मे सब लोगो को तलवार के घाट उतार दिया।

सुल्तान ने बहता नदी के तट पर किले का निर्माण कराया और बगाले के राज्यों की समृद्धि (१३५) का प्रयत्न करने लगा। प्रत्येक सरकार मे विभिन्न स्थानो पर मस्जिदों तथा लगरखानो का निर्माण कराया। फकीरो तथा एकान्तवासियो को अत्यधिक इमलाक प्रदान की। शेख नूर कुतुब आलम के लगरखाने के लिये बहुत से स्थान निश्चित किये। वह प्रत्येक वर्ष एकदला से जोकि उसकी राजधानी थी, शेख नूर कुतुब आलम के मजार के दर्शनार्थ पडुवा कस्बे जाया करता था। उसने अपनी बुद्धिमत्ता, योग्यता तथा सूझ-बूझ के कारण दीर्घ काल तक राज्य किया।

१ कुछ विशेष बाजे जो बादशाह के द्वार पर बजाये जाते थे।
२ सिपाहियों, सैनिको।
३ यह वाक्य स्पष्ट नही, सम्भवत. कुछ छूट गया है।

९०० हि० मे सुल्तान हुसेन शर्की जोकि जौनपुर मे राज्य करता था सुल्तान सिकन्दर द्वारा पराजित होकर, उसके पीछा करने पर भागकर कहलगाव[1] पहुचा और उससे शरण प्रदान करने की याचना की। सुल्तान अलाउद्दीन ने उसके सम्मान पर दृष्टि रखते हुए उसके लिये भोगविलास की सामग्री की व्यवस्था कर दी ताकि वह राज्य की चिन्ता से मुक्त हो जाय। उसने अपना शेष जीवनकाल वही व्यतीत किया। उसके राज्यकाल के अन्त मे मुहम्मद बाबर बादशाह ने हिन्दुस्तान को विजय कर लिया। सुल्तान हुसेन शाह ९२७ हि० मे मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसने २७ वर्ष और कुछ लोगो के मतानुसार २४ वर्ष तथा कुछ लोगो के मतानुसार २९ वर्ष तथा ५ मास तक राज्य किया। बगाले के सुल्तानो मे सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह के समान कोई अन्य बादशाह नही हुआ है और उसके उत्कृष्ट कार्य इस राज्य के सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो मे प्रसिद्ध है। उसके १८ पुत्र थे। नुसरत शाह अपने पिता के उपरान्त सिहासनारूढ हुआ।

१ एक पोथी के अनुसार 'कहलगाम'।

परिशिष्ट

वाक़ेआते मुश्ताक़ी

(लेखक—शेख रिज़्कुल्लाह मुश्ताकी)
(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रिप्ट, रियू, भाग २, ८०२ ब)

सुल्तान इबराहीम शर्क़ी

(१६७) सुल्तान इबराहीम शर्की के राज्यकाल मे एक व्यापारी की एक विद्यार्थी से मित्रता हो गई। एक दिन वह विद्यार्थी जौनपुर नगर मे एक मार्ग से जा रहा था। एक कोठे के एक कोने पर उसकी दृष्टि एक युवती पर पडी और वह उस पर आसक्त हो गया। जब वह अदृश्य हो गई तो वह परेशान होकर उस व्यापारी के पास पहुचा। व्यापारी ने पूछा कि, "आज तेरी दशा बडी खराब हो रही है। इसका क्या कारण है?" उसने कहा कि, "अमुक मुहल्ले मे एक रूपवती मैने देखी है। जब तक मै उसे पुन न देख लूँगा मेरा जीवित रहना सभव नही।" उस व्यापारी ने कहा कि, "जो कुछ मेरे साधन है वे मैं तुझ पर न्योछावर कर दूँगा। तू इस बात से निश्चिन्त रह। मै इसका उपाय कर सकता हू।" वह विद्यार्थी थोडा बहुत सतुष्ट हो गया। व्यापारी इस बात का प्रयत्न करने लगा कि किसी न किसी प्रकार अपने मित्र को सतुष्ट करने के साधन एकत्र करे। एक दिन एक स्त्री नीले वस्त्र धारण किये हुए हाथ मे तस्बीह[1] लपेटे और डण्डा लिए हुए तथा मक्का तथा मदीना का तूमार[2] लेकर भिक्षा मागने पहुची। व्यापारी द्वार पर बैठा हुआ था। उसने उसे अपने पास बुलाया और इस विषय मे उससे वार्त्ता की। उसने कहा कि, "वह आकाश पर है अथवा पृथ्वी पर?" व्यापारी ने कहा कि, "पृथ्वी पर और इसी नगर मे।" स्त्री ने कहा कि, "तू निश्चिन्त रह और यह समझ ले कि वह मेरे पास है। यदि वह आकाश (१६८) पर होती तो कठिन था। क्योकि वह भूमि पर है और इसी नगर मे है अत अत्यधिक सरल है किन्तु इसके बदले मे सोने की मुहरे तैयार रख। जब मै उसे लाकर तेरे सिपुर्द कर दूँगी तो इन्हे ले जाऊगी। एक व्यक्ति मेरे साथ चल कर उसका घर मुझे दिखा दे।" उस विद्यार्थी ने जाकर उसका घर उसे दिखा दिया। वह धूर्त स्त्री दूर से देखती रही यहा तक कि घर का स्वामी पहुच गया और उसने उसे देख लिया। स्त्री ने उसे देख कर उसे भली-भाति पहचान लिया। शुक्रवार के दिन वह व्यक्ति जुमा मस्जिद मे उपस्थित था। वह धूर्ता नीले वस्त्र धारण करके हाथ मे तस्बीह लिए हुए और नमाज पढने की चटाई को कटि पर डाले हुए मस्जिद मे पहुची और उस व्यक्ति के निकट खडे होकर उसकी ओर देखती जाती थी और रोती जाती थी। उस व्यक्ति ने उससे बैठने का अत्यधिक आग्रह किया किन्तु उसने कोई बात न कही। उसी की ओर देखती तथा रोती रही, यहा तक कि लोग मस्जिद से लौट गये।

१ सुमरनी।
२ लपेटा हुआ कागज़।

दूसरे जुमे को भी उसने यही कार्य किया। वह व्यक्ति वहा ठहर गया और जब लोग वापस चले गये तो उसने उससे इसका कारण पूछा और यह पूछा कि "तू मेरी ओर क्यो देखती है?" उसने कहा कि, "तू मेरी चिन्ता मत कर" और अपने ललाट पर हाथ मार कर वह और भी अधिक रोने लगी। वह व्यक्ति हैरान हो गया और उसने अत्यधिक आग्रह के उपरान्त पूछा कि, "जो कुछ तेरे हृदय मे हो, मै तुझे ईश्वर की शपथ देता हू उसे कह डाल।" उसने फिर कहा कि, "मेरी चिन्ता मत कर।" जब उसने पुन आग्रह-पूर्वक पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "मेरा पति व्यापारी था। उसने अत्यधिक सपत्ति तथा एक पुत्र छोडा था। वह पुत्र बडा बुद्धिमान् तथा अत्यधिक दानी था। वह तुझसे बहुत-कुछ मिलता जुलता था। जब से उस पुत्र की मृत्यु हो गई तब से उसके वियोग मे मैने अपनी समस्त धन-सपत्ति लुटा कर घर बार त्याग दिया और यह वस्त्र धारण कर जल तथा स्थल की यात्रा करने लगी। मुझे किसी स्थान पर भी सतोष न प्राप्त हुआ और उसके समान मुझे कोई व्यक्ति न मिला। अब मै तुझे अपने पुत्र से थोडा-बहुत मिलता जुलता पाती हू। मै अपनी चिन्ता मे व्यस्त रहती हू।" उसने कहा कि, "यदि तेरा पुत्र मेरे समान था तो तू मुझको अपना पुत्र समझ।" स्त्री ने सिर हिला कर कहा कि, "किसी अन्य के पुत्र के घर मै नही रह सकती। इतना ही पर्याप्त है कि एक सप्ताह उपरान्त तुझे मस्जिद मे देख लेती हू।" उसने कहा कि, "तू मेरे घर को अपना घर समझ और रोजाना अपने सतोष की सामग्री एकत्र कर।" स्त्री ने कहा कि, "मै इसी बात से भागती हू। मै अपने पुत्र के वियोग मे रात-दिन जला करती हू। इसके उपरान्त मैने (१६९) किसी व्यक्ति से कोई प्रेम नही किया। अब मेरा तुझसे स्नेह हो गया है। मुझे भय है कि कही कोई अन्य अग्नि न भडक उठे।" दूसरे शुक्रवार को वह व्यक्ति आग्रह करके उसे अपने घर ले गया किन्तु उसके अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी वह घर मे प्रविष्ट न हुई। उसने अपने समस्त घर वालो को यह हाल बता रखा था। जब स्त्रियो ने सुना कि वह द्वार पर आ गई है तो उन्होने इस बात का अत्यधिक प्रयत्न किया कि उसे किसी न किसी प्रकार घर के भीतर ले आये किन्तु वह कुछ दिन तक आती रही और द्वार पर बैठती रही। एक दिन उस व्यक्ति ने कहा कि, "मेरी पत्नी तेरे चरणो का चुम्बन करना चाहती है। यदि तू कष्ट करे तो वह इस बात से सम्मानित हो", किन्तु उसने ३ बार मना किया। अन्त मे उसने कहा कि "यदि तू मुझे अपने घर के भीतर ले जाता है तो मै इस शर्त पर प्रविष्ट हूगी कि कोई भी मेरे पास न आये और मुझे कष्ट न दे। एक कोठरी खाली करके मुझे दे दी जाय ताकि मै उसमे बैठ कर नमाज पढा करू।" उसने कहा कि, "मै ऐसा ही करूगा।" जब वह घर मे प्रविष्ट हुई तो स्त्रियो ने उसके चरणो का चुम्बन किया और घर की एक कोठरी खाली कर दी।

वह वहा बैठी रहती थी। एक दिन वह व्यक्ति घर मे न था। घर के प्रागण मे एक बिल्ली घूम रही थी। किसी ने उस बिल्ली को जूता फेक कर मारा। वह धूर्ता बडे जोर से चिल्ला कर मूर्च्छित हो गई। दात बन्द करके आखो को घुमाकर भूमि पर गिर पडी। उन स्त्रियो ने जब यह दशा देखी तो दौडकर उसके पास पहुची और उसके सिर को गोद मे लेकर उसके मुह में पानी डाला। कुछ देर बाद उसने आखे खोली और उठ खडी हुई। लोगो ने उससे उसके मूर्च्छित होने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि, "मेरे एक पुत्री थी। उसने एक दरवेश से अशिष्टता का व्यवहार किया और उसे कुत्ता कहा। उस दरवेश ने कहा कि 'यदि मै कुत्ता हू तो तू बिल्ली हो जा।' उसने शीघ्र ही बिल्ली का रूप धारण कर लिया और घर से बाहर निकल गई। उस दिन से जब कभी मै बिल्ली को देखती हू तो बडा कष्ट होता है। आज जब कि किसी ने इस बिल्ली को घायल किया तो मुझे अपनी पुत्री का स्मरण हो आया कि वह भी कही इस प्रकार अपमानित हो रही होगी।" उन्हे आश्चर्य हुआ और उस दिन से वे कभी-कभी उसके पास जाकर बैठने लगी किन्तु कोई बात न कहती थी। एक दिन वही स्त्री जो उस व्यक्ति को प्रिय

थी तथा इस पुरुष की पत्नी थी इस धूर्ता के चरणो मे गिर पडी और उसने कहा कि, "मुझे पुत्र की इच्छा है। मेरे विषय मे प्रार्थना करो कि मुझे पुत्र प्राप्त हो जाय।" उसने कहा कि, "इस स्थान पर एक मश-(१७०) हदी[1] है। शुक्रवार की रात्रि मे वह ईश्वर से जो भी प्रार्थना करता है पूरी हो जाती है, किन्तु शर्त यह है कि तू मेरे साथ अकेली चल और किसी को सूचना मत दे। मै तुझे उस स्थान पर दर्शन करा कर ले आऊगी।" उस दिन वह व्यापारी के पास पहुची और उससे पुन वचन लेकर १०० मुहरो की थैली पृथक् रखवा ली। जब शुक्रवार की रात्रि आ गई तो वह व्यापारी के पास पहुची और कहा कि, "मै आज रात्रि मे उसे ले आऊगी। तू तैयारी कर।" व्यापारी ने एक स्थान ख़ाली कराया और पलग, सोने के समय के वस्त्र पान इत्यादि की व्यवस्था कराई और दोनो मित्र प्रतीक्षा करने लगे। वह धूर्ता उसे लेकर उन लोगो के पास आई और उसका हाथ उन लोगो के हाथ मे पकडा दिया तथा थैली लेकर चल दी। उस स्त्री ने कभी किसी अन्य पुरुष को न देखा था। वह आश्चर्य चकित हो गई और कुछ न कह सकी। उसने जिस बात की कभी शका भी न की थी वह सामने आ गई। वे उसको प्रोत्साहन देते थे और उसे सतुष्ट करते हुए कहते थे कि, "तुझे तेरे घर पहुचा दिया जायगा।" उन्होने उसे मदिरा पीने के लिए कहा। उसने कभी मदिरापान न किया था। उन लोगो ने उसे जबरदस्ती मदिरा पिला दी। जब वह नशे मे हो गई तो उन्होने उसे अपने हाथ से कबाब खिलाया। उसने उसी मूर्च्छित अवस्था मे चाकू से आत्महत्या कर ली। यह दुष्ट बडे लज्जित हुए। अन्त मे उन्होने उसे कपडे मे लपेट कर एक मटके मे रखा और कोदी[2] नदी मे डाल दिया। प्रात काल वहा कुछ बालक खेल रहे थे। एक बालक ने जब डुबकी लगाई तो उसे किसी वस्तु का आभास हुआ। उसने कहा कि, "इस पानी मे कोई वस्तु है। पता नही चलता कि क्या है।" अन्य लोगो ने डुबकी लगाई तो पता चला कि एक मटका है। सब बालको ने मिलकर उसे नदी के बाहर निकाला। उन्होने देखा कि उसका मुह बन्द है। भय के कारण उन्होने उसे न खोला, यहा तक कि कोतवाल पहुच गया। कोतवाल ने आकर मटके का मुह खोला। उसने देखा कि एक रूपवती वस्त्र धारण किये हुए उसमे है। कोतवाल ने मटके को बन्द करा दिया और उसे चारपाई पर रखवा कर बादशाह की सेवा मे ले गया और बादशाह को इस विषय मे सूचना भिजवाई। सुल्तान (१७१) इबराहीम ने स्वय आकर उसे देखा और कोतवाल को चेतावनी दी कि, "यदि इस रहस्य का पता न चला तो मै तुझे तेरी समस्त धन-सपत्ति सहित नष्ट करा दूंगा।" उसने उससे ४ दिन का अवकाश मागा। कोतवाल ने उस नगर के समस्त कल्लालो[3] को एक एकत्र किया और कुछ मदिरा तथा बकरे उनके समक्ष प्रस्तुत करके कहा कि, "मेरे घर-बार को नष्ट होने तथा हत्या से मुझे बचा लो।" उन लोगो ने पूछा कि, "क्या बात है ?" तदुपरान्त उसने मटके को लाकर पूछा कि "यह मटका किसने बनाया है ?" उन्होने मदिरापान करते हुए आपस मे परामर्श किया। अचानक एक व्यक्ति ने कहा कि "यह मटका मेरा बनाया हुआ है।" कोतवाल को सूचना दी गई। कोतवाल ने पूछा कि, "तू ने जिसके हाथ इसे बेचा था उसे जानता है?" उसने कहा कि, "अमुक व्यक्ति की स्त्री उसके घर पहुचा कर आई है। वह जानती है।" स्त्री को उपस्थित किया गया। वह उसके घर गई और उस स्त्री ने वह घर दिखलाया। कोतवाल भी उसके साथ गया और उस व्यापारी को बन्दी बनाकर सुल्तान के समक्ष ले गया। सुल्तान ने उसकी

१ मशहद का निवासी।
२ गोमती।
३ मिट्टी का बर्तन बनाने वालों।

हत्या का आदेश दे दिया। उसे कस्सास गाह[1] ले जाने लगे। चारो ओर से लोग उसको देखने के लिए एकत्र होने लगे। विद्यार्थी वस्त्र धोने के लिए गया था। वहा उसने सुना कि अमुक व्यापारी की हत्या कराने के लिए ले जा रहे है। वह वहा से भाग कर कोतवाल के पास पहुचा और उसने चिल्लाना प्रारम्भ किया और कहा कि, "जिसने अपराध किया है उसकी हत्या करोगे अथवा किसी निर्दोष की ?" कोतवाल ने पूछा कि, "अपराध किसने किया है ?" उसने उत्तर दिया कि, "मैंने किया है ?" व्यापारी ने कहा कि, "यह झूठ बोलता है। मैने अपराध किया है।" व्यापारी कहता था कि, "मैंने अपराध किया है" और विद्यार्थी कहता था कि "मैंने।" कोतवाल दोनों को बादशाह की सेवा मे ले गया और उसे सूचना दी कि, "एक दूसरा व्यक्ति आया है जो यह कहता है कि अपराध मैंने किया है। दोनो इस बात को स्वीकार करते है कि वे अपराधी है। जो कुछ आदेश हो वह किया जाय।" सुल्तान ने कहा कि, "इसे शरा[2] के सिपुर्द किया जाय।" शरा के अधिकारी ने कहा कि "शरा का आदेश है कि एक व्यक्ति की हत्या के कारण एक ही व्यक्ति का वध कराया जा सकता है, दो का नही। दोनो को बन्द रखा जाय और लोगो को इस रहस्य का गुप्त रूप से पता लगाने के लिए नियुक्त किया जाय। जब पता चल जाय तो एक ही की हत्या कराई जाय।" उन्हे बन्दी बना दिया गया और रात-दिन लोग इस बात का पता लगाने लगे कि वे आपस मे क्या वार्त्तालाप करते है। जब भी वे कोई बात करते तो यही कहते कि 'तू ने मेरे अपराध को क्यो अपने ऊपर ले लिया है ?' जब बन्दीगृह मे बहुत समय हो गया और कुछ पता न चला तो उन्हे (१७२) बन्दीगृह से निकाल कर बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बादशाह ने कहा कि, "मै तुम्हे क्षमा करता हू, किन्तु तुम लोग सच-सच बता दो।" जब बादशाह ने उन्हें क्षमा कर दिया तो उन्होने अपना सब हाल बता दिया। बादशाह ने कहा कि, "उस स्त्री को ले आओ। हम उसे सम्मानित करेंगे और उसे एक सेवा प्रदान करेंगे।" वह युवक जाकर उस स्त्री को बादशाह के पास लाया। बादशाह ने उसे अपने समक्ष बुलाकर कहा कि, "तेरे जैसे व्यक्ति बादशाह के नगर मे है और वे अपने आपको प्रकट नही करते। ऐसे व्यक्तियो के लिए बादशाहो के पास अनेक कार्य होते है। तू अकेली ही है या अन्य लोग भी है ? यदि तुझे अन्य लोगो की भी सूचना हो तो मेरे पास ले आ।" उसने कहा कि "मुझे स्वीकार है।" उस दिन उसने उसे अत्यधिक इनाम देकर विदा कर दिया। वह एक-दो व्यक्तियो की रोज बादशाह से भेंट कराती थी। बादशाह उन्हे इनाम प्रदान करके तथा उनके लिए वेतन निश्चित करके विदा कर देता था और उस धूर्ता के परामर्श से उन्हे उच्च पद प्रदान करता था। यहा तक कि १३०० व्यक्ति एकत्र हो गये। एक दिन कोदी नदी मे बाढ आई हुई थी। उसने आदेश दिया कि "नदी के उस पार शाही शिविर लगाये जाय। अत्यधिक भोजन का प्रबन्ध कराया जाय।" नौकाओ पर लोगो को बैठाकर नदी के उस पार पहुचाया जाता था। जब वे लोग मँझधार मे पहुचे तो मल्लाहो ने आदेशानुसार नावे डुबा दी और नगर से उस उपद्रव का अन्त हो गया।

सुल्तान मुज़फ़्फ़र

(१६५) वह गुजरात का बादशाह था और बडा ही धर्मनिष्ठ एव ईमानदार था। उसमे दरवेशो के समान गुण पाये जाते थे। वह सर्वदा कुरान का आधा सिपारा लिखा करता था। जब वह

१ वह स्थान जहा हत्यारो को मृत्यु-दण्ड दिया जाता था।
२ काजियों।

(कुरान) समाप्त हो जाता तो वह प्रीति-भोज कराता तथा आलिमो एव प्रतिष्ठित लोगो को खिलअत प्रदान करता था। कुरान को वह मक्का भेज देता था। सुल्तान मुजफ्फर के हाथ के लिखे हुये कुछ कुरान शरीफ अब भी मक्का तथा मदीना मे है। उसमे अत्यधिक सहनशीलता पाई जाती थी। वह कभी ऊपर की ओर दृष्टि न डालता था। उसने कभी शरा के विरुद्ध कोई बात न कही। एक बार जब मन्दू (१६६) के किले मे कुफ्र' हो गया था तो सुल्तान महमूद शिकार के बहाने से गुजरात पहुचा। सुल्तान ने उसकी सहायतार्थ सेना तैयार की और वहा पहुचकर २२ हजार काफिरो की हत्या कर दी। सुल्तान महमूद को पुन मन्दू मे नियुक्त कर दिया। एक बार सुल्तान मन्दू के किले को घेरे हुए था। इसी बीच मे दुष्ट मेदिनी तथा पिशाच सलाहदी चित्तौड के राणा के पास पहुचे और उसे अपनी सहायतार्थ लाये। सुल्तान मुजफ्फर को भी इस पिशाच के पहुचने के समाचार ज्ञात हो गये। २४ हजार अश्वारोहियो को अपने साथ लेकर उसने उस पर शीघ्रातिशीघ्र आक्रमण करना निश्चय किया और मलिक अयाज सुल्तानी को शिविर मे छोड गया। राणा यह समाचार पाकर मार्ग से भाग गया। सुल्तान महमूद जब किले मे पहुचा तो उसने सुल्तान मुजफ्फर से अत्यधिक आग्रह किया कि, "आप एक बार किले मे पधार कर हमे सम्मानित करे" किन्तु उसने स्वीकार न किया। अन्त मे उसने अतिथि बनना स्वीकार किया। वह कुछ लोगो को साथ लेकर किले के ऊपर पहुचा। आदिल खा आसीरी ने, जो सुल्तान मुजफ्फर का जामाता था, सुल्तान के कान मे कहा कि, "ऐसा किला सुल्तान को न दे। इसके बदले मे दूसरा स्थान दे दे।" सुल्तान ने अपनी अगुली दातो के नीचे रखकर उसे मना किया और कहा कि, "मेरे पास ससार की एक बादशाही है, मैंने इस बादशाही को धर्म के मार्ग मे व्यय कर दिया है। तदुपरान्त तू ऐसी बात न सोचना।" विदा होते समय उसने सुल्तान महमूद को परामर्श दिया कि, "तू दो वर्ष तक किले के नीचे न उतरना और अपनी सेना की उन्नति करते रहना। आदिल खा आसीरी पर, जो कि तेरे राज्य की सीमा के निकट है, विश्वास न करना और उसकी दुष्टता से सावधान रहना। यह न समझना कि वह मेरा जामाता है।" उसने मलिक अयाज को ३० हजार अश्वारोहियो सहित किले के नीचे नियुक्त कर दिया और उन्हे दो वर्ष का वेतन अपने राजकोष से प्रदान कर दिया ताकि जहा भी आवश्यकता हो यह सेना जाती रहे और वे अपने आदमियो को सुखी रखे। उसने अपने आदमियो को आदेश दिया कि कभी भी कोई किले के भीतर आमोद प्रमोद हेतु न जाय।

१ काफ़िरों का प्रभुत्व हो गया।

मुख्य सहायक ग्रंथों की सूची

फ़ारसी

अफीफ, शम्स सिराज	**तारीखे फीरोजशाही** (कलकत्ता १८९० ई०)
अबुल फजल	**आईने अकबरी** (नवल किशोर प्रेस १८९२ ई०)
अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी	**अखबारुल अख़ियार** (देहली १३३२ हि०)
अब्दुल्लाह	**तारीखे दाऊदी** (अलीगढ १९५४ ई०)
अमीर खुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी	**सियरुल औलिया** (देहली १८८५ ई०)
अमीर खुसरो	**वस्तुल हयात** (अलीगढ)
	खजाएनुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
	केरानुस्सादैन (अलीगढ १९१८ ई०)
	दिवल रानी तथा ख़िज्र ख़ा (अलीगढ १९१७ ई०)
	मिफताहुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
	नुह सिपेहर (इस्लामिक रिसर्च एसोसियेशन १९५० ई०)
	तुग़लुक़ नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)
अहमद यादगार	**तारीखे शाही** (कलकत्ता १९३९ ई०)
एसामी	**फुतुहुस्सलातीन** (मद्रास १९४८ ई०)
कबीर	**अफसानये शाहान** (ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)
गुलाम हुसेन सलीम	**रियाजुस्सलातीन** (कलकत्ता १८९० ई०)
तैमूर, सुल्तान (?)	**मलफूजाते तैमूरी**
निजामुद्दीन अहमद	**तबकाते अकबरी** (कल्कत्ता १९२७ ई०)
फिरिश्ता, मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह	**तारीखे फिरिश्ता** (नवल किशोर प्रेस)
फीरोज़ शाह तुगलुक	**फुतूहाते फीरोज़शाही** (अलीगढ)
बदायूनी, अब्दुल कादिर	**मुन्तख़बुत्तवारीख़** (कलकत्ता)
बरनी, जियाउद्दीन	**तारीखे फीरोजशाही** (कलकत्ता १८६०-६२ ई०)
	तारीखे फ़ीरोजशाही (रामपुर, हस्तलिखित)
	फतावाये जहांदारी (इण्डिया आफिस लन्दन, हस्तलिखित)
	सहीफये नाते मुहम्मदी (रामपुर, हस्तलिखित)
माहरू	**इन्शाये माहरु** (अलीगढ)
मुतहर कड़ा	**दीवान** (प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिजवी अदीब, लखनऊ का हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह)

मुश्ताकी, शेख़ रिज़्क़ुल्लाह — वाक़ेआते मुश्ताक़ी (ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)

मुहम्मद बिहामद खानी — तारीख़े मुहम्मदी (हस्तलिखित, ब्रिटिश म्युजियम, लन्दन)

मुहम्मद मअ़सूम — तारीख़े सिन्ध (पूना १९३८ ई०)

यजदी, शरफ़ुद्दीन अ़ली — ज़फ़र नामा भाग २ (कलकत्ता १८८५-८८ ई०)

यहया बिन अहमद सिहरिन्दी — तारीख़े मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)

सिकन्दर इब्ने मुहम्मद मारुफ उर्फ मझू — मिरआते सिकन्दरी (बम्बई १३०८ हि०, १८९०-९१ ई०)

हमीद कलन्दर — खैरुल मजालिस (अलीगढ)

हसन, अमीर, सिजजी — फवाएदुल फुआद (देहली १२७२ हि०)

हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर — दस्तरुल अलबाब फी इल्मिल हिसाब (हस्तलिखित, रामपुर)

अरबी

इब्ने बत्तूता — यात्रा का विवरण (पेरिस १९४९ ई०)

कलकशन्दी — सुबहुल आशा फी सिनअतिल इन्शा (काहिरा १९१५ ई०)

शिहाबुद्दीन अल उमरी — मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार

हाजी-उद्-दबीर — जफरुल वालेह (लन्दन १९१० ई०)

उर्दू

सर सैयिद अहमद खा — आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

हिन्दी

रिजवी, सैयिद अतहर अब्बास — आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ १९५६ ई०)

खलजी कालीन भारत (अलीगढ १९५४ ई०)

तुगलुक़ कालीन भारत भाग १ (अलीगढ १९५६ ई०)

तुगलुक कालीन भारत भाग २ (अलीगढ १९५७ ई०)

उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १ (अलीगढ १९५८ ई०)

ENGLISH

Blochmann, H — Contributions to the Geography and History of Bengal (Muhammadan Period) *Journal Asiatic Society Bengal*, XLII, Part I, pp 209-310 (1873)

Codrington, O — Coins of the Bahmani Dynasty. *Numismatic Chronicle*, 3rd Series, Vol XVIII

Dames, Mansel Longworth — *The Book of Duarte Barbosa*, Vols I and II Hakl Society, 1918, 1921

Elliot, H M — *History of India as told by its historians*, Edited by John Dowson, 8 Vols (London 1867-77)

Ethe, H — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of the India Office*

Faridi — *English Translation of Mirat-i-Sikandari*

Forbes, A K — *Ras Mala, or Hindoo Annals of the Province of Goozerat in Western India*, 2 Vols (London 1856)

Gibb, H A R — *Ibn Battuta* (London 1929)

Haig, Sir, Wolseley — *The Cambridge History of India*, Vol III (Cambridge 1928)

Haig, T W — The Chronology and the Genealogy of the Muhammadan Kings of Kashmir *Journal Royal Asiatic Society, Bengal*, pp 451-468 and a table (1918)

Haig, T W — Some Notes on the Bahmani Dynasty *Journal Asiatic Society Bengal*, 1904, Part 1, Extra No., pp 1-15

Hodivala, S H — *Studies in Indo-Muslim History*, Vol I (Bombay 1939)

Supplement—Volume II (Bombay 1957)

Ibbetson, Sir D — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Province* (Lahore 1919)

King, Major J S — History of the Bahmani Dynasty *Indian Antiquary*, 1899

Mirza, M W — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935)

Moreland, W H — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929)

The Raja Tarangini; A History of Cashmir, consisting of four separate compilations .—
(i) *The Raja Tarangini*, by Kalhana Pandita, 1148 A D ,
(ii) *Rajavali*, by Jona Raja (defecture), to 1412 A D.,

(iii) Continuation of Same, by Srivara Pandita, 1477 A D
(iv) *The Rajavali Pataka*, by Prajya Bhatta, brought up to the conquest of the valley by the Emperor Akbar (Calcutta 1835)

Qureshi, I H — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944)

Raverty, H G — *The Mihran of Sind and its tributaries*, a Geographical and Historical study *Journal Asiatic Society Bengal*, LXI, Pt 1, pp 155-508, 9 plates (1892-93)

Rieu, C — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London*

Rodgers, C J — The square silver coins of the Sultans of Kashmir *Journal Asiatic Society, Bengal*, LIV, Pt 1, pp 92-139, 3 pls (1885)

Scott, J — *History of Deccan* (London 1794)

Sewell, R — *A Forgotten Empire* (Vijayanagar) (London 1900)

Sewell, Robert and Diksit, S B — *Indian Calendar* (London 1896)

Stein, Sir Aurel — *Kalhana's Rajatarangini*, Vols I, II (Westminster 1900)

Stewart, C — *The History of Bengal* (London 1813)

Storey, C A — *Persian Literature*, A Bio-bibliographical Survey

Thomas, E — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* (London 1871)

पारिभाषिक शब्दों की अनुक्रमणिका

अक्ता ३०, ३१, ३५, ४३, ४५, ४६, ६८, १०४, २५८, ३६३, ३९३, ४१६

अक्तादारी ३०

अतालीक ३२१, ४३७, ५०१, ५११

अदरार ३६, ४५, ४७०, ५०४

अमीर २, १०, १४, १५, २०, २२, २७, ३१, ३२, ३५, ४०, ४१, ४३, ४४, ५३, ५६, ६०, ६१, ६२, ६५-६७, ७२, ८०, ८२, ८४, ८७, ९२, ९७, १००-१०३, १०७-११४, ११६, ११८-१२३, १२६, १२७, १३०, १३१, १४५, १४९ १५८, १५९, १६०, १६२, १६५-१६७, १६९, १७५, १७९, १८१, १८४-१८८, १९३-१९५, १९८, २०४, २०६, २१४, २१५, २१७, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६, २३०, २३२, २३४, २३५, २४१, २४२, २४३, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २६३, २६५, २६७, २७०, २७७, २७९, २८२, २८८, २९१, २९७, २९९, ३००, ३०२, ३०४, ३१३, ३१५, ३२०, ३२३, ३२९, ३३३, ३३९, ३४१-३४२, ३४६, ३४७, ३५१, ३५४, ३५९, ३६२-३६६, ३७०, ३८२, ३८५, ३८८-३९४, ४०५-४०७, ४१३, ४१६, ४१८, ४२०, ४२६, ४३०, ४३६, ४३८, ४४६, ४४८, ४४९, ४५३, ४५७, ४७४, ४७५, ४७७, ४७८, ४८०, ४८१, ४८२, ४८४, ४८५, ४९०, ४९२, ४९७, ५०२, ५०३, ५१४, ५२१, ५२२, ५२४, ५२५, ५२७, ५२९, ५३३, ५३५, ५३६, ५३७-५३९, ५४१, ५४२, ५४३, ५४५, ५४८, ५४९, ५५०, ५५४, ५५५, ५५६, ५५९

अमीर कोही ३००

अमीर सामान ४३८

अमीर हाजिब ३३, २३१

अमीराने सदा ४३

अमीरुल उमरा ५२२

अमीरुल बहर ४१८, ४५३

अरादे ३६

अर्ज ३०७

अस्पे नौबती २७४

अहले कलम २९०, ३७६

आईना बन्दी ३५७

आखुरबक ६२, ६३

आखुरबके मैमना ३३

आखुरबके मैसरा ३३

आखुर बेग ६२

अ।खुरबेगी ३११

आफ़ताबगीर २५५

आफताबची ३७३, ३७४

आफताबा ३७३

आबदार ३७२

आबदारी ३७२

आमिल ११५, १२१, १६०, १६२, १६६, १७७, ३०९, ३७६, ३८७, ४३८, ४४३

आरिज ५३४, ५४०, ५४१

आरिजे ममालिक ३३, ६३, ६६, ९८, १००, १०२, १०३, ३०१

आरिजे लश्कर ७५, २११

आहूखाना १३९, १६४, १६५, १६६, ३८१, ४३६

इकलीम २६३

इजारा ९९

इनसाने कामिल ३२६
इनाम ३०, ३१, ३५, ३७, ३८, ४१, ४३, ४५, ६०, ६३, ७०, ७१, ७४, ७९, ८४, ८८, १०२, १२०, १२४, २०२, २०९, २१६, २१८, २३०, २३८, २८३, २९९, ३०८, ३२५, ३३३, ३५३, ४१९, ४३३, ४७८, ४८२, ४८३, ४८६, ५२६, ५४४, ५६६
इमलाक १३३, ३७५, ५२७
इमाम १३९, १६३, १६९, ३९५, ४६०, ४७५
इमामत १६३
इरतेदाद १७
इरशाद ४, १७
इशराक १६४
इस्तिखारा १८५, ३१०
इस्तीफा ९३, ३१६
इस्तीफाये ममालिक २१७, ३०५

उर्स ३७०
उलमाये जाहिर ३७१

एमारत ५४५
एहतिसाब १६३
ऐमा ३०२, ३१०, ३७६

कज़ा १६३
कफ्फारा ९५, १३५
करामेता ४९५
करावल ३६४
कलमये तौहीद ३१३
कलमा ३१३, ३१४, ३१५, ४५८
कल्लाल ५६५
कागजे तूसी २८६
काजी १३७, १३८, १५८, १६३, १८०, २७२, ३१५, ३२३, ३२६, ३२७, ३२८, ४५९, ४८२
कारखाना ३४९
कारगुजार १८६
कीमिया ३२७
कुब्बा ३९९, ४१५
कूरची ३७३
कूरबेगी ३११
कोतवाल २१, १००, १९८, २१७, ३७५, ३७७, ३९१, ५६५, ५६६

कौतवाली ३७५
कौकबा ९२

खज़ानये बयूतात ३०८
खजानेदार ३११
खतीब ८५, ९५, २६९, २७२, ४५८
खराज ३३, ४२, ४३, १७९, २०२, ३९६, ४०६, ४०७, ४१३, ४५०, ५५९
खराजी ३०३
खान ९२, १२०, २००, २५४, २५१, ३३४, ३८७, ३९०, ३९१
खार बन्दी १९१, १९४
खालसा ९८, ११६, ११८, १७६, २१२, २१६, २९०, ३०८
खासा १९४, २२४, २२६, २५२, २८७
खासा खेल १०७, २३२, ३२२, ४२७, ४८९, ४९२
खासा फील ३२२
खिर्का ९०, १५९, ३०४, ३३७, ३४६
खिलवत खाना २२९
खिलाफत १५७, ३०४
खुत्बा ४८६, ४९७, ५०५, ५१२, ५४१, ५४९
ख्वाजासरा ९१, २११, २३२, २९४, ३०१, ३४७, ३५८, ३९१, ५३८, ५४५, ५४६, ५५६

गाजी १५३, ३१९, ३५६
गुमाश्ता ७९, ९८, ११९, १२१, १७७, १९३, २१७, २२५, ३११, ३१६, ३६३, ५३३

चरी ३११

चत्र ६७, ८७, १०४, १४५, १७६, १८१, १८२, २०३, २४९, २८९, ४८५
चत्रदार ११०
चाऊश १६२
चिरागदारी ३८०
चुडवल २९
चौकी १९४

जमधर ११४, ३११
जमा ९३
जरीदा १८९
ज़र्ब ज़न ८५
जवाहरदार ३०८
जानदार २७३
जाबतये अरबाबुत्तहावील २७७
जामदार १९२, २७३
जामादार २७३, ३५७
जिन्दिका ७४, ७६
जिहाद ८, २८, ४२, १६१, ३३८, ४०६,४१२
जौशन १२७
जौहर १२५, १५४, २२४

तख्ते रवा १४७
तजरीद ३४६
तफरीद ३४६
तबकचियो ३४२
तबाचियो १३१, ४६०
तरीकत १३६, ४००
तलीया १६, ४३२
तलीयतुल अस्कर ३९८
तहवीलदार २७७
ताजीक १४
ताबूत २२५
तास ७१, २१७
तास घडियाला ७१
तुगरा १८१
तुरकदार २६६
तोबा ७, ११, ७७, १३२, १५२, ४३१
तोषकखाना १२३
तौकी २०७
तौहीद ३१३, ३१४

थाना २२८
थानेदार २२८, २३१, ३५१, ४९९
थानेदारी २७४ ३३८, ३४८, ३९४

दबीर ६०, ३०३
दरबखाना २९९
दरबानी १२१
दवातदार ७०
दस्तूरी १४३
दस्तूरे ममालिक ३५
दायरे ७६, ८१, १०२, २२९, ५०२
दारुल अमान ४, १४
दारुल इमारा ४२५
दारुल इन्शा १६
दारुल उलूम ४
दारुल एबादा १६४
दारुल कजा १६२, ४७०
दारुलशफा ७८, १५२
दारोगा ११७, ३४७, ४९८
दीवान ३४, १०८, ११२, १२३, १७२, १८४, ३००, ३०३, ४२२, ४८५, ५०२
दीवान अमीर कोही ३००
दीवानखाना २२९, ४८७, ५०६, ५२२, ५२४, ५२५, ५२६
दीवानी १२१
दीवाने अर्ज २११
दीवाने इन्शा ६०
दीवाने कुल ५२८
दीवार बन्द १८५
देहबिस्त ३६३
दौलतखाना १४, ६६, ९२, १०४, ११३, १९४, २०९

नक़ीब ६७, १३१, ४६०
नक्कारा १४७, २२७, २९३, ४१६ ४१८, ४३८, ४५१, ४५२, ४५४, ४८२, ५०३, ५२५, ५२८
नदीम १६३, ३३४, ३४३, ३७४, ४३९
नदीमे मजलिस १४०, १४१
नदीमी २७४
नवीसिन्दे १६, ५२८, ५२९
नायब ५३, ५४, ७१, १६६, ४३१
नायब वकीलदर १८६
नायब वज़ीर १८६, १८७
नायबुस्सल्तनत ४३०
नायबे अर्ज २२६
नायबे अर्जे ममालिक ३४
नायबे गैबत १४, २१४
नियाबत ३३, ६८, २५७
नौबत ५६१

पज हज़ारी ३३४
पर्दादारी ४६५, ४६९
पातुरबाजी ९३
पायक २००, २०६, ५३९
पायगाह ३६८
पुरे १८५
पेशदस्त ५०७
पेशदारी ४९९
प्यादगी १४४

फकीह ३०६, ४५४
फतवा १८०, २६२, ३४६, ४३१
फर्राश २६८, २९६, २९७, ४६०
फातेहा ३०६, ३८१
फीलखाना ३६८, ३९४, ४०९
फीलबानी १२१
फ़ुतूह १३२, २९०
फौजदार ३१६
फ़ौजदारी ३१३

बख्शी ७५, ८४
बयूतात १०४, ३०८
बरात १९७
बसीठ ४२
बारगाह ६३, १७६, २१६, ३५४
बारबक २९, ५५६
बिदअत ३२८, ३४९
बिलादे शर्क २४८
बैअत ३७, ६०, ६३, ७१, ७३, १६७, १८५, २६०, ३९०, ४५८, ४६१, ४६९, ४९७, ५२२, ५४९
बैतुलमाल ४५७

मसब ३९१
मआश १३६, ४५६
मगरिबी ३११
मन्जनीक ३६, १७८, २१६
मन्शूर ५०४
मलफूज १३७
मलिक ३१, ४३, ४५, ४६, ६६, १४०, १४१ २६६, ४५४, ४७४, ५५५
मवास २०२
महरम २९५, ४४६
महलदार ३८९
महाळ २०२, २६७, २७५, ३२५, ४६८, ४९९, ५१३
मिम्बर ९५, १३४, १८३, २६४, ४५८, ४८६
मीर आखुर ६२, १२३, ३७०, ४९२
मीर कोई ३००
मुअक्किल १०३, १७७, १८७, ३४०, ३५३
मुकद्दम ८, २०, २८, ३५, ३८, ४२, ४४, ४६, १३१, १७९, ३०४, ३५१, ४७९, ५०२
मुक्ता ४३, ७०, ११६, ११९, १३६, १३८, १८६, २३६, २५४, ३३०, ३५२, ३५३, ३५८, ३६२, ३६३
मुतवल्ली ४८५

मुतसद्दी ३०४
मुतसर्रिफे ममालिक ३४
मुफ्ती ८५, १८०, २५५, २६२, २६४, ३४६, ४३२
मुबाह ९६
मुरतिद ७, ५१७
मुलहिद ५५१
मुलूक ४३३
मुलूकखाना ३६४
मुशरिक १५२, १५६, १६९, ४०६, ४१७, ४२४, ४३५, ४४८, ४५०, ४५१
मुशरिफ २७७
मुशरिफी ९३
मुसाहिब ३३४
मुस्तौफिये ममालिक ९३, ३०५, ३१६
मुस्तौफी २६८, ३०५
मुस्तौफी गीरी ३०५
मुहतसिब ८५, १६३
मैमना २६५
मैसरा २६५

यसावल ५२६

रवायते ३२७
राफजी ३७४
राशखाना १२३

लाल बारगाह २३६

वकील १५६, १९०, १९६, २९२, ३२२, ३३०, ३३८, ३६५, ४२९, ४८५, ५११
वजीफा ४३, ३०२, ३७६, ५०४
वजीफेदार ३३
वजीर १४, २७, ३१, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४३, ४५-४७, ६१, ८२, ८४, ८७, ९४, १३८, १४४, १४६, १४९, १६२, १७९, १८४, १९५, २०२, २०३, २०६, २२९, २३२, २३४, २३९, २४३, २६५, २६७, २७१, २७३, २७४, २७७, २८८, २९७, २९९, ३०२, ३१४, ३१५, ३१६, ३२२, ३२९, ३४६, ३५०, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६६, ३६७, ३७०, ३८२, ३८५, ३९०, ३९५, ४०१, ४०९, ४१०, ४२०, ४२१, ४२२, ४२७, ४५५, ४६१, ४९९, ५११, ५१५, ५१६, ५१८, ५१९, ५२२, ५२४, ५२५, ५२८, ५४३, ५८८
वजीरी १४५
वजीरे आजम ३९०
वजीरे कुल ५२८
वजीरे दयार ४११
वजीरे ममालिक २२०, ३९१
वजीरे मुमलेकत ३७
वज़ू १३२, २८७, ३३४, ३३८, ३७०, ३७४, ४०२, ४५७, ४८३, ५०६
वाज़ ४२९
वाजिबुल अर्ज १४६
विजारत १३, ३५, ४५, ६१, ६४, ६५, ९९, १११, ११२, ११६, १४६, १६८, १८१, २११, २१७, २२७, २३२, ३०९, ३१५, ३४२, ३४६, ३५८, ३९०, ४०९, ४६६, ५०१, ५०५, ५२८, ५४५, ५४८, ५४९
विलायत ३, ८-१२, १६, १८-२४, २२, ३५, ४२, ५३, ५५, ५९, ६०, ६७, ७१, ७२, ७५, ७७, ८२, ८३, ८४, ८६, ८८, ८९, ९२, १०१, १०५, ११०, ११५, ११६, १२१, १२८, १३५, १३९, १४४, १५३, १५४, १६८, १७७, १७८, १७९, १८०, १८२, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३-१९५, १९७-२०७, २१३-२१६, २१८, २२५, २२६, २२८, २२९, २३३, २३४, २३८-२४०, २४३, २४४, २५५, २५६, २५८, २६५, २६६, २६९, २७०-२७४, २७६, २७७, २८०, २९०, २९२, २९३,

३०६-३०८, ३१६, ३२८, ३३१, ३३२, ३४८, ३५०, ३५३, ३६०, ३६४, ३६७, ३९६, ३९७, ४०५, ४२१, ४२२, ४४९, ४५४, ४६८, ४७५, ४७९, ४८३, ४८९ ४९६, ४९९, ५०५, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१६, ५१७, ५२१, ५२२, ५२४, ५२७, ५३५
शराबदारी २५३
शहनगी २८१
शहनये दीवान ३४
शहनये फील २१०, २९९, ५३५, ५४२
शहनये सियासत २१०
शहना २१० २१७, ५४१
शाख बन्दी २७१
शिक ३४
शिकदार ३६२
शुत्रसवार १८९, २७०, ३५३
सद्र ४३
सद्रुलकुज्जात ४०६
सयूरगाल ४९०
समा १३७, १६५
सरकार ३५८, ३८४
सरजानदार ३३,
सरजामदार ३३
सरतापाई खिलअत ३६४
सरसिलाहदार ३३
सरापर्दा ५९, १०४, १२३, १४२, २१९, २२२, २३६, २५४, ३१८, ३५४, ३८९, ३९०
सलामी २६८, २७२, ३१६
साबात १७८, २१६, २२३, २२४, २५६, २५८
साहेबे अर्ज ४२९
साहेबुल बरीद १६४
सिलाहखाना २१७
सिलाहदार २२, ६७, १३१, २६५, ३०८, ३६०, ४१२, ५३४, ५४०, ५४१
सिलाहदारे मैसरा २६५
सुलूक ३३६
हफ्तअन्दाजी ३७८
हवालादार २८३, ३५९
हवेली ११३, ३५७
हाकिम ८७
हाजिब २९, ९१, १३९, १५७, १५८, १६०, २७०, ३८२, ४५७, ४६१
हाजिबे दर ५२३
हिजाबत ४०६
हुज्जाज १३९

नामानुक्रमणिका

अकबर बादशाह ५१, १७५, ४३०, ४३१, ५११
अकबरी तन्के ३२२
अकर १०६
अकरा १०६
अकरी ४७१
अकली ४७२
अकशाफ ४१९
अकायदे नफसी ४६७
अकजियुल काजात मुशीरुलमुल्क १०२
अखयचन्द ३५५
अखलाके जलाली ४७१
अगासी ३३०
अजगर २२
अजदर खा २२२, २२३, ४२१
अजमेर ८२, ८४, ८५, १५३, १५५, १६६, १७९, २५७, ३३८, ४०७, ४५४
अजायब देव ३५५
अजाया १००, १०१
अजीजुलमुल्क २३२, ३३२, ४२८
अजीजुल्लाह खा ३४
अजोद १०१
अजोधन* ५, २७९
अजोधनी २१
अब्दुलमुल्क २०१, २०९, २१०, २११, २१३, २२३, २४८, २४९, ३०१, ३४६, ३९४, ४१०, ४१३
अब्दुलमुल्क कबीर ४०९
अब्दुलमुल्क काल़ू ४१२
अटौरा ४१
अतानवा ३२
अत्का ३८८
अदबन ५११
अदहम २९८
अदामेरा ३१८
अधम ग्राम ४८१
अनखूर १८६
अन्तूर १५४
अन्दाना ३२
अफगान खा २६२
अफजल खा ११०, १११, ११३, ११४, ११६
अफरासियाब १४९, १६७
अफीफुद्दीन अब्दुल्लाह बगाली ४५४
अबदाल बाकरी ५२९
अबयाली ३९८
अबी हामिद इस्माईल बिन इबराहीम ३९५
अबुन नस्र शम्सुद्दीन मुजफ्फर शाह ४३३
अबुल कादिर १६, १९
अबुल खैर १८८
अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन महमूद शाह १६७
अबुल हम्द मीर्ज़ा ४
अबू नसीर शाही १४३
अबू बक्र २५४
अब्दुर्रहमान दौलतशाही ४७४
अब्दुल, मलिक १७०
अब्दुल करीम एतमाद खा ४१२
अब्दुल कादिर ९८
अब्दुल फतह ४८१
अब्दुल बाकी ४८५
अब्दुल लतीफ ३३७
अब्दुल्लाह २९९
अब्दुल्लाह अलमामून १५७
अब्दुल्लाह बिन जुबैर १७०

अब्दुल्लाह मुहम्मद ४९, १४९, १७३
अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अलहाजुद्दबीर, ३९५
अब्बासी ख़लीफा ८९, १५७
अमरैली १५९
अमरोहा १४९
अमहर २०७
अमल ३७८
अमान सुल्तान बेचा ४८०
अमीन ख़ा १०४
अमीन शाह १४३, १४४
अमीनुलमुल्क ३०४, ३०५, ३०६
अमीर अमीन सजर ४३०
अमीर एहसन खा मेवाती ४५५
अमीर कबीर ४१९, ४४९
अमीर कबीर बहाउद्दीन उलुग खा ४२८
अमीर कबीर सैफुलमुल्क मिफ्ताह उलुगखानी ४३४
अमीर गोई ३००
अमीर तुगान फरहतुलमुल्क तुर्की ४१८
अमीर तैमूर, साहिब किरान, ३०, ३१, ९२, १६०, २६० ४३७, ४८२
अमीर मर्जान सुल्तानी ३९८
अमीर महमूद बर्की १८४, १९१
अमीर हुसेन ४३२, ४३३
अमीरजादा हरेवी ४
अमीराने सदा ४३
अमीरुलउमरा बकलरबेग कुतुबुद्दीन मुहम्मद खा अल्का ४३४
अमीरुस्सवाद किवामुलमुल्क ४४८
अमील ४१९
अम्बरून ३३८, ३३९
अम्मन ९८, १०४
अयाज २२७
अरगून समूह ४८५, ४९०, ४९१, ५०६
अरब १६७, २६४, ४३२, ४७१, ४९५
अरवास ११७
अरामूरा ४१८
अरैल २९
अर्जुन ५११
अल अमीन १५७
अलप खा ५२, २५८, २६०, २६१
अलप खा सजर १९३, २७३
अलिफ लैला १५७
अलवर का किला ४८०
अलाउद्दीन १६२, १६५, ३००, ३०८, ४७५, ४७७, ५३४, ५३९, ५६०
अलाउद्दीन बिन बहलोल ४५५
अलाउद्दीन बिन सोहराब ३३०
अलाउद्दीन महमूद १४९, ४१४
अलाउद्दीन सोहराब सुल्तानी ३९८
अलाउलमुल्क ६९, २०५, २९१
अलाउलमुल्क उलुग खा सोहराब ३९९, ४०२, ४१२, ४२८
अलिफ खा २२६, ३०८, ३३०, ३३५, ३३६, ३५२
अलिफ खा भूकाली ३३४, ३४२
अली खा ७, ८, १८, ७४, ७७, ८४, १००, १०२, १०४, १६६, १६९, ५२५
अली जामदार २७३
अली मुबारक ५४०
अली शेर १६७, ३९४
अली शेर बिन नसीरुद्दीन १४९
अली हामिद १९२
अलीका ४८८
अलीगढ १३
अलीमपुर २८१, ३४२
अलीशाह ५१६
अलीशाह बेगी ५२६
अली शेर ३०२, ४५७, ५११ ५१२, ५१३
अल्लामा खुर्रम खा ४५७
अल्हनपुर ७९, ९४, १३८
अवबारह ४८४
अवास ११६

अशजउलमुल्क ४५०
अशोक पुरबिया ४५०
अशोक मल ३६४
असद खा २४०, ३६१, ४४८
असद खा इस्माईल चरकस ४३४
असद खा लोदी ५, ६, १५
असदुलमुल्क ३६१, ३६२, ३७४, ४५८
असना अशअरी शीआ ५०३
असरारुन्नबी १३७
अससपुर ३४३, ३८२
असावल २५९, २६१, २६३
असावल कस्बा १७७, १८१, १८५
असील २७७
असूरिया द्वार ३४४
अस्त्र १२५, २३४, ३२७, ४४८
अहन ४८४
अहमद ३१, २०४, ४८१
अहमद बिन मुहम्मद १४९
अहमद आसू ५२२
अहमद खा ३४, ६८, ९०, १७६, ३६०, ३६१, ३८०, ५२४
अहमद खा बिन महमूद ४१९
अहमद तर्खान ४७६
अहमद ब्रहमनी २००, ३९७
अहमद भक्करी ३८९
अहमद सलाह ६९
अहमद शाह ५४, १९९, २०५, २०९, २१५, २८३, २८८, २९७, २९९, ३११, ३२१, ३४४, ३८५, ३९७, ५५५
अहमद शेर मलिक २६६
अहमदनगर १९६, २१३, २३५, २३९, २४०, २४१, २४२, २६३, २७६, ३०८, ३३२, ३४०, ३५२, ३६१, ३६३, ३६५, ३८६, ३८७, ४१२, ४४७, ४४८, ४५६
अहमदाबाद ७९, ८०, १८५, १८७, १८८, १८९, १९१, १९२, १९७, २००-२०८, २११-२१५, २१७, २१८-२२३, २२५, २३१, २३३, २३५, २३८, २३९, २४०, २४२, २४८, २४९, २६३-२६५, २६७, २६८, २७०, २७३, २७५, २७६, २७८, २८१, २८३, २८४, २९०, २९६, २९८, ३०४, ३०६, ३०७, ३१०, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१८, ३१९-३२३, ३२६, ३२८, ३२९, ३३३, ३३४, ३४२, ३४३-३४४, ३४६, ३५०, ३५२, ३५९, ३६०, ३६२-३६८, ३७५, ३७९, ३८२, ३९१, ३९५, ४०१, ४०६, ४१०, ४११, ४१२, ४१५, ४१८, ४२१, ४२२, ४२५, ४२६, ४२९, ४३१, ४३७, ४४३, ४४९, ४५२, ४५३, ४५४, ४५७, ४६०, ५००
अहमदाबाद द्वार २१०

आइम्मा ४२२
आईने अकबरी ३४६
आकासी वैमी ३३०
आगरा ११७, १२९
आज़म ३४४
आजम इब्ने पीरू ३९४
आजम खा २६६
आजम खा सुल्तानी ४०३
आजम ताज खा १५५
आजम हुमायूँ ४३, ६७, ६९, ७०, ७३, ७४ १०८, १२४, १५३, १६६, १७८, १७९, १८०, १८१, २२८, २२९, २३०
आजम हुमायूँ आदिल खा ३४८
आजम हुमायूँ खाने जहा ६८, ७५
आजम हुमायूँ जफर खा १७७, १७९, १८१, २५५
आजम हुमायूँ जुनैद खा २७, २९, ३०, ३५
आज़म हुमायूँ बिन महमूद खलजी १५६
आजम हुमायूँ मुबारक खा ४१, ४२, ४३, ४६
आजल ४१९
आटोमन सुल्तान सलीम प्रथम ४६७
आदम २६२, ३२३, ३२५
आदम सिलाहदार २१३

आदम खा ५२०, ५२१, ५२२, ५२६
आदम सुल्तान २६२
आदि तुर्क कालीन भारत ३००
आदिल खा ८६, ८७, १२६, १५७, १७८, १९०, २२७, २२९, २३७, २५६, ३३१, ३३२, ३३३, ३५९, ३६६, ४३९, ४४१, ४४२, ४४४
आदिल खा आसीरी ३५५, ५६७
आदिल खा गुजराती १२६
आदिल खा फारुकी २२६
आदिल शाह बुरहानपुरी ३८४
आपा खा ३४४
आफाकी २७७
आबा खा ३४४, ३४५
आबू का किला २०६, २०७, २९१, २९२, ४२७
आबू पर्वत २२५, ३२८, ४०७
आबूद ३३१
आमोदा किला १६१
आयत १६२, २९७, ३४५, ४२९
आराइश खा १२१, १४२, १४३
आरी ३११
आलम खा १०४, १०६, २२८, २३०, २४३, २४४, ३३१, ३३२, ३३३, ४१४, ४१५, ४५३, ५०२, ५०३
आलम खा खानजादा २२९
आलम खा फारुकी २१६, ३१३, ३३०
आले शागब ५११
आश नफर ५१३
आस्तनगर ५१३
आस्तानगर १०४, २३६
आशोक मल ३६४
आसफ़ खा २२८, २३८
आसा भील २६३
आसिफ १७६
आसिफ़ खा १२७, १३०, ३३२
आसीर ८३, ८६, १०७, १०९, ११०, १११, ११५, १२४, १५३, १५४, १५६, १५९, १६७, १७८, १८८, १८९, १९०, १९७, १९८, २१२, २२६, २२७, २२८, २३०, २५६, २६९, २७०, २७८, ३३०, ३३१, ३३२, ३४८, ३५९, ४२९, ४३९, ४४२, ४४४
आसीर पर्वत ३३२
आसूरिया द्वार २८२
आसोक पुरबिया ४५०
आहार ८६

इकबाल ४८९
इकवाल खा १४, १५, ८३, १०५, १०६, १०७, ११०, १११, ११२, ११३, १२६, १३०, १५३, १५५, १५८, १८१, २५७, २५९, २६०
इकबाल खा खलजी १५४
इकबाल मल्लू खा १७९
इख़्तियार खा ५, २२३
इख़्तियारुद्दुनिया वद्दीन कादिर शाह ३३
इख़्तियारुलमुल्क २३४
इख़्तियारुलमुल्क सुल्तानी ४११
इजतेहाद ३३७
इज़्ज़ुद्दीन यहया ५४०
इटावा ४, १३, २०, ३२, ३३
इतयबरी घाट २८८
इन्दर १८६
इफ्ता १६३
इफ्तेख़ार खा २८८
इफ्तेखारुलमुल्क १९५, १९९, २११, २२३, २७०, ३०१, ३४६, ३५१, ४०४, ४२२, ४३५, ४३६
इफ़्तेखारुलमुल्क तुगान खत्री ४०३
इबराहीम ५२८, ५६५
इबराहीम बिन जौहर २४७
इबराहीम अहमद ३३६
इबराहीम खा २४८, २६५, ३६०, ३८३, ३९४, ५३०

इबराहीम बाकरी ५२९
इबराहीम लोदी ५२९
इबराहीम शाह ४०
इमाम अबू यूसुफ १५८
इमाम अबू हनीफा १५८
इमाम जाफर सादिक ३१५
इमाम हुसेन १७०
इमाम हुसेन उलबगात्री ४७२
इरादत खा ३६०
इलहाद ७४, ७६
इलियास ३४१
इसहाक २८०, ३४१, ३४२, ३६६, ४५३
इस्फन्दयार ३६, ४२
इस्माईल खा ४३, ७२, १५०
इस्माईली ३१३
इस्माईली फिदाई ४३०
इस्लामाबाद ६७

ईदर ५४, ७९, १७७, १७९, १८७, १८९, १९०, १९५, १९६, १९७, २०२, २१३, २१७, २३३, २३५, २३६, २३८, २३९, २४२, २५६, २५८, २६५, २६६, २७६, २७८, २८०, ३४०, ३५०, ३५२, ३६०, ३६२, ३९६, ३९७, ४२५, ४३५, ४३७, ४४६
ईदर का किला १७९
ईदर का राँजा २३३, २३४
ईदर पर्वत १८७
ईदी जैना ५२५
ईदुलपुर १०६
ईरज ८
ईरान १४, ३१, ३६, ११५, १४९, २३१, २५१, ३४९, ४०३, ४३३, ४९९
ईर्छा ३०, ३१, ४०, ४१, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७
ईलमपुर ४००, ४०१
ईसनपुर ४२०
ईसा ९४, १३२
ईसा सालार २६६

उग्रसेन पुरबिया २४१, ३५५, ४४०
उच्छ ४८६, ४८७-४९०, ४९६, ४९९
उजम ४१९
उज्जैन ८, १८, ५७, ५९, ७०, ७१, १०१, १०६, ११३, ११७, १३०, १४०, १६५, २३७, २७१, २७४, ३५४, ४३९, ४४१
उडीसा ९, १०, १९, २०, २२
उतारिद ५१५
उत्तर प्रदेश ३
उथेरिया ३६०
उदय करण ३५५
उदय राज ३२
उमय्या खलीफा यजीद प्रथम ४९५
उमर अल मक्की अल आसिफी ४९, १४९, १७३
उमर खा ३९, ६६
उम्दतुलमुल्क ६०, ४०७
उलुग कुतलुगे आजम हुमायूँ जफर खा १७६
उलुग खा २१३, २२२, २२६, ४२४
उलुग खा सोहराब ४०४, ४२१, ४२९
उस्मान ४२६
उस्मान अहमद सरखीजी २६६
उस्मान खा ४३, ६१
उस्मानपुर ४२६

ऊजूद १०१
ऊदन ५२६

एकतारा वस्त्र १४३
एकदला ५५०, ५६१
एकासीवसी बन्दरगाह ४२७
एतमाद खा ४११
एतमादुलमुल्क २१४
एमादुलमुल्क ८, १९, ४६, ११८, ११९, १२५, १८५, २०६, २०७, २०९, २१०, २११, २१३, २२१, २२२, २३२, २३४, २४६, २४७, २४८, २४९, २६७, २७१, २९७,

३००, ३०९, ३१६, ३२१, ३६३, ३९१, ३९४, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१३, ४१६, ४२०, ४२१, ४२२, ४३९, ४४०, ४६१, ५०१
एमादुलमुल्क असस ३३१, ३४३
एमादुलमुल्क आसीरी २२८, ३३३
एमादुलमुल्क एलिचपुरी ३९३
एमादुलमुल्क खुशकदम ३८८, ३८९, ३९३, ४३९, ४४८, ४६०
एमादुलमुल्क बहा नेकबख्त ४३५
एमादुलमुल्क बारबक ५००, ५०१
एमादुलमुल्क शाबान सुल्तानी ४०७, ४०८, ४०९
एमादुलमुल्क सुल्तानी २४५
एमादुलमुल्क, हाजी ४१२
एरचा ८, ९, १८, १९, ७७, १०५
एरम उद्यान २१५
एराक २३२, ३२८ ३४७, ५१५
ऐरिज ३०, ३६, ३७, ३९, ४०, ४४, ४५, ७७
एलिचपुर ८७, ८९, ४१२
एहसन खा ३३१, ३३२

ऐनुलमुल्क २६९, ३५०, ३६२, ४३५, ४४८
ऐनुलमुल्क फौलादी ४३०, ४३५
ऐसन सुल्तानी ४११

ओछा ३७८
ओझड़ी ख्वार १४७
ओना कस्बा ३१४
ओबँस करनी ५०५

औफी ३९८
औबारा ग्राम ४६९
औहद खा ७८

अगुलिया ३११

ककरिया हौज़ ४५२
कज कस्बा ३८४
कधार ३४६, ४३२, ४६६, ४६७, ४७१, ४८३, ४८५ ५१२, ५१३
कस ५३६, ५४३
कच्छ २१७, २६१, ३३८, ४६९, ४८३
कछवाहा ९२, १६०
कडा २९
कतवास १५३
कतीताना ४१६
कत्था २०२
कदर खा ४४, २३०, २८८, ४०३, ४२२, ५३३, ५३४, ५४०, ५४१
कदी खा ८२
कनारा ४२७
कनार ३२, ३३, ३६
कनेसा २०२
कनेसाय २०२
कन्थ कोट २६१
कन्था कोट १८३
कन्था देव २९२
कन्दविया १०१
कन्दासे १०९
कन्दुहा १०१, ११५, ११६, ११८
कन्दोया १०१
कन्द्रफदल २५०
कन्नौज ४, १५, २१, २२, ४३, १८१, २५८, २६०, २६१
कपडवज २८८, २८९, ३०६, ३५७, ३६६
कपरपज २०५
कपरवज ८०, २१५
कपूर चन्द ९१
कबीर ४१
कबीर एमादुद्दीन खुरासानी १६७
कबीरपज ३९४, ४०३, ४०४
कबीरबज २८८, २८९, ३०६, ३५७, ३६६, ३९४, ३९८, ३९९
कबीर सैयिद अताउल्लाह किवामुलमुल्क ४०५

काथा २६६
काथी २६६
काथू १७७
कादरी २६२
कादिर शाह १६, १८, १९, ३७, ४०, ४१
कादिर खा ७, ९, १०, ३३, ५८
काधू १७७
कानमूआ गोरी ४३२
कान्तूर पर्वत १९२
काबा १७७, २६४, ३५७, ३७१
काबिल, सुल्तान ३८५
काबुल १४९, ३६३, ४८५
कामदेव ३५५
कामरुन ४४६
कामरूप ५६१
कामीत ३२
काम्मू १७७
कायथा १९३
कारतीहा १९३
कारासियो २११
कारी नहर ४११
कारन्थ ३३०
कारेथ कस्बा २७३, ३३०
कारून १५५
कालज १४९
कालना २३०
कालपी ६-९, १६-१९, २५, ३१, ३३, ५८, ७२, ७४, ७६, ७७, ७८, १५०, १५२
कालपुर ३४४, ५१७
कालिंजर २९
कालिज खलजी १६७
कालिया कोट ४४९
कालियादा ५५, १०६, १४०, १९०, २७१
कालू सुल्तानी ४११
कावेल ११५, २२८, २३०
कासिम ४९५
किजिलबाश ११५, ३४८
किताबुल अदब १७०
किबला ४५८
किमराज ५१३, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३
किरअत १६३
किरनार २६७
किरमा ५२३
किरमारी ४२२
किवाम खा ६७
किवाम खा सारग ४३९
किवामुलमुल्क २२० २२४, २३४, २८२, २९०, २९१, ३०१, ३०४, ३६०, ३६५, ३८१, ४१९, ४२०, ४२७, ४२८, ४५१, ४५२
किवामुलमुल्क सारग ३४३, ३५१, ३७०, ३७९, ३८०, ४३५, ४४४
किवामुलमुल्क सुल्तानी २३६, २३७
किश्तवार ५१३
किश्तास्प ३६
किश्ना ४३८
किश्ना राजपूत ३५३
किसरा ४०३
कीज ४९९
कीजा २२०
कीबक अरगून ४७४, ४७६, ४७७
कीरेज २११, २१५
कीरीश २०५
कीलवारा ८५, ८६, १९७, २०२
कुअर पाल २५०
कुअर याल २५०
कुदली २९
कुवर २५०
कुवर, माल ५६१
कुतलुग खा ४३५
कुतुब १९८, ३०६, ३५०
कुतुब आलम २०८, ४०१
कुतुब आलम सैयिद बुरहानुद्दीन २४५, ४०२, ४६०
कुतुब खा २१, ७३
कुतुब खां अफगान २२

कुतुब खा लोदी २०, २२, १६१
कुतुब शाह ८२
कुतुबुद्दीन बिन मुहम्मद शाह १५२
कुतुबुद्दीन अली १५३
कुतुबुद्दीन अहमद शाह ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०४, ४०६, ४०८
कुतुबुद्दीनपुर ५२१, ५२२
कुतुबुल अकताब ३८५, ३८६
कुतुबुल अकताब बुरहानुलहक वश्शरा वद्दीन ३०४
कुतुबुल अकताब यूसूफ बिन महमूद ४७
कुतुबुल आरेफीन शेख गॅज बख्श २५९
कुतुबुल आलम ३७१
कुतुबुलमुल्क ३४७
कुन्धल ३०, ४१, ४२
कुन्दुज १४९
कुम्पल नीर ४२५
कुम्पल हीर ४०५, ४०६, ४०७, ४०८
कुम्भकोट २६१
कुम्भल नीर ७५, १५८
कुम्भल मीर ८६, १५८ २०७, २०८
कुम्भल मीर का किला २०६
कुम्भा ७५, ७६, ८१, ८२, ८३
कुरहीन ४५०
कुरान ९४, ९५, १३३, १३४, १३७, १४१, १६३, २२०, २२२, २४५, २८१, २८३, २९७, ३०६, ३१०, ३३८, ३४५, ३५४, ३६८, ३६९, ३७०, ३७२, ३७३, ३८२, ४०१, ४२९, ४५८, ४६०, ५४६, ५५६, ५६६, ५६७
कुर्रम खा ४५७
कुहना कोट १८३
कूत माचियान-ग्राम ४७३
कुम्फर नीर १५६
कूवा ४५३
कूश्के जहानुमा १००, १०५, १०९, ११६
कूश्के फ़ीरोजाबाद २५३
केद ५१६
केदूहा १०१
केन्दह ५१६
केहराम कस्बा २६५
कैकुबाद १४९
कैदोहा १०१
कैरा २८८
कैसर खा ७०, १२३, २२१, २२२, २३२, २३४, २३६, २४०, २४६, ३४८, ३५३, ३६३, ३८९, ४२०, ४२१, ४३५, ४३८, ४४८, ४६१
कोफर नीर १५८
कोट करोर ४८५
कोट करोर का किला ४९८
कोट जहापनाह ३२३
कोटसन, राजा ५१९
कोटा ७९
कोतवाल रुक्नुद्दीन २११
कोथरा २०४, ३९७
कोदरा ३१६
कोदी नदी ५६५, ५६६
कोधरा २२०, २३३, २३४, २८१, ४१६, ४४४
कोपी २३४
कोब नन्द ५१९
कोबी ३५०
कोल ३, १३
कोलकन्दा १९८
कोवैंथ ४६
कोसा लखन ५६१
कोहपाया १५०, १६०
कौकन ४५२
कौराई ४८८
कृष्णा ४३८
कृष्ण देवरा २९१, २९२

खडवा १५०
खदवत ३१, ४०
खचवारा १०६
खजवारा १०६
खज़ानतुल जलाली ४७

खजुआ ३९, ४०
खत्तू कस्बा २८०, ३९५
खदला ८८
खमसे १४२
खम्बायत १७६, १७७, १८४, १९८, २१९, २२१, २२५, ३२०, ३२९, ४२७
खम्बाया ४२०, ४२८
खय्यात ४२८
खरकून १११
खरखी ३६४
खरजी ३६४
खरजी घाट ३६४
खरल कस्बा ३५३
खरला ५६, ५८, ८८, १५०
खरादी ३७८
खरूकून १११
खरेला १६०
खलज १४९
खलजपुर ८३
खलजीपुर २४२
खलाबदन ५१९
खलीजपुर १५४, १५८
खलीफा १५७, ३२८, ३८१, ४२६, ४५८, ४९५
खलीफा यजीद १७०
खलीफा मुस्तनजद बिल्लाह यूसुफ इब्न मुहम्मद अब्बासी १५७
खलीफाबाद ८८
खलील खा ३४४, ३५७, ३६९, ३७०, ३८०
खवास खा १५८
खा साहेब १२०
खातून सुल्तान २९६
खादूनी १५५
खानकाह २९८
खानदेश ३०९, ३४९
खानपुर ८०, २८८
खानवाह ४७४
खानसर वर हौज़ २६१, ३९९
खाने आजम ४५
खाने आजम निजाम खा ३१
खाने आजम निसार खा ५३
खाने आजम महमूद खा २७०
खाने आजम मिर्जा अजीज कोका ३२८
खाने खाना ३४०, ३९७
खाने जहा ३९, ५९, ६६, १५२, १९८, २०४, २१६, २८८, २२८, ३१६, ३३३, ३७५, ५४६, ५४७, ५५७
खाने जहा मुनीर सुल्तानी ४०३
खाने जहा सुल्तानी १९७
खाने मुअज्जम १७६
खारी नदी २११, ३०७
खिगार ४७७, ४९२
खिज्र ३२५, ४३५, ५३६, ४४०,
खिज्र अयूब ३६
खिज्र खा ५, ६, १०, १६, ५२, ५८, १५१, २६०, ३६१, ४८५
खिज्र भट्टी ४४६
खिज्राबाद २९
खिताब खा ३४
खीचवारा १०६
खुदावन्द खा १८३, २२०, २२२, २२३, २३२, २३५, २४३, २४४, २४५, २४७, २४८, २६१, २८१, ३०३, ३१५, ३२१, ३४४, ३४६, ३५५, ३६७, ३९१, ४००, ४०१, ४१९, ४२१, ४६१
खुदावन्द खा अलीम ३४२
खुदावन्द खा मसनदे आली ३९०
खुदायेगाने कबीर १८३, १८४, १८५
खुदायगाने करीम २०४
खुदायगाने मगफूर २०३
खुदायगाने शहीद २५९
खुदायगाने हलीम २३१
खुरासान १५७, १५९, २६३, ३०२, ३११, ३२४, ३२८, ३४६, ३४७, ४३२, ४६७, ४९९, ५१५, ५१८ ,५१९ .

खुरासान खा ३४९
खुर्रम खा ३६८, ३९३, ३९४
खुशकदम ३९०
खुशाब ४८१
खुशामद ४२८
खुसरो २७२
खूदन खा ११३
खूनी बुर्ज ४७९
खूबागढ २६८
खेम धरोल ३६४, ३६६, ३६८
खेदपुर २९४
खेलदारो ७०
खोदरा ४३४
खोरा २८, २९, ४६
खोशाब ४९८
खोखा २२१
खौर बहर ४१६
ख्वाजये जहा ३, १०७, २३२, ३०२, ३२९, ३४७, ४११, ४२७, ४२८
ख्वाजये जहा तबाशी खलजी १६७, १६८, ४४३
ख्वाजये जहा तुर्क २१२
ख्वाजये जहा मलिक शह तुर्क ८७
ख्वाजा अब्दुल कादिर ५१८
ख्वाजा कमालुद्दीन अस्तराबादी १६०
ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी २७९
ख्वाजा खा १०९
ख्वाजा जमालुद्दीन अस्तराबादी ९१
ख्वाजा नसरुल्लाह ६०
ख्वाजा नसरुल्लाह दैरम्बानी ६५
ख्वाजा निज़ामी १४२
ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद ४९, १७३, १७५, ४६३, ४६५, ४९३, ४९५, ५०९, ५११, ५३३
ख्वाजा नेमतुल्लाह ८४, १५५
ख्वाजा बाकी बेग ४६६
ख्वाजा महमूद ३२९
ख्वाजा महमूद गीलानी ८७, २२५
ख्वाजा मुईनुद्दीन ३३८
ख्वाजा मुईनुद्दीन हसन मिजजी १७९, २२४
ख्वाजा मुजाहिद खा ३४
ख्वाजा मुहम्मद ४२८
ख्वाजा मुहम्मद हुसामुलमुल्क २९९
ख्वाजा लगर खा ५०७
ख्वाजा शम्सुद्दीन मुहम्मद हाफिज ३०३
ख्वाजा शेख सईद १४१
ख्वाजा सरवर ख्वाजये जहा ५२
ख्वाजा सुहेल ख्वाजासरा ९८, ९९, १००, १०१, १०३, १०४, १०५
ख्वाजा हाफिज ३०३
ख्वाजा हुसेन नागौरी १३७
ख्वारज्म १५९

गगदास २१७, ३१५
गगा नदी ४, ५, १४, १५, २२,
गगू ३५८
गज बख्श २८०
गजाबे ४७४
गजनी १७, ४९५, ५१३
गजनी खा ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ७३, ८०, ८२ १९०, १९१, २०२
गजाधर ८४
गनगाव १००
गयास शाह ९८, १२१
गयासुद्दीन १४९, १५३, १५४, १५५, २१२, ३५१
गयासुद्दीन खलजी ४२२, ४२८, ४३६, ४४५
गयासुद्दीन तुगलुक बिन फतह खा २५३
गयासुद्दीन मुहम्मद शाह १६२, १६४, १६५
गयासुद्दीन शाह ५४३
गरासिया २७४, ३३९
गरोहे जयूश ९३
गरोहे मगूला ९३
गर्शास्प ५११
गहारा नदी ४८९

गुश्तास्प ३६
गाजी सैयिद खा ४९७
गाजी खा ८६, ९१, १००, २२८, २२९, ३३३, ३५५, ३६१, ३६३, ४२१, ४४८
गालिबजग २८७, २८८, २८९, ४०२
गिरनार ३११, ३१३, ३१४, ३२०,
गिरनार का किला ३०६, ३०९, ३१०, ३१४
गीलान ५१९
गुगदास १५२
गुजरात ४, ५१-५५, ५७, ६५, ७२, ७९, ८०-८३, ११५, ११८, १२३-१२५, १२७-१३०, १४३, १४४, १४६, १४७, १४९, १५०, १५२, १५३, २५६, १५७, १६५-१६७, १६९, १७३, १७५, १७६, १७८, १८०, १८२, १८३, १८४, १८७, १८९, १९१, १९४, १९५, १९९, २०१, २०२, २०४, २०५, २०७, २०९, २१३, २१४, २१५, २२५, २३०, २३३, २३५, २३६, २३७, २३९, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २५०, २५२, २५३, २५५, २५६-२६०, २२६, २६७, २६९, २७०, २७५, २७६, २७९, २८१, २८२, २८३-२८७, २९०, २९६, २९८, ३०२-३०४, ३०७-३११, ३१४, ३१५, ३२२, ३२३, ३२५, ३२६, ३२८, ३२९, ३३०, ३३३-३३४, ३४०, ३४२, ३४४, ३४६, ३४९, ३५३, ३५५, ३५६, ३५९, ३६२, ३६५, ३६९, ३७०, ३७४, ३३५, ३७६, ३८१, ३८२, ३८३, ३८५, ३८७, ३८७, ३८८, ३९०, ३९२, ४००, ४०६, ४२०, ४३०, ४३४, ४३७, ४४३, ४५२, ४५३, ४५५, ४६१, ४६६, ४६७, ४७२, ४७७, ४७८, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ५००, ५६१, ५६६, ५६७
गुम्बदे कला ३३४
गुलबर्गा १९७, २००
गुलशने इबराहीमी ५३१, ५४०
गुलिस्ता १४२
गैरत खा २७०, २७१
गोडवाना ६८, ११९, २१२, ३०७
गौंड ९०
गोदवारा ८९, ४१२
गोआ ४५३
गोधरह कस्बा ३५०, ३५४
गोना ३८४
गोपी ३५०
गोमती ५६५
गौड ५४९, ५५४, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१
गौस ३०६
गौहर ४२१
ग्वालियर १०, २३, ३२, ४२, ४४, ५७, ५८, ७२, ७३, ९१, १६१, ५१९
ग्वालियर का किला १०
ग्वालियोर ३२

चगेज़ खा १४९, १५९, ३०३, ३४१
चदावल ८९
चकवारा २५७
चतरी ३७८
चनाब नदी ५०४
चन्दूकह ४७१
चन्दूका ४८१
चन्देरी ८, १८, १९, ३९, ४४, ६८, ६९, ७०, ७२ ७७, ७८, ८०, ९४, १०३, १०५, १०७, १०८, ११३, ११६, ११८, ११९, १२०, १३८ १४१, १५०, १५२, १६१, १६८, २३४ २८९, ३५१, ३५८, ४०४, ४३५, ४४५
चन्द्र ५११
चपूनी ३०१
चम्पा बाई ३७९
चम्पानीर ५४, ७९, ९७, ११५, १२३, १३०, १५२, १६५, १६८, १८९, १९३, २००, २०४, २१७, २१९, २२२-२४, २२५, २२७, २३५, २३८, २३९, २४२-४५, २४७, २६७, २६९, २७१-७३, २८०, २८७, २९८, ३०२,

३१५, ३२०-३२४, ३८२, ३८७, ३९०, ३९७, ४०६, ४१५, ४१९, ४२०, ४२५, ४२६, ४३३, ४३५, ४३७, ४३८, ४४२, ४४९, ४५०, ४५२, ४५४, ४५७, ४५९, ४६१
चम्पारन ९, ८९
चाद बिन इस्माईल २९९
चाद खा १२८, १३०, २४८ ३८३, ३८४,, ३९४
चादकह ४७४
चादिया ४८८
चादीपुर ५६०
चादू कस्बा ४७८
चादूर ४३४
चाचका ग्राम ४७३
चाचकान ४८३
चारवा १८९
चित्तौड २९, ७४-७६, ७९, ८३, १०७, १२७, १४५, १५४, १५९, २०८, २४०, २४१, २४३, २४४, २४६, २४८, २६६, २७३, २९२, ३५२, ३५८, ३५९, ३६०, ३६३, ३६७, ३८६, ३८७, ३९४, ४२५, ४३७, ४३९, ४४४, ४४८, ४४९, ४५७, ५६७
चित्तौड का किला १२६
चियूल ४२५, ४३२
चिश्ती सिलसिला १७९
चीता खा १५५
चीतोर १०७, २७३
चीन २६४
चीनियों ३४१
चुनौत कस्बा ४९८
चोलीमीर २७३
चौरासी ४३
चौल २२७, ३३१

छत्रसाल २६७, २६९
छोटा उदयपुर ३८८
छोर २२४
जगत द्वारका ४१७
जगत बन्दरगाह ३१७, ३१८, ३१९, ४१७, ४१८
जगदह ३५
जजार खा ११९
जत ४८, ४८८
जतमल ५४३, ५४४
जथरा ३१, ३६, ४३, ४४
जद्दा बन्दरगाह ४५९
जनकूर १९२
जनाबुलमुल्क अयाज तुर्की ४४९
जनेर ४५३
जनोत कस्बा ४९९
जन्नताबाद १६६
जन्नतुल मुअल्ला ४८१
जफर ६२, ३१५
जफर खा ५१, १७६, १७८, १८०, १८१, १८२, १९९, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९
जफर खा बिन वजीहुलमुल्क २५०
जफर खा बिन शाह फीरोज २५४
जफराबाद ५४२
जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह ४९, १७३
जबरदस्त खा १०३
जमशेद ५११, ५२६
जमालपुर १६०, ३४५
जमालपुर द्वार ४२९
जमालुद्दुनिया वद्दीन मुहम्मद उलुग खा १६०
जम्मू ५२२, ५२४, ५२५, ५२७
जयोल बन्दरगाह २२७
जर बख्श २०३, २८०
जरबफ्त ३४०, ३५३
जरही ४७४
जरीना १७८
जलवार १७९, २५७
जलाब ३९८
जलाल खा २१, ३४, ३६, ३९, १५३, २८३
जलाल खा अजोधी २१
जलाल खा बुखारी ८२

जलाल खोखर २६०
जलालपुर ९१
जसरथ खोखर ५१६
जसारन १९
जहदद २५६
जहरन्द २५६
जहागश्त शेख जलाल २५२
जहागीर बद्र। ५२८
जहागीर बाकरी ५२४, ५२५, ५२८
जहा पनाह ३१५
ज़हीर ४३७
ज़हीरुद्दीन ४३७
जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह ३६६, ३६७
जहीरुलमुल्क ८७, २३६
जाधन ३५
जाऊश खा १०९, ११०, १११
जागीर खा ३९
जाजनगर ३, ५५, ५६, ८८, १९३, १९५, २७३, २७४, २७५, ५३४, ५३५, ५४१, ५४२
जातिया ५९
जादू ५०६
जानपुर २८८
जानपुर बाकानेर २८४, २९७
जानी बेग ८१
जाफर ३६, ४३, ४५
जाफर दाऊद ३७, ४४
ज़ाबतये अरबाबुत्तहावील २७७
जाम इबराहीम ४९९
जाम इस्कन्दर ४६५
जाम खूबा २९३
जाम जानवा २९५
जाम जीवन दहर ४२७
जाम जूना २९३, २९५
जाम तुगलुक़ ४६५, ४६९
जाम नन्दा ४७०, ४७४, ४९९
जाम फतह खा ४६५, ४६८
जाम फीरोज २९५, ४६७, ४७२, ४७३, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४८१, ४८३
जाम बायजीद ४९९, ५०१, ५०२, ५०४
जाम मुबारक ४६९
जाम गयदना ४७०
जाम सजर ४६५, ४६६, ४६९, ४७०, ४७२
जाम सलाहुद्दीन ४७३, ४७६, ४७७
जामए सिकन्दर शाही ३९१
जामा मस्जिद ८५, ९५, १३४, १७८, १८०, १९२, १९३, १९७, २२४, ३९९
जायत ३७२
जारा माची ४९१
जारी जहा ४७७
जालना ५९, १९९
जालौर २२२, ४२१
जितौर २९
जियाउलमुल्क २८८, ३२८
जिवन्द २६२
जीत सिह ३५५
जीतपुर २५५
जीतलपुर ४५३
जीतापुर १५४
जीवन जल्लाद ३७५
जीवन दास २६२, २६३
जीवन दास खत्री १८४
जीवन प्यागदास खत्री १८४
जुनैद खा २९, ३३, ३४, ३५, ३७, ३८, ४०, ४१, ४३, ४५, ४६, ४७, ७७
जुब्बा ३२७
जुलूस खा १०९
जूना २९३
जूनागढ १८८, २१४, २१५, २१६, २२०, २२५, २५६, २६८, २९८, ३०९, ३१०, ३११, ३१३, ३१४, ३१७, ३१९, ३२०, ३२१, ३२८, ४१३, ४१५, ४१६, ४१९, ४२५, ४३२, ४४९, ४५२
जूनाघढ २६८

जेवल २२७
जैन खा ३१, ३४
जैन बद्र ५२२, ५२४
जैन हरब ५१८
जैनकह तर्खानी ४७४
जैनपुर ५२३
जैनुल आबदीन बुखारी ४८८
जोध सूदा ४७६
जोधपुर १३८
जौनपुर ३, ४, ६, ७, १०–२४, ३५–३७, ५७, ५८, १५२, १६१, १८३, २४४, २४८, २६१, ३४५, ३६७, ३९३, ४५५, ४५६, ४५७, ४६१, ५५०, ५५२, ५५३, ५६१-६३

झकत ३१७
झज्जू मुहम्मद २०९
झझार खा ११९
झायन १५५
झालावर ५४, १९७, १९८, २४३, २५७, २६६, २६९, ३३८, ३६६
झैन १५५

टाको ३८०
टानक २८६

तगरबरदी किंबताश ४७४
तगाई ४४४
तज्किरतुल औलिया ४७
तनहुल बक़्काल ३१३, ३१४
तपती ३३१
तफ़सीर ३६८
तबकात ३९९
तबकाते अकबरी ४९, २६१, ३००, ४६३, ४६५, ५०९, ५११, ५३१, ५३३, ५४१, ५५९
तबकाते नासिरी ४७, ३००
तबता ७३
तबना ७३
तबल ४६
तम्बोल किला १८९, २००, २०१
तरकीरा कस्बा ४२८
तरपुलिया ४१०
तली का मार्ग ३१०
तल्हती ग्राम ४७४, ४७६, ४७७
तवाची बाशी हब्शी ५४७
तवाची बाशी ५५६, ५५७
तवाली ७९
ताक २५०, २५३
ताईदुलमुल्क ३४७
ताज खा ६६, ६८, ७०, ७५, ८२, ८४, ८५, ९०, १२४, १५१, १६०, २०७, २२३, २४१, २४७, २४८, २४९, ३१६, ४१६, ४२२, ४२९, ४४१, ४६१
ताज खा आजम १६२
ताज खा बिन सालार ३४५
ताज खा किवामुलमुल्क १२३
ताज खा तरयानी ३४३, ३९०
ताज खा दन्दूका २४८
ताज खा नरपाली ४६१
ताजपोशों का समूह ३४८
ताजुद्दीन २०१
ताजुल मआसिर ४७
तातह ३८४
तातार खा ५, १५, १६, ४६, १००, १७६, १७९, १८१, २५०, २५७, २५८, २५९, ४९६, ५२४, ५२५, ५२६
तातार खा बिन ज़फर खा २५४
तातारों १५९
ताप्ती नदी ८१, १५४, २२७, ३३१
तारापुर १९३, २७४
तारापुर द्वार ५७, ६९
तारीखे अहमदशाही २८१
तारीखे फिरिश्ता ३००, ५३१, ५४०
तारीखे फीरोजशाही ४७, ३००
तारीखे बहमनी २०१

तारीखे बहादुरशाही २६१, २८३, २८४, २९६, ३१४, ३१६, ३५२, ३५४, ३६३, ३६४
तारीखे महमूदशाही २५७, २५८, २५९, ३१८
तारीखे मासूमी ४६३, ४६८
तारीखे मुबारकशाही १३
तारीखे मुहम्मदी २५, ४७
तारीखे शमए जलाली ३२८
तारीखे सिन्ध ४६३, ४६८
तालनीर २०१
तिब्बत ५१३, ५२०
तिम्ब ५५३
तिरमिज ५६०
तिरहुट ३, १०, १३, २२
तिलग ४१२
तिलगाना ३०८
तुगलुक कालीन भारत ७१, ३००
तुगलुक खा २१४
तुगलुक शाह ४३, २५४
तुगलुकाबाद ७३, ४८३
तुगान ४५३
तुगान शाह खत्री २८८
तुगान सुल्तानी ४११
तुज्जार खां ११६
तुरम्बक दास ३९६
तुर्कमान २३३
तुर्कुल्लाह ३४
तूरान १४
तूलक खा १४९, १६७
तैती ३३१
तोक २९९
तोदा भीम १५५

थट्टा २५३, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७३, ४७५, ४७६, ४७७, ४८१, ४८२, ४८३, ४९२, ४९९
थट्टा नदी ४७३
थनेसर ३९८
थानीर २०१, २२८, २२९
थानीसर २७०, २७१
थानेश्वर २५१
थानेसुर २२०, ३०७
थालनीर १५४, १९०, २१२, ३३१, ३३२, ३३३, ४१२
थालनेर २७०, २७१

दखना ३१६
दखिन (दकिन) ५८, ८३, ८६, ८८, ८९, ११५, १५३, १५४, १५६, १५७, १५८, १६०, १८९, २११, २१२, २२५, २७८, ३०२, ३०७, ३०८, ३१७, ३२९, ३३०, ३३२, ३३८, ३४२, ३४९, ४२७, ४५२, ५००, ५४५, ५५०, ५६१
दनथूरा ३३३
दनीपुर ५१३
दन्दवाना ४५, १७९, २५७
दन्दाह ५७, १९४
दन्दुआना १७९
दन्दूका २४८
दबोही २१७
दभोई ३१५
दमन बन्दरगाह ४१२, ४३२
दयालपुर १०५
दरवेला ४८३
दरस्प २५०
दरा महायला ४१३
दरिमन २५०
दरिया १६१
दरिया खा ७३, १२९, २२९, ३३४, ३३५, ३३६, ३४३, ३८८, ४६६, ४६७, ४७२, ४७३, ४७४, ४७६, ४७७
दरिया खा अफगान २०
दरिया शाह गुजराती २२९
दरियापुर ३४३
दरूद ३७३

दसूर १५१, १५४, १५५, ४५०
दस्तूर खा ११२, ११३
दस्तूरे ३४
दह्यूद ३९६, ३९७, ४२२
दहर समूह ४८४
दहर बन्दा ४८७
दाऊद ३६, ४३, ४४, ४५, ४०८, ४०९, ५२५
दाऊद खा ८२, १०७, २०१
दाऊद जिब ३०, ३६
दाऊद शाह १७५
दाबरी १३
दाबुल बन्दरगाह २२५, ४२७, ४५३
दाभोल ३२९, ३३०
दारीजा ४७८, ४७९
दावरुलमुल्क २४९
दाहूद २८१
दिरहम ९५, ९६, ११९
दिलजू ५१२
दिलदार गाचा १४०, १४१
दिलवारा १७९
दिलशाद ४७१
दिलावर खा १८२, २३०, २६०, २८८
दिलावर खा गोरी ५१, ५२
दिलावर खा जगजू १०३
दिलावरा ११८, २३५, ३५१, ३५२, ४२६
दीनापुर ५२३
दीनार ११९, १७६, २८२
दीनार फुतूह २८१
दीप बन्दरगाह २२७
दीपालपुर २०, ५१, ११३, १९३
दीबालपुर २०, १२६, ४४१
दीलवारा ८५, ८६, १७९, २०२
दुकरसी ४२४
दुनगर २४०
दुनगरपुर ८६, २०२, २०३, २३९, २४१, २४२
दुनगरसी २२५, ३२३, ३५५, ३५६, ४२६
दुरवाजिया २८९
दुर्राज, मलिक ३२
दुर्रे ३२८
दुलहा २५०
दूँगरसेन ७२, ७३, ५१९
दूँगरपुर ३६४, ३६७, ४४९, ४५४, ४५६
दून २१३, २२७, ३३१
दूनीपुर ५१२
देरपाल ४२९
देव द्वीप ३४०
देव बन्दरगाह ३३१, ४५२
देव सतीर १५३
देवगीर (देवगिरि) १५४
देवला २३४, २३८, ३५४, ३५९, ४३५, ४३९, ४४४
देहर बाग १५३
देहरा १५१
देहली ३-६, १०-१५, २०, ३१, ५२, ७३, ९१, ९४, ११८ ११९, १३३, १४६, १४९, १६७, १६८, १७५, १७६, १७७, १८०-१८३, २०३, २२५, २३०, २४३, २४४, २४६, २४८, २५०, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, ३०१, ३११, ३५४, ३५९, ३६६, ३६७, ३८६, ३८७, ३९२, ४१३, ४२५, ४३५, ४३६, ४४४, ४४५, ४५३, ४५५, ४५६, ४६१, ४६८, ४८६, ४९५, ५३३, ५३५, ५४१, ५४२, ५४४
देहली द्वार १०२, १५७, १९३, ३५५
दैरावर ४८४
दोस्त मीर आखुर ४९२
दोहद २७३, ३२३, ३४८, ३५३
दोहनी ३६
दोहरा १४३, ३७४, ३७८
दौदाई ४८८
दौलत खा ३५, ३७, ३८, ४५, ४६, ७१, ३५५
दौलत खा लोदी ५०३
दौलत नाग ४५
दौलतशाही ४७४

दौलताबाद १७, ८२, १५४, १९८, १९९, २१२, २३२, ३०८, ३४७, ३९७
दौली १५१
द्वारिका २१८

धद्रूका (धधूका) ३२८, ३९३ ,३९४
धतीज २४०
धनकोत का किला ४९८
धनीगाव ३५४
धनतरा ३३३
धनूरा ३३३
धनोरा २२८
धमोनी १२०
धया ३७८
धरबन्धर २५०
धरमाल, किला ३३१
धर्मसिंह ३५०
धामूर १९२
धामोद २७३
धार ३०, ५२, ५५, ८२, १०१, ११६, ११८, १२४, १२६, १३०, १८२, १८३, १८५, २२७, २३०, २६९, २७३, ३५१, ३८०, ४३५, ४३६
धार का किला १८२
धार, पातुर ३८०
धारागढ २३४
धाहर १९२
धिरेन्धर २५०
धीज कस्बा २४०
धूर १८३
धोद ११८, १८३, २०४, २२४, २३४ २३६, ३२३, ३४८, ३५१, ३५३
धोद का हौज १३१
धोघ बन्दरगाह ३२०
धोर १८३, २३४
धोलका ३३४, ३४२
धौल २४१, ३३१
धौलपुर ५८
ध्वालका कस्बा ३४२

नईर खा ३९
नकदुलमुल्क ११०
नकाम किला ५२९
नगरकोट २५४ ५१३
नज्रबार २६९
नदियाद २६२
नदीसी ग्राम ३६५
नद्रबार ५४, १७८, १८९, १९७, २००, २०१, २११, २१२, २२७, २३०, २४६, २५६, २७०, ३०७, ३०८, ३३१, ३३२, ३३३, ३३८, ३९३, ३९७
नबती ८१
नबर ५२०
नबास २२८
नरबाद २६२
नरमीना ५६
नरयाद कस्बा २८२, २८४
नरवर ७२
नरसिह भानू ४६
नरीमान ३६
नर्बदा (नर्मदा) नदी ८६, १५६, २२७, २८४, ४३५
नलवर १४३
नवल किशोर प्रेस १३, ३०, ५४०
नवीसिन्दा १६, ५२८, ५२९
नसरपुर कस्बा ४६८, ४८२
नसीब शाह ५३४
नसीर २६९, २७०, २७१
नसीर बिन आदिल खा १८९, १९०
नसीर, अब्दुल ७४
नसीर खा ७, ८, ९, १७, १८, १९, ५२, १९८, २४७, २४८, २७८, ३८३, ३८४, ३९०, ३९४
नसीर खाने जहा ७, ९

नसीर शादी ३४७
नसीर शाह ७८
नसीर अब्दुल कादिर ७७
नसीर सैफ २६५
नसीरुद्दीन १३६, १३७, १३९, १४९, १६५, १६७, १६८
नसीरुद्दीन अब्दुद्दोला १९१
नसीरुद्दीन मुहम्मद शाह २५८
नहरवाला १७६, १८३, १८९, २३०, २४९, २५५, २५६, २६२, २६६, २६७, २६९, ३५०, ३९४, ३९८, ३९९, ४२१, ४२५, ४३०, ४३५, ४३७, ४४८
नहरिया १२६
नहव १७, ३१
नहसू २५०
नाकत २५०
नाकाम परगना ५२२, ५२७
नागौर ८५, १३६, १३७, १७६, १८२, १८७, २०१, २०६, २०७, २५४, २६०, २६६, २७०, २८०, २९३, ३९५, ४०५, ४०६, ४०७, ४२५
नाजुक लहर ३९१, ३९२,
नादौत ५४, १२१, १८७, १८९, १९०, १९१, २००, २५९, २७०, २७१
नानक २५०, २५३
नानक, कौम ३८०
नान्देर २७८
नाल २४१
नालधुया ३७८
नालचा ५५, ७४, ८८, ९०, ९७, १०२, १०४, १०५, १०७, १०९, ११३, ११४, ११६, १३०, १३८, १६५, २२४, २३५, ३२२, ३५२, ४२२, ४३६
नालाम ५२२
नासिर खा ५५४
नासिर खा गुलाम ५३७, ५५५
नासिर शाह ९२, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०९, १११, १२१, ५३७, ५४५
नासिरुद्दीन कादिर शाह १६५, १६६, १६७
नासिरुद्दीन खलजी ४२९, ४३३, ४३५
नासिरुद्दीन गुलाम ५४४
नासिरुद्दीन महमूद शाह १३, ४३
नासिरुद्दुनिया वद्दीन अबुल फतह अहमद शाह १८३
निजाम २६५
निजाम खा ३४, ३६, ४३, ४४, ६४, ११२, ३२३, ३५९, ३६०
निजाम खा बहमनी ३४०
निजाम मुफर्रेह १७५, २५४, २५५
निाम शाह ८८, २१२, ३०७, ३०८, ४१२
निजाम शाह बिन हुमायूं २११
निजाम शाह दकिनी ८८
निजामी गजवी १४२
निजामुद्दीन अहमद ५०२, ५४१, ५४९, ५५९
निजामुद्दीन जामनन्दा ४६६
निजामुद्दीन तेहीन ३४
निजामुद्दीन मुखतसुलमुल्क ४०४
निजामुलमुल्क ६६, ६७, ८८, १८६, २११ २२२, २३५, २७१, ३०१, ३२३, ३५१, ३५२, ४२५
निजामुलमुल्क ऐसन ४१९
निजामुलमुल्क तुर्क ८८
निजामुलमुल्क दखिनी २४७
निजामुलमुल्क बहरी २२८ २३०, ३३२
निजामुलमुल्क वजीर २६५
निजामुलमुल्क सुल्तानी ४३६, ४३७
नियामत १६३
निसबत राय ११०
निहकोर ३५३
नील नदी २६४
नीलाब ५२१
नुकरा ५५

नुसरत खा ३४, ६८, ६९, १११, ११२, १८२, १८३, २६०
नुसरत शाह ५६०, ५६२
नुसरताबाद ८८, १०९, २१४
नुसरतुलमुल्क ३४, २४७, ४४६
नुसरतुलमुल्क भीलम ४३७
नुसरतुलमुल्क मलिक लुत्फुल्लाह ३८
नूनावारा ३३०
नूरगाही ४७४
नूरुन्नबी १३७
नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी ३०२
नेकराज ५११
नेमतुल्लाह खा ३३
नोखन ३११
नौतकुल कव्वासा ४१७
नौरखा ३१६
नौबत ५६१
नौशहर ५२३
नौशहरा उद्यान ५२५
नौशेरवा ५४४

पजा ५२१
पजाब ३२, २५०, ४९८, ५०३, ५०४, ५१६, ५२४, ५२६
पड्डुवा ५३४, ५३५, ५४२, ५५०, ५६१
पटन ५३, १७७-१८०, १८३, १८५, १९८, २११, २३०, २३३, २३५, २४९, २६२, २६७, २६९, ३३३, ३४६, ३५०, ४२५, ४३०, ४३१
पटन देव २५६, ३१८, ३८७
पनियारगढ़ ४४
पयाग २९
परनही २६५
परन्दी का किला १५६
परपुर २०१
परहनतीज ४४८
परहान २१४
परहार ४१
परहारा ७८
परान्तीज ३६२
पहाड बाबा हाजी ११२
पाडवी ५११
पाइन्दा खा अफगान २४८, ४५७
पाक पटन २७९
पाण्डे वृज २३४
पातर परगना ४८५
पानीपत २५७, ३६७, ३९३, ४५६
पायन्दह मुहम्मद तर्खान ४८०
पायदह खा अफगान ३९३, ३९४
पाल ४२२
पालरी ३९८
पिथराय ४४०
पीर खा ८९
पीर खोखारी ४३५
पीर पजाल दर्रा ५२४
पीर मुहम्मद १७९
पुरगाव ११५
पुरबिया १२१, २३४, २३५, २३६, २३८
पुर्तगाल ३८९
पूंजा ९८, १९६, १९७
पेशरव खां ४३८
प्याग दास २६२
प्रताप २०
प्रयाग २९

फखरुलमुल्क ११९
फतह खा ३५, ४३, १२४, १६०, १८६, २४५, २४८, २६५, २८०, २९३, २९४, २९६, २९७, ३३३, ३५५, ३६२, ४४८, ४६०, ४९९, ५२३, ५२४, ५२६, ५२७, ५२८
फतह खा बुद्ध ३९०
फतह जग खा शिरवानी ११६
फ़तहपुर ३०१, ४७४, ४८४

फतह शाह ५२७, ५२९, ५३३, ५३७, ५३८, ५४५, ५४८, ५५५, ५५७
फतहाबाद ७७, ९१, १६१, ४१२
फतावाये इबराहीमशाही ४१७
फद्दन खा ८१
फनीर ५१४
फफूंद ३२
फरहतुलमुल्क २११, २१९, २३१, ३०१, ३१९, ४१९
फरहतुलमुल्क तुगान ४२४
फरीद शाह १०, २३, ४२५
फरीद सुल्तानी २७५
फरीदी २५०, २५५, २६५, २६६, २६७, २६८, २७०, २७२, २७३, २७५, २७६, २८३, २८४, २८६, २८८, २८९, २९१, २९२, २९३, २९७, २९९, ३००, ३०१, ३०४, ३०६, ३१०, ३१३, ३१६, ३१७, ३१९, ३२१, ३२२, ३२३, ३२५, ३२६, ३२९, ३३०-३३२, ३३४, ३३६, ३४१, ३४२, ३४६-३४८, ३५०-३५२, ३५५, ३५९-३६२, ३६४, ३६६, ३६७, ३७१, ३७२, ३७५, ३७९, ३८०, ३८८, ३९३, ३९४
फलवात ३८
फवातिहुल इकबाल व फवाएदुल इन्तेकाल १६०
फाजिलबेग कोकिलताश ४६६,
फातमा जहरा ४००
फिकह ३०६, ५०६
फिदन ८१
फ़िदन खां ८६, ९२
फिदाई ३१३, ३२९
फिदी खा ७३, ८०, ८२, ८५, ९२
फिरंगियों २२७, ३३१, ३४०, ४३२, ४३३, ४५२, ४५३
फ़िरंगी कुत्ते ३८६
फिरदौसी २८५
फिरिश्ता ३२४, ५२८, ५२९, ५५२, ५५८
फिलसा ११६
फीरोज अमीर ५४०
फीरोज खा २७, ३१, ३३, ३४, ३५, ३९, ४१, ४३, ४४, ४५, ५४, १३६, १८४-१८६, १८७, १८९, २०६, २०८, २२१, २५०, २५३, २६५, २९१, ४०५
फीरोज़ शाह ३, ५१, १७९, १८१, १८७, ५३८, ५४८, ५५७, ५५८
फीरोजपुर ३४
फीरोजाबाद ८८, २१२

बगाले १२-१३, २४, २३१, ५३६, ५३८, ५३९, ५४०-५४२, ५४४, ५४५, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५५, ५५७, ५६०, ५६१, ५६२
बथल ३१०
बथली ३१०
बकन गाव १००
बकलाना ९७, १५३, १६४, १९९, २००, ४२५, ४३८
बक्कर का किला ४६६, ४७६
बगती ४८५
बगदाद १५८, ४८५
बगपथ ४५७
बघारा द्वार ४३९
बचीतूरी ४२२
बजली ग्राम ४३१
बडली ४३१
बडौदा २३०
बतन १०१
बतवा ३८२
बतुवा ३४३, ३८४, ३८५, ३८७
बदन ३५४, ३५८, ४४१
बदनगर २४०
बदसर ४५०
बदी-उज़्-ज़मा मीर्ज़ा ४६७
बदीउल ब्यान १७
बद्र उला २६५, २६६

बनता १००
बनहरिया १९३
बनारस २३
बनारस किला १०, २३
बनारस नदी ७८, ८४
बनास २२८, ३३३
बन्द पिरौनी ११३
बन्दर जगत २१८, २१९
बन्दर दीव ४३२
बन्दर द्वीप १८०, २४२, २४८
बपास ३३२
बम्बई २५०, ३७४, ४६८
बम्बई गजेटियर २५०
बरसिह दास अहमदशाही १९२
बरगुद ४१२
बरन ५
बरनामा २०४
बरनामा हौज़ ३९८
बरनी ३००
बरपुर २०१
बरली स्थान ३४६
बरली ग्राम ४८३
बरशावर ५१३
बरहनी कस्बा ३६२, ३६३
बरहार ८, १९
बरहारा ८
बरार ८२, ८७, ८९, ४२५
बरावान समूह ४१३
बरीजा ४५३
बरूर ३०८
बरोदरा ८०, ११५, १८४, २१७, ४२२, ४२४
बरोदा (बरौदा) ११५, १८४, १८५, २०४, २१७, २२३, २३१, २८४, ३१५, ३१६, ३२२, ३३२, ३३३, ३३४, ३४६, ३४७, ३६९
बलख ३३६
बलाद ३६२
बवालपुर ३५९
बवाली ७९
बशावर ५१३
बशीर खा ९४
बसवास ११६
बसी ३३१
बसीन ३३०, ३३१
बहजत खा ११३, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०
बहता नदी ५२५, ५६१
बहमनी ८३, १५८
बहरा कस्बा ४९७, ४९८
बहराइच ३१३, ३३८
बहराज़ २८
बहराम खा २२३, ४२२, ५१९, ५२१, ५२३ ५२४, ५२५
बहराम गोर २५१
बहरारे ५१५
बहरासा १८६, ४४५
बहरुल मव्वाज ४, १७
बहलोल ४८८
बहलोल लोदी २१, ३०२,
बहलोली २९८
बहाउद्दीन ३०८, ३०९, ४०९, ४१६
बहाउलमुल्क ३९, २१३, ४१३
बहादुर ४२८, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४६१
बहादुर खा ७८, २३५, ३३३, ३५४, ३५५, ३६६, ३८०, ३८६, ३८७, ३९३, ३९४, ४६६
बहादुर गीलानी २२५, २२६, ३२८, ३३०, ४२७
बहादुर शाह २४६
बहादुरपुर २७२
बहार ११२, ४४९
वहिश्तपुर १०८, १०९, ११३
बाकल ५२९
बाकानेर खानपुर २८४, २८७

बागरा १५१
बाघरू २६७
बासला ३६४, ३८७
बासवाला २४१, ४४९
बासवारा ३६४
बाकर (बागर) २०३, २१७, २३९, २८०, ३६०, ३६४, ३६७, ३९६, ४४९
बाकरा ३६४
बाका २३९
बागढ ३६०
बागबान परगना ४८५
बागबाना स्थान ४७४, ४७८
बागे नगीना २९०
बागे फिरदौस ३०३
बागे फीरोज १०९
बागे शाबान ३४२, ४०१,
बाज बहादुर अफगान ५१
बाजदार खा २६५
बाडी १३७
बातरक ३२१
बादमीनूर ७९
बादापुर १५५
बान्धू १८८
बाबनिया ४७०
बाबर बादशाह १२९, १६०, २४७, २४८, ३८७, ३९३, ४५५, ४५६, ४८२, ४८५, ४९२, ५०४, ५२९, ५६२
बाबा अहमद ४८४
बाबा गूर ३९८
बाबी चोचक ४७८
बाबा फरीद ८७
बारदू किला ४१२
बारबक शाह १२, २४, ४९९, ५३३, ५३४, ५३७, ५३८, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५५५
बारह गीत ३७८
बारावर ५२६
बारामूला ५१५, ५२१, ५२७
बारा सम्बूर ७९
बारा सीनूर २८८
बारा सीनूल १५२
बारा सुन्दर ७९, १००
बारी बाल २४६
बारूदर पर्वत ३०८
बाल कन्दा ८९
बालपुर १०३
बाला सीनूर २८८
बालापुर कस्बा ८७
बार्वद २१३
बोस्ता ३०३
बिठूरिया ५५१
बितर किला ३८
बिदरनगर ८७, ८८ ३०७, ४१२
बिरनगर ४४८
बिलाल वल्द एमादुलमुल्क ५०१
बिहार ३, १३, ५३५, ५४२, ५५२
बिहार खा ७८
ब्रिटिश म्युजियम २७, १३२, ५६३
बीजागढ १११
बीजानगर १८०, १९६, १९७, २३३, २३६, २३८, २७८, ३४२, ४३५, ४३७
बीजापुर ४२७, ४५३
बीदर २१२, २२६
बीबी, नदी ३७
बीबी आराम ३९९, ४००
बीबी मरियम २९५
बीबी मिरकी २९३, २९५
बीबी मुगली २९५, २९६, २९७
बीबी राजी २०, २१
बीबी रानी ३६६, ३८४, ३८५, ३९०, ४५३, ४६१
बीम करण ११९, १२६, २३८
बीर नगर ३९३
बीरपुर २६०

बीरम २८, २९, ३८, ४६
बीलवारा ८५, ८६
बीसानगर ३६२
बुदाओं ५१४
बुद्ध ४२१
बुधन ३५४, ३५८
बुधवल १८७
बुरहानपुर १०, १२४, १५४, १८८, १९७, १९८, २१२, २२७, २२८, २२९, २३०, २३७, २५६, २६९, ३३०, ३३१, २६२, ३४८, ३५९, ४२५, ४२९
बुरहानुद्दीन ४११
बुरहानुद्दीन इस्माईल ४०९
बुरहानुलमुल्क २११, ३०१, ४१०
बुसी बन्दरगाह ४३२
बूँदी का किला ८५
बेकरा ३०३
बेग अली मिर्जा ४७३
बेगडा २९८
बेगढ २९८
बेजलहत ग्राम ४२३
बेतवा नदी ३०
बेल नगर २४०, ३६२
बेली बढई ३२५
बेसल नगर २४०, ४४८
बैत किला २२०, ४१९
बैत द्वीप २१९
बैरम कल्ला ५२७
बोधी २१७
बोहरों ३७४
ब्याना ६, ५८, ७८, ७९, ८२, ९४, १५२, १६१
ब्याना किला ६, ११, २३
ब्यास नदी १५५, ४२९

भगरा ५४४
भंगरेच ३९४
भकूर २३६, ४३७, ४३८, ४४३
भक्कर ४६७, ४६८, ४७०, ४७३, ४७८-४८१, ४८३-८५, ४८८, ४९०, ४९२, ४९९, ५०४
भतन खा ४७४
भत्ती कहलवान ४९१
भदर २९७, २९९, ३००
भवर २९९
भनकोरह ३५४
भनबर ५२६
भरबन्धर २५०
भरौच ५४, १८२, १८४, १८५, २६३, २६५, २६७, २८३, ३९८
भवानीदास १०७
भागरा काथ ४१०
भावीर ४२९
भानकोरह ३५३
भानबीर ४१२
भानु ३५०
भान्दीर ३५, ३७, ४०, ४४, ४५, ७७, १०५, २७८
भान्दीर का किला ३८, ४२
भार बाबा हाजी ११४
भारमल ३५२, ४३७
भिकोरा ग्राम ३५४
भिनुगांव ३५
भिलवारा ८५
भिल्सा ६९, ७१, ९४, ११६, ११९, १२०, १२८
भीकन २६२
भीकन आदम खा अफगान १८७
भीकन खा शाहजादा १०, १२, २६२
भीखन खा १०
भीच ३३८
भीमकरण २३८, ३५४
भीम नदी ७४
भीम हौज ५९
भीलम २८
भूकत २५०

भेसरूर ३६, ३९
भैरवदास ११७
भोज, राजा ३३८

मगरीज कस्बा २७०
मगलोर ३१०
मदलगढ ७८, ८४, ८५, १७८
मदसौर ७५, ८३, १०४, २०८, २४१, २४२, २९२, ३४१, ३६४, ३६५
मदसौर का किला ३६४
मसूर १५७, १८२, २०३, २०८, २३१
मऊ ४८०
मकदेपुर के महल २९०
मकन ३२, ३६
मकबूल खा ८९, ९०, ९१
मकरान ४९९
मक्का २२१, ३७३, ३७४, ४५९, ४८१, ५१९, ५६३, ५६७
मखजन ५४७, ५५७
मखदूम ४२७
मखदूम ख्वाजा हुसेन नागौरी १३६
मखदूम जहाँनिया २८०, २८४, ३३८, ३८७, ४०१
मखदूम बलाल ४७६
मखदूमजादा शेख बहाउद्दीन ४८९, ४९२
मखदूमये जहा २०९, २९७
मखदूमी ३३५
मखसूस खा १११
मखसूसान ११०
मजदुद्दीन मुहम्मद मसनदे आली खुदावन्द खा लायजी ४३८
मजलिसे आली १७६, ५६०
मजलिसे आली निजाम खा ३०
मजलिसे करीम १११
मजलिसे ग्रामी फतह खा बहरू ४३९
मणिक चन्द ३५५
मतन खा ४७६
मता, मलिक १००
मतालये मन्तक ४६७
मतालेउल अनवार ४७
मत्था खा २८८
मथुरा २८
मदफा ४४९
मदीना ३७३, ३७४, ४५९, ५६३, ५६७
मनजरुल इन्सान फी तर्जुमए तारीखे इब्ने खलकान ४२६
मन्झू ४२१
मन्थापुर ३३४
मन्डू १९, २०
मन्दर १९०
मन्दल १८७, १८९
मन्दली राय ३५१-३५५, ३५८, ३६४, ३७५
मन्दू ६, ८, ११, २०, ४१, ५४, ५६, ५८, ६२-६४, ७०, ७२, ७३, ८०, ८१, ८७, ९०, ९४, ९७, १००, १०१, १०७, १०८, ११३-११५, १२६, १२७, १२९, १३२, १३३, १३५, १३६, १३८, १४३, १४४, १४६, १४७, १५२, १६७, १६८, १९२, १९३, २११, २२४, २२६, २३२, २३६, २३७, २३८, २४२, २५६, २६१, २७२, २७४, २७८, २८३, २८५, ३१६, ३२२, ३२३, ३३०, ३३१, ३४७-३४९, ३५१, ३५३, ३५५, ३५७, ३५८, ३५९, ३९१, ३९२, ३९६, ४०४, ४१४, ४३३, ४३४, ४३८, ४४३, ४४४, ४५०, ४५१, ५६७
मन्दू का किला ५२, ५३, ११६, ११८, १२३, १२४, १२५, १३०, १३६, १४२, १८३, १९१, ३५२, ३५३, ३५५, ३५७, ४४२, ५०१
मन्सूर खा ७०, ११६, ११८, ११९, ३४६
मन्सूरुलमुल्क ८३
मरदानपुर ४०
मरहौली ८२
माराको ३११
मलकये जहा १०, ११, २३, ८७

मुलाबारी ३२०
मलाद, स्थान ३६३
मलाहेदा ४९५
मलिक अदेल हब्शी ५४६, ५४७, ५४८, ५५६-५५८
मलिक अच्छी ५२८
मलिक अजीजुलमुल्क २२८
मलिक अतन १०१
मलिक अब्दुल मलिक २३३
मलिक अब्दुल्लाह २१०, ३००
मलिक अमीन कमाल ३४३
मलिक अयाज २२४, २४०, २४१-२४३, ३३१, ३३९-३४२, ३६३-३६६, ४४९, ४५०, ४५२, ४५३
मलिक अलाउद्दीन बिन सोहराब ८०, २०५, २८३
मलिक अली मुबारक ५३४
मलिक अलीम २८१
मलिक अल्लाहदिया ३७१
मलिक अशजउलमुल्क २४१
मलिक असदुल्मुल्क ३७२
मलिक अहमद १८७, २६२, २७०, ३२२, ५२३
मलिक अहमद अजीजुलमुल्क १८६, २६५
मलिक महमूद अयाज १९३
मलिक अहमद आसू ५२४
मलिक अहमद सरकन्जी १८७
मलिक अहमद सलाह ७१
मलिक आछा ६३, ६७, ६८
मलिक आलिम शाह २२८, ३३३
मलिक इख्तियारुलमुल्क १९३, १९८, २१४
मलिक इलियास ५४१
मलिक इसहाक ७०, ७१
मलिक ईलम ४०१
मलिक ईसा २९९, ३०१
मलिक ईसा सालार १८७
मलिक उम्मीद शाह ३०
मलिक उस्मान जलाल ६१, ६२
मलिक एमादुद्दीन बिन सोहराब २८८
मलिक एमादुलमुल्क २०९, २९९, ३५५
मलिक एमादुलमुल्क समरकन्दी १८८
मलिक ऐनुद्दीन २१०, २११
मलिक ऐनुलमुल्क २३३, २३४
मलिक कबीर सुल्तानी २०९
मलिक करनफुल १३
मलिक करीम एमादुलमुल्क १९१, १९३
मलिक करीम खुसरो २६२
मलिक काजी ५२९
मलिक कालवी अज्दुलमुल्क ३०८
मलिक कालू ७७, ७८, २१०, २९९, ३००
मलिक किवामुलमुल्क २२०, २२६, २४०, २४१, ३६४
मलिक कुतुब ३४६
मलिक कुतुबुद्दीन शैबानी ६७
मलिक कूपा जुन्नारदार २३४
मलिक कोबी जुन्नारदार ३७९, ३८०
मलिक खा १५
मलिक खालिस ४६
मलिक खिज्र ५३
मलिक खुशकदम २३२
मलिक खूबा २७४, २७५
मलिक गदाई २०६, २९१
मलिक गोपी जुन्नारदार ३५०, ३७९
मलिक गोबी ३७९
मलिक गोरी ७१
मलिक चमन ३५१, ४३६
मलिक जलाल १८२
मलिक जलालुद्दीन २१७, ३१६
मलिक जहीरुद्दीन ३६
मलिक जियाउद्दीन २७१
मलिक जोना १९४
मलिक ताज बेहता ५२३
मलिक ताजुद्दीन तुर्क २७, ३१, ३३, ३४, ४१, ४३, २०१, ५३५, ५४२
मलिक तुगलुक शाह फौलादी २४२

मलिक तुगान २११, ३०१, ३१९
मलिक दादन ४०४
मलिक दावरुलमुल्क ३३७, ३३८
मलिक दुर्राज ३२
मलिक दौलत नाग ३१
मलिक नज्जन ३६१
मलिक नसीर गाजा १७८
मलिक नसीरुद्दीन ६७, ६८
मलिक निजाम २८८
मलिक निजामुद्दीन नहन ३१
मलिक निजामुलमुल्क १८७, १९०, १९२, २२०, २६६
मलिक निजामुलमुल्क गोरी ८६
मलिक निजामुलमुल्क तुर्क ८७
मलिक नुसरतुलमुल्क २२८, २३५, २३८
मलिक पीर मुहम्मद ३८९
मलिक प्यारा १०२, ४२४, ४४४
मलिक फख्र खुर्रम ३१
मलिक फखरुद्दीन ५३३
मलिक फजलुल्लाह १००, १०२
मलिक फरहतुलमुल्क २२०, २२१
मलिक फरीद १९४, २७१
मलिक बद्रे अला १८५, १८६, १८७
मलिक बरखुरदार ६२, ६६
मलिक बहलोल लोदी ७३, ४८६, ४९६
मलिक बहाउद्दीन २११, ३०१
मलिक बहाउद्दीन इख्तियारुलमुल्क ३०९
मलिक बहाउद्दीन एमादुलमुल्क २२०
मलिक बहाउलमुल्क ३१६
मलिक बहार ३८९
मलिक बायजीद शेखा ६५
मलिक बिच्छू ४२४
मलिक बुद्ध २२२, २२३
मलिक बुर्हान ३४६
मलिक बुरहान अताउल्लाह २२९
मलिक बैरम बिन मसऊद ३८९
मलिक मता १००
मलिक मर्जान ५, २८३
मलिक मल्लू १०१
मलिक मसऊद ३९४
मलिक महता १००, १०१, १०४
मलिक महमूद ५, १५, ६०, ६३, ६७, २७०, २७१, ३५९, ४४४
मलिक महमूद तुर्क १९२
मलिक महमूद उम्दतुलमुल्क ६१, ६२
मलिक महमूद कुरेशी ३३७
मलिक महमूद कोतवाल ९९
मलिक महमूद प्यार ४४४
मलिक महमूद बर्की १९०, १९२, २००
मलिक माझी खुक्खर ४९८
मलिक मीर सुल्तानी २०२
मलिक मुकर्रब अहमद अयाज १९४, १९७, १९८, २७५
मलिक मुखिलस १९३
मलिक मुगीस ५३-५५, ६२-६४, २०२, २०९
मलिक मुजफ्फर इबराहीम ७२, ७८
मलिक मुजाहिदुलमुल्क २२९, २३०
मलिक मुन्ना २२०
मलिक मुनीर २०४, २७४, २८८
मलिक मुबारक ३४६
मलिक मुबारक करनफुल ३
मलिक मुबारक गाजी ६१
मलिक मुबारक मुईन ३४६
मलिक मुबारिजुलमुल्क २३८
मलिक मुगीरुलमुल्क लतीफ जकरिया ६५
मलिक मुहम्मद ३३३, ३३४, ३३६, ३३७
मलिक मुहम्मद इख्तियार ३३४, ३३७
मलिक मुहम्मद कोका ४८०
मलिक मुहम्मद बाखा २२८, २२९
मलिक मुहम्मद शाह अफगान ३४
मलिक यारी भट्ट ५२४, ५२६, ५२९
मलिक यूसुफ २४८, ३३३, ३९४
मलिक यूसुफ किवाम ६७
मलिक रशीदुलमुल्क २३२

मलिक राजा ३३२
मलिक रुक्नुद्दीन २५४
मलिक लतीफ ३८८
मलिक लादन ख़लजी २२८, २२९, ३३२, ३३३
मलिक लोधा ११८
मलिक वर्मा ५२४
मलिक शरफ एमादुलमुल्क ३४८
मलिक शरफुलमुल्क २१०, ३००
मलिक शह १८८, २६२, ३४७
मलिक शाबान एमादुलमुल्क २०९, २९१, २९३, ३००, ३०१
मलिक शाबान सुल्तानी २०६
मलिक शाह मलिक १८७
मलिक शुदनी ४०४
मलिक शेख़ ३१६, ३८७, ४१६
मलिक शेखन ३६१
मलिक शेख़ा २२६
मलिक शेर ७१
मलिक सआदत सुल्तानी २००, २०१
मलिक सईदुलमुल्क १८६, २२१
मलिक सज्जन ३६१
मलिक सधा २२३
मलिक सफदर खा सुल्तानी १९५
मलिक सरवर ३३७, २४८
मलिक साद बख़्त २११
मलिक सादुल्लाह ३०१
मलिक सारग ३०१, ३०४, ३४४
मलिक सारग किवामुलमुल्क ३१६, ३३०
मलिक सुदनी ४०४
मलिक सुधा ४२१
मलिक सुलेमान ७२
मलिक सैफ ख्वाजा १८६
मलिक सैफुद्दीन ५३५, ५४२
मलिक सौंधा ३८९
मलिक सोहराब ४९९
मलिक सोहराब दौदाई ४९९, ५०४
मलिक सोहराब सुल्तानी १९९
मलिक हमीदुद्दीन ३००
मलिक हलीम आज़म २८८
मलिक हसन ६२, १९७, १९८
मलिक हाजी २११, २९९, ३००
मलिक हाजी अली ७०
मलिक हाजी इलियास अलाउद्दीन ५३४
मलिक हाजी एमादुलमुल्क ३०८
मलिक हातिम २४०, ४४८
मलिक हाफिज़ २२८
मलिक हुसामुद्दीन १९२
मलिक हुसामुद्दीन ख़लजी १३९
मलिक हुसामुद्दीन मुगुल २२७, २२८, ३३२, ३३३
मलिक हुसामुद्दीन शहरयार २२८
मलिक हैबत खा १००, १०१
मलिकुत्तुज्जार ८७, १९८, १९९, ३२९, ४२८
मलिकुल उमरा इफ्तेखारुद्दीन ३००
मलिकुल उमरा दाऊद ९१, १६०
मलिकुल उमरा हाजी कमाल ६९, ७०
मलिकुल उलमा ३१
मलिकुल उलमा सद्रे जहा २०७
मलिकुल फ़ुज़ला १४१
मलिकुल हिदाया ३७१
मलिकुल हुकमा ७८, १४०-१४२
मलिकुश्शर्क ५४, ६१, ७७, ३४२, ३४७
मलिकुश्शर्क खाने जहा मुगीस १४९, १५१
मलिकुश्शर्क मकबूल ३६, ४२
मलिकुश्शर्क मलिक मुहम्मद ६९
मलिकुश्शर्क वलगर्ब मलिक बिहामद ३६, ४२, ४३, ४६
मली खा ३५५
मलूकपुर ४२५
मलेबारी ३२०
मल्लू इकबाल खा ३, ४, ५, २५७
मल्लू क़ादिर शाह ५१
मल्लू खा १०५, १८१
मल्हियाबाद १३१

मव का किला ४८७
मशहद ५६५
मशायख़ बिन काजी बरा ४२८
मसऊद ५१९, ५२९
मसऊद खा ६६
मसनदे आली १२९, ५६०
मसा ३७४
मस्ती खा २६३, २६६
महतर दास ११७
महता खा ४०४
महदवियो ४३०
महदी ३४५, ३४६, ४२९, ४३०,४३२
महदी मौऊद ४३१
महमदाबाद (मुहमदाबाद) २३८, २३९, ३४७, ३६३, ३८८
महमूद १५१, १५३, १५४, ४०१, ४०२, ४२७, ४२८, ४३७, ४४०, ४४२
महमूद बिन इबराहीम १५२
महमूद बिन मुगीस १४९
महमूद खलजी ७७, १४९, १५०-१५२, १५४-१५७, १५९, १६०, १६२, १६९, १७०, १७२, ३०२, ४४४, ४४५
महमूद खा ५५, ६०, ६१, ६३-६६, ७९, ११९, १६७, २०२, २०३, २५६, ४७४, ५०१
महमूद जौनपुरी १५२
महमूद बेकर २३१
महमूद बेगलार ४८८
महमूद मर्जान ५
महमूद मुगीस खलजी १४४, १४५
महमूद शाह १०, १५, १६, ३२, ३४, ३६, ४४, ४६, ६७, ७२, ७७, ७९, ८२, ८५, ९८, १०९, ११२, १२१, १५७, १६७, २९७, ३१७, ४३३, ५३४, ५४८, ५६०
महमूद समरकन्दी ४१७
महमूदपुर ३९८, ४२०, ४४५
महमूदशाही २५५
महमूदाबाद २७, २८, ३१, ८९, ९१, १६०, २४९, ४२५
महरा नदी ४८८
महरासा ५४, ५५, १८९, २२६, २३३, २४१, २४३, २६५, ४३५, ४५३
महसू २५०
महाचला दर्रा ३११, ३१२
महाबत खा ८७, १०४
महाभारत ५११, ५१९
महामा ३८
महाय ३३१
महायम द्वीप १९८, १९९, २०१, ३३१, ४३३
महायम बन्दरगाह २२७
महावल ५२९
महीर १९३
महीव ३८४
महेन्द्रपुर १९३
महेन्द्री नदी ७९, १८९, १९२, २८४, २८७, ३१६, ३२१, ३३२, ३४४, ३९८
महेसुर ५३
महोबा २८, ३१, ३६, ३७, ४०, ७७
महौली ८२
माडू ६, २०
माद्दू ६, २०, ३०८, ३६५, ३९४
माकल परगना ५२९
माचियान ४७८, ४७९
माची भट्ट ५२५
माची समूह ४८४
माता समूह ४७६
मातीला परगना ४८४
माधोपुर ३१८
मान सिंह ३५५
मानक २८६
मानक, वजीर ४८२
मानक चौक २६४, २७८, २८१, ३४४
मानकती १९२

मानकेनी ग्राम २७२
मानगनी २७२
माबत ४१६
मामक, पुस्तक ५१९
मारवाड ८१, २३६
मारान पर्वत ५१७
माल २४८
मालकन्दा ८९
मालपुर द्वार १०३
मालवा ६, ८, १४, १५, ४७, ५१-५३, ५५, ५६, ५८, ६० ६१, ६३, ६६, ७३, ७४, ७६, ८७, ९४, १०६, ११२, ११५, १२४, १२५-१२७, १२९, १६६, १८०, १८३, १९२-१९५, २०२, २०५, २११-२१३, २१५, २१७, २२७, २३२, २३३, २३६-२३८, २४४, २५८, २६०, २६१, २६७, २७१-२७४, २८३, २९३, ३०९, ३१२, ३४९, ३५०-३५२, ३५५, ३५६-३७४, ३७५, ३९२, ४००, ४०१, ४३६, ४३७, ४३८, ५००
मावराउन्नहर ५१५
मावेल ५२२
मामिक तुरमक ४२५
माह बेगम ४८५
माही २५४, ३२१, ३३२
मिया आखा ५३
मिया बहलोल खा ३०२
मिया मँझला १०४, ३२७
मिया शेख जियु १०१, ३७२
मिरआते सिकन्दरी १७३, ४२९
मिर्ज़ा इबराहीम ३४७, ३४८, ३४९
मिर्जा खान ९१
मिर्जा मुहम्मद मुगुल २५७
मिस्कीन तर्खान ४८७, ४९२
मिस्र ८८, ५१९
मिहर मुहम्मद फर्राश ४८४
मीयापुर ३३४
मीर अब्दुल फत्ताह ४८४
मीर अलहदाद ५०३
मीर अलीका अरगून ४७६, ४७७, ४८८
मीर कासिम कम्पक पोश ४८४
मीर कासिम कीबक ४७४
मीर खलीफा, दीवान बेगी ४८५
मीर चाकरान्द ५०३, ५०४
मीर जुन्नून ४७५
मीर फर्रुख ४८३, ४८८
मीर फाजिल ४७८, ४८०
मीर फाजिल कोकिलताश ४७४, ४७६, ४८४
मीर बख्श ५१२
मीर मुहम्मद कुली ४८४
मीर मुहम्मद सारबान ४८०, ४८८
मीर शम्स ५२७
मीर शिकार १०२
मीर सैयिद कासिम ४७७
मीर सैयिद शरीफ ४८२
मीरकू द्वार २८३
मीरान खा ५१५
मीरान शाह १६०
मीर शहदाद ५०३
मीर्ज़ा ईसा तर्खान ४७७, ४८८
मीर्ज़ा उमर शेख ४६७
मीर्ज़ा कामरान ४९२
मीर्ज़ा बाईकरा ४६७
मीर्ज़ा शाह ५०७
मीर्ज़ा शाह हसन ४७६-४७८, ४८०-४८५, ४८७-४९२, ५०५
मीर्ज़ा सुल्तान अबू सईद ९१
मुअज्जम ३४४
मुआफिक १०२
मुआफिक खा १०३
मुआलिमुत्तन्जील ३६८
मुईजुद्दीन मुहम्मद शाह ३९५
मुईजुद्दीन मुहम्मद साम ४२५
मुईन खा १२९
मुईनुद्दीन २६५

मुईनुद्दीन अफगान ४५७
मुईनुद्दीन फीरोज खा २६२, २६३, २६६, २६९
मुईनुलमुल्क २०१
मुकबिल, द्वारपाल २९४
मुक़्बिल खा १०४
मुकर्रब खा १५८
मुर्करम खा ३१, ३४
मुक्तदिर खा, बारबक ३३
मुखतस खा, १११, ११३, ११७, ११९
मुखलिस खा ३४६, ५३४, ५४०, ५४१
मुखलिसुलमुल्क १९०, १९८, २७०, २८८, ३०१, ४११
मुगीस बिन अली शेर १४९
मुगीस खा ३४
मुगीमुद्दीन मलिकुश्शर्क खाने जहा खलजी १६७, (४१४)
मुगुल २४४, ३६७, ४५५, ४५६, ४७७, ४८०, ४८३, ४८४, ४९२, ५२९, ५६१
मुगुलवारा मुहल्ला ४७४
मुजफ्फर ४६१
मुजफ्फर बिन महमूद ४३०
मुजफ्फर इबराहीम ७७
मुजफ्फर खा २९, ३४, ४५, ८०, ८१, ९४, १०३, १६६, २५२, २५३, ३८२, ४०४
मुजफ्फर खा बिन वजीहुलमुल्क २५२
मुजफ्फर शाह १२५, १८१, १८४, १८५, २०४, २०८, २०९, २४७, २८८, ३९४, ३९५, ३९७, ४०९, ४१४, ४२५, ४६०, ४६१, ५४८, ५५२
मुजफ्फर शाह गुजराती १५
मुजफ्फर शाह हब्शी ५३८, ५३९
मुजफ्फर सुल्तान ५४
मुजफ्फराबाद ३५४
मुजफ्फरी सिक्के ४५४
मुजाविर ८४, ४९६
मुजाहिद १०६
मुजाहिद खा १२१, २०६, २२२, २९१, ३६४, ४०५, ४२१, ४५०
मुजाहिदुलमुल्क गुजराती २२८, ३३३
मुतकाजी ३२६
मुनवर १५३
मुनव्वर खा ३४
मुनही खा ९८
मुनीर खा ९१
मुनीर खाने जहा ३९६
मुबश्शिर ५२६
मुबारक ३३१, ४६८
मुबारक खा ३४, ३९, ४०, ४१, ४६, ४७, ८६, १०१, १०३, १५३, १५४, २२७, २८३, ४६६, ४७५, ४७७
मुबारक शाह ४, ६, १०, १६, २३, ४८५, ४९६
मुबारक शाह शर्की ५
मुबारिज़ खा ८०, ३६०
मुबारिजुलमुल्क २३९, २४०, ३४७, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३
मुबारिजुलमुल्क हुसेन ४४६, ४४७, ४४८
मुर्गदर्रा पर्वत ४२८
मुरादाबाद १५
मुरादी तन्के २९२, ३४९
मुल्तान ५२, ८७, १७९, २५७, ४६६, ४६८, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९१, ४९२, ४९३, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५०५
मुल्तान का किला ५०५, ५०७
मुल्ला अय्यूब ३७८
मुल्ला अहमद २६३
मुल्ला जमील हाफिज ५१८
मुल्ला दरिया ५१८
मुल्लाई ३०२
मुस्तफा ४३२
मुस्तफा सागर हौज १३७
मुस्तफाबाद १५१, २१६, २१७, २१८, २१९, २२१, ३१५, ३२०, ३२१, ३२८, ४१५, ४१७, ४१८, ४२५

मुहमदाबाद २८, ३०, ३१, ३२, ३३, ३५, ३६, ३७, ३८, ४०, ४३, ४४, ४५, २२५, २२७, २३४, ३२३, ३२८, ३२९, ३३१, ३३३, ३४८, ३५०, ३५१, ३५२, ३५४, ३५९, ३६०, ३६५, ३६६, ३६७, ३८४, ३८७, ३९४, ४२५
मुहम्मद १५१, १६७, १६८, ४३३, ५२४
मुहम्मद बिन अहमद शाह ३७५
मुहम्मद काला ३४४
मुहम्मद कासिम ४९५
मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी फिरिश्ता १३
मुहम्मद खा १६, ३५, ३८, ४४, ४५, १५२, २५३, ५१५, ५१६, ५१९, ५२५
मुहम्मद खा सरजामदार ३३
मुहम्मद खुदावन्द खा ४६०
मुहम्मद जफर खा २५४
मुहम्मद ताज ४३१
मुहम्मद तुगलुक शाह ५३३
मुहम्मद दोहर ३९९
मुहम्मद बख्तियार ५३३
मुहम्मद बिहामद खानी २५, २७, ४७
मुहम्मद मिस्कीन तर्खान ४८३
मुहम्मद मीर्जा १६०
मुहम्मद मुहाफिज खा ३४७
मुहम्मद शाह १०, १३, २१, २३, १६७, १८१, १८३, १८७, २०९, २५३, २६२, ३१२, ३९५, ४००, ४०३, ४०९, ४२५, ४९६, ५२६
मुहम्मद शाह बिन तुगलुक शाह ४१३
मुहम्मद साहब ७, १७, १८, ४१, ४७, ७२, १०८, ११७, १३६, १३७, १४१, १६३, १७०, २३१, २३२, २६०, २६९, २७२, २८५, २८६, ३२४, ३२६, ३२७, ३६९, ३७१, ३७२, ४००, ४०१, ४०७, ४१०, ४५८, ४६०, ५०५, ५०६, ५२३
मुहम्मद हयात ३२९
मुहम्मद नगर ३९४
मुहम्मदपुर १९३
मुहाफिज खा १०९, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, १२१, १६७, २१७, २१९, २२१, २२३, २२५, २२८, २३२, ३१६, ३१९, ३२०, ३२८, ३५१, ४१२, ४१६, ४१९, ४२१, ४२२, ४२४
मुहाफिज खा ख्वाजासरा ११०
मुहाफिज खा जदीद १०४
मुहाफिजुलमल्क ४३६
मुहिब्बुलमुल्क ख्वाजासरा ३७५, ३८१
मूँगामय पर्वत २४६
मूंजा बक्काल ९८, ९९
मू क्षेत्र ४८४
मूला ३४३
मूलिया ४२४
मूसा खा ५३, ५४, १८३, २६१
मेखरीज ४०४
मेदनी राय ११३, ११४, ११६, ११७, १२२, १२३, १२४, १२६, १६९, १७०, २३६, २३७, २३८, ३४९, ३५१, ३५२, ३५४, ४४४, ४४६, ५६७
मेवाड ८५, १५६, २०१, २०७, २७२, ४०७, ४३७
मेवात ७, १८, ७३, ७६, ८२, २०१, २४४, ३६७, ३८७, ४५५, ४५६
मेसर कस्बा २७३
मेहतूनी १५३
मैनपुरी ३
मोअद्दब खा ११३
मोर आमली ३२१, ३२२, ३४८
मोरवी कस्बा ३३८
मोरान बली ४१९
मोरासा २६५, २७०, २७८, ३३०, ३५०, ३६४, ३६६, ३६७, ३९४
मोवज्जन खा ११३
मौहनगढ ३८८

मौहग ३७३
मौलाजादे ३३०
मौलाना अजीजुल्लाह ५०१, ५०४
मौलाना आलिम मुहम्मद थानेसुरी ३१
मौलाना इबराहीम ५०६
मौलाना एमाद ९०, १५९
मौलाना एमादुद्दीन अफजल खा १००
मौलाना एमादुद्दीन खुरासानी ११४
मौलाना काजी हुसामुद्दीन ४०६
मौलाना खिज्र २०९
मौलाना खिज्र सफीउलमुल्क २९९, ३०१
मौलाना ख्वाजा मुईनुद्दीन सिजजी ४५४
मौलाना जामी ३०२
मौलाना ताजुद्दीन सुयूती ३३३
मौलाना फजलुल्लाह हकीम ७८, २६२
मौलाना फतहुल्लाह ५०१, ५०४
मौलाना बहलोल ५०५
मौलाना बुरहानुद्दीन ४००, ४२६
मौलाना मझन शाह आलम ४००
मौलाना महमूद समरकन्दी ३१७, ३१८, ३१९
मौलाना मुईनुद्दीन गाजरूनी ३३३
मौलाना मुहम्मद ताज ३४६
मौलाना मुहम्मद समरकन्दी २१८, २१९
मौलाना मूसा १९२, २७३
मौलाना यहया २६४
मौलाना यूसुफ बिन अहमद ४२६
मौलाना शम्सुद्दीन ख्वाजगी नहवी ३१
मौलाना शिहाबुद्दीन अहमद ३९५
मौलाना शेख अब्दुल्लाह ४३६
मौलाना शेख कमाल ४३६
मौलाना शेख कासिम ३९९
मौलाना शेख नजमुद्दीन कुबरा १५९
मौलाना शेख हाजी रजब ४२१
मौलाना शेख हुसामुद्दीन ३९९
मौलाना सादुल्लाह लाहौरी ५०५, ५०६
मौलाना सैयिद हसन खिगसवार ३९९
मौलाना हुसाम ताजुलमिल्लत वद्दीन अहमद थानेश्वरी ३१
मौलाहन २५०

यगरशा खा ५४७
यगा खा ९८, ९९, १०१, १०४
यमन ३११
यमनी ३११
यमीन खा १०१
यमुना ३, ११, २३, ३२, ३६, ३९, ४०, ७७
यशावर ५१३, ५२६
यहियापुर ५१३
याकूब ३८८
याकूब खा ३९
यादगार बेग किजिलबाश २३१
यादगार मुगुल ११५
यान्ड्रमन २६७
यारी भट्ट ५२४
युगरिश खा ५५६
यूसुफ ४६१, ५४१
यूसुफ पैगम्बर ३८८
यूसुफ वजीर ४१९
यूसुफ बिन मुहम्मद अब्बासी ८८
यूसुफ बिन लुत्फुल्लाह ३८८
यूसुफ अल सक़्फी ४९५
यूसुफ खा ५२५
यूसुफ खा हिन्दौनी ७३, ८२
यूसुफ शाह ५३३, ५३७, ५४५, ५५५

रगपुर ग्राम २६५
रखपाल २२०
रखाल २२०
रजब ५३५
रजानस २९
रजीउलमुल्क १२९, ३५१
रज्मनामा ५११
रणथम्भोर ७८-७९, ८२-८३, १०१, ११३, १५३

रणथम्भोर का किला ११३, १३८
रणमल १८६, १८७, १९५, २७१
रणमल सूदह ४७६
रतनचन्द ३५५
रतनसेन १२९
रतल ४४३
रत्नागिरि ३२९
रन ३३८, ४१६
रन्द ४८५, ४८८
रन्हतोल २००
रबय ४६०
रबाब ३७८, ५१८
रशीद १५७, १५८, ४३१
रशीद खां ७३
रसतरी समूह ५१३
रसूल १७
रसूलाबाद २९४, २९६, ३१४, ३२२, ३२७, ३४३, ४२१
रहमू दहर ४८४
रहवान ३१८
रहमूला स्थान ३६४
रहाएन ४५२
रहकुरा स्थान ३५३
राजतरगिणी ५१९
राज बाई ३८४
राजा ऊदन ५११, ५१२
राजा ऊदन देव ५१२
राजा अलमादत ५१५
राजा उदय सिंह २४१
राजा कंस ५३३, ५४३, ५४४, ५५१-५५४
राजा करनाल १८८
राजा कान्हा १९७, १९८
राजा कोटसन ५१९
राजा गगदास ७९, २८०, २८७
राजा गणेश २०३
राजा गीता देवरा २०६
राजा जयसिह ३१५, ४१५
राजा पूंजा २०३, २६९, २७१, २७६, २७७, ३९६
राजा बरसिंह देव १५०
राजा भीम ३५०, ३५२, ३८८
राजा भीम बिन सागर ३१९
राजा भोज ५१, २३४, ३६०
राजा मदलीक २६७, ३०९
राजा मानिक देव ५२२
राजा रणमल १८७, २६५, २६६
राजा राना मूकल २०२
राजा राय बीर ७९
राजा राय भीम २१९, २३५
राजा राय मल १८६
राजा रावल पताई ३२२, ३२३
राजा सरदेव ५११
राजा हनश ५२६
राजा त्रम्बकदास २७२
राजावया १००
राजी आयशा ३८४
राजी बेग ४७४
राजी मुहम्मद बिन फरीद ३९४
राजी रुकय्या ३८४
राजौरी ५२४, ५२७, ५२८, ५२९
राठ ९, १९, ३१, ३६
राढ ५६०
राढा ५६०
राणा उदय सिंह ४२१
राणा किन्खार ४१३
राणा कुम्फा १५८
राणा कुम्भा १५१, १५४-१५६, १५८, १५९, २०३ २०७, २०८, २९२, २९३, ४०५, ४०६, ४०८
राणा पताई ४२१, ४२२, ४२४, ४२५
राणा महिपत ३८४
राणा मूकल २०६, २६६, ४०५
राणा सांगा १२४, १२६-१२९, २३५-२३९, २४१, २४२, २४४, ३४०, ३४१, ३५२,

३८६, ३९३, ४३७, ४३९, ४४२, ४४३, ४४६, ४५२
रानी कनाकर ३५३
रानी कन्या १२३
रानी कोका १५८
रानी खुर्शीद ९३, ९७-९९, १०१-१०३, १६५, २२७
रानी पुतली १४२, १४३
रानी रूप मजरी २९४, ३४४
रानी सिरानी ३४४
रानी हीराबाई ३४४
रानीर ४०६
रापरी ३, १३, २१, ४८६
राबरी २१
रामचन्द्र २५०
राम सगय द्वार ७३
राय अमिचन्द मनिक २९१
राय अमीनचन्द मानक २९१
राय अमियचन्द्र मणिक २९१
राय उदय सिह २२३, ४४९, ४५०, ४५४, ४५६
राय कदर खा १९८
राय कपूरचन्द १६१
राय कीपा ३९६
राय कुम्भा ७८
राय गगदास १५२, २०४, ३९६, ३९८, ४१५
राय गजाधर १५५
राय गिरी सिह १६१
रायचन्द पुरबिया १६८
राय चीता १५५, १५९
राय जगत ३५५
राय तास ३८, ४६
राय दुनगर ४२
राय दुन्गरसी १६१
राय धावजी ४२८
राय पिथौरा ११८, १२४, १२५, २३६, ३५४
राय फालन १५१
राय बाबू ८३
राय बीर ३९५
राय भान ४३५, ४३७
राय भानु १५३, १६४
राय भीम ४१७, ४१८, ४३४, ४३५
राय भोज १५१
राय मदलीक २१६
राय मल १०७, २३५, २३६, ४३७
राय मारा २५६
राय मेदिनी १७२, ४३७-४३९, ४४१
राय राया १२१, १७१, २२०, २२१, ४१९-२१
राय रावल ५१४
राय बिनाय २२३, २२५
राय शेर ७९
राय सतूदास १५३
राय सबीर ३८
राय सामत ५६
राय सिंघ ४३६
राय सेहरा ४८६, ४९६, ४९७
राय हर खोखा २३४
राय हरदास १५०
रायपुर १५१
रायसिह १३१, ३५२
रायसिंह का किला ४५०
रायसेन १२०
रायसेन का किला ३६५
राव मदलीक ३१२-३१६, ४१४, ४१५
रावत पीर ४४८
रावन समूह ५२६
रावल राय सिह ३६७
रास्ती खा १७५, २५४
राहमान ४८३
रिकाबदार २७४
रियाजुस्सलातीन ५३१, ५५१
रियू २७, १३२, ५६३
रिसालये अकीदये शिहाबिया १७
रिसालये मनाकिबे सादात १७
रीशे सिकन्दर शाही ३९१

रुक्न खा १८६, १८७, २६६
रुक्नुद्दीन ३००, ४१०
रुक्नुलमुल्क ३४७
रुनपाल ३६३
रुस्तम ३६, ४५, १७६, २०७, २५५, ३५९, ४१६
रुस्तम खा १०१
रुस्तम जाबुली ३६
रुस्तमे दास्तान ३६
रूप नारायण ५६१
रूपाल ३६३
रूम ३३१
रूमी २२७
रैन नदी ४७७
रोनाबर कस्बा ३३२

लगर खा ४९०, ४९१, ४९२, ५०७
लगाहों का समूह ४६८, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९३, ५००
लकिया कोट २४१
लक्की पर्वत ४७४, ४७६
लखनऊ १३
लखनौती ३, १३, ५३४, ५४०, ५४१, ५४२, ५४४, ५४९
लखबख्श ३९७
लखिम बाई ३८४
लतीफ २४८
लतीफ खा १८७, २३५, २३७, २४५, ३३३, ३८३, ३८८, ४६१
लतीफ जकरिया ६५
लतीफुलमुल्क सोध ३७३
लन्दन ३९५
लहरनी १५०
लहरी स्थान ४७९, ४८०, ४८५
लहूद ४२७
लक्ष्मी नगर ५१४
लक्ष्मी नारायण ५६१
लक्ष्मी बाई ३८४
लार ११२, ४८७
लाला १५९
लाहौर १४९, ५०३
लुत्फुल्लाह ३७१, ३९४
लुत्फुल्लाह मज्दुलमुल्क ३४
लुबानी ४१०
लुहानिया धूलौहर ४५३
लूना २३४
लूनावारा ३३०
लूली ३९२
लूली नाई ५२२
लूलू ग्राम ५२३
लूलूपुर ५२९
लोदी भट्ट ५१८
लोहर कोट ५१४, ५२०, ५२४, ५२५
लोहारी द्वार ४९१
लोहियाना १५८
लोहूर १४९
लौलपुर ५२९
लौहे महफूज २८६
लौन समूह ५१२

वजीहतुलमुल्क ५१, १७५, २५०, २५२, ४०५
वनथली ३१०
वत्तज १८५, १८६
वली ८९
वली खा ३४
वशिष्ठी नदी ३२९
वाकेआते मुश्ताकी ४९, ५६३
वादनगर ३६२, ३९३
वायसकर मीर्जा १६०
विकरमाजीत (विक्रमादित्य) ५१
विक्रमसी ३५५
विट्ठल ३१३, ३१४
वीर बघेला २८
वृन्दारा २७४

शंकर ५२८
शकर रैना ५२८, ५२९
शकर तलाज (तलाब) ४०१
शबेकदर ३६९
शम-ए-बुरहानी ४२६
शमशेर खा २५३
शमह देव ५११, ५२४
शम्स खा २०२, २५९, २६०, २९६, ४०२
शम्स खा बिन फीरोज ४०५
शम्स खा दन्दानी १२१, १२२, १२७, १८९, २६६, २६९, २९१, ४०५
शम्साबाद २०
शम्सुद्दीन ४०५, ४७१, ५०७, ५५१
शम्सुद्दीन मुजफ्फर शाह ४३४, ४३८, ४३९, ४४२, ४४५, ४५५, ४५६, ४५८
शरफ जहा २२६, ४२८
शरफुलमुल्क १५७, ४०९
शरह काफिया ४६७, ४८२
शरा २७, ४६, ८५, ९४, ९५, ९७, १३३, १४१, १४२, १६३, १८०, २५५, २६९, २७२, ३२०, ३२६, ३२७, ३७०, ४२२, ४२४, ४५५, ४७१, ५६६
शरीअत ७, १७, १८, ७४, ७७, ११७, १५२, १५५, ३२८, ४३०, ४५९, ५००
शरीफ ५४९
शरीफ मक्की ५४८
शहर यार २२८
शहरे नव ७२, ७३
शहरे मुकर्रम ४२५
शातह ३८४
शाद खा ३५४
शादियाबाद ६४, ६९, ७३, ७४, ७६, ७८, ७९, ८२, ८६, ८९, ९१, १०१, १०२, १०५ १०६, १०९, ११४, ११७, ११९, १२०, १३१, १४९, १५१, १५२, १५६, १६१, १६७
शादियाबाद का किला ११३, १२१, १२६
शादियाबाद मन्दू १९, २३
शादी खा ३४, ३५४, ३५५, ३५८, ५१६, ५५४
शादी खा पुरबिया १२५, ४४०
शाम १७०
शाल ४७३, ४७६
शाह अलाउद्दीन २४, ५५०
शाह आलम २४६, २७६, २८९, २९०, २९३-२९६, ३०४, ३१४, ३१५, ३२६- ३२८, ३४३, ३८८, ३९०, ३९३, ४०१, ४०२
शाह आलम बुखारी ३३७, ३३८, ३४३
शाह इबराहीम शाह शर्की १४, १६
शाह इस्माईल ३४२, ४७२
शाह इस्माईल सफवी ११५, २३१, २३२
शाह कासिम अनवार ५२७
शाह कुतुबुद्दीन शाह तैयिब ४८३
शाह फीरोज शाह १३
शाह बहरुल इस्लाम ५५१
शाह बुद्ध ३९२
शाह बेग ४६६, ४६७, ४७१, ४७४-४८२
शाह बेग अरगून ४७३
शाह भीकन २९३
शाह महमूद शाह शर्की १९-२२
शाह मीर ५११, ५१२
शाह मुबारक शाह शर्की १४, १५
शाह मुहम्मद फर्मुली १४३
शाह शम्सुद्दीन २१६, ४५२
शाह शम्सुद्दीन बुखारी ३१४
शाह शेख जियु बुखारी ३९२
शाह सिकन्दर ५४५
शाह हुसेन शाह शर्की २२-२४
शाहजादा अब्दुल कादिर ९२
शेखजादा अलाउद्दीन ९१
शाहजादा अहमद खा ६७, १२३, २२०, २२१
शाहजादा अहमद शाह ५३
शाहजादा इस्कन्दर खा २३४
शाहजादा उमर खा ७१
शाहजादा उस्मान खा ६२, ६३
शाहजादा खलील खा २२५, ३२८, ३३२-३३४

शाहजादा गजनी खा ५९, ६२
शाहजादा जफर खा १९८, १९९
शाहजादा जलाल खा २८२
शाहजादा तुगलुक खा ३११
शाहजादा दाऊद खा २०९
शाहजादा फतह खा २०१, २०९
शाहजादा फिदन खा ८५
शाहजादा फिदी खा ८१
शाहजादा बगाली ५४६
शाहजादा बहादुर खा २३७, २४५, २४६, ३६७
शाहजादा मसऊद खा ६५, ६९, ७२, २०२
शाहजादा महमूद शाह १०८
शाहजादा मुजफ्फर खा २३०
शाहजादा मुहम्मद खा ७०, १९८, २००, २०३
शाहजादा लतीफ खा १८८, २४६, २६६, २६७, ३५४, ३६८, ३९४
शाहजादा साहब खां ११३, ११४, ११६-११९
शाहजादा सिकन्दर खा २३५, २४४, २४५, ३५१, ३५४
शाहजादा हसन खा २१०
शाहनामा ५१९
शाहपुर ७, १७, ३१, ३२, ३९
शाही बेग ४६७
शाही बेग अरगून ४६६
शिकारपुर ११७
शिरजा खां ११३, १२०, १३०
शिवदास बक्काल ९९, १५३
शिहाबपुर ५१४
शिहाबाबाद ११६
शिहाबुद्दीन १०८, १५०, १६६, १६७, २०९, २९९, ४०९, ५५१
शिहाबुद्दीन जौनपुरी ५५३
शिर्जा खा २४६
शिर्जा खा ३८८
शिर्जा खा गिरवानी २४२
शीराज ६७, १४२, ३०३, ४७१
शुजा खां ५१, १००, १०१, ३९२
शुजाअत खा ९७–१०३
शुजाउलमुल्क ३६१, ३६४, ४४७
शुदनी २८९
शेख अजीजुल्लाह ३०६, ३३४
शेख अनवर ५५३, ५५४
शेख अब्दुल अजीज १३६, १३७
शेख अब्दुल्लाह ४९७
शेख अब्दुल्लाह जगाल २३४, ३५१
शेख अली खतीब ३०४
शेख अहमद २६३, २७९
शेख अहमद कम्बोह १८५
शेख अहमद खत्तू २३१, २३२, २६३, २७६, २८१, ३०१, ३२०, ३५०, ३६९
शेख अहमद गजबख्श २६३
शेख इबराहीम ४८२, ४८८
शेख इस्माईल जमाली ४८८, ४९०-४९२
शेख औलिया १०१, १२०
शेख कबीर ३३४-३३६
शेख कमाल २८१, २८५, २८६, ३५१, ४०१
शेख कमालुद्दीन मौलवी ११६, २३४
शेख कासिम २६१
शेख खत्तू २८०
शेख चाद ३५२
शेख जलालुद्दीन कुरेशी ४९९ ५०४
शेख जमयल्दा ८, १९, ६६
शेख जाहिद ५५३, ५५४
शेख जियू २४५, २४६, ३९३, ४२९, ४६०
शेख जियु तमीम ३७२-३७४, ३८१-३८३, ३८६
शेख नूर कुतुब आलम ५५२, ५३९, ५६१
शेख नूरुद्दीन ९०
शेख फरीदुद्दीन गजशकर ८७, २७९
शेख बहाउद्दीन कुरेशी ५०५
शेख बहाउद्दीन ज़करिया ४८५, ४८६, ४९६, ४९७, ५००, ५०५
शेख बुरहानुद्दीन ४०१, ४०२
शेख मझन २८५, २८६

शेख मन्झू नूरुल्लाह १४१
शेख मलिक २१७, २६२, २६३
शेख मसलहउद्दीन सादी शीराजी १४२
शेख महमूद ४०६
शेख महमूद नोमान १३३, १३७
शेख मीरक ४८३
शेख मुईनुद्दीन अब्बास ५५१
शेख मुईनुद्दीन हसन सिजजी ८४
शेख मुहम्मद अवस अरब खा याफई ४३४
शेख मुहम्मद कासिम १८३
शेख मुहम्मद नोमान ९५
शेख मुहम्मद फर्मुली ९१
शेख यूसुफ कुरेशी ४८५, ४८६, ४९७, ४९८, ५००
शेख रजीउद्दीन १५९
शेख रहमतुल्लाह ३३४
शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी ४९, १३२, ५६३
शेख रुक्नुद्दीन कानेशकर २७९
शेख रूहुल्लाह ४८७
शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी ४८५
शेख शुजा बुखारी ४८९, ४९०
शेख शुजाउलमुल्क बुखारी ५०५-५०७
शेख सादी १४२, ३०३
शेख सादुद्दीन हमवी १५९
शेख सिराजुद्दीन ३०४, ३०६
शेख हबीब ९८
शेख हबीबुल्लाह ९९, १००, १०३, १०४, १०६
शेख हमीदुद्दीन नागौरी ३३४
शेख हम्माद कुरेशी ४८७
शेखज़ादा अली ३१
शेखजादा मुहम्मद फ़र्मुली १६१
शेखपुर ३०६
शेखपुरा ३३४
शेखुर्रबआ ४६०
शेखैन बिन कबीर ४२६
शेर ५१९
शेर खा ९४, १०३, १०४, १०६, १३८, २२९, ४३०
शेर असामक ५११, ५१३
शेर खा अफगान ५१
शेर मलिक १८७, २६२
शेरपुर २५३, २५४
शोर ४९७, ५०० ५०३
श्रीनगर ५१३
श्रीभट्ट ५१७, ५१९

सका २५४
सजर खा ४३०
सदर्सी १०१
सआदत खा १८४
सईद खा लोदी ११८, ११९
सईदुलमुल्क ४२०
सकरलात ३४०
सज्जन, मलिक ३६१
सजन्द किला १५४
सद्दे सिकन्दर ३०९
सद्र ४३
सद्र खा ११०, ११३, १२०
सद्रे जहा २०५
सनली ३३२
सन्हू २५५
सबली ३३२
सफदर खा ११९, २३०, २४०, २४१, ३५१, ३६२-३६४, ४३५
सफ़दरुलमुल्क २९७, ४४७, ४५०
सफवी वश ११५, २३१
सफीउलमुल्क २०९, ४१०
सफीउलमुल्क खिज्र ४०९
सब्लीर ३०
सबीर ३३, ३५, ३६, ४४
समरकन्द ६७, २१८, ३१७, ५१५, ५१६
समूनी २८, २९, ३८
सम्बल ५, ६, १५, १६, १२९
सम्भल ५, १५
सरकज ८०, २११
सरकिज २११
सरकिजा ८०, ८८, १५०, १५१
सरकीजी १८७
सरकोब ४५०, ४८०

सरखग ५५, ५६
सरखीज २२०, ३०१, ३३४, ३४३, ३८२, ३९५, ४०७, ४०८, ४५९
सरमन्दत ३७८
सरसरपला ३१७
सरसिया ११४
सरसियामदास ८६
सरसुती महल १०३
सरस्वती ३७९
सरस्वती नदी २६८
सराय फीरोजपुर ५५२
सराया १११, ११२
सरोही (सिरोही) २०८, २१७, २३९, २९१, ३२८, ४०५, ४०६
सरोही का किला २०७
सरौंज कस्बा ११९
सलसलबोल ६०
सलादी पुरबिया ४५०
सलाहदी १२४, १२६, १२९
सलाहदी पुरबिया २४२
सलाहदी राजपूत ३६५
सलाहुद्दीन ४६६, ४७०
सवली २२७
सवाल व जवाब, पुस्तक ५१२
सवास ११६
सवीदास ९९, १०७
सहबर नदी ४३५
सहराई ११९
सहरानी ११९
सहवान ४६६, ४७६
सहाबी १७०
सहारन २५०, २५१, २५२
सहारन ताक २५०
सहाहे सित्ता २४५
सहीता कबीला ४९९
सत्रसाल २६७
साकल कोट ३४०
साखूद्वार ३१७, ३१८, ३१९
साभर २५७, २६३ २७९, २९६, २९७, ३०० ३०१, ३०४, ३३६, ३४५, ३५०, ४३५
सावली परगना २६७, २८१, ३२१
साऊ १५०
साकर जारहलान ४१८
सागवारा ३६४, ४४९
साजनपुर ११८
साजौर २२२
सातन ३८
साद खा १०३
सादबख्त सुल्तानी ४१०
सादलपुर १०६
सादात खा ३९३
सादालपुर १०६
सादुद्दीन दवानी ४७१
सादुलमुल्क २६५, २६६
सादुल्लाह खा ३४
साधू २५१, २५२, २५३
सान देवी ५२५
साबरमती १८५, १९६, २११, २३३, २९७, ३००, ३०४, ३३६, ३५०
सामीदास ८६
सायदास ८६
सारग ४७२
सारग खा ५, १५, ४६, १७९, २५७
सारग मुखलिसुलमुल्क ४१६
सारग सुल्तानी ४११
सारगपुर ५७, ७०, ७१, ७४, ८०, ९१, ९४, १०१, १०५, ११९, १६७, १९४, २७३, २७५, ३०४, ३४४, ३५५, ४४४
सारसा ग्राम ३९८
सारसा पालरी २८३
सालवाहन पुरबिया १२२
सालभान १७०
सालार मसऊद ३३८
सासानी वश २५१
साहब खा ११५, २२२, २३२, २३४
साहबर ४२६
साहिब किरान अमीर तैमूर गुर्गानि ९२, १६९, १७६, १८०, २५५, २५७, २५८, ४८२, ५१५, ५१६
साहिबे हाल ४३०

साहू २५३
सिगार गाव ३९४
सिधपुर २६८
सिकन्दर ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४६०, ४६१, ४६९, ५१५
सिकन्दर इब्न मुहम्मद उर्फ मन्झू इब्न अकबर २५०
मिकन्दर काकी ५२८
सिकन्दर की दीवार ३०९, ३१०, ४९०
सिकन्दर खा १०५, १०६, ११६–११८, १२८, १३०, १५३, २८८, ३३३, ३६६, ३६७, ३६८, ३८३-३८५, ३९४, ४०३, ४११, ४६५, ५२९
सिकन्दर खा बुखारी २१२
सिकन्दर लोदी ५२८
सिकन्दर शाह ३८७, ४३५, ५३३, ५३५, ५३७, ५४२, ५५५
सिकन्दर कक्कर ५२८
सिकन्दरपुर ५२२, ५२३
सिनपुर ५१५
सिन्ध २१८, २९३, २९५, ३११, ३१६, ३१७, ४२५, ४६६, ४६८, ४७०, ४७१, ४७३, ४७४, ४७५, ४७७, ४७८, ४८३, ४८४, ४९५, ४९८, ४९९
सिपारे ४६०
सियह भट्ट ५१६, ५१७
सियादनगिरि पहाडी ४२५
सिर खा १५९–१६१, १६५
सिराज, वजीर ५१३
सिरी कस्बा १०७, १०८
सिवदास १५३
सिवराम का किला ४८४, ४८७
सिवास ११६, ११८, १२९, १३०
सिवालिक पर्वत ४२५, ५१५
सिविस्तान ४६८, ४७३, ४७४, ४७६, ४७७, ४८१
सिवीदास ९९, १०७
सिहिन्दाल २८, २९, ३८
सीतापुर ४९९
सीदी बद्र दीवाना ५४८
सीदी मुजफ्फर हब्शी ५३८
सीरा नादोत २६९
सीरिया द्वार ३४४
सीली २२७
सीवी ४६६, ४७३, ४७४, ४७६, ४८५
सीस्तान १७९, ३३८, ४७४
सुतूम ५१८
सुनकीर १५४
सुनखिर २२०
सुनार गाव ५३४, ५४०
सुन्नत १४१, ४७१
सुन्नार गाव १६०
सुमा ४७३
सुम्बुल खा ४८९, ४९०
सुम्बुला १३०
मुम्मह ४७७
सुम्मा, सैनिक ४७५, ४८०
सुरब्बा ३७८
सुरसती ८१
सुर्ख कुलाह ११५, २३३
सुलेमान २९
सुलेमान अफग़ान २६६
सुल्तान अबी सईद बहादुर खा मुगूली १६०
सुल्तान अबू सईद ५१९
सुल्तान अलाउद्दीन १०, २३, ७३, ८२, ९२, ९७, १९८, २५५, २६७, २७३, ३६६, ४८५, ४९६, ५१३, ५३३, ५३४, ५३९, ५४१, ५४९, ५५९, ५६२
सुल्तान अलाउद्दीन खलजी १९३, ४५१
सुल्तान अलाउद्दीन बहमनी ८२
सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह ५६१
सुल्तान अहमद ५५–५८, ६९–७२, ७९, ८०, ९७, १७५, १८५, १८७, १८८, १९०, १९४, १९५, १९७, १९८, २००, २०२, २०३, २६२, २६६, २६७, २६९, २७०, २७१, २७३, २७८, २८०, ३४२, ३७१, ३९५, ५३३, ५३६, ५३७, ५४४
सुल्तान अहमद शाह १८४, १८९, २६४, २७२ २७६, ३१२, ५५४

७४, २००, २०१, २१४
सुल्तान अहमद शाह बहमनी ५८, १९७
सुल्तान इबराहीम शाह ४१, ४५, २४३, २४४, २६१, ३५४, ३६६, ३८७, ३९३, ४५५, ४५६, ५५३, ५६५
सुल्तान इबराहीम लोदी ३५९, ३६७, ५३०
सुल्तान इबराहीम शर्क़ी ४, ६, १५, १७, ५८, ७६, १८२, ५५२
सुल्तान इल्तुतमिश ३००
सुल्तान ऊदी ५१८
सुल्तान कादिर शाह २६–२९, ४४, ४६
सुल्तान कुतुबुद्दीन ७९–८२, २०५, २०७-२०९, २११, २२०, २८३, २८४, २८६, २८९, २९१–२९४, २९६, २९७, ३०१, ३४४, ३५७, ४८६, ४९५, ५१४
सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह १७५, २०६, ४०७
सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक ५३३
सुल्तान कुतुबुद्दीन लगाह ४९७
सुल्तान कुली बेग ४००, ४८३
सुल्तान गयासुद्दीन ५१, ८०–८३, ९२, ९४–९७, ९९–१०४, ११६, ११७, १३१, १३६, १४५, १४६, १४८, २१७, २२६, २२७, ३०२, ३३१, ३५७, ५३३, ५३६
सुल्तान गयासुद्दीन का मदरसा १३०
सुल्तान गयासुद्दीन ख़लजी १३२–१३९, २२४, ३२२, ३२३, ३३०, ४०६
सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन ५१, १४९
सुल्तान ग़ाज़ी २०८
सुल्तान कुली बेगलार ४८८
सुल्तान जमशेद ५१२, ५१३
सुल्तान जलालुद्दीन ५३६, ५४३, ५४४, ५४९, ५५३, ५५४
सुल्तान ज़ैनुल आबदीन ५१६, ५२२, ५२३, ५२४, ५२९
सुल्तान दाऊद २०९, २९७, २९८
सुल्तान नासिरशाह ५४४
सुल्तान नासिरुद्दीन ५१, ९७–१००, १०२, १०३, १०५–१०८, ११०, ११३, १२१, १४०–१४३, २३२, २३४, २५६, ३३१, ५३३
सुल्तान नासिरुद्दीन अब्दुल कादिर २२७
सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद शाह २७, ३१, ३३, ४७
सुल्तान फ़खरुद्दीन ५४०
सुल्तान फतह शाह ५२८
सुल्तान फ़ीरोज़ १४४, १७७, २५५, २५८
सुल्तान फ़ीरोज बहमनी २७८
सुल्तान फ़ीरोज शाह ३१, ६०, १७५, १८०, २५०, २५३, ४९५, ५०१, ५०२, ५३५, ५४२
सुल्तान बहलोल १०–१२, २०, २२, २४, ९१, ९४, १४६, १६१, ३५८, ३६६, ४४५, ४५३, ४९७, ४९८, ५००, ५१९
सुल्तान बहादुर १२९–१३१, १७५, २४७–२४९, २७७, ३०२, ३४०–३४४, ३७३, ३७५, ३८४, ३९२, ४१२, ४३७
सुल्तान बहादुर गुजराती ५१, ४६७
सुल्तान बहादुर शाह ४३३
सुल्तान मसऊद महमूद बिन मुजफ्फर ४३०
सुल्तान महमूद ३–६, १४, १५, १७, २०, ३५, ३८, ४१, ५१, ६८, ७०, ७१–७४, ७६, ७७, ७९–८४, ८७–९१, ९७, ११०, १११, ११३–११५, ११७–१२२, १२५–१३०, १४५–१४७, १५३, १५५, १६५, १७५, १७९–१८१, २०२, २१७–२२०, २२७, २२८, २३०, २३२–२३४, २३७, २३८, २४८, २५८, २६०, २६१, २६१, २८२, २८४, २८७, २८८, २८९, २९३–२९४, २९७, ३०४, ३०५, ३०८, ३०९, ३११, ३१३, ३२३, ३२४, ३२६, ३३०, ३३२, ३३८, ३४१, ३४२, ३४४, ३४५–३४८, ३५२–३५९, ३५५, ३६६, ३६९, ३७२, ३७६, ३८०, ३८१, ३९३, ३९४, ४६०, ४६७, ४७४, ४८९, ५०२, ५०३, ५६७
सुल्तान महमूद ख़लजी ७–९, ११, १७–१९, २३, ५१, ६६, ९२, ९८, २०४, २०६–२०८, २१२, २१३, २१५, २२६, २३२–२३४, २३६, २३८, २४१–२४४, २८१, २८३, २८६, २९०–२९२, २९६, ३०७, ३०८, ३१२, ३२२, ३३०, ३४७, ३५३, ३५७,

३६५, ३७५, ३७६, ३९६–३९९, ४०१, ४०३, ४०५, ४०७, ४११, ४१४, ४४३
सुल्तान महमूद खा ४७८, ४७९, ४८१, ४८७, ४८८
सुल्तान महमूद खा कोकिलताश ४७६
सुल्तान महमूद गजनवी ५१, ३९८, ४९५
सुल्तान महमूद गाजी ३०३, ३१९
सुल्तान महमूद गुजराती ८८, ८९, ९७, ३०७, ३३०, ५१९
सुल्तान महमूद नसीर खा २४९
सुल्तान महमूद फीरोज शाह ५५८
सुल्तान महमूद बहमनी २२६, ३०२, ३२९, ३३०
सुल्तान महमूद बेकरह २९८, ३०८, ३०३, ३०८, ३०९, ३३०, ३४१, ३६९
सुल्तान महमूद वेगढ २९३
सुल्तान महमूद बेगरह २७७
सुल्तान महमूद लगाह ४८८, ४९२
सुल्तान महमूद शर्की ७–१०, ७६–७८
सुल्तान महमूद शहीद ३४०
सुल्तान महमूद शाह १०, ९४, ९७, १२३, १७५, २१०–२१३, २१५, २१६, ५००, ५३८
सुल्तान मुकीम बेगलार ४७६, ४७७, ४८८
सुल्तान मुईजुद्दीन मुहम्मद साम ४९५
सुल्तान मुईन ५२१
सुल्तान मुजफ्फर ५३, १६८, १७०, १७२, १७५, १७८, १८६, २०५, २३३, २३५–२४१, २४३–२४८, २६०–२६३, २६५, २७७, ३४१, ३४५–३४७, ३४९, ३५१, ३५३–३५८, ३६३, ३६५–३६७, ३६९, ३७०, ३७३, ३७५, ३७९, ३८१, ३८३, ३८५, ३८६, ३९०, ३९३, ४०३, ५६७
सुल्तान मुजफ्फर २६३, २६५, २७७, ३४१, ३४५, ३४६, ३४७, ३४९, ३५१, ३५३, ३५४, ३५५, ३५७, ३५८, ३६३, ३६५, ३६६, ३६७, ३६९, ३७०, ३७३, ३७५, ३७९, ३८१, ३८३, ३८५, ३८६, ३९०, ३९३, ४०३, ५६७
सुल्तान मुजफ्फर बिन महमूद १७५, ३२२
सुल्तान मुजफ्फर खा २८९
सुल्तान मुजफ्फर गुजराती ६, ५२, ५४, ११५, ११८, १२१–१३०, १४१, ४६६, ४६७, ४७२, ४७७, ५००
सुल्तान मुजफ्फर शाह १८२–८५, २०५, २३२, ३८८, ५००, ५४९, ५५९
सुल्तान मुबारक शाह ५८, ७३
सुल्तान मुबारक शाह शर्की ३
सुल्तान मुरतजा निजाम शाह ४३४
सुल्तान मुहम्मद ३, ४४, ४५, ५१, ६४–६६, ७३, ७९, १७५, १७६, १७९, १८०, १८४, २३२, २५४, २५५, २५८, २६०, २६१, २७९, २८१–२८३, २८८, २९०, २९४, ३४२, ३४९, ३५१, ३५३, ३५७, ३[illegible], ३९६, ४०१, ४६६, ५१७, ५२८, ५४०
सुल्तान मुहम्मद बिन फीरोज शाह ५१, २५५, २५७
सुल्तान मुहम्मद, मुहरदार ४५०
सुल्तान मुहम्मद खा ३७
सुल्तान मुहम्मद गुजराती ७९
सुल्तान मुहम्मद गोरी ३०७
सुल्तान मुहम्मद फीरोज शाह १८२
सुल्तान मुहम्मद लश्करी २२५, ३२९
सुल्तान मुहम्मद शाह २०, २२, ६४, १७५–१७७, २०३, २०४, २०८, २०९, २५९, २८०, ५२७, ५२९, ५३०
सुल्तान मुहम्मद शाह बिन जफर खा २५०
सुल्तान मुहम्मद शाह बिन तुगलुक शाह २५० २५१, २५३, ३००, ३११
सुल्तान मुहम्मद बिन नासिरुद्दीन ३४७, ३४९, ३५१
सुल्तान शम्सुद्दीन ५१२, ५३३, ५३५, ५४१, ५४३
सुल्तान शम्सुद्दीन मुजफ्फर ४४१, ४४३, ४४४, ४४६, ४५३, ४५७
सुल्तान शम्सुद्दीन इबराहीम शाह ३७, ३९, ४०
सुल्तान शम्सुद्दीन भगरा ५३७, ५५५
सुल्तान शाह २१
सुल्तान शाहजादा ५३२, ५५७
सुल्तान शिहाबुद्दीन ७५, १०५, १०७, ११०–११२, ११४, ४९८, ५१४, ५२८
सुल्तान सिकन्दर १२, २४, ११८,–१२०, १४१, १७५, २४५–२४७, २४९, ३०२, ३५१,

३५४, ३८७–३८९, ३९०, ३९२–३९४, ४४४, ४५७, ५००, ५०४, ५१५, ५१७, ५२९, ५३३, ५३६, ५६२
सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल ५०३
सुल्तान सिकन्दर लोदी ११३, २३०, २४३
सुल्तान हसन ५२४, ५२७
सुल्तान हुसामुद्दीन वद्दुनिया होशग शाह ३९
सुल्तान हुसेन १०–१२, २१, २४, ९१, १६१, ४६७, ४९५, ४९७–४९९, ५०१, ५०२, ५०७
सुल्तान हुसेन मिर्जा ३०२, ४७५
सुल्तान हुसेन लगाह ४२९, ४६६, ४७१
सुल्तान हुसेन शर्की ५६२
सुल्तान हुसेन शाह २२
सुल्तान हैदर शाह ११५–२३१, ५२२, ५२३
सुल्तान होशग ६, १५, १६, १७, १८, ३९, ४०, ५१–५७, ५९–६३, ६५, ६९, ७०, ७६, ७७, ११२, १४४, १४५, १८२–१८५, १८७–१९३, १९५, २०२, २०५, २६७, २६९, २७०–२७४, ३९७
सुल्तानपुर ३९, ४०, ५४, ७९, १८९, १९०, २००, २०१, २०५, २११, २१२, २२६, २२८, २४६, २५६, २६९-२७१, २८३, ३३०, ३३३, ३८८, ३९३, ३९७, ३९८, ४११
सुल्तानाबाद १९३, २७३
सुल्तानुल हिन्द जलालुद्दीन १५६
सुल्तानुश्शर्क ३, ५२
सुल्तानुस्सलातीन ५३३, ५४३
सुल्हुल मिसाल १७
सुवास ११६
सूई ३३३
सूदह ४७०
सूदा समूह ३१७, ४७६
सूफी खा ६९
सूबापुर ५२१
सूमरा ३१७, ४१६, ४७३
सूरज मल १०२, ४३७
सूरत १८८, १८९, १९९, २१४, २१५, ४०६
सूरये आसीन ४५८
सूरा २२४, ३०६
सेता ४८३
सेद्री १०१
सैदपुर २८२
सैदीचह ४७१
सैफ खा १५५, २२९, २३०, ३५१, ३६१, ४४७
सैफुद्दीन महमूद शाह ४०९, ४१०, ४१२, ४१३, ४१७, ४१९, ४२५, ४२६, ४२९
सैफुलमुल्क १५३, ३२२, ३६१
सैफुलमुल्क सुल्तानी ४२१
सैफुल्लाह १५४
सैयिद अताउल्लाह २८२, २९०
सैयिद अबुल खैर १९८, २६८
सैयिद अलाउद्दीन ३८९
सैयिद अलिफ खा ३३२
सैयिद अली हमदानी ५२६
सैयिद अशरफ हुसेनी ५६०
सैयिद अहमद ६९, ३३८
सैयिद आलम अबूबक्र हुसेनी २६४
सैयिद आसफ खा ४४१, ४४६
सैयिद इबराहीम निजाम १८६
सैयिद इल्मुद्दीन २४७
सैयिद कमालुद्दीन १५६
सैयिद कासिम १८८, २६८
सैयिद कासिम बिन सैयिद आलम १९८
सैयिद खा ७३
सैयिद जलाल मुनव्वरुलमुल्क २७६, २८०, ३५६, ३७१, ३७४, ३८७, ३८८
सैयिद जलालुद्दीन १५६
सैयिद जैना ५२५
सैयिद ताहिर ३६९
सैफी दानकरी ५२५, ५२७
सैयिद नासिर ५२४
सैयिद बारानहर १६६, १६९
सैयिद बुदी अलगदार २२३
सैयिद बुरहानुद्दीन २७६, २८०, २८४, २८५, २८६, २८७, ३३८, ३४५, ३८७, ३८८, ४२९
सैयिद बुरहानुद्दीन बुखारी ३१९, ३७१, ३९३
सैयिद महमूद २०८, ३७१, ४२९

हाफिज रशीद खुशनवीस ४८२
हामिद खा ३३
हारा सुई द्वार ७३
हारूनी १५३
हारोती ८२
हाला कन्दी ४८३
हालो ३२५
हालोल २४७, ३२५, ४३७
हाशमी ४०२
हाशियये काफिया १७
हाशियये शरहे फ़राइजे ४८२
हाशियये शरहे मताले ४८२
हाशियये हिन्दी ४, १७
हासिलपुर १०१
हासिर ४८९
हिजब्र खा १०३
हिजाज खा ११९
हिदायत ५०६
हिन्द सागर ४३२
हिन्दाल ५१४
हिन्दुई भाषा २५०
हिन्दुस्तान ४, १६, ३१, ५१, ७५, ८४, ९१, १२१, १३८, १५६, १६२, १७९, १८५, १८५, २०९, २४४, ३२४, ३४७, ३५५, ३६०, ३६६, ३८६, ४१७, ४३०, ४३२, ४४५, ४८१, ४८५, ४९६, ५०१, ५१४, ५१६, ५१९, ५२१, ५२२, ५२८, ५४५, ५५०, ५६१, ५६२
हिन्दूकर १५०
हिन्दूकुश ५१३
हिन्दौन ७३
हिरात ४८२, ४८३
हिसारे खास २२५
हिसारे जहापनाह २२५
हीरापुर ५२०, ५२७, ५२८
हुसामुद्दीन मीरक ४८५
हुसाम खा ४४९
हुरमुज ४३२, ४३३
हुसामुलमुल्क छज्जू ४०९
हुरमुजुलमुल्क ३७५
हुसेन खा मेवाती ३६७
हुसाम खा इतिहासकार ४०४, ४१६, ४४१, ४४८
हुमायूँ बादशाह ३०७
हुसामुलमुल्क २०९, २२८, २६२, ४१०
हुमायूँ खा १०१
हुज्जतुलमुल्क ३७५
हुसामुलमुल्क भन्दरी २६२
हुसामुलमुल्क हान्देरी ६९
हुसेन खा २१, ३१, ३२, ३४, ३६, ४०९, ४१०, ५२२
हेमकरण पुरबिया ३५८, ३५९, ४४१, ४४२, ४४६
हैबत खा ५४, ५९, १८४, १८६ ४६६, ४७७, ५१४
हैदर ५१९
होशग १४९, १५१, २६५, ४५०
होशगशाही जामा मस्जिद ७३, ७६
होशगाबाद ५९, ६०, ६८, ६९, ८२, १५३
होशग शाह ७, ८, ५३, ६७
होशियार• मस्त, हाथी ४०४
हौज़े रानी ९०, ११८
हौज़े खास ११४, १७६, २५४

त्र्यम्बकदास २६९, २७१
त्रिपुलिया बाजार ३३६
त्रिलोक २५०